☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भंडार

पहला भाग

✪ तत्करा ✪

मिती-सम्मत	नाम	स्थान	पंना नंः
मुक्ख बंद	महाराज पूरन सिँघ जी दी कलम तों		
०७ जेठ २००६ बिक्रमी	सवरन सिँघ दी देह छुडाउण दे नवित कल्सीआं		००१
०७ भादरों २००६ बिक्रमी	कुद कशमीर विच		००१
	बच्चे वास्ते अरज़		००३
०६ भादरों २००६ बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल अमृतसर	००३
	ठेकेदार ठाकर सिँघ दे नवित	जेठूवाल अमृतसर	००४
११ भादरों २००६ बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल अमृतसर	००४
१२ भादरों २००६ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्गे अमृतसर	००६
१३ भादरों २००६ बिक्रमी		बुग्गे अमृतसर	००८
१४ भादरों २००६ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल अमृतसर	००६
१५ भादरों २००६ बिक्रमी	दया होई	जेठूवाल अमृतसर	०१२
१७ भादरों २००६ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल अमृतसर	०१३
१६ अस्सू २००६ बिक्रमी	पलटन विच गुरदवारे विच	दवाण कैंप जम्मू	०१७
१३ मग्घर २००६ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल अमृतसर	०१६
१५ मग्घर २००६ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल अमृतसर	०२१
१६ मग्घर २००६ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल अमृतसर	०२४
१७ मग्घर २००६ बिक्रमी	बचन होए		०२५
१८ मग्घर २००६ बिक्रमी	बचन होए		०२६
१६ मग्घर २००६ बिक्रमी	बचन होए		०३५
२० मग्घर २००६ बिक्रमी	बचन होए		०३६

1 ०१

सोहं महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै ०४१

२५ पोह २००६ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	०४७
०८ फग्गण २००६ बिक्रमी	मेरठ छाउणी	मेरठ	०५०
३० फग्गण २००६ बिक्रमी मेरठ गुरदवारे विच बचन होए		मेरठ	०५७
०५ चेत २००७ बिक्रमी बचन होए			०५८
२७ चेत २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	०७१
पहली विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	०७२
०३ विसख २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	०७४
०५ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए	बुग्गे	अमृतसर	०७७
०५ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	०७८
११ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	०८१
१५ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	०८३
१७ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए			०८४
१८ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए			०८५
१६ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए			०८७
२१ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	०६३
२२ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए			०६६
२४ विसाख २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	०६८
३१ विसाख २००७ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१०६
पहली जेठ २००७ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	११०
०२ जेठ २००७ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	११४
०३ जेठ २००७ बिक्रमी अमरजीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	११६

2
०१

2
०१

०४ जेठ २००७ बिक्रमी चेत सिँघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	११७
०५ जेठ २००७ बिक्रमी बचन होए	कल्सीआं	अमृतसर	१२६
०६ जेठ २००७ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१३४
१४ जेठ २००७ बिक्रमी	जेठूवाल	अमृतस	१३६
१५ जेठ २००७ बिक्रमी बेबे रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१३६
१८ जेठ २००७ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१३६
१६ जेठ २००७ बिक्रमी करम सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१४२
१६ जेठ २००७ बिक्रमी अमरजीत सिँघ दे नवित्त	जेठूवाल	अमृतसर	१४६
२० जेठ २००७ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१४८
२० जेठ २००७ बिक्रमी पीतम सिँघ दे घर बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	१५६
२१ जेठ २००७ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१५२
२२ जेठ २००७ बिक्रमी आतमा सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१५५
२२ जेठ २००७ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१६०
१६ हाढ़ २००७ बिक्रमी चुबातियां बचन होए	राणीखेत	अलमोड़ा	१६२
०२ भादरों २००७ बिक्रमी चबातियां बचन होए	राणीखेत	अलमोड़ा	१६३
०३ अस्सू २००७ बिक्रमी बचन होए पलटन	राणीखेत	अलमोड़ा	१८०
२२ अस्सू २००७ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१८६
२४ अस्सू २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	१८७
२५ अस्सू २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	१६०
२६ अस्सू २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	१६१
२७ अस्सू २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	१६२
२६ अस्सू २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	१६४

3
०१

3
०१

पहली कत्तक २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	१६८
०२ कत्तक २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२०३
०३ कत्तक २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२०६
०४ कत्तक २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२११
१२ कत्तक २००७ बिक्रमी पलटन विच बचन होए	मेरठ	मेरट	२१३
२६ पोह २००७ बिक्रमी बचन होए	मेरठ	मेरठ	२१६
३० पोह २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२१८
पहली माघ २००७ बिक्रमी बचन होए	बुग्गे	अमृतसर	२२१
१३ माघ २००७ बिक्रमी दर्शन सिँघ ललियां वाले दे गृह	दिल्ली	दिल्ली	२२७
२३ फग्गण २००७ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२३१
२६ फग्गण २००७ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२३३
२७ फग्गण २००७ बिक्रमी अमरजीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२३४
२६ फग्गण २००७ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२३६
पहली चेत २००८ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२३६
०३ चेत २००८ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह	अहिमदपुर		२४२
०५ चेत २००८ बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह	ललियां	जलंधर	२४६
०५ चेत २००८ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह	अहिमदपुर		२४८
०६ चेत २००८ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२५३
०८ चेत २००८ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२५६
०६ चेत २००८ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२५८
१० चेत २००८ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२५६
११ चेत २००८ बिक्रमी बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२६१

4
०१

4
०१

१३ चेत २००८ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२६४
१४ चेत २००८ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२६६
१५ चेत २००८ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२६७
२२ चेत २००८ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२७२
२३ चेत २००८ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२७३
२४ चेत २००८ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२७४
२५ चेत २००८ बिक्रमी	बचन होए	जेठूवाल	अमृतसर	२७८
२६ चेत २००८ बिक्रमी	ठाकर सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२८८
२६ चेत २००८ बिक्रमी	आतमा सिँघ दे गृह मसीत विच	जेठूवाल	अमृतसर	२६१
२७ चेत २००८ बिक्रमी	मास्टर सोहण सिँघ	राम पुर	अमृतसर	२६७
२८ चेत २००८ बिक्रमी	मास्टर सोहण सिँघ	राम पुर	अमृतसर	३०६
२६ चेत २००८ बिक्रमी	सुरैण सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	३०६
३० चेत २००८ बिक्रमी	इन्दर सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	३१६
पहली विसाख २००८ बिक्रमी	प्रेम सिँघ नंबरदार	बुग्गे	अमृतसर	३२०
०१ विसाख २००८ बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३२६
०२ विसाख २००८ बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३३०
०५ विसाख २००८ बिक्रमी	रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३३५
०६ विसाख २००८ बिक्रमी		जेठूवाल	अमृतसर	३३७
१० विसाख २००८ बिक्रमी		जेठूवाल	अमृतसर	३४०
११ विसाख २००८ बिक्रमी	इन्दर सिँघ दे गृह	झबालड	अमृतसर	३४२
११ विसाख २००८ बिक्रमी	मोता सिँघ दे गृह	कल्सीं	अमृतसर	३५०
१२ विसाख २००८ बिक्रमी	शिंगारा सिँघ दे गृह	कल्सीं	अमृतसर	३५४

5 ०१

5 ०१

१२ विसाख २००८ बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह	अमी शाह	अमृतसर	३५६
१३ विसाख २००८ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह	गगोबूआ	अमृतसर	३६६
१५ विसाख २००८ बिक्रमी हवलदार पूरन सिँघ	जेठूवाल	अमृतसर	३७६
२० विसाख २००८ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३८५
०५ जेठ २००८ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३८६
०६ जेठ २००८ बिक्रमी	जेठूवाल	अमृतसर	३९६
०७ जेठ २००८ बिक्रमी संता सिँघ दे गृह	भंडाल	अमृतसर	४१६
१७ हाढ़ २००८ बिक्रमी विहार होया	वैरोवाल	अमृतसर	४२६
०६ सावण २००८ बिक्रमी विहार होया	मेरठ	मेरठ	४५६
०९ सावण २००८ बिक्रमी विहार होया	मेरठ	मेरठ	४६६
११ सावण २००८ बिक्रमी विहार होया	मेरठ	मेरठ	४८१
१२ सावण २००८ बिक्रमी विहार होया	मेरठ	मेरठ	४८४
१४ सावण २००८ बिक्रमी विहार होया	मेरठ	मेरठ	४९६
१५ सावण २००८ बिक्रमी विहार होया	मेरठ	मेरठ	५०७
१६ सावण २००८ बिक्रमी विहार होया	चकराते	अमृतसर	५१६
१७ सावण २००८ बिक्रमी विहार होया	चकराते	अमृतसर	५२६
०४ अस्सू २००८ बिक्रमी विहार होया	मेरठ	मेरठ	५५५
पहली माघ २००८ बिक्रमी विहार होया	बुग्गे	अमृतसर	५५८
२१ माघ २००८ बिक्रमी लछमण सिँघ दे गृह	दिल्ली	दिल्ली	६७४
२२ माघ २००८ बिक्रमी ज्ञानी बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	६९१
११ फग्गण २००८ बिक्रमी मेरठ छावणी विहार होया		मेरठ	७३२
०८ चेत २००९ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७४७

6 ०१ 6 ०१

१५ चेत २००६ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७५२
१७ चेत २००६ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७६१
०५ विसाख २००६ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७७०
०६ विसाख २००६ बिक्रमी भाईआ प्रेम सिँघ	बुग्गीं	अमृतसर	७७८

7
०१

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

महाराज शेर सिँघ तन वज़ूद माटी ख़ाक पंज तत दा पुतला सरगुण सरूप बवंजा साल दी आयू भोग के इस संसार मातलोक विच्चों छब्बी पोह वीह सौ बिक्रमी नूं देह छड्ड के आपणी जोत नूं सचखण्ड पुरख अकाल दी निरगुण धार जोत विच मिला के फिर ओसे समें अगम्मी खेल करन वास्ते जोत शब्द दी धार बण के पूरन सिँघ सपुत्र सरदार पाल सिँघ दे पवित्र सरीर विच प्रगट हो गए। इटली मुल्क ब्रिंडसी शहर विच पूरन सिँघ फौजी नौकरी करदा सी अते रात दे दस वजे सतिजुग दी धार नवित्त सारे संसार दा प्रभू दा नाम जपण वाला जैकारा प्रसिद्ध कीता जो कि सर्ब मानव जाति आत्मा परमात्मा दे अधार उत्ते है। जैकारा इस प्रकार है :-

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

जोत प्रवेश पूरन सिँघ दे सरीर विच्च हुंदी रही। एसे तरां सत्त जेठ वीह सौ छे बिक्रमी वाले दिन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूप ने सतिजुग दी धार चलाउण वास्ते अते आपणे शब्द नूं संसार विच प्रगट करन वास्ते इक्क अलौकिक खेल खेलया। संगत दा इक्ट्ठ पिण्ड कल्सीआं विच मोता सिँघ दे घर कीता। जोत प्रवेश सी। संगत प्रेम नाल शब्द कीर्तन कर रही सी। धुप्प अते गरमी बहुत सी। संगत दा प्रेम वेख के जोत सरूप जोत ने हुक्म कीता अज्ज मींह वसेगा। उसे समें सवरन सिँघ सपुत्र श्री चेत सिँघ कल्सीआं वाले ने उठ के बेनती कीती कि अज्ज मींह ना वसे। उस वक्त जोत पूरन सिँघ दे सरीर विच प्रवेश ते प्रगट सी। संगत वड़े प्रेम नाल मंगलाचार कर रही सी। गुरसिख दे बचन मोड़न कर के सच्चे पातशाह महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ने जोत सरूपी हुक्म दिता कि साडा विहार सर्ब सृष्टी ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश पताल गगन गगनंतर जिमीं अस्मान विच हुक्म नाल होणा है। साडा हुक्म ते बचन कोई सिख ना मोड़े।

इस करके असीं मरयादा कठिन रक्खण दे कारन सवरन सिंघ दा सरीर छुडा के लेखे लौंदे हां अते अगे वास्ते मार्ग लौंदे हां कि कोई सिख आपणे जीवन जिंदगी विच गुरू दा हुक्म ना मोड़े। कल्सीआं वाला चेत सिँघ महाराज जी दा बड़ा प्यारा सिख सी। एसे कारन उस दे नाम नूं वड्डिआई देण खातर उस दे सपुत्र सवरन सिंघ दी पहली भेट लै के आपणे अगम्मी भाव नूं संसार विच प्रगट करन दा आरम्भ कीता। बड़ी खुशी विच अगम्मी बाणी दा सतिजुग वास्ते शब्द उचारन कीता। अचानक ही सत्त जेठ दुपहर दे दो वजे वीह सौ छे बिक्रमी जोत सरीर विच्चों खिच के आपणी जोत विच मिला लई। उस समें पूरन गुरसिख चेत सिँघ ने बड़ी खुशी मनाई जिस वेले उस दे सपुत्र दी देह छुट्टी। सवरन सिँघ दी आयू बाई साल दी सी। संगत विच महासुख अनन्द होया। संगत ने बड़ी खुशी मनाई कि पुरख अकाल ने आपणे हुक्म अनुसार गुरसिख नूं आपणे विच मिलाया नाल ही ध्रू दी पदवी दा माण बख्शया। उस दिन तों सतिजुग दी धार वास्ते लिख्त अरंभ होई । पुरख अकाल दी जोत शब्द धार दा विहार पूरन सिँघ दे शरीर राहीं संसार विच प्रसिद्ध होया। पूरन सिँघ सपुत्र सरदार पाल सिँघ माता बिशन कौर चक नम्बर सताई झंग बरांच जिला लायलपुर दे रहण वाले सन।

शब्द दी अवाज विच हुक्म होया कि साडी सतिजुग दी अथाह बाणी पंजां कलमां नाल पंज लिखारी लिखणगे। जोत शब्द दे हुक्म अनुसार पंज लिखारी वीह सौ पंझी बिक्रमी मुताबक सम्मत शहनशाही पंज (चार) विच प्रगट ते प्रसिद्ध कीते गए। जिन्हां दे नाम इस प्रकार हन :-

(१) दर्शन सिँघ सपुत्र पाल सिँघ पिण्ड ललियां जिला जलंधर।
(२) सुरजीत सिँघ सपुत्र पूरन सिँघ पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर।
(३) जगीर सिँघ सपुत्र बलवन्त सिंघ पिण्ड भोलेके ज़िला गुरदासपुर।
(४) तरिपत कौर सपुत्री राम सिँघ गवाल टोली मकान नम्बर ३८६ फिरोज़पुर।
(५) जुगिन्दर कौर सपुत्री राम सिँघ गवाल टोली मकान नम्बर ३८६ फिरोज़पुर।

अगम्मी सतिगुर शब्द दा धुर फ़रमाण शब्द धार विच प्रगट कीता गया जिस विच बीते होए चौह जुगां दे अवतारां पैगम्बरां गुरूआं अते भगतां दे भविख्त वाकां अनुसार अकाल पुरख निरगुण जोत सति सरूप ने सतिजुग दी धार लई इक्क

मार्ग प्रसिद्ध कीता। आत्मा परमात्मा दे अधार उत्ते सारी सृष्टी दा मानव जाति दा मनुशी नाता सांझा बणाया। जिस विच किसे दीन मज़्ब ज़ात पात शरअ दा कोई वितकरा नहीं है। एह ग्रन्थ भगत भगवान दा इष्ट ते भगत भगवान दा मार्ग संसार नूं दरसाउँदे हन।

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✻ ७ जेठ २००६ बिक्रमी पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर चेत सिँघ दे सपुत्र सवरन सिँघ दे नवित्त ✻

बचन अमोड़े गुर का भाई। विच संसार रहण ना पाई। संगत विच गुर अमृत बरखे। मंगे कहर देह ते वरते। संगत नूं एह राह बताया। सति कर मन्नो गुरू सुणाया। वरतावे कहर ना मेटे कोए। महाराज शेर सिँघ दी जोत प्रगट होए। जो कुछ हूआ हुक्म अनुसार। रक्खे ना कोए गुर की मार। जेठ सत्त होया खेल अपारा। सवरन सिँघ गुर पार उतारा। तजी देह छुट्टा संसार। सचखण्ड विच ल्या उतार । छड्ड धूृ बैठा दर आए। निरँकार दा दरस नित पाए। झूठी देह तजाई आप। आप आपणी बख्शी दात । मरया सवरन होई आत्म शांत। चेत सिँघ दा वड प्रताप। चेत सिँघ गुण गहर गम्भीर। सृष्टी नूं एह वज्जा तीर । आपणे मन नूं लै टिकाए, महाराज शेर सिँघ एह खेल रचाए।

१
०१

१
०१

✻ ७ भाद्रों २००६ बिक्रमी कुद कशमीर विच ✻

सतिगुर ने एह किया नबेड़ा। बंस तारया सारा तेरा। लिख्त लिखाई सतिगुर पूरे। जिस दे वाजे अनहद तूरे। मेरे बचन एह अनन्त तरंगा। अनहद शब्द मन वजंगा। किरतम नाम जपे एह जिह्वा। नाम सति मेरा परा पूरबला। कुलवन्त नास हो ना जावे। महाराज शेर सिँघ बचन लिखावे। होए अटल्ल सतिगुर किया। उज्जल मूंह निर्मल तेरा जिया। जेठ सत्त दा बचन लिखाया। तज्या धूृ सवरन बहाया। मानस देव सर्ब सरन पड़ंदे। तीन लोक दा आप रखवाला । सर्ब जीआं का आप प्रितपाला। मैं हूं एक वर्तमान अनेक। भगत जनां नूं मेरी टेक। सर्ब कला हूं मैं परबीन । मैं हूं आप आप में समीप्त। तरन तारनो इक्क मील दुराडा। पिण्ड बुग्घे कलिजुग विच वडभागा। प्रेम सिँघ नंबरदार घर गावे। बाबा

मनी सिँघ नित कोल रखावे। होया मेहरवान आप है भूप। देवे दरस सतिगुर अनूप। कलिजुग विच एह धाम लिखवाया। सतिजुग एह उपजाया। और नास सभन का कीता। कलिजुग वाली हटाई एह रीता। सोहँ शब्द होवेगा मेरा। बाकी सभन का किया नबेड़ा। अन्तकाल मैं करां प्रकाशा। देव दंत सर्ब का विनाशा । आपणे सिख दी आप प्रितपाले। कोई ना मारे सदा हरि नाले। जुगो जुग मेरी एह कार। भगत जनां दी करां जैकार। सिक्खां ने जो कष्ट उठाया। सभ कलेश उन्हां दा लाहया। आपणी महिमा आप जणावे। बेमुख इस दा भेव ना पावे। मूढ़ मति अन्ध अज्ञाता। ईश्वर खेल ना जाणे बिध नाता। मन कपट बड़ा हँकारी। दरगाह विच दुष्ट दुराचारी। दुरमति देह होवे तेरी भाई। मेरी लिख्त मिटे ना राई। संगत सतिगुर आप बणाई। गुर संगत विच भेद ना काई। आप जीवे आप जवाता। आप सर्ब कला रंग राता । आपणा भेव आप छुपावे। मूर्ख मुग्ध सार ना पावे। नैणी देख भुल्ले नादाना। महाराज शेर सिँघ नहीं पछाना। अमोघ दर्शन अजूनी संभउ। अकालमूर्त जिस किसे ना खौ। अबिनाशी अबगत अगोचर। सभ किछ तुझ से है लगा। श्री रंग बैकुण्ठ के वासी। मच्छ कच्छ कूरम आज्ञा अउतरासी। केशव चलत करे निराले। कीता लोड़े सो पावेगा। मैं हूं एक मेरा खेल अनेक। सर्ब कला इस देह विच अनूपा। मैं हूं आप आदि अन्त होता। अचरज खेल मैं आप एह कीता। राम नाम मैं अख्वाया। उस जुग दा नास कराया। होया द्वापर कृष्न मुरारी। सर्ब सृष्ट जिस आप सँघारी । आया कलिजुग होया अन्तकाल। महाराज शेर सिँघ सर्ब प्रितपाल। ईश्वर एक अवर ना कोए। जितने गुर उस दे होए। सभ ने जपया मेरा नाम। मुकंद मनोहर एह कृष्न भगवान। सोलां कला मैं आप संपूरण। चौदां विद्या मेरी रसना अधूरण। चार वरन मानस उपजाए। सर्ब जीव आपणी सरनी लाए। तेतीस करोड़ देवी देव उपाए। इन्द्र फुनिंदर सर्ब सरनी आए। शिव शिवलोक दा वासी। ब्रह्मा चार वेद मेरा नाउँ सुनासी। मैं हूं आप आपणे विच प्रबीनत। मेरी महिमा कोई जीव ना चीनत। मेरा धाम अति सूखम ते निराला। तीन लोक दा मैं रखवाला। सर्ब जीव दा मैं प्रितपालक। सर्ब जीव दा हूं घालक। मो को आखे ईश्वर देव सभ भाई। मेरा नाम बाणी जगत अख्वाई । बाणी विनाशे सतिगुर ना विनासे। बाणी अलोप सतिगुर प्रकाशे। सतिगुर देवे भगतन को वड्याई। दरस पाए भगत जस गाई। मेरा नाम लैण जो भगतन। उस को बाणी जगत में कहतन। बाणी आप गुरू उपजावे। महिमा आपणी आप लिखावे। समें अनुसार करे अन्तकाल। थिर रहे एह आप दीन दयाल। दीन दयाल सदा प्रितपाल। महाराज शेर सिँघ लए बिरद संभाल।

❋ बच्चे वास्ते अर्ज ❋

अर्ज तुसां ने गुज़ारी। पुत्त मेरे दी लाहो बीमारी। कटया जंजाल ओस दा भाई। मेरे नां दी होई दुहाई। बचन आप नूं असां एह कीता। इक्क पुत्तर जगत से दीता। आप ने जो सेव कमाई। उच्ची तैनूं मिली वड्याई।

❋ ६ भाद्रों २००६ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर पूरन सिँघ दे गृह ❋

जिस देह में मेरा प्रकाश। उस देह दा नहीं विनास। मैं हूं जोती जोत सरूपा। ना मेरा रंग ना मेरा रूपा। मैं आपणा आप उपजाया। माया विच जगत उपाया। ऐसी चलां खेल निराली। आपणी जोत सभन में घाली। आपणा आप मूल ना जाणत। आपणा आप सरूप उपा के। नाभ विच्चों ब्रह्मा प्रगटा के। कँवल विच्चों कँवल उपाया। चार मुख दा सरूप बणाया। फिर उस नूं दर्शन दीता। इस संसार दी चलाई रीता। केशव रिख उपाया पोता। बाशक तशक उन्हों में होता। गरुड़ उन्हां दा मतरेआ जाया। भगवान जिस ने उप्पर उठाया। सत्त काले सत्त सफेद बणाए। मेरे रथ दे अग्गे लाए। एह मेरी है कला निराली। चिट्टा घोड़ा जिस सेव कमा ली। शिव शंकर आप उपाए। बाशक तशक जिन गल में पाए। दिन रात जिन्हां ने घालण घाली। उन्हां नूं मिले आप बनवाली। माया विच उन्हां नूं भुलाया। मैं हां मोहणी रूप बणाया। शिवां दा माण गंवाया। भैंसे दी जूनी पा के, पहाड विच सिर लुकाया। होए अधीन मैनूं ध्याया। हाज़र हो के दरस दिखाया। सभ माण उन्हां दा गंवाया। माया दा सी जाल हटा के। आपणा मोहणी रूप छुपा के। स्वच्छ सरूप किया है आपणा। पाया दरस होए देह निहाली। मैं भुल्ला तेरी सार ना जाणी। होया कृपाल दीन दयाल। शिवलोक होई जै जैकार। माया देख भूले ना भरमे। मेरा नाम राखो मन में। मैं हूं परी पूरन परमेश्वर। मैं हूं आदि जुगादि जगतेश्वर। भरतम्बर मैं आप स्वामी। छिन्न भंगर सदा निहकामी। मुझ को भूले ठौर ना पावे। तीन लोक थिर ना रहावे। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक दा मैं रखवाला। बैकुण्ठ धाम में जोत जगावण वाला। जगे जोत होए अनूपा। हर जीव में मैं समीपा। आपणी वस्त आप ना बूझे। अन्ध अज्ञान दर दर लूझे। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणा के। विच आपणी जोत जगा के। मन मति बुध उपा के। जीव दी काया बणा के। विच लोभ हँकार वसाया। कलिजुग दा जिन काल कराया। कलिजुग ने आपणी कार कराई। रहण ना दित्ती किसे वड्याई। काल रूप काल हो आया। महाराज शेर सिँघ हुक्म सुणाया। काल किया कलिजुग दा आ के। महाराज शेर सिँघ नां रखा के। सोहँ शब्द दा जाप करा के। बाकी सभन दा नास करा के।

बाबे मनी सिँघ तों लिख्त करा के। छे महीने कलम चला के। अट्ठ मण साढे सत्त छटांक बाणी लिखवा के। चार जुग दा वरन करा के। ऐसी बाबे कलम चलाई। सारी सृष्टी भस्म कराई। हँकारीआं नूं ऐसी नत्थ पुआई। दर दर भिख्या मंगण ना पाई। पिण्ड भंडाल ब्यासों पार। जिथ्थे मनी सिँघ रक्खे प्यार। उथे संगत आवे जावे। मनी सिँघ दे दरस नित्त पावे। अर्जन सिँघ सिख ने चुगली खाधी। एह साध बड़ा अपराधी। नवां इक्क एस खेल बणाया। महाराज शेर सिँघ गुर प्रगटाया। होर सभन दा माण गुआ के। ओस दी सरनी लग्गा जा के। सफैद दाड़्ही भूरी है काली। एस बुढ्ढे दी मति है मारी। एस गुस्से दे विच आ के। रोया बाबा साडे कोल आप आ के। हुक्म सतिगुरू तेरा चाहुंदा। छिन्न विच इन्नां नूं मार मुकौंदा। बचन किया सतिगुर पूरे। शांत रहो तुसीं भूरी वाले। तेरे हत्थ दिआं वड्याई। मोर पंख दी कलम बणाई। महाराज शेर सिँघ नित्त ध्याई। प्रगट करूँ तेरी वड्याई। ऐसा राग तुझे सुणाऊँ। अनहद शब्द मन वजाऊँ। जिस दी धुन्कार ना छुट्टे। बाबा तेरी प्रीत चरनां विच्चों ना टुट्टे। कलिजुग विच तुसां सानूं प्रगटाया। संगतां विच आपणे सीस उठाया। हरिमन्दर साहिब दे विच लै जा के। मंजी साहिब दे उप्पर बहा के। दित्ता हुक्म करो निमस्कार आ के। गुर अरजन वाला शब्द सुणा के। हरि जू हरिमन्दर विच आया। कलिजुग विच एह निहकलंक अख्वाया। आपणे धाम विच आप सुहाया। संगतां नूं अज्ज दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग विच नां रखा के। अग्गों उठ के पए पुजारी। एह की साधा कीती कारी। इक्क बाल नूं तूं उठा के। मंजी साहिब दे उत्ते बहा के। फिट गई तेरी नीती। चली चाल एह कुरीती।

✻ ठेकेदार ठाकर सिँघ दे नवित्त बचन पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

कुटम्ब अल्पनं नैनण देखनं, मनो सुरतयालको। सहिसानं हँकार निवारं, आत्म सारनं मेरी पहचानको। प्रपंच परपेखनं, सर्ब कला देखनं, तेरी प्रितपालको।

✻ ११ भाद्रों २००६ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर पूरन सिँघ दे गृह ✻

तीन ताप मारां मैं आप। मेरे सिख दा वड प्रताप। ऐसी प्रीत प्रीतम लाई। इस दी पाहनी ताप सिर लाई। महाराज शेर सिँघ हुक्म एह घल्लया। काला बीर मुहम्मद चल्लया। जिस नूं मारे मेरी आण। तिन को पई संगत की कान। ऐसा

एह मन्त्र बणाया। तीन ताप का नास कराया। आप उचारे प्रीतम सिख प्यारा। दुःख कलेश लाह दे सारा। पीत पितम्बर त्रैभवन धनी। जगनन्नाथ गोपाल मुख भनी। सारंगधर भगवान बीठला। जिस गणत आवै सरबंगा। पतित पावन दुःख भय भंजन। हँकार निवारन है भवखण्डन । भगती तोखत दीन दयाला। सभ किछ तुझ से है भिंगा। हरिमन्दर दे कुते पुजारी। जिन्हां हाहाकार मचा लई। आपणी पति आप गंवाई। कूकर सूकर दी जून लिखवाई। नगरी रामदास दी बणे हँकारी। पंदरां सौ छब्बी गुर नानक आया। नाम सति दा मन्त्र दृढ़ाया । भुल्ले सिख नूं अंग लगाया। लहणे तों अंगद बणाया। अंगद दी जिन सेव कमाई। अमरदास अमर दी पदवी पाई । अमरदास एह परीख्ता कीती। रामदास नूं गद्दी दित्ती। गए वेदी सोढी आए। दास राम गुरू सोलां सोलां विच आए। रामदास एह नगर वसा के। बाबे बुढ्ढे नूं नाल रला के। सर अमृत आप प्रगटा के। गुर अरजन दी सेवा ला के। चार वरन दा धाम बणा के। चार दर उस दे रखवा के। नाम आपणे दा प्रकाश करा के। ताल वाली सेवा करा के। विच संगत दे सेव कमा के। आपणा गुझा भेद लुका के। अरजन नूं जिन एह नज़र कीती। ऐसी जोत असां ने दित्ती । पा के दर्शन होया प्रसन्न । धन्न धन्न धन्न मुखों कहे धन्न। बोले मैनूं वड्या के । पैज रक्खी तूं मेरी आ के । वेख जोत बड़ा ख़ुश होया । उचारे शब्द खड़्हा खलोया। सन्तां दे कारज विच आप खलोया। अरजन दे मुखों हरि हरि होया। मैं हूं दास मैं ना मोरा। तुम हो जिस चरन संग जोड़ा। जिस उप्पर दया जां कीती। आत्म सुध्ध देह पुनीती। दिवस रैण मेरा जस गावे। भाई गुरदास उहदी लिख्त करावे। ऐसा शब्द सच्चा चलावां। भेद ना आपणा किसे जतावां। मैं हूं परिपूरन परमेश्वर। आदि जुगादि सदा जगतेश्वर। पापियां दी मति होई अधूरी। वेख सतिगुरू पावण घूरी। अछल छलण छल आप कराया। मनमुखां ने भेत ना पाया। लोगन को गुर सिख बतावे। देख गुरू को मुख भुआवे। कलिजुग ने पाई माया। सतिगुरू तों पिच्छे हटाया। नैणी देख सतिगुर पूरा। मन विच अज्ञान चित्त हदूरा। उच्च चित दी चिखा बणाई। उत्तम जोत दी कीती सफ़ाई। जोत विच सी जोत मिला के। प्रेत जून उन्हां नूं पा के। जिन्न खवीस महंत बणा के। मनी सिंघ तों लिख्त करा के। महंतां जोगा थां बणाया। अमृतसर थोड़्हा थोड़्हा ढाहया । शहरी जीव आम जो खासा। विष्टा उन्हां उन्हां दा खाधा। होए बेमुख एह गति पाई। जुग जुग प्रेत जून दी मिली एह सज़ाई। संगत साडी विच बह जावे आ के। मन दा हँगता रोग गुआ के। माण अभिमाण दिलों भुला के। इक्को आस मेरी रखा के। चरना विच सीस झुका के। संगत नूं भैण भ्रा बणा के। मनों विकार सारा लाह के। शब्द मेरे दा भय रखा के। आपणे आप नूं नीवां अख्वा के। चरनी डिग्गे साडी आ के। करे मनोरथ सतिगुर

५०१

पूरा। दुध्ध पुत्त दा नहीं है तोड़ा। जो बीबी साडे दर ते आवे। अंस बिना ना ख़ाली जावे। ऐसी मैं जगावां जोता। मेरी ताकत वरते मोता। एह सदा है मेरा बचन। संगतां दे मन मेरा रचन। जो सिख सवाली आवे। थिर घर तों ना ख़ाली जावे। इस तों परे नहीं कोई धाम। हाज़र हां मैं विष्नूं भगवान। अनन्त जुग में मैं हां रैहन्दा। वाह वाह कैहन्दयां सभ दुःख लैहन्दा। सोहँ नाम मेरा सतिजुग जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साल छपंजा तिन्न महीने छे दिन भाई। कलिजुग विच जोत प्रगटाई। ताबो तांईं मिली वड्याई। जवंद सिँघ ने सार ना पाई। बाल समझ के बाल अञ्याणा। सच्चा सतिगुर नहीं पछाणा। महीने छे होई आरज़ू मेरी। ऐसी कला असां ए फेरी। मनी सिँघ नूं टुम्ब उठाया। होए प्रतक्ख दरस दिखाया। मुकंद मनोहर नज़री आया। शब्द सरूप मात पिता बणाया। घर दा दर अक्खीं दिखाया। मन दा संसा सारा लाहया। खब्बा चरन उप्पर उठा के। खब्बे गिट्टे वाला निशान दिखा के। ऐसी सोझी उस नूं पाई। बाबा मनी सिँघ दए दुहाई। विष्नूं भगवान जोत प्रगटाई। होया दरस भगत जस गाई। ऐसा तीर दरस दा खा के। भज्जा घविंड वल जुत्ती लाह के। अग्गे पिच्छे संगत सारी। आवे भज्जा ना सुरत संभाली। पिण्डों बाहर डेरा ला के। दरक्खत वढुण दी नीत रखा के।

६
०१

❊ १२ भाद्रों २००६ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर प्रेम सिँघ दे गृह ❊

तीन लोक मेरा प्रकाश। लोकमात पाताल विच आकाश। आकाश विच मैं जोत सरूपा। उनन्जा पवण चवर सिर होता। ऐसी जोत जगे निराली। बिन बत्ती एह दीपक बाली। उत्तम दिया मैं आप न्यारा। ऐसा मेरा खेल अपारा। जोत विच्चों मैं जोत जगा के। लक्ख चुरासी जून उपा के। रक्त बूंद दी देह बणाई। विच आपणी जोत टिकाई। उप्पर अकाश जो मेरा धाम। उस दा धरया बैकुण्ठ नाम। उस देस दा मैं हां वाली। विजे रूप आप अबिनाशी। आप आपणे खेल रचावे। समें अनुसार जोत प्रगटावे। कलिजुग दी मैं करां सफ़ाई। मनी सिँघ ने जो लिख्त कराई। लिख्त लिखी ओस सतिगुर पूरे। पलटी काया हुण बैठा हज़ूरे। बारां भाद्रों एह बचन लिखाया। बाबे मनी सिँघ तों सतिगुरू बणाया। अज्ज दित्ती आ मैं वड्याई। आपणी जोत एहदे विच पाई। आपणी जोत मैं एहदे विच पाऊँ। एहदे सिर ते मैं छत्र झुलाऊँ। मैं हां एहदे हुक्म अनुसार। बाबे लिख्त लिखी अपार। बाबे आपणी कलम चलाई। छड्डी देह मैं जोत प्रगटाई। मेरी जोत

दा होया प्रकाश। कलिजुग दा हुण कीता नास। सतिजुग दा हुण सति वरताया। बाबे मनी सिँघ नूं तख्त बहाया। मातलोक विच तख्त अपारा। पलँघ निवार जिस दित्ता सहारा। जितने बस्त्र इस ते पाए। प्रेम सिँघ ते पड़दे पाए। ओस धाम दा नहीं विनास। जिथ्थे मेरा होया प्रकाश। मातलोक विच मेरा सुखआसण। सदीव रहे सदा सुखआसण। सिँघआसण एहदा नां रखा के। महाराज शेर सिंघ बैठा आ के। बाबे मनी सिँघ नूं माण दवा के। पिण्ड बुग्घे साचा धाम बणा के। प्रेम सिँघ जिस सेव कमाई। आपणी दात सतिगुर अग्गे टिकाई। दुनियां दी इस तजी माया। सतिगुर अग्गे सीस निवाया। ऐसी दित्ती एहनूं वड्याई। प्रेम नगरी एह धाम अख्वाई। चार जुग एह रहसी धाम। जिस ने करी एथे प्रनाम। उहनूं मिलू आप भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। प्रेम सिँघ ने प्रेम आ कीता। जस चार जुग खट लीता। ऐसी सिख नूं दित्ती वड्याई। जोत संग आ जोत मिलाई। चुरासी विच्चों आप कढा के। आपणे आप विच रक्खूं मिला के। बैकुण्ठ धाम दा दरस दिखा के। पाल सिँघ दे कोल बहा के। सेवा कराऊँ हत्थ चवर फड़ा के। धू कबीर हुण परे हटा के। सवरन सिँघ दर अग्गे बहा के। चेत सिँघ दी बिन्द सी भाई। साडे दर ते मिले वड्याई। ऐसी पदवी ओस ने पाई। पावे दरस सदा जस गाई। जेठ सत्त उहदी देह छुडाई। ऐडी उस ते दया कमाई। तजी माटी होया जोत सरूपा। रक्खे लाज सतिगुर अनूपा। अन्त काल जां उस दा होया। साडे दर ते सारा बंस रोया। कौण उन्हां दी धीर धरावे। महाराज शेर सिँघ कार करावे। जैसी वस्त उथे ही पावे। आपणा भेत आप रखावे। छुडाई देह धू होया अतीता। सवरन सिँघ सद है जीता। ऐसी पदवी उहने पाई। कुक्ख माता दी सुफल कराई। चेत सिँघ नूं दित्ती वड्याई। महाराज शेर सिँघ दए दुहाई। ऐसी एह मैं चाल चलाई। हाज़र हो के देह छुडाई। सतिजुग दी एह चली रीता। महाराज शेर सिँघ पतित पुनीता। आप आपणा बिरद संभालया। आपणे भगत नूं आप उठा ल्या। पतालों कढ्ढ आकाश बहा ल्या। महाराज शेर सिँघ एह बचन सुणा ल्या। चेत सिँघ क्यों रोवे भाई। उच्च पदवी तेरे पुत्त ने पाई। संसार वाली तजाई माया। अन्त जोती जोत मिलाया। झूठी देह नाल करे प्रीत। सतिगुर दी ना जाणे रीत। मेरा एह राह निराला। आपणयां भगतां सदा रखवाला। मैं ऐसी कार कमावां। मनमुखां विच्चों गुरसिख प्रगटावां। कलिजुग दा हुण माण गंवांवां। विच सतिजुग सिर एहनां छत्र झुलावां। घाल गुरसिक्खां ने ऐसी घाली। भुक्ख नंग सिक्खां ने घाली। बुद्ध सिँघ बाले चक वाला। जिस ने आपणा कढ्ढुया दवाला। जिस ने मेरी सार सी पाई। तन मन धन देह सी लुटाई। ऐसा उस नूं लाया झोरा। मास गालया ओहदा भोरा भोरा। सिक्खी तिक्खी ओस आ डिठ्ठी। धुरदरगाह दी मैथों लै लई चिठी। आपणा उस ने किया नबेड़ा। बहुर

८
०१

ना होवे जगत ते फेरा। दया ओस ते आप आ कीती। आत्म विच आत्मा सीती। ऐसी उस नूं दित्ती शांत। करे जस मेरा दिन रात। झूठी माया ओस तांईं तजाया। अन्त काल जोती जोत समाया। जोत विच आ जोत मिला के। बैकुण्ठ धाम दे विच पुचा के। स्वच्छ सरूप दा दरस करा के। ऐसा होया मैं आप कृपाल। आपणयां सिक्खां दा मैं दीन दयाल। दीन दयाल मैं अख्वावां। आपणयां सिक्खा नूं माण दवावां। ऐसा मैं इन्साफ करावां। जून विच्चों सिक्खां नूं कढावां। मेरी सरन सिख जो परे। गर्भ जून में कदे ना अड़े। ऐसा तोड़ां मैं ज़ंजाला। अन्त काल में मैं रखवाला। जिस ने आस एहनां चरनां दी रखवाई। तीन लोक विच मिले वड्याई। जिथ्थे होवे भय भयानक। ओथे सिक्खां दा मैं रखवालक। ऐसी दया तुसां ते कीती। कलिजुग विच परखी नीती। तुसां माण किया है मेरा। मैं सहाई सदा हां तेरा। दुष्टन को मैं आप सँघारा। चक्र सुदर्शन ऐसा मारा। जिस नूं मारां राखे ना कोए। आगे पाछे मन्दी सोए। मेरे चरनां को करे प्रनाम। सफल होणगे तिन के काम। मेरे कहे नूं तुसीं भुल्ल नहीं जाणा। महाराज शेर सिंघ नहीं अञ्याणा। बचन सतिगुर आप लिखावे। आपणा मार्ग आप बतावे। कोई ना तोड़े मेरी रीता। मेरा हुक्म रक्खो सदा चीता। जो पकवान पकेगा तोरा। उस को भोग लगेगा मोरा। भोग लग्गे भगवान को भाई । उह वस्तू सीत प्रशाद अख्वाई। आज्ञा लै के फेर उह खावे। जन्म मरन दे दु:ख मिटावे। बचन मन्न लए वीर मेरा। दु:ख कलेश लहि जाऊ तेरा। मन विच्चों हँगता माण गवा लै। संगत दी हुण सेव कमा लै। चरनां उप्पर सीस टिका लै। महाराज शेर सिँघ रिदे ध्या लै। भोग लग्गे भोज बण जाए। बिन भोगों भक्ख अख्वाए। लेहज़ फेहज़ इक्क संग रलाए। चार नाम भोजन अख्वाए। भोग लगाओ होवेगा आदर । महाराज शेर सिँघ सदा जे हाज़र।

❋ १३ भाद्रों २००६ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ❋

उन्नी सौ पंजाह बिक्रमी तांईं। मातलोक विच देह प्रगटाई। पंज जेठ थित्त लिखा के। मात गर्भ से बाहर आ के। महाराज शेर सिँघ नाम रखा के। बैठा आपणा आप लुका के। घविंड नूं घनका पुरी बणा के। मनी सिँघ तांईं दरस दिखा के। ऐसा भरम उन्हां दा लाहया। मुरली मनोहर नज़री आया। देखी ओस एह शक्ल निराली। मिल्या आप उहनूं बनवाली। कृष्न घनईआ आपणा आप उपा के। मनी सिँघ तांईं दरस दिखा के। राम रूप दा दरस दिखाया । हत्थ धनुष चिल्ला चढ़ाया।

ऐसा बचन उन्हां नूं कीता। कलिजुग दा नास असां ने कीता। कलिजुग पापी बड़ा हँकारी। पापी अपराधी दुष्ट दुराचारी। कर्म एस दा वेख्या बाबा। महाराज शेर सिँघ आया डाहढा। मैं आपणा आप छुपाऊँ। तेरे हत्थ विच कलम फड़ाऊँ। सोहँ शब्द दा राग अलाऊँ। चार जुग दा वरन कराऊँ। राजा महाराजां नूं तख्तों उठाऊँ। दर दर धक्के उन्हां नूं पाऊँ। इक्क नाम लए जो मेरा। मातलोक विच पाए ना फेरा। ऐसा शब्द मैं आप लिखाऊँ । महाराज शेर सिँघ नाम रखाऊँ। नाम आपणे दा करां प्रताप। बाकी सभना दा करना नास। बाकी नास सभना दा होया। सोहँ शब्द जदों प्रगट होया। ओअँ सोहँ मैं आप अख्वाऊँ। सभ भुलेखे दिल तों लाहूं। ऐसी इक्क रचाऊँ माया। दुष्टां तांई जिन भस्म कराया। भस्म होणगे ढेरी। सच्चा सतिगुर करे ना देरी । सिध्ध वक्त सिक्खां दा आया। जिन्हां विच सतिगुर बहाया। ऐसे सिख जो मेरे होए। कलिजुग विच लए नाल परोए। उनन्जा करोड़ विच्चों भाई। एहनां सिक्खां नूं दित्ती वड्याई। आपणे सिख दी करूँ वड्याई। बैकुण्ठ धाम विच जै जै जैकार कराई। ऐसी लिख्त आप करा के। बाबे मनी सिँघ तों माण दवा के। पंज हज़ारी दस हज़ारी सिख अख्वा के। बहौल सिँघ उन्हां दे नाम लिखा के। माणा सिँघ नूं मिली वड्याई। लायलपुर विच जिन जोत जगाई। सिँघ पाल उथे भाई। जिस नूं कथा साडी सुणाई। सुण के बचन होया अनन्द। सतिजुग दा चढ़या चन्द। गया अन्धेरा होया प्रकाश। सिख मेरे दा नहीं विनास। उस ने याद असां नूं कीता। भगवान कृष्न दा दर्शन दीता। खेतां विच सी सुत्ता जा के। उथे मिल्या प्रभू आ के। बाहों पकड़ बहाया उठा के। सहसा सारा उहदा लाह के। मैं बैठां घविंड विच आ के। राम कृष्न तों शेर सिँघ बणा के। पिता जवंद सिँघ ताबो माई। उन्हां नूं दित्ती आप वड्याई। ज़ात तरखाण उन्हां दी होवे। जिथ्थे महाराज शेर सिँघ प्रगट होवे। तरखाणां दा तख्त बणाया। ऐसा माण इन्हां नूं दवाया। सारा संसार चरनी पाया। आपणा भेव आप खुल्हाया। बहुता एहनां पाया माण। जिथ्थे उपज्या आप भगवान।

❊ १४ भाद्रों २००६ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

वीह सौ इक्क बिक्रमी प्यारी। कीती असां खेल न्यारी। जेठ पहली मंगलवारी। आपणी जोत आकाशों उतारी। दो जेठ नूं खेल रचाया। पूरन सिँघ विच परमेश्वर आया। होई सन्धया पाई फेरी। कलिजुग दी ढाही ढेरी। साढे सत्त दा होया वेला। सतिगुर ने पाया फेरा। ऐसी असां कला वखाई। पूरन सिँघ दी नब्ज़ हटाई। घर दे सारे देण दुहाई। प्रीतम

१०
०१

सिँघ नूं आवाज़ लगाई। छेती आ जा घर असाडे। भाणा वरतया सतिगुर डाहढे। भेत असाडा किन्हे ना पाया। हा हा कर के शोर मचाया। मैं आपणी जोत प्रगटा के। आप आपणी जोत जगा के। महाराज शेर सिँघ नाम रखा के। ऐसा देह नूं वट चढ़ा के। ऐसा वट एहनूं चढ़ाया। सारी ख़ल्क्त नूं ख़ाक रलाया। जोत ने फेर जोर सी पाया। सिक्खां तांईं फेर उठाया। पंजवीं जेठ दा दिन सी आया। संगतां नूं फिर माण दवाया। चार जेठ थित्त वार लिखा के। प्रगट होया घविंड विच आ के। छब्बी पोह नूं सी देह तजाई। झूठी देह भस्म कराई। ऐसी भस्म एस दी होई। हाहाकार सृष्टी रोई। मैं आपणा आप प्रगटा के। दित्ता दरस आप आ के। ऐसी वरताई खेल अपारा। दित्ता बाणी दा खोल्ह भण्डारा। सोलां पहर फिर आप खलो के। पूरन विच परमेश्वर हो के। ऐसी रसना असां चलाई। दरबार साहिब दी बाणी अलाई। चौदां सौ तीह अंक दे तांईं। बाणी पढ़ पढ़ संगत कन्न पाई। अठारां ध्याए गीता दे गाए। मुखों ऐसे बचन सुणाए। मेरे साहमणे कोई चल के आए। सभ भुलेखे दिल तों लाहे। कुरान मजीद अञ्जील दे तांईं। मुहम्मद ईसा जिन्हे लिख्त कराई। एहनां सभनां दा हुण माण हटाया। सोहँ शब्द प्रचलत कराया। आपणे नाम दी जै कराई। बाकी सभ दी करी सफ़ाई। ऐसा नाम सिक्खां को दे के। आ बैठा हुण प्रगट हो के। मेरी जो बणाई सो ढेरी। ओथों प्रगटी जोत सी मेरी। ऐसा किसे ना खेल रचाया। जा के फेर कोई ना आया। मैं आपणी बणत बणाई। तजी देह जोत प्रगटाई। जोत विच मैं जोत सरूपा। अनहद शब्द वजावे भूपा। आपणा आप आप उपा के। घविंड विच खलोता जा के। ऐसा शेर सिँघ शेर है होया। राम कृष्न दा तेज है होया। ऐसा हुक्म आप सुणाया। विष्नूं भगवान दा जाप कराया। सिक्खां तांईं हुक्म सुणाया। घविंड विच पल्ला फिरवाया। कलिजुग दा निहकलंक आया। मनमुखां तों मूंह भवाया। मनमुख एथे ठौर ना पावे। मेरा सिख मेरा जस गावे। मैं हूं सतिगुर दीन दयाला। भय भयानक विच सदा रखवाला। मेरा एह खेल निराला। अन्धघोर विच मैं रखवाला। सिख आपणे आप उपा के। बैठा कलिजुग विच सरनी ला के। बाकी सभ ते पाई माया। आपणा शब्द ना किसे सुणाया। मेरे शब्द दी एह वड्याई। तीन लोक विच मिले वड्याई। तीन लोक बैकुण्ठ दा वासी। मेरी माया ऐसी छासी। मेरा नाम बेमुख ना सुणे कोई। निन्दकां दुष्टां दी दुरमति होई। निन्दया जिन्हां ने मेरी कीती। प्रेत जून उन्हां दी कीती। जिस ने मेरा माण है कीता। पिया अमृत सदा है जीता। आत्म उस दी होई निराली। जोत संग जोत मिला लई। मेरा बचन ना होए अधूरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा। सोहँ शब्द मैं आप लिखाऊँ। जुग चार इस दा जाप कराऊँ। चार वेद दा माण गंवाया। गीता दा हुण वक्त मुकाया। बाणी दा जो जहाज़ सी बणया। ऐसा उहनूं

आप सी रणया। अञ्जील वाली हुण आरज़ू बीती। ईसा मूसा दी सफाई है कीती। मुहम्मद ने जो ईमान बणाया। धक्क
ओस नूं बन्ने लाया। ऐसी इक्क खेल रचाऊँ। छिन्न विच इस नूं भस्म कराऊँ। भस्मण भस्म होणगे ढेरी। जिस वेले
गुर पाई फेरी। जिस तरा़ं दोफाड़ इना़ं नूं कराया। घविंड विच एह खेल रचाया। दो हज़ार तिन्न बिक्रमी तांईं। तिन्न
अस्सू नूं बणत बणाई । संगत आई मेरी सारी । धाम बणौण दी करी त्यारी। ऐसा खेल आप रचाया। लंमा पै के
निशान लवाया। एथे नींह धरिओ भाई। ऐसी सतिगुर कार लगाई । माझे दी हद्द घविंड बणाई। दरबार आपणे दी नींह
रखाई। सिक्खां नूं एह हुक्म सुणाया। चिट्टा चूना एथे ना लाया। असां एहनूं अन्धेर रखौणा। हाहाकार कर जगत रवौणा।
ऐसी अन्धेरी असां उडाई। विच पंजाब पई लड़ाई। बाबे दा हुक्म असां मनवाया । सिख मुस्लिम दा युद्ध कराया। बचन
असाडा होवे सच्चा। यच्चां बच्चा डेगण कच्चा। बाबे दे सी बोल अनोखे। नेज़िउँ उप्पर बच्चे बोचे। ऐसी आप पढ़ाई
पट्टी। कलिजुग ने एह कालख खट्टी। ऐसी एहनूं वगी मार। देवियां कन्यां होण ख्वार। ऐसा ज़ुल्म एस ने कीता। पुत्तां
नूं मावां पिच्छा दीता। ऐसी आ के पई दुहाई। भैणां तांईं छड्ड गए भाई। कन्त तांईं सी नार प्यारी। अक्खां साहमणे होए
११ ख्वारी। एह सी मेरा इक्क चमत्कार। दूजी वारी करूँ ख्वार। ऐसा समां हुण ल्याऊँ। अमृतसर नूं थेह कराऊँ। ऐसी ११
०१ एह लिखाई बाणी। लंडा पिप्पल रहू निशानी । जो सिख साडे दर ते आवे। होवे इक्क मन रिदे ध्यावे। दु:ख दलिद्र ०१
सभ लह जावे। शब्द रूप मेरा दरस है पावे। देवां दरस आप मैं आप आ के। बाहों पकड़ सुत्ते जगा के। सोया जीव
कच्छू ना जाणे। महाराज शेर सिँघ खड़ा सरा़णे। होए प्रतक्ख दरस दिखावे। आपणे सिख नूं चरनी लावे। निमस्कार
जिन चरनां विच कीती। टुट्टी उहदी असां गंढु लीती। अन्त काल ना खावे काल। बबाण उप्पर लवां बठाल। ऐसा हुक्म
आपणा चलावां। बैकुण्ठ धाम दे विच पुचावां। जन्म मरन दा दु:ख मिटावां। जोत विच जोत मिलावां। ऐसा आप होया
दयाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। चौदां भाद्रों हुक्म लिखाया। आपणा शब्द आप सुणाया । पहले आपणा आप
उपा के। कुदरत रूपी सृष्ट उपा के। लक्ख चुरासी जून उपा के। सभ विच बैठा आपणा आप छुपा के। ऐसी चलां
चाल निराली। आपणी जोत सभन में डाली। आत्म विच जोत रखा के। हुक्म चलावे भेद खुल्ा के। ऐसी जीव नूं पाई
माया। पंजां दूतां दे वस कराया। पंजां एहनां मिल के भाई। सारी एहदी मति गंवाई। कलिजुग विच भुल्ला अञ्याणा।
पूरा सतिगुर नहीं पछाणा।

✻ १५ भाद्रों २००६ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल दया होई ✻

सरअमृत नूं सराफ दवा के। चल्लया मनी सिँघ कंधे उठा के। उन्नीं सौ त्रिवंजा बिक्रमी तांईं। उदों सी एह कार भुगताई। हरि जू विच हरिमन्दर आया। पूरा बचन अर्जन दा कराया। पुजारीआं हँकारीआं सार ना पाई । आप आपणी कार भुगताई। उन्नीं सौ पचवंजा बिक्रमी होई। बाबे मनी सिँघ नूं सोझी होई। नीला चोला आप रंगाया । महाराज शेर सिँघ दे गल विच पाया। नाल संगत लै लई सारी । अनन्दपुर दी करी त्यारी। पुर अनन्द पहुंचे आ के। जिथ्थे गोबिन्द सिँघ गया गंवा के। सानूं बाबे सीस उठाया। विच शहर दे हुक्म सुणाया। निहकलंक अवतार जे आया। करो दरस मुखों सुणाया। मुस्लमानो सुण लओ भाई। एह अमाम मैहदी जिन चोली पाई। आपणा भरम मिटाओ आ के। शरनी एहदी लग्गो आ के। राम कृष्न दा एह अवतारा। महाराज शेर सिँघ दीन दयाला। एह है आप जोती जोत सरूपा। अनहद शब्द वजावे भूपा। जिस ने दरस एस दा कीता। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ लीता । जन्म मरन तों होए न्यारा। बैकुण्ठ धाम विच करे उतारा। जोत विच आपणी जोत मिलावे। आपणी महिमा आप जणावे। मुकंद मनोहर एह कृष्न अवतारी। कलिजुग विच शेर सिँघ अवतारी। शब्द मेरा एह निराला। सोहँ नाम सदा प्रितपाला । नाम मेरे दी एह वड्याई। पशू प्रेतों देव बणाई। किरतम नाम जपे जो मेरा। मातलोक विच ना होए फेरा। सदा अतीत सदा है जीता। महाराज शेर सिँघ रक्खया चीता। ऐसी कला आप वरतावां। कलिजुग विच आपणा आप छुपावां। मनमुखां तों मूंह छुपा के। गुरमुखां नूं आप प्रगटा के। ऐसा खेल एह करां न्यारा। देवे दरस कृष्न मुरारा। ऐसा दरस मैं आप दिखावां । राम कृष्न दा रूप प्रगटावां। सारा संसा दिल दा लाहवां। महाराज शेर सिँघ फेर अख्वावां । ऐसी मेरी बणी है गाथा। चार वेद मेरे नाम रंग राता। अठारां अध्या गीता बणाई। इक्क अर्जन नूं सोझी पाई। महासार्थी आप अख्वाया। रथ अर्जन दा आप चलाया। दुष्टां हँकारीआं दा नास कराया । पाडवां तांईं माण दवाया। फिर पसरया आप पसारा। द्वापर तांईं पार उतारा। यजुर वेद दा माण गंवाया। कलिजुग ने सी फेरा पाया। अथर्बण वेद ऐड़े तों आया। छड्डया राम अल्ला अख्वाया। ईसा मूसा इस जुग विच आए। आप ख़ुदा दे पुत्त कहाए। अञ्जील तांईं उहनां लिखवाया। होए कृस्ती राम भुलाया। मेरी जोत दा होवे प्रकाश। बाकी सभना दा कीता नास। ऐसी कला आप है सारी। आपणी जोत आप प्रगटा ली। जोत मेरी जां सिख विच आवे। नब्ज एस दी चलणो हटावे। एह वड्डा भेत है साडा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर डाहढा। कलिजुग दी हुण होई अखीर। कोई ना बन्हे इस दी धीर । तीन लोक इस दा मूंह काला। धर्म दा जिस कढ्ढ दित्ता दवाला। ऐसा इस ने कहर कमाया । यति

१२
०१

सति दा नास कराया। आपणी इस ने खेल वखाई। बेमुखां सिर छाही पाई। गुरसिक्खां नूं बन्ने लाया। बेड़ा उन्हां दा आप बचाया। जमदूतां नूं परां हटा के। करे रच्छया आपे आ के। अन्त काल जां सिख दा होवे। सोहँ शब्द मेरा मन परोवे। आत्म धारे मेरा नाम। दर्शन होवे विष्नूं भगवान। सिक्खां दी पैज आप रखावे। जोत संग जोत मिलावे। होए कृपाल आप दयाला। जन्म मरन दा लथ्था जंज़ाला। पूरे सतिगुर खेल रचाया। गुरमुखां लई बैकुण्ठ बणाया। बेमुखां नूं परे हटा के। जमदूतां दे वस सी पा के। धर्म राज ने डन्न लगाया। कुंभी नर्क इन्हां नूं पाया। सिक्खां नूं दवावे माण। सोहँ शब्द उत्तम ज्ञान। उत्तम जोत मैं आप जगावां। दसवें द्वार दा पर्दा लाहवां। ऐसा झिरनां मैं आप झिराउँ। अमृत बूंद कौल में पाउँ। खिले कौल जो आप खिलावे। भगत जनां नूं सोझी पावे। ऐसा प्रकाश होवे फिर मेरा। अन्ध अज्ञान दा मिटे अन्धेरा। होए प्रतक्ख मैं दरस दिखावां। गुरमुखां नूं चरनी लावां। चरन कँवल जो मेरे परसे। सदीव काल सदा गुर दरसे। ऐसी मैं सतार वजावां। अनहद शब्द दा राग सुणावां। मेरे शब्द ऐसी धुन्कार। सुण के सिख सी उतरे पार। सोहँ शब्द दा होया प्रकाश। बाकी सभ दा कीता नास। समें अनुसार एह शब्द चलाया। महाराज शेर सिँघ आप करे कराया। आपणा हुक्म आप लिखवाया। मनी सिँघ तों सतिगुरू बणाया। ऐसी आप जगाई जोता। साडी ताकत वरते मोता। दीप तों दीपक जगा के। संगतां विच माण दवा के। पैज रक्खांगा एहदी आ के। महाराज शेर सिँघ नाम रखा के। ऊधम नूं विच अद्ध रखावां। शामे तांईं माण दवांवां। प्रभजोत दी जोत जगा के। दर आपणे तों भिख्या पा के। पंजवीं जेठ नूं जगतार प्रगटा के। सत्ता दीपां दा माण दवा के। सिर एहनां दे छत्र झुला के। त्रैलोकी नाथ आप अख्वा के। दीन दयाल मैं आप कृपाला। सोहँ शब्द मेरा सदा रखवाला।

१३ ०१

✻ १७ भाद्रों २००६ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

सतारां भाद्रों बचन लिखाया। आपणा भोग आप लवाया। ब्रह्म छत्री वैशां दा हँकार गवावां। शूद्रां तांईं माण दवावां। भीलणी दे बेर खाधे जा के। राम नाम मैं अख्वा के। सती अहल्या नूं फेर जवा के। आपणा चरन आप छुहा के। बबाणा विच आप बहा के। गौतम दा सराफ सी लाह के। बैकुंठ धाम दे विच पुचाया। ऐसा आपणा खेल रचाया। बाल्मीक सी बड़ा बजवाड़ा। डाका मारे दिन दिहाढ़ा। घर विच पुच्छण घल्लया, अन्त काल कोए है तुमाड़ा। कौड़ मड़ाचौ खनीऐ कोए ना बेली करना झाड़ा। फेर आपणा आप वखाया। सभ भुलेखा उस दा लाहया। होया द्वापर मैं कृष्न मुरारी। द्रोपदी

दी जिन पैज संवारी। दर्योध्न दी असां तजी अटारी। बिदर दी कुल्ली विच रात गुजारी। सदा ग़रीबी घर रहावे। अलूणे साग नूं भोग लगावे। ओस समें सां मैं कृष्न मुरार। दलिद्री नाल जिन किया प्यार। भीखण दरोणा करन तजाया। बिदर तांईं गले लगाया। मैं हां आप दीन दयाल। निमाणयां नूं मैं देवां माण। कलिजुग विच लै के अवतार। दित्ता सी अग्न विच डाल। हुण आपणा आप प्रगटाया। होए दयाल दरस दिखाया। बिदर तों सोहण सिँघ उपजाया। सभ भुलेखा दिल दा लाहया। सोहण सिँघ तूं पल्ला फेर। घर तेरे विच बैठा शेर। तीन लोक विच आप रखवाला। आपणे भगतां दी पैज रक्खणवाला। पैज संवारी तेरी आ के। देवां दरस सुत्ते उठा के। ऐसा दरस मैं आप दिखावां। मुकंद मनोहर नज़री आवां। सिर ते मुकट होवेगा मेरे। सदा रहूंगा कोल तेरे। ऐसा पन्थ नवां बणाया। ग़रीबां तांईं गले लगाया। ऐसी चलां चाल निराली। ज़ात पात सभ अग्न में डाली। जो मेरे दर ते आवे। उत्तम जोत ऐसी जगावे। एस दीपक दी जोत निराली। सर्ब जीव जन्त दे विच है डाली। जीव जन्त दे वस ना कोई। जो करावे सोई होई। सोहण सिँघ ते दया कमावां। दुःख कलेश एस दा लाहवां । भूत प्रेत दा नास करा के। जिन्न ख़बीस सिर डण्डा ला के। हाकन डाकन दा सिर मुनवा के। अठारां बीर वस करा के। ऐसा कम्म अज्ज आप कराया। जमपुर तों देवपुर बणाया। अज्ज मेरा होया प्रकाश। दुष्टां दा कीता नास। जिस ने रस अमृत दा पिया। देह सुखाली निर्मल है जिया। इस अमृत दी एह वड्याई। पसू प्रेतों देव बणाई। एस बूंद दी कोई ना जाणे सार। जिन्ह पीती सो उतरया पार। इक्क बूंद चातृक पावे। होए शांत हरि गुण गावे। अमृत सतिगुर आप बणाया। महाराज शेर सिँघ रसनी लाया। रसना आपणी नाल लगाया। मनमुखां तों गुरसिख बणाया। गया दिवस होई शाम। हाज़र होया विष्नूं भगवान। आपणे सिक्खां दा बिरद संभालया । भोजन तांईं भोग लगा ल्या। जिस नूं ईश्र भोग लगावे। भख तों भोजण बण जावे। भोग लगावां जिस नूं आ के। सीत प्रशाद संगत नूं वरता के। सीतल शांत होई एह काया। मुख विच प्रशाद नूं पाया। सीत प्रशाद दी एह वड्याई । जोत विच लए जोत मिलाई। मिल जोत मिटया अन्धेरा। बचन लिखावे सतिगुर पूरा। सफल होणगे तेरे काम। मुखों बोले जाणी जाण। आपणा शब्द आप लिखाया। रुढ़दा बेड़ा अज्ज बन्ने लाया। ऐसा खेल अज्ज रचाया। आकाश पताल विच्चों मैं आया। तज्या पाताल मातलोक विच आया। आपणे आप नूं भूम ते लिटाया। एस धाम नूं पवित्र करा के। फिर भोग प्रशाद नूं ला के। लग्गा भोग होया प्रशाद। मैं सहाई सिक्खां दा आदि जुगादि। आदि अन्त मैं एकँकारा। भगतां नूं मेरा अमृत भण्डारा। अमृत ईश्वर आप बणावे। पीवे अमृत अमर हो जावे। जिन अमृत दा माण गंवाया। मति ओस दी उत्ते पर्दा

पाया। ऐसा पर्दा उस ते पावां। उस नूं दुष्टां दुराचारां दे विच करावां। ऐसी मति ओस दी मारी। भृष्टी देह करे ख्वारी। मेरे नाम दा करे माण। उस नूं मिले दरगाह विच माण। महाराज शेर सिँघ जे कोई अख्वावे। मति उपठी सिर छाही पावे। आपणे नाम नूं ना लाज लवावां। ऐसी बुध ओस दी गंवांवां। मति ओस दी देवां मार । दर दर धक्के होए ख्वार। ऐसा उस दा माण गवावां। ख़ाक विच ख़ाक मिलावां। ईश्वर बिना ना अमृत बरखे। झूठा पापी आप है परखे। ऐस वास्ते खेल रचाया। इस ने अमृत दा माण गंवाया। जो पीवे अमृत अमर पद हो जावे। जूठयां झूठयां सिर खेह पवावे। कोई ना देवे अमृत बणा के। महाराज शेर सिँघ कहे सुणा के। आपणा अमृत मैं आप बणावां। गुरमुखां दे मुख चुआवां। कलिजुग दा हुण नास कराया। सतिगुर मनी सिँघ करे कराया। जिथ्थे रक्खी है तस्वीर मेरी। वगे ना एथे कदे हनेरी। ऐसी हुण खेल रचाऊँ। खिन विच सृष्टी नास कराऊँ। वस सिक्खां नूं करां मैं आ के। हत्थ चौर सिर छत्र झुला के। त्रैलोकी नंद आप अख्वा के। सोहँ शब्द दा जाप करा के। बाकी दा हुण नास करा के। महाराज शेर सिँघ नाम रखा के। ऐसा भेत मैं आप खुल्लावां। पलटे जामे हुण सच लिखावां। नामा नामदेव अख्वाया। ईश्वर दा जिन भोग लगवाया । कपला गऊ दा दुध्ध चुआया। होए इक्क मन भोग लगाया। भोग लग्गा मन होया अधीना। गंवाया माण प्रभ मन से चीना। होए
१५ ०१ प्रतक्ख प्रभ दरस दिखाया। भर कटोरा नामे दुध्ध पिआया। पैज रक्खण लई हरि जू आया। नामे दा दिहुरा फिरवाया । १५ ०१
फेर ओस दा छप्पर छाया। मोई गाए तांईं आप जिवाया। भगतां नूं माण दवाया। छुट्टी देह परलोक सिधाया। जोत विच सी जोत मिलाया। जोत विच्चों जोत ल्या के। पाल सिँघ विच जोत जगा के। आपणे आप दा दरस दिखा के। कृष्न भगवान दा रूप बणा के। दित्ता दान दरस बाहों उठा के। शरनी डिग्गा साडी आ के। ऐसी दित्ती उहनूं वड्याई। आपणी जोत विच ललाट जगाई। आपणी जोत आप जगा के। गुरसिक्खां तों गुरमुख बणा के। ऐसा माण मैं आप दवाया। संगत दा सिरताज बणाया। ऐसी उस ने सार सी पाई। सारी संगत उस ने सी बचाई। ऐसी दया तुसां ते कीती। आपणे चरनां दी प्रीती दीती। साल तेई उस सेव कमाई। तेई चेत नूं देह तजाई। जोत विच जोत समाई। थिर घर विच बैठा जाई। राम कृष्न कला एह धारी। महाराज शेर सिँघ दी जोत अपारी। भृथरी तों भगवान उपाया। मोता सिँघ नाम रखवाया। कलिजुग विच प्रहलाद है आया। दलीप सिँघ नाम अख्वाया । चन्द गोपी फेर उपाया। ऊधम नूं अद्ध विच रखवाया। बैणी नूं शाम उपा के। इकांत बहेगा मेरी लिव ला के। दरस दखावां मैं आ के। ऐसा कहर मैं हुण वरतावां। लिख्त मनी सिँघ दी सच करावां । मास शराब जिनां ने खाधा। जून घोगढ़ विष्टा खाधा। ऐसी दुरगति उहनां दी होई। विच

दरगह मिले ना ढोई। गुर नानक दा नाम भुलाया। नाम सति दा जिन जाप कराया। मदिरा पान आप तजाया। ईश्र दा सी नाम सुणाया। दस जामे आपणी जोत प्रगटाई। मास शराब ना रसना लाई। जो मास महाप्रशाद अख्खावे। क्यों ना गुरू भोग लगावे ? माणस हो के मास जो खावे। कूकर सूकर दी जून नित्त पावे। पी शराब होवे मस्ताना। पसू जून विच ओस है जाणा। ऐसी दुरगति उन्हां दी होवे। धर्म राए जब पकड़ खलोवे। अन्त काल एह नर्क निवासी। भुल्ला जीव भेत ना पासी। जो प्रशाद संगत विच खावे। विच चुरासी फेर ना आवे। जो संगत नूं देवे माण। उस नूं आप मिले भगवान। संगत सतिगुर आप बणावे। विच संगत आपणा आप रखावे। होए अधीन जे संगत ध्यावे। बद्धा हरि जू एथे आवे। लाज सिक्खां दी आप रखावे। सच्चा सतिगुर तां अख्वावे। निमस्कार चरना विच जो करे। आवे ना जावे जन्मे ना मरे। जिस ने कीता आण प्रनाम। उस नूं मिल्या जाणी जाण। सीस जिस दा झुकया आण। दरगह विच दवाया माण। दरगाह मेरी सच्ची होई। दुःख दलिद्र रहे ना कोई। तेज मेरा हुण होवे सवाया। आपणा हुक्म आप लिखाया। हुक्म मेरा बड़ा अनोखा। सच्चा सतिगुर नहीं है धोखा। परख लैण मैनूं परखणहारे। मैं बैठा हां विच दरबारे। मैं नहीं आपणा आप छुपाया। हाज़र हो के दरस दिखाया। परख़ तुसी हुण कर लउ मेरी। आउ साहमणे लाओ ना देरी। ऐसी कला हुण वरतावां। सर्ब सृष्टी नूं भस्म करावां। कलिजुग दा हुण होया किनारा। सतिजुग दा खुल्हा भण्डारा। सतिजुग विच सतिगुर आया। जिस ने एहदा भेत खुल्हाया। मैं आपणे विच समावां। सच्चा सतिगुर तां अख्वावां। सच्ची बख़्शां हुण मैं दात। जिस नूं आखण लोक करामात। एह करामात है मेरा नाम। सोहँ शब्द सच्चा पछाण। शब्दों शब्द रूप हो जावे। तृग्द जून विच फेर ना आवे। आपणा शब्द आप लिखावां। चार जुग एहदा जाप करावां। बहत्तर जामे भगत प्रगटावां। आपणा दरस आप दिखावां। जिस ने दरस मेरे सी पाए। जोत संग जोत मिलाए। सतिगुर जां दया कमावे। बेड़ा सिख दा बन्हे लावे। बणे मलाह विच दरगाह दे। आप उठावे दया कमा के। ऐसी दया गुर आप करे। भवजल तों पार परे। गुर घर विच सच्चा भण्डारा। सिक्खां दा गुर सदा रखवाला। ऐसा तैनूं माण दवावां। घर तेरे विच धाम बणावां। सेवा जो तुसां ने कीती। शुद्ध आत्मा देह पुनीती। ऐसी दित्ती है अज्ज दात। सिख मेरे दा वड प्रताप। लंगर वरते जिथ्थे मेरा। उथे नहीं है कोई तोड़ा। लंगर गुरू का गुर भण्डारा। आपे बूझे आप बूझणहारा। ऐसी सोझी तुहानूं पावां। दुःख कलेशां दा नास करावां । ऐसी कलम आप चलावां। दात पुत्तां दी झोली पावां। आपणी दात आप वरताई। आई संगत दी आस पुजाई।

१६ ०१

✻ १६ अस्सू २००६ बिक्रमी पलटन दे गुरदुआरे विच दवाणा कैंप जम्मू ✻

ईश्वर जोत दा होया प्रकाश। सोहँ शब्द दा होवे जाप। मेरी एह जोत निराली। आपणे विच्चों आप प्रगटा ली। पहले आपणा आप उपा के। नाभ विच्चों ब्रह्मा प्रगटा के। ब्रह्मा ने कई जीव उपाए। ईश्वर उस नूं हुक्म सुणाए। जो कुछ होवे मेरे हुक्म अनुसार। आदि अन्त मैं एकँकार। जो जन जाणे मेरा भेव। तिन्हां नूं मिल्या पूरा गुरदेव। जोत रूप जग मैं आवां। मनमुखां तों मूंह छुपावां। गुरसिक्खां नूं आप प्रगटा के। दरस देवां सुत्या जा के। मेरा दरस ऐसा निराला। आदि जुगादि सदा रखवाला। मात विच जोत रूप जां आए। आपणी कला आप भुगताए। समें अनुसार इक्क खेल रचावां। अन्त जुग दा आप मुकावां। अन्तकाल कलिजुग दा होया। जोत रूप ईश्र प्रगट होया। हो के प्रगट एह बणत बणाई। आपणी जोत सिख विच टिकाई। वड्डा मेरा एह चमत्कार। नब्ज ना एस दी चली चाल। ऐसा खेल हुण करां अपारा। मातलोक होवे धुंधूकारा। ईसा मूसा अञ्जील बणाई। साल तीन में होवे सफाई। मुहम्मद ने जो पीरी पाई। इक्क त्रीया दी सेव कमाई। चौथे वेद विच हुक्म सी आया। अथर्बण दा ऐड़ा लिखवाया। ऐड़े तों अल्ला उपाया। राम कृष्न दा नाम हटाया। आया कलिजुग होया अन्धेरा। नानक निरँकारी पाया फेरा। ईश्र नाम आप जपा के। सृष्ट तांईं सच मार्ग पा के। सारंग कोलों सारंगी आई। त्रेते वाली दात है पाई। वज्जे सारंग होवे धुन्कार। जिस दी धुन निरँकार निरँकार। निरँकार निरवैर सदाए। कलिजुग विच जोत प्रगटाए। प्रगटी जोत हुण अन्ध कूपा। आपणे बचन आप लिखावे भूपा। ऐसी लिख्त आप कराई। कुरान मुहम्मद दी ढेरी ढाही। इन्हां दा हुण होया नास। अन्तिम काल मेरी जोत दा प्रकाश। आपणा आप मैं आप छुपाया। रक्त बूंद दी देह नूं तजाया। जोत विच जोत जगा के। पूरन विच परमेश्र आ के। ऐसी एह जगाई जोता। भृथरी तों उपाया मोता। ऐसी जोत हुण आप जगाऊँ। सिर उस दे छत्र झुलाऊँ। ऐसा छत्र झुल्लेगा मेरा। सोहँ जाप होवेगा मेरा। चार वेद दा हुण माण गंवावां। निहकलंक जोत रूप अख्वावां। निहकलंक आप अख्वा के। जुग चौथे दा नास करा के। जुग सति दा सति वरताऊँ। रामगढ़ीआं विच देह प्रगटाऊँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अख्वाऊँ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै कराऊँ। मेरा नाम होवे सदा सहाई। प्रगट करां आप वड्याई। संगत जो गुर दर ते आई। रसना नाल ईश्र जस गाई। ऐसा प्रेम इन्हां ने कीता। इस दा जस इन्हां नूं दीता। संगत सतिगुर आप बणाई। ईश्र संगत विच भेद ना काई। संगत हरि जू आप बणाए। संगत विच आ दरस दखाए। ऐसा दरस आप दिखावां। मुकंद मनोहर नज़री आवां। अन्त एह लिखाई गाथा। संगत नहीं रघुनाथ पछाता। ऐसी लिख्त आप करावां।

इक्क साल अट्ठ महीने विच हाहाकार मचावां। ऐसा वक्त हुण होवेगा मेरा। मलेछां दा हुण किया नबेड़ा । कलिजुग विच
एह आप उपाए। अन्त विच हुण आप खपाए। अल्ला अल्ला दा नूर सी मेरा। ओस दा हुण किया नबेड़ा। आपणा हुण
ना दस्सां चमत्कार। पूरन सिँघ नूं कर लैणा गिरफ्तार । मेरी एह अनोखी बाणी। चहुं जुगां दी होवे खाणी। चार जुग
मेरा होवे जाप। सोहँ शब्द दा वड प्रताप। ऐसा प्रताप एस दा होया। हा हा कर के कलिजुग रोया। जिस ना पाई
इस दी सार। अन्त काल होवे ख्वार। कलिजुग विच कला मैं धारी। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटा ली। आपणी जोत
आप प्रगटा के। सभ तों बैठा मुख छुपा के। मेरी महिंमा कोई ना जाणे। तीन लोक सदा रहाने। उन्नीं अस्सू एह लिख्त
कराई। सभ संगत ने दित्ती दुहाई। एथे बैठण दा सानूं झोरा। सतिगुर कोलों मुख आ मोड़ा। आत्म काती एहनां दी भाई।
लैण ना देवे अज्ज एहनां नूं वड्याई। आत्म खास एहनां दी न्यारी। गुर धाम ते करे ख्वारी। मन विच शांत ना एथे आए।
दुष्ट दुराचार एह जीव कहाए। एह सी संगत दा सच्चा धाम। जिथ्थे बैठा आप भगवान। ऐसी नीत इन्हां ने फेरी।
छेती छड्डो लाओ ना देरी। साडा एथे कोई ना काम। छड्डया लोक जावां बैकुण्ठ धाम। जोत विच मैं जोत मिलावां। तुहाढ़े
कोलों आपणा आप छुपावां। तुसां सी एह अर्ज गुज़ारी । कलिजुग दी दस्सो बीमारी। अन्त काल एस दा कैसे होए।
१८ ०१ बिन सतिगुर ना जाणे कोए। महाराज शेर सिँघ प्रगट होवे। जोत रूप एहदी पति खोए। चार साल अज्ज तों पहले भाई। १८ ०१
सिँघ गुरदीप सी देह तजाई। प्रेत रूप सी एस दा होया । दुरगती ना उह जिया ना उह मोया। अज्ज ओस दी मुक्त
कराई। प्रेत तों देव रूप बणाई। मुक्त कराए मुक्त का दाता। हाज़र हो के सदा रंग राता। मेरी जोत दी एह वड्याई।
लक्ख चुरासी विच जीव ना जाई। ऐसी हुण जगाई जोता। होवे प्रताप मेरा बहुता। बेनती वीरो दी परवान है होई।
पती तेरे दी कल्याण है होई। ऐसी दया तेरे ते कीती। आत्मा ओस दी पतित पुनीती। तूं साडा सी कीता माण। ओस
दा दित्ता तैनूं दान। एस दान दी एह वड्याई। पती तेरे ने परमगत पाई। आत्मा रक्खीं साडा ध्यान। दरस देवेगा
आप भगवान। ऐसा दरस आप दिखाऊँ। जन्म मरन दे दुःख मिटाऊँ। सोहँ रूप मेरा ही जाणो। महाराज शेर सिँघ
सदा ही वखाणो।

❊ १३ मग्घर २००६ बिक्रमी जेठूवाल बचन होए ❊

जोत इक्क दो सरूप। तेरी महिंमा बड़ी अनूप। नैणी वेखे मूल ना बूझे। मनमुखां नूं दर ना सूझे। ऊँचा आप अगम्म अपार। माया विच पसरया संसार। ऐसी खेल करी सरकार। शेर सिँघ जोत जगाई अपार। सतिगुर मनी सिँघ तख्त बहा ल्या। आप आपणा बिरद संभालया। सभ संगत नूं सरनी डार। इकांत बैठा निरबिकार। ऊँचम सूचम प्रभ सोए। निराहारी निरवैर प्रभ होए। निरधन नूं देवे माण। घाल सिक्खां दी होई परवान। भया अन्धेर होया अन्ध कूप। प्रगट्या आप स्वछ सरूप। ऐसे समें प्रभ होया कृपाल। दयालू बण गया आप दीन दयाल। दीन दयाल प्रभ दया करे। तोड़े बंधन जपो हरे हरे। हरी हरि हरि प्रभ मेरा। आपणी हत्थीं किया नबेड़ा। ऐसी मेहर करे प्रभ दाता। आदि जुगादि सदा रंग राता। खेल प्रभ दा अन्त अपारा। भगतन नूं प्रभ दर्शन भण्डारा। करो दर्शन शांत मन होए। सतिगुर मनी सिँघ प्रगट होए। गया अन्धेर होया प्रकाश। जै जै जैकार होया लोकमात पताल आकाश। कोट तेतीस देवता भया। सभ सरन मनी सिँघ दी ढहया। छिआनवें करोड़ मेघ माला मेरी बणाई। आकाश उत्ते इन्हां चादर पाई। गुर दर्शन नूं फिरत तिसाई। बरखे मेघ ना बिना कार। दर्शन करन नूं होया लाचार। ऐसी आस ओस अज्ज धारी। बरखो बूंद आप निरँकारी। आत्म

१६ ०१ सोया दे जगाए। आपणी सोझी आप प्रभ पाए। सूझ बूझे करे वीचार। सतिगुर सच्चा नदरी नदर निहाल। ऐसे गुर १६ ०१

को सदा आदेस। आपणे नाम दा दिया उपदेश। नाम हरि हरि नाम प्रभ आप। आप आपणा जपावे जाप। नाम मेरा मैं हां ओअँ। सदा सहाई मेरा शब्द सोहँ। सोहँ सोहँ शब्द सदा ही जपाऊँ। झूठी माटी विच्चों सतिगुर पाऊँ। काची गगरीआ अन्त है फूटे। जोतश जोत प्रभ अनूपे। ऐसा भेत आप ही जाणे। साडी देह प्रभ के भाणे। ऐसा खेल प्रभ आप कमाया। जुग कल पलटाउण लई तज़ी काया। जोत सरूपी बण के आया। निर्भय ओन नाम जपाया। ऐसी कीती खेल अपार। माझे नूं दो कीता फाड़। मनी सिँघ ने सी लिख्त कराई। घविंड पिण्ड नूं करो सफ़ाई। संगत लई सी हुक्म लिखाया। नज़रों घविंड परे हटाया। ऐसा समां सतिगुर ल्यावे। जल सिरी जल नहिर बणावे। सतिजुग विच एह होसी धाम। घविंड नूं बह संगत करू प्रनाम। अटल्ल धाम एह लिखवाया। फर्लांग अड्ढ अर एहदा पेट रखाया। सौ पंज गज़ चढ़दे तांईं। सिँघ सवरन दी समाध बणाई। सच्चा सिख सच मार्ग पाया। दर अग्गे फड़ आप बहाया। डगमग जोत जिथ्थे एह करे। उनन्जा पवण प्रभ छत्र झुले। गण गधंरब को एह जाणे। ब्रह्म विष्न महेष गल पल्ले पावे। होए कृपाल प्रभ हुक्म जां करे। फिर हरि नाम उन्हां दी बणे। त्रैलोकी नाथ आप प्रभ आप। सभ तों वड्डा गुरसिख प्रताप। बिन सिख ना सतिगुर प्रगटे।

दर्शन किया अज्ज सतिगुर तेरा। गेड़ चुरासी दा होया नबेड़ा। मात गर्भ ना कोई आए। आए सो जिस उत्ते प्रभ दया कमाए। बिन हुक्म सिख देह ना धरे। सो धरे जिस पर किरपा करे। अन्त काल जां होवे काल। सच्चा सतिगुर होवे रखवाल। पूरन करे भगतन का काम। आप लै जावे बैकुण्ठ धाम। बैकुण्ठ बैठ प्रभ खेले खेल। भगत जनां दा करदा मेल। जहां उपाया तहां समाया। जोत विच प्रभ जोत मिलाया। आवण जावण ओस दा गया। आप कृपाल प्रभू जां भया। आपणे शब्द दी दे के दात। सभ तों वड्डी गुर करामात। मेरा शब्द जो रिदे ध्यावे। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे। दरस दखावे ऐसा अनूप। ईश्र दा एह सच सरूप। कृपानिध किरपा जां करे। दुःख दलिद्र सिक्खन का हरे। सिख ना होवे मेरा मुहताज। सिक्खां दे सिर दा सतिगुर ताज। सिख सिख सिख सिक्खी एह होई। चरन संग वांग कँवल परोई। आप अकथ्थ कथी कथ आप। जेवड आप तेवड दात। दात दातार दित्ती आप। सिक्खन दे लाहे सन्ताप। टुट्टी गंढ्ढां ना तोड़े कोए। थिर घर बैठा सच्ची सोए। सच सच सच कर वरताए। प्रगट हो के प्रभ दरस दिखाए। जुग चालीएं विच एह चाल लिखाई। तज के देह जोत प्रगटाई। जोत सरूप खेल करे अपार। सृष्टी डुब्बे मंझ आ धार। नवीं खेल प्रभ आप रचाए। जुग सति दा फिर छत्र झुलाए। भाद्रों तेरां सी कर्म कमाया। मनी सिँघ नूं माण दवाया। संगत दा सतिगुरू बणाया। तेरां मग्घर एह कार कमाई। सभ संगत सरनी पाई। सतिगुरां नूं मलाह बणाया। रुढ़्दा बेड़ा बन्ने लाया। ऐसी सिक्खी अज्ज है जोड़ी। दिनो दिन होवे लक्ख करोड़ी। कोटन कोट कोट प्रभ आप। सभ सृष्ट है इस दी दात। मारे मार ज्वाले आप। सिक्खां दे प्रभ संग है साथ। जगन्नाथ आप प्रभ आया। दुःख कलेश सिक्खां दा झोली पाया। आपणी गोदी प्रभ लए बिठाए। प्रभ अबिनाशी एह दया कमाए। दया कमाई आप दातार। बेड़ा सिक्खां दा लाया पार। लाज रक्खी आप प्रभ आ के। दुःख काटे दुःख भंजन आ के। सदा समरथ सदा कृपालू। पूरन परमानंद दयालू। पूरन परमेश्वर प्रभ आप कहाए। सर्ब जीआं में रिहा समाए। झूठी काया बालू भीत। सच्चा सतिगुर राखो चीत। आदि अन्त प्रभ एकँकार। काया विच जोत जगाए अपार। आपणा आप जो नर ना बूझे। नर्कवासी सच्चा दर ना सूझे। सच्ची दरगाह प्रभ रिहा समाए। भगत जनां नूं शरनी पाए। चरन कँवल विच करे निवास। सदा सहाई प्रभ गुणतास।

✻ १५ मग्घर २००६ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

सिक्खी सिक्खां दी आप विचारी। महाराज शेर सिँघ निर्भय निरँकारी। माण सिक्खां नूं आप दवाए। छड्ड बैकुण्ठ विच बैठा आए। नेत्र खोल्ह करो प्रभ दर्शन। दर्शन परसन प्रभ हरसन। मन दी हिरस अज्ज मिटाओ। प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाओ। घर विच आया सतिगुर पूरा। वजाए गवावे शब्द अनहद तूरा। शब्द मेरे दी एह धुन्कार। सोहँ करतार करतार । करता पुरख कर्म प्रभ करै। जम्मण मरन विच सिख ना परै। जिस जोत विच्चों सी प्रगटाया। इक्क बूंद तों आकार बणाया। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणाया। विच मन मति बुध हँकार टिकाया। ऐसा गोझ प्रभ आप रखाया। बैठा विच ना नज़री आया। नैणी पेखे सर्ब पसार। नजर ना आवे दातार। ऐसी ताड़ी गुफा अंदर लाई। नौं कीए प्रगट दसवें दी सोझी पाई। दसवें दा जे खोल्ह कवाड़। नज़री आवे आप करतार। कपाट ना खुल्हे बिन सतिगुर भाई। आपणी जोत जिन विच टिकाई। कृपानिध किरपा जां धारे। काया अंदर होए उज्जयारे। नाम दीपक प्रभ दए जलाए। बिन तेल बाती डगमगाए। दीवा बाती मेरा नाम। गोझ ज्ञान प्रभ गुणी निधान। गुण निधान प्रभ आप अख्वाए। लक्ख चुरासी जून विच प्रभ रिहा समाए। भगत जनां ते दया कमाए। जुगां दे विछड़े आप प्रगटाए। सिख ना जाणे मेरा खेल। विछड़यां

२१
०१

दे प्रभ मेले मेल। भगत जनां दी संगत बणाई। हरि हरि रिदे सद गाई। दिवस रैण जो मोहे ध्याए। त्रैलोकी नाथ सुत्या पाए। मुकंद मनोहर नज़री आए। लखमी नरायण दरस दखाए। निरँकार अछल ना डोले। सिक्खां संग सदा हरि मौले। मन तन सिख दा हरया होए। सोहँ शब्द रिदे परोए। ऊठत बैठत जपे मेरा नाउँ। महाराज शेर सिँघ वसे सभ थाउँ। चतुर्भुज आप प्रभ आया। सोहँ शब्द दा जाप कराया। सोहँ ओअँ मेरा नाउँ। जो जन चले प्रभ के भाउ। प्रभ का भेत ना जाणे कोए। जोत रूप महाराज प्रगट होए। सोलां कला प्रभ आप संपूरन। चौदां विद्या रसना अधूरन। विद्या दो प्रभ होर लिखाए। चार वेद भेत ना पाए। गीता विच नहीं सी लिख्त कराई ? वेले कृष्न अर्जन नूं सुणाई। होया कलिजुग हरि हरि जी आया। भगत जनां हरि में समाया। हरी उत्तम हरि हरि प्रभ होया। साध संग नैण बलोया। नैणी देख भुल्ले नादाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। विष्नूं वंसी सिख आवे। सच्चे सतिगुर दा दर्शन पावे। चरन कँवल करो प्रनाम। तीन लोक प्रभ का धाम। विच आकाश जोत सरूपा। अनहद शब्द वजाए भूपा। शब्द मेरे दी एह धुन्कार । सुण के सिख सी उतरे पार। जो ना जाणे मेरा भेउ। तिन्हां ना मिले सच्चा गुर देउ। गुर बिन कोई ना बंधन काटे। आवे जावे विकार विच हाटे।

दया धार प्रभ आप आया। गुर संगत मन मांहि समाया। मन मांहि वस्सया सच्चा निरँकार। सर्ब को देवे अधार। बिन जोत जीव ना होवे। विच काया प्रभ जोत बिमल बलोवे। ऐसा भेद प्रभ आप रखाया। कलिजुग काल सिर छत्र झुलाया। आपणा आप प्रभ आप छुपाए। मनमुखां नूं परां हटाए। गुरसिक्खां नूं आप प्रगटा के। पैज संवारी अनाथ नाथी आ के। जगन्नाथ गोपाल प्रभ आया। दु:ख भंजन सर्ब की माया। दु:ख भंजन दूखन का हंता। लक्ख चुरासी प्रभ की जन्ता। लक्ख चुरासी जून उपाई। माणस देह नूं मिली वड्याई। मानस होवे मनो विसारे। डुब्बे मँझधार ना उतरे पारे। ऐसा पर्दा आपणा पाया। निहकलंक हो मुख छुपाया। खाणी बाणी कोई ना जाणे। गगन पताल प्रभू रहाणे। हो के जीउ भेत ना जाणे। सो जाणे जिन मांहि समाणे। जिन्हां पाया मेरा भेउ। तिन्हां नूं मिल्या सच्चा गुर देउ। छिन्न भंगर छिन्न महि आवे। भरतम्बर हरि मांहि समाए। पतित पावण प्रभ आप। दु:ख भंजन अहँकार निवारन छुपाया। संसा खण्डन आपणा आप नही आप कलिजुग विच हाहाकार मचाया। हाहाकार सभ सृष्ट है होवे। भगत जनां दा रखवाला प्रभू होवे। मेरा शब्द मुखों उचार। सर्ब सूख चरन कँवल भया उधार। चरन कँवल कँवल है चरन। अतोट प्रभ सिक्खन को भवन। चरन कँवल करो निमस्कार। पापी उधरे गुर सति उधार। आप उधारे प्रभ जी सूरा। बचन ना मेरा होवे अधूरा। सोहँ शब्द सभ दा सूरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा। पूरे गुर दी एह वड्याई। सोलां मग्घर देह दीपक विच जोत जगाई। जगे जोत ओन भयो प्रकाश। गुरसिख दा नहीं विनास। सदा अरोग सदा है जीता। महाराज शेर सिँघ पतित पुनीता। पतित उधारे चरन में आए। धाम बैकुण्ठ पई प्रथाए। गुरचरन मन महि धरन। हरि हरि हरि जीव जो करन। जम का डन्न ना सिर ते धरन। मरन काल का दु:ख ना भरन। अन्त काल प्रभ होए सहाई। जोत विच लै जोत मिलाई। सच्चे सतिगुर हुक्म सुणाया। गर्भ जून तों बाहर कढाया। आवे ना जावे जन्मे ना मरे। महाराज शेर सिँघ दी शरनी पड़े। सिख जो मेरी शरनी आवे। दसवें द्वार दे पर्दे लाहवे। विच्चों आपणा आप जणाए। जोत सरूपी नज़री आए। ऐसी जोत जगे अपार। जिस जोत दा देह नूं अधार। बिन जोत जीव ना होए। अनद बिनोदी प्रभ आप है होए। निरहारी निरवैर समाए। काया अंदर बैठा ताड़ी लाए। काया कोट प्रभ ने किया। प्रभू ना जाणया भोल्लयां जीआं। माया धार ममता में रिहा। गुर तों बेमुख दुरमति देहा। दुरमति देह ओस दी होई। विच दरगाह मिले ना ढोई। दरगाह मेरी उच्च अपार। जिथ्थे वस्सया आप निरँकार। निरँकार अछल अडोल। कलिजुग हुण तोले तोल। ऐसा तोल हुण प्रभू आप तुलाए। कलिजुग दा हुण काल कराए। होवे जुग सति प्रभ सति वरताए। हरि जीउ हरि हरि थाएँ समाए। मुकंद मनोहर नज़री आए। लख़मी

नरायण भगतन का सहाए। भगत वछल प्रभ आप अख्वाए। बेड़ा सिख दा बन्ने लाए। जो सिख शरनी पड़े। चरन कँवल ते सीस आ धरे। आप प्रभू प्रभ करे अनन्द। सतिजुग दा हुण चढ़या चन्द। गया अन्धेर होया प्रकाश। जोत मेरी दा नहीं विनास। सदा अबिनाशी आप प्रभ होया। देह विनाशी आप नवां नरोआ। ऐसी किरपा आप प्रभ धारी। सदा सदा करो निमस्कारी। अछल छलण छल आप कराए। माया विच लोभी भरमाए। मति माया ने लई मार। गुर पूरे दी ना करी विचार। गुर ना बूज्झया दर ना सूज्झया। अबगत होए दर दर लूज्झया। लोक परलोक ना मिले वड्याई। विच संगत हरि हरि रसना ध्याया। होया कृपाल आप रघुराया। दया धार किरपानंद आया। होए प्रगट आ दरस दिखाया। सच्चे सतिगुर तख्त रचाया। सतिगुर मनी सिँघ उप्पर बठाया। महाराज शेर सिँघ आप करे कराया। जेहा देखो तेहा समाया। अमृत सतिगुर आप बणाया। गुरमुखां दे मुख चुआया। पीए अमृत अमर पद पाए। पूरा सतिगुर नज़री आए। करी नज़र अज्ज आप दातार। अमृत बरखे आप करतार। ऐसा अमृत आप वरताया। नाभ कमल विच्चों झिरना झिराया। झिरना झिरया निझरों भाई। गुर पूरे ने सोझी पाई। सूझ बूझ जां जीव नूं होए। महाराज शेर सिँघ रिदे परोए। रिदे जपे जो मेरा नाउँ। इस तों परे नहीं कोई थाउँ। ईश्र आप आपणा आप उपाया। कुदरत रूप ब्रह्मा नाभ विच्चों प्रगटाया।

ब्रह्मे नूं ब्रह्म सुणाया। चार मुक्खां दा सीस लगाया। चार जुग दा भेत खुल्हाया। चौंहां वेदां विच हरि रंग लिखाया। आपणा भेत आप छुपाया। सृष्ट उपाए ब्रह्मा नूं धन्दे लाया। दाता करता प्रभ आप अख्वाया। जन्म मरन भेत छुपाया। एह भेव ना कोई बूझे। बूझे सोए जिन सतिगुर सूझे। जीव जो मेरी करे वीचार। विच चुरासी होए ना ख्वार। ब्रह्म सरूप ब्रह्म मांहि समाए। जहां से उपजे तहां है जाए। ऐसी दया प्रभ आप कमाए। थिर घर दी सोझी पाए। जोत संग लै जोत मिलाए। महाराज शेर सिँघ सदा रिदे ध्याए। दास अमर एह बचन लिखाया। साल बहत्तर विच गुर दर्शन पाया। बिरध अवस्था विच ठाकर नज़री आया। दिया दरस प्रभ कर नज़री नज़र बहाया। मन आई शांत जां दर्शन पाया। गाते गुण को मुक्त सर्ब सुख पाया। गुण गोबिन्द गुर तेरा नाउँ। अमरदास नूं अमर कराओ। दया धार धर हरि जी आए। सर्ब ठौर प्रभ जी दरस दखाए। किया दरस सभ सोझी पाए। मुखों उचारे अनन्द भया मेरी माए। भया अनन्द जां दर्शन पाया। अनहद शब्द दा राग सुणाया। सुणया राग रंग रवे इकेला। अमरदास दा होया प्रभ संग मेला। मेल मिलाया हरि जीउ पूरे। वाजे जिस दे अनहद तूरे। वाजे अनहद अनाहत मेरी बाणी। रसना विच्चों सच वखाणी। सच्चो सच सच प्रभ आप वखाया। अनन्द अनन्द अनन्द मुखों उस गाया। गुर पूरे को सदा आदेस। जिस ने कीती बुधि बबेक।

पूरन बिधी बुधि ते पाई। गुर साचे दी सोझी पाई। दर साचा जां आप बुझाया। मैं ममता तों परे हटाया। पूरा सतिगुर नज़री आया। जिन पाया तिन मन मांहि समाया। जीव जो जीवत प्रभू उधार। फिर क्यों भुल्ले मुग्ध गंवार। भुल्लयां भरम ना तेरा जाए। आ के साहमणे संसा मिटाए। मन दा संसा सतिगुर तोड़े। जुगां दे विछड़े जोड़े। जुग जुग कला प्रभ धार। भगत जनां दी पैज संवार। पैज संवारे जिन्हां दी आ के। जोत सरूपी जोत तों जोत प्रगटा के। कलिजुग चरन प्रभ धरया। महाराज शेर सिँघ आसा वरया। ऐसी दया सिक्खां ते कमाए। विछड़े जुगां दे लए मिलाए। नवीं चलाई एह रीत। मोहि चरनों में रक्खो प्रीत। मैं हां ईश्र आप प्रभ ईश्र। आदि जुगादि सद जगदीश्र। जो जन निन्दया सतिगुर दी करे। नर्क कुण्ड में सदा ही जले। कुम्भी वास नर्क दु:ख भरे। धर्म राए दा डण्ड सिर परे। काल की मुंगली मारां सिरे। जून घोगढ़ विष्ट उह पड़े। जिस मुख नाल निन्दया करे। विष्टा विच चुंझ उह धरे। जन्मे मरे मरे मर जन्मे। सतिगुर किरपा मिले ना सरने। नमो नमो करो प्रभ अन्तरजामी। मधसूदन दामोदर स्वामी। श्री गुण श्री पत आप निहकामी। रिद्ध सिद्ध दा दाता प्रभ अन्तरजामी। रिद्ध सिद्ध नौं निध दा गुर खोल्ह दिया भण्डार। आपणी दात आप वंडी दातार। गुरसिक्खां नूं लाया पार। भया दीन दयाल विष्नूं भगवान। जिस ने दित्ता ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ सदा दयाल।

२४
०१

✻ १६ मग्घर २००६ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

दया धार सिख उधारे। जम कंकर ना इन को मारे। अन्त समें प्रभ होवे सहाई। महाराज शेर सिँघ लिख्त कराई। दर्शन दे देह छुडाए। जोत विच जोत मिलाए। आवे ना जावे थिर रहावे। सच घर बैठा नित दर्शन पावे। ईश्र सागर कँवल सिख होए। गुण निधान बिमल प्रभ होए। कँवल कुंभ काया दा रच्चया। करी मेहर आप प्रभ सच्या। मल मूत्र दा एह जो पाट। जिस विच जोत जगाई ललाट। अन्ध घोर आप प्रभ वस्सया। आपणा भेत ना जीव नूं दस्सया। आपणी वस्त प्रभ आप टिकाई। नाड़ी बहत्तर देह बणाई। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक बैकुण्ठ तजाया। पाताल विच सेज बाशक तों परे हटाया। मातलोक विच खेल रचाया। शेर सिँघ निरँकार जे आया। निरँकार नर आप कहाए। नर अवतार धार प्रभ आए। त्रेते विच राम अवतारी। चौदां कला विच देह धारी। फिर ब्रह्मण दा माण गंवाया। परस राम नूं सरनी पाया। कला दो लै खेह रलाया। होया द्वापर आप कृष्न मुरारी। द्वारका वासी कीती खेल अपारी। पुठ्ठी मति आप प्रभ कीती।

घर पाडवां कौरों बदली नीती। कलिजुग विच कला प्रभ धारी। सृष्ट तांईं हुण पई ख्वारी। ऐसी दुरगत इन्हां दी होए। सतिगुर मनी सिँघ बिना राखे ना कोए। चार कुन्ट होवे धुंदूकार। गुरसिक्खां घर होवे जै जैकार। जै जैकार करावे प्रभ आप। सिक्खन दे लाहे सन्ताप।

✼ १७ मग्घर २००६ बिक्रमी ✼

कल धार कलिजुग विच आया। निहकलंक आप अख्वाया। निराहारी निरवैर समाया। धार खेल चतुर्भुज अख्वाया। आपणा नाम आप जपाया। सोहँ शब्द जहाज़ बणाया। जेहड़े चढ़े सिख उतरे पार। बणया मलाह आप करतार। ऐसा चप्पू आप लगंवाए। हरि हरि रिदे समाए। हरि हरि हरि होया प्रभ आप। सच वड मेरा प्रताप। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तजाया आप। बैकुण्ठ बणाया अज्ज लोकमात। वेला अमृत अमरू आया। आपणा बिरद आप रखवाया। ऐसा झिरना आप झिरावे। अमृत बूंद कँवल में पावे। खुल्हे कँवल गुर नज़री आया। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। दरस देवे आप गुर सूरा। थिर घर वासी सदा भरपूरा। चातृक वांग सिख बिल्लावे। होया कहर प्रभ आप छुडवावे। कलधार विष्नूं आया। अनन्द बिनोदी ना भेत जतलाया। छिन्न भंगर आप निहकामी। भरतम्बर सदा आप स्वामी। अछल छलन छल आप कराए। बेमुखां तों मुख छुपाए। गुरसिक्खां नूं दित्ती दात। सोहँ शब्द वड्डी करामात। मेरा शब्द मेरा सरूप। आदि अनन्त सदा अनूप। तीन लोक दा वासी आप। जोत सरूप सदा व्याप। आपणी जोत सभ सृष्ट जगाई। सभ वड ईश्र वड्याई। ईसा मूसा ईश्र उपाए। अन्त आप आपणे विच मिलाए। मुहम्मदी प्रभ ने आप उपाए। अन्त समें हुण आप खपाए। चार वेद ब्रह्मे लिखवाए। गया कलिजुग उह गए समाए। होए जुग सति सति सति वरताए। आपणे नाम दी जै जै जैकार कराए। प्रगट होए नज़र ना आवई। मनमुखां दे छाही पाई। आपणयां सिक्खां ते दया कमाई। वेले अमृत जोत प्रगटाई। प्रगटी जोत होया प्रकाश। कलू कलेश होया विनास। अमृत वेले अमृत वरताया। गुरसिक्खां दे मुख चुआया। दु:ख दलिद्र एहनां दा लाहया। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। दरस दित्ता प्रभ आप आ के। वेले अमृत अमृत बणा के। मेरे अमृत विच एह वड्याई। गर्भ जून विच्चों लए बचाई। जम कंकर नेड़ ना आई। अन्त समें प्रभ होए सहाई। पिया अमृत अमर हो रहया। सदा सुक्ख निर्मल होवे जिया। जिया निर्मल होए ज्ञान। प्रभ आपणे नूं लए पछाण। आत्म जोत जोत है सोए। अन्त अनन्त रिदे परोए। नर सिँघ रूप आप बणाया। प्रहलाद दे सिर छत्र झुलाया। ध्रू नूं माण दवाया। होए

दरबान महां सुख पाया। बावन रूप आप हो आया। बल राजे नूं गल लगाया। बाशक रिख दा माण गंवाया। चक्र सुदर्शन ऐसा लाया। जनक उत्ते ऐसी दया धारी। अठारां कुण्ड पार उतारी। लज्जया रक्खी द्रोपत दी आ के। द्वापर विच कृष्न अख्वा के। ईशर दा एह खेल अपार। हरी चन्द नूं दित्ता तार। ऐसा उस दा माण गंवाया। संगत विच परखणा चाहया। ऐसी परख आप दिखाई। खड़ाउं जोड़ी आप जुड़ाई। बिदर नूं माण दवाया । दुर्योध्न नूं परे हटाया। साग अलूणे नूं भोग लगवाया। भाउ भगत दा फल सी पाया । सुदामे उत्ते होया कृपाल। चरनी डिग्गा दीन दयाल। खड़या आप उप्पर सिँघासण आए। लै चरनोदक धन्न धन्न धन्न कहाए। उस दलिद्री नूं दित्ता माण। द्वारका वासी कृष्न भगवान । नाम देउ ने नाम ध्याया। मुकंद मनोहर नज़री आया। अज्ज भोग भगतन केरा। सच्चा सतिगुर करे नबेड़ा। जिथ्थे कोई ना देवे माण। ओथे पहुंचे जाणी जाण। आपणा बिरद आप संभाले। पतालों कढु आकाश बहाले। बिन बंधन ना कोई बांधे। हुक्म अंदर सभ लै आंदे। बंध टूटे होई बन्द ख़ुलासी। थिर रहे आप सर्ब निवासी। बन्दी छोड़ आप अख्वाए। मुक्त जुगत जोत की चाल चलाए। सच्चा सतिगुर सदा ध्याए। सोहँ मेरा शब्द सहाए। कोट अपराधी प्रभ जी तारे। महाराज शेर सिँघ दया धारे। मच्छ कच्छ हो हरि जी आए। विच सागर जीअ जन्त तराए। लक्ख बताली नूं दरस दिखाया। लक्ख चुरासी जून दा अद्ध तराया । बताली लक्ख धरत पर धरे। तरन तारन प्रभ आप दयाल। भगत वछल सदा कृपाल। कृपानिध किरपन प्रभ होया । सदा है जागत कदे ना सोया। उन्नी सौ पंजाह बिक्रमी प्यारी। जेठ पंजवीं मंगलवारी। भगवान विष्नूं जां कलाधारी । निहकलंक भया अवतारी। विच त्रेता रमो राम आया। द्वापर कृष्न भगवान घनकपुरी घनशाम आया। ताबो तांईं माण दवाया। धरनी धर नर सिँघ नरायण आया। दाढ़ां नीचे पृथ्मी नूं चबाया। हाहाकार कर जगत रवाया । भगत जनां जैकार कराया। जै जै जै गुर साचे की जै। आदि अन्त सदा निर्भय। निरहारी निरवैर समाए। धार खेल चतुर्भुज अख्वाए। सवल सुंदर प्रभ रूप बणाए। बैण सुणत सभ ही थांए। सर्ब थांईं प्रभ वस्सया आप। जिस दा प्रकाश सदा दिन रात। दिवस रैण प्रभ एक समान। नैणी पेखो विष्नूं भगवान। पास भगत प्रभ चल के आया। मातलोक विच दरस दखाया। कृपानिध किरपा प्रभ करे। दूख कलेश संगत का हरे। जम का डन्न सिर ना परे। अन्त काल मिले हरि हरे। आप अपरम्पर है जल थले। चातृक वांग संगत बिल्लाई । गुर दर्शन को फिरे तिसाई। दिवस रैण प्रभू जस गाई। दोख दुष्ट से लिउ बचाई। सुणी पुकार आप दातार। कलिजुग विच हो आया विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ सच नीसाण। निओटिआं ओट निताणयां ताण। निरधन नूं देवे आप माण। सोहँ गुर का परवान। सोहँ शब्द प्रभ आप लिखवाया। सतिजुग

विच प्रचलत कराया। बाकी सभ दा काल कराया। गुर संगत नूं देवे दान। सोहँ शब्द है मेरा नाम। रिदे ध्याओ सर्ब
सुख पाओ। विच चुरासी फेर ना आओ। नाम मेरे दी एह वड्याई। जिस सिमरत तृखा लह जाई। सोवत को प्रभ लए
जगाई। टुम्ब उठाल प्रभू दए जगाई। दरस देवे आप प्रभ आ के। सुत्ते सिख नूं पकड़ उठा के। कलिजुग विच होया
कृपाल। सुफने विच करे नज़री नज़र निहाल। पवण में जोत जोत में पवण। इस ते उप्पर नहीं कोई गवन। जोत सरूप
जोत प्रभ धरे। उनन्जा पवण सिर चवर करे। जोत प्रभू की लट लट जले। सदा अडोल ना उह डले। उस विच्चों
प्रभ किरपा करे। सर्ब जीउ में किणका धरे। जीव जन्त विच जोत टिकाई। किसे ना सूझी मेरी वड्याई । जिस नूं सूज्झया
सच्चा दर बूज्झया। सच्चा दर सच्चा घर सच्चा मेरा नाउँ। प्रभ अबिनाशी वसे हरि थाउँ। ऊठत बैठत ईश्‍र गुण गाओ।
सोहँ शब्द मन वसाओ। मन्नो बचन चलो गुर भाउ। प्रभ अबिनाशी घर में पाओ। कोट ब्रह्मण्ड दा दाता आप। आपणा
आप कराए जाप । सभ तों वड्डा मेरा प्रताप। जो ना समझे मेरा मुख वाक्। तिन को मारे आप तीन ताप। काल व्यापे
होए दु:ख घने। जो ना हुक्म मेरा मन्ने। मेरा शब्द जो नर सुणे। अनहद शब्द दी मन में धुने। धुनत धुन धुनत का ज्ञान
२७ आवे। सच्चा सतिगुर बचन लिखावे। महाराज शेर सिँघ नज़री आवे। बाहों पकड़ प्रभ बन्ने लावे। गुरसिक्खां नूं गुर २७
०१ धाम पुचावे। जन्म मरन दा पन्ध मुकावे। कलिजुग विच एह दया कमाई। साची लिख्त गुर सच्चे लिखाई। धन्न गुरसिख ०१
जिन्हां सोझी पाई। तीन लोक विच मिले वड्याई। धन्न धन्न धन्न सभ कहे लोकाई। महाराज शेर सिँघ दी जिन सरन
तकाई। सरन विच सिख जो आया। मन दा संसा गुर गंवाया। जो आए प्रभ रिदे ध्याए। प्रभ चरनां संग लए मिलाए।
बेमुखां तों गुरसिख बणाए। माणस देह पाई प्रथाए। थिर घर विच प्रभ आप बहाए। जोत विच जोत समाए। महाराज शेर
सिँघ दया कमाए। आपणा शब्द आप सुणाए। सोहँ सो पुरख निरँजण। दीन दयाल सदा दु:ख भंजन। महाराज शेर सिँघ
त्रिलोकी नंदन। आप तोड़े सिक्खन के बंधन। गुर का सिख प्रभास विच चन्दन। जिस नूं छोहे सर्ब दु:ख खण्डन। आप
प्रभ आप भय भंजन। मेरा सिख जगत का अंजण। नेत्र में पेखे टुट्टे जम फंदन। नेत्र में पाए गुर काटे बंधन। सोहँ
शब्द दी मन होवे रंगण। महाराज शेर सिँघ सदा रंग बरंगण। रंग रूप ना नज़री आए। पूरन विच रिहा समाए। जोत
जगत दी आप जलाए। आपणा भेत ना किसे बताए। आपणी महिमा आप जणाए। आप आपणे विच समाए। कलिजुग
विच एह कर्म कमाए। छड्डी देह जोत रूप हो आए। पूरन सिँघ दी देह विच प्रभ गया समाए। कुक्ख माता दी सुफल
कराए। पाल सिँघ ते दया कमाई। हो कृष्न प्रभ दरस दिखाई। बाल रूप प्रभ लुभाणा। भुल्ला सिख फिरे अञ्याणा।

बिना गुर मिले ना सच टिकाणा। जोत जगवावे सिँघ है माहणा। बचन असाडे सदा सुणाए। मनी सिँघ दा सिख कहाए। महाराज शेर सिँघ दी जिन सरनी पाया। ओस तों सुणया बचन आया। आप तुठ्ठा सच्चा दातार। हो के आया कृष्न मुरार। पाल सिँघ नूं दित्ता तार। ऐसी सतिगुर बणाई थाट। जोत जगाई विच ललाट। जाचक नूं दित्ता एह दान। पाल सिँघ नूं उत्तम ज्ञान। जिस सुहाया एह सोहणा थान। गुर दरस दा वज्जा बाण। दरस मेरा सदा है लोड़े। चरन कँवल संग मन नूं जोड़े। दया धार प्रभ दरस दिखाया। निजानंद प्रभ विच्चों वखाया। ओस ने सी एह कर्म कमाया। सिक्खां नूं सरनी पाया। उस दा माण असां रखाया। चवी चेत उन्नीं सौ सतानवें नूं आकाश बठाया। हरि जीउ हरि हरि नज़री आया। महाराज शेर सिँघ सदा सवाया। सदा अटल्ल होए गुर सूरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा। सच्चा सतिगुर साच लजाए। साच साच सच रिहा समाए। सच सुच्च प्रभ साचे भाए। जूठे झूठे प्रभ सरन ना लाए। सच्चा सिख सच्चा प्रभ आप। साची सिख्खया सच्चा गुर जाप। सच्चा शब्द लाहे तिन्न ताप। महाराज शेर सिँघ जपो दिन रात। दिवस रैण जो मुझे ध्याए। सोवत जागत दरस है पाए। सोवत जपो जागे गुर पूरा। दरस दिखावे है सदा हज़ूरा। सच सदा मेहरवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। जिस नूं दित्ता एह ज्ञान । चरन कँवल विच रखो ध्यान। दर्शन पाओ नेत्री आण। आप पछाणो जाणी जाण। जिस दा दित्ता पहनण खाण। जीउ पिण्ड एह देह दा दान। कर्म धर्म प्रभ आप लिखाए। धन्न गुरसिख, जो शरनी लाए। लाए शरन सर्ब सुक्ख दिया। सदा सुहेला निर्मल जिया। अमृत नाम महारस पिया। सोहँ शब्द ज्ञान गुर दिया। ज्ञान दिया गुर साचे एक । जिस सिमरत होए बुध बिबेक। नज़री आवे एकन एक। महाराज शेर सिँघ दी जिन पकड़ी टेक। गुर राखा गुर किरपा करे। भव जल अन्ध सिख ना हर। अन्त काल प्रभ किरपा करे। महाराज शेर सिँघ जप हरे हरि हरे। बचन सुणे जिस दी बण आए। जिस नूं सतिगुर सरनी लाए। गुर संगत विच माण दवाए। गुर संगत विच प्रभ रिहा समाए। संगत बैठी चार किनारी। विच है बैठा शेर सिँघ निरँकारी। नाम निरँजण मैं हां आप। सभ तों वड्डा है मेरा प्रताप। करी किरपा दित्ती वड्याई। मुख वाक् गुर संगत कन्न पाई। चार जुग बाणी है रचाई। पेखत सुणत सर्ब सुख पाई । आवण जावण दा पन्ध मुकाई। ओहो भुल्ली फिरे लोकाई। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाई। हाज़र हो दरस दिखाई। महाराज शेर सिँघ होया सहाई। मनी सिँघ विच जोत जगाई।

✻ १८ मग्घर २००६ बिक्रमी ✻

किरपा आप करे निरँकार। घनकापुरी विच जामा धार। सच्चा सतिगुर सच्ची सरकार। दे के दरस लाए संगत नूं पार। हुक्म आपणा लिखाए अपार। मेरा सिख ना होए ठग्ग चोर यार। सच्चा मैं आप सच्चा दीबाण। सच्चा मेरा हुक्म सच नीसाण। पुरख निरँजण जाणी जाण । प्रगटी जोत विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ सदा मेहरवान। आदि जुगादि प्रभ एकँकार। सृष्ट सबाई प्रभ की नार। अज्ज प्रभ परमेश्वर आया। भगत जनां चरन संग लाया। चरन संग प्रभ जो आए। साचे गुर दा दर्शन पाए। गुर सच्चा गुर सतिगुर सूरा। सदा समरथ सदा भरपूरा। सदा भरपूर ना कबहूं डोले। जोत सरूपी सभ जग मौले। उपाए जगत प्रभ खेल बणाया। हर जीउ विच प्रभ आप समाया। उह वेखे उह नज़र ना आए। आपणा भेत ना प्रभ जताए। जिस ने भेव प्रभू का पाया। द्वार दसवें दा पर्दा लाहया । खुल्हे कपाट गुर नज़री आया। आन बाट प्रभ फंद तुड़ाया। समदरसी प्रभ दरस दिखाया। अनहद शब्द मन वजाया । वज्जया वाज धुनत धुन होई। एस शब्द नूं बूझे कोई। सो बूझे जिस आप बुझाए। बिन गुर सोझी कोई ना पाए। जिस ते दया प्रभ आप कमाए। सरगण निरगुण हो दरस दिखाए। विच्चों जोत जोत प्रगटाए। समें अनुसार प्रभ काया पल्टाए। सतिजुग विच मेहरवान हो आया। त्रेते विच राम रघुबंस अख्वाया। विच द्वापर मुरार कृष्न बण आया। कँवल नैण मुकट बैण सिर उप्पर टिकाया। कंस केसी पकड़ गिराया। दुष्टां दा माण गंवाया। राउ तों कर रंक बहाया। फेर आपणा तेज चढ़ाया। किरपा कीती नाथ अपार। द्वारका उप्पर गोवर्धन सवार। महासार्थी आप अख्वाया। रथ अर्जन दा आप चलाया। सारा संसा उस दा लाहया। बराट रूप हो दरस दिखाया। सृष्ट सारी नूं मुख विच पाया। कौरों पांडो दा युद्ध कराया। बिन शस्त्र प्रभ युद्ध मचाया। सभ सृष्ट खेह रलाया। द्वापर दा समां मुकाया। कलिजुग सतिगुर आप प्रगटाया। जीव जन्त पाई माया। ऐसी माया आप प्रभ पाई। मदि मास आहार बणाई। फेर एह चलाई चाल। मूसा घल्लया आप दीन दयाल। बुद्धि विच भरया एह ख्याल । कलिजुग विच पहन जामा महान। ऐसा कर्म उस आण कमाया। मदि मास इक्क खेल बणाया। भगवान कृष्न दा माण गंवाया। गऊआं उत्ते हत्थ उठाया । ऐसी खेली उस एह कार। अग्न विच दित्ती सृष्टी डाल। येसू तांईं फिर हुक्म सुणाया। मरिया कुंवारी पेटों जन्म दवाया। ओस नूं पढ़ाई पट्टी। मदि मास तों कालख खट्टी। राम कृष्न जो ध्याए। उन्हां दा काल कराए। मदि मास जो नर ना खाए। उन्हां उत्ते कहर कमाए। फेर कीता खेल निराला। मुहम्मद बणाया जगत दयाला। अथर्बण वेद सच्चा कर वखाया। ऐड़े तों अल्ला बणाया। अल्ला अल्ला सो गुर सी मेरा। राम कृष्न

दा किया नबेड़ा। उस ने ऐसा राह चलाया। दीन मुहम्मदी नूं सी बताया। बन्दा ख़ुदाए ख़ुदी विच आया। उम्मत तांईं रसूल बताया। राम कृष्न नूं दिलों भुलाया। सारा माण उन्हां दा गंवाया। चार कूट आपणा डंक वजाया। अन्त समां हुण उस दा आया। राम कृष्न दा जामा पल्टाया। महाराज शेर सिँघ शेर हो आया। जुग चौथे दा नास कराया। कलिजुग नूं काल हो खाया। सच्चा सतिगुर सच्चो सच समाया। करो दरस बैठा रघुराया। नैणी पेखो मन शांत सुक्ख होए। दुःख दलिद्र रहे ना कोए। भय भयानक विच प्रभ होए सहाई। भव सागर विच्चों लए तराई। सतिगुर नौका नाम बणाई। चढ़ के सिख परमगति पाई। सोहँ शब्द दी एह वड्याई। गुरसिख गुर दे बुझाई। बुझी आत्मा प्रभ दए जगाई। दर्शन पेख मुखों जस गाई। महाराज शेर सिँघ धन्न जिस दया कमाई। जिस ना पेख्या नर्क नूं जाई। धर्म राज सिर डण्ड लगाई। हाहाकार करे बिल्लाई। अग्न कुण्ड विच दे जलाई। प्रभ भुल्ला ठौर नाही। सतिगुर सच्चे एह लिख्त कराई। दरगाह सच्ची ना झूठी राई। महाराज शेर सिँघ होए सहाई। सर्ब दुःख तों लए बचाई। अन्त काल प्रभ दरस दिखाई। गुरसिख नूं गुर बन्ने लाई। बैठाल लवे प्रभ विच बबाण। दर्शन दे के कीता ज्ञान। गुण अवगुण ना विचारे। कर किरपा प्रभ पार उतारे। पूरन गुर पूरन एह काम। सिख पहुंचावे बैकुण्ठ धाम। बैकुण्ठ धाम प्रभ का वास। इस नूं सिमरो स्वास
३० स्वास। रसना सिमरो हरि गुण गाओ। प्रभ अबिनाशी घर में पाओ। जन्म मरन दे दुःख मिटाओ। विच चुरासी फेर ना ३०
०१ आओ। चरन कँवल विच सीस निवाओ। थिर घर कर वास सदा सुख पाओ। आउण जाण गर्भ का हरया। पूरे सतिगुर ०१
काम एह करया। गुरसिक्खां उत्ते दया कमाई। गर्भ जून तों ल्या छुडाई। हरि दी जोत हरि मांहि समाई। जहां उपज्या तहां गया समाई। महाराज शेर सिँघ लिख्त कराई। साध संगत विच प्रभ रिहा समाई। गुरू गुर करो मन मोर। गुर बिन नाहीं होर। गुर साचा गुर नाहीं होर। जन्म जन्म विछड़े गुर लैंदा जोड़। बेमुखां नूं देवे तोड़। बाझ गुरू नाही होर। गुरू मिले गुर दे वड्याई। गुर साचा साची मति पाई। गुर साचा गुर रिहा समाई। भगत जनां हरि जस गाई। होए कृपाल प्रभ जोत प्रगटाई। बैठा संगत विच नज़री आई। वेखे सुणे परखे वेखे परखे। बिन नाड़ी एह पिंजर खड़के। आपणा संसा सारे लाहो। पूरन सिँघ दी नब्ज़ नूं हत्थ है लाओ। ऐसी एह चली चाल। नब्ज़ ना चले आपणी चाल। भेत ना आपणा गुरू रखाया। प्रगट हो के दर्शन दिखाया। सच्चा तख्त गुर सच्चे बणाया। सिँघासण प्रभ नाम रखाया। सिँघासण उप्पर प्रभ बैठा आए। कलिजुग तांईं दए उलटाए। ऐसी दित्ती इस नूं हार। मूंह काला दुष्ट दुराचार। कर्म धर्म इस विच ख्वार। लज्जया ओस ने दित्ती उतार। प्रगट होया आप करतार। कलिजुग दा हुण कीता काल। सतिजुग

३१
०१

सच सच्चो सच होए। सोहँ शब्द प्रचलत सच्चा होए। वक्त उह नेड़े आया। जिस वेले प्रभ सृष्ट रुलाया। ऐसा कहर वरते आ के। दुष्ट भस्म होए धक्के खा के। डिग्गे सरन गुरू दी आ के। बचावे गुर सिर हत्थ टिका के। मारे ना कोए जिस आप बचाए। जो जन प्रभ का दर्शन पाए। प्रभ सरन संग रहे समाए। घर साचे दी सोझी पाए। सच्चा सतिगुर सच दए वखाए। जोत सरूप प्रभ नज़री आए । जन्म मरन दे दुःख मिटाए । बिन गुरू कोए ना बांधे धीर । गुरू विछुन्ना जिउँ मां दा सीर। आवण जावण होया सुहेला। सच्चा सतिगुर नहीं दुहेला। दूख निवारन प्रभ आप स्वामी। किरपा करे सदा नेहकामी। गुण निधान आप प्रभ होए। जो पड़े शरन सो लए परोए। गुरसिक्खां दी गुर सुणदा सोए। वेखे विगसे करे सोए। जोती जोत निरँजण सोए। कँवल बिगासे आप प्रभ होए। सदा सदा प्रभ आप कृपाल। भगत वछल दीन दयाल। दीन दयाल दयानिध करे। गुरसिक्खन संग बेमुख तरे। सरवणी सुण सुण मेरा नाउँ। मोन धार प्रभ गुण गाओ। हिरदे वसे हरि जीउ आप। आपणा आप करावे जाप। जो ना जपे ईश्वर नाउँ। तिन्हां ना मिले दरगह ठाउँ। सिख चातृक सदा बिल्लाए। गुर दे दर्शन स्वांती बूंद पिलाए। बचन गुरू रसना अकरखे। मेघ वांग गुरू शब्द है बरख़े। आप आए प्रभ दरस दिखाए। घाल सिक्खां दी पाई थाएँ। सच्चा सतिगुर जाणी जाण। दर्शन पेखो विष्नूं भगवान। विष्नूं भगवान जोत एह धरी। सच्चा सतिगुर आसावरी। दर्शन दिखाया आप प्रभ हरी। छिन्न आवे देर ना लावे घरी। ना नेड़े ना दिसे दूर। जहां देखो तहां हज़ूर। मैं हां बैठा गुर भरपूर। बेमुखां तों दूरो दूर दूरो दूर। साध संगत मेरे चरनां दी धूढ़। रंग चलूल गूढ़ो गूढ़। संगत विच आवे मूढ़। मुख उप्पर फेरे चरन धूढ़। लत्तां दे प्रभ लाहे जूड़। जे ना सिख समझे मूढ़। सच्चा सतिगुर नहीं जे कूड़। नेत्री लावां उस दी धूढ़। मन विच होए एह सरूर। रोग हँगता होए दूर। सतिगुर निर्मल वांग कपूर। सिर शाहां शाह सिर सूरा सूर। अबिनाशी प्रभ सदा हज़ूर। झूठी दुनियां कूड़ो कूड़। जो आए गुर पग मांहि। गुर के बचन मन मांहि समांहि। फिर पूरा गुर दया कमाए। चतुर्भुज हो दरस दिखाए। चार वरन प्रभ चरनीं लाए। ऊँच नीच प्रभ संग रलाए। सभ को किया एक समान। मक्खण वरोल्लयां नाल मधाण । ऐसा वरोला सतिगुर देवे। हाहाकार कर सृष्टी रोवे। सिक्खां नूं प्रभ लए संभाल। बेमुखां नूं दित्ता गाल। पहली वार सी मेरा चमत्कार । दूजी वार करां ख्वार। घर घर होवे हाहाकार । बैठा वेखे आप करतार। पिण्ड बुग्घा जिथ्थे सच्ची सरकार। कर के दर्शन सिख उतरे पार। गुर बेड़ी विच मँझधार। बन्ने लावे भव सागर तार। आपणी पैज रक्खे निरँकार। सोहँ शब्द दी सदा जै जै कार। मैं हां आप ओंकार। सच्चा ओह खण्ड जिथ्थे वस्सया निरँकार। महाराज शेर सिँघ अगम्म अपार। सभ को दिया

जोत अधार। गुरसिख बोले निरँकार निरँकार। पारब्रह्म प्रभ अन्तरजामी। सिक्खन को प्रभ बणावे दानी। दान देवे उत्तम मेरा नाउँ। जो पूछे मेरा ठाउँ। सोहँ शब्द मेरा नाम सुणाओ। प्रभ अबिनाशी निज में पाओ। गुर सेवा कर गुरसिख कहावे। सेवा सिख नूं माण दवावे। सेवक जो सेवा करे। सुक्के काष्ट प्रभ करे हरे। बच्चिआं दा प्रभ देवे दान। सच्चा सतिगुर जाणी जाण। पूत बिना माता बिल्लाए। जिउँ मच्छली बिन नीर तड़फाए। बिन गुर जीव नर्क में जाए। जे गुर आपणी शरनी लाए। बाहों पकड़ बैकुण्ठ बहाए। साची जोती सच मांहि समाए। महाराज शेर सिँघ वस्सया थाएँ। नैणी वेखो सर्ब दुःख जाए। आप उधरो आपणी कुल उधारो। शब्द मेरा मन विचारो। कल्लर विच कौल हो जाओ। मदि मास रसना ना लाओ। तां गुर पूरे सिख कहाओ। गुर संगत विच गुरमुख बण जाओ। गुरसिख सो जो गुरू पछाणे। गुरमुख सो जो चले गुर भाणे। गुरमुख सो गुर रिदे ध्याए। पारब्रह्म दी उह साची नाए। गुरसिख सो जो ब्रह्म पछाणे। सच्चा सतिगुर सच नीसाणे। महाराज शेर सिँघ खोटे खरे पछाणे।

३२
०१

इक्क सवाली दर ते आया। कच्ची कंध जिथ्थे नानक बहाया। धोखा किया ते पाई माया । गिरे कंध नानक नास कराया। कंध खड़ी रही अडोल। गुरू नानक सी गुर अमोल। ना उह तुल्या आप अतोल। पंदरां सौ चुताली बिक्रमी एह खेल रचाया। नानक निरँकारी शादी करन बटाले धाहया। भेख आपणा सी एह बणाया। सिर सेली टोपी गल चोला पाया। घर सौहरे जवाई आया। लोक लज्जया ने मार मुकाया। कंध हेठ सी उहनूं बहाया। डिग्गे कच्ची कर दए सफ़ाया। सदा अटल्ल रहे रघुराया। बिनां थम्म्हां जिन गगन रहाया। उस कच्ची दा कच्च गंवाया। कूड़यां नूं कर सच वखाया। नानक घल्लया आप निरँकार। मुखों उचारे करतार करतार। होए सहाई आप दातार। रुढ़दा बेड़ा देवे तार। उस अस्थान तों एस आ के। बेनती कीती संगत सुणा के। दिलों पुकारया डाहढा घग्या के। दुःख दित्ता मुहम्मदीआं जोर ला के। गए मुहम्मदी सिख पै गए धाह के। कोई ना पुच्छे साडी वात। इस लई कीती फरयाद। उथे कोई ना चले जोर। तेरे बिना नहीं होर। चल के आया तेरी ओर। करो सहायता विच अन्ध घोर। मेरा ओथे कोई ना ज़ोर। कर किरपा एह बचन लिखावां। भूत प्रेत दा भय दिखावां। कलेश इस दा सारा लाहवां। सच्चा सतिगुर तां अखवावां। जो बोल्लया सो पूरा तोल्लया। ना रोल्लया ना रोल घचोल्लया । सदा अडोल कदे ना डोल्लया। सच्चा सुखन रसना विच्चों बोल्लया। ऐसी मेहर आप कमावां। लक्खां ताईं सुफल करावां। आवण जावण देवां पहनण खाण। किसे पासिउँ ना होवे काण। सच्चे

सतिगुर लाया बाण। मन धार इच्छया जो संगत आई। गुर पूरे ने आस पुजाई। घर साचे विच्चों मिली वड्याई। दुःख दलिद्र नष्ट जिस कराई। आसा मनसा प्रभ पूरी करे। जो जीव आण शरनी परे। परे शरन संग लए मिलाए। चरन कँवल संग गया समाए। दुध्ध पूत प्रभ देवे दान। सोहँ शब्द उत्तम ज्ञान। गोझ ज्ञान प्रभ आप बताया। सोहँ शब्द दा जाप कराया। पोह ना सके जगत दी माया। कलिजुग विच जिन मन बंधाया। जिस मन वस्सया सो सिख पूरा। दरस दिखावे गुर सूरा। मिटी तृखा जां दर्शन पाया। अमर प्रभ आप रघुराया। बेड़ा सिक्खां दा बन्ने लाया। तेज होवे दिनो दिन सवाया। काम क्रोध नूं परे हटाया। लोभ मोह हँकार तजाया। मन मति बुध विच समाया। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणाया। जोत सरूप विच हरि जीउ आया। आप वेखे उहनां नज़र ना आया। ऐसा आपणा आप छुपाया। वाजा पवण काया विच वजाया। काया कोट गढ़ आप बणाया। खम्ब भंबीरी दा पर्दा पाया। जिथ्थे आपणा आप छुपाया। जे गुर वखाए तां नज़री आया। द्वार दसवां आप खुल्हाया। सच्चा शब्द जां मन वसाया। जीहदा खुल्हिआ एह द्वार। सो सिख उतरे भव जल पार। सच्चा सतिगुर सदा कृपाल। महाराज शेर सिँघ सदा दयाल। पूरे गुर एह कर्म कमाया। हाज़र हो के दरस दिखाया। सारा संसा दिल दा लाहया। आवण जावण दा पन्ध मुकाया। प्रभ अविगत अबिनाशी घर में आया। जो देखो तिन नज़री आया।
३३ ०१ हरि पेखे हरि हर मांहि समाया। आप गुर गुण गोबिन्द गाया। भगत वछल जग बिरद रखाया। सर्ब सूख हरि नाम ३३ ०१
सुणाया। मोए पंच सर्ब सुख पाया। माया ममता दा मन्दर ढाहया। अनहद शब्द मन वजाया। गुर राग कन्न सिक्खां पाया। जो जन सुणे गुर का नाउँ। तिन को मिले दरगह ठाउँ। सुफल कराए आपणा काम। प्रभ दर्शन का लीजे दान। नैणी पेखे क्यों झल्ले नादान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। तीन लोक में आप प्रधान। पवण में पवण जोत में जान। नीर में कँवल कँवल प्रभ ताण। गुरसिख दा गुर कीता माण। बाहों पकड़ दित्ता बहाल। ऐसा शब्द आप सुणाया। विच बैठा रघुनाथ रघुराया। आदि अन्त हर थाईं समाया। शरन परे तिन नज़री आया। होए शांत तिन नज़री आया। गुण निधान लिख लेख लिखाया। लिक्खया लेख प्रभ दए मिटाया। मातलोक विच धार जोत जो आए। आपणा खेल प्रभ आप खिलाए। साध संगत विच लए मिलाए। साध संगत सति कर जाण। जिथ्थे प्रगटे आप भगवान। सच्चे नाम दा देवे दान। बुद्धि बुध बबेक बबाण। फिर सूझे आवण जाण। निथावें नूं प्रभ देवे थान। आई संगत होई परवान। पूरे गुर कउ सदा सदा कुरबान। निरवैर गुर निरवैर प्रभ जाण। हर जीव में मेरी जोत जाण। जोत बिन जीव ना होए। हड्ड मास नाड़ी पिंजर खाली होए। बिन बाती दीपक दी लोए। गुर बिना ज्ञान ना देवे कोए। गुर तुट्ठे एह बख्शे दात। सोहँ

शब्द सच्ची करामात। उधरे सो जपे दिन रात। ऊँच नीच ना वेखे गुर ज़ात पात। सर्ब सहाई सर्ब के साथ। रक्खो टेक एक रघुनाथ। बिन गुर साचे ना बूझे कोई। बिन गुर पार ना उतरे कोई। गुर सिख नूं बन्ने लाए। बाहों पकड़ प्रभ पार पुचाए। सचखण्ड वसे आप निरँकार। साचा गुर सच सिरजणहार। पूरन पुरख अगम्म अपार। जोत सरूपी जोत अधार। होए कृपाल लै जामा धार । मातलोक विच आप करतार। डूबे सिख लए प्रभ तार। सरनी लाए सच्ची सरकार । सिख सरन जो मेरी परे। किलविख पाप तिन के हरे। दुबदा मैल मन में धरे। हो निन्दक मेरी निन्दया करे। कुंभी नर्क सदा ही जले। धर्म राए दा सदा दुःख भरे। दुखिया हो दुखी बिल्लाए। मैं भुल्ला प्रभ लै छुडाए। गया वक्त हत्थ ना आवे। भरमे भूला चोटां खाए। महाराज शेर सिँघ नज़र ना आए। कलिजुग विच जिन सिख तराए। सिक्खी सिख्खया गुर आप विचारी। गुर आगे गुर पैज संवारी। सदा जपो विष्नूं निरँकारी। हो मेहरवान आप गिरधारी। बाहों पकड़ प्रभ लेत उबारी। प्रगट होया नर सिँघ अवतारी । गुर आपणे तों जाओ बलिहारी। जिस ने दित्ता जोत अधार। चरन कँवल में करो निमस्कार। अमृत बरख़े प्रभ किरपा धार। डुबदे पत्थर प्रभ देवे तार। गुरसिक्खां दी लीनी सार। टुट्टी गंढे प्रभ सिरजणहार दातार। गढ़ भंजन समरथ प्रभ करतार। निरबिकार निरवकार। सच्चा कर्म सच्ची कार। सेवक सिख सभ उतरे पार। मुखों बोलों जै जै कार। दया नंद दया निज करी। निजानंद में सोझी परी। सूज्झया बूज्झया गुर विहूणा सर्ब थाईं लूज्झया। अन्त समें कलिजुग विच आया। निहकलंक आप अख्वाया। घनकपुरी विच चरन टिकाया। महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। राम कृष्न दा तेज हो आया। मनी सिँघ दरस दिखाया। बाल अवस्था सतिगुरू सति सच दीपक प्रगास्सया। मनी सिँघ दा मन देख विगास्सया। हो मस्ताना फिरे उदास्सया। घनकपुरी विच चल के आया। सुक्का पिप्पल जिन गुर मेल कराया। सुक्का काष्ट चन्दन हो तिलक लगाया । मनी सिँघ नूं गुर दरस दिखाया। होए अनन्द चरन सिर टिकाया। पूरे सतिगुर बन्ने लाया । छुडाई देह अन्तकाल गुर धाम सिधाया। करे कृपाल किरपन प्रभ आप। मनी सिँघ सति सति सति जाप। महाराज शेर सिँघ गुर डाहढा आप। जोत सरूप हो देह विच आया। देह कोई थिर ना रहाए। जोत प्रभ दी सदा लहराए। ना आप डोले ना किसे डुलाए। धन्न गुरसिख चल के आए। प्रभ अबिनाशी घर में पाए। गाउ गाण प्रभ मिल्या मेरी माए। घाल सिक्खां दी पाई थाएँ। सचखण्ड सच रिहा समाए। सर्ब किछ प्रभ हुण वरताए। बाहों पकड़ गुरसिख तराए। बेमुखां धक्कया नर्के पाए। गुर बिन कोई ना लए छुडाए। हुक्म अमेट ना मेटया जाए। करनहार प्रभ कर्म कमाए। हाहाकार विच सृष्ट है पाए। भुल्ले जीव फिरन तिसाए। सच्चा सतिगुर नज़र

ना आए। गुरसिख मिल्या गुर दरस दिखाए। मन दी तृष्ना सर्ब मिटाए। सांत स्वांत प्रभ के पास। दो जोड़ कर करो अरदास । दरस बख्शे जे गुणतास। सुत्ते ना रहणा विच प्रभास। जोत है जाणी विच आकाश। गुर निरँजण सतिगुर निरँकार। किरपा कीती आप अपार। मच्छ कच्छ हो जीव जन्त उधार। तारे सिख धार विष्नूं भगवान। सिख प्रेम कर प्रेम धाया। सभ संगत नूं नाल रलाया। छेती छेती पन्ध मुकाया। वांग द्रोपती भन्ना आया। आया घर प्रभ दर्शन पाया। हाज़र हो गुर दरस दिखाया। बेड़ा सिख दा बन्ने लाया। चार जुग माण दवाया। बुग्घयां नूं गुर धाम बणाया। सचखण्ड सच तख्त बणाया। बाकी सभ दा माण गंवाया। कलिजुग विच प्रभ पाया फेरा। आप आण किया नबेड़ा। लै आवे वक्त ना लावे देरा। मुखों बोलों प्रभ अबिनाशी मेरा। जिस ने किया सच नबेड़ा। तीन लोक विच प्रभ पाए फेरा। ऐसा माण प्रभ आप दवाया। धरत धवल धर धर्म कमाया। मनी सिँघ दा तेज सवाया। दर्शन पेखे मरे ना जाया। आवण जावण थिर ना रहाया। अनन्द बिनोदी आप रघुराया। सोहँ शब्द जो राखू चीत। शब्द सच्चा है पतित पुनीत। पतित पावन दुःख भय भञ्जण। हँकार निवारन है भव खण्डन। दरस दिखावे त्रैलोकी नंदन। सच्ची मंगो गुर दरस है मंगण। सोहँ शब्द दी चढ़ जावे रंगण। पूरा सतिगुर तोड़े बंधन। जावे गुर पुरी जम ना दंडन । वांग सवरन सदा अखण्डन। संवारे लोक परलोक वसे ब्रह्मण्डन । मेरे दर चन्दन सुगंधी उहदी तेती करोड़ आ मंगण। साडे जे प्रभ तोड़े फंदन। छोहे चन्दन संग होवे चन्दन। वांग निम्म कौड़े कंदन।

३५
०१

❊ १६ मग्घर २००६ बिक्रमी ❊

लूट गई जगत पति सिर नाए। भय भयानक विच्चों लए बचाए। नाम दान दे शरनी लाए। भुल्लयां नूं प्रभ मार्ग पाए। दुष्ट दुराचार प्रभ लए तराए। होए निमाणा जो शरनी आए। मन विच जो माण रखावे। कुलवन्त कुल नास करावे। माण गर्ब प्रभ उस दा तोड़े। गर्भ विच्चों ना बच्चा लोड़े। जो जन हो निरधन आवे। कर किरपा प्रभ सरनी लावे। हो अनन्द हरी गुण गाए। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए। पाए दरस मन होए अनन्द। जम का सिर पड़े ना फंद। दे के दरस गुर करत निहाल। प्रभ अबिनाशी सदा प्रितपाल। संसार वाले प्रभ तोड़े जंजाल। नज़री नज़र करे निहाल। पवण पवण पर आप समाया। वाजा पवण विच देह वजाया। सच्ची जोत नूं विच बहाया। जग झूठे विच सतिगुर आया। झूठा जगत झूठी है रीत। सच्चा सतिगुर है सदा अतीत। तिस को राखो सदा ही चीत । गुरचरन संग जोड़ो

प्रीत। महाराज शेर सिँघ चलाई रीत। सोहँ शब्द दी सदा है जीत। गुर पूरे विच एह वड्याई। पशू प्रेतों देव बणाई। गुरमुख बाणी सच सुणाई। सच्चा साहिब वस्सया सच थाईं। नर्क कुण्ड से बचाई। सचखण्ड सच रिहा समाई। जिथ्थों आपणी जोत प्रगटाई। प्रगटी जोत मातलोक विच आई। उन्नीं मग्घर एह बणत बणाई। गुरसिक्खां दी घाल थाएँ पाई। गुरसिक्खां नूं गुर दे वड्याई। दे दान थिर घर दी सोझी पाई। पहले आपणा आप बुझाए। दर दसवें विच्चों नज़री आए। निझरों बूंद अमृत दी पाए। नाभ कमल नूं दे खलाए। खिल्या कौल भया अनन्द। नज़री आवे परमानंद। द्वार दसवां जां गुरू दिखाया। अनहद शब्द मन वजाया। झूठी देह विच सच शब्द सुणाया। गुरसिक्खां उप्पर एह कर्म कमाया। बिन सिख कोए गुर ना पेखे। बिन किरपा सच्चा शाहो ना वेखे। सच्चा साहिब गुणी गहीर। डोलत नूं प्रभ देवे धीर। आप अडोल सिख कबहूं ना डोले। सच्चा सतिगुर मुक्खों बोले। महाराज शेर सिँघ अतुल अतोले, बाकी सभ सन इस के गोले। ज्ञान गोझ प्रभ आप दिखाए। फिर सिख नूं सोझी पाए। सूझे बूझे करे विचार। मदि मास दा छोडे अहार। नज़री आवे सच्चा करतार। कर दरस सिख उतरे पार। धन्न धन्न जन्म गुरसिख दा होया। सो सिख जिस रिदे परोया। रिदे वस्सया आप निरँकार। गढ़ भंजन समरथ पुरख अपार। लोक परलोक प्रभ दए सुधार। फिर ना डुब्बे विच मँझधार। गुर साचे सच अमृत दिया। जिस पिया सो सदा है जिया। ओअँ होवे प्रभ आप। सोहँ शब्द सच्चा जाप। जोत सरूप प्रभ उपजे आप। सृष्टी बख्शी ब्रह्मा नूं दात। चार वेद सच्ची साख्यात। चार मुख देवण जग को दात। जुग चार प्रभ आप बणाए। आयू पहले लिखाए। सतारां लक्ख अठाई हज़ार सी लिख्त कराई। सतिजुग दी एह आयू बताई। सतिजुग विच सतिवादी आए। ईश्र बिना ना कोए गुण गाए। समें अनुसार प्रभ शक्त प्रगटाए। शिव शंकर प्रभ विच्चों उपजाए। ब्रह्मा विष्न महेष सभ संगत रलाए। शिव ने कीती तपस्या अपार। पार्बती मिली चतुरत नार। इकन्त बहि हरि गुण गाए। होए अटंक समाधी लाए। पार्बती वल ना कीता ख्याल। आत्मा जोड़ नाल भगवान। पार्बती मन उपजाया ख्याल। कोई मिले मैनूं बाल। देह उत्तों सी मैल उतारी। कड्डी कर गगरीआ पा ली। मन में आस पुत्तर दी करी। आस पुजावे नरायण हरि हरी। गुर साचा ईश्र आसावरी। मन दी आस प्रभ पूरी करी। छड्ड सिँघासण जां शिव जी आए। वेख बालका मुखों फ़रमाए। किस का पूत, कवण तेरी माए। अग्गों सुखन सच्चा सुणाया। पार्बती मेरी है मांया। बदन उत्ते सी उहदे धूढ़। उथों उपज्या मेरा नूर। सुण के बचन शिव भए उदास। कटया सीस उड गया आकाश। वेख खेल पार्बती दर आई। मोया पुत्त दुःख जरे ना राई। करे बेनन्ती सुणो रघुराई। पुत्त मेरे नूं देओ जवाई। शिव जी नूं फिर आई विचार। सीस ला दईए जो दिया

३६
०१

उतार। उह पहुंचा सी उथ्थे आण। जो दिया ओस ने दान। प्रभास वल चल्लया धाए। सिर हत्थणी दा कट्ट ल्याए। ल्या के सीस धड़ उप्पर टिकाया। कर सुरजीत गणेश बणाया। ऐसा माण आप दवाया। चार जुग विच पूज कराया। गौतम ने जो कर्म कमाया। द्वापर तों त्रेता लै आया। रिग वेद प्रचलत कराया। राम चन्द बंसी आया। हँकारीआं नूं जिन मार खपाया। जनक पुरी नूं भाग लगाया। आपणा तेज प्रभ आप वखाया। रावण तांईं ख़ाक रुलाया। लंका गढ़ सी अगम्म अपारा। तिस विच आप उतारा। फेर प्रभ जी किरपा धार। भीलणी दी लीती सार। संसार ने सी परे हटाया। प्रभ ने उस नूं शरनी लाया। जूठयां बेरां नूं भोग लगाया। महाराज मुखों अमृत चुआया। रघुबंस किरपा करे आया। उथ्थे जिथ्थे सिला सरे। अहल्या दासी बांझ प्राणा। होए सिला पई नदी किनारा। श्री राम चन्द्र प्रभ उथे आया। सिला उप्पर जां चरन टिकाया। छोहे चरन होई कल्याण। गई स्वर्ग पुरी विच बबाण। भगत जनां नूं प्रभ लए पछाण। भगत वछल प्रभ जाणी जाण। रजो तमो सतो गुण तीन। इन में साचा साहिब प्रबीन। सांतक सो सम दरसी होए। प्रभ चरन कँवल रिदे परोए। भाणा गुर का साचा होए। थिर ना रहे सृष्ट में कोए। आप अपरम्पर प्रभ जी होए। समें अनुसार प्रगट होए।
३७ ०१ त्रेता वासी काल कराया। बारां लक्ख छिआनवें हज़ार विच गेड़ मुकाया। आया द्वापर प्रभ कृष्न मुरार। यजुर वेद दा लाहया भार। मोहण माधव कृष्न मुरार। जगदीश्र हरि जीउ असुर सँघार। अचुत्त पारब्रह्म पूरन अवतार। मधु सूदन दामोदर आया सोलां कलां धार। मुकंद मनोहर प्रभ हो के आया। लख़मी नरायण जिस नाम रखाया। बिन माला भबूखन कँवल नैण। सुंदर कुण्डल मुकट बैन। आपणी कला आप प्रभ धारे। केसों पकड़ कंस को मारे। गऊआं चारे प्रभ जमन किनारे। बिन्दराबन विच किए खेल अपारे। दलिद्रीआं नूं प्रभ दित्ता दान। सुदामे नूं प्रभ दित्ता माण। द्वारका वासी जां दया करे। लै चरनोधक शरनी परे। ऐसा कर्म प्रभ आप कमाया। बाहों पकड़ सिँघासण उप्पर बिठाया। दलिद्री दा सारा दलिद्र लाहया। रंग विच प्रभ आप समाया। तन्दल तांईं गुर भोग लगाया। चार पदार्थ महां सुख पाया। आया घर प्रभ नज़री आया। कुल्ली तों रंग महल बणाया। भगत जनां जैकार कराया। नीच नूं प्रभ देवे माण। सच्चा आप सच्चा फ़रमान। बिदर तांईं प्रभ दित्ता माण। दुर्योध्न नूं पाई हाण। ऐसा प्रभ ने भोग लगाया। सच घर बिदर वरताया। जुगो जुग प्रभ माण रखाया। निमाणयां नूं एह राह बताया । ऐसा प्रभ है आप रघुराया। ग़रीबां दा हो आए सहाया। हँकारीआं दा जिन्ह माण गंवाया। दरोपदी तांईं गले लगाया। घर आई कृष्न नज़री आया। नाथ अनाथां आप होए सहाया। जेहा देखे तेहा रहे समाया। द्वापर नूं फिर दित्ती हार। यद वाली खेल कीती अपार। आप अर्जन दा रथ चलाया। महासार्थी आप अख्वाया। हो रथवाही ३७ ०१

अर्जन नूं देवे ज्ञान। गीता उचारे मुखों आप भगवान। अठारां अध्याय प्रभ आप लिखाए। आपणी महिंमा आप बताए। पढ़े सुणे जो मन में धरे। गर्भ जून में कदे ना परे। कृष्न भगवान आ नज़री पड़े। भगतां उप्पर किरपा करे। ऐसा एह ज्ञान लिखवाया। चार वेदां दा एह माण गंवाया। इस जुग दा हूआ अन्त काल। अठ्ठ लक्ख चौंठ हज़ार सी इस दी जान। अन्त काल इस दा होया। कलिजुग आप प्रभ आया। हो समदरसी दरस दिखाया। जोत सरूप प्रभ जोती आया। आपणा बिरद गुर आप रखाया। महाराज शेर सिंघ है रघुराया। सोहँ शब्द जिस नाम सुणाया। जपे नाम जो मेरा सोहँ। नैणी पेखे आप प्रभ ओअँ। इक्क जोत मूर्ति दोअँ। महाराज शेर सिंघ विच्चों मनी सिंघ प्रगट होअँ। सर्ब की समरथ्या विच संगत बैठ खोहँ। तीर्थ वेद जो जगत में दोअँ। मुझ से परे ना कोऊ होअँ। मन में सिमरो गुर शब्द है सोहँ। निहकलंक आप प्रभ आया। राम कृष्न तों शेर सिंघ प्रगटाया। कलिजुग दा जिन नास कराया। सतिजुग सति सति कर वरताया। जुग सति साचा मेरा नाउँ। सच सुच्च में प्रभ गुण गाओ। गुण गोबिन्द जे मुख से गाओ। जो चाहो सोई फल पाओ। देवणहार आप दातार। चल के आया विच संसार। भगत जनां नूं दित्ता तार। बेमुखां नूं परे पछाड़। महाराज शेर सिंघ उनन्जा पवण सवार। आदि अन्त प्रभ एकँकार। जो सिख चले गुर के भाए। सच्ची दरगह पहुंचे सच्ची थाएँ। सचखण्ड वसे सच निरँकार। गुरसिक्खां को प्रभ लेत उभार। पड़े ना उन को जम की मार। दया करे प्रभ किरपा धार। दर्शन देवे उत्तम अगम्म अपार। शब्द गावे सदा जैकार। सुण के सिख उतरे पार। पारब्रह्म प्रभ अपर अपार। गुर साचा सच्ची सरकार। सिख उधरे उह उधारनहार। बेमुख दित्ते परे पछाड़। विच दरगह होवे छार। पिच्छा दित्ता नर अवतार। कलिजुग नूं जिन कीता पार उतार। सच्चा तख्त सच्चे गुर बणाया। सतिगुर सच्चे सतिजुग लाया। दिनो दिन होवे तेज सवाया। काल रूप हो कलिजुग खाया। सारी सृष्टी नूं भस्म कराया। बेड़ा सिक्खां दा बन्ने लाया। पार उतारे आप रघुराया। सच मार्ग गुर सच सुणाया। मदि मास नूं परे हटाया। गुर अमृत मुख सिख चुआया। भौ भरम भुलेखा लाहया। धर धरनी नर सिंघ नरायण आया। दाड़ां अग्गे पृथ्म चुबाया। चार कूट होवे मेरा साया। सिर ते छत्र झुले तेज दूण सवाया। माण ताण हँकार सभन दा गंवाया। सो बचाया जो शरनी लाया। बाकी सभन को कुंभी नर्क में पाया। कुम्भी नर्क उह सी भरया। जिथ्थे राजा जनक सी वड़या। धर्म राज सी देवे सज़ाए। हाहाकार कर जीव बिल्लाए। बिन गुर ओथों कौण छुडाए। भुल्ले पापी फिरत तिसाए। भरे जम डण्ड मुखों निकले हाए हाए। बख्श लै आप रघुराए। बिना नाम ना कोए तराए। सच्चा सतिगुर शब्द लिखाए। सोहँ शब्द आपणा नाम बताए। सतिजुग का एह जहाज़ बणाए। जपे नाम भवसागर

पार तराए। सची दरगाह सच कार दिसाए। निज घर बैठा ताड़ी लाए। एथे ओथे प्रभ रिहा समाए। आप वेखे आप नज़र ना आए। माया विच जीव जन्त फसाए। महाराज शेर सिँघ आपणा आप प्रगटाए। बचे सो जो शरन में आए। चार वरन को मेरा उपदेश। गुर साचा सच नरगेश। मुख साचा साचा मेरा वेस। जोत सरूपी एह जोत सो एक। एक जोत प्रभ आप रखाए। आपणी जोत तों प्रभ सृष्ट जगाए। खिच्चे जोत रहि जाए लोथ। बिना जोत एह झूठा थोथ। सच्चा सतिगुर बाणी बोहथ। कोई ना बूझे मेरा गोहथ। सो बूझे जिन आप बुझाए। नदर करे तां नज़री आए। गुर किरपा बिन ना कोई सोझी पाए। जिस नूं बुझाए उस है बूज्झया। भुल्ला अञ्याण कथ कथ लूज्झया। अकथ्थ कथी कथ आप कहाए। घट घट वासी सर्ब है ठांएँ। निज घर वेखे प्रभ रिहा समाए। द्वार दसवें विच ताड़ी लाए। होए कृपाल तां प्रभ दए बुझाए । तां जन मेरी सोझी पाए। जोत सरूपी नज़री आए। नदरी वेखे नैणी पेखे। सरवणी सुण प्रभ को आदेसे। जुगो जुग प्रभ बदले भेसे। चवीए अवतार प्रभ कीते वेसे। ऐसा हुण अवतार आ धरया। जिन बूझे प्रभ आसा वरया। कीती आस जिस गुर चरन प्यास । हो ममता होवे प्रभ का दास । आप मिले सच्चा गुणतास। कीता कर्म आया रास। गुर चरनां दा हो गया दास। नाम जपत मेरा स्वास स्वास। कारज करे सतिगुर रास। महाराज शेर सिँघ सदा है पास। रिदे ना डोले ना होवे उदास। विच संगत प्रभ है आस पास। सच्चा आप सच्ची रहरास। सच्चा धाम जिथ्थे प्रभ निवास। सच्ची संगत विच गुर सच्चा आया। ओमीआं सिक्खां नूं सिक्खां विच बहाया। जिउँ लोहा पारस छोहे कंचन बण जाए। दरस सिख दा सिक्खां नूं कराया। भगत भुलेखा भरम दा लाहया। भरतम्बर प्रभ जगत समाया। पीत पीतंबर त्रैभवण धनी जगत नाथ गोपाल मुख भणी दरस दिखाया। आया साचा साहिब आप बीठला। जो वेखे तिन्न नज़री आया। भगत जनां नूं त्रै लोचण देवत। दो पेखण संसार एक प्रभ संग बिलोवे। खुल्हे नेत्र थिर घर दी सोझी होवे।

✻ २० मग्घर २००६ बिक्रमी ✻

सच्चा साहिब सच कर्म कमाए। सच्चा आप सच रिहा समाए। अग्न कुण्ड में प्रभ होत सहाए। गल फास प्रभ आप कटाए। हँकारीआं दा हँकार गंवाए। निमाणयां प्रभ माण दवाए। ईश्र सच्चा सच्चा नर सिँघ आए। सरन पड़े दी लाज रखाए। जो सिख ना चले गुर के भाए। गर्भ जून में मुड़ मुड़ आए। काल खावे फिर उपजावे। बिन पूरे गुर

ठौर ना पावे। जिन विचारया प्रभ निस्तारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। सोवत जागत जो हरि ध्यावे। देह मन्दर में हरि जीउ पावे। कँवल बिगासन प्रभ सभनी थावें। जिस देख्या परमगत पावे। राउ तों प्रभ रंक बणावे। रंक दे सिर छत्र झुलावे। झुल्ले छत्र देवे प्रभ माण। पूरे गुर तों जाईए कुरबान। जिस ने बख्शी सिक्खन की जान। साध संगत विटहों कुरबान। दीन दयाल सदा दुःख भंजन। हँकार निवारन है भवखण्डन। कर किरपा प्रभ तोड़े बंधन। दो जोड़ करो गुर बन्दन। गुर पूरे गुर को करो निमस्कार। किरपा कीती जिस अपार । डुबदा बेड़ा लाया पार। सिक्खां नाल दित्ते ओमी तार। सच्चा आप सच सिरजणहार। सदा ही पूजो प्रभ बख्शणहार। सभ तों ऊँच अगम्म अपार। थिर घर वासी आप निरँकार। होए दयाल प्रभ दया जां करे। तुट्टे छुट्टे सिख आए दरे। सो सुखीए जो सरनी पड़े। सर्ब सुख देवे प्रभ हरे। आस पुचावे आ के आप। उस नूं सिमरो उठ प्रभात। जो जन सिमरे मेरा नाउँ। तिन के मन सदा गुर चाउ। हरि दरगह विच पावे ठाउँ। सच्चे सतिगुर सोहँ दिया नाउँ। आप अपरम्पर अपर अपार। भरतम्बर विष्नूं निरँकारी। भगत जनां दी पैज संवारी। ऐसे गुर तों जाईए बलिहारी। ऐसे गुर नूं सदा आदेस। कलिजुग विच जिन बदलया भेस। जोत सरूप सिख विच प्रवेश। सच्चा मृगिन्द सच्चा नरगेश। दे दरस प्रभ लाहे कलेश। होए शांत मन नैणी पेख। मिटाई लिख्त प्रभ नवीं लिखी लेख। हुण है कीती बुध बिबेक। दित्ता दान ज्ञान एह रहे हमेश। सतिगुर अग्गे ना जावे पेश। सभ तों वड्डा आप विषेष। महाराज शेर सिँघ बदले वेस। गुर पूरे को करां आदेस। दुखीए प्रभ कीते सुखीए। दर आए बेमुख होए गुरमुखीए। दया धार हरि दया कमाए। सुक्के काष्ट प्रभ हरे कराए। बेड़ी संग लोहा तराए। सोहँ शब्द दा चप्पू लाए। महाराज शेर सिँघ मलाह अख्वाए। रुढ़या बेड़ा बन्ने लाए। हरनामा सी रुढ़या विच मंझधार। कोई ना दिसे बचावणहार। गुरबख्श खलोता आप विचकार। डुब्बदे भरा नूं ल्या तार। बख्शया आप बख्शणहार। सच्ची दरगह विच होया परवान। गुर पूरे एह दित्ता माण। धन्न सिख धन्न गुरू दी बाण। सुफला जन्म मुक्कया आवण जाण। होया सहाई आप मेहरवान। पूरन सतिगुर महाराज शेर सिँघ पछाण। माण विच सिख जां परे। करे गर्ब मन हँकार है करे। पूरे सतिगुर तों जो ना डरे। दूर वेख अभिमान है करे। हत्थ पाहनी फड़े। महाराज शेर सिँघ दी सपुत्री सिर धरे। ऐसा गर्ब सिँघ दर्शन करे। आपणा किया आप मन भरे। उह पाहनी उस ने वखाई। उस ने गुर की पति लहाई। गुर पूरे सी लिख्त कराई। बचन आपणा आप सच कराई। उह पाहनी उहदे सिर ते लाई। हाहाकार करे बिल्लाई। नेड़ ना आए कोई भैण भाई। सारे फिरदे सिर लोकाई। दुखी हो आत्मा कल्पाई। पुकार करे सुण रघुराई। तेरे बाझों ना कोई सहाई । मैं

भुल्ला भुल्ल रहे ना काई। दया धार प्रभ दे बख्शाई। नर्क कुण्ड चों कढ्ढ लै आई। अग्गे वास्ते राह बताई। हो के सिख ना मेरा माण गंवाईं। एह थान जिथ्थे सी पाहनी दिखाई। उस दी उहनूं मिली सज़ाई। पूरे सतिगुर दया कमाई। उस थान प्रभ आ के लए बचाई।

थिर घर विच जो सवाली आए। पूरी प्रभ आस कराए। हँगता रोग दुबिधा मैल गंवाए। आत्मा शांत काया हरि राए। लोक परलोक प्रभ होत सहाए। दीनां नाथ दया तुम करो। सर्ब दुष्टन आप संघरो। सर्ब कलेश सिक्खन के हरो। बेड़ा पार भवजल है तरो। दु:ख दलिद्र काया दे हरो। सच ज्ञान देह में करो। किरपानंद किरपा तुम करो। सभ सिक्खन गुर सरन परो। नाम गुरू पूरन सन्तोख। जिस वस्सया रिदे तिन कोई ना दोख। हरि दरस पाए उतरे भूख। पाए ब्रह्म होए ब्रह्म सरूप। निज विच्चों पाए अनन्द अनूप। साचा प्रभ सच सति सरूप। जोत सरूपी प्रभ जोत सरूप। उधारे जीव विच्चों अन्ध कूप। साचा शाह सच्चा है भूप। जिस दी सेवा विच रक्खो धूप। जिस की सुगंधत पाए उस थाएँ। सभ संगत में रहे समाए। गुर संगत विच गुणी गहीर। साध संगत गुर देवे धीर। प्रभ अबिनाशी ठांडा बीर। गुरसिक्खां
४१
०१
दी बांधे धीर। अमृत बणावे विच्चों नीर। पीवे होवे शांत सरीर। सच्चा साहिब प्रभ सच पठाया। सिक्खां तांईं प्रभ माण दवाया। सोहँ शब्द दा जाप कराया। ओअँ प्रभ नज़री आया। निरवैर सभ थांईं समाया। जहां वेखो तहां नज़री आया। प्रभ अबिनाशी आप रघुराया। चरन कँवल सिर मुकट टिकाया। द्वारका वासी एह खेल कराया।

४१
०१

❊ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै ❊

कृष्न तों शेर सिँघ बण आया। सोहँ शब्द जिन जाप कराया। गुरसिक्खां मन आप वसाया। दसवें द्वार दा पर्दा लाहया। एह नेत्र प्रभ आप खुल्हाया। अमृत झिरना निझरों झिराया। नाभ कँवल विच है पाया। सारा संसा जीव दा लाहया। नाड़ मास दे पिंजर विच्चों हरि नज़री आया। निज घर वसे आपणा आप छुपाया। किरपा कीती प्रभ एह पर्दा लाहया। महाराज शेर सिँघ सच शब्द सुणाया। सचखण्ड वस्सया निरँकार। सभ सृष्ट ईश्र आकार। जीव जन्त मेरी जोत अधार। सच्चा आप सच करतार। विछड़यां मेले मेल मिलावणहार। गुर सच्चा ख़सम सभ जगत है नार। महिंमा गुर दी है अपर अपार।

बूझे कोई गुण वीचार। नज़र ना आवे किसे गुर करतार। साध संगत प्रभ देत अधार। डुब्बदे पत्थर लवे तार। होवे मेहरवान जां आप दातार। गुरसिक्खां नूं गुर लावे पार। ज्ञान गोझ गुर ज्ञान विचार। चरन कँवल संग रक्खो प्यार। आदि अन्त प्रभ एकँकार। महाराज शेर सिँघ सिरजणहार। जिस ने पसरया एह संसार। झूठी देह झूठा संसार। झूठी माया झूठा आकार। जूठ झूठ विच डुब्बा संसार। कर्म धर्म दी कोई ना करे वीचार। कलिजुग आया अन्त कल धार। माया विच रुढ़या संसार। भया प्रगट निहकलंक अवतार। जो है आपणी जोत अधार। जीव जन्त एह आप उपजाए। माया विच भरमे भुलाए। गुर घर दी ना सोझी पाए। गुर सच्चा ना नज़री आए। कलू काल विच करदे हाए हाए। अन्त काल कोई ना छुडाए। जमदूतां दे प्रभ वस पाए। धर्म राए दए सज़ाए। कुम्भी नर्क उन्हां पाए। पापी हाहाकार करन बिल्लाए। बिन गुर नाम ना कोई बन्ने लाए। गुरचरन संग करे प्यार। गुर का सिख है उतरे पार। सद बख्शंद गुर बख्शणहार। डुब्बयां तांईं देवे तार। शब्द नाम दी वज्जे तार। मुखों निकले करतार करतार। फिर पछाणे सच्ची सरकार। सोहँ शब्द सदा निस्तार। महाराज शेर सिँघ जोत जगाण। सोहँ शब्द दे के दान। सोहँ शब्द दे वड्याई। सो देह दीपक विच जोत जगाई। जोत जगाई सतिगुर पूरे। गुर बैठा पास ना है दूरे। वाजे जिस दे अनहद तूरे। करे बचन होवणगे पूरे। सच्चा गुर सच्चा मेरा नाउँ। सच्चा सिरजणहार वस्सया गुर ठाउँ। आप उपदेशे सोहँ नाउँ। ओअँ सोहँ सदा गुण गाओ। महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याओ। सर्ब सुख मन मांहि पाओ। सर्ब सुख गुर दे वड्याई। चरन कँवल संग बख्शाई। हरि हरि नाम जो रिदे ध्याई। हरि मिल्या हरि सोझी पाई। हरि बिन होर ना थांईं। जित्थे मिले भगतन को वड्याई। बिन गुर ठौर ना पाई। दर दर लूझे भक्ख झक्ख खाई। कर किरपा प्रभ दे मिलाई। मिल साध संगत हरि गुण गाई। मन इच्छे सोई फल पाई। साध संगत गुर जलन बुझाई। गुर संगत विच रिहा समाई। वेखे गुर नज़र ना आई। जोत सरूप जोत जगाई। भव सागर विच्चों सिख तराई। तरन तरावणहार दातार। सभ तों वड्डा आप करतार। किरपा कीती गुर अपार। गुर चरनां दा दित्ता दान। कर के दरस सिख उधरे पार। गुण अवगुण प्रभ ना विचारे। डुबदे पत्थर प्रभ तारे। भगतां दे हरि काज संवारे। द्रोपदी दी लाज रक्खी मुरारे। ध्रू प्रहलाद सदा निमस्कारे। रक्खे लज्जया नर सिँघ रूप अपारे। सच्चा सतिगुर कर्म एह करे। समें अनुसार जोत जगत में धरे। जो सिख गुर शरनी परे। अवगुण कढ्ढ गुण गुर भरे। लोहा पारस छोह जिउँ कंचन बणे। बेमुख रल सिख संग तरे। साध संगत विच जो नर परे। प्रभ अबिनाशी मिले हरि हरे। महाराज शेर सिँघ किरपा करे। होया दयाल प्रभ आया घरे। अछल छलन प्रभ आप कराया। बावन रूपी भेस बणाया। बल राजे

घर मंगण आया। सद्दया राजे अंदर स्वामी। मंग जो तुध भाया। चार वेद दा मुखों पाठ सुणाया। कलिजुग विच एह खेल रचाया। काम क्रोध दी पाई माया। जीव जन्त ने गुर भुलाया। हँकार विकार बड़ा वधाया। कलिजुग हुण अन्त आया। महाराज शेर सिँघ तेज वधाया। अन्तकाल इस दा होए। पापी अपराधी दुष्ट दुराचार रहे ना कोए। सतिजुग दी जै जै होए। जै जै जै सदा जैकार। आप अपरम्पर अपर अपार। सच्ची लिख्त लिखाए अपर अपार। जिस नूं सुण सिख उतरे पार। डोलत को मन दए अधार। गुणवन्त प्रभ गुण निस्तार। सच साहिब सच सिरजणहार। विछड़यां नूं प्रभ मेल मिलावणहार। जिस ने कीती चरन निमस्कार। पापी पतित प्रभ देत उधार। सर्ब का दाता लए सर्ब की सार। तीन लोक जिस दी जैकार। आदि अन्त प्रभ एकँकार। इन्दलोक प्रभ आप तजाया। शिवलोक नूं छड्ड के आया। ब्रह्मे ताई ब्रह्म रूप दिखाया। बैकुण्ठ धाम जिथ्थे रघुराया। जिथ्थे उपजे तिस थाएँ समाया। जगे जोत जिथ्थे डगमगाया। बिन तेल बाती एह खेल रचाया। जिस जोत विच्चों प्रभ जगत उपाया। जोत सरूप हो जगत में समाया। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणाया। पवण सरूप दा थम्मा ढाया। बिन थम्मां गुर गगन रहाया। होए कृपाल प्रभ दरस दिखाया। कलिजुग विच निहकलंक हो आया। घनकपुरी घनशाम प्रगटाया। महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। सम्मत उन्नी सौ पंजाह बिक्रमी भाग लगाया। मनी सिँघ नूं आपणा आप बुझाया। वेले कृष्न बधक ने जो बाण सी लाया। खब्बे बन्ने दा निशान वखाया। मनी सिँघ लै संगत धाया। महाराज शेर सिँघ दा दर्शन पाया। राजस तामस प्रभ गुण बणाए। सांतक विच प्रभ गया समाए। जो सिख चले गुर के भाए। वांग कँवल मन खिलाए। थिर घर दी सोझी पाए। निरगुण सरगुण प्रभ दरस दिखाए। भगत उधारन हरि जी आए। करो निमस्कार प्रभ रिदे ध्याए। जन्म आपणा सफल कराए। जो जीव चल सरनी आए। चरन कँवल विच रक्खो स्वास। झूठी देह में होए प्रकाश। संगत हो जाए गुर की दास। सदा सहाई बैठा पास। दर आया ना होवे निरास। देवे दान प्रभ गुण तास। आया सिख दा ना होया रास। जेहड़ा खावे पीवे मदि मास। मध माधव प्रभ नज़री ना आए। पारब्रह्म आप दरस दिखाए। सचखण्ड प्रभ रिहा समाए। दरगह साची विच सिख पुचाए। जन्में ना मरे ना आवे ना जावे। गेड़ चुरासी गुर कट्ट वखावे। जोत विच प्रभ लए मिलाए। मानस जन्म सफल हो जाए। गुर साचा एह शब्द सुणाए। हउमे मैल मन विच्चों गंवाए। सच्चा शब्द मेरा दीबाण। महाराज शेर सिँघ जाणी जाण। सो जाणे जिस आप जणाए। बिन गुर सोझी कोई ना पाए। सो पाए जिस मन मांहि समाए। जो सिख गुर को परखण आए। नैणी वेख ना सीस झुकाए। नैण जोत आपणी गुआए। हो के दुखिया बहुत दुःख पाए। भुल्ला जीव चोटां खाए। एथे ओथे कोई ना छुडाए। बद्धा जीव

जमपुरी नूं जाए। ऐसी सतिगुर दी सज़ाए। जो आए प्रभ रिदे ध्याए। उन की घालणा पई प्रथाए। किरपानंद प्रभ सरनी लाए। दे दर्शन प्रभ तृखा बुझाए। गुर प्रशाद परमगति पाए। विच बबाण स्वर्गपुरी सिधाए। जिथ्थे हरि जीउ रिहा समाए। ओथे कोई आवे ना जावे। सो जावे जिस ते प्रभ कर्म कमावे। अन्तकाल प्रभ दरस दिखाए। जम चण्डाल ना नज़री आए। गुरसिख नूं गुर आप लै जाए। दरगाह विच बैठा जाए। दिवस रैण हरि नज़री आए। जोत सरूपी डगमगाए। पवण उनन्जा सिर छत्र झुलाए। जिथ्थे हरी रिहा समाए। सभ तों वड्डी उस दी थाएँ। महाराज शेर सिँघ राह चलाए। गुरसिक्खां नूं गुरपुरी पुचाए। गुर चरनों में रक्ख ध्यान। मन में सोहँ शब्द ज्ञान। चुक्के जीव दा आवण जाण। सच्चा गुर सच्चा नीसाण। उस गुरू तों जाईए कुरबान। जिस दित्ता पहनण खाण। सर्ब सुक्खां सुख शब्द ज्ञान। सोहँ शब्द करो ज्ञान। धरनी धर प्रभ आप मेहरवान। नर सिँघ रूप नरायण पछाण। बाहों पकड़ प्रभ है तराण। आवण जावण दा पन्ध मुकाण। आई संगत दा किया परवान। विच दरगाह दे दवाया माण। धन्न धन्न धन्न गुरसिख भाई। गुर चरनां दी आस जगाई। ऐवें भुल्ली फिरे लोकाई। बिन गुर सोझी किने ना पाई। माण विहूणी सृष्ट खपाई। गुरसिक्खां नूं लए तराई। भय भयानक विच प्रभ होए सहाई। ऐसा हरि क्यों विसर जाई। सदा सिमरो प्रभ का नाम। सुफल जन्म सुफल काम। किसे ना देवे डण्ड का दान। गुर पुरी पाउ बिसराम। सोहँ शब्द दा पीवे जाम। सिख है पहुंचे बैकुण्ठ धाम। ऊँच अगम्म प्रभ जगन्नाथ। सिक्खन के प्रभ सदा है साथ। आप बचाए सिर दे कर हाथ। मिटाए लिख्त जो लिखाई विच मात। नवीं लिखे संग आपणे हाथ। कथ कथी प्रभ कथी अकथ्थ। महाराज शेर सिँघ प्रभ रघुनाथ। नाम जपो रमईआ गुण गाओ। प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाओ। जन्म मरन दे दुःख मिटाओ। सर्ब सुख चलो गुर के भाओ। मदि मास मनो तजाओ। सोहँ शब्द मन वसाओ। महाराज शेर सिँघ दा दर्शन पाओ। दे दर्शन गुर करत निहाल। आवण जावण दा गुर तोड़ जंजाल। साध संगत विच प्रभ दए बहाल। थाएँ पाई सिख दी घाल। नैणी पेख हो निहाल। लाल अमुल्ला लाल गुलाल। सतिगुर सच्चा दीन दयाल। गुरसिक्खां नूं लए भाल। सुत्तयां नूं प्रभ लए उठाल। दुष्टां तांई गुर देवे गाल। आवण जावण दा जां पए जंजाल। विच चुरासी पीसे वांग दाल। सतिगुर सच्चा आप मेहरवान। सोहँ शब्द दा देवे दान। दान दिया आप प्रभ आ के। सोहँ शब्द दा नाम जपा के। सच्चा मार्ग गुरसिक्खां नूं वखा के। राम कृष्न दा भेस वटा के। महाराज शेर सिँघ कलि विच आ के। निहकलंक अवतार अख्वा के। चार वेद दा माण गंवा के। गीता वाला समां मुका के। अञ्जील कुरान भस्म करा के। बाणी उचरी साची हुण आ के। बाकी सभ परे हटा के। घविंड तांई घनकपुरी बणा के। बैठा सतिगुर

आसण ला के। सिर शाहां शाह प्रभ अख्वा के। महाराज शेर सिँघ एह बचन लिखवा के। हत्थीं जावे सतिजुग ला के। जुग सति दा सति वरतावे। सोहँ शब्द दा जाप करावे। हरि हरि जीउ नज़री आवे। सर्ब ठाईं प्रभ रहावे। आवे ना जावे प्रभ थिर रहावे। तीन लोक प्रभ खेल बणावे। जहां देखो तहां नज़री आवे। आकाश पाताल मातलोक सदावे। जोत रूप प्रभ जोत प्रगटावे। विच संगत प्रभ दया कमावे। मुखों बोल बोल प्रभ बचन लिखावे। गुरसिक्खां दे कन्न पवावे। अनहद शब्द मन वजावे। खोल्ह कपाट गुर दरस दिखावे। त्रैलोकी विच्चों धुन एह आवे। ओअँ सोहँ रसना गावे। गुर पूरे दा दर्शन पावे। जन्म जन्म पाप गंवावे। चरन कँवल विच प्रभ है लावे। साध संगत दे विच बहावे। मन दा हँगता रोग गवावे। मैं तूं दा भेत हटावे। सच्चो सच प्रभ नज़री आवे। सोहँ शब्द जो मन वसावे। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे। निज घर बैठा ताड़ी लावे। अनन्द बिनोदी प्रभ खेल रचावे। झूठे धन्दे जगत नूं लावे। मोह माया दे विच फसावे। गुरसिक्खां ते दया कमावे। बेमुखां नूं परे हटावे। कलिजुग कलू काल है खावे। अग्न कुण्ड में सदा तपावे। बिन गुर जीव मुक्त ना पावे। मुक्त जुगत दाता अख्वावे। लक्ख चुरासी विच भवावे। कर्मी संदड़ा फल खवावे। होवे कृपाल जां दया कमावे। पतित पापी सभ तरावे। पशू प्रेतों प्रभ देव बणावे। घर साचे दी सोझी पावे। जिथों प्रभ जीव उपावे। जोत सरूप विच जोत समावे। जगन्नाथ प्रभ आप अख्वावे। एक बूंद देह बणावे। हड्ड मास नाड़ी पिंजर बणा के। बैठा विच प्रभ भेत छुपा के। सच्चा प्रभ बैठा सच्चा आसण ला के। माया वाला जीव नूं पर्दा पा के। वांग पंछी मन उडाए। छिन महि एथे छिन लक्ख कोसी जाए। बुरे भले एह फुरने पाए। भन्नां फिरे सभनी थाएँ। विच बैठी मति आपणा आप लुकाए। मन नूं रोके एह समझाए। ना भज्ज बौरे ना फिर तिलकाए। काम क्रोध वल मूल ना जाए। इस तों वड्डी बुध बिबेक। जेहड़ी रोके वारी एक। प्रभ साचे दी पकड़ी टेक। नर्क कुण्ड दा ना आवे सेक। एह त्रै वस्त देह विच पाई। अप तेज वाए पृथमी आकाश बणाई। फिर इस देह दी बणत बणाई। काम क्रोध लोभ मोह विच हँकार टिकाई। भुल्ला जीव ठौर ना पाई। बिन गुर देखे शांत ना आई। दर दर लूझे धक्के खाई। वांग सुआन भुक्खे भक्ख खाई। जिउँ विष्टा विच जीव हो जाई। तैसा बेमुख गुर तों भाई। दरगाह विच मिले सजाई। गुर पूरे एह लिख्त कराई। सो सिख जिन मन सुधारया। पूरा सतिगुर रिदे चितारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। भगत जनां हरि काज संवारया। हँकारीआं तांईं प्रभ आप सँघारया। सिख दे नेड़ ना आवे जम जंदारया । गुर पूरे एह बिरद है धारया। सोहँ शब्द दा नाम जपाया। भुल्लयां नूं प्रभ मार्ग पाया । कलिजुग विच गुर दरस दिखाया। रुढ़्दा बेड़ा गुर बन्ने लाया। आवण जावण दा पन्ध मुकाया। धर्म राए ना दे सज़ाया ।

विच चुरासी सिख ना आया। पतालों चुक्क आकाश बहाया। नाम बैकुण्ठ मेरा धाम अख्वाया। जोत मेरी दा तेज सवाया। ना प्रभ डोले ना किसे डुलाया। एक समान प्रभ सदा रघुराया। थिर घर वासी जिन एह खेल रचाया। जीव जन्त विच आपणा आप टिकाया। पवन रूप स्वास चलाया। इस दा भेत किसे ना पाया। औंदा जांदा नज़र ना आया। जे आवे तां जीव कहावे। बिन स्वास खेह हो जावे। पूरा गुर जे दया कमावे। स्वास स्वास जीव प्रभ रिदे ध्यावे। सदा ही चले गुर के भाए। साध संगत संग प्यार रखाए। देख सिख ना मथ्थो वट पाए। हो खुश जे गुरसिख नज़री आए। मैं हां आपणे सिख मांहि। मोको देखो सभनी थाएँ। पूरन गुर होया जगतार। हत्थ जोड़ करो निमस्कार। सच्चा आप सच्ची सरकार। जीवत को प्रभ देत अधार। सिख नूं बख्शे किरपा धार। अमृत बरखे बूंद बुंदार। कुल दुःख काटे अमृत रस पाए, गुर खोल्ह़े कपाटे, गुर नज़री आए मुरार। महाराज शेर सिँघ पूरन गुर अवतार। कोई ना इस दी लेवे सार। आप अभेत कोई भेत ना जाणे। हरि रंग प्रभ रिहा समाणे। पिता गुर सिख बच्चे अञ्याणे। महाराज शेर सिँघ संग निभाणे। सच्चा गुर सच निसाणो। घर बैठे प्रभ रंग माणो। आया आकाशों बिना बबाणो। साध संग विटहो कुरबानो। महाराज शेर सिँघ संग सदा सुख माणो। गुर चरनां विच सिख बिठाया। गुर प्रसादी गुर नाम दवाया। ज्ञान गोझ दा पर्दा लाहया। दसवां द्वार है खोल्ह़ वखाया। आपणा भेत गुर आप जताया। जोत संग एह दीपक जलाया। गुण निधान गुण देह विच पाया। प्रीतम सिँघ नूं शब्द सुणाया। गुरसिक्खी विच गुर सिख प्रगटाया। भगत जनां विच नां लिखाया। चहुं जुगां विच कर अटल्ल बहाया। वर घर सिख ने गुर तों पाया। प्रभ अबिनाशी रिदे ध्याया। दुःख भंजन अबिनाशी आया। सर्ब कला समरथ जिन एह बचन लिखाया। सिर ते रक्खे हत्थ बेड़ा गुर बन्ने लाया। होया मुख सदा है उज्जल, गुरचरन संग रहे समाया। पाल सिँघ वांग इस नूं माण दवाया। गुर सच्चे सिर छत्र झुलाया। दीनां नाथ करी एह दया। प्रीतम तों पूरन पुरख बणाया। अनहद शब्द मन वजाया। रंग मजीठी प्रभ आप चढ़ाया। देह कंचन नूं सोना बणाया। कोट वस्त विच हरि जीउ आया। वांग कृष्न उपदेश सुणाया। अर्जन दा सी रथ चलाया। बण रथवाही शेर सिँघ अख्वाया। बेड़ा जिस ने बन्ने लाया। भगत जनां जैकार कराया। प्रीतम सिँघ दा तेज सवाया। महाराज शेर सिँघ चरनां विच बहाया। संगतां दा सिरताज बणाया।

✻ २५ पोह २००६ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

नर नरायण आप प्रभ आया। होए दयाल गुर दरस दिखाया। गुर संगत नूं गुर चरनी लाया। भार उन्हां दा प्रभ आप उठाया। हो मलाह प्रभ लए तराया। आवण जावण दा पन्ध मुकाया। अबिनाशी अविगत प्रभ आया। पसू प्रेतों कर देव बहाया। असुर सुर गुरसिख बणाए। कलिजुग विच्चों लए तराए। महाराज शेर सिँघ होए सहाए। जम कंकर कोई नेड़ ना आए। सचखण्ड प्रभ रिहा समाए। साचे सिख गुर सच बिठाए। लक्ख चुरासी विच्चों प्रभ आप कढाए। कँवल बिगासण सर्ब रिहा समाए। ना उह मरे ना आवे ना जाए। महाराज शेर सिँघ होए सहाए। सदा अखण्ड आप कृपाल। दीन दयाल अनुठड़ा लाल। कोई ना जाणे एह लाल गुलाल। पूरा गुर आप होए कृपाल। गुरसिक्खां नूं एह दे दिखाल। महाराज शेर सिँघ दीन दयाल। सद बख्शंद दीन दयाल। कलिजुग विच्चों लए निकाल। खाणीआं ओन दित्तीआं गाल। पापीआं तांई वज्जी बाण। गीता दा गया ज्ञान। कुरान दा गया ईमान। अञ्जील अंजाब प्रभ आप बणाए। गऊ हत्या वाले सभ खेह रुलावे। मदिरा मास जो करे अहार । कुम्भी नर्क दित्ता डाल। जम्मे मरे होए ख्वार। बिन गुर कोई ना लावे पार। हाहाकार करे दुराचार। कूकर शूकर जून उतार। विष्टा विच विष्टा जन्त बणाया। लक्ख जून एह किरम बणाया। जो जन मेरा नाम ध्याए। सोहँ शब्द रिदे समाए। थिर घर धाम दी सोझी पाए। द्वार दसवां प्रभ दे खुल्हाए। अनहद शब्द मन दए वजाए। निजानंद निज उस नूं आए। प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाए। महाराज शेर सिँघ नज़री आए। नज़री आए सतिगुर पूरा। हाज़र हज़ूर सदा गुर सूरा। हाज़र हज़ूर प्रभ संगत मांहि। घाल सिक्खां दी पाए थाएँ। रघुबंस रघुनाथ रघुराया। त्रैलोकी नंद घर मांहि पाया। गुरसिक्खां दा संसा लाहया। सच शब्द गुर आप सुणाया। सोहँ शब्द दा जाप कराया। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। दरस दिखावे मार्ग पावे। भुल्ले सिख नूं चरनी लावे। चरन कँवल प्रभ के परसे। सुखी जीव सदा सम दरसे। अमृत हरि जीउ आप एह बरखे। जगन्नाथ गोपाल मुख मणी। प्रभ अबिनाशी सभ दा धनी। इस दी महिंमा किसे ना गणी। सो तरया जिस दी चरन संग बणी। पूरा सतिगुर महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां तनी। कृपानिध किरपा प्रभ करे। दुःख दलिद्र सिक्खन के हरे। आए सिख जो सरनी परे। दरगाह साची सच खरे। जम का डण्ड ना मूंड में परे। सदा सहाई आप हरि हरे। अन्त काल प्रभ रच्छया करे। गुर पूरा गुरपुरी है खड़े। बैकुण्ठ धाम गुरसिख निवासी। जिथ्थे बैठा प्रभ अबिनाशी। प्रितपालक सास ग्रास। उतरे पार जिन आई रास। निन्दकां दुष्टां दा प्रभ कीता नास। गुरसिक्खां मन भया प्रकाश। महाराज शेर सिँघ सदा गुणतास। सोहँ शब्द सचखण्ड निवास। सचखण्ड प्रभ सच

बणाया। सच्चो सच प्रभ सच मांहि समाया। होए अधीन संगत रिदे ध्याया। छड्ड बैकुण्ठ मातलोक में आया। शेर सिँघ निहकलंक अख्वाया। कलिजुग दा हुण गर्ब गंवाया। जोत पवण दा खेल चलाया। जोत सरूप देह में आया। धरत धवल नूं फड़ हिलाया। हाहाकार कर जीव जन्त रवाया। वांग कोहलू पीड़ घाणी पाया। सृष्ट दा एह अन्त हुण आया। महाराज शेर सिँघ हुण बचन लिखाया। अन्तकाल कलिजुग दा आया। करमां इस दिआं मार गंवाया। फल उस दा भोगणा पाया। चमत्कार गुर एह दिखाए। दुष्ट दुराचार सभ भस्म कराए। सरगुण निरगुण प्रभ खेल रचाए। कलिजुग तों सतिजुग बणाए। कर्म धर्म दा राह बताए। सिध्ध मार्ग सिक्खां नूं लाए। शराब मास दे नेड़ ना जाए। थिर घर वासी घर में पाए। पंज तत्त में रिहा समाए। जपो सोहँ तां नज़री आए। जगमग जोत प्रभ डगमगाए। निज घर बैठा ताड़ी लाए। सो वेखो जो शेर सिँघ रिदे ध्याए। देह मन्दर में प्रभ रिहा समाए। पवण सरूप प्रभ स्वास बणाए। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणाए। मन मति बुधि हँकार विच टिकाए। ओहले बैठा ताड़ी लाए। आप वेखे नज़र ना आए। भुला जीव शांत ना पाए। करे विकार दर धक्के खाए। बिन गुर पार ना कोई लगाए। हाहाकार करे बिल्लाए। धर्म राज जब दे सज़ाए। कुम्भी नर्क मिले सज़ाए। भुल्ला जीव फिर ठौर ना पाए। अन्तकाल जो प्रभ ध्याए। होवे दयाल प्रभ दरस दिखाए। विच बबाण में बैठाए।

४८
०१

बैकुण्ठ धाम प्रभ दए पुचाए। जिथ्थे हरि जीउ रिहा समाए। जोत जगत दी प्या जलाए। पापी पतित पार उतार। हम निरगुण तूं नहीं चितार। तूं बख्शंद असीं भुल्लणहार। गुरसिक्खां दी एह पुकार। डुब्बदा बेड़ा लईं तार। कलिजुग आया छालां मार। ऐसा हो वगू दो धार। सृष्ट डुब्बू विच मंझधार। गुरसिख उतरन पार। सोहँ शब्द सच करतार। नाएं लईए सिख उतरे पार। भगत वछल प्रभ देत उधार। महाराज शेर सिँघ पूरन परमेश्वर अवतार। निहकलंक कलिजुग अवतार। निहकेवल निहकंटक प्रभ आप। सभ तों वड्डा जिस दा प्रताप। आदि अन्त प्रभ आप है आप। महाराज शेर सिँघ सभ सृष्ट थापिओ थाप। ऐसा सतिगुर कर्म कमाया। गुरसिक्खां नूं एह राह बताया। कलिजुग विच दरस दिखाया। आत्म संसा सभ दा लाहया। सच शब्द गुर सच पठाया। सोहँ शब्द दा राग सुणाया। गुरसिक्खां दा जिस भेत चुकाया। जोत संग जोत मिलाया। सति पुरख सति सिख है होए। गुरमुख गुरसिख गुर दर के होए। गुर सिख मांहि भेत ना कोए। जीवण विच रिदे गुर चरन परोए। महाराज शेर सिँघ दिसे त्रैलोए। सोहँ शब्द दा नाम दवाया। सुरत शब्द दा मेल कराया। राउ रंक कर एक बहाया। तख्त ताज तों सभ नूं लाहया। चार वरन प्रभ आप समाया। चारां नूं कर एक बहाया। ब्रह्म उपज्या ब्रह्म समाया। ब्रह्म सरूप दा किसे भेत ना पाया। पारब्रह्म प्रभ घर में आया। गगन पताली तेज सवाया। कलिजुग

दा हुण काल कराया। मलेछां ताई प्रभ आप खपाया। जम का डण्ड तुर्क नूं लाया। अल्ला अल्ला नाम मिटाया। सत्त दीप नौं खण्ड सोहँ शब्द सुणाया। चार कुन्ट महाराज शेर सिँघ डंक वजाया। शब्द रूप प्रभ नज़री आया। भगत वछल हरि बिरद रखाया। रक्खण लाज भगतन की आया। कलिजुग विच जिन फेरा पाया। निहकलंक अवतार अख्वाया। घनकपुर घनशाम बणाया। घट वासी सभ थाएँ समाया। सच शब्द गुर सच बताया। ओअँ सोहँ जिस रिदे ध्याया। महाराज शेर सिँघ नज़री आया। अन्त काल अन्तरजामी आ के। सिक्खन सिर हत्थ टिका के। बाहों पकड़ बन्ने ला के। रुढ़े संसार धक्के खा के। चले जवारी पल्ले झड़ा के। जीव कलू दे काल करा के। गर्भ जून मांहि वास करा के। गुर पूरे तों मुख भवा के। मानस जन्म बिरथा गंवा के। महाराज शेर सिँघ ना लभ्भा आ के। बैठा कल्सीं डेरा ला के। ओथों उठ्ठ जोत जगा के। आपणा भेत प्रभ आप खुल्हा के। सोहँ शब्द दी जैकार करा के। गुरसिक्खां नूं माण दवा के। राउ रंक सभ सरनी ला के। जै जैकार चार कुन्ट करा के। तेजा सिँघ इन्द्र सिँघ कोल मंगा के। प्रीतम सिँघ प्रेम सिँघ संग रला के। चवां कन्नां उत्ते पलँघ टिका के। सोहण सिँघ हत्थ चवर फड़ा के। सुच्चा सिँघ दा माण गंवा के। आऊ संगत हुंम हुंमा के। देवे दरस गुर पूरा आ के। पूरन विच पूरन जोत जगा के। पाल सिँघ नूं संग ल्या के। चेत सिँघ दे भुलेखे लाह के। सवरन सिँघ स्वर्गी सति सरूप वखा के। ब्रह्म विच्चों ब्रह्म जोत जगा के। साध संगत नूं सच सुच्च वखा के। सवा पंझी रुपए दा प्रशाद करा के। महाराज शेर सिँघ नूं भोग लगा के। संगत दे मुख अमृत पा के। ज्ञान गोझ दा भेत मुका के। द्वैत दूई दा पर्दा लाह के। चार जुग दा शब्द सुणा के। मनी सिँघ नूं माण दवा के। पूरा सतिगुर संगत विच बणा के। प्रगट होवे आपणा तेज वखा के। महाराज शेर सिँघ वेखे जोत जगा के। मोते नाल प्रभ कीता प्यार। सच शब्द दा प्रभ कीता आधार। करे मेहर प्रभ देवे तार। इक्क गुण तों होवे लक्ख हज़ार। छब्बी पोह लई हुक्म लिखाया। सच शब्द गुर सच सुणाया। जोत सरूपी जोत मांहि समाया। झूठी देह नूं आप तजाया। जोत सरूप एह डंक वजाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक हो आया। जुग उलटावण दा खेल रचाया। घर घर भांबड़ अग्ग दा लाया। वैर विकार दा जोर है पाया। राम नाम सभ दिलों भुलाया। पाप अपराध दा तेज वधाया। कलू काल ने कर्म कमाया। नष्ट करन नूं हरि जू आया। महाराज शेर सिँघ आप रघुराया। सोहँ शब्द जिस नाम जपाया। गुरसिक्खां नूं गुरमुख बणाया। गुरमुख सो जो गुर शरनी आए। साध संगत विच लै मिलाए। होए दयाल प्रभ दरस दिखाए। दु:ख दलिद्र सभ दे लाहे। पंजां सिक्खां नूं अज्ज माण दवाए। पंज सिख पुत्तर फल पाए। गुरसिक्खां मन वधाई। पोह छब्बी नूं ख़ुशी मनाई। तजी देह प्रभ जोत

प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ एह कला वखाई। सतिगुर पूरे दस्सी रीत। चरन कमल संग रक्खो प्रीत। झूठी देह बालू की भीत। सोहँ शब्द जप मन सरजीत। कबहूं ना डोले सिख अतीत। छब्बी पोह छड्डी देह दी प्रीत। ढठ्ठे गुरदुआरे मन्दर मसीत। गया माण बाणी गीता कुरान मज़ीद। अन्त काल होए भय भीत। सोहँ शब्द दी होई जीत। मात गर्भ दा भेत लुकाया। उलटा बिरछ एह जीव लगाया। सिर थल्ले पैर उप्पर टिकाया। तप नौं मास कराया। दसवें मास प्रभ हुक्म पठाया। मात गर्भ से बाहर आया। बाई पोह वीरवार जन्म उपाया। बचन प्रभ का सच हो आया। समदरसी प्रभ दरस दिखाया। सिमरती तन दा भेत पठाया। आपणा माण बाल ने पाया। बलजीत सिँघ नाम रखाया। बलधार बली आप आया। अमर सिँघ अमरापद पाया।

✻ ८ फग्गण २००६ बिक्रमी मेरठ छाउणी ✻

जोत निरँजण जगत में आई। कलिजुग विच किसे भेद ना पाई। विच त्रेता राम रघुराई। विच द्वापर कृष्न घनघाई। होया महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई। सोहँ शब्द प्रचलत कराई। बाकी सभन दा माण गंवाई। साची लिख्त गुर साचे कराई। आदि अन्त सर्ब रिहा समाई। धार खेल प्रभ जोत प्रगटाई। साध संगत बिन कोई भेत ना पाई। आवे जावे थिर ना रहाई। लोभी मनुआ कित खोजण जाई। हरि की जोत हरिमन्दर आई। विच सिख प्रभ जोत प्रगटाई। पैज इस दी आप रखाई। नब्ज चलणों बन्द कराई। प्रगट कीती आप वड्याई। धन्न सिख धन्न इस दी माई। धन्न पिता जिस दात एह पाई। घनकपुरी विच सेव कमाई। जोत प्रभू दी पूरन विच आई। प्रगट प्या प्रभ रघुराई। दीना नाथ सर्ब सुखदाई। घनी शाम कल जोत जगाई। कलू काल विच खेह मिलाई। सतिजुग सति सति वरताई। सोहँ शब्द दी लिख्त कराई। चार जुग होवे सहाई। महाराज शेर सिँघ विच एह वड्याई। उन्नीं सौ पंजाह बिक्रमी विच जोत सी आई। घनकपुरी जै जैकार कराई। देवी देवते फुल्ल बरसाई। घनकपुरी नूं मिली वधाई। जिथ्थे महाराज जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ नां रखाई। मनी सिँघ नूं दरस दिखाई। जोत निरँजण नज़री आई। होया शांत दरस प्रभ पाई। भूरी वाले तृखा मिटाई। गुर पूरे दी कीती वड्याई। साध संगत संग सेव कमाई। सर अमृत दित्ता पुचाई। सारी खेल आप कराई। बाणी अर्जन दी सच कराई। मंजी सहिब उत्ते दित्ता बहाई। गुर धाम सचखण्ड बणाई। महाराज शेर सिँघ चरन टिकाई। महंतां हाहाकार मचाई। भेद किसे ना जाणया राई। हरिमन्दर हरि जोत है आई। महाराज शेर सिँघ आप रघुराई। उस

समें एह शब्द सुणाया। अमृतसर नूं सराफ दवाया। अमृतसर जो सर दा भरया। प्रभ अबिनाशी खाली करया। फेर कीती खेल अपार । उन्नी सौ तरवंजा गए अनन्दपुर सुधार। होका दवाया सच्ची सरकार। महाराज शेर सिँघ पूरन अवतार। नीला चोगा आप रंगाया। सच्चे सतिगुर गल विच पाया। फिर आप बाबे ने सीस उठाया। अमाम मैहदी सभ तांईं सुणाया। निहकलंक कलिजुग विच आया। फेर नज़र ना आवे सच शब्द सुणाया। गुर पूरा घर ठांडे आया। चहुं जुगां दा जिस भेत खुल्लाया। राउ रंक कर इक्क बहाया। ऐसा शब्द मनी सिँघ तों लिखाया। राणयां महाराणयां दा माण गंवाया। निमाणयां तांईं गले लगाया। अन्तकाल कलिजुग दा कराया । जोत सरूप प्रभ जगत में आया। उह देखे आप नज़र ना आया। साध संगत विच रहे समाया। गुर धन्न जिस दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ सर्ब होत सहाया। महाराज शेर सिँघ होया अवतारी। सिक्खां दी जिन पैज संवारी। मस्तूआणा होवे धाम भारी । महाराजा संगरूर उस दी करे उसारी। सारी बाणी जिस वक्त उचारी। जीव जन्त सुण पार उतारी। महाराज शेर सिँघ सच अवतारी। सोहँ शब्द नाल सृष्टी तारी। दया नंद प्रभ दया कमाई। ज्ञान ध्यान दी सोझी पाई। जोत सरूप गुर लिख्त कराई। सोहँ शब्द मुख रखाई। त्रिलोकी नंदन एह बणत बणाई। सर्ब थाईं प्रभ होए सहाई। बिन देह प्रभ जोत प्रगटाई। आपणा भेत ना किसे बुझाई। शब्द साचा प्रभ सच कराई। सर्ब सृष्ट अग्न जलाई। सोहँ शब्द दी जैकार कराई। महाराज शेर सिँघ होए सहाई। एह वेला जां पूरा होवे। गुर साचा फिर जगत बलोवे। जोत जगत दी आप जलाई। बिन जोतों कोई जीव ना भाई। देह दीपक प्रभ रिहा समाई। बिन वटी है जोत जगाई। भुल्ला जीव भेद ना पाई। बिन गुर पूरे पति गंवाई। साध संगत विच कोई ना ज्ञाता। जिस ने एह रघुनाथ पछाता। अछल छलन छल आप कराया। पवन सरूप वाजा वजाया। जोत में जोत प्रभ जगत उपाया । हरिजू हर ही मांहे समाया। सोहँ शब्द दा तेज कराया । महाराज शेर सिँघ करे कराया। मनमुखां तों मुख छुपाया। गुरसिक्खां नूं दरस दिखाया। आपणा भेत ना किसे बताया। जोत सरूप जगत में आया। याचकां नूं एह दान दवाया। अनहद शब्द मन वजवाया। सोहँ शब्द दा राग सुणाया। होए प्रतक्ख है दरस दिखाया। मुकंद मनोहर प्रभ नज़री आया। महाराज शेर सिँघ दुःख दर्द मिटाया। हुण ऐसी करां खेल अपार। कलिजुग तांईं कीता पार। साध संगत नूं दित्ता तार। बेमुखां नूं नर्क मंझार। एथे ओथे मिली हार। बिन सिख ढोई ना देवे करतार। सर अमृत वाली नहर अपार। चवी मील जल लहिंदी धार। घनकपुरी प्रभ लै अवतार। रचन रचाए अपर अपार। सद बख्शंद सच सिरजणहार। महाराज शेर सिँघ नर अवतार। जिथ्थे खेल किए अपार। सच्चा धाम बणाए आप दातार। पिण्ड कल्सीआं जिथ्थे गुर दरबार। सच धाम

जिथ्थे वसे निरँकार। जिस दी जोत अपर अपार। आप अपरम्पर करनेहार। चेत सिँघ सिख नूं दित्ता तार। पुत्तर सवरन जिस दित्ता वार। सत्त जेठ वीह सौ छे दिन अपार। सवरन गया गुर पुरी सधार। कोए ना मेटे एह लिख्त अपार। महाराज शेर सिँघ सच्चा करतार। बाणी प्रभ दी प्रभ दित्ती उचार। साध संगत नूं दित्ता तार। सर्ब सूख गुर चरन प्यार। आत्म जोत जगाए अपार। गुरसिक्खां दा होए अधार। शब्द साचा सच निस्तार। महाराज शेर सिँघ जगत उधार। सोहँ शब्द होवे जुग चार। कल्सीआं तांईं एह माण दवाया। सच तख्त सतिजुग दा बणाया। सवरन सिँघ संग जोत मिलाया। तज धू्र दर अग्गे बहाया। जिथ्थे महाराज शेर सिँघ चरन टिकाया। उह वेखे आप नज़र ना आया। भगत जनां नूं दरस दिखाया। सुत्या रात टुम्ब उठाया। हो प्रतक्ख आण दरस दिखाया। सारा संसा मन दा लाहया। हरि जू हर थां नज़री आया। कलिजुग विच एह माण दवाया। सोहँ शब्द सच शब्द सुणाया। वीह सौ सत्त बिक्रमी आवे। हाहाकार जगत हो जावे। कोए ना मेटे प्रभ लिख्त करावे। महाराज शेर सिँघ प्रगट हो जावे। निहकलंक आप अख्वावे। अमाम महदी गल चोली पावे। आप उपावे आप खपावे। अलहु अल्ला दा माण गंवावे। सदी चौधवीं ख़त्म करावे। सोहँ शब्द दी जैकार करावे। मैं हां आप जोत सरूपा। उनन्जा पवण चवर सिर होता। मेरी महिंमा अपर अपार। मैं हां आपणी जोत आधार। विच पाताल मैं नैण मुँधार। लेटां बाशक उप्पर पैर पसार। लच्छमी झस्से चरन अपार। आलसीआ नहीं सच्चा करतार। जीवत नूं दित्ता जोत अधार। सर्ब सृष्ट में रिहा पसार। ओअँ आप सोहँ मेरा शब्द अपार। महाराज शेर सिँघ पूरन अवतार। मातलोक विच करां पसार। समें अनुसार लवां अवतार। कभी जोत सरूप कभी देह धार। महिंमा मेरी अपर अपार। सतिजुग विच सद मेहरवान। त्रेते विच राम भगवान। द्वापर विच कृष्न मुरार। जिस ने गीता लिखाई अपार। अर्जन दित्ता तोड़ हँकार। बैराट सरूप वखाया मुरार। मैं करन करावणहार दातार। महाराज शेर सिँघ सच्चा अवतार। सच कर्म सच मेरी कार। सच शब्द लिखाए अपार। मूर्ख मुग्ध ना जाणे मेरी सार। गुरसिख सारे उधरे पार। लज्जया रक्खी विच संसार। सर्ब निवासी प्रभ करतार। सभ जीवत को देत अधार। टुट्टी गंढे सच सिरजणहार। सिँघ भजन नूं दित्ता तार। भुल्ला सिख है उतरया पार। कोए ना बुझे प्रभ सच करतार। महाराज शेर सिँघ ठांडा दरबार। कलू काल विच खेल रखाया। ईसा मूसा मुहम्मद उपजाया। उहनां तांईं माण दवाया। सिर उन्हां दे छत्र झुलाया। नाम निरँजण अल्ला रखाया। अन्तकाल प्रभ आप खपाया। नानक निरँकारी प्रगटाया। चार कुन्ट नाम सति दृढ़ाया। हँकारीआं निन्दकां भेत ना पाया। ऐसा पर्दा उन्हां ते पाया। आपणा भेत प्रभ आप छुपाया। महाराज शेर सिँघ दुःख भंजन राया। उह सी ईश्र दा चमत्कार। जोत

जगाई अपर अपार। नानक तों अंगद कल धार। पैंतीस अक्खर लिखाए करतार। जामे दस एह जोत प्रगटावे। दीपक संग दीपक बलावे। आदि अन्त ना फिर बतावे। तूं ही तूं सभ जगत है गावे। ऊँच अगम्म थिर रहावे। कोई ओस दा भेत ना पावे। जोत सरूप जोत हो जावे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर कहावे। अन्त काल कलिजुग दा आया। ईश्र ने खेल रचाया। सचखण्ड जो रहे समाया। मातलोक विच शेर सिँघ नाम रखाया। जोत जिस दी डगमगाया। बिन तेल बत्ती दीपक जलाया। सद अबिनाशी निरँजण राया। धार खेल चतुर्भुज कहाया। सांवल सुंदर रूप बणाया। अछल छलन छल आप कराया। जोत सरूप सभ जगत उपाया। बेमुखां नूं परे हटाया। गुरसिक्खां नूं शरनी लाया। भय भयानक विच होए सहाया। कलिजुग विच आण दरसाया। ऊँच नीच कर इक्क दिखाया। धरनी धर ईश्र नर नरायण आया। गुर धाम गुर दरस दिखाया। जूठयां झूठयां भेद ना पाया। गुर पूरे तों मुख छुपाया। प्रगट होया आप रघुराया। महाराज शेर सिँघ नज़री आया। गुर पूरा एह साची खाण। गुरसिक्खां नूं देवे दरस प्रभ दान। सोहँ शब्द उत्तम ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। त्रैलोकी नाथ प्रभ जाणी जाण। घट वासी ब्रह्म अस्थान। राउ रंक जिस इक्क समान। दुष्टां दे गुर लाहे घाण। अन्तकाल कलधार प्रभ आया। अन्त कलू दा आप कराया। उलटे धन्दे जगत लगाया। ऐसा प्रभू खेल रचाया। गऊ ग़रीब ने हाहाकार मचाया। बन्दी तोड़ प्रभ होए सहाया। मदि मास दा नास कराया। सोहँ शब्द गुर डंक वजाया। साध संगत नूं माण दवाया। महाराज शेर सिँघ गुर जगत सदाया। ऐसी कला हुण आप वरतावे। घर घर विच हाहाकार पै जावे। कलू दा प्रभ काल करावे। सतिजुग दी जैकार करावे। सोहँ शब्द प्रतक्ख हो जावे। ओंकार प्रभ सर्ब समावे। एह बचन ना होए अधूरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा। सच लिख्त प्रभ आप कराए। अट्ठ फग्गण नूं जोत प्रगटाए। गुर दर ते गुर संगत आए। हरि हरि नाम मुखों सभ गावे। पवण सरूप एह खेल रचावे। महाराज शेर सिँघ प्रगट हो जावे। कोई इस दा भेत ना पावे। गुर बाणी गुर जोत प्रगटावे। गुर गोबिन्द गुर नज़री आवे। होए प्रतक्ख प्रभ नज़री आवे। गुरदुआरे मेरठ नूं भाग लगावे। जिथ्थे फिर गुर धाम सुहावे। अन्ध कूप में जोत प्रगटावे। महाराज शेर सिँघ चलत करावे। मैं हां आप सच्चा करतार। सचखण्ड विच वसणेहार। मेरी महिंमा अपर अपार। देवत्यां नूं मेरा अधार। ब्रह्मा विष्न महेष मेरा आकार। शिव शंकर मेरी जोत अधार। आदि अन्त मैं एकँकार। महाराज शेर सिँघ गुण निस्तार। जो जन प्रभ की शरनी आए। जीव जगत दा भेख हटाए। हँगता माण दिलों गुआए। निजानंद प्रभ सोझी पाए। भगत वछल प्रभ दरस दिखाए। आए शरन प्रभ चरनी लाए। दूत दुष्ट सभ परे हटाए। घाल सिक्खां दी पाई

थाएँ। अन्तकाल प्रभ होत सहाए। जम जंदार कोई नेड़ ना आए। सोहँ शब्द दी चोट ना खाए। महाराज शेर सिँघ सर्ब है थाएँ। विच बबाण प्रभ लए बिठाए। गुर पूरा गुर पुरी पहुंचाए। सचखण्ड जिथ्थे रिहा समाए। गुरसिक्खां दी एह है थाएँ। मैं हां आप जोत सरूपा। कलिजुग विच वड्डा हां भूपा। एह जगत इक्क खेल रचाया। छिन में उपाया छिन मांहि खपाया। ईश्र ने एह बणत बणाई। इक्क बूंद तों बणत बणाई। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सहाई। विच मति मन बुधि टिकाई। आपणी जोत फिर आप जगाई। करनहार सभ सृष्ट उपाई। गुण निधान एह दया कमाई। फिर वी जीव भेव ना पाई। नज़र ना आया जिन बणत बणाई। दयाधार प्रभ दरस दिखाई। साध संगत जो दर ते आई। दुध्ध पुत्त सगल फल पाई। महाराज शेर सिँघ लिख्त कराई। विष्नूं भगवान दी एह वड्याई। गुण निधान आण लिख्त कराई। आप अतुट्ट अतुल्ल वड्याई। सुक्कयां नूं प्रभ हरा कराई। महाराज शेर सिँघ होए सहाई। सिख इक्क करे अरदास। बैठा विच संगत है गुर के पास। बेनती करे करन ना जाणे। पूरा सतिगुर ना पछाणे। गुर दर ते खड़ा पुकारे। गुर ठांडा आप करे निस्तारे। माण हँकार प्रभ आप निवारे। सच शब्द सच गुर की मारे। करो बेनन्ती होए अधीन। गुर पूरा बैठा प्रबीन। आप खलोवे हत्थ है जोड़े। हउमे ममता मन ते होड़े। चरन कँवल में सीस निवाए। मन दी हँगता मैल गंवाए। फिर गुर पूरा दया कमाए। सर्ब सूख प्रभ दए दिखाए। दुःख दलिद्र रहे ना राए। जो जन मेरी शरनी आए। चार पदार्थ घर में पाए। जीव जन्त प्रभ रिहा समाए। एह मेरा है चमत्कार। सभ जगत भुलाया भुलावणहार। अलोप हो बैठा गुर करतार। मूर्ख मुग्ध ना पावे सार। गुर साचा साची है कार। विच चरन जो ना करे निमस्कार। उह जीव किव उतरे पार। भगत वछल प्रभ देत उधार। जुगो जुग पसरे पसार। हर जुग विच प्रभ लए अवतार। आपणा शब्द लिखाए अपार। सोहँ शब्द सच निस्तार। ओअँ आप प्रभ दातार। जिस दी जीव ना पावे सार। पूरन सिख जिन कीती विचार। दे दरस गुर दित्ता तार। मैं हां आपणी जोत अधार। जीव जन्त सभ देवां तार। सद बख्शंद सच सिरजणहार। बिन नब्ज प्रभ रिहा ललकार। आपणा राह गुर आप बतावे। शब्द सोहँ दी मन चोट लगावे। पढ़ के सिख मन बिग्सावे। थिर घर दी सोझी है पावे। द्वार दसवां प्रभ आप खुल्हावे। निजानंद निज मांहि पावे। झिरना निझरों आप झिरावे। अमृत बूंद कँवल में पावे। अनहद शब्द दी धुन सुणावे। सोहँ शब्द सच सच वरतावे। चार जुग जै जैकार करावे। महाराज शेर सिँघ लिख्त करावे। सच मार्ग सच सृष्टी लावे। अंज़ील कुरान दा माण गवावे। अन्ध घोर ऐसा हो जावे। पूरा सतिगुर नज़र ना आवे। विच संगत गुर शब्द लिखावे। जोत सरूप जोत रल जावे। जिथ्थों उपज्या तिस मांहि समावे। महाराज शेर सिँघ

चोज वखावे। कोट ब्रह्मण्ड कोई थिर ना रहावे। शब्द बाण गुर ऐसा लावे। चक्र सुदर्शन दरस दिखावे। चार वरन दा भेद मुकावे। ब्रह्म से उपजे ब्रह्म मांहि समावे। ईश्र जोत हरि जीव में आवे। सर्ब सृष्ट प्रभ एक बणावे। नीच ऊँच सभ इक्क करावे। अपणा नाम एह बतावे। सोहँ शब्द घर साचे गावे। आवण जाण दा जीव पन्ध मुकावे। धरत धवल आकाश सभ थांईं समावे। जहां देखां तहां नदरी आवे। कृपानिध प्रभ होए सहाए। आपणा शब्द मुखों सुणाया। गुर धाम गुर पुरी बणाया। पैज रक्खण नूं हरि जू आया। पूरन देह विच जोत जगाया। मन दे भुलेखे सतिगुर लाहे। नब्ज सिख दी चलणों हटाए। महाराज शेर सिँघ नाम रखाए। भगत वछल हरि लाज रखाए। ओस धाम नूं भाग लगाया। जिथ्थे है प्रभ दरस दिखाया। मनमुखां तों पर्दा पाया। गुरमुखां नूं विच चरन बहाया। अजूनी रहित नज़री आया। अकालमूर्त ना मरे ना जाया। वीह सौ छे अड्ड फम्गण प्रभ खेल रचाया। जोत सरूप जगत में आया। आप है जोती जोत सरूपा। अनहद शब्द वजाए भूपा। सुरत शब्द दी जो जन जाणे। महाराज शेर सिँघ खड़ा सराहणे। देवे दरस सच कर जाणे। मन इच्छे सगल फल पाणे। कलिजुग विच भए जीव जन्त अञ्याणे। भुज्जण इउँ जिउँ भठयाले दाणे। सच शब्द जो ना पछाणे। सोहँ शब्द गुर मारया बाणे। महासाथीं सर्ब सृष्ट उपावे। अन्त समें प्रभ आप खपावे। सोहँ शब्द राह चलाया। सतिजुग विच होए सहाया। सर्ब कला प्रभ आप है धारी। कलिजुग दी हुण होई ख्वारी। सतिजुग दी हुण आवे वारी। प्रगट होवे महाराज शेर सिँघ निरँकारी। मनी सिँघ भया पूत भव तारी। सर्ब सृष्ट जिन आप सँघारी। शरनी लग्गे सृष्ट आण सारी। गुर पूरे एह पार उतारी। सोहँ शब्द मेरा रिदे ध्या ली। अमृत वेले दिन है चाली। गुर पूरा जिन बणत बणाई। घर बैठा गुर पूरा पाई। दुखियां दा जिस दुःख मिटौणा। बाणी बोहथ गुर पूरा पौणा। पायो फल सर्ब मन भौणा। साध संगत नूं सच बतौणा। मुक्क जावे जगत विच औणा जाणा। काया कटाख्श फिर ना खाणा। चरन कँवल प्रभ चरनी लाए। देवे दरस गुर दया कमाए। मन में इच्छा अवर जो धरे। पूरन करे आप प्रभ हरे। सच्चा गुर साचा आसा वरे। होए कृपाल प्रभ किरपा करे। होण मनोरथ सभ दे पूरन। गुर का बचन नहीं अधूरन। मदि मास जो रसना लाए। दुरमति देह उस दी हो जाए। पूरे गुर का दरस जो लोड़े। सोहँ शब्द मन में जोड़े। एह दित्ता सिक्खां नूं दान। सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम शब्द दा दित्ता ज्ञान। ज्ञान गोझ जो मेरा पावे। प्रभ अबिनाशी रिदे समावे। दूध पूत सभ घर मांहि पावे। पूरा गुर एह सच वखावे। जीव जुगत कोई ना जाणे। आपणा भेद आप वखाणे। बुझी दीपक गुर आप जगाई। सच मन्त्र गुर सच दृढ़ाई। ईश्र जीव दा भेद मिटाई। अचरज नूं अचरज़ मिलाई। पसू प्रेतों

कर देव बहाई। गुर पूरे विच एह वड्याई। शब्द आपणे दा भेद खुल्हाई। सभ तों बाणी मुख रखाई। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत सभ वस कराई। पूरे गुर विच एह वड्याई। त्रैलोक इस दा जस गाई। महाराज शेर सिंघ पैज रखाई। शब्द मेरा है निरबाण। जेतीआं मुशकलां तेतीआं आसान। नाम मेरा सभ में प्रधान। सोहँ शब्द सर्ब की आण। पवण रूप गुर मसाण बणाए। जम कंकर कोई नेड़ ना आए। बीर अठारां भय रखाए। हाकन डाकन सभ डर जाए। सर्ब सृष्ट गुर बाण लगाए। विच भय सभ हरि गुण गाए। लोहे का संगल गल में पाए। सार की मूंगली सिर पर लाए। गुर पूरे कीती विचार। होए कृपाल प्रभ एकँकार। बचन से बाहर खाए सिर मार। गुर का दोखी ना उतरे पार। इस शब्द दी एह वड्याई। गुर नानक दी कला वधाई। मरदाने उत्ते दया कमाई। भेडू वाली देह पलटाई। सोहँ शब्द हुण मुक्खों गाई। तीन लोक दा भय गंवाई। प्रभ चरन संग लै मिलाई। मेरा नाम जो नर ध्याई। सोहँ शब्द दा पाठ जो करे। इक्क हज़ार नित्त उठ पढ़े। दर्शन देवे आप प्रभ हरे। इक्क सौ इक्क पाठ जो करे। मन में शांत कपट ना धरे। ऐसी बुध प्रभ है करे। धन्न धन्न मुखों कहे नर हरे। देह दीपक विच जोत आ जले। पूरन पुरख होए सुजान। जिस नूं उपज्या ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान। साध संगत विटुह कुरबान। अमृत गुर आप बणावे। गुरसिक्खां दे मुख चुआवे। दुःख दलिद्र सारे लाहवे। भरम भूत दा नास करावे। पवित आत्मा इस नाल करावे। अनूठा रस मुख चवावे। तप्त आत्मा शांत हो जावे। साध संगत प्रभ दया कमावे। पसू प्रेतों देव बणावे। महाराज शेर सिंघ दया कमावे। अमृत बूंद पी गुरमुख बण जावे। देह अरोग सर्ब सुख पावे। दूजी वार सिख सेव कमावे। गुर की लिख्त का फल गुर तों पावे। होए दयाल गुर दरस दिखावे। चरन कँवल विच पदम दरसावे। चरन खब्बे ते निशान बिग्सावे। जिथ्थे बधक बाण लगावे। जगदीशर हरि जू नज़री आवे। मोहन माधव कृष्न मुरार अख्वावे। बाल उमर विच दरस दिखावे। सुंदर कुण्डल मुकट बैन नज़री आवे। कलिजुग विच महाराज शेर सिंघ अख्वावे। कृष्न तों प्रभ देह पलटावे। वांग द्वापर कलिजुग दा अन्त करावे। सतिजुग नूं सतिवाद बणावे। सति सरूप सभ जीव उपावे। सोहँ शब्द दी धुन वजाए। महाराज शेर सिंघ जै जै कार करावे। बाणी सभ दा माण गंवावे। प्रभ पूरा भया अवतारी। पैज सिक्खां दी आण सवारी। वीह सौ सत्त जेठ पंज नूं खेल है करना। सर्ब सृष्ट विच बहुत दुःख जीवां ने भरना। ऐसा काल कलू दा करना। महाराज शेर सिंघ दुःख दलिद्र हरना। सोहँ शब्द सभ रसना उचरना। अन्धकार जगत जां होवे। महाराज शेर सिंघ प्रगट होवे। प्रगट होवे जोत सरूप। जिस दी महिमा बड़ी अनूप। दुनियां डोबी माया अन्ध कूप। बैठा अलोप आप गुर भूप। कलिजुग दी हुण होई

सफाई। विच संसार पै जाए दुहाई। घर घर अग्ग प्रभू ने लाई। कोई ना मेटे इस नूं राई। गुर साचा जिन खेड बणाई। काग भुसंड ने देह वखाई। सभ सिक्खन दी आस पुजाई। महाराज शेर सिँघ होए सहाई। महाराज शेर सिँघ बचन लिखाया। मनी सिँघ नूं सतिगुर बणाया। पिण्ड बुग्घे जिथ्थे थान सुहाया। प्रेम सिँघ घर तख्त सुहाया। जिस वेले लिख्त बाणी दी होवे। चार दीपक सदा बिलोवे। सिर ते छत्र चवर सिर होवे। महाराज शेर सिँघ हाज़र होवे। तेजा सिँघ सिख पास खलोवे। साध संग प्रेम सिँघ घर होवे। इन्द्र सिँघ गुण हरि के गाए। चन्दोआ चन्दन सिर ते पाए। सोहण सिँघ नूं संग रलाए। जीवन सिँघ कोल बिठाए। प्रीतम सिँघ सिर मेरे छत्र झुलाए। सोहण सिँघ मास्टर धूप दी जोत जगाए। जिस दी सुगंध पए सभ थाएँ। चार जुग नाम रह जाए। बंसो देवी फिर सेव कराए। महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याए। बाणी लिखण नूं कलम उठाए। सर्ब सोझी गुर पूरा पाए। अनहद्द शब्द मन वजाए। खोल्ल त्रैकुटी प्रभ दरस दिखाए। शब्द रूप प्रभ नज़री आए। जगमग जोत प्रभ आप जगाए। भुल्ल चुक्क मुआफ हो जावे। महाराज शेर सिँघ होए सहाए।

५७
०१

✻ ३० फग्गण २००६ बिक्रमी मेरठ गुरदुआरे विच बचन होए ✻

ओंकार प्रभ भया प्रकाश। जोत निरँजण सर्ब गुणतास। आदि अन्त गुरसिक्खन पास। विच ब्रह्मण्ड करे निवास। तीन लोक चरन कँवल निवास। उधरे सिख जेहड़े हरि के दास। सतिगुर मनी सिँघ बैठे पास। महाराज शेर सिँघ सर्ब निवास। शेर सिँघ निरँजण ओअँ आप। सोहँ शब्द नाम मेरा जाप। जो सिमरे उतरन सभ पाप। जोत निरँजण मारे तिन्न ताप। महाराज शेर सिँघ कल राखे आप। गुरसिक्खां दा वड प्रताप। घर साचा थिर मेरा दरबार। महिंमा गुर की अपर अपार। कलिजुग विच ल्या अवतार। भगत जनां नूं लाया पार। सृष्टी डुब्बी विच मंझधार। प्रगट हो के आप करतार। चेत पंज शनिचरवार। लिख्त लिखाई विच सच दरबार। गुरबाणी होवे एह जगत उधार। पूरे गुर दित्ती रसना उचार। भगत जनां होवे जैकार। सुण के सिख सभ उधरन पार। सतिजुग साचा लाया निरँकार। महाराज शेर सिँघ पार उतारनहार। अमृत वेले उठ के सारे। गुर पूरे दे विच दरबारे। इन्द्र सिँघ पंज शब्द उचारे। पलँघ उप्पर साडा फोटो लाए। मनी सिँघ नूं कोल बहाए। सीस उप्पर चन्दोआ छाए। लहिंदी दिशा मुख रखाए। प्रीतम सिँघ फिर छत्र झुलाए।

❊ ५ चेत २००७ बिक्रमी ❊

पंज चेत दा दिन सी आया। सतिगुर पूरे खेल रचाया। विच बुग्घीं डेरा लाया। बाणी रचन दा दिन मनाया । पूरी बिध आप बताई। फिर बाणी दी लिख्त कराई। साध संगत गुर कोल बहाई। पूरन सिख जिन्हां सेव कमाई। महाराज शेर सिँघ जोत जगाई। जुग चार जै जैकार कराई। सच तख्त गुर आप बणा के। बाणी बोहथ जोत प्रगटा के। चेत पंजवीं दिन मनवा के। अमृत रूपी बाणी लिखवा के। सतिगुर मनी सिँघ कोल बहा के। करोड़ तेतीस संग रला के। मंगलाचार करन घर आ के। गुर पूरे दा दर्शन पा के। अनहद शब्द मन धुन वजा के। चतुर्भुज आप प्रभ आ के। महाराज शेर सिँघ दया कमा के। सोहँ शब्द दी लिख्त करा के। सोहँ शब्द होवे भरपूर। सच गुर मन्त्र आसा पूर। जो जन सिमरे चिन्ता दूर। जम जंदार करे प्रभ चूर। साध संगत दी आसा पूर। महाराज शेर सिँघ सदा हज़ूर। अन्त काल आप प्रभ आया। तज देह जोत प्रगटाया। कलू काल दा काल कराया। डण्ड प्रचंड सभन नूं लाया। जीव नास नूं जीव उपाया। घर घर देवता अग्न लगाया। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै सच सुच कर भस्म बहाया। खै करन जगत आप प्रभ आया। वीह सौ सत्त विच एह खेल रचाया। हाहाकार कर जगत रवाया। महाराज शेर सिँघ चोज वखाया। सचखण्ड किरपा प्रभ करी। मातलोक विच देह प्रभ धरी। कलिजुग जीव ना बुझया हरी। पूरन सिक्खण ते प्रभ किरपा करी। दित्ता दरस शेर सिँघ वरी। गुर सिक्खन नूं दरस दिखावे। आपणी महिंमा आप गणावे। बेमुख ना सीस निवावे। सिदकी सिख संगत विच रलावे। मास शराब ना रसनी लुआवे। महाराज शेर सिँघ आपणा नाम जपावे। मैं हां प्रगट्या विष्नूं भगवान। भगत जनां होवे कल्याण। मनी सिँघ करे पछाण। फिर पावे गुर गद्दी दा माण। मैं पिता उह पूत समान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान। मेरी महिंमा अपर अपार। जुगो जुग मेरा पसार। कदे जोत सरूप कदे देह धार। जुगो जुग लवां अवतार। निरगुण सरगुण सरूप निस्तार। जीव जन्त मेरी जोत अधार। तीन लोक मेरा पसार। महाराज शेर सिँघ जगत उधार। सुण के नाम जीव उतरे पार। सर्ब थाएँ मेरा है गवण। तीन लोक मेरा है भवन। सोहँ शब्द मेरा है हवन। जीव उधार आप गुर पवण। अन्त काल कलू तांईं खपाया। दुष्टां हँकारीआं नूं भस्म कराया । मदि मास दा नास कराया। कुम्भी नर्क इन्हां नूं पाया। जिन्हां महाराज शेर सिँघ नहीं ध्याया। पूरन गुर कर सच वखाया। जो जन चले मेरे भाए। सोहँ शब्द संग मन लगाए। मन दी दुबिधा मैल गंवाए। प्रभ पूरे दी सेव कमाए। मध मास नूं हत्थ ना लाए। गुरसिक्खां संग गुरसिख बण जाए। खोल्ह कपाट गुर दरस दिखाए। चरन कँवल विच लए मिलाए। ज़ात पात दा माण गंवाए। चार

५८
०१

५८
०१

वरन प्रभ इक्क कराए। ब्रह्म से उपजे ब्रह्म माहि समाए। जोत सरूप संग जोत प्रगटाए। कोई प्रभ दा भेत ना पाए। दया धार कलिजुग विच आए। पंज तत्त विच जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ नाम रखाए। जिन वेख्या तिन नदरी आए। साध संगत गुर दरस दिखाए। सोहँ शब्द गुर नाम प्रगटाए। मैं हां प्रगट्या गुर गोबिन्द। सद मेहरवान सदा बख्शिंद। कलिजुग विच भया मृगिन्द। जिस ने वगाई उलटी सिंध। सारे जगत तों कराए निंद। काल रूप होए निकाले जिंद। प्रगट होवे फिर आप विच हिन्द। जमन किनारे वासी घविंड। महाराज शेर सिँघ जोत जगत जिंद। जमन किनारे धाम रचौणा। जिथ्थे सतिगुर तख्त रचौणा। सतिगुर मनी सिँघ उप्पर बहौणा। महाराज शेर सिँघ हो प्रगट औणा। दिलीउँ नेड़े जल दी धार। चोज करे जिथ्थे करतार। संगत जुड़े अपर अपार। कर के दरस सिख उधरन पार। नज़री आवे आप करतार। सोहँ शब्द दी होवे गुंज़ार। इक्क सिख फिर प्रगटौणा। जिस नूं दरस आप दरसाउणा । महाराज शेर सिँघ नज़री आउणा। ओस डंक है विच जगत वजाउणा। सभ सृष्ट को सरनी लाउणा। आप आ के सीस निवाउणा। सवा करोड़ गुर भेंट चढ़ौणा। सोहँ शब्द दा मोक्ष पाउणा। महाराज शेर सिँघ सदा मन गाउणा। ऐसा डंक आप वजवावे। ऊँच नीच सभ सरनी पावे। अटल्ल गुर दा दर्शन पावे। दु:ख दलिद्र हिन्द दे गंवावे। सच तख्त सच राज कमावे। ऐसी माया प्रभू तों पावे।
५६ थिर घर वेखे नदरी आवे। धन्न धन्न रसना नित्त गावे। महाराज शेर सिँघ दी सेव कमावे। सेवक बणे सुरत मन ला के। ५६
०१ ०१
राज माण सभ दिलों गंवा के। पूरी गुर तों सोझी पा के। रईअत सारी विच चरन ल्या के। करे चवर अग्गे सीस झुका के। रसना विच्चों सोहँ सोहँ गुण गा के। भय भगती दी सेव कमा के। आदि अन्त प्रभ दा दर्शन पा के। आत्म चिन्त सारी मिटा के। नंगे पैरीं गुर सेव कमा के। तख्त ताज गुर अग्गे टिका के। जन्म जन्म दे दु:ख मिटा के। सच वासी तों सच लिख्त करा के। विच बैकुण्ठ प्रभ दर्शन पा के। कुम्भी नर्क विच्चों आपणी कुल कढा के। जावे बलिहार सतिगुर गुण गा के। जिस ने दित्ता माण जगत विच आ के। सच्चे पातशाह सच दया कमा के। महाराज शेर सिँघ आप है आ के। दीन दयाल दया दु:ख भंजन। ऐसे उस दे तोड़े गुर फंदन। संगत विच होवे वांग चन्दन। जगत बिलोवे आप त्रैलोकी नंदन। सर्ब दूख आप भवखण्डन। जम के दूत ना सिख नूं दंडन। गुर के सिख गुर संग बिहंढुन। तारे आप गुर पूरा निरँजण । भय भयानक विच है भय भंजन। आदि जुगादि है सद रंगन। महाराज शेर सिँघ त्रैलोकी नंदन। आपणी बिध आप है जाणे। कोई जीव ना आख वखाणे। सिख है चले गुर के भाणे। भुल्ला भुज्जे वांगर दाणे। देव दंत प्रभ लाए ठिकाणे। दरगाह विच ना धर्म राए पछाणे। कलिजुग विच होए चले निताणे। सोहँ शब्द गुर मारया बाणे। महाराज शेर

सिँघ असुर संघाणे। असुर सुर गुर आप बणाए। माणस विच मातलोक प्रगटाए। आपणी जोत प्रभ हर विच टिकाए। निज़ घर बैठा ताड़ी लावे। कोई जीव भेत ना पावे। हरि जू हर थां रिहा समाए। कर खेल चतुर्भुज कहाए। हँकारीआं तांईं हँकार दवाए। निमाणयां दा आप होए सहाई। जोत अग्न जगत नूं लाई। हाहाकार कर सृष्ट रवाई। विच संसार पा दित्ती दुहाई। ऐसी कला आप वरताई। वीह सौ दो बिक्रमी कहर दी आई। जिस ने सृष्टी टुम्ब उठाई। महाकालका खपरी लै आई। लहू मिझ दी धुदा तिहाई। भैरो बेताल एह देवे दुहाई। बख्श लैणा मेरे गुँसाईं। ऐसी जून असां ने पाई। इस तों मिले ना सानूं वड्याई। हुक्म तेरे विच दईए दुहाई। सारी सृष्ट कर भस्म वखाई। अन्त आस तेरे चरनां दी टिकाई। दिओ तार मेरे गोबिन्द रघुराई। असीं निमाणे तेरी सार ना पाई। कई जुग बीते भैरो भूत अख्वाई। किसे ने नहीं साडी देह छुडाई। कलिजुग प्रगटयो आप रघुराई। नाम तेरे दी पई दुहाई। चारों तरफ ऐसा डंक वजाई। चंड प्रचंड विच युद्ध दे आई। उह सी शक्ती तेरी मेरे बिंग कसाई। दुर्गा अठ्ठ भुज सवारी शेर कराई। सुंभ निसुंभ कर भस्म वखाई। जोत उह महाराज शेर सिँघ प्रगटाई। संसार विच महाकाल कालका आई। जिस ने मैहन्दी लाल ख़ून दी लाई। लाड़ी जगत गुर जगत विआही। सभ सृष्ट एहदी विच गोद सवाई। जिस नूं कोई ना मेटे राई। जगत विच पै जाए दुहाई। महापरलो कलिजुग ते आई। पूरे सतिगुर खेल रचाई। सोहँ शब्द दी गुर तेग़ उठाई। जोत सरूप जगत सिर लाई। होए प्रतक्ख सर्ब सुखदाई। वेखे बैठ आप रघुराई। चोज वखावे जगत गुसाईं। जोत रूप जगत जलाई। बिल्लावण जीव देण दुहाई। कोई बचावे आण मेरी माई। चार वेद ना होण सहाई। गीता ज्ञान दा भेत मुकाई। कुरान अञ्जील सभ नष्ट हो जाई। विच दरबार शक्त ना राई। तीर्थ तट्ट ना बख्शे तेरे तांईं। गंगा गोदावरी देण दुहाई। तीर्थ यात्रा सारी भस्म कराई। शक्तीवान सर्ब शक्त मिटाई। जिस ने दित्ती दात ओस लई समाई। सोहँ शब्द सभ चिन्त मिटाई। उचरे आप मुक्खों रघुराई। प्रगट करे भगत वड्याई। सोहँ रूप ही सिख जानण। सदा हज़ूर पूरा गुर मानण। पावण फल सदा मन भानण। गुरसिक्खां नूं दित्ता दानण। इस तों परे होर कुछ ना जानण। सिमरे जो होवे मन चानण। कोट दान महा इशनानण। तीन लोक प्रभ एक समानण। जोत सरूप गुरसिख को चानण। भुल्ले जीव ना गुर को पछानण। महाराज शेर सिँघ रिदे ध्यानण। महा सुख होवे गुर ज्ञानण। ज्ञान गोझ गुर आप बतावे। होए दयाल प्रभ दरस दिखावे। निजानंद निज़ मांहि वखावे। खोल्ह त्रैकुटी दरस बिग्सावे। चक्र चिहन आपणी जोत वखावे। जिस दे नाल जोत जगावे जलावे। नैण मूंद नर हरि जी आवे। खंब भंबीरी दा पर्दा हटावे। होए प्रतक्ख आप दर्शन दिखावे। कलिजुग विच एह दया कमावे। आपणे सिक्खां दी पैज

रखावे। सोहँ शब्द सुरत चित लावे। सिख नूं जनभगत बणावे। गुर बाणी बाणी गुर विच शब्द भावे। सिदकी सिँघ गुर खिच्च लै आवे। सेवा जिन्हां दी साची साचा लावे। सिर आपणे उत्ते छत्र झुलावे। प्रीतम सिँघ नूं परम पुरख बणावे। आवण जावण दा पन्ध मुकावे। दे दरस गुर पर्दे लाहवे। खोल्ह कपाट भरम भय दूर करावे। महाराज शेर सिँघ थिर आप रहावे। सिक्खां दी जै जैकार करावे। सतिगुर पूरा होए सहाई। माणा सिँघ नूं देवे वड्याई। जिस ने जोत जुगत गुर दी पाई। सेवा आपणी सफल कराई। अन्त काल प्रभ होया सहाई। विच बबाण ल्या बिठाई। गुर धाम गुर पुर पुचाई। दिवस रैण सदा गुण गाई। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाई। तेजा सिँघ सिख अस्थूल । जिस ते लाई सेवा अनभूल। ऐसी दित्ती प्रभ वड्याई। सरबंस दान सगल फल पाई। तन मन धन दी सेव सफल कराई। अन्तकाल हुण कलू दा गुर दे वखाई। महाराज शेर सिँघ प्रगटे रघुराई। चेत पंज नूं दित्ती वड्याई। मेरे सिख मेरे विच भेद ना काई। महाराज शेर सिँघ करे भगत वड्याई। इन्द्र सिँघ सिख निस्तार। जिस ने बणाया गुर दरबार। मेरा धाम उहदे विचकार। जिथ्थे तजी देह निराधार। जोत सरूप प्रगट्या करतार। समाध विच्चों पंज जेठ विचार। इस दी खेल हुण होवे अपार। छड्डुया घविंड सच्ची सरकार। सृष्टी डुब्बे विच मंझधार। इन्द्र सिँघ सिख मेरा अपर अपार। रसना सिमरे महाराज शेर सिँघ निरँकार। जिथ्थे लिख्त होवे अपार। पिण्ड बुग्घे धरनी धर सार । ऐसा पाया दरस अपार। सोहँ शब्द दित्ता करतार। महाराज शेर सिँघ बैठा विचकार। सिख दी महिंमा गणी ना जाए। चन्दोआ जिस दा सिर पर्दा पाए। माया रूपी जगत नूं खाए। महाराज शेर सिँघ तों मुख भवाए। चन्दोए दा सिख मारया बाण। पड़दा आया विच ज़िमी अस्मान। बेमुख ना करन पछाण। गुर पूरा है सच निशान। नज़र ना आवे विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ विच जहान। सोहण सिँघ सिख सिदकी अख्वावे। जगत निरास गुर सेव कमावे। ताहने मिहने जगत दे खावे। क्यों नहीं गुर तेरा दया कमावे। माया ममता विच जगत भुलावे। पुत्तर कलत्तर संग लिपटावे। पूरा भेत ना कोई पावे। सच मन्त्र गुर सच दृढ़ावे । दयाधार गुर दया कमावे। धूप दीप दी सेवा लावे। आदि जुगादि जोत रह जावे। चार जुग सुगंध गुर संग समावे। पूरन परम पुरख परमेश्वर पावे। जगत जलन्दा गुर आप बचावे । पुत्तर सपुत्र सर्ब सुख पावे। महाराज शेर सिँघ दया कमावे। भगत जनां जै जै जैकार करावे। प्रेम सिँघ मेरा सिख उग्घ। जिस दे घर लग्गा सतिजुग। उच्च अपार धाम बणे पिण्ड बुग्घ। महाराज शेर सिँघ अटल्ल जुगो जुग। एस धाम नूं माण दवाया। गुरबाणी नूं जिस जन्म दवाया। पंज चेत वीह सौ सत्त बिक्रमी थान सुहाया। साध संगत मिल हरि जस गाया। चार दीपक विच जोत जगाया। मुख जिन्हां दा बाहर रखाया। दिशा चार विच अग्न लगाया।

६२
०१

गुरसंगत नूं विचकार बहाया। सतिगुर मनी सिँघ सच तख्त बणाया। भय भयानक विच होए सहाया। जुग जुग पैज सिक्खां दी रक्खदा आया। आदि अन्त ना किसे पाया। जो किछ होए प्रभ करे कराया। कलिजुग अलोप सतिजुग प्रगटाया। भेट चंड सभ जगत कराया। बाण अभिमाण ऐसा गुर लाया। नाम आपणा जगत भुलाया। दंड देण नूं खेल रचाया। ऊँच नीच दा भेत मिटाया। गऊ गरीब दा दु:ख मिटाया। राउ रंक कर इक्क बहाया। पड़े सरन प्रभ लए बचाया। याचक तांईं है दान दवाया। सोहँ शब्द गुर नाम दृढ़ाया। पिण्ड बुग्घे गुर भाग लगाया। जिथ्थे मनी सिँघ चरन टिकाया। महाराज शेर सिँघ होए सहाया। विच द्वापर प्रभ कृष्न मुरार। बिदर तांईं जिस दित्ता तार। सुत्ता कुल्ली विच पैर पसार। भोग लगाया अलूणे साग आहार। कलिजुग विच ल्या अवतार। महाराज शेर सिँघ सच निस्तार। दया कीती घर घुमिआर। सोहण सिँघ नूं दित्ता तार। शराब मास सी जिस दा आहार। सेवा करे हुण अपर अपार। जिस दे भोग लाया भण्डार। बंस तांईं ल्या पार उतार। महाराज शेर सिँघ पूरन अवतार। नीच ऊँच सभ दित्ते तार। खेल करे प्रभ आप अपारा। सृष्ट होवे सभ धुंदूकारा। जगत जोत लग्गे अन्गयारा। दुष्टां दे सिर धरया आरा। भगत जनां नूं पार उतारा। महाराज शेर सिँघ सच निस्तारा। जोत सरूप एस जग विच आया। खेल आपणा एह रचाया। माणस तों माणस प्रगटाया। जिस गुर का नाम भुलाया। कलू काल अन्धेर है छाया। गुर पूरे एह पाई माया। अन्त करन नूं जुग पल्टाया। हाहाकार जगत रवाया। जोत सरूप ना नज़री आया। ज़ात पात चक्र चिहन सभ तजाया। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड समाया। जीव किसे ने भेद ना पाया। गुरसिक्खां नूं दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ आप रघुराया। मेरी जोत दा डाहढा नूर। पापी डोबे भर के पूर। कोई ना बूझे गुर सृष्ट हज़ूर। जोत सरूप सर्ब भरपूर। जीव आत्मा वांग कोहतूर। जिथ्थे उपजे ईश्र नूर। भगत जनां नूं सदा सरूर। महाराज शेर सिँघ आसा पूर। आसा पूरन आप प्रभ आया। शूद्र वैश ब्रह्मण शत्री कर इक्क बहाया। तख्त ताज दा माण गुआया। राउ रंक संग प्रभ मिलाया। सतिजुग दा एह राह चलाया। ऊँच नीच दा माण गंवाया। इक्क आप इक्क शब्द सुणाया। होर सभन दा माण गुआया। सोहँ शब्द प्रभ आप सुणाया। महाराज शेर सिँघ जग उलटाया। सोहँ शब्द सर्ब गुण भरया। पूरे सतिगुर रसना उचरया। जो जन सिमरे पार उतरया। महाराज शेर सिँघ नज़री परया। सोहँ शब्द दा मन धर ध्यान। पूरन उपजे सिक्खन को ज्ञान। गोझ ज्ञान प्रभ लए पछाण। द्वार दसवें दे पर्दे लह जाण। निजानंद निज मांहि पान। जोत सरूप दा दर्शन पाण। विच संसार एह उत्तम जाण। महाराज शेर सिँघ बख्शया दान। सिख उप्पर प्रभ होए दयाल। भय भयानक विच होए रखवाल। दीपक जोत जगत एह थाल।

अग्न एस विच दित्ती बाल। जीव जन्त सभ होण बेहाल। गुरसिक्खां दा प्रभ चरन ख्याल। सोहँ शब्द सुरत मन नाल। महाराज शेर सिँघ भगत वसाल। विच आकाश पाताल धरत मँझार। धुंधूकार होवे अत अपार। ऐसी लिख्त कराए आप करतार। निहकलंक पूरन अवतार। खेल किए जोत रूप अपार। छड्डी देह दो हज़ार विच सिरजणहार। जोत सरूप ल्या जन्म धार। दो हज़ार इक्क जेठ पंज दिन अपार। प्रगट होया घनकपुरी मँझार। जिथ्थे बणया गुर दरबार। जिस दी लिख्त होवे अपार। पल्ला फिराया विच घर बाहर। प्रगट होया महाराज शेर सिँघ निरँकार। वेखण आए सीस ना झुकाए दरबार। कूकर सूकर आख प्रभ धक्के बाहर। खेल कीता आप सच्ची सरकार। घर घर होवे सभ विचार। महाराज शेर सिँघ जगत भतार। सोहँ शब्द नाल दित्ता तार। पूरन जोत पूरन विच आई। पाल सिँघ दी बिन्द तराई। सेवा सफल विच जगत कराई। धन्न सिख जिस गुर जोत समाई। झूठी देह मिट्टी विच रलाई। जोत सरूप प्रभ विच रहाई। जैसी देह विच ख़ाक लिटाई। सारी सृष्टी पुट्ट रखाई। जोत रूप एह कला वखाई। धार देह ना करी लड़ाई। उलटी मति जीवां विच पाई। अलोप बैठ वेखे लिव लाई। भगत जनां नूं दित्ता समझाई। कलिजुग विच महाराज जोत प्रगटाई। विच संसार हाहाकार मच जाई। बिन देह तों प्रभ नजर ना आई। गुरसिक्खां नूं प्रभ दे बुझाई। दे दर्शन विच छिन अलोप हो जाई। सोहँ शब्द सभ दा होवे सहाई। मनी सिँघ हत्थ देवां वड्याई। सवरन सिँघ तारया आप प्रभ हरी। वांग द्रोपती सुरजीत संग तरी। जेठ सत्त सेवा जिन करी। विच चरन हो के खरी। महाराज शेर सिँघ किरपा करी। सवरन जोत दर अग्गे धरी। सचखण्ड सच तख्त बणाया। जिथ्थे सतिगुर सवरन बहाया। तारी नार जिस कन्त एह पाया । सेवा करदी गुर भेट चढ़ाया । सुत्ता कन्त फिर नहीं जगाया। हाहाकार कर जगत रवाया। देख अचरज प्रभ दी माया। सिख सिदकी जिस प्रभ पाया। खण्ड ब्रह्मण्ड सभ थान सुहाया। छड्ड मात विच आकाश समाया। जन्म मरन दा पन्ध मुकाया। गुर सेवा दा फल एह पाया। थिर घर जा के डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ सद नज़री आया। करी किरपा प्रभ दरस दिखाया । घोर अन्धेर विच नज़री आया। गुरसिख मन होण वधाईआं। चरन कँवल संग प्रीतां लाईआं। गुर दर्शन नूं फिरन तिसाईआं। जगत जलंदा रक्ख प्रभ गुसाईंआं। प्रगट होया आप बनवाली। महाराज शेर सिँघ भगत रखवाली। धुंधूकार जगत विच करना। कीता आपणा सभ जीवां भरना। सिर तों वार किसे ना हरना। बेमुखां दु:ख डाहढा है भरना। गुरसिक्खां गुर चरनीं तरना। अमृत वेले गुर दर्शन करना। सोहँ शब्द है रसना उचरना। महाराज शेर सिँघ है धरनी धरना। गुरसिख उधरे जिन्हां रंग माणया। मानण सदा है गुर के भाणया। तोड़े हँकार प्रभ वड्डे ज़रवाणयां। सोहँ शब्द गुर मारया बाणया। सृष्टी भुज्जे वांगर दाणयां।

महाराज शेर सिंघ जिन्हां नहीं पछाणया। आदि अन्त मेरा प्रकाश। जोत मेरी दा नहीं विनास। सृष्ट विनाशी ईश्र अबिनाश। आया वेखण प्रभ जगत तमाश। जुगत जगत दी एह बणाई। सृष्टी सारी टुम्ब उठाई। मानस प्रेत कीते रघुराई। जीव आत्मा जीव तजाई। कलू काल दी हुण पति गंवाई। हाहाकार जगत पै जाई। कोई ना किसे दा बणे सहाई। सोहँ शब्द जो जन गाई। महाराज शेर सिंघ होए सहाई। आप आपणा भेत बताया। सचखण्ड सोहँ शब्द सुणाया। तरे सो जन जिस रसना गाया। जमदूतां दा भय गंवाया। निरगुण सरगुण प्रभ होए सहाया। महाराज शेर सिंघ दरस दिखाया। जल थल मईअल रहे समाया। आप एक हो अनेक दिखाया। जुगो जुग एह खेल रचाया। संसार उपाए फिर मार खपाया। अन्तकाल कल दा कराया। सोहँ शब्द दुष्ट दूत खपाया। तरया सिख जो शरनी लाया। अज्ञान अन्धेर खोल्ह दरस दिखाया। चरन कँवल संग रहे समाया। गुरसिक्खां नूं जम काल ना खाया। अन्त काल प्रभ होए सहाया। विच बबाण बैकुण्ठ पुचाया। जिथ्थे हरि जू नज़री आया। हरि भगत घर साचा पाया। होए अमर अमरा पद पाया। उनन्जा पवण सिर छत्र झुलाया। ईश्र दा सच थान सुहाया। महाराज शेर सिंघ जोत प्रगटाया। आप अपरम्पर अन्तरजामी। मधु सूदन दामोदर स्वामी। भगत वछल सदा निहकामी। माया विच सृष्ट भुलानी। ईश्र नाम गई सृष्टी भूल। सोहँ शब्द प्रभ मारे त्रसूल। माधव मोहन मैं कृष्न मुरार। जगदीश्र हरि जू असुर सँघार। जीव जन्त विच वसणेहार। खण्ड ब्रह्मण्ड मेरा आकार। सदा निरवैर सदा निरहार। ईश्र आपणी जोत अधार। जुगो जुग प्रगटा विच संसार। कदे जोत सरूप कदे देह धार। महिंमा मेरी अपर अपार। कोई ना जाणे मेरी सार। आदि अन्त मैं एकँकार। प्रभ अबिनाशी नर सिंघ अवतार। भगत जनां होवे जै जै जैकार। सोहँ शब्द मन देत अधार। गावत सुणत सभ उतरे पार। दर्शन देवे आप करतार। महाराज शेर सिंघ जगत उधार। जो जन शरनी मेरी आए। भय भयानक विच प्रभ होए सहाए। थिर घर वासी दरस दिखाए। राम कृष्न प्रभ नज़री आए। बन माला भिबूखन कँवल नैण दिखाए। सुंदर कुण्डल सिर मुकट सजाए। कल विच महाराज शेर सिंघ नाम रखाए। तज देह जोत रूप हो जाए। अग्न रथ महासार्थी आप चलाए। जीव जुगत ना जाणे राए। करनहार की खेल रचाए। राउ रंक कर इक्क बहाए। सचखण्ड सतिजुग लगाए। मदि मास दा नास कराए। भगत जनां जैकार कराए। हो प्रतक्ख फिर दरस दिखाए। महाराज शेर सिंघ निहकलंक अख्वाए। निरँकार अछल अडोल। पापी अपराधी तोला पूरे तोल। मदि मासी जीव दित्ते रोल। बख्शे ना जाण ईश्र कोल। गंवाया जन्म माणस निरमोल। कर दरस प्रभ देवे पर्दे खोल्ह। बैठा विच वेखे एह चोहल। भुल्ला जीव ना जाणे आत्म खोल्ह। महाराज शेर सिंघ है सदा अडोल। सोहँ प्रगट

होया अचल सरूपिआ। अकालमूर्त ना रूप ना रेखिआ। चक्रपाण दरस सरूपिआ। महिमा मूर्त प्रभ अनूपिआ। नेत्र सहिस विच अन्ध कूपिआ। सुरत शब्द लाए सच भूपिआ। प्रगट होया महाराज शेर सिँघ सच वसेखिआ। सच्चा आप सच्ची एह कार। जुगो जुग प्रभ लै अवतार। ईश्र जोत दे जीव उधार। मूर्ख मुग्ध ना जाणे सार। भगत वछल लए पार उतार। सचखण्ड गुर दर दरबार। जिथ्थे वस्सया आप निरँकार। कुदरत रूप पसरया पसार। अलोप हो बैठा विच दातार। कोई ना जाणे ईश्र सार। सो जन जाणे जो रिदे चितार। सोहँ शब्द लँघावे पार। महाराज शेर सिँघ ल्या अवतार। घनकपुरी घनशाम सी आया। त्रेता राम द्वापर कृष्न अख्वाया। होया कलिजुग प्रभ दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक हो आया। हो निहकलंक एह खेल रचाया। जोत सरूप जगत जलाया। हाहाकार विच जगत मचाया। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाया। जोत जगत आप प्रभ धरी। पूरन खेल अचरज प्रभ करी। होए विस्माद भेव ना ज़री। तजी देह आप प्रभ हरी। सोहँ शब्द जोत जग धरी। महाराज शेर सिँघ आसावरी। तीन लोक हां मैं खण्डन। प्रगट होया त्रैलोकी नंदन। भगत जनां गुर तोड़े बंधन। महाराज शेर सिँघ सदा दुःख भंजन। विच आकाश ईश्र प्रकाश। सोहँ शब्द सदा अबिनाश। बाकी सभ दा कीता नास। शब्द वड्याई प्रभ के पास। अन्त काल कर बन्द ख़लास। जम के दूत होवण सभ नास। प्रभ अबिनाशी सदा गुण गाओ। अबगत अगोचर सर्ब है ठाउँ। अमोघ दर्शन घर में पाओ। अकालमूर्त जिस किसे ना खाओ। सोहँ शब्द रिदे नित्त गाओ। महाराज शेर सिँघ जगत करे पसाओ। देवे दरस प्रभ दया कमा के। सुत्ता सिख बाहों उठा के। अनहद शब्द मन वजा के। खोल्ह त्रैकुटी निजानंद दरसा के। अमृत बूंद निझरों झिरा के। कँवल नाभ दे मुख चवा के। द्वार दसवें दे पर्दे लाह के। खम्ब भंबीरी परे हटा के। विच्चों आपणा आप वखा के। जीव तांईं है सोझी पा के। सोहँ शब्द गुर राग सुणा के। साध संगत संग रखा मिला के। जै जगत विच एह करा के। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाम रखा के। कलिजुग विच होया सतिगुर पूरा। जिस दा बचन ना होए अधूरा। मनमुखां दा प्रभ कीता चूरा। कलिजुग दा कीता समां है पूरा। जेठ पंज दिन जद आवे। विच संसार धुंधूकार हो जावे। बाणी वेद कोई पैज ना रखावे। कुरान अंजील भस्म हो जावे। सर्ब शक्त प्रभ खिच्च वखावे। निहकलंक फेर अख्वावे। अमाम मैहदी एह चोली पावे। अन्त काल तुर्कन हो जावे। ऐसा सतिगुर खेल रचावे। महाराज शेर सिँघ प्रगट हो जावे। प्रगट होवे आप निरँकार। देवे दरस कर जोत आकार। कर के दरस सिक्खन उधरे पार। विच सतिजुग सोहणा दरबार। पिण्ड बुग्घे रचणा सरकार। जिथ्थे बैठा सिरजणहार। सृष्टी दी मति होई ख्वार। किसे ना जाणी प्रभ की सार। सभ सृष्ट का आप

भतार। निहकलंक कलिजुग अवतार। भगत जनां नूं दित्ता तार। महाराज शेर सिंघ सच निस्तार। ऐसी कला हुण आप वरतावे। जोत सरूप अग्न एह लावे। अन्ध घोर जगत हो जावे। जोत सरूप बणत एह बणावे। बिन देह तों जुग पलटावे। मदि मासी कोई रहण ना पावे। ऐसा बाण सोहँ गुर लावे। अहँकारीआं निन्दकां दा खै करावे। कुम्भी नर्क उन्नां नूं पावे। धर्म राए एह डन्न लगावे। गऊ ग़रीब दा माण हो जावे। राउ रंक सभ एक समावे। महाराज शेर सिंघ भरम भुलावे। सिर आपणे छत्र झुलावे। खाणीआं बाणीआं भस्म हो जावे। आकाश पताल किछ नज़र ना आए। जीव जन्त भस्म हो जाए। उधरे सो जो सरनी लाए। अन्ध कूप प्रभ भए सहाए। महाराज शेर सिंघ दरस दिखाए। ऐसी परलो जगत विच आए। वेखे खेल आप रघुराए। भाणा अमेट मेटिआ ना जाए। छिन विच सारा खेल रचाए। सत्त दीप नौं खण्ड प्रभ जोत जगाए। आकाश पाताल मात प्रभ सर्ब रहाए। सचखण्ड प्रभ रिहा समाए। देखे आप नज़र ना आए। जुगो जुग प्रभ खेल रचाए। प्रगटे जोत करे निआएं। भुल्ले जीव दा भरम गंवाए। अन्त काल कलिजुग दा कराए। सोहँ शब्द नूं माण दवाए। महाराज शेर सिंघ सच लिखाए। सच शब्द गुर का पहचान। सोहँ शब्द गुर जगत है बाण। पावे सो जन गुर चरन ध्यान। सतिगुर ठांडा ल्या पहचान। जोत जुगत प्रभ देवे ज्ञान। महाराज शेर सिंघ रिदे समान। प्रगटे आप प्रभ अन्तरजामी। छिन्न भंगर सदा निहकामी। सर्ब लिख्त दा गुर कीता ख़ामी। कोई ना होवे जीव का हामी। सोहँ शब्द सदा सुख दामी। महाराज शेर सिंघ जगत स्वामी। जो जन सतिगुर नैण बिलोए। थिर घर चानण सदा है होए। जन्म जन्म के पाप विगोए। मन की दुबिधा मैल है धोए। माण अभिमान है मन ते खोए। आत्म ध्यान गुरचरन परोए। गोझ ज्ञान दी सोझी होए। दुःख दलिद्र तन के खोए। सर्ब सुख घर साचे होए। महाराज शेर सिंघ प्रगट होए। सर्ब सुख गुर चरन के पास। उधरे सिख जो सतिगुर पास। सोहँ शब्द होए रहरास। महाराज शेर सिंघ दूख विनास। सच धाम सच तख्त रचाया। सिंघासण गुर चरन टिकाया। भगत जनां हरि रंग लगाया। सोहँ शब्द होए सहाया। साध संगत नूं पार लँघाया। महाराज शेर सिंघ नज़री आया। नज़री आवे आप प्रभ सूर। साध संगत विच प्रभ सदा हज़ूर। जहां देखे तहां भरपूर। सर्ब जीव जोत प्रभ का नूर। मनी सिंघ तों प्रभ नहीं दूर। एह जोत जगाई वांग कोहतूर। सोहँ शब्द सभ आसा पूर। महाराज शेर सिंघ सदा हज़ूर। साध संगत गुरचरन होए धूर। खण्ड ब्रह्मण्ड है मेरा खेल। आकाश पाताल दिया मैं मेल। पूरा सतिगुर आप अकथ्थ। जीव किसे दे किछ नहीं हत्थ। कलिजुग अग्न चलाया रथ। राणयां महाराणयां पाई नक्क नत्थ। तोड़िआ माण अभिमान गई पति लथ्थ। कोई ना सिर ते देवे हत्थ। महाराज शेर सिंघ लिखाए समरथ। सिक्खां दे सिर

६६ ०१

रक्खे प्रभ हत्थ। आप बैठा हां आसण अडोल। जोत सरूप जगत संग मौल। बचन लिखा के दित्ते पर्दे खोल। बेमुखां नूं एह गुर का बोल। अन्त काल ना कोई होवे कोल। मेरा सिख है सदा अडोल। सोहँ शब्द नित रसना बोल। महाराज शेर सिँघ पूरा तोले तोल। भगत वछल प्रभ लए पछाण। बेमुखां दे गुर लाहे घाण। गुर लिख्त सच पछाण। अन्तकाल प्रभ दर्शन पाण। विच बैकुण्ठ जाण बबाण। होए अस्थूल दरस नित्त पाण। जोत सरूप जोत मिल जाण। अटल गुर अटल पदवी पाण। गुरसिख विटुह कुरबाण। महाराज शेर सिँघ लिया पछाण। सतिजुग सति सति प्रभ लाया। तज ब्रह्मा पाल सिँघ बहाया। सृष्ट ताज सिर सिख धराया। आप उपाए आप खपाया। नाभ विच्चों ब्रह्मा प्रगटाया। ब्रह्म सरूप ब्रह्म मांहि समाया। जिस ने उपाया तिस संग मिलाया। जुग चवीएं दा अन्त कराया। जिस ने कलिजुग नाम रखाया। ऐड़ा अथर्बण वेद मुकाया। सोहँ शब्द गुर मन्त्र दृढ़ाया। महाराज शेर सिँघ जगत रघुराया। आपणी शक्त आप उपा के। सिँघ पाल तों सेव करा के। दित्ता माण विच बैकुण्ठ लै जा के। जोत सरूप विच जोत मिला के। ब्रह्मे ते भस्म करा के। पाल सिँघ हत्थ सृष्ट फड़ा के। चार वेद खपत करा के। सोहँ शब्द गुर मुखों अला के। सच वासी सच दया कमा के। महाराज शेर सिँघ भगत वछल अख्वा के। भगत वछल सद आप अख्वावे। खेल जगत प्रभ आप करावे। जेठ सत्त प्रभ सवरन सिँघ लै जावे। विच आकाश जै जै कार करावे। गण गंधर्ब फूल बरसावे। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै गावे। धन्न सो थान जिथ्थे सिख चरन टिकावे। मात आकाश संग शब्द मिलावे। सच सिख सच पदवी पावे। सतिजुग विच थिर रहावे। तज ध्रू गुर सवरन बहावे। करे दरस नित नैण मुंधावे। होए दरबान महां सुख पावे। गुर पूरे एह कर्म कमाया। साचा सिख घर साचे लाया। ना एह मरे ना आया जाया। जोत सरूप प्रभ जोत मिलाया। प्रगटी जोत निहकलंक अख्वाया। नर सिँघ नरायण आप अख्वाया। दाढ़ां अग्गे पृथ्म चबाया। कोए ना इस नूं मेटे राया। जगत जलंदा सोहँ बाण गुर लाया। उधरे सिख जिन गुर दर्शन पाया। विष्नूं वंसी एह बंस चलाया। मदि मास तों सिख आपणा हटाया। आप अटल प्रभ दरस दिखाया। राम कृष्न प्रभ दरस दिखाया। घनकपुर वासी आप रघुराया। साध संगत जिस दरस दिखाया। चरन कँवल विच अन्त मिलाया। अन्ध कूप प्रभ पर्दा लाहया। होए कृपाल दरस दिखाया। अज्ञान अन्धेर गुरसिख दा गंवाया। सृष्ट विनासी दा नास कराया। सोहँ शब्द गुर तीर चलाया। चार कुन्ट कर भस्म दिखाया। समरथ पुरख एह चोज वखाया। निराहार निरवैर विच जगत है आया। जोत सरूप सच बचन लिखाया। किसे इस दा भेव ना पाया। विच सिख प्रभ आप समाया। रसना विच्चों गुर ज्ञान अलाया। चार दीप गुर जोत जगाया। चार वेद तांईं नष्ट कराया। सतिजुग सच

मार्ग लाया। सोहँ शब्द मुख रखाया। ओअँ आप करे कराया। तीन लोक वसे हरि राया। विच पाताल प्रभ सेज सुहाया। बाशक ताशक सिँघासण लाया। झस्से चरन लच्छमी रघुराया। ईश्वर आलस दिलों है लाहया। प्रभ ना सोवे ना किसे जगाया। दे दरस गुर माण गंवाया। मैं हां अडोल ना किसे डुलाया। मातलोक विच प्रभ आया। जोत सरूप एह खेल रचाया। चक्र सुदर्शन ऐसा लाया। सृष्ट सारी नूं टुम्ब उठाया। मदि मास दा होए सफाया। रहे ना जीव जिस रसना लाया। ईश्वर ब्रह्म जीव ब्रह्म रूप उपाया। कलू काल ने पड़दा पाया। जिस ने ब्रह्म दा नाम भुलाया। मदि मास जिन रसनी लाया। कूकर सूकर माणस रूप बणाया। ऐसी सतिगुर दे सज़ाया। गुर चरनां तों परे हटाया। प्रेत जून उनां नूं पाया। ईश्वर जीव जिस जीव ने खाया। लक्ख चुरासी चक्र लवाया। सर्ब थाएँ प्रभ सदा समाया। भोला जीव ना जाणे मेरी माया। हरिजू हर मांहि समाया। हरि जोत सभ जीव जवाया। बिन जोत दे स्वास ना आया। ईश्वर जीव मांहि समाया। सोहँ शब्द सर्ब सुखदाया। महाराज शेर सिँघ सच मन्त्र दृढ़ाया। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश। फिर प्रभ ने पाए स्वास। इस जीव दी बणाई रास। विच गर्भ प्रभ देत ग्रास। उलटा बिरछ प्रभ दूख निवास। अन्ध घोर विच दित्ता वास। चक्र चिहन ना मेरा रूप। मेरी महिंमा बड़ी अनूप। निरगुण सरगुण सदा सरूप। प्रगट होया डाहढा गुर भूप। जिस ने मारे आप दुष्ट दूत। महाराज शेर सिँघ सति सरूप। प्रगट होया आप भगवान। गुरसिक्खां नूं दित्ता ज्ञान। सोहँ शब्द है महान। सिमरे जीव पाप लह जाण। कुम्भी नर्क सिख ना जाण। आदि अन्त प्रभ विच समाण। आवण जावण दा पन्ध मुकाण। विच चुरासी चोटां ना खाण। सोहँ शब्द मेरा नाम पछाण। महाराज शेर सिँघ दित्ता ज्ञान। भरम विच प्रभ जगत भुलाया। प्रगट होया नज़री आया। घनकपुरी विच पल्ला फिराया। महाराज शेर सिँघ नज़री आया। उधरे सिख जिनां स्वास स्वास ध्याया। बेमुखां नूं परे हटाया। हद्द माझा घनकपुर बणाया। जिथ्थे गुर दरबार रचाया। हिन्दू मुस्लिम सुत्ता जगाया। मोता सिँघ एह खेल रचवाया। एह होया मेरा चमत्कार। भुल्ले जीव प्रभ कीए ख्वार। कलू तांईं एह दित्ती हार। जिस विच कहर होए अपार। पापी डोबे लहिंदी धार। सिख उधारे आप करतार। महाराज शेर सिँघ ल्या अवतार। सोहँ शब्द जगत उधारा। ऐसा होए खेल अपारा। सृष्ट सिर धरया कलू आरा। कोए ना चले किसे ना चारा। करे करावे आप निरँकारा। होए भस्म सर्ब संसारा। जिस विच भरया प्रभ हँकारा। मति मन बुधि किया किनारा। मूर्ख मुग्ध ना जाणे सारा। महाराज शेर सिँघ ल्या अवतारा। कलिजुग विच प्रभ जोत प्रगटाए। बेमुखां नूं नज़र ना आए। नैणी देख ना मन बिग्साए। चरन कँवल ना सीस निवाए। ऐसी माया प्रभ ने पाई। भाउ भगती परे हटाई। बेमुखां पति गंवाई। जिनां हरि ना रसन

ध्याई। हरि बिन कोए ना होए सहाई। अन्तकाल जीव बिल्लाई। धर्म राए जब दए सज़ाई। कोए ना उथे होए सहाई। सोहँ शब्द सुरत मन लाई। महाराज शेर सिँघ होए सहाई। मैं हां एक मेरे खेल अनेक। भगत जनां नूं मेरी टेक। आत्मा शात बुध बबेक। सोहँ शब्द सच मन टेक। धन्न सिख जो गुर चरनी लाया। होए दयाल प्रभ दरस दिखाया। गुरसिक्खां नूं गुरमुख बणाया। अमृत बूंद रसना लाया। खोलॣ कपाट गुर दरस दिखाया। मुकंद मनोहर गुर नज़री आया। मोहण माधव सभ रिदे ध्याया। लखमी नरायण जोत प्रगटाया। अनहद शब्द मन वजाया। भरम भौ सिक्खां दा गंवाया। जोत सरूप नज़री आया। कृपानिध एह दया कमाया। भगत जनां हरि मांहि समाया। सोहँ शब्द गुर ज्ञान दवाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अख्वाया। निहकलंक आप अख्वाया। सृष्ट विच ना नज़री आया। कलिजुग नष्ट प्रभ आप कराया। सोहँ शब्द जै जै जैकार कराया। महाराज शेर सिँघ भरम भुलाया। जो जन चले मेरे भाए। चरन कँवल संग रहे समाए। नैणी पेखे आप रघुराए। जगत जलंदा आप रखाए। थिर घर वासी एह दया कमाए। सच लिख्त आप प्रभ कराए। सोहँ शब्द सर्ब गुण पाए। महाराज शेर सिँघ कर्म कमाए। कर के लिख्त जगत समझाया। कलिजुग दा हुण अन्त कराया। तरया सो जो चरन लगाया। नाम सति सति नाम मेरा रसना गाया। जोत अग्न विच भस्म हो जावे। कलू काल विच खेल रचावे। सर्ब सृष्ट विच अग्न जलावे। होए बेताली धक्के खावे। गुर बिन कोई ना पार लँघावे। महाराज शेर सिँघ सच लिख्त करावे। आप अपरम्पर अपर अपार। गुरसिख नूं अमृत भण्डार। सोहँ शब्द जगत उधार। अन्ध घोर करे निस्तार। महाराज शेर सिँघ पार उतार। महाबली आप प्रभ होए। कोई ना जाणे इस दी सोए। भगत प्रभ इक्क दो होए। बिन गुर कोई पार ना होए। सोहँ शब्द मन्ने मन कोए। महाराज शेर सिँघ सर्ब सुख होए। चार दीपक जो प्रभ जल्वाए। चौथा दीपक बुझ बुझ जावे। फिर सिख ते प्रभ दया कमाए। ललाट ओस दी खिच्च लै जाए। गर्भ कुण्ड में मुक्त कराए। सवरन अमर दे संग रलाए। सूरत सपुत्र दी भेंट चढ़ाए। सवरन सिँघ गुर पुरी सदाए। अमर सिँघ अमरापद पाए। कुक्ख वीरो दी सुफल कराए। चेत सिँघ दी पति रहि जाए। प्रीतम सिँघ ते दया कमाई। देह पुत्त दी विच सेव लगाई। दीपक चौथा हुण आप जगंवाई। पूरन विच परमेश्वर आया। पुत्त कौर रणजीत दा सिख लगाया। काची माटी घर साचे लाया। महाराज शेर सिँघ चार दीपक जलाया। गुर धाम गुर आप बणाया। मनी सिँघ ते पड़दा पाया। पंज चेत दिन उलटाया। बाणी लिखण दा दिन गंवाया। होए प्रतक्ख मैं एह वक्त सुहाया। मनी सिँघ सच तख्त बहाया। रसना विच्चों एह रस चुआया। अमर रूप प्रभ अमराया। होए दयाल दरस दिखाया। सर्ब सिक्खां उत्ते हत्थ टिकाया। अगम्म अगोचर एह कर्म कमाया। लै

बली सिख गुर तेज वधाया। दीपक जोत संग दीपक जगाया। चौथा सिख नाल रलाया। महाराज शेर सिँघ कर्म कमाया। ऐसी जोत एह आप जगाई। पूरे सिख दी देह लगाई। अमृत बूंद प्रभ मुख चवाई। चार जुग सर्ब सुखदाई। महाराज शेर सिँघ दित्ती वड्याई। गुरसिक्खां नूं आप वड्आया। चौहां नूं कर इक्क बहाया। दीपक चार प्रभ जोत जगाया। सर्ब सृष्ट नूं धक्का लाया। उधरे सिख जिन्हां रिदे ध्याया। महाराज शेर सिँघ गर्भ गुआया। ऐसा समां हुण प्रभ ल्याए। गर्भ खून वांग खून हो जाए। देह सिख दी सुफल हो जावे। निराहार निरवैर समाए। धार खेल चतुर्भुज कहाए। सिदकी सिख गुर पार चढ़ाए। माता धन्न पुत्त गुर भेट लगाए। तीन संग चौथा रल जाए। चौथे जुग दा नास कराए। सच्चा सिख सच्चे घर जावे। सोहँ शब्द जन रिदे ध्यावे। महाराज शेर सिँघ पैज रखावे। जो जन मेरी सरनी आया। नाम मेरा मन मांहि समाया। तीन लोक विच सर्ब सुख पाया। अनहद शब्द मन वजाया। भय भयानक विच होए सहाया। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। ऊँच अगम्म अपर अपार। धरनी धर ईश्र निरँकार। कुदरत रूप सृष्ट अपार। जिथ्थे प्रगट्या आप करतार। महाराज शेर सिँघ सच अवतार। सोहँ शब्द गुर डंक वजाई। चार कुन्ट पै जावे दुहाई। प्रगट होवे लिख्त कराई। वीह सौ सत्त बिक्रमी कहर दी आई। पंज चेत गुर कलम तेग उठाई। कलम मार सृष्ट हो जाई। बिन देह तों
७० ०१ प्रभ लिख्त कराई। जोत सरूप एह जोत जगाई। वांग कृष्न होया रथवाही। रथ अग्न तेज हो जाई। जीव कोलों जीव ७० ०१
खै कराई। मति उपद्यी सर्ब में पाई। सोहँ शब्द एह चलत चलाई। महाराज शेर सिँघ होए सहाई। कोट कर्म प्रभ आप करावे। जोत निरँजण जगत जलावे। सिख कोई सिदकी कोल ना आवे। वल छल कर के झट्ट लँघावे। दकुखां कारन जो सीस निवाए। आवे वक्त पिच्छे हट जावे। गतिमति गुर की मूल ना पावे। दिल विच अभिमान ऐसा आवे। बलीवान आप अख्वावे। मायाधारी संग माया लपटावे। महाराज शेर सिँघ रिदे डुलावे। सोहणा समां हत्थों गुआया। संगत सतिगुर बचन भुलाया। साल इक्क होर पन्ध कराया। अचरज खेल प्रभू होर रचाया। तोड़ विछोड़ रोड़ मरोड़ बहाया। दुखियां तांई दु:ख वाद वधाया। देह दुर्लभ जिस सीस झुकाया। सर्ब सूख सतिगुर तों पाया। जम का भय ना मन रखाया। महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याया। सच घर बैठा आप सच वासी। कटे गलों आप प्रभ जम की फाँसी। माया होवे आप सिक्खन की दासी। धन्न सिख जिन्हां पछाता प्रभ अबिनाशी। भगत जनां करे बन्द ख़लासी। मुक्त जुगत नावै की दासी। महाराज शेर सिँघ सर्ब सुख वासी। घर ठांडा ऊँचा दरबार। सिख रहे विच अन्धकार। मनो ना गया अजे विकार। साडे बचन नूं देवण हार। घर बैठे सभ करन विचार। सदा अबिनाशी करे पसार। बिन बूझे कोई उतरे ना पार। लिख्त बन्द करी

करतार। संगत विच अजोड़ अपार। गुर तों बैठे हो निराधार। सुख आसण जाणया संसार। आत्म दुःख भगावे करतार। जिन्नां ना पाई मेरी सार। महाराज शेर सिँघ अपर अपार। माया विच जीव लुभाया। माया रूपी जंजाल गल पाया। पुत्तर कलत्तर संग रहे लपटाया। कर कर धन्दे जन्म गंवाया। झूठे धन्दे जगत भुलाया। ऐसी आ के पाई माया। ज्ञान ध्यान विच्चों गंवाया। दुःख भंजन दुःख डाहढा लाया। भरम विच भविख्त गंवाया। माण अभिमान दिल विच वधाया। मन विच कपट विकार रखाया। महाराज शेर सिँघ दिलों भुलाया। माया नाल ईश्र ना भीजे। बस्त्र पहन ना भउ दीजे। प्यार संग सदा प्रभ भीजे। अभय दरस आप प्रभ दीजे। कारज सर्ब है कीजे। महाराज शेर सिँघ ते ना सिख पतीजे। कल कलू दी आप भवाई। दिन रात है लिख्त कराई। सिक्खां तांई माण दवाई। सिक्खां विच्चों ना ममत गंवाई। पूरे गुर ते नहीं आस रखाई। विच हँकार बैठे सभ थांईं। महाराज शेर सिँघ वेखे थाउँ थांईं। बोल बोल विकार वधाया। सिख सो जो शांत रूप समाया। क्रोध कपट नूं परे हटाया। विच विकार ना मन डुलाया। सतिगुर पूरा घर में पाया। महाराज शेर सिँघ विछड़यां मेल परे हटाया। विच प्रेम कोई ना आया। देह दुःख लई चलदा आया। आपणे सुख जगत भुलाया। महाराज शेर सिँघ सिक्ख डुलाया। डुल्ला भुल्ला कौण बचावे। गुर बिन कोई ना पार लँघावे। दर दर पापी धक्के खावे। जन्म जन्म दुःख डाहढा पावे। पूरा सतिगुर हो जावे कृपाल। दे दरस कर देवे निहाल। जोग जुगत प्रभ दए वखाल। महाराज शेर सिँघ सदा है नाल।

७१
०१

७१
०१

✻ २७ चेत २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

नैण मुँधार बचन लिखाया। विच्चों पाताल मातलोक आया। धरती जल कर इक्क वखाया। सृष्ट सारी नूं आप उलटाया। होए उपद्वी धक्का लाया। विच संसार कोई नज़र ना आया। नीचे धरती उप्पर जल वगाया। लक्ख चुरासी जिस मांहि समाया। खण्ड ब्रह्मण्ड इक्क रंग बणाया। जीव जन्त कोई नज़र ना आया। ऐसा प्रभ जिस खेल रचाया। जलों थल थलों जल वहाया। वरभंड सभ नष्ट कराया। महाराज शेर सिँघ भगत वड्आया। तेग कलम गुर आप उठाई। चार कुन्ट हाहाकार मचाई। गणावे सिख लिखावे गुर, असर असुर ऐसी बणत बणाई। जगत खान चक्र सुदर्शन बाण। सृष्ट वाले जिस लाहे घाण। मूर्ख मुग्ध ना करन पछाण। साचा गुर साचा नीसाण। गुरसिक्खां दा गुर दरबान। होए सहाई कलिजुग आण। सर्ब सूख विच चरन पछाण। पाए दरस सभ तर जाण। जो जन विच संगत रल जाण। महाकाल तों दूर रह जाण। अटल्ल

ਗੁਰ अटल्ल पदवी पाण। सदा अडोल सद जोत जगाण। चार वरन शरनी लग्ग जाण। सोहँ शब्द सदा मुख गाण। ऐसा मारया त्रैलोकी बाण। महाराज शेर सिँघ प्रगट विच जहान। होवे प्रगट ऐसी कल धारे। विच संगत आप ललकारे। राणे महाराणे डिग्गण दरबारे। पापी अपराधी प्रभ आप पछाड़े। वसदे सुखी सभ जीव उजाड़े। महाराज शेर सिँघ सृष्ट चबाई दाहड़े। नौं खण्ड एह बणत बणाई। आप इक्क मति इक्क है पाई। जीव जीव विच जोत जगाई। ऐसी उस नूं सोझी पाई। ईश्वर आप ब्रह्म रूप समाई। ब्रह्म बिन्द उपजे सभ भाई। ज़ात पात कोई किसे का नाही। ईश्र आप इक्क सृष्ट उपाई। हर जीव में रिहा समाई। सुत्ती सृष्टी आप उठाई। सृष्टी सारी इक्क राह ते लाई। मोक्ष नाम सोहँ रखाई। जो जन सिमरे पार लँघ जाई। महाराज शेर सिँघ होए सहाई। काची सृष्ट काचा अभिमान। झूठी माटी माटी रल जाण। ऐसा सतिगुर चलाया बाण। अस्सू उन्नी वाले बचन सच हो जाण। पूरे सतिगुर दी होई पछाण। महाराज शेर सिँघ जाणी जाण। कलू काल होया धुंधूकार । महाराज शेर सिँघ ल्या अवतार। सोहँ शब्द भगत भण्डारा। दित्ता ज्ञान गुर रसना दुआरा। जगत जलंदा प्रभ पार उतारा। सोहिन सिख गुरचरन दुआरा । मनों गुआए बैठे विकार । महाराज शेर सिँघ ल्या अवतार। सतिगुर बणया आप सतिवादी । जुग चौथे दी तोड़े गादी। बेमुखां एह जोत ना लाधी। गुरसिक्खां विच सदा समादी। सोहँ शब्द सर्ब सुखवादी। महाराज शेर सिँघ सृष्ट है साधी। अचल्ल अखल्ल अटल्ल अख्वाए। अबल अदल अभल संग सहाए। गन्दल बन्दल संदल संग सिख समाए। नौं खण्ड प्रभ इक्क कराए। सोहँ शब्द सर्ब सुणाए। बाकी सर्ब नष्ट हो जाए। ईश्र आप जोत सरूप हो आए। सोहँ शब्द बिन ठोर ना पाए। वांग चातृक संग बिल्लाए। अमृत बूंद प्रभ मुख चवाए। ऐसी दया उत्ते संगत कमाए। दलिद्र दुःख सभ लहि जाए। अठ्ठ अठराहा गुर रोग गंवाए। विच संगत एह दुष्ट ना आए।

७२
०१

✻ १ विसाख २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

बेअन्त आप करतार। ऊँच अगम्म अपर अपार। प्रगट होया विच दरबार। महाराज शेर सिँघ पूरन अवतार । भगत जन सोहिन दरबार। धन्न गुरसिख लाए पार। कोट ब्रह्मण्ड दित्ते तार। किरपा कीती आप अपार। सिख ना आवे विच संसार। सतिगुर पूरा जगत उधार। भाणा सतिगुर जो वरतावे। गुरसिक्खां उप्पर अमृत बरखावे। गोला गढ़ा प्रशाद बण जावे। आप पैज सिक्खां दी रखावे। बेमुख दह दिश चोटां खावे। ऐसी अग्न प्रशाद लगावे। हाहाकार जगत हो जावे।

इस दा भेत कोई ना पावे। अरशों गुर गोला बरसावे। जीव जन्त भस्म हो जावे। ऐसी कला प्रशाद वरतावे। सिक्खां दी सूली सूल रह जावे। दया धार एह बरखा लावे। सारा भार सृष्ट ते आवे। बेमुख विच अग्न जलावे। पंज जेठ एह डंक वजावे। गुर संगत वेखण उठ धाहवे। आप वेखे किसे नज़र ना आवे। माया रूपी प्रभ पर्दा पावे। अग्न बाण सोहँ लग जावे। चार कुन्ट प्रभ आप जलावे। भगत जनां हरि धीर धरावे। बैठा विच आप करे करावे। आपणा भेत ना किसे जणावे। सिक्खां संग बेमुख तर जावे। जो जीव संगत रल जावे। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे। सोहँ शब्द जै जै जै कार करावे। सोहँ शब्द गुर नाम दुआए। जो सिमरे सगले फल पाए। जोत सरूप आप प्रभ आए। संगत विच एह बचन लिखाए। तीन लोक दा मैं हां वासी, सर्ब जीव में रिहा समाए। कलू काल अन्धेर है होया। जोत सरूप निहकलंक है आए। ऐसा बाण शब्द गुर लाया। मदि मास नष्ट हो जाए। महाराज शेर सिँघ भगत उधारन, कलू गुआए सति वरताए। सोहँ शब्द गुर नाम जपाया। खट रोग दा नास कराया। होए दयाल निज घर आया। गुरसिक्खां नूं दरस दिखाया। जोत निरँजण जोत रूप हो आया। जीव किसे ने भेत ना पाया। खेल रचाए जगत भुलाए, भगत जनां नूं नज़री आया। माण गंवाए राउ रंक बणाए, महाराज शेर सिँघ कर इक्क बहाया। गुरसिक्खां नाल जो कहर कमाए। अंकड़ा घोड़ा लंकड़ा मसाण बण जाए। शदोण माई पौण दर धक्के खाए। किंगरे किंगरे गुर मृदंग वजाए। माई गौरजां सिर खेह पवाए। खाण पकाण घर की चाटी। गुर शब्द मधाण, गोरख नूं लाया बाण। महाराज शेर सिँघ भय रखाण। गुरसिक्खां दे नेड़ ना आण। तप सप्प गुर शब्द बंधावे। भूत प्रेत कोई नेड़ ना आवे। दर वाट सभ भय रखावे। अमका काज़ी नष्ट हो जावे। बलिया छलिया मिसमरेज़मी इन्द्र जाल दी माया पावे। ऐसा डन्न दुष्ट को प्रभ लाए। जिंन ख़बीस सभ धक्क हटाए। नैण हीण खिच्च जोत गुआए। कुल ओस दी वधण ना पाए। जो सिख उप्पर चोट चलाए। महाराज शेर सिँघ होए सहाए। प्रगट भया सर्ब तरायण। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण। बन माला बिभूखण कँवल नैण। सुंदर कुण्डल मुकट बैन। दाढ़ां अग्गे पृथ्म धरायण। कलू रथ अग्न चलायण। महासार्थी आप अख्वायण। बेमुखां नूं दुःख भुगायण। गुरसिक्खां सिर छत्र झुलायण। सोहँ शब्द रसना गायण । महाराज शेर सिँघ प्रगटे नरायण। सतिजुग विच प्रहलाद तराया। नर सिँघ नर अवतार बणाया। कलिजुग विच ईश्वर खेल रचाया। रच्छया करन भगतां दी आया। तज देह निहकलंक अख्वाया। ज़ात पात दा भेत मुकाया। ब्रह्म से उपजे ब्रह्म जीव समाया। एक जोत रंग हरि इक्क लाया। जो पेखे नज़री नज़र निहाल कराया। सर्ब सूख घर ठांडे पाया। जगत जलंदा गुरसिख तराया। महाराज शेर सिँघ होए सहाया। श्री रंग बैकुण्ठ का वासी। मच्छ कच्छ कूरम आज्ञा अउतरासी।

७३
०१

ऐसे चलत करे प्रभ निराले, कीता लोड़े सो फल पा ले। गुरसिक्खां मन सदा है रंगण, बेमुख दर ते सदा उदासी। सोहँ शब्द सदा मन लाए, है आप प्रभ सदा सुखवासी। धन्न गुरसिख जो दर ते आए, पूरे गुर कीती बन्द खलासी। महाराज शेर सिँघ सदा बलि जाईए, कट्टी गलों सिलक जम फाँसी। देवलोक नूं जां सिख जाए। शिवलोक नूं परे तजाए। ब्रह्मलोक जा पैर टिकाए। बैकुण्ठ धाम गुर पुरी सिधाए। जोत सरूप रिहा डगमगाए। जीव जन्त विच जोत मिल जाए। लक्ख चुरासी फिर जून ना पाए। थिर घर बैठा हरि गुण गाए। नैणी पेखे सर्ब सुखदाए। महाराज शेर सिँघ विच बैकुण्ठ लै जाए। गुरसिक्खां एह धाम न्यारा। जिथ्थे वसे आप निरँकारा। जोत सरूप जोत अधारा। तीन लोक जोत चमत्कारा। जोत सरूप वरभंड मंझारा। सोहँ शब्द दरसावे गुरदुआरा। किरतम नाम जपे एह जिह्वा। सोहँ नाम संगत गुर मेवा। लोड़े दरस सभ देवी देवा। करोड़ तेतीस विच अलख अभेवा। कलिजुग विच सिक्खन गुर सेवा। महाराज शेर सिँघ अटल गुरदेवा। मेहरवान एह देह पल्टाए। जुगो जुग एह जोत जगाए। ईश्र जोत निरँजण राए। कोई जीव भेव ना पाए। विच त्रेता राम अख्वाए। सती अहल्या आण तराए। पलटे काया विच द्वापर आए। मुकंद मनोहर कृष्न अख्वाए। पापण पूतना धरत सुआए। ऐसी कला आप वरताए। महासार्थी हो रथ चलाए। अठारां अध्या प्रभ आप लिखाए। सतिजुग सति सतिवादी लाए। निहकलंक निर्भय अख्वाए। उन्नीं सौ बवंजा बिक्रमी बचन सच कराए।

७४
०१

❋ ३ विसाख २००७ बिक्रमी अमृतसर बचन होए ❋

जीव जुगत प्रभ आप बणावे। निज घर बैठा ताड़ी लावे। आप एक अनेक समावे। पारब्रह्म ब्रह्म सरूप उपावे। ब्रह्म सरूप सभ जीव उपावे। काया आकार छल रूप बणावे। अनन्द बिनोद विच जोत जगावे। बिन गुर बूझे कोई भेव ना पावे। सो बूझे जिस दया कमावे। साध संगत मिल हरि गुण गावे। दया धार एह दया कमाई। पूरे सिख नूं सोझी पाई। कर्म धर्म दोवें उलटाई। पाप अपराध सभ नष्ट कराई। अजामल वांग लछमण सिँघ तर जाई। गुर डाहढा जिस बणत बणाई। किया खेल अचरज रघुराई। प्रगट कीती भगवन वड्याई। वड्डा सो जिस प्रभ वड्याए। ईश्र जोत विच देह जगाए। सर्ब सुख घर मांहि पाए। निजानंद प्रभ दए दिखाए। कूड़ कुटम्ब दा मोह गंवाए। अनहद शब्द मन वजाए। जोत सरूप प्रभ दरस दिखाए। कलू काल नष्ट हो जाए। सोहँ शब्द जो मन चित लाए। महाराज शेर सिँघ भगत तराए। सोहँ शब्द उत्तम है सूख। विच संसार ना ब्यापे दूख। आत्म शांत मन गुर की भुक्ख। महाराज शेर सिँघ सदा असूख। गया

कलू प्रभ कहर गंवाए। आप अपरम्पर भेद हो जाए। जोत सरूप नज़र ना आए। अचलत खेल प्रभ रिहा दिखाए। अग्न बाण सोहँ गुर लाए। चार कुन्ट हाहाकार मचाए। निहकलंक एह चलत दिखाए। जीव जन्त सभ भस्म कराए। इन्द इन्द्रासण सभ उलटाए । शिव शंकर दा वक्त गंवाए। ब्रह्मा ब्रह्म रूप विच समाए । वेद चार ख़त्म हो जाए । कलू काल एह कल वरताए । सर्ब तीर्थां माण गंवाए। सतिजुग सति सति सतिगुर वरताए । सोहँ शब्द मुख रखाए। जोत जगत निरँजण जगाए। मदि मासी सभ नष्ट हो जाए। चक्र सुदर्शन जगत गुर लाए। तीन लोक थिर ना रहाए। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तजाए। आप अस्थूल सचखण्ड समाए। आपणी महिंमा प्रभ आप गणाए। जीव कोई भेद ना पाए। साध संगत गुर दया कमाए। धार खेल जोत सरूप हो जाए। लिख्त आपणी सच कराए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अखवाए। निहकलंक प्रगटे बलवान। मूर्ख मुग्ध ना करन पछाण। गुरसिक्खां नूं प्रभ देवे ज्ञान। दर्शन देवे वांग कृष्न भगवान। पंज जेठ प्रभ जोत प्रगटावे। वेखे लोक हस्से घर जाए। प्रभ का सांग किसे ना भावे। लछमण सिँघ ना धीर धरावे। भुल्ला सिख गुर आण बचावे। दयाधार किरपा प्रभ करे। जोत सरूप दरस दिखावे। मन में शांत सर्ब सुख उपजे। भरम भौ सर्ब गंवावे। ऐसा संसा दूर प्रभ किया। होए दयाल दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण। सिख जोत गुर जोत जगावे। थिर घर वासी दर्शन देवे। आप अभेद एह भेद बतावे। कलू काल दा अन्त है करना। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे। धन्न सो थान चिथ्थे गुर बचन लिखावे। लंडा पिप्पल निशान लछमण घर रहि जावे। बाकी माटी बिख खाटी बण जावे। बचन सतिगुर दा सच हो जावे। एह घर बणया हरि का द्वार। जिथ्थे प्रगटे आप करतार। सर्ब सृष्ट जिस किया आकार। जोत जगाई अपर अपार। ऐसी कलू ने दित्ती हार। चल ना आए गुर दरबार। अन्ध घोर प्रभ जोत बिधार। तारे सिख जिन पाई सार। महाराज शेर सिँघ सच अवतार। सृष्टी डुब्बी विच मंझधार। उधरे सिख जिन गुर चरन प्यार। सोहँ शब्द उतारे पार। तरन तारन आप समरथ। गुर सिक्खन सिर प्रभ का हत्थ। अग्न कलू चलाया रथ। सृष्टी सारी होई सथ्थ। गुरसिक्खां नूं दित्ती है नाम वथ्थ। महाराज शेर सिँघ कथना अकथ्थ । चरन कँवल सिख रक्खे प्यार। कन्या आई विच दरबार। काया कटाख्श करमहार। विच संसार दुःख अपार। आत्म चिन्ता विच परिवार। पुत्त बिना ना विच संसार। माया भुल्लया विच अन्धयार। कटे रोग ना बिन करतार। जोत ललाट जगाए अपार। आप मेटे मिटावणहार। देवे दान सर्ब सिख दातार। विच संसार एह होए विचार। जिस ने तज्या एह आहार। मदि मास विच संसार। माता गोद बालक पधार। महाराज शेर सिँघ सच करतार। ऐसी लिख्त होए अपार। बिन पूत सिख होए ना ख्वार। जगत जलन्दा प्रभ

पार उतार। चले बंस सच निस्तार। नाड़ी बहत्तर प्रभ रोग गंवाए। सुखला किशना दो पख लिखवाए। जिथ्थे जीव दी बणत बणाए। अन्ध कूप प्रभ रिहा समाए। ज्ञान जोत एह दीपक जगाए। दुःख दलिद्र सभ नष्ट कराए। मास दसवें पूत घर आए। महाराज शेर सिँघ लाज रखाए। नैण मुँधार जगत में आया। आप अडोल जगत डुलाया। पलटण चौथा जुग एह खेल रचाया। छड बैकुण्ठ मातलोक विच आया। जोत सरूप सभ जगत जलाया। सोहँ शब्द बाण गुर लाया। कोए ना मेटे भाणा वरताया। महाराज शेर सिँघ आप रघुराया। होए मेहरवान सतिजुग वरताया। गुरसिक्खां नूं सच मार्ग लाया। ऐसा दरस प्रभ आप दिखाया। बेमुखां उत्ते पर्दा पाया। वीह सौ सत्त विच सभ जगत भुलाया। घर घर सोहँ शब्द सुणाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक हो आया। निहकलंक आप अख्वाए। सृष्ट सारी दा खै कराए। खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब डुलाए। आप अभुल्ल सभ सृष्ट भुलाए। माया जाल जगत प्रभ पाए। आपणी कला आप वरताए। सतिगुर मनी सिँघ सिर छत्र झुलाए। सर्ब सृष्ट शब्द रूप वखावे। महाराज शेर सिँघ एह बणत बणावे। पिण्ड बुग्घे सच धाम बणावे। अठसठ तीर्थ कोई रहण ना पावे। ईश्र दात ईश्र लै जावे। तरे सोए जिन चरनी लावे। सर्ब रखवालक प्रभ आप हो जावे। बिन सिक्खां किसे नज़र ना आवे। भुल्ली सृष्टी धक्के खावे। महाराज शेर सिँघ माण गवावे। गुर चरन संग राखो प्रीत। जगत जलन्दा जिउँ बालू भीत। गुर ठांडा सीतल सति सीत। पवित आत्मा रिदा शुद्ध नीत। महाराज शेर सिँघ पतित पुनीत। पतित पावन आप दुःख भंजन। हँकार निवारन है भवखण्डन। जगत उधारे त्रैलोकी नंदन। प्रगटे जोत सर्ब निजानंदन। महाराज शेर सिँघ भरम भय भंजन। भरम भुलाए जगत रुलाए सिख तराए, जिन गुर शब्द पछाणया। प्रगटे करतार सृष्ट ख्वार आई कलिजुग हार, सोहँ शब्द गुर बाणया। माया जीव भुलाए, किसे शरन ना लाए, पूरन सिख प्रभ आप तराए, चले गुर के भाणयां। जुगो जुग प्रभ जोत प्रगटाए, धार देह जीव तराए, कलिजुग विच शेर सिँघ नाम रखाए, सृष्टी भुन्नी वांगर दाणयां। सच्चा गुर घर साचे आया। धन्न सो थान जिथ्थे गुर दरस दिखाया। कलिजुग दा सचखण्ड बणाया। सर अमृत विच एह अटल रखाया। आप अचल चलत नज़री आया। जोत सरूप विच सिख समाया। हँकार निवारण निहकलंक अख्वाया। अबिनाशी अविगत प्रभ आप रघुराया। भगत उधारन दुष्ट सँघारन सोहँ शब्द चलाया। आप एक, सृष्ट सभ एक, लक्ख चुरासी जीव उपाया। प्रगटे जोत उलटावे जुग, जलों थल थलों जल वहाया। धन्न सो सिख जिन्हां गुर दर्शन पाया। दुःख कलेश जगत दा लाहया। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, अन्ध अज्ञान गुर शब्द गंवाया। निर्भय निरवैर मूर्त अकाल घर सिख दे आया। होए प्रतक्ख आप समरथ, एह सुखन सुणाया। प्रगटे दातार, बैठे संगत विचकार, करे बचन

ललकार, मैं हां रघुराया। मेरी करे पछाण, बिन नाड़ी दे है जान, जिथ्थे प्रवेश भगवान, सर्ब सूख है पाया। नाम अंजन गुर ज्ञान दवाए। डुब्बदी सृष्टी गुर आण तराए। चार मूर्ति जोत इक्क समाए। प्रभ की जोत जगत जलाए। धन्न सिख जो गुर सेव कमाए। धन्न सो धाम जिथ्थे गुर चरन टिकाए। रिद्ध सिद्ध नौं निधि खड़े दर सीस झुकाए। फिरन करोड़ तेतीस प्रभ दरस तिहाए। देवी देवते कोई ओथे ठौहर ना पाए। जिथ्थे सिख सोहँ शब्द गुण गाए। महाराज शेर सिँघ लाज रखाए। सतिगुर मनी सिँघ कोल बहाए।

✻ ५ विसाख २००७ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे जिला अमृतसर बचन होए ✻

विसाख पंज प्रभ लाए रंग, सरबत्त तीर्थ कीते भंग, एह बचन लिखा ल्या। प्रभ करे ना जंग, वजाए शब्द मृदंग, भज्जी सृष्टी हो के नंग, गुर मुख भवा ल्या। विच संगत रंग, मन प्रभ दी उमंग, पाया घर निज़ानंद, प्रभ दरस दिखा ल्या। अमावस दा एह चढ़या चन्द, सृष्टी कीती विच कलम आ बन्द, सोहँ शब्द सृष्ट भन्ने दन्द, ऐसा तीर गुर रसना चला ल्या। महाराज शेर सिँघ परमानंद, तीन लोक जिस नाम सुगंध, करे दरस होए संगत अनन्द, निहकलंक जामा पलटा ल्या। दया कमावे दरस दिखावे हरि रंग लावे, घर आण भोग लगा ल्या। अमृत बणावे मुख में जो चवावे दु:ख दर्द हटावे सभ रोग गंवा ल्या। साध संगत प्रभ दया कमावे चरन लगावे होए दयाल दरस दिखा ल्या। कलिजुग भुलावे किसे नज़र ना आवे सोहँ शब्द सुणावे धन्न सो सिख जिन्हां प्रभ पछाणयां। डंक भय वजावे सृष्ट भुलावे बाण अग्न गुर शब्द चलावे तरे सो जिन्हां रस माणयां। साध संगत गुर दर ते आवे दु:ख दलिद्र सारा गंवावे दुध्ध पुत्त घर सिख समावे सच दान गुर कलम लिखा रिहा। सतिगुर खोल्हिआ गुर भण्डारा। इस तों परे नहीं कोई दुआरा। जिथ्थे प्रगट्या शेर सिँघ निरँकारा। साध संगत गुर पार उतारा। डुब्बी सृष्टी विच मंझधारा। निहकलंक आप निरबिकारा। दीए सुख गुर आत्म दुआरा। रोग सोग सभ पार उतारा। देवे दरस घर आ मुरारा। सिख आ बूझे विष्नूं अवतारा। जोत कीती अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख दुआरा। चमत्कार गुर जोत दिखाए। आपणी माया ऐसी पाए। गुर गोबिन्द तों मुख भवाए। सोहँ शब्द बाण चलाए। पौण रूप विच पवण समाए। सोहँ गूंज तीन लोक है जाए। चार कुन्ट एह चक्र लगाए। महाराज शेर सिँघ सोहँ प्रगटाए। सोहँ शब्द सर्ब सुख दावन। अन्त काल होए एह जामन। सभ तों वड एह सिख का नामन। राम तीर जिस मारया रावण। सोहँ शब्द ओहो सिख जानण। महाराज शेर सिँघ रिदे पछानण। सो जन जाणे जिस आप बुझाए।

बिन गुर दया कोई बूझ ना पाए। द्वापर विछड़े कल विच लए मिलाए। बहत्तर जामे गुरसिख प्रगटाए। उत्तम मुख विच जगत रखाए। सतिजुग विच सच सिख कहाए। जै जै जैकार तीन लोक हो जाए। गण गंधर्ब सिर फूल बरसाए। करोड़ छिआनवें एह बरखा लाए। अमृत बूंद झिम झिम झिमाए। बैठा इन्द्र इन्द्रासण सिख गुण गाए। करन दरस शिव शंकर आए। बाशक तशक जिन गल विच पाए। वेखे ब्रह्मा चार कूट नैण लगाए। चार मुख प्रभ तों फल पाए। चार वेद हरि के गुण गाए। विच अथर्बण निहकलंक है आए। धन्न सिख जो गुर चरनी लाए। छिन भंगर सदा दरस दिखाए। बैठे पुरियां विच सीस झुकाए। ईश्र फिर नज़र ना आए। मातलोक विच एह दया कमाए। छड्ड बैकुण्ठ डेरे बुग्घीं लाए। चरन कँवल संग गुर संगत तराए। धरत धवल आकाश प्रभ सर्ब समाए। धन्न सुहावा थान, जिथ्थे गुर चरन टिकाए। होए दयाल कृपाल, घर भोग लगाए। संगत आई दर परवान, सीत प्रशाद है रसना लाए। महाराज शेर सिँघ आप मेहरवान, सिक्खां दी पैज रखाए। जोत निरँजण अपर अपारा। सद मेहरवान आप निरँकारा। त्रेता राम ल्या अवतारा। होया द्वापर कृष्न मुरारा। दलिद्रीआं तांईं पार उतारा। होया कलिजुग शेर सिँघ भतारा। गुरसिक्खां नूं पार उतारा। अमोघ दर्शन गुरसिक्खां नूं दुआरा। सोहँ शब्द भगत भण्डारा। जोत सरूप प्रगटे संसारा। आप अपरम्पर अपर अपारा। चलावे कलम करे निस्तारा। वेद अथर्बण पार उतारा। ब्रह्मा माण गंवाया सारा। ब्रह्मलोक ईश्र पसारा। आप उलटाए बणाए सिख दुआरा। महाराज शेर सिँघ एकँकारा।

❋ ५ विसाख २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❋

सिक्खां नूं प्रभ देवे ज्ञान। पूरे गुर दी होई पछाण। सोहँ शब्द रसना नित्त गाण। बैठे घर दरस प्रभ पाण। कलिजुग विच होई कल्याण। जगत गुर शब्द बिबाण। तरन सिख संगत रल जाण। चरन कँवल प्रभ सदा समान। आदि अन्त जगत रह जाण। महाराज शेर सिँघ धर्म दीबाण। ऐसी देवे प्रभ आप वड्याई। सिख दी महिंमा गणी ना जाई। तीन लोक बैठे लिव लाई। धन्न सिख जिन गुर सेव कमाई। विच संसार सभ पई दुहाई। घर सिक्खां जै जै जैकार कराई। जिथ्थे ईश्र जोत प्रगटाई। समरथ पुरख प्रभ होए सहाई। द्वापर विछड़े कल लए मिलाई। काया कृष्न ईश्र उलटाई। जोत निरँजण शेर सिँघ जगाई। निहकलंक वड पदवी पाई। साध संगत विच रिहा समाई। महाराज शेर सिँघ जगत रथवाही। सोहँ शब्द रथ सच चलाया। गुरसिक्खां नूं जिस पार लँघाया। प्रभ अबिनाशी घर में पाया। माणस जन्म सुफल कराया। कट्ट

चुरासी सचखण्ड बहाया। गुरसिक्खां नूं गुरचरन तराया। धृग जीवण संसार, जिन्हां गुर दर्शन ना पाया। पल्लू फिराया आप, भगवान बीठला आया। ऊँच अगम्म अपार, भय भंजन राया। सोहँ शब्द सुणावे आप, जिस तेज सवाया। बाकी कीते नष्ट, जगत एह पाई माया। बुद्धि पाई विच, विच्चों ही वाद वधाया। नैणी दरस करे ना कोए, ऐसा सतिगुर धक्का लाया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां प्रभ दरस दिखाया। आए जगत परवान, जिन्हां गुर दर्शन पाया। डुब्बदे तरे संसार, जिन्हां गुर चरनी लाया। सोहँ शब्द ज्ञान, गुर मन्त्र दृढ़ाया। महाराज शेर सिंघ आप बलवान, जिस जगत भुलाया। जगत भुलावे आप रघुराई। हउमे माया सभ ते पाई। नज़र ना आवे जगत गुसांईं। दीपक सिख गुर जोत जगाई। देवे दरस बणत ललाट दिखाई। भरम ना भूले आप रघुराई। सर्ब कला वस्सया हरि थांईं। महाराज शेर सिँघ सृष्ट भुलाई। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर दरस दिखाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर चरन टिकाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर नज़री आया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर जोत जगाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर बिरद रखाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर सिख तराया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर अमृत मेघ बरसाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुरसिख मुख अमृत चुआया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर सभ रोग गंवाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर भरम गंवाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे निहकलंक है आया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे सोहँ शब्द है गाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर ज्ञान दवाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर समरथ है आया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे संगत हरि गुण गाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे बेमुख संगत संग तराया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर बणया दाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे भगत वछल दरसाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर चरनोधक पाया। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ कर्म कमाया। कर्म धर्म प्रभ आप बणाए। गुर मन्त्र सच नाम दृढ़ाए। सोहँ शब्द गुर ज्ञान दवाए। रसना जपे जगत तर जाए। भव सागर गुरसिख लँघ जाए। ऐसी सतिगुर दया कमाए। चार वरन सभ इक्क कराए। एक अनेक सर्ब रिहा समाए। महाराज शेर सिँघ अगणत तराए। सोहँ शब्द पैज रखाए। धन्न गुरसिख, जिन्हां प्रभ जाणया। धन्न गुरसिख, जिन प्रभ संग समाणयां। धन्न गुरसिख, हरि रंग माणयां। धन्न गुरसिख, मन्ने गुर के भाणयां। धन्न गुरसिख, चुक्का आवण जाणयां। धन्न गुरसिख, जिन पूजण राणयां। धन्न गुरसिख, घर साचे वडे ज़रवाणयां। धन्न गुरसिख, जिन्हां महाराज शेर सिँघ पछाणयां। सचखण्ड प्रभ वसणेहार। जिथ्थे जोत निरँजण आकार। डगमग जोत जगे अपार। उनन्जा पवण सिर छत्र झुलार। बैठ अडोल रिहा करतार। जो है आपणी जोत अधार। जोत जगावे विच संसार। जीव जीव विच रिहा समार। कोई ना जाणे प्रभ की सार। आदि

अन्त प्रभ एकँकार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार। ईश्र आपणा आप बणाया। जोत सरूप खेल रचाया। खण्ड ब्रह्मण्ड होए रुशनाया । नाउँ निरँकार प्रभ आप रखाया। कुदरत रूप सृष्ट उपाया। जून चुरासी लक्ख ईश्र जोत जगाया। होए प्रभ कृपाल, गरुड़ नूं सेवा लाया। जिस उठाया कंध, आकाश चक्र लगाया। लज्जया रक्खण भगत, प्रभ बणत बणाया। अमृत दित्ता मुख, मातलोक नूं आया। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तजाया। किरपा कीनी आप, विच मात ल्याया। दित्ती दात प्रभ आप, भगतन दे मुख चुआया। एक बूंद कारने, गंगा नीर वहाया। जिथ्थे प्रगट आप, रविदास चुमिआर तराया। लै कसीरा हत्थ कढु दे कंगण, प्रभ बांह दिखाया। जिस दे मैले चीथड़े, विच भगवान बहाया। होया प्रभ कृपाल, आण दरस दिखाया । निमाणयां निताणयां गुर गले लगाया। ज़ात पात आण सारा भेत मुकाया। किरपा कीनी आप, प्रभ चार वरन इक्क रंग कराया। सभ गंवाए माण, राउ रंक कर इक्क बहाया। सोहँ शब्द सच नीसाण, गुर राह बताया। उतरे सिख सभ पार, जिन हरि गुण गाया। महाराज शेर सिँघ दीन दयाल, जिस भरम भय गंवाया। भरम गंवाए सभ सुख पाए। चरन कँवल संग प्रीत लगाए। धन्न धन्न गुर पूरा जिस जीव तराए । धन्न धन्न गुरसिख जो गुर चरन लगाए। धन्न धन्न गुरसिख जो प्रभ शरन पाए। धन्न धन्न गुरसिख जिन संग बेमुख तर जाए। धन्न धन्न गुरसिख, जो सोहँ नाम जपाए। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां प्रभ दे दर्शन पाए। प्रभ दे उपद्वी मति, जगत एह धन्दे लाया। मन में भर हँकार, आपणा नाम भुलाया। अन्त काल होई हार, जगत एह धक्का लाया । होवे जिन्न ख़बीस, मुख एह विष्टा पाया। गुर तों होवे बेमुख, दुःख डाहढा पाया। कोए ना बचावे आण, जिन्हां प्रभ नाम भुलाया। होए आप कृपाल, आपणा आप उपाया। सतिजुग हो मेहरवान, आपणा नाम रखाया। त्रेते होए कृपाल, राम दसरथ जाया। द्वापर भया गोपाल, कृष्न नाम रखाया। कलिजुग करी कल्याण, निहकलंक अख्वाया। प्रगटी जोत अकाल, शेर सिँघ नाम रखाया। तरन तारन समरथ, प्रभ दरस दिखाया। दित्ता सभ नूं तार, जिन्हां शब्द सोहँ गाया। प्रगट्या ईश्र आप, कलू दा काल कराया। महाराज शेर सिँघ समरथ, जिन एह खेल रचाया। सोहँ शब्द सभ गुण होवे। गुणवन्त प्रभ आप, भगत जन रिदे परोवे। सोहँ दित्ता जाप, दुबिधा मैल है धोवे। सच्चा शब्द ज्ञान, दुःख दलिद्र धोवे। नाम मेरे दी बाण, थनीं रोग ना होवे। सोहँ जप के नाम, दुखी थन है धोवे। सतिगुर होए दयाल, दुःख नष्ट है होवे। फुलबहरी एह देह नूं बाण। डाहढा रोग सर्ब पछाण। कोई ना इस दी रक्खे खाण। सोहँ शब्द गुर मारया बाण। कीता नास वांग मसाण । पवण पाणी अग्नी है जाण। महाराज शेर सिँघ दुःख भञ्जण जाण।

८० ०१

❋ ११ विसाख २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❋

प्रगटी जोत आप निरँकार। सर्ब जीव जोत अधार। कीती खेल अपर अपार। भगत जनां नूं दित्ता तार। जुगो जुग प्रभ लै अवतार। वज्जा धू जोत चमत्कार। बाल अवस्था होए अधार। किरपा कीनी आप दातार। सचखण्ड दित्ता घर बार। चार जुग दा माण दवाया। सतारां लक्ख अठाई हज़ार सतिजुग लिखाया। बारां लक्ख छिआनवें हज़ार त्रेता उपजाया। अट्ठ लक्ख चौंसठ हज़ार द्वापर भुगताया। चार लक्ख बत्ती हज़ार कलिजुग कर्म लिखाया। ऐड़ा अथर्बण वेद जिस वाद वधाया। अल्ला अल्ला नूर प्रभ जोत जगाया। ईसा मूसा आए, जगत विच राह चलाया। कीनी गऊ पुकार, कलिजुग दा नास कराया। द्वापर होया कृष्न मुरार, कल निहकलंक अख्वाया। धू प्रभ दी जोत, जोत विच समाया। सवरन सिँघ दरबान दर अग्गे बहाया। कलिजुग विच आए प्रभ भगत वड्आया। सतिजुग विच सच तख्त बहाया। जामा धार आप घनकपुरी विच आया। महाराज शेर सिँघ धन्न, जिस एह जुग पल्टाया। करे खेल प्रभ अपर अपार। प्रहलाद तांईं जिस दित्ता तार। जिस ने रक्खया शब्द अधार। रसना सिमरे राम करतार। हरनाक्ष नूं किया ख्वार। प्रगट भया नर सिँघ अवतार। जोत आपणी प्रभ सदा जगावे। बावन रूप हो अलक्ख जगावे। चार वरन उपदेश दुआवे। चार वेद मुख पाठ सुणावे। लीला चलत वखाण दा, कोई इस दा भेव ना पावे। सर्ब आकार एह जगत दा ऐसी बणत बणावे। प्रगट काया मात विच आपणी प्रभ जोत जगावे। आप अडोल सर्ब है पेखे, जीव तांईं नज़र ना आवे। होए दयाल कृपाल प्रभ, भगत जनां हरि दरस दिखावे। विछड़े विच जुग सति, कलिजुग विच गुर चरन लगावे। दित्ता माण गुर धाम, बल राजा गुरदयाल सिँघ बण जावे। भगत हेत प्रकाश कर, गुरचरन संग सेव कमावे। होए बचन अटल्ल, गुर पूरा एह बचन लिखावे। महाराज शेर सिँघ आप अटल्ल, सिख दी पैज रखावे। अछल छलण आप प्रभ आए। माया विच जगत भुलाए। ईश्र जोत जगत प्रगटाए। मोहणी रूप शिव तांईं वखाए। करे दरस सुध भुलाए। नारी जाण लिंग वधाए। पूरे गुर दा भेद ना पाए। ऐसी कला आप वरताए। जुगो जुग प्रभ जोत प्रगटाए। दे दरस सभ संसे लाहे। पूजा उस दी जगत रहि जाए। कल विच प्रभ खेल रचाए। जीव जन्त कोई भेद ना पाए। महाराज शेर सिँघ एक रघुराए। जीव दा प्रभ आकार बणाया। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणाया। विच मन मति बुधि हँकार टिकाया। खेल करी अपार, वाजा पवण वजाया। कोई ना जाणे सार, वाजा पवण वजाया। दित्ता आप ज्ञान, सोहँ शब्द सुणाया। अनहद वज्जे मन, अथर्बण माण गुआया। होए आप कृपाल, देह दीपक विच जोत जगाया। होया अन्ध आकार, जीव दा बुत्त बणाया। भुल्ला मुग्ध गंवार, मात गर्भ से बाहर जां आया। कलिजुग

दित्ती हार, गुर दा नाम भुलाया। वध्या मन विकार, उलटे धन्दे लाया। बेमुख होए ख्वार, दर दर धक्के खाया। माणस जन्म नूं आई हार, लोक परलोक धक्के खाया। महाराज शेर सिँघ होए कृपाल, सिक्खां नूं आण तराया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां गुर दर्शन पाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां सोहँ गाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां गुर माण दवाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां हरि मंगल गाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां गुर चरन लगाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां गुर चरनीं सीस झुकाया। कलिजुग प्रगट कीए भगत, भगवान आण एह बिरद रखाया। भगत मेरे दी एह वड्याई। अचरज विच अचरज मिल जाई। विस्मादे विस्माद समाई। ब्रह्म सरूप ब्रह्म जोत जगाई। गुरसिख उपजे नाउँ, जिन एह बूझ बुझाई। बेमुख पाए ना ठाउँ, दर दर धक्के खाई। सोहँ सच्ची नाउ, गुरसिख पार लँघाई। महाराज शेर सिँघ होए कृपाल, भगतन दी पैज रखाई। भगत होण गुरसिख, जिन्हां रंग माणयां । भगत होण गुरसिख, चलण गुर के भाणया । भगत होण गुरसिख, जिन्हां सतिगुर पछाणया। भगत होण गुरसिख, जगत विच वांग निमाणया। भगत होण गुरसिख, ईश्रर पिता आप पूत अञ्याणया। भगत होण गुरसिख, जिन्हां सोहँ शब्द पछाणया। सतिगुर सिख उत्ते दया कमाए। सोहँ शब्द ज्ञान दुआए। साध संगत विच ओमी रलाए। पसू प्रेतों देव बणाए। चन्दन वांग निम्म महिकाए। पापी अपराधी गुर चरन तराए। दर आया परवान, जिन्हां गुर दर्शन पाए। अन्त ना खावे काल, जम परे हटाए। भगत वछल कृपाल, आ के होए सहाए। महाराज शेर सिँघ होए कृपाल, सिख दी मुक्त रखाए। गुरसिक्खां नूं गुर माण दवाया। नर्क स्वर्ग चों पार लँघाया। सच वासी सचखण्ड पहुंचाया। आप सरूप जोत विच जोत समाया। ओथे जोत अटल्ल, जिथ्थे प्रभ जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ होए आप सहाया। जुग चौथा कहर वरताए। जीव जन्त बिल्लाए। कोए ना एहनूं पार लँघाए। कलिजुग अग्न देह जलाए। होए निमाणे गुर दर ते आए। गुर सागर दया मेघ बणाए। सोहँ शब्द दी बरखा लाए। दु:ख कलेश संगत दे लाहे। बीर अठारां सभ भय रखाए। जिन्न ख़बीस कोई नेड़ ना आए। मसाण पवण दर धक्के खाए। सोहँ शब्द जो सिख रसना गाए। भूत प्रेत कोई नेड़ ना आए। चक्र सुदर्शन गुर एह चलाए। महाराज शेर सिँघ सिख दी पैज रखाए। सिक्खां नूं गुर आप पछाणया। उत्तम किए जग विच सभ जरवाणया। लज्जया रक्खी आप आए दर प्रवाणया। महाराज शेर सिँघ होए कृपाल भगत निसाणया।

८२
०१

✵ १५ विसाख २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✵

ऊँच अपार प्रभ बेअन्त। सभ सृष्ट प्रभ के जन्त। जोत सरूप प्रभ बेगणत। ऊँच अगम्म सदा अनन्त। जोत अधार सभ जीव जन्त। सतिगुर आवे विच साध सन्त। सृष्ट हरि नार, आप प्रभ कन्त। सोहँ शब्द गुर का मंत। महाराज शेर सिँघ सभ पतिवन्त। करन काल प्रभ कल दा आया। सचखण्ड विच मात समाया । सोहँ शब्द गुर राग सुणाया । बाकी सभन दा नास कराया। भय भयानक प्रभ होए सहाया। जीव जन्त सभ तराया। चरन कँवल जिस दर्शन पाया । उपजे शब्द मन, सोहँ राग सुणाया। होए आप कृपाल, दकुखां दा नास कराया। भय भंजन मेहरवान, जिस एह जगत तराया। ओट गही जगत पित सरनाया। रक्ख सिर ते हत्थ, प्रभ एह बचन सुणाया। मैं आप समरथ, घर ठांडे आया। तारे आप अकथ्थ, जीव दर बिल्लाया। महाराज शेर सिँघ नाम रथ, जिस एह जगत तराया। करन करावणहार आप प्रभ आया। चौथा जुग उलटाए, आपणा नाम जपाया। सतिजुग लाए सति, सति सति वरताया। ब्रह्मा विष्न महेष सभ दा वक्त मुकाया। शिव शंकर कीए अमेट, जिन्हां गल बाशक पाया। पार्बती पूत गणेश, शिव सिर हाथी लाया। उस दा गंवाया माण, जिस नूं शिव आप प्रगटाया। धार नर अवतार, सभ नूं जोत मिलाया। एहो सच्ची कार, एक संग एक रलाया। चलाया जुग सति, प्रभ एह खेल रचाया। दित्ते ने तख्त बिठाल, जिन्हां महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याया। दित्ती पदवी अकाल, जिथ्थे मरे ना जाया। सोहँ शब्द बबाण, जिस गुर धाम पुचाया। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, सोहँ शब्द मुख रखाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, कुरान अञ्जील भस्म कराए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, कलिजुग बाणी माण गंवाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, मदि मास सभ नष्ट कराए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, पापी अपराधी अग्न जलाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, लोभी कामी भस्म कराए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, मात पिता अग्गे पूत ना जाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, ख़ाली गोद ना मात रहाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, सोहँ शब्द धुन वजाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, भूत प्रेत सभ परे हटाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, हाकन डाकन सिर खेह पवाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, छल छिद्र सोहँ शब्द चलाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, अठु अठराहा सभ नष्ट हो जाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, दुखी जीव ना कोई बिल्लाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, गुरमुखां नूं सम दरस दिखाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, चरन संग सिख तराए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, अन्तकाल प्रभ दरस दिखाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, अन्तकाल जम नेड़ ना आए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, धर्म राज दा डन्न हटाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया,

कुम्भी नर्क सिख ना जाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, दे दरस प्रभ देह छुडाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, विच बबाण सिख बठाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, गुर धाम गुरसिख पुचाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, बैकुण्ठ धाम रिहा जोत समाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, दो मूर्ति इक्क हो जाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, जोत संग जोत मिल जाए। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, महाराज शेर सिँघ भगत तराए। भगत सो जो दर ते आवण। भगत सो जो सतिगुरू पछाणण। भगत सो जिन्हां गुर देवे ज्ञानन। भगत सो जिन ईश्र जोत है चानण। भगत सो जो सोहँ शब्द वखानण। भगत सो महाराज शेर सिँघ चरन लगावण। सतिगुर सतिजुग एह चलाई रीत। गुरचरन संग लागे प्रीत। झूठी काया होवे पतित पुनीत। महाराज शेर सिँघ ठांडा सीत। गुरसिक्खां गुर ठंड वरताए। जन्म जन्म दे किलविख लाहे। हउमे ममता मैल गुआवे। चतुर्भुज प्रभ दरस दिखावे। कलिजुग डुबदे आण पापी जीव तरावे। सच्चा सतिगुर आप सच शब्द सुणावे। पारब्रह्म परमेश्वर आपणा आप जणावे। महाराज शेर सिँघ भगत वछल जनां नूं आप तरावे।

❊ १७ विसाख २००७ बिक्रमी ❊

प्रभ ऐसा जो सर्ब व्यापे। प्रभ ऐसा बिन भगत ना जापे। प्रभ ऐसा आप है आपे। प्रभ ऐसा सर्ब जीव जोत तरापे। प्रभ ऐसा सोहँ शब्द अलापे। कलिजुग हो कृपाल, ऐसी बणत बणाए। कलिजुग हो कृपाल, आपणी जोत प्रगटावे। कलिजुग हो कृपाल, भगत जनां दरस दिखावे। कलिजुग हो कृपाल, सोहँ शब्द चलाए। कलिजुग हो कृपाल, पापी गुरचरन तराए। कलिजुग हो कृपाल, आपणा आप जणाए। कलिजुग होए कृपाल, कृष्न महाराज शेर सिँघ बण आए। कलिजुग हो कृपाल, कल दा नास कराए। कलिजुग हो कृपाल, निहकलंक अख्वाए। कलिजुग हो कृपाल, भगतन दी लाज रखाए। कलिजुग हो कृपाल, डुबदे सिख तराए। कलिजुग हो कृपाल, जनां नूं सरनी लाए। कलिजुग होए कृपाल, जगत ते माया पाए। कलिजुग हो कृपाल, आपणा आप छुपाए। कलिजुग हो कृपाल, घनकपुरी नूं भाग लगाए। कलिजुग हो कृपाल, आपणी देह तजाए। कलिजुग हो कृपाल, जोत सरूप जगत जलाए। कलिजुग हो कृपाल, जगन्नाथ अख्वाए। कलिजुग हो कृपाल, त्रैभवन समाए। कलिजुग हो कृपाल, खण्ड ब्रह्मण्ड रहाए। कलिजुग हो कृपाल, निहकलंक अख्वाए। कलिजुग हो कृपाल, मदि मास नष्ट कराए। कलिजुग हो कृपाल, वाहवा सतिगुर सतिजुग लाए। कलिजुग हो कृपाल, सोहँ ज्ञान दवाए। कलिजुग हो कृपाल, महाराज शेर सिँघ नज़री आए। धन्न गुरसिख जिन्हां हरि रंग माणया। धन्न गुरसिख जिन्हां सोहँ शब्द

८५
०१

पछाणया। धन्न गुरसिख जिन्हां मुका आवण जाणया। धन्न गुरसिख जिन्हां महाराज शेर सिँघ चरन रस माणया। निरँकार अछल अडोल, प्रभ सर्ब समाणया। जोत सरूप आप अमोल, सभ जगत मौलाणया। महाराज शेर सिँघ आप अतोल, ना कोए तुलाणया । गुरसिक्खां नूं गुर माण दवाए। हत्थ चवर सिर छत्र झुलाए। सोहँ शब्द गुर नाम दवाए। वज्जे धुन पंज जेठ नूं आए। होवे प्रकाश जीव जोत जगाए। जाए अज्ञान सोहँ शब्द प्रगटाए। होए जीव ध्यान, प्रभ दया कमाए। कोट अपराध आप प्रभ खण्डे, गुर चरनां दी जो आस तकाए। देवे तार आप अपरम्पर, साध संग विच जो जन आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर ठांडा, गुरसिक्खां दी जो पैज रखाए। रक्खे पैज आप करतार। दे दरस सिख कीते पार। जीव जन्त मेरी जोत अधार। मूर्ख मुग्ध ना जानण सार। कूड़ी माया एह जगत पसार। जुग चौथे विच होए ख्वार। मदि मास जिथ्थे होए अहार। होए पाप जगत मँझार। प्रगटी जोत आप निरँकार। सृष्ट रूप जिन किया आकार। जोत जगत जगाई अपार। आप अडोल रहे निराधार। महाराज शेर सिँघ अपर अपार। सतिगुर सारा गोझ हटाए। सन्त असन्त सभ पकड़ ल्याए। जीव उत्ते जो कहर कमाए। काया कन्या लई जलाए। सार की मुंगली सिर पर लाए। बद्धा दर ते चोटां खाए। गुर पूरे बिन कौण छुडाए। हाहाकार करे बिल्लाए। सोहँ शब्द डुब्बदे लए तराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, सरन पड़े दी लाज रखाए। गुर मन्त्र नाम प्रभ आप दृढ़ाए। शहीदां मुरीदां पकड़ चरन ल्यावे। गुज्झा भेत प्रभ आप खुलावे। पकड़ पापी दर अग्गे बहावे। महाराज शेर सिँघ बिन कौण छुडावे। विच संसार धक्के जो खाए। अंस बिनां गया तड़फाए। चरन कँवल प्रभ सेव कमाए। होए अधीन प्रभ रिदे ध्याए। पूरा गुर एह दया कमाए। टुट्टे फल फेर लगाए। संगत संग बेमुख तराए। सोहँ नाम औखध बण जाए। महाराज शेर सिँघ जिन दया कमाए।

❊ १८ विसाख २००७ बिक्रमी ❊

सतिजुग होया मेहरवान, रिख मुन तराए। त्रेता भया राम, रावण माण गंवाए। द्वापर कृष्न मुरार, अर्जन दा रथ चलाए। देवे प्रभ ज्ञान, गीता मुखों सुणाए। कलिजुग लाया बाण, अल्ला दा माण गंवाए। सोहँ शब्द निरबाण, सिक्खां नूं माण दवाए। भगत वछल कृपाल, भगतां दी पैज रखाए। फड़ के कढ्ढे बाहर, छड्ड देह देह विच समाए। भुलाया जगत अञ्याण, माया दे पर्दे पाए। प्रगटे आप भगवान, जगत नूं धन्दे लाए। जीवां जीव उपाए, ऐसा खेल रचाए। बैठ आप अडोल,

सिक्खां नूं दे जणाए। सोहँ शब्द अनमोल, कलिजुग नास कराए। पूरा होवे चोहल, सतिगुरू जुग उलटाए। महाराज शेर सिँघ आप अडोल, जोत संग जोत मिलाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे आपणी जोत प्रगटाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे आपणी जोत जगाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे मंगलाचार कराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे संगत दी पैज रखाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे बिदर दी पैज रखाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे दकुखां दा नास कराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे जीव जन्त तराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे भुल्ले मार्ग पाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे डुब्बदे लए तराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे होए दयाल दरस दिखाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे आ के भोग लगाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे सिक्खां दी लाज रखाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे सिक्खां सिर छत्र झुलाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे गण गंधर्व सीस निवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे तेतीस करोड़ विच चरन आए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे सिक्खां ते फुल्ल बरसाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे पुष्प वरखा आप कराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे अमृत बूंद मुख चुआए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे मेघ बरखा आप कराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे पकड़ अहल्या नूं चरनीं लाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे
८६ ०१ इन्द्र सीस झुकाए । सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे ब्रह्मा दा माण गंवाए । सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे ध्रू विच ८६ ०१
समाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे सवरन नूं माण दवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे पाल सिँघ सृष्ट उपाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे तीन लोक दी जोत जगाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, कलिजुग विच निहकलंक अखवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, घनकपुरी नूं भाग लगाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, बुग्घियां नूं माण दवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जेठ पंजवीं कल्सीं खेल रचाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, सोहँ शब्द प्रचलत कराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, वाहवा सति सति सतिजुग वरताए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए। जो जन प्रभ की सरनी आए। गुर साचा सच दया कमाए। गुर संगत संग बेमुख तराए। जिउँ होवे चन्दन वास निम्म महिकाए। पसू प्रेतों देव कर गुर चरन बहाए। कलिजुग दित्ता माण, हँगता दी मैल गंवाए। सोहँ शब्द सुजान, मनों विकार गंवाए। महाराज शेर सिँघ आप भगवान आप कलिजुग विच आए।

❊ १६ विसाख २००७ बिक्रमी ❊

पूरे गुर तों सद बलिहारी। दर आयां दी पैज संवारी। कट्टे देह दे रोग, सोहँ कीती कारी। काया कीती अनमोल, शेर सिँघ पैज सवारी। बैठा प्रभ अडोल, जगत जोत धरा के। देवे शब्द अमोल, सिक्खां दी पैज रखा के। मेरा नाम अतोल, वेखो रसना गा के। जाए हउमे रोग, दर ते सीस झुका के। मिले सोभ अमोल, गुर दा दर्शन पा के। बैठा सिँघ अणभोल, सिँघासण कलिजुग ला के। पाया ममता चोल, बैठा भेत छुपा के। विछड़े लैंदा मेल, आपणा आप प्रगटा के। बुझी दीपक दए जलाए, नेत्री दरस दिखा के। सिक्खां संग है मेल, जोत विच जोत मिला के। महाराज शेर सिँघ सदा अडोल, जावे जुग पलटा के। ईश्र आपणी बणत बणाए। वल छल कर के जगत भुलाए। ईश्र जोत काया पल्टाए। मच्छ कच्छ दे विच समाए। नाभ विच्चों ब्रह्मा प्रगटाए। चार मुख का सीस लगाए। चार वेद कन्न राग सुणाए। सांम रिग युजर अथर्बण वेद लिखाए। फेर हो कृपाल, ध्रू नूं दरस दिखाए। बालक होए दयाल, दर दे अग्गे बहाए। कलिजुग होई कल्याण, जोत संग जोत मिलाए। किरपा करे करतार, सवरन नूं धाम पुचाए। प्रगटे जोत आप, प्रहलाद दी लाज रखाए। धारे कीड़ी रूप, तपदे थम्म ठराए। पलटे काया आप, नर सिँघ रूप बणाए। ओहो ईश्र जोत, सिख दे विच समाए। सोहँ शब्द बबाण, सिक्खां नूं पार लँघाए। प्रभ बड़ा बलवान, हरनकशप दा माण गंवाए। करे पकड़ दो फाड़, भगत दी लाज रखाए। प्रगटे काया आप, ब्रह्मण दा रूप बणाए। बल राजे घर यज्ञ, दर ते बैठा करे खेल अपार, मुखों चार वेद सुणाए। अंदर राजे सद्दया, मंग स्वामी जो तुध भाए। करमां ढाई धरत मंग, पिच्छे दे त्रैलोअ ना आए। दो करमां कर तिन्न लोअ वल छल कर के जगत भुलाए। करे खेल अपार, दुरबाशा दा माण गंवाए। चक्र सुदर्शन बाण, उहदे मगर लगाए। लज्जया रक्खे आप, अंबरीक नूं माण दवाए। प्रभ आप मेहरवान, भगतन दी जै कराए। प्रभ सदा बेअन्त, संगत दे विच समाए। करे बेनन्ती साध संग, गुर पूरा कर सच वखाए। लज्जया रक्खे राणी तारा दी, जोड़ी जोड़ वखाए। हरी चन्द दा तोड़ हँकार, सच्चा दर वखाए। ईश्र जगत उधार, जुगो जुग देह पल्टाए। भगतन दे वड्याई, जगत नूं नाम दिवाए। राम अवतार सदा है मन रंग लगाए। दे के दरस अपार, खाली कुण्ड कराए। ईश्र जगत उधार, जुगो जुग जोत जगाए। देवे दरस अपार, खाली कुण्ड कराए। महाराज शेर सिँघ आप अवतार, कलिजुग नास कराए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, जिथ्थे बैठा जोत जगाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया। सोहँ शब्द नाम दिवाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, पापी मुग्ध अञ्याण तराए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, विछड़े कलिजुग लए मिलाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, मदि मास नेड़ ना आए। गुरसंगत गुर माण

८७ ०१

दिवाया, अमृत बूंद आ मुख चवाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, देवियां उप्पर दया कमाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, सरन पड़े दी लाज रखाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, गर्भ रोग नष्ट हो जाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, दे दरस पार लँघाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, कलिजुग वा नेड़ ना आए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, होए विस्माद चरन मिलाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, वांग द्रोपत लाज रखाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, दुखी जीव ना कोए बिल्लाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, हो प्रतक्ख दरस दिखाए। गुरसंगत गुर माण दिवाया, अचुत्त पारब्रह्म परमेश्र महाराज शेर सिँघ होए सहाए। दर आए परवान, जिन्हां मेरा नाम चितारया। दर आए परवान, जिन्हां चरन निमस्कारया। दर आए परवान, जिन्हां हरि गुण गा ल्या। दर आए परवान, जिन्हां गुर अमृत मुख चवा ल्या। दर आए परवान, जिन्हां जन्म मरन दुःख गवा ल्या। दर आए परवान, जिन्हां भ्रन्त भुलेखा गंवा ल्या। दर आए परवान, जिन्हां कलिजुग चरन लगा ल्या। दर आए परवान, जिन्हां नर सिँघ सुखआसण पा ल्या। दर आए परवान, जिन्हां माणस जन्म सुफल करा ल्या। दर आए परवान, जिन्हां रसना सोहँ गा ल्या। दर आए परवान, जिन्हां महाराज शेर सिँघ कोल बहा ल्या। गुरसिक्खां एह सेव कमाई। ईश्र जोत सीस उठाई। उपजे ज्ञान प्रभ त्रैकुटी खुल्हाई। झूला झूले आप रघुराई। गगन पाताल सर्ब हिल जाई। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड प्रभ दे उलटाई।

इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक सभ उलट कराई। जोत प्रभ अगम्म, विच बैकुण्ठ जगाई। गुरसिक्खां पाया माण, जिन सिर पलँघ उठाई। दरगाह होण परवान, जोत विच जोत मिलाई। अनहद शब्द ज्ञान, प्रभ दे सुणाई। जोत सरूप अडोल, शब्द में दे दिखाई। काटे देह रोग, जिन्हां एह सेव कमाई। पूरन पुरख समरथ, जिस एह बूझ बुझाई। सच्चा आप गुसाईं, सिक्खां दी पैज रखाई। होवे जगत हाहाकार, सिक्खां घर जै जै जैकार कराई। तुठा आप कृपाल, शब्द दी धुन वजाई। महाराज शेर सिँघ स्वछ सरूप जिन एह बणत बणाई। सतिगुर सतिजुग नींह रखाई। प्रगटी जोत देह विच आई। कलू जीव दर बिल्लाई। किछ ना सूझे एह माया पाई। छल छिद्रां साडी देह जलाई। पवण पौण गुर अग्न बुझाई। अमृत दूध गुर वरखा लाई। माता तांईं मिले वधाई। खाली गोद ना जगत रहि जाई। गुर पूरे दी सरन तकाई। सोहँ शब्द मिली वड्याई। मिल साध संगत हरि जस गाई। करन दरस जो दर ते आया। मनो गंवाए माण, चरनी सीस निवाया। सो पुरख सुजान, जिस मुख अमृत पाया। महाराज शेर सिँघ गुण निधान, सिक्खां दा भरम चुकाया। माया विच जगत भुलाया। गुरसिक्खां घर हरि जी आया। सर्ब निरंतर नैण दरसाया। सोहँ शब्द गुर मन्त्र दृढ़ाया। कलिजुग विच जिन पार लँघाया। सच्चा आप सचखण्ड वखाया। सच्चे प्रभ ब्रह्मण्ड, जिथ्थे प्रभ जोत जगाया। खायण ना जम डण्ड, सिक्खां सिर हत्थ टिकाया।

प्रभ दी जोत अकथ्थ, कदे मरे ना जाया। महाराज शेर सिँघ समरथ, सिक्खां नूं नाम दवाया। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, जो जन गुर दर ते आए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, जिन्हां चरनी सीस निवाए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, जिन्हां मनों माण गुआए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, छड्ड सुखआसण जो शरनी आए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, जिन्हां नूं प्रभ दरस दिखाए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, जिन्हां आपणा नाम जपाए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, भूत प्रेत कोई नेड़ ना आए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, जिन्न ख़बीस परे हटाए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, देव परी मवकल सभ परे हटाए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, बीर अठारां भय रखाए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, हाकन डाकन नास कराए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, अट्ठ अठराहा ना सिख सताए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, सोक रोग आ सभ गंवाए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, सोहँ शब्द सुणाए। वाहवा सतिगुर दुखड़े लाहे, महाराज शेर सिँघ सिक्खां सिर छत्र झुलाए। गुर चरनां विच कन्या आई। केस चवर दी सेव कमाई। गुर ठांडा मन शांत कराई। कट्टे रोग होए सन्त सहाई। लग्गे चरन प्रीत, जोती जोत मिलाई। महाराज शेर सिँघ सति सरूप, जिन एह बणत बणाई। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर दर्शन पाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर चरनीं लाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर मंगल गाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर झूल झुलाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर सिख बणाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां सोहँ शब्द सुणाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां सति सन्तोख दिवाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां भरम भौ गंवाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां कल दर्शन पाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जो जन सेव कमाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याया। रिदे धरे ध्यान, प्रभ है जोत जगाए। रिदे धरे ध्यान, जीव नूं नज़री आए। रिदे धरे ध्यान, ज्ञान गोहझ है पावे। रिदे धरे ध्यान, प्रभ अचल दरसावे। रिदे धरे ध्यान, मन दी मैल गवावे। रिदे धरे ध्यान, दसवां द्वार खुल्हावे। रिदे धरे ध्यान, वाजा पवण वजावे। रिदे धरे ध्यान, जोत सरूप नज़र आवे। रिदे धरे ध्यान, अमृत बूंद वरसावे। रिदे धरे ध्यान, कँवल दा मुख खुल्हावे। रिदे धरे ध्यान, सच गुर पूरा पावे। रिदे धरे ध्यान, फेर गर्भ ना आवे। रिदे धरे ध्यान, अन्त संग जोत समावे। रिदे धरे ध्यान, ब्रह्म रूप हो जावे। रिदे धरे ध्यान, विच बैकुण्ठ लै जावे। रिदे धरे ध्यान, महाराज शेर सिँघ नज़री आवे। सोहँ शब्द ज्ञान, सिक्खां दी पैज रखावे। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां गुर चरनी लाया। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां प्रभ दरस दिखाया। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां हरि नजरी आया। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां कल आए तराया। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां सद राह तकाया। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां सतिगुर विच बहाया। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां प्रभ गले लगाया। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां प्रभ पार लँघाया। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां घर ठांडे आया।

जिन्हां गंवाया माण, अन्त काल दुःख ना पाया। जिन्हां गंवाया माण, हरि जीउ होए सहाया। जिन्हां गंवाया माण, तिन्हां महाराज शेर सिँघ घर मांहि पाया। गुरप्रसादि मन जोत जगाईए। गुरप्रसादि अमृत नाम मुख चवाईए। गुरप्रसादि झिरना निझरो झिराईए। गुरप्रसादि नाभ कँवल खुल्हाईए। गुरप्रसादि द्वार दसवें दा पर्दा लाहीए। गुरप्रसादि शब्द धुन मन वजाईए। गुरप्रसादि अनहद राग मन पाईए। गुरप्रसादि घर शाहो पाईए। गुरप्रसादि हँगता रोग गंवाईए। गुरप्रसादि माया मोह चुकाईए। गुरप्रसादि भरम का नास कराईए। गुरप्रसादि जगत अबिनाश दरसाईए। गुरप्रसादि सोहँ शब्द गुण गाईए। गुरप्रसादि सचखण्ड समाईए। गुरप्रसादि ब्रह्म सरूप हो जाईए। गुरप्रसादि गुरमुख नाम धराईए। गुरप्रसादि जोती जोत मिल जाईए। गुरप्रसादि पारब्रह्म गुर पाईए। गुरप्रसादि गहर गम्भीर हो जाईए। गुरप्रसादि आवण जावण मुकाईए। गुरप्रसादि परमगति पाईए। गुरप्रसादि रसना हरि हरि गाईए। गुरप्रसादि कल पार तराईए। गुरप्रसादि किसे दा भउ ना खाईए। गुरप्रसादि गुर पुरी नूं जाईए। गुरप्रसादि निजानंद सुख पाईए। गुरप्रसादि त्रिकुटी कुफल खुल्हाईए। गुरप्रसादि निरँजण जोत समाईए। गुरप्रसादि हरि सन्तन पाईए। गुरप्रसादि महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याईए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, गुरसिक्खां दे मुख चवाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, तप्त काया सीतल हो जाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, सोहँ शब्द नाम दिवाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, सच सुच्च जणाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, पसू प्रेतों कर देव बहाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, जन्म जन्म दे पाप गुआवे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, जम दूत कोई नेड़ ना आवे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, साध संगत गुर माण दवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, तरन तारन समरथ अख्वावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, पापी अपराधी जगत तरावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, गुण निधान घर लेख लिखावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, ब्रह्मा विष्न महेष सभ सरनी लावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, शिव गणेश सभ सीस झुकावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, करोड़ तेतीस सदा बिल्लावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, बिन गुर मुक्त ना कोए करावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, आप अमर जीअ अमर करावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, जोतों जोत आ जीव जगावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, रस अनूठा मुख चवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, धरत धवल आकाश हिलावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, भय भयानक विच आण तरावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, भगत जनां दी पैज रखावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, साध सन्त गुरचरनीं लावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, गुरसिक्खां नूं माण दवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, थिर घर दी सोझी पावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, अज्ञान अन्धेर परे हटावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, जोत ज्ञान जीव जगावे। अमृत

वेले गुर अमृत बरखे, पर्दा खम्ब परे हटावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, विच्चों आपणा आप जणावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, लोभ मोह हँकार गवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, मति मन बुध प्रगटावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, झूठी देह कंचन हो जावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, सोहँ दान रिदे दवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, हँकारीआं नूं चरन निवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, सोहँ शब्द दी जैकार करावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, महाराज शेर सिँघ भगत तरावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे प्रभ दरस दिखावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे गुर नाम दवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे इक्क रूप समावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे जुग उलटावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे संगत नूं दरस दिखावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे पारब्रह्म प्रभ आवे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे जोत रूप समावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे कलिजुग जीव भुलावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे आपणा आप छुपावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे बेमुखां नज़र ना आवे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे ज्ञान गोहझ खुल्ह्रावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे सरन प्यां दी लाज रखावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे गुर लक्ख इक्क अस्सी हज़ार भूत बन्न्हावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे अठारां बीर सीस निवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे अंचनी कंचनी पई शर्मावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे हाकन डाकन सिर मुंनवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे सरदी काल बाल करावे। सच्ची एह दरगाह, उलट वाहू केसे पवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे सभ भय रखावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे गुर सिख तरावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ शब्द लिखावे। मेरा रूप अगम्म, ना किसे चितारया। मेरा रूप अगम्म, सर्ब जीव उधारया। मेरा रूप अगम्म, जिस सदा निमस्कारया। मेरा रूप अगम्म, विच देह जोत पधारया। मेरा रूप अगम्म, तीन लोक सर वारया। मेरा रूप अगम्म, अन्त ना पारावारया। मेरा रूप अगम्म, गगन पाताल जीव जन्त बणा ल्या। मेरा रूप अगम्म, सर्ब विच आसण ला ल्या। मेरा रूप अगम्म, जोत संग जीव जिवा ल्या। मेरा रूप अगम्म, खिच्च जोत विच खेह मिला ल्या। मेरा रूप अगम्म, किसे भेव ना पा ल्या। मेरा रूप अगम्म, जिन एह सृष्ट उपा ल्या। मेरा रूप अगम्म, नाउँ निरँकार रखा ल्या। मेरा रूप अगम्म, जोत निरँजण गा ल्या। मेरा रूप अगम्म, उनन्जा पवण सिर छत्र झुला ल्या। मेरा रूप अगम्म, जोत अडोल डगमगा ल्या। मेरा रूप अगम्म, वरभंड समा ल्या। मेरा रूप अगम्म, जगन्नाथ अख्वा ल्या। मेरा रूप अगम्म, अछल छलण छला ल्या। मेरा रूप अगम्म, जुगो जुग भेस वटा ल्या। मेरा रूप अगम्म, सतिजुग मेहरवान अख्वा ल्या। मेरा रूप अगम्म, त्रेता राम सुणा ल्या। मेरा रूप अगम्म, द्वापर कृष्न मुरारया । मेरा रूप अगम्म, महिंमा अपर अपारया । मेरा रूप अगम्म, कल महाराज शेर सिँघ

९२
०१

अवतारया। मेरी जोत अडोल, ना कोई डुलावे। मेरी जोत अडोल, सचखण्ड समाए। मेरी जोत अडोल, जीव जन्त तराए। मेरी जोत अडोल, विच सृष्ट दे आए। मेरी जोत अडोल, जगत दा खै कराए। मेरी जोत अडोल, कलू दा काल कराए। मेरी जोत अडोल, सतिजुग सति सति लाए। मेरी जोत अडोल, सोहँ शब्द जै जै कार कराए। मेरी जोत अडोल, जीव नूं ज्ञान दुआए। मेरी जोत अडोल, निजानंद वखाए। मेरी जोत अडोल, गर्भ तों बाहर कढाए। मेरी जोत अडोल, जन्म मरन दे फंद कटाए। मेरी जोत अडोल, सिक्खां नूं सरनी लाए। मेरी जोत अडोल, कोए ना तोल तुलाए। मेरी जोत अडोल, किसे ना हट्ट विकाए। मेरी जोत अडोल, कोई गुरमुख पाए। मेरी जोत अडोल, हर थाइें समाए। मेरी जोत अडोल, बुझी दीपक फेर जलाए। मेरी जोत अडोल, जोत संग जोत मिलाए। मेरी जोत अडोल, सोहँ शब्द वड्याए। गुर चरनां विच सद सेव कमाईए। गुर चरनां विच सद भुल्ल बख्शाईए। गुर चरनां विच देह रोग गुआईए। गुर चरनां विच नाम पदार्थ पाईए। गुर चरनां विच रसना हरि जस गाईए। गुर चरनां विच भगतिहीण तराईए। गुर चरनां विच मन दी तप्त बुझाईए। गुर चरनां विच आत्म शांत कराईए। गुर चरनां विच सुफल जन्म कराईए। गुर चरनां विच आपणा आप लगाईए। गुर चरनां विच संसा रोग गंवाईए। गुर चरनां विच संगत दी सेव कमाईए। गुर चरनां विच सिर छत्र झुलाईए। गुर चरनां विच दालद दलिद्र गंवाईए। गुर चरनां विच दोए जोड़ सीस झुकाईए। गुर चरनां विच मस्तक धूढ़ लगाईए। गुर चरनां विच सर्ब सुख फल पाईए। गुर चरनां विच सन्तन दी कार कमाईए। गुर सेवा विच सदा चित लाईए। गुर सेवा विच प्रभ रिदे ध्याईए। गुर सेवा विच सोहँ शब्द गुण गाईए। गुर सेवा विच प्रभ दर्शन पाईए। गुर सेवा विच लोभ हँकार गंवाईए। गुर सेवा विच जगत विकार तजाईए। गुर सेवा विच संगत धूढ़ हो जाईए। गुर सेवा विच सीतल चन्न समाईए। गुर सेवा विच पारब्रह्म पाईए। गुर सेवा विच गुर चरनीं चित लाईए। गुर सेवा विच महाराज शेर सिँघ संग समाईए। रैण सारी हरि जस गाया। वाहवा करदयां वक्त सुहाया। होई प्रभात वेला अमृत आया। सुत्ती सृष्ट अनभोल, सिक्खां नूं बाहों पकड़ बहाया । ल्या मक्खण विरोल, कलू विच भगत तराया। महाराज शेर सिँघ आप अडोल, जिस दा तेज सवाया। सोहँ शब्द अनमोल, सिक्खां ने रसना गाया। दित्ता ज्ञान वरोल, अज्ञान अन्धेर गंवाया। कलिजुग आया सर्ब सरूपा। कलिजुग आया आप प्रभ भूपा। कलिजुग आया प्रभ जोत अनूपा। कलिजुग आया महाराज शेर सिँघ स्वच्छ सरूपा। कलिजुग दित्ता तार, सिक्खां नूं दरस दिखा के। कलिजुग दित्ता तार, ईश्र जोत प्रगटा के। कलिजुग दित्ता तार, भुल्लयां नूं चरनीं ला के। कलिजुग दित्ता तार, सोहँ शब्द सुणा के। कलिजुग दित्ता तार, राम कृष्न तों जोत प्रगटा के। कलिजुग दित्ता तार, निहकलंक

आप अख्वा के। कलिजुग दित्ता तार, घर सिक्खां दे आ के। कलिजुग दित्ता तार, संगत नूं कोल बहा के। कलिजुग दित्ता तार, विस्मादे विस्माद समा के। कलिजुग दित्ता तार, रंगण नाम चढ़ा के। कलिजुग दित्ता तार, संगत भैण भ्रा बणा के। कलिजुग दित्ता तार, विषे विकार गंवा के। कलिजुग दित्ता तार, सति धर्म वरता के। कलिजुग दित्ता तार, निमाणयां माण रखा के। कलिजुग दित्ता तार, शरन पड़े दी लाज रखा के। कलिजुग दित्ता तार, भगतन सिर हत्थ टिका के। दासां दित्ता तार, महाराज आप वड्या के। सिक्खां नूं दित्ता तार, ज्ञान जोत जगा के। पतित लए उधार, चरनीं डिग्गण आ के। धोवे गनका मैल, आपणा नाम जपा के। साचा एह दरबार, वर मंगो आ के। महाराज शेर सिँघ प्रगट आप बलवान, चल्लया सतिजुग ला के।

❋ २१ विसाख २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❋

सतिजुग लाया आण, प्रगट कृष्न मुरारी। सतिजुग लाया आण, निरँजण जोत अपारी। सतिजुग लाया आण, जोत कल विच धारी। सतिजुग लाया आण, हउमे कट्ट बिमारी। सतिजुग लाया आण, सोहँ कीती कारी। सतिजुग लाया आण, भगतां दी पैज संवारी। सतिजुग लाया आण, दर सखियां मंगलाचारी। सतिजुग लाया आण, सँघार वड्डे हँकारी। सतिजुग लाया आण, चार वरन इक्क समारी। सतिजुग लाया आण, ब्रह्म सरूप सभ जीव चितारी। सतिजुग लाया आण, जीव जोत अधारी। सतिजुग लाया आण, महाराज शेर सिँघ निरँकारी। प्रभ दर्शन सर्ब सुख पाए। प्रभ दर्शन मन दी मैल गंवाए। प्रभ दर्शन जीव जन्त तराए। प्रभ दर्शन विच नर्क ना जाए। प्रभ दर्शन गुर पुरी सिद्धाए। प्रभ दर्शन मन धीर धराए। प्रभ दर्शन यति सति रहि जाए। प्रभ दर्शन काम क्रोध ना सताए। प्रभ दर्शन लोभ हँकार गंवाए। प्रभ दर्शन सच सुच्च वरताए। प्रभ दर्शन जम काल ना खाए। प्रभ दर्शन गुर सेव कमाए। प्रभ दर्शन मदि मास तजाए। प्रभ दर्शन चरन कँवल समाए। प्रभ दर्शन वांग चन्दन महिकाए। प्रभ दर्शन अचरज विच अचरज मिलाए। प्रभ दर्शन विस्मादे विस्माद समाए। प्रभ दर्शन घर साचा पाए। प्रभ दर्शन फिर जगत ना आए। प्रभ दर्शन जोती जोत समाए। प्रभ दर्शन सोहँ शब्द पाए। प्रभ दर्शन महाराज शेर सिँघ चरनीं लाए। चरन कँवल प्रभ राखो प्रीत। गुर पूरा है ठांडा सीत। सदा अडोल सदा अतीत। सोहँ शब्द जगत है जीत। झूठा संसार बालू की भीत। महाराज शेर सिँघ पतित पुनीत। पतित पावण भय भंजन। हँकार निवारन है भव खण्डन। जोत सरूप त्रैलोकी नंदन। गुरसिख दान दरस गुर मंगण। गुर पूरा सभ तोड़े बंधन। मेरा सिख कल

विच प्रभास जिउँ चन्दन। मैं हां कृष्न मुरार मनोहर मुकंदन। मैं हां सद कृपाल भगत भय भंजन। सोहँ शब्द दे के ज्ञान, गुरसिक्खां मन चाढ़ी रंगण। प्रगटी जोत आप भगवान, महाराज शेर सिँघ सद रंग बिरंगन। सतिजुग धरया नाउँ, जोत रूप वटाया। सतिजुग धरया नाउँ, निहकलंक अख्वाया। सतिजुग धरया नाउँ, सोहँ शब्द सुणाया। सतिजुग धरया नाउँ, ब्रह्म दा भेत खुल्हाया। सतिजुग धरया नाउँ, खण्ड ब्रह्मण्ड अलाया। सतिजुग धरया नाउँ, जुग चौथा उलटाया। सतिजुग धरया नाउँ, प्रभ ने तेज वधाया। सतिजुग धरया नाउँ, मदि मास सभ नष्ट कराया। सतिजुग धरया नाउँ, कुम्भी नर्क नूं उन्हां नूं पाया । सतिजुग धरया नाउँ, जिन्हां ने रसना लाया। सतिजुग धरया नाउँ, आपणा आप छुपाया। सतिजुग धरया नाउँ, बेमुखां तों मुख भवाया। सतिजुग धरया नाउँ, गुरसिक्खां नूं दरस दिखाया। सतिजुग धरया नाउँ, साध संगत गुर विच बहाया। सतिजुग धरया नाउँ, आपणा आप उपाया। सतिगुर सच्ची नाउ, जिस ने पार लँघाया। सतिजुग धरया नाउँ, सर्ब दा माण गंवाया। सतिजुग धरया नाउँ, चार वरन कर इक्क बहाया। सतिजुग धरया नाउँ, राउ रंक इक्क समाया । सतिजुग धरया नाउँ, उलटे धन्दे सृष्ट लगाया। सतिजुग धरया नाउँ, भगतन दया कमाया । सतिजुग धरया नाउँ, ईश्र आपणा नाम जपाया। सतिजुग धरया नाउँ, मातलोक सचखण्ड बणाया । सतिजुग धरया नाउँ, जिथ्थे करोड़ तेतीस है आया। सतिजुग धरया नाउँ, देवियां दर ते सीस झुकाया। सतिजुग धरया नाउँ, आपणा आप तजाया। सतिजुग धरया नाउँ, छड देह जोत रूप समाया। सतिजुग धरया नाउँ, घनकपुरी नूं भाग लगाया । सतिजुग धरया नाउँ, जिथ्थे गुर धाम बणाया। सतिजुग धरया नाउँ, सरबत्त तीर्थां माण गंवाया। सतिजुग धरया नाउँ, सरबत्त तीर्थ नहर बणाया। सतिजुग धरया नाउँ, कलू नूं ख़ाक रलाया। सतिजुग धरया नाउँ, सतिगुर धाम रचाया। सतिजुग धरया नाउँ, महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। सतिजुग धरया नाउँ, जोतों जोत प्रगटाया। सतिजुग धरया नाउँ, मनी सिँघ नूं माण दवाया। सतिजुग धरया नाउँ, सतिगुर तख्त बहाया। सतिजुग धरया नाउँ, बुग्घी थान सुहाया। सतिजुग धरया नाउँ, पूरन परमेश्वर आया। सतिजुग धरया नाउँ, गहर गम्भीर अख्वाया। सतिजुग धरया नाउँ, रिद्ध सिद्ध नूं चरनीं लाया। सतिजुग धरया नाउँ, राणयां महाराणयां दा सीस झुकाया। सतिजुग धरया नाउँ, बाणी बोध सिक्खाया। सतिजुग धरया नाउँ, आपणा आप प्रगटाया। सतिजुग धरया नाउँ, सोहँ शब्द गुर डंक वजाया। सतिजुग धरया नाउँ, निर्भय अख्वाया। सतिजुग धरया नाउँ, निरवैर समाया। सतिजुग धरया नाउँ, सिक्खां दा दु:ख गंवाया। सतिजुग धरया नाउँ, बन्दी छोड़ अख्वाया। सतिजुग धरया नाउँ, गलों जम फास कटाया। सतिजुग धरया नाउँ, अंडज जेरज सिख ना आया। सतिजुग धरया नाउँ, उत्भुज सेतज बाहर कढाया। सतिजुग धरया नाउँ, सिक्खां दी

लाज रखाया। सतिजुग धरया नाउँ, विच सिख समाया। सतिजुग धरया नाउँ, सिर ते छत्र झुलाया। सतिजुग धरया नाउँ, झूला झूल सृष्ट हलाया। सतिजुग धरया नाउँ, चार कुन्ट हाहाकार मचाया। सतिजुग धरया नाउँ, सोहँ शब्द गुर तीर चलाया। सतिजुग धरया नाउँ, जिस एह माण गंवाया। सतिजुग धरया नाउँ, महाराज शेर सिँघ नज़री आया। कलिजुग तारे सिख, आपणी शरनी ला के। कलिजुग तारे सिख, आपणा नाम जपा के। कलिजुग तारे सिख, गुर संगत माण दवा के। कलिजुग तारे सिख, सोहँ शब्द सुणा के। कलिजुग तारे सिख, महाराज शेर सिँघ नाम रखा के। सतिजुग हो मेहरवान, आपणा आप उपाया। सतिजुग हो मेहरवान, जगत जोत जगाया। सतिजुग हो मेहरवान, घर भगतन दे आया। सतिजुग हो मेहरवान, सभ जगत भुलाया। सतिजुग हो मेहरवान, सोहँ शब्द सुणाया। सतिजुग हो मेहरवान, चार कुन्ट जै जैकार कराया। सतिजुग हो मेहरवान, आपणा राह बताया। कलिजुग हो मेहरवान, बेड़े नूं बन्ने लाया। कलिजुग हो मेहरवान, सिख दे विच समाया। कलिजुग हो मेहरवान, दु:ख रोग गंवाया। कलिजुग हो मेहरवान, मसाण पवन जलाया। कलिजुग हो मेहरवान, कन्यां ते दया कमाया। कलिजुग हो मेहरवान, घर ठांडे आया। कलिजुग हो मेहरवान, निहकलंक अखवाया। कलिजुग हो मेहरवान, महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। होए निमाणा दर ते आए, गुर चरना विच सीस झुकाए। होए निमाणा दर ते आए, वांग भीलणी माण दवाए। होए निमाणा दर ते आए, सती अहल्या चरन छुहाए। होए निमाणा दर ते आए, वांग द्रोपती दरस दिखाए। होए निमाणा दर ते आए, लाज कन्या जगत रखाए। होए निमाणा दर ते आए, ठाकर सिँघ दी बिन्द तराए। होए निमाणा दर ते आए, कन्यां सतिवन्ती सति रखाए। होए निमाणा दर ते आए, झूठे जगत दी प्रीत तजाए। होए निमाणा दर ते आए, दे ज्ञान गुर दरस दिखाए। होए निमाणा दर ते आए, सुक्के काष्ट प्रभ फल लगाए। होए निमाणा दर ते आए, कार खेल नष्ट हो जाए। होए निमाणा दर ते आए, देह सपुत्री कंचन कराए। होए निमाणा दर ते आए, जन्म जन्म दे दु:ख गंवाए। होए निमाणा दर ते आए, सर्ब सूख घर मांहि पाए। होए निमाणा दर ते आए, अन्ध कूप प्रभ होए सहाए। होए निमाणा दर ते आए, जगत जलन्दा गुर दरस ठराए। होए निमाणा दर ते आए, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाए। होए निमाणा दर ते आए, गुर पूरे सिर छत्र झुलाए। होए निमाणा दर ते आए, वांग चन्द्रमा सीतल हो जाए। होए निमाणा दर ते आए, आप तरे कुटम्ब तराए। होए निमाणा दर ते आए, महाराज शेर सिँघ बणत बणाए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, बुझी दीपक दए जगाए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, सचखण्ड प्रभ दए वखाए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, जम जंदार कोई नेड़ ना आए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, विच चुरासी गेड़ ना खाए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, दरगाह साची विच पठाए। जे ना भुल्ले मेरा नाम,

बाहों पकड़ दे तराए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, निझ घर बैठा ताड़ी लाए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, ब्रह्म सरूप विच समाए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, जोत ज्ञान दे जगाए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, घर साचे दी सोझी पाए। जे ना भुल्ले मेरा नाम, अमृत बूंद प्रभ मुख चवाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, जोत अडोल डगमगाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, अन्त काल प्रभ दरस दिखाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, वांग अजामल आप तराए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, वांग सैण आ लाज रखाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, जोत सरूप आ दरस दिखाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, मदि मास ना रसना लाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, काया कोट विकार गंवाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, एकँकार प्रभ होए सहाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, गुरसिक्खां संग रल जाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, साध संगत सभ दया कमाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, आदि अन्त प्रभ दए बुझाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, झूठी देह विच सच वखाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, विच्चों सतिगुर पूरा पाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, महाराज शेर सिँघ रिदे समाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, अनहद शब्द मन वजाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, ब्रह्म ज्ञान प्रभ दे बुझाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, जीव जुगत दी सोझी पाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, जोत निरँजण आप दरसाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, आवण जावण दा पन्ध मुकाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, अन्त जोती जोत रल जाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, गर्भवास फेर ना आए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, टुट्टी गंढ्ढ गंढु वखाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, सरन पड़े दी लाज रखाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, साध संगत गुर माण दिवाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाए। जे ना भुल्ले मेरा नाउँ, महाराज शेर सिँघ कँवल खुल्हाए।

❋ २२ विसाख २००७ बिक्रमी ❋

सोहँ शब्द प्रभ नाम चितारे। सोहँ शब्द प्रभ जगत उधारे। सोहँ शब्द दरस राम अवतारे। सोहँ शब्द कृष्न मुरारे। सोहँ शब्द सभ सिक्खन तारे। सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ निमस्कारे। सोहँ शब्द जम दूत ना मारे। सोहँ शब्द प्रभ चरन दरसारे। सोहँ शब्द होए ज्ञान उज्जयारे। सोहँ शब्द रसना जीव उचारे। सोहँ शब्द पेखे सच दुआरे। सोहँ शब्द कर पार उतारे। सोहँ शब्द सदा निमस्कारे। सोहँ शब्द कोट अपराधी तारे। सोहँ शब्द जीव बैकुण्ठ सिधारे। सोहँ शब्द जपे जगत न्यारे। सोहँ शब्द मुकंद मुरारे। सोहँ शब्द जगदीश्र तारे। सोहँ शब्द जोती जोत समारे। सोहँ

शब्द जम डण्ड ना मारे। सोहँ शब्द सतिजुग पैज संवारे। सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ रसना उचारे। सोहँ शब्द गुर ज्ञान दवाया। सोहँ शब्द गुर सतिजुग सुणाया। सोहँ शब्द भगतन दान दिवाया। सोहँ शब्द जीवण मुक्त कराया। सोहँ शब्द अज्ञान अन्धेर गंवाया। सोहँ शब्द जगत तराया। सोहँ शब्द चुरासी गेड़ मुकाया। सोहँ शब्द सतिगुर संग मिलाया। सोहँ शब्द अनहद राग सुणाया । सोहँ शब्द गर्भ जून तजाया । सोहँ शब्द भगतन संग रलाया। सोहँ शब्द जिन रसना गाया। सोहँ शब्द नर नरायण दरसाया। सोहँ शब्द सतिजुग जहाज़ बणाया। सोहँ शब्द गुरमुखां नूं पार लँघाया। सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ मिलाया। सोहँ शब्द जीव दा भेत खुल्हाया। सोहँ शब्द जोत सरूप दरसाया। सोहँ शब्द कलिजुग डंक वजाया । सोहँ शब्द सद उत्तम रखाया। सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ रसना गाया। जपो सोहँ मन आत्म सूख। जपो सोहँ ना ब्यापे दूख। जपो सोहँ मिले प्रभ भूप। जपो सोहँ पेखो दरस अनूप। जपो सोहँ प्रगटे जोत सरूप। जपो सोहँ मिले महाराज शेर सिँघ विच अन्ध कूप । सोहँ शब्द सुरत जो लाए । सोहँ शब्द गुर दरस दिखाए। सोहँ शब्द सतिजुग मन्त्र वजाए। सोहँ शब्द गुर निरंतर वजाए। सोहँ शब्द सभ भस्मन्त्र हो जाए । सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ जुगा जुगन्तर रहि जाए । सोहँ शब्द जपाया आण, ईश्र जोत प्रगटा के। सोहँ शब्द जपाया आण, कल दा काल करा के। सोहँ शब्द जपाया आण, सिक्खन विच आसण ला के । सोहँ शब्द जपाया आण, संगत गिरद बहा के। सोहँ शब्द जपाया आण, सतिजुग सच्चा ला के। सोहँ शब्द जपाया आण, नाम आपणा रसना जपा के। सोहँ शब्द जपाया आण, प्रभ ने भेस वटा के। सोहँ शब्द जपाया आण, देह विच जोत जगा के। सोहँ शब्द जपाया आण, अमृत मुख चवा के। सोहँ शब्द जपाया आण, सच सुच्च वरता के। सोहँ शब्द जपाया आण, चार कुन्ट जै जै जैकार करा के। सोहँ शब्द जपाया आण, मात पताल आकाश थिर रहा के। सोहँ शब्द जपाया आण, बाशक दी सेज तजा के। सोहँ शब्द जपाया आण, बैकुण्ठ धाम चों आ के । सोहँ शब्द जपाया आण, कृष्न भेस वटा के । सोहँ शब्द जपाया आण, निहकलंक अख्वा के। सोहँ शब्द जपाया आण, पल्ला जगत फिरा के। सोहँ शब्द जपाया आण, बेमुखां तों मुख छुपा के। सोहँ शब्द जपाया आण, विछड़े चरनीं ला के। सोहँ शब्द जपाया आण, पतित पापी तरा के। सोहँ शब्द जपाया आण, राम रघुनाथ अख्वा के। सोहँ शब्द जपाया आण, महाराज शेर सिँघ नाम रखा के। सोहँ शब्द सतिजुग बबान। सोहँ शब्द देवे गुणी निधान। सोहँ शब्द होवे भगत परवान। सोहँ शब्द सतिजुग दा ज्ञान । सोहँ शब्द घर ठांडा पाण। सोहँ शब्द मेले भगवान। सोहँ शब्द भगत दीबाण। सोहँ शब्द प्रभ सरूप पछाण । जगत सुहाया सीस, केस चवर झुलाए। जगत सुहाया सीस, चरनीं सेव कमाए।

९७
०१

जगत सुहाया सीस, धूढ़ गुर चरन लगाए । जगत सुहाया सीस, प्रभ दी सेव कमाए। जगत सुहाया सीस, जगत नाम तराए । जगत सुहाया सीस, दुष्टन अग्न जलाए। जगत तराया सीस, गुर दर्शन पाए। जगत तराया सीस, महाराज शेर सिँघ पैज रखाए।

❊ २४ विसाख २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जोत सरूप आपणा आप वखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, नाम आपणा निरँकार रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कुदरत रूप जगत उपाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, लक्ख चुरासी जीव उपाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, मात पताल आकाश समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, हो मेहरवान जगत तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सतिजुग सति सति वरताया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, त्रेता भयो राम रावण दा नास कराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, द्वापर कृष्न मुरार दुर्योध्न दा माण गंवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग अन्ध घोर राह चलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, ईसा मूसा जगत उपाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, संग चार यारां मुहम्मद उपाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जगत उधार नानक निरँकार अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, नानक अंगद नूं अंग लगाया । पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ता जोत अधार लहणे दा लहणा पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कर सेवा अपार, अमरदास निथावां तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गए बेदी सोढ़ीआं माण दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कुक्ख भानी दी नूं सुफल कराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, हरिमन्दर विच्चों अर्जन हरि प्रभ पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बाणी बोहथ गुर अर्जन तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाबली हरिगोबिन्द अख्वाया । पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, हरिराए घर घर शाह हरि जस गाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, हरिकृष्न बाल नूं माण दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ता माण तेग फ़बहादर मक्खण दा जिन जहाज़ तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ता सीस आ वार धर्म दा नाम रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दसवीं जोत गोबिन्द सिँघ प्रगटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, पटने उपजे नूर अनन्दपुर खेल रचाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, छड्ड हिमाचल देस दक्खण जा तराया । पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, छड्डी देह अपार नंदेड़ धाम बणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग होया अंध्यार जगत ने नाम भुलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कोई ना जाणे नाम प्रभ दा नाम भुलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, हो के निहकलंक कल आप उलटाया। पारब्रह्म

प्रभ खेल रचाया, विष्नूं होए भगवान शेर सिँघ नाम रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, छड्डी देह अपार जोत रूप खेल रचाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, छब्बी पोह दो हज़ार विच जोती जोत समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, पंज जेठ वीह सौ इक्क आपणी जोत प्रगटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जोत अधार आप आपणा रंग वखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, पैज रक्खण आप भगतन दी सोहँ शब्द सुणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कर जुग चौथे दा नास सतिजुग सति सति वरताया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जोत जगाई अपार, शेर सिँघ निहकलंक अख्वाया । पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जुगो जुग एह कार भगतन नूं आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, हो आप कृपाल ध्रू दर बहाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रगटी जोत अपार प्रहलाद दी लाज रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बावन रूप धार बल पाताले पहुंचाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, लज्जया रक्खी अंबरीक चक्र सुदर्शन बाण चलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ती वड्याई जनक नाम संग पाप तुलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, हरी चन्द गंवाया माण, तारा दा माण वधाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, छड्ड दुर्जोधन आहार, बिदर दे भोग लगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, छड्ड सिँघासण आप सुदामे नूं सीस निवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आ के गुण निधान जैदेउ लेख लिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गाय दित्ती ज्विाल, नामे दा छप्पर छाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सैण रूप हरि हो राणे दी सेव कमाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गुरमुख बेणी भगत चरन आ संग तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ता ब्रह्म ज्ञान कबीर सचखण्ड सिद्धाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, द्रोपती रक्खी लाज जिस ने विच सभा दे ध्याया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, अहल्या दित्ती तार सिल संग चरन छुहाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, उत्तम दे ज्ञान रविदास चुमार तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गनका दित्ती तार नाम निरँजण गाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, अजामल उतरे पार नाउँ नरायण रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, पूतना दित्ती पछाड़, मोहण मुम्मे जिस कृष्न नूं पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कर के सच ध्यान सदना आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दरसन दित्ता आण त्रिलोचन भगत तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, मन नूं वैराग फरीद हरि जस गाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, करे खेल अपार किसे ने भेद ना पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे के दरस अपार, भगतां नूं आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कब है जोत सरूप कबे देह पल्टाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आप है जोत आधार, जीव दे विच समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाराज शेर सिँघ अपर अपार, किसे भेद ना पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गंवाया कल दा माण आपणा आप प्रगटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जामा ल्या धार घनकपुरी नूं भाग लगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, विच अवस्था

बाल मनी सिँघ नूं दरस दिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, मैं हां जगत उधार निहकलंक हो आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे जगत उज्जयार सोहँ शब्द सुणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे जीव उधार रसना महाराज शेर सिँघ गाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे भवजल पार जिन्हां प्रभ दर्शन पाया । पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कोए ना जाणे सार तरनतारन समरथ घर ठांडे आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कल रक्खे पैज आण सिक्खां नूं माण दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गंवाया माण ब्रह्मा पाल सिँघ माण दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, तज्या थान ध्रू सवरन सीस झुकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कोई ना जाणे भेउ दीपक चार जगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, पहले जगया अमर अमरापद पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सत्त जेठ जगया सवरन दर अग्गे बहाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गया प्रीतम पूत गुरपुरी सिधाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होई सुफली कुक्ख रणजीत कौर पुत्त भेंट चढ़ाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दीपक जगाए चार पंज चेत नूं हुक्म लिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कोई ना जाणे भेव महाराज शेर सिँघ करे कराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ता संगत माण जिन्हां हरि जस गाया । पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आए दर परवान जिन्हां ने सीस झुकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग दित्ता तार जिन्हां अमृत मुख चुआया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रगटे आपणी जोत आपणा आप वखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे के शब्द ज्ञान जीवां नूं पार लँघाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे जगत हाहाकार सिक्खां घर जै जै जैकार कराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाराज शेर सिँघ प्रगटे करतार नर दा जामा पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सत लाए सुफैद जगत दा रथ चलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, चिट्टा असव असवार महाराज शेर सिँघ नज़री आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, विछड़े लए मिलाए कलिजुग जन्म दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ते जगत आ तार जिन्हां प्रभ दरस दिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, एह कलिजुग भगत अपार जिन्हां दा नाम लिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, मनी सिँघ प्रभ जोत आधार पदवी सतिगुर पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, मोता देह उज्जयार भृथरी जन्म दवाया। सोहँ दे के जोत आधार, प्रभ संग जोत जगाया। दे दरस अपार दीपक दे पल्टाया। होवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म दा भेत खुल्हाया। तरन सिख अपार, जिन्हां आ दर्शन पाया। सच्चा धाम विचार, जिथ्थे गुर डेरा लाया। जो आए नेहचा धार, प्रभ भाग लगाया। मोता छड्ड नाम भगवान सिँघ नाम रखाया। कोई ना जाणे भेव, महाराज शेर सिँघ देह विच समाया। गुरसिक्खां दे बुझाए, सिर उत्ते हत्थ टिकाया। सो जन उधरन पार, जिन्हां आ दर्शन पाया। ईश्वर दित्ता तार, भगत भगवान बणाया। ऊँचा होवे धाम, कल्सीं माण दवाया। पूरब कर विचार, सतिगुर बचन लिखाया। प्रभ

है जोत आधार, ना डरे डराया। होए जगत उज्जयार, सुत नूं माण दिवाया। महाराज शेर सिँघ पूरन अवतार, जिस एह खेल रचाया।

पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जामे बहत्तर भगत जिन्हां महाराज शेर सिँघ दा नाम ध्याया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, उपाए विच जगत, चरन कँवल में सीस झुकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ता माण बहौल सिँघ जिस ने प्रभ सीस उठाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जगी जोत अपार माहणा सिँघ मन मांहि पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, चढ़या रंग अपार, रंगा सिँघ नाम ध्याया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बुद्ध सिँघ दित्ता तार, तन मन धन गुरचरन लगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जिथ्थे गया हरि, बाले चक्क माण दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जिथ्थे गया हरि, ओथे गुर धाम बणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, ना जाणी प्रभ दी सार, ज्ञानी नूं परे हटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रगटी जोत नज़र ना आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, भगत उधारन भेस वटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, नौं खण्ड पृथ्मी चरन लगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, चतुर्भुज जगत में आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कृष्न घनईआ शेर सिँघ अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, मुकंद मनोहर नज़री आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कँवल नैण सिर मुकट टिकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सुंदर कुण्डल मुकट बैन निहकलंक अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, रथ अग्न कल जलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सोहँ शब्द गुर नाम दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सिख उधारन सिख देह समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बिन चक्र चिहन ना नज़री आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, लै नर अवतार कलिजुग जीव तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ते पतित उधार जिन्हां चरन सीस निवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जगत ना आए हार जिन्हां महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ते भगत उचार जिन्हां गुर नाम लिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग दित्ता तार जिन्हां प्रभ दरस दिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, धृग जीवण संसार जिन्हां गुर दरस ना पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गल पापां पाया हार जिन्हां गुर तों मुख छुपाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दरगाह आवे हार, निन्दकां सिर खेह पवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, किसे ना पाई सार, झूल झूल के जगत हिलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बैठ आप अडोल जगत नूं धक्का लाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, छड्डी देह अपार जगत नूं ख़ाक रुलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया। गुरसिक्खां पाई सार, जिन्हां महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे आप अभेद विच वरभंड समाया। पारब्रह्म

प्रभ खेल रचाया, दीप लोअ आकाश पाताल छिन मांहि उपाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कुदरत रूप सृष्ट विच पाई माया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे के ब्रह्म ज्ञान सिक्खां दी धीर धराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, छड्ड आकाश पाताल डेरा मात लाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, देवे दरगाह माण जिन्हां गुर विच बहाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, एह नब्ज ना चले चाल सिख दे विच समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बेमुखां दित्ती हार, जिन्हां गुर चरन ना लाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग आया अवतार जीआं ने दरस ना पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बिरथा गंवाया जन्म सुत्या रैण विहाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, देवे ब्रह्म ज्ञान जगत पल्ला फिराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रगट होए भगवान नहीं ऊँ भेव लुकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बैठा जोत आधार जगत जोत जगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, किया जोत आकार कलिजुग पाई माया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, मेरे भगतां होवे निमस्कार, महाराज शेर सिँघ जिन सिर हत्थ टिकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, तारे भगत आप जोत संग जोत मिलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ता जन्म सवार गर्भ चों बाहर कढाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे ना अन्त आकार, जोत संग जोत मिलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, पूरन जोत आप जोत दे विच मिलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रभ सागर गहर गम्भीर जीव इक्क बूंद समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, मात गर्भ दे विच उलटा बिरछ लगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सोहँ शब्द दी दीबाण सिक्खां नूं आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाराज शेर सिँघ कृष्न भगवान, जुग उलटावण आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे के चरन ध्यान, माणा सिँघ तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कर के बचन करतार, पाल सिँघ जस सुणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रगटे आप भगवान, जामा घनक पुरी पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, वजाई प्रेम सितार, हिरदे धुन वजाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सुत्ता दित्ता तार, हो के कृष्न दरस दिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आ के घर बार, जोत ललाट जगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ता सिख नूं माण, दिनो दिन दूण सवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, पाई ईश्र सार, आ घनकपुरी सीस निवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे के दरस अपार, सिख नूं सिख बणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे के आपणा नाम, मदि मास परे हटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाराज शेर सिँघ होए दयाल, सिक्खां नूं सरनी लाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग जामा धार, जीआं नूं डन्न लगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जीव भुल्ला मुग्ध गंवार, मदि मास आहार बणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दरगह दित्ती हार, प्रेत जून लिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, भुल्ला गुर का नाउँ, जिन्हां एह रसनी लाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, चले मन विकार, जिन्हां एह विष्टा खाया। पारब्रह्म प्रभ खेल

रचाया, कोई ना देवे तार, जिन्हां एह कर्म कमाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ती कलिजुग हार, जिस एह कर्म कमाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सतिजुग खेल अपार, सोहँ शब्द सुणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां मेरा नाम ध्याया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आवे आत्म शांत, निजानंद निज मांहि पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जगाए जोत अपार, जीव दे विच समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कोई ना पाए सार, अज्ञान अन्धेर रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, उहनां आवे सार, जिन्हां सिर हत्थ टिकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सिक्खां होई विचार जिन्हां गुर दया कमाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आ के विच संसार, सिक्खां दी लाज रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कराए सेव अपार, केसां चवर कराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, देवियां कन्या ना होण ख्वार, जिन्हां महाराज शेर सिँघ पूरन परमेश्वर पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कट्टे दु:ख अपार, हउमे मैल गंवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, थित्त वार ना लए विचार, संगत विच समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, लगावे भोग आहार, जिस में थाल लगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे काया सीत, जिन गुरप्रसाद है खाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग जामा धार, महाराज शेर सिँघ आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बन्दी तोड़ जगत अख्वाया । पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जामा धार गुर धाम सचखण्ड बणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आया जग भतार, कन्त ने भेस वटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आए चल दरबार, गल विच पल्ला पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया देवे जीव उधार जिन्हां ए चरनीं सीस निवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गंवाए काया विकार, रोगां दा नास कराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आए दर परवान, जिन्हां रल मंगल गाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, मिल्या पुरख अपार, जिन्हां मन दा भरम मिटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, उन्हां लए प्रभ सार, जिन्हां लोक लाज नूं परे हटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जगत चल्लया हार सिक्खां नूं आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, झूठी जगत प्रीत, सुख गुर चरनीं आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कीता देह प्रकाश, सिख दे विच समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, भगत उधारन आप, निहकलंक हो आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाराज शेर सिँघ ल्या अवतार, जगत ते पाई माया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कर किरपा देह अनमोल दीपक जोत जगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बिन बत्ती बिन तेल एक रंग सवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रभ दी जोत अडोल, जगत में जाए जलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया कर के कर्म विचार, गुरसिक्खां नूं पकड़ तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग जीव होए पलीत, रसना मदि मास लगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सच भूमिका जाण भूपत भूप चरन टिकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, करनहार समरथ, कल दा अन्त कराया। पारब्रह्म प्रभ

खेल रचाया, दे के सोहँ ज्ञान जिन्हां नूं आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, धन्न जणेंदी मां जिन पूत गुर चरनीं लाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जगत सुंञे घर काउँ, जिन्हां गुर तों मुख भवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दरगाह मिले ना थाउँ, चुरासी गेड़ है पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जन्मे मरे मर जन्मे बिन गुर किसे ना पार लँघाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, भोगावे घोगढ़ जून निन्दकां मुख विष्टा पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग हो कृपाल प्रभ जोत प्रगटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, धरनी धर नर सिँघ नरायण आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, देवे जिस नूं दान सोहँ रसना गाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बुझी जोत जगाए अज्ञान अन्धेर गंवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जपा के आपणा नाउँ ज्ञान गोझ उठाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दित्ता खोल्ह किवाड़, वाजा पवण वजाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, अनहद वजाई धुन, दसवां द्वार खुल्हाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, झिरना झिरे अपार अमृत बूंद चुआया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, वरसे किरपा धार, नाभ कँवल में पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे जीव उधार गुर ठांडा निज मांहि पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, वेखे जोत अपार देह विच जगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, भगत करे प्रकाश कर्म ललाट लिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गंवाए मनों विकार, ब्रह्म रूप दरसाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, हो के जीव उधार, जीव दे विच समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आप वेखे खेल अपार, किसे ना नज़री आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग देवे ज्ञान, सोहँ शब्द सुणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सतिजुग लावे आण शेर सिँघ नाम धराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, अछल छलन छल आप कल मंहि आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आप एह जोत अधार किसे ना भेव पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, देवे गरुड़ आ माण उप्पर चरन टिकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, चरनोधक बूंद अपार मातलोक ल्याया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, एक बूंद प्रवाह गंगा नीर वहाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, अमृत अगाह देह दा रोग गंवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग जामा धार, सिक्खां नूं आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कर किरपा अपार अमृत मुख चुलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे आत्मा शांत देह रोग गंवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कोट जोगीशर मंगण किसे एह हत्थ ना आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, तेतीस करोड़ देवता आए गल विच पल्ला पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, अमृत गुर बबाण बरखे आप रघुराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आया सुफल जहान जिन महाराज शेर सिँघ चरनीं सीस निवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सदा रूप अगम्म किसे नज़र ना आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, भगतन हो के थम्म कलिजुग आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, निखुट्ट ना जाण दम, जिन्हां मेरा नाम ध्याया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया,

१०४
०१

गुरसिख है ठांडा चन्द विच आकाश बहाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गुरसिक्खां दित्ता माण बैकुण्ठ धाम पुचाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आप जोत सरूप सिख विच जोत समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे के आप ज्ञान, सोहँ शब्द सुणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे निमाणयां माण राजन नूं तख्तों लाहया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे सच निशान चार वरन कर इक्क बहाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आप ब्रह्म सरूप जीव ब्रह्म सरूप उपाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, माणस जन्म दित्ता हार, जिन्हां गुर तों मुख भवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रगटी जोत अपार सिख देह समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग हो अवतार शेर सिँघ नाम रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सिख कलिजुग चन्दन बेमुख निम्म वांग तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बणाया बैकुण्ठ आ धाम, जिथ्थे आ दरस दिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होए आप कृपाल, निरँजण जोत जग ल्याया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, ना एह जन्मे ना एह मरे बिन नाड़ी विच देह समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, गुर संगत दित्ता माण, जिन्हां हरि जस गाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग आई काण, वाहवा सतिजुग सति सति सति वरताया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, भगत उधारन आप, जामा घनकपुरी विच पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, लए बिरद संभाल सिक्खां सिर छत्र झुलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, करे सेव अपार, सिक्खां सिर चवर झुलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, देवे भगतन माण अन्त काल जम नेड़ ना आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, होवे सदा दयाल सिक्खां नूं दान दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, सोहँ शब्द निधान गुरमुखां पाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे के ब्रह्म ज्ञान, आपणा नाम जपाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आप वडा प्रबीन, भगतां दे वस हो आया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, उपाए आपणा आप, नाउँ निरँकार रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, समरथ पुरख अपार, जिन्हां आ चरन तकाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आप देवे ज्ञान, जगत माया नींद सवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, भगत वछल कृपाल कलिजुग दरस दिखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रगटी जोत मुरार, निहकलंक अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाराज शेर सिँघ सदा मेहरवान सिक्खां दी लाज रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, धन्न सुहावी रैण जिथ्थे रंग बिरंगण गाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, कलिजुग दित्ते तार, नाम मजीठ चढ़ाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, पापां दित्ती हार, सोहँ शब्द चलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, डुब्बदे दित्ते तार, जिन्हां रल मंगल गाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, हो पवण सवार, चार कुन्ट एह डंक वजाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, वांग जल दी धार, पापां जगत रुढ़ाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दे के नाम निधान सिक्खां नूं आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, पतित उधारन आप दकुखां दा डेरा ढाहया । पारब्रह्म प्रभ खेल

रचाया, जोत जगाई अपार कलिजुग काल कराया । पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाराज शेर सिँघ भया अवतार, सोहँ शब्द सुणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, जीव जुगत चलाया राह, सोहँ बाण लगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, बाहों पकड़ लै उठाल, फड़ पूरब जन्म दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, विछड़े वक्त आ राम, तिन्हां नूं जन्म दिवाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, विछड़े वक्त मुरार, जिन्हां नूं चरनीं लाया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, प्रगट हो करतार भगतां नूं आण तराया। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, महाराज शेर सिँघ हो निरवैर, जगत अवतार अख्वाया। ईश्र जोत जगत में आए, जुगो जुग एह खेल रचायो। ईश्र जोत जगत में आए, जुगो जुग भेस वटायो। ईश्र जोत जगत में आए, सरगुण निरगुण मांहि उपायो। ईश्र जोत जगत में आए, पाताल आकाश मात बणायो। ईश्र जोत जगत में आए, आकार दातार ब्रह्मा प्रगटायो। ईश्र जोत जगत में आए, शिव शंकर देह पल्टायो। ईश्र जोत जगत में आए, मोहणी रूप हो शिव भुलायो। ईश्र जोत जगत में आए, जुग प्रमाण पाए मायो। ईश्र जोत जगत में आए, त्रेते राम रघुबंस अख्वायो। ईश्र जोत जगत में आए, दे सखी दान द्वापर जोत प्रगटायो। ईश्र जोत जगत में आए, द्वापर कृष्न मुरार अख्वायो। ईश्र जोत जगत में आए, पा माया सभ जगत भुलायो। ईश्र जोत जगत में आए, कलिजुग कार करन प्रभ बिग्सायो । ईश्र जोत जगत में आए, घनकपुरी नूं भाग लगायो। ईश्र जोत जगत में आए, प्रगट हो निरँकार निहकलंक अख्वायो। ईश्र जोत जगत में आए, महाराज शेर सिँघ नाम धरायो। ईश्र जोत जगत में आए, छड्ड देह प्रभ जोत प्रगटायो। ईश्र जोत जगत में आए, जुगो जुग एह खेल रचायो। ईश्र जोत जगत में आए, लज्जया रक्खण भगत दी नाउँ अनेक रखायो । ईश्र जोत जगत में आए, बाल अवस्था ध्रू तरायो। ईश्र जोत जगत में आए, लज्जया रक्खे प्रहलाद, नर सिँघ नरायण अख्वायो। ईश्र जोत जगत में आए, होए बावन रूप घर जाए बल तरायो। ईश्र जोत जगत में आए, लज्जया रक्खे अंबरीक चक्र सुदर्शन बाण चलायो। ईश्र जोत जगत में आए, दे के नाम ज्ञान जनक भगत तरायो। ईश्र जोत जगत में आए, जोड़ी जोड़ खड़ाउँ हरी चन्द समझायो। ईश्र जोत जगत में आए, भगत बिदर घर भोग लगायो। ईश्र जोत जगत में आए, सुदामा दलिद्री गले लगायो। ईश्र जोत जगत में आए, नामदेउ दे छप्पर छायो। ईश्र जोत जगत में आए, जैदेउ दे लेख लिखायो। ईश्र जोत जगत में आए, गुरमुख बेणी भगत तरायो। ईश्र जोत जगत में आए, रविदास चुमार आ दरस दिखायो। ईश्र जोत जगत में आए, सदना तार कसाई सैण रूप दिखायो। ईश्र जोत जगत में आए, दे के आपणा नाम भगत कबीर तरायो। ईश्र जोत जगत में आए, द्रोपती लज्जया आण रखायो। ईश्र जोत जगत में आए, बिन भगतां किसे दरस ना पायो। ईश्र जोत जगत में आए, हो प्रतक्ख धन्ने

१०६
०१

का भोग लगायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, सो जाणे जिस आप बुझायो । ईश्‍र जोत जगत में आए, भगत त्रलोचन दरस दिखायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, गनका पापण नाम दिवायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, पापण पूतना देह छुडायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, बधक मारे बाण कृष्न गले लगायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, कलिजुग आ के खेल रचायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, ईसा मूसा मुहम्मद उपजायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, दस अवतार इक्क जोत जगायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, आपणा बल प्रभ आप रखायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, जामा धार अवतार शेर सिँघ कहायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, भगत जनां नूं आण तरायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, तार बहौल सिँघ जिन सीस उठायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, तारे सिख गुजर सिँघ सेव कमायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, हो चतुर्भुज आपणा नाम कहायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, सोहँ शब्द नाम दिवायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, ज्ञान जोत माहणा सिँघ विच जगायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, होए कृष्न मुरार पाल सिँघ दरस दिखायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, तारे सभ परिवार जिन गुर सेव कमायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, तारया बुद्ध सिँघ आण बाले चक्क धाम बणायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, करे खेल अपार किसे भेव ना पायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, दित्ता आप आ माण अमर अमरापद पायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, सत्त जेठ सवरन सचखण्ड सिधायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, तज्या धू्र दित्ता उतार सिख दर अग्गे बहायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, कोई ना जाणे सार, महाराज शेर सिँघ शब्द लिखायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, जोत सरूप विच देह समायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, जोत निरँजण विच जगायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, माणस देह दे विच समायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, बिन देह तों निहकलंक अख्वायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, धारे सिख अपार विछड़े चरन लगायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, लज्जया रक्ख प्रभ आप भगतन दी पैज रखायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अख्वायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, देख देह अपार जोत अगम्म जगायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, ऐसा दरस अपार देह डगमगायो । ईश्‍र जोत जगत में आए, विच हो के सिख अडोल, सारा जगत डुलायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, आप बैठ सोहे विच संगत, चार कुन्ट प्रभ अग्न लगायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, बहि के आप अतोल झूठा जगत तुलायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, अन्तकाल कल आण करायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, बाहों पकड़ जन भगत तरायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, सुत्ते सिख अनभोल महाराज शेर सिँघ घर मांहि आयो। ईश्‍र जोत जगत में आए, देवे शब्द अनमोल सोहँ नाम जपायो। ईश्‍र जोत जगत में आए, गुण निधान घर आ सिक्खां दे लेख लिखायो। ईश्‍र जोत जगत में आए,

टुट्टी गंढुणहार प्रभ टुट्टी गंढे, आप भजन सिँघ फेर जिवायो। ईश्र जोत जगत में आए, अमृत बरखा ला भजन दे मुख चवायो। ईश्र जोत जगत में आए, कट्टे हउमे रोग, जान विच जोत जगायो। ईश्र जोत जगत में आए, आप ब्रह्म सरूप सिख ब्रह्म सरूप बणायो। ईश्र जोत जगत में आए, दे के शब्द ज्ञान सोहँ जहाज़ बणायो। ईश्र जोत जगत में आए, कल कीती किरपा अपार, गुरसिक्खां गुर चरन लगायो। ईश्र जोत जगत में आए, होवे अंध्यार कल में भारी गुरसिक्खां मन गुर ज्ञान दिवायो। ईश्र जोत जगत में आए, कलू जीव होए ख्वार गुरमुखां गुर आण तरायो। ईश्र जोत जगत में आए, भगत जनां नूं चरनीं लाया, बेमुखां तों मुख छुपायो। ईश्र जोत जगत में आए, देवे दरस अपार दुःख कलेश गंवायो। ईश्र जोत जगत में आए, दित्ते सिख उधार महाराज शेर सिँघ नाम रखायो। ईश्र जोत जगत में आए, गुरसंगत गुर माण दिवायो। ईश्र जोत जगत में आए, दरगाह होए परवान जिन्हां मेरा हरि जस गायो। ईश्र जोत जगत में आए, तिन्हां विटहु कुरबान जिन्हां गुर चरनीं सीस झुकायो। ईश्र जोत जगत में आए, दे दरस अपार दर आए तरायो। ईश्र जोत जगत में आए, करे खेल अचरज दीपक जोत जगायो। ईश्र जोत जगत में आए, तिन्हां ना मिले ठाउँ जिन्हां सौं के वक्त विहायो। ईश्र जोत जगत में आए, महाराज शेर सिँघ सद मेहरवान तज देह जोत प्रगटायो। ईश्र जोत जगत में आए, सतिजुग सति सति सति वरतायो। ईश्र जोत जगत में आए, आप अखण्ड सच राह बतायो। ईश्र जोत जगत में आए, जगाई जोत अपार शेर सिँघ नाम धरायो। ईश्र जोत जगत में आए, दे के ब्रह्म ज्ञान गुरसिख तरायो। ईश्र जोत जगत में आए, ब्रह्मा विष्न महेष सभ कोल बहायो । ईश्र जोत जगत में आए, तेतीस करोड़ खड़े दर सीस झुकायो। ईश्र जोत जगत में आए, गुरसिक्खां गुर पकड़ चरन लगायो। ईश्र जोत जगत में आए, देवे दरगाह माण गुरसिख बैकुण्ठ सिद्धायो। ईश्र जोत जगत में आए, कर के सेवा अपार जन्म मरन दा फंद मुकायो। ईश्र जोत जगत में आए, देवे सिख आ तार चुरासी गेड़ कटायो। ईश्र जोत जगत में आए, घर आ के देवे माण सिक्खां दी लाज रखायो। ईश्र जोत जगत में आए, कल विच भगत लए पछाण महाराज शेर सिँघ नाम धरायो। ईश्र जोत जगत में आए, कल विच लए अवतार सतिजुग आण लगायो। ईश्र जोत जगत में आए, देवे जीव उधार सोहँ शब्द सुणायो । ईश्र जोत जगत में आए, निमाणयां देवे माण ग़रीबां नूं गले लगायो। ईश्र जोत जगत में आए, हँकारी दित्ते निवार राणयां नूं फड़ तख्तों लाहयो । ईश्र जोत जगत में आए, चार वरन कर इक्क बहायो । ईश्र जोत जगत में आए, आप है ब्रह्म सरूप, जीव ब्रह्म सरूप उपायो। ईश्र जोत जगत में आए, ईश्र जोत सर्ब जीव इक्क रंग समायो। ईश्र जोत जगत में आए, आप एका नाउँ इक्क शब्द सुणायो। ईश्र जोत जगत में आए, दे के

सोहँ ज्ञान, सतिजुग राह बतायो। ईश्र जोत जगत में आए, घर देवे दरस सुजान, बाहों पकड़ गुरसिख आण तरायो। ईश्र जोत जगत में आए, प्रगट होए मुरार, महाराज शेर सिँघ नाम रखायो।

✻ ३१ विसाख २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बिशन कौर दे गृह ✻

लिख्त लेख गुर कलम चलाई। झूठी देह सच बणत बणाई। देह अंध्यार दीपक जोत जगाई। किरपा कर करतार, सरन पड़े दी लाज रखाई। गुरसिख होए अपार, चार जुग भगतन जस गाई। होवे जोत आधार, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाई। आया कल है धार, जिन एह बणत बणाई। दे के दरस सुजान, दक्खां दी ढेरी ढाही। जो आए चल दरबार, इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत सभ नष्ट हो जाई। गुर संगत दित्ता माण, घर घर मिले वधाई। दर आए परवान, पुत्तर दात गुर झोली पाई। अज्ज दिहाढ़ा अपार, गुर पूरे एह दया कमाई। पूरब कर विचार, गुरसिक्खां नूं दात दिवाई। देवे दात अपार, निपुंसक सिख ना जाई। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, पारब्रह्म परमेश्र पाया। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, गंवाया ममता रोग सतिजुग जोत जगाया। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, मानस जन्म अमोल सुफल आण कराया। गुर
१०६ ०१ चरनीं जिन सीस झुकाया, छोडी जगत की प्रीत, सतिगुर सति मनाया। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, तरे आप आपणा कुटम्ब तराया। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, कलिजुग उधरे जीव महाराज शेर सिँघ घर मांहि पाया। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, दरगाह होवे परवान विच्चों माण गंवाया। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, होए सुफल जहान जिन गुर संगत विच बहाया। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, लाह मनों विकार रंग मजीठ चढ़ाया। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, गंवाया मनों विकार सोहँ नाम दिवाया। गुर चरनीं जिन सीस झुकाया, कलिजुग दित्ता तार, जन्म मरन दा गेड़ चुकाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, होवे जोत आधार रसना मदि मास ना लाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, विच चुरासी होए ना ख्वार, गुर साचा एह शब्द सुणाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, मेरा नाम अपार कलिजुग जीव आण तराया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, महाराज शेर सिँघ भगत आधार पैज रक्खण भगत आया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, कोट ब्रह्मण्ड दाता घर में पाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, तुट्ठा आप दातार अमृत मींह बरसाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, अन्त गया सुधार जम डण्ड ना खाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, होया जोत आधार धर्म राए ने मुख भवाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, दित्ता सतिगुर माण संगत दे विच बहाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, गुण निधान घर आ के अन्त

काल दरस दिखाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, दित्ता पार उतार धाम बैकुण्ठ पुचाया। गुर चरनीं जिन सीस निवाया, महाराज शेर सिँघ कर्म विचार जोती जोत मिलाया।

✻ १ जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल पूरन सिँघ दे गृह ✻

गुर संगत मिल हरि जस गाया, छड्ड गगन पाताल विच मात आया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, प्रभ अबिनाशी घर में पाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, जोत सरूप प्रभ नज़री आया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, छड्ड ब्रह्मंड घर ठांडे आया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, जगन्नाथ गोपाल बीठला घर में पाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, मुकंद मनोहर प्रभ नज़री आया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, महासार्थी आ सतिजुग लाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, कलू काल कर सोहँ शब्द सुणाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, देवे माण आप गुर पूरा चरन कँवल दे विच बहाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, ज्ञान जोत हिरदा प्रभ सिँघ जोत जगाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, देवे खोल्ह् किवाड़, अमृत बूंद मुख चुआया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, गुरसिक्खां देवे माण झिरनां निझरों झिराया। गुर
११० ०१ संगत मिल हरि जस गाया, सोहँ जपे नाउँ कँवल मुख खुल्ह्राया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, महाराज शेर सिँघ ११० ०१
जपे नाउँ दसवां द्वार प्रभ दरसाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, सो बूझे जिन शरनी लाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, आपणा भेत ना किसे बताया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, खाणी बाणी गगन पताल रहाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, बैठ अडोल जीव जन्त समाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, मानस जन्म दित्ता रोल गुर पूरे दी सरनी ना आया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, दर आए परवान जिन्हां गुरमुखां गुर नाम ध्याया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, साहिब अडीठ जिस एह खेल रचाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, बैठा स्वच्छ सरूप नहीं ऊँ पर्दा पाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, संसा करे दूर दुःख कलेश दा नास कराया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, पापी अपराधी कीते चूर जिन्हां गुर तों मुख भवाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, कलू काल निहकलंक हो आया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत प्रगटाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, गुर संगत गुर नज़री आया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, सोहँ शब्द गुर ज्ञान दवाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, टुट्टी गंढे आण गुर विछड़यां गुर मेल कराया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, विछड़े जुग चार अन्त कलू प्रभ मेल कराया। गुर संगत मिल हरि

जस गाया, प्रगट जोत आकार वाहवा सतिजुग लाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, ब्रह्मा विष्न महेष दर खड़े सीस झुकाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, कोट ब्रह्मण्ड दाता घर मांहि पाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, संसा कीता दूर भरम भउ चुकाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, चल आओ हज़ूर जिन्हां मन भेख वटाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, प्रभ तोले पूरे तोल नहींउं मुख छुपाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, दे के सोहँ ज्ञान चार वरन उपदेश दिवाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, जोत सरूप आप जगत जोत जलाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, भगत उधार आप गुरसिक्खां सिर हत्थ टिकाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, बेमुखां आई हार, मदि मास अहार बणाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, कलिजुग दित्ते तार जिन्हां प्रभ दया कमाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, सर्ब गंवाए माण आपणा नाम जपाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, आप एकँकार दूसर ना कोए रहाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, होया जगत आकार धुंधूकार जगत जलाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, गुरसिक्खां दित्ता तार जिन्हां प्रभ दरस दिखाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, कलिजुग कीते पार जिन्हां महाराज शेर सिँघ सरन तकाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, छड्ड धाम बैकुण्ठ डेरा मात है लाया । गुर संगत मिल हरि जस गाया, छड्ड बाशक सेज उत्ते पलँघ सुहाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, धरनी धर नर सिँघ नरायण आया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, अचुत्त पारब्रह्म परमेश्र जुगो जुग जोत प्रगटाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, देवण ब्रह्म ज्ञान ईश्र देह विच आया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, जोत सरूप प्रभ अबिनाश सर्ब जीव दे विच समाया। गुर संगत मिल हरि जस गाया, महाराज शेर सिँघ हो मेहरवान, कलिजुग आ माण दवाया। ईश्र आपणा आप उपाया। कुदरत रूप सृष्ट बणाया। जगे जोत निरँजण राया। उनन्जा पवण सिर छत्र झुलाया। ना एह डुल्ले ना किसे डुलाया। चार जुग प्रभ खेल रचाया। नाउँ आप निरँकार रखाया। कँवल नाभ दा मुख खुल्हाया। ब्रह्म सरूप ब्रह्मा उपाया। चार मुख का सरूप लगाया । जगत गुरू एह पाई माया। शिवा दा आण माण गंवाया। मोहणी रूप हो दरस दिखाया। होए राम रघवंस, घर भीलणी भोग लगाया। द्वापर कृष्न मुरार बिदर नूं आण तराया। कलिजुग लै अवतार शेर सिँघ नाम रखाया। प्रगटी जोत अपार, पैज भगतन दी रक्खण आया। सतिजुग लै अवतार, ध्रू प्रहलाद तराया। बल राजे दित्ता माण, विच पाताल पुचाया। अंबरीक दित्ता तार, दुरबाशा शरनी लाया। जनक दित्ता उधार, गुर पुरी सिधाया। द्रोपत होई पार, घनईआ घर मांहि पाया। बिदर पाई सार, जिथ्थे प्रभ भोग लगाया। सुदामे दलिद्री करी विचार, चार पदार्थ दान दिवाया। जुगो जुग प्रभ भेस वटाया कभी जोत सरूप कभी देह पल्टाया। सोई पाए सार, जिन्हां गुर दरस दिखाया।

जैदेउ दित्ता तार, नवां लेख लिखाया। नामे पाई सार, दित्ती गाय ज्विाल दुध्ध नूं भोग लगाया। धन्ने ल्या भाल, पत्थरों भगवान बीठला पाया। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, सो वेखे जिन आप बुझाया। दित्ता बेणी तार, इक्क मन जोत जगाया। कीता संगत प्यार, सैण रूप हरि वटाया। ऐसा प्रभ दातार, जुग जुग जगत भुलाया। भगतां आई विचार, जिन्हां प्रभ दा दर्शन पाया। बेमुख ना पावण सार, ऐवें बिरथा जन्म गंवाया। गुरसिक्खां पाई सार, जिन्हां हरि दरस दिखाया। कलिजुग दित्ता तार, गुर चरनीं जिन सीस झुकाया। सतिजुग लाया पार, सोहँ शब्द सुणाया। हिरदे होवे ज्ञान, ज्ञान गोझ वखाया। माणस जन्म ल्या हार, जिन्हां गुर तों मुख भवाया। महाराज शेर सिँघ भए अवतार, कृष्न मुरार प्रगटाया । रविदास दित्ता तार, होए अधीन प्रभ जस गाया । बाहर मैले चीथड़े, विच लाल रंग गुलाल लगाया। कबीर पाई सार, सचखण्ड सिधाया। अजामल पापी दित्ता तार, नाउँ नरायण मुखों गाया। गनका दित्ती तार, नाम निरँजण नाम दिवाया। पापण पूतना दित्ती पछाड़, कृष्न नूं जिन दुध्ध चुंघाया। बधक दित्ता तार, जिन गुर चरनीं तीर लगाया। प्रगट कृष्न मुरार, निमाणयां नूं गले लगाया। कलिजुग लै अवतार, महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, जोत संग जोत मिलाया। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, सच सुच्च सभ थां वरताया। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, मदि मास दा नास कराया। वाहवा सतिगुर सतिजुग

११२ ०१ लाया, ब्रह्म सरूप ब्रह्म समाया। वाहवा सतिगुर सतिजुग लाया, आप इक्क बहु रंग समाया। प्रगट आपणी जोत, कल ११२ ०१

मांहि दरस दिखाया। दे त्रैकुटी खोल्ह, अनहद शब्द वजाया। जो तिन्ह पाए सार, तिन्हां जम डण्ड नेड़ ना आया। रसना जपे नाउँ, दु:ख कलेश प्रभ नास कराया। अन्त काल प्रभ होए कृपाल दरस दिखाया। गुरसिख विच बबाण गुर पुरी सिधाया। प्रगट हो भगवान सतिजुग राह चलाया। गुरसिक्खां देवे माण, धाम बैकुण्ठ पुचाया । आप है जोत सरूप, सिख विच जोत समाया। प्रभ विस्मादे विस्माद समाया। गुरसिक्खां संग बेमुख तराया। चन्दन पास निम्म महकाया। सोहँ शब्द गुर बाण चलाया। चार कुन्ट जगत जलाया। जोत सरूप पाणी पवण समाया। बैठ आप अडोल, सारा जगत डुलाया। बैठे जीव अणभोल, कलिजुग सिर ते आया। दित्ते जीव आ रोल, निहकलंक जोत प्रगटाया। महाराज शेर सिँघ आप अतोल, सारा जगत तुलाया। गुरसिक्खां दे ज्ञान, आपणा आप बुझाया। कलिजुग हो कृपाल, सिक्खां नूं दरस दिखाया। छड्ड खण्ड ब्रह्मण्ड, सिक्खां विच डेरा लाया। एह धाम अपार, जिथ्थे गुर चरन टिकाया । कट्टे हउमे रोग, दकुखां दा नास कराया। गुण निधान घर आ लेख लिखाया। टुट्टी गंढे आप, समरथ पुरख आप रघुराया। बैठे आप समरथ, प्रभ ने भेस वटाया। प्रभ है अकथ्थ, किसे कथे ना जाया। एह देह स्वच्छ, जिथ्थे प्रभ जोत जगाया । सोहँ नाम वत्थ, जीआं नूं दान दवाया।

बेमुखां पाई नत्थ, दर दर चक्र लवाया। निमाणयां देवे माण, राणयां तख्तों लाहया। आप ब्रह्म सरूप, जीव ब्रह्म उपाया। गंवाए सभ दा माण, चार वरन कर इक्क बहाया। तीन लोक होई जै जैकार, सोहँ शब्द धुन वजाया। देवी देवते करन विचार, किथे गुर शब्द अलाया। ब्रह्मा विष्न महेष खड़े दरबार, तिन्हां गुर नज़र ना आया। ब्रह्मा आई हार, आपणा आप गंवाया। प्रगट्या जोत सरूप, विच जोत समाया। गगन पताल प्रभ ने आण हिलाया। सृष्टी साजे आप प्रभ है जोत सरूपा। अनहद शब्द वजाए भूपा। सोहँ शब्द सदा अनूपा। नाम निरँजण गुरचरन सर्ब मिल है सूखा। महाराज शेर सिँघ सदा सद खेल अनूपा। गुरसिक्खां मन सदा खुमारी। निरँजण जोत आकाशों उतारी। प्रभ अबिनाशी सद निराधारी। गुरसिक्खां पैज आण संवारी। कलिजुग हउमे कट बिमारी। सोहँ शब्द गुर कीती कारी। दर आए मन दुबिधा भारी। नर्कवास होवे दुष्ट दुराचारी। उन्हां लए उधार, जिन हिरदे नाम मुख उचारी। कलिजुग भए अवतार, महाराज शेर सिँघ निरँकारी। निरँकार अछल्ल अडोल। जोत सरूप जगत मौल। साध संगत विच प्रभ सदा अडोल। सोहँ शब्द सुणावे अनमोल। महाराज शेर सिँघ सदा अणतोल। गुर पूरे दी एह वड्याई। सरन पड़े दी लाज रखाई। पसू प्रेतों देव बणाई। कोई ना खोजे घर दे बुझाई। जोत जुगत प्रभ एह चलाई। जिउँ दीपक संग दीपक जल जाई। गुर संगत गुर माण दिवाया। आए दर परवान,
११३ ०१ जिन सरनीं सीस झुकाया। किरपा करे करतार, दकुखां दा डेरा ढाहया। वांग कृष्न मुरार, निमाणयां गले लगाया। बरसे किरपा धार, अमृत मुख चुआया। पारब्रह्म परमेश्वर घर मांहि पाया। दकुखां लाहे काण, गुरसिक्खां नूं माण दिवाया। दे के सोहँ ज्ञान, आपणा नाम जपाया। डिग्गे दर ते आण, सिर ते छत्र झुलाया। दरगाह दित्ता माण, जिन्हां गुर दर्शन पाया। होए भवजल पार, जिन्हां गुर नाम ध्याया। दे के दरस अपार, कलिजुग आण तराया। महाराज शेर सिँघ निराहार, जोत रूप समाया। जोती जोत अगम्म किसे भेद ना पाया। गुरमुखां दे बुझाए, जिन्हां दर ते सीस झुकाया। गुर पुरी गुर धाम बणाया। जिथ्थे ईश्र जोत प्रगटाया। रल मिल सखियां मंगल गाया। गुर संगत प्रभ रिदे ध्याया। पलँघ उठाया सीस, झूला झूल हिलाया। कर के खेल अपार, धक्का जगत नूं लाया। डुब्बदे लाए पार, जिन्हां गुर दरस दिखाया। मोर खम्ब गुर चवर लै, गुरसिक्खां सिर झुलाया। दु:ख खण्डणहार प्रभ पूरा, देह कष्ट सभ नास कराया। होए कृपाल प्रभ दित्ता दान, सोहँ शब्द काया कंचन रोग गंवाया। जो जन सिमरे मेरा नाउँ, भय भयानक विच होए सहाया। मैं आप पूरन पुरख परमेश्र, मात पाताल आकाश सुहाया। मेरी जोत सदा अडोल, तीन लोक दे विच समाया। ऐसा मेरा नाम निराला, बिन भगतां किसे हत्थ ना आया। महाराज शेर सिँघ सद मेहरवान, दर आयां दा दु:ख गंवाया। घट घट वासी सर्ब निवासी, कलिजुग ११३ ०१

दा अन्त कराया। जपावे सोहँ नाम, दरगाह विच तराया। बेमुखां आई हार, निन्दकां सिर छाही पाया। गुरसिक्खां मन विचार, पूरा सतिगुर घर में पाया। आपणा सतिगुर भेव खुल्हावे, जगत डंक सोहँ लाया। हँकारीआं निन्दकां माण गंवा के, निमाणयां तांईं गले लगाया। जो दर चल के परखण आए, उहनां एह वर घर पाया। दुरमति देह फिरे दुराचारी, धर्म राए नक्क नत्थ पाया। कुम्भी नर्क फड़े फड़ डारी, रोवे बप्परा ना किसे छुडाया। ऐसी प्रभ दे सज़ाए, हाहाकार कर बिल्लाया। कोई ना लवे सार, ऐसा प्रभ ने डन्न लगाया। महाराज शेर सिँघ भया अवतार, हँकारीआं तांईं नास कराया। मन में धरे ध्यान, चरन ना सीस झुकाए। मन में धरे गुमान, दर दर चोटां खाए। मन में होवे गुमान, दरगाह विच ठौर ना पावे। पापी अपराधी कुष्टी कोढ़ी कुल तांईं कलंक लवावे। ऐसा शब्द गुर लिखाए। पूरा दुखिया होवे जगत बिल्लावे। शब्द रूप गुर बचन लिखाया। शब्द रूप विच देह दे आया। शब्द रूप प्रभ जोत जगाया। शब्द रूप धुन शब्द वजाया। शब्द रूप सोहँ नाम दृढ़ाया। शब्द रूप अज्ञान अन्धेर चुकाया। शब्द रूप सर्ब थाएँ समाया। शब्द रूप किसे नज़र ना आया। शब्द रूप गुरसिक्खां प्रगटाया। शब्द रूप हँकारीआं हँकार गंवाया। शब्द रूप निहकलंक अखवाया। शब्द रूप संसार सागर सिख पार तराया। शब्द रूप जीव जन्त सुहाया। शब्द रूप महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। सुरत शब्द जो जन लावे, अनहद शब्द मन वजावे। सुरत शब्द जो जन लावे, राग रिसारंग घर मांहि पावे। सुरत शब्द जो जन लावे, दीपक जोत देह मांहि जगावे। सुरत शब्द जो जन लावे, निज घर बैठा ताड़ी लावे। सुरत शब्द जो जन लावे, जोती जोत प्रभ संग मिल जावे। सुरत शब्द जो जन लावे, अन्धघोर प्रभ अबिनाशी पावे। सुरत शब्द जो जन लावे, महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे। सुरत शब्द जो जन लावे, सतिजुग साचा प्रभ आप दिखावे। सुरत शब्द जो जन लावे, सतिजुग शब्द सोहँ गुण गावे। सुरत शब्द जो जन लावे, होवे ब्रह्म ज्ञान विच्चों भेत चुकावे। सुरत शब्द जो जन लावे, मनों जाए विकार हिरदे जोत जगावे। सुरत शब्द जो जन लावे, होवे जोत आधार अज्ञान अन्धेर गंवावे। सुरत शब्द जो जन लावे, प्रगट हो प्रभ आप आपणा आप दरसावे। सुरत शब्द जो जन लावे, कलिजुग जामा धार महाराज शेर सिँघ पैज रखावे।

११४
०१

❊ २ जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ठाकर सिँघ दे गृह ❊

गुर गहर गम्भीर प्रगटे घर भगत सुजाना। धन्न मन्दर चरन धरापिआ विष्नूं भगवाना। कलिजुग तारन आ गया, कर खेल बिधनाना। हरि मन्दर थान सुहा ल्या, वांग भगत सुदामा। गुरसिक्खां माण दिवा ल्या, उपजे ब्रह्म ज्ञाना। सोहँ

शब्द दिवा ल्या, मन उपजे गुर नामा। महाराज शेर सिँघ दरस दिखा ल्या, सुफल होवे सभ कामा। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर जोत जगाए । धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर भोग लगाए । धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुर रोग गंवाए। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे विछड़े संजोग मिलाए। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे गुरसिख बणाए। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे जीव तांईं गुर ज्ञान दिवाए। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे नर नरायण निरँजण आए। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे नाथ त्रिलोकी भगत तराए। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे आत्म जोत गुर दे जगाए। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए। धन्न गुरसिख जिन सेव कमाई। धन्न गुरसिख जिन मिली वड्याई। धन्न गुरसिख जिन बूझ बुझाई। धन्न गुरसिख हउमे ममता मैल गंवाई। धन्न गुरसिख सिक्खी सिख्खया मन टिकाई। धन्न गुरसिख गुर पूरे दी सोझी पाई। धन्न गुरसिख कल विच बंस ल्या तराई। धन्न गुरसिख मुक्त जुगत दी सोझी पाई। धन्न गुरसिख सेवा विच प्यार घर जोत जगाई। धन्न गुरसिख उपजे नाम सोहँ शब्द दी सोझी पाई। धन्न गुरसिख जगत गंवाया माण चरन सीस झुकाई। धन्न गुरसिख पारब्रह्म प्रभ पए सरनाई। धन्न गुरसिख आवण जावण ब्याधि मिटाई। धन्न गुरसिख सर्ब सूख घर मांहि पाई। धन्न गुरसिख कलू अग्न पोहे ना राई। धन्न गुरसिख जिस प्रभ दे वड्याई। धन्न गुरसिख कर सेवा ईश्‍र जोत प्रगटाई। मानस जन्म

११५ ०१ सुजान, जे गुर सेव कमावे। मानस जन्म सुजान, जे गुर चरनीं सीस झुकावे। मानस जन्म सुजान, मिल साध संगत हरि ११५ ०१

जस गावे। मानस जन्म सुजान, मनो अभिमान चुकावे। मानस जन्म सुजान, जीव जीव जीव दया कमावे। मानस जन्म सुजान, गुर गुर गुर दरस दरसावे। मानस जन्म सुजान, इक्क मन हो प्रभ रिदे ध्यावे। मानस जन्म सुजान, घर बैठे अन्तरजामी पावे। मानस जन्म सुजान, जिन महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे। गुरसिक्खां सद बलिहार, जिन्हां प्रभ नाम चितारया। गुरसिक्खां सद बलिहार, जिन्हां मिले प्रभ अपर अपारया। गुरसिक्खां सद बलिहार, देवे गुर नाम भण्डारया। गुरसिक्खां सद बलिहार, जिन्हां सोहँ शब्द विचारया। गुरसिक्खां सद बलिहार, जिन्हां महाराज शेर सिँघ निमस्कारया । प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जिस जगत पसारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जीव जन्त उधारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जिस अन्त ना पारावारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जुग जुग देह पलटा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, सद सद सद निमस्कारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, कलिजुग आ भगतां नूं तारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, भय भंजन सिख उधारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, बैठा विच देह प्रभ निराधारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, कोट ब्रह्मण्ड जिस पसर पसारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, चन्द सूरज जिस सेवा ला ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, तीन लोक इक्क रंग समा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, ब्रह्म बिन्द सभ जगत उपा

ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, आपणा आप विच टिका ल्या । प्रगट जोत प्रभ ठाकर, माया रूपी जीव पर्दा पा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, राखे हउमे रोग, देह अन्धेर रखा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जोत जगा निराली देह दीपक डगमगा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जीव विकारे विच प्रभ छुपा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, कर कर्म विचार भगतां नूं दरस दिखा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, आप ब्रह्म सरूप सिख ब्रह्म सरूप बणा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, आप जोत निरँजण सिख जोत निरँजण बणा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, कलिजुग लै सार भवजल पार तरा ल्या। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, महाराज शेर सिँघ भगत उधार सिक्खां नूं आण तरा ल्या। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे गुर चरन धरंदे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे जोत मृगिन्दे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे गुरसिख तरंदे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे फड़ मन भवंदे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे गुर ज्ञान दिवंदे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे प्रभ जोत जगन्दे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे प्रगट सद बख्शंदे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे ल्यां नाउँ, दु:ख ढहिंदे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे सिख गुर चरन पड़ंदे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे उपजे प्रभ मुकंदे। सोई सुहंदा थाउँ, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ सिख कर्म लिखंदे।

११६ ०१

❋ ३ जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल अमरजीत सिँघ दे गृह ❋

गुर पूरा कर्म कमांवंदा, कलिजुग डुब्बदे आण तराए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, दुखियां दे दु:ख गंवाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, पापी अग्न दे वांग जलाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, अमृत मेघ वरखा लाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, गंवाए विच्चों रोग जीव सुखी कराए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, बाल बिरध देवे तार सरन पड़े दी लाज रखाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, देवे जोत आधार रसना नाम जपाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, दुनी सुत्ती पैर पसार भगत पकड़ उठाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, बेमुखां आई हार गुरसिक्खां जै जै जैकार कराए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, प्रगट जोत अपार सिक्खां सिर छत्र झुलाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, कलिजुग लए सार जिन्हां नूं दरस दिखाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, कट्टे हउमे रोग सोहँ नाम जपाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, महाराज शेर सिँघ भए अवतार जोत जगत जलाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, बद्धे जीव बिल्लायन दे अमृत पकड़ छुडाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, करन करावणहार समरथ भूतां प्रेतां नष्ट कराए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, मुख अमृत बूंद चवाए काया तप्त बुझाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, होए आप कृपाल साध संगत माण दवाए। गुर पूरा कर्म

कमांवंदा, जिन्हां आई विचार तिन्हां संगत संग रलाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, हो जोत आधार दुखियां दे दुःख गंवाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, कलिजुग पाया जोर गुरसिक्खां नूं पार लँघाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, देवे नाम ज्ञान सोहँ नाम जपाए। गुर पूरा कर्म कमांवंदा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लग्गयां लाज रखाए।

११७
०१

✻ ४ जेठ २००७ बिक्रमी चेत सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✻

भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, पारब्रह्म प्रभ जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, तीन लोक जोत जगाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, प्रगट भए सर्ब सुखदाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जगत आए आप रघुराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, गुर पूरे घर जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जै जै जैकार मातलोक कराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ जस गाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जोत निरँजण प्रभ जगत जगाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, गण गंर्धब फूलन वरखा लाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, करोड़ तेतीस रहे लिव लाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, इन्द्र इन्द्रासण बैठे वरखा लाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, ब्रह्मा विष्न महेष निगाह मात टिकाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, चन्द सूरज दोवें बैठे मुख छुपाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, गुर ठांडा ठंड जोत समाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, प्रगट भए प्रभ सुखदाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, हो मेहरवान एह जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, त्रेता राम जगत गोसांई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, काहन घनईआ जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कृष्न मुरार एह बणत बणाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कलिजुग होया घोर रहे जीव बिल्लाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, पापां पाया जोर सच सुच्च नष्ट हो जाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, धरत करे पुकार पापां तों दे छुडाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, करके खेल अपार प्रभ ने जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कोई ना जाणे सार एह बिंग कसाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जोत तों प्रगट जोत जोत जगत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, ब्यापे सभे दुःख कलिजुग लए तराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, विष्नूं प्रगट आप मानस देह बणाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जेठ पंज घर घर मिले वधाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, किरपा कर अपार ईश्वर कलिजुग दे वड्याई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, धन्न सुहावा थान जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटाई।

भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कुक्ख ताबो दी सुफल कराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, पिता जवंद सिँघ पूत रघुराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ जोत जगत टिकाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, मिल सखियां मंगल गाया धन्न जणेंदी माई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जगत भए उज्जयार भगत हरि जस गाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जामा ल्या धार कल निहकलंक अख्वाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ लै अवतार तीन लोक जै जै जैकार कराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, अज्ज सुहावी रात प्रभ जोत जगाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, बिक्रमी उन्नीं सौ पंजाह लिखवाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जेठ पंजवीं आई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, मंगलवार थित्त लिखाए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, घनकपुरी नूं भाग लगाए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, चन्द सूरज खड़े दर सीस झुकाए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, मातलोक प्रभ जोत प्रगटाए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कलिजुग हो निहकलंक आए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ बालक देह जोत जगाए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, देह सच सुच्च दीपक प्रगास्सया। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, विच देह ईश्वर निवास्सया। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, प्रगटी जोत अपार होवे जगत धरवास्सया। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, सच्चा होवे दरबार सच गुर प्रगास्सया। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, अज्ज सुहावी रात देवे दान अपार जाए ना कोए निरास्सया। कलिजुग देवे तार जिन आहार शराब ना मास्सया। गुरसिख विच संसार, जिउँ कंचन प्रगास्सया। महाराज शेर सिँघ आप निरँकार, भगतन दास्सया। उपजी जोत अपार। जोत निरँजण जगत चमकार। विच सृष्ट ना होवे विचार। कलिजुग आए निहकलंक अवतार। विच द्वापर कृष्न मुरार। सुत्ता प्रभास विच गोडे चरन पसार। कृष्न जोत शेर सिँघ अवतार। जिथ्थे मारे बधक बाण। कलिजुग विच मेरी पछाण। चरन खब्बा सच निशान। गिट्टे उप्पर तीर निशान। महाराज शेर सिँघ प्रगटे विष्नूं भगवान। ईश्र जोत विच देह जगा के। आप बैठा मुख छुपा के। बाल अवस्था खेल रचा के। देवे दरस भगतन घर जा के। आपणा आप प्रभ आप रखा के। मनी सिँघ नूं दरस दिखा के। जोत सरूप ब्रह्म ज्ञान दिवा के। महाराज शेर सिँघ सच रूप वटा के। दरस दिखाया आप प्रभ ठाकर, मनी सिँघ नूं घर जा कर। वेखी देह निर्मल कर्म ने उजागर। दित्ता दरस भगत सुख सागर। होए अनन्द बैठा इकागर। महाराज शेर सिँघ जगत उजागर। दर्शन देख मन बिग्साए। बिन देखे फिर ठंड ना पाए। दिन रात रिहा बिल्लाए। दयो दरस काया शांत हो जाए। गुर दर्शन को मेरे नैण तरसाए। महाराज शेर सिँघ होए सहाए। सरन पड़े दी लाज रखाए दिन रात बैठा हरि जस गाए। ऐसा ज्ञान शब्द गुर दिया।

दित्ता जोत आधार होया निर्मल जिया। फल पाया शब्द अपार, बीज पूरबला बीआ। दित्ता आप आधार, सतिगुर कर के हीआ। पूरी होई विचार, जोत जगाई जिया। महाराज शेर सिँघ कर्म विचार, सतिगुर दर्शन दिया। प्रभ दर्शन दरसा, सद प्यास मिटाई। प्रभ दर्शन दरसा, मन दी ब्याध गंवाई। प्रभ दर्शन पा बिगसा सर्ब चिन्त मिटाई। प्रभ दर्शन पा, मन दी धीर धराई। प्रभ दर्शन पा, सच शब्द दी सोझी पाई। प्रभ दर्शन पा, दूई द्वैत मिटाई। प्रभ दर्शन पा, जन्म जन्म दी सोझी पाई। प्रभ दर्शन पा, साध संगत विच रिहा प्रभ जस गाई। प्रभ दर्शन पा, महाराज शेर सिँघ रिहा चित्त समाई । शब्द रूप गुर दर्शन दे के, सन्त तांई ज्ञान दिवाया । शब्द रूप गुर दर्शन दे के, जामा आपणा सभ दिखाया। जोत रूप प्रभ दर्शन दे के, कलिजुग माया अग्न जलाया। शब्द रूप प्रभ दर्शन दे के, मनी सिँघ दा संसा लाहया। शब्द रूप प्रभ दर्शन दे के, महाराज शेर सिँघ आपणा तेज वखाया । कलिजुग कर्म प्रभ आप विचारया। करनहार जामा घनकपुरी विच धारया। दे के शब्द विचार प्रभ आपणा आप चितारया । मनी सिँघ नूं देवां तार दे के दरस अपारया। दे के शब्द ज्ञान सन्तन दी पैज संवारया। महाराज शेर सिँघ प्रगट अवतार कलिजुग कर्म विचारया। ऐसा कर्म कलू विच होया। झूठे धन्दे जगत है मोहया। सतिगुर भुल्ला सृष्ट है सोया। महाराज शेर सिँघ जगत जोत बिलोआ। मनी सिँघ प्रभ दरस दिखाए। करन कार कलू हरि जी आए। प्रगट आप नरायण कलिजुग जोत जगाए। भगत लोक रसना गाए। महाराज शेर सिँघ काल कराए। कलिजुग जोत प्रभ धारे। जिस को सदा सदा सदा निमस्कारे। आपणा शब्द रसना सोहँ उचारे। बाल अवस्था दरस देवे वांग कृष्न मुरारे। भगतन देवे तार, मनी सिँघ नूं पार उतारे। दे के जोत आधार, आपणा दरस दिखा रे। कलिजुग जामा धार प्रगटे महाराज शेर सिँघ नर अवतारे। नर अवतार आप प्रभ आया। कलू काल जिस आण कराया। आपणा नाउँ जीव जन्त जपाया। शब्द सोहँ मुख रखाया। बाकी सभन दा अन्त कराया। सरबत्त तीर्थां माण गंवाया। सर्ब धाम प्रभ जोत खिचाया। सर्ब धाम मेहरवान अख्वाया। सर्ब जाप प्रभ भस्म कराया। सोहँ शब्द गुर ज्ञान दिवाया। ओअँ भए आप सोहँ शब्द सुणाया। गंवाया सभ दा माण, जगत गुर चरन टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे अग्गे ना सीस झुकाया। दे के ब्रह्म ज्ञान मनी सिँघ दरस दिखाया। दिया दरस आप गुर पूरे। वाजे दर ते अनहद तूरे। सर्ब सरूप रिहा भरपूरे। मनी सिँघ जोत जगाई वांग कोहतूरे। नैणी पेखो महाराज शेर सिँघ सदा हज़ूरे। सोहँ शब्द सदा भरपूरे। ऐसा दरस ज्ञान गुर तों पाया। मन ना धरे धीर करन दरस सन्त उठ धाहया। सिख संगत नाले पाया। घनकपुरी नूं चल के आया। मन में चाउ गुर दर्शन पाईए, बाहर आ के डेरा लाया। उह सुहाया थान, जिथ्थे सन्त मन एह चाउ सुहाया। ऐसी बणत प्रभ आप बणाई, गुर

घर बैठ दर्शन पाया। मन दी इच्छा होई पूर, महाराज शेर सिँघ दर्शन पाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, मनी सिँघ घर साचा पाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, सर्ब कला एक रंग राया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, जोत निरँजण जगत वरसाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, साध सन्त मन तृप्त कराया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, ज्ञान जोत प्रभ जोत जगाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, मनी सिँघ गुर नज़री आया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, जिन विच्चों मोह चुकाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, भगत जनां अन्ध विश्वास तजाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, अनहद शब्द मन वजाया। पारब्रह्म गुर दरसन पाया, कोट जन्म दे पाप खिन महि लाहया। पारब्रह्म गुर दरसन पाया, डुब्बदे लए तार जिन्हां गुर चरनीं लाया। पारब्रह्म गुर दरसन पाया, होया जगत अधार जिन्हां सिर हत्थ टिकाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, होए पुरख सुजान जिन्हां गुर नाम ध्याया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, भगत वछल कृपाल जिन्हां हरि मंगल गाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, होए जोत समान अन्त संग जोत मिलाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, आप एक सर्ब एक रंग समाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, कलिजुग आई हार सतिजुग नजरी आया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, कर के कर्म विचार सोहँ नाम दिवाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, मनो जाए विकार हउमे रोग गंवाया। पारब्रह्म गुर दरस दिखाया, सतिजुग पार उतार जिन्हां दरस दिखाया।
१२० ०१ पारब्रह्म गुर दरस दिखाया महाराज शेर सिँघ आप अवतार भगतन राह बताया। जेठ पंचम प्रभ जग आया, गुरसिक्खां मन वज्जी वधाई। जेठ पंचम प्रभ जोत जगाया, अज्ञान अन्धेर नष्ट हो जाई। पंचम जेठ प्रभ जोत धराया, घनकपुरी गुर भाग लगाया। जेठ पंचम प्रभ देह धारे, महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, मिल सखियां मंगल गाया। जेठ पंचम दिन वडभागी, गुण निधान घर दरस दरसाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, गुरमुखां घर परमेश्वर पाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, प्रगट भए निरँकार जगत ते पाई माया। जेठ पंचम होवे वडभागी, सद मेहरवान आपणा आप उपाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, राम रमईआ प्रभ बणत बणाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, कृष्न घनईआ देह पल्टाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, महाराज शेर सिँघ जन्म उपाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, निहकलंक अवतार प्रगटाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, कलिजुग जन्म प्रभ पाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, ईश्र जोत जगत जलाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, जामा धार नर सिँघ प्रभ आया। पंचम जेठ होवे वडभागी, देवी देवते हरि हरि मंगल गाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, मन तन सीतल भगत कराया। पंचम जेठ होवे वडभागी, जोत लड़िंदे प्रभ गुर दरस दिखाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, महाराज शेर सिँघ जन्म उपाया। कलिजुग आप प्रभ जामा धारया। प्रगट भए प्रभ नर अवतारया। सृष्ट साज जिस पसर पसारया।

सर्ब जीव दित्ती जोत अधारया। गुर ऐसे को सद बलिहारया। कर किरपा जिस पार उतारया। महाराज शेर सिँघ सद निमस्कारया। सोहँ शब्द गुर ज्ञान चितारया। कलिजुग प्रगटी प्रभ जोत अपारा। सर्ब निरंतर अपरम्पर पारा। भरतम्बर जगत उधारा। छिन भंगर गर्ब निवारा। जेठ पंचम धन्न दिहाड़ा। गुरसिख लँघे पाप हारा। महाराज शेर सिँघ सृष्ट चबाई दाढ़ा। ऐसा प्रभ भए बलवन्त। सर्ब धाम कीते भस्मंत। बैठ अडोल आप निरंत। सर्ब सृष्ट कर ईश्र कन्त। देवे उधार जोत प्रभ जन्त। हँकारी सर्ब कीए भस्मंत। तारे सिख जिन्हां गुर मन तन सन्त। प्रभ अबिनशी आप भगतन भगवन्त। कलिजुग जामा सच लिखंत। निहकलंक प्रगट भगवन्त। महाराज शेर सिँघ गर्ब निवन्त। प्रभ गर्ब निवारे हँकारी मारे पतित उधारे जिन सेव कमा ल्या। डुब्बदे तारे विच संसारे, सेवक सिख गुर तारे जिन गुर चरन लगा ल्या। भगत उधारे दुष्ट सँघारे, राणे महाराणे तख्तों उतारे जिन्हां गुर तों मुख भवा ल्या। कर्म विचारे बैठ निराधारे, सर्ब सूख गुर दरबारे जिन्हां सीस झुका ल्या। कलिजुग अवतारे अपराधी तारे, सोहँ नाम उधारे मन्त्र नाम दृढ़ा ल्या। प्रभ सद बलिहारे जगत उधारे दर सिख अपारे, महाराज शेर सिँघ दरस दिखा ल्या। धन्न गुरसिख जिन दर्शन करया। धन्न गुरसिख जिन मन तन हरया। धन्न गुरसिख जिन रसना नाम उचरया। धन्न गुरसिख जिन मोहण माधव नदरी परया। धन्न गुरसिख जिन हरि प्रभ किरपा करया। धन्न गुरसिख जिन्हां घर गुर आसा वरया। धन्न गुरसिख जिथ्थे प्रभ दुःख दलिद्र हरया। धन्न गुरसिख जिन महाराज शेर सिँघ सरनी परया। सरन पड़े जो सतिगुर केरी। जेठ पंचम प्रभ करे ना देरी। दीनां नाथ दुःख भंजन ढेरी। सर्ब समरथ जोत आ मेरी। महाराज शेर सिँघ विच कल हनेरी। सोहँ शब्द आ देवे दात वडेरी। नाम पदार्थ गुर दर तों पाईए। नाम पदार्थ गुर चरन लगाईए। जीअ का रथ सद हरि गुण गाईए। सर्ब सूख सारथ हरि दर्शन पाईए। महाराज शेर सिँघ समरथ आपणी बणत बणाईए। पंचम जेठ कल धारी। निरँजण जोत आकाशों उतारी। जोत जगत चमत्कारी। कोई ना जाणे प्रभ खेल अपारी। कलिजुग तारे जीव निरँकारी। गुरसिक्खां मन प्रभ दरस ख़ुमारी। देवे दरस प्रभ जोत आधारी। ऐसे गुर को सद बलहारी। सोहँ शब्द गुर ज्ञान चितारी। महाराज शेर सिँघ प्रगट निरँकारी। निरँकार नरायण गुर आया। पंचम जेठ दिन सुहाया। गुरमुखां मिल गुर नाम ध्याया। बेमुखां सौं के वक्त लँघाया। हाहाकार करके शोर मचाया। गुर का शब्द ना मन वसाया। झूठी देह हँकार समाया। प्रभ दा भेत ना किसे पाया। मैं ममता विच जन्म गंवाया। कलिजुग ऐसी पाई माया। मनुआ लोभी फिरत तिसाया। मायाधारी कलिजुग अख्वाया। ईश्र नाम दिलों भुलाया। आपणा आप आप आप प्रगटाया। गुर साचे एह कर्म कमाया। बिन थम्मां गगन रहाया। अंडज जेरज उत्भुज सेतज इन्हां विच्चों सिख कढाया। ईश्र

ब्रह्म सरूप सिख विच जोत समाया। महाराज शेर सिँघ लै अवतार सभ दा माण गंवाया। सोहँ दे ज्ञान आपणा नाम जपाया। जेठ पंचम दिन वडभागी, जिन महाराज शेर सिँघ जोत जगाया। जोत जगाई प्रभ निरालम। भेत ना पावे सारी आलम। प्रगट भया जगत बालम। महाराज शेर सिँघ भगत ग़ालम। जन्म धार लए अवतार। कर्म विचार गुरसिक्खां तारया। सद बलिहार भगत उधार, कर निमस्कार कलिजुग निहकलंक अख्वा ल्या। मन शब्द विचार, गुर पार उतार, प्रगट मुकंद मुरार, कलिजुग जामा धारया। प्रगट नर अवतार, कर दरस अपार, होवे भवजल पार, महाराज शेर सिँघ जिन रिदे चितारया। बिन गुर किसे ना मिले वड्याई, बिन गुर किसे ना सोझी पाई। बिन गुर जोत ना किसे जगाई। बिन गुर अज्ञान अन्धेर ना विच्चों जाई। बिन गुर देह दीपक विच ना जोत जगाई। बिन गुर सोझी किने ना पाई। बिन गुर मिले ना नाम वड्याई। बिन गुर भुली फिरे लोकाई। बिन गुर झूठे धन्दे जन्म गंवाई। बिन गुर माया ममता विच सृष्ट रहाई। बिन गुर कोई ना पार लँघाई। बिन गुर जन्म जन्म दु:ख पाई। बिन गुर कोई ना चरन लगाई। बिन गुर भवजल ना पार तराए। बिन गुर कोई ना दुखियां दे दु:ख गंवाए। बिन गुर कोई ना हउमे दी मैल गंवाए। बिन गुर कोई ना सिख दी पैज रखाए। बिन गुर कोई ना कलिजुग आण तराए। बिन गुर कोई ना आण भेत खुल्हाए। बिन गुर कोई ना जोत जगाए। बिन गुर कोई ना सच मार्ग पाए। बिन गुर कोई ना ज्ञान नाम दिवाए। बिन गुर कोई ना सोझी पाए। बिन गुर कोए ना गुर ज्ञान गोझ बताए। बिन गुर कोए ना विच्चों प्रभ दरसाए। बिन गुर कोई ना जीव दा भेत खुल्हाए। बिन गुर कोए ना सिख को माण दिवाए। बिन गुर कोई ना भाणा सच वरताए। बिन गुर कोई ना जीव दी बणत बणाए। बिन गुर कोई ना भुल्लयां लै तराए। बिन गुर कोई ना जीव दी पैज रखाए। बिन गुर कोई ना अज्ञान अन्धेर गंवाए। बिन गुर कोई ना संसा रोग गंवाए। बिन गुर कोई ना भाण्डा भरम भुलाए। बिन गुर कोई ना आपणी जोत जगाए। बिन गुर कोई ना पंजवीं जेठ मनाए। बिन गुर कोए ना आपणी जोत आपणे विच समाए। बिन गुर कोई ना सिख को माण दिवाए। बिन गुर कोई ना भरम चुकाए। बिन गुर कोई ना कलिजुग सोझी पाए। बिन गुर कोई ना रसना हरि गुण गाए। बिन गुर कोई ना गुर का शब्द अलाए। बिन गुर कोई ना मंगलाचार कराए। बिन गुर कोई ना कलिजुग पार लँघाए। महाराज शेर सिँघ सिर दे के हत्थ, सिक्खां दी लाज रखाए। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाया। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, हरि हरि हरि जी हर थां समाया। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, जोत निरँजण प्रगट रघुराया। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, कल दर्शन निहकलंक पाया। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, सतिजुग मेहरवान त्रेता राम नबेरा। गुरसिक्खां

मन चाउ घनेरा, द्वापर कृष्न मुरार कट्टे अज्ञान अन्धेरा। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, प्रगटी जोत अपार महाराज शेर सिँघ सतिगुर मेरा। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, पंज जेठ गुरपुरब मनाई। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, गुर दर्शन मन तृप्त कराई। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, त्रैलोकी नाथ नरायण दरसाईए। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, कलिजुग पाप कर्म गंवाईए। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, सतिगुर पूरा विच बहाईए। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, कलिजुग विच्चों आप तर जाईए। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, झूठी जगत प्रीत नेंह चरनां संग लाईए। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, महाराज शेर सिँघ घर मांहि पाईए। गुरसिक्खां मन वज्जी वधाई, प्रगट जोत होया उज्जयारा। गुरसिक्खां मन वज्जी वधाई, जोत निरँजण जगत उतारा। गुरसिक्खां मन वज्जी वधाई, पारब्रह्म प्रभ भए दरसारा। गुरसिक्खां मन वज्जी वधाई, कलिजुग विच गुरू उधारा। गुरसिक्खां मन वज्जी वधाई, महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारा। गुरसिक्खां मन वज्जी वधाई, गुरमुख नाउँ गुर जगत उज्जयारा। गुरसिक्खां मन होई वधाई, गुर प्रीत गुरचरन दुआरा। गुरसिक्खां मन होई वधाई, लँघावे पार आप करतारा। गुरसिक्खां मन होई वधाई, जोत जगाई अपर अपारा। गुरसिक्खां मन होई वधाई, होवे शब्द ज्ञान जावे धुंधूकारा। गुरसिक्खां मन होई वधाई, गुर पूरा लए पछाण जिस किया पसारा । गुरसिक्खां मन होई वधाई, कर दरस दातार जिन एह बणत बणाई। गुरसिक्खां
१२३ मन होई वधाई, गुर ठांडा गुर दरबार सिक्खां दी पैज रखाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, उत्तम एह विहार प्रभ दी जोत १२३
०१ जगत में आई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, भुल्ली सृष्ट अनभोल, प्रभ दी सार ना पाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, घर ०१
घर होए जैकार शब्द धुन गुर आप वजाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, दे के ब्रह्म ज्ञान गुर संगत गुर पार कराई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, प्रभ आप अतोल तोल्लया ना जाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, निमाणयां देवे माण ग़रीबां गले लगाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, कलिजुग लए पछाण, प्रगट हो प्रभ दरस दिखाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, जिन्हां रसना हरि हरि हरि जस गाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, पंचम जेठ जिन ख़ुशी मनाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, गुर पूरा घर मांहि पाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, होए प्रभ कृपाल भगतन दरस दिखाई। गुरसिक्खां मन होई वधाई, भगत उधारन आप महाराज शेर सिँघ दरस दिखाई। देवे दर्शन गुर जोत प्रगास्सया। भुल्ला जीव फिरे जगत उदास्सया। बिन सतिगुर झूठी देह निरास्सया। कोई ना कट्टणहार गलों जम फास्सया। गुर चरन कर प्यार, नौं निधि होवे दास्सया। महाराज शेर सिँघ प्रगट करतार, सर्ब सूख वास्सया। सर्ब सूख गुर चरन प्यार। सर्ब सूख गुर रिदे चितार। सर्ब सूख गुर संगत प्यार। सर्ब सूख महाराज शेर सिँघ रिदे चितार। मानस जन्म जगत में पाया। बिन गुर पूरे किसे पार ना लाया। मोह ममता विच फिरे लुभाया।

दुनिआवी झंजटां विच फसाया। दकुखां कलेशां डेरा लाया। देह रोगी विच रोग वधाया। होवे कष्ट अपार बिन गुर कोए ना दे छुडाया। जेठ पंचम दित्ता तार, जिन गुर दर्शन पाया। आत्म होए उज्जयार, दकुखां दा नास कराया। प्रगट जोत अपार, सिक्खां दा कर्म लिखाया। आप बैठा निराधार, दीपक जोत जगाया। गुर पूरे जायो बलिहार, कलिजुग पार तराया। भगत जनां प्रभ देवे माण, ईश्र जोत जगत पल्टाए। भगत जनां प्रभ देवे माण, जोत निरँजण देह विच आए। भगत जनां प्रभ देवे माण, खोल्ह किवाड़ दरस दिखाए। भगत जनां प्रभ देवे माण, गुरसिख महिंमा आप जणाए। भगत जनां प्रभ देवे माण, गुरबाणी विच नाम लिखवाए। भगत जनां प्रभ देवे माण, जुगो जुग अटल्ल रह जाण। भगत जनां प्रभ देवे माण, गुरसिक्खां विटुह कुरबाण। भगत जनां प्रभ देवे माण, कलिजुग विच ल्या गुर पछाण। भगत जनां प्रभ देवे माण, मिल संगत जो हरि जस गाण। भगत जनां प्रभ देवे माण, जोत सरूप प्रभ जोत जगाण। भगत जनां प्रभ देवे माण, देवे दात अपार मन में उपजे शब्द ज्ञान। भगत जनां प्रभ देवे माण, कोए ना जावे निरास गुर चरन लाए ध्यान। भगत जनां प्रभ देवे माण, महाराज शेर सिँघ बणे बबाण। भगत जनां जाईए कुरबान, जिन की महिंमा प्रभ आप गणाए। भगत जनां जाईए कुरबान, ध्रू प्रहलाद प्रभ संग समाए। भगत जनां जाईए कुरबान, भगत अंबरीक पार लँघाए। भगत जनां जाईए कुरबान, जन्म द्रोपती

१२४ ०१ माण दिवाए। भगत जनां जाईए कुरबान, बिदर सुदामे दरस दिखाए। भगत जनां जाईए कुरबान, घर जिन्हां दे ईश्र आए। १२४ ०१

भगत जनां जाईए कुरबान, जैदेउ नामा चरन लगाए। भगत जनां जाईए कुरबान, तरलोचण ना दु:ख उठाए। भगत जनां जाईए कुरबान, बेणी सैण प्रभ भेस वटाए। भगत जनां जाईए कुरबान, ईश्र जिन्हां दे दर ते आए। भगत जनां जाईए कुरबान, गनका अजामल पूतना सभ जोत मिलाए। भगत जनां जाईए कुरबान, कबीर तांईं सचखण्ड वखाए। भगत जनां जाईए कुरबान, नामदेउ रविदास तराए। भगत जनां जाईए कुरबान, बधक तीर कृष्न चरन लगाए। भगत जनां जाईए कुरबान, जिथ्थे ईश्र दरस दिखाए। भगत जनां जाईए कुरबान, जुगो जुग प्रभ दरस दिखाए। भगत जनां जाईए कुरबान, जोत सदा प्रभ संग समाए। भगत जनां जाईए कुरबान, कलिजुग भए अवतार शेर सिँघ नाम रखाए। गुरसिक्खां दित्ता तार, जिन्हां चरन लगाए। बेमुखां दित्ती हार, जिन्हां मुख भवाए। उपजे भगत अपार, जिनां गुर नाम लिखाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे गुर चरन टिकाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे गुर धाम रचाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे सचखण्ड बण जाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे कल्सीआं नूं माण दिवाए। एह सुहावे मन्दर, नाम चेत सिँघ जुग चार रहि जाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे प्रभ सुख आसण लाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे प्रभ चरन भार रखाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे ईश्र दक्खण दिशा सिर

रखाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे लहिंदे मुख रखाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे प्रभ जोत जगाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे प्रभ सवरन दी देह छुडाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे प्रभ बैठा आए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे सतिजुग राह बणाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे गण गंधर्ब सीस झुकाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे सतिजुग सति धाम अख्वाए। एह सुहावे मन्दर, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ भगत वड्याए। ऐसी भगत देउ वड्याई, झूठी देह दी प्रीत तजाई। धाम बैकुंठ रिहा समाई। ईश्र जोत प्रभ खिच्च वखाई। जेठ सत्त प्रभ बणत बणाई। ईश्र दो हज़ार छे बिक्रमी सतिजुग सति बणाई। तज देह सवरन परमगति पाई। प्रगट गुण निधान एह बूझ बुझाई। छड्ड जगत प्रीत, सच घर बैठा जाई। उपजे प्रभ जोत, प्रभ जोत लए मिलाई। दूसर नाहीं कोए, एक प्रभ थिर रहाई। सतिजुग दित्ता माण, भगत ने पदवी पाई। बैठा हो दरबान धू परे हटाई। मुक्का आवण जावण, खड़्हा दर सीस झुकाई। गुर पूरे हो मेहरवान दरगाह सच वखाई। सिख उधारन आप प्रभ एह खेल रचाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सतिजुग जोत जगाई। सतिजुग सति सति सति गुर वरतावे। गुर प्रसादि सिख दर्शन पावे। दे के सोहँ ज्ञान कलिजुग जीव तरावे। महाराज शेर सिँघ सद मेहरवान भगतन दी पैज रखावे। गुण निधान एह कर्म कमाए। कलिजुग आण भगत तराए। विछड़यां नूं मेल गुर चरन लगाए। देवे सुरत ध्यान, अनहद शब्द वजाए। पावे भगत ध्यान, महाराज शेर सिँघ घर मांहि पावे। भगत वछल अनाथ प्रभ नाथ। सर्ब जीव सदा है साथ। जीव विनासी प्रभ अबिनाश। महाराज शेर सिँघ कर भगत प्रकाश। भगत उधारन आप प्रभ आया। जोत सरूप विच देह समाया। कलू काल जिस आण खपाया। सतिजुग साचा राह बताया। गुरसिक्खां गुर ज्ञान दवाया। सोहँ शब्द जहाज़ बणाया। चाढ़ पाल सिँघ बैकुण्ठ पुचाया। सवरन सिँघ सच राह सिद्धाया। गुर धाम जिस आसण लाया। इन्दलोक शिवलोक जिस ब्रह्मलोक तजाया। भगत दे वड्याई प्रभ दर अग्गे बहाया। धन्न जणेंदी माई, जिन पूत सवरन एह जाया। जगत मिले वधाई, पिता घर पूत कँवल लगाया। महाराज शेर सिँघ सदा सुखदाई, कलिजुग आ भगत वड्आया। ऐसी प्रभ ने खेल रचाई, उलटी जगत ते पाई माया। ज्ञान विहुणे सार ना जानण, मुखों बोलण इस घर विच छाया। बैठा आप गोसांईं, सच्चा सवरन जिस गोद बहाया। ना प्रभ डोले ना किसे डुलावे, भगत आपणा जगत वड्आया। गुरमुख नाम उधार, सोहँ शब्द सुणाया। बाणी बोहथ सतिगुर पूरा घर चेत सिँघ डेरा लाया। मैं हां परिपूर्ण परमेश्वर, दे दुहाई पल्ला फिराया।

१२५
०१

❋ ५ जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड कल्सी ज़िला अमृतसर बचन होए ❋

गुरप्रसादि गुर प्रसाद कराईए। गुरप्रसादि गुर दर्शन पाईए। गुरप्रसादि प्रभ जोत जगाईए। गुरप्रसादि काया तप्त बुझाईए। गुरप्रसादि चन्नण वांग देह बणाईए। गुरप्रसादि गुर सेव कमाईए। गुरप्रसादि गुर भेंट चढ़ाईए। गुरप्रसादि घर नौं निध पाईए। गुरप्रसादि गुर दर मंगण आईए। गुरप्रसादि नाम पदार्थ झोली पाईए। गुरप्रसादि मन दा भरम गंवाईए। गुरप्रसादि पूरा सतिगुर नैण दरसाईए। गुरप्रसादि दुःख दलिद्र सर्ब गंवाईए । गुरप्रसादि जन्म सुफल जगत कराईए। गुरप्रसादि मनुख देह नूं लेखे लाईए। गुरप्रसादि गुर वडभागी घर महि पाईए। गुरप्रसादि गुर अंजण नाम नेत्रीं पाईए। गुरप्रसादि थिर घर बैठ गुर नाम दृढ़ाईए। गुरप्रसादि कलिजुग विच आण तर जाईए। गुरप्रसादि जगजीवन दाता रसना नित्त गाईए। गुरप्रसादि आप तरे कुटम्ब तराईए। गुरप्रसादि भय भंजन मेहरवान मन बख्शाईए। गुरप्रसादि त्रैलोकी नाथ उत्ते पलँघ बहाईए। गुरप्रसादि नेत्र खोल्ह गुर चरन दरसाईए। गुरप्रसादि मन में होए ज्ञान, शब्द रूप गुर दर्शन पाईए। गुरप्रसादि गुर संगत रल जाईए। गुरप्रसादि मदि मास ना रसना लाईए। गुरप्रसादि अमृत फल गुर दर ते पाईए। गुरप्रसादि आपणी महिंमा आप लिखवाईए। गुरप्रसादि गुर पूरा सिर छत्र झुलाईए। गुरप्रसादि ज़ात पात दा भेत मुकाईए। गुरप्रसादि चार वरन इक्क हो जाईए। गुरप्रसादि विच संगत भैण भ्रा बण जाईए। गुरप्रसादि गुर दर्शन परमगति पाईए। गुरप्रसादि प्रभ अबिनाश सद रिदे ध्याईए। गुरप्रसादि आत्म जोत गुर जोत जगाईए। गुरप्रसादि अज्ञान अन्धेर नास कराईए। गुरप्रसादि उपजे ब्रह्म ज्ञान सदा सुख पाईए। गुरप्रसादि साध संगत मिल हरि जस गाईए। गुरप्रसादि चरन कँवल गुर सीस झुकाईए। गुरप्रसादि पूरन परमेश्वर गुण गाईए। गुरप्रसादि वाह वाह करदया सतिगुर पाईए। गुरप्रसादि जेठ पंचमीं दिन मनाईए। गुरप्रसादि जोत निरँजण नित दर्शन पाईए। गुरप्रसादि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गुण गाईए। गुरप्रसादि गुरप्रसाद कराईए। गुरप्रसादि कमाई सुफल कराईए। गुरप्रसादि दुध्ध पुत्त दी तोट ना पाईए। गुरप्रसादि साचा साचा शाह इक्क रंग समाईए। गुरप्रसादि सोहँ शब्द गुण गाईए । गुरप्रसादि सचखण्ड समाईए । गुरप्रसादि जोत सरूप अन्त जोत मिल जाईए। गुरप्रसादि आवण जावण पन्ध मुकाईए। गुरप्रसादि गेड़ चुरासी फेर ना आईए। गुरप्रसादि कर्म लेख फेर लिखाईए। गुरप्रसादि पिछली भुल्ल बख्शा अग्गे नूं मार्ग पाईए। गुरप्रसादि मनो गंवाईए विकार, नाम अमोलक पाईए। गुरप्रसादि चतुर्भुज करतार, गुरू विच समाईए। गुरप्रसादि आदि अन्त रंग इक्क हो जाईए। गुरप्रसादि पुरख निरँजण सर्ब सुख पाईए। गुरप्रसादि कर प्रसाद गुर भोग लगाईए। गुरप्रसादि गुर दर आया सुफल कराईए। गुरप्रसादि सुख

सागर विच आण तर जाईए। गुरप्रसादि दकुखां वाला भार गुर दर ते लाहीए। गुरप्रसादि दुखी काया कंचन बण जाईए। गुरप्रसादि वांग चन्दन सदा महिकाईए। गुरप्रसादि दाता करता जल थल समाईए। गुरप्रसादि साध संगत मिल हरि जस गाईए। गुरप्रसादि कलू काल विच पार कराईए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ दर्शन पाईए। गुरप्रसादि जेठ पंचम सोहँ नाम ध्याईए। गुरप्रसादि गुरसंगत प्रसाद कराईए। गुरप्रसादि दरगाह विच गुर माण दवाए। गुरप्रसादि गुर साचा सच बचन लिखाए। गुरप्रसादि सतिजुग मार्ग आप चलाए। गुरप्रसादि धन्न गुरसिख जो गुर चरनी लाए। गुरप्रसादि धन्न गुरसिख खड़े दर सीस झुकाए। गुरप्रसादि अज्ज दिन वडभागी, महाराज शेर सिँघ अवतार आए। गुरप्रसादि जेठ पंचवी होवे वडभागी, मातलोक प्रभ जोत जगाए। गुरप्रसादि गुर कर्म विचारया। गुरप्रसादि गुरसिक्खां गुर जन्म संवारया। गुरप्रसादि गुर कलिजुग पार उतारया। गुरप्रसादि गुर पूरे सद बलिहारया। गुरप्रसादि जेठ पंजवीं जगत उधारया। गुरप्रसादि प्रगटे महाराज शेर सिँघ सदा बलिहारया। गुरप्रसादि गुरसिक्खां गुर पार उतारया। गुरप्रसादि गुरसिख नाउँ गुर रसन उचारया। गुरप्रसादि सोहँ नाउँ भगत भण्डारया। गुरप्रसादि कट्टे हउमे रोग, किल विख पार उतारया। गुरप्रसादि गंवाए काया रोग, गुरसिख जन्म संवारया। गुरप्रसादि जिथ्थे सोहे भगत गुर पूरे बलिहारया। गुरप्रसादि मिली वधाई, जेठ पंचम प्रभ दर्शन पा ल्या। गुर प्रसादि होए दर परवान, जिन्हां महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिका ल्या। जेठ पंचम प्रभ जोत आकार। कलिजुग देवे जीव उधार। रोग सोग प्रभ कटणेहार। होए निमाणा चल आए दरबार। सोमा सोमा झिरे अपार। गुणवन्त प्रभ नार प्यार। वांग अहल्या दित्ती तार। प्रभ जोत होवे देह आधार। सर्ब सुख पंज तत्त विचार। काम क्रोध लोभ मोह प्रभ देवे मार। रसना सिमरे प्रभ निरँकार निरँकार। आत्म शांत होए जगत उधार। गुर साचा कलू कर्म विचार। सद बख्शिंदा सदा दातार। महाराज शेर सिँघ देवे कन्या तार। हित चित गुर चरन प्यार। सर्ब सूख गुर नाम द्वार। गुर रंगण नाम रंग मजीठ प्यार। सोमा गंवाए नाम, नाम सरबजीत रखाया। महाराज शेर सिँघ हो दयाल, देह दा दुःख गंवाया। सोहँ शब्द दे ज्ञान, जेठ पंचम शब्द जणाया। गुर पूरे एह बणत बणाई। उत्तों अद्धी रात विहाई। गुर पूरे एह खेल रचाई। दुनियां सुंञ मसाण सवाई। भगत सोहिन गुर दर्शन पाई। गुर पूरे एह बूझ बुझाई। ज्ञान विहूणा कोए ना जाई। नाउँ लईए दुःख डेरा ढाई। गुरसंगत प्रभ मिले वधाई। कलिजुग मिले जिन्हां रघुराई। गुरसिक्खां गुर नींह रखाई। नाम निरँजण रंग दए चढ़ाई। चन्द सूरज जिंनां तेज़ सवाई। उच्च पदवी गुरसिख ने पाई। जिथ्थे ईश्वर रिहा समाई। बिन बाती बिन तेल होए जोत रुशनाई। प्रभ अगम्म अपार, धरत धवल आकाश बणाई। महाराज शेर सिँघ सिख निवास डुब्बदे लए बचाई।

१२७
०१

गुर गहर गम्भीर गुर सागर। सिख निर्मल कर्म होए उजागर। आए चरन द्वार प्रभ देवे आदर। कलिजुग रक्खे आप महाराज शेर सिँघ भगत उजागर। भगतिहीण जो दर ते आया। सोहँ नाम दे पार तराया। जरम कर्म धर्म प्रभ लेख लिखाया। घर मंगल विच देह वखाया। निजा नंदन सुख आत्म पाया। जगत जोत प्रभ दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ सदा अडोल जिस चरन लगाया। चरन कँवल गुर कर प्रनाम । अन्त काल प्रभ दर्शन पान। विच बैकुण्ठ जाण बबाण। प्रभ जोत सरूप गुरसिख जोत मिल जाण। सोहँ पुरख सुजान कलिजुग सोहँ गाण। जगत उधारे आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। भगत भगवान सदा है एका। भगत जनां है मां पिउ बेटा। भगत जनां गुर पूरे टेका। महाराज शेर सिँघ पसर अनेका। गुर पूरा अपर अपारया। विच पाताल नैण मुँधारया। चरन झस्स लच्छमी मन हँकार वधा ल्या। मन में आए माण मैं प्रभ सुखआसण सवा ल्या। प्रभ सदा अडोल ना किसे डुला ल्या। प्रभ सदा अतोल ना किसे तुला ल्या। दे के सच ज्ञान माया भरम गवा ल्या । प्रभ सदा अनूप इक्क रंग समा ल्या। आप सदा है जाग जगत सवा ल्या। विच देस पाताल प्रभ बाशक सेज सवा ल्या। विच मात प्रभ बणत बणाए। जुगो जुग जोत प्रगटाए। धार देह प्रभ जगत भुलाए । प्रगट जोत प्रभ भगत तराए। सिद्ध सादक बैठे ताड़ी लाए। रखीश्र मुनीश्र रहे बिल्लाए। जप तप हठ विच प्रभ नज़र ना आए। कोटी

१२८
०१

कोट बहि सन्त समाधी लाए। हरि दर्शन तों सभ फिरत तिसाए। निउली कर्म कर कष्ट उठाए। आत्म सुध पवित हो जाए। रतन अमोलक देह में पाए। लाल गुलाल प्रभ रंग चढ़ाए। बिन कर्म प्रभ नज़र ना आए। पूरब जन्म प्रभ लेखे लाए। गुरसिख ते कलिजुग दया कमाए। दे दरस अपार सिक्खी सिख तराए। खोलू हरि का द्वार गुर पुरी पुचाए। देवे जन्म सुधार, जोत संग जोत मिलाए। सिख उतारे पार, फिर जन्म ना पाए। गुर बिन कवण करे अधार, सचखण्ड वखाए। महाराज शेर सिँघ गुर करतार, गुरसिक्खां गुर धाम पुचाए। निरँजण जोत ईश्र आकार। विच आकाश प्रभ जोत चमत्कार। सदा अडोल रहे निराधार। बिन बाती बिन तेल बाती जगे आपार। डगमग जोत जगे जोत, उनन्जा पवण सिर चले छत्र झुलार। जोत सरूप जोत प्रभ उपजे, जोत जगत प्रभ देत अधार। सर्ब तांईं प्रभ देवे माण, चन्द सूरज सभ करन निमस्कार। महाराज शेर सिँघ इक्क सरूप, तीन लोक रक्खे जोत अधार। सो वड्डा जिस प्रभ जोत जगाए। सो वड्डा जिस भरम चुकाए। सो वड्डा जिस सोहँ शब्द सुणाए। सो वड्डा जिस गोझ ज्ञान खुलाए। सो वड्डा जिस रंगण नाम चढ़ाए। सो वड्डा जिस प्रभ दरस दिखाए। सो वड्डा जिस प्रभ चरनीं लाए। सो वड्डा जिस जन्म जन्म दी सोझी पाए। सो वड्डा जिस भिख्या नाम दी पाए। सो वड्डा जिस प्रभ कर्म कमाए। सो वड्डा जिस नर नरायण माण दवाए। सो वड्डा जो संगत रल जाए। सो

वड्डा चरन कँवल विच सेव कमाए। सो वड्डा जिस महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ रखाए। सो वड्डा प्रभ आप जिस वड्डी वड्याई। सो वड्डा जिस सृष्ट उपाई। सो वड्डा जिस चुरासी लक्ख जून बणाई। सो वड्डा सर्ब जीव जोत जिस जगाई। सो वड्डा जीव जीव विच बैठा ताड़ी लाई। सो वड्डा आप देखे किसे नज़र ना आई। सो वड्डा मात गर्भ में जिस बणत बणाई। सो वड्डा कर अंस आकार विच जोत टिकाई। सो वड्डा जिस देह दीपक करी रुशनाई। सो वड्डा देह में पवण सरूप स्वास चलाई। सो वड्डा अग्नी तेज देह जलाई। सो वड्डा वड्डा प्रभ आप विच देह समाई। सो वड्डा जीव किसे ना सोझी पाई। सो वड्डा जोत आपणी विच टिकाई। सो वड्डा महाराज शेर सिँघ जगत गोसांईं। ऊँच अगम्म अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ प्रगटे निरँकारा। कलिजुग होए जोत चमत्कारा। सतिजुग वरते विच संसारा। गुर पूरे गुरसिख प्यारा। गुर चरन सच्चा गुरदुआरा। गुर अमृत भगत भण्डारा। पी बूंद खुल्हे दसवां दुआरा। देवे दरस विच देह अन्धयारा। ज्ञान जोत होए उज्जयारा। सोहँ शब्द गुरू सच विचारा। महाराज शेर सिँघ निरवैर समारा। प्रभ पूरन समरथ, जिस सर्ब आकारया। प्रभ पूरन समरथ, जिस आपणा आप उपा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, जोत निरँजण नाउँ निरँकार रखा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, तीन लोक समा रिहा। प्रभ पूरन समरथ, किसे आदि अन्त ना पा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ जोत जगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, पताल बाशक सेज सुहा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कुदरत रूप सृष्ट उपा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, ईशर कर आकार ब्रह्मा रूप प्रगटा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, हो प्रतक्ख मुख चार लगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, वेद चार प्रभ जस गा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, आप एक अनेक रंग समा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, लक्ख चुरासी जीव उपा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, बेमुखां तों मुख छुपा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, गुरमुखां कर ध्यान विच्चों पा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, दे जोत अधार दीपक जोत जगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, अमृत बूंद अपार झिरना निझरों आप झिरा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, भगत गुर भेत मुका ल्या। प्रभ पूरन समरथ, जोत प्रभ जोत मिला ल्या। प्रभ पूरन समरथ, दे दरस प्रभ भगत निहालया। प्रभ पूरन समरथ, जुग जुग भेस वटा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, सतिजुग हो मेहरवान ग़रीबां नूं गले लगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, त्रेता प्रगट राम भीलणी भोग लगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, नीचों ऊँच ऊँचों नीच बहा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, सिला छुहाए चरन अहल्या बबाण बिठा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कर के कर्म विचार बंस रावण गालया। प्रभ पूरन समरथ, दे के ब्रह्म ज्ञान बाल्मीक समझा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, दे सखियां दान जामा द्वापर उलटा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, प्रगट जोत अपार कृष्न नाम रखा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कर के खेल अपार बिन्दराबन भाग लगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कीते

चोहल अनेक सखियां खेल रचा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, दित्ते भगत तार जिन रसना गा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, सुदामा दलिद्री दित्ता तार, तन्दल भोग लगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, छड्ड दुर्योधन घर बिदर बिसराम भोजन भोग लगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, द्रोपती दित्ती तार मुकंद मनोहर लखमी नरायण ध्या ल्या। प्रभ पूरन समरथ, अर्जन दे ज्ञान हँकार गवा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, दित्ता भगत तार गीता अठारां ध्याए सुणा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, करनहार वैराट रूप वटा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, मैं हां आप अकथ्थ तेरा नाम वड्या ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कीती सृष्ट सभ भथ्थ थोड़ा भेत रखा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कृष्न भगवान हो समरथ, द्वापर ख़त्म करा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग कर्म विचार, अथर्बण वेद सिखा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, इस नूं दित्ती हार ईशर नाउँ रखा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, दे जोत आधार ईसा मूसा मुहम्मद उपा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, दित्ती मति विभचार भगतां उलटां पन्थ चला ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग आई हार मालक दो बणा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, होए पाप अपार, नानक जोत जगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, सेवा कर अपार अंगद जोत जगा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, अमरदास निथावां अवस्था बिरध प्रभ पा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, होई किरपा अपार दास राम सोढी बंस चला ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कर किरपा अपार अर्जन दरस दिखा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, हरिगोबिन्द भए अवतार सिर छत्र झुला ल्या। प्रभ पूरन समरथ, हरि राए नाम दवाए घर शाह नाम दवा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, हरिकृष्न जगत उधार बाल उमर विच जोत मिला ल्या। प्रभ पूरन समरथ, गुर तेगबहादर हो ब्रह्म विचार ईशर ध्या ल्या। प्रभ पूरन समरथ, होए जगत विचार मक्खण जहाज़ तरा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, प्रगट दसवीं जोत नाम गोबिन्द रखा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कर खेल अपार आपणा आप वखा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, प्रभ ना पाए सार अन्त अन्त समा ल्या। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग कर्म विचार प्रगटे शेर सिँघ निरंकारया। प्रभ पूरन समरथ, ऐसी दित्ती हार दुष्टां आण सँघारया। प्रभ पूरन समरथ, दे के ब्रह्म ज्ञान गुरसिक्खां पार उतारया। प्रभ पूरन समरथ, गुर पूरे हो मेहरवान सिक्खा सिर हत्थ टिका ल्या। प्रभ पूरन समरथ, महाराज शेर सिँघ आप समरथ जामा घनकपुरी विच पा ल्या। प्रगट जोत आप निरँकारा। कलिजुग होए भगत उधारा। सोहण सिँघ गुर चरन दुआरा। भगत वछल प्रभ अपर अपारा। जन्म मरन तों प्रभ सदा न्यारा। आदि अन्त प्रभ एकँकारा। भगत जन दर हरि का दुआरा। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत होए उज्जयारा। जोत निरँजण प्रभ जगत जगाई। प्रगट होए आप रघुराई। गुरमुखां एह बूझ बुझाई। हिरदे रंगण नाम चढ़ाई। चरन लिव लागी, छुटी सर्ब लोकाई। कलिजुग तारे आप, प्रभ भए सरनाई। सोहँ दे ज्ञान, ब्रह्म भेव खुलाई। उपजे शब्द अपार, अनहद धुन वजाई। दरस

देवे कृष्न मुरार, सिर मुकट टिकाई। होए भगत ज्ञान, जिन महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याई। सच्चा सतिगुर सच वरताए। सच सुच्च विच देह समाए। झूठी देह गुर दर ना आए। काया कंचन प्रभ दर्शन पाए। कट्टे हउमे रोग, सति सन्तोख वरताए। उपजे मन ज्ञान, हरि जी दरस दिखाए। कल विच हो कृपाल सिक्खा दी पैज रखाए। कर जोत आकार महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए, जुग उलटाए। जुगो जुग प्रभ खेल रचाया। गया कलिजुग सतिजुग वरताया। सतिगुर पुरख निरँजण प्रभ जोत जगाया। गुर प्रसादि भगतन दर पाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, हरि हरि मंगल गाया। सतिगुर नाम बबाण, गुरसिक्खां पार कराया। सर्ब जोत प्रभ जाण, सर्ब सुख आसण लाया। मूर्ख मुग्ध ना जाणे सार, विच परमेश्वर देह समाया। गुरसिख चतुर सुजान, जिन्हां गुर नाम दिवाया। होवे जगत कल्याण, देह हरि मन्दर सतिगुर पाया। होए आत्म अधार, जोत जगन्दा प्रभ नज़री आया। गुर चरन जाउ बलिहार, कलिजुग आण तराया। महाराज शेर सिँघ प्रगट निरँकार, सोहँ शब्द जपाया। जप सोहँ सर्ब सुख आत्म। शब्द धुन इक्क रंग महात्म। प्रभ अबिनाश ना होवे खात्म। महाराज शेर सिँघ जीव जोत जगातन। जीव जोत प्रभ आप जगाए। मात गर्भ से बाहर कढाए। नौं प्रगट दसवां गुप्त रखाए। कर कर्म विचार, प्रभ सरनी लाए। देवे जन्म संवार, गुरसिक्खां प्रभ चरनीं लाए। महाराज शेर सिँघ भगत उधार, बैठा भेत छुपाए। जगन्नाथ प्रभ खेल रचाया। छड्ड देह जोत रूप समाया। कलिजुग अन्तिम अन्त प्रभ दरस दिखाया। राम भए कृष्न ईश्वर शेर सिँघ अख्वाया। पूरन हो अवतार, शेर सिँघ सोहँ शब्द चलाया। एक प्रभ आप एक है, सृष्टा वरन चार इक्क रंग समाया। जीव एक विच ब्रह्म सरूपा, एक जोत सर्ब जीव जिवाया। निमाणयां निताणयां गुर माण दवाया। दे जोत अधार सतिगुर सतिजुग लाया । सतिजुग रथवाही सच्चा सतिगुर मनी सिँघ बणाया। करे जगत उधार, जिस नाम ध्याया। महाराज शेर सिँघ आप निरँकार, जगत एह डंक वजाया। गुर पूरा हो मेहरवान, सभ दुःख मिटाया। मोता ना पावे सार, नाम भगवान रखाया। दे जोत अपार, दीपक महल्ल जगाया। लाए रंग अपार हरि करतार, हो अभेद विच समाया। महाराज शेर सिँघ सच अवतार, भाण्डा भरम गंवाया। हो आप कृपाल, नवां लेख लिखाया। होए जोत अधार, जे गुरसिख गुर नाम वसाया। ऊधम नूं देवां तार, जन्म दा गेड़ चुकाया। बचन जाए जे हार, जून घोगढ़ प्रभ दे लिखाया । मदि मास जे करे आहार, विष्टा मुख रखाया। गुर चरन रक्खे प्यार, कलिजुग माण दवाया। महाराज शेर सिँघ सच अवतार, रूप अनूप वटाया। कदे ना आवे हार, नाम रंग गुर गोबिन्द चढ़ाया। पूरब कर्म विचार, महाराज शेर सिँघ बचन लिखाया। सर्ब कला समरथ, प्रभ आए कल धारया। दे सिक्खा सिर हत्थ, जन्म मरन संवारया। वेख सच्ची वत्थ, सुत्तां माण दवा ल्या। दीपक देह जगाए,

१३१ ०१

दीप सिँघ पार उतारया। जगत उधारन आप, सर्ब गुण माण दवा ल्या। आप प्रभ समरथ, समरथ पूत बणा ल्या। महाराज शेर सिँघ नाम आ वथ, सर्ब नूं पार लँघा ल्या। बेणी कर विचार, शामा शांत बणा ल्या। सुख सागर कर विचार, दुःख भंजन पा ल्या। कदे ना आवे हार, पिट्ठ ते हत्थ टिका ल्या। महाराज शेर सिँघ दे वत्थ, आपणा बिरद संभालया। पंचम रंग एक, इक्क जोत जगा ल्या। महाराज शेर सिँघ सदा बबेक, किसे भेत ना पा ल्या। करे सतिजुग खेल अनेक, मनी सिँघ टेक रखा ल्या। मोता भगत भगवान, जिस प्रभ विच समा ल्या। ऊधम उतरे पार, जे गुर बचन पा ल्या। दीप सिँघ देह अपार, जिथ्थे प्रभ शब्द धुन वजा ल्या। शामे आए सार, जां गुर सिर हत्थ टिका ल्या। पंचम लाए पार, महाराज शेर सिँघ विच समा ल्या। सतिजुग सति सति सति वरताए, सर्ब रंग इक्क समा ल्या। गुर संगत पाया माण, जिस दर्शन पा ल्या। होए सदा जै जैकार, दर आ जिस सीस झुका ल्या। महाराज शेर सिँघ पूरन अवतार, दरगाह भगत वड्या ल्या। गुर पूरा सर्ब गुणतास। सोहँ शब्द भगत प्रकाश। सोहँ शब्द आत्म स्वास। सोहँ शब्द करे ब्रह्म निवास। सोहँ शब्द पावे जुग आस। सोहँ शब्द जीव धरे आस। सोहँ शब्द करे मन दुःख नास। सोहँ शब्द सिख रहे रास। सोहँ शब्द गुर चरन निवास। सोहँ शब्द सदा प्रभ पास। सोहँ शब्द ना गर्भ निवास। सोहँ शब्द जप, ना जम की फास। सोहँ शब्द ना होवे उदास। सोहँ शब्द देह चन्दन प्रभास। सोहँ शब्द ब्रह्म निवास। सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ प्रभ कँवल बिगास। कलिजुग आ जिस नाम चितारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। जेठ पंचम प्रभ जोत अकारया। सर्ब सृष्ट वड हंकारया। जोत सरूप प्रभ पकड़ सँघारया। गुरसिक्खां गुर चरन दरसा ल्या। रल मिल सखियां मंगल गा ल्या। प्रभ अबिनाशी घर मांहि पा ल्या। करे जगत ख्वार बेमुखां मुख भवा ल्या। बाकी होए नास एह धाम अटल्ल रखा ल्या। कलिजुग होवे पार, जिन ए सीस झुका ल्या। सतिजुग देवां माण, खण्ड सच बणा ल्या। देवे वड्डा माण, धरत सुहावे जिथ्थे ताज सुहा ल्या। होवे रंग अपार, २ ३ ४ प्रभ रंग रंगा ल्या। होवे धाम अपार, हाढ़ पंज जिथ्थे गुर उठ बहा ल्या। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अधार, इक्क रंग समा ल्या। सतिजुग बणे धाम न्यारा। सृष्ट सभ करे निमस्कारा। एह सुहाए थान, जिथ्थे गुर चरन दुआरा। सभ दवाए माण, जिथ्थे प्रभ पुरख अपारा। होण दर परवान, मिले आप निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सुहाए सचखण्ड दुआरा। गुर धाम गुर पुरी सदाए। हरि भगत जिथ्थे हरि जस गाए। सुरत शब्द प्रभ मन चित लाए। अनहद धुन राग रमईआ गाए। सुहाई भूमिका जिथ्थे गुर चरन टिकाए। उधरे जीव खड़े दर सीस झुकाए। होए भगत भगवान ब्रह्म दी बूझ बुझाए। हिरदे दे विचार, निजानंद दरस दिखाए। कर्म ना देवे हार, जिन्हां प्रभ दया कमाए। पा सर्ब दी सार,

जिस एह जीव उपाए। सदा कर विचार, जीव जन्त समाए। गुर का शब्द विचार, कुम्भी नर्क ना जाए। मन में धरे ध्यान, जोत ब्रह्म दरसाए। सोहँ भगत बलवान, सोहँ रसना गुण गाए। अन्त जोत मिल जाण, जिन प्रभ दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ कर्म निशान, सर्ब नूं पार कराए। पारब्रह्म प्रभ पाया, जिन धुर कर्म लिखाया। पारब्रह्म प्रभ पाया, कलिजुग आण जिस दरस दिखाया। पारब्रह्म प्रभ पाया, रंग रंगीला माधो सिख विच समाया। पारब्रह्म प्रभ पाया, किरपा कर के गुरसिख बणाया। पारब्रह्म प्रभ पाया, दे शब्द अमोल आपणा भेत खुल्हाया। पारब्रह्म प्रभ पाया, महाराज शेर सिँघ आपणा नाम जपाया। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान शब्द दीबाण। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान तीन लोक एक समान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान खण्ड ब्रह्मण्ड जोत जगाण। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान निहकलंक बलवान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान भगत बख्शान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान, भगत भगवन्त दोए एक समान। बिन भगत गुर दर ना पाण। बिन दर गुर बूझ ना बुझाण। बिन बूझे गुर दरस ना पाण। बिन दरस ना जोत समाण। बिन जोत ना देह धराण। बिन देह ना प्रभ को पाण। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुण गाण। सर्ब सूख रसना हरि गुण गाईए। सर्ब सूख, महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याईए।

१३३
०१

सर्ब सूख दोए जोड़ दर मंगण आईए। सर्ब सूख, दर सीस झुकाईए। सर्ब सूख, एका लिव लाईए। सर्ब सूख, रसना हरि गुण गाईए। सर्ब सूख, नाम पदार्थ पाईए। सर्ब सूख, महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाईए। गुरप्रसादि गुरचरन ध्यान। गुरप्रसादि होए ब्रह्म ज्ञान। गुरप्रसादि गुरमुख मुख पाण। गुरप्रसादि गुर संगत गुर इक्क समान। गुरप्रसादि भगत दर मंगल गाण। गुरप्रसादि महाराज शेर सिँघ तारे पाहन। संगत सतिगुर सति वरताया। सति सन्तोख गुर ज्ञान दिवाया। कर्म जरम पाप देह मिटाया। अविगत अगोचर विच समाया। धन्न गुरसिख रैण सारी जिन मंगल गाया। होए प्रभाती प्रभ रंग राती गुर पूरे एह माण दवा ल्या। सचखण्ड सर्ब गुण अन्तर, पूरन सिँघ जिस पूरब विचारया। पूरब सिख कदे मरे ना जाया। सर्ब सूख प्रभ दे निरंतर, करे ज्ञान फिर अन्धेर ना छाया। सति सति सति गुर संगत, जिन्हां मिल कर हरि जस गाया। रंग रंग देवे नाम प्रभ रंगत, सोहँ शब्द गुर झोली पाया। गया अन्धेरा संसा चूका, शब्द सुरत प्रभ रंग लाया। भगत विचार गुर शरनी लाए, दे दरस कल पार कराया। महाराज शेर सिँघ सर्ब घट वासी, गुरसिक्खां जिन पार तराया।

❊ ६ जेठ २००७ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ❊

गुरशब्द भगतन ज्ञान। गुरशब्द पावे चतुर सुजान। गुरशब्द होवे ब्रह्म ज्ञान। गुरशब्द होवे प्रभ जोत जगाण। गुरशब्द दीपक जोत देह जगाण। गुरशब्द निजानंद सुजान। गुर शब्द आत्म जोत जगाण। गुरशब्द ईश जीव इक्क हो जाण। गुरशब्द गुर एका रंग माण। गुरशब्द गुरमुख हो जाण। गुरशब्द गुर सच निशान। गुरशब्द पावे दरगाह माण। गुरशब्द जगत पार उतरान। गुरशब्द सच घर थान। गुरशब्द गुर दर ते माण। गुरशब्द जोती जोत मिल जाण। गुरशब्द महाराज शेर सिँघ विच भगत समाण। गुरशब्द गुर देवे ज्ञान। गुरशब्द गुरचरन ध्यान। गुरशब्द जीव सोझी पाण। गुरशब्द सच सुच्च समान। गुरशब्द भगतन सुख मान। गुरशब्द महाराज शेर सिँघ मिल जाण। सुरत शब्द गुरचरन प्यार। सुरत शब्द पारब्रह्म संसार। सुरत शब्द पावे मोख द्वार। सुरत शब्द मिल अबिनाशी करतार। सुरत शब्द त्यागे संसार। सुरत शब्द होवे ब्रह्म विचार। सुरत शब्द देह जोत आधार। सुरत शब्द होवे निराधार। सुरत शब्द प्रभ मिले दातार। सुरत शब्द अनहद धुन्कार। सुरत शब्द जगत जोत अपार। सुरत शब्द ना विसरे करतार। सुरत शब्द पेखे महाराज शेर सिँघ जीअ उधार।
१३४ ज्ञान शब्द गुर नाम दृढ़ाया। ज्ञान शब्द सच मार्ग पाया। ज्ञान शब्द सतिजुग चलाया। ज्ञान शब्द सोहँ मुख रखाया। १३४
०१ ज्ञान शब्द तीन लोक दरसाया। ज्ञान शब्द गुर ज्ञान दवाया। ज्ञान शब्द गुर चरन बख्शाया। ज्ञान शब्द जीव सर्ब सुख ०१
पाया। ज्ञान शब्द गुरमुख गुर रंग समाया। ज्ञान शब्द महाराज शेर सिँघ आपणा रूप दरसाया। शब्द रूप प्रभ दरस दिखाए। शब्द रूप सच बूझ बुझाए। शब्द रूप सिख चरनी लाए। शब्द रूप दर सीस झुकाए। शब्द रूप सिर हत्थ टिकाए। शब्द रूप ब्रह्म जोत जगाए। शब्द रूप आत्म भेत खुल्हाए। शब्द रूप महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द दवाए। सर्ब शब्द ईश्र गुण गाया। सर्ब शब्द हरि नाम ध्याया। सर्ब शब्द प्रभ अबिनाश वड्आया। सर्ब शब्द जगत उधार रखाया। सर्ब शब्द महाराज शेर सिँघ जस गाया। सर्ब शब्द गुर निरँजण देउ। सर्ब शब्द गुर नाम सेउ। सर्ब शब्द गुर आत्म देउ। सर्ब शब्द महाराज शेर सिँघ अलख अभेउ। उपजे शब्द मन वज्जे वधाई। उपजे शब्द जीव प्रभ दया कमाई। उपजे शब्द प्रभ जोत जगाई। उपजे शब्द संसा चुक्क जाई। उपजे शब्द मिले रघुराई। उपजे शब्द सर्ब सुखदाई। उपजे शब्द ब्रह्म रूप हो जाई। उपजे शब्द झूठी काया माण दवाई। उपजे शब्द दसवां द्वार खुल्ह जाई। उपजे शब्द अनहद शब्द परमगति पाई। उपजे शब्द महाराज शेर सिँघ जिस उप्पर आप दया कमाई। गुरशब्द अनहद धुन्कार। गुरशब्द प्रभ जोत चमत्कार। गुरशब्द कँवल मुख चरनार। गुरशब्द अमृत बूंद बरसार। गुरशब्द दरस करतार। गुरशब्द दीपक देह उज्जयार। गुरशब्द

जोत निरँजण जगे अपार। गुरशब्द प्रभ दीदार। गुरशब्द सुझे मुरार। गुरशब्द सोहँ निराधार। गुरशब्द जीव बुझे विचार। गुरशब्द जगत उधार। गुरशब्द पाए गुरमुख सार। गुरशब्द गुरसिख लँघाए पार। गुरशब्द महाराज शेर सिँघ जोत अधार। गुरमुख सो जिस नाम चितारया। गुरमुख सो जिस दरस दरसा रिहा। गुरमुख सो जो प्रभ चरन निमस्कारया। गुरमुख सो जिस दे जोत अधारया। गुरमुख सो जिस शब्द धुन्कारया। गुरमुख सो जिस पारब्रह्म विचारया। गुरमुख सो जिस मिले बनवारया। गुरमुख सो जिस रिदे करतारया। गुरमुख सो जिस सोहँ रिदे चितारया। गुरमुख सो जिस मिले राम अवतारया। गुरमुख सो जिस तुठ्ठे कृष्न मुरारया। गुरमुख सो जिस कलिजुग महाराज शेर सिँघ दर्शन पा ल्या। गुरमुख सो जिस गुरू विचारया। गुरमुख सो जिस प्रभ चरन लगा ल्या। गुरमुख सो जिस मदि मास ना रसना ला ल्या। गुरमुख सो जिस निहकलंक कल विच पा ल्या। गुरमुख सो जिस दूख निवारन भगवान बीठलो पा ल्या। गुरमुख सो जिस प्रभ दर माण दवा ल्या। गुरमुख सो जिस मिल हरिसंगत हरि जस गा ल्या। गुरमुख सो जिस प्रभ अबिनाश घर में पा ल्या। गुरमुख सो जिस महाराज शेर सिँघ चरनीं सीस निवा ल्या। गुरमुख सो जिस प्रभ ज्ञान दवा ल्या। गुरमुख सो जिस निजानंद समा ल्या। गुरमुख सो जिस प्रभ दया कमा ल्या। गुरमुख सो जिस सोहँ लिव ला ल्या। गुरमुख सो जिन कलिजुग

१३५ ०१ महाराज शेर सिँघ रिदे ध्या ल्या। गुरमुख सो जिस प्रभ गर्ब निवारया। गुरमुख सो जिस प्रभ दरस दरसा ल्या। गुरमुख १३५ ०१

सो जिस प्रभ प्रगट जोत चमका रिहा। गुरमुख सो लग गुर चरन जन्म संवारया। गुरमुख सो जिस सर्ब घट वासी आण दरसा ल्या। गुरमुख सो जिस महाराज शेर सिँघ संगत विच रला ल्या। गुरचरन लाग सर्ब सुख माणया। गुरचरन लाग पाप मथण मधाणया। गुरचरन लाग माण जाए राणया। गुरचरन लाग मिले दरस निमाणया। गुरचरन लाग आत्म सुख जीव अञ्याणया। गुरचरन लाग अन्तकाल विच बबाण बिठाणया। गुरचरन लाग प्रभ जोत सरूप जोत मिल जाणया। गुरचरन लाग मिटे जगत आवण जाणया। गुरचरन लाग नाम भगत वखाणया। गुरचरन लाग गुर दर मिले निताणया। गुरचरन लाग महाराज शेर सिँघ बैकुण्ठ सुहाणया। गुरदरस सर्ब सुख उपजे, घर पाईए गुण निधान जीउ। गुरदरस सर्ब दुःख बिनसे, प्रभ भगत लै पछाण जीउ। गुरदरस सर्ब सुख उपजे, मिले गुरशब्द निरबाण जीउ। गुरदरस सर्ब दुःख बिनसे, लागा गुरचरन ध्यान जीउ। गुरदरस सर्ब सुख उपजे, प्रभ दे ब्रह्म ज्ञान जीउ। गुरदरस सर्ब दुःख बिनसे, करे किरपा मेहरवान जीउ। गुरदरस सर्ब सुख उपजे, सोहँ शब्द देवे गुर ज्ञान जीउ। गुरदरस सर्ब दुःख बिनसे, मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जीउ। कलिजुग प्रगट जोत निरँजण, सर्ब सृष्ट ते पाई माया। कलिजुग प्रगट प्रभ भए दर्द दुःख भंजन,

बिन गुरसिख किसे दिस ना आया। कलिजुग प्रगटे त्रैलोकी नंदन, बेमुखां तों मुख छुपाया। कलिजुग प्रगट जोत निरँजण, महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। कलिजुग प्रगट जोत निरँजण, छड्ड देह जोत सरूप समाया। कलिजुग प्रगट जोत निरँजण, निहकलंक प्रभ आप अख्वाया। कलिजुग प्रगट जोत निरँजण, जोत रूप हो सिख समाया। कलिजुग प्रगट जोत निरँजण, सोहँ शब्द मार्ग जगत चलाया। कलिजुग प्रगट जोत निरँजण, सतिजुग साचा सच वरताया। कलिजुग प्रगट जोत निरँजण, अचरज खेल जगत रचाया। कलिजुग प्रगट जोत निरँजण, ग़रीबां तांईं गले लगाया।

❊ १४ जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ❊

नाउँ निरँकार महिंमा अपर अपारया। नाउँ निरँकार तीन लोक जोत आकारया। नाउँ निरँकार आपणा आप उपा ल्या। नाउँ निरँकार कुदरत रूप सृष्ट उपा ल्या। नाउँ निरँकार प्रभ जोत, जोत सरूप जगत जगा ल्या। नाउँ निरँकार आपणे विच समा ल्या। नाउँ निरँकार भेत किसे ना पा ल्या। नाउँ निरँकार ब्रह्मा विष्न महेष रसना गा ल्या। नाउँ निरँकार खण्ड ब्रह्मण्ड समा ल्या। नाउँ निरँकार दुःख भंजन नाउँ रखा ल्या। नाउँ निरँकार जोत दीपक विच देह जगा ल्या। नाउँ निरँकार तीन लोक इक्क रंग समा ल्या। नाउँ निरँकार इन्द शिव ब्रह्मा रसना गा ल्या। नाउँ निरँकार चार वेद राग अला ल्या। नाउँ निरँकार रिख मुन निओली आसण कर प्रभ चित्त ला ल्या। नाउँ निरँकार आप अडोल किसे भेव ना पा ल्या। नाउँ निरँकार खण्ड सच सुच आसण ला ल्या। नाउँ निरँकार होवे जोत प्रकाश, बिन तेल दीपक जगा ल्या। नाउँ निरँकार मात आकाश पाताल थिर रहा ल्या। नाउँ निरँकार बाशक सेज सिँघ आसण ला ल्या। नाउँ निरँकार नैण मुँधार लच्छमी चरन झसा ल्या। नाउँ निरँकार प्रभ सद अबिनाश, जगत विनासी बणा ल्या। नाउँ निरँकार प्रभ भरतम्बर, सर्ब जीव समा ल्या। नाउँ निरँकार प्रभ छिन भंगर, भेव जीव ना पा ल्या। नाउँ निरँकार रूप माया जगत उपा ल्या। नाउँ निरँकार मार्ग जग रईअत तों सद गुण बणा ल्या। नाउँ निरँकार ऊँच विच समा ल्या। नाउँ निरँकार जुगो जुग भेस वटा ल्या। नाउँ निरँकार कभी जोत सरूप कभी देह आसण ला ल्या। नाउँ निरँकार सति मेहरवान, सति सति सति वरता ल्या। नाउँ निरँकार भयो राम अवतार, त्रेता रमईआ गुण गा ल्या। नाउँ निरँकार यज़ुर धर जोत निरँजण, कृष्न नाउँ रखा ल्या। नाउँ निरँकार कँवल नैण मुकट बैण महासार्थी आप अख्वा ल्या। नाउँ निरँकार कोटन जीव धर ध्यान, प्रभ अबिनाश दा भेत ना पा ल्या। नाउँ

निरँकार दे प्रभ ज्ञान, भगत अर्जन तरा ल्या। नाउँ निरँकार भयो कृष्न मुरार, गीता ज्ञान गोझ अला ल्या। नाउँ निरँकार कीए खेल अपार, द्वापर भेस वटा ल्या। नांओ निरँकार कलू काल जन कल वरता ल्या। नाउँ निरँकार प्रगट जोत अपार घनकपुरी भाग लगा ल्या। नाउँ निरँकार किसे ना पाई सार, जामा विष्नूं भगवान पा ल्या। नाउँ निरँकार मैं हां विष्नूं भगवान, सर्ब जीव विच समा ल्या। नाउँ निरँकार कलिजुग जामा धार, निहकलंक अख्वा ल्या। नाउँ निरँकार मैं इक्क रंग, बहु रंग जगत वखा ल्या। नाउँ निरँकार प्रगट जोत अपार, विच देह समा ल्या। नाउँ निरँकार सर्ब कला समरथ, सोलां कल विष्नूं भगवान कल वड्या ल्या। नाउँ निरँकार वज्जे शब्द धुन्कार, मनी सिँघ दरस दिखा ल्या। नाउँ निरँकार उपजे शब्द ज्ञान, नेत्र पेख ईश्र सीस झुका ल्या। नाउँ निरँकार जिस ने पाई सार, पल्ला जगत फिरा ल्या। नाउँ निरँकार कलिजुग लै अवतार, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखा ल्या। नाउँ निरँकार गुरसिक्खां दित्ता तार, सोहँ शब्द गुर ज्ञान दवा ल्या। नाउँ निरँकार कलिजुग भगत भण्डार, अमृत बूंद मुख चवा ल्या। नाउँ निरँकार खड़े दर ब्रह्मा विष्न महेष गल पल्ला पा ल्या। नाउँ निरँकार कोट तेतीस दर सीस झुका ल्या। नाउँ निरँकार जोत सरूप कलिजुग खेल रचा ल्या। नाउँ निरँकार छड्ड देह अपार, जोत सरूप विच सिख समा ल्या। नाउँ निरँकार उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिस दर सीस झुका ल्या। नाउँ निरँकार गुरसिक्खां देवे तार, गुण निधान घर आ लेख लिखा ल्या। नाउँ निरँकार आए दर परवान, जिन्हां महाराज शेर सिँघ रिदे ध्या ल्या। नाउँ निरँकार दस पास मिले बनवाल्या। नाउँ निरँकार कल लै अवतार, गुरमुखां गुर दरस दिखा ल्या। नाउँ निरँकार बेमुख पाए ना सार, धक्क परे हटा ल्या। नाउँ निरँकार दरगाह मिले ना माण, जिन्हां गुर तों मुख भवा ल्या। नाउँ निरँकार मातलोक जोत सरूप बचन लिखा ल्या। नाउँ निरँकार गुरसिख ब्रह्म सरूप, ब्रह्म भेत गुर आप मुका ल्या। नाउँ निरँकार दे दरस अपार, भरम मन चुका ल्या। नाउँ निरँकार धरत धवल आकार, तीन लोक समा ल्या। नाउँ निरँकार भगत वछल कृपाल, निमाणयां माण दिवा ल्या। नाउँ निरँकार कलिजुग देवे तार, जिन गुरचरनीं सीस झुका ल्या। नाउँ निरँकार किरपा निध सर्ब लवे सार, दुखीआं दु:ख गंवा ल्या। नाउँ निरँकार प्रभ आए, जोत सरूप विच देह समा ल्या। नाउँ निरँकार बिन नब्ज रसना बचन लिखा ल्या। नाउँ निरँकार गुरसिख उधरे पार, जिन्हां हरि जस गा ल्या। नाउँ निरँकार गुरसंगत पाया माण, जिन्हां महाराज शेर सिँघ विच बहा ल्या। नाउँ निरँकार गुरमुखां देवे माण, दरगाह विच बहा ल्या। नाउँ निरँकार अन्तकाल प्रभ दरस दिखा ल्या। नाउँ निरँकार गुरमुखां देवे माण, विच बबाण बिठा ल्या। नाउँ निरँकार कलिजुग देवे तार, पसू प्रेत कर देव बहा ल्या। नाउँ निरँकार गुरसिक्खां देवे माण, चन्दन वास निम्म महिका ल्या। नाउँ निरँकार गुरसिक्खां

१३७ ०१

देवे माण, सिक्खा संग बेमुख तरा ल्या। नाउँ निरँकार आप प्रभ जोत सरूप, जीव विच जोत मिला ल्या। नाउँ निरँकार धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन्हां महाराज शेर सिँघ चरन लगा ल्या। नाउँ निरँकार कलिजुग जामा धार, आपणा भेस वटा ल्या। नाउँ निरँकार किसे ना पाई सार, माया जगत भुला ल्या। नाउँ निरँकार भुल्ले जीव गंवार, बिरथा जन्म गंवा ल्या। नाउँ निरँकार सच्चा एह गुर धाम, जिथ्थे प्रभ जोत जगा ल्या। नाउँ निरँकार बैठ प्रभ अडोल सिँघासण ला ल्या। नाउँ निरँकार कलिजुग जामा धार, विछड़े आण मिला ल्या। नाउँ निरँकार जुगो जुग प्रभ देवे माण, भगत जनां गुरमुख वड्या ल्या। नाउँ निरँकार कलिजुग अन्धघोर, महाराज शेर सिँघ दीपक जोत जगा ल्या। नाउँ निरँकार पापी डुब्बे विच मंझधार, गुरसिक्खां गुर पार लँघा ल्या। नाउँ निरँकार दया करे प्रभ करतार, लक्ख चुरासी गेड़ मुका ल्या। नाउँ निरँकार गुरसिक्खां देवे तार, जन्म मरन जंजाल तुड़ा ल्या। नाउँ निरँकार कर किरपा अपार, गर्भ वास ना फेरा पा ल्या। नाउँ निरँकार कलिजुग जामा धार, सिक्खां नूं चरन लगा ल्या। नाउँ निरँकार दे ब्रह्म ज्ञान, शब्द रूप प्रभ दरस दिखा ल्या। नाउँ निरँकार वज्जे शब्द धुन्कार, अनहद शब्द मन वजा ल्या। प्रभ सरनाई दूख बिनासे। प्रभ सरनाई आत्म जोत प्रगासे। प्रभ सरनाई निन्दक दूत गल फासे। प्रभ सरनाई गुरसिख होई बन्द खलासे। प्रभ सरनाई जगत गंवाया विच हासे। प्रभ सरनाई भुल्ली लोकाई
१३८
०१
वेख जगत तमाशे। प्रभ सरनाई मिले प्रभ अबिनाशे। प्रभ सरनाई सोहँ शब्द गूंज गुंजार आकाशे। प्रभ सरनाई दरगाह गुरसिख
१३८
०१
सभ आसे। प्रभ सरनाई गर्भ जून ना वासे। प्रभ सरनाई सिख होवे ना नर्क निवासे। प्रभ सरनाई अन्त काल होए सुखी स्वासे। प्रभ सरनाई गुर चरन कलिजुग रहिरासे। प्रभ सरनाई महाराज शेर सिँघ गुरसिख दे पासे। प्रभ सरनाई प्रभ कर्म लिख्त लिखासे। प्रभ सरनाई छुट्टे जगत भोग बिलासे। प्रभ सरनाई निरँजण जोत आकाशे। प्रभ सरनाई दरस सर्ब निवासे। प्रभ सरनाई सोहँ शब्द सर्ब गुणतासे। प्रभ सरनाई खण्ड सच निवासे। प्रभ सरनाई महाराज शेर सिँघ कलिजुग करे बन्द खलासे। गुरचरन सेव पारब्रह्म प्रभ पाईए। गुरचरन सेव गुण निधान घर दरसाईए। गुरचरन सेव जन्म जन्म दे पाप गंवाईए। गुरचरन सेव दुःख देह प्रभ गंवाईए। गुरचरन सेव सच सुच्च इक्क रंग समाईए। गुरचरन सेव रंग मजीठ झूठी देह चढ़ाईए। गुरचरन सेव सोना कंचन इक्क दरसाईए। गुरचरन सेव सोहँ शब्द ज्ञान दवाईए। गुरचरन सेव महाराज शेर सिँघ दर्शन पाईए। गुरचरन सेव विच्चों हउमे मैल गंवाईए। गुरचरन सेव चरन कँवल केस चवर झुलाईए। गुरचरन सेव कलिजुग निहकलंक दरसाईए। गुरचरन सेव फिर जन्म ना पाईए। गुरचरन सेव अन्त काल प्रभ जोत मिल जाईए। गुरचरन सेव महाराज शेर सिँघ घर मांहि पाईए।

❊ १५ जेठ २००७ बिक्रमी जेठूवाल ❊

कलिजुग किया खेल अपारा। जोत जगाई अपर अपारा। सोहँ शब्द भगत भण्डारा। महाराज शेर सिँघ दर सच दुआरा। प्रगट जोत आप निरँकारा। अन्त ना पाए प्रभ पारा वारा। कुदरत रूप सभ सृष्ट पसारा । लक्ख चुरासी जून आकारा। जोत निरँजण विच निराधारा। मूर्ख मुग्ध ना प्रभू विचारा। गुरसिक्खां मन शब्द उज्जयारा। उपजे राग होए धुन्कारा। दे दरस गुर पार उतारा। प्रभ अबिनाशी ठाकर तुमारा। सेवक चरन प्रगट जोत झमकारा। झूठी देह होए दीपक उज्जयारा। सोहँ वणज कर बण वणजारा। प्रगट भयो घर दातारा। गुरमुखां जिस पार उतारा। महाराज शेर सिँघ सद बलिहारा। गुर पूरे तों सद बलि जाईए। निहकलंक निज घर मांहि पाईए। देह दीपक आत्म जोत जगाईए। खुल्हे द्वार दर गुर दा पाईए। छुटे त्रैकुटी कँवल नाभ खुल्हाईए। झिरना झिरे झर झर से अमृत बूंद मुख चवाईए। होए तृप्त शांत मन, गुर पूरे दा दर्शन पाईए। होए कृपाल आप प्रभ ठाकर, गुर चरन लाग सेव कमाईए। जगत उधार सर्ब सुख सागर, मोहण माधव में रंग मजीठ चढ़ाईए। कलिजुग कर्म होए उजागर, महाराज शेर सिँघ सरन तकाईए। सरन पड़े प्रभ अन्तरजामी, जोत सरूप जोत मिल जाईए। सरन पड़े प्रभ अन्तरजामी, हो जोत रूप इक्क रंग समाईए। सरन पड़े प्रभ अन्तरजामी, जन्म मरन दु:ख कटाईए । सरन पड़े प्रभ अन्तरजामी, गुण निधान दरस दरसाईए। सरन पड़े प्रभ अन्तरजामी, उपजे ज्ञान विकार तजाईए। सरन पड़े प्रभ अन्तरजामी, भगत जनां संग रल जाईए। सरन पड़े प्रभ अन्तरजामी, बैकुण्ठ धाम बैठ आसण लाईए। सरन पड़े प्रभ अन्तरजामी, महाराज शेर सिँघ कलिजुग पार तराईए।

१३६
०१

❊ १८ जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ❊

गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, अमृत बूंद मुख चवाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, कँवल नाभ मुख खुल्हाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, अमृत नाम देह में पाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, जोत निरँजण जीव जगाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, प्रभ जोत सरूप जोत मिल जाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, निजानंद मांहि समाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, हो विस्माद ना अंग समाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, खण्ड ब्रह्मण्ड इक्क हो जाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, भव सागर पार तर जाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, मिल साध संगत हरि जस गाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, गुर चरन मन बिग्साईए। गुरसिख चातृक

सदा बिल्लाए, धन्न धन्न धन्न गुर रसना गाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, सोहँ नाम गुर दर ते पाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, हरि जू हरि हरि हरिमन्दर मांहि पाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, कर दरस प्रभ भरम भउ गंवाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, प्रभ दरस फिर जन्म ना पाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, मिल गुर अन्त काल ना काल सताईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, कलिजुग निहकलंक शरन तकाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, गुण निधान घर निज मांहि पाईए। गुरसिख चातृक सदा बिल्लाए, महाराज शेर सिँघ रिदे समाईए। कलिजुग प्रगट ओंकारा। सोहँ शब्द सतिजुग आपारा। तीन लोक होवे धुन्कारा। गुरमुखां मन होए विचारा। गुरसिक्खां मन हरि का दुआरा। नाम गुर अमृत जल धारा। सर्ब सूख देवे निरँकारा। महाराज शेर सिँघ प्रगट सच अवतारा। कलिजुग प्रगट आप प्रभ अबिनाशी। गुरसिक्खां करे बन्द खुलासी। बेमुखां गल जम की फाँसी। जरम हार गए कुम्भी नर्क पड़े शराबी मासी। गुरसिख गुरचरन रहिरासी। कलिजुग मिल्या प्रभ सर्ब घट वासी। रिद्ध सिद्ध होवे सिक्खां दासी। प्रगट भयो घनकपुर वासी। जोत निरँजण सदा अबिनाशी। महाराज शेर सिँघ लग शरन साध संगत तर जासी। साध संगत गुर माण दवाया। घर घर सोहँ शब्द सुणाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, प्रगट हो जिस दरस दिखाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कलू काल अन्त आण कराया। धन्न धन्न धन्न गुर चरन सेव, मोहण माधव जिन घर मांहि पाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, छड देह जोत रूप समाया। धन्न धन्न धन्न सर्ब अभेव, कलिजुग निहकलंक अख्वाया। धन्न धन्न धन्न प्रभ गुरदेव, लोकमात बैकुण्ठ धाम बणाया। धन्न धन्न धन्न प्रभ गुरदेव, विछड़यां जिन चरनीं लगाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गुरसिक्खां गुर माण दिवाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गुरसिक्खां गुर सच दरसाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, जोत रूप सभ खेल रचाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, फूल वरखा सिर सिक्खा लाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गण गंधर्ब चरनीं सीस निवाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, तेतीस करोड़ खड़े दर सीस झुकाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कलिजुग आ सिख वड्आया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, सोहँ दे ज्ञान दीपक फेर जगाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कलिजुग लए तार चरन जिस सीस झुकाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, पारब्रह्म परमेश्वर हो घर ठांडे आया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कोट अपराधी तार साध संगत विच मिलाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, देवे चरन निवास जिन्हां इक्क मन ध्याया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, दे के ब्रह्म ज्ञान अन्ध अज्ञान गंवाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, अमृत दे भण्डार दुखियां दा दुःख गंवाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, निन्दकां सिर छार कोट जन्म घोगढ़ दा पाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, चार जुग होए ख्वार, विष्टा मुख रखाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, मन में करे गुमान कूड़

कुटम्ब गिराया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, बेमुख ना करे पछाण जमां दे वस पवाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गंवाए जन्म हार सूकर जून लिखाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार भगत जनां नूं पार लँघाया। धन्न सिख जिस नाम चितारया। गुर पूरा जिस कर्म चितारया। गुर पूरा जिस पार उतारया। धन्न सिख जिस प्रभ चरनीं निमस्कारया। मिल्या पारब्रह्म प्रभ अपर अपारया। धन्न सिख जिन सोहँ शब्द रसना उचारया। मिले महाराज शेर सिँघ कलिजुग निरंकारया। निरँकार प्रभ जोत जगाई। उलटी खेल कलिजुग वखाई। जोत निरँजण सिख देह समाई। सारी भुल्ली फिरे लोकाई। बिन सिख किसे सार ना पाई। सो जाणे जिस प्रभ दे बुझाई। आदि अन्त प्रभ इक्क हो जाई। सर्ब सृष्ट प्रभ रिहा समाई। आपणा भेव ना किसे जणाई। गुरमुखां शब्द सोझी पाई। कर चरन ध्यान अनहद धुन वजाई। राम रमईआ मन मांहि पाई। कलिजुग आण मिली वड्याई। गुरसिक्खां दी प्रभ बणत बणाई। दरगाह सच्ची सचखण्ड वखाई। गुरसिख गुर पुरी सिद्धाई। जम कंकर कोई नेड़ ना आई। महाराज शेर सिँघ होए सहाई। भगत भगत भगत प्रभ आप वड्आया। सोहँ दे ज्ञान, मन्त्र नाम दृढ़ाया। दे दरस निधान, थिर अटल्ल रखाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, चार जुग गुर माण दवाया। गुरसिक्खां दे के नाम, गुरमुख बाणी नाम धराया। सति पुरख निरँजण प्रभ दाता, सतिजुग सति सति सति वरताया। कलिजुग आण दित्ती वड्याई, निमाणयां तांईं चरन लगाया। तीन लोक होए मुख उज्जल, सोहँ शब्द जिन रसनी गाया। जन्म मरन फिर कदे ना आया। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। गुर दर आण दरस जिस करया। भव सागर प्रभ पार उतरया। दु:ख दलिद्र जगत का हरया। अन्त काल मिले प्रभ आसा वरया। पापी अपराधी संग सिक्खन तरया। सीस छोहे चरन पार उह परया। महाराज शेर सिँघ सर्ब सुख दाता, दरगाह सच्ची अग्गे खड़या। दरगाह सच, सच प्रभ का खेल। दीपक जोत अगम्म, बिन बाती बिन तेल। प्रभ रूप अगम्म, जोत सरूप लए जोत मेल। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ, कलिजुग आण किया जिस खेल। जगत चलायो पन्थ न्यारा, सोहँ शब्द दियो भण्डारा। किरतम नाम रसना उचारा। जगत तपे जिउँ आवा घुमिआरा। भगत दर ठांडे थिर अमृत धारा। अमृत बूंद बरसे कँवल मंञारा। उपजे शब्द मन वज्जे धुन्कारा। निजानंद सुख अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ खोल्ले सिख दस्म दुआरा। दस्म दुआर प्रभ आप खुल्लाए। सिर ते दे के हत्थ सिख नूं सोझी पाए। दे दरस अपार, चरनीं सिख लगाए। भगत वछल भण्डार, अमृत मुख चुआए। किसे ना पाई सार, खेल करतार रचाए। कलिजुग कर्म विचार, जोत सरूप रघुराए। निर्मल देह अनमोल, जिथ्थे प्रभ रिहा समाए। बैठ आप अडोल, रिहा ज्ञान दिवाए। कलिजुग जीव अणभोल, मन दा भरम ना जाए। सतिगुर तोले पूरे तोल, हउमे शब्द

जलाए। एह कलिजुग वक्त अनमोल, फिर हत्थ ना आए। मनों गंवाए विकार, चरनीं सीस झुकाए। भुल्लां लउ बख्शा, घर निरँजण आए । मन में करे हँकार, गुर दी बाण रखाए । मन में करे विकार, देह कुष्टी हो जाए। गुरचरन धरे ध्यान, चन्दन वांग महिकाए। गुरसंगत करे प्यार, अमरापद पाए। गुर शब्द करे विचार, अज्ञान अन्धेर गंवाए। महाराज शेर सिँघ रिदे चितार, स्वच्छ सरूप दरस दिखाए। स्वच्छ सरूप रंग मेरा जाणो। प्रभ रंग एक, परवेश अनेक वखाणो। सोहँ जपे नाउँ, उपजे ब्रह्म ज्ञानो। मन में चितवे नाउँ, दरस पावे ठानो। गुर चरन करे प्यार, महाराज शेर सिँघ तोड़े अभिमानो। अबगत अगोचर प्रभ आप अख्वावे। शरन आए दी पैज रखाए। किरपा करे निराहार, सर्ब जीवां विच निरवैर समावे। करे खेल अपार, जुगो जुग जोत जगावे। आए आपणा बल धार, चतुर्भुज कहावे। भगतां देवे तार, स्वामी समरथ अख्वावे। दुष्टां देवे मार, नक्क नत्थ पवावे। निमाणयां देवे तार, जिन्हां गुर चरन लगावे। लै कर्म विचार, जिन्हां सिर हत्थ टिकावे। बेमुख गए हार, दर मंगण भिख ना पावे। डुब्बे मुग्ध गंवार, दर दर चोटां खावे। कर्मां दित्ती हार, जम दर बद्धा जावे। गुरसिख महिंमा अपर अपार, सचखण्ड समावे। जिथ्थे प्रभ आकार, गुर पुरी गुर धाम अख्वावे। महाराज शेर सिँघ नाम बाबण गुरसिख बैकुण्ठ पुचावे।

१४२ ०१

१४२ ०१

❊ १६ जेठ २००७ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ❊

कर्म कर गुर कर्म विचारया। कर किरपा गुर पार उतारया। जोत निरँजण सद बलिहारया । सतिजुग मेहरवान सद निमस्कारया। त्रेता राम अवतार, द्वापर कृष्न मुरारया। कलिजुग लै अवतार, महाराज शेर सिँघ निरंकारया। कलिजुग कर्म विचार, गुरसिख पार उतारया। होवे भवजल पार, प्रगट भए जिथ्थे प्रभ जोत अधारया। गुर चरन जाउ कुरबान, जिस एह खेल रचा ल्या। चले खेल जगत अपारा। तीन लोक प्रभ करे निमस्कारा। प्रगट जोत जगत उज्जयारा। मनमुखां सद मन अन्धयारा। गुरमुख बूझे कर विचारा। दे दरस गुर कलिजुग उधारा। दीना नाथ प्रभ जोत चमत्कारा। घट घट वासी बैठा अगम्म अपारा। सर्ब सूख गुर चरन दरसारा। करे देव मूर्ख मुग्ध गंवारा। प्रभ अबिनाशी सदा सदा सदा निमस्कारा। प्रभ अबिनाशी प्रगटे कल धारा। कलिजुग आए जोत प्रभ धारे। खण्ड ब्रह्मण्ड सदा निमस्कारे। तीन लोक गुर चरन दुआरे। गुरसिख गुर दरस पार उतारे। मिले जस सच हरि के दुआरे। झूठे सारे जगत पसारे। महाराज शेर सिँघ जोत सदा सदा सदा चमत्कारे। चमत्कार जोत गुर दिया। गुरसिक्खां नाउँ गुर बीआ। दरगाह होवे सुखी सुहेला

जिया। नाम अंमिउं रस गुर चरनीं पिया। सोहँ शब्द ज्ञान गुर दिया। उपजे ज्ञान गुर ठांडा थीआ। महाराज शेर सिँघ गुरसिख उधारे, मुख जगत उज्जल किया। गुरमुख नाउँ जगत उज्जयारा, जोत निरँजण सद चमत्कारा। गुरमुख नाउँ जगत उज्जयारा, आत्म दरस सदा गुर दुआरा। गुरमुख नाउँ सदा मुख उज्जल, वज्जे शब्द सोहँ धुन्कारा। गुरमुख नाम सदा मुख उज्जल, कलिजुग किया पार उतारा। गुरमुख नाम सदा मुख उज्जल, अन्त काल प्रभ जोत मंझारा। गुरमुख नाम सदा मुख उज्जल, धाम बैकुण्ठ मिले गुर दरबारा। गुरमखां प्रभ दे वड्याई, महाराज शेर सिँघ घर पतित उधारा। पतित उधारन है भव खण्डन। पतित पावन दुःख भय भंजन। प्रगट भयो त्रैलोकी नंदन। गुरसिख जगत महिकाए वांग चन्दन। दोए जोड़ करो गुर चरन बन्दन। महाराज शेर सिँघ प्रगटी जोत निरँजण। प्रगटी जोत प्रभ निरविकार। सर्ब जीव प्रभ जोत अधार। लक्ख चुरासी माणस उत्तम वीचार। कलिजुग भुल्ले प्रभ पाई ना सार। दर दर लूझे होए जगत ख्वार। बिन गुर कोई ना लावे पार। झूठी दुनियां झूठा पसार। सद अबिनाशी प्रभ आप निरँकार। खण्ड ब्रह्मण्ड जिस जोत अधार। माया रूप सृष्ट पसरिओ पसार। कलिजुग देवे हार, जिया कर्म विचार। गुरसिख देवे तार, जिन्हां गुर चरन प्यार। उत्तम दे ज्ञान कर दए उधार। दर आए देवे तार, महाराज शेर सिँघ प्रगट नर अवतार। नर नरायण आप प्रभ आया। निहकलंक

१४३
०१

जोत रूप अख्वाया। सोहँ शब्द गुर डंक लगाया। चक्र सुदर्शन बाण बेमुखां लाया। दे के ब्रह्म ज्ञान गुर गुर गुर दिवाया। दे के सच निवास सचखण्ड पुचाया। छोड जगत प्रभास, जोत संग जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ सद बलिहार, कर्म विचार गुर कर्म तराया। गुर गोबिन्द गुर ज्ञान दवाया। प्रगट जोत मृगिन्द, अचरज खेल रचाया। कलिजुग सर्ब नरिंद, निहकलंक अख्वाया। महाराज शेर सिँघ सद बख्शंद, प्रगट हो सिख तराया। धन्न गुरसिख दया कमाए। धन्न गुरसिख चरन लगाए। धन्न गुरसिख घर जोत प्रगटाए। धन्न गुरसिख हरि हरि हरि नज़री आए। धन्न गुरसिख मुख उजल जगत कराए। धन्न गुरसिख लग्गी चरन तोड़ निभाए। धन्न गुरसिख टुट्टी गंढुणहार गंढु वखाए। धन्न गुरसिख घट घट रिहा समाए। धन्न गुरसिख कलिजुग जोत घनकपुरी प्रगटाए। धन्न गुरसिख छड्ड देह जोत रूप हो जाए। धन्न गुरसिख अन्त काल कल लए खपाए। धन्न गुरसिख वाहवा सतिजुग साचा लाए। धन्न गुरसिख सोहँ दे ज्ञान सभ सिख तराए। धन्न गुरसिख रंग रंगीला माधो हरि रंग समाए। धन्न गुरसिख पारब्रह्म परमेश्वर अन्तरजामी आप अख्वाए। धन्न गुरसिख मोहण माधव कृष्न मुरार जोत प्रगटाए। धन्न गुरसिख अबिनाशी अबिगत अगोचर हर थाएँ समाए। धन्न गुरसिख कोट जन्म दे विछड़े कलिजुग लए मिलाए। धन्न गुरसिख गुरसिक्खां देवे तार महाराज शेर सिँघ प्रगट भगत वड्याए। सो

वड्डा जिस प्रभ वड्आया। सो वड्डा जिस प्रभ दरस दिखाया। सो वड्डा जिस रसना हरि हरि हरि गाया। सो वड्डा नर नरायण घर मांहि पाया। सो वड्डा जिस भाण्डा भरम चुकाया। सो वड्डा झूठी देह प्रभ साचा पाया। सो वड्डा जो गुर चरन चित्त लाया। सो वड्डा जिस महाराज शेर सिँघ चरनीं लाया। गुरचरन सदा नरायण। मिले आप लक्खमी नरायण। प्रगट भए सद नरवैण। गुरसिख गुर चरन तरायण। बेमुख भवजल विच चोटां खायण। निन्दक दुष्ट सिर खेह पवायण। मानी अभिमानी नर्क निवास प्रभ लिखायण। करो दरस गुरचरन दुआरे, प्रगट भयो महाराज शेर सिँघ नर नरायण। नर नरायण जगत प्रभ आया। धार खेल चतुर्भुज कहाया। सावल सुंदर जामा उलटाया। कँवल नैण सिर मुकट सजाया। महासार्थी प्रभ आप अख्वाया। उत्तम दे ज्ञान, अर्जन धीर धराया। कलिजुग लै अवतार, शेर सिँघ नाम रखाया। छड्डी देह अपार, सिख विच जोत समाया। दित्ता खोल्ह भण्डार, गुरमुखां गुर राग सुणाया। चार जुग देवे माण, सुरत शब्द मन वसाया। होवे बैकुण्ठ वास, सोहँ रसना गाया। कलिजुग होई रहिरास, जिन महाराज शेर सिँघ दर्शन पाया। कलिजुग आण प्रभ दरस दिखावे। गुर चरन संग जो सीस लग जावे। वांग अहल्या सिला तर जावे। मिले अन्त बबाण, दरगाह सच पुचावे। होवे उत्तम धाम, जिथ्थे जोत निरँजण जगावे। महाराज शेर सिँघ गुर पूरा मेहरवान, सिख जोत गुर विच मिलावे। गुर की जोत जगत ना जाणे। गुर की जोत बैकुण्ठ रहाणे। गुर की जोत सदा डगमगाणे। गुर की जोत हरि रंग माणे। गुर की जोत उपजे जीव अञ्याणे। गुर की जोत सर्ब जून समाणे। गुर की जोत भेव गुरू ही जाणे। गुर की जोत महाराज शेर सिँघ चले आपणे भाणे। भाणा जगत प्रभ आप वरताया। आपणा भेव ना किसे जताया। प्रगटे जोत अपार, कल दा माण गंवाया। सतिजुग दित्ता माण, सोहँ शब्द सुणाया। सुर असुर प्रभ देवे तार, जिन्हां चरनीं सीस झुकाया। होवे ब्रह्म सरूप, जिन्हां पारब्रह्म प्रभ पाया। प्रभ है रंग अनूप, धरत धवल आकाश समाया। गुर पूरा वड्डा भूप, सृष्ट रंग रंगाया। महाराज शेर सिँघ महिंमा अनूप, प्रगट जोत जिस जुग कल उलटाया। कलू काल गुर कर्म विचारया। कुकर्मां दित्ती हार, डोबे विच मंझधारया। जगत उधारे आप, सतिजुग लावे सच निरंकारया। सभ नूं देवे तार, ऊँच नीच इक्क रंग मुरारया। महाराज शेर सिँघ दरस अपार, मिले भगत वणजारया। गुरसिख दान देवे गुर पूरा। समरथ पुरख अबिनाशी उतरे मन वसूरा। सर्ब थाएँ प्रभ जोत समाई, सोहँ शब्द ना ज्ञान अधूरा। वाजा अनहद तूरा लखा ना जाए पारब्रह्म परमेश्वर कलिजुग प्रगट महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा। सति सन्तोख प्रभ गुरसिख दिवाया। सिमरे मेरा नाम, कदे मरे ना जाया। दरगाह मिले थाउँ, जिस गुर चरन लगाया। झिरना झिरे अपार, शब्द ज्ञान दवाया। सोहँ शब्द उज्जयार, देह अंध्यार मिटाया। महाराज शेर सिँघ

भगत प्यार, लग चरन तराया। हरि रंग हरि भगतां माणया। हरि रंग गुरमुखां मन सदा समाणया। हरि रंग हर जीव प्रभ जाणया। हरि रंग प्रभ जोत जीव जन्त अञ्याणयां। हरि रंग ना बूझे भुल्ला प्रभ भुलाणया। हरि रंग जाणे जिस प्रभ जाणया। हरि रंग प्रभ पूरा, महाराज शेर सिँघ हरि रंग वखाणया। भगतां हरिजू हरि प्यारा। हरि जू जुगो जुग जोत प्यारा। कलिजुग प्रगटी जोत शेर सिँघ निरँकारा। सोहँ शब्द चलत अग्गे जुग चारा। गुरमुख नाउँ गुरबाणी गुरमुख उचारा। कलिजुग किरतम कर्म प्रभ आप विचारा। दे दरस सिख पार उतारा। दीनां नाथ सदा दुःख भंजन, महाराज शेर सिँघ कल अवतारा। सोहण बंक द्वार, जिथ्थे गुर दरस दिखाया। सोहण बंक द्वार, प्रगट जोत निरँजण राया। सोहण बंक द्वार, गुरसिख घर गुर भोग लगाया। सोहण बंक द्वार, जिथ्थे मिल संगत हरि जस गाया। सोहण बंक द्वार, कर किरपा गुर गुरप्रसादि वरताया। सोहण बंक द्वार, भोजन भक्ख लेहज फेहज इक्क रंग मिलाया। सोहण बंक द्वार, जिथ्थे कल्लर कँवल लगाया। सोहण बंक द्वार, प्रगट महाराज शेर सिँघ सर्ब सुखदाया। सर्ब सुख गुर चरन द्वार। अमृत शब्द बरखे गुर निराधार। भयो जोत विच देह विकार। बाणी बोहथ गुर अपर अपार। सच घर वासी प्रगट निरँकार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग भयो पूरन अवतार। सद बख्शंद सद मेहरवाना। गुरसिख घर प्रगटे गुर गुण निधाना। जीव ना पावण सार, माया भुल्ला
१४५ ०१ मूर्ख मुग्ध अञ्याणा। गुरसिक्खां देवे ज्ञान, सोहँ शब्द ज्ञाना। कलिजुग लै अवतार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। १४५ ०१
गुरप्रसाद गुर भेंट चढ़ाईए। प्रभ पूरन जगत तरान, सद भुल्ल बख्शाईए। गुर संगत दे वरताए, भण्डारा भगत खलाईए। महाराज शेर सिँघ दूख निवार, सद चरन लग जाईए। गुर किरपा कर गुर अमृत बरखे, धन्न गुरसिख जिन मुख चुआया। गुर किरपा कर गुर अमृत बरखे, धन्न गुरसिख जिन प्रभ दर्शन पाया। गुर किरपा कर गुर अमृत बरखे, धन्न गुरसिख जिन्हां प्रभ चरन सेव कमाया। गुर किरपा कर गुर अमृत बरखे, धन्न गुरसिख जिन्हां मिल हरि जस गाया। गुर किरपा कर गुर अमृत बरखे, धन्न गुरसिख जिन महाराज शेर सिँघ गुर प्रगटाया। गुर किरपा कर गुर अमृत बरखे, धन्न गुरसिख जिन संग नाम विहूण पार तराया। गुर किरपा कर गुर अमृत बरखे, धन्न गुरसिख जिन प्रभ चरनीं सीस झुकाया। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर सतिगुर पूरा, दर आया जिस पार लँघाया। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर धन्न सतिगुर पूरा, गुण निधान घर लेख लिखाया। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर धन्न सतिगुर पूरा, गुरसंगत गुर अमृत मेघ बरसाया। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर धन्न सतिगुर पूरा, चातृक सिख सदा मन सदा बिललाया। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर धन्न सतिगुर पूरा, अमृत बूंद स्वांत मन शांत कराया। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर धन्न सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां देवे दान, काया रंग मजीठ

चढ़ाया। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर धन्न सतिगुर पूरा, दे दरस अपार बांहों पकड़ कल पार तराया। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर धन्न सतिगुर पूरा, साध संगत जिस दरस दिखाया। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर धन्न सतिगुर पूरा, महाराज शेर सिँघ जगत भगत वड्आया। सचखण्ड गुर सच सिख वखाए। पी अमृत बूंद गुरसिख अमरा पद पाए। होवे चरन निवास प्रभ दर दरस नित पाए। होवे जोत प्रकाश, जोत जीव जोत मिल जाए। भयो राग आकाश, अनहद शब्द मन धुन वजाए। उपजे मन ज्ञान, रसना सोहँ शब्द गुण गाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अवतार, छड्ड देह निरँकार अख्वाए।

✻ १६ जेठ २००७ बिक्रमी अमरजीत सिँघ दे घर पिण्ड जेठूवाल ✻

सुरत शब्द गुर अंजन पाईए। सुरत शब्द प्रभ रंग समाईए। सुरत शब्द सच घर दरसाईए। सुरत शब्द सच बूझ बुझाईए। सुरत शब्द शब्द रूप प्रभ दरसाईए। सुरत शब्द कलिजुग तर जाईए। सुरत शब्द सद अबिनाशी घर मांहि पाईए। सुरत शब्द लक्ख चुरासी गेड़ चुकाईए। सुरत शब्द गुर पूरा घोल घुंमाईए। सुरत शब्द आत्म दरस दरसाईए। सुरत शब्द झूठी देह कंचन बणाईए। सुरत शब्द प्रीत हरि चरन लगाईए। सुरत शब्द काम क्रोध लोभ मोह भस्म कराईए।
१४६ सुरत शब्द थिर घर बैठ ताड़ी लाईए। सुरत शब्द अनहद शब्द मन वजाईए। सुरत शब्द खोल्ह त्रैकुटी दीपक देह जगाईए। १४६
०१ ०१
सुरत शब्द प्रभ जोत सरूप जोत मिल जाईए। सुरत शब्द मन गर्ब गंवाईए। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ संग मिल जाईए। गुरचरन लागे जिस प्रभ दया कमाए। गुरसिख वडभागे प्रभ अबिनाश दरस दिखाए। सभ दुःख नासे, गुर चरन सीस निवाए। भण्डार गुर सतिगुर पासे, अमृत देवे मुख चवाए। कोई ना जाए निरासे, कर आस गुर दर ते आए। कलिजुग भए खुलासे, जिन महाराज शेर सिँघ चरन लगाए। गुर चरन सिख निमस्कारया। हो मेहरवान गुर पार उतारया। जुगो जुग प्रभ जोत अधारया। जोत प्रभ एक, दीपक अनेक जगत उज्जयारया। भयो आप बिबेक, तिस सद सद सद निमस्कारया। कलिजुग भए विसेख, महाराज शेर सिँघ जिस रिदे चितारया। गुर शरन गुरसिख जो आए। हो मेहरवान प्रभ दरस दिखाए। टुट्टी गंढुणहार गोपाल, कलिजुग आण सिख तराए। सद समरथ पुरख अपार, सच सुच्च सतिजुग वरताए। सतिजुग सति सति सति गुर माण दिवाया, मनी सिँघ गुर तख्त बहाए। घट घट प्रभ सर्ब निरंतर, भगतां प्रभ भेत खुल्हाए। कलिजुग आण भए उज्जयारा, रंग रंग रंग प्रभ नाम चढ़ाए। ऐसा होवे खेल अपारा, प्रभ रंग माणा कोई भेव ना पाए। सद सद सद बलिहारा होए जगत उधारा, कलिजुग प्रगट महाराज शेर सिँघ निरँकारा, बांहों पकड़ सिख लए तराए। कलिजुग वणज किया

गुरसिक्खां, नाम पदार्थ गुर दर ते पाया। कलिजुग वणज किया गुरसिक्खां, नाउँ नरायण विच देह समाया। कलिजुग वणज किया गुरसिक्खां, मोहण माधव नर नरायण बीठला घर मांहि पाया। कलिजुग वणज किया गुरसिक्खां, लज्जया उधारन दूख निवारन कर्म विचारन प्रभ अबिनाश दरस प्रभ दरसाया। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, प्रगट जोत अपार, कर्म कर वीचार गुरसिख तराया। गुरसिख गुर दर होवे परवाना। गुरसिख महिंमा कथन महाना। गुरसिख पूरे सद बलि बलि जाणा। गुरसिख मिल्या विष्नूं भगवाना। गुरसिख जाणे गुर बिधनाना। नाना शब्द मन होए ज्ञाना। गुरचरन गुरसिख लाग सदा ध्याना। अन्त काल प्रभ देवे बैकुण्ठ बबाणा। किरपा निधान किरपा निध करता, गुरसिख हो गुरमुख सद जोत मिलाना। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, कलिजुग तारे सिख सोहँ दे ब्रह्म ज्ञाना। ब्रह्म ज्ञान गुर दर ते पाईए। होए शब्द घनघोर, सुरत गुर चरन लगाईए। गुर बिन नाही होर जिस चरन लाग भवजल तर जाईए। कलिजुग दित्ता तार, निहकलंक सद बलि बलि जाईए। भिछक सद सद सद कृपाल, दर आए भिख्या गुर नाम लै जाईए। सर्ब रक्खक महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, तिस चरन लाग जन्म मरन दा गेड़ चुकाईए। गुर चरन जिस किया प्यार। सो जन उधरे विच संसार। गर्भवास ना होवे सच निस्तार। सुफल जन्म माणस जिन गुर चरन प्यार। मिले

१४७ ०१ आप प्रभ बनवाली, सदा सदा सदा रहे निराधार। गुरसिख ना जाए खाली, मन में धरे दरस करतार। जोत निरँजण प्रगट १४७ ०१

अकाली, मातलोक कियो आकार। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां कीनी पूरबक विचार। सो बूझे जिस प्रभ बुझाए। दरस दे अनमोल, भउ भरम गंवाए। सो जाणे करतार, जिस रंग रंगीला रंग नाम चढ़ाए। जगत सच्चा भतार, सर्ब में बैठा आसण लाए। बेमुख ना जाणे सार, ईश्र जोत विच देह रखाए। गुरमुख होए अधार, होए दयाल प्रभ दरस दिखाए। गुरसंगत उतरे पार, हरि हरि हरि मंगल गुर दर ते गाए। भगत उधारन आप गुर सूरा, जुगो जुग आण पैज रखाए। सर्ब वथ देवे प्रभ स्वामी, गुरसिख तोट ना आवे कोए। धन्न धन्न धन्न गुरसिख सतिगुर पूरा, भगत वछल लाज रखाए। सतिगुर सति पुरख निरँजण, सति दीपक सति देह जगाए। सति सति सति वरते विच सतिजुग, सच सुच विच जीव समाए। सोहँ शब्द सर्ब धुन उपजे, एक शब्द सभ सृष्ट समाए। आप एक प्रभ जीव अनेका, अन्त जोत प्रभ एक मिलाए। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, सतिजुग सोहँ शब्द मुक्ख रखाए, सोहँ शब्द सतिजुग हो ज्ञाना। सोहँ शब्द सतिजुग गुरमुख पछाणा। सोहँ शब्द सतिजुग मिले माणा। सोहँ शब्द सतिजुग करे कल्याणा। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, प्रगट जोत सरूप अन्त जोत सभ जीव बिल्लाना।

❊ २० जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल सोहण सिँघ दे गृह ❊

गुरमुखां गुर कलिजुग लध्धा, घर लागा रंग मुरारा जीउ । गुरसिक्खां गुर कलिजुग लध्धा, जगत करे उज्जयारा जीउ। गुरमुखां गुर कलिजुग लध्धा, गुर देवे नाम भण्डारा जीउ। गुरसिक्खां गुर कलिजुग लध्धा, घर प्रगट अपर अपारा जीउ। गुरमुखां गुर कलिजुग लध्धा, प्रभ देवे भगत भण्डारा जीउ। गुरसिक्खां गुर कलिजुग लध्धा, गुर करे जगत उज्जयारा जीउ। गुरमुखां गुर कलिजुग लध्धा, महाराज शेर सिँघ भगत अधारा जीउ। गुरमुख नाउँ गुर नाम दिवाया। गुरसिख निथावयां थान दिवाया। गुरमुख नाउँ सोहँ शब्द जपाया। गुरसिख मन चाउ, गुरचरन सीस झुकाया। गुरमुख मिले हरि ठाउँ, रसना हरि हरि हरि जस गाया। गुरसिख गुर करे पसाउ, प्रगट जोत रूप प्रभ दरस दिखाया। गुरमुखां गुर साची नाउ, कलिजुग चाउ गुर बन्ने लाया। गुरसिक्खां मन गुर का भाउ, कदे ना डोले सिख किसे डुलाया। गुरमुखां सद बलि जाउ, सचखण्ड जिन कर्म टिकाया। गुरसिक्खां दिवस रैण गाउ, जिन्ां महाराज शेर सिँघ चरनी सीस झुकाया। गुरमुखां घर गुर दरबारा। गुरसिक्खां मन प्रभ जोत आधारा। गुरमुखां गुर नाउँ जगत प्यारा। गुरसिक्खां गुर मिले गिरधारा। गुरमुखां लध्धा कृष्न मुरारा। गुरसिक्खां मिल्या शेर सिँघ निरँकारा। निरँकार अछल अडोल प्रभ हरि रंग माणया। नाउँ रंग मजीठी घोल, गुरसिक्खां आत्म रंग चढ़ानया। प्रभ किसे ना आवे तोल, सद आप जगत तुलानया। महाराज शेर सिँघ आप अडोल, सभ जगत डुलानया। गुर गोबिन्द दोए भए प्रकाशा। प्रभ दी जोत गुरसिख भरवासा । सर्ब सृष्ट विच प्रभ वासा। आए दर ना जाए निरासा। बेमुख होए नर्क निवासा। गुरसिख आए सदा रहिरासा। गुरमुख वड्याई गुर दे सभ आसा। महाराज शेर सिँघ खेल जगत मारयो विच हासा। बंधन बंधे बन्दा बंध वखाए। बेमुख होया चुरासी गेड़ा खाए। नाम विहूणा दर दर चोटां खाए। बिन गुर कोई ना पार लँघाए। धर्म राए प्रभ दे सज़ाए। नर्क निवास सदा बिल्लाए। गुरसिख उधरे गुर चरन लगाए। बिनसे पाप जिन प्रभ दया कमाए। अमोघ दर्शन गुर गोबिन्द दरसाए। अजूनी रहित जोत प्रगटाए। नाम पदार्थ गुरसिक्खां गुर झोली पाए। दे अमोल वथ, सोहँ शब्द मन्त्र दृढ़ाए। महाराज शेर सिँघ सदा अकथ्थ, सरन पड़े दी लाज रखाए। सुख सागर गुर के चरन। सद रिद्धि नागर दुःख सभ हरन। आपणा किया आप जीव भरन। गुर चरन लाग कलिजुग सिख तरन। गुर चरन प्रीत ना जम तों डरन । पतित पापी प्रभ दरस कर तरन। कोट अपराध छिन मंहि हरन। जोत सरूप गुर निरँजण चरन। एक कराए प्रभ चार वरन। महाराज शेर सिँघ लग चरन गुरसिख तरन। तरन तारन समरथ गुणवंतया। सिख सिक्खां देवे हत्थ प्रभ आप भगवंतया । दोवें जोड़ करो प्रभ पास बेनंतया। दर

सखियां मंगल गाए घर घर सोभावंतया। प्रभ कलिजुग जोत प्रगटाए, कला कल सद धरंतया। महाराज शेर सिँघ सद कृपाल, भुल्ले जीव प्रभ सदा बख्शंतया।

✻ २० जेठ २००७ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे घर बचन होए ✻

भुगत भगता गुर आप संवारया। भगत रंग गुर एक निस्तारया। भगत गुर गोबिन्द जगत जोत चमत्कारया। भगत भगवान गुर सन्त मनी सिँघ महाराज शेर सिँघ आप निरंकारया। जोत अटल सदा प्रबल जाओ बलि बलि जोत जगत उधारया। आप अचल महिंमा अखल्ल प्रगट कल देवे भगत भण्डारया। नर सिँघ नर बल महाराज शेर सिँघ पारब्रह्म गुरसिख भवजल तारया। भगत गुर गोबिन्द प्रभ मेल मिलाया। तीन लोक इक्क रंग समाया। छड्ड खण्ड ब्रह्मण्ड निरँकार नरायण प्रभ आया। बेमुखां लाए डण्ड, भगतां संग जाए हंढ, कलिजुग निहकलंक आप अख्वाया। गुरसिख मंग चाढ़े रंग, गुरसिख भवजल पार उतारया। कर्म होए भंग, दर आए मंग प्रभ देवे रंग, जिन चरन निमस्कारया। वसे ब्रह्मण्ड घर सिख सचखण्ड, गुरसंगत मन सदा अरंग, गुर पूरे जाओ बलि बलिहारया। गुर नाउँ तरंग, सिख जाए पार लँघ, मन गुर दरस उमंग, जुग जुग गुर पैज संवारया। प्रभ हरि हरि रंग, साध संगत गुर सदा है संग, प्रभ अबिनाश ना होए भंग, कलिजुग आण गुरसिख पार उतारया। मूर्ख मुग्ध होए दंग, गुरसिक्खां गुर लाए संग, दे दरस मन चाढ़ मजीठी रंग, महाराज शेर सिँघ शब्द रूप दरसा रिहा। शब्द रूप प्रभ सर्ब घट वस्सया। उपजे ज्ञान जिस प्रभ हिरदे वस्सया। गुरमुख हरि रंग प्रभ देह विच वस्सया। बेमुखां चरन धूढ़ मिले ना भिख्या। गुरसंगत गुर दरस मन की इच्छया। प्रगट भयो आप निरँकार, करे भगतन रच्छया। प्रभ अबिनाश सर्ब सुख दाता, महाराज शेर सिँघ जेठ वीह कर पूरन इच्छया। जेठ जुड़ंदा रंग रंगीला माधो इक्क रंग समाया। जोड़ जुड़ंदा कोल बहंदा दरस दखंदा, विछड़यां प्रभ मेल मिलाया। गर्ब गिरंदा दरस दिखंदा सद बख्शिंदा दोए जोड़ कर इक्क बहाया। भगत तरंदा, महाराज शेर सिँघ करे जीव चिन्दा, जिस ने जन्म दिवाया। दिन सुहाया भगत गुर गोबिन्द जिस मेल कराया। तरन तारन समरथ प्रभ आण साध संगत दूख मिटाया। कलिजुग अग्न रथ गुर पाई नक्क नत्थ, कीता सथ गुर पूरे स्वांग वरताया। भगतां वथ सोहँ शब्द अकथ्थ, सतिजुग धर्म रथ, महाराज शेर सिँघ जगत चलाया। प्रभ प्रबीन भगत अधीन, बेमुख हीन दर चोटां खाया। गुरसिख अधीन जिउँ जल मीन, सदा गुर आत्म चीन, मन रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ सिख गुरचरन लीन, कर किरपा गुर पार तराया। धरत सुहाई जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटाई। हरि

हरि हरि रंग लाई। उपजे ज्ञान चरन कँवल सीस झुकाई। सति पुरखा सतिजुग सोझी पाई। गुरमुखां सोहँ सोझी पाई। बेमुखां सिर छाही पाई। हाहाकार करन बिल्लाई। महाराज शेर सिँघ सर्ब कल धारे, गुर गुरमुख गुर भेत रखाई। कलिजुग आण कर्म गुर किया। सोहँ शब्द बूझ बुझाई। आए शांत सुख मन उपजे, गुर पूरे गुरसिख सोझी पाई। जरम कर्म मल उतरे दोवें नाउँ रंग प्रभ दे चढ़ाई। सच सुच्च देह में उपजे, सुरत शब्द गुर सोझी पाई। तन मन सतिगुर हरया किया। अनहद धुन मन वजाई। गुरसिख गुर चरन तकाई। खेल त्रैकुटी प्रभ जोत प्रगटाई। त्रिलोकी नाथ दे त्रै लोचण, गुरमुख गुर निधान दवाई। हउमे संसा मिटे सभ रोगन, अनहद धुन प्रभ मन वजाई। झिरना झिरे अपर अपार, अमृत बूंद गुर वरखा लाई। खोल्ह कपाट गुर दर्शन दिया, अमृत नाभ मुख चवाई। अचरज विच अचरज थीआ, बुझी दीपक गुर शब्द जगाई। धर ध्यान सदा गुर दरसे, निरँजण जोत प्रभ विच देह जगाई। काया कोट भया सभ ऊजल, गुर पूरे जे दया कमाई। सति सन्तोख सर्ब गुण उपजे, निजानंद निज मांहि पाई। तन माटी भयो उज्जयारा, सच सूझ गुर नावें पाई। कलिजुग सदा गुरसिख ऊजल, महाराज शेर सिँघ पैज रखाई। ईश्‍र जोत भयो प्रकाशा। मात पाताल विच आकाशा। विच बैठ वेखे प्रभ जगत तमाशा। गुरसिख गुरचरन प्यासा। बेमुख देख करन मुख हासा। कर्म धर्म दोवें होए नासा। गुरसिख होए नाम रहिरासा। छोड आहार शराब मासा, सोहँ शब्द मिले सर्ब गुण तासा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख भरवासा। गुरचरन जो मन चित लाए, जोत निरँजण प्रभ दे जगाए। गुरचरन जो मन चित लाए, सद मेहरवान प्रभ दरस दिखाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, राम रमईआ घर मांहि पाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण दरसाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, मधुर बैण कँवल नैण सिर मुकट सजाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, मोहण माधव कृष्न मुरार नज़री आए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, कलिजुग जोत सरूप प्रभ जोत दरसाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, महाराज शेर सिँघ नर अवतार स्वच्छ सरूप हो दरस दिखाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, कलिजुग कर्म प्रभ दे मिटाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, गुण निधान घर आ लेख लिखाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, दे शब्द आधार कलिजुग प्रभ पार कराए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, विच चुरासी जीव फेर ना आए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, भगत वछल गुर भगत तराए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, जम का डन्न नेड़ ना आए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, वांग अजामल पापी तर जाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, अन्त काल प्रभ दरस दिखाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, माया ममता विच ना जीव सबाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, सच घर वासी सचखण्ड पुचाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, प्रभ जोत सरूप विच

१५० ०१

जोत मिलाए। गुरचरन जो मन चित्त लाए, महाराज शेर सिँघ सिख दी पैज रखाए। गुरसिख सो जिस कर्म विचारया। गुरसिख सो जिस शब्द उधारया। गुरसिख सो जिस पारब्रह्म निमस्कारया। गुरसिख सो जिस हउमे रोग निवारया। गुरसिख सो जो डिग्गे चरन द्वारया। गुरसिख सो जिन मिल्या गुर नाम भण्डारया। गुरसिख सो जिस रसना सोहँ शब्द विचारया। गुरसिख सो जिस जगाए जोत प्रभ अपर अपारया। गुरसिख सो जिन मिल्या प्रभ निराधारया। गुरसिख सो जिस महाराज शेर सिँघ चरन कँवल प्यारया। गुरचरन सिख करे प्यार। कलिजुग लाया सतिगुर पार। मन में उपजे शब्द गुंजार। नैणी पेख गुर दरसार। रिदे धर गुरचरन निमस्कार। महाराज शेर सिँघ सद सद सद बलिहार। कलिजुग प्रगटे प्रभ अगम्म अपारा। जोत निरँजण महिंमा अपर अपार। छड्ड देह होए जोत निराधारा। प्रभ अपरम्पर करे खेल न्यारा। गुरसिक्खां गुर दर घर गुरचरन दुआरा। बेमुखां गुर दर सदा धृगकारा। कलिजुग कर्म प्रभ आप विचारा। बिल्लावण जीव जिवें नर्क मंझारा। प्रगटी जोत निरँकारा। सोहँ शब्द भगत भण्डारा। सतिजुग सति सति सति होए वरतारा। चार वरन लाग गुर चरन दुआरा। सोहँ शब्द प्रगटे सभ सृष्ट उज्जयारा। कलिजुग अन्त करे प्रभ आप करतारा। सर्ब शक्त खिच्चे गुर दातारा। महाराज शेर सिँघ प्रगटयो कलि अवतारा। प्रगट भयो जगत बनवाली। दर ते खड़े प्रभ जीव सवाली। कलिजुग प्रगटी जोत निराली। प्रगट भयो प्रभ सृष्ट दा वाली। जुगो जुग घाल गुरसिक्खां घाली। कलिजुग आण प्रभ सार समाली। घोर अन्धेर दीपक देह जगा ली। महाराज शेर सिँघ जोत जगत सर्ब दा वाली। कर किरपा गुर अमृत बरखे, दर लागा रंग मुरारा जीउ। दे दात गुर संगत तांईं, मुख लाए अमृत भण्डारा जीउ। कर्म जरम होए जग ऊजल, प्रभ बख्शे अमृत धारा जीउ। आए शांत सर्ब सुख उपजे, आत्म शांत गुर दर दरसारा जीउ। पतित उधार भय भञ्जण, दुखिए देवे तार अमृत बरसारा जीउ। हँकार निवारन भवखण्डन, प्रभ सदा सदा करे जीव उधारा जीउ। कलिजुग किरपा कर प्रभ ठाकर, धरी जोत जगत निरँकारा जीउ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, करे खेल अपर अपारा जीउ। अचरज खेल जगत गुर किया। सोहँ दे के नाम करे निर्मल जिया। गुरसिक्खां पावे सार, शब्द ज्ञान जगत गुर दिया। कलिजुग कर ध्यान, पूरब कर्म जगत सिख बीआ। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, अमृत नाम गुर दर गुरसिक्खां पिया। अमोघ दर्शन गुर दरसावे। कोट अपराधी दर तरावे। हरि हरि हरि प्रगटी जोत अपारे। करे खेल प्रभ विच संसारे। होए घोर कलिजुग अन्त काल जोत समरथ जोत प्रगटावे। बैकुण्ठ वासी सर्ब दुःख भंजन, जामा धार भाग घनकपुरी लगावे। कर निमस्कार जाओ बलिहार, जोत अपार सिख देह समावे। सति पुरख निरँजण गुर दरस दिखाया। निराधार निरवैर जोत रूप प्रभ देह समाया।

माण गंवाए कलू खपाए, प्रगट हो गुर सतिजुग लाया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, हो चतुर्भुज जुग उलटाया। कलिजुग पाई प्रभ जगत ते माया। प्रगट जोत अपार, आपणा आप छुपाया। छड्ड देह निराधार, जोत रूप प्रभ भेस वटाया। जगत भुलाए सृष्ट खपाए आपणा भेत ना किसे जताया। गुरसिख गुरपुरी गुर माण दिवाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, कलिजुग विच मेल कराया। गुरसिख गुर एक समाना। गुरसिख गुर चाउ मन ध्याना। गुरमुख मिले मेरा नाउँ महाना। गुर मिल पाए मेरा शब्द ज्ञाना। गुर मिल महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, सभ ते ऊँच विष्नूं भगवाना। गुर के भाउ भगत ही जाणे। गुर के भाउ भगत रंग माणे। गुर के भाउ गुरसिख तर जाणे। गुर के भाउ मिले नाम निधाने। गुर के भाउ करे प्रभ चित ध्याने। गुर के भाउ महाराज शेर सिँघ गुरसिख पछाणे। जोत जोत जोत प्रभ जोत सरूपा। सर्ब कला समरथ प्रभ आप वड भूपा। महिंमा अपर अपार जोत रंग अनूपा। जोत देवे तार विच अन्ध कूपा। महाराज शेर सिँघ करे सिख विचार करे स्वच्छ सरूपा। स्वच्छ सरूप सदा रंग राता। बलि बलि बलि जाओ गुरसिख पूरे, कलिजुग आ जिस गुर पछाता। गया अभिमान मिले घनकपुर वासी, उपजे ज्ञान विच जगत बिधाता। गुर चरन ध्यान हरि रंग माण, सोहँ शब्द रंग राता। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, खण्ड वरभंड सर्ब विच जोत जगाता। करो अरदास संगत विच दोए जोड़ कर बन्दना। दुःख निवारो प्रभ आप त्रिलोकी नंदना। कलिजुग होए ख्वार लिखावे धुर भाग बन्दना। गुरचरन लाग पतित उधारे, जगत महिकाए वांग चन्दना। गर्ब निवारे डुबदे तारे गुरसिख पार उतारे, गुरचरन करो सद सद सद बन्दना।

१५२
०१

✻ २१ जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ठाकर सिँघ दे गृह ✻

रंग रंग रंग रंग गुर नाम चढ़ाए। मंग मंग मंग मंग प्रभ मन चरन तिसाए। सति सति प्रभ सति वरताए। झूठी देह सच जोत जगाए। नाम निधान प्रभ ज्ञान दवाए। गुरमुख सिख होवे जग उज्जल, महाराज शेर सिँघ घर चरन टिकाए। चरन कँवल जिस बण आए। सदा अनन्द मन भूख ना राए। दरगाह माण सचखण्ड दरसाए। देवे दान प्रभ घर में पाए। सदा मेहरवान कलिजुग गुरसिख तराए। हो कृपाल नाम भिच्छया पाए। महाराज शेर सिँघ सद बल जाईए, बाहों पकड़ जन लए तराए। प्रगट भयो प्रभ समरथ। नाम ज्ञान ध्यान प्रभ देवे वथ। सदा अडोल निरोल अमोल सिर गुर दा हत्थ। महाराज शेर सिँघ सदा अडोल, पूरन परमेश्वर समरथ। ज्ञान दीए गुर नाम जपाए। ध्यान कीए सभ लिव लाए। दयावान

१५३
०१

हो प्रभ दया कमावे। नाम पदार्थ विच देह पावे। महाराज शेर सिँघ सर्ब घट वस्सया, जन्म जन्म दी मेल गवावे। गुरचरन जिस लग्गा ध्याना। चार जुग सिख रहे निशाना। उधारे सिख प्रभ दे ज्ञाना। महाराज शेर सिँघ प्रगट्या विष्नूं भगवाना। गुर सागर गुर गहर गम्भीरा। गुर उजागर गुर गुणी गहीरा। गुर रत्नागर गुर नाउँ विच देह हीरा। गुर का शब्द जुग चार वरतीरा। महाराज शेर सिँघ जग तोड़े बंधन, देवे दरस जोत सरूप छड्ड सरीरा। ऊँच अपार गुर दरबारा। जिथ्थे वसे प्रभ आप निरँकारा। अमृत बरखे जिउँ जल धारा। जगे जोत निरँजण अपारा। तीन लोक प्रभ भगत पसारा। जोत सरूप करे जोत जगत उज्जयारा। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक सभ करे निमस्कारा। धार खेल प्रभ जोत अधारा। सृष्ट उपाई विच आप निराधारा। कँवल नाभ ब्रह्मा पसर पसारा। कर किरपा मुख चार न्यारा। वेद चार विष्नूं भगवान सर्ब दी सारा। चार वेद चार मुख लिखाए। चार वेद चार जुग वरताए। जुग चार प्रभ जोत प्रगटाए। जुग चार सति सति सति मेहरवान हो आए। जीव जन्त रसना हरि हरि हरि गुण गाए। सिद्ध साध बैठे ताड़ी लाए। शिव शंकर जटा जूट रखाए। बाशक तशका गल लटकाए। लाग गुर चरन प्रभ दरस पाए। अन्त काल प्रभ सभ माण गंवाए। आपणा भेद ना किसे बताए। अछल छल मोहणी रूप बणाए। भुल्ला शिव कामी हलकाए। करे खेल प्रभ देह पल्टाए। दे दरस सभ सोझी पाए। होवे अधीन खड़ा दर सीस झुकाए। हउँ भुल्ला बख्श गोबिन्द राए। हो कृपाल प्रभ माण दिवाए। पूजा शिव जगत रहि जाए। जुग चार वरन चार सभ सीस झुकाए। प्रगट नर अवतार शक्ती खिच्च वखाए। प्रगट जोत अपार जोत विच जोत मिलाए। जगत सोहँ ज्ञान पूजा शिव हटाए। उपजे ब्रह्म ज्ञान, रसना नाम ध्याए। प्रगट आप निरँकार, कलिजुग दे उलटाए। सचखण्ड सच सतिजुग लाया। महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। आप अपरम्पर प्रभ अगम्म अपारा। जुगो जुग करे जोत चमत्कारा। सतिजुग कीता पार किनारा। गौतम रिख वड उज्जयारा। जुग उलटावे रसना द्वारा। लाए त्रेता भयो राम अवतारा। रिग वेद जिस पार उतारा। दे वड्याई प्रभ भगतन तारा। भीलणी तांईं दरसाए सच दुआरा। राम राम राम रमईआ जगत उधारा। दुष्टां लाहे घाण, कर जुग आकारा। भगतन देवे तार, दे दरस अपारा। सिला देवे तार, छोहे चरन गुदारा। त्रेता गंवाया माण, प्रभ राम अवतारा। द्वापर प्रगटयो राम कृष्न अवतारा। कृष्न किसू माधो सद निमस्कारा। दे के ब्रह्म ज्ञान, गीता रसन उचारा। सति सति सति मेहरवान, प्रभ भगतन तारा। छड्ड छड्ड छड्ड राजन दरबारा। कर कर कर प्यार सुदामा बिदर आ तारा। हरि हरि हरि नरायण भगत जनां प्यारा। द्वापर होया पार कलिजुग किया पसारा। यजुर गया वेद अथर्बण लै उतारा। ऐड़ा अथर्बण उपजे अल्ला नूर अपारा। अल्ला इल्लाहो नूर, ईश्र जोत चमत्कारा। कलिजुग करे

१५३
०१

ख्वार, खण्डा दे दो धारा। राम सार रसूल गया पसारा। कलिजुग दित्ती हार, ईसा मूसा प्रभ दे उतारा। कलिजुग होए ख्वार, जिउँ जीव विच नर्क मंझारा। होए सभ ख्वार, प्रभ खेल अपारा। दे जोत अधार प्रगटे दस अवतारा। किसे ना पाई सार, प्रभ की करे वरतारा। लै के ईश्र ओट सभ चलाए पन्थ न्यारा। किसे ना पाई सार, सद सद सद इक्क जोत अधारा। प्रभ आप जोत सरूप, सर्ब जीव जन्त प्रभ जोत अधारा। उपजे जोत सरूप, अन्त काल होए जोत समारा। कलिजुग होया घोर, जगत भयो धुंधूकारा। कोए ना पावे सार, गुर बिन डुब्बे सभ संसारा। ईश्र सद बलिहार, जुग जुग प्रभ लै अवतारा। कलिजुग कर्म विचार, प्रगट भयो जोत चमत्कारा। सर्ब गंवाए माण, कुरान अञ्जील जगत किया किनारा। चौथा जुग उलटाए, चार वेद खपाए, सोहँ शब्द अलाए, सच शब्द जुग चारा। गीता ज्ञान गंवाए, बाणी थिर ना रहाए, ईश्र जोत प्रगटाए, सतिजुग साचा लाए, भगतन देवे नाम अधारा। सच सुच्च वरताए। जूठ झूठ खपाए, पापी अपराधी सर्ब खपाए, प्रभ भगत तराए जो आए गुर दरबारा। प्रगट जोत निरँजण राए, कलिजुग कूड़ा दिया उलटाए, सतिजुग साची बणत बणाए, महाराज शेर सिँघ आप निरँकारा। निरँकारी निरवैर समावे, कर खेल अपार चतुर्भुज कहावे। सर्बत्र गुआए माण, सोहँ शब्द मुख रखावे। गुरसिक्खां देवे तार, जिन्हां कलिजुग चरन लगावे। मन उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां सिर गुर हत्थ टिकावे। मिले नाम निधान, जिन प्रभ दया कमावे। देवे गोझ ज्ञान, सच दी जोत जगावे। झूठी छड्ड प्रीत, प्रभ दी आस तकावे। गुर पूरा हो मेहरवान, जनां नूं पार लँघावे। महाराज शेर सिँघ आप निरँकार, निर्धन सरधन दोवें तरावे। जगत गुर आया, मनी सिँघ नाम रखाया। होवे शब्द ज्ञान, गोबिन्द गोबिन्द प्रगटाया। जामा आया धार, कलिजुग निहकलंक अख्वाया। बेमुखां ना देवे दीदार, ऐसी पाई माया। गुरसिक्खां देवे तार, शब्द रूप प्रभ दरस दिखाया। कलिजुग कर्म विचार, चरन संग जोड़ मिलाया। गुर पूरे हो मेहरवान, नाम निधान दिवाया। महाराज शेर सिँघ प्रगट भगवान, सतिजुग साचा लाया। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे गुर साचा आए। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे गुर चरन टिकाए। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे प्रभ जोत जगाए। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे नैण मुँधार दरस दिखाए। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे बैकुण्ठ वासी रिहा समाए। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे प्रभ सोहँ ज्ञान दिवाए। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे प्रभ भगत तराए। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे प्रभ शरन पड़े दी लाज रखाए। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे बैठ साची लिख्त कराए। सतिजुग सोहे धाम, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ सतिजुग साचा लाए। धन्न सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ आसण लाया। धन्न सुहाया धाम, जिथ्थे गुर बैकुण्ठ बणाया। धन्न सुहाया धाम, जिथ्थे जगत भुलाया। धन्न सुहाया धाम, जिथ्थे संगत रल मंगल गाया। धन्न सुहाया धाम, जिथ्थे प्रभ राणयां महाराणयां नूं तख्तों लाहया। धन्न सुहाया

धाम, जिथ्थे सच गुर सच बचन लिखाया। धन्न सुहाया धाम, जिथ्थे चार वरन कर गुर इक्क बहाया। धन्न सुहाया धाम, जिथ्थे प्रभ सोहँ दे ज्ञान जगत तराया। धन्न सुहाया धाम, जिथ्थे प्रगट हो निरँकार कलिजुग दरस दिखाया। धन्न सुहाया धाम, प्रगट भए मात खण्ड ब्रह्मण्ड तजाया। धन्न सुहाया धाम, प्रगट नर अवतार ब्रह्मा पार कराया। धन्न सुहाया धाम, जिथ्थे तीन लोक प्रभ बणत बणाया। धन्न सुहाया धाम, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ चरन टिकाया। सतिगुर साचा सच सतिजुग लाए। सतिगुर साचा सच शब्द सुणाए। सतिगुर साचा सोहँ ज्ञान जगत दिवाए। सतिगुर साचा सतिजुग साचा सच सुच्च वरताए। सतिगुर साचा मदि मास नष्ट कराए। सतिगुर साचा जीव जन्त विच दया कमाए। सतिगुर साचा हरि हरि हरि रसना नाम जपाए। सतिगुर साचा आप थिर हो सर्ब बिनसाए। सतिगुर साचा आपणी महिंमा आप लिखाए। सतिगुर साचा सतिजुग सति संगत संग समाए। सतिगुर साचा मूर्ख मुग्ध अञ्याण दे के शब्द ज्ञान बुझाए। सतिगुर साचा माण अभिमान दे दरस मिटाए। सतिगुर साचा अधर्म कुकर्म नष्ट हो जाए। सतिगुर साचा सच परीख्त आप हो जाए। सतिगुर साचा सच संजम सच रिहा समाए। सतिगुर साचा सचखण्ड मातलोक बणाए। सतिगुर साचा गुरसिख तराए। सतिगुर साचा साध संगत कल माण दवाए। सतिगुर साचा कर चरन प्रनाम, चरन गुर आस रखाए। सतिगुर साचा देवे

१५५ ०१ सभ नूं तार, भवजल पार कराए। सतिगुर साचा सभ दी लेवे सार, हर जीव में रिहा समाए। सतिगुर साचा जीव ना १५५ ०१

पावे सार, जिस विच बैठा आसण लाए। सतिगुर साचा देवे शब्द गुंजार, जो गुर ध्यान लगाए। सतिगुर साचा देवे ब्रह्म ज्ञान, गुरसिख रिदे ध्याए। सतिगुर साचा जीव जगत ना जाए निरास, जे गुर ओट तकाए। सतिगुर साचा भगत वछल कृपाल, भगतां दी पैज रखाए। सतिगुर देखे एह जगत तमाशा। जीव उपाए अप तेज वाए पृथ्मी आकाशा। मन मति बुध जीव आत्म धरवासा। जीव ना पाए सार, विच देह गुर पूरे वासा। प्रभ देवे पर्दा खोल्ह, जिस गुर चरन भरवासा। मिले शब्द अनमोल, होवे आत्म प्रकाशा। विच दिसे जोत अडोल, जगाई प्रभ अबिनाशा। गुर पूरे वेखे चोहल, कलिजुग जीव होए बैठ निरासा। महाराज शेर सिँघ सर्ब जीव जन्त भयो वासा। रस रस रसना गुर मुख चुआया। मिल मिल मिल सखियां हरि जस गाया। हस्स हस्स हस्स गुर पूरे नाम जपाया। नस्स नस्स नस्स गुरसंगत गुर शब्द झोली पाया। दस्स दस्स दस्स प्रभ सिख मार्ग पाया। वस वस वस उजड़िआ प्रभ फेर वसाया। फस फस जम फास प्रभ गलों कटाया। धन्न धन्न धन्न गुर सतिगुर पूरा, दर घर आया माण दवाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, दुखियां दा जिस दुःख गंवाया। प्रभ दर खड़े दोए जोड़ सवाली। बख्शे अवगुण प्रभ मिले बनवाली। प्रगट होया सर्ब सृष्ट वाली। गुरसिक्खां घाल गुर

थाएँ पा ली। उधरे जीव जिन प्रीत गुरचरन लगा ली। होए अतीत जिन्हां दर सेव कमा ली। होए पुनीत जिन्हां दरस प्रभ जोत दरसा ली। सोहँ शब्द प्रभ नाम रखा ली। महाराज शेर सिँघ सद लागो चरनां, काया रोग प्रभ सर्ब मिटा ली।

❊ २२ जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल आत्मा सिँघ दे गृह ❊

गुर कर्म कमांयदा। कर प्रगट शब्द सुणांयदा। दे सोहँ शब्द ज्ञान, पर्दा आत्म लाहिंदा । भुल्ले कलिजुग आण, गुर सच मार्ग लांयदा। गुर पापीआं देवे तार, जो गुर दर ते आंयदा। बेमुखां देवे हार, हो माणस मुख भवांयदा। प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञान, मन अनहद शब्द वजांयदा। भव सागर उतरे पार, गुरचरनीं जो चित लांयदा। दरगाह देवे माण, जो गुरसिख नाम सदांयदा । प्रभ करे जोत प्रकाश, अन्तर जीव जोत जगांयदा। प्रभ दे के ब्रह्म ज्ञान, दर ठांडा दरसांयदा । हँकारीआं निन्दकां करे ख्वार, दर मंगण भिख ना पांयदा। गुरमुखां देवे माण, विच दरगाह सच बिठांयदा। महाराज शेर सिँघ प्रगट भगवान, गुरसिख जोत मिलांयदा। जोत जगत प्रभ आप जगावे। प्रभ अबिनाशी सदा रहावे। जुगत जगत माया रूप बणावे। माया ममता कल जीव डुबावे। बेमुखां गुरचरन ना लावे। गुरसिक्खां घर जै जै जैकार करावे। अनन्द मंगल होए गुर केरा, हरि हरि हरि रसना नाम जपावे। प्रगट कियो प्रभ जोत प्रकाशा, दर आयां गुर पार लगावे। शब्द रूप गुर खेल रचायो। प्रगट जोत विच सिख समावे। सर्ब कला समरथ प्रभ पूरा, आप अभेव कोई भेद ना पावे। रंग रंगीला मोहण माधव, जुगो जुग प्रभ जोत जगावे। जोत जगाए आप प्रभ ठाकर, छड देह विच जोत समावे। कँवल नैण गुर कर्म करंदा, दया धार सति सतिजुग लावे। हरि मिल भगत होए मन तन हरया, सच शब्द गुर ज्ञान दिवावे। राम कृष्न प्रगटयो भगवाना, महाराज शेर सिँघ नाम रखावे। नाउँ निधान मिल गुरसिक्खां पाया। गुरसिक्खां पाए सार, जिन्हां हरि दरस दिखाया। दरस दिखाए आप गुर पूरा, कृष्न बाल सिर मुकट टिकाया । कलिजुग आण भगत गुर तारे, विछड़यां गुर मेल कराया। दरस देवे आप प्रभ करता, गुरसिक्खां मन रंग मजीठ चढ़ाया । सच उपदेश किया जग अन्तर, सोहँ शब्द मुख रखाया। ओअँ आप प्रभ करे निरँकारा, सोहँ शब्द गुर नाम रखाया। जोत निरँजण जोत आकारा, जीव जन्त सभ किया पसारा। नादानी अभिमानी प्रभ दरस ना पायो, कलिजुग डोबे विच मंञधारा। गुरमुखां मिल्या जग करता, प्रगट भयो जोत संसारा। कर्म धर्म गुर आप विचारया, कर किरपा प्रभ पार उतारा । महाराज शेर सिँघ प्रभ नरिंदर, सोहँ शब्द भगत दिया भण्डारा। सोहँ शब्द रसना

गाया। तन मन हरया, धन्न घर मांहि पाया। उपजे ज्ञान होवे तन सीतल, अन्त काल ना काल खपाया। गुरचरन लाग भव सागर तरीए, गर्भवास गुर बंध कटाया। कलिजुग सिख चन्दन महिकाए, सोहँ जिन्हां रसना गाया। पसू प्रेतों देव करे गुर पूरा, जम डण्ड ना सिर ते आया। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, प्रभ अबिनाशी घर महि पाया। बेमुखां घर सदा हनेरा, जिन्हां गुर तों मुख भवाया। महाराज शेर सिँघ जगत गुर दाता, किलविख काट जिस नाम जपाया। प्रभ भयो जोत प्रकाश, कलिजुग कर्म कमाया। दुखी जीव करन पुकार, सोहँ शब्द गुर बाण चलाया। गुरचरन ध्यान सुख मन उपजे, रोग सोग प्रभ दे मिटाया। शब्द तेग गुर आप उठाई, कलिजुग कर्म सभ नष्ट कराया। रसना शब्द आप प्रभ उपजे, इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत बणाया। मेरा नाम निरबाण भयो जग अन्तर, गुर नानक मन्त्र सच कर वखाया। मसाण पौण पौण शब्द गुर बाधे, बीर अठारां नास कराया। बीर मुहम्मद संग चार यारा, ख़वाजा ख़िज़र डोबे जल धारा। हाकन डाकन झाकन गुर सिर मुनवाए, फिरे लुबाई होवे कल ख्वारा। अंचनी कंचनी निरंचनी कोई नेड़ ना आए, सच शक्त प्रभ खिच्च वखाए विच संसारा। मवकल ना कोई भय रखाए, शहीद मुरीद गुरसिख नेड़ ना आए, सोहँ शब्द जले अन्गयारा। रोग सोग सर्ब गुर मेटे, कलिजुग कियो जोत चमत्कारा। छल छिदर बलिया छलिया सभ भस्म कराए, गुर दर बद्धे चोटां खाया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, अमृत बरखा ला दुखियां दु:ख मिटाया। अमृत अमर रूप गुर आप वरसाए। गुर गोबिन्द मिल गुरसंगत शांत वरताए। गुरसंगत मन प्रभ नाम रंगत, दे दरस अज्ञान अन्धेर चुकाए। कलिजुग प्रगटयो आप निरँकारा, आत्म विच प्रभ जोत जगाए। जगे जोत गुर चरन दुआरे, उपजे शब्द मन धुन वजाए। शब्द प्रभ दर्शन पाईए, निजानंद रिहा समाए। गुर बिन कोई ना संसा चूके, दे ज्ञान गुर गोझ वखाए। अमृत बूंद आप गुर वरखे, गुरसिक्खां गुर मुख चवाए। बिन गुर कोई ना सार समाले, झिरना अमृत ना कोई झिराए। झिर झिर झिर झिरना बूंद उपजे, अमृत बूंद कँवल मुख पाए। खुल्हे कँवल गुर दे प्रगास्सया, देह दीपक गुर जोत जगाए। जगे जोत शांत मन उपजे, निज घर बैठे ताड़ी लाए। राम नाम रसना नित्त गाए, घर बैठ प्रभ अबिनाशी पाए। प्रभ अबिनाश भगत रखवाला, जुगो जुग प्रभ भेस रखाए। आदि अन्त प्रभ किसे ना पाया, कब जोत सरूप कब देह पल्टाए। प्रभ की महिंमा वेद ना जानण, आपणा भेत ना किसे जताए। जोत आधार रहे प्रभ ठाकर, जोत आधार सभ जीव रखाए। भेव ना पावण पूरा गुर ना पछानण अज्ज विच बैठा आसण लाए। अन्तकाल प्रभ किने ना बतायो, जोत सरूप हो जोत लै जाए। नाम विहूण दर ढोई ना पायण, जम की फास प्रभ गले पवाए। गुरसिक्खां गुर पार उतारे, अन्तकाल प्रभ दरस दिखाए। गुरमुख सदा जगत निरालम, विच बबाण प्रभ लए बिठाए। सच

शब्द गुर सिक्खन दिया, सोहँ शब्द जग वरताए। खाणी बाणी गगन पताली, सर्ब तांईं प्रभ दे उलटाए। एक शब्द प्रभ आप है एका, एक सृष्ट जिस विच समाए। झूठी काया विच जोत प्रकाशा, चार वरन प्रभ रंग इक्क समाए। सो वड्डा जिस हरि रंग माणयां, गुरमुख नाउँ जगत रहि जाए। सतिजुग खेल करे प्रभ न्यारा, मदि मास सभ नष्ट हो जाए। अहार करे जो मानुख देही, जन्म जन्म जून प्रभ अग्न, जन्म जन्म प्रभ जून प्रेत लिखाए। अन्त काल ना कोई सहाई, गुर बिन कोई ना पार लँघाए। कलू काल भयो अन्धयारा, कर्म धर्म नष्ट हो जाए। कर्म कलू विच आप निरँकारा, प्रगट जोत निहकलंक हो आए। महाराज शेर सिँघ पूरन परमेश्र, धार खेल चतुर्भुज कहाए। सच सच सच सतिजुग गुर वखाणयां। हरि हरि हरि रंग गुरसिक्खां माणयां। तर तर तर गुर चरन निमाणयां। जर जर जर दु:ख बेमुख अञ्याणयां। मर मर मर कलिजुग गुर भुलाणयां। वड वड वड प्रभ आप भगत वडाणयां। चाढ़ चाढ़ चाढ़ सचखण्ड वखाणयां। महाराज शेर सिँघ चले आपणे भाणयां। गुरसिक्खां घर गुर चरन दुआरा। बेमुखां दर नर्क मंझारा। गुरसिक्खां मन चाउ न्यारा। बेमुखां मन वधे विकारा। गुरसिक्खां कल प्रभ दरसारा। बेमुखां देवे प्रभ नर्क नवारा। गुरमुखां दे गुर अमृत भण्डारा। बेमुखां मुख विष्ट मुगारा। महाराज शेर सिँघ गुर सच गुर पूरा, कलिजुग भगत पावे सारा। भगत भगवन्त दोए एक सरूपा। विच भगत वसे आप प्रभ भूपा। प्रगट जोत विच अन्ध कूपा। नाम निरँजण भयो स्वच्छ सरूपा। महाराज शेर सिँघ भगत उधारन प्रगट जोत आप प्रभ अनूपा। गुर किरपा होए दिन वडभागी, दर जगत गुर आप दिखाया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, नाथ त्रिलोकी मात समाया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, सर्ब घट वासी सिख देह समाया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, खण्ड वरभंड ब्रह्मण्ड जिस रंग लाया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, लोक तीन जै जै जैकार कराया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, पतित उधारन गुर चरन टिकाया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, जिथ्थे मिल संगत हरि हरि हरि जस गाया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, कलिजुग ओट गई जगत पित भए सरनाया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, मुकंद मनोहर कृपानिध आया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, गुरप्रसादि सति सति सति वरताया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, गुर दर आया ना जीव बिललाया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, कर दरस गुर मन सहसा लाहया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, जगत न्यारा सर्ब पधारा प्रभ दरसाया। गुर किरपा होए दिन वडभागी, महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा भगत जनां सिर हत्थ टिकाया । कलिजुग प्रभास गुरसिख विच चन्दन। दोए जोड़ करे दर बन्दन। तारे आप प्रभ त्रिलोकी नंदन। दर ते खड़े गुर दरस मन मंगण। सोहँ शब्द दे ज्ञान, गुर पूरे मन चाढ़ी रंगण। गुरसिख गुर एक प्रभ रूपा गुरसिख रहे रंगण। महाराज शेर

सिँघ सद कृपाला, दूख निवारन आप भय भंजन। पतित पवण प्रभ आप भय भंजन। हँकार निवारन है भव खण्डन। जगत उधारे करे दरस मन मंगण। महाराज शेर सिँघ पतित उधारन, गुरसिख मन चाढ़े रंगण। सति पुरख प्रभ आप निरँजण, प्रगट अगम्म अपारा जीउ। सर्ब समरथ कलिजुग लए अवतारा जीउ। प्रभ अकथ्थ प्रभ वरते घर भण्डारा जीउ। पी बूंद अमृत मन तृप्तासे, गुर बरसे अमृत धारा जीउ। गुरसिख गुर चरन बिगासे कर दरस कर दे पारा जीउ। प्रभ अछल प्रभ अडोल, सदा रहे निराधारा जीउ। कलिजुग तोल्लया पूरे तोल, कर कर्म विचारा जीउ। गुरसिक्खां दिया शब्द अनमोल, दे दरस पार उतारा जीउ। कर दरस जिन हरि रंग माणयां, कलिजुग होए आधारा जीउ। मनमुख जिन्हां गुर ना पछाणयां, तिन्हां प्रभ नर्क निवारा जीउ। प्रगटी जोत आप प्रभ भूपत, होए प्रकाश जगत चमकारा जीउ। जोत निरँजण सर्ब घट वसे, लै आए कल अवतारा जीउ। झूठी माया जगत भुलाया, कोई अन्त ना पारावारा जीउ। गुरसिख नाउँ सदा रंग राते, जिन्हां मिल्या नर अवतारा जीउ। सोहँ शब्द ज्ञान गुर दिया, देह होवे शब्द धुन्कारा जीउ। अनहद धुन आत्म उपजे, प्रभ मिले आप निरँकारा जीउ। महाराज शेर सिँघ सद अबिनाश, प्रगटे कलिजुग लै अवतारा जीउ। गुरचरन ध्यान गुरसिख तर जाण, मिले नाम निधान उतरे सिख पारा जीउ। मिटे अभिमान गुरचरन जाण, गुरसंगत रल तर जाण, प्रभ दरस निरँकारा जीउ। प्रभ प्रगट भए गुर गोबिन्द बलवान, सर्ब घट जाण, आत्म करे पछाण, करे सर्ब पसारा जीउ। सोहँ शब्द ज्ञान पावण सिख सुजान, महाराज शेर सिँघ लग चरन तर जाण, गुर मिल्या अपर अपारा जीउ। जुगो जुग प्रभ लै अवतारया। जोत रूप प्रभ ध्रू चमत्कारया। प्रहलाद तारे प्रगट नर सिँघ अवतारया। अंबरीक उधारे दुरबाशा सुधारे, बाण चक्र सुदर्शन मारया। जनक जन्म सुधारे, नाउँ नर्क निवारे भगत वड्या ल्या। हरी चन्द माण गंवाया, जोड़ी जोड़ वखाया, मिल संगत गा ल्या। दुर्योधन घर तजाया, बिदर घर भोग लगाया कृष्न भगवानया। सुदामे माण दुआया, सिँघासण उप्पर बिठाया, तन्दल तांईं गुर भोग लगा ल्या। नामदेउ तराया, गुण निधान घर आ लेख लिखाया, दे उपदेस जरम सफल करा ल्या। नामा आण तराया, दुध्ध नूं भोग लवाया, दिहुरा आण फिराया, गाए मोई फेर जिवा ल्या। नाई सैण तराया, साध संगत माण दिवाया, रैण सारी हरि जस गाया, सैण रूप हरि वटा ल्या। राम रमईआ मन वसाया, जुलाहा कबीर तराया, रामा नंद जिस गुर बणा ल्या। सैण आण तराया, रूप अनूप वटाया, गरीब निवाज़ गरीबां तांईं माण दिवा ल्या। जुगो जुग प्रभ अन्तरजामी, आपणा तेज वधा ल्या। सधने माण गंवाया, ईश्रर रिदे ध्याया, नीहां विच्चों कढा ल्या। अजामल आण तराया, नाउ पूत नरायण रखाया, अन्त काल नरायण रसना गाया, घर सच बहा ल्या। गनका पापण तारी, दे नाम भण्डारी आ के पैज संवारी, विच बबाण बिठा ल्या। पूतना पापण

तारी, कृष्न तांईं जिस करी ख्वारी, कढ्ढु सास प्रभ देह छुडा ल्या। रविदास चुमार तराया, नाम पदार्थ पाया, अंदर लाल छुपाया, बाहर भेस वटा ल्या। जुगो जुग प्रभ भेस वटा ल्या। कलिजुग जामा धार, घनकपुरी भाग लवा ल्या। खण्ड सच करे निवास, पाल सिँघ सचखण्ड बहा ल्या। दे सवरन माण, ध्रू जिस परे हटा ल्या। माणा सिँघ दे माण, विच जोत मिला ल्या। चाढ़ नाम रंगण, रंगा सिँघ रंग रंगा ल्या। गुरसिख देवे तार, तन मन धन जिन चरन लगा ल्या। गुजर सिँघ जाओ बलिहार, गुर जिस सीस उठा ल्या। महाराज शेर सिँघ भगत वछल अख्वा ल्या।

✻ २२ जेठ २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल रणजीत कौर दे गृह ✻

गुरसिख सदा हरि रंग माणे। गुरसिख चले गुर के भाणे। गुरसिख गुर जिउँ बाल अञ्याणे। गुरसिख सिख गुर दोए एक समाने। गुरसिख गुर चरन लाग सर्ब तर जाणे। गुरसिख गुर समाणे। गुरसिख गुर विच बबाण बिठाणे। गुरसिख गुर गुरपुरी लै जाणे। गुरसिख सद गुर मन भाणे। गुरसिख जगत प्रभ वड्याणे। गुरसिख बिन कोई ना गुर पछाणे। गुरसिख उपजे सदा ब्रह्म ज्ञाने। गुरसिख दरस गुर घर में पाने। गुरसिख संग बेमुख तर जाणे। गुरसिख चन्दन वांग सदा महिकाणे। गुरसिख होए गुर दी बाणे। गुरसिख मुकाए आवण जाणे। गुरसिख सदा अटल्ल हो जाणे। गुरसिख गुर विच समाणे। गुरसिख गुर पूरे विच जोत मिलाणे। गुरसिख महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग आ के सिख तराणे। सेवक सिख सभ गुर तारया। विच चरन जिन आ निमस्कारया। मिले आप परवरदिगारया। कट्टी फास दरस दरसारया। होए सुखाले सास, रसना सोहँ शब्द उचारया। घर प्रगट गुण निधान, ऐसे गुर को सद सद सद बलिहारया। गुर दे दरस अपार, गुरसिख आ तारया। तत्ती वाउ ना लागे, पारब्रह्म जिन रिदे चितारया। होए सदा अडोल, जिन्हां नाम निरँजण पा ल्या। रसना मुखों हरि हरि बोल, प्रभ अबिनाश विच रिदे ध्या ल्या। प्रभ मिल कोई ना रहे तोट, जगत झूठी खेल रचा ल्या। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग आए गुरसिख तरा ल्या। गुरसिक्खां घर सदा वधाई, कर प्रेम गुर गोबिन्द प्रगटा ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, जिन मातलोक सचखण्ड बणवा ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, जिन्हां विष्नूं भगवान विच बहा ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, हरि हरि हरि दर्शन हर थाएँ पा ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, सति सति सति कर सति पुरख निरँजण पा ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, गुरचरन लाग बंस तरा ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, नाम पदार्थ गुर दर ते पा ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, जन्म मरन दा फंद कटा ल्या।

गुरसिक्खां मन सदा वधाई, दरस परस मन तृप्त करा ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, चरन कँवल दर सीस झुका ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, जोत निरँजण नाम नरायण घर सहिजे पा ल्या। गुरसिक्खां मन सदा वधाई, महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा गुरसिक्खां सिर हत्थ टिका ल्या। गुरसिख कर्म गुर आप वखाणे। गुरसिख भेव कोई जीव ना जाणे। गुरसिख सेव गुर पाए ख़ज़ाने। गुरसिख विच गुर अभेव महाराज शेर सिँघ जोत जगाणे। जोत जगत प्रभ भई दरसाए। भगत भगवन्त दी सोझी पाए। भगत भगवन्त इक्क जोत हो जाए। महाराज शेर सिँघ सदा गुणवन्त, तीन लोक रिहा समाए। सतिजुग चले शब्द अपारा। सोहँ शब्द हो जगत उज्जयारा। वरन चार सोहण गुर चरन दुआरा। दे नाम गुर खोल्ह भण्डारा। दे ज्ञान झूठी देह पसारा। कर ध्यान गुरसिख गुर पार उतारा। हो निरबाण गुरसिख पार उतारा। महाराज शेर सिँघ जोत जगाई, प्रगट भयो आप निरँकारा। नाम नाम नाम गुर नाम उपदेस्सया। सच धाम धाम धाम जिथ्थे सिख उपदेस्सया। हरि काम काम काम करे जुगो जुग वेस्सया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, जोत सरूप विच सिख प्रवेशिआ। गुर धाम हरि का द्वार। गुर का धाम प्रभ जोत निरँकार। गुर धाम गुरसिख प्यार। गुर धाम प्रभ लिउ तार। गुर धाम जगत जोत अपार। गुर धाम सचखण्ड विचार। गुर धाम महाराज शेर सिँघ गुर धाम सचखण्ड विचार। गुर धाम आण सुहाया। आप प्रभ एक, जुग अनेक उलटाया। धर जोत विच कल दे आया। नाम नाम सच सच मार्ग पाया। सोहँ शब्द गुर ज्ञान दवाया। भगत अधार निहकलंक अख्वाया। सिक्खन तारन सतिगुर आया। खण्ड सच ब्रह्मण्ड सच आप सच सच सच सच वरताया। नाम सच धाम सच सच गुर सच सतिजुग लाया। कलिजुग कच्च सृष्ट जाए अग्न मच्च, गुर पूरा शब्द लिखाए सच, कलिजुग जीवां भेत ना पाया। महाराज शेर सिँघ खेल करे निराला, छड्ड देह जोत रूप आया। जोत रूप करे खेल निराला, शब्द रूप जगाए जोत अपारा। सर्ब सुख गुर चरन दुआरा। सोहँ शब्द गुर सच भण्डारा। अमृत नाम प्रभ दए निरँकारा। गुण निधान लिखे लेख अपारा। सच शब्द देह होए आधारा। सुरत शब्द प्रभ पाए दरस अपारा। वज्जे धुन खुल्हे दस्म दुआरा। होए धुन्कारा दीपक जोत जगे अपारा। ब्रह्म ज्ञान होए महाराज शेर सिँघ मिले निरँकारा। कलिजुग आण गुर खेल रचाया। निर्धन देख गुर दरस दिखाया। ग़रीबां गुर दरगाह माण दिवाया। गुरसिक्खां सोहँ शब्द नाम सच दृढ़ाया। पतित उधारन निहकलंक अख्वाया। सृष्ट भिखारन इक्क दर पाया। सिख उधारन गुर चरन लगाया। सतिजुग तारन सतिगुर आया। कलिजुग आण जिन बंने लाया। महाराज शेर सिँघ सच नाम रखाया। गुर शब्द अनहद धुन्कार। गुर शब्द गुर सच निस्तार। गुर शब्द अनहद ज्ञान विचार। गुर शब्द गुरसिक्खां पाई सार। गुर शब्द गुर दसवां द्वार। गुर

शब्द देवे जीवन अधार। गुर शब्द आत्म जगे जोत अपार । गुर शब्द महाराज शेर सिँघ देवे दरस अपार। कलिजुग कल प्रभ आप वरताई। देवे दरस सदा सुखदाई। धन्न गुर गुरसिक्खां घाल थाएँ पाए। शब्द रूप देवे दरस गुर पूरा, हत्थ जोड़ गुरसिख चरन सीस झुकाए। कलिजुग खेल अपर अपारा, महाराज शेर सिँघ एह चाल चलाए। कोट वार प्रभ किया पसारा। ऐसा खेल करे निरँकारा। कलिजुग आण प्रभ भए पूरन अवतारा। नर अवतार सच उरधारा । देवे दरस गुर मंगण गुरदुआरा। पलटे जोत तीन लोक चमत्कारा। हरि जी आया कल लै अवतारा।

✻ १६ हाढ़ २००७ बिक्रमी राणी खेत ज़िला अलमोड़ा चुबातीआं बचन होए ✻

अमृत बूंद गुर अमृत बरसाया। अमृत बूंद गुर अमर चढ़ाया। गुरसिक्खां गुर द्वार दस्म खुल्हाया। गुरसिक्खां गुर निजानंद दरसाया। गुरसिक्खां गुर अन्तकाल विच जोत मिलाया । गुरसिक्खां गुर सच धाम पुचाया। गुरसिक्खां गुर जोत निरँजण विच समाया। गुरसिक्खां गुर कलिजुग विच माण दिवाया। गुरसिक्खां गुर विछड़यां आण मिलाया। गुरसिक्खां गुर
१६२ महाराज शेर सिँघ आण जगत तराया। जगत उज्जयारे प्रभ कृपाला। भगत वछल गुर दीन दयाला। गुरसिक्खां गुर दर १६२
०१ धर्मसाला। महाराज शेर सिँघ सच सच सच रखवाला। गुर साचा सच सुच वरतावे। जोत निरँजण विच जगत जगावे। ०१
पूरब उत्तर दिशा अग्न लगावे। सृष्ट सारी टुम्ब उठावे। मोता ख़ून जग वरखा लावे। आपणी कला प्रभ आप वरतावे। कोई जीव भेव ना पावे। विच संसार हाहाकार मचावे। गुरसिक्खां मुख जै जै जैकार करावे। गुरपुरी गुर भाग लगावे। जिथ्थे जोत निरँजण अचलत करावे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जोत जगावे। प्रगट जोत प्रभ कलिजुग निरँकारा। निहकलंक प्रभ लै अवतारा। छड्ड देह होए जोत आधारा। उपजे ज्ञान गुरचरन दुआरा। भगत जनां हरि भगत भण्डारा। जगत उधारे गुरसिख तारे प्रभ लै अवतारा। पापी सँघारे नर्क निवारे महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारा। निहकलंक प्रभ जगत अख्वाए। जुगो जुग एह खेल रचाए। कलिजुग छड्ड देह जोत रूप हो जाए। सतिजुग सति मेहरवान सति सति वरताए। त्रेता प्रगट राम, रिग वेद प्रभ माण दिवाए। द्वापर कृष्न मुरार, अर्जन प्रभ ज्ञान दिवाए। उचर गीता ज्ञान जगत दे समझाए। कलिजुग जामा धार, महाराज शेर सिँघ नाम रखाए। छड्ड देह अपार जोत सरूप हो जाए। होए जगत ख्वार, गुर पूरा एह बचन लिखाए। गुरसिक्खां दित्ता तार, जिन्हां गुर चरन लगाए। होए जगत उधार जिन्हां प्रभ कलिजुग दरस दिखाए।

भगत सोहण हरि द्वार, हरि हरि हरि दरस नैण तृप्ताए। कलजग दित्ता माण महाराज शेर सिँघ गुरसिख तराए। गुरसिक्खां गुर माण दवाया। गुरसिक्खां हरि जू हरि घर मांहि पाया। गुरसिक्खां प्रभ दर्शन दिखाया। गुरसिक्खां मुकंद मनोहर लख़मी नरायण प्रभ नज़री आया। गुरसिक्खां अचुत पारब्रह्म परमेश्र सच दरस दिखाया। गुरसिक्खां कलिजुग जन्म अमोलक पाया। गुरसिक्खां प्रभ होए कृपाल, चुरासी गेड़ कटाया। गुरसिक्खां दे नाम अधार, प्रभ पूरे कर्म कमाया। गुरसिक्खां जगत ना आए हार, जिन्हां गुरचरन ध्यान लगाया। गुरसिक्खां सदा बलिहार, जिन्हां महाराज शेर सिँघ रसना गाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारा। प्रगटे जोत होए जगत उज्जयारा। पापी अपराधी प्रभ डोबे नर्क मँझारा। मदि मास जो लाए रसना दुआरा। माणस जन्म जगत में हारा। महाराज शेर सिँघ प्रगटयो कल नर अवतारा। धन्न गुरसिख जिन्हां गुरचरन प्यारा। भयो कृपाल आप करतारा। देवे दरस आप निरँकारा। जोत जगाए विच देह अपर अपारा। उपजे ज्ञान विच देह शब्द धुन्कारा। प्रगटे जोत आत्म जोत होए चमत्कारा। बुझी दीपक प्रभ करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ गुर प्रगटयो अपर अपारा। अपर अपार प्रभ अन्तरजामी। मध सूदन दामोदर स्वामी। कृष्न मुरार जगत नेहकामी। भगत वछल आप प्रभ स्वामी। प्रगट जोत होए कलिजुग महाराज शेर सिँघ सदा अन्तरजामी। सर्ब सूख गुरचरन दुआरा। कर दरस प्रगटे जोत अपर अपारा। जुगो जुग जगत प्रभ लै अवतारा। कलिजुग जामा धारे प्रभ निरँकारा। जगत भुल्ला होए ख्वार गुरसिक्खां प्रभ पार उतारा। बेमुखां मन सदा हँकारा। रसना चले सदा विकारा। गुरसिक्खां हरि नाम प्यारा। उपजे ज्ञान प्रभ देवे नाम भगत भण्डारा। कलिजुग जामा धार प्रगटयो निहकलंक अवतारा। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग कीयो पार उतारा। कलिजुग आण गुर कलिजुग कर्म विचारया। कलिजुग आण गुर जोत जगाई अपर अपारया। कलिजुग आण गुर धारे खेल रंग करतारया। कलिजुग आण गुर जोत सरूप जगत सँघारया। कलिजुग आण गुर रंग इक्क हो सर्ब समाणयां। कलिजुग आण गुर सोहँ शब्द मारे बाणयां। कलिजुग आण गुर भुन्ने पापी भठयाले दाणयां। कलिजुग आण प्रभ होए निहकलंक एह रंग दिखाणयां। कलिजुग जामा धार महाराज शेर सिँघ जगत भुलाणयां। जगत भुल्लया गुर चरन ना लाए। जगत भुल्लया गुर दरस ना दिखाए। जगत भुल्लयां आत्म ठंड ना पाए। जगत भुल्लयां गुर दी सूझ ना पाए। जगत भुल्लयां गुर झूठे धन्दे लाए। जगत भुल्लयां माया ममता विच मन वसाए। जगत भुल्लयां देह दुरमति होए जाए। जगत भुल्लयां गुर आया सार ना पाए। जगत भुल्लया निहकलंक प्रभ जोत प्रगटाए। जगत भुल्लयां महाराज शेर सिँघ चरन ना लाए। गुरसिक्खां गुर चरन लगाया। कलिजुग जामा धार प्रभ दरस दिखाया। देवे दरस अपार, मुकंद मनोहर प्रभ नज़री आया। कलिजुग दित्ता तार, जिन्हां गुर

१६३ ०१

चरन लगाया। करे खेल अपार, जोत निरँजण आप रघुराया। गुरसिक्खां दित्ता तार, सुरत शब्द गुर ज्ञान दिवाया। होए जोत आधार, दीपक देह विच जोत जगाया। जामा ल्या धार, घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा प्रगट जोत अपार, कलिजुग नास कराया। उपजे शब्द गुरचरन ध्याना। उपजे शब्द प्रभ दे ज्ञाना। उपजे शब्द जगे जोत विच देह निधाना। उपजे शब्द गुर शब्द बुझाना। उपजे शब्द मिले विष्नूं भगवाना। उपजे शब्द प्रभ दरस होए बिधनाना। उपजे शब्द गुर सोहँ शब्द वखाना। उपजे शब्द हरि भगत हरि चरन ध्याना। उपजे शब्द प्रभ हरि रंग जीव जन्त समाणा। उपजे शब्द प्रभ देवे नाम दाना। उपजे शब्द मन भए ज्ञाना। उपजे शब्द आत्म जोत प्रभ जोत मिलाना। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, राउ रंक जिस इक्क समाना। कलिजुग लै अवतार, कलिजुग पार उतारया। कलिजुग लै अवतार, गुरसिक्खां गुर पार उतारया। कलिजुग लै अवतार, जीव जन्त प्रभ कर्म विचारया। कलिजुग लै अवतार, बेमुखां गुर नर्क निवारया। कलिजुग लै अवतार, गुरसिक्खां गुर चरन लगा ल्या। कलिजुग लै अवतार, कलू काल कलू गुर उलटा ल्या। सतिजुग लाए अपार, सतिगुर सच सुच्च वरता ल्या। मदि मास जो करे अहार, तिन्हां नर्क निवास दिवा ल्या। गुरसिक्खां गुर चरन प्यार, अमृत बूंद मुख चवा ल्या। सभ दा गंवाए माण, प्रभ सोहँ शब्द चला ल्या। प्रभ सरूप एक, जगत रूप अनेक वटा ल्या। जुगो जुग लै अवतार, भगत जनां प्रभ आण तरा ल्या। कलिजुग जामा धार, निहकलंक प्रभ आप अख्वा ल्या। तजी देह जोत सरूप, महाराज शेर सिँघ कलिजुग उलटा ल्या। धरे जोत जगत गुर पूरा। अनहद शब्द सदा सरूरा। होए अन्धघोर उपजे राग शब्द गुर सतिगुर पूरा। उपजे ज्ञान माने सदा मन अनन्द घनघोरा। जगे जोत सदा निरालम, उपजे दरस मिले गुर सूरा। महाराज शेर सिँघ जगत प्रगासिओ जिस दा बचन ना होए अधूरा। मुख वाक् करे गुर पूरा। जगत उधारे आप सच सूरा। तीन लोक प्रभ सद भरपूरा। विच पताल प्रभ नैण मधूरा। बाशक सेज बैठा गुर सतिगुर पूरा। विच आकाश प्रभ जोत सरूरा। उनन्जा पवण चँवर सिर हूरा। जगे जोत अटल्ल प्रभ हज़ूरा। विच पताल लच्छमी प्रभ चरन हज़ूरा। विच मात प्रभ विच देह है तूरा। कोई ना जाणे गुर प्रगटयो आण कलिजुग सतिगुर पूरा। लै अवतार भगतन उधार महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा। जो ना भुल्ले मेरा नाउँ, तिन्हां दुःख ना ब्यापे। जो ना भुल्ले मेरा नाउँ, तिन्हां कोई रोग ना स्सयापे। जो ना भुल्ले मेरा नाउँ, तिन्हां मिल्या हरि हरि हरि मिल्या आपे। जो ना भुल्ले मेरा नाउँ, झूठी देह विच प्रभ ब्यापे। जो ना भुल्ले मेरा नाउँ, हर रंग विच हरि हरि हरि प्रभ जापे। जो ना भुल्ले मेरा नाउँ, समरथ पुरख प्रभ दरस दरसापे। जो ना भुल्ले मेरा नाउँ, महाराज शेर सिँघ निज आत्म प्रकाशे। निजानंद निज मांहि पाए। गुर पूरा जां दरस दिखाए। बुझी

दीपक प्रभ विच देह जगाए। ज्ञान जोत हिरदा हो जाए। ज्ञान गोझ प्रभ आप खुल्हाए। जोत निरँजण विच देह प्रगटाए। ज्ञान उपजे ध्यान गुर चरन लगाए। आत्म प्रकाश हरि दर्शन पाए। गुरसिख रंग गुर रंग मजीठ चढ़ाए। धार खेल अपार, प्रभ चतुर्भुज कहाए। बन माला भिबूखन कँवल नैण सिर मुकट टिकाए। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग लै अवतार कृष्न दे दरस दिखाए। कलिजुग प्रीत गुर चरन ध्याना। उपजे ज्ञान प्रभ रिदे समाना। हरि हरि रंग हरि इक्क समाना। हरि जीउ उपजे देवे ब्रह्म ज्ञाना। उपजे ज्ञान गुरचरन ध्याना। माणे रंग प्रभ जोत समाना। कलिजुग प्रगटे विष्नूं भगवाना। सोहँ शब्द नाम है दाना। कलिजुग आयो प्रभ लै अवतारा। द्वापर कृष्न मुरार, कलिजुग शेर सिँघ निरँकारा। जुगो जुग प्रभ लै अवतारा। करे जोत प्रकाश, मिटे कलिजुग अन्धयारा। होए रहिरास सोहँ शब्द लै अवतारा। होए सभ दा नास, लिखाए आप प्रभ गिरधारा। गुरसिख उतरे पार, जिन्हां प्रीत गुर चरन दुआरा। बेमुखां आई हार, जिन्हां रसना हरि हरि हरि नाम ना उचारा। कलिजुग नर अवतार, महाराज शेर सिँघ आप निरँकारा। निरँकार अछल अडोल्लया। जोत सरूप सभ जगत मौलया। कलिजुग लै अवतार, आपणा आप छुपा ल्या। छड्ड देह प्रभ जोत सरूप हो जगत भुला ल्या। कोए ना पाए सार, जोत सरूप प्रभ विच सिख समा ल्या। देवे ब्रह्म ज्ञान, गुर पूरे मुख वाक् सुणा ल्या। मानस जन्म ल्या सुधार, जिन्हां कलिजुग महाराज शेर सिँघ दा दर्शन पा ल्या। गुर दरस गुर दर ते पाए। हउमे ममता मैल गंवाए। नाउँ निरँजण आत्म जोत जगाए। झूठी देह विच सच सुच्च वरताए। हरि भगत हरि दर्शन पाए। हरि जू बद्धा गुरसिख घर आए। करे जोत प्रकाश सोहँ शब्द गुर ज्ञान दिवाए। सो सुहाए थान, जिथ्थे गुर दरस दिखाए। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ जोत जगाए। गुरसिक्खां दे ज्ञान, दूई द्वैत मिटाए। गुर संगत हो मेहरवान, प्रभ जोत प्रगटाए। निरँजण जोत अगम्म, कोई भेद ना पाए। सो जन जाणे, जिन्हां प्रभ द्वार दस्म खुल्हाए। होए शब्द धुन्कार, मन अनहद शब्द वजाए। उपजे राग रसार, आत्म हरि हरि हरि मंगल गाए। लागे चरन ध्यान, गुर पूरा दरस दिखाए। उपजे ब्रह्म ज्ञान, महाराज शेर सिँघ जोत जगाए। दोए जोड़ करो गुर बन्दन। गुर का सिख कलिजुग प्रभास जिउँ चन्दन। प्रगटी जोत प्रभ त्रैलोकी नंदन। देवी देव सभ प्रभ दर ते मंगण। ब्रह्मा विष्न महेष ईश्वर नाम मन हरि रंगन। रूप अगम्म प्रभ भय भंजन। गुर का दरस गुरसिख नित्त मंगण। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सोहँ शब्द दिया जग अंजन। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग हरि नाम चितारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग गुरचरन निमस्कारया । धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां गुर दरस मानस जन्म संवारया । धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग होवे जोत उज्जयारया । धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग मिले प्रभ अपर

अपारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग मिले प्रभ निराधारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग दरस मिले बनवाल्या। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग मिले कृष्न मुरारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग देवे दरस महाराज शेर सिँघ निरंकारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग सोहँ शब्द रसना उचारया। सोहँ शब्द उत्तम ज्ञान। बूझे सो जो पुरख सुजान। पावे सो जिस गुरचरन ध्यान। गावे सो जिस प्रभ देवे दान। धारे सो जिस प्रभ दे दयावान। दरसारे सो जिस प्रभ होए मेहरवान। पावे सो जिस महाराज शेर सिँघ दरस दिखान। दरस दिखावे प्रभ अबिनाशी। रिद्ध सिद्ध प्रभ चरना की दासी। सर्ब वस्सया सर्ब घट वासी। कलिजुग प्रगटी जोत अबिनाशी। जगत सारा सदा विनासी। गुरसिख गुरचरन रहिरासी। जगे जोत होए आत्म प्रकाशी। मिटे अज्ञान रसना प्रभ गुण गा सी। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सर्ब सूख गुरचरन निवासी। गुरचरन उपजे ब्रह्म ज्ञाना। गुरचरन सर्ब रस माणा। गुरचरन प्रभ दर्शन पाणा। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग जोत जगाए महाना। भगत वछल प्रभ बनवाली। भगत वछल सर्ब रखवाली। भगत वछल प्रभ जोत जगा ली। जुगो जुग भगतन प्रभ पैज रखा ली। कोए ना जाणे भेउ ईश्वर जोत निराली। महाराज शेर सिँघ भगत रखवाली। जुगो जुग प्रभ लै अवतारा। भगत जनां प्रभ पार उतारा। बालक ध्रू करे उज्जयारा। प्रहलाद तार नर सिँघ प्रभ लै अवतारा। धार बावन रूप बल नूं पार उतारा। अंबरीक दिवाए माण, चक्र सुदर्शन बाण गुर मारा। इन्दलोक ब्रह्मलोक शिवलोक तज गया बैकुण्ठ प्रभ चरन दुआरा। भगत जनां प्रभ देवे माण, जुगो जुग प्रभ लै अवतारा। दित्ता जनक तार, सचखण्ड जाए सुधारा। तारा कीती पार, जिस प्यार गुरसंगत दुआरा। बिदर होया पार, झुग्गी सुत्ता प्रभ पैर पसारा। सुदामा कर्म विचार, चार पदार्थ मिले प्रभ चरन दुआरा। जैदेउ पाई सार, लेख लिखाए अपर अपारा। नामदेउ दित्ता तार, पाए दरस माणे रंग करतारा। त्रलोचन भरम निवार, रसना जपायो नाम गिरधारा। अन्तकाल अजामल तरिओ, कर दरस तरिओ रविदास चुमारा। बेणी करे विचार, प्रभ दी जोत सदा निराधारा। द्रोपती पाई सार, रक्खी लाज कृष्न मुरारा। गनका उतरी पार, राम नाम रसना उचारा। उधरे भगत कबीर, वेखे सचखण्ड प्रभ निरँकारा। सैण रूप प्रभ आप बणाए, गुरसंगत जो करे प्यारा। पूतना दित्ती तार, जिहड़ी पछाड़ी वांग पहाडा। बधक लाया तीर, गुण अवगुण हरि ना विचारा। भगत जनां प्रभ देवे माण, जुगो जुग प्रभ लै अवतारा। प्रगटी जोत निरँकार, कलिजुग निहकलंक अवतारा। जोत रूप अगम्म शेर सिँघ नाम उचारा। छड्डी देह अनमोल, जोत सरूप प्रभ सर्ब समारा। कलिजुग देवे हार, नर लै अवतारा। सृष्ट होए ख्वार, सोहँ शब्द बाण गुर मारा। गुरसिख उधरे पार, जिन्हां हरि नाम प्यारा। कलिजुग जोत अपार, कोए ना पावे सारा। उलटी सृष्ट

प्रभ कीनी जोत जगत होए चमत्कारा। सोहँ शब्द सर्ब प्रकाशे, चार कुन्ट होए जै जै जैकारा। एक प्रभ आप सरूपा, एक शब्द होए जगत वरतारा। सतिजुग सति सति सति प्रभ वरताए, सोहँ शब्द जपे पुरख अपारा। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग प्रगटयो नर लै अवतारा। गुर का नाउँ गुरसिख जाणे। गुर का नाउँ गुर शब्द पछाणे। गुर का नाउँ गुर भगत ही माणे। गुर का नाउँ ब्रह्म ज्ञाने। गुर का नाउँ होए आत्म ध्याने। गुर का नाउँ गुरसंगत मिलाने। गुर का नाउँ सहँसर रोग मिटाने। गुर का नाउँ आत्म जोत जगाने। गुर का नाउँ झूठी देह विच सच वखाने। गुर का नाउँ हरि प्रभ जोत जगाने। गुर का नाउँ खण्ड ब्रह्मण्ड गुरसिख दरसाने। गुर का नाउँ हरि रंग दिसे हर इक्क समाने। गुर का नाउँ प्रभ जोत साध संगत मिलाने। गुर का नाउँ गुरसिख गुर धाम पहुंचाने। गुर का नाउँ गुरसिख विच बैकुण्ठ पहुंचाने। गुर का नाउँ गुरसिख चुरासी गेड़ कटाने। गुर का नाउँ हर जीव गुर दरस दिखाने। गुर का नाउँ गुरसिख तोड़े अभिमाने। गुर का नाउँ गुरसिख सदा गुरचरन ध्याने। गुर का नाउँ गुरसिख सदा ही माने। गुर का नाउँ गुरसिख आप माने। गुर का नाउँ गुरसिख प्रभ जोत बूझ बुझाने। गुर का नाउँ गुरसिख चले गुर के भाणे। गुर का नाउँ गुरसिख गुर शब्द पछाणे। गुर का नाउँ गुर शब्द उपजावे। गुर का नाउँ अनहद शब्द धुन वजावे। गुर का नाउँ खोल्ह त्रैकुटी प्रभ

१६७
०१

दरस दरसावे। गुर का नाउँ सच मार्ग पावे। गुर का नाउँ गुरचरन लाग दरस दरसावे। गुर का नाउँ गुर सोहँ शब्द अलावे। गुर का नाउँ गुर पारब्रह्म परमेश्र पावे। गुर का नाउँ धरत धवल आकाश इक्क रंग समावे। गुर का नाउँ खाणी बाणी गगन पताली सर्ब थाएँ रहावे। गुर का नाउँ जीव जन्त सर्ब तरावे। गुर का नाउँ गुरमुख कोई पावे। गुर का नाउँ गुर सच नाम मन्त्र दृढ़ावे। गुर का नाउँ आत्म भूपत रंग लगावे। गुर का नाउँ गुरसिख गुरमुख बणावे। गुर का नाउँ खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब है गावे। गुर का नाउँ तीन लोक एक रहावे। गुर का नाउँ प्रभ अबिनाश संग मिलावे। गुर का नाउँ जीव जुगत प्रगटावे। गुर का नाउँ गुर ठांडा घर मांहि पावे। गुर का नाउँ सचखण्ड सच सच सच दरसावे। गुर का नाउँ देह दीपक विच जोत जगावे। गुर का नाउँ बुझी जोत फिर उपजावे। गुर का नाउँ गोझ ज्ञान विच देह प्रगटावे। गुर का नाउँ सर्ब सूख निज़ आत्म पाए। गुर का नाउँ गुरमुख सति रसना गाए। गुर का नाउँ गुरसिख सदा मन भाए। गुर का नाउँ गुरसिख संगत महाराज शेर सिँघ कलिजुग लए मिलाए। गुर का शब्द ऊँच अगम्म अपारा। गुर का शब्द हरि भगत भण्डारा। गुर का शब्द गुरसिख सवारा। गुर का शब्द उपजे आत्म दुआरा। गुर का शब्द गुरसिख मिलाए निरँकारा। गुर का शब्द गुरसिख कलिजुग पार उतारा। गुर का शब्द सोहँ चले अपर अपारा। गुर का शब्द सोहँ सतिजुग लै अवतारा।

महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारा। गुर का शब्द सोहँ उत्तम न्यारा। गुर का नाउँ सर्ब गुण तारा। गुर का नाउँ प्रगटे जोत आप निरँकारा। गुर का नाउँ गुरसिख भरवासा देवे दान हरि नाउँ भगत भण्डारा। गुर का शब्द मिले प्रभ अबिनाशी सर्ब घट वासी, होए ज्ञान गुर दरस अपारा। गुर का शब्द भगत जन जानण, आत्म शब्द नित्त आत्म मानण, मिटे अज्ञान मन होए ज्ञानन। सोहँ शब्द होए धुन्कारा। आत्म जोत आत्म प्रकाशे। गुर का शब्द सर्ब दु:ख नासे। हरि हरि मिलिओ प्रभ अबिनाशे। प्रगटी जोत आप निरँकारा। प्रभ कृपाल भगत वछल दीन दयाल, गुर शब्द आत्म लाल गुलाल होए जोत देह चमत्कारा। प्रभ दर्शन पाया, गुर शब्द गुर ज्ञान दिवाया, रोग सोग सभ दे चुकाया, जोत जगाई प्रभ अपर अपारा। हरि हरि प्रभ हिरदे वस्सया, गुर का शब्द गुरदेव दरस्सया, आत्म सुख मिले मन हरस्सया, बूझ बुझाए प्रभ सिरजणहारा। राम नाम मन मांहि पाया, गुर का शब्द गुर दर्शन पाया, जोत निरँजण विच देह जगाया, प्रगटे जोत प्रभ करतारा। कलिजुग आण प्रभ भगत तराए, गुरसिक्खां गुर माण दिवाए, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ दे उलटाए, करे खेल अचल्ल न्यारा। जुग चौथे दा माण गंवाया, कलू काल करन हरि जू आया, धार खेल चतुर्भुज कहाया, सांवल सुंदर रूप बणाया, करे रंग आप गिरधारा। ब्रह्मे दा हुण माण गंवाया, चार वेद दा अन्त कराया, सोहँ शब्द गुर जगत चलाया, नाम शब्द प्रभ दए भण्डारा। कुरान

१६८ ०१ अंजील कोई रहण ना पाए, बाणी दा हुण माण गुआए, ईश्वर जोत जगत प्रगटाए, गुर पूरा गुरसिक्खां मुँख वाक् सुणाए, १६८ ०१

ऐसा जगत किया उज्जयारा । ऐसी कला प्रभ आप वरताए, मदि मास सभ नष्ट हो जाए, सोहँ शब्द गुर जगत चलाए, सतिजुग सति होए वरतारा। गुर का नाउँ भगत जन गायन, होए ज्ञान गुर चरन ध्यायन, भगत जन प्रभ दर्शन पायण, कलिजुग प्रगटयो प्रभ जोत निरँकारा। गुरसिख तरायण गुण गोबिन्द गायण, घनकपुरी गुर दर्शन पायण, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ लै अवतारा। कलिजुग आण जिस कल संवारी, गुरसिक्खां गुर पार उतारी, जोत निरँजण सर्ब उधारी, प्रगटे आप प्रभ मुरारा। सो बूझे जिन आप बुझाए, बिन गुर कोई भेव ना पाए, देवे दरस आप रघुराए, उपजे शब्द अगम्म अपारा। गुरसिक्खां गुर दर्शन पाया, धन्न गुरसिख जिन्हां गुर चरन सीस निवाया, मन में उपजे ज्ञान हरि जीउ हर मांहि पाया, चतुर्भुज प्रभ तीन लोक आकारा। तीन लोक प्रभ जोत प्रकास्सया, नज़र ना आवे हर जीव में वास्सया, पावे सो जिन प्रभ आत्म प्रगास्सया, जोत जगावे गुर अपर अपारा। रंग एक कोई रूप ना जाणे, प्रभ एक रंग अनेक भेख वखाणे, जोत इक्क कोटन जीव विच समाने, प्रभ का भेउ अगम्म अपारा। कलिजुग प्रगटी जोत निरँकारी, कोई ना जाणे शेर सिँघ कृष्न मुरारी, बाणी बोहथ निहकलंक अवतारी, भगत जनां गुर देवे ज्ञाना। तरे सिख जिन्हां हरि रंग माणया, उधरे सिख जिन्हां

महाराज शेर सिँघ कलिजुग पछाणयां, धन्न गुरसिख जिन्हां हरि रंग माणयां, निहकलंक कलिजुग अवतारा। कलिजुग लै अवतार प्रभ ने भेव चुकाया, किरपा कर अपार मनी सिँघ नूं दरस दिखाया, दित्ता सन्त तार दिल दा गोझ चुकाया, कलिजुग दित्ता तार, जामा लै अपारा। वरते सच होवे गुर जोत अधार, गुर पूरा गुरसंगत देवे तार, गुरसिक्खां सद रहे गुर चरन प्यार, मन दा कपट प्रभ निवारा। मनी सिँघ प्रभ दे वड्याई, उच्च पदवी थिर घर ते पाई, जोत निरँजण विच देह टिकाई, गुर पूरे सच शाह पा ल्या। जगत गुर होवे उज्जयारा, जोत जगाए शेर सिँघ निरँकारा, सर्ब दूख गुरचरन निवारा, भगत जनां सद प्रभ वास्सया। गुरसंगत प्रभ माण दिवाए, गुरसंगत प्रभ रिहा समाए, गुरसंगत प्रभ जोत प्रगटाए, मनी सिँघ प्रभ विच निवास्सया। गुरसंगत हरि इक्क समाना। गुरसंगत प्रगटावे विष्नूं भगवाना। गुरसंगत प्रभ जोत जगाना। उपजे शब्द वज्जे धुनकाना। प्रभ दरस मन जोत जगाईए। प्रभ दरस सचखण्ड दरसाईए। प्रभ दरस जोत सरूप हो जाईए। सदा सदा प्रभ आप उपकारया। जुग कल प्रभ आप उलटाए। जोत निरँजण विच देह जगाए। कलिजुग जामा धार शेर सिँघ नाम रखाए। सोहँ शब्द चले जगत उधारया। सोहँ शब्द सतिजुग सति सति वरताए। सोहँ शब्द प्रभ जोत जगाए। सोहँ शब्द आत्म करे प्रकाश, सच सुच्च विच देह वरताए। सोहँ शब्द होए प्रकाश, जीव आत्म प्रभ जोत जगाए। सोहँ शब्द

१६८ सदा अबिनाश, प्रभ अबिनाशी आप लिखाए। सोहँ शब्द सर्ब गुणतास, बुझी दीपक विच देह जगाए। सोहँ शब्द होए रहिरास, १६८

०१ ०१

अनहद शब्द मन धुन वजाए। सोहँ शब्द उपजे रघुनाथ, आत्म जोत प्रभ दरस दिखाए। सोहँ शब्द मन भए प्रकाश, अमृत झिरना निझरों झिराए। अमृत मेघ गुर पूरा बरख्खे, एक बूंद कँवल में पाए। खुल्हे कँवल होए जोत प्रकास्सया, आत्म द्वार प्रभ पर्दे हटाए। निरँजण जोत करे देह उज्जयारा, खोल्हे त्रैकुटी प्रभ दरस दिखाए। हरि रंग हरि मांहि जाणण, निजानंद प्रभ रिहा समाए। निजानंद जो जन जाणे, हरि दर्शन हरि मांहि पाए। प्रभ अबिनाश अविगत अगोचर, तीन लोक रिहा समाए। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ एक सरूपा, मातलोक प्रभ जोत जगाए। जुगो जुग प्रभ लै अवतारा, भगत जनां नूं आप तराए। सतिजुग होए मेहरवान, त्रेता राम अख्वाए। द्वापर कृष्न मुरार, कलिजुग शेर सिँघ नाम रखाए। कलिजुग जामा धार घनकपुरी गुर भाग लगाए। गुरसिक्खां देवे तार, जिन्हां गुर चरनी सीस झुकाए। बेमुखां आई हार, गुर तों जिन्हां मुख छुपाए। बेमुख ना पायण सार, प्रभ जोत जगत प्रगटाए। कलिजुग कर्म वीचार, गुर पूरा आण माण गंवाए। गुरसिक्खां घर जैकार, जो हरि नाम कल ध्याए। बेमुखां नर्क निवास, जो रसना मदि मास लगाए। निरँजण जोत होए आकार, सतिगुर पूरा सति सच वरताए। सभ दा गुआए माण, सोहँ शब्द मुख रखाए। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जो जीव रसना गाए। प्रगटे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

कलिजुग जीव भेव ना पाए। कलिजुग प्रगटयो शेर सिँघ अवतारे। जोत सरूप सर्ब सृष्ट सँघारे। छड देह होए जोत आधारी। जोत निरँजण अपर अपारी। जीव जन्त सभ जोत हमारी। प्रगटी जोत कलिजुग निरँकारी। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, जाओ सदा सदा चरन बलिहारी। गुरसिख मन गुर चरन प्यास्सया। गुरचरन दरस आत्म धरवास्सया। गुरचरन वज्जे बाण विच प्रभास्सया। देवे बधक तार, करे कृष्न खुलास्सया। कलिजुग जामा धार, देवे दरस प्रभ पुरख अबिनास्सया। गुर गुरसिक्खां लावे पार, जिन्हां गुर चरन प्यास्सया। महाराज शेर सिँघ लै अवतार निहकलंक होए सर्ब निवास्सया। सर्ब निवासी प्रभ जोत सरूप्या। महिंमा अपर अपार, प्रभ वड भूप्या। तेरी कोए ना पाए सार, हर रंग अनूप्या। होए जोत प्रकाश, जगत अन्ध कूप्या। मेरी कोए ना पाए सार, ना रूप ना रेख्या। भगत जन करन विचार, जिन्हां विच विसेख्या। तेरा जोत आकार, गुरमुखां कलिजुग रंग तेरा देख्या। जुगो जुग लै अवतार, प्रभ कढ्ढे भुलेख्या। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां कलिजुग महाराज शेर सिँघ पेख्या। प्रभ का रूप अगम्म, जीव ना जाणया। प्रभ का रूप अगम्म, भगत जनां पछाणया। प्रभ का रूप अगम्म, जीव जन्त विच समाणया। प्रभ का रूप अगम्म, अन्तकाल जोत विच मिलाणया। प्रभ का रूप अगम्म, पुरख निरँजण विच समाणया। प्रभ का रूप अगम्म, सो जाणे जो चले गुर के भाणया। प्रभ का रूप अगम्म, जोत इक्क रंग बहुत समाणया। प्रभ का रूप अगम्म, जीव जन्त विच समाणया। प्रभ का रूप अगम्म, बिन गुर कोई भेव ना पाणया। प्रभ का रूप अगम्म, तीन लोक सदा प्रवाणया। प्रभ का रूप अगम्म, विच आकाश प्रभ जोत सदा डगमगाणया। प्रभ का रूप अगम्म, विच बैकुण्ठ इक्क रंग हो जाणया। प्रभ का रूप अगम्म, उनन्जा पवण सिर छत्र झुलाणया। प्रभ का रूप अगम्म बिन बाती बिन तेल दीपक सदा जगा ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, विच मात दीपक विच देह जगा ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, विच मात कब जोत सरूप, कब विच देह समा ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, जुगो जुग लै अवतार सर्ब दा माण निवारया। प्रभ का रूप अगम्म, कलिजुग प्रगटी जोत अन्त ना पारावारया। प्रभ का रूप अगम्म, शेर सिँघ पाए नाउँ कलिजुग पार उतारया। प्रभ का रूप अगम्म, सोहँ रचिओ नाउँ भगत जनां गुर ज्ञान दिवा ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, विच पाताल बाशक सेज आसण ला ल्या। प्रभ का रूप अगम्म विच पताल प्रभ नैण मुँधालया। प्रभ का रूप अगम्म, विच पाताल लच्छमी खड़ी चरन द्वारया। प्रभ का रूप अगम्म, सेवा कर अपार प्रभ आलस वड्या ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, प्रभ सदा अडोल ना किसे डुला ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, जोत सरूप आपणा आप उपा ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, होए जोत आधार जीव जन्त प्रभ जोत जगा ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, निराहारी निरवैर समा ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, निरँकार अछल ना किसे डुला ल्या। प्रभ का रूप

अगम्म, कलिजुग प्रभ भेस वटा ल्या। कर जोत आकार नाभ कँवल ब्रह्मा प्रगटा ल्या। पाई देह अपार, मुख चार वेद रचा ल्या। सतिजुग होए मेहरवान, आपणा आप उपा ल्या। त्रेता भयो राम, वेद रिग प्रभ माण दिवा ल्या। द्वापर कृष्न मुरार, वेद यजुर पार लँघा ल्या। अर्जन दे ज्ञान, गीता गोझ ज्ञान लिखा ल्या। कलिजुग अथर्बण वेद, अल्ला नाम रखा ल्या। शेर सिँघ लै अवतार, कृष्न जोत प्रगटा ल्या। कलिजुग उधरे पार, सोहँ शब्द गुर नाम वड्या ल्या। गुरसिक्खां पाई सार, जिन्हां हरिजू हर घर में पा ल्या। चढ़े रंग अपार, निजानंद प्रभ दरस दिखा ल्या। पतित पावण दुःख भय भञ्जण, प्रभ जन्म मरन दुःख मिटा ल्या। आत्म प्रकाश लक्ख चुरासी विनाश, अन्तकाल संग जोत मिला ल्या। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सचखण्ड जिस आसण ला ल्या। गुरचरन ध्यान प्रभ दर्शन पाईए। गुरचरन ध्यान मोहण माधव कृष्न मुरार हरि रंग समाईए। श्री राम चन्द जिन रूप ना रेखिआ, कर दरस इक्क रंग हो जाईए। सहस मूर्त नेत्र है सहस, बिन ना गुर बूझ बुझाईए। भगत वछल अनाथ नाथे, कलिजुग जोत निरँजण दरस है पाईए। गोपी नाथ सगल है साथे, बिन गुर आत्म जोत ना जगाईए। बासदेव निरँजण दाता, कलिजुग शेर सिँघ नाम रखाईए। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण, भगत वछल प्रभ रसना गाईए। द्रोपती लज्जया निवार उधारन, कृष्न घनईआ सद दर्शन पाईए। कमला कन्त करे कन्तूहल, अनद बिनोदी सभ रंग चढ़ाईए। श्री रंग प्रभ बैकुण्ठ के वासी, हरि हरि रसना हरि गुण गाईए। मच्छ कच्छ कूरम आ गया अउतरासी, प्रभ पूरा कर दरस बिग्साईए। केसव चलत करे निराले, कलिजुग कीता लोड़े सो पाईए। निरहारी प्रभ निरवैर सदाए, बिन भगतां कोई ना जाणेगा। धार खेल चतुर्भुज कहाए, कोई विरला ही रंग माणेगा। सांवल सुंदर रूप बणावे, बेन सुणत मन बिग्सावेगा। भगत जनां होए जोत प्रकाशया, अनहद शब्द मन वजावेगा। होए प्रकाश आत्म उज्जयारा। जोत सरूप प्रभ दरस दिखावेगा। धन्न गुरसिक्खां जिन्हां महाराज शेर सिँघ पछाणया, गुर पूरा तिन्हां चरन लगावेगा। बन माला भिबूखण कँवल नैण प्रभ दरस दिखावेगा। सुंदर कुण्डल मुकट बैन प्रभ दरस दिखावेगा। सोहँ शब्द चले न्यारा, राउ रंक इक्क रंग समावेगा। एक जोत प्रभ जगत प्रगास्सया, जोत सरूप प्रभ भेद चुकावेगा। प्रभ शब्द है एका, एक जोत जगत जीव उपजावेगा। कलिजुग बाण सोहँ गुर लाया, चार कुन्ट हाहाकार मच जावेगा। उधरे सिख जिन गुर चरन प्यास्सया, वांग बिदर रंक तर जावेगा। दुर्योधन छड्ड महल्ल, घर बिदर कृष्न डेरा लगावेगा। कलिजुग लै अवतार, भगत जनां प्रभ माण दिवावेगा। मूर्ख मुग्ध अञ्याण ना पावण सार, जोत सरूप प्रभ जोत प्रगटावेगा। गुरमुखां पाई सार, निहकलंक छड्ड देह, कलिजुग महाराज शेर सिँघ अख्वावेगा। शेर सिँघ प्रगटयो नर अवतारा। कलिजुग कीता जिस पार किनारा। मदि मासी होए जगत ख्वारा। सतिजुग साचा सच

लाए निरँकारा। वेद चार गुर पार उतारा। अंजील कुरान गए जगत मँझारा। बाणी गीता गुर पार उतारा। सर्बत्त तीर्थ गुरचरन दुआरा। कलिजुग प्रगटयो शेर सिँघ नरायण नर अवतारा। सतिजुग सोहँ शब्द चले अपर अपारा। चार कुन्ट होए महाराज शेर सिँघ जै जैकारा। जोत सरूप प्रभ जुग उलटाया। जोत सरूप प्रभ कलिजुग कहर वरताया। जोत सरूप जीव जन्त विच विकार चलाया। जोत सरूप प्रभ एह पाई माया। जोत सरूप कलिजुग मदि मास आहार बणाया। जोत सरूप कलिजुग लै अवतार, घनकपुरी गुर भाग लगाया। जोत सरूप गुर अर्जन शब्द विचार, सर अमृत गुर चरन टिकाया। एह सुहाया थान, जिथ्थे श्री राम चन्द्र चरन टिकाया। बेमुखां ना पाई सार, हा हा कर शोर मचाया। लिख्त लिखाई अपर अपार, सर अमृत नूं थेह कराया। ऐसा समां प्रभ लै आवे। अमृतसर दा नाम मिटाया। सति शब्द गुर ज्ञान दृढ़ावे, अंडज जेरज उत्भुज सेतज सर्ब जीव रहावे। प्रभ जोत सरूप जोत जगत जुगत विच जीउ जगावे। प्रभ पूरन समरथ, जोत सरूप विच सिख समावे। प्रभ अबिनाश सदा अकथ्थ, कथी कथ किसे नज़र ना आवे। तीन लोक प्रभ जोत सरूपा, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ जोत जगावे। कलिजुग भगत उधार, देह दीपक प्रभ जोत जगावे। पूरन पुरख समरथ, जिथ्थे प्रभ जोत सदा परवेस्सया। जोत अडोल सदा निरँकार, कलिजुग आण प्रगटे मृगेस्सया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग गुर सतिगुर पूरा, ऐसे गुर को सदा
१७२ ०१ आदेस्सया। जगत पित प्रभ भए सहाया। भय भयानक विच प्रभ होए सहाया। भगत जन ध्यान गुरचरन लगाया। धरनी १७२ ०१
धर ईश्वर नर सिँघ नरायण प्रभ नज़री आया। कलिजुग लै अवतार, दाढ़ां हेठ सभ सृष्ट चबाया। प्रभ जोत निराधार, जगत विच अग्न जलाया। पूरब कर्म विचार, गुरमुखां गुर दरस दिखाया। कलिजुग उतरे पार, मोहण माधव कृष्न मुरार जगदीश्वर हरि जू असुर सँघार हरि प्रभ नज़री आया। कोट अपराधी प्रभ दित्ते तार, जिन्हां सीस झुकाया। बेमुखां आई हार, गुरसिख दरगाह माण दिवाया। भवजल उतरे पार, अन्तकाल नर नरायण नज़री आया। सर्ब दूख निवार, जोत सरूप प्रभ जोत जगाया। खण्ड सच होए निवास, जिन्हां प्रभ जोत मिलाया। प्रभ सर्ब गुणतास, दे दरस सभ रोग मिटाया। कलिजुग भगत प्रगास, जिन्हां महाराज शेर सिँघ चरन लगाया। गुर गोबिन्द जगत प्रगासे। धन्न गुरसिख जिन्हां गुरचरन प्यासे। झूठी सृष्ट डुब्बी विच हासे। कोई ना कट्टे रोग चुरासे। अमृत बूंद गुर दर ते पाईए, होए चुरासी बन्द खुलासे। गुण निधान गुर पूरा पाईए, आत्म जोत ब्रह्म प्रगासे। आत्म ब्रह्म ब्रह्म सच सुच्चा, ईश्वर जोत ब्रह्म निवासे। ब्रह्म सरूप जो जन जाणे, आत्म जोत निरँजण प्रकाशे। मध सूदन दामोदर स्वामी, घट घट वासी सर्ब निवासे। पूरन पुरख अगम्म अपारा, सर्ब सूख गुरचरन है पासे। हरि हरि हरि नाम सदा मुख उपजे, हरि शब्द मन तृप्तासे। उपजे ज्ञान वज्जे धुन्कारा, अनहद शब्द विच आत्म

प्रकाशे। खुल्ली त्रिकुटी होया उज्जयारा, जोत निरँजण विच आकाशे। शब्द धुन सदा मन उपजे, नाभ कँवल अमृत बूंद मुख चवासे। ऐसा ज्ञान देवे गुर पूरा, कलिजुग होए रहिरासे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग कीनी बन्द ख़ुलासे।

❋ २ भाद्रों २००७ बिक्रमी चबातीआं बचन होए ❋

प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग जोत प्रगटावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग झूठी देह विच जोत जगावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग कर जोत प्रकाश अन्धेर मिटावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग आपणा भेद ना किसे बतावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग गगन पाताल मात रहावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग तीन लोक जोत जगावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग खाणी बाणी विच समावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग जोत निरँजण विच देह जगावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग आण निहकलंक अखवावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग जुगो जुग जोत प्रगटावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग धरनी धर ईश्र नर सिँघ नरायण अखवावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग मुकंद मनोहर प्रभ नज़री आवे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग सुंदर कुण्डल कँवल नैण दरसावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग मुकट बैण सिर टिकावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग झूठे धन्दे जगत भुलावे। प्रभ पूरन समरथ,
१७३ ०१ कलिजुग साध संगत विच समावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग नैण मुँधार जगत जोत जगावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग १७३ ०१
छड बैकुण्ठ विच मात दे आवे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग आप इक्क रंग इक्क समावे। प्रभ पूरन समरथ, अन्त काल कल आप करावे। प्रभ पूरन समरथ, आपणी महिंमा आप जणावे। प्रभ पूरन समरथ, दीना नाथ भय भंजन अखवावे। प्रभ पूरन समरथ, दीना नाथ आपणा भेत खुलावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग प्रगास्सया, महाराज शेर सिँघ सर्ब दूख मिटावे। प्रभ पूरन समरथ, जगत दीना नाथ अखवावे। प्रभ पूरन समरथ, कलू काल प्रभ आप मिटावे। प्रभ पूरन समरथ, गुरमुखां गुर हरि रंग चढ़ावे। प्रभ पूरन समरथ, भगत जनां हरि मांहि समावे। प्रभ पूरन समरथ, आत्म जोत विच जीव जगावे। प्रभ पूरन समरथ, हर जीव प्रभ सदा समावे। प्रभ पूरन समरथ, जुगो जुग प्रभ खेल रचावे। सतिजुग भयो मेहरवान, सति सति कल वरतावे। प्रभ पूरन समरथ, त्रेता भयो राम नाम सृष्ट चलावे। असुर सँघार कृष्न मुरार दित्ता भगत उधार, गीता ज्ञान लिखावे। कलिजुग महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, सोहँ शब्द चलावे। सोहँ होए उज्जयारा, बाकी सभ नष्ट हो जावे। ऐसा बाण शब्द गुर लाया। चार कुन्ट हाहाकार कराया। भुल्ला जगत गुर सच ना पछाता, ऐसा पर्दा कलिजुग पाया। प्रगटी जोत विच घनकपुरी दे, महाराज शेर सिँघ नज़र ना आया। कलिजुग प्रगटयो नर अवतारा। जोत सरूप आप दातारा। जीअ

जोत विच देह अधारा। आपणा आप ना जीव विचारा। सचखण्ड वसे आप गिरधारा। जगत जोत प्रभ करे उज्जयारा। नज़र ना आवे आप कलधारा। आत्म प्रवेश अन्धेर निवारा। पतित पाप प्रभ दरस निवारा । महाराज शेर सिँघ सचखण्ड दुआरा। निरँजण जोत विच देह समाए। प्रभ अबिनाशी उलटी कला वरताए। जोत सरूप सर्ब सृष्ट जलाए। जोत सरूप जीव जन्त भुलाए। सर्ब सूख सर्ब घट वस्सया, आदि अन्त कोई ना पाए। सर्ब थांएँ प्रभ रिहा समाए। महिंमा आपणी ना किसे जणाए। करता प्रभ आप निरंतर, जोत निरँजण विच जग दे आए। भुल्ली सृष्ट गुर ना विचारे। प्रभ अबिनाशी सदा है नाले। माया भुलाया जगत डुलाया, हरि घर में हरि कोई ना पाए। महाराज शेर सिँघ सर्ब का दाता, चार वरन जिस इक्क कराए। कलिजुग होवे अन्ध अन्धयारा। जोत निरँजण कियो उज्जयारा, निहकलंक भगत जन प्यारा। महाराज शेर सिँघ प्रगटयो कल लै अवतारा। घनकपुरी विच गुर भाग लगावे। जल धारा गुर धाम बण जावे। धार खेल चतुर्भुज कहावे। सावल सुंदर प्रभ रूप बणावे। उलटी मति सृष्ट विच पावे। शब्द बाण जगत जलावे। बेमुख दर ते धक्के खावे। मदि मासी सभ नष्ट हो जावे। जुग चौथे विच निहकलंक जोत प्रगटावे। महाराज शेर सिँघ नाम रखावे। कलू काल प्रभ दे मिटाए। सोहँ शब्द जगत गुर ज्ञान दिवाए। सचखण्ड विच मात बणाई। जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटाई। पापीआं अपराधीआं सार ना

१७४
०१

पाई। झूठी सृष्ट कलिजुग विच समाई। वाहवा गुर पूरा सतिजुग लाई। आप सति सतिवादी जीव प्रगटाई। जीव विस्मादी विच विस्माद समाई । महाराज शेर सिँघ भगत वड्याई। जीव विस्मादी प्रगट भयो आप प्रभ विनोद विनादी। जगन्नाथ गोपाल मुख भणी सर्ब के साथी। पीत पीतंबर त्रैभवन धनी, पवण पाण प्रगटयो प्रभ अबिनाशी। जगत बाण गुर शब्द चलाया, होवण नास सर्ब अपराधी। भगत जनां हरि नाम ध्याया, कलिजुग प्रगटे आप रघुरादी। सर्ब सूख आत्म प्रगास्सया, देवे दरस प्रभ गुण वादी। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग आण सृष्ट जिन साधी। कलिजुग आण प्रभ भए प्रगास्सया। हर जीव विच प्रभ वेख तमाशया। गुरसिक्खां लग चरन रहिरास्सया। देवे दरस प्रभ अबिनास्सया। भगत जनां सर्ब दूख विनास्सया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जपिओ रसना सवास्सया। प्रगटे जोत प्रभ कल निरँकार। करे खेल जगत प्रभ अपर अपार। सच सुच्च वेखे करे भगत उज्जयार। कोई ना जाणे प्रभ बैठ जिस सद निमस्कार। सोहँ शब्द चले रहिरास। कलिजुग किया जिस पार किनारा। सोहँ शब्द सतिजुग प्रकाशे, महाराज शेर सिँघ लियो अवतारा। कलिजुग प्रगटयो आप निहकामी। सर्ब का करता सर्ब का स्वामी। चार वेद कीए जिस खामी। कुरान अञ्जील मिटाए सभ नामी। खाणी बाणी प्रभ विच जोत समानी। सोहँ शब्द होए ब्रहनामी। जो उपजे सो लए मिलाए, प्रभ वड दाता सदा सुख दामी। एक आप

एक जगत उपाया, एक शब्द प्रभ देवे दानी। सोहँ शब्द होए जगत उज्जयारा, पाए सो जिस बख्शे प्रभ अबिनाशी। मूर्ख मुग्ध सार ना जानण, माया भुलाए मदि मासी, सद नर्क निवासी। शब्द लिखाए प्रभ अन्तरजामी, बिन गुर कोए ना करे बन्द खुलासी। महाराज शेर सिंघ गुर सतिगुर पूरा, निहकलंक कल जगत अख्वासी। कर्म धर्म गुर आप विचारया। गुरसिख सोहण गुर चरन द्वारया। देवे दरस प्रगट हो आप करतारया। देवे माण आप गुर सूरा, कर किरपा जिस पार उतारया। जन्म मरन गुर गुरसिख निवारया। कर दरस मन होए अधारया। करे निवास सिख गुर चरना, सचखण्ड गुर चरन द्वारया। जोत विच प्रभ जोत मिला के, सचखण्ड गुरसिख निवारया। बैकुण्ठ धाम सर्ब सुख वस्सया, जिथ्थे शेर सिंघ रिहा समाए। गुर पूरा गुरसिख तराए। सोहँ शब्द गुर ज्ञान दिवाए। गुर पूरा गुरसिख बणाए। मदि मास तों जीव हटाए। जोत निरँजण सदा अबिनाश, जोत सिख प्रभ लए मिलाए। जोत आकार सदा अपरम्पर, जोत सरूप जीव जगत जगाए। ऐसी जोत जगत प्रगास्सयो, गुरसिक्खां गुर ज्ञान दिवाए। जोत शब्द गुर चाले, छड देह निहकलंक अख्वाए। निहकलंक आप प्रभ पूरा, छड्ड आकाश विच मात दे आए। कलिजुग जीव कोई भेद ना जाणे। सचखण्ड वासी विच देह समाए। विच देह प्रभ जोत निरँजण, झूठा जगत कोई सार ना पाए। शरन लग्गे सर्ब सुख उपजे, द्वार दस्म प्रभ दे खुल्हाए। अनहद शब्द वज्जे धुन्कारा, आत्म

१७५ ०१ जोत प्रभ दरस दिखाए। झिरना झिर बूंद इक्क उपजे, अमृत बूंद कँवल में पाए। खुल्हे कँवल होए उज्जयारा, प्रभ पूरन १७५ ०१

विच नज़री आए। खोल्ह त्रैकुटी त्रैभवन बुझाया, निजानंद प्रभ रिहा समाए। भगत जनां गुर किरपा कीनी, कलिजुग आण दरस दिखाए। महाराज शेर सिंघ गुर सतिगुर पूरा, अन्त कलू दा आण कराए। अन्त काल कल आप कराया, सतिगुर साचे सच शब्द सुणाए। सोहँ शब्द जगत उज्जयारा, ज्ञान गोझ दा भेत मिटाए। आवे शांत मन तृप्तासे, प्रभ पूरा जब दरस दिखाए। सर्ब सूख गुर दर्शन पाया। झूठी देह सच सुच्च वरताए। घनकपुरी गुर भाग लगाया। कलिजुग आण जोत प्रगटाए। निहकलंक सदा निहकामी, सर्ब सृष्ट भस्म कराए। मुख वाक् गुर आप लिखाया। महाराज शेर सिंघ बाण लगाए। छड्ड देह जोत रूप समाया। देवे ज्ञान प्रगट रघुराया। जगे जोत होए जगत रुशनाया। तीन लोक जै जै कार कराया। प्रगटावे गुर गुर सिँघ मनी सच तख्त सति बहाया। तरे सो जिन गुर चरन सीस निवाया। उन्नीं सौ तरवंजा बिक्रमी अमृतसर गुर बचन लिखाया। बचन लिखाए आप गुर साखी, सरअमृत नूं थेह कराया। ऐसा धाम बणे इक्क न्यारा, जिथ्थे सतिगुर चरन टिकाया। ऐसी कला कलू कल वरते, जमना किनारे प्रभ जोत प्रगटाया। सच बचन गुर साच लिखाए। अस्सू उन्नी एह भेत खुल्हाए। महाराज शेर सिंघ गुर सतिगुर पूरा, ऐसी कला आप वरताए। निरधन सरधन गुर माण दिवाए। एक

जोत इक्क रंग हो जाए। दीनां नाथ प्रभ पूरन समरथ, प्रगट जोत दरस दिखाए। आदि जुगादि सर्ब सुख दाता, भगत जनां हरि पैज रखाए। बेमुख सारे नर्क निवारे, झूठा जीव कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगास्सया, प्रगट बुग्घीं दरस दिखाए। तरन तारनो इक्क मील दुराडा। प्रगटे जोत गुर पूरा सतिगुर डाहडा। जोत जगाए आप पुरख निरँजण, देवे माण मनी सिँघ होवे वडभागा। महाराज शेर सिँघ जोत जीव जगावे, जगत दरसावे सतिगुर ठांडा। ठंड पए गुर दर्शन पाया। उपजे ज्ञान नैण दरसाया। होए ध्यान गुर चरन सीस झुकाया। जावे माण प्रभ नज़री आया। मनी सिँघ प्रभ माण दिवाया। सतिजुग विच सच गुरू बणाया। सोहँ शब्द गुर ज्ञान दिवाया। महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकाया। चार वरन गुर चरनीं पाया। राणयां महाराणयां प्रभ माण गंवाया। सच तख्त सतिजुग सुहाया। सतिगुर मनी सिँघ सच चरन टिकाया। सच शब्द शब्द गुर ज्ञानन, जोत सरूप जगत जगाया। प्रगट भयो आप निरँकारा, ऐसा दरस प्रभ आण दिखायो। चक्र चिहन जिस दा कोई ना जाणे, जोत सरूप प्रभ विच देह समायो। कलिजुग आण जोत प्रगटाई, सतिजुग साचा राह बतायो। मेरा नाउँ सर्ब सुख दाता, सोहँ शब्द गुर ज्ञान दिवायो। खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब में वस्सयो, सर्ब प्रकाश आप रघुरायो। ब्रह्मा विष्न महेष सर्ब का दाता, तीन लोक प्रभ जोत जगायो। विच पाताल प्रभ बाशक सेजा, चरन झस्सण लच्छमी लायो।

१७८
०१

विच अकाश प्रभ जोत निरँजण, जगे जोत डगमगायो। उनन्जा पवण चवर सिर होते, जोत अडोल ना किसे डुलायो। प्रगटी जोत मात विच आ के, महाराज शेर सिँघ नाम रखायो। छड्ड देह होए प्रभ जोत सरूपा, निहकलंक जगत अख्वायो। निहकलंक हो जगत प्रभ घाले, पापी अपराधी नर्क में पायो। भगत जनां आण दरस दिखाया। कलिजुग काल सोहँ शब्द करायो। मैं हां परिपूर्ण परमेश्वर, गुण अवगुण कदी ना विचारयो। चरन आए सभ तर जाए, महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकायो। भुल्ली सृष्ट ज्ञान गुर देवे, कलिजुग आण चतुर्भुज कहायो। ऐसा दान सिक्खन गुर देवे, सोहँ शब्द दीपक देह जगायो। जगे दीपक होए उज्जयारा, महाराज शेर सिँघ निज घर में पायो। होए दरस थिर घर वासा, देवे दरस प्रभ आप अबिनासी। भगत जनां दे पड़दे लाहे, देवे ज्ञान जगत गुर वासी। महाराज शेर सिँघ सर्ब घट वासी। देवे नाम हरि नाम दृढ़ाए। भगत जनां नूं सोझी पाए। पूरन सिँघ विच प्रभ जोत जगाए। चार जुग प्रभ माण दिवाए। सचखण्ड गुर सच वखाए। सोहँ शब्द जगत ज्ञान दिवाए। धरत धवल आकाश सभ में रिहा समाए। प्रभ का भेत कोई ना पाए। खाणी बाणी गगन पाताली जीव जन्त प्रभ रिहा समाए। झूठा जगत सच जोत प्रकाशे, सच मार्ग गुर दे बुझाए। सच सच सच सभ जगत वरताए। ऐसा सतिगुर सच शब्द लिखाए। शब्द सुरत सर्ब सुख पाया, देवे दरस आप रघुराए। नाउँ मेरा सर्ब रंग राता, रंग चलूल

१७८
०१

विच देह चढ़ाए। नाउँ मेरा कोए जन जपे, जो जपे चन्दण वांग जगत महिकाए। कोट दर्शन हरि नाम ध्याया। हरि जू बद्धा सिख घर आए। भगत जनां प्रभ दरस दिखाए। जुगो जुग आण पैज रखाए। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, दे दरस जिन सिख तराए। गुर का शब्द गुरसिख ही जाणण। गुर का शब्द भगत ही मानण। गुर का शब्द मन देवे ज्ञानण। गुर का शब्द आत्म जोत जगानण। गुर का शब्द निजानंद रस मानण। गुर का शब्द प्रभ सरूप समानण। गुर का शब्द देवे आत्म चानण। गुर का शब्द हरि हरि हरि रिदे समानण। गुर का शब्द माया ममता मोह तजानण। गुर का शब्द सिख गुर दर ते पानण। गुर का शब्द मिल साध संगत रसना बखानण। गुर का शब्द काया कूड़ी विच देवे चानण। गुर का शब्द कलिजुग रोग सोग मिटानण। गुर का शब्द जोत सरूप सभ जोत मिलानण। गुर का शब्द गुर किरपा गुरसिख ही पानण। गुर का शब्द गुरसिक्खां दानण। गुर का शब्द सति सतिजुग पछानण। गुर का शब्द सोहँ शब्द गुर शब्द पछानण। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, दे दरस देह अंध्यार मिटानण। गुरशब्द गुरसिख कमाए। गुरशब्द कोई विरला पाए। गुरशब्द कलिजुग पन्ध मुकाए। गुरशब्द अनन्द शब्द वुठाए। गुरशब्द भरम भौ गंवाए। गुरशब्द गुर दरस दिखाए। गुरशब्द सच सुच्च विच देह वरताए। गुरशब्द नैणहीण जोत जगाए। गुरशब्द भगत जनां थिर घर सोझी पाए। गुरशब्द हरि जू हरि संग मिलाए। गुरशब्द मिले सर्ब सुखदाए। गुरशब्द सोहँ रूप विच शब्द उपाए। सोहँ शब्द सतिजुग सति सति वरताए। गुरशब्द होए सिक्खन सहाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर डाहडा, निहकलंक हो बचन लिखाए। बचन लिखाए प्रभ देवे ज्ञाना। हँकारीआं दुराचारीआं प्रभ तोड़े अभिमाना। भगत जनां कलिजुग हरिजू पछाणा। बेमुखां गुर परे हटाणा। गुरसिख दरस गुर दाना। बेमुखां होए कष्ट महाना। गुरसिक्खां प्रभ संग जोत मिलाना। बेमुखां ना मिले टिकाणा। गुरसिक्खां सतिगुर मनी सिँघ चरनीं लाणा। बेमुखां नर्क निवास दिवाणा। कलिजुग प्रगटयो महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। सोहँ सतिजुग होए प्रधाना। सोहँ शब्द सतिजुग सति चाले। उपजे ज्ञान जो जीव रसना घाले। होवे ज्ञान जो हिरदे वसा ले। पावे विष्नूं भगवान गोझ ज्ञान मिटा ले। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एह शब्द कमा ले। प्रभ होए कृपाल, जगत प्रगास्सया। प्रभ होए कृपाल, ईश्वर जोत विच देह निवास्सया। प्रभ होए कृपाल, मात आयो आप अबिनास्सया। प्रभ होए कृपाल, सुहाए थान जिथ्थे घट वास्सया। प्रभ होए कृपाल, कलिजुग देवे जीव धरवास्सया। प्रभ होए कृपाल, समरथ पुरख आप रघुनाथिआ। प्रभ होए कृपाल, गुरसिक्खां देवे दरस, सच सच सच गुर साख्या। प्रभ होए कृपाल, हरि भगतां विच हरि प्रभ वास्सया। प्रभ होए कृपाल, दीना नाथ दीन के नाथया। प्रभ होए कृपाल, भगत वछल सर्ब के साथया। प्रभ

होए कृपाल, जो जन सिमरे तिन प्रभ जोत संग मिलास्सया। प्रभ होए कृपाल, आप अटल ना कदे विनास्सया। प्रभ होए कृपाल, प्रगट भयो जगत प्रभास्सया। प्रभ होए कृपाल, चार वरन गुर चरन लगास्सया। प्रभ होए कृपाल, राउ रंक होवे इक्क रहिरास्सया। प्रभ होए कृपाल, गुरसिक्खां गुर दुःख दर्द विगास्सया। प्रभ होए कृपाल, कलिजुग आण देवे दरस सिक्खां गुर तास्सया। प्रभ होए कृपाल, बेमुखां कलिजुग नर्क निवास्सया। प्रभ होए कृपाल, मदि मास कीनी जगत बन्द खुलास्सया। प्रभ होए कृपाल, गुरसंगत देवे दरस प्यास्सया। प्रभ होए कृपाल, दे दरस जन्म मरन गुरसिक्खां दुःख विनास्सया। प्रभ होए कृपाल, कलिजुग लै अवतार निहकलंक जगत अख्वास्सया। प्रभ होए कृपाल, सोहँ शब्द करे जगत जोत प्रगास्सया। प्रभ होए कृपाल, महाराज शेर सिँघ जोत सरूप मुख वाक् सुणास्सया। गावे सुणे सो प्रभ पावे। पावे ध्यावे प्रभ दरस दिखावे। रंग रंग रंग प्रभ हरि रंग लगावे। मंग मंग मंग रसना नित्त नाम ध्यावे। अंग अंग अंग हरिजू हर अंग समावे। संग संग संग हरि जू संग समावे। भंग भंग भंग बेमुखां प्रभ नज़र ना आवे। धन्न धन्न धन्न गुर पूरा बैठा जोत जगावे। कला धार कर्म विचार, कूड़ कर्म विच देह मिटावे। देह सुधार देवे जोत आधार, बुझी दीपक प्रभ आप जगावे। महाराज शेर सिँघ नाम निरँजण, आदि अन्त कोई भेव ना पावे। आदि अन्त मैं एकँकारा। मेरा नाम सृष्ट उधारा। सृष्ट उपाई दित्ती वड्याई,
१७८ जोत सरूप सर्ब किया आकारा। कोए ना जाणे प्रभ पछाणे जीव जन्त प्रभ जोत आधारा। कलिजुग आण भगत पछाण, १७८
०१ प्रभ देवे दरस अपारा। जोत अग्न लगाए, पापी आण खपाए, नर्क निवास मधारा। सोहँ शब्द चलाए, निहकलंक अख्वाए महाराज ०१
शेर सिँघ लै अवतारा। नर अवतार जगत लै आयो। जोत सरूप जगत जलायो। ब्रह्मा गंवाए माण, सिँघ पाल प्रभ माण दिवायो। जोत जगाई कर्म विचार, सवरन ध्रू थाएँ बिठायो। सूरत पूरन उतरे पार, सुत जिन्नां संग दीप जगायो। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तीन लोक उलटायो। आप अपरम्पर किसे भेद ना जणावे। आप जोत सरूप सभ जीव जोत जगावे। शब्द रूप ऐसी कला वरतावे। खण्ड ब्रह्मण्ड सभ प्रभ हिलावे। भाणा गुर ना कोई मिटावे। महाराज शेर सिँघ करे करावे। प्रगट जोत भयो प्रकाशा। मेरा नाउँ सर्ब गुणतासा। उपजे जोत होए कलिजुग विनासा। प्रभ आयो वेखण जगत तमाशा। नाउँ रक्खे नाम जगत गुणतासा। सभ ते ऊँच प्रभ अबिनाशा। सर्ब सृष्ट प्रभ करे नासा। गुरसिक्खां मन गुरशब्द प्यासा। सोहँ शब्द मन जपे स्वास स्वासा। सर्ब सूख प्रभ आत्म प्रकाशा। जगे जोत देह घट वासा। उपजे शब्द आत्म प्रकाशा। सतिजुग सति सति सति प्रभ वरताए, महाराज शेर सिँघ सर्ब गुणतासा। सर्ब सूख गुरचरन द्वारया। भगत जन सो जिन सोहँ शब्द रसना उचारया। मन ते तन सो जिन हरि हरि हरि रस माणया। जन सो कलिजुग आण जिन महाराज शेर

सिँघ चरन निमस्कारया। चरन कँवल जो निमस्कारे। कलिजुग पतित उधरे गुरचरन दुआरे। लख़मी नरायण मुकंद मनोहर सदा है नाले। श्री रंग बैकुण्ठ का वासी, भगत जनां कल पैज संवारे। श्री राम चन्द जिस रूप ना रेखिआ, कलिजुग आण प्रभ नाउँ वटा ले। कृष्न मुरार असुर सँघार ले। निहकलंक अवतार शेर सिँघ नाम रखा ले। गुरसंगत देवे तार, भगत जनां होवे जोत आधार, बेमुखां प्रभ पाए नर्क, ऐसा शब्द लिखाया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग आण जोत सरूप जगत उलटाया। जोत सरूप प्रभ जगत जलाया। जोत सरूप नौं खण्ड पृथ्मी बाण चक्र लगाया। जोत सरूप प्रभ तीन लोक सोहँ शब्द सुदर्शन चलाया। जोत सरूप प्रभ बैठ अटल जगत उलटाया। जोत सरूप प्रभ छड्ड देह जोत विच बैकुण्ठ समाया। जोत सरूप प्रभ छड्ड बैकुण्ठ, देह विच सिख समाया। जोत सरूप प्रभ नेहचल छड्ड धाम, विच मात दे आया। जोत सरूप प्रभ सिख जगावे, जोत प्रगटावे। मुक्त जुगत प्रभ आप बतावे। जगन गगन सर्ब सुख दाता, आपणी जोत प्रभ आप जगावे। जोत सरूप सर्ब निरंतर, कलू काल कल आण तरावे। ऐसी कल सरूप जोत प्रभ वरते, चार कुन्ट हाहाकार मच जावे। जोत सरूप आप प्रभ पूरन, निज घर बैठा ताड़ी लावे। जोत सरूप कलिजुग कल आया, माया रूप जगत डुलाए।
१७६ जोत सरूप ऐसी कल फेरी, हरिजू बैठा नज़र ना आए। जोत सरूप जगत डुलाया, प्रभ पूरे दा भेत ना पाए। जोत सरूप १७६
०१ जगत जुग कल उलटाए, आप आपणी देह छुडाए। जोत सरूप ऐसी जोत जगाए निरालम, बेमुख कोई सार ना पाए। दया ०१
धार आप प्रभ बख्शे, सो बूझे जिस आप बुझाए। ऐसी जोत प्रभ की सूखम, भगत जनां प्रभ दे दिखाए। भगत बिना कोई भेद ना जानण, मनमुख दर ते धक्के खाए। मदि मासी कोई रहण ना पाए। ऐसी कला प्रभ वरताए। ऐसा खेल कलिजुग कराया, आपणा भेद ना किसे जणाए। कुम्भी नर्क सभन नूं पाया, मदि मास जो रसना लाए। सोहँ शब्द होए उज्जयारा, सतिजुग प्रभ सति वरताए। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, जोत जगत विच लए प्रगटाए। जगे जोत सतिजुग सतिवादी। कोए ना रहे माध है मादी। ऐसी सृष्ट शब्द गुर साधी। भगत जनां हरि आदि जुगादी। भगत जनां गुर चरन लगाया, उपजे शांत सदा सुखवादी। बेमुख पकड़ नर्क निवारे, कोई ना जीवे मध्या माधी। ऐसा शब्द सोहँ प्रभ चलाया, सतिजुग सति सति सति सदा सतिवादी। महाराज शेर सिँघ एह चलत बणायो, निहकलंक नाउँ अख्वादी। गुरसंगत गुर माण दिवावे। गुरसंगत प्रभ जोत प्रगटावे। गुरसंगत मिल हरि हरि रसना गावे। गुरसंगत सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ जोत जगावे। गुरसंगत उपजे हरि नाउँ, गुरमुख बण जावे। गुरसंगत गुरमुख गुर डेरा लावे। गुरसंगत हरि धाम प्रगटावे, विच कल दे आवे। गुरसंगत गुर नाउँ प्रकाश, जोत सरूप प्रभ बूझ बुझावे। गुरसंगत गुरचरन प्यास, प्रभ अबिनाशी अविगत अगोचर नैणी दरसावे। गुरसंगत

गुर शब्द सुणाया, कोई विरला पावे। गुरसंगत गुर प्रगट कीना, कलिजुग जोत गुरसंगत समावे। गुरसंगत गुर रंग माणे, गुर की महिंमा लखी ना जावे। गुरसंगत गुर दरस दिखाया, ऐसा दिन फेर कदे ना आवे। जोत निरँजण विच जोत समावे। छड्ड मात विच आकाश रहावे। जोत निरँजण विच सिख दे समावे। छड्ड आकाश विच मात दे आवे। ऐसी कला आप प्रभ वरते, कलिजुग बाण शब्द गुर लावे। सोहँ शब्द ज्ञान गुर देवे, गुर सतिजुग सति लावे। भगत जनां कलिजुग गुर दर सूज्झया, विछड़यां प्रभ लए मिलाए। महाराज शेर सिँघ कृष्न मुरार, द्वापर जोत विच कल जगाए। कलू जीव होण नर्क निवासी, प्रभ पूरे दा कोई भेव ना पाए। छड्डी देह प्रभ आप निरंतर, जोत सरूप हो चलत कराए। करे ख्वार शब्द गुर मार, महाराज शेर सिँघ निहकलंक अख्वाए। गुरसंगत गुर दर सूज्झया। गुरसंगत गुर पूरा बूज्झया। बेमुख दर ते रसना लूज्झया। गुर पूरा देख गुरसिख झूज्जया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां बिन किसे ना बूज्झया। गुर पूरा अमृत आप बणावे। गुरसिक्खां गुर मुख चवावे। काया कष्ट प्रभ दे हटाए। ऐसी वरखा गुर अमृत लाए। दुखी जीव कोई रहण ना पाए। अमृत बूंद जिस जन मुख लग जाए। अमृत गुर का सच जोत प्रगटाए। कुष्टी कोढ़ी खिन में सति सरूप हो जाए। आपणी जोत प्रभ संग मिलाए। गुरसंगत गुर एह निशान दिवाए। अमृत गुर का देह अनरोग कराए। जो जन आए शरन गुर परया, अमृत बूंद दे अमर कराए। बेमुख इस दी सार ना जानण, जोत सरूप प्रभ अमृत मेघ वरखाए। सति सति सति गुरसंगत गुर अमृत सिख गुर रसना पाए। पी अमृत सर्ब दुःख काटे, सच बचन प्रभ आप लिखाए। सोहँ शब्द अमृत प्रवेशया, खोल्ह किवाड़ प्रभ दे दरसाए। महाराज शेर सिँघ एह कर्म कराया, जोत सरूप हो अमृत बरखा लाए।

१८० ०१

❋ ३ अस्सू २००७ बिक्रमी राणीखेत पल्टन विच बचन होए ❋

प्रभ उपाए पृथ्मी आकाशा। पसू प्रेत जीव प्रभ का वासा। बांधे सभ कीए दासन दासा। होए जगत गुरसिख रहिरासा। तीन लोक सर्ब घट वासी। पवण पाणी प्रभ चरन के दासी। सोहँ शब्द नाम निरबाणा। सतिजुग कीनो प्रभ प्रकाशा। ऐसा बाण जगत प्रभ लाया। सृष्ट ख्वार गल दुःख पहनाया। उनन्जा पवण चवर सिर होते, जोत सरूप विच देह समाया। खाण बाण गगन पाताल, जीव जन्त प्रभ विच समाया। आदि अन्त कोई भेव ना जाणे, प्रगट जोत निहकलंक अख्वाया। जोत सरूप जगत गुर जाणे, दो हज़ार सत्त बिक्रमी कहर वरताया। मुख वाक् प्रभ आप लिखाए, अस्सू उन्नीं सच सच लिखाया। अस्सू

तिन्न दो हज़ार चार घनकपुर गुर धाम रचाया। होए अन्धेर बचन गुर वरते, ऐसा बचन प्रभ विच दरबार लिखाया। कोए ना जाणे प्रभ के भाणे, झूठ समझ एह वक्त विहाया। बचन लिखाए गुर धाम बणाए, हा हा हा कार विच जगत मचाया। दो हज़ार चार बिक्रमी तिन्न अस्सू, घनकपुरी प्रभ भाग लगाए। गुरसंगत आई प्रभ भए सरनाई, प्रगटी जोत आप रघुराई, गुरसिक्खां मिल सेव कमा ल्या। बचन अमोड़े गुरचरन आ जोड़े, प्रभ दर्शन हरि दर ते लोड़े, सिँघ मोहण विच जोत मिला ल्या। गुर धाम रचाया, सच बचन लिखाया, अन्ध अन्धेर रखाया, ऐसा कहर जगत वरता ल्या। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, जोत सरूप जगत प्रगटा ल्या। अस्सू तिन्न प्रभ दे वड्याई, सतिजुग सति सति सति प्रभ नींह रखा ल्या। कलिजुग पुट पुट प्रभ जड़ पुटा गया। समें अनुसार प्रभ लै अवतार, होए जगत उधार, बेमुखां कोई थाएँ ना पाई, साध संगत उधार भगत वछल प्रभ गिरधार, गोपी नाथ आप मुरार, महाराज शेर सिँघ दरस दिखा ल्या। गुरचरन प्यार रिदे उरधार, कलिजुग गुरसिख उदरे पार, जोत सरूप जिस दर्शन पा ल्या। असुर सँघार गुर दरस भगत भण्डार, सोहँ शब्द रसना उचार, चार वेद जिस माण गंवा ल्या। महाराज शेर सिँघ नाम निरँजण, भगत जनां मिल रसना गा ल्या। मनी सिँघ सुख मन दा पाया। निहकलंक हो ब्रह्म ज्ञान दिवाया। होए जोत अधार, देह दीपक विच जोत जगाया। संगत उधरे पार, जिस तेरा कल दर्शन पाया। शेर सिँघ लै अवतार, कर्म गुर आप लिखाया। जगाई जोत अपार, सच तख्त गुर आप बहाया। सतिजुग सति पुरख सतिवादी, जोत निरँजण विच देह प्रभ जोत सरूप समाया। सर्ब सूख गुरचरन दुआरे, उपजे शांत गुर दर्शन पाया। नाम निधान आत्म प्रकाशे, सतिगुर मनी सिँघ जिस चरन लगाया। कलिजुग काल कट्टी जम फाँसी, गुर पूरे सिर हत्थ टिकाया। आपणा भेव ना किसे जणावे, अन्धघोर कलिजुग ने पाया। अन्तकाल कल आप खपा के, प्रगट हो के जगत दरसाया। महाराज शेर सिँघ पूरन परमेश्र, जोत सरूप हो निहकलंक अखवाया। निहकलंक प्रभ निरँजण जोता। आदि अन्त प्रभ एक रंग होता। गुरसिख नर्क ना खाधे गोता। सतिजुग सति सर्ब सुख होता। देवे माण आप प्रभ मोता। ऐसी कला जगत विच वरते, महाराज शेर सिँघ जोत सरूपा। जोत सरूप भगत उधारन। कलिजुग आया निहकलंक उतारन। सर्ब जगत सँघारन। भगत जनां हरि काज सवारन। देवे दरस जिन तन होए ज्ञानण। संगत विच प्रभ सदा जोत समानण। दे वड्याई पुरख बिधाते, जगाए जोत जगत गुर दानण। देवे वड्याई आप प्रभ परमेश्वर, मनी सिँघ सतिगुर बनानण। नैणी जोत निरँजण वसे, जो जन जाए दरस गुर पानण। जगे जोत आत्म प्रकाशे, आदि अन्त जिन गुरचरन ध्यानण। आप प्रगटाए प्रभ जोत जगाए, कलिजुग अन्त कराए, कलिजुग सतिजुग देवे आप प्रभ मानण। गुरसिख बिल्लाए महाराज शेर

१८१
०१

सिँघ जोत प्रगटाए, कलिजुग जीव सभ नष्ट कराए, गुरसिख दरस गुर पानण। सोहँ शब्द चलाए, चार वेद प्रभ माण गंवाए, कुरान अंज़ील कोई रहण ना पाए, खाणी बाणी अथर्बण माण गुआए, होए शेर जगत प्रधानण। जोत प्रगटाए निहकलंक अख्वाए, मनी सिँघ प्रभ जोत जगाए, कलिजुग तोड़े जोत अभिमानण। चार वरन तराए, गुरचरनीं लाए, राउ रंक इक्क रंग समाए, प्रभ जोत सरूप विच जीव रहाए, जन भगत भेत एह जानण। मदि मास जो खाए, कलिजुग जगत अग्न विच जलाए, खण्ड सच ना मिले थाएँ, नर्क निवास पाए सज़ाए, आपणा आप किया जीव पानण। विकार वधाए प्रभ भुलाए, जगन्नाथ गोपाल भय भंजन नज़र ना आए, कूड़ कर्म संग देह जल जानण। कोई ना सहाए, करन हाए हाए, बिन प्रभ कोई थाएँ ना पाए, कलू जीव दुःख बिल्लानण। जिन दर्शन पाए हरि नाम ध्याए, सोहँ शब्द रसना गाए, जन भगत जोत मिल जानण। प्रभ जोत जगाए, धाम बैकुण्ठ लै जाए, विच जोत मिलाए, आप अभेद प्रभ पूरन जोत विच जोत मिल जानण। कलिजुग आण प्रगटे प्रभ, महाराज शेर सिँघ नाउँ गुरसिख ही जानण। गुरसिख कलिजुग रंग राता। जगावे जोत प्रभ पुरख बिधाता। देवे ज्ञान जगत गुर दाता। भगत वछल हरि रंग समाता। गुरसिख गुरचरन प्यार जगत है नाता। सो जन उधरे जिन बख्शे आप प्रभ गुण निधान सिद्धाता। तीन लोक प्रभ सदा प्रवेशिओ, जोत सरूप जग ना जाता। खण्ड ब्रह्मण्ड सभ इक्क समाना, आप अछल अछल्ल अछाता। जोत जगाए जगत गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ किसे गुरमुख जाता। कलिजुग नाम निधान सोहँ प्रभ दियो, पावे दरस प्रभ जोत समाता। गुरसिक्खां मिल हरि गुण गाए, प्रगटे जोत आप विध नाता। अस्सू तिन्न वडभागा, देवे माण गुरसिख गुर दाता। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन चरन निमस्कारया, महाराज शेर सिँघ सदा है साथा । निहकलंक कल आप अख्वा के, जोत सरूप ना जगत पछाता। खेल रचाए समां ल्याए, देर ना लाए, गुरसिक्खां मन जोत प्यासा । लिख्त कराए सभ दा माण गंवाए, सोहँ शब्द चलाए प्रभ गुणतासा। सृष्ट खपाए, जोत सरूप जगत जलाए, निहकलंक आप अख्वाए, प्रभ भगवन्त सर्ब सुख दाता। बेमुख खपाए, तीन भवन प्रभ दे उलटाए, ध्रू माण तजाए, सवरन दरबान हो जावे, जिस गुर चरन पछाता। चार वेद खपाए, ब्रह्मा विच जोत मिलाए, पाल सिँघ प्रभ माण दिवाए, जुग चार होए जगत विधाता। खाणी बाणी कोई रहण ना पाए, सर्बत्त तीर्थां माण गंवाए, एक जोत प्रभ जगत जगाए, सोहँ शब्द गुर ज्ञान दिवाए, सतिजुग होवे ज्ञान दिवाता। कलिजुग प्रभ अन्त कराए, जुग चौथा दे उलटाए, धरी जोत जगत गुर सागर, नाम निरँजण सभ रसना गाए, महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगासा। जोत सरूप विच देह समाए, बचन लिखाए आप गुर ज्ञाता। कलिजुग जीव कोई भेत ना पावे, सोहँ शब्द जगत गुर दाता। सतिजुग सति सति सति वरताए,

रूप अगम्म प्रभ का भया, जोत सरूप विच देह समाया। आप एक जगत भेख में राया। जोत जगाए नज़र ना आए प्रभ गुरदेवा। भगत वछल अख्वाए, चतुर्भुज दरस दिखाए, महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। सोहँ शब्द जन देवे ज्ञाना। सोहँ शब्द गुरचरन ध्याना। सोहँ शब्द कलिजुग संग जोत मिलाणा। सोहँ शब्द मिलाए संग विष्नूं भगवाना। वस्त सो जो गुर दर ते पाईए। वस्त सो जिस आत्म जोत जगाईए। वस्त सो जित हरि दर्शन पाईए। वस्त सो जिस मिल्यां एक रंग हो जाईए। वस्त सो कलिजुग कल वासी पाईए। शब्द सो जिस जप सचखण्ड समाईए। शब्द सो जिस सिमरन प्रभ अबिनाशी पाईए। शब्द सो जित सिमरन निजानंद दरसाईए। शब्द सो जित सिमरन अमृत बूंद कँवल में पाईए। शब्द सो जित सिमरत झिरना निझरों झिराईए। शब्द सो जित सिमरत विच देह में पाईए। शब्द सो इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तजाईए। शब्द सो जप बैकुण्ठ धाम गुर चरनीं जाईए। शब्द सो प्रभ जोत सरूप विच जोत मिल जाईए। शब्द सो जित सिमरत कलिजुग पार कराईए। शब्द सो जित सिमरत महाराज शेर सिँघ दर्शन पाईए। सोहँ शब्द सर्ब का दाता, कलिजुग जीव भुल्ल ना जाईए। साची बाणी गुर रसन वखाणी, सतिजुग होवे भगतां खाणी, होवे ज्ञान जिन हिरदे वसाणी। देवे आप प्रभ पद निरबाणी। जुगो जुग जगत अवतार, महाराज शेर सिँघ चरन कुरबानी। जुगो जुग प्रभ जोत प्रगटाए। माया रूप एह सृष्ट उपाए। तीन लोक प्रभ की थाएँ। खण्ड ब्रह्मण्ड कोई खाली नाहें। ऐसी जोत जगत जगाए। चार वरन प्रभ चरनीं लाए। माण अभिमाण किसे रहण ना पाए। गुर एक प्रभ जगत अटल, अटल्ल जोत प्रभ देह जगाए। धारे खेल आप प्रभ पूरन, चतुर्भुज महाराज शेर सिँघ अख्वाए। पतित पावण दु:ख भय भंजन। हँकार निवारन त्रिलोकी नंदन। मेरा सिख कलिजुग विच प्रभास जिउँ चन्दन। बैठे गुर दरबार अस्सू तिन्न दरस गुर मंगण। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, देवे दरस प्रभ त्रिलोकी नंदन। शब्द लिखाए भेद खुल्हाए, साध संगत प्रभ राह बताए, सुन्न समाध जिन प्रभ गुर चरन संग महिंमा जोत सरूप हिरदे प्रवेशे, आवे नज़र प्रभ भय भंजन। साध संगत गुरचरन दुआरे, दर्शन दान दोए जोड़ मंगण। बख्श आप प्रभ गुसाँईआ, आए दर दे ज्ञान गुर अंञन। सर्ब सूख प्रभ दे वड्याई, अस्सू तिन्न चाढ़े साध संगत मन रंगण । महाराज शेर सिँघ पूरन परमेश्वर, जोत प्रगटाई कलिजुग प्रभ भय भंजन। सोहँ शब्द सिक्खन गुर देवे, थिर घर सोझी मन सदा अनन्दन। निहकलंक प्रभ जोत सरूपा, बेमुखां सोहँ शब्द जलाए जलन। अमृत जल जल जल ए धारा। देवे अमृत आप गिरधारा। कर दरस प्रभ पार उतारा। अमृत नाम विच देह अंगयारा। रसना रस रस उधरन मँझारा । राग सोहँ प्रभ विच देह निवारा। सोहँ शब्द अमृत प्रवेशे, पी अमृत होए पेट सुधारा। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखाया, अमृत अमर

विच संसारा। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, प्रभ की जोत जगत में आई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, निहकलंक प्रभ एह थान सुहाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, देह दीपक उज्जयार, जगत होए रुशनाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, अस्सू तिन्न मिले जगत भगत वड्याई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कलिजुग लेख प्रभ दे मिटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जोत सरूप एह लिख्त कराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, सतिजुग सति होवे तेरी वड्याई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जेठ पंज संग सोभा पाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, सतिजुग साची सतिगुर पूरे नींह रखाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, करोड़ तेतीस घर आ मंगल गाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, मिल साध संगत घनकपुरी प्रभ जोत जगाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, होवे शब्द घनघोर, रसना हरि हरि हरि जस गाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, धाम एह कल करे अन्धयारा, सतिजुग जोत प्रभ लए जगाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जेठ पंज तैनूं मिले वड्याई जोत निरँजण विच मात दे आई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, सोहँ शब्द कुन्ट चार जै जै जैकार कराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ कलिजुग दे अवतार। पंचम जेठ प्रभ लै अवतारा। प्रगटे जोत निहकलंक अवतारा। बचन लिखाए प्रभ जोत निराधारा। जगे जोत जेठ पंचम मिटे अन्धेर होए जगत उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ
१८४ ०१ जोत प्रकाशे, मातलोक बणे सचखण्ड दुआरा। सोहँ शब्द देवे गुर दाता, भगत जनां हो सच भण्डारा। साध संगत मिले वधाई, १८४ ०१
अस्सू तिन्न मिले मुरारा। प्रभ की जोत सदा सहाई, जुगो जुग लै अवतारा। त्रेता राम, द्वापर कृष्न मुरारी। कलिजुग प्रगटयो आण महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारी। निहकलंक जगत अख्वावे। बिन सिक्खां किसे नज़र ना आवे। जोत सरूप विच अग्न जलावे। बाण अग्न सोहँ गुर लावे। थिर घर वासी बैठ अडोल सृष्ट डुलावे। आप अणतोल प्रभ जोत सरूपा, कलिजुग जीव अग्न जलावे। कलू काल अन्त प्रभ करता, मदि मासी कोई रहण ना पावे। ज्ञान गुर उपदेशे, भगत जनां जीव जगत मिलावे। नाम निरँजण देवे गुर अंञन, गुरचरन संग सिख नित मावे। सतिजुग प्रगट जोत प्रभ अबिनाशे, दे दरस गुर चरनीं लावे। चरन लाग होए मन चानण, गुरसिख दया प्रभ आप कमावे। जोत सरूप जगत प्रवेशे, हाज़र हो प्रभ दरस दिखावे। स्वच्छ सरूप प्रभ देह बिनासी, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए। गुरसिख गुर दर परवाना, कर दरस चरन सीस झुकाए। मिले आप प्रभ भगवाना, गुरसिख बैठा रिदे वसाए। महाराज शेर सिँघ देवे दरस दाना, सोहँ शब्द जो रसना गाए। सोहँ शब्द देवे वड्याई। सोहँ चरन प्रभ विच समाई। सोहँ शब्द सतिजुग सति सति सति वरताई। सोहँ शब्द आत्म ज्ञान विच देह पाई। सोहँ शब्द जप मिटे अन्धेरा, दया कर प्रभ जोत जगाई। सोहँ शब्द प्रभ का साध संगत दान गुर

दर ते पाई । सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ रसन वखाना, कुन्ट चार जै जै जैकार कराई। निहकलंक सर्ब का करता, जोत सरूप खेल रचाई। प्रभ का रूप ना रंग, ना किसे जाणया। प्रभ का रूप ना रंग, जोत सरूप तीन लोक रहानया। प्रभ का रूप ना रंग, कलिजुग मथे जिउँ मथण मधाणया। प्रभ का रूप ना रंग, जोत सरूप निहकलंक अख्वानया। सोहँ शब्द सतिजुग चलान्या। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, महाराज शेर सिँघ जो चले तेरे भाणया। जोत जगत जगन्नाथ गोपाल मुख भनी। सारंगधर भगवान बीठला पीत पितम्बर त्रैभवन धनी। भगत उधार जगत सँघार कलिजुग लै अवतार निहकलंक शाम घनी। सोहँ शब्द विचार, कलिजुग पार उतार, सतिजुग लावे प्रभ पुरख अपार, भगत वछल आप धन धनी। करे जोत आकार, नर कल लै अवतार, महाराज शेर सिँघ प्रगटे कृष्न मुरार, साध संगत गुरचरन संग बणी। जल मँझार खण्ड ब्रह्मण्ड होए जोत अधार, विच पाताल प्रभ नैण मुँधार, लच्छमी प्रभ चरन छली। विच आकाश प्रभ जोत सरूपा, वजाए शब्द अनहद जगत भूपा, होए ज्ञान विच आत्म अन्ध कूपा, देवे ज्ञान आप मन गनी। विच मात प्रभ जोत प्रकाश, होवे देह निवास प्रभ जोत अबिनाश, प्रगटे प्रभ जोत सरूपा। होवे बन्द खलास गुर चरन निवास, महाराज शेर सिँघ कल सद है पास, देवे दरस आप अनूपा। दे दरस प्रभ जोत जगाए, ज्ञान अन्धेर विच देह मिटाए, सच सुच्च दीपक देह जलाए, देवे दरस प्रभ इक्क रूपा। त्रैभवन सुझाया निजानंद दरसाया, खोल्ह त्रैकुटी प्रभ दर्शन पाया, सदा सुरजीत प्रभ सति सरूपा। सोहँ शब्द गुण गाया, कलिजुग नाम निधान गुर दर ते पाया, महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकाया, होवे सहाई जगत का भूपा। नाड़ी बहत्तर प्रभ रोग गंवाए। तप सप्प पलीत विच देह मिटाए। अमका काज़ी कोई नेड़ ना आए। जो आवे, सोहँ शब्द गुर चोट चलावे। तीन ताप ना थिर रहावे। खान पकान ना जीव सतावे। सोहँ शब्द जो रसना गावे। देह अनरोग तुरत हो जावे। ज्ञान बान गुर दर्द चलाया, रोग सोग विच देह मिटाए। सोहँ शब्द नाम सच मन्त्र दृढ़ाए। काल रूप हो रोग खपाए। ऐसी देवे शब्द वड्याई, सिमरत सिमरे सिमर सुख पाए । गुर दा सच द्वार देख्या जीव कोए ना बिल्लाए। सभ ते ऊँच अगम्म अपारा, जोत सरूप विच सिख समाए। जोत सरूप जगत कल काती जीऊड़ा निर्मल देह नाम कराए। होवे आधार रसन विचार, सोहँ शब्द गुर नाम दिवाए। दु:ख निवार आत्म आधार, भगत भण्डार महाराज शेर सिँघ सच बचन लिखाए।

✻ २२ अस्सू २००७ बिक्रमी जेठूवाल बिशन कौर दे गृह ✻

१८६ ०१ कलिजुग प्रगट नर नरायण। दाढ़ां अग्गे पृथ्म धरायण। बावण रूप प्रभ भेख ना पायण। कलिजुग नीयत जगत है डायण। गुरसिख गुरदर शब्द सोहँ गायण। दरस पाए मन तृप्ताए, कल भगत जन अख्वायण। वक्त विहाए फिर हत्थ ना आए, प्रभ नज़र ना आए, जुग चौथा काल खायण। जोत प्रगटाए गुरसिख मन जोत जगाए, बेमुख करदे हाए हाए, प्रभ पूरा दरस ना पायण। अग्न लाए कोए ना बुझाए, सोहँ शब्द चलाए, शब्द रूप जगत जलायण। खेड रचाए हत्थ ना लाए, सोहँ शब्द बाण गुर लाए, बैठ अडोल तीन लोक हलायण। तीन लोक उलटाए, ब्रह्मा माण गंवाए, महाराज शेर सिँघ एह कल वरतायण। जगत प्रकाशया सृष्ट अन्ध अन्धास्सया, गुरसिख गुर ज्ञान दिवायण। संग चरन रहिरास्सया, भगत जनां प्रभ दासन दास्सया, बन्द ख़लास करे नरायण। कल कहर वरताया, निहकलंक धार खेल चतुर्भुज कहाया, द्वापर कृष्न मुरार, कलिजुग महाराज शेर सिँघ अख्वाया, सोहँ शब्द गुर डंक चलाया, सृष्ट डुब्बी विच कल दी माया, आपणा भेद ना किसे बतायन। बेमुख प्रभ नर्क निवारे, गुरसिख होए गुर रहिरासे, जगन्नाथ करे सिख बन्द ख़ुलासे, भगत जनां गुर माण दवायण। लेख लिख्त मिटाए, शब्द रूप प्रभ जोत जगाए, देवे दरस आप रघुराए, अनद बिनोदी कल जोत प्रगटायन। घट वासी सर्ब निवासी, दीना नाथ प्रभ दुःख भंजन सभ रोग गंवासी, जो जन आए दरस दर पायन। निराहारी निरवैर सदाए, जोत सरूप विच देह समाए, भुल्ली सृष्टी कोई भेव ना पाए, कलिजुग चलत प्रभ आप करायन। पतित पावण प्रभ भय भंजन, हँकार निवारे सृष्ट प्रभ त्रिलोकी नंदन, गुरसिख गुर दर दोए जोड़ एह मंगण, देवे दरस प्रभ नरायण। दर्शन देवे प्रभ जोत सरूप नज़र आवे गुर गुर गुर सिख गुर भेत चुकावे स्वच्छ सरूप प्रभ देह प्रगटायन। दरस दिखावे हिरदे जोत जगाए, निज़ घर वासी निज़ मांहि नज़री आए, खोल्ह किवाड़ प्रभ जोत जगायन। आत्म प्रकास्सया जीव धरवास्सया, सोहँ शब्द जगत रहिरास्सया। महाराज शेर सिँघ सच बचन लिखायन। सति सति सति पुरख प्रभ अपरम्परा। भख भख भख कल प्रभ भख भस्मन्त्रा। रक्ख रक्ख रक्ख दर तेरे भगत जन रखवन्तरा । सति सति सति सतिजुग तेरा सतिरंगतरा। प्रभ का भाणा प्रभ ही जाणे। जीव जन्त भए जगत अञ्याणे। सोहँ चले बाण, दुखी जीव जगत बिल्लाणे। जल थल थल जल करे प्रभ रंग इक्क कल लायो टिकाणे। सतिजुग सति सति वरतावे, रहे सो जो चले गुर के भाणे। सोहँ चलाए कलिजुग नास कराए, मदि मासी कोई रहण ना पाए, ऐसी करे जगत एह हानी, कल उलटाए प्रभ देर ना लाए, भुल्ली सृष्ट गुर नज़र ना आए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। १८६ ०१

✻ २४ अस्सू २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

जुगो जुग प्रभ जोत प्रगटायन। कलिजुग प्रगटयो नर नरायण। अन्ध कूप जगत विहाए, सर्ब सरूप प्रभ दर्शन पायन। निज घर वासी निज मांहि पायन। आत्म जोत गुरसिख गुर दर जगायन। काया निर्मल प्रभ परमेश्वर रिदे वसायन। मायाधारी कल ख्वारी, खावे काल जगत जिउँ डायन। गुरसिख संवारे जगत उधारे, दर आए दर्शन पायन। बेमुख खपाए सोहँ शब्द बान जिउँ लाए, मदि मासी कोई रहण ना पायन। प्रभ आप प्रकाशया जगत विनास्सया, भगत जनां हत्थ टिकास्सया, मात पाताल लोक सर्ब है वास्सया, भगत जनां हरि सद दर्शन दास दास्सया, बेमुख दर ते थाएँ ना पायन। गुरसिख शाबास्सया, गुरचरन लाग रहिरास्सया, महाराज शेर सिँघ जोत अबिनाश, जोत सरूप सृष्ट जलायन। कल जोत प्रगटाई, सृष्ट अग्न जलाई, शब्द बाण प्रभ लगायन। कल खपाए देर ना लाए, महाराज जोत सरूप देह जोत जगायन। सृष्ट जलाई सच लिख्त कराई, प्रगट हो के दरस दखायन। रसना अलावे किसे नज़र ना आवे, गुरसिख पूरन बूझ बुझायन। दरस दिखावे निहकलंक अख्वाए, जोत सरूप कार भुगतायन। भगत दर दरसावे दरस दिखावे, ब्रह्म सरूप प्रभ गुण निधायन। आत्म जोत जगावे, गुरसिख गुर दरस दिखावे, निजानंद प्रभ सदा समायण। सोहँ शब्द सुणावे, अनहद धुन वजावे, कँवल नाभ खुल्ह्ावे, अमृत

१८७ बूंद मुख चवायण। अमृत बूंद बरसावे, द्वार दस्म खुल्ह्ावे, गुरसिख गुर कर्म कमावे, गुरसिख गुर दर सोहँ शब्द जगावे, कल १८७

जोत प्रगटावे, देह प्रवेश किसे नज़र ना आवे, महाराज शेर सिँघ नाम रखावे, भगत वछल सद अख्वायन। भगत वछल नाथां नाथ, गुरसिक्खां प्रभ सदा है साथ, धार खेल चतुर्भुज अख्वायन। अबिनाशी अविगत अगोचर, गुरसिक्खां गुर दैन ना ओचर, सोहँ शब्द जगत नरायण। जोत सरूप जिस रूप ना रेख्या, बनवाली चक्र पान जिस पेख्या, बेमुखां प्रभ नज़र ना आयन। निरँकार अछल ना डोल्लया, जोत सरूप सभ जग मौल्या, कलिजुग निहकलंक अख्वायन। चौथा जुग विहाया, चार वेद खपाया, खाणी बाणी गगन पाताली जोत सरूप प्रभ जलाया, सोहँ शब्द सरूप डंक वजाया, सति सति सति सतिजुग लायन। पापी अपराधी काल खपाए, कलू काल प्रभ आप वरताए, ऐसा खेल चलत करायन। निरहारी निरवैर समाए, खण्ड ब्रह्मण्ड जोत सरूप प्रभ धर उलटाए, अमर सीतल वांग चन्द रैण। एह बचन लिखाया, दीपक दूजा फेर जगाया, दूजे जुग सोहँ सहाया, ऐसी लिख्त करायण नरायण। एह भेत खुल्ह्ाया अमरा अमरा अमरा अमरापद पाया, सुरत जोत जगत प्रभ जगायन। सच लिख्त कराई, सतिजुग सति मिले वड्याई, महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, भुल्ली सृष्ट नर्क निवायन। नर्क निवारे सृष्ट सँघारे, जोत सरूप कर खेल करतारे, प्रभ का रंग सदा रंगायण। गुरसिख संवारे सोहन चरन दुआरे, कलिजुग

प्रभ लै अवतारे, आपणा भेव ना किसे बतायन। चलत कराए, राउ रंक इक्क रंग हो जाए, प्रभ जोत सर्ब मांहि समाए, मनी सिँघ शब्द सच हो जायन। निहकलंक अख्वाया कलिजुग भुलाया, द्वापर कृष्न मुरार कल महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाया। सर्ब तों वड्डा नर नरायण, जुग चाली प्रभ जोत जगाए, ऐसी कल सृष्ट उपाए, निहकलंक अख्वायन। सोहँ शब्द चलाया, गुरसिक्खां गुर ज्ञान दवाया, दर मांदे सर्ब सुख पायण। जोत सरूप जगत आकारे। तीन लोक होए जै जै जैकारे। भगत जन सोहण गुर चरन दुआरे। जीव जन्त प्रभ पूरन परमेश्वर आधारे। सर्ब वासी आप गिरधारे। जगन्नाथ गोपाल मुख भनी सर्ब के काज संवारे। सारंगधर भगवान बीठलो, देवे दरस जिउँ कृष्न मुरारे। मुकंद मनोहर लखमी नरायण कलिजुग प्रगट गुरसिख पैज संवारे। सोहँ शब्द ज्ञान उपदेस्यो, कलिजुग मिल्यो आप बनवारे। दरस दिखाए आप नरेशयो, महाराज शेर सिँघ पैज संवारे।

जोत निरँजण जगत उधारन। जोत निरँजण बेमुख नर्क निवारन। जोत निरँजण सृष्ट सँघारन। जोत निरँजण भगत जनां देवे चानण। जोत निरँजण सर्ब जीव उपानण। जोत निरँजण कलिजुग अज्ञान अन्धेर मिटानण। जोत निरँजण अन्त गुरसिख मिल जानण। जोत निरँजण भगत वखानण। जोत निरँजण बेमुख सार ना जानण। जोत निरँजण कल सोहँ मारे बानन। जोत निरँजण जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानन। विष्नूं आपणा आप नाम रखाए। सर्ब सृष्ट प्रभ रिहा समाए। जोत सरूप प्रभ भगवान नज़र ना आए। विष्नूं हो कृपाल जीव जन्त विच समाए। भगवान बीठला अडोल, तीन लोक जोत जगाए। विष्नूं कर आकार, लक्ख चुरासी जीव उपाए। भगवान आप है अतोल, बैठ अडोल जगत तुलाए। विष्नूं कर प्रवेश, जीव जन्त भुलाए। भगवान आप छलण छल, शब्द रूप खेल कल वरताए। विष्नूं आप निराकार, जीव नूं नज़र ना आए। विष्नूं कल आधार, जीव बेमुख कराए। भगवान पैज संवार, गुरसिक्खां नूं लै बचाए। कल लै अवतार, सतिजुग साची नींह रखाए। विष्नूं हो प्रभ जगत भुलाया, ऐसी माया कल विच पाए। कल गंवाया, सतिजुग सति वरताया, विष्नूं खेल मिटाया, भगवान विच समाया, सतिजुग वरताए, सोहँ शब्द चलाए। महाराज शेर सिँघ नाम रखाए, एक रूप प्रभ जोत जगाए। सतिजुग होए जोत चमत्कारा । सतिजुग होए प्रभ आकारा। सतिजुग प्रगटाए राम कृष्न मुरारा। सतिजुग सर्ब का दाता, महाराज शेर सिँघ नर अवतारा। नर अवतार सर्ब सुख दाता। प्रगट भयो सृष्ट ज्ञाता। जीव सरूप ब्रह्म, ब्रह्म ना किसे पछाता। देवे ज्ञान गुरसिख होवे मेहरवान पुरख बिधाता। खोल्ह लोचण प्रभ तरंग, अनहद शब्द वज्जे रंग राता।

दर्शन दे प्रभ जोत दरसावे, गुरसिक्खां निहकलंक पछाता। सिर हत्थ टिकाए, जम नेड़ ना आए, अन्त काल प्रभ चरन है नाता। मातलोक तजाए, सचखण्ड गुरसिख समाए, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ जोत जगाए, गुरचरन जस कर सीस निवाता। जोत सरूप हो जाए, प्रभ मांहि समाए, फिर जन्म ना पाए, प्रगट ईश्र जोत प्रगट सिख है साथा। जून उधारे जून सुधारे, गुरसिख गुरसंगत मन सोहन गुरचरन दुआरे, कोए ना जाणे प्रभ बिध गाता। जुग उलटाए, जन भगत प्रभ वड्याए, जोत सरूप दरस दिखाए, महाराज शेर सिँघ सदा है साथा। गुरसिख कलिजुग जोत सरूप। गुरसिख कलिजुग सदा अनूप। गुरसिख कलिजुग स्वच्छ सरूप। गुरसिख कलिजुग ना आवे विच अन्ध कूप। गुरसिख दरसे सदा प्रभ का सरूप। गुरसिख कलिजुग शब्द सोहँ अनूप। गुरसिख महाराज शेर सिँघ चरन संग भूप। कलिजुग वरताया, शब्द सरूप शब्द चलाया, बैठ अडोल सृष्ट डुलाया, गुरसिक्खां मन सदा धरवास्सया। जगत जलाया राउ रंक कर इक्क बहाया, तीन लोक प्रभ दे उलटाया, गुरसिख कलिजुग चन्दन प्रभास्सया। शब्द चलाए, मदि मासी कोई नज़र ना आए, नर्क निवास दवाए, कोई ना करे बन्द खुलास्सया। सतिवादी सति पुरख सतिवादया, दे सोहँ नाम आपणा नाम जपाए, सतिजुग साचा सच सच सच लाए, कलिजुग प्रभ दे उलटास्सया। जोत प्रगटाए निहकलंक अख्वाए, महाराज शेर सिँघ नाम रखाए, तीन लोक आप प्रभ वास्सया। गुरप्रसादि गुर दर्शन पाया। गुरप्रसादि गुर अंग लगाया। गुरप्रसादि गुरसिक्खां जुग कल तराया। गुरप्रसादि साध संगत हरि जस गाया। गुरप्रसादि जन्म अमोलक कलिजुग कराया। गुरप्रसादि काल अन्त जम नेड़ ना आया। गुरप्रसादि जन्म मरन दा फंद कटाया। गुरप्रसादि सतिजुग सति घर वखाया। गुरप्रसादि भगत जन गुर चरन दरसाया। गुरप्रसादि बहत्तर जामे भगत जन प्रभ माण दिवाया। करे भगत उधार, पाल सिँघ मुख रखाया। ल्या जन्म सुधार, सवरन दरबान बणाया। माणा रंगा दित्ते तार, पंजवां सिँघ बुध्ध रलाया। सिँघ मोहण ना होए ख्वार, तिन्न अस्सू जिन बचन उलटाया। दो हज़ार चार बिक्रमी नींह रखाई सच दरबार, सतिजुग बणाया। देह रुलाई सृष्टी खपाई, कलिजुग आप रघुनाथ उलटाया। धाम सच बणाया, महाराज शेर सिँघ विच आसण लाया, बैठ अंदर जगत अन्धेर वरताया। सोहँ शब्द चलाया, कुरान अंजील सभ नष्ट कराया। गया अथर्बण वेद, चौथा जुग खपाया। गीता माण गंवाया, द्वापर कृष्न मुरार, कलिजुग निहकलंक अख्वाया। दे सोहँ ज्ञान, सतिजुग राह बताया। कल गुरसिख उधरे पार, महाराज शेर सिँघ जिन चरनीं लाया। होवे शब्द जगत वरतारा। भगत जनां सोहँ भण्डारा। गुरचरन सिक्खां सच्चा गुरदुआरा। होए जन्म दुर्लभ, कलिजुग दरस अपारा। महाराज शेर सिँघ आप प्रकाशे, कोए ना जाणे जोत चमत्कारा। सर्ब सृष्ट सद अबिनाशे, एक अबिनाश आप निरँकारा। निहकलंक कलंक जग लागा, महाराज शेर सिँघ किया

खेल न्यारा। खेल प्रभ का कोई ना जाणे। जीउ कलिजुग भए अञ्याणे। पापी भुज्जण जिउँ दाणे। गुरचरन लाग पतित सुघड़ स्याणे। महाराज शेर सिँघ शब्द अनराग, दर आए मूर्ख मुग्ध भए स्याणे । सोहँ शब्द कल आत्म जाग, भगत जनां प्रभ खड़ा सरहाणे। आप वेखे गुरसिख पेखे, जोत सरूप प्रभ दरस दिखाणे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, जोत सरूप विच सिख समाणे।

❋ २५ अस्सू २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❋

गुरसिख गुण निधान, गुर आप पछाणे। गुरसिख चतुर सुजाण, चले गुर के भाणे। गुरसिख उत्तम एह विचार, जग हो रहे निमाणे। प्रभ बख्शे जोत अपार, काया कपट जलाणे। आत्म भयो प्रकाश, दीना बंधप कल बन्द कटाणे। सिमरो स्वास स्वास स्वास, सोहँ शब्द जगत प्रधाने। गुरसंगत गुरचरन निवास, जन्म अमोलक कल सुफल कराणे। बेमुख दर ते भए निरास, दर दर दर कल धक्के खाणे। कोए ना देवे धरवास, गेड़ चुरासी प्रभ ने पाणे, महाराज शेर सिँघ जगत प्रकाश, घनकपुरी जोत जगाणे। घनकपुरी गुर धाम सुहाए, उन्नी सौ उनत्तर बिक्रमी लिखाई, दो हज़ार चार सच कराई, हुक्म प्रभ का सति
१९० ०१ वरताणे। गुरसिख गुर दे बुझाणे। बिन सूझे किसे सूझ ना आए, कलिजुग प्रभ भेत छुपाणे। रंग नाम चढ़ाए, होए आप सहाए, १९० ०१
गुरसिक्खां प्रभ आप पछाणे। नज़र ना आए, जोत सरूप बचन लिखाए, सोहँ शब्द मुख वाक् सुहाणे। शेर सिँघ नाम रखाए, निहकलंक जगत एह आए, गुरसिख बाहों पकड़ तराणे। गुरसिख नाउँ कर अपर अपारा। गुरसिख नाउँ मिले प्रभ निरँकारा। गुरसिख थाउँ खण्ड सच गुरचरन दुआरा। गुरसिख जाओ सद सद सद बलिहारा। गुरसिख नाउँ नाउँ सोहँ शब्द अपारा। गुरसिख नाउँ लगे जोत आत्म जोत अधारा। गुरसिख नाउँ बेमुखां कल शब्द गुर मारा। गुरसिख नाउँ बेमुख डाले अग्न दुआरा। गुरसिख नाउँ कलिजुग मिले निहकलंक अवतारा। गुरसिख नाउँ महाराज शेर सिँघ गुरसिख प्यारा । सोहँ नाउँ शब्द वड्याई। सोहँ नाउँ भगतन दात, गुर दर ते पाई। सोहँ नाउँ रसना जप, मिले आप रघुराई। सोहँ नाउँ गुरचरन लाग, कल कुल तराई। सोहँ नाउँ शब्द सुरत सिख सोझी पाई। सोहँ नाउँ कलिजुग अग्न जलाए, आत्म शांत दिवाई। सोहँ नाउँ भरम भउ चुकाया, बुझी दीपक विच देह जगाई। सोहँ नाउँ प्रभ परमेश्रर जोत सरूप जिस खेल रचाई। सोहँ शब्द प्रभ का नाउँ, सतिजुग वरते सच लिख्त कराई। सोहँ नाउँ अमृत मेरा बरखे, जै जै जैकार तीन लोक कराई। सोहँ नाउँ जप परमेश्रर पुरखे, जिन एह बणत बणाई। सोहँ नाउँ जगत जुग वरते, ज्ञान अन्धेर देह मिटाई। सोहँ

नाउँ बाण जुग लागा, विच अग्न सृष्ट जलाई। सोहँ नाउँ जपे भगत वडभागा, कलिजुग जिस ते दया कमाई। सोहँ नाउँ शब्द अनरागा, गुरचरन संग जिस जोड़ जुड़ाई। गुरसिख कलिजुग वडभागा, महाराज शेर सिँघ जिस दरस दिखाई। बेमुखां जन्म दु:ख लागा, निहकलंक नज़र ना आई। गुरसिक्खां गुर दे वड्याई, साध संगत मिल खण्ड सच बणाई। जिथ्थे प्रगटे आप वडभागा, कथन ना जाई प्रभ की वड्याई। अन्त काल कल नहीं सताए, सोहँ शब्द जिन रसना गाई। गुरसिक्खां दर ठांडा माणे, जिथ्थे पूरन जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ सभ जगत राणया, गुरसिक्खां प्रभ होए सहाई।

❊ २६ अस्सू २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

प्रभ प्रगटे जोत प्रकाशा। गुरसिख निर्मल वांग आकाशा। कलिजुग दीउ सोहँ धरवासा। आपणा नाम कियो भरवासा। गुरसिख गायन मिल रसन स्वासा। गुरचरन लाग होए रहिरासा। गुर पूरा सद निमस्कारे, गुरसिख सद बलि बलि जासा। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ देवे दंड, गुरसिख जोत सदा प्रकाशा। कल उलटाए सर्ब माण गुआए, गुरसिक्खां मन प्रभ दरस प्यासा। चुरासी गेड़ ना आए, महाराज शेर सिँघ विच जोत मिलाए, साध संगत प्रभ सद है वासा। साध संगत रसना हरि गुण
१६१ ०१ गावे। साध संगत हरि कल पैज रखावे। साध संगत सिर निर्भय हत्थ टिकावे। साध संगत प्रगट हो प्रभ दरस दिखावे। १६१ ०१
साध संगत आत्म प्रकाश, सोहँ शब्द रसना गावे। साध संगत सद अबिनाश, अन्तकाल जम नेड़ ना आवे। साध संगत सदा सुख वास, खण्ड धाम गुरचरन बणावे। साध संगत ना होवे विनाश, निहकलंक जोत प्रगटावे। साध संगत प्रभ है वास, प्रगट होवे दरस दिखावे। साध संगत प्रभ का वास, महाराज शेर सिँघ नज़री आवे। जोत प्रगटावे दरस दिखावे, गुरमुखां एह बूझ बुझावे। खेल रचावे कहर वरतावे। सृष्ट अग्न शब्द जलावे। देह तजाए जोत सरूप हो जावे। प्रगट हो दरस दिखावे। निरँकार निरवैर सदावे। जोत निरँजण जगत डुलावे। बैठ अडोल सर्ब रिहा समाए। गया वक्त फिर हत्थ ना आए। बेमुख जीव अग्न जलाए। गुरसिख तराए गुर दर ते आए। जन्म जन्म प्रभ रोग मिटाए। रोग गंवाए काया कपट विहाए। मदि मासी कोई ठौहर ना पाए। गुरमुखां नाम निधान दिवाए। अमृत बूंद कँवल में पाए। अनहद शब्द मन धुन वजाए। आत्म प्रकाशे हउमे रोग गंवाए। दुबदा नासे इक्क रंग हो जाए। वेद चार विनासे, सोहँ शब्द प्रकाशे, निहकलंक भगवान अख्वाए। गुरसिख गुरचरन भरवासे, कलिजुग अग्न शांत कराए। बेमुख विनासे जन्म मानस गंवाया विच हासे, महाराज शेर सिँघ नज़र ना आए। बैठा आप अतोल, जगत जिन तोल्लया। बैठा आप अडोल, जगत सभ डोल्लया। बैठा करे कलोल,

जगत सभ रोल्लया। प्रभ के बचन अनमोल, कलिजुग जिस खोह ल्या। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, छड देह जोत सरूप हो बोल्लया। जोत देह देह जोत न्यारी। ईश्र जोत सभ सृष्ट आकारी। जीव देह देह जीव निराधारी। ईश्र जोत करे जगत ख्वारी। भगत जनां प्रभ पैज संवारी। कलिजुग प्रगटयो महाराज शेर सिँघ निरँकारी। कलिजुग प्रगटे आप निरँकार। सृष्ट वगाए जिउँ जल की धार। कोई ना सहाए होए शब्द की मार। बचन लिखाए कल लै अवतार। जुग चार शब्द सोहँ सिक्दार। भगत जन सोहन हरि के द्वार। बेमुख खायन जम की मार। भगत जनां प्रभ पैज संवार। बेमुख डारे नर्क मँझार। गुरसिख उधरे कलिजुग पार। मदि मासी होए जगत ख्वार। कोए ना जाणे प्रभ पूरन अवतार। महाराज शेर सिँघ सच सिरजनहार। सर्ब सृष्ट का प्रभ आप ज्ञाता। सर्ब जीव प्रभ जोत जगाता। कोई ना जाणे प्रभ हरि रंग राता। महाराज शेर सिँघ कल गुरसिख पछाता। सो बूझे जिस बूझ बुझाए। सो बूझे जिस दरस दिखाए। सो बूझे जिस अज्ञान अन्धेर मिटाए। सो बूझे जिस जोत सरूप प्रभ दरस दिखाए। सो बूझे जिस हउमे रोग गंवाए। सो बूझे जिस कर किरपा प्रभ शरनी लाए। सो बूझे जिस साध संगत मिल हरि गुण गाए। सो बूझे जित सिर प्रभ हत्थ टिकाए। घर दर दर घर साचा सूझे, गुरचरन लाग जो सीस झुकाए। सो बूझे जिस महाराज शेर सिँघ सोझी पाए। गुरसिख जाणे प्रभ अन्तरजामी। गुरसिख जाणे प्रगट भयो आप प्रभ स्वामी। गुरसिख जाणे प्रभ परमेश्वर सदा सिक्दारी, बेमुख ना जाणे ना बूझे कामी। बेमुख ना जाणे कलिजुग आया महाराज शेर सिँघ सर्ब का स्वामी। गुरसिख मंग मन हरि का रंग। गुरसिख मंग सद गुरचरन का संग। गुरसिख मंग जरम ए माणस होए ना भंग। गुरसिख मंग गुर दर शब्द सोहँ। गुरसिख मंग महाराज शेर सिँघ चरन का संग। चरनकँवल जिस संग बण आए। चरन कँवल वांग कँवल खुल्हाए। जगत सागर गुरसिख विच कँवल तराए। सृष्ट मिट जाए गुरसिख नाउँ रहाए। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सोहँ दे ज्ञान सिक्खां दी पैज रखाए। गुरसिक्खां गुर माण दिवाए। सतिजुग साचा प्रभ दे वखाए। बिन सिक्खां कोई रहण ना पाए। जोत सरूप कल कहर वरताए। जोत अग्न सीतल है जिया, जोत अग्न रल जाए। सोहँ शब्द जपो होए मुक्ता, महाराज शेर सिँघ विच समाए।

१६२
०१

✲ २७ अस्सू २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✲

कलिजुग प्रगट्या नर लै अवतारा। चार कूट जोत चमत्कारा। तीन लोक जस होए हमारा । मातलोक होए अन्ध अन्धयारा । बेमुख कर नर्क दुआरा। गुरसिक्खां मिल्या हरि बनवारा। कलिजुग कियो जिन पार उतारा। महाराज शेर सिँघ

प्रगटयो कल निहकलंक अवतारा। निहकलंक नेह ना तोड़े। गुरसिख दर ते संग चरन प्रभ जोड़े। बेमुख कूकर सूकर गर्भ जून में रोड़े। अन्तकाल कल आप प्रभ प्रगट, पापी जीव ना चरनीं जोड़े। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, दर आया ना ख़ाली मोड़े। गुर दर साचा दरबारा। प्रगटी जोत निहकलंक अवतारा। साध संगत प्रभ विच पाताल आकाश मात संग देवे सिख सहारा। नाउँ नाम निधान गुर दे के, सोहँ शब्द गुरसिक्खां नाम प्यारा। साध संगत दर घर सूज्झया, जिथ्थे वस्सया आप निरँकारा। गुरसिक्खां प्रभ पूरन बूज्झया, देवे दरस आप निराधारा। दर्शन पाए दुःख रोग गंवाए, मिले शाह अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ आप प्रभ ठाकर, जिस ने पसरया सृष्ट पसारा। सर्ब पसार प्रभ का जाणो। सर्ब आकार ईश्र मानो। सर्ब विकार चले बिन विष्नूं भगवानो। सर्ब अहार देवे, ना बूझे जीव निधानो। होए मेहरवान आप परमेश्र, खाली ना जाए कोई दर सुल्तानो। निहकलंक लै अवतार, सोहँ देवे ब्रह्म ज्ञानो। भगत जनां हरि दर्शन देवे, ऐसा हरि जी रसन बखानो। आप करनहार प्रभ ठाकर, एस समान कोई होर ना मानो। जांह देखो तांह प्रभ हाज़र, गुरप्रसाद गुर भोग लगानो। दूख विनास करे गुणतास, प्रभ का नाउँ शब्द सच जानो। महाराज शेर सिँघ जगत प्रकास्सया, नज़र ना आवे गुण निधानो। जगत उपाए जीव जन्त रहाए, किसे नज़र ना आनिआं। माया जगत खाए, कहर गुर वरताए, कोए ना जाणे गुर के भाणयां।
१६३ ०१ निहकलंक अख्वाए, मदि मासी खपाए, भुल्ली सृष्ट जिउँ अञ्याणयां। हरि नाम जपाए, गुरसिख तराए, दर सच पछाणयां। साध संगत बख़्शाए, पतित पापी जो दर ते आए, सोहँ शब्द चले गुर बानया। सतिजुग सति वरताए, गुरसिक्खां प्रभ होए सहाए, अग्न कलू विच आप रखाणयां। सोहँ शब्द चलाए, भगत जनां मुख रखाए, देवे नाउँ आप निधानिआं। महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाए, कलिजुग प्रगट जुग सति चलाए, प्रभ की जोत सद आवण जाणयां। गगन अग्न जगत लगन, मुख वाक् करतारा। मग्न दगन जगत नग्न, गुर पूरा जिन्हां मन विसारा। भगत मग्न संग जोत जगन, करे आप जोत चमत्कारा। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, करे खेल अपर अपारा। अपर अपार प्रभ अन्तरजामी। निज घर वस्सया सर्ब का स्वामी। कलिजुग जीव सर्ब निहकामी। महाराज शेर सिँघ आप प्रकाशी, गुरसिख चरन लाग मेरे परे पारग्रामी। पारग्राम गुरसिक्खां पाया। जिथ्थे जोत प्रभ सद रुशनाया। बिन बाती बिन तेल दीपक जोत जगाया। गुरसिक्खां उह ग्राम, जिथ्थे प्रभ आपणा आप उपाया। कलिजुग मिल्या आप घर शाम निहकलंक अख्वाया। गुरसिख ना खाए काल, अन्तकाल संग जोत मिलाया। प्रभ का रूप अगम्म, विच सर्ब जीव रहाया। गुरसिख देवे माण महाराज शेर सिँघ, जन्म मरन दा गेड़ मुकाया। गर्भ जून गुरसिख ना आए। प्रभ जोत सरूप सिख विच जोत मिलाए। बैठ आप अडोल, तीन लोक हिलाए। गुरसिख उधरे पार, जिनां प्रभ

दरस दिखाए। कल ना होए ख्वार, जिन्हां संग चरन मिलाए। सतिजुग होए आधार, सति पुरख गरसिक्ख रहि जाए। महाराज शेर सिँघ माण दिवाया, बचन रसना आप लिखाए। ईश्र रसना रस रसायण। गुरसिख कलिजुग भगत नरायण। बिन सिक्खां दुखी जीव सर्ब हिन्दवैण। अन्तकाल गुर दर्शन पाए, चरन लाग जो सीस निवायण। सोहँ शब्द सर्ब का दाता, उतरे पार जो रसन गायण। महाराज शेर सिँघ भयो ज्ञाता, चार जुग भेत खुल्हायण। निहकलंक सर्ब सुख दाता, गुरमुख विरले कोई पायण।

❊ २६ अस्सू २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

श्रधन की प्रभ श्रद्धा पूरे। सद अबिनाश संग सिख हज़ूरे। कर्म विगास सद अनहद्द तूरे। होए विनास जगत के सूरे। सर्ब गुणतास सर्ब भरपूरे। महाराज शेर सिँघ कर दरस उतरे सगल वसूरे। काया कोट प्रभ आप संवारया। कंचन कंचन कर निहकंटक मारया। अंचन अंचन अंचन शब्द गुर साड़या। महाराज शेर सिँघ प्रभ कृपाला, गुरसिक्खां जिस दुःख निवारया । दुःख निवारे आप प्रभ करता। काज संवारे सर्ब दुःख हरता। चरन लाग जीव जम डण्ड ना भरता । महाराज शेर सिँघ कल प्रगटयो करता। कलिजुग अन्त जोत प्रकाशी। तीन लोक सर्ब परलोक प्रभ चरन के दासी। करनहार आप प्रभ करता, दुखी जीव करे बन्द ख़लासी। दुष्ट सँघार सर्ब का धरता, तिस साहिब के बलि बलि जासी। निहकलंक आप दुःख हरता, महाराज शेर सिँघ प्रगट्या अबिनाशी। सोहँ नाउँ उत्तम ज्ञाना। सोहँ नाउँ जप सर्ब सुख माना। सोहँ नाउँ जप मिले विष्नूं भगवाना। सोहँ नाउँ महाराज शेर सिँघ देवे उत्तम ज्ञाना। जीव जन्त प्रभ का वास। जोत सरूप सर्ब प्रकाश। बेमुख कल होए विनास। गुरसिख उधरे गुरचरन पास। महाराज शेर सिँघ भगतन दास। भगतन देवे आप वड्याई। कलिजुग आण होयो सहाई। शब्द सरूप प्रभ सृष्ट जलाई। खण्ड सच सच वसे रघुराई। प्रभ सरूप का कोई भेव ना पाई। कलिजुग कियो काल, सतिजुग सतिगुर मनी सिँघ जोत जगाई। होए चन्नण प्रभास, साध संगत गुर चरन महिकाई। महाराज शेर सिँघ सद बलि जास, गुरसिक्खां देवे वड्याई । गुरसिख उधरे पार, जन्म मरन संवारया। गुरसिख उधरे पार, सोहँ शब्द जिन्हां रिदे चितारया। गुरसिख उधरे पार, प्रभ अबिनाश जिन घर महि पा ल्या। गुरसिख होए रहिरास, सोहँ शब्द इक्क रसना गा ल्या। होए जोत प्रकाश महाराज शेर सिँघ जिस नाम ध्या ल्या। प्रभ का नाउँ जगत उजागर। सोहँ शब्द देवे भगत गुर सागर। जपे रसना भरे तन गागर। महाराज शेर सिँघ करे कर्म निर्मल उजागर। सतिजुग लागे सच शब्द सोहँ

१६५
०१

चाले। सतिजुग लागे सच मनी सिँघ मिले दीन दयाले। सतिजुग लागे सच गुरसिक्खां प्रीत गुरचरन समाले। सतिजुग लागे सच गुर पूरा कोई गुरमुख पा ले। सतिजुग लागे सच जिन्हां महाराज शेर सिँघ आप वखाले। दे दरस प्रभ माण गंवाए। दे दरस प्रभ जोत जगाए। दे दरस काया कोट कुकर्म गंवाए। दे दरस प्रभ सर्ब रोग गंवाए। दे दरस प्रभ संसा रोग चुकाए। दे दरस प्रभ सोहँ शब्द ज्ञान दिवाए। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां कल होए सहाए। कल लै अवतार जगत सँघारया। कल लै अवतार, जोत सरूप जगत परवारया। कलिजुग लै अवतार, घनकपुरी जामा धारया। कलिजुग लै अवतार, गुरसिक्खां मिले कृष्न मुरारया । कलिजुग लै अवतार, तीन लोक होए जोत अधारया। कलिजुग लै अवतार, सोहँ देवे भगत भण्डारया। कलिजुग लै अवतार, दुःख विनास आप बनवारया । कलिजुग लै अवतार, गुरसिक्खां हरि काज संवारया। कलिजुग लै अवतार, महाराज शेर सिँघ प्रगट होवे विच संसारया।

आत्म धरे ध्यान, प्रभ दरसाईए। आत्म धरे ध्यान, ब्रह्म सरूप हो जाईए। आत्म धरे ध्यान, प्रभ दर्शन पाईए। आत्म धरे ध्यान, दीपक देह जगाईए। आत्म धरे ध्यान, सोहँ शब्द ज्ञान गुर दर पाईए। आत्म धरे ध्यान, अमका काज़ी नेड़ ना आईए। आत्म धरे ध्यान, सप्प तप भूत पलीत दर परे धकाईए। आत्म धरे ध्यान, जम का भउ मन चुकाईए। आत्म धरे ध्यान, प्रभ जोत सरूप विच आत्म पाईए। आत्म धरे ध्यान, निहकलंक महाराज शेर सिँघ दर दर्शन पाईए। घर वर जगत विहारा। दुःख कलेश मिटे अन्धयारा। झूठी काया, वसे विच निरँकारा । देवे दर्शन करे जोत आकारा। सोहँ शब्द होए जीव उधारा। महाराज शेर सिँघ बख्शे गुरसिक्खां गुरचरन दुआरा। गुरचरन गुरसिख लग जाए। बेमुख दर धक्के खाए। गुरसिख प्रभ संग जोत जगाए। बेमुख पकड़ राए धर्म दए सज़ाए। गुरसिख गुरचरन निवास, अन्तकाल विच जोत मिलाए। महाराज शेर सिँघ अनाथां नाथ, शरन पड़े दी लाज रखाए। जो जन आए गुर चरन गुर लागे। भूत प्रेत जिन्न ख़वीस परी मवकल दर ते भागे। कर दरस सोई आत्म जागे। महाराज शेर सिँघ दरस अमोलक, कल पाया किसे गुरसिख वडभागे। गुरसिख वडभाग जिन्हां गुर दरस दिखावे। गुरसिख वडभाग जिन्हां प्रभ चरनीं लावे। गुरसिख वड भाग जिन्हां जोत सरूप प्रभ नज़री आवे। गुरसिख सद सोवत जागत सोवत प्रभ का दर्शन पावे। गुरसिख मन गुरचरन लाग सोवत महाराज शेर सिँघ आण जगावे। जगत आवण जाणा गुर का भाणा। मूर्ख भुल्ला जीव अञ्याणा। जिस उपाया तिन मन भुलाणा। जगत वकार संग मन लुटाणा। कलिजुग होए ख्वार, बिन गुर किने पार लँघाणा। निहकलंक लै अवतार, भगत जनां सोहँ देवे

१९६
०१

नाम बबाणा। महाराज शेर सिँघ नाम अधार, गुरसिक्खां गुरचरन टिकाणा। कलिजुग जीव जुगत प्रभ कीनी। सोहँ शब्द जलायो बेमुखां पकड़ सज़ाए दीनी। अग्न मँझार एह जगत जलायो, मदि मासी होसी देह नाबीनी। रसना लाग विकार वधायो, गुरसिक्खां मन शब्द धुन भीन्नी। जै जै जैकार करायो, ऐसी दात नाम गुर पूरे दीनी। जगत अंध्यार दीपक जोत गुरसिख जगायो, सोहँ आधार जल जिउँ मीनी। कल अधार अनराग चलायो, सभ की जोत आप प्रभ छीनी। सरबत्त तीर्थां माण प्रभ गंवायो, ऐसी कलम मनी सिँघ फड़ लीनी। शब्द तेज विच लिख्त करायो, कर सेवा दर साचा पाया, छड्ड देह परलोक सिघायो। सन्त प्यार करे दातार, देह आधार पूत कहायो। वज्जे धुन्कार दित्ती शब्द गुंजार, मनी सिँघ दीपक फेर जगायो। महाराज शेर सिँघ जोत अधार, सन्त पूत दित्ता तार, सतिगुर पूरा माण दिवायो। बचन लिखावे आप प्रभ सुख अंदर। जोत जगाई जगे विच देह मन्दर। नाम ज्ञान गुर चरन ध्यान, सोहँ शब्द तन जोड़े जंदर। बेमुखां मुख वाक् ना विचार, महाराज शेर सिँघ बैठा गुरसिख अंदर। गुरसिख तन मन प्रभ का वास। गुरसिख जन जिन प्रभ कियो दास। गुरसिख प्रभ एह देवे धुन, सभ तों चरन प्यास। महाराज शेर सिँघ होए प्रसन्न, गुरसिख सोहन प्रभ पूरन पास। गुरसिख माण प्रभ का करना। गुरसिख होए ना शक्तियो डरना। गुरसिख माण लग्ग प्रभ गुर की सरना। गुरसिख माण सोहँ शब्द दु:ख कलेश हरना। गुरसिख सद अबिनाश, अन्तकाल प्रभ जोत है रलना। महाराज शेर सिँघ गुरसिख वास। गुरसिख ब्रह्म ज्ञानी उत्तम करना। प्रभ वड्डा जिस दे वड्याई। प्रभ वड्डा जिस कलिजुग जोत जगाई। प्रभ वड्डा अमेट ना मेटिआ जाई। प्रभ वड्डा तीन लोक पड़े सरनाई। प्रभ वड्डा सर्ब रिहा समाई। प्रभ वड्डा अगम्म किसे नज़र ना आई। प्रभ वड्डा गुरसिक्खां दे वड्याई। प्रभ वड्डा कलिजुग आन जिन पैज रखाई। प्रभ वड्डा प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ नाम रखाई। जोत निरँजण मेरा नाउँ। सोहँ चले सभन थाउँ। चार जुग प्रभ अगम्म अथाहो। महाराज शेर सिँघ प्रगट्या बेपरवाहो। बेपरवाह परमेशर लाधा। जन्म मरन गुरसिक्खां साधा। बेमुखां कल धक्का खाधा। गुरसिक्खां सोहँ नाउँ रसना सवादा। बेमुखां मन विकार ब्याधा। महाराज शेर सिँघ सभ जगत संग जुगत है गाधा। जोग जुगत ना प्रभ की जाणे। गुरसिख चले गुर के भाणे। दु:ख सुख छड्ड हरि रंग माणे। मेरा नाउँ सोहँ शब्द पछाणे। रसना गाउ, छुट्टे आवण जाणे। मूर्ख मुग्ध कर दरस होए सुघड़ स्याणे। पापी अपराधी सभ पार परायणे। धन्न धन्न धन्न उह रसना, कलिजुग महाराज शेर सिँघ नाउँ वखाणे। कलिजुग कर्म लिखाए मिटाए बिधाता। कलिजुग जीव खपाए गुआए, गुरसिक्खां प्रभ आप पछाता। सर्ब सृष्ट सुआए, आप हाहाकार कराए, गुरसिख होए शब्द ज्ञाता। बेमुख भुआए प्रभ नज़र ना आए, गुरसिक्खां मन जोत जगाता। मध मासी खपाए नर्क निवास

दिवाए, रंगण नाउँ मन गुरसिख चढ़ाता। सतिजुग लाए सति सति वरताए, ऐसी बिध करे बिध नाता। धन्न धन्न धन्न धन्न गुरसिक्खां जिन्हां महाराज शेर सिंघ कल पछाता। कवण पछाणे कवण है जाणे, सो जाणे जिस आप जणाए। भगत जणाए प्रभ दरस दिखाए ऐसी जोत प्रभ आप प्रगटाए। गुरसिख निताणे चले गुर के भाणे, सोहँ शब्द नाम दिवाए। बेमुख नताणे कल धक्के खाणे, गुर पूरा चरन ना लाए। महाराज शेर सिंघ आप परमेश्‍र, गुरसिख मिलण दी बणत बणाए। गुरसिख मिल गुरसंगत कहीए। गुरसंगत मिल सोहँ शब्द गुण गहीए। सोहँ शब्द रसन आत्म जोत जगईए। वज्जे धुन आत्म सुन सुन ना सहीए। महाराज शेर सिंघ गुण सद रसना गाईए। गुण निधान प्रगटे दातारा। जोत सरूप जोत जगत आकारा। कोई ना जाणयो, प्रगटयो जुग शाहो अपर अपारा। महाराज शेर सिंघ भगत प्रितपालक, देवे सोहँ नाउँ भण्डारा। नाम दान सोहँ गुर दे के, दुःख दर्द निवारया। देही देह सुख प्रभ दे के, गुण निधान जन भगत उधारया। सुरत एक करे मन एके, गुरसिख लागे चरन द्वारया। गुरसिख कर के जगत बिबेके, सर्ब सृष्ट प्रभ वांग कूकर दुरकारया। गुरसिख जन्म लाए प्रभ लेखे, जो दर आए चरन निमस्कारया। महाराज शेर सिंघ लै अवतारा, भगत जनां कर पार उतारया। संगत करे बेनतीआं, सुण किरपा धर। देही दुःख निवार दे, चल आए दर। चरन हेत प्यार दे, नाम साचा वर। देह रोग गंवाईए, कलिजुग लाधा साचा घर। सच घर आईए, सर्ब सुख पाईए, कलिजुग प्रगटे अवतार नर। सोहँ शब्द सुणाईए, दुःख रोग मिटाए महाराज शेर सिंघ आसा वर। आत्म आस बेनती करे। दुःख दलिद्र निवारे हरे। उधरे सिख सरन जो परे। काया मन्दर दीपक जोत प्रभ धरे। जगे जोत आत्म उज्जयारा, गुरसिख मेरा जगत ना मरे। अन्तकाल मिले सच दुआरा, महाराज शेर सिंघ सरन जो परे। सरन परे सभ रोग मिटाए। महाराज शेर सिंघ सिर हत्थ टिकाए। खण्ड सच सच धाम बिठाए। महाराज शेर सिंघ गुरसिख विच जोत मिलाए। जोत जगत मेरा है चानण। आत्म जोत जन भगत पछानण। सोहँ शब्द प्रभ देवे ज्ञानण। मेरा नाउँ सति निरँजण मानण। भगतन भाउ रसना नाउँ बखानण। दुःख मिटाओ गुरचरन ध्यानण। गुरसंगत जगत देवे गुर मानण। गुरसिख कलिजुग उतरे पार, महाराज शेर सिंघ जिन रिदे ध्यानण। रिदे ध्यान मिले जग दाता। गुरसिख ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म सरूप पछाता। सर्ब गुआए माण मिले आप रघुराता। महाराज शेर सिंघ पर उपकारी, गुरसिख सोवे बाहों पकड़ प्रभ आप जगाता। आत्म जागे प्रभ मिले वडभाग। दुःख नेड़ ना लागे, सोए कर्म जीव के जागे। सोहँ शब्द अनदिन धुन वाजे। भगत जन तन हरि मन्दर वाजे। महाराज शेर सिंघ होए मेहरवाना, ऐसी बणत सिख दी साजे। दुःख दुःख दुःख गुर दर ते गुआया। दुःख दुःख दुःख गुर झोली पाया। दुःख दुःख दुःख गुर दुःख मिटाया। सुख सुख सुख

गुरसिख सागर विच तराया। सुख सुख सुख गुरसिक्खां प्रभ झोली पाया। बेमुखां काले मुख मुख, जिन्हां प्रभ दरस ना पाया। महाराज शेर सिँघ घर सुख सुख सुख, गुरसिक्खां घर मांहि पाया। घर मांहि मिल्या आप बनवाला। गुरसिक्खां प्रभ कल रखवाला। बेमुखां होए जगत धुंदाला। गुरसिक्खां सोहँ मिले नाम सुखाला। भय भयानक महाराज शेर सिँघ होए रखवाला। करे रच्छया आप कृपाला। दु:ख भंजन आप दीन दयाला। भगत जनां हरि तोड़ जंजाला। देवे तार सिर बाली बाला। साध संगत महाराज शेर सिँघ रखवाला।

✻ पहली कत्तक २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

गुरदरस आत्म तृप्तास्सया। गुरदरस गुरसिख गुर चरन निवास्सया। गुरदरस देवे माण गुर आप सिख शाबास्सया। महाराज शेर सिँघ जगत जलाए, भगत जनां करे बन्द ख़ुलास्सया। गुर दर्शन करया तन मन हरया। गुरसिख दर ते आसा वरया। जोत निरँजण दरस जिन करया। निहकलंक ना किसे तों डरया। जोत सरूप आप प्रभ हरया। बेमुखां दर गुर नज़र ना परया। गुरसिक्खां दरस ठांडा करया। जगे जोत आत्म प्रकाशे, ज्ञान जोत हिरदा प्रभ करया। दरस दिखावे नज़री आवे कृष्न मुरार नाम शेर सिँघ धरया। जोत निरँजण प्रभ कल प्रगटाए, गुरसिक्खां प्रभ गुर दे बुझाई। हो मेहरवान आप प्रभ ठाकर, बाहों पकड़ सिख लै आई। जोत जगाई सृष्ट जलाई, गुरसिक्खां घर सदा रंग लाई। ऐसा खेल प्रभू ने करया। ईश्र प्रगटयो नर नरायण, दाढ़ां अगारे पृथ्म चुबायण, बेमुख कोई जगत ना अड़िआ। सोहँ बाण शब्द गुर डाहढा, बेमुखां कल भाण्डा भरया। महाराज शेर सिँघ भगत कृपाला, दे दरस करे तन मन हरया। तन मन देह विच जोत है, जीव जोत निरँजण देह प्रकाशे। जीउ ना जाणे प्रभ का भेउ। आप उपाए आप खपाए, आप अडोल जोत सरूप हो रिहो। दरस दिवाए गुरसिख प्रभ जोत जगाए, नाम निधान बीज है बियो। सोहँ शब्द सुणाए धुन मन वजाए, ज्ञान निर्मल जीउ। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए गुरसिख तराए, नाम निधान रस गुर दर ते पियो। नाम निधान गुरदर ते पाईए। चरन लाग कलिजुग तर जाईए। शब्द सुरत धुन मन वजाईए। आत्म होए प्रकाश, दीपक विच देह जगाईए। जोत दीपक देह उज्जयारा, कर दरस कल तर जाईए। गुरसिख दर ते मन शब्द विगासे, महाराज शेर सिँघ चरन सीस निवाईए। गुरचरनीं जिन सीस निवाया। निरहारी निरवैर प्रभ नज़री आया। जगे जोत अगम्म, खोल्ह किवाड़ प्रभ दरस दिखाया। कलिजुग उतरे पार, भगत जनां प्रभ आप वड्आया। देवे ब्रह्म ज्ञान, जोत सरूप आप रघुराया। आत्म धरे ध्यान,

निजानंद प्रभ देह दरसाया। होए ब्रह्म ज्ञान, दे दरस प्रभ गुरसिख तराया। महाराज शेर सिँघ जगत प्रगासिओ, निहकलंक हो डंक वजाया। निहकलंक जगत कलंक लगाए। प्रगट जोत कल प्रभ किसे नज़र ना आए। छड्ड देह अपार, जोत सरूप प्रभ रिहा समाए। साध संगत रसन जस गाए, हरि जीउ हर दर बद्धा आए। कोई जीउ पहुंच ना सके धाम सच जिथ्थे प्रभ जोत जगाए। जोत सरूप तीन लोक प्रभ वस्सया, मात पाताल आकाश रहावे। खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब वरभंड, जोत सरूप जोत जगत जीव जगावे। गुरसिख मुख सदा जग उज्जल, सोहँ शब्द जो रसना गाए। निहकलंक आप निराधारा, दे दरस दुःख रोग गंवाए। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सरन परे की लाज रखाए। जो जन आए चरन गुर परे। दुःख कलेश आप प्रभ हरे। मिल साध संगत रसना सोहँ शब्द ररे। होए बन्द ख़ुलास, नर्क मँझार गुरसिख ना परे। नाउँ नरायण शब्द है डाहढा, पाए सो किरपा जिस करे। कर किरपा गुण निधाना, गुरसिख दर जोड़ दोए खरे। रक्खे लाज प्रभ पूरन, कलिजुग आण सिर हत्थ धरे। कलिजुग वाउ छोह ना सके, सोहँ शब्द हिरदे वरे। अन्त काल दरस प्रभ दे के, जोत विच जोत प्रभ धरे। खण्ड सच गुर धाम रचाया, बैठ अडोल गुरसिख गुर दर खरे। महाराज शेर सिँघ किसे नज़र ना आए, जोत सरूप विच सिख है वरे। प्रभ का सरूप जगत न्यारा। बूझे सो जिस बुझाए आप निरँकारा। प्रभ सरूप जोत आकारा।

१६६ ०१ जोत सरूप पसरिओ जगत पसारा। जोत सरूप प्रभ जगत जलाया, वहाया जल की धारा। कल खपाया सतिजुग लगाया, १६६ ०१

सति सति सति वरताए आप निरँकारा। जोत प्रगटाए निहकलंक अख्वाए, मदि मासी खपावे ऐसा तोड़े प्रभ हँकारा। बेमुख जलावे सिख तरावे, गुरसिख उतरे पार किनारा। सोहँ शब्द चलावे सर्ब खपावे, एक जोत होए एक पसारा। ईश्‍र एक जोत है एका, ईश्‍र जोत जगत निवारा। महाराज शेर सिँघ एह बणत बणाई, सोहँ शब्द बाण जगत मारा। सोहँ बाण जगत गुर लावे। साचा घर किसे नज़र ना आवे। बेमुख होए दर धक्के खावे। गुरसिख नाम निरँजण पा कर, कलिजुग सद पार करावे। महाराज शेर सिँघ दे दरस, कलिजुग सिख पैज रखावे। सच्चा उह धाम जिथ्थे प्रभ वस्सया। सच्चा उह धाम, जिथ्थे पापी नस्सया। सच्चा उह धाम जिथ्थे गुरसिक्खां प्रभ शब्द सोहँ दस्सया। महाराज शेर सिँघ भगत तराए, शब्द रूप हो हिरदे वस्सया। हिरदे हो प्रवेश देवे देह ज्ञाना। सोहँ शब्द दे दान, मिटे आवण जाणा। गुरचरन जीव ध्यान, मिले विष्नूं भगवाना। बेमुख ठौहर ना पायण, पूरा सतिगुर ना पछाना। गुरसिक्खां प्रभ मेहरवान, कलिजुग देवे दरस है दाना। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, हो निहकलंक किसे नज़र ना आना। निहकलंक हो जोत सरूपा। निहकलंक आप वड भूपा। निहकलंक प्रगटे अन्ध कूपा। निहकलंक किसे नज़र ना आवे, जोत सरूप प्रभ जोत सरूपा। निहकलंक कलंक जग ला

के सृष्ट जले जिउँ पंज जेठ की धूपा। निहकलंक नरायण नर आया, ईश्र जोत सरूप प्रभ जोत है रूपा। निहकलंक रूप है अगम्म, अगम्म अगोचर प्रभ अनेक सरूपा। निहकलंक सृष्ट करे भंग, महाराज शेर सिँघ कल प्रगटयो सति सरूपा। निहकलंक प्रभ आप अख्वाए। जामा ल्या धार, घनकपुरी प्रभ भाग लगाए। कलिजुग होए ख्वार, सतिजुग सति सति सति वरताए। होए शब्द गुंज़ार, सोहँ शब्द जो रसना गाए। मिले भगत भण्डार, दे दरस गुरसिख तरावे। अन्त ना होए ख़आर, महाराज शेर सिँघ विच जोत मिलावे। ईश्र जोत जगत प्रकाशा। सर्ब जीव में प्रभ का वासा। भगत जनां गुर चरन भरवासा। बेमुखां दर मिले हासा। पापीआं कीना प्रभ नर्क निवासा। गुरसिक्खां सद बलि बलि जासा। महाराज शेर सिँघ देवे दरस दिलासा। करो दरस गुर दर ते आ के। दीपक लियो जगाए, आत्म जोत प्रकाशा। हउमे दियो जलाए, अज्ञान अन्धेर बिनासा। सोहँ मेरा नाउँ, सिमरो रसन स्वासा। देवे दरस अपार, प्रभ पूरा शाहो शाबाशा। गुरसिख लाए पार, निहकलंक जोत अबिनाशा। महाराज शेर सिँघ आप निरँजण, दे दरस होए भगत धरवासा। अथर्बण वेद गंवाया चौथा जुग खपाया, जोत जगत धरी गुर आ के। सोहँ चलाया सभ दा माण गंवाया, निहकलंक प्रगटयो आ के। जुग उलटाया भरम चुकाया, शब्द सच्चा प्रभ सच लिखा के। ऐसा कर्म कमाया पड़दा पाया, बैठा आप प्रभ जोत जगा के। जगत भुलाया नज़र ना आया, जगत खपाया रसना बचन लिखा के। कहर वरताया विच अग्न जोत जगत प्रभ ला के। अछल छलन जग आया, आप अडोल बैठ जगत जलाया, साध संगत वस्सया प्रभ आ के। जीव जन्त भुलाया, बाण शब्द जगत गुर लाया, बैठा प्रभ भेस वटा के। मेहरवान अख्वाया, राम नाउँ तराया अन्तकाल देह तजा के। यजुर भाग लगाया, कृष्न शाम अख्वाया, द्वापर गया उलटा के। कलिजुग जोत जगाया, निहकलंक अख्वाया, घनकपुरी प्रभ माण दवा के। देह तजाया विच सिख समाया, बैठा प्रभ देह जोत जगा के। बेमुख खपाया गुरसिख तराया, गुर दर आया सीस झुका के। नाम निधान दिवाया, जगत जलन्दा प्रभ चरन तराया, आत्म बैठा ध्यान लगा के। प्रभ वड्आया गुरसिख कल पार तराया, महाराज शेर सिँघ निहकलंक अख्वा के। निहकलंक आप प्रभ निरवैरा। वक्त लै आवे देर ना लावे, सृष्ट झड़े बेर जिउँ बेरा। सिख तरावे दरस दिखावे, गुरसिख मिटे मन तेरा मेरा। बेमुख जलावे कल खपावे, बिन गुर होया जगत अन्धेरा। महाराज शेर सिँघ नज़र ना आया, नर अवतार लै पाया फेरा। नर अवतार जगत प्रभ आ के। जोत जगाई प्रभ दया कमा के। कल खपाया जाए सतिजुग ला के। धर्म चलाए सोहँ शब्द सुणा के। सोहँ शब्द चलाए गुरसिक्खां एह मार्ग पा के। पतित पावन दुःख भय भंजन, सर्ब जीआं दे दुखड़े लाह के। महाराज शेर सिँघ स्वच्छ सरूपा, गुरसिक्खां रक्खे बणत बणा के। सतिजुग साचा राह चलाया।

सोहँ शब्द नाम बबाण बणाया। पूरा सतिगुर सच तख्त बहाया। जोत सरूप प्रभ आप वड्आया। दे के दरस अपार, देह का कुफ़ल खुल्हाया। होया जोत प्रकाश, अमृत नाम रस पाया। झिरना झिरे आप, बूंद अमृत मेरा बरसाया। अमृत बूंद आप प्रभ बरखे, कँवल नाभ दा मुख खुल्हाया। खुल्हे कँवल बूंद इक्क बरसे, द्वार दसवां प्रभ पर्दा लाहया। गुरसिक्खां जगत बलिहार, जोत सरूप प्रभ दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ आप निराधार, गुरसिक्खां दे विच समाया। गुरसिक्खां प्रभ दे वड्याई। गुरसिक्खां प्रभ सेव कमाई। गुरसिक्खां विच भेव ना काई। गुरसिक्खां विच प्रभ निरँजण जोत टिकाई। गुरसिक्खां मिल प्रभ ल्या प्रगटाई। गुरसिक्खां एह मिली वधाई, जोत निरँजण सच तख्त बहाई। सच धाम सचखण्ड दुआरा, जिथ्थे बैठे आप रघुराई। उत्तम जगे दीपक न्यारा, गुरसिख जोत प्रभ आप जगाई। जोत जगाई सोझी पाई, सुत्या सिख प्रभ दरस दिखाई। दरस दिखाए थिर घर सोझी पाए, हिरदा शांत काया सीत कराई। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुण दाता, बाहों पकड़ गुरसिख तराई। गुरसिख तारे आप प्रभ ठाकर। गुरसिख कलिजुग भगत रत्नागर। गुरसिख निर्मल कँवल जिउँ सागर। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, प्रगटे जोत होए उजागर। जगे जोत जोत जगत जलावे। जगे जोत सर्ब सृष्ट रुलावे। प्रगटे जोत किसे नज़र ना आवे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, निहकलंक जगत अख्वावे। निहकलंक जोत जगाई।

२०१
०१

निहकलंक प्रभ देह तजाई। निहकलंक हो प्रभ सृष्ट हिलाई। निहकलंक सर्ब भेख मिटाई। निहकलंक कुन्ट चार जै जै जैकार कराई। निहकलंक लै अवतार, रंग रूप ना किसे वखाई। तजी देह होए जोत सरूप, महाराज शेर सिँघ निहकलंक नाउँ रखाई। निहकलंक आप गुण निधाना। निहकलंक आए जगत जिउँ बाना। निहकलंक विरले गुरमुख पछाना। निहकलंक तीन लोक इक्क समाना। निहकलंक अख्वाए महाराज शेर सिँघ जोत विष्नूं भगवाना। विष्नूं भगवान प्रभ आकारा। विष्नूं आकार सर्ब सृष्ट आकारा। विष्नूं कर दरस गुर मन सदा अनन्द। गुरसिख जगत सीतल चन्द। बेमुख जले जगत बन्द बन्द। थिर घर ना सूझे होए अन्धेर अन्ध। जगत दुरकारे नर्क निवारे, कोए ना दए छुडाए जमडण्ड। गुरसिख उधारे पैज संवारे, महाराज शेर सिँघ आप बख्शंद। बख्शणहारा प्रभ कृपाला। दीनां नाथ भगत रखवाला। जगत जलावे जिउँ अग्न ज्वाला। महाराज शेर सिँघ कलिजुग होए भगत रखवाला। भगत जनां गुर चरन प्यासा। भगत जनां प्रभ गुर दुःख दर्द विनासा। लाग चरन होए रहिरासा। कर दरस होए बन्द खुलासा। गुरसिख सद बलिहार, सोहँ जपिओ जिस नाम स्वासा। महाराज शेर सिँघ आप दुःख हरता, सिक्खा दियो दरस भरवासा। प्रभ लै अवतार जगत सँघारया। प्रभ जोत सरूप भगत उधारया। प्रभ निहकंटक आपणा आप विच जगत आकारया। महाराज शेर सिँघ तीन भवन होए जै जै जैकारया।

२०१
०१

जै जै जैकार जगत जैकारा। जै जै जैकार सोहँ शब्द भगत भण्डारा। जै जै जैकार चार जुग होए उज्जयारा। जै जै जैकार कलिजुग दुष्ट प्रभ मारा। जै जै जैकार मचाए जगत हाहाकारा। जै जै जैकार होए सृष्ट अन्धयारा। जै जै जैकार कर गुरसिक्खां बुझे गुर दर सच्चा दरबारा। जै जै जैकार सोहँ शब्द कुन्ट चार जैकारा। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, कलिजुग कियो पार किनारा। अमृत बरखा लाई, गुर पूरा कर्म कमांयदा। आत्म शांत कराई, बूंद अमृत मुख चवांयदा। अग्न देह जलाई, काया सीतल ठंड करांयदा। प्रभ पूरे दया कमाई, दु:ख देह दर्द हटांयदा। दर आए मिले वड्याई, कर किरपा अमृत मुख चवांयदा। भय भयानक प्रभ होया सहाई, भूत पलीत विच देह जलांयदा। साध संगत मिली वधाई, दे दरस प्रभ नज़री नज़र करांयदा। विच्चों माण गंवाई, अमृत धार दूख निवार प्रभ अखवांयदा। कलिजुग अवतार देवे भगत भण्डार, अमृत बूंद कँवल में पांयदा। जो जन आए गुर चरन सीस झुकाए, पतित पापी पवित करांयदा। गुरसिक्खां विच समाए, प्रभ पुरख निरँजण चरन धूढ़ गुरसिख मस्तक लांयदा। बणत बणावे द्वापर विछड़े, कलिजुग प्रभ मेल मिलांयदा। आपणा आप छुपाए, जोत प्रगटाए भगत जनां सोझी पांयदा। कोई थिर ना रहाए, प्रभ बिन कोई ठौहर ना पाए, आप अपरम्पर परमेश्र जगत बणांयदा। धरनी धर ईश्र नर सिँघ नरायण, प्रगट हो साध संगत दरस दिखांयदा। जन्म सुफल कराए, जो जन गुर दर आए, फिर जन्म ना पांयदा। विच जोत मिलाए, धाम सचखण्ड सच लै जाए, अटल आप अटल गुरसिख रखांयदा। जोत जगे जिथ्थे नरायण बणत बणाए, आप जोत सरूप सद डगमगांयदा। जोत सरूप प्रभ विच आकाशिआ, विच मात ईश्र जोत सरूप विच सिख समांयदा। गुण निधान किरपा नंद, भगत जनां घर जोत प्रगटांयदा। सच्चा प्रगटे निरँकार, होए सृष्ट ख्वार, प्रभ पूरा मुख छुपांयदा। भगत अधार पूरन अवतार, अमृत बूंद प्रभ अमर करांयदा। अमृत अमर अमर प्रभ रूपा, प्रभ का रूप किसे नज़र ना आंयदा। नज़र ना आवे सर्ब रहावे, बिन बाती बिन तेल प्रभ दीपक देह जलांयदा। लक्ख चुरासी उपावे, सर्ब दे विच समावे, अन्तकाल खाली देह करांयदा। किसे हत्थ ना आवे, आत्म विच रहावे, माया रूप सभ पर्दा पांयदा। सोहँ शब्द जो गावे, रंग रंगीला माधो निज माहे पावे, जोत सरूप विच जोत जगांयदा। निहकलंक अख्वावे, जोत सरूप खेल रचावे, भगत जनां हरि हरि हरि दरस दिखांयदा। चरन लगावे कलिजुग धरत हिल जावे, महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकांयदा। कलिजुग होए भय भयानक। वरते कहर अचन अचानक। भुल्ली सृष्ट बचन गुर नानक। गुर जगत जिउँ मोती माणक। महाराज शेर सिँघ होए सहाई, अन्तकाल विच भय भयानक।

२०२
०१

✻ २ कत्तक २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

कलिजुग प्रगटे पतित पावन, ईश्र जोत जगत गुर चानणा। भगत जनां हरि दर बूज्झया, प्रभ मिल्या सुघड़ सुजानणा। सोहँ शब्द रस लूज्झया, तिस देवे ब्रह्म ज्ञानणा। गुरसिख चरन प्यार, किरपानंद देवे एह दानणा। जगावे जोत अपार, सति पुरख सति मानणा। बैठा आप अडोल, जगत कराया सर्ब दीवानणा। प्रभ तोले पूरा तोल, कलिजुग जीव अन्त कल खपानणा। महाराज शेर सिँघ बचन अमोल, गुरसिक्खां मन भावना। गुरसिक्खां गुरदर सीस निवाया। बेमुखां सिर छार कल धक्का लाया। गुरसिक्खां दे उधार, जोत सरूप प्रभ दरस दिखाया। बेमुख होए ख्वार, हरि करता नज़र ना आया। गुरसिक्खां होए आधार, दीपक जोत जगाया। बेमुख होए लाचार, काल फास कल सिर ते आया। गुरसिख ब्रह्म विचार, गुर पूरे बूझ बुझाया। बेमुख जन्म दिन चार, विच चुरासी गेड़ लगाया। गुरसिख उतरे पार, जोत सरूप अन्त जोत मिलाया। बेमुख लए ना कोए सार, गुर पूरे मुख भवाया। गुरसिख बैठे ठांडे दरबार, जोत सरूप थान सचखण्ड रचाया। निहकलंक लै अवतार, सोहँ बाण जगत प्रभ लाया। महाराज शेर सिँघ जोत आकार, विच मात जोत प्रगटाया। कलिजुग आया अन्ध अन्धयारा। प्रगटयो जोत सरूप आप गिरधारा। गुरसिक्खां दे ज्ञान, आत्म होए चमत्कारा। गुरसिख मन गुरचरन ध्यान, चरन कँवल साचा दरबारा। सच दरबार जिथ्थे लै प्रभ अवतारा। बेमुख ना पायण सार, कलिजुग प्रगटयो आप निरँकारा। जोत सरूप जगत हरि वस्सया, रहे प्रभ सदा निराधारा। गुरसिक्खां कल हरि रंग माणयां, जिन्हां बुझाए वखाए रंग अपर अपारा। धरत हिलाई सृष्ट खपाई, ऐसा करे खेल अपारा। कलिजुग उलटाए सतिजुग साचा लाए, महाराज शेर सिँघ लै अवतारा। लै अवतार जगत प्रकाशया। कर दरस दुःख दर्द विनास्सया। जोत जगाई गुरसिक्खां प्रभ बूझ बुझाई, गुर पूरे कउ सद बलि जास्सया। सृष्ट भुलाई बेमुख दर ते ठौहर ना पाई, अन्त काल गल जम की फास्सया। गुरसिख पहनाई सोहँ शब्द रंगण दे चढ़ाई, अन्त काल करे बन्द खुलास्सया। कलिजुग प्रगटे आप रघुराई, महाराज शेर सिँघ नाम रखाई, गुरसिक्खां गुर चरन रहरास्सया। गुरचरन सच गुर के धामा। कलिजुग प्रगटयो नर का जामा। त्रेता राम अवतार, द्वापर कृष्न शामा। कलिजुग कर्म विचार, निहकलंक वजाए शब्द दमामा। होए जगत ख्वार, शब्द लिखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। प्रभ का बचन प्रभ का रंग। गुर का शब्द सर्ब दुःख भंग। गुर दरबार जो जन आए, सोहँ शब्द नाम सद मंग। उपजे ज्ञान मिटे अन्धेरा, देवे दरस आप अनरंग। हँकार निवारे दुष्ट सँघारे, जोत सरूप जगत प्रभ जंग। सोहँ शब्द विचारे, महाराज शेर सिँघ चरन निमस्कारे, सोहँ शब्द चले अनरागा। सिमरे जन वज्जे अनहद वाजा। उपजे मन धुन जिउँ नादा।

जगाए जोत देवे दरस प्रभ अगाधा। गुरसिक्खां गुर जन्म संवारया, शरन लाए दरस दिखाए तन मन साधा। महाराज शेर सिँघ चलत कराए, जुगत जगत एह बणाए कलू काल रूप जगत है खाधा। प्रभ का धाम सदा अखण्ड। प्रभ वसे खण्ड ब्रह्मण्ड। कलिजुग होया अन्त मलंग। उत्तम रंग महाराज शेर सिँघ गुरसिख सर्ब दु:ख खण्ड। सोहँ नाम गुर की वत्थ, कलिजुग देवे आप करतारा। सोहँ नाम गुर की वत्थ, गुरमुख पाए आ गुर के दुआरा। सोहँ नाम गुर की वत्थ, भगत जनां दे भण्डारा। सोहँ नाम गुर की वत्थ, कलिजुग कियो जिस पार किनारा। सोहँ नाम गुर की वत्थ, गुरसिख सिमर उतरे पार किनारा। सोहँ नाम गुर की वत्थ, रसना उचरे किरपा करे जिस गिरधारा। सोहँ नाम गुर की वत्थ, रसना सिमरे देवे दरस आप निरँकारा। सोहँ नाम गुर की वत्थ, कलिजुग प्रगटयो आप कृष्न मुरारा। सोहँ नाम गुर की वत्थ, खाणी बाणी गगन पाताल प्रभ जोत आकारा। सोहँ नाम शब्द अकथ्थ, गुरसिख पावे नाम उज्जयारा। सोहँ शब्द सोहँ नाम सतिजुग रथ, रसना सिमरे सृष्ट उतरे पारा। महाराज शेर सिँघ सदा सिर रक्खे हत्थ, जो जन आए चरन निमस्कारा। सोहँ शब्द सतिजुग चलाया। सोहँ शब्द कल भक्ख कराया। सोहँ शब्द गुर दर गुरसिख ध्याया। सोहँ शब्द नाम पदार्थ प्रभ झोली पाया। सोहँ शब्द रसना जप, जोत सरूप प्रभ मेल मिलाया। सोहँ शब्द उत्तम रस, ब्रह्म सरूप जिस दरसाया। सोहँ शब्द करे सभ भस, काम क्रोध विच देह जलाया। सोहँ शब्द करे प्रभ वस, जो सिमरे प्रभ नज़री आया। महाराज शेर सिँघ भगतन वस, साध संगत विच दरस दिखाया। दरस दिखावे आप अपरम्पर पूरा। जोत जगावे करे ज्ञान भरमन्त्रा। एक जोत प्रभ जोत सरूपा, जगे जोत विच देह निरंतरा। अज्ञान अन्धेर गंवाए, दीपक जोत विच देह जगाए, सोहँ शब्द देवे गुरमन्त्रा। प्रभ दरस दिखावे, द्वापर विछड़े कल लए मिलाए, किरपा करे प्रभ निरंतरा। बेमुख खपाए गुरसिख तराए, सोहँ देवे ज्ञान निरंतरा। निहकलंक अख्वावे, महाराज शेर सिँघ नाम रखावे, छड्ड देह जोत सरूप रहंतरा। जोत सरूप प्रभ सर्ब प्रकाशे। जोत सरूप प्रभ तीन लोक प्रकाशे। जोत सरूप प्रगटयो कल, कर दरस दु:ख दर्द विनासे। जोत सरूप प्रभ धरनी धर, गुरसिख गाओ सद रसन स्वासे। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपा, भगत जनां करे बन्द खुलासे। शब्द रूप गुर शब्द चलाया। शब्द रूप गुर शब्द बाण अग्न चलाया। शब्द रूप सर्ब सृष्ट प्रभ दे खपाया। शब्द रूप शब्द गुर उचरे, शब्द शब्द गुर मेल कराया। शब्द रूप प्रभ देह प्रकाशे, बेमुखां नज़र ना आया। शब्द रूप प्रभ करे विनासे, खण्ड सच बैठ जोत जगाया। शब्द रूप प्रभ देह तजाई, छड्ड देह निहकलंक अख्वाया। निहकलंक निरँजण नरायण, पारब्रह्म परमेश्वर किसे भेव ना पाया। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण, प्रभ जोत प्रगटाया। अबिनाशी अविगत अगोचर, जोत सरूप विच देह सिख समाया। अछल्ल अडोल अतोल

प्रभ पूरन, बाहों पकड़ प्रभ गुरसिख तराया। महाराज शेर सिँघ दरस अनमोल, जोत प्रगटाए बेमुखां नज़र ना आए, गुरसिक्खां दरस दिखाया। गुरसिख तराए, बेमुख जलाए, मदि मासी नर्क निवास दिवांयदा। कलिजुग अग्न जलाए दुखी जीव बिल्लाए, गुरसिक्खां मुख अमृत बूंद चवांयदा। आत्म शांत कराए, निजानंद प्रभ दरसाए, दे दरस पड़दे लाहिंदा। पड़दा लाहया भरम भउ चुकाया, आत्म हो प्रकाश दीपक जोत जगांयदा। भगत राए होए सहाए, स्वच्छ सरूप प्रभ नज़री आंयदा। गुरसिख वड्याए चरन लगाए, प्रभ भवजल पार करांयदा। अन्त काल प्रभ जोत मिलाए, गुरसिक्खां दरस दिखांयदा । जम नेड़ ना आए, सतिगुर पूरा होए सहाए, ऐसी बणत प्रभ आप बणांयदा। विच बबाण बिठाए, खण्ड सच गुर धाम पुचाए, जोत सरूप जिथ्थे प्रभ डगमगांयदा। चुरासी गेड़ चुकाए, अटल पदवी गुरसिख गुरदर ते पाए, जोत सरूप विच जोत मिलांयदा। निहकलंक अखवाए, छड्ड देह जोत सरूप हो जाए, गुरसिक्खां बूझ बुझांयदा। महाराज शेर सिँघ नाम रखावे, अन्त कलू आप कराए, सतिजुग सच लांयदा। सतिजुग वरते सच पसारा। ईश्र जोत होए जगत आकारा। जीव जन्त सभ जोत आधारा। प्रभ की जोत सर्ब पसर पसारा। सतिजुग उपजे आप निरँकारा । महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां गुरचरन दुआरा। दुखी दर बिल्लाए दए दुहाईआ। जन्म बिरथा जाए, दर दर ठोकरां खाईआ। दुखीआं दुःख निवार दे, तेरे हत्थ वडयाईआ। करी दर पुकार

बिंग कसाईआ। ढठ्ठे हरि द्वार, गुण अवगुण ना विचार, ढठे दर घर घर दर मिलण वधाईआं। कल कलेश कर्म विचार, नाम दान पले पाईआ। दुखी हो जगत बिल्लाए, बिन पुत्तरां मावां सदा सवाईआं। दे दिलासा तेरे चरन भरवासा, दे दात दात गुर डाहढे सभ भुक्खयां भुक्ख गंवाईआं। दरस तेरा सदा मन उपजे, रक्खणहारे लाज रक्ख वखाईआ । महाराज शेर सिँघ ढहि पयो दुआरे, चरन लाग साध संगत रल जाईआ। साध संगत प्रभ वसणेहारा। साध संगत विच लै अवतारा। साध संगत बिन सृष्ट झक्ख मारा। साध संगत बूझे हरि का दुआरा। साध संगत रंग माणे जुग है चारा। सोहँ दे ज्ञान, गुरसिक्खां गुर पार उतारा। कलिजुग लै अवतार, महाराज शेर सिँघ जोत आधारा। जोत आधार निरँजण दीयो सृष्ट भुलाई प्रभ पूरन दिओ। सृष्ट भुलाई गुरसिख जणाई, सोहँ शब्द महां रस पीओ। प्रभ हत्थ वड्याई, महाराज शेर सिँघ पैज रखाई, कर दरस होए निर्मल जीउ। दरस दास जन गुर का करया । रसना उचरे नाउँ आत्म ठांडा करया। गुरसिख पायन थांउँ, दीपक जोत जिथ्थे प्रभ धरया। भगत वछल वसे सभ ठांउँ, देवे दरस सभ आसा वरया। महाराज शेर सिँघ सदा गुण गाउ, माणस जन्म जिस करया। मनसा मन जो धारे, गुर का शब्द ना मन विचारे, कलिजुग डुब्बे विच मँझधारे। माण गंवाया जगत दुःख पाया, माणस जन्म जगत गए हारे। अन्तकाल काल खपाया, लक्ख चुरासी विच चक्र लाया, आत्म सदा अडोल देह

२०५
०१

निमाणयां। दुखड़े दे कलोल, पीड़े तिल जिउँ घाणयां। देह दुःख ना सके तोल, बहत्तर नाड़ां विच समाणयां। जप तप खट रोग प्रभ मारे, मथे जिउँ मथन मधाणयां। कच प्रभ तोड़े झट्ट भुल्ला जीव जिउँ बाल अञ्याणयां। गुर पूरे बिन कोई रक्ख ना सके, दूख निवार ना कोई अख्वाणयां। महाराज शेर सिँघ आप समरथ, अमृत बरखा लाए दुःख मिटाणयां। झूठी देह विच प्रीतम साचा। झूठी काया जिउँ कुम्भ काचा। हउमे रोग विच देह आंचा। प्रभ की जोत रचे विच देह महाराज शेर सिँघ जलावे जीव की आंचा।

✻ ३ कत्तक २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

अर्श अर्श अर्श छड्ड अर्श, मात जोत प्रगटा ल्या। बरस बरस अमृत मेघ बरस, सोहँ शब्द बरसा ल्या। तरस तरस कर तरस, गुर चरन लगा ल्या। हरस हरस कर दरस, गुर हरस मिटा ल्या। गुरसंगत लै तार, बेमुखां नर्क निवास दवा ल्या। महाराज शेर सिँघ भगत भण्डार, दे दरस तन मन गुरसिख धीर धरा ल्या। धरे धीर मन गुर दरस पा ल्या। सोहँ शब्द वज्जे तीर, बाण अणयाला जुग चार चला ल्या। सोहँ शब्द गुरसिख सीतल, अमृत बरख़ प्रभ मुख चवा ल्या। रसना जप होए रसन सरीर, अन्ध अन्धेर देह विच दे मिटाया। हउमे तोड़ ज़ंजीर, खोल्ह् त्रैकुटी प्रभ दरस दिखाया। गुरसिख उज्जल वांग कबीर, कलू काल निहकलंक जिन सीस निवाया। होए आत्म शांत सरीर, जोत प्रकाश प्रभ अन्धेर मिटाया। गुर पूरन गहर गम्भीर, जोत सरूप जगत विच आया। गुर वड्डा पीरां सिर पीर, बैठ सिँघासण दरस दिखाया। सिँघ आसण बैठे आप रघुबीर, त्रेता जुग जिउँ उलटाया। प्रगटे जोत कृष्न मुरार, द्वापर अन्ध जिस सृष्ट कराया। कलिजुग महाराज शेर सिँघ अछल्ल सरीर, छड्ड देह जोत रूप हो आया। जोत सरूप कलिजुग प्रभ वस्सया। भगतन दे दीदार, बेमुखां थिर घर ना दस्सया। गुर देवे पैज संवार, बेमुख जन्म गंवावे हस्सया। जिस नेहु कल गुरचरन प्यार, दे दरस सच सरूप दस्सया। सोहँ शब्द रसन विचार, नज़रीं आवे प्रभ विच देह वस्सया। मदि मासी नर्क मँझार, सच दरबार कोल पापी नस्सया। गुरसिक्खां जोत आधार, जोत सरूप प्रभ सदा विगस्सया। धरनी धर ईश्र लै नर अवतार, जन्म धाम प्रभ घनकपुरी वस्सया। मनी सिँघ सन्त दे दीदार, शब्द सरूप हिरदे प्रभ वस्सया। आया धुर दरबार, कर दरस दरस दरस कलिजुग महाराज शेर सिँघ देवे अमृत नाम रस्सया।

जोत जोत जोत सरूप प्रभ कल चानणा। होत होत होत सर्ब सृष्ट निधानणा। सोत सोत सोत सोवत सृष्ट प्रभ नहीं पछानणा। रोत रोत रोत सृष्ट रोवत, सोहँ शब्द मारे गुर बानणा। मोहत मोहत मोहत गुरसिख मन मोहत, कर दरस होए ब्रह्म ज्ञानणा। सोहँ शब्द उत्तम जोत जगाए, प्रभ देह गुण निधानणा। गुरमुख गुरसिख सदा जुग होत, प्रगटे जोत जब विष्नूं भगवानणा। विष्नूं भगवान गुण निधान किसे नहीं विचारया। सर्ब अस्थान प्रभ चरन लग्ग जाण, सच दरबार इक्क गुर चरन द्वारया। बेमुख दुःख पाण कलिजुग कीनी सर्ब निधान, सूझे बूझे ना गुर दरबारया। निहकलंक लै अवतार, महाराज शेर सिँघ जगत सँघारया। कर जोत प्रकाश सृष्ट आकारया। ईश्र माया जगत आकार, माया रूप पसर पसारया। लक्ख चुरासी जून उपाई, सर्ब विच जोत आधारया। प्रभ जोत सरूप सर्ब में वस्सया, ऊँच नीच इक्क रंग करतारया। जुगो जुग प्रभ लै अवतार, भगत जन काज संवारया। मच्छ कच्छ प्रभ देह धार, जल जीवत पार उतारया। सतिजुग सति सति सति मेहरवान, सति सरूप निराधारया। द्वापर लै अवतार कृष्न मुरारया। त्रेता ल्या सुधार, राम रूप विच देह सुधारया। भगत हेत करे प्रकाश, बाल ध्रू दे दरस करे जोत उधारया। नर सिँघ रूप अनूप, थम्म्ह पाड़ भगत प्रहलाद प्रभ तारया। करउ ढाई कर अछल अछलन, प्रभ बल पार उतारया। अंबरीक जन विचारा, बान चक्र सुदर्शन दुरबाशा मारया। जनक शब्देह जोत आधार, कलिजुग नाउँ नानक निरँकारी अख्वा ल्या। हरी चन्द प्रभ तन मन वार, होए चंडाल कर्म नीच संभालया। द्रोपता रक्ख लाज नर आधार, कोट चीर होए छिन आत्म विचारया। बिदर झुग्गी सुत्ता पैर पसार, प्रभ दुर्योधन हँकार निवारया। सुदामा दलिद्री दित्ता तार, बाहों पकड़ उप्पर सिँघासण बहा ल्या। जैदउ कर्म विचार, भगत रूप प्रभ लेख लिखा ल्या। नामदेउ दरस निरँजण पाया, प्रगट हो प्रभ भोग लगा ल्या। बेणी कर्म अध्यात्मी बैठ इकांत दरस प्रभ पाया। त्रलोचन करे पुकार, दिउ दरस आप रघुराया। दित्ता तार रविदास चुमार, फड़ कसीरा प्रभ कंगण वटाया। कबीर प्रभ देवे धीर, सचखण्ड जिस आसण लाया। सैन नाई दित्ता तार, राणा रझाए आप प्रभ आया। जुगो जुग प्रभ लै अवतार, सैन रूप हो प्रभ सेव कमाया। गनका उतरी पार, हिरदे राम नाम वसाया। पूतना होई पार, मोहन मुम्मे जगत कृष्न पाया। अजामल पाई सार, नाउँ नरायण अन्त काल ध्याया। बधक लाया बाण, चरन कँवल कृष्न चमकाया। प्रभ पतित देवे तार, होए अधीन जिन सीस निवाया । कलिजुग लै अवतार, अन्त कलू काल आप कराया। ब्रह्मा आई हार, सर्ब सृष्ट हत्थ सिँघ पाल फड़ाया। सवरन होया सर्ब समरथ, ध्रू दर जिस परे हटाया। अमर अमर अमर सिँघ होए, जुग दूजे माण दिवाया। सिँघ माणा मन्ने प्रभ का भाणा, गुर पुरी अन्त काल सिधाया। भगत वड्आया सिँघ बुध्ध तराया, जिस मिल्या निहचल टिकाणा। मोहण सिँघ बचाया,

शब्द अमोड़ प्रभ देह छुडाया। चरन कँवल प्रभ निवास दिवाया। रंगा सिँघ रंग लाया, नाम रंग मंग देह चढ़ाया। सरन परे प्रभ लाज रखाया। बाज सिँघ सर्ब दुःख भंग, मन अमंग अन्त काल जोत समाया। गुजर सिँघ प्रभ तारया। दाता हो दात देवे भगत जन वणजारया। दर मंगण कर पुकार, पा प्रेम परम प्यारया। तन मन ठरया प्रभ दर्शन करया, कलिजुग जीव कर दरस जन्म संवारया। निहकलंक हो आए चतुर्भुज कहाए, करो दरस गुर ठांडे दरबारया। महाराज शेर सिँघ सर्ब समाए, जगत अन्धेर गुरसिक्खां मन जोत जगाए, गुरसिख होए जगत न्यारया। गुरसिख नाम निर्मल, गुर चरन प्यासा। गुरसिख नाम निर्मल, जोत सरूप विच देह वासा। गुरसिख नाउँ जगत सद निर्मल, हरि हरि जपे रसन स्वास स्वासा। गुरसिख नाउँ कलिजुग सद निर्मल, महाराज शेर सिँघ जोत सरूप देवे दरस दिलासा। कर दरस मन होए अनन्दा। कर दरस प्रभ प्रगटे सद बख्शिंदा। कर दरस कल आए गुर गुणी गहिंदा। कर दरस प्रभ जोत सरूप विच देह सद रहन्दा। कर दरस प्रभ रंग अनूप, प्रगटे जोत जुग जुग मृगिन्दा। कर दरस उतरे मन की भुक्ख, गुरमुख नाउँ नीर कल वहन्दा। कर दरस प्रभ रिदे चितार, देवे दरस प्रभ देह दहिंदा। सोहँ शब्द अमृत रस, महाराज शेर सिँघ गुरसिख पलिंदा। अमृत पी अमर पद पाए, अमर हो अमर विच वसाया। जोत सरूप जोत मिल जाए, आवण जावण जगत चुकाया। गेड़ चुरासी फेर ना पाए, कलिजुग नाउँ निधान सोहँ जिन पाया। अन्तकाल जम डण्ड ना लाए, निहकलंक जिन चरन सीस निवाया। अन्तकाल प्रभ होए सहाए, भगत वछल प्रभ बिरद रखाया। विच बबाण लै बिठाए, गुरमुख गुर जगत तराया। धाम बैकुण्ठ दे पुचाए, महाराज शेर सिँघ जिन ध्याया। दे दरस प्रभ देह छुडाए, देवे दरस प्रभ अन्तर अन्तरा। प्रगटे जोत प्रभ जुगा जुगन्तरा। करो दरस गुर दर आए, प्रगट भयो निरवैर निरवन्तरा। कलिजुग होया कहर, शब्द रूप जगत भस्मन्त्रा। रसना बचन जल की लहर, दुखी जीव जगत दुःख अन्तरा। गुरसिख पूजे गुर के पैर, जिन मिल्या दरस तन्त्रा। ईश्‍वर जोत सदा निरवैर, कर विचार प्रभ विच देह वस्तंतरा। निहकलंक आप प्रभ गहर, महाराज शेर सिँघ भगत भगवन्तरा। भगत भुगत प्रभ आप संवारे। जीव जुगत दे मुक्त, सोहँ शब्द जो रसन विचारे। गुर का शब्द जोत जगाए, करे अन्धेर जिउँ दीपक उज्जयारे। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, बूझ बुझाए गुरसिख ध्याए। गुरप्रसादि गुरसिक्खां गुर दर सूज्झया। गुरप्रसादि गुर साचा जिन कलिजुग बूज्झया। गुरप्रसादि गुरचरन लाग भाउ दूजा ना लगया। गुरप्रसादि मन शब्द वैराग गुरसिख दर दर लूज्झया। गुरप्रसादि जोत आधार गुरसिख गुरचरन कलिजुग झूज्जया। गुरप्रसादि प्रभ आदि जुगादि गुरमुखां थिर घर बूज्झया। गुरप्रसादि प्रभ विनोद विनाद, महाराज शेर सिँघ दरस देवे सदा आत्म गूज्झया।

गुरप्रसादि गुरदर पुचाणा। गुरप्रसादि कल मिटया आवण जाणयां। गुरप्रसादि कर दरस गुरचरन रंग माणयां। गुरप्रसादि गुरसिख पूरा कलिजुग चले गुर के भाणयां। गुरप्रसादि उतरे कल कलेश वसूरा, निहकलंक जिन जोत सरूप पुचाणयां। प्रभ का बचन ना होए अधूरा, सोहँ बाण रसन गुर मारया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, बेमुखां विच गुरसिख पछाणयां। गुर जगावे गुरसिख मन जोता। गुर तरावे गुरसिख चरन लाग दुःख खोता। नाम दृढ़ावे सोहँ ज्ञान रस जिस छोता। भगत जनां प्रभ भेव चुकावे, जुगो जुग प्रभ जोत सरोता। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे, देवे माण सदा सिख बहुता। हरि का नाउँ भगत मन धरया। हरि का नाउँ जप तन मन हरया। हरि का नाउँ देह सर्ब दुःख हरया। हरि का नाउँ इक्क रंग रंग तन मन गुरसिख करया। हरि का नाउँ गुरसिक्खां कर प्रेम रसन उचरया। हरि का नाउँ सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ धरया। हरि का नाउँ जगत रसायण। धन्न धन्न गुरसिख कलिजुग जिस रसना जपायण। उत्तम वत्थ आत्म है सुख, प्रभ की जोत देह जोत जगायण। कल दे कर रक्खे हत्थ, दूख विनाश अबिनाश सिर हत्थ टकायण। बेमुख खपायण निन्दक नर्क वगायण, महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द सच लिखायण। हरि का रूप बूझे ना कपटी कामी। कोए ना जाणे अचुत्त पारब्रह्म प्रभ अन्तरजामी। रिखी केस गवर्धन धारी, प्रगटे जोत कृष्न स्वामी। कलू जीव अन्त अग्न जलायण, अन्तकाल कोए ना सुख दामी। मदि मासी सभ नष्ट हो जायण, प्रगटे जोत प्रभ निहकामी। निहकेवल निहकंटक कहायण, जल थल हरि स्वामी। सृष्ट भुलाई प्रभ भूल भुलाणी। गुरसिक्खां मन जोत जगायण, दे दरस निर्मल देह कराईए, जगाए जोत जगत जुगदामी। होए प्रकाश देह सुखी स्वासा, गुरचरन भरवासा है प्रभ अन्तरजामी। महाराज शेर सिँघ सद बलि बलि जासा, तीन लोक कल मिल्या स्वामी। तीन लोक प्रभ वसनेहारा। विच पताल प्रभ नैण मुँधारा। बाशक सेज सुख प्रभ निरँकारा। कोए ना जाणे पाताल वास जोत आकारा। विच आकाश प्रभ जोत चमत्कारा। उनन्जा पवण सिर चँवर झुलारा। ब्रह्मा विष्न महेष दर करन पुकारा। सत्त काले सत्त सुफेद, प्रभ का रथ विच आकाश न्यारा। जोत सरूप प्रभ करता, बिन बाती बिन तेल दीपक जगे न्यारा। जोत सरूप जोत जग वरते, कर आकार पसरे जगत पसारा। जीव उपाए जोत विच देह टिकाए, कोए ना जाणे प्रभ विच वसणेहारा। जीव बणत बणाए, आप विच सचखण्ड रहाए, जोत सरूप रवे रंग करतारा। अबिनाशी अविगत अगोचर, एक सरूप तीन लोक पसारा। आप अडोल जोत प्रभ डलके, खण्ड ब्रह्मण्ड चक्र प्रभ चरन दुआरा। आप अखण्ड वसे वरभंड, अन्तकाल कल देवे डण्ड, करे खेल चौथे जुग न्यारा। जोत सरूप जोत प्रभ करता, विच आकाश जोत आकारा। विच पाताल प्रभ सदा रहावे, मातलोक एह पसर पसारा। ईश्वर जोत होए देह आकारा। सो बूझे जिस

आप बुझाए, जुगो जुग प्रभ मात लै अवतारा। कलू काल एह खेल रचाया, छड्ड देह होए जोत आधारा। जोत सरूप खेल प्रभ रच्चया, जगत वहाई जिउँ जल की धारा। दो हज़ार सत्त बिक्रमी कहर वरताई, बचन सति होए सति वरतारा। अन्त समां प्रभ अन्त वखाए, वरन चार चल आयन गुरचरन दुआरा। प्रभ जोत प्रगटाए तेज वधाए, शब्द रूप तोड़े हँकारा। बाणी गुर उपजाए, बध्धी देह छुडाए, पकड़ संगरूर लै आए, होए जोत जगत चमत्कारा। एक शब्द जलाए, राणे महाराणे तख्तों लाहे, होए निमाणे दर आए, गल पल्ले पाए, दीपक दीसे जिउँ अग्न अंगयारा। सोई रहीसे जो गुरचरन थीसे, जोत अपरम्पर दुष्ट झक्ख मारा। मनी सिँघ कलम चलाई, मस्तूआणा गुर सच गुर धाम बणाई, सरअमृत थेह कराई, ऐसा होए जगत वरतारा। निहकलंक जोत प्रगटाई, सतिगुर मनी सिँघ मिले वधाई, सभ सृष्ट पकड़ गुरचरनीं लाई, चार कुन्ट होए जै जै जैकारा। एक शब्द गुरसिख लिव लाई, कर दरस आत्म अग्न जलाई, शांत सरूप प्रभ सीतल धारा। गुर दर गुरसिख मिले वड्याई, नाउँ निरँजण गुर दर ते पाई, भगत वछल प्रभ पैज रखाई, कल मिल्या पूरन प्रभ अपारा। सोहँ शब्द रसन जन गाई। महाराज शेर सिँघ दरस निज घर मांहि पाई, दरस जोत गुरसिख भण्डारा। गाओ गाओ रसना प्रभ अन्तिम वेला। पाओ पाओ प्रभ घर सुखी सुहेला। जाओ जाओ बलि मिल्या प्रभ गर्ब गुहेला। राउ राउ राउ प्रभ संग रंक है मेला। ध्याओ ध्याओ ध्याओ गुर ध्यायण वेला। महाराज शेर सिँघ जाउ बलिहार, विछड़यां संग चरन जो मेला। चरन लाग गुरसिख मन तृप्तास्सया। कलिजुग जीव डुलाए, गुरसिख मन प्रभ दरस धरवास्सया। बेमुख प्रभ अन्त खपाए, गुरसंगत पाए माण गुरचरन निवास्सया। प्रभ लेवे भगत पछाण, बेमुख दे सदा है बास्सया। गुरसिख चतुर सुजान, आत्म ध्यान चरन गुर वास्सया। सद सद सद जाउ कुरबान, महाराज शेर सिँघ मिले अबिनाशया। प्रभ अबिनाशी जोत आकारा। सृष्ट विनाशी तन जले विकारा। बेमुख नर जासी, कल ना सूझे गुर दुआरा। गुरसिक्खां प्रभ अन्त वखासी, ऐसा खेल रचे प्रभ न्यारा। कलिजुग जीव खपाए, सति पुरखा सतिजुग वखाए, सोहँ चले शब्द न्यारा। सच धाम गुर चरन बणाए, बैठ अडोल विच जोत जगाए, महाराज शेर सिँघ परउपकारा। गुर अमृत बरखे जल उत्तम नीरा, सर्ब सूख देह होए वरते जगत भए सरीरा। काया कपट प्रभ आप जलाया। अमृत बूंद करे शांत सरीरा। दर जलायन गुरसिख कर दरस नरायण, प्रगटयो प्रभ गहर गम्भीरा। वल छल करायन, गुरदर बद्धे डंड एह पायन, जन्म गंवाया अमोलक हीरा। आपणा आप छुडाया, शब्द विच सिर बन्न्ह धराया, बचन कराए आप गुर पूरा। अमृत बरसावे दु:ख दर्द मिटावे, सोहँ शब्द ज्ञान गुर देवे धीरा। अमृत दिया निर्मल जिया, महाराज शेर सिँघ तोड़े देह जंजीरा।

❊ ४ कत्तक २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

गुर दर धुन गुर धुन्कारा। दुखी जगत रोवे कर हाहाकारा। सतिगुर सच्चा गुर दर्शन, दर्शन सिख गुर दरबारा । कलिजुग लवे रक्ख, प्रगट सिरजणहारा। सृष्ट होई सभ सत्थ, प्रभ की जोत किया किनारा। गुरसिक्खां गुर देवे वत्थ, सोहँ शब्द कलिजुग न्यारा। गुर शब्द चलाया सच रथ, चढ़े कोई गुरसिख प्यारा। महाराज शेर सिँघ जगत सिर हत्थ, पापी डुब्बे विच मंझधारा। निहकलंक बेमुखां पाई नत्थ, जोत सरूप होए देह संवारा। अग्न जलाए, धर्म राए दए सज़ाए, महाराज शेर सिँघ ना मिले दीदारा। दीदार दातार दर दर गुरसिख मंगणा। जगत सागर अति दुखिआर। गुरसिख विरले किसे पार लँघणा। बेमुख दर दर होए ख्वार, मदि मासी पकड़ धर्म राए डन्नणा। गुरसिख जगत उज्जयार, सोहे विच प्रभास जिउँ चन्दणा। कलिजुग प्रगटयो नर अवतार, विष्नूं भगवान सति सति सति कर मन्नणा। गुर साचा है ठठयार, काचा कुम्भ हुण भन्नणा। सोहँ शब्द दे आधार, गुरसिख मन शब्द संग बन्नणा। ल्या जगत भतार, सीस झुकाए दान गुर दर ते मंगणा। कारज दए सवार, दोए जोड़ जो करे बन्दना। लक्ख पापी उतरे पार, आए दरबार संग साध संगत जिन मंगणा । उत्तम कर विचार, दीपक जोत जगाए जगत जगन्नणा। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, भाण्डा भउ झूठी देह दा भन्नणा। प्रभ रंग माणो, सद बख्शिंद पहिचाणो। रसना रस रस रस नाम रस हरि का माणो। आत्म होए ज्ञान, ईश्र जोत सरूप आत्म ब्रह्म पछाणो। अन्तकाल ना खाए काल, जाओ विच बैकुण्ठ बबाणो। भगत जन ना होए ख्वार, आत्म ध्यान गुरचरन रसयानो। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, गुरसिक्खां मिल्या पद निरबानो। निजानंद प्रभ निज घर वासा। कलिजुग वेखे जगत तमाशा। कलू विच आए जीव भुलाए, बैठ अडोल सदा गुर वासा। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाया, सोहँ नाउँ जगत भरवासा। गुर प्रगटे कल दु:ख भंजना। देवे ब्रह्म ज्ञान, शब्द सोहँ अंजना। गुर बैठा विच दरबार, अटल जोत प्रभ निरँजणा। निहकलंक सर्ब सुख सार, महाराज शेर सिँघ वसे वरभंडना। सतिजुग उपजे सति पुरखा, सति सति सति प्रभ सति वरतांयदा। सतिजुग आए गुरसिख दर ते, गुर दे माण जुग भगत बणांयदा। दे दरस किरपा धार, गुरसिक्खां कागों हँस बणांयदा। निगम कर विचार, सतिजुग जामा सति पुरख प्रगटांयदा। कोए रहे ना जीव विभचार, रहे सो जो रसना सोहँ सोहँ सोहँ शब्द गांयदा। कलिजुग लए अवतार, जोत सरूप प्रभ सभ माण गवांयदा। वेद चार खपाए, चौथा जुग उलटाए, सतिजुग साचा फेर लगांयदा। ब्रह्मा जोत रलाए, सृष्ट हत्थ सिँघ पाल फड़ाए, अचल प्रभ चलत करांयदा । ध्रू अन्त कराए, दरबान सवरन कराए, अमरापद गुरसिख पांयदा। थिर घर समाए, प्रभ दर्शन पाए, कुख मात सुफल करांयदा । प्रभ माण दिवाए, दरबान बणाए, दे दरस

रंगण नाम चढ़ांयदा। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, बाहों पकड़ सिख पार लँघांयदा। बेमुख कल होए ख्वार दर मंगण भिख ना पांयदा। गुरसिख उधरन पार, प्रगट जोत प्रभ दरस दिखांयदा। ईश्र सदा शब्दोश, दोश जीव लगांयदा। रसना देवे ज्ञान, पापी मुग्ध अज्याण, फिर कोए ना प्रभ प्रगटयो निरबाण, गुरसिक्खां भेत चुकांयदा। प्रभ जोत सरूप निताणयां ताण, दर आए पार करांयदा। होए ना जगत ख्वार, होए अधीन चरन सीस निवांयदा। प्रभ बैठा निराधार, निरवैर आप अखवांयदा। रंग अनूप स्वच्छ सरूप, जगत बणत प्रभ आप बणांयदा। कलू काल अन्त कहर वरते, गुर शब्द सरूप सच सुणांयदा। गुरसिख जम डण्ड ना भरता, अन्त काल प्रभ दरस दिखांयदा। वक्त है आया, गुरसिख गुर पकड़ उठाया, सतिजुग साचा राह बतांयदा। प्रभ दर दिखाया, जोत सरूप विच देह सिख समाया, भुलेखे जगत भुलांयदा। जो जन चरन छोह जाऐ मानस जन्म मुक्त कराए, गुर पूरा बंधन तोड़ तुड़ांयदा। गुरसिख समाए पूरन देह विच परमेश्र जोत आए, जोत सरूप प्रभ जगत जलांयदा। प्रभ जोत प्रगटाए, आपणा खेल रचाए, चार कुन्ट हाहाकार करांयदा। जगत आकार जोत प्रभ करया, खिच्च जोत तन खेह करांयदा। भाण्डा देह आप प्रभ घड़िआ, बेमुखां भन्न वखांयदा। जगन्नाथ दरस जिन करया, महाराज शेर सिँघ चरन लगांयदा। गुर की सेवा चरन हज़ूरा। गुर की सेवा मन उतरे सगल वसूरा। गुर की सेवा करे कोई सिख पूरा। गुर की सेवा कर है सतिगुर पूरा। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, चरनों कीता जगत है दूरा। हरि हरि हरि का रंग सदा अबिनाशी। श्री रंग बैकुण्ठ का वासी। मच्छ कच्छ कूरम आज्ञा अउतरासी। तीन लोक प्रभ चरन के दासी। केसव चलत करे निराले, कोए ना जाणे कलिजुग जोत प्रकाशी। जगत जले जिउँ अग्न ज्वाला। बुझे अग्न जो जन रसन सोहँ नाम प्यासी। महाराज शेर सिँघ बाण चलाया, शब्द रूप जगत सभ घासी। शब्द बाण ब्रह्मा मारया। शब्द बाण संग पार उतारया। शब्द बाण कल सृष्ट सँघारया। शब्द बाण बेमुखां मिले कल अंध्यारया। शब्द बाण वज्जे मन गुरसिक्खां, सोहँ निकले रसन धुन्कारया। शब्द बाण गुरसिख मन लग्गे, जगत विकार छड्ड आप संवारया। शब्द बाण देह करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ रक्खे पैज मुरारया। सतिजुग वरते सति वरतंता। सतिजुग मिले प्रभ भगत भगवन्ता। सतिजुग मिले साध संगत जिउँ सन्ता। सतिजुग दु:ख सभ हरे, निहकलंक जो चरन पड़ंता। माता गर्भ जून धरे, अन्तकाल प्रभ जोत मिलंता। उत्तम गुरसिख विचार, महाराज शेर सिँघ जो शरन रहंता। शरन प्रभ की कोई विरला लोड़े। कलिजुग जीव भरम भुलाया, माया ममता जाल ना तोड़े। क्रोध हँकार भरम भुलाया, शौह दरया जीव है रोढ़े। सतिजुग सति पुरख उधरे पार, निहकलंक जन प्रीत जो जोड़े। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, झूठी माटी विच तजाई गोरे। देह तजाई जोत प्रगटाई, तीन लोक होई

२१२
०१

जैकारे। शब्द धुन वजाई अनहद राग सुणाई , मिल्या प्रभ अपर अपारे। गुरसंगत तराई, कलिजुग माण दिवाई, हउमे ममता जो मन ते होरे। महाराज शेर सिँघ सद मेहरवाना, टुट्टी गंढु चरन संग जोरे।

✻ १२ कत्तक २००७ बिक्रमी मेरठ पल्टन विच बचन होए ✻

कलिजुग प्रगटयो प्रभ निरंतरा। सोहँ शब्द करे जगत भस्मन्त्रा। आदि अन्त प्रभ सर्ब थांएँ रहंतरा। कलिजुग लै अवतार जुगो जुग प्रभ जोत जगंतरा। आत्म धरे ध्यान, अज्ञान अन्धेर विच देह निवन्तरा। जगी जोत अटल्ल, आकार कोई ना जाणे, जोत सरूप प्रभ खेल करंतरा। सृष्ट लँघाए पार, चौथा जुग विच नर्क निवास दवन्तरा। गुरसिख उधरे पार, सोहँ शब्द मिले गुर मन्त्रा। तीन लोक प्रभ का आकार, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ चरन रखंतरा। निहकलंक जोत आकार, निराधार विच देह वसन्तरा। महाराज शेर सिँघ भगत भण्डार, गुरसिख उज्जल गुरचरन लगंतरा। गुरचरन जगत भरवासा। कलिजुग वेखे प्रभ तमाशा। आप भुलाए देवे नर्क निवासा। गुरसिख पार कराए सोहँ शब्द दे धरवासा। गुण निधान अन्तरजामी प्रभ घर मांहि पाउ, भगत जनां बेमुख करन हासा। दे दरस गुर माण गंवाए, जन भगत ना होए निरासा। नाम रतन गुर अमृत जग पिया, निर्मल जिया आत्म रासा। होए सुघड़ सुजान, आत्म होए जोत प्रकाशा। गुरसिक्खां प्रभ देवे माण, आत्म ज्ञान गुरचरन निवासा। तीन लोक प्रभ घट वस्सया, बेमुखां ना रघुनाथ पछाता। कलिजुग लै अवतार, जोत प्रगटाई निहकलंक बिधाता। चरन लाग मिले वड्याई, राउ रंक सर्ब प्रभ साथा। एक शब्द प्रभ जगत चलायो, हँकार निवार सर्ब प्रभ घाता। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, निज घर प्रगटयो निज घर वासा। निज घर वसे आप अपरम्परा। दे दरस मुख ऊजल करंतरा। प्रभ अबिनाशी सर्ब थांएँ रहंतरा। महाराज शेर सिँघ दे ब्रह्म ज्ञान, कलिजुग दुःख गुरसिक्खां गवन्तरा। गुरसिख सो जिस गुर पछाणयां। गुरसिख कलिजुग जन्म धार, निहकलंक जिस चरन लगाणयां। गुरसिख सोए कल सृष्ट, जोत सरूप प्रभ दर्शन पाणयां। गुरसिख सोए महाराज शेर सिँघ सच नाम वखाणयां। गुरसिख निगम विचार, चतुर्भुज दरस दिखाणयां। कलिजुग होए शब्द धुन्कार, अनहद शब्द देह वजाणयां। पूरन पुरख करी विचार, सच मन्दर गुरसिख देह समाणयां। अटल्ल आप निरँकार, निहकलंक लै अवतार जगत भुलाणयां। महाराज शेर सिँघ खोल्हे दस्म दुआर, दोए जोड़ जिस सीस निवाणयां। गुरचरन जिस सीस निवाए। काया कपट विकार देह जलाए। मिले पुरख अपार, सच सुच्च विच देह प्रभ जगाए। निरँजण जोत सर्ब सुख सार, कलिजुग प्रगट निहकलंक अखवाए। कोए ना जाणे जगत भतार, महाराज शेर सिँघ सर्ब सुख दाए।

सर्ब सुख गुर चरन दखाला। कलिजुग होए ख्वार, बेमुख जले अग्न जलाला। गुरसिख उधरे पार, जिन्हां मिल्या भगत वछल कृपाला। अगम्म अगोचर सद कर्म विचार, भगत जनां होवे रखवाला। मदि मासी नर्क मँझार, सोहँ शब्द बाण सुखाला। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, कोए ना जाणे विष्नूं भगवाना। भगतन देवे कलिजुग वड्याई। अग्न लगाए कहर वरताए, दो हज़ार सत्त बिक्रमी लिख्त सति कराई। निरँजण जोत जगाई, घट घट वेखे सर्ब सुखदाई। ऐसा करे जगत अन्धयारा, महाराज शेर सिँघ नाम निरँजण प्रगट जोत कल लै अवतारा। कलिजुग अन्त प्रभ आप करंता। सतिजुग वाहवा सोहँ शब्द वरतंता। बेमुख नर्क निवार गुरसिख चरन रहंता। दे दरस अपार, निजानंद सुख वरतंता। कोटन कोट कोट होए इक्क वार, विरला होए जगत साध सन्ता। निहकलंक जोत आकार, महाराज शेर सिँघ कल कर्म करंता। कलिजुग प्रगट प्रभ कपट विचारया। त्रेता राम अवतार, द्वापर कृष्न मुरारया। कलिजुग लै अवतार, निहकलंक गुर जोत आकारया। सोहँ शब्द चक्र सुदर्शन बाण लाए जगत प्रभ नर्क निवारया। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, गुरसिक्खां ब्रह्म सरूप दरस दीदारया। प्रभ दर्शन कर उज्जल जिया। कलिजुग नाम सोहँ जिस लिया। होए आत्म ज्ञान, सर्ब निधान प्रभ जोत जगईआ। कलिजुग

२१४ पुरख सुजान, मदि मास जो ना रसन रसईआ। बेमुख पकड़ पछाड़, नर्क निवास प्रभ भुगतईआ। निर्धन प्रभ देवे माण, चरन २१४

०१ लाग जिस आस रखईआ। कलिजुग प्रगटयो विष्नूं भगवान, अमर जोत कृष्न घनईआ। महाराज शेर सिँघ भगत आधार, ०१

दे दरस आत्म जोत प्रभ कल जगईआ। कल कहर गुर कहर वरतंता। जुग चौथा प्रभ भस्म करंता। सतिजुग सति सति पुरख निरँजण, सति सति वरतंता। दे दरस गुर माण गंवाया, चरन कँवल गुरसिख रहंता। सच मन्दर गुर धाम रचाया, विच सिख सदा वसन्ता। आत्म नाम महाराज शेर सिँघ जो जन रसन वसन्ता। अन्तकाल दे दरस अपारा, गुरसिख मिले जोत भगवन्ता। सचखण्ड निवास गुरसिख रहिरास, सोहँ सिमरे जो रसन स्वास, प्रभ का रूप अनन्त अनन्ता। एक जोत जगत आकार, सर्ब जीव प्रभ विच वसन्ता। निहकलंक लै अवतार, बेमुख पकड़ दुःख भुगंता। महाराज शेर सिँघ जोत निराधार, होए सहाई साधन सन्ता। साध सन्त प्रभ रूप समान। साध सन्त कल उपजे भगत भगवान। सोहँ शब्द जो रसन उचरे, सोई पुरख सुघड़ सुजान। आत्म जोत जगत उज्जयारा, सोहँ शब्द देवे प्रभ दान। हरिजन देवे भगत भण्डारा, प्रभ की जोत जगत इक्क समान । महाराज शेर सिँघ लै अवतारा, सोहँ शब्द करे प्रधान। सोहँ शब्द सति जपे सति पुरखा। कलिजुग अग्न जलाए, जीव जन्त सभ विरखा। धर्म राए दे सज़ाए, मदि मास जो रसन है दिरखा। महाराज शेर सिँघ जोत महान, कलिजुग प्रगटे इक्क जोत इक्क किरखा। जोत जगत निर्मल निरबाणी। प्रभ की जोत ना बेमुख पछाणी। गुरसंगत गुरचरन

जोत वडाणी। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, निहकलंक अग्न जलाणी। शब्द अग्न जगत जलाया। कोए ना जाणे प्रभ का तेज़ सवाया। बेमुख राणे नर्क निवास दिवाया। गुरसिक्खां प्रभ सद है साथे, दे दरस ज्ञान दिवाया। कलिजुग भुल्ले मूर्ख मुग्ध अञ्याण, प्रभ का भेव किसे ना पाया । प्रभ की जोत जगत वरतंत, सोहँ शब्द इक्क राग चलाया। सतिजुग होवे सति वरतारा, चार वरन प्रभ इक्क कराया। निमाणयां प्रभ दे सहारा, हँकारीआं प्रभ माण गंवाया। जोत जगत जगे अगम्म अपार, सर्ब जीव विच समाया। कोए ना जाणे प्रभ आप निरँकार, तीन लोक प्रभ समाया। सोहँ शब्द सर्ब गुणतास, दे शब्द गुण निधान अन्धेर गंवाया। महाराज शेर सिँघ जोत विष्नूं भगवान, कलिजुग प्रगट निहकलंक अख्वाया। निहकलंक करे जगत नकारा। सोहँ शब्द बाण गुर मारा। चार कुन्ट होवे प्रकाश, अनहद शब्द वज्जे धुन्कारा। गुरसिक्खां गुरचरन रहिरास, कलिजुग दरस भगत भण्डारा। महाराज शेर सिँघ जोत अबिनाश, कोए ना बूझे कर विचारा। प्रभ दरस प्रभ उत्तम विचारा। पावे सो जिस देवे दरस गिरधारा। तर जावे सो आत्म जोत जगावे, निजानंद प्रभ करे उज्जयारा। कँवल नाभ खुल्हावे, सो अमृत बूंद मुख चवाए, प्रभ का रूप सच निस्तारा। गुरचरन लग तर जावे, सो महाराज शेर सिँघ कल दरस दिखावे, देवे नाम आधारा। नाम दान गुरसिक्खां गुरदर ते पाया। कलिजुग होए सुजान, चतुर्भुज जिस दरस दिखाया। पीत पीतंबर
२१५
०१
मिले बीठला भगवान, चन्द सूरज जिस जोत जगाया। प्रभ की जोत महान, तीन लोक करे रुशनाया। गुरचरन लाग मिले भगवान, जोत सरूप प्रभ जोत जगत जगाया। कलिजुग जीव धणे जिउँ धान, सोहँ शब्द सिर मौला पाया। बेमुख ना करन पछाण, जोत सरूप प्रभ जगत जलाया। गुरसिख दर परवान, कलिजुग आण जिस प्रभ दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक हो कलंक जगत लगाया। जगत कलंक कल विच ए लागा। प्रगटे जोत कोई मिले वडभागा। बेमुख नज़र ना आवे, गुर दर धक्का खाधा। बेमुख पकड़ पछाड़, सोहँ शब्द प्रगटे आदि जुगादा। बेमुख अन्त ख्वार, महाराज शेर सिँघ जिस कल ना लाधा। कलिजुग आया आप अखण्डत। कलिजुग जीव नर्क निवारे, गुर चरन लाग मिले जन जन्नत। भगत जन दर दर परवान, सोहँ जाप विच साध संगत। छड्ड सर्ब विकार, सोहँ शब्द गुर दर ते मंगत । होए आत्म उज्जयार, नाम रंगण चाढ़े मन रंगत। कलिजुग प्रगटयो लै अवतार, महाराज शेर सिँघ प्रभ दु:ख खण्डत। गुरचरन लाग दु:ख ना व्यापे, कल सूझे हरि दुआरा। निहकलंक प्रभ मिल्या आपे, देवे भगत भण्डारा। सोहँ नाउँ रसन जो जापे, कलिजुग ना होए ख्वारा । दूख रोग प्रभ दरस सन्तापे, हरि नाम निरँजण अलख अपारा। सोहँ शब्द जो जन रसना जापे, महाराज शेर सिँघ अन्त होए सहारा। जगत गिरधार कृष्न मुरार, सावल सुंदर प्रभ रूप वटाया। पताल सुत्ता नैण मुँधार, कलिजुग

जोत निरँजण प्रगट निहकलंक अख्वाया। जगत डोब्या विच अन्ध अंध्यार, आत्म पड़दा प्रभ माया पाया। गुरसिक्खां प्रभ दरस न्यारा, नज़री आवे आप रघुराया। राउ रंक प्रभ सर्ब प्रवेशयो, सतिजुग साचा राह बतायो। सोहँ शब्द होवे भरवासा, बाकी सभ दा माण गंवायो। जुग चौथा अन्त कल करता, निहकलंक प्रभ नाउँ रखायो। सोहँ शब्द जगत भरस्मंता, महाराज शेर सिँघ कलिजुग बाण लगायो। सतिजुग आवे सति प्रगटे प्रभ निरधारा, मूर्ख मुग्ध अञ्याण कोई भेव ना जाणे, जुगो जुग प्रभ लै अवतारा। जोत निरँजण उत्तम निराली, जीव जन्त प्रभ जोत चमत्कारा। होवे प्रकाश गुर दर्शन पाया, आत्म जोत करे देह उज्जयारा। जगे जोत विच देह दीपक, सोहँ शब्द जिन रसन विचारा। सति सति सति होए मेहरवान, त्रेता प्रगटयो राम अवतारा द्वापर कृष्न मुरार। अबिनाशी अविगत अगोचर, जोत जगाई कृष्न मुरारा। कलिजुग जोत प्रभ प्रगट, निहकलंक जोत अवतारा। महाराज शेर सिँघ आप प्रितपालक, जो जन आए प्रभ चरन दुआरा। कलिजुग सीस गुर चरन निवाया। मिल्या प्रभ पुरख परमेश्वर, विच्चों जिस माण गंवाया। जगे जोत जोत मन अंदर, कलिजुग अग्न प्रभ दे जलाया। निजानंद गुरसिख मन भोगण, आत्म शांत जोत सरूप प्रभ नज़री आया। बेमुख होए गुरचरन विजोगण, कलिजुग प्रभ नज़र ना आया। महाराज शेर सिँघ विछड़ सदा दुःख भोगण, साचा शब्द गुर सच लिखाया। सच शब्द आप प्रभ साचा। झूठा जगत देह झूठा काचा। झूठी देह प्रगटयो आप देखे प्रभ रंग तमाशा। महाराज शेर सिँघ जगत जलाया, गुरसिक्खां देवे चरन भरवासा। उत्तम जगत परसना। प्रगटी जोत अकाल, कलिजुग सभ दरसणा। कलिजुग कहर शब्द गुर वरते, जोत अग्न जुग वरतना। गुरचरन लाग सर्ब दुःख हरते, निहकलंक सच रसन परसना। महाराज शेर सिँघ कल पार उतार, निहकलंक भगवान दरस दरसना।

❋ २६ पोह २००७ बिक्रमी मेरठ बचन होए ❋

गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, मिले प्रभ पूरन अबिनाशया। कलिजुग होए घोर अन्धेरा, सतिजुग प्रगटयो सर्ब निवास्सया। अचुत्त पारब्रह्म परमेश्वर, खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब निवास्सया। करोड़ तेतीस सदा बिल्लावण, मिले दरस मन तृप्तास्सया। गुरसिक्खां मन मिले वधाई, निहकलंक जन सिर छत्र झुलास्सया। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, करे बन्द खुलास्सया। सोहँ शब्द देवे दान गुर दाता। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां जोत सरूप प्रभ पछाता। हरि हरि विच वस्सया, मूर्ख मुग्ध अञ्याण ना पछाता। भगत वछल हरि हरि भण्डार, सोहँ शब्द देवे गुण दाता। घनकपुरी लै अवतार, नर नरायण सर्ब का दाता। बेमुख

जगत ना रहण, शब्द बाण लाए बिधाता। महाराज शेर सिँघ भगत उधार, सद रवे सद रंग राता। शब्द लग्गे बाण, जगत सँघारया। बेमुख नर्क निवार, कर्म विचारया। गुरमुख उधरे पार, सोहँ नाम जिन रसन उचारया। कलिजुग कर्म विचार, छड्ड ब्रह्मण्ड प्रभ मात पधारया। आप अतुल्ल सच जगत तुलाया, महाराज शेर सिँघ ल्या अवतारया। कलिजुग लै अवतार, सोहँ शब्द डंक वजा ल्या। प्रभ का रूप अगम्म, गुरसिख करन धन्न धन्न धन्न। कलिजुग मिल्या सतिगुर पूरा प्रभ पारब्रह्म। कर दरस होए जीव सुफल जन्म। महाराज शेर सिँघ मिटावे सर्ब आत्म भरम । जोत सरूप जगत गुर दाता । जीव जन्त विच समाए, अडोल पुरख बिधाता। कलिजुग विरले गुरमुख पछाता। महाराज शेर सिँघ सद कुरबान, जिस भगत मिलाता। मुकंद मनोहर लखमी नरायण प्रभ नज़री आए। भगत वछल अनाथ नाथे, मात पाताल आकाश समाए। तीन लोक सर्ब थाएं रहाए। जन भगतां दे दरस, आत्म जोत जगाए। आत्म जोत दीपक देह न्यारा, बिन गुर कोए बूझ ना पाए। प्रभ की जोत निर्मल निराली, जो वेखे तिस नज़री आए। गुरसिक्खां मन जोत प्रकाशे, बेमुख दर ते धक्के खाए। गुरचरन लाग कलिजुग रासे, सोहँ शब्द होए सहाए। निहकलंक लै अवतार, आपणा भेव ना किसे जणाए। जोत सरूप जगत आकार, राउ रंक प्रभ इक्क कराए। पारब्रह्म रूप अगम्म, सर्ब जीव जग आप उपाए। खाणी बाणी गगन पाताली, जीव जन्त दे

विच समाए। कलिजुग काल कीओ कलिहारी, वाहवा सतिगुर सतिजुग लाए। अनहद शब्द होए धुन्कार, सोहँ शब्द जो रसना गाए। त्रेता राम अवतार द्वापर कृष्न मुरार, कलिजुग लै अवतार निहकलंक अख्वाए। निहकलंक प्रभ लै अवतारे। सोई कहे धन्न धन्न, जो जन आए चरन निमस्कारे। हरिजन प्रभ पूरा वसे, जन उपजे जोत निगम निराधारे। कलिजुग लै अवतार, भगत जनां प्रभ पार उतारे। प्रभ का रूप अगम्म, ना किसे चितारे। प्रभ का रूप अगम्म, लक्ख चुरासी विच आकारे। प्रभ का रूप अगम्म, विच पाताल नैण मुँधारे। प्रभ का रूप अगम्म, महाराज शेर सिँघ जोत आकारे। सोई सुहाए थान प्रभ लै अवतारे। सति पुरख सति मेहरवान जग भए अपारे। जल थल तारे आप प्रभ भगत अधारे। नर सिँघ नर नरायण, बावन रूप मंगे बल दुआरे। सद प्रकाश तीन लोक जगत आकारे। सोहँ शब्द सर्ब गुणतास, जगत मचाए धुंधूकारे। निहकलंक आप रघुनाथ, जिस ने पसरे जगत पसारे। महाराज शेर सिँघ भगतन दास, प्रगटी जोत कल लै अवतारे। जो आए गुर धाम, मानस जन्म संवारया। जो आए गुर धाम, कर दरस दुःख देह निवारया। जो आए गुर धाम, मिल पारब्रह्म अगम्म अपारया। जो आए गुर धाम, हउमे तोड़ माण गुर चरन सीस झुका ल्या। जो आए गुर धाम, निजानंद निज माहे पा ल्या। जो आए गुर धाम, सोहँ शब्द गुर ज्ञान दिवा ल्या। जो आए गुर धाम, झिरना झिरे अपार, कँवल नाभ अमृत बूंद मुख चवा ल्या।

२१७
०१

अनहद शब्द होए धुन्कार, जोत सरूप दर्शन पा ल्या । गुरसिख उधरे पार, दोए जोड़ जिस सीस निवा ल्या। गुरसिख जगत विच जिउँ चन्दन प्रभास, पसू प्रेतों देव बणा ल्या। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तज, विच बैकुण्ठ आसण ला ल्या। भगत जनां हरि देवे माण, जिउँ ध्रू दर बहा ल्या। विच जोत प्रकाश खण्ड सच डगमगा ल्या। महाराज शेर सिँघ जगत धरवास, भगत जनां बन्द कटवा ल्या। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, सतिगुर साची सच्ची कल जोत प्रगटाई । भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, सारंगधर भगवान बीठला देवे दरस आप रघुराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, गुरचरन लाग गुरसिख बण आई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, पतित पावन दुःख भय भंजन प्रगट होए अमृत वरखा लाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, गुर चरन लाग मिली वड्याई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, साध संगत प्रभ रिहा समाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, दे दरस पुरख बिधाते गुरसिख तृखा बुझाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, चरन कँवल कँवल गुर बूझो, कलिजुग पाई कुन्ट चार दुहाई। भगत जनां प्रभ नाम दिवाया, अन्तकाल प्रभ होए सहाई। महाराज शेर सिँघ जिन नाम ध्याया, जै जैकार तीन लोक कराई। सोहँ शब्द गुर बाण चलाया, गुर पूरा कर्म करांयदा। आप अडोल जगत पूरे तोल तुलांयदा। आप अतुट अतोल गुरमुखां पार करांयदा। गुरसिख बचन अमोल, माण जीव गवांयदा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तोले पूरे तोल, कंडे नाम चढ़ांयदा। गुरचरन कल वड्डी सिक्दारी। हउमे विच्चों जीव ना मारी। गुर का शब्द ना खेल मदारी। कलिजुग प्रगटे निहकलंक नर नरायण नर अवतारी। चरनकँवल करे अरदास। दूख निवार सदा प्रभ पास। जीव उधारे आप प्रितपारे, सोहँ जपे जो स्वास स्वास। हाकनी डाकनी अंचनी कंचनी कला सोदरी खेल किए न्यारे। शदौण माई पौण पवण पौण देह की कारे। दुराचार जगत विभचारन, बाल माता गोद लए अवतारे। अगण बाण गुर मारे, आत्म शांत शब्द जिउँ जल धारे। गर्भ रोग प्रभ शब्द सरूप पार उतारे।

२१८
०१

✻ ३० पोह २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

पति राखी पारब्रह्म, कलिजुग अंध्यारया। गुर पूरा मेहरवान, दर घर काज संवारया। गुरसंगत जाउ बलिहार, जिन रसना सोहँ शब्द उचारया। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ, कर किरपा जिन पार उतारया। गुरचरन प्रीत प्रीतम मिले वधाई, गुरमुख होए गुरसिक्खां विच प्रभ थम्मृ खलारया। बलि बलि जावां जिन महाराज शेर सिँघ चरन लगारया। गुण

निधान गुण दाता आया। बन्दी छोड़ भगत वड्आया। दे प्रभ ज्ञान, जगत मान सिर छत्र झुलाया। मिले भगवान, जम की टुट्टी कान, गुरसंगत माण दवाया। निहकलंक आप रंग राता, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाया। कल धार कलिजुग घर सिख प्रकाशया। कँवल चरन कर निमस्कार, होवे कल अन्त बन्द खुलास्सया। भगत वछल आप नर अवतार, जोत अटल्ल सदा अबिनाश्या। देह धार विच साध संगत, देवे दरस प्रभ दासन दास्सया। सोहँ देवे नाउँ हरि भगत भण्डार, पावे सो जन जिन सिर हत्थ टिकास्सया। तीन लोक थिर रहावे, निहकलंक घट घट वास्सया। महाराज शेर सिँघ दुःख निवार, गुरसिक्खां कीनी बन्द खुलास्सया। कल आया प्रभ जामा धार। निहकलंक नर अवतार। बेमुखां मारे सोहँ शब्द कटार। गुरसिक्खां दे नाम सोहँ आधार। दे दरस निज घर मांहि, बांहो पकड़ दे तार। लक्ख चुरासी गेड़ ना आवे, दोए जोड़ करे निमस्कार। रैण सबाई गुरसिक्खां मन वधाई, महाराज शेर सिँघ प्रगटयो एकँकार। एकँकार करता कहीए। धनी जै जल थल रहीए। सर्ब गंवाए माण, सोहँ शब्द रसन गवईए। सृष्ट पीड़े जिउँ कोहलू घाण, गोतम रथ बजर होए पईए। साध संगत मिल हरि गुण गाउ, हरि हरि हरि नाउँ रसना लईए । निहकलंक नर नज़री आवे, होए अधीन प्रभ चरनीं पईए। अन्तकाल होए चरन निवास, जम का डण्ड ना अन्त काल सहीए। जोत सरूप जोत मिल जाईए। कर दरस आत्म जोत जगईए। कर दरस मन तृप्तास्सया, ज्ञान अन्धेर गोझ मिटईए। महाराज शेर सिँघ, जगत प्रकाशया, चरन लाग दुःख दर्द ना सहीए। चरन लाग मिले वड्याई। एथे ओथे प्रभ होए सहाई। विच बैकुण्ठ गुरसिख प्रभ जोत टकाई । निर्मल दीवा निर्मल बाती, सोहँ शब्द बत्ती ज्ञान लगाई। नाम निधान गुर दर ते पाईए, जिन हउमे विच्चों मैल गंवाई। निहकलंक रंग सदा सरूरा, जोत सरूप देह पलटाई। रसना बचन ना होए अधूरा, सतिगुर साचे सच लिख्त कराई। लोड़ीदड़ा घर साजन आया, खण्ड ब्रह्मण्ड जै जैकार कराई। इन्द इन्द्रासण आए गुरसिख दरबारे, देवतयां दर फुल वरखा लाई। धन्न धन्न धन्न गुरसंगत, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ, जोत प्रगटाई। प्रगटे जोत जगत बिल्लावे। प्रगटे जोत हाहाकार मच जावे। प्रगटे जोत मदि मासी नज़र ना आवे। प्रगटे जोत सभ धाम माण गंवावे। प्रगटे जोत सोहँ शब्द इक्क जगत जलावे। प्रगटे जोत जोत सरूप प्रभ दरस दिखावे। प्रगटे जोत गुरसिक्खां मन अनहद शब्द वजावे। प्रगटे जोत बन्दी छोड़ प्रभ अख्वावे। प्रगटे जोत गुरसिक्खां गुर सेव सच लेखे लावे। प्रगटे जोत बचन अतोल सभ जगत तुलावे। प्रगटे जोत आप अडोल, सभ सृष्ट डुलावे। प्रगटे जोत आप प्रभ घोख, बेमुखां नज़र ना आवे। प्रगटे जोत गुरसिक्खां प्रभ हरि दर दर हरि घर दरस दिखावे। निहकलंक नाम नरायण, जोत सरूप हो विच सिख समावे। भाण्डा भाउ भरम प्रभ तोड़े, सोहँ शब्द डंक प्रभ लावे। गुरसिक्खां

२१६
०१

मन धुन्कार, जगत होवे ख्वार, कलिजुग ऐसा डौरू वाहवे। महाराज शेर सिँघ, प्रगटे जग शाख़, वाहवा सोहँ शब्द साचा चलावे। सोहँ साचा शब्द निरबाण। कलिजुग दिया प्रभ गुरसिक्खां बबाण। रसणा गाउ हरि रस पाउ, कोए ना होए किसे दीबान। सदा सहाई आप अपरम्पर, प्रगट होए जाणी जाण। निहकलंक जिन नज़री आया, तिन सिक्खां जाउ सद कुरबान। गुरसिख साचा रूप, जिथ्थे हरि प्रभ वस्सया। गुरसिख सच्चा प्रभ सरूप, जोत सरूप जिस आपणा आप दस्सया। सृष्ट भुलाई सोहँ शब्द चार कूट, महाराज शेर सिँघ फिरे नाम दुहाई, बेमुख रोवे मेरा सिख हस्सया। भेद अणमोल गुरसिख जणावे, जाणे सो जिस हिरदे प्रभ वस्सया। खण्ड ब्रह्मण्ड तीन लोक त्रैभवन करन निमस्कार, गुरचरन सभ रवि सस्सया। मेरा रूप अपार, निरँकार निराधार, जीव जोत आधार, बेमुखां मारे शब्द गुर मार, गुरसिक्खां राह साचा दस्सया। कर खेल करतार, कोई ना पावे सार, ऐसा वरते अन्ध अंध्यार, निहकलंक जोत सरूप जगत ग्रस्सया। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, घट घट वासी विच साध संगत वस्सया। साध संगत मन चाउ, प्रभ दर्शन करना। हरि हरि गुण गाया, जोत सरूप निज घर प्रगटाया, देवे दरस प्रभ धरनी धरना। होए सहाई दे वड्याई, अन्तकाल दुःख सिख ना भरना। महाराज शेर सिँघ पैज रखाई, चरन लाग गुरसंगत तरना। तन मन ठरया लग गुर चरनार। गुर साचा शाहो सच भतार। गुरसिक्खां प्रभ दरस है हरि द्वार। झूठी सृष्ट होई कल ख्वार। पाई दूजे विच मञझधार। निन्दक निंदे उरार ना पार। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, सोहँ शब्द कर रसन विचार। महाराज शेर सिँघ कल प्रगट्या निहकलंक अवतार। निहकलंक नर्क निवारे। गुरसिक्खां धाम खण्ड सच दुआरे। जम का डण्ड गुरसिख ना मारे। महाराज शेर सिँघ घर आप पैज संवारे। प्रगटे प्रकाशे प्रगटे गुरसिक्खां करे बन्द खुल्लासे। गुरसिख उज्जल जिउँ चन्दन प्रभासे। बेमुख नादान लगे सोहँ बाण, धर्म राए सज़ाए फासे। गुरसिख गुणी निधान, जिन्नां मिल्या विष्नूं भगवान, महाराज शेर सिँघ सदा है पासे। महाराज शेर सिँघ गुण गहर गम्भीर। रसना बचन तोड़े गुरसिख जंज़ीर। सोहँ शब्द होए मन की धीर। महाराज शेर सिँघ कुन्ट चार घत्त देवे वहीर। शब्द शब्द शब्द जग वहिणा। बिन गुरसिख किसे जग ना रहणा। सोहँ नाउँ देवे झूठी देह प्रभ गहणा। उत्तम एह थाउँ, जिथ्थे साध संगत रल बहिणा। सच बचन सच सवाउ, मुख वाक् गुर साचा कहणा। रैण वहाई भुल्ली सृष्ट विच नींद गंवाई, गुरसिख दरसे दरस प्रभ नैणा। अमृत बरसे बेमुख तरसे, महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां देवे कलिजुग लहणा। गुर पूरा लेख लिखांयदा। भगतां देवे तार, सच मार्ग लांयदा। बेमुख होए ख्वार, वक्त विहाए पछुतांयदा। करे नज़री निहाल, प्रगट जोत अपार महाराज शेर सिँघ दरस दिखांयदा। कर दरस प्रभ दीन दयाला। भगत वछल गुरसिख कृपाला। देवे नाउँ सोहँ होवे सिख लाल

गुलाला। जगे जोत विच लिलाट, मेरा धाम सच्ची धर्मसाला। महाराज शेर सिँघ आप प्रकाश, जिस दा रूप बेमिसाला। प्रभ सरूप जिस नज़री आया। एक जोत होवे जोत विच जोत समाया। आवण जाणा जाणा आवण पन्ध मुकाया।

❋ पहली माघ २००७ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर बचन होए ❋

रक्ख रक्ख रक्ख पति रक्ख तेरी सरनाई। दे दरस समरथ प्रभ दया कमाई। गुरसिक्खां दर्शन उत्तम वत्थ, कर दरस तृखा बुझाई। सृष्ट सबाई लथ्थी सत्थ, शब्द तेग गुर कलम बणाई। बेमुखां नक्क पाई नत्थ, धर्म राए दे सजाई। साध संगत उत्ते मेरा हत्थ, चरन आ मिले वड्याई । महाराज शेर सिँघ प्रगट समरथ, झूठे धन्दे जगत लगाई। जूठा झूठा जगत कराया। जोत सरूप एह भेत रखाया। ना एह जावे ना कोए पावे, गुरसिक्खां दे विच समाया। धन्न धन्न धन्न गुरसिक्खां मिल हरि हरि हरि मंगल हरि दर ते गाया। कर दरस होए प्रसन्न, गुर घर प्रभ परमेश्वर आया । बेमुखां देवे डन्न, ऐसा बाण निहकलंक लगाया। महाराज शेर सिँघ मुखों कहो धन्न धन्न धन्न, कलिजुग प्रगट गुरसिख तराया । गुरसिख भेव गुरसिख देव। गुरसिख पावे सोहँ नाउँ मेव। महाराज शेर सिँघ देवे दरस, बख्शे चरन सेव। बेमुख होए जगत भिखारी। नज़र ना
२२१ आवे धुर दरबारी। छिन भंगर जिन सृष्ट सवारी। गुरसिक्खां मिल प्रभ जोत खण्ड सच उतारी। सद सद सद जाउ कुरबान, २२१
०१ ०१
जिन्हां महाराज शेर सिँघ मिल्या बनवारी। प्रगटे गिरधर गर्ब गंवाए। निमाणयां प्रभ माण दिवाए। गुरसिक्खां दे उत्तम ज्ञान, सोहँ शब्द सच जणाए। प्रभ पूरा हो कृपाल, अन्त काल होए सहाए। दर्शन देवे बिरध आ बाल, जहे देखे तहे नज़री आए। गुरसिक्खां होई पूरी घाल, दलिद्र रोग प्रभ गंवाए। भगत वछल प्रभ कृपाल, चक्र सुदर्शन बाण लगाए। जोत सरूप सर्ब गुणतास, थान थनंतर रिहा समाए। जगत ख्वार भरे प्रभ भण्डार, भुक्खयां देवे भुक्ख गंवाए। लै अवतार महाराज शेर सिँघ, बिन सिक्खां किसे नज़र ना आए। नदर करे तां नज़रीं आवे। बेमुख जीव ठौहर ना पावे। हाहाकार मच्चे जगत बिल्लावे। गुरसिख धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ रसना गावे। सिर ते हत्थ रक्ख मनी सिँघ पैज रखावे। देवे दुत्तर तार, निहकलंक एह तेज वखावे। प्रभ की जोत अपर अपार, जे कोए वेखे तां नज़र ना आवे। गुरसिक्खां जाओ सद बलिहार, जिन्हां विच प्रभ सदा समावे। काया कप्पड़ होए छार, सोहँ शब्द संग रहि जावे। जोत सरूप आप निराधार, तीन लोक विच समावे। गुरसिक्खां बख्शे प्रभ बख्शणहार, जरम मरन दे फंद कटावे। प्रभ का रूप अगम्म अपार। गुरसिख नेड़े बेमुख दूर। गुण निधान प्रभ भरपूर। साध संगत विच सदा हजूर। आसा मनसा प्रभ मन दी पूर। जगे जोत गुरसिख देह वांग कोहतूर। जोत सरूप

गुरसिक्खां देवे जोत नूर। बेमुख मारे जिउँ भठल मनूर। साध संगत सोहँ मधुर हदूर। महाराज शेर सिँघ नाम गुरसिख सरूर। देवे दात आप दातारा। सोहँ नाम शब्द अपारा। हरि रंग लावे गुरसिख तर जावे, देवे दरस निगम मुरारा। राउ मिटावे रंक तरावे, सोहँ शब्द चलावे जगत प्रभारा। सृष्ट घावे बाण लगावे, सोहँ चले शब्द दो धारा। गर्भवास तजावे, मिल जोत प्रभ जावे, देवे दरस आप निरँकारा। महाराज शेर सिँघ मद धर धर मद जाण, जोत पावे गुरसिख दुआरा। निहकलंक प्रभ बेअन्त, किया शब्द जगत वरतारा। शब्द चलाया डंक लगाया। हाहाकार करे जगत रुलाया। जोत सरूप हो आया, किसे नज़र ना आया, वेख विगसे विच देह समाया। लोड़ींदड़ा घर साजण आया। धन्न धन्न धंन गुरसिख गुर दे वधाई, प्रभ परमेश्वर जिन नदरी आया । साध संगत प्रभ दे वड्याई, महाराज शेर सिँघ जिस विच बहाया। अमृत पिया निर्मल जिया, गुर पूरे काज संवारया । दर्शन किया मिल्या प्रबीआ, जन्म मरन जिन आण संवारया। आत्म तृप्तीआ सद विच देह वसीआ, दे दरस नदरी नदर निहारया। दे दरस घनईआ घर आ रमईआ, कर किरपा पार उतारया। रंग रंग रंग प्रभ दे दिखाए, दिन दिन दिन प्रभ तेज वधाए, बेमुख सारे दए खपाए, ऐसी मारे शब्द कटारया। सच मिले सच मिलावण हारया। इक्क रंग वखाए, विच देह प्रभ जगाए, अन्ध घोर दीपक जोत जगाए, होवे देह चमत्कारया। अनहद शब्द वजाए, सर्ब दाता नज़री आए, प्रगट हो जिस काज संवारया। जोत पवण पवण जोत प्रभ जगत जलाए, बैठ अडोल रिहा इक्क थाए, बिन सिक्खा किसे नज़र ना आए, ऐसा लावे डंक मुरारया। नर्क निवास दवाए, मदि मास जो रसना लाए, नर नरायण निरँजण दाता, निहकलंक हो जगत सँघारया। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, सोहँ देवे भगत भण्डारया। उत्तम जुगो जुग भगवान विष्नूं गाथा। विभचार दुराचार प्रभ जगत बणाया, शब्द रूप ना रघुनाथ पछाता। प्रगटे आप पतित पावन, देवे दात सर्ब सुख दाता। विछड़े लए मिला, आत्म देवे जोत जगा, प्रभ पूरा कर्म बिधाता। लक्ख चुरासी दे कटा, लग्गी चरन गुरसिक्खां दे निभा, सेवो चरन गुर टेको माथा। महाराज शेर सिँघ भगत आधार, घर प्रगट्या जोत मुरार, भगतन सद है साथा। दयाधार कर्म विचार, किरपा करे आप प्रभ किरपन। सृष्ट सँघार कर ख्वार, बेमुखां कल आए धड़कन। बेमुखां मन एहो रड़कन। करनहार नदर करे देवे तार, बेमुख बद्धे फास लटकन। शब्द गुंजार विच संसार, महाराज शेर सिँघ गुरमुखां आया कल बख्शण।

दया कीनी दया धारी। देवे दरस दान गिरधारी। धान सुहाया प्रभ आसण लाया, प्रगटे जोत निरँजण निरँकारी। सोहँ शब्द चलाया, छड्डी देह जोत अटारी। घर ठांडे आया, महाराज शेर सिँघ पैज संवारी। गुरसिक्खां मन गुरचरन प्यासा। देवे

२२२
०१

दरस प्रभ दासन दासा। देवे दरस शब्द सोहँ भरवासा। मेरी जोत अगम्म अपाउ, तीन लोक चरन दरवासा। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ नदर चलावे, जन्म गंवावे बेमुख कर हासा। दरस दिखावे हउमे रोग जलावे, कलिजुग कीने बन्द खुलासा। कलिजुग उलटावे सतिगुर सतिजुग लावे, साध संगत विच सच शाह शाबासा। अछल छलन प्रभ छल कर आया। छड्ड देह जोत सरूप हो विच जगत समाया। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दे खेल रचाया। प्रभ की जोत उत्तम दिया सोहँ देवे जोत विच देह जगाया। चलाए इकरख इक्क रंग वखाए, महाराज शेर सिँघ तेज सवाया। प्रगटी जोत आप प्रभ गवरा। मोर पंख पकट हत्थ चवरा। बिन हरि दरस अन्त ना मिले कोए गुरसिख भया गुरसिख चरन कँवला। मिले अबिनाश जगदीश्र दाता, कर दरस जिनस मानुख सवरा। साध गुर पूरे साध्या, महाराज शेर सिँघ कलिजुग आया दवरा। गुर धाम गुर आसण लाया। बलिहार जाउ तिन्हां गुरसिक्खां जिन्हां प्रभ दर्शन पाया। हउँ वार जाओ तिन्हां गुरमुखां, जिन्ह रसना शेर सिँघ नाउँ गाया। दर आयां दान देवे भिक्खा, आत्म ज्ञान मिले रघुराया। सोहँ शब्द मारे सभ दुक्खां, जुग चौथे प्रभ आण लिखाया। धन्न धन्न धन्न गुरसंगत घर घर सुक्खा, प्रभ परमेश्वर पाया। लाए बाण प्रभ बेमुखां, जिन्हां प्रभ ना नज़री आया। महाराज शेर सिँघ जम जंधार, फड़ फड़ बाहों जगत डुबाया। निहकलंक जोत अवतार, गुरसिक्खां विच चरन बहाया। नैण तरस उतरे मन तृखा, बिमल सरूप प्रभ जोत प्रगटाया। उत्तम सिख कलिजुग प्रभ कीए, मन विख सभ माण गंवाया। ब्रह्मा इन्द्र फनिंदर शिव आदिक, कुमेर सुमेर प्रभ खेल मिटाया। ध्यान ज्ञान नाम दर दिया, खण्ड सच सिख वड्आया। बेमुख निन्दक मुख दुराचारी, अन्तकाल मुख विष्टा पाया। मदि मासी मानुख अहँकारी, प्रभ पूरे नर्क निवास दवाया। गुरसिक्खां होया आप प्रभ साकी, अमृत साचा जाम पिलाया। हउमे तोड़ सच्ची सिख भाखी, कर किरपा नदर निहाल कराया। कट्टी गलों आप जम फाँसी, दे दरस निहाल कराया। बेमुख ना जाणे बैठा घट घट वासी, महाराज शेर सिँघ रघुराया। गुण गावो रसना रसायण। मिले प्रभ पूरन अबिनाशी, निहकलंक भगत परायण। गुरसिख वास करे खण्ड सच प्रभ वासी। महाराज शेर सिँघ सच अवतार, चरन ला सिख रहिरासी। वक्त अनमोल प्रभ अनमुल्लड़ा लाया। सृष्टी डोबे कर अनभोल, गुरसिक्खां बांहों पकड़ जगाया। कलिजुग तोल्लया पूरे तोल, बाण सोहँ ला जगत भुलाया। गुरसिख लए प्रभ जगत विरोल, कर किरपा विच चरन बहाया। बैठा विच आप अडोल, ना प्रभ डोले ना किसे डुलाया। ईश्र वाक़ सदा सच बोल, जोत सरूप जगत भुलाया। साध संगत प्रभ सदा है मौल, गुरसिक्खां प्रभ समां सुहाया। बाशक उप्पर रक्खी धौल, तशक सेज प्रभ आसण लाया। विच आकाश जगे जोत, जोत सरूप प्रभ डगमगाया। विच मात होए प्रकाश, कलिजुग घनकपुर प्रभ भाग लगाया।

सिमर स्वास होए अन्ध विनास, सच आसण प्रभ डेरा लाया। गुरसिख मिल कँवल बिगासन, जिन घर प्रगटे आप रघुराया। महाराज शेर सिँघ साध संगत होए दासन, जोत सरूप जिस गुर प्रगटाया। गुरसिख जाणे कोए गुर का रंग। गुरसिख जाणे प्रभ सदा अभंग । गुरसिख होए ना कलिजुग नंग। शब्द सरूप प्रभ सृष्ट घाई जंग। देवे दरस आप प्रभ, साध संगत मन चाढ़े रंग। कर किरपा प्रभ खेल कराई, सिख दुखड़े कीने भंग। राउ मिटावे माण रंका साज्जया। सच्चा सुहाए थाउँ जिथ्थे प्रभ साज्जया। गए सभ पसाउ मिले ग़रीब निवाज्जया। निहकलंक अगम्म अथाहो, लओ दान सिक्खो खुल्हे दरवाज्जया। होए शब्द गुंजार, मन वज्जे अनहद वाज्जया। पूरी करो विचार, बैठा सच शाहो राजन राज्जया। सर्ब सृष्ट जोत आकार, माया रूप जगत एह साज्जया। कलिजुग प्रगट्या लै अवतार, सभ तों वड्डा शेर सिँघ महाराज्जया । तारे तारनहार, प्रभ गुरसिख तारे। करे जोत आकार, प्रभ जोत कृष्न मुरारे। जामा ल्या धार, पुरख अपर अपारे। वरते रंग करतार, हुक्म सति सरकारे। निर्धन देवे तार, सरधन घर मुरारे। भुक्खयां दे आहार, कलेश कट्टे सारे। गुरपुरब मना अपार, बैठ अपार सच शाहो दुआरे। ल्या जन्म संवार, भवजल उतरे पारे। प्रभ अमृत बरखे किरपा धार, शब्द बरखे जिउँ बुंदारे। सति पुरखा मिले आप नरायण, डुब्बदे कलिजुग पार उतारे। गुरमुख सच सलाहिण, जिन मिल्या हरि हरि दुआरे। महाराज शेर सिँघ जाउ सद सद सद बलिहारे। जाउ बलिहार जिन जोत दीपक बाल्या। विछड़े लए मिलाए, अचरज खेल दिखा ल्या। विछड़ कदे ना जाए, जिन सिर हत्थ टिका ल्या। गुरसिक्खां होवे सहाए, बांहों पकड़ पार लँघा ल्या। बेमुखां कोए ना थांए, मानस जन्म बिरथा गवा ल्या। महाराज शेर सिँघ वसे हर थाएँ, जिस रसना गाया तिस विच्चों पा ल्या। रसना जप राम रसायण। सिमरत सोहँ दुःख ना पैण। आत्म जोत पेखे दरस गुर नैण। गुर के शब्द मीठा सुख बैण। कलिजुग तारे जामा दैण । सृष्ट वहाई उलटे वहिण। गुरसिक्खां दिया सोहँ नाम सुखैण। महाराज शेर सिँघ दरस कर सर्ब तर जायण। प्रभ दर्शन कोई विरला पाए। प्रभ दरस कर सिख बिग्सावे। मन हरस सर्ब मिट जावे। नाम सोहँ रसना जो गावे। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप दरस दिखावे। प्रभ का दर्शन उत्तम न्यारा। गुरमुख बूझे कर विचारा। अमृत बरखे जिउँ जल धारा। निजानंद सुख मिले अपारा। तरनतारन आप करतारा। साध संगत हरि दरस भण्डारा। देवे दरस विच कल मँझारा। महाराज शेर सिँघ सर्ब दातारा । गुरदर आए नाउँ गुर पाओ। गुरदर आए सोहँ नाउँ रसना गाओ। गुरदर आए चरनकँवल संग बिग्साओ। गुरदर आए कर दरस आत्म जोत जगाओ। गुरदर आए काया अंध्यार अन्ध चुकाओ। गुरदर आए गुर का शब्द मन वसाओ। गुरदर आए अमोलक नाउँ रसना गुर गाओ । गुरदर आए दुःख दलिद्र सर्ब गंवाओ। गुरदर आए, चन्दन वांग सदा महिकाओ।

गुरदर आए भिन्नी रैण भिन्नड़ी हो जाओ। गुरदर आए जोत सरूप संग जोत मिलाओ। गुरदर आए काया कपट विकार तजाओ। गुरदर आए चन्द सूरज गुरसिख बण जाओ। गुरदर आए कर दरस अज्ञान गवाओ। गुरदर आए कर दरस महाराज शेर सिँघ विच समाओ। जोत सरूप प्रभ गुर विच सिख समीपिआ। किरपा करे आप करतार, करे पतित पुनीतिआ। एह विहार सच्ची सरकार, जगो जुग चले प्रभ रीतिआ। फेर होवे ख्वार, वक्त ना आए समां एह बीतिआ। निहकलंक लै अवतार, शब्द रूप समां एह जीतिआ। देवे भगत भण्डार, सोहँ नाउँ अतीतिआ। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, करे विहार जिउँ गुर की रीतिआ। गण गंधर्ब प्रभ सर्ब सुख वासी। तीन लोक प्रभ चरन की दासी। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन सेविआ आत्म रासी। करे आत्म प्रसन्न, अन्त काल तोड़े जम फाँसी। महाराज शेर सिँघ देवे सिख तार, कलिजुग आया घनकपुर वासी। कुमेर करे प्रभ जगत ख्वारी, चेत सिँघ बणिओ जगत भण्डारी। गुर दर मिले सच्ची सिक्दारी। पूरे सिख जाउ बलिहारी। गुरचरन लाग जिन कुल सुधारी। पूत सवरन बणया धुर दरबारी। मंगे दान कर निमस्कारी। देवे दात बणाए जगत भण्डारी। खण्ड सच होवे जै जै जैकारी। सोहँ देवे शब्द बिउहारी। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ, गुरसिक्खां दी जिन पैज संवारी। पूजो चरन कँवल गुर सूरा। बचन लिखाए सर्ब भरपूरा। सिख अडोल जिउँ कोहतूरा। प्रभ का नाम आत्म सुख सरूरा। निहकलंक गुरसिख नेड़ ना जाणो दूरा। बेमुखां का कीना चूरा। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां लाहे सगल वसूरा। सगल समरथ कल धारे। चंचल काया जित वसे राम मुरारे। अनन्द निर्मल निज घर वसे निहकलंक लै अवतारे। लै अवतार करे जगत अधार, ना कोए पाए सार, बेमुख दर प्रभ परे दुरकारे। गुरसिक्खां मिल्या चरन प्यार, दे दरस प्रभ पार उतारे। पंचम जेठ मात वज्जी वधाई, आया अचुत पारब्रह्म निहतारे। खेल किया अति न्यारा, देवे दरस सन्तन रैणारे। करे दरस सन्त निरालम, अमृत झिरना निझर झिलारे। कँवल बूंद मिल खेल खिलाया, खोल्ह कपाट दे प्रभ दस्म दुआरे। प्रगटे अबिनाश सन्तन कीना दास, देवे दरस जिउँ कृष्न मुरारे। मनी सिँघ शाबास, जो चल आया प्रभ दरबारे। कर दरस मन होए तृप्तास, खब्बा चरन कँवल प्रभ झाड़े। नेत्र नीर प्रभ सोमा, प्रभ मिल्या अगम्म अपारे। भूरी काली मिल्या कलधारी, सोहँ शब्द चले गुँजारे। नैणी पेख्या सच्चा सतिगुर, सच कर वेख्या रसना बोले हउ वारे वारे। मंगे दान रक्खो सरनाई, बिरध अवस्था ढहि पया दुआरे। बाल सरूप बाल तेरी लील्हा, मैं अनभोल तेरे शब्द बुलारे। मैं कुछ ना जाणा, तेरा रूप ना पछाणा, रंग रंग रंग करे करतारे। दर्शन पाया मन तृप्त कराया, रसना उचरे महाराज शेर सिँघ निरँकारे निरँकारे। सन्तन आया सचखण्ड दुआरे। दीनी दात प्रभ अपर अपारे। शब्द चलाए सदा धुन्कार, माणे रंग सच शाहो भतार। कलम चलाए करे सृष्ट मार।

पूरा सतिगुर सद सद रसन उचार। मैं मुग्ध अञ्याण तूं प्रभ देवें तार। महाराज शेर सिँघ दर तेरा पाया, बोले मनी सिँघ मुखों बार बार बार। दर पाया बण दरवेस मैं। दर तेरा साचा, जोत सरूप जोत प्रवेश में। सोहँ शब्द तेरी धुन्कार, चले देस देस में। महाराज शेर सिँघ तेरा सच दरबार, वेखां मैं फ़कीरी भेस में। चरन संग रक्ख प्यार, दोए जोड़ करां आदेस मैं।

ईशर गुर गुर ईशर आपणा आप उपाया। मिल पंचम हरि प्रभ खेल रचाया। धन्न धन्न एहदी वड्याई, जिस प्रभ दर्शन पाया। गुर पूरे पंचम दे वड्याई, गुरसिक्खां सिख वड्आया। पुष्प वरखा कर, सच दरबार सिख दरसाया। उत्तम मिले दर, धरनी धर ईशर घर आया। घर मिल्या साचा हरी हरि, जिस रंग नाम सोहँ चढ़ाया। सिक्खां दे धरवास सच शब्द अलाया। बख्शे बख्शणहार, सद बख्शिंद बख्शण आया। पुष्प माला प्रभ देवे हार, चेत सिँघ सिर सिहरा लाया। वडिभागी ए वडभाग, भगत भगत भगत दर सुहाया। देवे सच्ची दात, सच वक्त प्रभ सच सुहाया। महाराज शेर सिँघ रक्खे हत्थ, गुरसिक्खां मिल प्रभ दर्शन करया। कर दरस तन मन ठरया। जोत सरूप प्रभ विच वसरया। ध्यान ज्ञान निधान प्रभ देवे आसा वरया। सुजान प्रभ सिख गुरचरन लग जाण, गुरसिख जग दुत्तर तरया। भगत भगवान अन्त इक्क हो जाण, जोत सरूप जोत रंग करया। शब्द सच बखान, रसना गाउ गुणी निधान, दे प्रसाद दुःख निवरया। मूर्ख मुग्ध भुल्ला अञ्याण, महाराज शेर सिँघ प्रगटे जाणी जाण, देख देख देख गुरसिख वरया। करो निमस्कार गुरचरन सरेवो। आपणा आप गुर अग्गे धरेवो। मेरे सेवादार सर्ब गुण मेवो। मिल्या विष्नूं भगवान अलख अभेवो। सोहँ शब्द निरबाण सिमरो सभ देवी देवो। गुरसिक्खां एह थान सुहाया, जगावे जोत आप प्रभ जोती। गुरसिख पकड़ हार परोया, कलिजुग मेले सिख जग मोती। अचरज खेल करे अपरम्पर, प्रभ की कला जोत सरोती। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, गुरसिक्खां सिर फुल्ल बरखा होती। फूलन की बरखा बरखावे। चतुर्भुज चरन संग संगत तरावे। देवे सच्चा धाम, विच निवास बैकुण्ठ दिवावे। जित्थे जोत प्रकाश, बिन बाती बिन तेल जगावे। ओथे होए प्रभ प्रकाश, उनन्जा पवण सिर छत्र झुलावे। रवि सस सीस चरन झुकावे। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाश, जोत ल्या जगत अवतारा। जल थल मईअल पसरया पसारा। बेमुख रोड़े नर्क मँझारा। गुरसिख उतरे कर दरस चरनारा। करो निमस्कार महाराज शेर सिँघ प्रगट्या नर अवतारा। अचरज कला कलिजुग वरताई। साध संगत प्रभ जोत प्रगटाई। अनन्द बिनोद रव रिहा सर्ब ठांई। सारंगधर गोपाल मुख भनी, जिस ने सारी सृष्ट भुलाई। महाराज

२२६
०१

शेर सिँघ शब्द चलाया, चार कुन्ट पए दुहाई। गुरसिक्खो रंग माणो प्रभ परमेश्रा। गुर चरन धरो ध्यान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जाणो घर मिल्या प्रभ परमेश्रा।

✻ १३ माघ २००७ बिक्रमी दर्शन सिँघ लल्लीआं वाले दे गृह दिल्ली ✻

भगत वछल नाथ नरायण। भगत जन घर आए दर्शन पायण। बेमुख दर ते धक्के खायण। गुरसिख प्रीत गुरचरन लगायण। दुष्ट दुराचार प्रभ नष्ट करायण। सोहँ शब्द सति पुरख सद रसनी रसायण। कलिजुग प्रगटयो महाराज शेर सिँघ भगत तरायण। गुरसिक्खां दर प्रभ आप पछाता। कलिजुग मिल्या पुरख बिधाता। सुरत शब्द वड ज्ञान ज्ञाता। धन्न धन्न धन्न गुरसिख महाराज शेर सिँघ जिन आप पछाता। जोत सरूप प्रभ कलिजुग आया। निहकलंक दर गुरसिख माणयां। धन्न धंन गुरसिख चरन गुर सेव कमाणयां। कलिजुग तारया प्रभ पूरन सिख, हरि रंग जिस आत्म माणयां। कलिजुग तारे प्रभ अन्तरजामी। जोत जगावे गुर सच्चे धामी। जोत सरूप भगत वछल आप निहकामी। कलिजुग लिउ अवतार, महाराज शेर सिँघ जगत स्वामी। कलिजुग अचरज खेल आप प्रभ करता। दे दरस दुःख सभ हरता। बेमुख दर ते दुःख रहे भरता। जोत सरूप प्रगटयो महाराज शेर सिँघ कर्ता। जोत सरूप प्रभ जगत प्रकाश्यो। कलिजुग अंध्यार वेखे जगत तमास्यो। गुरसिख गुर चरन प्यार, सच शाह पाए अबिनाश्यो। धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ जिन तारे गुरसिख, जिउँ चन्दन प्रभास्यो। गुरसिख कलिजुग मुख उज्जयारा। हरि हरि हरि मिल्या जिन आप निरँकारा। घट घट घट रवे जगत भतारा। कलिजुग प्रगटयो निहकलंक अवतारा। सोहँ शब्द हरि भगत भण्डारा। आत्म प्रकाश मिटे देह अन्धयारा। दूख विनास जगे जोत निरँकारा। कलिजुग प्रगटयो महाराज शेर सिँघ गुर गुरसिख तारनहारा। दे दरस प्रभ गुरसिख तारया। कर किरपा कलिजुग पार उतारया। पतित पावन प्रभ दुःख भय भंजन, प्रगटयो जोत कृष्न मुरारया। सति सति सति जगत गुर तारे, सोहँ शब्द प्रभ रसन उचारया। वत्थ वत्थ वत्थ प्रभ गुरसिख झोली पाए, चरन आए जो निमस्कारया। हत्थ हत्थ हत्थ प्रभ गुरसिख हत्थ टिकाए, कलिजुग तारे अन्ध अंध्यारया। महाराज शेर सिँघ कल वरताए, कलिजुग मिटाए सोहँ शब्द बाण गुर मारया। सोहँ शब्द बाण गुर मारा। कुन्ट चार हाहाकारा। कोए ना जाणे प्रभ खेल अपारा। रसना शब्द चले जगत दो धारा। कलिजुग प्रगटयो नर नरायण कलिजुग अवतारा। जोत सरूप प्रभ जगत वरतारा। महाराज शेर सिँघ प्रगटयो कृष्न मुरारा। सो सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ दरस दिखाया। सो सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ जोत जगाया।

सो सुहाया थान, जिथ्थे निहकलंक हो आया। सो सुहाया थान, जिथ्थे गुरसिक्खां माण दवाया। सो सुहाया थान, जिथ्थे थिर घर वासी निज घर आसण लाया। सो सुहाया थान, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ जन भगत तराया। भगत जनां हरि दरस प्यासा। वर घर मिल्या प्रभ अबिनाशा। माण गंवाए जिउँ रिखी दुरबासा। जन तराए दे दर्शन दासन दासा। बेमुख खपाए होए नर्क निवासा। गुरसिख तराए चरन लगाए, प्रगटे आप सर्ब घट वासा। निहकलंक जग आए शेर सिँघ नां रखाए, झूठी सृष्ट जणाए आसा। शब्द चलाए बेमुख खपाए, जन भगत तराए जिन्हां गुरचरन तरासा। आप अपरम्पर सर्ब रिहा समाए, जिन जाणयां तिन नदरी आए। गुरसिख माण दवाए, दयो दरस मिटे आत्म तृप्तासा। जोत सरूप जोत प्रगटाए, बेमुखां प्रभ नज़र ना आए, गुरसिक्खां प्रभ सदा है पासा। गुरसिख सद सदा प्रभ वस्सया। कल लै अवतार गुरमुखां प्रभ दर्शन दस्सया। बेमुख सृष्ट ख्वार, प्रभ का रूप ना हिरदे वस्सया। महाराज शेर सिँघ दे भगत भण्डार, सोहँ शब्द रसन रस्सया। सोहँ शब्द जो जन रसना गायण। प्रभ का रूप निज महि पायण। झूठी काया सच जोत जगायण। कँवल नाभ बूंद अमृत मुख चवायण। खोल्ह त्रैकुटी प्रभ दरस दिखाया, निजानंद निज मांहि दरसायण। भगत जनां हरि आत्म प्रकाशया, अनहद शब्द मन वजायण। वज्जे धुन होवे धुन्कारा, जोत सरूप जोत दीपक विच देह जगायण। जोत सरूप जोत प्रकाशे, महाराज शेर सिँघ प्रगटयो भगत तरायण। भगत जनां हरि आप तराया। जुगो जुग प्रभ खेल रचाया। कलिजुग लै अवतार जगत ते पाई माया। सोहँ लाया बाण जिस जगत है घाया। सृष्ट भुलाई आप भगवान, जोत सरूप ना दरस दिखाया। गुरसिक्खां प्रभ दित्ता दान, सोहँ शब्द जगत वड्आया। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ कलिजुग लै अवतार, जुग चौथा जिस आण खपाया। कलिजुग प्रगट्या जोत सरूप प्रभ निहकलंक। सोहँ शब्द चार कुन्ट प्रभ वजाया डंक। दे निमाणयां माण, एक करे प्रभ राउ रंक। गुरसिख देवे माण, त्रेता विच भगत जिउँ जनक। धार खेल चतुर्भुज प्रभ आया, करो निमस्कार बार अनक। कलिजुग लै अवतार, महाराज शेर सिँघ प्रगटयो पुरी विच घनक। घणकपुरी घणशाम प्रभ आया। राउ रंक जिन आप कराया। तीन लोक प्रभ जोत जगाया। जोत जगाए भगत वछल तराए, गुरसिक्खां प्रभ दरस दिखाया। सति पुरख निरँजण प्रभ नरायण आया। मात पाताल आकाश वसे आप रघुराया। जोत सरूप जगत प्रकाशे, तीन लोक प्रभ जोत जगाया। विच पाताल प्रभ नैण मुँधार, बाशक शेश प्रभ सेज बणाया। विच आकाश प्रभ जोत प्रकाश, उनन्जा पवण सिर छत्र झुलाया। प्रगटयो मात, सोहँ शब्द गयो प्रभ थाप, महाराज शेर सिँघ इत रसना गाया। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, प्रभ पूरन परमेश्वर कलिजुग जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिथ्थे प्रभ भए सहाई। भिन्नी

रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, छड्ड खण्ड सच प्रभ कल जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, निहकलंक प्रभ सर्ब गुणतास, साची जोत सच घर आई। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ कलिजुग चरन लाग मिले वड्याई। गुरचरन दरस करे वडभागा। सोहँ शब्द मिले अनुरागा। रसना सिमरे जीव सोया जागा। महाराज शेर सिँघ जिन मिल्या, कलिजुग सोई पुरख वडभागा। कलिजुग प्रगटयो प्रभ अपरम्परा। सोहँ शब्द चलायो जगत निरंतरा। प्रभ तेज वखाए जगत जलाए जिउँ दीपक जोत जगंतरा। बेमुख खपाए डेर ना लाए, प्रभ अबिनाश आप भगवन्तरा। जन भगत तराए, जिस चरनीं लाए, साध संगत सिर हत्थ रखंतरा। चरन सीस झुकाए, नाम निधान गुर दर ते पाए, महाराज शेर सिँघ जोत सरूप सर्ब वरतंतरा। जोत सरूप प्रभ जग दाता। कलिजुग विरले गुरसिख पछाता। बेमुख नर्क निवास दे विधाता। महाराज शेर सिँघ कलिजुग मिल्या, गुरसिक्खां जग जीवन दाता। जुगो जुग प्रभ जगत अवतरया। सतिजुग सति होए मेहरवान हरि हरया। त्रेता जोत आधार आप रमरया। द्वापर प्रकाश प्रभ कृष्न मुररया। कलिजुग लै अवतार, शेर सिँघ नाउँ प्रभ धरया। छड्ड देह अपार, जोत सरूप हो प्रभ जगत सभ वरया। प्रभ आप समरथ, कलिजुग अग्न चलाया रथ, देवे भन्न आप जो घड़िआ। बेमुखां प्रभ पाए नत्थ, गुरसिक्खां देवे नाम वत्थ, कलिजुग तरे दरस जिन करया। महाराज शेर सिँघ आप समरथ, जिस दी महिंमा कथना अकथ्थ, कर दरस प्रभ

२२६ आसा वरया। गुरचरन आस जो जन लगावे। गुरचरन प्यास जीव रिदे समावे। हरि हरि हरि हरि आत्म रसन अघावे। २२६

०१ ०१

हरि जू बद्धा गुरसिख घर चल आवे। बेमुख कोई ठौहर ना पावे। कर दरस गुरसिख मन बिग्सावे। दे दरस प्रभ देवे तार, कलिजुग आण पैज रखावे। अन्त काल ना होए ख्वार। जोत सरूप प्रभ दरस दिखावे। गुरसिख होवे सच घर वास, जोत सरूप विच जोत मिलावे। भगत जनां प्रभ दासन दास, बांहों पकड़ धाम बैकुण्ठ पुचावे। गुरचरन लाग होवे रहिरास, महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे। कर दर्शन होए आत्म चानणा। हरि रंग हरि दर गुरसिक्खां मानणा। मन उमंग दे दरस प्रभ रंग सोहँ शब्द देवे दानणा। कलिजुग प्रगटयो लै अवतार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानणा। विष्नूं भगवान जोत निरँकारी। गुरसिख पैज प्रभ आण सवारी। देवे दरस घर आए सच शाहो दरबारी। कलिजुग पाया माण, जिन मिल्या महाराज शेर सिँघ आप निरँकारी। प्रगट भया कलिजुग निरँकारा। गुरसिक्खां प्रभ दरस अपारा। सतिजुग चले सोहँ शब्द न्यारा। महाराज शेर सिँघ देह तजाई, निहकलंक हो करे जगत वरतारा। सतिगुर तेग चलाई, सभ सृष्ट प्रभ आप भुलाई। कुन्ट चार हाहाकार मच जाई। बचन अमोल ना बिरथा जाई। निहकलंक हो प्रभ दे खपाई। बेमुखां लाए बाण, प्रभ दी जोत ना नज़री आई। महाराज शेर सिँघ अछल छल, छड्ड देह जोत प्रगटाई। प्रभ का कोए भेद ना जाणे। आदि अन्त ना कोए पछाणे। सोहँ

शब्द जगत प्रभ लाया बाणे। सृष्ट भुज्जे जिउँ भुज्जे भठयाले दाणे। मदि मासी प्रभ लाए ठिकाणे। कर दरस अपार, कलिजुग गुरसिख तर जाणे। जोत सरूप कर आकार, भगत जनां हरि दरस दिखाणे। निहकलंक लै अवतार, तख्तों लाहे राजे राणे। सोहँ शब्द जगत वरतार, राउ रंक करे प्रभ एक समाणे। मदि मास जो करे आहार, कलिजुग जीव प्रभ अन्त खपाणे। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन गुरचरन प्यार, होए निमाणे चले गुर के भाणे। महाराज शेर सिँघ भगत भण्डार, दे दरस कर देवे पार, भगत जनां सद विच समाणे। कर किरपा प्रभ अमृत बरखे, गुरसिक्खां दे मुख चवावे। सोहँ शब्द दे ज्ञान, हउमे ममता रोग गंवावे। देवे दरस आप प्रभ दान, खण्ड ब्रह्मण्ड सद विच समावे। गुणवन्त आप नरायण, गुरसिख जोत विच ललाट जगावे। थान सुहाए प्रभ जोत प्रगटाए, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए। सतिगुर देवे अमृत हरि भगत भण्डार। अन्तकाल मिले गुरसिक्खां गुरचरन द्वार। कलिजुग मिले तिन्हां वड्याई, जिन्हां मिले प्रभ सच भतारा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे मच्चे सृष्ट दुहाई, चार कुन्ट होवे धुंदूकारा। सभना दा माण गंवाई, सोहँ शब्द मिले वड्याई, सतिजुग लाए आप निरँकारा । अन्तकाल कल आप खपाए। निरहारी प्रभ जोत सरूप हो आए। कलिजुग लै अवतार, घनकपुरी प्रभ भाग लगाए । जामा ल्या धार जग आया दुष्ट सँघार, महाराज शेर सिँघ नाम रखाए । छड्डी देह आप गिरधार, जोत सरूप जगत वरतार, निहकलंक ना नज़री आए। ईश्वर जोत सर्ब प्रकाश, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश, धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिथ्थे प्रभ का वास, बेमुखां प्रभ नज़र ना आए। रसना सिमरे जो जन स्वास स्वास, सोहँ शब्द मिले गुणतास, महाराज शेर सिँघ रसन लिखाए। सोहँ शब्द लिखाए गुर पूरा। प्रभ का बचन ना होए अधूरा। सोहँ शब्द तन गुरसिख सरूरा। रसना गावे रिदे ध्यावे, कलिजुग मिले महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा। प्रभ का रूप अगम्म, जोत अपर अपारा। प्रभ का रूप अगम्म, जोत सरूप प्रभ जुगो जुग लै अवतारा। प्रभ का रूप अगम्म, जोत सरूप जीव जन्त आत्म देह जोत करे उज्जयारा। प्रभ का रूप गुरसिख कलिजुग कहीए धन्न धन्न धन्न, जिन्हां मिल्या महाराज शेर सिँघ प्रभ करतारा। मनी सिँघ धन्न धन्न धन्न। उन्नीं सौ उनत्तर बिक्रमी दस चेत गुर घर जिन लई शरन । ल्या शब्द आप दर जा के, देवे प्रभ दान तारे भगत जन। होई धुंनकार शब्द गुंजार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शब्द ल्या मन्न। दस चेत पिण्ड भंडाल। मनी सिँघ होया लाल गुलाल। हिरदे वस्सया प्रभ आप गोपाल। दीनां नाथ सन्तन कृपाल। महाराज शेर सिँघ भगत विशाल। ऐसी शब्द प्रभ जोत जगाई। मनी सिँघ प्रभ सोझी पाई। कर निमस्कार प्रभ जोत विच जोत मिलाई। सोहँ शब्द उचार, चार कुन्ट महाराज शेर सिँघ तेरी होई दुहाई। कलिजुग प्रगट्या नर नरायण शेर सिँघ अवतार। शब्द चलावे मनी सिँघ जोत

जगावे प्रभ अपर अपार। लिख्त करावे आपणा आप छुपावे, ऐसी खेल करे अपार। मनी सिँघ माण दिवावे, बचन सति करावे जोत सरूप दे करतार। मनी सिँघ प्रभ बचन लिखाया। साल अठतीवें प्रभ पूरा कराया। अन्तकाल काल प्रभ करता, कल्लू काल आप खपाया। बचन लिखाया सति सति वरताया, दो हज़ार सत्त बिक्रमी प्रभ अन्तिम खेल रचाया। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ, विछड़यां जिन आण मिलाया। गुरप्रसादि गुर दर सूज्झया। गुरप्रसादि गुर पूरा बूज्झया। गुरप्रसादि गुरसिख गुर दर झूज्जया। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ सोहँ देवे दान रसना गुरसिख लूज्झया।

सोहँ शब्द जगत उज्जयारा। सोहँ शब्द हरि देवे भगत भण्डारा। सोहँ शब्द रंग रिदे मुरारा। सोहँ शब्द करे प्रभ जोत चमत्कारा। सोहँ शब्द कल पावे पुरख अपारा। सोहँ शब्द सच्चे सिउँ मिलावणहारा। सोहँ शब्द लिखावे महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारा। सोहँ शब्द दे वड्याई, सर्ब कीनो नासा। सोहँ शब्द प्रभ जोत जगाई, जोत सरूप सद है पासा। सोहँ शब्द दीपक देह जगाई, ईश्‍र जोत देह विच वासा। महाराज शेर सिँघ रसना सिख गाई, अन्तकाल ना होए निरासा।

२३१
०१

२३१
०१

❋ २३ फग्गण २००७ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ❋

कलिजुग प्रगटयो जोत सरूप जोत आकारी। जोत सरूप सर्ब प्रभ भूप, जोत जगत लाए चिंगारी। महिंमा अनूप साचा प्रभ सच सरूप, शब्द चलाए खण्डा दो धारी। दुष्ट खपाए जोत निरँजण, हरीजनां प्रभ पैज संवारी। सोहँ शब्द बेमुखां खावे जोत जमदूत दूर कर गुरसिक्खां प्रभ पैज संवारी। मनमुख डोबे माया ममता विच अन्ध कूप, गुरसिख रसना राम मुरारी। महाराज शेर सिँघ एक सरूप, एक जोत जगत करे ख्वारी। जुग चौथा कल कुलवन्ता। कुकर्म कर्म रिदे प्रगटावे प्रभ भगवन्ता। शब्द चलावे जगत जलावे, सोहँ शब्द कहर वरतंता। नज़र ना आवे चार कूट, चार दिशा जोत सरूप प्रभ जोत अग्न लगावे, सर्ब निरंतर सर्ब थांईं रहंता। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, गुरसिक्खां मन सदा रसन्ता। सर्ब निवासी सर्ब घट वस्सया। कलिजुग आवे भेत प्रभ दस्सया। बेमुख दर ते वांग सुआन है नस्सया। बेमुख दर ते नज़र ना आवे रात जोत चांद जिउँ मस्सया। गुरसिक्खां सद सद बलिहार, महाराज शेर सिँघ जिन हिरदे वस्सया। हिरदे वसे प्रभ कृपाला। जगावे जोत देह दीपक जिउँ जोत ज्वाला। गुरसिख वड्डा, सोहँ शब्द वसे देह सच्ची धर्मसाला। महाराज शेर सिँघ रिदे

ध्याया, घर दर पाया प्रभ गोपाला। प्रभ पाया प्रभ दर आ के। रोग गंवाया नैण दरसा के। रिदे वसाया रसना गा के। महाराज शेर सिँघ प्रगटे साध संगत विच आ के। साध संगत विच एह वड्याई। प्रगट करे जोत रघुराई। तीन लोक छड्ड आए सर्ब सुखदाई। हाहाकार होए जग अंदर, गुरसिख रसना सोहँ गाई। दुराचार प्रभ नर्क निवासे, गुरसिख घर जै जै जैकार कराई। सच्चा शाहो सच शाबासे, महाराज शेर सिँघ कल होए सहाई। हरि हरि प्रभ आया हरि निरँकारा। खेल रचाए नज़र ना आए, करे ख्वार सर्ब संसारा। मिट ना जाए सर्ब रहाए, रंग रवे रंग करतारा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, करे जोत जगत वरतारा। जगत जोत जोत जलावे। अन्तिम खेल करे प्रभ करता, चंड प्रचण्ड जगत जलावे। मदि मासी दुःख कलिजुग भरता, अन्तकाल प्रभ नज़र ना आवे। गुरसिख गुरचरन रहिरास, करे दरस जम डण्ड ना खावे। महाराज शेर सिँघ करे प्रकाश, जोत सरूप विच जोत मिलावे। जोत प्रभ दी जगत जलन्ता। करे खेल प्रभ भगवन्ता। जल थल थल जल करन्ता। महाराज शेर सिँघ सर्ब थाएँ रहन्ता। सर्ब सृष्ट जीव जन्त कलिजुग भृष्ट, गुरसिख उज्जल सोहँ शब्द रसन रसन्ता। आप तारे जिउँ गुर वशिष्ट, दे वड्याई साधन सन्ता। वड्याई वड्डी वड प्रभ नाउँ। गुर दर आईए पाईए दर घर ठाउँ। बेमुखां दर मिले ना थाउँ। भगतन तारे पकड़ बांहों। दुष्ट सँघारे बाण साचा नाउँ। नाम बाण जगत सँघारे। चक्र सुदर्शन रसना मारे, प्रभ जोत जलंता। सर्ब सृष्ट करे ख्वार, जीव जन्त मुख मोड़ भगवन्ता। लै अवतार कल कर ख्वार, गुरमुख तार महाराज शेर सिँघ सति सति सति वरन्ता। सति सति वरताए प्रभ खेल न्यारा। कोए ना मेटे प्रभ खेल अपारा। वक्त गंवाए फिर हत्थ ना आए नज़र ना आए प्रभ सच दुआरा। जिन शरन लगाए सिर हत्थ टिकाए, देवे दरस अगम्म अपारा। जोत जगाए आत्म ज्ञान दिवाए सति सतिगुर दुआरा। नैण दरसाए गुरसिख वड वडभागी पाए, महाराज शेर सिँघ चरन सहारा। चरन लगाए प्रभ धरनी धर। प्रगटे जोत गुरसिख घर। साध संगत पाए माण निहकलंक प्रभ आसा वर। शब्द चलाए महाराज शेर सिँघ सोहँ खोलू देवे प्रभ दसवां दर। नर अवतार निरँकार प्रभ होया। कलू काल गुरदर ते रोया । सतिजुग सच सच शब्द सोहँ होया। महाराज शेर सिँघ खेल रचाए ना जाणे कोया। सतिजुग वरते सोहँ ज्ञाना। सतिजुग वरते सोहँ नाम निधाना। सतिजुग वरते दुःख भंजन नाउँ प्रभ सुजाना। सतिजुग वरताए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। महाराज शेर सिँघ जुग सति वरताए। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द चलाए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अख्वाए। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप जगत पति आए। महाराज शेर सिँघ निमाणयां दे माण, सच तख्त बहाए। महाराज शेर सिँघ गुण निधान चार वरन जिस इक्क कराए। महाराज शेर सिँघ तोड़े अभिमान, राउ रंक इक्क हो जाए। महाराज

शेर सिँघ सर्ब वरतमान, जीव जन्त दे विच समाए। महाराज शेर सिँघ शब्द निरबाण, मदि मासी नर्क निवास दिवाए। महाराज शेर सिँघ गुरसिख सचखण्ड वसाए। महाराज शेर सिँघ कर दरस होए धरवास, जन सिमरे प्रभ नज़री आए। महाराज शेर सिँघ सति सति सतिजुग प्रकाश, कर दरस अनन्द चित गुरसिख हो जाए। महाराज शेर सिँघ जपाए सोहँ स्वास सतिजुग साचा सच वरताए। सति सच सच सति जीव हिरदे वसे। सोहँ शब्द ज्ञान गुर दस्से। बेमुख गुर दर जायण नस्से। गुरसिख प्रभ हिरदे वसे। महाराज शेर सिँघ करे प्रकाश, जगत जोत जिउँ रवि सस्से। सतिजुग भगत प्रभ आप प्रगटावे। जोत सरूप प्रभ नज़री आवे। दर्शन कर गुरसिख मन तृप्तावे। होए अलोप प्रभ नज़र ना आवे। दोए जोड़ करो अरदास, महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे। गुरसिख पुकार गुर दरबारे। गुरसिख घर आए प्रभ पैज संवारे। निहकलंक किरपा धर चरन लाए पार उतारे। कलिजुग हरता महाराज शेर सिँघ गुरसिख वांग कँवल फुल्ल तारे। जगत त्यागी गुरसिख वडभागी। रसना नाउँ रसन रसायण, प्रभ दरस प्रीत मन लागी। दर आए ना कोए गुरसिख ना होए मासी शराबी।

२३३
०१

❊ २६ फग्गण २००७ बिक्रमी जेठूवाल ❊

सतिगुर प्रगटयो गहर गम्भीर। कलिजुग मारे शब्द प्रभ तीर। जल थल थल जल वहाए नीर। पूत मात छुडाए सीर। मात पिता भैण छड्डे वीर। भाणा कलिजुग सतिगुर वरते पए जगत वहीर। बिन प्रभ कोए ना रक्खे धीर । गुरचरन लाग आत्म शांत होए सरीर। कलिजुग प्रगटयो महाराज शेर सिँघ वड पीरां पीर। वड पीर अहिमद औलीए अग्यास मारे। चार यारां संग मुहम्मद दर रहे पुकारे। चार चक्क चलाया सोहँ खण्डा दो धारे। महाराज शेर सिँघ जगत भुलाया, दे दरस गुरसिख तारे। गुरसिक्खां घर गुर वडभागा। सृष्ट सुलाई गुरसिख जागा। आत्म निर्मल ना लागे दाग़ा। महाराज शेर सिँघ प्रगटयो चरन ना आवे कल जीव अभागा। ईश्र जोत सद नूर नुरानी। शब्द बाण गुर लाए ना कोए रहे कुरानी। दूत दुष्ट खपाए अन्त कराए सर्ब मुस्लमानी। अंज़ील अजराईल कर ईसा मूसा कल आवे हानी। पकड़ ल्याए प्रभ चरन जोत भगत भवानी। अठ्ठ सठ तीर्थ भरम चुकायण, प्रगट्या महाराज शेर सिँघ जगत निहकामी। सभन माण गंवाए सोहँ शब्द चलाया। सर्ब सृष्ट निवाए, आपणा आप प्रभ आप वड्आया। दुष्टां दे खपाए, जन भगत तराए, दे ज्ञान नाम जपाया।

कोए ना पाए थान, बेमुखां प्रभ धक्का लाया। जिन्ां प्रभ होए सहाए, अन्तकाल चरन मिलाया। आत्म रंग मजीठ चढ़ाए, गुरसिख प्रभ दर्शन पाया। साध संगत प्रभ विच रलाए, जन चरनीं आए जिस सीस झुकाया। कलिजुग उतरे पार, सतिजुग साचा तख्त रचाया। गुरसिक्खां प्रभ दे माण, सचखण्ड जोत सरूप बहाया। सभ किछ वरते जाणी जाण, बेमुखां भेत ना पाया। देवे माण आप निमाणयां, प्रगट हो सिर हत्थ टिकाया। जाउ विटहु कुरबान, जिन्ां सोहँ नाम ध्याया। सुहाया थान कलिजुग, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ आसण लाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर सति वड भूपा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे जोत सरूपा । करे चलत अपर अपार, महिमा प्रभ अचल अनूपा। नज़र ना आए आप करतार, जित रेख रंग ना कोए रूपा । जोत सरूप विच सिख प्रकाशयो, सदा अनन्द चित प्रभ स्वच्छ सरूपा। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ तारे सिख विच कलिजुग अन्ध कूपा। बैठा अडोल प्रभ आप निरवैर। जोत सरूप जलावे होए जगत विच कहर। बेमुख पकड़ पछाड़े सोहँ शब्द प्रभ देवे जहर। गुरसिख तारे आप दुःख हरता, पूजो चरन कँवल ना जानो पैर।

❋ २७ फग्गण २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ❋

सतिगुर प्रगटयो राजन राजा। गुरसिख घर आए संवारन काजा। अनहद शब्द वजाए वाजा। शरन पड़े दी राखे प्रभ लाजा। महाराज शेर सिँघ प्रगट्या सृष्ट जिन साजन साजा। सृष्ट उपाई उपावणहारे। जीव जन्त विच जल थल थारे। हिरदे वसे प्रभ अपर अपारे। आत्म जोत विच देह न्यारे। किरपा कर गुरसिख कलिजुग प्रभ तारे। बेमुख डोबे विच मंझधारे। सृष्ट लाचार होए ख्वार चार कुन्ट होए हाहाकार महाराज शेर सिँघ जोत अपार प्रगटे करतारे। गुरसिख सोहन गुरचरन दुआरे। गुरचरन चरन कँवल। निमस्कार निमस्कार निमस्कार कर खुल्े कँवल। धन्न सुहाई धन्न सुहाई धन्न सुहाई गुरचरन छूहे जिस धवल। गुरसिख वड्याई गुरसिख वड्याइ ॅ गुरसिख वड्याई अमृत बूंद वसे जिस कँवल। महाराज शेर सिँघ तीन लोक रहाई, पाताल आकाश धार जोत बैठा उप्पर धवल। जोत सरूप होवे देह न्यारा। गुरसिख विच जोत सरूप प्रवेशया। कलिजुग चलत करे अपार, बिन गुरसिख प्रभ किन्ने ना देख्या। गुरसिख निउँ चरन विचार, सोहँ शब्द विच देह परवेशया। मानस जन्म कल गए सुधार, निहकलंक कर सदा आदेस्सया। महाराज शेर सिँघ जिस नाउँ उचारा। महाराज शेर सिँघ जस नाउँ निहकलंक नर नरायण जगत खपाउ हाहाकार मचायण। वक्त विहाउ नज़र ना आउ, भूली सृष्ट पा वैण। महाराज

शेर सिँघ जोत प्रगटाउ, सोहँ शब्द चलाउ, चरन लगाउ वाली हिन्दवायण। चरन लगाए दरस दिखाए एका जिया। सृष्ट चुकाए रसना सोहँ शब्द चलाए ऐसा दान गुरसिख प्रभ दिया। जोत सरूप हो दरस दिखाए। जमन किनारे सुख आसण सिँघ नज़री आए। हिन्द वाली प्रभ बाण शब्द मारे। कर दरस चरन धूढ़ हो जावे। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, शेर प्रभ होए जामा कृष्न दरस दिखावे। कर दरस होए वैरागी। वज्जे बाण शब्द होवे तख्त त्यागी। कर दरस आत्मा सोई जागी। करे दुहाई कोई मेले पुरख वडभागी। शब्द सुणाए धुन वजाए, महाराज शेर सिँघ सदा अनरागी । शब्द धुन हिरदा हुलसावे। जांह जांह देखे तहां तहां नज़री आवे। शब्द सरूपी भेद खुलावे। कब राम कृष्न कब महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे। निहकलंक आप अपरम्पर, आपणा भेव प्रभ आप जणावे। होवे वड राजा जिस सच शाहो पछाता। कर्म लेख प्रभ लिखे बिधाता। कलिजुग प्रगटयो जगत प्रभ दाता। गुरसिख कोई गुरमुख ज्ञाता। दुनियां छोड संग गुरचरन नाता। शब्द अमोड़ गुर दर ना पछाता। बन्दी तोड़ प्रगट्या सर्ब रंग राता। महाराज शेर सिँघ जगजीवण दाता। जोत सरूप जोत आकारा। प्रभ वड भूप जोत कर करे पसारा। गुरसंगत बैठ चलावे शब्द दो धारा। बेमुखां पकड़ पछाड़ा। झूठी सृष्ट चबाई दाढ़ा। सोहँ नाम रंग गुरसिख चाढ़ा। महाराज शेर सिँघ चरन कर निमस्कारा। पापी लँघे पाप पहाडा। पापी पतित पवित गुरचरन होए अधीन चरन सीस जिन धरना। अन्तकाल बख्शे सद बख्शीश, तोड़े बंध प्रभ जम्मणा मरना। महाराज शेर सिँघ स्वच्छ सरूप, गुरसिख चरन लाग कलिजुग तरना। कलिजुग करे जगत अन्धयारा, नज़र ना आवे जगत जीव करे किनारा। जीव बुलाए नज़र ना आए, कलिजुग प्रगट्या प्रभ धरनी धारा। शब्द लिखाए राउ रंक बणाए, सचखण्ड बैठा आप निरँकारा। महाराज शेर सिँघ धीर धराए, सति सति सति वरताए, गुर पूरा गुरसिख तारनहारा। सतिगुर साचा शाहो, जित नित भरे भण्डारया। सतिगुर साचा शाहो, सृष्ट जोत करे आकारया। सतिगुर साचा शाहो, गुरसिक्खां देवे आत्म विचारया। सतिगुर साचा शाहो, बेमुखां बाण सोहँ मारया। सतिगुर साचा शाहो, निहकलंक होवे जग मथे जिउँ मथन मधाणयां। महाराज शेर सिँघ अगम्म अथाह सति वरतावे, करे इक्क रंकां राणयां। एक जोत इक्क प्रभ का रूप। गुरसिख साचा विच प्रभ वसे अनूप। बेमुखां नज़र ना आवे सच शाहो वड भूप। महाराज शेर सिँघ बांहों पकड़ तराए, गुरसिख विच अन्ध कूप। अन्ध कूप जगत अन्धयारा। कल प्रगट्या निहकलंक अवतारा । गुरसिक्खां प्रभ भय भंजन आत्म देवे जोत आधारा। गुरसिख सदा दर मंगण, देवे दरस प्रभ गिरधारा। महाराज शेर सिँघ त्रैलोकी नंदन, चरन लगाए कर सच विचारा। आत्म विचार प्रभ की साची। जूठी रसना जगत की काची। भगतां नरायण रिदे नाउँ वसाची। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे गुरसिख अभिलाशी। कर

दरस आत्म तृप्तावे। कर दरस झूठी काया वांग चन्दन महिकावे। कर दरस देह दीपक विच प्रभ जोत जगावे। कर दरस जोत सरूप प्रभ दर्शन पावे। कर दरस सोहँ शब्द रसना गावे। कर दरस हउमे ममता रोग गंवावे। कर दरस अन्तकाल जम डण्ड ना खावे। कर दरस पुरी सच गुरसिख रहि जावे। कर दरस ईश्र जोत विच जोत मिल जावे। कर दरस हो विस्माद विस्मादे विस्माद समावे। महाराज शेर सिँघ शरन पड़े दी लाज रखावे। रक्खे लाज प्रभ भगवन्ता। सोहँ शब्द चलावे जगत वरतन्ता। करनहार समरथ प्रभ वसे सर्ब जीव जन्ता। बेमुखां पाई नत्थ, रक्खे लाज सर्ब साध सन्ता। आत्म मिले गुर दर वत्थ, सोहँ शब्द रत्न रतन्ता। महाराज शेर सिँघ अकथ्थना अकथ्थ, जोत जगत वरतन्ता। ईश्र जोत सर्ब प्रकाशे। जीव जन्त सर्ब जोत भरवासे। बिन प्रभ पूरन करे ना कोए बन्द खुलासे। आप अतीत प्रभ भगवन्ता। सृष्ट सबाई सदा विनासे। जोत सरूप आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ प्रभ अबिनाशे। प्रभ अबिनाशी पूरा पाया। चरन लाग दूख रोग मिटाया। धन्न धन्न गुरसिख भाग, चरन आए जिस सीस झुकाया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप सदा है जाग, कलिजुग प्रगट जगत सुलाया।

❊ २६ फग्गण २००७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

पुरखे हो जिस देवे उत्तम निगम विचारे। सच्ची जोत दित्ती प्रभ रक्ख, जिथ्थों खिच्ची आप करतारे। महाराज शेर सिँघ करो निमस्कार दोए जोड़ हत्थ, खाली भरे जिस फेर भण्डारे। कलिजुग सच्चा प्रभ भण्डारी। सोहँ देवे जीव नाम ख़ुमारी। बेमुखां बाण सोहँ कटारी। महाराज शेर सिँघ सरन पड़े दी पैज संवारी। शरन पड़े प्रभ मिल्या हरि बुला। देवे बख्श गुरसिख प्रभ अर भुला। चार कुन्ट पै जावे पंज जेठ कुर बला। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां टारे सर बुला। हुक्म अगम्म वरते वरतणहारा। शब्द चलाए जगत खपाए कोई ना मेटणहारा। सरन पड़े दी लाज रखाए, गुरसिख मोड़े विच परिवारा। हत्थो हत्थ ना आए, ना दीसे जोत निरँकारा। निज घर आ वसे प्रभ परमेश्र, अमृत बरखे जिउँ जल धारा। महाराज शेर सिँघ आप वरभंडन, देवे दान गुरसिख जोत अपारा। देह जोत प्रभ मेल करा के। आप चल्लया भेस वटा के। नज़र ना आवे जोती जोत जोत जोत जोत विच ललाट जगा के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, गुरसिख चल्लया साध संगत दी झोली पा के। साध संगत प्रभ सदा अनन्द। साध संगत प्रगटावे सिख पूरन चन्द। साध संगत तृप्तावे आत्म अग्न होई मन्द। चरन लाग जीउ भुल्ल बख्शावे, महाराज शेर सिँघ तोड़े बन्दी बन्द। मेरा रूप अगम्म, करे चँवर सरन पवण उनन्जा। मेरा

२३६
०१

रूप अगम्म, कलिजुग देह रखाई साल बवंजा। मेरा रूप अगम्म, रक्खे पति नैण मुँधारी, जगत गुर आया। बाशक सेज जिस तख्त रचाया। लच्छमी झस्से चरन, प्रभ पाई माया। मन करे हँकार, देह सुख मैं प्रभ सुलाया। ईश्र सदा है जाग, विच आलस ना कदे आया। कलिजुग आया कर जोत प्रकाश, घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। मनी सिँघ होए शाबाश, सतिगुर पूरा जिन प्रगटाया। साध संगत दे धरवास, गुर चरन आए जिस सीस झुकाया। कलिजुग उज्जल जिउँ चन्दन प्रभास, गुरसिख नाउँ मनी सिँघ सुणाया। लाग चरन प्रगटे महाराज शेर सिँघ जामा धार आपणा आप छुपाया। बेमुखां तों प्रभ मुख छुपा के। रचना रची जगत विच आ के। अगम्म अगोचर प्रभ बैठा आसण ला के। महाराज शेर सिँघ जुग चौथे आया, निहकलंक जोत प्रगटा के। जोत प्रगटाए जोत निरँजण, नर नरायण आपणा आप छुपाए। सृष्ट भृष्ट गुरसिक्खां दे साची दृष्ट, सोहँ नाम जपाए। महाराज शेर सिँघ सच्चा इष्ट, जुग चार आपणा तेज वखाए। प्रभ का इष्ट साचा नूर। प्रभ पावे जिउँ भगत वशिष्ट, राम चन्द लै चरन धूढ़। गुरसिक्खां मन साची दृष्ट, प्रगट्या प्रभ आसा पूर। महाराज शेर सिँघ निज घर वसे, सिख ना जाणे देह तों दूर। गुरसिख देह प्रभ की जोता। जो किछ करे आप प्रभ जगत की जोता। थान निथावयां मन मनोता। गुरचरन लाग दुरमति पाप मन का धोता। सोहँ शब्द मिले वड ज्ञान, निहकलंक जोत सरूप सदा होता। वडमुलड़ा जगत प्रनाओ, जिस सिमरत मिले सच थाउँ। प्रभ परमेश्वर जग चरनीं पाओ। सदा अनन्द निज मांहि वसाओ। झिरना झिरे निझरों, अमृत बूंद कँवल में पाओ। होए निजानंद मन तृपासे, चिन्ता चिखा अग्न बुझाओ। कर विचार जाउ घर साचे, जिथ्थे बैठा अगम्म अथाहो। हुक्म जोत जगत सभ नाचे, महाराज शेर सिँघ मिल साचे लेख लिखाओ। लिक्खया लेख प्रभ मेटणहारा। डुब्बदे देवे तार, गुरसिख तारनहारा। जिया दे आधार, सोहँ नाम दे प्यारा। जन्म जाए सुधार, चरन आए करे निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ दुत्तर तार, अमृत देवे भगत भण्डारा।

बिन गुर सिख मुरझाणा जिउ जल मीना, नज़री नज़र निहाल कर रंग राते रंग फेर लगाया। वड पुरख आप प्रभ कर्त्ता, साचा नेंह संग गुरसिख लाया। महाराज शेर सिँघ निँधन आए कलिजुग तराया। कलिजुग आया प्रभ इक्क रंगा। जगत खपाया शब्द रूप कराया दंगा। झूठी देह जगत भन्न वखाया, जिउँ काची वंगा। महाराज शेर सिँघ सिर छत्र झुलाया, प्रगटे आप प्रभ सूरा सरबंगा। सर्ब वड दाता, सर्ब कला का आप पछाता। दे दरस करे आप प्रभ ज्ञान ज्ञाता। हिरदे धरे जोत दीपक जोत जगाता। बिन सिख बूझे ना कोई होर, आपणा भेत प्रभ आप पछाता। महाराज शेर सिँघ ना

लाए देर, छिन भंगर सर्ब सुख दाता। आदि अन्त सदा सुखदाई। भगत जनां चरन संग बण आई। प्रभ पूरा समरथ अकथ्थ, रसना महिंमा कथन ना जाई। उत्तम दे सोहँ वत्थ, साचा शब्द गुर घर राह दिखाई। मिले आप प्रभ समरथ, भाउ भरम दे सिख चुकाई। बेमुखां पाई नत्थ, चार कुन्ट पै जाए दुहाई। महाराज शेर सिँघ सोहँ चला अग्न रथ, दुष्ट दुराचार निन्दक दे खपाई। मानस जन्म लै जिस सतिगुर निन्दया, सतिजुग पार प्रभ करे अग्गे चले जीव ना बिन्दया। निमस्कार चरन लाग जो करे, पावे फल जो मन चिन्दया। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे बेमुख खपावे, वगाए उलटी सिन्धया। प्रगटे आप प्रभ दहिंदा। सचखण्ड करे जो प्रभ निंदा। बेमुख हरे आपणी बिन्दा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग सच शब्द लिखंदा। सतिगुर साचा शब्द चलावे। गुर घर कोई निन्दक रहण ना पावे। दर दर फिरे जीव बिल्लावे। बिन गुर पूरे कौण पार लँघावे। भुल्ली सृष्ट अन्त खेह हो जावे। दे दरस अपार, गुरसिक्खां गुर पार करावे। कलिजुग ना आवे हार, साचा प्रभ साचा माण दिवाए। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, निहकलंक नाउँ रखावे। जोत सरूप अवतार जग धरया। प्रगट जोत भन्ने प्रभ सूरा, भाण्डा देह जो प्रभ घड़िआ। सर्ब समरथ सतिगुर पूरा, कलिजुग आए जगत जिस वरया। महाराज शेर सिँघ सभ तेरी वत्थ, जोत सरूप जोत विच जगत देह धरया। सतिजुग सति सति सति प्रभ वरते, सोहँ शब्द चले अपारा। सतिजुग सति सति प्रभ वरते, जीव होए नाम अधारा। सतिजुग सति सति सति प्रभ वरते, हिरदे वरते सर्ब निरँकारा। महाराज शेर सिँघ शब्द साचा रथ, कलिजुग पार उतारनहारा। कलिजुग पार उतारे, नाउँ जपा के। रसना शब्द उचारे, जन चरन सीस झुका के। देवे दरस आप करतारे, विच्चों हउमे रोग गंवा के। महाराज शेर सिँघ जगत ललकारे, प्रगट जोत बैठा घर आ के। गुरमुख होए प्रभ शब्द अधीन। शब्द मिलावे प्रभ परबीन। निजानंद रस चवावे, आत्म तृप्तावे जिउँ जल मीन। महाराज शेर सिँघ चुरासी गेड़ कटावे, सिख जोत जोत होए लीन। वस्तू जोत जगत अपारा। सचखण्ड करे जोत आकारा। बिन बाती बिन तेल होए सर्ब उज्जयारा। एक सरूप होए प्रभ बैठा आप एकँकारा। महाराज शेर सिँघ चरन दुआरा। सचखण्ड होए प्रभ जोत रुशनाई। प्रभ जोत सरूप जोती जोत प्रभ सृष्ट उपाई। हरि हरि हरि हरिजू प्रभ वस्सया, जोत सरूप दीपक सृष्ट जगाई। आपणा भेत जीव ना दस्सया, विच देह प्रभ बैठा मुख छुपाई। भगत जनां प्रभ हिरदे वस्सया। रसना गाए महाराज शेर सिँघ नज़री आए, साचा राह प्रभ पूरे दस्सया। साचा मार्ग सोहँ नाउँ, गुर दर पावे माण जिन रसना गाओ, दरगाह होवे परवान जिन रिदे वस्सया। महाराज शेर सिँघ मारे बाण, बेमुख दर ते जाए नस्सया।

❊ पहली चेत २००८ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ❊

वड वड भाग तिन्हां गुरसिक्खां, जिन्हां सतिगुर पाया। राग राग राग मन तिन्हां गुरमुखां, सोहँ शब्द जिन्हां रसना गाया। दाग दाग मनमुखां, जिन्हां साचा नाम भुलाया। गुरचरन लाग मिटे सभ भुक्खा, नैण दरस तृप्ताया। साध संगत विच प्रभ का वास, प्रगट हो के दरस दिखाया। वडभागी बैठे सतिगुर पास, निहकलंक होए सदा सहाया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, चेत सुहंदा जिस बणाया। चड़्या चेत गुरसिक्खां मन चेतन्ना। मिल्या प्रभ गुरसिक्खां विच कोई भेत ना। लग्गे चरन तारे सभ वेखे आप रंग एकना। भुल्ल ना जाओ झब्ब, रक्खो आस चरन गुर टेकना। कलिजुग तारे सभ जन महाराज शेर सिँघ प्रभ बिबेकना। शब्द चले गुर का शब्दालू। शब्द रूप प्रगटे प्रभ स्वच्छ सरूप कृपालू। गुरसिख मन सद भटकदे, देवे दरस प्रभ भगत वसालू। बेमुख गुर दर कदे ना अटकदे, रक्खण भय सिँघ जिउँ भालू। सोहँ शब्द संग गुरमुख लटकदे, महाराज शेर सिँघ खण्ड सच बहालू। सचखण्ड प्रभ सदा वास। निर्मल जोत सदा प्रकाश। भगत जन सोहन गुरचरन पास। रसना सिमरन सोहँ स्वास स्वास। कलिजुग देवे तार, महाराज शेर सिँघ गुरसिख ना करे निरास। गुरसिक्खां देवे प्रभ साचा धामा। कलिजुग प्रगटे निहकलंक है जामा। भेत किसे ना पाया, द्वापर कृष्न मुरार त्रेता प्रभ रामा। कलिजुग सोहँ शब्द विचार, महाराज शेर सिँघ दित्ता गुरसिक्खां नामा। नाम मिले रसना गुण गाए। अनन्द बिनोदी प्रभ छड्ड बैकुण्ठ गुरसिख घर आए। जुग चौथे जुग संचिआ, गुरसिख चले गुर भाए। महाराज शेर सिँघ करो निमस्कार, चेत सुहंदा प्रभ दरस दिखाए। सोहँ शब्द जो रसना गावे। तन मन्दर दीपक जोत जगावे। जगन्नाथ गोपाल प्रभ नज़री आवे। सारंगधर भगवान बीठला जीव दा भेत खुल्हावे। धुन धुन्कार शब्द गुंजार, सुन्न समाध खोल्ह वखावे। जोत आकार आप निरँकार, विच देह दे नज़री आवे। हउमे मार, महाराज शेर सिँघ सच मार्ग लावे। साचा मार्ग सतिजुग सोहँ दस्सया। तरया हरया जिन प्रभ हिरदे वस्सया। भंनिआ घड़िआ जोत सरूप विच्चों सभ नस्सया। महाराज शेर सिँघ नाउँ जग धरया, सोहँ शब्द रसना रस्सया। सोहँ सिमरन साधन सन्त। सोहँ देवे प्रभ साचा मंत। कलिजुग उधरे सर्ब जीव जन्त। रसना सिमरे प्रभ मिले भगवन्त। आदि जुगादि आप प्रभ पूरा, कोए ना जाणे प्रभ साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाया, बेमुखां कल करे भस्मंत। कलिजुग सतिगुर भरम भुलाया। झूठी माया विच जगत पसाया। प्रगट जोत आ दरस दिखाया। कर खेल अपार चतुर्भुज कहाया। राउ रंक कर इक्क सार, राणयां प्रभ माण गंवाया। रसना शब्द उचार, बेमुखां प्रभ है बाण लाया। कलिजुग होए ख्वार, नर्क निवास दवाया। गुरसिक्खां सद जाओ बलिहार, जिन्हां महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। दरस दिखावे प्रभ

किरपा निध। चरन लगावे गुरसिख कित बिध। बेमुख पकड़ शब्द रूप करे प्रभ सिद । महाराज शेर सिँघ शेर हो आया, सृष्ट सबाई होई गिद्द। जित कारन जामा धारया, सो कारज प्रभ करना। कलिजुग पासा हारया, गुर साचे नाउँ सतिजुग धरना। सतिजुग मिले आप बनवारया, गुरसिक्खां होए जगत ना मरना। बेमुखां नर्क निवारया, मानस जन्म जगत विच हरना । त्रैलोकी सिख संवारया, अन्तकाल प्रभ दर्शन करना। खट्ट लाहा सिख वणजारया, प्रगट भए प्रभ धरनी धरना। जन्म जूए हारया, जिन्हां सोहँ रसन ना उचरना। लक्ख चुरासी गेड़ निवारया, महाराज शेर सिँघ गुरसिख जोत सरूप सिख है करना। जोत सरूप भगत जन होए। आवण जाण जाण आवण प्रभ दोए खोए। जोत प्रगटे प्रभ जीव जोत अन्तिम जोत एक प्रभ होए। महाराज शेर सिँघ कल वड दाता, दूसर होर ना कोए। साचा शब्द गुर सच कहणा। सोहँ शब्द बिन कोई जगत ना रहणा। भाणा प्रभ का सभ ने सहिणा। उलटी धार जगत है वहिणा । बेमुख होए ख्वार ना सतिगुर पेखे नैणा। महाराज शेर सिँघ सच है अवतार, साचा नाउँ रसना लैणा। साचा नाम मेरा अमोघ। दुखीए दर आयण प्रभ कटे देह रोग। विछड़ कदे ना जायण, जिन्हां लिक्खया प्रभ संजोग। प्रभ दरस सदा दर पायण, आत्म होए ना कदे विजोग। गुरसिख मन तृप्तायण, महाराज शेर सिँघ देवे शब्द साची खोज। जित मन भाउ प्रभ दरसना। सोहँ रसना गाउ, अमृत मेघ हिरदे प्रभ बरसणा। राम सरूप राम हो जाओ, निजानंद प्रभ निज घर दस्सणा। महाराज शेर सिँघ विच जोत मिलाउ, भगत जनां प्रभ रिदे वसणा। रिदे प्रकाश करे प्रभ भगता । जन्म सुधार गुरचरन लाग एह जग की जुगता। एकँकार निरबकार प्रभ साचा मुक्ती मुक्ता। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, गुरसिक्खां देवे साची सुरता। साची सुरत रिदे गुर ज्ञाना। प्रभ की मूर्त जीव धरे ध्याना। साचा शब्द गुरसिख सच पछाणा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन्हां मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। विष्नूं भगवान प्रगटे प्रभ आप। विष्नूं वंसी वड प्रताप। सर्ब व्यापे साचा प्रभ आप। विष्नूं रूप कोई ना किसे अलाप। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, जिस ने बख्शया सोहँ जाप। गुरसिक्खां प्रभ कलिजुग दीनी दात। सतिजुग मिले प्रभ अबिनाशी, साचा शब्द वड्डी करामात। सृष्ट सारी प्रभ की दासी, कोई ना जाणे प्रभ कीनी जगत घात। महाराज शेर सिँघ साचे दर आ के, गुरसिक्खां मन आई शांत। गुरचरन सिख रक्खे ओट। अन्तकाल जम खाए ना चोट। पाप उतारे प्रभ कोटन कोट। जगत न्यारे गुरसिख प्यारे, महाराज शेर सिँघ जन तेरी ओट। गुरसिख गुरमुख गुर धाम तुमारा। जिथ्थे वस्सया प्रभ आप निरँकारा। महाराज शेर सिँघ तेरी सरनाई, कलिजुग मिल्या सच करतारा।

२४० ०१

गुर दर जगत निराला। गुरचरन साची धर्मसाला। अमृत नाउँ पीए गुरसिख प्रेम प्याला। प्रगटे महाराज शेर सिँघ दीन दयाला। दीन दयाल प्रगटे दुःख भंजना। चरन धूढ़ दिओ जगत अञ्जना। सोहँ शब्द चलाए जोती जोत निरँजणा। महाराज शेर सिँघ तेरा दर साचा, गुरसिक्खां तेरा दर मंगणा। जीव जन्त उधरे पार। बेमुख देवे प्रभ नर्क निवार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आया, निहकलंक जामा धार। जामा धारे जगजीवण दाता। सोहँ शब्द उचारे आपणा रंग राता। तप ठारे सर्ब रोग निवारे, सुखदायक जगत पित माता। महाराज शेर सिँघ पतित उधारे, सतिगुर जिन सच पछाता। गुरचरन जो जन लागे। कलिजुग होए जगत सुभागे। बेमुख सोए गुरसिख सदा है जागे। महाराज शेर सिँघ प्रभ अपरम्पर, सोहँ देवे नाउँ सच रागे। प्रभ का साचा धाम, जिथ्थे प्रभ वस्सया। प्रभ का साचा धाम, बिन गुरमुखां प्रभ किने ना दिस्सया। गुरमुख साचा काम, साचा प्रभ रसना वस्सया। महाराज शेर सिँघ सदा गुण गाउ, कलिजुग साचा राह जिन दस्सया। सच सिमरन प्रभ का नाउँ। सच गुण गायण प्रभ साचा थाउँ। जाओ कुरबान जिन्हां जपिआ सोहँ नाउँ । दर आए मिले वड्याई, महाराज शेर सिँघ बलि बलि जाओ। बलि जाओ गुरचरन बलिहारी। कलिजुग जोत प्रभ मात उतारी। पाताल आकाश निराहारी। साध संगत तेरी वड्याई, रसना सिमर प्रभ चरन प्यारी। महाराज शेर सिँघ सद बख्शिंद, दर आए दी पैज सवारी। दर आए जन होए निमाणा। प्रभ पूरन समरथ सर्ब है जाणी जाणा। महिंमा प्रभ अकथ्थ, ना कोई आख वखाणा। कलिजुग अग्न चलाया रथ, नर्क वास बेमुखां पाणा। गुरसिक्खां मिल्या प्रभ समरथ, विच बैकुण्ठ बबाण लै जाणा। महाराज शेर सिँघ देवे उत्तम वत्थ, जिन्हां मन्नया सति कर भाणा। गुरप्रसादी प्रभ पाया, गुर गहर गम्भीरा। प्रभ साचा शब्द चलाया, देवे सिख मन धीरा। बेमुखां पकड़ वहाया, पै जाए वहीरा। माणस जन्म गंवाया, होए बेमुख हीरा। कलिजुग तारन आया, महाराज शेर सिँघ जग वड पीरा। जगत चलाए हो कुण्ड अग्न छोहे शक्ती। गुरसिक्खां रख वखायण, जिन्हां पूरन भगती। बेमुख कोहलू विच पीड़ायण, झूठी सृष्ट छिन विच खपती। गुरचरन लाग गुरसिख तर जाण, सोहँ नाउँ दिवस नित जपती। महाराज शेर सिँघ गुरसिख धरवासा, कलिजुग सृष्ट सारी रहे तप्ती । दुःख नाठे सुख वासे, प्रभ लोचे सरनाई। दुखी जीव बिल्लायँदे, प्रभ होए सहाई। चरनीं सीस निवावंदे, जावण रोग मिटाई। ठांडा गुर गुर दरबार है, देह काया अग्न बुझाई। प्रभ मिल्या सच करतार है, दे दरस तारे प्रभ सर्ब गुसाँई। अमृत मेघ बरसाए, कंचन काया सच बणाई। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां दया कमाई। गुरसिक्खां दया कमा के, नेत्रीं नूर दिवाई। रंग रंगीले माधो तेरे रंग न्यारे। गुरसिक्खां नैण तरसदे, दे जोत चमत्कारे। अवगुण सारे बख्श दे, खड़े सच दरबारे। विछड़यां मेल लै, प्रभ मेल मिलावणहारे। कलिजुग अग्न कहर दी,

सृष्ट सारी साड़े। सिर रक्खीं हत्थ प्रभ पूरया, तुध बाझों कोई ना तारे। दर सच्चा तेरा बूज्झया, होर झूठे सगल पसारे। चरन लाग प्रभ अबिनाशी बूज्झया, जोत सरूप आप निरँकारे। कलिजुग रहे ना गूज्झया, फड़ फड़ डोबे दुराचारे। दिवस रैण जोत सरूप प्रभ रूज्झया, पापी जीव जड़ों उखाड़े। महाराज शेर सिँघ संग गुरसिक्खां लूज्झया, बांहों पकड़ पार उतारे। ना झुग्गी ना झुग्गढ़ा, सच गुर दरबारा। जिथ्थे प्रभ पूरा चरन धरे, सो धाम न्यारा। रक्खे पति प्रभ पारब्रह्म, सर्ब जीआं सहारा। महाराज शेर सिँघ दे वड्याई, धन्न धन्न धन्न ठाकर सिँघ जरम तुमारा। पिछला जरम तेरा सी बेणी। भुक्खा छड्ड बंस दिवस रैणी। करे दरस प्रभ आत्म नैणी। साची सिफ्त सच्ची वड्याई, महाराज शेर सिँघ जिथ्थे तेरी संगत बहिणी। संगत सतिगुर उत्तम नीर। संगत सतिगुर कमान जिउँ तीर। गुर संगत अमृत बरसदा, जिउँ माता सीर। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तरसदा, दे दरस कट्ट हउमे पीड़।

❋ ३ चेत २००८ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह अहिमदपुर ❋

प्रगट भए प्रभ बेअन्त। आत्म दे ज्ञान सोहँ शब्द प्रभ चाढ़े रंगत। गुर साचा कल साचा दरबार, गुरसिख दान गुर दर ते मंगत। प्रगटी जोत प्रभ निरँकार महाराज शेर सिँघ मिल भगत भगवन्त। गुरसिख माण गुर दर ते पाए। अज्ञान मत तोड़ साचा प्रभ दरस दिखाए। लाग चरन संग दोवें जोड़, जोत सरूप प्रभ दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, आदि अन्त सर्ब रिहा समाए। साध संगत प्रभ साचा सूज्झया। गुरमुख तारनहार, प्रभ गुरसिक्खां बूज्झया। गुरमुख कीए दरस कल दरस कर चरन संग लूज्झया। महाराज शेर सिँघ किरपा निध, दे आत्म ज्ञान भेद खुलावे गूज्झया। महाराज शेर सिँघ जोत अपार। दे दरस देवे तार। गुरचरन सच्चा दरबार। कर सेवा गुरसिख उतरे पार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार। गुरसिख सोहँ रसना गावे। आत्म जोत प्रभ विच देह जगावे। कर किरपा आप कृपाल अन्धेर मिटावे। सच सरूप दीना नाथ गुरू गोपाल गुरसिख प्रगटावे। विच ललाट जोत जगावे। भगत वछल आप प्रितपाला दरस दिखावे। देवे दरस देर ना लावे। प्रभ अबिनाशी आत्म जोत जगावे। जोत जगावे दरस दिखावे परमगति पावे, गुरचरन सेव कमावे। लक्ख चुरासी गेड़ ना पावे, अन्त काल जम नेड़ ना आवे। अन्तकाल प्रभ खण्ड सच लै जावे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख सुहाए दरस दिखाए, साची जोत सच धाम पहुंचावे। गोपी नाथ अनाथ अनाथे। दीना नाथ सगल प्रभ साथे। वासदेव निरँजण दाते। कर दरस दुःख सगले नासे। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, जीव ना जाणे तेरी गाथे। प्रभ की महिंमा कोई जीव

ना जाणे। बेमुख जीव कल भए अञ्याणे। कलिजुग भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। गुरचरन लाग मिले वड्याई, पतित पापी होए सुघड़ स्याणे। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, कल जीव ना तेरी गति जाणे। गुरमुख जाणे प्रभ का भेउ। कलिजुग प्रगट दरस जन दियो। चरन लाग मिले वड्याई, अंमित नाम अंमिउँ रस पीउ। महाराज शेर सिँघ सरन जो आए, नाम निधान भगत जन दियो। भगत जनां देवे प्रभ साचा नाम निरवैर। बेमुखां वरते सृष्ट विच कहर। सोहँ शब्द बेमुखां जिउँ जेठ दुपहिर। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तारे, देवे दरस कर मेहर। जोत सरूप प्रभ खेल रचाया। निराहारी निरवैर आदि अन्त समाया। सदा जोत आकार, ना प्रभ मरे ना जाया। जुगो जुग लै अवतार, चौथे जुग इक्क खेल रचाया। छड्ड देह अपार, जोत सरूप विच देह मिलाया। सतिजुग प्रगट सद मेहरवान, त्रेता राम नाम अख्वाया। द्वापर कृष्न मुरार, अर्जन दे ज्ञान हँकार गंवाया। कलिजुग लै अवतार, घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। सोहँ शब्द अपार, सतिजुग साचा राह बताया। किरपा कर अपार, विछड़यां प्रभ मेल मिलाया। सर्ब कला समरथ, जोत सरूप प्रभ घर आया। घाल पाए थाएँ, प्रभ गुरसिख वड्याए, गुरबचन सिँघ घर आण तराया। भगत जन प्रभ दर मंगत, सोहँ शब्द प्रभ ज्ञान दवाया। आत्म दीप जोत उज्जयार, साचा दीप संग जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ सच होवे दरबार, सतिजुग एह थान सुहाया। साचा धाम उत्तम निराला। गुरचरन प्रीत सच प्रेम प्याला। घर सिख साचा शाहो प्रभ जगावे जोत, प्रभ मदन गोपाला। महाराज शेर सिँघ सच घर वस्सया, सच घर वसणे वाला। सच घर होवे प्रभ का वास। प्रभ की जोत सद अबिनाश। निर्मल जोत प्रभ विच आकाश। गुरसिख प्रभ घर तेरे प्रगट्या, जिउँ चन्दन प्रभास। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाया, सोहँ जपणा स्वास स्वास। प्रभ की जोत अटल्ल, प्रभ करे बैकुण्ठ, जगत बेसंग ना रल। गुरसिक्खां नाउँ नाम भगवान, प्रभ साचा दर मल। पूरब लिखाए लेख प्रभ मिल्या संग संगत जाओ रल। महाराज शेर सिँघ होए सहाई, विच जुग कल। गुर पूरे अमृत सांच्या, गुरसिख मन तन हरयावला। गुर अंजन सच बख्शया, दरस धूढ़ नेत्र पावणा। जोत सरूप सिख घर वस्सया, पूरी कीती सतिगुर भावना। बेमुख गुर दर तों नस्सया, गुरसिख चरन लाग तर जावणा। प्रभ पूरा हिरदे वस्सया, सोहँ शब्द देवे मन भावना। बेमुखां नाम विसारया, दर आए सार ना पावणा। गुरसिख सच शब्द घर दीपक, सोहँ नाम रसना गावणा। महाराज शेर सिँघ घट घट वस्सया, गुरसिक्खां होवे ना आवण जावणा। आत्म अमृत रस प्रभ मुख चुआवे। अमृत मेघ बरस के, कलिजुग अग्न प्रभ बुझावे। देह दीपक साची जोत जगा के, अज्ञान अन्धेर मिटावे। गुरसिक्खां आपणा आप निजानंद प्रभ दरसावे। बेमुखां मुख छुपायके, विच बैठा प्रभ दिस ना आवे। प्रभ पूरा जोत प्रगटायके, भगत जनां आण तरावे। अमृत अमर कर प्रभ, महाराज शेर सिँघ

सभ दुखड़े लाहवे। शब्द सुरत प्रभ ज्ञान दवाए। सुरत शब्द प्रभ आत्म बूझ बुझावे। शब्द सुरत सच जोत जगावे। सुरत शब्द दस्म दुआर खुल्लावे। सुरत शब्द अनहद धुन वजावे। सुरत शब्द प्रभ अबिनाशी सच मेल करावे। सुरत शब्द ईश जीव दा भेत मिटावे। सुरत शब्द जोत विच जोत मिलावे। सुरत शब्द जो जन पावे, महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे। गुरचरन लाग घर मंगला। निगम कर विचार, घर आया प्रभ रंगला। बेड़ा कर जाए पार, मंग जो दर ते मंगला। निहकलंक आए अवतार दर ना संगणा। होए शब्द अटल्ल साचा दरबार, गुरसिख दान नाम मंगणा। सोहँ शब्द चले अपार, रसना जप जीव कल पार लँघणा। महाराज शेर सिँघ कर्म विचार, प्रगटी जोत सर्ब दुःख भंजना । पतित उधारन दुःख भय भंजन। हँकार निवार प्रगटे त्रैलोकी नंदन। गुरसिख घर आए, अन्तकाल तोड़े प्रभ बंधन। महाराज शेर सिँघ गुरसिख कलिजुग प्रभास जिउँ चन्दन। गुरसिख तेरी वड्याई । बेमुख संगत मिल मैल गंवाए, चन्दन वास जिउँ निम महिकाई । पसू प्रेतों करे देव, साची होवे तेरी वड्याई। महाराज शेर सिँघ चरन घर सेवो, जोत सरूप प्रभ भए सहाई। झुग्गी पैर पसारन सुत्ता प्रभ अपर अपारे। झुग्गी रसना नाउँ उचारन, सतिजुग होए सच दुआरे। दुआबा सर्ब सुधारन, साचा भगत वज्जे शब्द नगारे। जोत सरूप जगत अकारन, जगावे जोत आप गिरधारे। रक्खे लाज जिउँ द्रोपदी घर आए कृष्न मुरारे। वांग बिदर पैज संवारदा, भोग लगावे जिउँ साग निमारे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, लाए सरन भगत जन तारे। देवे प्रभ निमाणयां माण। बेमुख मारे कल पकड़ पछाण। गुरमुख प्रभ चरन ध्यान। गुर पूरे ना बेमुख करन पछाण। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तारे, कलिजुग प्रगटे जाणी जाण। सर्ब जीव हिरदे वसे, प्रभ आप भगवन्ता। गुरमुख उज्जल कल साधन सन्ता। सोहँ शब्द प्रभ देवे बेअन्त बेअन्ता। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप सर्ब विच रहंता। प्रगटे जोत कलिजुग प्रभ तरनी तरना । मुकंद मनोहर लखमी नरायण जोत सरूप प्रभ सवला । महाराज शेर सिँघ चरन लग्ग जाण, कल साचे चरन कँवला। चरन कँवल जो जन निमस्कारे। प्रभ भगवन्त जग दुतर तारे। गुरसिख सोहण गुरचरन दुआरे। बेमुख रसना सोहँ ना उचारे। नर्क निवास डुब्बा मँझधारे। कलिजुग पैज जीव कोई ना संवारे। महाराज शेर सिँघ सच अवतार है, चरन आए दी पैज संवारे। सरन पड़े जो जन अन्तरजामी। कलिजुग प्रगटे प्रभ निहकामी। कर दरस जीव प्रभ सच स्वामी। महाराज शेर सिँघ सर्ब रंग राता कलिजुग अन्तरजामी। तीन लोक प्रभ वसणेहारा। आदि अन्त प्रभ अवतारा । पताल आकाश प्रभ जोत आकारा। शब्द नाम गुर सच मात लै अवतारा। मातलोक सिख घर आए, पूरे सतिगुर सच सिख तारा। जोत प्रभ की अपर अपारा। कलिजुग करे जोत चमत्कारा। आपणे रंग रवे करतारा। कोए ना जाणे प्रभ की सारा। सोहँ शब्द चले खण्डा दो धारा ।

जगत पकड़ पछाड़िआ जिउँ लकड़ी आरा। सोहँ शब्द जो रसना ना गांयदा, दुरमति दुष्ट होए दुराचारा । दरगाह थाएँ ना पांयदा, धर्म राए करे ख्वारा। बेमुख सदा बिल्लायन, अन्तकाल नर्क निवारा। गुरसिख गुरचरन तर जाए, महाराज शेर सिँघ मिले अगम्म अपारा। अलख अगोचर प्रभ अगम्म अपार। सोहँ देवे सिख नाम आधार। बांहों पकड़ तारे गुर पार उतारनहार। प्रभ जोती जोत मिलायण, सच जोत मिलावणहार। महाराज शेर सिँघ दर सुख पायण, दोए जोड़ करे निमस्कार। गुरचरन निमस्कार मिले भय भीता। गुरसिख निर्मल होए जगत अतीता। गुर चरन निमस्कार, गुरसिख पतित पुनीता। महाराज शेर सिँघ सद राखो चीता। प्रभ आया भेस वटा के, जन भगतां तारे। जोत सरूप जोत जगा के, ध्रू जोत चमत्कारे। प्रहलाद तराया, नर सिँघ रूप आप प्रभ धारे। भिच्छया मंगे जायके, बावन रूप बल दुआरे। भगत अंबरीक प्रभ तारया, चक्र सुदर्शन बाण दुरबाशा मारे। जनक जोत मिला ल्या, नर्क अठारां जिस पार उतारे। जोड़ खड़ाए वखा लई, तारा राणी साध संगत विचघारे। द्रोपदी पैज रक्खा लई, उतरे चीर ना कोट उतारे। झुग्गी बिदर सुहा ली, सुत्ते प्रभ पैर पसारे। सुदामा लै प्रदक्खणा देवे दान सोहण अस्थल महिल मुनारे। जैदेउ घर आएके, लिखे लेख प्रभ अपर अपारे। गुरमुख बेणी टेक इक्क बैठा इकांत छड्ड घर बाहरे। नाम देव घर भोग लगाए, आप प्रभ गोबिन्द मुरारे। धन्ना आप तरायण, गाईआं चारे मोड़ क्यारे। कबीर जोत मिलायण, रसना नाम निरँजण चितारे। गनका पार परायण, गुरमत ज्ञान तोता उचारे। पूतना पापण प्रभ तरायण, मोहन मुम्मे पाया कृष्न मुरारे। सैन रूप हरि होए के, गया आप राज दुआरे। बधक आप तारया, चरन कँवल विच तीर जो मारे। जुगो जुग लै अवतार जन भगतां तारे। कलिजुग दुष्ट सँघार, बहत्तर जामे रसना गुरसिख उचारे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, चार कुन्ट होए जै जै जैकारे। जै जै जैकार भयो जग अन्तर। सोहँ जप रसना, चौथे जुग दे साचा मन्त्र। आत्म प्रभ ज्ञान कुंजी, नाउँ खोलू मन का जंदर। जीव कोई भेव ना जाणे, महाराज शेर सिँघ जोत सरूप देह अंदर। ब्रह्मा ब्रह्म सरूप हो, दरस प्रभ का लोड़े। शिव शंकर प्रभ रूप अनूप हो, करे आस मिले चरन धूढ़े। विच ब्रह्मण्ड नज़र ना आवई, गुरमुखां बचन ना मोड़े। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, बेमुखां कलिजुग रोड़े। कलिजुग माण गुरसिक्खां दिया। जप सोहँ नाम होए निर्मल जिया। भुल्ल ना जाणा प्रभ का दर, देवे दान पुत्तर धीआं। डुल ना जाओ पाओ आपणा किया। कलिजुग उतरे पार, महाराज शेर सिँघ नाम जिस रसना ल्या। रसना नाम नरायण जो पीवे। जोत सरूप थिर घर रहीवे। बिना नाम ना जग जीवे। बिन बाती बिन तेल महाराज शेर सिँघ दीपक दे जगीवे। मेल मेल चरन लाग सदा सुख पाईए। चरन लाग प्रभ चतुर्भुज दरसाईए। चरन लाग मानस जन्म सुफल कराईए। चरन लाग वड भाग साध संगत मिल

जाईए। महाराज शेर सिँघ सदा है, सुत्ती आत्म फेर जगाईए। आत्म सोए ना दिवस रैणा। झूठी काया सौं नहीं रहणा। कलिजुग माया बेमुखां मोहया, गुरसिख मिल प्रभ पेखे नैणां। साध संगत दया प्रभ करे, पतित पापी अपराधी कोई ना रहणा। सतिगुर साचा सतिजुग वरते, सोहँ शब्द नाम निशान देह दा गहणा। उत्तम एह ज्ञान, सतिजुग विच रहणा। बेमुखां नर्क निवार, उलटे वहिण जगत है वहिणा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तारे, पूर्ब जन्म दा देवे लहणा। जन्म जन्म प्रभ जीव भरमाया। लक्ख चुरासी गेड़ चलाया। उलटाए सृष्ट विच मात दे आया। साचा नाम नाउँ सर्ब को दिया, सोहँ शब्द सच चलाया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, तेरा अन्त किने ना पाया। कोई ना जाणे प्रभ परवर। ऊँचो ऊँच प्रभ का दर। जोत सरूप अवतार नर धर। गुरसिख साचा स्वच्छ सरूप, अन्तकाल ना होए जम का डर। निहकलंक जोत प्रगटाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान धरनी धर।

❊ ५ चेत २००८ बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह पिण्ड लल्लीआं ज़िला जलंधर ❊

२४६
०१

कलिजुग तार जाए गुरसिक्खां, छिन्न भंगर जोत प्रगटायके। कलिजुग तार जाए गुरसिक्खां, भरतम्बर सर्ब समायके। कलिजुग मेट जाए सभ दकुखां, रिदे शुद्ध गुरसिक्खां करायके। कलिजुग तार जाए गुरसिक्खां, घर सच्ची जोत जगायके। कलिजुग तार जाए गुरसिक्खां, घर दर्शन भिख्या पायके। कलिजुग तार जाए गुरसिक्खां, मुख अमृत भोग लगायके। कलिजुग तार जाए गुरसिक्खां, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखायके। गुरसिक्खां गुर दर्शन पायणा। बेमुखां वेला हत्थ ना आयणा। वक्त विचार जोत सरूप ना रिदे वसायणा। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां दरबारा, बेमुखां दर दर भवायणा। प्रभ दरस सच दरबारा। प्रगटे जोत कलिजुग अपर अपारा। धरत धवल आकाश प्रभ जोत आकारा। गुरसिक्खां घर किया वास, छड्ड सगल संसारा। गुरसिख संग सदा हरि पास, महाराज शेर सिँघ आप निरँकारा। निरँकार जोत घर निर्धन आई। झूठे धन्दे सभ सृष्ट भुलाई। गुरसिख प्रीत गुर चरन बण आई। सो सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटाई। प्रभ पूरन श्रद्धा पूर, बुझी दीपक फेर जगाई। घर साचा शाहो पाया, भुक्ख रहे ना काई। प्रभ अन्तिम मेल मिलांयदा, जोत सरूप विच दे मिलाई। गुरसिक्खां माण दिवाया, जुग चार जस रहि जाई। थिर घर छड्ड सिख घर आया, कलिजुग देवे भगत वड्याई। धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ अन्तकाल होए सहाई। गुरसिख उधारे आदिन अन्ता। सोहँ नाउँ जन उचारे, मिले प्रभ भगवन्ता। रिदे होए जोत चमत्कारे, कलिजुग मिले प्रभ साधन सन्ता। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, विच जीव जन्त रहन्ता। राजन राज आप वड

राजा। साजन साज प्रभ सृष्ट साजा। रागन राग सोहँ देवे उत्तम रागा। गुरसिख होए वडभाग, बेमुख सोए गुरमुख जागा। महाराज शेर सिँघ रक्खे लाज, गुरसिख कलिजुग लग्गे ना दाग़ा। गुरसिख देह कलिजुग अमोल। गुरसिख सोहण प्रभ चरन कोल। गुरसिख होवे मन धरवासा, बेमुख मारन झूठे बोल। प्रभ साची जोत प्रगटायके, अन्त कल पूरे तोले तोल। हँकार निवारन सोहँ प्रभ आया, बेमुखां पड़दे देवे खोल्ह। प्रभ सच्चा सच समाया, सोहँ शब्द वजाया ढोल। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, साध संगत करे देह निरोल। गुरसिख कलिजुग उत्तम जाती। सोहँ नाउँ सच दीपक बाती। बेमुख पैर पसार के, कल सुत्ते राती। गुरसिख जोत जगायके, आत्म दीप नाम निर्मल बाती। महाराज शेर सिँघ गुरसिख घर आयके, बेमुखां मन लाई काती। बेमुख मूढ़ ना समझदा, जे गुरसिख समझावे। बेमुख मूढ़ ना समझदा, प्रभ नज़र ना आवे। बेमुख मूढ़ ना समझदा, कलिजुग माया अग्न जलावे। बेमुख मूढ़ ना समझदा, सोहं शब्द ना रसना गावे। बेमुख मूढ़ ना समझदा, जम दर बद्धा चोटां खावे। बेमुख मूढ़ ना समझदा, कूकर शूकर जून रहावे। बेमुख मूढ़ ना समझदा, काग होवे कल विष्टा खावे। बेमुख मूढ़ ना समझदा, महाराज शेर सिँघ मति पड़दा पावे। गुरसिख सतिगुर चरन लुझदा, कर निर्मल बुध। गुर साचा गुरसिख बुझदा, प्रभ साची देवे सुध। बिन प्रभ कौण मिलावंदा, विछड़यां नूं तुध। महाराज शेर सिँघ चरन लगांवदा, गुरसिक्खां देवे साची बुध। गुरसिख विरले विच सहँस। गुरसिख तारे सर्ब आपणा बंस। बेमुख मारे जिउँ मुरारी कंस। कलिजुग गुरसिख प्यारे, महाराज शेर सिँघ तेरी अंस। विष्नूं बंसी प्रभ आप अख्वाया। गुरसिख साचा बंस बणाया। साध संगत प्रभ विच समाया। विटहु जाओ कुरबान, सोहँ शब्द जिस रसना गाया। कलिजुग मिल्या विष्नूं भगवान, महाराज शेर सिँघ नाउँ धराया। प्रभ का बंस चले जुग चार। गुरसिख जाउ सद सद सद बलिहार। जिन्हां घर वसे आप निरँकार। जोत सरूप प्रभ दे चल्लया जोत अधार। जग अवल्लया किसे ना ठल्लया, नज़र ना आवे आप गिरधार। गुरसिक्खां दर साचा मल्लया, प्रभ किरपा करी अपार। गुरसिख सच घर चल्लया, हुक्म जोत चले इक्क तार। गुरसिख हिरदा कदे ना हल्लया, जित वसे सिरजणहार। गुरसिख अन्त जोत संग मिल्या, प्रभ मिले जोत मिलावणहार। गुरसिक्खां सच घर मल्लया, महाराज शेर सिँघ तेरा सच दरबार। साचा घर साचा दरबारा । गुरसिख ना जाए डर, मिले प्रभ अगम्म अपारा। बेमुख मानस जन्म जाए हार, रिदे ना साचा प्रभ विचारा। महाराज शेर सिँघ धरनी धर, जोत सरूप रवे संसारा । गुर पूरा सच गहर गम्भीरा। प्रगट जोत अगम्म, देवे गुरसिख मन धीरा। गुर चरन लाग तराया, मानस जन्म हीरा। महाराज शेर सिँघ भगत वड्आया, कलिजुग प्रगटे सिर पीरां पीरा। दे दर्शन गुर प्यास बुझाई। गुरसिख लेख प्रभ आप लिखाई। चाढ़ मजीठी रंग, रंगण

नाम चढ़ाई। कुल दित्ती तेरी तार, पाल सिँघ तुध होए वधाई। कलिजुग होवे अन्ध अंध्यार, लल्लीआं नाउँ जग रहि जाई। गुरसिख सोहे गुर दरबार, चार कुन्ट होए जै जै जैकार कराई। महाराज शेर सिँघ सरगुण निरगुण सरन पड़े दी लाज रखाई। जो जन पड़े प्रभ की सरना। जो जन अड़या अन्त नर्क निवास है करना। बेमुख अग्न जोत संग सड़या, गुरसिख चरन लाग है तरना। महाराज शेर सिँघ अन्त जोत मिलाए, गुरसिख होवे जगत ना मरना। लाज पति रक्खे आप प्रभ जग रक्खणहारा। तन मारे प्रभ तीन ताप काम क्रोध ना पुकारा। अन्तिम होए सति सति सति, अन्तिम मिल्या पुरख अगम्म अपारा। कलिजुग रक्खे आप प्रभ, साचा नाम दे अधारा। साची पावे विच देह मति, अमृत नाम चले फुहारा। महाराज शेर सिँघ आप समरथ, अमृत देवे जगत भण्डारा। पारब्रह्म प्रभ विच देह समाया। सिख देह प्रभ की जोत, जोत सरूप एह काज रचाया। महिंमा अनूप प्रभ रंग ना रूप, जोत सरूप नज़र ना आया। कलिजुग प्रगट प्रभ वड भूप, साचा मुकट सिर दस्तार सजाया। पति राखी प्रभ पारब्रह्म, बस्त्र भूष्न अंग लगाया। घर तोट कदे ना आवई, गुर सेवा गुरसिख कमाया। फिर जन्म कदी ना पावई, अन्तकाल विच जोत मिलाया । सति पुरखा सच नाम जपावई, घर साचा धाम सचखण्ड बणाया। प्रभ दिंदिआ तोट ना आवई, जगत जगत भण्डारी प्रभ तेज वधाया। प्रभ सद सद बख्शणहार, मंग दान घर परमेश्वर आया। जगत देवे माण, सोहण मन्दर जिथ्थे प्रभ चरन टिकाया। महाराज शेर सिँघ जाउ बलिहार, जिस एह थान सुहाया। अद्धी रैण विहाई। दुनियां सुन समाध सवाई। गुरसिक्खां मन वज्जी वधाई। पंचम चेत महाराज शेर सिँघ शब्द लिखाई । सुंञ मसाण जग महल मुनारे। चुप चपीते जग जग पवण हुलारे। विच आकाश सर्ब सतारे। महाराज शेर सिँघ तेरी जोत कलिजुग चमत्कारे।

२४८
०१

※ ५ चेत २००८ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह अहिमदपुर ※

चार वरन प्रभ वस्सया, सर्ब गुण दाता। राह कलिजुग साचा दस्सया, देवे दान शब्द गुण दाता। जन भगतां प्रभ हिरदे वस्सया, रवे रंग आप प्रभ रंग राता। महाराज शेर सिँघ गुरसिख घर प्रगट जोत पुरख बिधाता। वड वड्याई पंचमी, पंचम प्रभ मारे। वड वड्याई पंचमी, निरहार निरवैर जोत चमत्कारे। वड वड्याई पंचमी, जगत जलन्दा गुरसिख प्रभ तारे। वड वड्याई पंचमी, पंचम चेत गुरसिख सोहण हरि के दुआरे। वड वड्याई पंचमी, घर आया अगम्म अपारे। वड वड्याई पंचमी, सुरत शब्द जन सिख उचारे। वड वड्याई पंचमी, थिर घर वसे आप निरँकारे। पंचम जेठ मिले वड्याई, महाराज

शेर सिँघ सिक्खन तारे। कलिजुग प्रगटे त्रैलोकी नाथा। विछड़ कदे ना जाए, साचा प्रभ सदा संग साथा। गुरसिख रसना सोहँ गाए, सतिजुग साची प्रभ की गाथा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, बेमुख ना टेकण माथा। भगत वछल प्रभ संग सुहेला। गुरचरन लगाए घर दर का मेला। प्रगट होवे दरस दिखावे ना झूठी खेला। कलिजुग तारन आ गया, गुर सच दुहेला। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, जिन किया संजोगी मेला। सच संजम सच रूप प्रभ की जोता। कलिजुग प्रगटे प्रभ वड भूपा। एक आप कोई अवर ना होता। बेमुख कलिजुग रिहा सोता। बांहों पकड़ तराया, नर्क निवास ना खाधा गोता। महाराज शेर सिँघ चुरासी गेड़ कटाया, अन्तिम मेल करे विच जोता। जोत सरूप विच जगत प्रवेश। सच्चे प्रभ को सदा आदेस। आप एक जुगो जुग उलटावे भेस। किरपा कर प्रभ बख्शदा, गुरसिक्खां करे बुध बिबेक। जग झूठा धन्दा छड्ड के, गुरचरन लगाउ टेक। गुर पूरा सिमरनहार है, विसरो घड़ी ना एक। कलिजुग भगतां तारन आ गया, महाराज शेर सिँघ कर जोत सरूपी भेख। जुग चौथे प्रभ खेल रचाया। छड्ड देह जोत सरूप समाया। निरगुण सरगुण रूप प्रभ, भगत जनां हरि दरस दिखाया। उत्तम निर्मल चंचला, जिन रसना सोहँ गाया। लोहा पारस छोहे होए कंचना, गुरसिख संग बेमुख तराया। करो दरस खोल्ह देवे लोचना, सिँघ सिँघासण प्रभ डेरा लाया। हुण वेला सच जिस सोचणा, निहकलंक जगत विच आया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, गुरसिक्खां माण दिवाया। माण मोह दोनों प्रभ परहरे। पूरब कर्म विचार, साची जोत प्रभ विच धरे। मदि मासी कर ख्वार, तृगिद जून नित वास धरे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, शरन पड़े जन प्रभ पार करे। गुरसिख कलिजुग जगत बियोगी। किरपा कर प्रभ तारदा, दर आए रोगी। कोटां विच प्रभ पछाणदा, कर्म मेल गुरसिख संजोगी। बेमुखां बाण प्रभ मारदा, महाराज शेर सिँघ सतिगुर चोजी। कलिजुग कर्म विचार के, प्रभ जोत प्रगटावे। जोत सरूप विच देह समायके, शब्द साच सच आप लिखावे। गुण निधान प्रभ घर आयके, भगत जनां हरि लेख लिखावे। दरगाह माण दवायके, सचखण्ड सच तख्त बहावे। प्रभ शब्दी शब्द मिलायके, तीन लोक की सोझी पावे। खण्ड ब्रह्मण्ड समायके, लील्हा आपणी जगत चलावे। बेमुखां पड़दा पायके, महाराज शेर सिँघ नज़र ना आवे। चार कुन्ट प्रभ शब्द चलावे। बेमुखां होए हाहाकार, जै जै जैकार भगत जन गावे। कलिजुग होए दुष्ट दुराचार, मदि मास जो रसना लावे। भरमत भरमत होए ख्वार, साचा प्रभ नज़र ना आवे। मूर्ख मुग्ध ना करन विचार, रसना लोभी लोभ हलकावे। चौथे जुग आई हार, कुम्भी नर्क प्रभ वास करावे। गुर साचा शब्द लिखावे, अन्तकाल ना कोई छुडावे। महाराज शेर सिँघ सद बख्शिंदा, दर आए पार करावे। इक्क रंग प्रभ रंग प्रभ निराला। कलिजुग तारनहार प्रभ, प्रगटी जोत गोबिन्द गोपाला।

चरन लग तर जावसी, सभ बिरध है बाला। महाराज शेर सिँघ लेख लिखावे, गुरसिक्खां पाई थाएँ घाला। सतिजुग साचा सच प्रभ करना। हँकारन मार दुष्ट सँघारे, राउ रंक इक्क करना। भगत उधारे आए दुआरे, इक्क रंग वसे विच चार वरना। महाराज शेर सिँघ त्रैलोकी नंदन, सोहँ शब्द रसन उचरना। सतिजुग सूछम उत्तम निराला। गुरसिक्खां वेखे किरपा करे गुर गोपाला। जगे जोत विच ललाट, सिँघ संवारे जिउँ ज्वाला। गुर पूरे दीनी दात, सोहँ रसना माला। सतिगुर साचा दरस दे आप, भगत जनां होए रखवाला। प्रगटे प्रभ ब्रह्म सरूपा। जीव जन्त तारे विच अन्ध कूपा। जो जन आए चरन निमस्कारे, देवे दरस प्रभ स्वच्छ सरूपा। महाराज शेर सिँघ जोत चमत्कारे, ना कोई रंग ना कोई रूपा। रूप रंग जो प्रभ का पेखे। जोत सरूप विच देह ही वेखे। मानस जन्म होए कलिजुग लेखे। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे, गुरसिख सच्चा नैणी देखे। आत्म बाती देवे दात, गुरसिख प्रभ दाती। मिले आण प्रभ सिक्खां सुत्तयां राती। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तारे, देवे दरस आप प्रभाती। दे दरस प्रभ भय चुकाए। मुकंद मनोहर लखमी नरायण प्रभ नज़री आए। आत्म जोत होए प्रकाश, जोत निरँजण विच देह जगाए। प्रभ पूरा सरगुण तास, दीपक निर्मल जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ करे रिदे प्रकाश, सोहँ शब्द जो रसना गाए। ओअँ आप निरँकारा। जोत सरूप वसे विच संसारा। जोत आकार किया जगत पसारा। जुगो जुग

२५० ०१

प्रभ लै अवतारा। जामा धार निहकलंक प्रभ नाउँ विचारा। सोहँ शब्द उचार भगत जनां हरि दे भण्डारा। गुरसिख उधरे पार, साची प्रीत गुर चरन दुआरा। प्रगटे जोत आप निरँकार, महाराज शेर सिँघ जोत निरँकारा। जोत निरँजण नर नरायणा। गुर दरस कर गुरमुख तर जायणा। साध संगत प्रभ होए वस, रसना देवे नाम रसायणा। बेमुखां ना पाई साची वत्थ, कलिजुग फिरदे जिउँ सुंञे घर काउणा। महाराज शेर सिँघ पाई नत्थ, लक्ख चुरासी गेड़ भुगताउणा । कलिजुग बेमुख प्रभ आप पछाणया। कलिजुग बेमुख जो ना मन्ने प्रभ के भाणया। कलिजुग पाए डाहढे दु:ख, जिन आत्म राम मनों भुलाणयां। कलिजुग होए कदे ना सुख, जिन पूरा सतिगुर नहीं पछाणयां। कलिजुग आया प्रभ सर्ब सुख, तख्तों लाहे राजे राणयां। सृष्ट खपावे पावे भुक्ख, चार वरन इक्क कराणयां। वड दाता आप समरथ पुरख, देवे माण कलिजुग निमाणयां। मायाधारी मदि मासी होए बेमुख, कलिजुग मारे प्रभ सोहँ बाणया। महाराज शेर सिँघ देवे हिरदे सुख, चरन लग्गे जो होए निताणया। प्रभ निरँकार निरवैर सद अख्वाए। जोत सरूप विच जीव जन्त रहाए। गुरसिख आत्म आप प्रकाशया, जोत सरूप प्रभ दरस दिखाए। निजानंद अमृत बूंद चवास्सया, अमृत बूंद कँवल में पाए। खुल्हे कँवल आत्म धरवास्सया, अनहद शब्द धुन दे वजाए। खुल्ही त्रैकुटी त्रैभवन सूज्झया, द्वार दस्म प्रभ दे खुल्हाए। गुरसिक्खां कलिजुग गुरदर बूज्झया, जोत सरूप विच जोत मिलाए। गुरसिख

गुर दरस मन लूज्झया, कर दरस हउमे हँगता रोग गंवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, निहकलंक हो सतिजुग लाए। कलिजुग तारन आ गया, गोपाल गुर गुप्ता। भगत जन सुत्ते जगावण आ गया, प्रभ साचा मुक्ती मुक्ता। सोहँ शब्द सिक्खावण आ गया, प्रभ मिलण की साची जुगता। सतिजुग साचा लावण आ गया, महाराज शेर सिँघ गुप्ती गुप्ता। जगत भुलाया जुगत कर, प्रभ भेद छुपाए। कलिजुग नज़र ना आया, अछल छलनी छल आप कराए। जग सुन्न समाध करा गया, आत्म धुन गुरसिख वजाए। घर दर मन्दर थाांएँ सुहा गया, जोत सरूप प्रभ जोत जगाए। हँकारीआं माण गंवा गया, निहकलंक नाम रखाए। सतिजुग साचा लाया, सति संगत प्रभ दे सुणाए। कल बेमुख नाम लिखाया, मदि मास जिन रसना लाए। गुर साचे तख्त रचाया, घर गुरसिक्खां दे बहाए। प्रभ अमृत मुख चुआया, खोल्ह किवाड़ दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया, जन्म जन्म दी सोझी पाए। गुर पूरा भरम निवारदा, दे आत्म ज्ञाना। गुर रसना शब्द उचारदा, घर सच ध्याना। प्रभ अमृत अमर वरखांवदा, वाली दो जहानां। गुरसिख रंग सदा प्रभ माणदा, होए मेल कृष्न भगवाना। महाराज शेर सिँघ भगत जन तारदा, निहकलंक धार के जामा। निहकलंक प्रभ जगत अख्वाया। जोत सरूप जोत प्रगटाया। सृष्ट भुलाए झूठी पाए माया। आत्म मति गंवाई, विकार विरोध जलाया। रसना मदि मास लगाई, कलिजुग जीव नास कराया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, झूठी पाई जगत ते माया। सृष्ट भुलाई सर्ब गुणवन्ते। कलिजुग खपाई आप भगवन्ते। साध संगत दे वड्याई, प्रभ की जोत विच सदा रहंते। महाराज शेर सिँघ सोहँ नाउँ झोली पाई, दर तेरे ते आए मंगते। गुर दर पूरा गुरसिख मंगणा। आत्म देवे ज्ञान प्रभ गुरसिख मन चाढ़े रंगणा। आत्म होए सदा सुख, सिख साचा दीप विच देह जगणा। महाराज शेर सिँघ लाहे भुक्ख, आत्म दरस जिस प्रभ मंगणा। आत्म दरस प्रभ सिख दरसा के। कलिजुग चल्लया भेस वटा के। पूरा गुरसिख मन सोझी पा के। शब्द सुरत आत्म जोत जगा के। बिन बाती बिन तेल बुझी दीपक जोत जगा के। विछड़ कदे ना जाए, कलिजुग लग्गे चरन जो आ के। कलिजुग देवे प्रभ वड्याई, निहकलंक नाउँ रखा के। महाराज शेर सिँघ चरन लग जाई, सोहँ शब्द जन रसना गा के। सोहँ शब्द सतिजुग चलाया। बाकी सभ दा माण गंवाया। सर्बत तीर्थां भय चुकाया। अन्तकाल कलिजुग करन जोत सरूप आप प्रभ आया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, भेद किने ना पाया। भेव पावे जन भरम चुकावे। चरनामत तेरा लै आत्म तृप्तावे। प्रभ पूरा कपट निवारदा, हउमे विच्चों रोग गंवावे। अमृत बूंद मुख चवावे। अन्त अमर कर तारदा, जो चरनीं सीस झुकावे। प्रभ कलिजुग जन भगत पछाणदा, बेमुख चरन ना आवे। प्रभ गुण अवगुण सर्ब जीव जाणदा, कोई छुपे ना छुपावे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख रंग माणदा, भरम भउ दा

भेद चुकावे। भगत वछल सर्ब गुण दाता, सद आपणा भेख वटांयदा। सतिजुग सति मेहरवान, त्रेता राम नाम धरांयदा। द्वापर तारे भगत भगवान, महासार्थी आप अख़वांयदा। कलिजुग लै अवतार, निहकलंक हो जगत खपांयदा। सृष्ट होए ख्वार, प्रभ पूरा नज़र ना आंयदा। कुन्ट चार होए हाहाकार, शब्द बाण गुर अग्न चलांयदा। साध संगत घर जै जै जैकार, जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटांयदा। बेमुख कल होए ख्वार, दर मंगण भिक्ख ना पांयदा। कलिजुग देवे तार, मदि मास जो जन ना रसना लांयदा। महाराज शेर सिँघ आप करतार, विच जोती जोत मिलांयदा। मात पाताल आकाश सदा प्रभ वस्सया। विच पाताल बाशक सेजा, सच आसण प्रभ पूरे दस्सया। मन में धर हँकार, ईश्र चरन लच्छमी झस्सया। किसे ना पाई सार, घट घट सदा प्रभ वस्सया। महाराज शेर सिँघ घर सिख प्रकाशे, विच आकाश जिउँ रवि सस्सया। विच आकाश प्रभ जोत निराली। जीव जन्त सर्ब का वाली। उनन्जा पवण सिर छत्र झुला ली। सर्ब सृष्ट प्रभ जोत ज्वाली। सचखण्ड वसे महाराज शेर सिँघ जोत निराली। जोत निराली कलिजुग विच मात प्रगटाई। सृष्ट सारी पकड़ हिलाई। कुन्ट चार पै जाए दुहाई। भैणां तांई छड्ड जाणगे भाई। मावां पुत्तरां सुध ना राई। कँवार कन्या कल पति गंवाई। कलिजुग काया पलट वखाई। शर्म धर्म सिर खेह पवाई। झूठी सृष्ट छिन विच खपाई। आप अडोल बैठा प्रभ रंग लाई। नज़र ना आवे सच बिंग कसाई। जोत अग्न प्रभ सृष्ट लगाई। अन्ध धुंध धुंधूकारा, दिवस रैण इक्क हो जाई। अन्तिम कहर कलू कल वरते, धरती माता दए दुहाई। बख़्शीं बख़्शणहार प्रभ, झूठी सृष्ट विच गोर समाई। महाराज शेर सिँघ कोई ना जाणे, निहकलंक हो खेल रचाई। कलिजुग खेल कराए, जुग उलटाए सर्ब वरभंडा। कलिजुग माण गंवाए सर्ब भुलाए, सोहँ शब्द लाए सिर डण्डा। जीव बिल्लाए करे हाए हाए, मन वज्जा हउमे कंडा। महाराज शेर सिँघ सच शब्द चलाए, जगत घाए सच सोहँ खण्डा। निपुंसक जीव जगत में, तन चैन ना आवे। जे बाल ना होवे कुक्ख में, मात ना जगत कहावे। कर्महीण जन जाणीए, अंस बिनां खाली रहि जावे। दु:ख सारे दे वखाणीए, किशना पक्ख अन्धेर हो जावे। नाड़ी बहत्तर दे संवाणीए, आपणा भेव जीव ना पावे। सच नाउँ आख वखाणीए, निपुंसक जीव दोए अञ्याणे। गुरू साचा लेख लिखाणीए, जो चले गुर के भाणे। रोगी जीव अवल्लड़ा, होई देह निरोली। प्रभ किरपा कर जे बख़्शदे, सच्ची दात पाए विच झोली। मात पिता सदा तरसदे, बिना पुत्तरां जन्म रोली। देह अमृत साचा प्रभ वरसदे, बेमुख ना मारन बोली। मन दुखीआ सदा तरसदे, सच्ची दात पा जाए झोली। महाराज शेर सिँघ कर्म कमायके, विच संगत किस्मत खोल्ही। दर मंगी भिच्छया जाएके, देवे दातारा। जे भुल्लया शब्द कमायके, पेट रहे सदा अफारा। गुरचरनीं डिगे आयके, प्रभ पूरन आस पुजावणहारा। जे जाउ मुख भवायके,

जग रहे जीव आकारा। रक्खण सोहँ रसना गायके, लाहे दुःख दे कूड़ दुआरा। महाराज शेर सिँघ देवे वत्थ, मदि मास विच भुल्ल ना जाए गंवारा।

गुरप्रसाद गुरदर ते पाया। गुरप्रसाद गुरसिख निर्मल दे कराया। गुरप्रसाद गुरचरन लाग महासुख पाया। गुरप्रसाद महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। प्रभ दरस करे नर नारी। नाउँ धराए साध संगत प्यारी। निखुट्ट मैल होए जाए बिमारी। सोहँ साचा नाउँ, विरला कोई वपारी। गुरसिक्खां मन प्रभ का चाउ, हिरदे चढ़ी नाम खुमारी। दर आए होए परवान, बेमुख सुत्ते पैर पसारी। कलिजुग प्रगट विष्नूं भगवान, सारी सृष्ट अग्न सँघारी। भगत वछल महाराज शेर सिँघ, गुरसिख आए चरन द्वारी। जो जन आए तन मन प्रभ विच वसा के, आत्म तृप्ताए प्रभ दर्शन पा के। जो जन आए मन हँकार रखा के, गुरदर जाए पति गंवा के। जो जन आए भेख वटा के, बेमुख जाए मानस जन्म गंवा के। जो जन आए प्रभ चरन प्यासा, साध संगत प्रभ रक्खे मिला के। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाशे, सतिजुग साचा जावे ला के।

❊ ६ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

दुखी होए जगत बिल्लाए, प्रभ साचा नज़र ना आया। कंडा हउमे रिहा सताए, देह अंदर रोग लगाया। दकुखां सिर दुःख हो आए, जिन प्रभ तों मुख भवाया। भुक्खो भुक्ख कल कर वरताए, प्रभ अचरज खेल रचाया। जीव करन हाए हाए, की भाणा गुर वरताया। दर मंगण भिख ना पाए, मूंह काला निन्दक कराया। कोई विरला सिख रहि जाए, जिन सोहँ मन वसाया। मनमुख झूठे धन्दे लाए, मदि मास आहार बणाया। मन्दे मन्दी थायन पाए, प्रभ नर्क निवास दवाया। गुरसिख साचे घर जाए, सच तख्त प्रभ रचाया। देह छड्ड जोत मिल जाए, सचखण्ड वसे प्रभ चरन लगाया। बेमुख रोवे गुरमुख हस्से, प्रभ पूरे गेड़ चलाया। सच्चा राह सच प्रभ दस्से, कल वेला नेड़े आया। प्रभ पूरा विच संगत वसे, जिस मन दा भरम चुकाया। गुरसिख मनमुख हो ना दर ते नस्से, प्रभ संग माया ना किसे रजाया। गुरचरन प्रीत हिरदे प्रभ वसे, अमुल्लड़ा लाल विच देह टिकाया। हीरा हरि जीउ हरि रवे विच रवि सस्से, देह दीपक तेज़ वखाया। आत्म नाम जो रसना रसे, खोल्ह पड़दा प्रभ भेद मिटाया। हरि जीउ गुरसिक्खां घर वसे, ज्ञान ध्यान सच मार्ग दिखाया। निहकलंक वड अभिमान, जीवां माण गंवाया। महाराज शेर सिँघ जाणी जाण, जोत सरूप भेव छुपाया। कोई ना जाणे प्रभ के भेदा। सर्ब वखाणे

चारे वेदा। प्रभ जेवड अवर ना कोए, प्रभ साचा सैयदा। महाराज शेर सिँघ तेरे संग सोए, जिन्हां मिटावे विच्चों भेदा। प्रभ का भेद किसे ना जाणिओ। प्रभ का भेद गुरमुख पछाणिओ। प्रभ अभेद तख्तों लाहे राजे राणिउँ। प्रभ अछल अछेद ना जाणे ब्रह्म हरि ताणिउँ। सतिजुग साचा सोहँ वेद, आत्म रस जप रसना माणिउँ। कलिजुग जन्म ना पाए, महाराज शेर सिँघ जिन दरस दिखाणिउँ। बिन किरपा गुरदर ना आवे। साची दृष्ट गुरसिख करावे। आत्म भ्रष्ट निन्दक हो जावे। साचा इष्ट जो सोहँ रसना गावे। महाराज शेर सिँघ डोबे सृष्ट, गुरसिख कलिजुग आण तरावे। गुर तारे प्रभ तारनहारा। बेमुख सँघारे सर्ब विच वसणेहारा। गुरसिख मन अमृत बरखे जिउँ जल की धारा। चरन आ मिले वड्याई, गुरमुख लँघे पाप पहाडा। शब्द सरूप प्रभ खेल रचाई, चार कुंट होए उजाड़ा। कलिजुग अन्त कराया, जिउँ किरसान खेती वाड़ा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, सृष्ट सबाई चबाई दाढ़ा। डंक वज्जे प्रभ का डंकारा। रंक हस्से रोवे मायाधारा। निमाणयां घर हरि जू वसे, कलिजुग मिल्या पुरख अपारा। महाराज शेर सिँघ साचे घर वसे, जोत जगाए अपर अपारा। जाग जाग जीव जाग, गुर जग आया। जाग जीव जाग, कलिजुग कहर कहर वरताया। जीव जाग जाग, जमदूतां कलिजुग माण वधाया। जीव जाग जाग, सोहँ शब्द प्रभ धुन वजाया। जीव जाग क्यों सुत्ते भाग, माणस जन्म लाल गंवाया। जीव जाग जीव जाग, वेला जागण दा हुण आया। जीव जाग जीव जाग, क्यों झूठे धन्दे सतिगुरू भुलाया। जीव जाग जीव जाग, काल बाज झपट सिर आया। जीव जाग जीव जाग, कलिजुग तारन निहकलंक प्रभ नाम रखाया। जीव जाग जीव जाग, महाराज शेर सिँघ कलिजुग जोत प्रगटाया। जागो जीव वडभागो, सुणो प्रभ साचा रागो। वरते कहर सच सच सच मागो। महाराज शेर सिँघ डंक वजाया, सोए जीव जगत जागो। प्रभ साचा डंक वजायके, प्रभ पल्ला फेरे। करो दरस दर आएके, प्रभ वस्सया तेरे। ना जाउ पति लुहा के, कलिजुग पापी बैठा चार चुफेरे। प्रभ रिहा ना आपणा आप छुपा के, घर सिक्खां लाए डेरे। जन जाओ दर्शन प्रभ पा के। मिल गुरसिख सच मार्ग आईए। माण देवे प्रभ गुरमुख, जिस रसना सोहँ गाईए। कर दर्शन उतरे भुक्ख, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाईए। सुफल कराईए माता दी कुक्ख, संगत जो रल जाईए। महाराज शेर सिँघ ना होए बेमुख, चरन लाग तर जाईए। प्रभ मेले जुग विछुन्नयां, कल लिउ अवतारा। प्रभ मिले ना कलिजुग अंध्याँ, जिन्हां मन होए अन्धयारा। गुरसिक्खां मन तन सुन्न आ, प्रभ सुन्न समाधी खोलणहारा । महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, माया किया कलिजुग पसारा। माया डैण जगत खपावे, ना सोए रैण। जग मायाधारा अख्वावे, कलिजुग डोबे उलटे वैण। कोए ना उसनूं पार लँघावे, अन्तकाल ना कोई साक सैण। भैण भाई सर्ब छड्ड जावे, शत्रु मित्र पाए झूठे वैण। झूठी प्रीत

जगत रहि जावे, अन्तकाल प्रभ बिन ना आवे चैन। जमदूत सिर डण्ड चलावे, महाराज शेर सिँघ अन्तकाल तेरे बाझों अन्त कौण मिलावे। गुर सेवा सिख देवे फल। अन्तकाल घर आवे चल। जीव प्रभ जोत संग जावे रल। साचा घर जिथ्थे प्रभ वस्सया, गुरसिक्खा घर साचा मल। कलिजुग आए राह सच दस्सया, प्रभ कीना ना वल ना छल। बेमुख दरों क्यों नस्सया, कलिजुग जिन्हां हिरदे सोहँ वस्सया, देवे दरस आप अटल। प्रभ आपणी जोत प्रगटा के, देर लावे घड़ी ना पल। कलिजुग सच्ची खेल वरतदा, छिन विच जोत प्रगटाके। गुरमुख सदा हरि प्रभ तरसदा, प्रभ आया भेस वटा के। प्रभ शब्द मेघ बरसदा, साची देह विच सिख समा के। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, प्रगटी जोत कलिजुग आ के। प्रभ जोत जन जोत जगावे, छिन भंगर छिन अंदर सृष्ट जलावे। माटी काया होए सभ खंगर, ऐसा खेल जगत वखावे। प्रभ का भाणा वरते जग अंदर, कोए ना इस नूं मेट वखावे। बेमुख नाचे कलिजुग बन्दर, महाराज शेर सिँघ नज़र ना आवे। गुरसिक्खां तारन आ गया, दो जहान दा वाली। गुरसिक्खां सिर हत्थ टिका गया, बण बाग दा माली। फड़ बांहों पार तरा ल्या, ना लए दलाली। जिन चरनीं सीस निवा ल्या, घर जाए ना खाली। जिस प्रभ का माण तका ल्या, प्रभ मिले आप बनवाली। प्रभ फूलन बरखा ला ल्या, बरखे फूल जगे जोत निराली। महाराज शेर सिँघ लाज रखाया, गुरसंगत दर खड़ी सवाली। गुरसिक्खां
२५५ ०१ आस पूरदा, होए अन्तर ध्याना। सच रिदे विच निवासदा, दे ब्रह्म ज्ञाना। गुरसिक्खां सच शब्द है भाखदा, गुरचरन धूढ़ करन इशनाना। महाराज शेर सिँघ बचन सच आखदा, कलिजुग प्रगटी जोत विष्नूं भगवाना। विष्नूं भगवान भरम निवारे। सोहँ शब्द चलाए जगत अपारे। देवे वड्याई जो जन दर आए पुकारे। होए सहाई सर्ब दूख निवारे। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुण दाता, गुरसिक्खां घर आए काज संवारे। काज राज ताज सिर सतिगुर तेरे। आज काल भाज होए चार चुफेरे। सगल सबाई संगत बाज़ पै जाए हनेरे। महाराज शेर सिँघ सिर सोहे ताज, छत्र झुल्ले चार चुफेरे। चार कुन्ट प्रभ शब्द जणावे। सुत्ती सृष्ट सोहँ रसना गावे। नज़र ना देखे आत्म बिल्लावे। घनकपुर वासी चार कुन्ट शब्द जै कार करावे। एक रहे आप जगदीश, बाकी सभ दा माण गंवावे। गुरसिक्खां मन होए वधाई, महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे। जोत प्रगटे चहुं चक्की वन्नी । सोहँ शब्द सुणे सृष्ट कन्नी। प्रभ दरस ना देवे, कर बहाई अन्नीं । कलिजुग माण गंवाया, खाली चल्लया झाड़ के कन्नी। हँकारीआं माण गंवाया, प्रभ की जोत जगत ना मन्नी। कर वेस कलिजुग आया, वड दाता वड धन्न धन्नी। निहकलंक आप अख्वाया, छड्डी देह आप पतिवन्नी। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप हो आया, गुरसिक्खां सच मन मन्नी। मन तन मेल इक्क भरम दा, गुर भुल्ल ना जाई। संजोग होया धुर कर्म दा, कलिजुग रुल ना जाई। प्रभ २५५ ०१

भाण्डा भन्ने भउ भरम दा, जग वेख डुल्ल ना जाई। हुण वेला नहीं जे शर्म दा, पल्ला फेरो दयो दुहाई। हुण बेड़ा डुब्बा सच्चे धर्म दा, सोहँ नाओ सच बणाई। हुण वेला जे पैर धरन दा, रक्खे चरन प्रभ लै उठाई। गुरसिख जोत सच्ची ब्रह्म दा, सच जोत लै मिलाई। गुर पूरा भरमायां नहीं जे भरमदा, चरन लाग मिले वड्याई। हुण वेला नहीं जे नरम दा, सच तेग शब्द प्रभ आप उठाई। महाराज शेर सिँघ हुण दिन मनाए जरम दा, जेठूवाल नगर पार कराई।

८ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए

उत्तम जाती गुरसिख, जिन हरि प्रभ पाया। देवे दरस आप प्रभाती, निहकलंक दा जामा आया। आत्म देवे सतिगुर शांती, दे दरस भरम चुकाया। बेमुख लग्गे मनमुख काती, गुर पूरे ना दरस दिखाया। बांहों पकड़ उठाले राती, सोहँ जिन्हां नाम ध्याया। अमृत बूंद पीवे स्वांती, तन मन्दर विच प्रभ नज़री आया। महाराज शेर सिँघ सद जोत जगाती, जगमग जगे जिस रिदे ध्याया। जग जीव सो उज्जला, जिन हरि प्रभ मिल्या। दे दरस खोल्हे मन गुंझला, जोत सरूप जगत देह धरया। छड्ड देह जोत होए निर्मला, तारे सिख प्रभ आसा वरया। महाराज शेर सिँघ दर तेरा सांझा, सो तरया जिस दर्शन करया। दर्शन देख मन होए दयाला। प्रभ का भेख कलिजुग निराला। बिन सिख कोई सके ना वेख, ऐसा पाया प्रभ जंजाला। हँकारीआं निन्दकां लिखे लेख, अन्तकाल होए मूंह काला। गुरसिक्खां मन की टेक, अन्तिम होए आप रखवाला। महाराज शेर सिँघ सच जोती वेख, जोत सरूप करे खेल निराला। खेल करतार किसे भेत ना जाणया। साचा सतिगुर सच है दरबान, जन भगत पछाणयां। प्रगटी जोत प्रभ निराहार, हत्थ ना आवे राजिआं राणयां। गुरसिक्खां चरन प्रभ ओट, देवे दरस प्रभ माण निमाणयां। कलिजुग कढ्ढे सारे खोट, बेमुख पकड़ नर्क निवास दवाणयां। सोहँ शब्द लगाई चोट, चार कुन्ट जै जै जैकार कराणयां। जीव जन्त बिल्लाए जिउँ बोट, मिले जल ना खाण नूं दाणयां। सृष्ट घोटी शब्द घोट, तरे सो चले जो तेरे भाणयां। प्रभ का भाणा प्रभ ही जाणे। आदि अन्त प्रभ एक समाणे। प्रभ सरूप अगम्म ना कोई जीव पछाणे। महाराज शेर सिँघ नज़र ना आवे, जीव जन्त दे विच समाणे। जीव जन्त विच प्रभ का वासा। ना कोई जाणे ना कोई पछाणे, आत्म जीव ना होए निरासा । ना कोई रसना गावे, प्रभ पूरा दुष्ट खपाए, साध संगत सदा है पासा। सोहँ शब्द जो रसना गाए, गुरदर कदे ना जाए निरासा। अन्तकाल कहर जग वरते, गुरसिक्खां गुरचरन भरवासा। बाहों पकड़ पार कराए, महाराज शेर सिँघ जपया जिन स्वास स्वासा। गुरसिख प्रभ दे वड्याई, उत्तम कलिजुग विच साधन सन्ता। गुरसिख प्रभ दे वड्याई, जोत

जगावे प्रभ भगवन्ता। गुरसिख प्रभ दे वड्याई, जिन मन आदि ना अन्ता। गुरसिख प्रभ दे वड्याई, सचखण्ड वासी खण्ड सच रहन्ता। गुरसिक्खां प्रभ जोत जगाई, कलिजुग सुहाई रुत्त बसन्ता। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, गुरसिक्खां मुख उज्जल करंता। गुरदर आए भरम चुकाया। प्रभ अबिनाशी सच शाह पाया। सर्ब घट वासी जोत सरूप विच देह समाया। महाराज शेर सिँघ संगत तेरी दासी, दरस दान दे सिख तराया । प्रभ का दरस उत्तम न्यारा। कर दरस जीव पार उतारा। अमृत बरस प्रभ लाहे आत्म तप्त बुखारा। गुरसिख तेरी हिरस, सोहँ शब्द दे नाम अधारा। नाम अधार जीव जो करे। आवे जावे ना जन्मे ना मरे। सतिगुर पूरा प्रगट्या, लाग चरन गुरसिख तरे। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, सिमरो हरे हरि हरे। हरि हरि हरि प्रभ जोत समानो। प्रभ की जोत हरि नाम वखानो। जोत ईश्र हरि एक वखानो। कलिजुग महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार सच जानो। निहकलंक खेल कर बहु रंगा। कलिजुग पकड़ चलाया, अन्तवार तन पैरों नंगा। सतिजुग सच चलाया, गुर पूरे सच संगा। साध संगत नाउँ तराया, जिन्हां दरस दान प्रभ मंगा। महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाया, पुरी घनक जाणे इक्क सिँघ रंगा। रंगा सिँघ रंग रंगीलड़ा, रंग प्रभ का जाणया। सतिगुर साचा समझ के, चरन चवर करे होए निमाणयां। ना जन्म गंवाया भरम के, ईश्र जोत विच जोत मिलाणयां। महाराज शेर सिँघ गुरसिख उपाए, लै जाए सचखण्ड टिकाणयां। सचखण्ड साचा जिथ्थे प्रभ जोता। जोत सरूप आप कोए होर ना होता। गुरसिख वड प्रताप, कलिजुग जगाया सोता। प्रभ मिल्या घर आप, दुरमति पाप देह तन धोता। सोहँ दे के जाप, आत्म देवे रस सरोता । महाराज शेर सिँघ मारे तिन ताप, गुरसिख नर्क ना खावे गोता। गुरसिख मिले आप प्रभ, अन्तिम घड़ी ना लावे पल। जोती जोत मिलावे प्रभ, जिउँ मिले जल विच जल। गुरसिख जन्म ना होवे, विच जोत प्रभ जावे रल। महाराज शेर सिँघ बाज ना कोए होता, गुरशब्द मन शब्द चलाया होए जोत सरूपा। वाजा पवण वजाया, विच देह अन्ध कूपा। गुरसिक्खां भरम चुकाया, प्रगटी जोत स्वच्छ सरूपा। गुर पूरे गुरसिख वड्आया, दर्शन पाया जिस विच अन्ध कूपा। हरि हिरदे नाम वसाया, कलिजुग प्रगटे प्रभ वड भूपा। महाराज शेर सिँघ संगत विच आया, ना कोई रेख ना कोई रूपा। जो जन वेखे प्रभ का रंग। दरस दान जो रहे मंग। मानस जन्म ना होए भंग। साचा दर गुरसिख मंग। गल विच पलड़ा पायो, ना जग विच संग। सोहँ दे ज्ञान, चाढ़ जाए प्रभ आत्म रंग। बांहो पकड़ वखाया, प्रभ मिलने का सौखा ढंग। जन अनहद शब्द वजाया, निकले धुन जिउँ तूर तुरंग। महाराज शेर सिँघ देवे भगत भण्डारा, साध संगत जो मंगणा दर मंग। गुर पूरा दर मँगीए, जिथ्थे तोट ना आवे। घर साचा कदे ना संगीए, ना खोट पल्ले पावे। साध संगत मिले रंग रंगीए, अचरज

खेल रचावे। कदे मेल ना होवे कुसंगीए, गुरसिख परे हट जावे। ईश्र जोत बहुरंगीए, जुगो जुग जुग जोत प्रगटावे। महाराज शेर सिँघ घर पूरा मँगीए, गुरसिक्खां दान नाम दवावे।

❋ ६ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❋

गुरसिख सच्चा वणज वपार कर, कल प्रभ का नाउँ। जन्म मरन दा बेड़ा पार, मिले साचा थाउँ । मन उत्तम एह विचार कर, प्रभ प्रगटे अगम्म अथाहो। विच आत्म प्रभ का वास कर, ना झूठा डंक वजाउ। विच्चों हउमे कंडा नास कर, मिल साध संगत गुण गाउ। वड्डा दाता आपणा दास कर, नाम वणज कर जाउ। महाराज शेर सिँघ जगत प्रभ दाता, सिमर सिमर सिमर प्रभ सुख पाउ। सिमरो सिमर सिमर प्रभ रसना। सिमरत नाम हिरदे प्रभ वसणा। देह प्रभ वसदा, मार्ग सच बिन किसे ना दस्सणा। महाराज शेर सिँघ आए घर, जोत सरूप सर्ब थाएँ वसणा। सर्ब थांएँ प्रभ इक्को रंगो। नाम दान प्रभ आत्म ज्ञान, गुर दर ते मंगो। विच जहान जीव टुट्ट जाण, जिउँ काची वंगो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सवाली दरस दान मंगो। गुर दरबार होए गुरसिख सवाली। शब्द नाम मन चाढ़े लाली। थायन पाई सर्ब घाल जो गुरसिक्खां घाली। तोड़ जंजाल महाराज शेर सिँघ विच शब्द मिलाली। हरि भगत हरि दुआरे वसे। हरि भगत विच हरि जीउ वसे। कलिजुग भगत गुरसिख प्रभ दस्से। बेमुख सारे चांद जिउँ मस्से। थायन ना पायन गुरदर तों जायन नस्से। भगत जनां हरि प्रभ आपणा भेव सभ दस्से। सोहँ नाम जन रसना गाउ, महाराज शेर सिँघ विच हिरदे वस्से। गुरसिख ना देवे प्रभ को कंड। गुरसिख ना होए आत्म रंड। गुरसिख लोवे विच ब्रह्मण्ड। गुरसिख चरन जग धोवे विच नौं खण्ड। गुरसिख ना सोवे विच वरभंड। गुरसिख बोवे नाम अखण्ड। महाराज शेर सिँघ बेमुखां सिर लावे डण्ड। गुरमुख माने प्रभ का कहणा। गुरसिख भाणा हरि का सहिणा। गुरसिख साचे प्रभ चरन विच रहणा। महाराज शेर सिँघ जन्म जन्म दा देवे लहणा। लहणा लाह गुरसिख प्रभ को दरसणा। सच्चा गहणा देवे गुरसिख, नाम सोहँ रसना जपणा। बेमुखां कल उलटे वहिणा, सचखण्ड गुरसिक्खां वसणा। महाराज शेर सिँघ तेरा भाणा सहिणा, बेमुख रोवण सिक्खां हस्सणा। गुरसिख मन शांत प्रभ दरस दिखावे। गुरसिख इकांत सोहँ रसना गावे। गुरसिख पावे दात कर निमस्कार जो सीस झुकावे। महाराज शेर सिँघ सोए ना दिन रात, गुरसिक्खां प्रभ दरस दिखावे। देवे दरस गुरसिख दर आ के। गुरसिख ना जाणे प्रभ आया भेस वटा के। सच शब्द वखाणे, विच रसना जोत समा के। भुल्ले जीव अञ्याणे, प्रभ आया जोत प्रगटा के। महाराज शेर सिँघ कमले होए सयाणे,

जेहड़े चरनीं डिग्गे आ के। गुर पास ना चले चतुराई। आपणी आप जीव करे वड्याई । दुष्ट दुराचार प्रभ देवे सज़ाई। आप दुरमति होए ख्वार, सुध बुध भुलाई। आत्म करे विकार महाराज शेर सिँघ सुध रहे ना राई। जीव माण ना कर, जग सद नहीं रहणा। गुरसिक्खा गुरचरन ध्यान कर, सच साध संगत विच बहिणा। विच देह प्रभ का वास कर, छड्ड झूठे साक सैणा। महाराज शेर सिँघ दुक्खां नास कर, गुरसिख चरन लाग दु:ख क्यों सहिणा । दुखी दु:ख निवार, देह होए अनरोगा। पापी दुष्ट सँघार, मन होए नचिन्दया सोगा। झूठी देह सच्ची दातार कर, होर दर नहीं मंगण जोगा। महाराज शेर सिँघ बेड़ा पार कर, दु:ख बड़ा सिक्खां ने भोगा। गुरमुख दु:ख ना उतरे, कर तीर्थ इशनाना । गुरमुख भुक्ख उतरे, देवे दरस आप भगवाना। गुरसिख मिले प्रभ बप्प बप्पड़े, इक्क बिन होर ना दूजा जाना। महाराज शेर सिँघ विच साध संगत उतरे, दरस दान देवे सिर दाना। नैण निर्मल जग निराले, जिन्हां प्रभ दर्शन करया। आत्म सुख पी प्रेम प्याले, गुरसिख तन मन ठरया। होए स्वास सखाले, जिन्हां प्रभ रसना उचरया। महाराज शेर सिँघ सोहँ नाले, गुरसिख चरन लाग जगत तरया।

❊ १० चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

सच्ची मन वजाए धुन, प्रभ बख्शंदा। जीव समाधी खोल्हे सुन्न, शब्द ज्ञान प्रभ दिन्दा। प्रभ का दर्शन उत्तम गुण, जीव विच जहान करिंदा। गुरसिख जग प्रभ लैणे पुण, जगत सबाई छाह करिंदा। महाराज शेर सिँघ आत्म लाए रुण झुण, अमृत नीर सदा बरसिंदा। अमृत मेघ लेवे गुरसिख प्यासा। उत्तम होए निर्मल जीए, मात गर्भ ना होवे वासा। गुर चरन लाग सिख जन थीए, प्रभ की ओट चरन भरवासा। बेमुख पावण आपणे कीए, साध संगत प्रभ दासन दासा। महाराज शेर सिँघ नाम रस पीए, अन्तिम होए बन्द खुलासा। बंधन बन्द तुड़ाईए, जगत अवतरा। टुट्टी गंढु वखाईए, कल देर ना लाए जरा। हिरदे सच वसाईए, आपणे नाउँ प्रभ हरि हरा। विछड़ कदे ना जाईए, जो आया गुर दरा। महाराज शेर सिँघ लाज रखाए, जो चरनीं आए परा। जो जन पूजे ईश्र कँवल चरना। तिस जन सूझे आपणा जीवन मरना। हरि प्रभ हरि हर रंग बूझे, हरि भाणा मन्न जग तरना। कलिजुग कहर होए जग भारी, गुरसिक्खां मूल ना डरना। जीव बिल्लायन दुष्ट दुराचारी, नर्क निवास प्रभ करना। गुरसंगत गुरचरन प्यारी, महाराज शेर सिँघ चरन निवास है करना। सतिवादी सतिजुग लाया, शब्द साचा चाले। बेमुखां खेह कराया, भगत जनां प्रभ सदा है नाले। कूड़ा माण गंवाया, कलिजुग भेख कहर वटाले।

नज़री नज़र ना आवे, प्रभ साचा जोत प्रगटाले। विच देह जोत जगावे, जो जन महाराज शेर सिँघ रसना ध्याले। बेमुखां जन्म गंवाया, कलिजुग विच हीरा। प्रभ ज्ञान गोझ रखाया, हउमे लाई देह विच पीड़ा। माया पड़दा पाया, मायाधारी होए विष्टा कीड़ा। गुरसिक्खां नाम ध्याया, निर्मल सुखिया आत्म जीअड़ा। जिन सोहँ रसना गाया। उठ जाग जीव अञ्याणयां, कल सतिगुर आया। कर दरस चरन निमाणयां, क्यों माया भरम भुलाया। जाए सुत्तयां रैण विहाणयां, प्रभ डंक शब्द लाया। महाराज शेर सिँघ जीव जन्त जगाए, आपणा भेत खोल्ह वखाया । जो जन प्रभ की महिंमा जाणे, नज़री आवे जोत सरूप। जो जन प्रभ की महिंमा रसन वखाणे, आत्म होवे निर्मल सूच। बेमुख लाए कल टिकाणे, मौत कराए जगत कूच। गुरसिख हरि रंग माणे, प्रभ प्रगटे ऊँचो ऊँच। महाराज शेर सिँघ तेरी तूंहे जाणे , कोए ना जाणे तेरा रंग ना रूप। रंग रूप प्रभ नज़र ना आवे। जोत सरूप विच सिख समावे। एही महिंमा शब्द रूप जणावे। शब्द ज्ञान अज्ञान अन्धेर मिटावे। धर ध्यान अबिनाशी प्रभ नज़री आवे। कलिजुग होए सुघड़ सुजान, महाराज शेर सिँघ जिस चरनीं लावे। दए वड्याईआं चार जुग, जग मिलण वधाईआं। धन्न धन्न धन्न गुरसंगतां, गुरदर ते आईआं। रिख मुन जायण मन्न, बहत्तर भगत प्रभ जोत जगाईआं। लिख्त कराए होए प्रसन्न, रसना देवे भगत वड्याईआं। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, निहकलंक संग प्रीतां लाईआं। महाराज शेर सिँघ उत्तम दरस, कर दरस सभ भुक्खां लाहीआं। गुरसिख भूख प्रभ के चरना। उतरे दूख जन लागे शरना। मन होए सूख दे दरस प्रभ ब्रह्म ज्ञानी करना। महाराज शेर सिँघ साचा भूप, गुरसिक्खां छत्र जिस धरना। गुरसिक्खां दे वड्याई, छत्र झुलांयदा। राजे राणे माण गंवाई, रंक करांयदा। भुल्ली फिरे लोकाई, प्रभ साचा नज़र ना आंयदा। दुखी जीव रहे बिल्लाई, प्रभ बिन कौण आत्म तृखा बुझांयदा। गुरसिक्खो तुहानूं मिले वधाई, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटांयदा। ईश्र जोत जगत निराली। कलिजुग प्रगटे दो जहान दा वाली। नज़र ना आवे प्रभ, जोत सरूप दीपक देह बाली। महाराज शेर सिँघ देवे नाम दान, संगत खड़्ही दर सवाली। ऊँचा दर दर दरबार, जिथ्थे प्रभ वसे। सच्चा सच घर बाहर, जोत जगाई जिथ्थे रव सस्से। सोहँ शब्द होए धुन्कार, साचा राह प्रभ का दस्से। गुरसिख सोहिण दरबार, प्रभ साचा सदा जिथ्थे वसे। महाराज शेर सिँघ नर अवतार, आपणा भेव ना बेमुख दस्से। विरला कोए गुरसिख प्यारा। अमृत देवे जिस प्रभ भण्डारा। अमृत सोमा चले देह न्यारा। ईश्र धरे कर्म जाण, करे दीपक देह उज्जयारा। गुरचरन लाग तरे झूठे होए सच खरे, जिन्हां मिल्या नाम सहारा। महाराज शेर सिँघ जिस किरपा करे, कलिजुग मिल्या सचखण्ड दुआरा। सचखण्ड गुरसिख जाणो, जिथ्थे प्रभ वस्सया। हरि का रंग हरि दर ते माणो, जोत सरूप विच देह प्रभ वस्सया। सोहँ रसना सच शब्द वखाणो, अमृत

२६० ०१

नाम सच रसना रस्सया। महाराज शेर सिँघ सद निज वखाणो, गुरसिख विच सदा प्रभ वस्सया। वसे वसणहार, किसे नज़र ना आवे। दस्से दस्सणहार, जित प्रभ दया कमावे। प्रभ लेखा लिखणहार, गुरमुख लेख लिखावे। सच्चा शाह विच देह वेखणहार, बैठ अडोल देह रथ चलावे। जीव सदा है भुल्लणहार, प्रभ अभुल्ल विच देह समावे। बेमुख जुग जुग रुलणहार, गुरसिख चरन लाग तर जावे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तृप्तावे, बेमुख कल काग वांग कुरलावे।

✻ ११ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

गुर नाउँ रसना गायके, हो जाए जीव ब्रह्म। हरि हिरदे सदा वसायके, कल पाए पारब्रह्म। प्रभ सच्चे सिउँ चित्त लायके, जुग ला ल्या दम। चरन सीस नवायके, सुफल बणाया जन्म। नाम रसना रस काया पलटावे। बाल्मीक भीलणी जाया, रसना जप अमरा पद पावे। रिख भरिंग हरि गुण गाया, होवे विस्माद अंग समावे। जिन महाराज शेर सिँघ ध्याया, फिर जन्म ना पावे। जन्म मरन प्रभ खेल रचाई। ऊँच नीच नीच ऊँच विच भेत रखाई। छत्री ब्राह्मण वैश शूद्र में रिहा समाई। प्रभ की जोत ब्रह्म सरूप विच देह समाई। घर साचा शाह ना पाया, जगत भुल्ली फिरे लोकाई। प्रभ आपणा भेस वटाया, जोत निरँजण विच देह जगाई। महाराज शेर सिँघ सिउँ चित लाया, आत्म दीपक देह जगाई। जगे दीप देह तन अंदर। होए उज्जयारा तन सोहे साचा एह मन्दर। जिथ्थे वसे आप निरँकारा, शब्द सुरत खोल्हे मन जंदर। कुंजी नाउँ लाए गुरसिख प्यारा, बेमुख कलिजुग नाचे जिउँ बन्दर। नज़र ना आवे अगम्म अपारा, महाराज शेर सिँघ वसे घट अंदर। पावे जन कर निगम विचार। आत्म ध्यान गुर चरन में जाण। मधु माधो सद इक्क समान। भरमत भरमत जीव बिल्लायन, नज़र ना आवे विष्नूं भगवान। बेमुख भुल्ले दर दर धक्के खाण। कलिजुग रुले जिउँ कूकर सवान। गुरसिख मिल साध संगत तर जाण। महाराज शेर सिँघ विच दरबारा, गुरमुख वर लै उथे जाण। गुरमुख नाम जगत में जित नाम दविंदा। कलिजुग साचे भगत ने जिन्हां मिल्या प्रभ बख्शिंदा। कलिजुग अन्त वक्त जे, चल्लया उड जिउँ तरवर परिंदा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट्या सख्त जे, बेमुखां दरस ना दिन्दा। बेमुख सभ बप्पड़े, मदि मास अहारी। जीव जन्त रत्त रतड़े, कल होए ख्वारी । छड्ड नाम मदि मतड़े, जूए गए जन्म हारी। अन्तकाल गए जग लतड़े, धर्म राए लगाए डन्न भारी। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, गुरसिक्खां पैज संवारी। गुरसिक्खां देवे माण सर्ब घट वासी। गुरसिक्खां प्रभ का माण मिले प्रभ अबिनाशी। जिन लाया गुरचरन ध्यान, मुक्त जुगत हो कल की दासी । जिन सोहँ जपया नाम, सच्चा शाह स्वास स्वासी। सच दरगाह

पाए ठाउँ, महाराज शेर सिँघ कट्टे गलों जम की फाँसी। हरि प्रभ नाम अन्त सुहेला। अन्त आत्मा होए अकेला। जीव जोत दा साचा मेला। जोत जगाए प्रभ अचरज खेला। दर्शन पायन जो जन आ के, कलिजुग होए प्रभ संग मेला। महाराज शेर सिँघ जगत प्रभ दाता, करो दरस करन दा वेला। कर दरस प्रभ मन तन ठरे। आत्म शांत तृखा अग्न बुझाई, कलिजुग मिले आप नर हरे। साची जोत विच देह जगाई, गुरमुख पूरा ना कलिजुग डरे। गुर चरन लाग मिली वड्याई, जो जन आए प्रभ दरे। बेमुखां सिर शाही पाई, महाराज शेर सिँघ जग धरनी धरे। करे आप जो प्रभ करना। जगत विरला कोए विच जून विहरना। सोहँ जप जाप अन्त कलिजुग तरना। राउ राज माण अन्तिम कल हरना। एक जोत प्रभ एक सरूपा, ऊँच नीच का भरम निवरना। चार कुन्ट होए जै जै जैकार, बाकी नास सभन दा करना। हाहाकार होए चहुं कूटी, औखा बाण सोहँ जग जरना। वक्त गंवाया मदि रस, अन्तिम जीव होए मरना। महाराज शेर सिँघ नर नरायण, गुरसिख चरन लाग जग तरना। चार वरन प्रभ जोत प्रगासे। कलिजुग आया भेत छुपाया, बैठा वेखे जगत तमाशे। भरम भुलाया जगत रुलाया, बेमुखां जन्म गंवाया विच हासे। जिन्नां हरि नाम ध्याया, दर घर साचा पाया, सतिगुर बैठा सदा है पासे। मदि मास जिस रसना लाया, विच विकार देह चलाया, सच धर्म दोए नासे। गुरचरन जिन चित लाया, प्रभ शब्द सुण दरस दिखाया, दे आत्म सद प्रभ वासे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक हो आया, भरम भुलेखे जगत भुलाया, गुर पूरे सद बलि बलि जासे। बलि बलि बल गुर पूरे जिन कलिजुग पा ल्या। चल चल चल प्रभ चरन है हज़ूरे, जिन सतिजुग साचा ला ल्या। मिल मिल मिल दर सतिगुर पूरे, जोत सरूप जोत जगत प्रगटा ल्या। रल रल रल विच गुरसिख सूरे, जिन माणस जन्म सुफल करा ल्या। वाजे वज्जे मन अनहद तूरे, सोहँ शब्द जिन रसना गा ल्या। महाराज शेर सिँघ चरन बलिहारी, जिन विछड़यां मेल मिला ल्या। विछड़े मेल मिलाए, भगतां तारदा। कोट जन्म दे पाप, छिन मांहि मारदा। सच्चे सच दरबार, जोत प्रभ धारदा। गुरसिख उतरे पार जो चरन निमस्कारदा। महाराज शेर सिँघ लैंदा सार, कोए ना जाणे रंग करतार दा। नाम करतार रंग ना कोए। जोत सरूप बिमल जोत बिलोए। जगमग जोत जगे हर दम, खण्ड सच प्रकाश जोत होए। जोत सरूप जगत सर्ब वस्सया, गुरमुख विरला जाणे कोए। महाराज शेर सिँघ कल आपणा भेव ना दस्सया, भुल्ली सृष्ट कल अन्तिम रोए। प्रभ कलिजुग भरम निवारया, दे ब्रह्म ज्ञाना। प्रभ गुरसिख घर तारया, बैठ विष्नूं भगवाना। आवण जावण सर्ब संवारया, प्रगट द्वापर काहना। गुर पूरे सद वारया, महाराज शेर सिँघ निहकलंक पहरया जामा। आत्म तृखा तां मिटे, जां प्रभ भरम चुकाए। साचा शब्द मन रटे, तां हउमे माण गंवाए। गुर पूरा विके ना विच हट्टे, मायाधारी खेल जो रचाए। लक्ख

पापी कलिजुग मर मिटे, प्रभ साचा मुख छुपाए। लक्ख झूजन कलिजुग जग कटे, सर्ब नर्क निवास दवाए। महाराज शेर सिँघ शाह इक्क वसे, जांह देखां तां नज़री आए। नैण गंवाया नूर प्रभ निरवैर दा। प्रभ साचा आसा पूर, कलिजुग वरते हुक्म कहर दा। सोहँ शब्द करे चूर, बेमुख ना एथे ठहिरदा। महाराज शेर सिँघ गुण भरपूर, बरसे मेघ अमृत मेहर दा। मेहर कर तन मन मेल दे। बुझी आत्म देह दीप, नाम साचा प्रभ तेल दे। दर तेरे प्रभ आ गए, बेड़ा खण्ड सच विच ठेलदे। कोट जन्म दे विछड़े, कर किरपा छिन विच मेल दे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां नाम देण दे। गुरसिख नाम निरँजण पाओ। निर्मल नाम बाती विच देह जगाओ। उत्तम झाकी तन अंदर पाओ। मिटे अज्ञान अन्धेर, ज्ञान गुर शब्द जगाओ। सोहँ शब्द रसना गा के, महाराज शेर सिँघ तन विच्चों पाओ। देह विच वसे प्रभ वसणेहारा। नज़र ना आवे बैठा कर पसारा। पर्दा कर इक्क थांए न्यारा। भगत जनां दरसावे आत्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ जोत जगावे, मिले आत्म अगम्म अपारा। प्रभ की जोत कोई निर्धन पावे। प्रभ की जोत विच गुरसिख समावे। प्रभ की जोत तन मन धुन शब्द वजावे। प्रभ की जोत प्रभ अबिनाशी घर मांहि दिखावे। प्रभ की जोत जीव अन्त विच जोत समावे। प्रभ की जोत प्रगट कलिजुग शेर सिँघ महाराज नाम रखावे। जोत प्रगट होए निहकलंका। सोहँ शब्द चार कुन्ट का डंका। भरम मिटावे सर्ब जीव मन का। दु:ख दर्द हटावे, महाराज शेर सिँघ दरस कर तन का। दरस पेखन गुरसिख नैण निराले। गुरसिख ऊँच अगम्म जिउँ पर्बत हिमाले। प्रभ की जोत ब्रह्म विच सिख समाले। महाराज शेर सिँघ कहिए धन्न धन्न, सर्ब जीआं दी करे प्रितपाले। प्रितपाला प्रभ गुण निधाना। चरन लाग मूर्ख मुग्ध होए चतुर सुजाना। कलिजुग पूरन भाग, सोहँ शब्द जिन्हां गुर माना। गुरसिख सदा रहे है जाग, जिन्हां मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। भगत भगवान इक्क रंग। आदि जुगादि प्रभ भगतन संग। छोड सृष्ट, भगत दर साचा मंग । कलिजुग प्रगटे प्रभ त्रैलोकी नंद । महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द सद गाओ छन्द। सोहँ शब्द प्रभ का रूप। सोहँ शब्द तारे विच अन्ध कूप। सोहँ शब्द शब्द बिन रूप। सोहँ शब्द देवे महाराज शेर सिँघ स्वच्छ सरूप। सोहँ शब्द देवे जगत भर भर भरतम्बरा। सोहँ शब्द देवे खपाए वड्डे पतम्बरा। सोहँ शब्द देवे लगाए विच अग्ग अंबरा। महाराज शेर सिँघ खेल रचाए, जोत प्रगटाए छिन भंगरा। छिन भंगर प्रभ जोत प्रगटावे। छिन मांहि आवे छिन मांहि जावे। जे कोई वेखे नज़र ना आवे। शब्द ज्ञान दे सिख समझावे। जोत सरूप जोती जोत जगावे। रंग रूप बिन तीन लोक रहावे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख धाम सचखण्ड बणावे। सचखण्ड धाम तेरा गुरसिक्खा। दर घर मिले ना ठाउँ बेमुखा। चरन कँवल मिल जाउ मन रंग होए सन्मुखा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई,

करो दरस लाहो मन भुक्खा। आत्म भुक्ख प्रभ दरस चरना। आत्म सुख प्रभ दरस करना। सोहँ शब्द विच अन्ध कूप सर्ब दुखड़े हरना। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, सति सरूप अन्त गुरसिख करना।

✻ १३ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

जगत भुलेखा भरम दा, गुरसिख भुल्ल ना जाणा। एह वेला सच्चे कर्म दा, नहीं कुकर्म कमाणा। प्रभ बेड़ा लाओ धर्म दा, पार डुल ना जाणा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आया, मेल मिलाए जन्म जन्म दा। जन्म अमोलक माणस, गुर दर्शन पा के। बेमुख मारे छाण के, विच जन्म गंवाया हासे। गुरसिख पकड़ पछाणके, कीए बन्द खुलासे। महाराज शेर सिँघ गुण निधान, गुरसिख सद बलि बलि जासे। गुरचरन बलिहार गुरसिख, सचखण्ड दुआरा। कलिजुग जावे तार, विच देह जोत कर अवतारा। बेमुख होए ख्वार, दुःख लग्गा भारा। बांहों पकड़ डुबायन, जल की धारा। महाराज शेर सिँघ दरस ना पायण, मात प्रगट्या नैण मुँधारा। नैण मुँधार प्रगटे निरवैरी। जोत सरूप वरताए जगत कहरी। बेमुख पकड़ पछाड़िअन ना लावे डेरी। महाराज शेर सिँघ जग अवतार, जुग चौथा चौथी वेरी। गुर घर सच्चा धाम है, जिथ्थे साचा प्रभ वस्सया। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ छड्ड के, कलिजुग गुरसिक्खां राह सद दस्सया। बांहों पकड़ तराया, अन्तकाल प्रभ हिरदे वस्सया। महाराज शेर सिँघ तेरी शरन आई, कलिजुग बेमुख हो के जग जाए नस्सया। जोत सरूपी पवण प्रभ नज़र ना आया। कलिजुग जामा धार के, झूठी सृष्ट पाई माया। सोहँ बाण मार के, बिन दैतां जगत घाया। महाराज शेर सिँघ भगत पछाण के, चरनीं आण लगाया। भगत वछल प्रभ बीठला, सोहे सच दरबारे। नैण खोल्ह साचा प्रभ डीठला, गुरसिख कर निमस्कारे। बेमुख कलिजुग कौड़ा रीठला, अन्तकाल नर्क निवास दवाए। सोहँ शब्द जपो मन मीठला, आत्म जोत जोत चमत्कारे। महाराज शेर सिँघ साचा प्रभ, गुरसिख ढहि गुरचरन दुआरे। गुरचरन प्रीत अमर हो रहणा। गुरसिख रक्ख साची नीत, मन्न प्रभ का कहणा। झूठी एह जगत की प्रीत, जगत बैठ ना किसे रहणा। गुरदरस मन ठांडा सीत, सोहँ शब्द दे साचा गहणा। बेमुख उलट चलाई रीत, अन्तकाल दुःख डाहढा सहिणा। महाराज शेर सिँघ तेरी साची प्रीत, साध संगत विच प्रगट बहिणा। प्रगट जोत धरे ध्याना। आदि अन्त विष्नूं भगवाना। चरन लाग होए मूर्ख सुघड़ सुजाना। सोहँ जपो रसना जाप, आत्म सुख महां ज्ञाना। महाराज शेर सिँघ वड प्रताप विच दो जहानां। महाराज शेर सिँघ तेरा प्रताप। जोत सरूप रहे दिन

२६४
०१

रात। आकाश पाताल जोत सरूप विच मात। सोहँ शब्द चला के, गुरसिक्खां देणी दात। आपणा भेस वटा के, निंदा कराए भांत भांत। जोत सरूप विच देह दे, सदा बैठ रहे इकांत। निहकलंक नाउँ रखायके, गुरसिक्खां मन रक्खी शांत। कलिजुग जोत प्रगटा के, गुरसिक्खां दे वड्याई। नाउँ निरँजण आप रखा के, आपणा भेत ल्या छुपाई। गुरसिक्खां जोत जगा के, कलिजुग दे रिहा वधाई। बेमुखां नष्ट करा के, देह उलटी मति पाई। महाराज शेर सिँघ नाम रखा के, कलिजुग चल्लया भगत वड्याई। गुरसिख प्रभ का रूप है, जे भाणे चल्ले। गुरसिख विच वसदा प्रभ भूप है, कलिजुग बिल्लाए मूल ना हल्ले। साचा सिख मेरा सरूप है, अन्तकाल सचखण्ड दर मल्ले। बेमुखां कलिजुग अन्ध कूप है, माणस जन्म कलिजुग गंवा चले। महाराज शेर सिँघ स्वच्छ सरूप है, गुरसिख नाम निधान दर लै चले। दर दरवेश आप प्रभ, घर सिक्खा आवे। सुत्तयां पकड़ उठाल के, जोत सरूप प्रभ दरस दिखावे। बुझी आत्म दीपक बाल के, विच देह दे जोत जगावे। कलिजुग जगत पछाण के, गुरसिक्खां टुम्ब उठावे। सोहँ शब्द बाण मार के, महाराज शेर सिँघ सृष्ट घावे। सृष्ट इष्ट नर नरायण भुल्लया। कलिजुग आए प्रभ तोल पूरे तोल्लया। बांहों पकड़ चलाया, आप अडोल कलिजुग जीव जगत सभ डुल्लया। बांहों पकड़ धर्म राए वखाया, बेमुखां नर्क द्वार सद खुल्या। गुर साचे शब्द चलाया, महाराज शेर सिँघ आप अभुल्ल जगत सभ भुल्लया।
२६५ ०१ भुल भुल भुल रुल रुल रुल तुल तुल तुल कुल कुल कुल कल वणजारया। सृष्ट गई भुल्ल, सुत्ती पैर पसारया। कलिजुग २६५ ०१
माया अन्धेरी गई झुल्ल, जगत सँघारया। महाराज शेर सिँघ धर्म राज दित्ती खुल्, नर्क निवार भर नर्क भण्डारया। नर्क निवासी कलिजुग सर्ब जीव जन्ता। गुरसिक्खां जोत तरासी, प्रभ विष्नूं भगवन्ता। गुरसिक्खां बलि बलि जासी, सभ साधन सन्ता। जुग चार जग जस गासी, देवे माण बेअन्ता। सोहँ जो रिदे ध्यासी, मिले सच प्रभ कन्ता। जन दर दर्शन जो पासी, मेल मिलाए प्रभ मेल मिलन्ता। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाशे, जोत सरूप शब्द लिखन्ता। शब्द शब्द शब्द प्रभ रंग। शब्द सरूप कर प्रभ का संग। शब्द साचा गुरदर सिख मंग। शब्द शब्द शब्द मन चाढ़ रंग। शब्द शब्द शब्द अमृत दे वगाए गंग। शब्द शब्द शब्द दान गुरसिख मंग ना संग। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, सृष्ट खपाए विच कलू जंग। दरस दान दर मंगणा, सच सज्जण तेरा। दे दरस चाढ़ मन रंगणा, मजन गुर तेरा। चरन प्रीत विच होए भंग ना, कर किरपा ला ना देरा। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खा मन संग ला, विच आत्म कर वसेरा। आत्म हर विच हरि वस के, कर मन हरयावला। तेज़ विच रवि सस दे, आत्म रंग सच रंग रंगावला। गुरसिक्खां जग जस दे, मन वस कृष्न सावला। महाराज शेर सिँघ सच राह दस्स दे, गुरमुख ना होवे बावला। सृष्ट सबाई बांवली, गुरसिख स्याणा। सृष्ट होई उतावली, चले प्रभ

का भाणा। जीव भन्ने जिउँ मृगावली, सोहँ शब्द चलाया बाणा। गुरसिक्खां मन हरयावली, अमृत मेघ प्रभ बरखाणा। प्रगटी जोत कृष्न सांवली, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाणा।

✻ १४ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✻

प्रभ पूरा भगवन्त, कलिजुग तारदा। गुरसिक्खां शब्द मन मंत, जन्म जन्म संवारदा। ऊँचा किया विच साध सन्त, कट जंजाल कलिजुग हारदा। दरस देवे प्रभ बेअन्त, जन्म मरन संवारदा। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुणवन्त, पकड़ बांहों गुरमुख तारदा। गुरमुख रैण नींद ना आवे, बेमुख सोया कल अन्धयारा। गुरसिख मन चैन ना आवे, प्रभ मिले अगम्म अपारा। बेमुख झूठे रैण विहावे, कलिजुग सुत्तया पैर पसारा। महाराज शेर सिँघ अमृत मेघ बरसावे, गुरसिख होए अमृत धारा। बेमुख जग छड्ड जावणा, जिउँ दिवस रैणा। बेमुख शब्द ना भावणा, ना मन भावे गुर का कहणा। बेमुख नज़र ना आवे, प्रगटे सच जोत नरायणा। अन्तकाल छड्ड जावणा, सज्जण साक भाई भैणा। वेला हत्थ ना आवणा, महाराज शेर सिँघ देणा, औखा लैणा। लहणा लाह जीव का, जगत हरि का नाउँ। प्रेम प्याला पींवदा, रसना अमृत मुख चवाओ। पै जीव इस जग पीणदा, प्रभ प्रगटे दरस ना पाओ। प्रभ छट्टे जिउँ छट्टण पीहण दा, गुरसिक्खो तुसीं बच जाओ। हुण माण महाराज शेर सिँघ तेरे चरन दा, कर आस कलिजुग तर जाओ। कलिजुग शौह दरया है, औक्खा तरना। सतिगुर पूरा कर निआं, दुःख बेमुखां भरना। मानस जन्म गया गंवा, सोहँ शब्द ना रसन उचरना। महाराज शेर सिँघ सद ध्याईए, दुःख अन्तकाल ना भरना। कलिजुग डुब्बा कर्म कर, सृष्ट डुबाई संग। बेमुख दर आया भरम कर, पति गंवाई होया दर नंग। गुरसिख मिल्या पूर्बल कर्म कर, सोहँ शब्द चाढ़े प्रभ रंग। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, वक्त सुहाया लिओ दर मंग। वेला वक्त विचार के, प्रभ जगत जोत धरे। कलिजुग जड़ां उखाड़ के, सतिजुग साचा पैर धरे। वसदी सृष्ट प्रभ उजाड़ के, नवीं उत्पत फेर करे। बेमुखां पकड़ पछाड़ के, गुरसिक्खां जोत धरे। सोहँ शब्द नाड़ बहत्तर साड़ के, मदि मासी भस्म करे। सूली धर्म राज दी चाढ़ के, प्रभ नर्क निवास करे। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाए, कुन्ट चार हाहाकार करे। हाहाकार कर जीव बिल्लायन, निन्दक दुष्ट दुराचार जग रहण ना पाए। नार वेसवा विभचार, सतिजुग नज़र ना आए। मदि मासी कलिजुग दुराचार, प्रभ लै खपाए। साध संगत गुर शब्द आधार, बांहों पकड़ लै तराए। गुरसिक्खां देवे जोत आधार, दे दरस प्रभ

भरम चुकाए। साचा प्रभ झूठा संसार, प्रगट हो के शब्द लिखाए। गुरदर ना आए जिस गुर शब्द मार, बेमुख कलिजुग नाउँ रखाए। जित सति कल गया हार, लोभ हँकार विकार वधाए। गुरसिख कलिजुग उतरे पार, जिन्हां महाराज शेर सिँघ चरन लगाए।

❊ १५ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

प्रगटे जगन्नाथ गुर गोपाल। भगत वछल सद कृपाल। साध संगत प्रभ संग समाल। कलिजुग ना खाए अन्तिम काल। जन्म मरन प्रभ तोड़ ज़ंजाल। महाराज शेर सिँघ आत्म जोत कल देवे बाल। नाम निरँजण गुण निधान, कलिजुग प्रभ दिया। गुरदर पाए होए सुजान, जिन रसना थीआ। साध संगत विटहु कुरबान, दर्शन पाए अमृत पिया। महाराज शेर सिँघ सद बलिहार, गुरसिक्खां देवे निर्मल जिया। निर्मल आप प्रभ जगत निरवैरी। करे वड प्रताप, सृष्ट डिग्गे पैरीं। सोहँ शब्द होए जाप, रसना गाउ कलिजुग वैरी। महाराज शेर सिँघ तेरा वड प्रताप, जुग चौथे पाई फेरी। जुग चौथा प्रभ रचन रचाया। अथर्बण ऐड़ा अल्ला माण दे, अन्तकाल प्रभ आप खपाया। प्रभ सुत्ते सिख उठालदे, सोहँ साचा नाम दवाया। सच दीपक रिदे बाल दे, कलिजुग बुझे ना किसे बुझाया। सच प्रीती चरनां नाल दे, निभ जावे जिन्हां नेंह लाया। महाराज शेर सिँघ जोत दीदार दे, गुरसिख दरस करन दर आया। हरि दर प्रभ मंगे, जगत तोट ना आवे। सच शब्द मन रंगे, तन खोट ना रहावे। आत्म देह जिउँ जल गंगा, आत्म मेघ आत्म बरसावे। महाराज शेर सिँघ गुर दरस है मंगा, गुरसिख घर आए पुचावे। जोत प्रगटावे कलिजुग त्रैलोकी नाथा। विच देह समाए, जे कोई पकड़े ना आवे हाथा। जिस जन सोझी पाए, प्रभ वेखे सदा संग साथा। जिस देवे सोहँ नाम महाराज शेर सिँघ कल सच्ची गाथा। सच्ची गाथा सच्ची वड्याई, सतिगुर पूरे सतिजुग नींह रखाई। सच्ची वथ प्रभ अकथ्थ, विच भगत है टिकाई। सोहँ वथ सोहँ रथ गुरसिख चढ़ जाए, महाराज शेर सिँघ जग वड दाता, रसना गावे लोकाई। जोत निरजंण जगत प्रकाशे सर्ब रहन्तर। प्रभ अबिनाशी कलिजुग खपन्तर। चौथा जुग विनसे महाराज शेर सिँघ प्रभ भेखी भेख भेखन्तर। झूठी सृष्ट अन्त विनासे, प्रभ अबिनाशी जीव जन्त विनासी अन्त काल कल कोए ना रहासी। गुरसिक्खां विच प्रभ सदा समासी। नर्क निवास दिवायण, जो जन होए मदिरा मासी। महाराज शेर सिँघ विछड़ दुःख पायन, कट्टे कोए ना जम की फाँसी। अनहद शब्द वाजा पवन दा, गुरसिख मन वजाया। कलिजुग वेला नहीं हुण सौण दा, सच्चा शब्द प्रभ लिखाया। कलिजुग अन्त आया जिउँ रौण दा, जिउँ बान राम रावण लाया।

२६८
०१

जोत सरूप झूला दिया पवन दा, कलिजुग सारा झूल वखाया। एह बचन नहीं आवागवन दा, कलिजुग जाए सतिजुग सति लगाया। अंबरों बरखे मेघ जिउँ सावन दा, अमृत देह सिख विच प्रभ बरसाया। प्रभ जुग जुग जोड़ विछोड़दा, जुग चौथे संग रलाया। जे कोई टुट्टे नहीं प्रभ तोड़दा, जिस सोहँ रसना गाया। बेमुखां कलिजुग रोड़्दा, मदि मास आहार बणाया। सिक्खां वर पाया जिहा लोड़दा, प्रभ अबिनाशी घर आया। हुण वक्त नहीं अजोड़दा, साध संगत जोड़ प्रभ कराया। महाराज शेर सिँघ सुखन जो मोड़दा, कलिजुग शौह दरया रुढ़ाया। कलिजुग ठाठां मारीआं, जुग चल्लया लहिंदी धार। बेमुख निन्दक जल वसे, अन्त कोए ना लेवे सार। सतिजुग नज़र ना आवण जिउँ चन्द मस्से, बेमुखां आई हार। गुरसिख जोत जिउँ रवि सस्से, जोत सरूप करे आकार। हरि भगतां विच प्रभ आ वसे, दर्शन देवे अगम्म अपार। कल साचा राह आप प्रभ दस्से, सोहँ सिमरो उतरो पार। महाराज शेर सिँघ सतिजुग वसे, जग साचा लावणहार। सतिजुग साचा नाम, सच साचे जीव उपाए। गुरसिख सच्चा साचा हरि जाप, फिर विछड़ कदे ना जाए। हरि दरगाह देवे वड माण, सोहँ शब्द जो रसना गाए। गुरसिक्खां मन वधाईआ, जिन्हां महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए। निहकलंक दर्शन दुर्लभ। जिन कलिजुग मिल्या बेमुखां सोहँ शब्द वज्जे बम्ब। कलिजुग जीव भुल्ले भरमे, जगत गुर भुलाया। कलिजुग जीव होए अधर्मे, प्रभ साचा नज़र ना आया। कलिजुग जीव होए कुकर्मे, नेत्रीं वेख प्रभ समाया। कलिजुग जीव होए मरे जन्मे, जिन प्रभ तों मुख भवाया। कलिजुग जीव कोए ना राखे, महाराज शेर सिँघ जग धक्का लाया। कलिजुग प्रगटे प्रभ जोत निरँजण। पतित पावन दु:ख भंजन। जग नज़र ना आवे झूठा सिँघ गज्जण। बेली कोए अन्त ना होए साक सज्जण। झूठा प्यार कर ख्वार, सच वेले तजन। विच मँझधार कोई पाए ना सार, महाराज शेर सिँघ तेरे सिख जो भज्जण। सिख अख्वाए मुख भवाया। जगत भुलाए जन्म गंवाया। कर कर हावे बंस कुरलाया। नज़र ना आवे बेमुख सिख जाया। नर्क निवास होए मध मासी, अन्तकाल ना कोए छुडाया। महाराज शेर सिँघ सद बैकुण्ठ वासी, सचखण्ड गुरसिक्खां धाम बणाया। मानस जन्म गंवा के, सच हँस उडाया। जून लक्ख चुरासी पा के प्रभ गेड़ चलाया। बेमुख रोवे वक्त विहा के, गर्भवास मिली सज़ाया। महाराज शेर सिँघ मनों तजायके, मनमुखां नर्क निवास लिखाया। नर हरि नर जोत इक्क जिस जाणे प्रभ जोता। हरि नर नर हरि टेक इक्क जे जाणे, प्रभ सभ में होता। वर घर दर सच प्रभ एक, जिस मन विकार विगोता। महाराज शेर सिँघ शब्द मिलाए, शब्द मिले विच सरूप है जोता। शब्द सुरत जिस जन को देवे, कलिजुग मिले वड्याई। आत्म जोत जिस रिदे रखीवे, रिदे प्रकाश होवे रुशनाई। अमृत दरस बूंद जो पीवे, उतरे तृखा मन तृप्ताई। सोहँ शब्द जिन रसना खीवे, सुन्न अग्नी देह बुझाई।

महाराज शेर सिँघ चरन लाग जो जीवे, तिन कलिजुग मिले वड्याई। कलिजुग काला कमला, प्रभ काल कुलासा। जग सारा रमला चमला, सोहँ शब्द पया गल फासा। जावे उड जिउँ बालू बिमला, बेमुख जोत जगत ना मासा। कलिजुग जीव जगत रहे जिउँ सिंमला, पति गंवाई कर कर हासा। कलिजुग जोत धरे नर सिँघला, बूझे सूझे कोई गुरमुख खासा। महाराज शेर सिँघ तारे पिंगला, लागे चरन होए दास दासा। गुर सेवा गुरमुख कमाए। गुर मेवा शब्द सोहँ कमला पाए। गुर वड्डा देवी देवा, सच हिरदे जोत जगाए। प्रभ प्रगटे अलख अभेवा, निहकलंक नाउँ रखाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तेरी सेवा, गुरसिख ना बिरथी जाए। गुरसिख सेवा चरन कर, प्रभ दर मंगे। गुरसिख साचा प्रण कर, प्रभ सोहँ मन रंगे। गुरसिख सच गुर सरन कर, कलिजुग जीव वेख ना संगे। गुरसिख कलिजुग तरनहार, मिले दान मुख जो मंगे। महाराज शेर सिँघ साचा घर कलिजुग तारे भुक्खे नंगे। निमाणयां प्रभ माण दे, राउ रंकां माण गंवाया। गुरमुखां शब्द ज्ञान दे, प्रभ आपणा दरस दिखाया। आत्म जोत रिदे ध्यान दे, मन अनहद शब्द वजाया। सरन आए दर माण दे, प्रभ चरन कँवल संग लाया। महाराज शेर सिँघ नाम गुण निधान दे, गुरसिक्खां कल गल पल्ला पाया। शब्द अमोलक निरँजण नाम नरायण निरवैरा। अविगत अगोचर वरतावे जगत कल कहरा। जगन्नाथ गोपाल मुख भनी आपणी करे मेहरा। महाराज शेर सिँघ दीन दयाल गम्भीर गहरा।

रिखी केश प्रभ गवर्धन धारी। कलिजुग प्रगटे आप मुरारी। उत्पत कीनी सृष्ट है सारी। जोत सरूप है जगत आकारी। कलिजुग पाए अन्त ख्वारी। कुन्ट चार होए हाहाकारी। सतिजुग सोहँ जै जैकारी। जोत जगाई प्रभ निरँकारी। सिँघआसण बैठ प्रभ भगतां पैज सवारी। थिर घर साचे आया, सच सिरजनहारी। बांहों पकड़ तराया, गुरसिख कलिजुग पैज सवारी। महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाया, झूठी सृष्ट करे ख्वारी। गुर दर जिस ना सूज्झया, कल होए ख्वारा। कर दरस प्रभ ना बूज्झया, जगत मूर्ख मुग्ध गंवारा। जगत झूठे धन्दे लूज्झया, कोई ना जाणे जोत निरँकारा। गुरसिक्खां हरि दर सूज्झया, सोहँ शब्द करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ सिख चरन संग लूज्झया, दे दर्शन अगम्म अपारा। दर्शन देख होए निर्मल जिया। साचा दरस गुरसिख कल प्रभ का किया। आत्म हिरस मिटे होए निर्मल जिया। महाराज शेर सिँघ आत्म अमृत बरस, गुरसिख नाम अमिउँ रस पिया। नाम रस जपे रसना रसैण। कलिजुग प्रभ तेरा जस, गुर भगत सदा गैण। दे दरस होए आत्म वस, देह अंध्यार गवायण। महाराज शेर सिँघ सभ तेरे वस, कर किरपा पार तरायण। कर किरपा प्रभ कर्म

विचार। जीव भुल्ले सभ भुल्लणहार । आप अभुल्ल अडोल सच सिरजणहार। कलिजुग जामा प्रगटे निहकलंक अवतार। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, बेमुख ना पावे सार। बेमुख निन्दक कुड़िआर कलिजुग चलाया। कलिजुग होए अन्त ख्वार, किने ना पार लँघाया। बेड़ा डुब्बे विच मँझधार, प्रभ साचा नज़र ना आया। अन्तकाल छड्ड घर बाहर, दर धर्म राए दे आया। जम दूत करन ख्वार, नर्क निवास दवाया। बिन प्रभ कोई ना लवे सार, जीव झूठे धन्दे जन्म गंवाया। गुरसिख उधरे पार, जिन सोहँ नाम ध्याया। कल प्रगट बख्शणहार, जोत सरूप विच सिख समाया। आपणे रंग रवे करतार, पाई कलिजुग डाहढी माया। कोई ना जाणे प्रभ विच वसणेहार, जो झूठा माण वधाया। महाराज शेर सिँघ सच भतार, जोत सरूप विच देह आसण लाया। काया कोट उसार के, प्रभ जोत टिकाई। झूठा खेल खिडार के, बैठा आपणा आप छुपाई। बेमुख ना कदी विचार के, साची जोत विच देह जगाई। सोहँ शब्द ना रसन उचार के, बाती नाम दीपक देह पाई। महाराज शेर सिँघ चरनीं आ के, सचखण्ड मिले वड्याई। सचखण्ड प्रभ वसणेहारा। जोत जगावे अगम्म अपारा। वेखे कोए गुरमुख रंग गिरधारा। पेखे कोए जिस वसे आप निरँकारा। महाराज शेर सिँघ मिल्या सोए, जो जन आए चरन निमस्कारा। चरन निमस्कार करे गुरदेवा। साचा नाम अमृत देवे गुर मेवा। गुरसिख प्रीत साची चरन गुर सेवा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, जगत भुलेखा पाए भुलेवा। जगत भुलाया आप प्रभ, होए जोत सरूपा। कहर वरताया आप प्रभ, कोई ना जाणे प्रभ का रूपा। कलिजुग गंवाया आप प्रभ, जोत जगा के स्वच्छ सरूपा। गुरसिख तराया आप प्रभ, दे दरस अनूपा। भगत वड्आया आप प्रभ, विच कलिजुग अन्ध कूपा। बांहों पकड़ आप तराया, प्रभ सच जोत सरूपा। सतिजुग लाया आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ जोत साचा रूपा। सच सरूप प्रभ जोत जगाई। साची जोत विच सिख टिकाई। गुरसिख सोझी गुर दर दी आई। गुरदर आए प्रभ दर्शन पाई। धन्न धन्न धन्न रसना गुरसिख, जिन सोहँ रसना नाउँ गाई। साचा सतिगुर सतिजुग लावे, चार कुन्ट जै जै जैकार कराई। सतिगुर मनी सिँघ तख्त बहावे, घर घर मिले वधाई। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, राजे राणे चरन लग जाई। सुत्तयां बांहों पकड़ जगावे, राजे भुपिंदर दरस दिखाई। कलिजुग प्रगट नर नरायण, मूर्ख सूझ ना गुर दर पाई। बाणा शेर प्रभ धारे, भय विच आवे सर्ब लोकाई। भन्ने सारे गुरदर दर आवे, महाराज शेर सिँघ तेरी होए दुहाई। दर्शन पाण प्रभ राजन सारे। राजन ताजन आए डिग्गण दुआरे। बेमुख दर ते हो गए भुल्लणहारे। दर आए प्रभ बख्श लै, सच बख्शणहारे। सोहँ वणज छड्ड के, जग भुल्ले वणजारे। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, राउ रंक डिग्गण दरबारे। वड्डे वड अहँकारीआं प्रभ दरस दिखाए। जोत सरूप हो के घर जाए डरावे। अग्गों उठे बेमुख रो के, प्रभ भेख वटावे। प्रभ

आवे शब्द जणा के, प्रभ साची सोझी पावे। कलिजुग आया जोत प्रगटा के, निहकलंक आया नाउँ रखा के, घर चल्लया भय दिखा के, जोत सरूप जोत हो जावे। प्रभ वेखे जो जन आ के, पाल सिँघ दा घर पुछा के, जिथ्थे बैठा डेरा ला के, विच सिख समावे। महाराज शेर सिँघ नाउँ रखा के, सभ दा माण गंवावे। माण मोह दोनों पर हर। प्रभ जोत सरूप इक्क कलिजुग प्रगटे हरि। धरे धारे राउ रंक कर जावे इक, बेमुख गुरमुख होवे शरनी पर। सोहँ शब्द चलावे, इक्क कलिजुग जोत प्रगटावे नरायण नर। महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाए, इक्क इक्क आप एकँकारा। इक्क आप सर्ब वसणेहारा। इक्क आप करे जगत पसारा। इक्क आप जीव जन्त देवे उधारा। इक्क आप आदि अन्त निरँकारा। इक्क आप जुगो जुग लै अवतारा। इक्क आप प्रभ साचा सिरजणहारा। कलिजुग प्रगटे निहकलंक, सोहँ शब्द रसन विचारा। महाराज शेर सिँघ कल तेरी वड्याई, ऊँचा दिसे दरबारा। सच दरबार जिथ्थे प्रभ वस्सया। गुरसिख हरि का नाम मंग, तन मिटे अन्धेरा। सोहँ शब्द मन चाढ़ रंग, होए जगत निरवैरा। अमृत वरखा विच देह गंग, सच शब्द प्रभ केरा। प्रभ पूरा पहले तोल के, फिर बण प्रभ का चेरा। सच रसना बचन बोल के, गुरसिख भुल्ल ना जाए मेरा। साचा शब्द दे प्रभ खोल्ह के, मदि मास ना आवे नेरा। प्रभ मारे जगत वरोल के, भंग करे बचन जन केरा। नाम सच मोती जगत वरोल के, विच संगत गुर लाए डेरा। मुखों कहन्दा सति बोल के, कलिजुग डोले ना सिख मेरा। जे जगत भुलेखा भुल्लणा, गुरसिख ना बणना। जे पूरे तोल ना तुलणा, दुःख मदि मास दा जरना। जे कलिजुग नहीं जे रुलणा, गुरचरन लाग कल तरना। महाराज शेर सिँघ अडोल कदे नहीं डुलणा, गुरसिख अडोल जगत विच करना। गुरसिख गुरमुख एक रूप, विच प्रभ जोत जगाई। सिख हो के विच कलिजुग, प्रभ नाउँ कलंक ना लायणा। कलिजुग सारे बेमुख, अन्तकाल पासन सजाई। गुरसिक्खां देवे सच सुख, सचखण्ड निवास दिवाई। महाराज शेर सिँघ तेरे दरस भुक्ख, गुरसिख मन आस रखाई। सतिगुर साचे आ के, सच राह चलाया। आपणी देह तजा के, जोत सरूप जोत प्रगटाया। विच जोती जोत मिला के, सिख देह साची विच समाया। प्रभ तीन लोक तजा के, साध संगत माण दवाया। प्रभ पूरे भेख वटा के, निहकलंक नाउँ रखाया। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन आ के, ना मरे ना कदे जाया। गुरमुख साचा होवणा, गुर घर की रीता। मन तन झूठा धोवणा, कर गुरचरन प्रीता। फल पाउ जिहा बोवणा, अगे जा के गुणी गणीता। जम राज ना नेड़े छोहवणा, सोहँ शब्द जिस रसना पीता। अन्तकाल ना होवे रोवणा, गुरसिख पतित पुनीता। गुरसिख साचे घर सोहवणा, महाराज शेर सिँघ जोती जोत मलीता।

✲ २२ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ✲

सच्चा आप सच्चा दरबार। सचखण्ड प्रभ वसनेहार। जोत जगाए अगम्म अपार। बेमुख ना जाणे प्रभ की सार। गुरसिक्खां सोहे सच घर बार। जोत सरूप प्रगटे निरँकार। निहकलंक कलिजुग अवतार। महाराज शेर सिँघ सच सिरजणहार। जोत सरूप जगत प्रभ आया। पवण पाणी अग्न मांहि समाया। जीव जन्त विच प्रभ रहाया। ऐसी कलिजुग पाई माया। प्रभ साचा विच नज़र ना आया। बेमुख होए कलंक लगाया। विच चुरासी गेड़ रखाया। प्रगट हो प्रभ ना दरस दिखाया। बेमुख गुरदर ना आया। गुरमुख गुर धाम सुहाया। जिथ्थे महाराज शेर सिँघ सच शब्द लिखाया। सतिगुर सच्चा सच शब्द लिखाए, सच सुरती मति देह। कलिजुग कच्चा जगत कच्च अन्तिम होसी खेह। जोत प्रगटाए देर ना लाए, गढ़ भूमी होसी थेह। महाराज शेर सिँघ बचन लिखाए, बेमुख खपाए साड़े तन मन देह। गुरसिक्खां मन वधाई, जिन्हां हरि रंग माणयां। गुरसिक्खां प्रभ होवे सहाई, दर आए जो होए निमाणयां। गुरसिक्खां प्रभ दे वड्याई, हरि हरि हरि नाम जिन रसन वखाणयां। गुरसिक्खां मन प्रभ जोत जगाई, चरन लाग चले गुर के भाणयां। गुरसिक्खां सच राह बताई, सोहँ शब्द देवे ज्ञान अञ्याणयां। गुरसिक्खां आत्म ठंड वरताई, देवे दरस जोती प्रभ जोत मिलाणयां। गुरसिक्खां कल होए सहाई, महाराज शेर सिँघ जन भगत तराणयां। वड्डा आप भगत वड्याए। ऊँच अगम्म ना नज़री आए। सर्ब घट रिहा समाए। सुहाए थान जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटाए। पाए माण जो गुर चरनीं आए। दुःख लहि जाण, जिन्हां सीस निवाए। महाराज शेर सिँघ अन्त होए सहाए। अन्तकाल कोए ना संगी। दुनियां होई बहुत बरंगी। जोत सरूप उलटी वगाए सिंध गंगी। मलेश जाए जिउँ जाए फरंगी। सोहँ शब्द धुन कलिजुग वज्जे, महाराज शेर सिँघ जोत सरूप अग्न जग लग्गी। ना रहे राउ ना सुल्ताना। एक रहे जिस प्रभ दे ज्ञाना। सुघड़ करे गुरसिख भगत सुजाना। कलिजुग प्रगटे महाराज शेर सिँघ भगवाना। तोड़े माण वड्डे अभिमाना। गुरसिक्खां प्रभ दे दान, करे चतुर सुजाना। दरस देवे भगवान, ना जाणे बाल अञ्याणा। हुक्मे मारे आन, सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ सृष्ट बाना। भेख भरम सृष्ट प्रभ किया। सतिगुर साची रखाई नीआं। देवे दरस किसे विरले जिया। चरन लगाए कर संग गुरसिख हीआ। सोहँ शब्द नाम अमृत रस पिया। महाराज शेर सिँघ ज्ञान सोहँ दिया। सोहँ नाउँ पाउ अमोला। कलिजुग तोल ना सके कोई बेमुख तोला। गुरसिक्खां विच प्रभ आप है मौला। महाराज शेर सिँघ नाम गुण निधान अमोला। नाम अमोलक प्रभ दर्शन निरबान। नाम अमोलक जप होए गुरचरन ध्यान। नाम अमोलक प्रभ दर्शन पायन। नाम अमोलक सोहँ जप महाराज शेर सिँघ दरस दिखायन। दर्शन देख होए मन हरया। आत्म चिखा तन तन्दूर ठरया। अमृत बूंद सच

झिरना झिरया। डिग्गे बूंद कँवल नाभ है खिड़या। सोहँ शब्द चले विच झिरया। महाराज शेर सिँघ कल साचा पिरया। गुरसिख प्रभ का माण कर, कल अमृत बरखे दाता। गुरसिख पूरा ध्यान कर, कल प्रगटे ब्रह्म ज्ञाता। गुरसिख गुरचरन धूढ़ इशनान कर, गुरचरन सच्चा जग नाता। गुरसिख याद महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर, प्रगटे चहुं जुगां वड दाता। चार जुग गुरसिख साचा वरन। सर्ब सृष्ट गुरचरन आए परण । कर दरस फंद तोड़े जन्म मरन। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जो सिख आए तेरी सरन। सरन पड़े जो जन आए। ऊँच दरबार उच्च पदवी पाए। ज्ञान का ज्ञाता ब्रह्म ज्ञानी सदवाए। गुरसिख नाम उत्तम विचार जग रहि जाए। मदि मास ना रसनी लगाए। सोहँ शब्द सच सच आत्म देह वरताए। ज्ञान जोत विच देह जगाए। पवण सरूप ना कदे डुलाए। सच्चा धाम वसे सच थाएँ। गुरसिक्खां बिन नज़र ना आए। गुरमुखां प्रभ बूझ बुझाए। दे दरस भुलेखा भ्रांत गंवाए। प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाए। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ नज़री आए। जोत सरूप ना जाए अकार। एक जोत प्रभ पवणहार। सचखण्ड वसे निरँकार। जगे जोत अगम्म अपार। कोई ना जाणे प्रभ जोत आकार। ईश्र एक एक जोत अधार। जोत सरूप विच वसे संसार। आदि अन्त महाराज शेर सिँघ एकँकार।

२७३
०१

❊ २३ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

गुरमुख हरि का नाम जप, होए उत्तम मुख। गुरसिख हरि का नाम जप, पाए कलिजुग सुख। कलिजुग गुरसिख वड्डा तप, गुरचरन लाग मन लाहे भुक्ख। गुरमुख सोहँ नाम जप, महाराज शेर सिँघ देह गंवाए दुःख। गुरसिख हरि रंग माण, इक्क मन होए इक्क चित्त। गुरसिख हरि रंग माण, वक्त हत्थ ना आवे कित। गुरसिख हरि रंग माण, बाज़ी जन्म मरन दी जित्त। गुरसिख हरि रंग माण, कलिजुग प्रगटयो साचा मित। गुरसिख हरि रंग माण, प्रभ प्रगटे बिन वार थित्त। गुरसिख हरि रंग माण, प्रभ की जोत प्रगटाए धाम साचे नित। गुरसिख प्रभ पूरा पछाण, छड्ड कुटम्ब वाला हित। गुरसिख सोहँ शब्द जाण, बिन शब्द कल थुक्कां पईआं तित्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर वखाण, जोत जगावे पारब्रह्म अचित। पारब्रह्म परमेश्वर जगत जगाया। होए आप जगतेश्वर, सर्ब में रिहा समाया। होए आप महेश्वर, कलिजुग जीव भरम भुलाया। महाराज शेर सिँघ जोत सच ईश्वर निहकलंक नाउँ नरायण रखाया। निहकलंक प्रभ निरवैरा। सिद्ध साधक डिग्गण गुर पैरां।

❊ २४ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

ऊँचा दर ऊँचा दरबारा। थिर घर वसे आप निरँकारा। जोत सरूप जगत उतारा। देवे दरस प्रभ अगम्म अपारा। गुरसिक्खां सोहँ शब्द दे अधारा। बेमुख दुष्ट दर झक्ख मारा। महाराज शेर सिँघ रंग रवे करतारा। कलिजुग हरि रंग माण के, मन हरि सिउँ रंग। कल कलिजुग सतिगुर सच पछाण के, नाम दान गुरदर मंग। निहकलंक नर अवतार जाण के, अमृत धार विच देह वगाए गंग। बेमुख मारे छाण के, सोहँ शब्द करे सृष्ट भंग। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आण के, गुरसिक्खां चाढ़े मन रंग। गुर का रंग इक्क नाम अतीता। गुरसिख सिमर सदा जग जीता। अन्तकाल हो सद अमर, अमृत नाम नाम रस पीता। महाराज शेर सिँघ जगत भुलाया, गुरसिक्खां वसे प्रभ चीता। गुरसिख विरले जन, गुर विचारे। गुरमुख विरले जन, जो प्रभ दरसारे। गुरसिख विरले जन, प्रभ जोत उधारे। गुरसिख विरले जन, दरस दिखावे प्रभ अगम्म अपारे। गुरमुख विरले जन, कल मिल्या नैण मुँधारे। गुरसिख विरले जन, देवे दरस राम अवतारे। गुरसिख विरले जन, आवे नज़र कृष्न मुरारे। गुरमुख विरले जन, मेल मिलाए निहकलंक भतारे। गुरमुख विरले जन, आए चरन दरबारे। गुरमुख विरले जन, जिस देवे शब्द अनहद धुन्कारे। गुरसिख विरले जन, अमृत मेघ झिरना झिरनारे। गुरमुख विरले जन, महाराज शेर सिँघ चरन दरस प्यारे। प्रभ दरस दर्शन अनमोल। गुरसिक्खां पाए अतुट अतोल। कर दरस त्रैकुटी दे खोल्ह। काया आकार विच हउमे पोल। कलिजुग पल्ला फेरया, अनहद शब्द वजाए ढोल। अनहद शब्द कर जगत अंध्यारया, गुरसिख देवे नेत्र प्रभ खोल्ह। सोहँ शब्द सभ जगत रोल्लया, गुरसिख बैठा गुरचरन अडोल। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, सोहँ शब्द लिखाए अनमोल। गुरसिख कल गुर दरबारे। जोत सरूप आप प्रभ पैज संवारे। सर्ब सृष्ट होए दुःख भारी। अचरज खेल करे प्रभ मुरारी। बिन बाती बिन तेल जोत जगे सद निरँकारी। सतिगुर लै अवतार, निहकलंक कर जगत ख्वारी। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां प्रभ पैज संवारी। पैज संवारी अगम्म अथाह। सच्चा राखा विच दरगाह। जिथ्थे कोई संग ना साह। उथ्थे वाली आप सच्चे पातशाह। सोहँ शब्द कल वखाए राह। जोत जगाए बेअन्त प्रभ बेपरवाह। तेज़ वधाए खपाए अलाह। एकँकार अख्वावे दूसर रहे कोए ना काह। ईसा मूसा सभ पाए ठाह। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द दिखाया गुरसिक्खां सच राह। सोहँ शब्द गुरसिक्खां मन मंत। बेमुखां कर जाए कल भस्मंत। सोहँ शब्द कल मेले प्रभ कन्त। बेमुख जलाए सर्ब जीव जन्त। सोहँ शब्द रसना सिमर वड्डा साध सन्त। कलिजुग जीव खपाए, बेमुख प्रभ बेअन्त। सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ लिखाए, कलिजुग प्रगट प्रभ भगवन्त। भगत भगवन्त एका जाती। पूरे सतिगुर निर्मल

२७४
०१

जोत जगाई बाती। गुरसिख पूरा ना जाणे दिन राती। डगमगाए जोत प्रभ, विच देह इकांती। आत्म लाहे तृखा, चवावे बूंद अमृत प्रभ स्वांती। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगासी, गुरसिख सुख होए दिन राती। दिवस रैण होए प्रभ संग मेला। सोहँ शब्द जिस जपया सुहेला। गुरसिख ना कलिजुग होए अकेला। धार खण्ड विच वसे प्रभ चतुर्भुज सुहेला। कलिजुग जोत प्रगटा के, विछड़यां प्रभ किया मेला। जन्म जन्म विछड़, जीव प्रभ भुलाया। प्रभ साचा नाम ना दुखड़, कर दरस ना आत्म तृप्ताया। कलिजुग अन्धेर चले अन्त झक्खड़, पवण रूप जगत हिलाया। सोहँ शब्द ना जानण अनडिठड़, कलिजुग बाण जगत प्रभ लाया। गुरसिख मानण रंग मिट्ठड़, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ चरन लाग ना जाए विछड़, सचखण्ड प्रभ सच तख्त बणाया। सचखण्ड जिथ्थे जोत प्रगटाई कृष्न राम। सोहँ शब्द प्रभ का साचा नाम। सुण शब्द नेड़ ना आवे जाम। बिन शब्द निसफल जगत काम। अमृत रस रस पीए साचा जीव जाम। महाराज शेर सिँघ सद रसना गाउ, कलिजुग पूरन होए काम। वडभागी वडभाग जिन प्रभ दर्श करया। सोए कलिजुग गए जाग, चरन लाग गुरसिख तरया। बेमुख गए दर भाग, प्रगटे निहकलंक कल कोए ना अड़िआ। महाराज शेर सिँघ लगावे जगावे जोत जाग, राउ रंक दीसे दर खड़िआ। राउ रंक एक प्रभ करे। कलिजुग अन्तिम अन्त कर हरे। साचा शब्द गुरसिक्खां मन धरे।

२७५ ०१ गुरमुख नाम रसना जगत उचरे, जो जन आए महाराज शेर सिँघ सरन परे। सरन परे प्रभ लाज रखाए। कलिजुग अंदर गुरसिख वड्याए। गुरमुख बाणी गुरमुख वाक् लिखाए। कलिजुग चार जुग जग नाउँ रहि जाए। सतिजुग साचा सच मार्ग लाए। सोहँ शब्द प्रभ रिदे वसाए। धन्न धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ कलिजुग खपाए सतिजुग साचा लाए। सतिजुग साचा सच वरतंत। जोत सरूप दरस दिखाए, सर्ब जीव जन्त। हउमे माण गंवाए, मोह चुकाए सर्ब का मंत। सर्ब सृष्ट एक रूप समावे, राउ रंक सर्ब इक्क रंगत। आपणा भेत प्रभ आप खुलावे, विच साध सन्त। महाराज शेर सिँघ सतिजुग चलाए, कलिजुग वरते प्रभ का भाणा। सतिजुग वरते सति कर जाणा। उत्तम धाम होए विच सच मस्तूआणा। जिथ्थे बैठ जाए पहन सतिजुगी बाणा। चरनीं आए डिग्गण सभ राजा राणा। सोहँ शब्द सतिजुग जीव रसन वखाणा। शब्द चलाया प्रभ निरबाणा। भगत तराया जिस नाम वखाणा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप कलिजुग जाए होए निताणा। कलिजुग जीव होए कुकर्मी। विरला दिसे कोई साचा धर्मी। सारी सृष्ट कल माया भरमी। सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ ना वरते नरमी। सोहँ शब्द जगत उत्तम वत्थ। कलिजुग बिबाण सच चलाया रथ। बैठा अडोल प्रभ आप अकथ्थ। बेमुखां कल पति गई लथ्थ। जमराज अन्त काल पाए नक्क नत्थ। गुरसिक्खां प्रभ रक्खे सिर हत्थ। प्रगटे जिउँ राम दसरथ। महाराज

२७५ ०१

शेर सिँघ सोहँ शब्द गुरसिक्खां देवे नाम साची वत्थ। साची दात गुर दर ते पाई। साध संगत मन वज्जी वधाई। चरन लाग तरे बिरध बाल संग माई। किरपा करे जोत सरूप आप रघुराई। साची जोत प्रभ लोकमात जगाई। बेमुख वेखण प्रभ नज़र ना आई। सिख पेखण प्रभ हिरदे रिहा समाई। गुरसिख साचे लेख लिखाई। देवे दर्शन सुत्तयां दे उठाई। कलिजुग प्रगटे भेखी भेखण, स्वच्छ सरूप प्रभ दे दरसाई। महाराज शेर सिँघ प्रभ साचा वेख, बेमुख भुल्लयां कल वेला हत्थ ना आई। कलिजुग जाए जिउँ रैण विहाई। कलिजुग अन्धेर मुख गया छुपाई। सच प्रकाश प्रभ जोत कराए। कोट सस प्रभ जोत चमत्काए। प्रभ आप आप वस, किसे हत्थ ना आए। गुरसिक्खां शब्द साचा रस, प्रगट जोत प्रभ दरस दिखाए। बेमुख जाए दर ते नरस्स, सोहँ शब्द प्रभ रसन लिखाए। अन्तिम काल कल होई बस, सतिजुग साचा प्रभ दे लगाए। महाराज शेर सिँघ सभ कुछ तेरे वस, आदि अन्त तेरा कोई भेव ना पाए। आदि अन्त प्रभ का कोई ना जाणे। आपणी महिंमा प्रभ आप वखाणे। कलिजुग भुल्ले जीव जन्त अञ्याणे। जोत सरूप भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। जीव जन्त कुरलाए करन हाए हाए, चले ना गुर के भाणे। धर्म राए दे सजाए, अन्तकाल विच नर्क समाणे। कोई ना बचे सभ राजे राणे। महाराज शेर सिँघ तेरी सरनाई, गुरसिख दर निमाण निमाणे। गुरसिख जोत जग चन्द चानणा। सोहँ शब्द संग जगत सभ बानणा। गुरसिक्खां प्रभ तोड़े काल अन्त सभ भानणा। निहकलंक अवतार जुग चार होए अराधणा। धर्म कुकर्म विचार, कलिजुग प्रभ अन्त साधणा। बेमुखां होए धृगकार, जिन सोहँ वज्जे ना नादणा। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, साध संगत मिल रसना अराधणा। रसना सिमर परम पद पाए। गुरसिख मरे ना आवे जाए। जोत सरूप प्रभ विच लै जोत मिलाए। अचरज जोत विच अचरज लै समाए। सचखण्ड प्रभ गुरसिख पुचाए। दर दरबान हो महा सुख पाए। जिउँ सवरन ध्रू घर जाए। आप अपरम्पर खेल रचाए। लोक तीन प्रभ बणत बणाए। जोत सरूप सर्ब रिहा समाए। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ दे उलटाए। ब्रह्मा जाए माण, सिँघ पाल प्रभ आप वड्याए। सच शब्द कर पछाण, सति पुरख प्रभ आप उपजाए। गुरचरन सेव मिले वड्याई, उत्तम नाम जगत रहि जाए। साची जोत प्रभ देह बुझाई, अज्ञान अन्धेर देह गंवाए। महाराज शेर सिँघ तेरी सरनाई जो जन आए, जन्म मरन दा फंद कटाए। दे दरस प्रभ लाए ना देर। लक्ख चुरासी जगत का गेड़। गुरसिख वास होए ना गर्भ फेर। महाराज शेर सिँघ करे कलिजुग गुरसिक्खां मेहर। करे मेहरवान मेहर मेहरवाना। जोत प्रगटाई कल विष्नूं भगवाना। भेत रखाई ना जानण मूर्ख मुग्ध अञ्याणा। जोत प्रगटाई विच गुरसिख महाना। कलिजुग प्रभ दरस दिखाई, जोत सरूप बिधनाना। सोहँ शब्द धुन वजाई, आत्म ज्ञान प्रभ गोझ मिटाना। कलिजुग भुल्ली सर्ब लोकाई, पूरा सतिगुर नहीं पछाणा।

महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, कलिजुग पहनया कलंकनिह जामा। निहकलंक प्रभ निराहारी। जोत सरूप प्रभ जोत आधारी। कलिजुग प्रगटे आप वड भूप, गुरसिक्खां आप प्रभ पैज संवारी। प्रभ साचा जिस रंग ना रूप, जोत सरूप आप निरँकारी। गुरसिख तारे विच अन्ध कूप, बेमुख दुष्ट प्रभ आप सँघारी। महाराज शेर सिँघ तेरा स्वच्छ सरूप, कोई ना जाणे प्रभ गिरधारी। जोत सरूप प्रभ साचा गुर। मेल मिलाए कल जिन लिक्खया धुर। पी अमृत बूंद जीव होए असुर सुर। बाल अवस्था डंक वजाया अनन्दपुर। निहकलंक आया मनी सिँघ सुणाया, फेर नज़र ना आवे मुर। नीला चोग रंगाया, गल महाराज शेर सिँघ पाया, नाम अमाम मैहदी रखाया, सेवा करन दर हुर। शब्द संग बांधे सभ टूणे हार। जप तप सभ भूत पलीत दर होई ख्वार। बेमुख धुर आ गया जन्म हार। सच ना पछाणे मूर्ख मुग्ध गंवार। सद ना रहणा सभ चलणेहार। अन्त चलणा जिउँ वहन्दे वहिणा, बेड़ा ना उरार ना पार। महाराज शेर सिँघ शब्द संग मारे, पापी जीव कलिजुग होए ख्वार। दर वाट मारे अमका काज़ी। दुखी जीव होए दर सभ राजी। बख्शे आप जिस सृष्ट सभ साजी। राखे लाज शरन पड़े दी लाजी। बेमुख हार चले जन्म माणस बाजी। महाराज शेर सिँघ सच्चा तेरा नाउँ, सच्चा आप सृष्ट जिन साजी। हीए वसे आप प्रभ अवल्लड़ा। बैठा अडोल विच देह इकल्लड़ा। सुरत प्रभ फड़ावे पल्लड़ा। विच वसे प्रभ भूप, महाराज शेर सिँघ शरन लग कलिजुग अल्लड़ा। सुरत शब्द दोए इक्क देह होए। गुर भगत दोए इक्क जोत बिलोए। जोत सरूप वसे त्रैलोए। महाराज शेर सिँघ जो कल करे सो आगे होए। सच रथवाही आवे प्रभ जगत। बांहों पकड़ गुर तारे भगत। सोहँ शब्द चलाए आया सतिजुग वक्त। चरनीं लगाए राणे महाराणे विच मांह कत्तक। महाराज शेर सिँघ सतिजुग सच होए तेरी लिख्त। ईश्र वाक् जगत भए बाणी। भगत उधारन प्रभ रसन वखाणी। सोहँ शब्द प्रभ नाउँ सच वखाणी। महाराज शेर सिँघ तेरी जोत, गुरमुख कलिजुग पछाणी। गुण दाता गहर गम्भीर। गुरसिक्खां आत्म शांत तन मन सरीर। बुध बिबेक उत्तम उज्जल जिउँ चिट्टा सीर। वड वड्याई दे गुरसिक्खां जिउँ भगत कबीर। अमृत मेघ निझरों बरसावे, जिउँ जल धारा नीर। कलिजुग प्रगटयो निहकलंक वड दाता, सिर पीरां पीर। कलिजुग माण गंवाए, लाहे सिर तों चीर। चार कुन्ट अग्न जलाए, सोहँ शब्द चलाया प्रभ तीर। विच संसार होवे हाहाकार, बेमुखां देवे कोई ना धीर। महाराज शेर सिँघ सच सोहँ शब्द गुरसिक्खां मारे हउमे पीर। प्रभ जोत जगावे विच चहुं वरनां। राउ रंक इक्क प्रभ करना। अभिमान कलिजुग सभ निवरना। गुरचरन लाग भव जल तरना। गुरसिक्खां अन्तकाल जम डण्ड ना भरना। विच बबाण बिठाए प्रभ धरनी धरना। नर नरायण लै जाए विच चरन सरना। जीव जोत सरूप है अन्त जोत प्रभ करना। महाराज शेर सिँघ आत्म ज्ञान, सोहँ शब्द विच तन

मन भरना। जगत वणजारा हो के दर साचा पाईए। मन का सूतक धो के, आत्म जोत गुरदर जगाईए। नैणी पूरा तोल के, फिर गुरचरन लग जाईए। झूठा भेख वेख, जीव भुल्ल ना जाईए। वड्डा सतिगुर जगत गुर पछाण के, सच्चा नेंह लाईए। जित मन ज्ञान ना उपजे, तित मुख थुक्कां पाईए। जोत सरूप विच सिख समाए, नाड़ी बहत्तर ना चलने पाईए। बांहों पकड़ भुलेखा लाहीए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जगत भुलेखे भुल्ल ना जाईए। जोत सरूप वसे विच वरभंडा। कलिजुग जीव विच हउमे कंडा। बिन प्रभ दरस जीव आत्म रंडा। सोहँ शब्द चले कलिजुग दो धारी खण्डा। त्रैलोकी नाथ जोत जगाए खण्ड ब्रह्मण्डां। सोहँ नाम कलिजुग आए, साध संगत विच वंडा। बेमुख हलकाए दर दर धक्के कल विच खाए, धर्म राए लाए सिर डण्डा। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुण वरते, कलिजुग बेमुखां देवे डण्डा।

❋ २५ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❋

जगत पित पति पतिवन्ते। कलिजुग माया पाई प्रभ बेअन्ते। बैठा अडोल आप इकन्ते। कोई गुरमुख जाणे विरला साध सन्ते। सोहँ शब्द गुर साचा मंते। रसना जप होए भगत भगवन्ते। जोत सरूप कल मारे सर्ब देव दंते। भुल्ले जीव विच कल जिस बणाई बणते। कोए ना मेटे निहकलंक भाणा वरतंते। रसना विकारी होए जीव जन्ते। महाराज शेर सिँघ घर साचा कन्ते। सच प्रभ सच वसणेहारा। भय भंजन समरथ प्रभ आप निरँकारा। बैठा आप अडोल देवे जीव अधारा। महाराज शेर सिँघ प्रगट कियो सर्ब संसारा। आप अभुल्ल भुल्ल सभ भुलणेहारा। आप अतुल अतोल, सृष्ट प्रभ तोलणहारा। सोहँ शब्द साचा मुख बोल, आत्म देह होए उज्जयारा। जीव दृष्ट प्रभ देवे खोल्ह, करे जोत देह आकारा। अनहद शब्द मन वजाए ढोल, झन झन देह होए झनकारा। अमृत बूंद कँवल में डोल्ह, खोल्ह देवे प्रभ दस्म दुआरा। करे दरस प्रभ जोत अमोल, नज़री आवे आप एकँकारा। जोत संग प्रभ देवे मेल, जोत सरूप होवे जीव आधारा। महाराज शेर सिँघ घर तेरा खेल, खेल गया लै निहकलंक अवतारा। निहकलंक कोई भेव ना जाणे। जोत सरूप घर प्रगटे, भुल्ले जीव अञ्याणे। बेमुख कलिजुग मर मिटे, गुर शब्द ना पछाणे। महाराज शेर सिँघ सिख साचा, जो कर चले तेरे भाणे। प्रभ की जोत सद अनेका। एकँकार जगत पित एका। सोहँ शब्द रक्खो मन टेका। आत्म निर्मल होवे बुध बिबेका। महाराज शेर सिँघ निहकलंक गुर एका। जोत सरूप प्रभ जोत प्रगटाई। जुग चौथे अचरज खेल रचाई। बैठ अडोल सभ सृष्ट डुलाई। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ दे उलटाई। तीन लोक प्रभ जोत जगाई । विच आकाश होवे रुशनाई। विच पाताल बाशक सेज प्रभ आसण लाई।

नैण मुँधार प्या रघुराई। विच मात घर जोत जगाई। बेमुखां हरि सार ना पाई। गुरसिक्खां शब्द धुन वजाई। अनन्द बिनोद प्रभ नज़री आई। अमृत बूंद सिख चातृक मुख पाई। सोहँ रंगण तन मन चढ़ाई। उपजे ज्ञान सच दीपक देह जगाई। बेमुखां घर हाहाकार, गुरसिक्खां घर जै जै जैकार कराई। कलिजुग लै अवतार, भगत जनां हरि मेल मिलाई। द्वापर जिउँ कृष्न मुरार, निमाणयां सिर हत्थ टिकाई। त्रेता प्रगट राम अवतार, दैंत दहिसर घाई। कलिजुग लै अवतार, निहकलंक नाम रखाई। गुरसिख ना होए ख्वार, अन्तकाल प्रभ होए सहाई। देवे दरस आप मुरार, विच बबाण गुरमुख बिठाई। गुरसिख जावे सच दरबार, जिथ्थे बैठा प्रभ जोत जगाई। गुरसिक्खां थाएँ बैकुण्ठ धाम, पौण उनन्जा सिर छत्र झुलाई। आप अडोल जोत ना डोले, जोत सदा प्रभ डगमगाई । प्रभ का रूप अगम्म अपार, प्रभ की जोत लखी ना जाई। जेवड आप तेवड दात, किसे गुरमुख बूझ बुझाई। गुरसिख पूरा जाणे ना दिन रात, आत्म जोत प्रभ जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ लिखाए उत्तम जात, जिन प्रीत गुरचरन लगाई। जोत सरूप प्रभ धरनी धरना। कलिजुग प्रगटे चार वरन प्रभ इक्क करना। राउ रंक सभ सरनी पड़ना। प्रभ अभिमान सभ दा हरना। गुरचरन लाग कलिजुग तरना। बेमुखां डन्न धर्म राज दा भरना। नैण दरस कर होए ना मरना। महाराज शेर सिँघ चरन लाग जीव जग दुतर तरना। तारे आप प्रभ तारनहारा। सर्ब सृष्ट विच वसणेहारा। आपणे रंग रवे करतारा। जुगो जुग प्रभ लै अवतारा । वल छल करे प्रभ गिरधारा । सृष्ट सारी होए ख्वारा। बेमुख होए जिन सोहँ शब्द विसारा। कलिजुग रोए जीव ना जाणे प्रगटी जोत निरँकारा। गुरसिख दुबिधा मैल प्रभ धोए, आत्म जोत कर चमत्कारा। महाराज शेर सिँघ घर प्रगट होए, सोहँ शब्द खोल्ह दित्ता भण्डारा। ओअँ आप प्रभ अन्तरजामी। मधसूदन दामोदर स्वामी। सोहँ शब्द प्रभ बख्शे घर जगत स्वामी। जोत सरूप सर्ब वसणेहारा, जोत प्रगटे सच गुर धामी। महाराज शेर सिँघ पति रक्खणहारा, सोहँ शब्द सच्चा गुर नामी। साचा गुर साचा उपदेसा। सोहँ शब्द जप होए बुध विषेषा। जै जै जैकार कराए कर अचरज भेसा। महाराज शेर सिँघ कोई गुरमुख जाणे तेरा जोत सरूपी वेसा। जोत सरूप नरायण नर। प्रगट जोत बैठा सच घर । जोत सरूप कल आए हरि। गुरसिख सोहँ दान गुर दर। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, कलिजुग प्रगटे आसा वर। निहकलंक प्रभ नां रखाया । छड्ड देह जगत पाई माया। जोत सरूप विच सिख समाया। जे कोए वेखे प्रभ नज़र ना आया। प्रभ के भेसे जगत भुलाया। सोहँ शब्द कल प्रभ ज्ञान दिवाया। जो जन्त सिमरे तिन प्रभ नदरी आया। हिरदे वसे सर्ब सुख दाया। गुरमुख नाउँ गुर घर ते पाया। प्रभ अलख अलेख किसे भेव ना पाया। प्रगटी जोत प्रभ साचा वेख, सिँघ सिँघासण आसण लाया। महाराज शेर सिँघ तेरे दरस हमेश, गुरसिक्खां

२७६
०१

मन धीर धराया। कर दरस मन प्रभ बांधे धीर। कलिजुग हउमे मारे ममता तीर। जोत प्रकाश होए शांत सरीर। महाराज शेर सिँघ आत्म मारया सोहँ तीर। गुरमुख उज्जल करे जगत विधाता। गुरमुख ज्ञान सोहँ शब्द ज्ञाता। साचा ध्यान गुरचरन लगाता। कलिजुग मिल्या महाराज शेर सिँघ जग जीवण दाता। गुरमुख आए गुर दर पुकारया। जोती जोत सरूप प्रभ देह जोत अधारया। भुल्ल ना जाए तेरा नाउँ, कल आए सर्ब संसारया। प्रभ वसे सभ थाउं, जोत सरूप कल दे उज्जयारया। साचा घर गुरचरन थाउँ, चरन लगाई प्रभ लगावण हारया। सोहँ शब्द चलाया नाउँ, कलिजुग डुब्बा विच मंझ धारया। ब्रह्म सरूप जीव ब्रह्म, पारब्रह्म जीव क्यों वसारया। कलिजुग विचार प्रभ कर्म, बांहों पकड़ तख्त उतारया। अगम्म अथाह अपर अपार, हँकारीआं हँकार निवारया। कलिजुग अग्न मारी भाह, जले जीव जिन मनो विसारया। जोत सरूप जीव जलाए जिउँ तशक फुंकारया। चार कुन्ट होए हाए हाए, बेमुखां जन्म कलिजुग हारया। गुरसिक्खां हरि मिल्या आए, पूरब कर्म प्रभ आप विचारया। भगत जन सोहे, जिन प्रभ देवे दरस जोत दीदारया। महाराज शेर सिँघ जोत निर्मल सोवे, सृष्ट वक्त विसारया। वक्त सुहावा धाम सुहावा प्रभ जोत प्रगटाए। बेमुखां नज़र ना आ कलिजुग बद्धा झूठा दाअ, मानस जन्म गए गंवाए। गुरसिक्खां दर माण दवा, कर किरपा फूलन बरखा गुरसिख प्रीत गुरचरन बण आए। बांहों पकड़ बेड़ा बन्ने ला, दरगाह साची गुरसिख बहा, निहकलंक प्रभ अख्वावे। महाराज शेर सिँघ सोई करावे जो मन भाणा, शब्द कोई मोड़ ना पाए। शब्द सुरत प्रभ की वथ। जिस प्रभ देवे सो पुरख समरथ। प्रभ की जोत कथना अकथ्थ। कलिजुग प्रगटयो जिउँ राम पूत दसरथ। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, सोहँ नाम दे चल्लया वथ। एक जोत एक रंग आप ओंकार। सृष्ट उपाई प्रभ फुरना धार। प्रभ भेत खुल्हाई शब्द रसना उचार। तीन लोक होए जै जैकार। सतिजुग जोत मेहरवान आधार। त्रेता प्रगटयो राम अवतार। द्वापर जोत धरे कृष्न मुरार। भगत जनां हरि पैज संवार। कलिजुग प्रगटयो निहकलंक अवतार। पुरी घनक होए जोत आकार। मनी सिँघ सन्त करे विचार। सोहँ शब्द धुन वज्जे धुन्कार। आत्म बसन्त होए बहार। नज़री आवे महाराज शेर सिँघ पूरन अवतार। मनी सिँघ प्रभ दरस दिखाया। बांहों पकड़ टुम्ब उठाया। शब्द सरूप प्रभ शब्द धुन वजाया। रत्न राग प्रभ हिरदे वसाया। पूरन भाग जिस महाराज शेर सिँघ चरन लगाया। सन्तन देवे प्रभ वड्याई। पूरन मति प्रभ विच पाई। खोल्ह कपाट बजर प्रभ दरस दिखाई। होए प्रकाश निर्मल जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग दे भगत वड्याई। सन्तन दीसे सति सरूप। जोत प्रभ सदा अनूप। ना कोई रंग ना कोई रूप। आपणी महिंमा आप जणावे, प्रभ साचा भूप। कलिजुग आण तरावे, गुरसिख विच अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, कलिजुग महिंमा

आप लिखावे, कलिजुग प्रभ साचा स्वच्छ सरूप। सन्तन पाई मन मति बुध। जोत अधार होई झट्ट सृष्ट की सुध। कोई ना मेलणहार इक्क प्रभ बाझों तुध। बैठ तख्त अडोल जोत सरूप प्रभ कराया युद्ध। महाराज शेर सिँघ गुरसिख उज्जल, जिउँ निर्मल दुध्ध। मनी सिँघ देवे प्रभ वड्याई। आदि जुगादी होए सहाई। कँवल नैन प्रभ दरस दिखाई। मुकट बैन प्रभ नज़री आई। सांवल सुंदर प्रभ भेख वटाई। कलिजुग निहकलंक नाउँ रखाई। महाराज शेर सिँघ चार कुन्ट तेरे नाम दुहाई। कुन्ट चार सोहँ शब्द चलाया। जोत सरूप जगत डुलाया। भरम भुलेखे जगत भुलाया। महाराज शेर सिँघ तेरा अन्त कल बेमुख ना पाया। साचा प्रभ साचा दरबार। सचखण्ड प्रभ वसणेहार। ऊँचो ऊँच अगम्म अपार। साचा प्रभ निरवैर निराहार। प्रभ की जोत होए जगत आधार। सच ब्रह्मण्ड प्रभ होए आकार। ब्रह्मा विष्न महेष प्रभ खड़े दरबार। शिव शंकर बैठे जटा जूट धार। दर दरवेश अगंत विचार। देवे शब्द प्रभ गुण विचार। जोत सरूप जुगो जुग लए अवतार। कलिजुग जामा घनकपुरी विच धार। छड्डी देह विच जोत आधार। जोत प्रगटी विच गुरसिख अपार। सुहाए थान जिथ्थे प्रभ आया कल धार। विच कल मिले वड्याई, कर चरन निमस्कार। होवे सहाई प्रभ अनक बार। महाराज शेर सिँघ तेरे नाम दुहाई, कलिजुग भुल्ला सर्ब संसार। भगत जन हरि प्रभ तारे। दर घर आए हरि पैज संवारे। ध्रू भगत सोहे दरबारे। प्रहलाद तराए नर सिँघ लै अवतारे। अंबरीक पैज रखाए दुरबाशा हँकारे। बल घर मंगण आए कर प्रभ भेख भिखारे। तरया जनक ओट इक्क नाम अधारे। राणी तारा मिल साध संगत तारे। साध संगत प्रभ वसणेहारे। झुग्गी बिदर सुत्ता प्रभ पैर पसारे। देवे माण बिदर सुदामा कर चरन निमस्कारे। जैदेउ देवे माण, लेख लिखाए अगम्म अपारे। गऊ जिवाए छप्पर छाए, फेर दिहुरा नामा तारे। साध संगत लाज रखाई, सैन रूप प्रभ देह पलटाई, प्रभ का खेल अपर अपारे। रामानंद कबीर मिलाई, जोत विच जोत टिकाई, अन्तकाल गया सच दरबारे। भगत धन्ने प्रभ वच्छे बन्ने, भोग लगाया आए घर छारे। शब्द उचारे गनका तारे। अन्त काल मिले बबाणे। पूतना तारी प्रभ कृष्न मुरारी, लाई विस जिस थण नाले। बधक तारया जिन चरन कँवल बाण मारया, गुण अवगुण प्रभ ना विचारे। दास रवि चुमिआर उतरया पार, धर भेंट गंगा कसारे। अजामल तारे जम दूत दुष्ट प्रभ मारे, रसना नाम नरायण उचारे। प्रभ साचा सच कल धारी, भगत जनां हरि पैज संवारे। महाराज शेर सिँघ निरँकारी, विच मात लै अवतारे। मातलोक प्रभ जोत जगाई, विछड़े जुग चार चौथे प्रभ लए मिलाई। भगत जनां महिंमा निहकलंक प्रभ आप लिखवाई। मनी सिँघ पाए माण, शब्द सोझी प्रभ आप बुझाई। माणा सिँघ सिख प्रधान, सिँघ पाल घर जोत जगाई। सिँघ पाल प्रभ हो दयाल, कृष्न सरूप प्रभ दरस दिखाई। आत्म प्रगटे प्रभ गोपाल, दरस नैण होए विच

सच शब्द प्रभ सोझी पाई। आया दर कलिजुग गया तर, दर घर वज्जी वधाई। चवी चेत प्रभ दरस दिखाई। झूठी देह गुरसिख तजाई। जोत सरूप विच जोत मिलाया, सिख घाल प्रभ थाएँ पाई। सचखण्ड प्रभ देह टिकाई, जन्म मरन दा गेड़ चुकाया। जुग चौथा कर माण गंवाया। ब्रह्मा बांहों पकड़ उठाया। पाल सिँघ सच तख्त बहाया। कँवल नाभ ब्रह्म प्रकाशे, आप अपरम्पर प्रभ अबिनाशे, शब्द हुक्म ब्रह्मण्ड चलाया। महाराज शेर सिँघ कल निहकलंक अवतार भगत जनां प्रभ पार कराया। साचा प्रभ ना वेखो दूर। आत्म वसे प्रभ सदा हज़ूर। झूठी काया जग कूड़। कलिजुग डुब्बा लहिंदे पूर। गुरसिख उज्जल जिउँ पर्बत कोहतूर। सोहँ शब्द मन चाढ़े रंग सरूर। मदि मास गुरसिख रक्ख रसना दूर। मदि मासी होए कलिजुग चकनाचूर। आत्म परस प्रभ साचा नूर। कर दरस मन उतरे सगल वसूर। महाराज शेर सिँघ साध संगत सद वसे हज़ूर। प्रभ अविगत अगोचर अबिनाशी। काल अन्त तोड़े जम फाँसी। जोत प्रगटाए तीन लोक प्रभ वासी। सृष्ट सबाई प्रभ चरन की दासी। बेमुख सोए जोत प्रभ चरन मुक्ख भवासी। नर्क निवासी जिस आहार मदि मासी। सोहँ शब्द होए गुंजार, गुरसिख गुरचरन रहिरासी। महाराज शेर सिँघ नर अवतार, मूर्ख जन्म ना गंवायो विच हासी। प्रभ चरन लाग मिले वड्याई। पतित पावन दुःख भय भंजन प्रभ जोत प्रगटाई। आदि जुगादि भगत जनां प्रभ होए सहाई। कलिजुग आण भगतन देवे प्रभ वड्याई। होए परवान दर दरबान सवरन सिँघ गुरसिख टिकाई। सोहँ शब्द बाण, जुग चौथा धू तख्तों लाहया। महाराज शेर सिँघ चोज विडाण, जोत सरूप सद आवण जाण, आपणा भेत आप रखाया। कलिजुग प्रगटे प्रभ अबिनाश। सोहँ सिमरो स्वास स्वास। गर्भ ना आवे फेर जग वास। रसना ना लाए गुरसिख मदिरा मास। दोए जोड़ करो अरदास। साध संगत प्रभ सदा है पास। आत्म देखो सच्चे प्रभ का वास। काया कोट विच जोत धरवास। गुरसिख कलिजुग चन्दन जिउँ प्रभास। देवे दर्शन प्रभ गुणतास। चरन लाग होए कल रहिरास। भगत जनां हरि दासन दास। साध संगत प्रभ सदा निवास। महाराज शेर सिँघ सुहाए थान जिथ्थे तेरा वास। प्रभ का वास जिथ्थे संग सति। भगत जनां हरि राखे पति। बेमुखां कल उलटी पाई मति। चले विकार गया धर्म मन सति। गुरसिख सोहँ नाम जप। सच शब्द मन साचा रट। महाराज शेर सिँघ तेरी सरन आए, एथे ओथे राखी गुरसिक्खां पति। प्रभ की जोत सदा अस्थूल। नैणीं पेख जीव ना भूल। सोहँ वणज कर, गंवा जाईं ना मूल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, कलिजुग प्रगटे कन्त कन्तूहल। कलिजुग जोत प्रगटायके, प्रभ सृष्ट जलाई। निहकलंक नाउँ रखायके, अग्न जोत जगत में लाई। सोहँ शब्द डंक वजायके, कुन्ट चार सुणे लोकाई। विच कलिजुग माया पायके, बिन सिक्खां सृष्ट भुलाई। कल कलिजुग कर्म विचार के, जामा धार

खेल करे रघुराई। मनी सिंघ सुरत संभाल के, शब्द सुरत लिख्त लिखाई। कर सन्तन सन्त प्रभ भाल के, विच ललाट जोत जगाई। गुरचरन प्रीती पाल के, पिता पूत सबंध बणाई । छड्ड देह जोत सरूप वटायके, घर महाराज शेर सिंघ जोत टिकाई। जोती जोत प्रभ मेल्या, दे वड्याई। अचरज खेल प्रभ खेल्या, सतिजुग साचा सतिगुरू बणाए। विछड़यां प्रभ मेला मेल्लया, साध संगत प्रभ भेत खुल्हाए। महाराज शेर सिंघ जोत निरँजण सच समग्री गुरसिख दे पुचाई। सतिजुग साचा सति कर सति वरते सर्ब खण्ड। सतिजुग साचा सति कर, प्रभ विच वसे वरभंड। सतिजुग साचा सति करे, जीव आत्म होए ना खण्ड । सतिजुग साचा प्रभ सति वसे, प्रभ हिरदक होवे ना रंड। सतिजुग साचा प्रभ सति वसे, बेमुख दर ते पावण डण्ड। महाराज शेर सिंघ विच सच वसे, कलिजुग देवे दुष्टां डण्ड। दुष्टन डण्ड आप प्रभ दियो। नर्क निवास काल अन्त प्रभ कियो। अमृत नाम निधान गुरसिख गुर दर ते पियो। होए जन चतुर सुजान, जुग चार सदा जग जीउ। महाराज शेर सिंघ कलिजुग अवतार, गुरचरन लाग प्रभ दर्शन कियो। गुर दर्शन लोचे सभ देवी देवा। प्रभ जोत सरूप अलख अभेवा। प्रभ का दर्शन कलिजुग उत्तम मेवा। गुरचरन जीव साची गुर सेवा। महाराज शेर सिंघ छड्ड जोत जीव विच आप वसेवा। वसे वसणहार

२८३ ०१ सर्ब थाएँ। कलिजुग विरला गुरमुख कोई बूझ बुझाए। बूझे कोई गुरमुख, जिस सिर हत्थ टिकाए। पावे सो जिस प्रभ साचा २८३ ०१

दरस दिखाए। आत्म दरसावे सो, जित प्रभ कँवल बूंद मुख पवाए। हरि गुण गावे सो, जिस रसना आप नाम वसाए। महाराज शेर सिंघ कलिजुग पावे सो, जोत सरूप जिस प्रभ दरस दिखाए। प्रभ जोत सरूप जोती जोत मिलांयदा। प्रभ जोत सरूप भुलयां सद मार्ग पांयदा। प्रभ जोत सरूप दे शब्द ज्ञान सच वसांयदा। प्रभ जोत सरूप सच सुच्च विच देह वरतांयदा। प्रभ जोत सरूप गुरसिख चातृक प्रभ अमृत मेघ बरसांयदा। प्रभ जोत सरूप अटल्ल आप अटल्ल पदवी गुरसिख रखांयदा। प्रभ जोत सरूप सच घर वसे, जिथ्थे जोत जगांयदा। प्रभ जोत सरूप देवे जोत रवि ससि, गुरसिख नाम वड लखवांयदा। महाराज शेर सिंघ विच भगतां वसे, वेखे सो जो जन रसना सोहँ गांयदा। रसना गाए प्रभ वड ऊँचा। गुरसिख निर्मल कलिजुग सूचा। विच बैकुण्ठ बिन सिख कोए जाए ना पहुंचा। महाराज शेर सिंघ जोत सरूप प्रभ ऊँचन ऊँचा। ऊँचो ऊँच ऊँच दरबारा। वसे आप प्रभ निरँकारा । जगे जोत मन गुरसिख उज्जयारा। महाराज शेर सिंघ तेरा अन्त ना पारावारा। झूला झूल झूल प्रभ जगत झुलाया। सचखण्ड प्रभ बैठ अडोल, जगत डुलाया। प्रगट जोत दे पड़दे खोल्ह, कलिजुग अन्तिम प्रभ आप कराया। महाराज शेर सिंघ कल करतार, बेमुखां नाउँ भुलाया। वड भूप आप वड राजा। सर्ब सृष्ट सदा प्रभ साजा। भाणा अमेट प्रभ गरीब निवाजा। जनां परस वजावे शब्द अनहद वाजा। सरन पड़े की राखे लाजा। महाराज शेर

सिँघ मचावे धुंद विच देस माझा। साचा शब्द गुरसिख मन्न लै, सर अमृत होसी थेह। बेमुखां अमृत झूठी दृष्टा रहे ना देह। अन्तकाल सिर पाई खेह। गुरसिक्खां पाई अमृत मेंह। महाराज शेर सिँघ सिक्खां तुट्टे ना नेंह। सरअमृत सर रामदास । अन्तकाल होए जम प्रभास। विच त्रेता बैठा बाल्मीक रमदास। महाराज शेर सिँघ जुग चौथे सर्ब करे विनास। आप अपरम्पर प्रभ खेल रचाया। सर्बत्त तीर्थां माण गंवाया। मस्तूआणा सच धाम बणाया। महाराज शेर सिँघ कल पाई माया । कलिजुग माया पायके प्रभ खेल खेला। दर्शन करदे आयके, नहीं रहणा मुख छुपायके, आया निहकलंक वेला। महाराज शेर सिँघ जावे कल उलटायके, गुरसिख सद सज्जण सुहेला। प्रभ की जोत दोए जहानी। आपणी महिंमा प्रभ रसन बखानी । प्रभ की महिंमा रसन बखानी। देवे शब्द सोहँ प्रभ वड दानी। प्रगट जोत प्रभ ओअँ, गुरसिख बणावे जोत दानी। भगत गुर जगत गुर नाउँ दोअँ, बाकी जगत सभ फानी। गुरसिख ना जाणे प्रभ रंग दिन रात। गुरसिख सुगंधी जिउँ कलिजुग पारजात। ईशर जोत प्रगटे विच लोकमात। वरन चार इक्क कराए, रक्खे भेत ना कोए ज़ात। सोहँ शब्द इक्क चलाए, सतिजुग बख्शी सच्ची दात। जोत सरूप प्रभ दरस दिखाए, सिमरे जो जानी प्रभात। सद अस्थूल अडोल रहे जीव गावे इकांत। अमृत बूंद मुख चवावे, गुरमुख आत्म होवे सांत। ईशर गुर दोए जग आए। ईशर नाउँ गुर झोली पाए। साचा गुर ईशर नाउँ जगत सुणाए। कलिजुग नाम दान नानक घर पाए। धार भेख बैराग चार कुन्ट नाम सतिनाम दृढ़ाए। गुरमुख सेवा भगत विचार, अन्तिम जोत विच सच टिकाए। अंगद तार तारनहार विच जोत अमरदास जाए। अमरदास छड्ड स्वास, रामदास जोत जगाए। रामदास अर्जन पास आपणा भेत खुल्ह्राए। हरिगोबिन्द वर घर प्रभ दर तों पाए। अन्तिम जोत विच हरिराए टिकाए। हरिराए हरिकृष्न इक्क हो जाए। तेगबहादर बिरध अवस्था प्रभ दर्शन पाए। गुर सिँघ गोबिन्द मन लाहे चिन्द, शस्त्र धार दुष्ट खपाए। खण्डा दो धार अमृत दो धार, मदि मास नूं भोग ना लाए। जोत दस एक शब्द लिख लिख थकाए। प्रभ अन्त ना पाए, अन्त गए जग हार। अन्तकाल महाराज शेर सिँघ प्रगटे नर लै अवतार, एह शब्द चलाया आप, सोहँ पकड़ हाथ नाम कटार। महाराज शेर सिँघ माया तेरी, भगत बिन गुर तारे ना अवरा। भगत जन गुरचरन कँवल भंवरा। गुरचरन लाग जन्म मरन जन भगत संवरा। मिल्या प्रभ अबिनाश घर आए गंवरा। पैज रखाए कलिजुग आण, भगत जनां सिर झुलावे छत्र चवरा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख वधाई, चरन लाग जन्म मरन संवरा । जन्म मरन प्रभ कट्टणेहारा। झूठे धन्दे लग्गा संसारा। गहर गम्भीर प्रभ कोए पाए ना सारा। कर दरस होए शांत सरीर, खोल्ह दए प्रभ दस्म दुआरा। हउमे विच्चों जाए पीड़, सोहँ शब्द बाण गुर मारा। बिन गुर कोए ना देवे धीर, कुन्ट चार होया आकारा। भगत जनां हरि

२८४
०१

मिले गुण गहीर, रसना होवे जै जैकारा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तेरा सच वज़ीर, चेत सिँघ गुरसिख प्यारा। सचखण्ड वज्जे वधाई, जोत सरूप सिख उतारा। मानस जन्म जग सुफल कराया, साची प्रीत गुरचरन बण आई। कर सेव गुर दरस दिया पूरे, सिख अमरापद पाई। गुर पूरा जिस कलिजुग अराध्या, गुर पूरा होए सहाई। फूलन बरखा प्रभ आप बरखावे, चेत सिँघ कलिजुग मिले वधाई। जोती जोत मिलाए प्रभ, गुरचरन जिस आस रखाई। कलिजुग वरते प्रभ किया सभ, जीव कोई भेव ना पाई। महाराज शेर सिँघ निमाणयां ल्या लभ्भ, हँकारीआं प्रभ हत्थ ना आई। निमाणयां माण प्रभ पूरन कर इच्छआ। चल आए गुर दरबार, सोहँ शब्द साची पाए भिच्छया। कलिजुग आया प्रभ तारनहार, कलिजुग डुब्बा सर्ब विच विस्सया। महाराज शेर सिँघ जोत निरँकार, सरन पड़े की करे रच्छया। निहकलंक कल प्रगट होए। प्रभ की जोत एक, ना कोई जाणे दोए। सरूप देह अनेक, विच वसे जोत इक्क होए। छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश जग एक रंग होए। कलिजुग जाए हार, सतिजुग सति पुरख सतिवादी होए। एक जोत एक प्रभ रंग, एक सृष्ट वस्सया प्रभ सोए। जीव जन्त बणाई बणत भेव जाणे कोए। सोहँ शब्द मन का मंत, गुरसिख विरला हिरदे परोए। विच जीअ जन्त सच्चा साध सन्त, आत्म जाग कदे ना सोए। सच शब्द जगत वरतंत, सतिजुग साचा शब्द सोहँ होए। शब्द सुण कर शब्द परीख्या। जीव गुण अवगुण विच देह ना दीख्या। कलिजुग

२८५
०१

प्रगटे सद गुण निरगुण साची मंग प्रभ दर ते भीख्या। महाराज शेर सिँघ पकड़ तराए, जिन्हां लेख धुरों है लिक्ख्या। लेख लिखाए लिखावणहारा। किरपा कर दरसावे सच दुआरा। पवण पाणी अग्नी पाताल प्रभ वसणेहारा। खाणी बाणी गगन पाताली प्रभ जोत पधारा। कलिजुग महिंमा प्रभ आप वखाणी, जीव भुल्ला मुग्ध गंवारा। साचा शाह प्रगटे सच कर जाणी, कर दरस पा मुल्ख दुआरा। महाराज शेर सिँघ चार वरन गुरबाणी, सोहँ शब्द चले दो धारा। जो जन आए चरन निमस्कारे। कर किरपा प्रभ पार उतारे। दुष्ट दुराचारी प्रभ नर्क निवारे। गुरसिख होए अपर अपारे। कलिजुग प्रगट्या प्रभ सर्ब गुण तारनहारे। जीव जन्त विच इक्क जोत ठारे। हउमे माण गुर शब्द संग मारे। कलिजुग मिल्या जो दर आए निमाणे। प्रगट भयो विष्नूं भगवान, निहकलंक नाम उचारे। महाराज शेर सिँघ गुर गुण निधान, लागे चरन सगल सभ तारे। जीव जन्त जन्त अञ्याणा। जगत धन्दे छड्ड गया सच टिकाणा। विकार मन्दे पहनिआं कल झूठा बाणा। कर मूर्ख बन्दे छड्ड जाणा देह झूठा बाणा। फस जाण विच माया फंदे, पूरा सतिगुर नहीं पछाणा। कलू काल कहर जग वरते, वरते जगत गुर का भाणा। गुरचरन लाग सर्ब दु:ख हरते, डिग्ग द्वार होए माण निमाणा। काल सदा सिर कूके, कलिजुग समझ मूर्ख अञ्याणा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपे, कलिजुग आया प्रभ तर जाण। जन सिमरन सच हरि नाम। दरगाह मिले साचा थान। गर्भवास फिर कदे

ना पाण। महाराज शेर सिँघ चरन निवास, रसना हरि हरि हरि गुण गाण। ईश्र जोत जाओ बलिहारी। जुगो जुग प्रभ जोत आकारी। त्रेता प्रगट राम चन्द अवतारी। नीच जात भीलणी जा प्रभ तारी। लाए भोग बेर आप बनवारी। भगत जन मिले आप गिरधारी। ईश्र जोत सद जाउ बलिहारी। सती अहल्या चरन छुहाए सिला होई तारी। सचखण्ड गई बबाण, सच्ची मारी जगत उडारी। जुग जुग निमाणयां प्रभ पैज सवारी। द्वापर प्रगट कृष्न मुरारी। रक्खी लज्जया द्रोपत नारी। घर जाए बिदर पैज संवारी। कलिजुग बिदर घर जाए घुमिआरी। नाम सोहण सिँघ सच रसन उचारी। साचे साहिब सद जाउ बलिहारी। गीता ज्ञान उचारे कृष्न अवतारी। अर्जन कर अभिमान, होया हँकारी। शब्द ज्ञान प्रभ आत्मक बरछी मारी। बिराट रूप होए प्रभ सृष्ट सँघारी। महासार्थी हो बैठा कारज सवारी। कुन्ट चार विच द्वापर कृष्न भगवान होए जै कारी। कृष्न भगवान भगत देवण दान, कलिजुग आण जोत प्रभ अवतारी। दे ब्रह्म ज्ञान करे पुरख सुजान, हउमे ममता शब्द संग मारी। जीव कर ध्यान प्रगटे भगवान, कलिजुग निहकलंक अवतारी। महाराज शेर सिँघ जाउ कुरबान, कलिजुग आए जिन पैज संवारी। भगतन संग प्रभ वसणेहारा। भगतन रंग देवे नाम दुआरा। अमृत गंग विच कँवल फुहारा। गुरसिख दान साचा मंग, महाराज शेर सिँघ सच दुआरा। गुरप्रसादि दर मिले वड्याई। गुरप्रसादि साध संगत मन वज्जे वधाई। गुरप्रसादि जीव गुर दरस पाई। गुरप्रसादि हउमे ममता विच देह जलाई। गुरप्रसादि दु:ख दर्द प्रभ दे मिटाई। गुरप्रसादि साधन साध आत्म बूझ बुझाई। गुरप्रसादि आदि जुगादि सर्ब ठांए रिहा समाई। गुरप्रसादि अबोध अगाध जोत सरूप शब्द लिखाई। गुरप्रसादि रसना साध हरि हरि शब्द रसना लिखाई। गुरप्रसाद कलिजुग होए पूरन भाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दरस दिखाई। वडभागी वडभाग वड वड्डा गुर पाया। सोई आत्म गई जाग, हिरदे ज्ञान प्रभ वसाया। साध संगत होए पूरन भाग, जिन्नां मिल हरि रस रसना गाया। माणस जरम ना लागे दाग़, गुरचरन लाग जिस सीस झुकाया। अनहद शब्द चले अनराग, मदि मास जिन रसन ना लाया। बेमुख लाउँदे जिउँ सुञें घर काग, ऐसा सतिगुर धक्का लाया। पंञी चेत दिवस वडभाग, साध संगत प्रभ मेल कराया। गुरसिक्खां प्रभ पकड़ी वाग, शौह दरया पार कराया। जिउँ बिदर घर खाधा साग, कलिजुग भोग सिक्खां घर लाया। जगत चलाए प्रभ अनवाद, आपणा भेद प्रभ आप छुपाया। गुरमुख विरला पावे साद, आत्म दरस प्रभ जोत जगाया। वज्जे धुन शब्द अनाहद, साची जोत सच मेल कराया। महाराज शेर सिँघ आदि जुगादि, है भी होसी हुंदा आया। जो जन करे प्रभ विचार। कर किरपा बख्शे अमृत धार। मिटे अज्ञान देह दीपक होए उज्जयार। गुरचरन लाग कलिजुग गुरसिख उधरन पार। प्रभ शब्दी शब्द चलाया। उनन्जा पवण सिर छत्र झुलाया। स्वांग स्वांगी खेल रचाया।

धार खेल चतुर्भुज कहाया। साँवल सुंदर प्रभ जोत प्रगटाया। महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे। सतिगुर साचा मनी सिँघ बणावे। सिर रक्खे हत्थ तीन लोक बूझ बुझावे। होवे समरथ प्रभ की जोत विच देह टिकावे। सतिजुग साची सच बणत बणावे। दूजा नाम भजो भगवान। कर बुध बिबेक आत्म ज्ञान। दक्खण दिशा होए प्रधान। महाराज शेर सिँघ सच शब्द वखाण । भगवान सिमर प्रभ भरम चुकाए। हउमे मार मन शब्द वसाए। शब्द रंग तन मन चढ़ाए। कर दरस सर्ब तर जाए। पूत भगत कर आप वड्याए। देवे माण आप वड दाता। सर्ब कला प्रभ पुरख बिधाता। ब्रह्म ज्ञानीआं होवे ब्रह्म ज्ञाता। चार वरन वसे रंगराता। महाराज शेर सिँघ जगत वड दाता। वड्डा आप वड्डी वड्याई । उच्च पदवी गुरसिक्खां गुर दर ते पाई। रसना रसायण, दुरमति मति जाई। महाराज शेर सिँघ सरन पड़े दी लाज रखाई । गुर दरबार आए कर आसा। कोए ना जाए दर ते निरासा। ईश्र जोत करे मात प्रकाशा। बैठा अडोल प्रभ पूरन अबिनाशा। सोहँ शब्द सुण सर्ब दुःख नासा। भूत प्रेत देह करे ना वासा। जे कोई वेखण आया दर तमाशा। बेमुख जन्म गंवाए कर हासा । जो जन आया दरस प्यासा। तिस जन कउ बलि बलि जासा। शब्द सुण सर्ब दुःख नासा। जीव बिल्लायन जिउँ बोटी बोट। चरन लाग तर जाण कोटी कोट। महाराज शेर सिँघ शब्द वजाई चोट। रोग गंवाए रोगीआं, रंग नाम चढ़ा के। देवे बैराग प्रभ जोगीआं, जो आए भरम गंवा के। प्रभ वसे विच विजोगीआं, जो सरनी डिग्गे आ के। महाराज शेर सिँघ राखे पति, जीव गए रोग गंवा के। दुखिया जीव दर बिल्लाया। कर किरपा प्रभ पार कराया। नाड़ी बहत्तर प्रभ पवित्त कराया। तप सप्प भूप पलीत दर वाट अमका काजी प्रभ नास कराया। हाकन डाकन सिर मुंडवाया। शदौण पौण सर्ब हटाया। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत विच शब्द बन्न्हाया। गुर नानक पूरे साचा शब्द विच जगत सुणाया। ईश्र टेक रख, रसन अलाया। कलिजुग महाराज शेर सिँघ पूरन परमेश्वर आया। कलिजुग तारे भगत साचा सरबंस। सूखम निरालम जोत परमहँस। दुष्ट सँघारे जिउँ कृष्न कंस। महाराज शेर सिँघ सतिजुग चाले गुरसिख तेरा साचा सरबंस। विष्नूं अंस भगत जन होए। भगत भगवान दोए इक्को होए। कलिजुग जीव जाणे ना कोए। सति संगत प्रभ विच वसोए। महाराज शेर सिँघ चार कुन्ट जै जै जैकार होए। गुरसिक्खां घर जै जैकारा। जिथ्थे प्रगटयो प्रभ अवतारा। बेमुखां घर हाहाकारा। सोहँ बाण शब्द गुर मारा। महाराज शेर सिँघ तेरा सिख होए नाम वणजारा। वणज नाम गुर दर करना। गुरसिख गुरमुख प्रभ उज्जल करना। बेमुख कलिजुग दुःख डाहढा भरना। सगल छोड जो जन आए प्रभ शरना। अन्तकाल कलि होए ना मरना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा गुरसिक्खां वरना। वर घर साचा प्रभ जगदीस। सोहँ शब्द जगत नहीं काचा,

बिन एकस कोए नाही हदीस। अमृत नाम कर दे साचा, बेमुखां गुरसिख ना रीस। महाराज शेर सिँघ वेखे जगत तमाशा, बेमुख खपाए धड़ लाथे सीस। जगन्नाथ गुर गोपाल । प्रगट भयो हो दयाल। कलिजुग तोड़े गुरसिख जंजाल। सोहँ शब्द जप माला माल। सतिगुर पूरा भगत वसाल। महाराज शेर सिँघ गुरसिख जोत प्रकाशे, अंदर वेख अमुल्लड़ा लाल। गुरसिख लाल जवाहर माणक मोती। जोत सरूप जगावे जीवे आत्म जोती। सृष्ट सबाई अन्तकाल कलिजुग रोती। महाराज शेर सिँघ गुरसिख लए वरोल जिउँ माणक मोती। मदन मूर्त आप गोसाँईं। दर घर आए लाज रखाई। वर पाया जो विछड़ ना जाई। नाम ध्याया हउमे बिख गंवाई। साध संगत प्रभ विच रलाया जो आया चल सरनाई। मदि मास जिन हत्थ लगाया, कुम्भी नर्क निवास दवाई। आपणा किया आप जीअ पाया, बैठा अडोल जीव गुसाईं। महाराज शेर सिँघ तेरा नाम ध्याया, जम जंधार कोई नेड़ ना आई । जम जमदूत कोई नेड़ ना आए। सोहँ नाउँ सरण सर्ब छड्ड जाए। जोत सरूप प्रभ दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल गुरसिख विच जोत मिलाए।

✱ २६ चेत २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ठाकर सिँघ दे गृह ✱

प्रभ साचा ब्रह्मा माण गंवाए। वेद वेदांत अन्त हो जाए। ऐड़ा अथर्बण रुलाए खपाए। चार यारां संग मुहम्मद कलिजुग माण रखाए। शास्त्र सिमरत कुरान पुरान कोई रहण ना पाए। ईसा मूसा पीर पैग़ंबर कलिजुग अख्वाए। अन्तिम आई हार, प्रगट प्रभ अञ्जील माण गंवाए। कलिजुग कर ख्वार, अठ्ठ सठ तीर्थ कोई रहण ना पाए। माण सरोवर विच सृष्ट, अमृत बूंद नज़र ना आए। गंगा गोदावरी गहर गम्भीर, जोत सरूप प्रभ खिच्च ल्याए। कलिजुग जोत निहकलंक प्रगटा के, जाए सभना माण गंवाए। सोहँ साचा सच नाम चढ़ा के, सतिजुग साचा सच दे लगाए। तन मन्दर विच आसण ला के, बैठा अलोप नज़र ना आए। आत्म भेत विच देह रखा के, दीपक जोत रिहा जगाए। साध संगत मन जोत प्रगटा के, चरन कँवल प्रभ मेल मिलाए। गुरसिख खिले जिउँ कँवल, चार जुग गुरसिख तर जाए। महाराज शेर सिँघ सभ कुछ तेरे हत्थ, जिस देवे सोई जन पाए। तन मन धन सर्ब प्रभ केरा। माणस जन्म तरवर जीव जगत पंख वसेरा। मायाधारी कल करे मेरा मेरा। नज़र ना आवे धुर दरबारी, ना दीसे सञ्ज सवेरा। अन्तकाल करे जम ख्वारी, बिन गुर करे ना कोए नबेड़ा। गुरचरन लाग होए गति तेरी, निहकलंक पाया फेरा। गुरसंगत होए गुरचरन केरी। देवे दरस प्रभ लाए ना डेरी। बेमुख कलिजुग होए ढेरी, चार कुन्ट दिसे अन्धेरा। महाराज शेर सिँघ जगत सच चेरी, साचा सिख बणे कलिजुग तेरा। गुर

मिले गुरमत पाईए। गुर मिले निजानंद दरसाईए। लिक्खया धुर अबिनाशी घर मांहि पाईए। महाराज शेर सिँघ चरन संग जुड़, जन्म मरन फंद कटाईए। कलिजुग फादक जीव जन्त फहाया। माया रूप सर्ब जगत भुलाया। पवण पाणी गगन पाताली जीव जन्त डुलाया। महाराज शेर सिँघ सच तेरी बाणी, कलिजुग साचा राह दिखाया। सच सुच्च वरताए, प्रभ तेरा नाम। त्रेता आण तरावे, जिउँ भगतन राम। दर्शन कर अमुल हो जावे, जप सोहँ नाम। महाराज शेर सिँघ जो चरन लग्ग जावे, कलिजुग होए सुफल सभ काम। सुफल जन्म कलिजुग भया। पूरन परमेश्र प्रभ कीनी दया। गुरसिक्खां नाम रसना सोहँ ल्या। बेमुख दर ते जित आया तित्त गया। महाराज शेर सिँघ सुण तेरा नाउँ, जमदूत का काटा भया। कलिजुग प्रगट्या विच पुरी घनक। गुरसिख संग लै चल्लया, जिउँ पुरी जनक। साचा दरबार गुरसिख साचा मल्लया, पछाणे तिस जिस बणाई बणत। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाश, सर्ब किए जन्त। कलिजुग पापी जगत विछाया जाल। बण बैठा फंदक फांदकी बेमुखां लए बहाल। गुरसिक्खां सोहँ नाम अराधकी, कल विंगा ना होवे वाल। महाराज शेर सिँघ शब्द सोहँ रंगण आत्म चाढ़े कर लाल गुलाल। प्रभ उपजावे आपणा थान। साचा शब्द सच कर मान। सदी चौधवीं मलेश मिट जाण। गर्ब ग्वाला होए भगवान। धरती माता पति रक्खे आण। मदि मासी सर्ब नष्ट हो जाण। सोहँ शब्द रसन स्वासी, जगत प्रधान। गुरमुख प्रीत गुर चरन लगासी, महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकाण। गुरसिक्खां सिर प्रभ हत्थ टिकाया। कलिजुग पोह ना सके गुरसिख माया। ज्ञान जोत हिरदा कलिजुग कराया। सच राग सोहँ शब्द रसन अलाया। निहकलंक लै अवतार, डंक डौरू जगत वाहया। जोत सरूप अन्तर जाणे, आपणा भेत ना रक्खे छुपाया। गुरमुखां होवे सुख महान, प्रभ का वेला नेड़े आया। साध संगत मिल गुरचरन ध्यान, अनन्द बिनोदी प्रभ नज़री आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तख्त सतिजुग बणाया। सच तख्त सतिजुग प्रभ वासी। प्रगट करे जोत अबिनाशी। लक्ख चुरासी जीव करे दासन दासी। पाए शब्द अमन अमोल, जीव आत्म ना होए विनासी। जोत सरूप प्रभ अडोल, बैठ अडोल जगत डुलासी। महाराज शेर सिँघ पूरे तोले तोल, जगत ना रहे कोई मदि मासी। जोत सरूप करे जग चोज। गुरसिक्खां प्रभ मिटावे गोझ। पूरन पुरख मिले प्रभ खोज। मिल साध संगत माण जगत साची मौज। सोहँ बाण चलाया, जगत घायल करे बिन फौज। महाराज शेर सिँघ जगत कल पाई माया, जोत सरूप जग कीते चोज। चोजी चोज आप प्रभ। कलिजुग जीव भुलाए सभ। गुरसिक्खां प्रभ ल्या लभ्भ। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा ना जाए किते दब्ब। वरते शब्द गुर ततकाल। प्रगटावे धाम पिण्ड भंडाल। जिथ्थे बैठा मनी सिँघ निहकलंक दलाल। बांहों पकड़ साध संगत महाराज शेर सिँघ घर दित्ता वखाल। मनी

सिँघ रख ओट इक्क हरी। शब्द सति प्रभ देह विच करी। मोर पंख कलम हत्थ फड़ी। लिखावे शब्द प्रभ आसा वरी। चले शब्द ना बैठे जरी। आत्म भूपत प्रभ इक्क रंग करी। महाराज शेर सिँघ कलि अवतार नर हरी। कलि अवतार नामा नर। प्रगटावे जोत प्रभ शामा घर। जगावे जोत जो चल आए दर। महाराज शेर सिँघ बिन तुध कोए ना होत, सतिजुग चार वरन सभ एक कर। कलिजुग आया जगत भतार। चार वरन आए दरबार। राउ कलिजुग होए ख्वार। रंकां पाई प्रभ की सार। महाराज शेर सिँघ प्रगटे निहकलंक अवतार। सिँघ आसण प्या बैठा आ के। साध संगत प्रभ माण दिवा के। वड दाता वड वड्या के। सिँघ ठाकर जाए चरन लगा के। सुहाए थान जिथ्थे प्रभ बैठा जोत जगा के। पाए माण प्रभ चरनीं जो जन डिग्गे आ के। जो आए करन पछाण, मन जाए भुलेखा लाह के। ईश्र जोत महान, तीन लोक बैठा जोत जगा के। महाराज शेर सिँघ सच मेहरवान, कलिजुग भुल्ले जाउ भुल्ल बख्शा के। भुल्लणहार सर्ब जीव जन्त। शब्द सँघारे सर्ब देव दंत। महाराज शेर सिँघ तेरी महिंमा जगत ना अन्त। करोड़ तेतीस प्रभ दरस तिहाए। करोड़ तेतीस प्रभ दर ते आए। देवी देवा सर्ब प्रभ जोत जगाए। कलिजुग निहकलंक कर सेवा, दुःख रहे ना काए। महाराज शेर सिँघ सच तेरी सेवा, कलिजुग बिरथी मूल ना जाए। बिरथा जन्म कलिजुग मनमुखा। बुद्धि मलेश भोगण सभ दुःखा। गुरसिख प्रभ का दरस, मन लाहवे भुक्खा। शेर सिँघ शेर कलिजुग विच आया। प्रगट जोत निहकलंक प्रभ नां रखाया। कलिजुग कर सोहँ शब्द डंक वजाया। प्रगटी जोत आप निरँकार, साध संगत पल्लू जगत फिराया। बैठा सर्ब कल धार, हँकारीआं जिस हँकार गंवाया। दस्से सो जो जीव विचार, भरम भुलेखा सभ दा लाहया। सोहँ शब्द खण्डा दो धार, छुपया ना रहे कलिजुग छुपाया। महाराज शेर सिँघ जो जन पावे सार, जिन विच्चों भेत चुकाया। कलिजुग होए शब्द विचोला। पावे दरस प्रभ रंग मौला। प्रगटी जोत सर्ब कल सोलां। साध संगत सोहँ शब्द वजावे जगत ढोला। सचखण्ड गुरसिख घर सार। कलिजुग वरते डाहढा कहर, चरन लाग गुर जाए तार। प्रगटे आप प्रभ निरवैर, महाराज शेर सिँघ सृष्ट पलटावे, ना लावे सवा पहर। सवा सवाई मल मलेश बुध गंवाई। पंचम तत्त जोत अग्न जलाई। करे सति सोहँ रुशनाई। महाराज शेर सिँघ सद बलि बलि जाई। किरपा कर प्रभ अमृत मुख चुआया। जो जन आए घर, अमृत रस मन दरसाया। कलिजुग मिल्या साचा वर, अमृत बूंद कँवल खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ कर ऊँचा दर, गुरसिक्खां आ सीस झुकाया। अमृत रस गुर दर ते पाईए। अमृत रस पी मन तृपाईए। अमृत रस जीव प्रभ जुगत मिलाईए। अमृत रस साध संगत प्रभ वरखा लाईए। अमृत रस अज्ञान अन्धेर विच देह चुकाईए। अमृत रस पी लक्ख चुरासी गेड़ ना आईए। अमृत रस करे निर्मल जीअ, मन अज्ञानी जगत अख्वाईए।

अमृत रस बेमुख जाए नस्स, साध संगत प्रभ मुख चवाईए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तेरा जस, रसना गाए सुफल कराईए। भोजन सो जिस प्रभ भोग लगाए। प्रगट जोत गुरसिख घर आए। भगत जनां प्रभ संग रलाए। कलिजुग जन्म बहत्तर जन भगत प्रगटाए। किरपा कर प्रभ धरनी धर, रसना भोग भण्डार लगाए। बिन भोग प्रभ भोजा भक्ख हो जाए। गीता वाक कृष्न सच हो जाए। लेहज़ फेहज़ ना संग रलाए। शूद्र वैश रंग इक्क रंगाए। गुरसिख बणत कलिजुग बणाए। प्रगट कर प्रभ ठाकर सिँघ जस गाए। महाराज शेर सिँघ अन्त होए सहाए। प्रभ सरजीत सदीव काल। प्रभ की जोत जगत मसाल। जोत जगावे गुरमुख गोपाल। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द दे कर आत्म माल। कर प्रीती गुरचरन जीव, जे सच मन मन्ने। दरस कर जाए दुतर तर, मिल्या भगवान जिउँ भगत धन्ने। सोहँ नाम रसना जप ना कलिजुग डर, लगावे भोग जिउँ नामे दूध छन्ने। महाराज शेर सिँघ भरम निवारे, साचा बेड़ा कलि लावे बन्ने। बेड़ा बंध चलाया। गुरमुखां प्रभ मलाह हो आया। सोहँ चप्पा लाए, कलिजुग पार कराया। प्रगट जोत निरँकार, महाराज शेर सिँघ भोग लगाया। भोग लगावे भगत घर आ के। कलिजुग चल्लया साची जोत जगा के। साचा दर मल्लया प्रीत गुरचरन लगा के। महाराज शेर सिँघ वल्लया किसे ना ठल्लया, सिँघआसण बैठा जोत जगा के। सिँघ आसण बैठा परबीन। कलिजुग गंवाया दुनी सभ दीन। सोहँ शब्द रसना पीन। मानस जन्म होए सदा जग जीन। महाराज शेर सिँघ गुरसिख ना आवे हीन। गुरसिख मिलो कर गुर हीआ। कर दरस करो निर्मल जिया। सोहँ शब्द प्रभ साचा दिया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तरे जिस रसना नाम तेरा ल्या।

✲ २६ चेत २००८ बिक्रमी आत्मा सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल मसीत विच ✲

उठ जीव जाग जाग जाग, प्रगटे पारब्रह्म अचुत्त। उठ जीव जाग जाग जाग, प्रभ मिलणे दी आई रुत्त। उठ जीव जाग जाग जाग, साचा नाता प्रभ जिउँ पिता पुत्त। उठ जीव जाग जाग जाग, झूठा संसार अन्त होए ना मित्त। उठ जीव जाग जाग जाग, कलिजुग चल्लया विछड़ जाए ना कित्त। उठ जीव जाग जाग जाग, ईश्र प्रगटे ना किसे वार ना थित्त। उठ जीव जाग जाग जाग, मानस जन्म कलिजुग विच दित। उठ जीव जाग जाग जाग, कर दरस महाराज शेर सिँघ आत्म नित। वरते शब्द कलि वड्डा भारी। चढ़के आए मुगल कंधारी। सृष्टी होए अति ख्वारी। सत्तर कोस फेर जाए बहारी। ब्यासा नदी दिसे शेर सिँघ जोत न्यारी। जाए ना पार पए मलेशां विच ख्वारी। प्रभ देवे हार जीव जन्त मरे विच बिमारी।

कोई ना जाणे सार, कलिजुग वरते खेल जोत न्यारी। आवे बहार भगत जनां हरि पैज सवारी। देवे प्रभ तार, छत्र झुलाए वड दाता आप संसारी। महाराज शेर सिँघ कलि लाज रखाई, चरनीं डिग्गे संगत सारी। कलिजुग चले शब्द अन्धेरी। ईश्र जोत छिन अंदर चार कुन्ट फेरी। करे सु होत कलिजुग ढहि होया ढहि ढेरी। महाराज शेर सिँघ सच तेरी जोत, निहकलंक कल पाई फेरी। कलि आया कलमा दूर कर, सोहँ शब्द चलाए। चार कुन्ट आपणा जल्वा नूर कर, चार कुन्ट बचन अलाए। साध संगत मन टेक धर, चरनीं बैठे सीस झुकाए। चार वरन प्रभ एक कर, सतिजुग साचा राह बताए। भगत जनां बुध विसेख कर, सुत्तयां देवे बांहों उठाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग साचा गुर वेख कर, फेर जाणे सीस झुकाए। जोत अग्न जगत लगन। बैठा आप प्रभ मग्न। गुरसिख पूरे जुग चार जगन। करे प्रकाश मात पाताल आकाश गगन। बेमुख होए ख्वार कलि फिरन नग्न। गुरसिख ऊजल संसार, सोहँ शब्द मुख लाया प्रभ सगन। जोत सरूप प्रभ किया आकार, आत्म तीर विच देह लग्गण। महाराज शेर सिँघ दरस दर पा के, गुरसिख प्रीत चरन संग लग्गण। वक्त सुहेला आ गया, प्रभ पैज रखावे। गुर जगत धकेला आ गया, सृष्ट सारी पई डुलावे। गुर सच मिलावण मेला आ गया, गुरमुख विछड़ ना जावे। कलिजुग अचरज खेला आ गया, सोहँ शब्द जगत चलावे। महाराज शेर सिँघ भगत दुहेला आ गया, खण्ड सच निवास दवावे। कलिजुग वक्त मुका गया, प्रभ लागो चरनन। कल जीव झूठे धन्दे ला गया, अन्त दुःख डाहढा भरनन। साध संगत विच प्रभ समा गया, कोई सके ना वरनण। वासी खण्ड ब्रह्मण्ड दा आ गया, चरन लाग जीव सभ तरनन। सचखण्ड कल मातलोक बणा गया, जोत जगावे जिथ्थे प्रभ धरनी धरनन। रसना सोहँ शब्द जपा गया, साची मति भगतन करनन। पन्थ साचा जगत वखा गया, गुरसिख देह जगत ना धरनन। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह आ गया, कलिजुग कर्म हरनन। कलिजुग आए हार, कोए ना राखे। पूरब कर्म विचार, प्रभ जोत प्रकाशे। प्रभ देवे नर्क मँझार, सभ जीव मदि मासे। विरली उत्तम विच संसार, जित बाणी गुरचरन रहिरासे। कुन्ट चार होए जै जै जैकार, प्रगटे जोत प्रभ आकाशे। गण गंधर्ब सर्ब प्रभ दरस प्यासे। तिन्हां गुरमुख जाउ कुरबान, जिन्हां बैठा सतिगुर पासे। कलिजुग सच रहे निशान, जिथ्थे करे प्रभ जोत वासे। महाराज शेर सिँघ शब्द रूप, बेमुखां करे नासे। नास्वच्छ सर्ब जीव जन्त। ऊँच एक सर्ब भगवन्त। प्रभ की माया बड़ी बेअन्त। कलिजुग प्रगटावे गुरसिख साचे सन्त। सोहँ देवे दान प्रभ वड्डा गुणवन्त। होवे ब्रह्म ज्ञान, मिले पूरन भगवन्त। दरस दिखावे नज़री आवे, विच बैठा जो अकन्त। जोत जगावे सोझी पावे, सोहँ शब्द साचा गुर मंत। महाराज शेर सिँघ प्रभ अभेव, कोई ना जाणे तेरा आदि अन्त। कलिजुग हरि रंग माण, उपजे मन सुख। गुरचरन कर ध्यान, ना लागे कोई

दुःख। उत्तम एह ज्ञान, मन दी लाहे भुक्ख। कोई पाए चतुर सुजान, सुफल कराए मात कुक्ख। कलि मिले महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव सुख साची सुक्ख। कलिजुग मिले आप भगवान। भगत पछाणे जाणी जाण। गुरसिक्खां प्रभ चरना माण। बख्शे गए जो जन चरनीं डिग्गे आण। अमर सद रहे जो साध संगत मिल जाण। साचा शब्द प्रभ रसना कहे, एक जोत विष्नूं भगवान। मानस जन्म सच लाह लै, महाराज शेर सिँघ दर्शन दान। दरस देख लाह आत्म चिन्द। कलिजुग वहावे प्रभ उलटी सिंध। बेमुख करन कलिजुग प्रभ की निंद। महाराज शेर सिँघ गुरमुख पूरे सच तेरी बिन्द। गुरमुख ऊजल उप्पर धवल। कलिजुग अंदर जिउँ सागर कँवल । तारे प्रभ कृष्न मुरारी संवल। महाराज शेर सिँघ एकँकारी अव्वल। एकँकार कलि पड़ सरनाई। एकँकार जोत विच मात दे आई। अछल अडोल प्रभ अख्वाई। सृष्टी सारी प्रभ शब्द डुलाई। अग्न जोत चार कुन्ट लगाई। गुरसिक्खां प्रभ होए सहाई। महाराज शेर सिँघ कलि कोए ना जाणे तेरी वड वड्याई। गुरचरन मिल गुरसिख निर्मल कर्म उजागर। कलिजुग काया जीव झूठी गागर। भगतन देवे प्रभ अमृत सागर। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे जोत रत्नागर। रैण सुहाई भिन्नड़ी, प्रभ किया जोत आकार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, प्रभ आया पार उतारनहार।
२६३ रैण सुहाई भिन्नड़ी, गुरमुख प्रभ दर्शन करन अपार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, प्रभ जोत होवे चमत्कार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, प्रभ २६३
०१ सति सति सति वरते आप निरँकार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, मातलोक सोहे साचा दरबार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, अटल्ल पदवी ०१
मिले गुर दरबार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, पतित पापी तारे तारनहार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, कर दरस जन पाए मोख द्वार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, गुरमुखां देवे निगम विचार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, गुर गुरसिख कीने पार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, प्रभ देवे दुत्तर तार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, आपणे रंग करे करतार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, कलिजुग जावे लहिंदी धार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, सतिजुग लावे अपर अपार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, गुरसिक्खां घर जै जैकार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, दर आए ना दुष्ट दुराचार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, सोहँ शब्द होए गुंजार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, निज घर वसे प्रभ वसणेहार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, गुरसिक्खां मिले नाम आधार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, प्रभ जोत जगावे देह जोत जगावणहार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, दे दर्शन जावे तार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, कलिजुग प्रगट्या नर लै अवतार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, निहकलंक जीव कर दीदार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, प्रभ मिल होए सोलां शिंगार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, कर सच कन्त प्यार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, मेल मिलाए कर कृष्न मुरार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, पवण उनन्जा सिर छत्र झुलार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ करे आकार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, जोत जाती विच संसार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, गुण अवगुण प्रभ लै विचार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, प्रगटी

जोत प्रभ अगम्म अपार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, दुःख ना लागे गुर दरबार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, गुरमुख उत्तम विच संसार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, झूठा जगत होवे सभ छार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, जित प्रगटे नर अवतार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, अमृत वरखे वरखणहार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, अमृत बूंद गुरमुख चवार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, कलिजुग खुल्ह्रे दस्म दुआर। रैण सुहाई भिन्नड़ी, गुरसिक्खां प्रभ बेड़ा कीना पार। रैण सुहाई भिन्नड़ी, जित रैण महाराज शेर सिँघ लै अवतार। भिन्नड़ी रैनड़ीए रंग प्रभ का माण। भिन्नड़ी रैनड़ीए जो रहे जाग, तिन्हां मिल्या प्रभ आण। भन्नड़ी रैनड़ीए तेरे पूरन भाग, प्रगटी जोत विष्नूं भगवान। भन्नड़ी रैनड़ीए तेरे सिर सुहाग, सोहँ सच शब्द दीबान। शब्द मलावा कर प्रभ कर सुरती मेला। जगत भुलावा दूर कर, मिल सज्जण सुहेला। जगत नैण दिखावा दूर कर, नेत्र तीजा खोल्हा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख कँवल फूल कर चरन संग मेला। गुर चरन ऊँचा पद। कर दरस बल जाउ सद। प्रभ मिल्या वड्डा अगद। बेमुखां चल्लया कलिजुग लद्द। महाराज शेर सिँघ धुन नाम वज्जे देह सद। सदा धुन वज्जे देह अंदर। होए ज्ञान अन्धेर तन मन्दर। सोहँ कुंजी मन तोड़े जंदर। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाए, सुहाए बंक मन्दर। जोत जगाई जगत वखाई, नज़र ना आई भेत रखाया। जन दे वड्याई पैज रखाई, होए सहाई कलिजुग तराया। बेमुख दुहाई संग ना चाले कोए भैण भाई, झूठी सृष्टी छड्ड वखाई बेमुख नाउँ ना ध्याया। महाराज शेर सिँघ परमगति पाई, वज्जी वधाई सुणे लोकाई, वर घर साचा पाया। सच अंदर वस्सया, नज़र ना आवे। साचा राह प्रभ साचे दस्सया, जे वेखे तां नज़री आवे। करे प्रकाश जिउँ रवि सस्सया, आत्म जोत प्रभ संग जोत जगावे। बेमुख कलिजुग चन्न जिउँ मस्सया, सतिजुग विच नज़र ना आवे। सोहँ बाण शब्द गुर कस्सया, सृष्टी सारी भरदी हावे। सोहँ शब्द घर साचा दस्सया, महाराज शेर सिँघ संग मेल करावे। प्रभ मिल्यां चढ़े रंग मजीठ। साचा प्रभ कलिजुग घर डीठ। बेमुख कौड़े कलिजुग जिउँ रीठ। गुरसिक्खां गुर पूरा पाया, महाराज शेर सिँघ नेत्र डीठ। नेत्र पेख करो दूर भुलेखा। साचा साहिब घर आ चुकावे लेखा। ढहि पए सरनाई जन, प्रभ मेट वखावे रेखा। महाराज शेर सिँघ रंग चलूला, गुरसिक्खां तेरा डीठा। गुरसिक्खां रंग तेरा डीठड़ो। वर घर पाया प्रभ साचा बीठलो। प्रभ विच निमाणयां वसे, ना जाणे पाटे चीथड़ो। महाराज शेर सिँघ राह साचा दस्से, नहीं भुलेखा प्रभ साचा डीठड़ो। जीव परख कर, मन रहे ना चिन्दा। छड्ड दरबार, भुल्ल करे ना निंदा। देवणहार प्रभ सर्ब फल दिन्दा। जोत प्रगटाई प्रभ गुर गोबिन्दा। देवे वड्याई गुर गुरसिख मृगिन्दा। तेतीस करोड़ खड़े दर सीस झुकाई, खड़े संग इन्दा। कलिजुग प्रगट्या महाराज शेर सिँघ गुरसिख बख्शिंदा। बख्शे बख्शणहार प्रभ अन्तरजामी। कोए ना जाणे सार, कल प्रगटे प्रभ निहकामी।

गुरसिख सोहण गुरचरन दरबार, प्रगट बैठा विच स्वामी। कलिजुग साचा सच दरबार, प्रगटे जोत प्रभ अन्तरजामी। महाराज शेर सिँघ पूरन अवतार, सोहँ दान देवे प्रभ नामी। नाम दान आप प्रभ दिया। निर्मल किया प्रभ गुरसिक्खां जिया। नाम निधान गुरदर ते पिया। महाराज शेर सिँघ तेरा सिख सदा जग जिया। सच शब्द कलिजुग सच लिख। दे ज्ञान प्रभ आत्म लाहे विख। गुण निधान प्रभ वसे विच सिख। विष्नूं भगवान उपजावे कलिजुग गुरसिख वड रिख। गुरसिख उत्तम ज़ात कर, दे चल्लया वड्याई। आत्म प्रभ स्वांत कर, तृखा दे बुझाई। साची जोत विच देह इकांत कर, ज्ञान जोत प्रभ दे जगाई। महाराज शेर सिँघ तपदे हिरदे शांत कर, सोहँ अमृत वरखा लाई। अमृत वरखे मेघ जिउँ धार। पी सिख कलि उतरे पार। प्रगटे गुर कोई पाए ना सार। आप अपरम्पर रिहा गुण विचार। जगत जलाए कर जोत आकार। भगत तराए दे सोहँ शब्द अधार। चार जुग नाम रखाए, साचा मार्ग चले संसार। जो जन आए रसना गाए, देवे दरस पुरख मुरार। कलिजुग प्रगट्या निहकलंक अवतार। महाराज शेर सिँघ चार जुग पूजा करे संसार। चार जुग प्रभ चरन पुजारी। आया मात चतुर्भुज कर सवारी। भगत जनां हरि आए पैज संवारी। कलिजुग प्रगटे राम कृष्न निहकलंक अवतारी। महाराज शेर सिँघ इक्क जोत निरँकारी। निरँकार कोई आकार ना जाणे। जिस जन दस्से सो जन पछाणे। गुरमुख चले प्रभ के भाणे।
२९५ ०१ कलिजुग होए चतुर सुघड़ स्याणे। चरनीं डिग्गण सभ राजे राणे। सिर छत्र झुलायण, संगत सभ मस्तूआणे। जामा ल्या धार, पहन निहकलंक बाणे। महाराज शेर सिँघ नर अवतार, कोई विरला गुरमुख जाणे। प्रभ गुरमुखां बूझ बुझांयदा। आदि जुगादी शब्द पैज रखांयदा। गोपी नाथ भगत वछल अखवांयदा। जीव ना जाणे प्रभ सदा संग रहांयदा। ना भुल्ल जीव अञ्याणे, विछड़ दुःख पांयदा। लग्ग जा टिकाणे, प्रभ जोती जोत मिलांयदा। फिर गर्भ ना माणे, प्रभ सचखण्ड बहांयदा। जीव आपणा मूल पछाणे, प्रभ जोतो जोत प्रगटांयदा। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां सिर छत्र झुलांयदा। झुल्ले छत्र गुरसिक्खां सिर। कलिजुग मिल्या जिन्हां साचा पिर। प्रगटी जोत कल गिरधारी गिर। महाराज शेर सिँघ पैज सवारी, ना लावी दिर। देर ना कर गुरसिख बिल्लाया। कलिजुग अग्न तन मन जलाया। किरपा कर आप प्रभ रघुराया। कर शांत हउमे तन तन्दूर जलाया। कढु भरांत भुलेखा कलिजुग मन वसाया। विछड़ जाए ना दिन रात, जिन प्रभ चरन संग नेहुं लगाया। महाराज शेर सिँघ गाउ प्रभात, देवे दरस तेज़ जोत सवाया। जोत सरूप प्रभ जग आए। आप पेखे किसे नज़र ना आए। लाए लेखे जो जन चरन सीस झुकाए। कढु भुलेखे सोहँ ज्ञान दवाए। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल गुरसिक्खां हो सहाए। गुरसिख वसे गुर गोपाल। गुरसिख आत्म लाल गुलाल। गुरमुख उज्जल जिउँ सिँघ पाल। सोहँ शब्द खट्ट जगत सचा धन माल।

महाराज शेर सिँघ गुरसिख चरन संग समाल। गुर दरबार आए सौं नहीं रहणा। देवे दरस भगत प्रभ सुत्तयां रैणा । वक्त जाए वहाए जीव रोए कलि पाए वैणां। दरगाह मिले ना थाएँ, लेखा धर्म राए ने लैणा। प्रभ पूरा नज़र ना आए, जीव वस जमां दे पैणा। कलिजुग तारन आ गया, गुर पेख आपणे नैणा। प्रभ सचा मार्ग ला गया, चल जीव जग बैठ किसे नहीं रहणा। क्यों भरम भुलेखे ला ल्या, मन्न सचे सतिगुर का कहणा । कलि सोहँ जहाज़ बणा ल्या, क्यों डुब्बे लहिंदयां वहिणा। जिस महाराज शेर सिँघ चरन लगा गया, दु:ख अन्ध ओस नहीं सहिणा। गुरसिख प्रभ का दु:ख ना जले। मिल साध संगत कलिजुग तरे। आवे ना जावे जन्मे ना मरे। बैठ अडोल रंग वेखे हरे। गुरचरन लाग कलिजुग खोटे होए खरे। होए सहाई एक, टेक जो हिरदे धरे। जो जन चल आए दर, तिन के काज सरे। महाराज शेर सिँघ जाउ बलिहारी, दे दरस प्रभ नर हरे। हरि नर जोत अवतर। कलिजुग सागर पार कर। एक शब्द जीव हिरदे धर। महाराज शेर सिँघ जीव वसे निज घर। निज घर वसे प्रभ मेहरवाना। हरि घर जन भगत पछाना। उत्तम दर सुख मिले महाना। रक्ख लाज कलि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। विष्नूं भगवान भरम मिटा। सहँसर सहिंसे विच्चों चुका । जोत सरूप विच देह जोत प्रगटा। चरन लाग जीव दम दा नहीं वसाह। वक्त ना दस्से, प्रभ साचा बेपरवाह। प्रभ आपणे रंग वसे, सृष्टी सारी होई दाह। गुरसिख साचा गुर दर हस्से, बेमुखां कलि पई स्वाह। कलिजुग जोत प्रगटाई, महाराज शेर सिँघ सिर शाहां शाह। साचा शाहो मिले वडभाग। कर दरस जीव ना लागे मन दाग़। किरपा करे अनहद शब्द सुणावे राग। निजानंद दरसावे प्रभ अमृत साद। जोत जगावे जीव जन्त आदि जुगादि। कलिजुग महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां ल्या लाद। प्रभ सुत्ता पैर पसार। आलस करे ना विच संसार। कर कर प्रदक्खणा गुरसंगत बल धार। साची रीत चली विच संसार। चौगिर्द तुमारे साची कार। कोए ना झल्ले इस का वार। सोहँ शब्द सर्ब सिक्दार। बाकी होए सर्ब पनिहार। मण्डल डोले साध संगत डुलावणहार। कलिजुग प्रगट्या सुण भगतन पुकार। किरपा कर प्रभ रक्ख लै, मदि मास ना होए रसन अहार। महाराज शेर सिँघ राह कलिजुग दस्स लै, गुरसिक्खां बेड़ा कर ल्या पार । कलिजुग जामा धार के सिँघ आसण लाए, साध संगत देवे वड्याई। साचा तख्त सीस ल्या उठाई। चौगिर्द कर प्रदक्खणा, हरि हरि हरि रसना गाई। झूल झुलाया सिँघ आसण, खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब डुल जाई। संगत उठाया गुर सीस, अन्तकाल प्रभ होए सहाई। नज़री आए प्रभ जगदीस, विच बबाण लए बिठाई। सोहँ नाम करे बख्शीश, खण्ड सच दे पुचाई। गुरमुखां बेमुख करन ना रीस, महाराज शेर सिँघ कलि करे भगत वड्याई। देवे माण मन्न साध संगत। सोहँ नाम मन चाढ़े रंगत । गुरसिख तारे जिउँ नानक अंगद। ऊँच

दरबार अगम्म अथाह। उप्पर बैठा बेपरवाह। सची जोत सचा पातशाह। कलिजुग दस्सया सचा राह। गुर दरबार इक्क सचा, गुरसिख भुल्ल ना जाह। महाराज शेर सिँघ गुर नहीं कच्चा, कलिजुग आया सच्चा पातशाह। सचा पातशाह सच सुल्तान। वाली होवे दो जहान। किरपा करे भगत भगवान। दर आए सेव कमाए जस लै जाण। भगत जनां प्रभ तेरा माण। महाराज शेर सिँघ शब्द सच निशान। साध संगत प्रभ वसणेहारा। साध संगत प्रभ छत्र झुलारा। साध संगत दरसावे प्रभ आत्म दुआरा। साध संगत गावे शब्द रसना गुर द्वारा। साध संगत महाराज शेर सिँघ लै अवतारा। साध संगत तेरी वड्याई। कलिजुग जोत ईश्र प्रगटाई। साध संगत प्रभ भए सहाई। जुगो जुग प्रभ पैज रखाई। मिल गुरसंगत पूरन मति पाई। महाराज शेर सिँघ दुःख देह मिटाई। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां हरि मन वस्सया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, जिथ्थे बैठ भेव प्रभ सभ दस्सया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, जिन्हां हिरदे नाम सोहँ वस्सया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, मनी सिँघ राह प्रभ का दस्सया। गुरसिख पोह ना सके कलि की माया। जोत सरूप सिर हत्थ टिकाया। कलिजुग खपाए सतिजुग तेज़ होवे प्रभ जोत सवाया। दुष्ट खपाए गुरसिख तराए, जिन्हां महाराज शेर सिँघ चरन लगाया।

२९७
०१

❊ २७ चेत २००८ बिक्रमी मास्टर सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड राम पुर ❊

२९७
०१

साचा जोत प्रकाश कर, कलिजुग मिटाए। बेमुखां प्रभ विनाश कर, जुग सति लगाए। गुरसिक्खां हिरदे वास कर, सतिगुर साचा सच जोत जगाए। सभ सृष्ट आपणी दास कर, सोहँ शब्द रसन अख्वाए। नगर ग्राम सभ प्रभास कर, जे देखे तां नज़र ना आए। गुरसिक्खां आत्म रास कर, जोत दीपक विच देह जगाए। महाराज शेर सिँघ दुष्टन नास कर, वाहवा सतिजुग भगतन उपाए। सतिजुग लावे पीत पीतम्बर। माण गंवाए कलिजुग पैग़म्बर। जोत प्रकाश करे प्रभ तीन लोक अंदर। विच सच प्रकाश जोत जीव झूठा देह मन्दर। हउमे ममता विच्चों नास कर, निजानंद पाए अंदर। सोहँ शब्द साचा जाप कर, तोड़ अज्ञान मन का जंदर। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप जगत नचाए जिउँ मदारी बन्दर। जोत अग्न जगत जलाया। चार कुन्ट हाहाकार कराया। प्रभ आप अछल अडोल सिँघआसण डेरा लाया। गुरसिख तोले पूरे तोल, बेमुखां कल धक्का लाया। साचा शब्द लिखावे बोल, आपणा भेत ना रखाया। ईश्र जोत सदा अडोल, जगत डुलाया। कर जोत प्रकाश बैठा सिक्खां कोल, कलिजुग पाई माया। कलिजुग जीव भुल्ले अनभोल, निहकलंक ना नज़री आया। गुरसिक्खां देवे प्रभ पड़दे खोल्ह, अनहद शब्द तन मन वजाया। वज्जे शब्द तन ज्ञान, अमृत बूंद मुख कँवल चुआया। खुल्हे कँवल

होए ध्यान, जोत सरूपी नज़री आया। कलिजुग प्रगटे निहकलंक, महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। निहकलंक होए निरवैरा। जोत सरूप प्रगटे केहरा। कोए ना जाणे सार, प्रभ साचा गहर गम्भीरा। महाराज शेर सिँघ देवे जोत अधार, जो जीव आण लगे गुर पैरा। मिल कलिजुग हरि, जीव मिले वड्याई। कर दरस प्रभ तर, लक्ख चुरासी प्रभ गेड़ मुकाई। रसना जप हरि हरि कर कलिजुग मिले जीव वड्याई। महाराज शेर सिँघ जग दुत्तर तारे, साध संगत गुरचरन बण आई। साध संगत प्रगटावे प्रभ दुहेला। कलिजुग निहकलंक विछड़यां संग मेला। भगत जन लए पछाण कलिजुग आण, अचरज खेल आप प्रभ खेला। लग्ग चरन जीव, भया मिलण का वेला। महाराज शेर सिँघ जोत विष्नूं भगवान, प्रभ जोत सद रहे अकेला। आदि जुगादि रहे एकँकारा। जुगो जुग प्रभ लए अवतारा। पावे भेद कोई प्रभ समरथ पुरख अपारा। करे सेव जिन पुज आवे गुर दर सच दरबारा। कलिजुग प्रगट्या अलख अभेव, विचारी जीव की बूझे विचारा। ईश्वर जोत सदा निहकेव, वेखे सो जिस वखावे प्रभ गिरधारा। सरन रहे सभ देवी देव, विच अगम्म अपर अपारा। साध संगत शब्द सोहँ लेव, प्रभ अबिनाश शब्द देवणहारा। महाराज शेर सिँघ तेरी चरन सेव, पावे सो जिस किरपा कर दरस दिखारा। देवे दरस कल नैण मुँधार। दे दरस प्रभ कलिजुग किए पार। गुरमुख विरला कलि पाए प्रभ की सार। सृष्ट वहाई प्रभ लहिंदी धार। जोत प्रगटाई प्रभ गुरमुख विचार। आत्म सच दीप जगाई, सोहँ नाम शब्द अपार। महाराज शेर सिँघ जाउ बलिहार, सतिजुग साची नींह रखाई। कलिजुग काचा जीव भुल्ले, ना जाणे सतिगुर साचा। सोहँ शब्द ना मन में वाचा। बैठ अडोल वेखे प्रभ जगत तमाशा। जगत विनासी, इक्क प्रभ अबिनाशा। सोहँ शब्द जीव जप स्वास स्वासा। अमृत नाम निधान कलि पीव, आत्म जोत करे प्रकाशा। गुरचरन लाग सदा जग जीव, अन्तकाल ना होए नर्क निवासा। आत्म बुझी जगाए दीव, हिरदे करे सच जोत प्रभ वासा। महाराज शेर सिँघ शब्द चिरंजीव, मात गर्भ ना होए वासा। प्रभ साचा गर्भवास चुकाए। जो जन आए गुरचरन लग जाए। अन्तकाल प्रभ होए सहाए। जोत सरूप दे दरस, विच बबाण लए बिठाए। विच सचखण्ड करे प्रवेश, जिथ्थे बैठा प्रभ जोत जगाए। तिस साहिब को करो आदेस, प्रगटे जोत नज़र ना आए। कलिजुग उत्तम भगत विषेश, जोत संग प्रभ लए जोत मिलाए। समझ जीव देह झूठा भेख, अन्तकाल संग ना जाए। अचुत्त पारब्रह्म परमेश्वर आपणे अंदर वेख, बैठा अडोल नज़र ना आए। जिथ्थे वसे सो प्रभ साचा देस, ना उह मरे ना आवे जाए। महाराज शेर सिँघ सच लिखाए लेख, गुरसिख जोत मिल जाए। प्रभ की जोत विच परबीन। सोहँ शब्द सच रसना चीन। बिन प्रभ सभ झूठे दीन। गुरसिख तृप्तासे कर दरस गुर जिउँ नीर मीन। हिरदे ईश्वर जोत प्रकाशे, सोहँ शब्द वजाए विच सची बीन। अज्ञान

अन्धेर गुरसिख विच देह विनासे, अमृत बूंद गुरसिख गुरदर ते पीण। मिल प्रभ अमरपद पावे भगत जन जुग चार सदा जग जीण। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, भगत जन तेरा नाम रसना लीन। रसना जप मिले प्रभ रस। साचा साहिब जीव कर वस। सोहँ शब्द ज्ञान प्रभ देवे दस्स। गुरमुख पूरे मदि मास तों जाए नस्स। वाजे अनहद तूरे, जिन्हां हिरदे जाए प्रभ वस। कारज कीए पूरे, गुरसिख जोत जगाए जिउँ रवि ससि। साध संगत गुरचरन हज़ूरे, बेमुख दर तों जाए नस्स। कलिजुग पावे जगत विच माया, सोहँ बाण ल्या प्रभ कस। महाराज शेर सिँघ जिस देवे सो जन पावे, जीव किसे दे कुछ नहीं वस। कलिजुग जीव भरे हँकारा । मदि मास रसन चलाए विकारा । साचा नाम ना होए अधारा। कलिजुग ना दीसे साचा गुर दरबारा। कूड़े जीव कूड़े रीसे, सच सुच्च ना आत्म विचारा। माण गंवाए मुहम्मद ईसा मूसे, निहकलंक लै अवतारा। सरन पड़े प्रभ साचा दीसे, महाराज शेर सिँघ देवे दरस शब्द द्वारा । शब्द सुरत गुरसिख प्रभ करे। साची जोत विच देह प्रभ धरे। आत्म प्रकाश करे नर हरे। गुरसिख पूरा ना कलिजुग डरे। जोत सरूप प्रभ रच्छया करे। जो जन आए प्रभ की सरनी पड़े। महाराज शेर सिँघ कलि दया करे। दयावान प्रभ दरबारी। पतित पापी प्रभ सगली तारी। जो जन आए चरन निमस्कारे। कलिजुग प्रगटे जोत अगम्म अपारे। कलिजुग माया पाई जग सारे। कलिजुग जीव होए अंध्यारे। बेमुखां घर हाहाकारे। गुरसिक्खां घर जै जै जैकारे। प्रभ साचा तारन आ गया, त्रेता जिउँ राम अवतारे। भगत उधारन आ गया, प्रभ कृष्न मुरारे। कलिजुग सिक्खां सिर छत्र झुला गया, महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारे। कलिजुग प्रगट निहकलंक। सोहँ शब्द वजावे चार कुन्ट डंक। सृष्ट जलाई जिउँ हनूवन्त लंक। जोत प्रगटाई, गुरसिख सोहण तेरे दुआरे बंक। निहकलंक तेरी वड्याई, कलिजुग करे इक्क राउ रंक। सोहण सिँघ प्रभ दे वड्याई, त्रेते जिउँ भगत जनक। भगत जनक दे वड्याई। नर्कीं सारे जीव छुडाई। खण्ड ब्रह्मण्ड जै जै जैकार कराई। तीन लोक प्रभ जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अन्तकाल होए सहाई। करे दरस कोई विरला गुणवन्त। कलिजुग मिले गुरसिक्खां घर आण भगत भगवन्त। कलिजुग जीव सार ना जाणे, प्रभ की माया बड़ी बेअन्त। सृष्ट उपाए आपणे भाणे, जोत जगाए विच सर्ब जीव जन्त। गुरसिख होए कलिजुग सुघड़ स्याणे, सोहँ शब्द मिले साचा गुर मंत। कलिजुग प्रगट्या महाराज शेर सिँघ, पावे दरस कोई साध सन्त। साध सन्त विरला गुरमुख। जो दरस कर मन लाहे भुक्ख। प्रभ साचा कलिजुग दरस कर, गुरसिक्खां लाहे दु:ख। विच गर्भ अमृत बरस कर, ज्ञान बाल दवावे विच कुक्ख। गुर साचे दरस दिखाया, महाराज शेर सिँघ दरस लाहे दु:ख। दरस दिखाए प्रभ जगन्नाथे। आदि जुगादि सद भगतन साथे। भगत वछल अनाथ अनाथे। जोत जगाए विच ललाट माथे। सोहँ

शब्द चले जुग चार साची गाथे। भगत बबाण एह साचा राथे। महाराज शेर सिँघ कलि छोड ना जाए गुरमुख तेरा साथे। गुरमुख संगी प्रभ संग सुहेला। जुगो जुग विछड़यां कलिजुग आण प्रभ किया मेला। गुरमुख पार कराया, बेमुख शौह दरयाए बेड़ा ठेला। महाराज शेर सिँघ जन भगत तराए, बैठ इकांत प्रभ आप अकेला। एक आप विच आकाश। जिथ्थे सदा है जोत प्रकाश। उनन्जा पवण सिर छत्र झुलास। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण पास। नैणीं देखो आयके, प्रभ प्रगटी जोता। चल्लया कल वरतायके, जोत सोई जग होता। बेमुख चल्लया मुख छुपायके, भुल्ला जीव कल है रोता। प्रभ चल्लया शब्द धुन वजायके, पावे कोई गुरमुख कलि स्रोता। प्रभ चल्लया भगत वड्यायके, दुरमति पाप कलि सारा धोता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सद है जागत, कलिजुग जीव सदा है सोता। उठ उठ जीव निमाणयां, क्यों सुत्तयां रैण विहाए। उठ उठ जीव ब्रह्म सरूप क्यों भुल्लया वक्त गंवाए। उठ उठ जीव तेरे विच वसे अनूप, माणस देह विच क्यों भेव ना पाए। उठ उठ जीव सति सरूप प्रभ अबिनाशी क्यों ना पाए। उठ उठ जीव विच वसे प्रभ भूप, कर दरस क्यों ना आत्म तृखा बुझाए। उठ उठ जीव प्रभ का दीसे रंग ना रूप, जोत सरूप रिहा विच जोत जगाए। उठ उठ जीव क्यों डुब्बा विच अन्धकूप, ज्ञान रूप गुर चरन लाग उपजाए। उठ उठ जीव प्रभ ऊँचो ऊँच सरन लाग अमरा पद पाए। महाराज शेर सिँघ स्वच्छ सरूप, सर्ब जीव में रिहा समाए। जोत जगाए प्रभ जुगां जुगन्तरा। सोहँ शब्द कलि करे भस्मन्त्रा। जोत सरूप कलिजुग भाणा आप वरतंतरा। ईश्रर जोत ना रंग ना रूप, जोत प्रकाश तीन लोक वरतंतरा। महाराज शेर सिँघ तरे अन्ध कूप, जो जन आए चरन लगंतरा। गुरसिख कलिजुग उत्तम जिउँ फुल्ल कँवल। जोत सरूप ईश्रर सभ जगत विच मवल। आप प्रभ अछल अडोल, कलिजुग जीव सारे डवल। महाराज शेर सिँघ सच तेरा रूप, जिउँ द्वापर कृष्न सँवल। कलिजुग प्रगटे जोत निरँकारी। सृष्टी सारी आण सँघारी। कोई ना दीसे अन्तकाल दुष्ट दुराचारी। महाकाल कलिजुग करे ख्वारी। सृष्ट सबाई प्रभ चबाई दाढ़ीं। कलिजुग उत्तम गुरमुख गुर फुल्लवाड़ी। दरस करे जो जन आवे, होवे ज्ञान विच देह बहत्तर नाड़ी। कर ध्यान हउमे ममता विच देह प्रभ साड़ी। विच कलि विष्नूं भगवान महाराज शेर सिँघ जन भगत तेरी साची वाड़ी। जन भगत प्रभ आप उपजाए। प्रगट जोत प्रभ लाज रखाए। शब्द ज्ञान देह कलिजुग प्रगटाए। जीव ब्रह्म सरूप अन्त ब्रह्म हो जाए। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सरन पड़े दी लाज रखाए। राखे लाज विष्नूं भगवाना। विच द्वापर द्रोपदी जिउँ घनईआ काहना। कलिजुग तारे गुरसिख प्यारे, निहकलंक प्रभ पहरया बाना। दुष्ट सँघारे करे ख्वारे, सोहँ शब्द ना जिन्हां पछाणा। किरपा कर प्रभ पार उतारे, सोहँ शब्द दे अधारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना।

कलिजुग आए प्रभ गुरसिख तारे। बेमुख गए मानस जन्म हारे। गुरसिख सोहण गुरचरन द्वार । बेमुख सारे गुर दर दुरकारे। भगत जनां हरि नाम अधारे। बेमुखां मदि मास अहारे। महाराज शेर सिँघ चरन जाउ बलिहारे, कलिजुग आण भगत जन तारे। भगत जनां कलि देवे दात। सोहँ शब्द कलि वड्डी करामात। कलिजुग उत्तम गुरमुख तेरी ज़ात। सतिजुग सोहे जिउँ फुल्ल पारजात। गुरसिख गाण शब्द सोहँ दिन रात। बिन गुर पूरे अन्तकाल ना कोई पुच्छे बात। जीव बेमुख सूरे जन्म जन्म आए विच गर्भ मात। प्रगटी जोत कलिजुग सतिगुर पूरे, कर दरस मन होए शांत। अमृत मेघ गुरचरन हज़ूरे, कर दरस पी अमृत बूंद स्वांत। नैण पेख प्रभ साचा देख, अज्ञान अन्धेर मन लाहे भुलेखा भरांत। महाराज शेर सिँघ एको एक, पाताल आकाश जोत धरे विच मात। मातलोक प्रभ आया, कलिजुग भेख वटा के। कलिजुग माया जगत भुलाया, जीव वेख मन पड़दा लाह के। क्यों झूठे धन्दे वक्त गंवाया, पा प्रभ हिरदे शब्द वसा के। क्यों मानस जन्म गंवाया, गुर पूरे चरनीं डिग्गो आ के। क्यों साचा प्रभ भुलाया, विच बैठा जोत जगा के। महाराज शेर सिँघ नज़र ना आया, सिँघआसण बैठा आ के। पारब्रह्म तेरी माया। कलिजुग जीव भुलाया। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। निरहारी निरवैर मूर्त अकाल सिख घर आया। पतित पावन दुःख भय भंजन, साध संगत सिर हत्थ टिकाया । कलिजुग प्रगटे त्रैलोकी नंदन, कलिजुग जोत प्रगटा के झूठे धन्दे जगत लगाया। महाराज शेर सिँघ जन रसना गा के, मानस जन्म सुफल कराया। कलिजुग गुरसिख तेरा सुफल जरम। प्रगट जोत पारब्रह्म भगत जनां वखाणे कर्म। बेमुख जीव छड्ड गए धर्म। साध संगत प्रभ संवारे जन्म। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, निहकलंक हो निवारे भरम । निहकलंक प्रभ निहकर्मा । जो जन आए चरन प्रभ नवारे भरमा। सरन पड़े की राखे शर्मा। कलिजुग गुरसिख होए ना मरना। अन्तकाल प्रभ दर्शन करना। बेमुखां दुःख डाहढा भरना। मानस जन्म कलिजुग विच हरना। जो जन आए ना प्रभ की सरना। काल अन्त दंड धर्मराज का भरना। गुरमुख पूरे कर दरस भव जल तरना। महाराज शेर सिँघ सरन लाग गुरसिख कलिजुग तरना। तरन तारनहार समरथ। कलिजुग प्रगटे जोत अगम्म अगथ्थ। गुरमुखां गुरसिक्खां सोहँ नाम दे चल्लया वथ्थ। सोहँ नाउँ रंग मजीठ, गुरसिख ना जाए तेरा लथ्थ। शब्द चलाया जन भगत तराया, कलिजुग चलाया रथ। बेमुख जलाया जोत अग्न लगाया, सृष्ट सबाई होई सथ। मदि मासी कोई नज़र ना आया, सोहँ बाण जगत गुर लाया, बेमुखां गुर पाई नथ्थ। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जोत प्रगटाए, प्रभ पूरन समरथ। कलू काल प्रभ जोत प्रगटावे। अन्त कलिजुग प्रभ आप करावे। जोत सरूप चौथा जुग उलटावे। घनकपुरी महाराज शेर सिँघ साची जोत जगावे। घनकपुरी प्रभ जोत जगाई। विष्नूं भगवान जोत विच देह टिकाई। कलिजुग जीव

दित्ते सर्ब भुलाई। सरअमृत प्रभ जा के, हरिमन्दर चरन टिकाई। मनी सिँघ सिर उठा के, मंजा साहिब उप्पर दिया बिठाई। बेमुखां सार ना पाई । महाराज शेर सिँघ कल वरतारी। हरिमन्दर दे पुजारी दुष्ट दुराचारी। ईश्र जोत ना विचारी। कलिजुग प्रगटी जोत निरँकारी। विच देह रहे मन धारी। छड्ड देह जोत सरूप होए मुरारी। प्रभ की जोत विच कलिजुग गुरसिख देह करे उतारी। जो किछ करे सोई जग वरते, निहकलंक बणे लिख्त लिखारी। सृष्ट सबाई अन्तकाल रोते, देवे अन्न ना दाता भण्डारी। महाराज शेर सिँघ इक्क निरँजण जोत चौथे जुग करे ख्वारी। जुग चौथा प्रभ अन्त कराए। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ दे उलटाए। जल थल थल जल इक्क हो जाए। पवण सरूप जोत जगत अग्न लगाए। कलिजुग होए अन्तकाल, हाहाकार कर सृष्ट बिल्लाए। गुर बिन कोई ना तोड़े जंजाल, अन्त काल जीव पछताए। कलिजुग वेला जीव संभाल, निहकलंक कलि जोत प्रगटाए। शब्द वणजारिओ प्रभ लैणा भाल, जोत सरूप सच शब्द लिखाए। भुल्ल ना जायो प्रभ बिरध ना बाल, महाराज शेर सिँघ सद रिहा समाए। गुण निधान प्रभ गुणवन्त। गुर दर पाओ हो जाओ उत्तम सन्त। नैण दरसाओ फेर मिले प्रभ साचा कन्त। भरम चुकाओ रसना जापो सोहँ शब्द साचा मंत। हरि हरि हरि प्रभ पाउ, विच देह प्रभ बैठा इकन्त। जप जप जप प्रभ जीव, जिस बणाई तेरी बणत। करनहारा सभ किछ करता, सर्ब कला प्रभ आप वरतंत। महाराज शेर सिँघ घर खुल्ह्‌ा भण्डारा। मंगो दान सोहँ सर्ब जीव जन्त। उत्तम दान जीव मन मंग। सोहँ शब्द मन चाढ़े रंग। मानस जन्म ना होवे कलि भंग। साचा प्रभ गुर दरबार ना संग। कलिजुग साचा जीव प्रभ मिलने का ढंग। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां सद चाढ़े नाम दा रंग। ईश्र नाम रंग निराला। ना उह चिट्टा ना उह काला। ईश्र जोत लाल गुलाला। रिहा बोल प्रभ गोपाला। दरवाज़ा दसवां खोल्ह, जीव हो माल माला। क्यों बैठा अनभोल, साचा प्रभ सदा है नाला। सतिगुर पूरा तोले पूरे तोल, बेमुखां होया कलिजुग मूंह काला। महाराज शेर सिँघ गुरसिख सोहण चरन कँवल कोल, जुगो जुग प्रभ पैज रखावण वाला। पैज रखावे भगत घर आ के। जोत सरूप बाहों पकड़ उठा के। देवे दरस प्रभ गुरसिख जगा के। मिटावे चिन्त सभ आत्म जोत विच देह जगा के। कलिजुग मिले परमेश्वर झब्ब, साध संगत मिल जाए जन आ के। महाराज शेर सिँघ तेरी सरन आए, कलिजुग रखीं सिर हत्थ टिका के। सुखआसण प्रभ बैठ के साची जोत जगा । जीव सद ही भुल्लणहार है, चरन लाग भुल्ल बख्शा। प्रभ वड दाता अतुल भण्डार है, तोट ना एथे को आ। सोहँ शब्द सच्चा सुहाग है, जीव विच ललाट साचा लेख लिखा। प्रभ प्रगट्या अलख अभेव है, कलिजुग बैठा मूंह छुपा। जिन दर्शन ल्या देख है, कलिजुग आत्म गई तृप्ता। महाराज शेर सिँघ गुरसिख सदा विषेष है, जिहड़ा चरनीं डिग्गा आ। चार जुग इक्क

प्रभ दाता। चार वरन करे प्रभ इक्क रंगराता। जोत सरूप सर्ब विच समाता। ज्ञान ध्यान देवे पुरख बिधाता। गुरचरन ध्यान जीव कलिजुग साचा नाता। गुरसिख विटहु कुरबान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस पछाता। हरिजन भगत दर भगत पछानण। प्रभ का रंग विच आत्म मानण। सच दर मंग निजानंद दरसानण। महाराज शेर सिँघ मन चाढ़े रंग, जो जन आ सरन लग जानण। निहकलंक लै अवतार। चौथा जुग होए ख्वार। सतिजुग साचा आए कलधार। सोहँ शब्द होए जै जै जैकार। सतिजुग भगत प्रभ देवे गुण विचार। लै शब्द जगत आत्म भरे भण्डार। अन्त होवे मुक्त गुरचरन कर प्यार। महाराज शेर सिँघ मिलण दी जुगत, सोहँ शब्द जीव रसना धार। शब्द धर मन होए धीर। शब्द जोत कढ्ढे हउमे पीर। कर दरस होए शांत सरीर। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटयो वड दाता गुणी गहीर। गहर गम्भीर गुर गोबिन्दा। गुर बिन कोए लाहे ना मन चिन्दा। सोहँ शब्द ज्ञान प्रभ दिन्दा। प्रगटावे जोत प्रभ मृगिन्दा। महाराज शेर सिँघ चरन लग जावे अन्त सारी हिन्दा। कर किरपा अमृत बरख्या, गुरसिक्खां मुख चुआया। सोहँ सिमर स्वास सवास्सया, कलि सचे सिउँ चित्त लाया। पी अमृत मन तृप्तास्सया, प्रभ सचे मेल मिलाया। गुरसिख चरन रहिरास्सया, नाम निधान गुर दर ते पाया। गुरमुख जीवे गुर भरवास्सया, प्रभ भरम भुलेखा लाहया। साध संगत शाह शबास्सया, जिन रसना हरि हरि हरि गुण गाया।

३०३ ०१ पी अमृत देह दुःख नास्सया, अमृत बूंद कँवल खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग सच जोत प्रकाशया, चरन कँवल ३०३ ०१

संग गुरसिख मिलाया। गुर अमृत विच एह वड्याई। पी अमृत बजर कपाट खुल्हाई। अमृत बूंद सुहावणी, गुर पूरे गुरमुख चवाई। महाराज शेर सिँघ पवित रसना गावणी, कलिजुग देवे भगत वड्याई। कलिजुग ऊँचा भगतन घर। जोत प्रगटावे प्रभ धरनी धर। सच घर आए प्रभ आसा वर। पारब्रह्म परमेश्वर कलिजुग जोत प्रगटाई नर। नर नरायण जोत सरूप एको हरि। एको हरि आत्म धर। कलिजुग सागर जीव जाए तर। महाराज शेर सिँघ गुरचरन लाग, अन्तकाल जीव दुःख ना भर। दुखी जीव कलिजुग कुरलावण। बेमुख जीव जन्म गंवाया आवागवण। साध संगत गुरचरन लाग अमरा पद पावण। महाराज शेर सिँघ सोहण सिँघ तारया पुत्त सिँघ सावण। कलिजुग मिली भगत वड्याई। उच्च पदवी गुर दर ते पाई। गुणनिधान घर आयके भगत जन लेख लिखाई। चतुर सुजान विच जहान गुरसिख नाम रहि जाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग देवे भगत वड्याई। भगतन संग प्रभ वसणेहारा। भगत रवे इक्क रंग करतारा। बेमुख भवे दर दुष्ट दुराचारा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट्या निहकलंक अवतारा। सो नर मुन जाणे गुरदर गुर घर सिख आए। प्रभ पूरे अग्गे खड़े सीस झुकाए। ब्रह्मा विष्नूं महेष गल पल्ले पाए। शिव शंकर जटा जूट धार, गल बैठे नाग लटकाए। चार यारां संग मुहम्मद दर खड़े

कलि बिल्लाए। तक्की अञ्जील ईसा मूसा अथर्बण आए कलि लै खपाए। एक आप रिहा प्रथाए। तेतीस करोड़ देवी देवा शरन प्रभ की रहे तकाए। मेघ माला करोड़ छिआनवे, मेघ बरखा गुरसिख घर लाए। वेद पुराणी पुष्प बबाणी, इन्द्र इन्द्रासण सर्ब डुलाए। भगत विगासण सर्ब करे नासण, गुरसिक्खां सिर प्रभ छत्र झुलाए। जो जन सिमरण सर्ब दुःख नासण, फूलन बरखा प्रभ बरखाए। खाणी बाणी गगन पाताली, जीव जन्त विच जोत आपणी टिकाए। प्रभ चोज वडाणी कलि जाए पढ़ाणी, आपणी भेव सर्ब खुल्हाए। गुर दरबार गुरसिख पुरानी, कलिजुग आए मूल ना हानी, कलिजुग गुर सिर हत्थ टिकाए। एक शब्द तीन लोक बंधाए। जोत सरूप सर्ब रिहा समाए। मात पाताल आकाश साची जोत प्रभ डगमगाए। अनहद शब्द होए गुंजार, गुरमुखां प्रभ दे सुणाए। उपजे धुन होए धुन्कार, निर्मल जोत विच देह जगाए। उपजे जोत होए प्रकाश, बिन बाती बिन तेल विच देह जगाए। कलिजुग मिल्या सज्जण सुहेल, वर पाया जन मेल, महाराज शेर सिँघ कोई ना जाणे कलिजुग तेरा अचरज खेल। अचरज खेल करे प्रभ कर्ता। दूख निवारन सर्ब दुःख हरता। भगत उधारन प्रभ धरनी धरता। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट्या साचा करता। करता पुरख आप गिरधारी। भगतन लाज रक्खे बनवारी। अग्न जल पौण होए पनिहारी। गुरसिख होवे जोत आधारी। महाराज शेर सिँघ देवे दरस जोत निरँकारी। जोत निरँजण निरगुण सरगुण सरूप। भगत जन जानण प्रभ जोत सरूप। कलिजुग प्रगट्या वड दाता भूप। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, दे दरस स्वच्छ सरूप। धन्न धन्न धन्न गुरसिख तेरे भाग। बेमुख सोए पैर पसार, गुरमुख रैण रहे जाग। सोहँ देवे ब्रह्म ज्ञान, कलिजुग लागे ना सिख दाग़। बेमुख कलिजुग बेसहाए, गुरसिख प्रभ फड़ लई वाग। महाराज शेर सिँघ भगत जन तारे, भोग लगाए जिउँ बिदर घर साग। भोग लगाए साग प्रभ कृष्न मुरारी। छड्डे महल्ल भाग दुर्योधन हँकारी। कलिजुग तारन आ गया, निहकलंक अवतारी। गुरसिख घर आयके लाए भोग पैज संवारी। जिउँ नामे दरस दिखा गया, पीवे दुध्ध होए दूधाधारी। प्रभ धन्ना भगत तरा गया, प्रभ लाए भोग छाछ प्यारी। प्रभ द्रोपद लाज रखा गया, लथ्थे चीर ना कोट उतारी। प्रभ प्रहलाद सिर हत्थ टिका गया, प्रगटे आप नर सिँघ अवतारी। प्रभ दुरबाशा माण गंवा गया, चक्र सुदर्शन बाण जीव मारी। प्रभ बावन भेस वटा गया, मंगण जाए बल द्वारी। प्रभ कलिजुग भेत रखा गया, जोत सरूप आया दर सचा दरबारी। गुरसिक्खां मुख उज्जल करा गया, जुग चौथे वारी। सोहण सिँघ कलि कुल तरा गया, मिल्या महाराज शेर सिँघ निरँकारी। जे कोई वेखे प्रभ का प्रताप। ना दिसावे ना दिसे आप। सर्ब जीव में रिहा व्याप। आपणा एक जपाए जाप। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, सतिजुग उपजाए सृष्ट इक्क ज़ात। एक ज़ात होए सर्ब सृष्टी। बुधि बबेक खोल्हे

प्रभ दृष्टी। सचा प्रभ आप, सोहँ शब्द सच देवे दृष्टी। प्रभ जोत सदा अबिनाश, जीव जन्त सर्ब विष्टी। जो ना जपे तेरा जाप, कलिजुग काया जीव दी भृष्टी। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां देवे दात, जिउँ त्रेते भगत वशिष्टी। भिन्नी रैनड़ीए तूं धन्न, जिन पिर मिलाया। भिन्नी रैनड़ीए तूं धन्न, जिन प्रभ अबिनाशी घर प्रगटाया। भिन्नी रैनड़ीए तूं धन्न, गुण निधान कलि घर विच आया। भिन्नी रैनड़ीए तूं धन्न, साध संगत मिल मंगल गाया। भिन्नी रैनड़ीए तूं धन्न, जिन साचे संग साचा नेंह लगाया। भिन्नी रैनड़ीए तूं धन्न, झूठी सृष्ट सुलाई झूट झुलाया। भिन्नी रैनड़ीए तूं धन्न, गुरसिक्खां पाई बुध, रसना हरि हरि नाम ध्याया। भिन्नी रैनड़ीए तूं धन्न, तेरी रुत्त सुहाई निहकलंक विच मात दे आया। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जिन भगत भगवन्त दोए मेल कराया। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जगत अन्धेर गुरसिख प्रभ जोत जगाया। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ कर किरपा गुरप्रसादी प्रसाद वरताया। गुरप्रसादि प्रभ पूरा पाया। गुरप्रसादि जन्म मरन दा फंद कटाया। गुरप्रसादि मिल गुर मानस जन्म सुफल कराया। गुरप्रसादि गुर लिक्खया धुर, गुण निधान घर आए भगत लेख लिखाया। गुरप्रसादि महाराज शेर सिँघ साचा वर पाया हरि राया। कलिजुग ओट एक प्रभ, ना कोई सुहेला। अन्तकाल छड्ड जाणे सभ, झूठी सृष्ट जग झूठा मेला। एह जीव प्रभ साचा लभ्भ, मानस जन्म प्रभ

३०५ ०१ मिलण की वेला। साध संगत प्रभ जोत प्रगटावे झब्ब, कलिजुग चरन संग गुरसिख मेला। चरन लागे विछड़ ना जावे। ३०५ ०१

ईशर जीव भेत चुकावे। ब्रह्म सरूप ब्रह्म दरसावे। निज घर वासी निज मांहि प्रगटावे। बेमुखां भुल्ला जगत भुलावे। कूड़ी दुनियां झूठी काया, झूठे बन्नू बैठा दाअवे। सो जन उधरे पार, महाराज शेर सिँघ जो रसना गावे। रसना सिमरे एक नरायण। आदि जुगादि प्रभ भगत तरायण। नैण पेखत आत्म तृप्तायण। साध संगत गुरचरन लाग सुहाई रैण। महाराज शेर सिँघ लज पति राखे, गुरसंगत विच बेमुख ना बहिण। बेमुख सो ए जित रसना मदि मास। प्रभ संग होए ना उनकी रास। अन्तकाल ना होए बन्द खलास। धर्म राए गल पाए फास। कुम्भी नर्क प्रभ दे वास। गुरसिख नाम जगत प्रकाश। सोहँ जपिआ जिस स्वास स्वास। रसना जप देह अन्धेर विनास। महाराज शेर सिँघ आदि अन्त भगतन पास। भगतन संग वसे प्रभ वसणेहारा। प्रभ पूरन समरथ, खोल्ले दस्म दुआरा। उत्तम देवे वथ्थ, जगावे जोत अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ प्रभ समरथ, कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतारा। गुरसिख घर जोत प्रगटाई, परमेश्वर मेल मिलाया जो लिक्खया धुर। कलिजुग मिल्या साचा गुर। महाराज शेर सिँघ थान सुहाए राम पुर। सोहँ शब्द संग मन सोहण सिँघ जाए जुड़।

❊ २८ चेत २००८ बिक्रमी मास्टर सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड राम पुर ❊

रूप अगम्म प्रभ केरा, जोत सरूप सदा जग दीसे। अगम्म सरूप प्रभ तेरा, कलिजुग वस्सया प्रभ ईसा मूसे। प्रभ का रूप अगम्म, देवे माण अथर्बण मुहम्मदा अल्ला अब्लीसे। अन्तकाल होए कुकर्म, कलिजुग नाउँ प्रभ मलेश रखीसे। साचा प्रभ एक वसे हरि थाउँ, एकस बिना कोई होर ना दीसे। शब्द सोहँ प्रभ रसना गाउ, कलिजुग देवे प्रभ बख्शीशे। अन्तकाल कलि दा होया, सतिजुग अंदर कोई विरला गुरमुख दीसे। सतिजुग साचा सति सति सति होया, महाराज शेर सिँघ मात जोत रखीसे। धरे जोत प्रभ विच लोकमात। बेमुखां सदा रहे कलिजुगी रात। गुरसिक्खां कलिजुग अंदर उत्तम होई ज़ात। सोहँ शब्द वसे अंदर सची करामात। कलिजुग जोत प्रगटायके, गुरमुखां देवे सची दात। बिन गुर पूरे कलि अन्त कोई ना पूछे बात। गुरचरन प्रीती कर हज़ूरे, कलिजुग साचा दीसे नात। महाराज शेर सिँघ सर्ब सृष्टी पीसे, जिउँ पीसे पीस बसात। पीस पिसाए पीसणहारा। कलिजुग प्रगट्या निहकलंक अवतारा। पारब्रह्म अगोचर अगम्म अपारा। निराधार निरवैर निराहारा। गुरसंगत गुरचरन प्यारा। ऊँच अगम्म दिसे दरबारा। कर निमस्कार दरगाह मिले सहारा। भगत जनां आत्म जोत करे प्रभ उज्जयारा। नैणी दीसे साची जोत प्रभ करतारा। बेमुख दुष्ट कलि झक्ख मारा। साध संगत पाया निज घर थारा। आदि पुरख अपरम्पर, निहकलंक अवतारा। जोत जगावे जुगा जुगन्तर, भगत जनां देवे नाम सहारा। बेमुखां सदा नर्क भुगंतर, नज़र ना आवे प्रभ सच मुरारा। एथ्थे उथ्थे आप पति रक्खे, गुरसिक्खां देवे ना प्रभ झूठा लारा। बेमुख कढ्ढे कलिजुग वक्खे, मदि मास कर रसन आहारा। गुरमुख रसना राम रस रसे, सोहँ शब्द रसन उचारा। आपणा भेव आप प्रभ दस्से, जोत प्रगटावे एकँकारा। जूठा झूठा बेमुख नस्से, बैठ ना जाए निन्दक दुष्ट दुराचारा। सतिजुग साचा सच गुरमुख वसे, महाराज शेर सिँघ सच शब्द उचारा। गुर शब्द सचा जग बान। रहे आप प्रभ जाणी जाण। कलिजुग मेट मिटाए बेमुख निशान। गुरमुख उज्जल विच दोए जहान। कलिजुग प्रगटे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। विष्नूं भगवान निहकलंक। साचा शब्द सोहँ होया अडंक। कलिजुग कराए इक्क राउ रंक। राणे महाराणयां दर मंगाए भिख, महाराज शेर सिँघ पूर कराए लिखाए अंक। जीव भूलन मायाधारी। प्रभ की जोत कलिजुग विसारी। विच देह वस्सया पाप हँकारी। मुग्ध अञ्याण मति गई मारी। ईश्र जोत कलि करे ख्वारी। सोहँ जप सच तारे कलिजुग तारी। भगत जनां प्रभ पैज संवारी। कलिजुग प्रगटे महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारी। निहकलंक प्रभ पहरया बाणा। तख्तों लाहे सभ राजा राणा। चार वरन सभ इक्क कर जाणा। शूद्र ब्राह्मण छत्री वैश सभ प्रभ जोत टिकाणा। सो जन उधरे जो चले गुर के भाणा।

सोहँ शब्द जप जीव, आत्म रस मिले सच जाणा। महाराज शेर सिँघ तेरी सरन आए तेरा दरस दर तेरा माणा। गुर दरस कलि गुर दर मिल्या। दरस परस बेमुख हिरदा हिल्लया। बिन प्रभ पूरे बेड़ा शौह दरया कलिजुग ठिल्लया। तख्तों लाहे सर्ब सिर ताज जिउँ जाए माण फरंगी बिल्लयां। महाराज शेर सिँघ तेरा भाणा । विच पाताल प्रभ नैण मुँधारी। सेज बाशक आसण बनवारी। चरन झस्से लच्छमी हँकारी। मन विकार सुखआसण आलस निरँकारी। ना जाणे सदा अडोल प्रभ एकँकारी। करे माण सेव प्रभ कीनी भारी। नाम वज्जे बाण अज्ञान मति गई मारी। गुण निधान साची खेल, खेल जाए खिडारी। दरगाह होवे विच्चों परवान, जो जन प्रभ चरन पुजारी। प्रभ जोत महाराज शेर सिँघ विच मात उतारी। कलिजुग प्रभ मातलोक जोत धरी। कोई जन विरला बूझे प्रगट नर हरी। सोहँ शब्द बाण गुर लाया, झूठी सृष्ट काल अन्त डरी। भेखधारी प्रभ भेख वटाया, कलिजुग प्रगट्या निहकलंक वरी। कलिजुग प्रभ की पाई माया। महाराज शेर सिँघ होए सो जो प्रभ करी। प्रभ जोत विच आकाश। दिवस रैण सदा प्रकाश। प्रभ अडोल सदा अबिनाश। कलिजुग जीव अन्त होए विनास। गुरमुख सोहण चरन गुर पास। साचा शब्द दे धरवास। किरपा कर करे विच देह निवास। जो जन सिमरे लेख लिखाए विच लिलाट। कलिजुग महाराज शेर सिँघ प्रगट्या, करो दरस दूर नहीं वाट। कर दरस कर मन तृप्ताणा। मिल साध संगत हरि जस गाणा। निहकलंक खपाए सृष्ट जिउँ राम हँकारी राणा। कलिजुग जीव बुध होई भृष्ट, मदि मासी दुःख डाहढा पाणा। आत्म प्रकाश विच देह निष्ट, नज़र ना आवे प्रभ बणत बणाणा। महाराज शेर सिँघ तेरा इष्ट, रक्ख मन दरस प्रभ का पाणा। कर दरस जीव जन्म मरन संवारया। कारज होए पूरे सभ निहकलंक ढहि पए द्वारया। अमृत सोमा विच्चों निकले नभ, खोल्ह जाए प्रभ दस्म दुआरया। साची जोत संग पापां बैठा दब्ब, सोहँ जप होए जोत आकारया। कलिजुग महाराज शेर सिँघ जिन ल्या लभ्भ, नाम दान दे चल्लया भगत भण्डारया। जगत भण्डारी देवे माण। जीव संसारी सच कर जाण। कलिजुग प्रगट्या विष्नूं भगवान। जोत सरूप कलि लाए बान। अछल अडोल नज़र ना आवे जाणी जाण। गुरसिक्खां गुरचरन ध्यान। बेमुख कलिजुग धक्के खाण। महाराज शेर सिँघ गुरसिख चरन लाग तर जाण। तार तार तार प्रभ कलिजुग जीव विचारे। सार सार सार हउमे लगा रोग, दुखी होए भारे। वैराग वैराग वैराग कर प्रभ वैराग, सोहँ शब्द जन रसन उचारे। त्याग त्याग त्याग कर प्रभ त्याग, गुरसिक्खां हउमे ममता मारे। राग राग राग कर प्रभ राग, अनहद शब्द वज्जे धुन्कारे। भाग भाग भाग वडभाग कर प्रभ गुरसिख सोहण तेरे दरबारे। जाग जाग जाग कर प्रभ जाग, आत्म निर्मल जोत होए उज्जयारे। दाग़ दाग़ दाग़ दूर कर प्रभ, एक शब्द दे नाम अधारे। लाग लाग लाग गुरचरन लाग, प्रभ

कलिजुग अंदर साची कारे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख वडभाग, कर होए निमाणे ढहि पए दुआरे। कलिजुग अन्धेर विनासे। पापी जीवां मुक्के सास ग्रासे। दुष्ट दुराचारी सर्ब नर्क निवासे। गुरमुखां होए अन्त बन्द खुलासे। सतिजुग भया ईश्र जोत प्रकाशे। भगत जनां प्रभ कीनी दया मात गर्भ ना पाए वासे। साचा लाह गुरचरन सिख ल्या, होया पार अन्त गुर चरन निवासे। महाराज शेर सिँघ पाए सार, भगत जनां हरि दासन दासे। सतिजुग साचा धर्म की क्रिया, गुरमुख उज्जल जोत निरमिल्या। सच सच प्रभ जोत जिस वेले गुरमुख मिल्या। महाराज शेर सिँघ जिन्नां पछाता, उस वेले अन्त जोत विच रल्लया। सतिजुग चले साचा धर्मा। प्रगटे जीव जिउँ बहु कर्मा। अमृत पीव जीउ होए ब्रह्मा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे विच चहुं वरना। चार वरन होए इक्क रंग। सतिजुग सची एह मंगी मंग। गुरमुख जाए पापां लँघ। कोई ना दीसे सतिजुग नंग। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जित्तया, कर जोत सरूपी जंग। सोहँ शब्द प्रभ का बान। त्रैलोकी नाथ लाहे सृष्ट घान। चक्र सुदर्शन प्रभ भवाण। अन्त काल सर्ब सृष्ट खपाण। मौत अन्धेरी भन्न जाए सृष्ट जवानी टाहण। कलिजुग वरते सो जो ईश्र मन भाण। गुरमुख दुःख हरते, जो प्रभ सरन तकाण। अचरज खेल किया प्रभ कर्ते, जुग उलटाए खपाए जन्त जहान। भाणा कहर आप प्रभ वरते, थल जल जल थल इक्क हो जाण। प्रगट भया नर इक्क जगत, पौण पाणी सर्ब मिट जाण। कलिजुग वर मिल्या इक्क हरते, पापी दुष्ट सर्ब मिट जाण। सतिजुग साचा जग विच वरते, जोत प्रगटावे विष्नूं भगवान। गुरमुख विरले दर ते मंगते, दे जावे ब्रह्म ज्ञान। सोहँ शब्द चाढ़ मन रंगते, करे तेज जिउँ कोट भान। कलिजुग पार गुरमुख लँघते, दर खड़े जिउँ दरबान। दुःख दर्द सर्ब प्रभ हँगते, जोत सरूप जोत मिल जाण। बेमुख दर ते फिरे नंगते, मुख काला विच दो जहान। सोहँ शब्द चढ़ाया प्रभ जंग ते, बैठ आप अडोल विष्नूं भगवान। करे सृष्ट छिन्न भंग ते, जोत सरूप तोड़े अभिमान। महाराज शेर सिँघ गुरसिख दर तेरे मंगते, विछड़ कदे ना जाण। मंगण मंगो प्रभ का घर। जिथ्थे जोत धरे प्रभ साचा नर। जो चाहो प्रभ देवे साचा वर। बेमुख कलिजुग दुःख सभ भर। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कर दरस कलिजुग गया तर। कर दरस गुरसिख तरया। अन्तकाल ना जम डण्ड भरया। सोहँ नाम देवे प्रभ आसा वरया। महाराज शेर सिँघ तेरा सिख गर्भवास ना परया। गर्भवास गुरसिख ना धरया। रसना माणे इक्क रंग हरया। होए दर मंगत दर ते खरया। महाराज शेर सिँघ चरन लगा किरपा करया। गुरसिख नौं निध घर मांहि पाई। साध संगत मिल प्रभ जस गाई। गुरसिख घर प्रभ प्रगटे जिउँ प्रगटे सैन नाई। कीर्तन होए रैण सभ, प्रभ राणा दे रिझाई। कलिजुग जोत प्रगटावे झब्ब, देवे भगत आण वड्याई। महाराज शेर सिँघ अमृत बरखे, गुरमुख विरले लए

मुख चवाई। नाभ कँवल अमृत धार। गुरमुख विरला पावे सार। पावे सो जन जिस गुरचरन प्यार। पावे सो जन जित पावे किरपा धार। महाराज शेर सिँघ कहो धन्न धन्न, कलिजुग प्रगट्या निहकलंक अवतार। कलिजुग जोत प्रगटायके, आए विष्नूं भगवाना। कलिजुग वक्त चुकायके, लिख दिया धुरों परवाना। सतिजुग साचा लायके, सोहँ दे जाए ब्रह्म ज्ञाना। सच मार्ग राह दसायके, जगावे जोत गुणी निधाना। विच आत्म रस चवायके, जोत प्रगटावे प्रभ बिधनाना। सतिजुग साचा सति वरतायके, महाराज शेर सिँघ सर्ब सुख दाना। सच तख्त सचखण्ड विच मात बणाया। सच वक्त विच ब्रह्मण्ड जोत सरूप वरताया। आप अखण्ड विच वरभंड, सुमेर पर्बत सभ हिलाया। सृष्ट सुहागण होई रंड, प्रभ साचे मुख छुपाया। बेमुखां आत्म होई खण्ड, माणस जन्म मूल गंवाया। ना उह सुहागण ना उह रंड, जिस प्रभ पूरे ना चरन लगाया। महाराज शेर सिँघ सोहँ नाम देवे वंड, गुरसिक्खां झोली पाया। शब्द सुरत सुरत शब्द गुर ज्ञान दवाए। रंग नाद शब्द अनाहद मन वसाए। अगाध बोध सर्ब साद जीव में रिहा समाए। प्रभ ब्रह्म ब्रह्माद जोत सरूप रिहा जोत जगाए। साचा प्रभ आदि जुगादि, सद अमेट मेटया ना जाए। महाराज शेर सिँघ मिल्या जिन पूरन भाग, लग्ग चरन पतित तर जाए। पावे सो जित करे प्रभ तरस। दरसावे सो जित देवे प्रभ दरस। आत्म तृप्तावे सो गुरचरन जन परस। अज्ञान अन्धेर मिटावे सो जित आत्म मेघ देवे वरस। कलिजुग झूठा मोह चुकावे सो निज घर बैठ दे देवे प्रभ दरस। महाराज शेर सिँघ गुण गावे सो किरपा कर मन लाहे हरस। सम्मत बिक्रमी वीह सौ अट्ठ। दिवस जाए उप्पर सट्ठ जां अट्ठ। उलटी सृष्ट भवाए प्रभ लट्ठ। पिण्ड भंडाल करे प्रभ इक्ठ। दूत दुष्ट जावण चुगल नठ्ठ। सृष्ट सबाई झोक के विच भट्ठ। महाराज शेर सिँघ लागो चरन कलिजुग नठ्ठ नठ्ठ।

३०६
०१

❊ २६ चेत २००८ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला ❊

ईश्र जोत भयो प्रकाश। आई मात सर्ब पाताल आकाश। सद अडोल सद अबिनाश। जीव जन्त अन्त होण विनास। साध संगत प्रभ रिदे निवास। आत्म जोत करे प्रकाश। सोहँ शब्द जपावे रसन स्वास स्वास। हउमे हँगता रोग करावे नास। बैठा अडोल विच अबिनाश। भगत जन सोहण गुरचरन पास। अन्त काल मिले गुणतास। बैकुण्ठ धाम प्रभ करे निवास। महाराज शेर सिँघ सद भगतन दास। कलिजुग जोत धरे प्रभ नर। सोहँ शब्द जपावे हरि। एक साचा दूजा कोए नाहे कर। साचा धाम जिथ्थे वसे धरनी धर। चौथे जुग प्रगटाई जोत निहकलंक अवतार नर। बेमुख सार ना पावे, गुरमुखां लाधा साचा दर। प्रभ अज्ञान अन्धेर चुकावे, साची जोत विच देह धर। जो जन विच चरन सीस झुकावे, जन्म ना पावे मुड़के

मर। प्रभ साचा सच सुणावे, कलिजुग आया जोत सरूपी भेख कर। कलिजुग भगत प्रगटावे महाराज शेर सिँघ अवतार नर। नर अवतार नरायण जग ल्या। एकँकार प्रकाश जग किया। सोहँ नाउँ साचा साचे सतिगुर दिया। विछड़यां मेल प्रभ कलिजुग किया। मिल्या फल पूरब जन्म जीव जो बिया। सच शाह प्रगटे घर दर्शन जीव कर मिलण का हिया। प्रभ साचा वर देवे अमृत सोहँ ज्ञान प्रभ साचा दिया। सोहँ साचा ज्ञान, प्रगट देवे विष्नूं भगवान, जीव आत्म ईश्र जोत जीव दूजा ना जिया। जोत जगाए विच लोक तिन्न अंदर। कलिजुग प्रगटे कर दरस, जीव जगे जोत तन देह मन्दर। सोहँ शब्द रसना रस खोल्ह कलिजुग देह मन जंदर। महाराज शेर सिँघ बेमुख ना पावे भेव, धर जोत वसे देह अंदर। साची जोत जगाए प्रभ। कलिजुग साचे गुरमुख लभ्भ। नर नरायण प्रगट आवे झब्ब। कँवल जीव खुलाए विच नभ। झिरावे झिरना अमृत महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द ज्ञान दे सभ। सर्ब जीव मन धरे ध्यान। आत्म दरसे ब्रह्म ज्ञान। सर्ब सूख निजानंद मान। उतरे भूख प्रभ साची जोत जगान। उतरे सहसा दूख जीव बजर कपाट खुल्ह जाण। प्रगट विच देह साचा भूप, अनहद शब्द मन भूप होवे ज्ञान। विच अन्ध कूप द्वार दसवां प्रभ पड़दा लाहन। नज़री आवे सति सरूप, जोत सरूप जोत मिल जाण। सचखण्ड जिथ्थे प्रगटे प्रभ नर अवतारा। जोत प्रगटावे नैण मुँधार, कलिजुग परखे खोटा सभ खरा। जोत प्रकाश भयो प्रभ अन्त काल कलि ना डरा। महाराज शेर सिँघ दर साचा तेरा, जो जन आए सोई जन तरा। हरिजनां दोए एक। हरिजनां करे बुध बिबेक। साध संगत मन टेक। बैठा अस्थूल जोत अग्नी ना लावे देह सेक। कलिजुग भुला चल्लया मूल रसना जप्या ना घड़ी एक। कलिजुग गगन पाताल सभ हिल्लया, महाराज शेर सिँघ निहकलंक जगत धरया भेख। भेख धर अवतार नर, कलिजुग आया। भरम निवारे आत्म जोत धर, ज्ञान दीपक सिख जगाया। दीपक देह जगाए, सोहँ शब्द तन राग अलाए, आपणा भेत प्रभ आप खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, जोत सरूप कलिजुग जीव जलाए, साध संगत सिर हत्थ टिकाया। साध संगत प्रभ वसणेहारा। बैठा अडोल निरवैर निराहारा। कलिजुग जीव वेख आत्म खोल्ह कलिजुग प्रगटे प्रभ अगम्म अपारा। मानस जन्म गंवाया अनभोल, कलिजुग ना मिल्या सच दुआरा। प्रभ पूरा तोले पूरा तोल, बेमुख कलिजुग विचारा। प्रगटी जोत प्रभ उप्पर धौल, भगतन देवे नाम सोहँ भण्डारा। जीव जन्त प्रभ रिहा मौल, सर्ब जीव होए जोत भण्डारा। भगत जनां प्रभ देवे पड़दे खोल्ह, नज़री आवे सच दुआरा। सोहँ शब्द जप साचा बोल, अन्तकाल मिले मोख दुआरा। प्रगट जोत प्रभ वसे कोल, नज़र ना आवे मूर्ख मुग्ध गंवारा। महाराज शेर सिँघ ना जाए डोल, जो जन आए चरन निमस्कारा। निमस्कार करो गुरदेव। कलिजुग प्रगटे अलख अभेव। साची प्रीत गुर दरस सेव। उत्तम फल कलि सोहँ मेव। महाराज शेर सिँघ

कोई ना दीसे कलिजुग तुझ जेव। वड्डा प्रभ वड प्रताप। सर्ब सृष्ट में रिहा व्याप। प्रगटे जोत कलि बिन माई बाप। गुरमुखां मारे हउमे तीन ताप। आत्म जोत जगे सदा दिन रात। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर कोई ना पुच्छे वात। कलिजुग जीव होए अज्ञानी। मदि मासी होए अभिमानी। कलिजुग माया जीव भरम भुलानी। चले कुरीती छड्ड साची बाणी। बेमुख कलिजुग आई हानी। गुरसिख गुर मिल पाए पद निरबानी। देवे दरस प्रभ घर आए गुण निधानी। उतरे दूख सगल वसूरे, जीव मिल प्रभ होए ब्रह्म ज्ञानी। ब्रह्म ज्ञानी शब्द धुन अनहद, महाराज शेर सिँघ जन होए वखानी। जो जन आए कलि प्रभ की सरना। अन्तकाल होए ना मरना। गुरमुख नाउँ प्रभ उज्जल करना। सोहँ शब्द मन सिक्खां वरना। अन्तकाल निवास विच खण्ड सच करना। जोती जोत मिलाए, प्रभ फिर अन्त होए ना मरना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, सरन लाग जीव कलिजुग तरना। अछल छलन कलिजुग आया। चार वरन जिस इक्क कराया। राणा राजा सभ तख्तों लाहया। हँकार निवारी हँकार गंवाया। बेमुखां नर्क निवास दवाया। मदि मासी काल अन्त रहण ना पाया। गुरमुखां मुख प्रभ अमृत चुआया। आत्म साद प्रभ नाभ कँवल खुल्हाया। खुल्हे नाभ कँवल प्रगासे, साचा प्रभ नज़री आया। सोहँ दे ब्रह्म ज्ञान, गुरसिक्खां अज्ञान अन्धेर चुकाया। गुरचरन कर ध्यान, सिँघ आसण बैठा डेरा लाया। कलिजुग आए गुणी निधान,
निहकलंक नाउँ रखाया। निरगुण सरगुण दोए सरूप, जोत सरूप विच कलि दे आया। प्रभ की महिंमा बड़ी अनूप, जीव किसे ने भेत ना पाया। आत्म वेख जीव सच सरूप, साचा प्रभ तेरे विच समाया। नजर ना आवे रेख ना रूप, गुरमुखां प्रभ भेव खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, निहकलंक कलि नाउँ रखाया। कलिजुग देवे भगत वड्याई। जुगो जुग प्रभ पैज भगतन रखाई। अन्तकाल होए आण सहाई। कलिजुग जीव प्रभ मति उपद्दी पाई। जोत सरूप जगत अग्न लगाई। कुन्ट चार हाहाकार मच्च जाई। गुरमुखां घर जै जै जैकार कराई। भगत जनां प्रभ देवे वड्याई। आप अपरम्पर सर्ब रिहा समाई। अन्तकाल कलि दे खपाई। मदि मासी कोई रहण ना पाई। गुरमुखां मन वज्जी वधाई। दर्शन देवे कलि रघुराई। निमाणयां सिर कलि हत्थ टिकाई। राजे राणयां चल्लया तख्तों लाही। सोहँ साचा नाम जपाई। साचा तख्त सचखण्ड बण जाई। जित्थे महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई। प्रगटे जोत निहकलंक। चार कुन्ट शब्द वजावे डंक। सरनी डिग्गे सर्ब राउ रंक। भगत जनां देवे वड्याई, जिउँ त्रेते जनक। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, कलिजुग पुरी विच घनक। कलिजुग आया कलि तार। गुरमुख विरले करन विचार। बेमुखां दर जावे झक्ख मार। भगत जन सोहण हरि के द्वार। दोए जोड़ कर निमस्कार। महाराज शेर सिँघ नर अवतार। कलिजुग आए प्रभ गिरधार। भगत जनां प्रभ देवे तार। मनमुख डोबे विच

मँझधार। भरम भुलेखे भुलाए संसार। कोए ना जाणे कलिजुग प्रगटी जोत नैण मुँधार। देवे दरस प्रभ किरपा धार। कर दरस जन उतरे पार। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, कोए ना पावे तेरी सार। पावे सो जन जिस आप जणावे। देवे सोहँ तन जिस साचा नाम जपावे। जगे जोत तन मन, जिस सिर हत्थ टिकावे। गुरचरन संग जाए बण, वज्जे धुन विच कन्न, दस्म दुआर जिस आप खुल्हावे। महाराज शेर सिँघ कहो धन्न धन्न, कलिजुग आ पार लँघावे। पारब्रह्म कलिजुग आया। जुगो जुग प्रभ भेख वटाया। होए मेहरवान सतिजुग सति साचा राह चलाया। त्रेता राम अवतार साचा नाम राम रखाया। द्वापर लै अवतार मोहण माधव कृष्न मुरार नाउँ धराया। निहकलंक कलि लै अवतार, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाया। कलिजुग प्रगट्या निहकलंक अवतारी। सर्ब सृष्ट जिस आप सँघारी । कोई ना रहे जीव दुष्ट दुराचारी। भगत जनां पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ चरन जाउ सद बलिहारी। निहकलंक नाउँ रखा के। कलिजुग चल्लया अन्त खपा के। चौथा जुग जोत सरूप आप उलटा के। सारी सृष्ट विच हाहाकार मचा के। बैठा अडोल सचखण्ड डेरा ला के। उनन्जा पवण सिर छत्र झुला के। जोत सरूपी सच जोत जगा के। कलिजुग प्रगट्या निहकलंक नाउँ रखा के। भाणा जावे सच वरता के। अज्ञान अन्धेर सभ नष्ट करा के। भगत जन कलिजुग प्रगटा के। सोहँ शब्द सच राग सुणा के। सतिजुग साचा सच राह वखा के। ईश्र जोत विच मनी सिँघ टिका के। सतिजुग वाली सच गुरू बणा के। ज्ञान जोत प्रभ जोत जगा के। तीन लोक प्रभ सोझी पा के। महाराज शेर सिँघ जन उतरे पार, रसना तेरे गुण गा के। रसना गाउ गहर गंभीर। आत्म शांत, जाए हउमे पीड़। अमृत वरखे अमृत धारा जिउँ जल नीर। कर दरस महाराज शेर सिँघ होवे शांत सरीर। दरस कर आत्म तृप्तासे। आत्म होए प्रभ के वासे। तिस जन कउ बलि बलि जासे। जो जन जीवे जप रसन स्वासे। साध संगत प्रभ विच निवासे। गुरमुख सोहण गुरचरन पासे। कलिजुग गुरमुख उज्जल जिउँ चन्दन प्रभासे। सोहँ शब्द सुण सर्ब दु:ख नासे। जीव आत्म खोल्ह सुन्न, साचा शब्द विच देह भाखे। प्रभ दरस लोरे सुर नर मुन जन, प्रभ किसे ना आवे हाथे, महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, आदि अन्त संगत पासे। कलिजुग आया जोत प्रभ धर। भगत जन जामे बहत्तर प्रगट जावे कर। सतिजुग साचा सोहँ शब्द खुल्हावे दर। झूठी देह जीव पिण्ड है काचा अन्त जीए हर। कलिजुग प्रगट्या सतिगुर साचा, चरनीं आए पर। एका नाउँ एका थाउँ एका आप एक सच घर। महाराज शेर सिँघ घर साचा दर, चरनीं लाग बेमुख जा तर। सतिजुग चले साचा नाउँ। एकस बिन दूज कोई जपे ना नाउँ। गुरमुखां पकड़ वखावे बाहों। साचा शब्द सतिजुग साचा नाउँ। महाराज शेर सिँघ तेरी सरन आ के, कलि लग्गे ना तत्ती वाओ। कलिजुग होवे अन्ध अँध्यार। बेड़ा डोबे

प्रभ विच मँझधार। सृष्ट सबाई होई ख्वार। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ जोत झुलार। बेमुख डुब्बे उरार ना पार। गुरसिख पार कर चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ मिल्या कलि दुत्तर तार। कलिजुग नाउँ प्रभ देवे। साचा शब्द जो जन सरेवे। अनहद शब्द मन धुन वजेवे। महाराज शेर सिँघ मिल्या अलख अभेवे। कलिजुग प्रगट्या प्रभ जगन्नाथ। जुगो जुग प्रभ भगतन साथ। भय भयानक रक्खे सिर दे हाथ। सोहँ शब्द साची चलावे गाथ। कलिजुग प्रगट्या महाराज शेर सिँघ अनाथां अनाथ। जगत पित कलिजुग आया। भय भयानक भगतां होए सहाया। सोहँ बाण जगत गुर लाया। धार खेल चतुर्भुज कहाया। जोत सरूप प्रभ जोत अग्न जगत जलाया। बैठ अडोल आप, बिन दैंता जगत घाया। बेमुखां नज़र ना आवई, गुरसिक्खां घर जोत प्रगटाया। घर आए थान सुहाए जिउँ छाछ धन्ने भोग लगावे, घर रंक प्रभ डेरा लाया। भगत वछल सद अख्वावे, देवे दरस कलि रघुराया। भेव प्रभ सो जन पावे, शब्द सुरत जित प्रभ भेव खुल्हाया। मनमुखां नज़र ना आवई, अज्ञान अन्धेर विच देह वसाया। गुरसिक्खां जोत जगावई, आत्म दीप विच देह जगाया। सच समग्री विच देह पावई, बिन बाती बिन तेल ईश्‍र सदा डगमगाया। करे सो जो मन भावई, अचरज खेल प्रभ कलिजुग रचाया। महाराज शेर सिँघ चरन लाग जावसी, निहकलंक जामा धार कलिजुग आया। निहकलंक प्रगटे कलिजुग निरवैरा। सृष्ट सबाई प्रभ वरतावे कहरा। नज़र ना आवे प्रभ गम्भीर गहरा। गुरचरन लाग गुरसिख कलिजुग तैरा। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल होवे तेरा पहरा। अन्तकाल कलिजुग करन प्रभ आया। निहकलंक नाउँ रखाया। जोत सरूप विच सिख समाया। नज़र ना आवे राम कृष्न रघुराया। भगत जनां देवे पड़दे खोल्ह, आत्म साचा ब्रह्म ज्ञान दवाया। कलिजुग जीव हिरदा फोल, जिथ्थे वस्सया जिन उपजाया। सोहँ शब्द चार जुग वज्ज जावे ढोल, महाराज शेर सिँघ भगत जन तेरे सोहण जिन्हां रसना सोहँ ध्याया। ओअँ आप, सोहँ देवे प्रभ साचा जाप। विनासे कोट जीव दे पाप। हिरदे वसे प्रभ साचा आप। महाराज शेर सिँघ तेरा वड प्रताप। मेहरवन्त देवे भगतन वड्याई। जोत निरँजण विच मात दे आई। कलिजुग जीव भुल्ल सभ जाई। गुरमुखां प्रभ सोझी पाई। बेमुखां कलि सार ना पाई। गुरसिक्खां प्रभ चरन आस तकाई। बेमुखां अन्त नर्क निवास दवाई। गुरसिक्खां सचखण्ड प्रभ लै जाई। लक्ख चुरासी गेड़ कटाई। जोत सरूप विच जोत मिलाई। साची जोत सच घर टिकाई। जीव जोत विस्मादे विस्माद समाई। मरे ना जम्मे आवे ना जाई। महाराज शेर सिँघ अन्त लए जोत विच जोत मिलाई। गुरमुखां घर प्रभ प्रगटाया। विछड़यां प्रभ मेल कराया। कलिजुग साचा राह बताया। सोहँ शब्द सच चप्पू लाया। काया नाउँ कलि डगमगाया। ज्ञान थम्म्ह प्रभ विच लगाया। अमृत झिरना निज मांहि झिराया। प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाया। महाराज शेर सिँघ सोहँ तेरा नाउँ

जिस जन रसन ध्याया। सतिजुग सति होए वरतारा। निहकलंक ल्या अवतारा। सर्ब बाकी कलि होए ख्वारा। अठ्ठ सठ तीर्थ सच गुरचरन दुआरा। नाम दरस अमृत बूंदारा। सोहँ शब्द होए देह अधारा। अथर्बण वेद कलिजुग गया कर आपणी वारा। कुरान मुहम्मद गया संग चार यारा। ईसा मूसा कलि किया पार किनारा। वेद चार प्रभ पार उतारा। चौथे जुग ब्रह्मा छड्डुया सच दुआरा। भगत ध्रू प्रभ पार उतारा। सवरन सोहे सच दरबारा। सचखण्ड वसे आप एकँकारा। सतिजुग चले सोहँ शब्द अपारा। सर्ब जीव होए एक शब्द अधारा। छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना कोई रहे विच संसारा। जोत सरूप एक प्रभ, एका देवे जोत अधारा। सतिजुग साचा सच सच वरते, जीव करन धर्म वपारा। हिरदे हरि हरि अमृत बरखे, गुरमुख होवे जन भगत प्यारा। महाराज शेर सिँघ आत्म इक्क रक्खे, जित देवे दरस अपारा। दरस कर भरम भउ नास्सया। आत्म जोत होए प्रकाशया। कलिजुग मिल्या प्रभ अबिनाशया। गुरसिख होए ना गर्भ वास्सया। सोहँ सुण नाउँ, बेमुख दर ते नास्सया। गुरसिक्खां कलि बलि बलि जाओ, जिन्हां हिरदे करे प्रभ वास्सया। प्रभ ऊँचा अगम्म अथाओ, साध संगत विच दासन दास्सया। घर बैठा साचा शाह पाओ, कलिजुग महाराज शेर सिँघ जोत करे प्रकाशया। जोत सरूप प्रगटे कलिजुग दाता। देवे ज्ञान प्रभ ब्रह्म ज्ञाता। करावे ध्यान रसना सोहँ नाम जपाता। दवावे माण जिस प्रभ हत्थ टिकाता। मिटावे अभिमानी जिस कलिजुग महाराज शेर सिँघ नहीं पछाता। मानी अभिमानी कोई नहीं रहणा। झूठी सृष्ट वहावे विच प्रभ वहन्दे वहणा। प्रगटे प्रभ कर दरस जीव नैणां। झूठी जगत प्रीत जीव सदा बैठ नहीं रहणा। गुरचरन कर प्रीत, देवे प्रभ पूरब जन्म दा लहणा। प्रभ साचे की साची रीत, साचे सिख बैकुण्ठ धाम विच बहणा। बेमुखां प्रभ वेखे नीत, वस धर्म राए दे पैणा। अन्तकाल जीव कोई ना मीत, डण्ड धर्मराए दा सहणा। आत्म ल्या ना प्रभ चीत, गेड़ चुरासी विच सद रहणा। कर दरस रसना प्रभ चीत, मन्न कलि साचे प्रभ का कहणा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख उधरे जिन लागे चरन संग प्रीत। चरन प्रीत प्रभ बख्श दे किरपा कर। सच सिँघासण आ गया प्रभ सिक्खां घर। प्रभ सच जोत प्रगटा गया लै अवतार नर। प्रभ भरम भुलेखे भुला गया, कलिजुग जीवां मूंह काले कर। गुरसिक्खां अनहद शब्द मन वसा गया, साची जोत विच देह धर। सोहँ शब्द सच राग सुणा गया, हिरदे वास प्रभ कर। सभ भरम भुलेखा लाह गया, निर्मल जोत प्रकाश सच कर। महाराज शेर सिँघ रंकां सिर हत्थ टिका गया, प्रगट हो के निहकलंक अवतर। निमाणयां दे माण प्रभ, ढहि पए सरणाई। मूर्ख मुग्ध सुजान कर, दर आए शरन तकाई। सच सोहँ शब्द दान कर, आत्म बुझी दीपक देह जगाई। प्रभ हिरदक जोत ज्ञान कर, निजानंद दे दरसाई। महाराज शेर सिँघ किरपा विष्नूं भगवान कर, आण डिग्गे तेरे दर आई। दर आया होवे परवान। देवे बख्श

विष्नूं भगवान। पतित पापी कर दरस तर जाण। प्रगटे प्रभ भय भंजन मेहरवान। मूर्त अकाल इक्क जोत समाण। भगत जन वेखे कर आत्म ध्यान। मानस जन्म लेखे, जिन मिल्या प्रभ आण। जन्म लगाए लेखे, लै जाए विच बबाण। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, गुरसिख अन्त जोत मिल जाण। जीव जोत जगत प्रभ धरता। जो किछ करे प्रभ सोई होवे, करे करावे आप प्रभ करता। पावे सोए जिस आप दवाए, अज्ञान मिटावे देह दुःख हरता। महाराज शेर सिँघ दरस जन पावे, हत्थ सिर जन प्रभ धरता। शब्द सति सर्ब जग बांध्या। कलिजुग फांद पाए गल फांदया। नज़र ना आवण बेमुख जांदया। गुरमुख सोहण दर रसन सोहँ गांदया। कलिजुग बेमुख बन्ह्णौण जिउँ बंधे बांधया। महाराज शेर सिँघ गुरमुख सद गाउँण, दर साचे भौंण, रसना नाम गांदया। नाम जप निर्मल तन मन देह। कलिजुग अमृत वरखे प्रभ मेंह। सतिजुग साचे सच रखाए नेंह। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खा तेरा तुट्टे नाहीं नेंह। तोड़ी तुट्टे ना गुर संग बणी। निमाणयां घर वस्सया छड्ड कलिजुग धनी। सच राहो सच शाहो प्रभ दस्सया, जोत जगाए विच सिँघ मनी। सोहँ शब्द मेघ अमृत वस्सया, सतिजुग जीव सुणे जिउँ कन्नीं। महाराज शेर सिँघ जिन्ह दे हिरदे वस्सया, तिन प्रीत गुरचरन संग बणी। गुर सागर गुर गहर गंभीरा। आत्म जीव धरे प्रभ जोत अमोलक हीरा। प्रगट जोत आत्म तृप्तावे, होवे शांत सरीरा। महाराज शेर सिँघ तेरे दर आए, तूं जाणे जन की पीड़ा। कलिजुग पीड़ हउमे अग्ग। प्रगटे प्रभ गुरसिख चरनीं लग। जीव कलिजुग जीव अग्न जोत जाए दग। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपा, सभ सृष्टी दाहढ़ीं जाए चब्ब। सृष्ट सर्ब आप उपजाई। माया रूपी प्रभ खेल रचाई। छिन उपजावे छिन मांहि खपाई। छिन भंगर प्रभ नाउँ रखाई। भरतम्बर सर्ब रिहा समाई। कलिजुग अंदर प्रभ जोत प्रगटाई। विष्नूं बंसी सूरे अंसी, गुरमुख साचा पन्थ चलाई। महाराज शेर सिँघ जो जन दरसी, दरगाह मिले वड्याई। दरगाह देवे माण, पुरख सुजान कर। सोहँ देवे दान, आत्म ब्रह्म ज्ञान करि। मिले भगत भगवान, कलिजुग पछाण कर। महाराज शेर सिँघ जाणी जाण, कलिजुग जावे रसना शब्द वखान कर। आप आपणा शब्द वखाणे। सिंङी धुन नाद देह आप वजाणे। कोट कपट विकार सभ देह मिटाणे। कर दरस गुरमुख होए सुघड़ सयाणे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख चले तेरे भाणे। भाणा वरते जो वरतावे। एकस बिन दूसर नज़र ना आवे। अनद बिनोदी सभ खेल रचावे। सृष्टी सोधी धवल डुलावे। निहकलंक वडा जोधी, सोहँ बाण सृष्ट लगावे। महाराज शेर सिँघ गुर साचा सोधी, सच शब्द गुरमुख सुणावे। गुरमुख नाउँ रसन उचारे। परम पुरख मिले आप बनवारे। देवे वस्त निज घर थारे। जिथ्थे वसे जोत निरँकारे। अगम्म अगोचर अलख अपारे। जोत सरूप रवे विच संसारे। गुरसिख सोहण गुर दरबारे। प्रगट जोत प्रभ भगतन तारे। सृष्ट सभ रोत, अन्तकाल

होए कलि ख्वारे। महाराज शेर सिँघ प्रगटे जोती जोत, चार कुन्ट होए जै जैकारे। जै जैकार होए चार वरन। राउ रंक आण डिग्गे प्रभ शरन। बेमुख दुःख डाहढा कलि भरन। महाराज शेर सिँघ चरन लाग सभ तरन।

❋ ३० चेत २००८ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला ❋

जोग प्रगटाए प्रभ प्रगट जोग। साचा नाउँ जीव रसना भोग। काया बिख काटे रोग। विछड़े जन मिलावे लिक्खया धुर संजोग। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह दूजा कोई ना होग। कलिजुग धरे जोत एक जगदीशे। गंवाए माण मूसे ईसे। कुरानी इमानी सभ पूरा ठीसे। साचा शब्द सच सोहँ थीसे। चार कुन्ट जो जन वेखे, महाराज शेर सिँघ साचा सतिगुर दीसे। सच शब्द गुर सच लिखाया। त्रैलोकी नाथ विच मात दे आया। धवल धर्म कलिजुग डुलाया। अन्तकाल करन कलि हरि जू आया। खण्ड ब्रह्मण्ड गगन पाताल हिलाया। सोहँ शब्द सतिजुग साचा नाउँ वंड, आत्म मंत जगत चलाया। सोहँ मंत जीव जप जन्त, नज़र आवे जिस उपाया। प्रभ साचा कर साचा कन्त, ज्ञान जोत हिरदा दीपक जोत कराया। महाराज शेर सिँघ सर्ब दुःख नाठे, चरन लाग जिस दर्शन पाया। सतिजुग जीव होए सतिवादी। कोई ना दीसे कलिजुग अनवादी। ब्रह्म सरूप अनहद वादी। प्रगटावे जोत आदि जुगादी। जामा धार कलि सृष्ट सभ साधी। सोहँ शब्द वजावे धुन नादी। महाराज शेर सिँघ जीव सति रसना गांदी। रसना जप राम रमईआ। द्वापर प्रगटे जिउँ कृष्न घनईआ। कलिजुग पार करे धर्म की नईआ। महाराज शेर सिँघ जीव सच तेरी पित मईआ। मात पित प्रभ भगतन केरा। भरम चुकाए विच्चों तेरा मेरा। जोत जगाए मिट जाए अज्ञान अन्धेरा। नज़र ना आवे गुरमुख सञ्ज सवेरा। काया झूठी साचा प्रभ विच किया वसेरा। जाता जीव दूर, आत्म वसे प्रभ नेरा। प्रगटावे जोत वांग कोहतूर, ना लावे देरा। नेड़ ना आवे भरम भयो भूत, जिस जपया नाउँ तेरा। काया काची जिउँ काचा सूत, चरन लाग प्रगटे प्रभ निरवैरा। महाराज शेर सिँघ सच तेरा रूप, जोत सरूप मात पाया फेरा। मातलोक प्रभ कीनी दया। निहकलंक अवतार कलि ल्या। बेमुख दर ते कोई ना रहया। साध संगत प्रभ सोहँ नाउँ कीनी दया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जगत विच पाई मया। जीव साची तेरी सच बणत बणाई। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त लगाई। मति मन बुध विच देह टिकाई। मिल साध संगत प्रभ दे वड्याई। कलिजुग क्यों भुल्ला जीव, जिस बणत बणाई। क्यों रुल्लया लाल अनमुल्ला, आपणी पति गंवाई। कलिजुग साचा दरबार दर खुल्हा, सोहँ दान प्रभ दान दिवाई। गुरमुख जेवड कोई ना तुला, तोल तुलाए आप रघुराई। गुरमुख साचा घोली घुला, जिस तन अंदर

साची मति पाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे, सतिजुग साचा दे लगाई। नर अवतार कलिजुग प्रभ धारया। खण्ड ब्रह्मण्ड पार उतारया। ब्रह्मा वक्त आण निवारया। साचा सिख सच जोत मन धारया। वेद अथर्बण कलि गया हारया। अल्ला अलाह कलि नूर होए ख्वारया। प्रगटावे जोत होवे अन्ध अंध्यारया। निहकलंक कलि पार उतारया। सतिजुग साचा सच जगत पसारया। सोहँ शब्द सति पुरखां देवे नाम भण्डारया। अनहद शब्द धुन राग जीव देह वणजारया। क्यों बैठा मुन्न आत्म सुन्न अनहद शब्द वज्जे धुन्कारया। साध संगत सच दिया गुण, महाराज शेर सिँघ सद रसन उचारया। लगावे जोत कलिजुग धक्का। मिटावे खोज सदी चौधवीं मदीना मक्का। चलावे बाण सोहँ, रोवे सर्ब कक्का। महाराज शेर सिँघ जगत फिराए नकेल पाए हँकारी विच नक्का। भए प्रकाश सतिजुग सति चाले। बेमुख कलिजुग नर्क अग्न प्रभ डाले। जोत सरूप भगत जन पाले। सोहँ शब्द सच धन माले। आत्म वसाउ जीउ मिले लाल गुलाले। अन्तकाल होए सास सुखाले। महाराज शेर सिँघ गुण रसना गा ले। कलिजुग गुण प्रभ का गुणवन्त। करे मेल प्रभ भगत भगवन्त। बेपरवाह कोई जाणे ना अन्त। कलिजुग प्रगटे आत्म सन्त। साचा दृष्टी कोए पावे अन्त। भेखधारी गणत अगणत। सोहँ शब्द जीव मन साचा मंत। दुष्ट दूत पंच अन्त करे देह भस्मंत। अन्त मिलावे जोत जिउँ गुरमुख सन्त। महाराज शेर सिँघ जीव जोत धरे बैठा विच अकन्त। रूप रंग ना जाणे कोए। तीन लोक प्रभ जोत मिलावे, कर गुर गोबिन्द प्रगट दोए। दोए मूर्ति जोत इक्क होए। साध संगत गुर चरन परोए। बेमुख कलिजुग हाहाकार कर रोए। वक्त विहाया सभ रहे सोए। भगत जनां करे प्रभ आत्म लोए। दीसे साचा प्रभ अवर ना कोए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कर साची सोए। साची जोत प्रगटाए जगदीसे। ब्रह्मा विष्नूं महेष रखावे विच ईसे। कई कोट तपीसे, नज़र ना आवे किसे रखीशर। गुरसिख कलिजुग दरस मन लोचदे, जोत प्रगटावे प्रभ परमेश्वर। सच तख्त ऊँचा दरबार। जोत जगे प्रभ अगम्म अपार। सोहँ शब्द राग रसार। भगत जन दिए अधार। निन्दक दुष्ट दुराचार, कलि होए ख्वार। सोहँ नाम दे घर जाए तार। भगत जन हरि करन विचार। महाराज शेर सिँघ लए अवतार। पतिवन्त सर्ब प्रभ नारी। जोत सरूप घर छड्डे ना सिक्दारी। साध संगत गुरदर दरस भिखारी। जोत प्रगटावे प्रभ निरँकारी। निरँजण जोत जिउँ कृष्न मुरारी। भगत जन मिले बनवारी। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप चार कुंट करे जोत असवारी। जुगो जुग सृष्ट जोत प्रभ धर। मच्छ कच्छ रूप करि जाए विच सर। बावन भेख करि दर आया बल। तारे प्रहलाद आप सिँघ नर। ईश्र जोत भगत जनां प्रगटावे हरि। मेहरवान त्रेता राम भगवान द्वापर कृष्न काहना रक्खे लाज जाए दलिद्री तर। जोत प्रगटावे कलिजुग नर नरायण ईश्र नर। मातलोक होए विच नर निहकलंक जोत जग

३१८
०१

करि। सृष्ट सबाई प्रभ ना दीसे, जोत जगावे विच घुमिआर घर। कलिजुग फंदन प्रभ दे छुडाए, साचा प्रभ दे के चल्लया वर। बेमुख कलिजुग देण दुहाई, अन्तकाल जम दीसे डर। साध संगत मन वज्जी वधाई, कलिजुग मिल्या इक्क प्रभ हरि। देवे वड्याई प्रभ साचा धरनी धर। जीव किसे किछ ना हत्थ, जो किछ करनी सो कलिजुग कर। हँकारीआं निन्दकां पा के नत्थ, भिख्या मंगावे प्रभ दर दर। एथे जोत जगत भगत प्रगासे, आत्म जीव ना जाए मर। जोत प्रगटावे प्रभ घर अबिनाशे, महाराज शेर सिँघ निमस्कार कर। जोत प्रगटाए आप प्रभ दाता। आपणे रंग रवे रंग राता। गुरमुख विरले प्रभ सच पछाता। कर दरस जीव पुरख बिधाता। महाराज शेर सिँघ जीव जोत जगाता। जीव झूठा प्रभ ना माने, झूठी काया झूठा एह तन। सोहँ जप कर निर्मल मन। अनहद शब्द राग सिमर कन्न। वेला अन्त आ गया प्रभ लै जावे संगत बन्ह। गुरचरन लाग वक्त सुहा गया, मुक्खो कहो धन्न धन्न। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटा गया, कलिजुग तारे भगत जन। भगतन देवे जोत भरवासा। मात गर्भ होए ना वासा। गुरचरन प्रीती गुर रहिरासा। प्रगट कीती जोत प्रगासा। महाराज शेर सिँघ आत्म देह करे विच वासा। आपणी कल आप भुगतावे। सच जोत विच मात उतारे। सोहँ शब्द सच जाण विचारे। सर्ब सृष्ट सभ होए ख्वारे। तारे जन जो ढहि पए दुआरे। महाराज शेर सिँघ रसना गावे जन, सोहँ देवे भगत भण्डारे। भगतन देवे नाम भण्डारा। आत्म रस चले निराधारा। पवण जोत विच देह हुलारा। आत्म सूखम देह विच वसे निरँकारा। निरँजण जोत रंग अगम्म अपारा। खोल्ह दर सोत, दरसावे दस्म दुआरा। बेमुख दर रोत, अज्ञान अन्धेर देह चले निवारा। नज़र ना आवे प्रभ की जोत, मदि मास जिस रसन आहारा। महाराज शेर सिँघ सच तेरी जोत, भगतां देवे जोत चमत्कारा। भगत जन आत्म जोत चमत्कारे। हउमे विच्चों मारे, रसना नाउँ जपे निरँकारे। पारब्रह्म परमेश्वर अन्तरजामी कलिजुग पधारे। जोत सरूप पाई माया सगल संसारे। गुण निधान गुणवन्त कलि विचारे। सच जगत होवे पुरख सुजान, जिस घर आ काज संवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट तेरी जैकारे। ईश्र जोत जोत पृथ्माए। आपणा भेव जगत रखाए। अर्जन रथ जिउँ प्रभ चलाए, महासार्थी आप अख्वाए। त्रेता राम अवतार, बाण दहिसर घाए। कलिजुग लै अवतार नाउँ रखाए, निहकलंक जगत अख्वाए। निहकलंक, निहकलंक जोत सरूप अग्न जगत जलाए। नज़र ना आवे प्रभ रंग ना रूप, चार कुन्ट रिहा समाए। शब्द सुरती जगावे जोत, बांहों पकड़ प्रभ भेड़ कराया। माता छड्ड जाए पूत, भैण भाई ना होए सहाया। वरते कलिजुग अन्त अन्ध कूप, शब्द अन्धेर कलिजुग मचाया। अन्तकाल उठ गए ढेर, मदि मास जिन रसना लाया। जोत सरूप हिलाए पर्बत सुमेर, खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब डुलाया। जोत सरूपी प्रभ लाया गेड़, आवे हत्थ ना वक्त गंवाया। प्रभ दूर जे वेखो तां सदा

हज़ूर, कलिजुग भरम जिस भयो चुकाया। सोहँ शब्द कर साचा सूर, कलिजुग आण सर्ब जिस कूर, महाराज शेर सिँघ चरनां जिस सीस झुकाया। बेमुख खपाए मार त्रिसूल। गुरमुख साचा सोहँ झूला झूल। कलिजुग प्रगटे साध संगत बरखावे फूल। जगत भुलाए भरम भुलेखे, आप प्रभ सर्ब अस्थूल। गुरसिक्खां जन्म लगाया लेखे, मनमुख गंवा गए मूल। प्रगट जोत कढु जाए भरम भुलेखे, अनन्द बिनोदी प्रभ अस्थूल। महाराज शेर सिँघ सृष्ट सभ सोधी, सोहँ शब्द ला साचा रूल। सोहँ शब्द सतिजुग ला। गुरमुख हिरदे प्रभ सच वसा। सच सुच्च विच साची तन पा। साची जोत प्रभ विच देह जगा। शब्द सरूप प्रभ देवे द्वार दस्म खुल्ला। सोहँ नाउँ बीज सच्चो बोज, अमृत नाउँ गुर ते पा। बेमुख कलिजुग सारे रोत, नज़र ना आवे प्रभ साचा बेपरवाह। सिर ते जीव खड़ी है मौत, दम दा नहीं वसाह। साचा मन प्रभ साचे सौंप, दरगाह विछड़ ना जा। बेमुख कलिजुग जाए औंत, सतिजुग साचे कोई लवे ना नां। कलिजुग प्रगटे प्रभ साचा खौंत, रसना जप जीव अमर पद पा। महाराज शेर सिँघ पतित उधारी, भुल्ले जीव सरन लग्ग जा। बेमुखां कलि अन्त जमदूत दंडन। गुरसिक्खां तारे प्रगट आप त्रिलोकी नंदन। देवे वड्याई जो जन दरस दान मंगण। होवे सहाई सोहँ शब्द मन चाढ़े रंगण। लथ्थ ना जाए रंग मजीठ चढ़ाया प्रभ देह नाम रंगण। मदि मासी रसन आहारी, सोहँ शब्द ना गुर दर मंगण। महाराज शेर सिँघ गुरसिख

३१६
०१

तेरे, कलिजुग सागर जप सोहँ लँघण। कलिजुग सागर गहर गम्भीर। सृष्ट वहाई विच प्रभ नीर। आत्म ज्ञान ना देवे कोई धीर। गुरमुखां देवे नाउँ प्रभ गुणी गहीर। भगत जनां प्रभ राखे पति, वांग द्रोपद ना लथ्थण चीर। घर दलिद्री भोग लगाया, छड्ड दुर्योधन खीर। दिहुरा नाउँ प्रभ छप्पर छाया, प्रगट जोत प्रभ भया छीर। घर घुमिआर प्रभ जोत प्रगटावे, वड दाता प्रभ पीरां पीर। पीर पैग़ंबर औलिया कोई जग ना दीसे। सृष्ट सबाई गुर चरन झुकावे सीसे। जोत प्रगटाई कलिजुग अंदर आप प्रभ जगदीसे। महाराज शेर सिँघ भगत जन देवे वड्याई, सृष्ट सबाई कूड़ी ठीसे। कूड़ा जग कूड़ा आहार। बुध्ध भृष्ट तन चले विकार। काया झूठी होवे जगत ख्वार। कलिजुग जीव ना कोई रक्खणहार। साचा नाउँ प्रभ रसन उचार। अन्तकाल कलि उधरे पार। निहकलंक प्रगटे करतार। महाराज शेर सिँघ कर जगत कर्म विचार। गुरसिख होए जगत भिखारी। देवे दरस प्रभ धुर दरबारी। आया मात कर प्रभ जोत सवारी। जोत निरँजण विच देह सिख उतारी। कलिजुग खेल किया प्रभ अचरज भारी। छल वल वल छल कलजुग खेल करे गिरधारी। प्रगट साची जोत कर, निमाणयां प्रभ पैज संवारी। उत्तम कलिजुग होया दर, रक्खे चरन प्रभ आप मुरारी। महाराज शेर सिँघ नाउँ तेरा जग, जग कलि पार उतारनहारी। रक्खी लाज जग दाता जीवन। गुरमुख नाम अमृत रस पीवण। सुफल काम जगत उत्तम थीवन। महाराज शेर सिँघ साचा

३१६
०१

नाउ, गुरसिख मन पीवन। चरन प्यार कर परम पुरख पाया। गुर सेवा गुर दरबार कर, कलिजुग नाउँ आत्म देह वसाया। जोत सरूप घर आए नर, शब्द ज्ञान दान झोली पाया। सतिजुग होवे साचा सर, अमृत मेघ जिथ्थे बरसाया। सोई जन लग्गे कलि दर, जिस जन आपणा भेव वखाया। बेमुख कलि जाए मर, उच्च पदवी गुरसिख गुरदर पाया। कलिजुग साचा साहिब वर, मात पाताल आकाश जित जोत सवाया। कलिजुग प्रगटे महाराज शेर सिँघ नर, निहकलंक नाउँ रखाया। सेवा संगत सर्ब सुख। दरस साध संगत जीव मिटावे दुःख। उजागर कर्म निर्मल होए मुख। कर दरस महाराज शेर सिँघ जन लाहवे भुक्ख। मात पिता कर पूत घर आया। जन्म ल्या प्रभ दर्शन पाया। कर बेनन्ती सच नाउँ रखाया। साध संगत विच सिँघ प्रताप अलाया। महाराज शेर सिँघ सिँघ गज्जण जन्म फेर दिवाया। बेनन्ती करे भाई दर आ के। रक्खो लाज आप जग मापे। चेत सिँघ नाउँ ना जगत तरापे। मन मूर्ख पति गंवाई आपे। जन्म गंवाया ना होए स्यापे। सुण पुकार सुत बख्शण मापे। सिँघ शिंगार वीर कराया पार, कलि जोत रखाई आ के। मूर्ख भुल्ल गया गंवार, मानस जन्म कलि चल्लया फेर दवा के। दोए जोड़ करे अरदास। चेत सिँघ बिन्द कर बन्द खुलास। लाज पति सिख राखे, नर्क ना दे वास। आप अभुल्ल जीव भुलणहारा, बख्श जन खड़े तेरे पास। महाराज शेर सिँघ लिक्खया लेख मिटाया, चरन लाग जीव होए रहिरास। आत्म रास सच ना वपार। मदि मास कलि रसन अधार। डुल डुल भुल भुल जीव जाए नर्क मँझार। डुल डुल भुल भुल फल लग्गे ना जुग चार। तुल तुल जीव साचे तुल, कलिजुग आया जीव तुलावणहार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, मेल मिलावणहार। पुन्नी आस गुरसिख, गुर सतिगुर घर आया। पुनी आस गुरसिख, प्रभ साचे भेत खुल्लाया। पुन्नी आस गुरसिख, भगत पतिवन्त प्रभ आप कराया। पुनी आस गुरसिख, लग्ग चरन उदरक अमृत मुख चुआया। पुन्नी आस गुरसिख, जगदीसर हरिजू नरायण घर आया। पुनी आस गुरसिख, महाराज शेर सिँघ घाल पाई थाया।

❊ पहली विसाख २००८ बिक्रमी प्रेम सिँघ नंबरदार दे गृह पिण्ड बुग्घे ❊

साचा नाम प्रभ एक ओअँ। करे प्रकाश विच प्रभ जोत लोअँ। बनवाली जीव विच प्रभ दान दोअँ। साचा आप प्रभ और ना कोअँ। सच सर सच नाउँ, वक्खर जीव सच सतिजुग हौं। त्रेता प्रगट राम अवतार, जीव जन्त नाम राम रसन परोअँ। द्वापर कृष्न मुरार कन्त मनोहर लखमी नरायण होअँ। कलिजुग लै अवतार, निहकलंक प्रभ नाउँ रखोअँ। महाराज

शेर सिँघ देवे दुत्तर तार, साचा शब्द चलाया सोहँ। सोहँ जप जीव रसना रस। आत्म जाए साचा प्रभ वस। विकार पंच विच्चों जाण नस्स। करे प्रकाश जोत जिउँ रवि सस। अज्ञान अन्धेर हो जाए वस। महाराज शेर सिँघ जुगो जुग होए भगतन वस। भगतन वस आप प्रभ होए। लज्जया रक्खण प्रगट जग होए। आपणा भेव ना बेमुख बलोए। बेमुख कलिजुग जीव सभ रोए। गुरमुख विरला जिस दर्श प्रभ साचा होए। होए प्रकाश तन देह अंदर, आत्मक जोत प्रभ आप जगाए। साचा दीप जगे तन मन्दर, प्रगटे जोत निरँजण सोए। सुन्न समाध खुल्हे मन जंदर, सोहँ शब्द मन वसावे कोए। साचा साहिब वसे जीव अंदर, अलोकिक आत्म वेख नैण बलोए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट निहकलंक नाउँ रखाए। नर नरायण निहकलंक, कलिजुग जीव ना पायण सार, भुल्ली सृष्ट सभ। भगत जन सोहण दरबार, साचा प्रभ कलि ल्या लभ्भ। आदि अन्त प्रभ एकँकार, अमृत बूंद खुल्हाए विच नभ। चार कुन्ट होए जै जैकार, महाराज शेर सिँघ सृष्ट सबाई विच दाढ़ां चब्ब। ईश्र जोत जगत निराली। सतिजुग सति मेहरवान सति जोत संभाली। प्रगट राम अवतार, त्रेता बणया राम बनवाली। द्वापर कृष्न मुरार, सांवल सुंदर प्रभ रूप वटा ली। हरि जू असुर सँघार, भगत जनां पैज रखा ली। बिदर सुदामा द्रोपत देवे तार, निमाणयां हो जाए रखवाली। बन माला प्रभ भिबूखन कँवल नैन सुंदर मुकट सिर टिका ली। राम रूप जिस रंग ना रेख्या, साची जोत अंश आकार विच देह टिका ली। हँकार निवार भगतन तार, अर्जन रथ प्रभ आप चला ली। हउमे मार कलि आत्म सुधार, बिराट रूप प्रभ सृष्ट खपा ली। ज्ञान अंध्यार विच्चों दित्ता मार, कृष्न मुरार ज्ञान गोझ रसना गीता गा ली। द्वापर किया पार दूत दुष्ट सर्ब सँघार, भगत जनां हरि पैज रखा ली। कलिजुग भया अन्धेर विकार, धर्म सति गए दोवें हार। पूरब करी प्रभ विचार। जोत सरूप रव रिहा विच संसार। नज़र ना आवे प्रभ देह रक्खे साची तार। जीव भुल्ल जावे प्रभ बैठा जोत विच देह धार। कर विकार कलिजुग रुल जावे, सोहँ शब्द ना किया वपार। कर दरस नेत्र तीजा खुल्ह जावे, प्रभ खोल्हे दस्म दुआर। अमृत रस झिरना झिर जावे, पवे बूंद विच नाभ जल दी धार। आत्म रस तन अंदर उपजे, खुल्हे समाध सुन नज़री आवे आप करतार। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, कलिजुग खपावणहार। कलिजुग होया अंध्यार अन्ध। धर्म सच छुपे जिउँ मस्सया चन्द। जीव विकारी आत्म कोठी कर बैठा बन्द। मायाधारी रसना चीन ना पाए प्रभ का सचा अनन्द। महाराज शेर सिँघ कलि पैज सवारी, रक्खे लाज जिउँ द्वापर मनोहर मुकंद। कलिजुग आया कलिजुग अवतारी। निहकलंक सर्ब सृष्ट प्रभ जोत पधारी। बेमुखां मति बुद्धि गई कलिजुग मारी। निरँजण जोत खोल्हे सरोत, जीव क्यों मनो विसारी। मिले सो जेहा बीज बोत, सोहँ नाउँ सच अमृत विचारी। महाराज शेर सिँघ करे नीचो ऊँच, दे दरस

प्रभ पैज सवारी। भगत वछल प्रभ आप अटल्ल। कलिजुग प्रगटे सतिजुग देवे दरस जिउँ राजा बल। आया जोत प्रगटायके, ना रंग रूप जिउँ घड़ी पल। निहकलंक नाउँ रखायके, प्रभ आया कलिजुग चल। सच सोहँ शब्द चलायके, दुष्ट दूत सभ देवे दल। मदि मासी सर्ब खपायके, भगतन घर आवे आप प्रभ चल। कलिजुग कहर वरतायके, इक्क कर जाए जल थल। विच्चों ममता माण चुकायके, भगतन जोत आत्म जाए बल। सोहँ साचा शब्द चलायके, पूज मिटावे सारी कलि। इक्क आपणा नाम रखायके, साचा नाम सतिजुग बैठा मल्ल। महाराज शेर सिँघ जन भगत प्रगटायके, देवे दरस प्रभ अख़ल्ल। प्रभ वेखो इक्क जोत सरूर। नैणीं पेखो ना दीसे दूर। आत्म जोत विच प्रभ का नूर। भगत जनां हरि आसा पूर। कर दरस जीव उतरे मन सगल वसूर। कलिजुग साध संगत हो चरन धूर। बेमुख पकड़ पछाड़ के प्रभ कीते चूरो चूर। रण घावे वड्डे सूर। प्रभ जोत विच मात टिकायके, बेमुखां दीसे दूर। निहकलंक आया नाउँ रखायके, साध संगत प्रभ बैठा हज़ूर। सिँघआसण प्रभ बैठा डेरा लायके, घाल भगतन होई मन्ज़ूर। गुरसिक्खां हिरदक जोत जगायके, आत्म ज्ञान करे भरपूर। अन्ध अंध्यार विच देह मिटायके, जोत सरूपी सच देवे नूर। शब्द राग धुन अनहद वजायके, जगावे जोत जिउँ कोहतूर। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप कलिजुग दरस दिखायके, भगतन कर जावे संसा दूर। आत्म संसा रहण ना देवे। प्रगटे जोत अलख अभेवे। मिले बनवाल जो जन चरन गुर सेवे। साचा धन माल सोहँ शब्द गुर देवे। आत्म वसे प्रभ आप गोपाल, नाम निधान कलिजुग साचे मेवे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग भगत भगवान सोहँ शब्द जो रसना लेवे। सोहँ शब्द होए कलिजुग दाता। भगत भगवन्त दोए करावे नाता। कर किरपा आप प्रभ, भगत जनां कलिजुग पछाता। घाल पाई गुरसिक्खन थांए सभ, कुक्ख मात कढ्ढ सुफल कराता। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, सचा सतिगुर जिन पछाता। सो जन पछाणे प्रभ जिस मेहरवान। कोई पुरख पछाणे, जिन सोहँ शब्द दे चल्लया दान। बेमुख भुज्जण जिउँ भठयाले दाणे, क्यों कलि भुल्लया अञ्याणे, ईशर जोत धरी जग आण। मानस जन्म लग जाए टिकाणे, सोहँ शब्द सुणी धुन कान। कर दरस आत्म सुख माणे, प्रभ वाली होए दो जहान। महाराज शेर सिँघ तेरी सरनाई, अन्तकाल जन भगत तकाण। भगतन होए प्रभ आप सहाई। जामा धार निहकलंक देवे वड्याई। सोहँ शब्द वजावे डंक, सोई सृष्ट उठ खलोई। कलिजुग सोहण दुआरे बंक, जिथ्थे प्रभ साचे जोत प्रगटाई। इक्क कर जावे राउ रंक, कलि रहण ना देवे किसे वड्याई। देवे दरस बार अनक, जिस प्रीत गुरचरन लगाई। प्रगटी जोत विच पुरी घनक, प्रभ जोत विच मात दे आई। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटा के, खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब देवे उलटाई। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ का वास। सर्ब थांएँ ईशर जोत निवास। जन सिमरत प्रभ आत्म रास। भुल्ल ना

३२२
०१

जाए कर स्वासन स्वास। कलि रुल ना जाए एह तन झूठा मास। माया वेख डुल्ल ना जाए, साचा लाल कर बैठा देह निवास। महाराज शेर सिँघ गुरमुख कलि उज्जल जिउँ चन्दन प्रभास। गुरसिख प्रीती गुरसिख नूरी चन्द। निजानंद दरसावे प्रभ परमानंद। परमगत पावे मिल जावे बह्मन्द। विछड़ कदे ना जावे, जिस मिल्या प्रभ बख्शंद। बेमुखां नज़र ना आवे, अज्ञान अन्धेर रक्खे विच कंध। भगत जनां प्रभ विच समावे, करे प्रकाश मुन जिउँ चौधवीं चन्द। हरिजू भगतन दर आवे, तोड़ जाए कलि बंधन बन्द। सोहँ शब्द सच राग सुणावे, जीव निकल जाए विच्चों माया फंद। स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखावे, देवे मार विकार पंज देह दा गन्द। साचा शब्द सच घर आवे, साध संगत मन कलिजुग मन्द। महाराज शेर सिँघ भगत जन तृप्तावे, कर दरस सर्ब होए अनन्द। भया अनन्द वज्जी वधाई। साध संगत मिल साची मति पाई। आत्मक दीप बुझी फेर जगाई। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, गुरचरन प्रीत जिस लगाई। बालक मात होए जिउँ कुक्ख, आत्म जोत देवे रुशनाई। कलिजुग विरले मनुक्ख, सोहँ शब्द जिन रसना गाई। बेमुख जाए जिउँ सिम्बल रुक्ख, दरगाह फल मिले ना राई। प्रभ दरस जग उत्तम सुख, मिल साध संगत रसना हरि जस गाई । महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, सतिजुग साचा जाए लगाई। सतिजुग साचा सच नाउँ तरे। सर्ब जीव वसे प्रभ आप हरे। सोहँ शब्द जप रसना कलिजुग जीव अन्त होए खरे। कर किरपा आप प्रभ, गुरसिक्खां साची जोत सतिजुग देह धरे। महाराज शेर सिँघ गुरमुख ऊजल, जो जन आए सरन तेरी परे। सरन परे समरथ स्वामी। निहकलंक प्रगटे प्रभ निहकामी। कोई जीव ना जाणे, भगवान कृष्न राम नामी। जन भगत पछाणे, महाराज शेर सिँघ जगत स्वामी । कलिजुग प्रगटे प्रभ पतिवन्त। जोत टिकाए विच भगत भगवन्त। धर जोत विच रहे इकन्त। जित दीख्या जग उत्तम सन्त। कर परीख्या जप सोहँ मंत। नज़री आवे विच बैठा बेअन्त। सर्ब सृष्ट का आप कन्त। भुल्ल ना जीव जिस बणाई बणत । जगत चलणहार है, कोई रहे ना अन्त । कलिजुग गुण विचार, जोत प्रगटाई प्रभ गुणवन्त। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, देवे तार जो जन चरनीं लगन्त। कलिजुग प्रगटे प्रभ साचा साखी। सोहँ शब्द सुण गुरसिक्खां आत्म सच भाखी। दरस दिखाए आप प्रभ, एथे ओथे जिस पति राखी। साध संगत मन वज्जी वधाई, दरस करया वेले अमृत प्रभ दिन विसाखी। विसाख वस्सया विच सिख देह घर। खोल्ह दिखावे ज्ञान जोत प्रभ साचा दर। आप दरसावे साचा रूप प्रभ नर। सोहँ शब्द जपावे रसना हरि हरि। साध संगत कलि जगत उपजावे, बेमुख गए डाहढा दुःख भर। सोहँ अमृत प्रभ मुख लगावे, गुरसिख पूरा जगत ना जाए मर। प्रगट हो प्रभ दरस दिखावे, चरन लाग जीव जाए तर। जोत सरूप निहकलंक नाउँ रखावे, कलिजुग आया प्रभ भेख कर। करे निवास विच साध संगत,

३२३
०१

महाराज शेर सिँघ अवतार विष्नूं नर। अमृत वेला कर अमर विचार। जोत जगावे प्रभ गिरधार। विसाख सुहंदा अमृत बरसे धार। गरुड़ जाए ईश्र दरबार। जोत सरूपी भगवान उप्पर होए असवार। मान सरोवर अमृत प्रभ चरन कँवलार। भर चुंज लै आया मातलोकी विच संसार। देवत पुरी जां लँघया, इन्द्र युद्ध करे अपार। अमृत धार अमृत वरख्या विच संसार। बूंद डिग्गी अपर अपार। इक्क गंगा गोदावरी वगे जल लहिंदी धार। अमृत प्रभ वरताया, विच झूठे संसार। दिन विसाख सुहाया, जित अमृत वरखे किरपा धार। गोबिन्द गुर कलिजुग आया, सच अमृत जिस आप बणाया। गुरसिक्खां गुरमुखां मुख चुआया। सच सुच्च सच हुक्म सुणाया। अमृत रूप प्रभ अमर हो विच समाया। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी थित्त वार दिन लिखाया। कलिजुग ऐसी पाई माया। रीत कुरीत विच जगत पसाया। मदि मास आहार बणाया। पी अमृत गुर गोबिन्द, नाउँ कलंक लगाया। ईश्र कर्म विचार के, बेमुखां आण सर्ब माण गंवाया। साचा जामा धार के, वांग निंबू सर्ब निचोड़ वखाया। आपणी जोत सर्ब विचार के, इक्क सोहँ नाउँ रक्ख वखाया। वीह सौ अट्ठ दिन विसाख विचार के, सर्ब सुहावे ताल प्रभ खाली कराया। आप अपरम्पर आप निहकेवा। प्रगट जोत सभ देवी देवा। होए आप अलक्ख अभेवा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर सच तेरी सेवा। सुहाए थान विच कलि अंदर, जोत प्रगटाए जिथ्थे प्रभ आ के। सुहाए थान सर्ब घर मन्दर, जिथ्थे बैठा प्रभ भेस वटा के। सुहाए थान जग अंदर, कलिजुग जावे प्रभ उलटा के। सुहाए थान जगत अंदर, सतिजुग साचा सच जाए लगा के। सुहाए थान जगत अंदर, सिँघ आसण प्रभ बैठा आ के। सुहाए थान कलिजुग अंदर, शब्द गुण निधान प्रभ जाए लिखा के। सुहाए थान जगत अंदर, सतिजुग साचा सच जाए तख्त रचा के। सुहाए थान जगत अंदर, सतिगुर मनी सिँघ सतिगुर बणा के। सुहाए थान जगत अंदर, भगवान भगत दक्खण दिशा लिख्त लिखा के। सुहाए थान जगत अंदर, दरस करे जो जन आण, होवे पार दरगाह जा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया निहकलंक नाउँ रखा के। भगतन देवे प्रभ वड्याई। आदि जुगादी सदा सहाई। सरन पड़े प्रभ लाज रखाई। आवागवण सर्ब चिन्त मिटाई। तीन भवन सर्ब सोझी पाई। गुरसिख संग सिख मिल तर जाई। जिउँ रामानंद तारे कबीर गोसाँई। पसू प्रेतों देव करे, पूरे सिख विच एह वड्याई। प्रभ साचे की जन सेव करे, अन्तकाल जमकाल ना खाई। मिले प्रभ अलख अभेव, दे दरस अन्तकाल गुरसिख कराई। कोई ना कलिजुग प्रभ तुध जेव, धाम बैकुण्ठ गुरसिख पुचाई। साचा सिख साची जोत, अन्तकाल विच जोत दे मिल जाई। जो किछ करे सोई कलि होत, महाराज शेर सिँघ कोई जीव ना जाणे राई। जीव जन्त की जाणे विचारा। माया रूप प्रभ प्रगट्या संसारा। कलिजुग हउमे ममता होया सहारा । सतिगुर साचा तन मनो

विसारा। मदि मास चल गया रसन विकारा। मूर्ख मुग्ध क्यों भुल्ला प्रभ गिरधारा। कर दरस माण रंग सद जोत मुरारा। सोहँ शब्द प्रभ खोल्ह दिया कलिजुग भण्डारा। बाणी बोहथ प्रभ बण गया आप वरतारा। किरपा कर अमृत नाम मुख चँवारा । महाराज शेर सिँघ सच खज़ीने भरे रहण तेरे भण्डारा। भण्डारी वड प्रभ भण्डारीआ। सँघारी वड जगत सँघारी आ। ख्वारी करे आप जिस कल धारीआ। चरनीं पड़े मिल साध संगत प्रभ तारिया । जोत सरूप त्रैलोकी नंदन, जो जन आए चरन निमस्कारिया। कलिजुग काम ना पाए फंदन, सोहँ शब्द फांद जग मारया। सोहँ शब्द मन चाढ़े रंगण, ज्ञान जोत करे उज्जयारया। गुरमुख कलिजुग आप पहाडां लँघण, जन्म मरन प्रभ आप संवारया। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां मन तेरी लगन, भुल्ल ना जाणा आए चरनारया। चरन आए मिले चरनोदक। गुणवन्त जीव होए ज्ञान बोधक। पवित आत्मा कर जाए देह सोधक। महाराज शेर सिँघ देवे घर नाउँ नोधक। नौं निध निज घर पाए। मिल साध संगत मन वजे वधाए। सर्ब जीव जन्त प्रभ सोझी पाए। जो जन आए चरन लगाए। गुण निधान ज्ञान दरस दोए झोली पाए। तोड़ अभिमान साचा प्रभ राह दिखाए। सखी सुल्तान सर्ब प्रभ बन्नृ रखाए। एको आप एको भगवान, सोहँ शब्द जगत चलाए। जिस ने जपया साचा जाप, तिस विच रिहा समाए। विच्चों मारे हउमे तिन्न ताप, विच ललाट जगाए। अन्तकाल कोई पुच्छे ना वात, दरगाह मिले सजाए। गुरसिक्खां पाए साची दात, सोहँ शब्द होए सहाए। महाराज शेर सिँघ आत्म देवे शांत, जो जन आए चरन सीस झुकाए। सरधा पूरी पूरन आसा। बुझी अग्न आत्म तृप्तासा। विच देह प्रभ कीउ वासा। दुःख दलिद्र कियो नासा। तिस साहिब कउ बलि बलि जासा। जिस ने दिया सोहँ भरवासा। जप जप जीव सोहँ स्वास स्वासा। आत्म बुध बिबेक गुरचरन आई रासा। उत्तम देह विषेष, साचा शब्द संगत मन भासा। महाराज शेर सिँघ राखो इक्क टेक, आत्म जोत करे प्रकाशा। कलिजुग होया अन्त ख्वारा। सच धर्म गया मार उडारा। आत्म चल्लया जीव विकारा। हँकारी निन्दक दुष्ट झक्ख मारा। नैणीं पेख सचा दरबारा। जन्म गंवाया मूर्ख मुग्ध गंवारा। ना दीसे दीसणहारा। जिस पसरया सर्ब सृष्ट पसारा। आपणा आप उपाया, इक्क रंग जोत अधारा। नज़र ना आवे प्रभ सर्ब जीव में वसणेहारा। अगम्म जोत निर्मल निराली, तीन लोक करे आकारा। कलिजुग प्रगट्या दो जहान दा वाली, चरन लाग कर निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ शब्द धन माली, सोहँ शब्द दे जावे सतिजुग भण्डारा। जल धारे पूरन पुरख समरथ, गुरसिक्खां मुख चोविंदा। प्रभ साचा कथना कथ, भगत जनां होए वरतन्दा। अमृत मेघ वरसा, आत्म शांत करिंदा। सच सुच्च विच देह वरता, निजानंद सभ दरस दहिंदा। खोल्ह कपाट प्रभ दे दरसा, अनहद शब्द मन वजिंदा। साचा गुरसिख ना झूठा पाट, साची जोत प्रभ विच देह धरिंदा। बेमुख होए कलिजुग घाटो

घाट, जो प्रभ आए सरन करेवे निंदा। प्रभ जोत जगाए लाटो लाट, भगत जनां हरि धुर बख्शिंदा। सोहँ शब्द जीव सदा मन राट, कलिजुग अंदर पार करिंदा। कलिजुग होए ख्वारी, जो जन प्रभ तों मुख भविंदा। कलिजुग लै अवतार, प्रगट होया प्रभ मृगिन्दा। निहकलंक प्रभ जामा धार, महाराज शेर सिँघ अमृत रूपी मेंह बरसिंदा। भोग लगा घर भोगया। संजोग मेल मिला संजोगया। कलि रोग हउमे वड रोगीआ। एह कोए ना जाणे सार, प्रगटी जोत कलिजुग प्रभ चोजीआ। निगम कर विचार गुरमुखां देवे आप प्रभ सोझया। शब्द धुन होए गुँजार, भेत खुल्हावे आप गुज्झे प्रभ गोझया। गुरसिक्खां देवे चरन प्यार, लुझ जाए जे लाए चरन प्रभ लूझया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, गुरमुख विरला कोई गुर दर झूज्झया। झूझे सो जो काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच्चों हउमे मारे। मति मन बुध रक्खे इक्क जोत अधारे। खातर फुरना बुद्धि कोट उसारे। नस्स ना जाए जो जीव करे ख्वारे। भगत जनां प्रभ भरम निवारे। घर आए हरि काज संवारे। दुष्ट दूत संग शब्द सँघारे। कलिजुग धर जोत सच आप निरँकारे। मुख उज्जल गुरमुख सोहण सच तेरे दरबारे। भोग लगाया आण सदा भरे रहण भण्डारे। सोहँ शब्द चलाया, चार कुन्ट होए जैकारे। जोत सरूपी जगत जलाया, हाहाकार कर जीव पुकारे। भगत जनां प्रभ आप तराया, साचा नाउँ देवे अधारे। महाराज शेर सिँघ रख पति राया, भगत जन हरि पार उतार। घर मन्दर सभ सुहाया, घर आए सर्ब घट वासी। साचा तख्त सच सुहाया, उप्पर बैठ तख्त निवासी। पताल आकाश प्रभ तजाया, साची जोत विच मात तरासी। सतिजुग साचा तख्त रचाया, प्रगटे जोत प्रभ अबिनाशी। साध संगत प्रभ दरस दिखाया, देवे दान जिउँ दरगाह भासी। गुरसिख हीरे माणक मोती कलिजुग लभ्भ ल्याया, चरन सेव लाए दासन दासी। नाउँ निहकलंक रखाया, बन्दी तोड़ भगतन अख्वासी। महाराज शेर सिँघ थान सुहाया, कर दरस साध संगत तर जासी। कर दरस साध संगत तरे। प्रगट्या साचा कन्त, विरला गुरमुख कोई प्रभ वरे। होए दास भगतन केरां, रसना जपे जो हरे हरे। अन्तकाल प्रभ करे निबेड़ा, कलिजुग ऐसी किरपा करे। कलिजुग अंदर पाया फेरा, महाराज शेर सिँघ साध संगत तेरे दर ते खरे। ऊँच अगम्म अथाह। प्रगट बैठा प्रभ बेपरवाह। सच्चा आप कलिजुग प्रगटे सचा पातशाह। बिन भगतन पावे कोई ना। सिक्खां हिरदक प्रभ वसे इक्क थां। बेमुखां नज़र ना आवे, कलिजुग साचा राह। सचखण्ड निवासी साध संगत हिरदे रिहा समा। महाराज शेर सिँघ कलि सो करे जो मन भासी, तेरा अन्त ना पावे राह। कलिजुग देवे वड्याई वड्डे साध सन्त। पैज रखाई बणाए बणत। सतिजुग झूठी क्रिया सभ हटाई, इक्क आपणी कराए मन्नत। खाणी बाणी कोई रहण ना पाए, सोहँ शब्द चलाए मंत। महाराज शेर सिँघ बाण शब्द मारे, भस्म करावे सर्ब जीव जन्त। गुरसिक्खां मन चाउ घनेरा, प्रभ सिँघासण बैठे ला।

हर घर आवे प्रभ मेरा, प्रभ मिलण दी आत्म चाअ। कर किरपा प्रभ जोत प्रगटावे, प्रभ अबिनाशी घर लईए पा। तीन लोक जिस होई दासी, कलिजुग आवे जोत सरूपी भेस वटा। नज़र ना आवे दर कोई मदि मासी, माया रूप सभ देवे पड़दा पा। चरन लाग सर्ब फल पासी, सोहँ नाउँ जिस ल्या धया। साचा शब्द जो जन रिदे समासी, सच जोत देवे विच देह टिका। जीव जन्त सर्ब विनासी, आदि अन्त इक्क रहे सच्चा पातशाह। कलिजुग अँध्यार बेमुखां जन्म गंवासी, प्रभ साचे दा ना दिसे राह। दरगाह कोए ना थाउं पासी, निहकलंक लई ना जिन सरन तका। महाराज शेर सिँघ तख्त निवासी, प्रगट हो के धाम गया सुहा। धाम सच धर्म जाए भर। काम क्रोध कर दरस जीव दोए जाए मर। नज़री आवे पारब्रह्म परमेश्वर, होए निमाणा जीव चरनीं पड़। जोत सरूप निरँजण जोत, लोकलाज तों जीव ना डर। कलिजुग प्रगटे प्रभ वड भूप, कोए ना जावे दर ते हरि। साचा प्रभ ना काचा सूत, सोहँ नाउँ विच मनका धर। ईश्र जोत ना रंग ना रूप, भगत जनां जोत सरूपी दिस आवे नर। महाराज शेर सिँघ रक्ख लाज विच अन्ध कूप, साध संगत गई सरनी पर। सच तख्त रक्खे प्रभ चरन। चरन डिग्गे आए चार वरन। महिंमा प्रभ की कोई सके ना वरन। कर दरस सर्ब दु:ख हरन। गुरमुख होवे फेर जग ना मरन। चरन लाग पतित पापी तरन। कलिजुग प्रगट्या प्रभ धरनी धरन। लाज रखाए जो जन तकाए शरन। बेमुख कलिजुग दु:ख डाहढा भरन। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द तेरा साचा वरन। सच तख्त रचाया, चले चार जुग। सोहँ शब्द वरताया, चलाई जगत प्रभ धुज। बेमुखां नज़र ना आया, आत्म जोत गई कलि बुझ। गुरसिक्खां प्रभ दरस दिखाया, आत्म भेत खुलाया गुझ। सोहँ शब्द मन वसाया, आत्म तृखा गई बुझ। घर बैठ प्रभ परमेश्वर पाया, गुरचरन प्रीती जाउ लुझ। बाहों पकड़ उठाया, गुरसिक्खां शब्द लगाई हुज। गुरमुखां प्रभ जोत जगाया, आत्म दीप ना जाए बुझ। महाराज शेर सिँघ परमगति पाईए, दूजी वस्त जीव ना लोड़े कुझ। कलिजुग प्रगटे नर अवतर उग्घा। सतिजुग साचा धाम रचावे विच पिण्ड बुग्घा। गुरसिख कर प्रीत गुरचरन संग लुज्झा। महाराज शेर सिँघ कलि तेरी वड्याई, जिन भाग लगाया गुरसिख आण झुग्गा। गुरसिख झुग्गा हरि का मन्दर। वरते भाणा सतिजुग अंदर। बेमुखा घर नच्चण बन्दर। घर घर रहण वज्जे जंदर। खुल्हे भण्डारे रहण लंगर। जोत प्रगटाई कृष्न साँवले सुंदर। महाराज शेर सिँघ चरन लग जाए, आए राजा भुपिंदर। करे खेल प्रभ अचरज निराले। शब्द सरूप आत्म राज निकाले। शेर रूप खड़े जा आले दवाले। नैणी दीसे मर ना जाए किसे बरछे भाले। सोहँ आवाज़ धुन आए, वाह जीव जग आपणी ला लै। भय अंदर सर्ब पुकारे, होए सहाई कोई आण बचा लै। अन्तकाल ना कोई होए सहाई, आत्म चिखा जोत सरूपी बाले। प्रगट हो के महाराज शेर सिँघ, स्वच्छ सरूपी दरस दिखावे। दरस दिखावे

राजन राजा। लागे चरन बख्श ग़रीब निवाज़ा। सचा पातशाह जिन जीव साजन साजा। सरन पड़े दी राखो लाजा। दयो ब्रह्म ज्ञान जिउँ तारे सिख विच माझा। कर ध्यान वज्जे मन अनहद वाजा। कलिजुग प्रगटयो जोत सरूप, माया रूप सृष्ट जिस साजा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाशे अज्ञान बिनासे, चरनीं डिग्गण राजन राजा। राजन विच राजा राज प्रमुख। दे दरस कर लाहे भुक्ख। शब्द सुणावे नज़र ना आवे ना कोई दीसे कुन्ट ना रुक्ख। भरम भुलेखे पावे आत्म कुरलावे, करे बेनन्ती मिल प्रभ सुक्खां सुक्ख। निविआं प्रभ नज़री आवे, बाल अवस्था बाल जिउँ माता कुक्ख। महाराज शेर सिँघ थान सुहाया, कर दरस गुरमुखां लाही भुक्ख। भूपत भूपत आप वड भूपता। अगम्म अथाह अजूप प्रभ निरूपता। दरस दिखावे किरपा कर, प्रभ आपणी सच सरूपता। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे जोत सरूपता। थान सुहाया आण प्रभ, जोत सरूपी आप प्रभ आ के। भगत जनां माण दवाया प्रभ, कलिजुग साची जोत प्रगटा के। सोहँ शब्द जपाया प्रभ, कलिजुग भरम सर्ब मिटा के। जोती जोत जगाया प्रभ, ज्ञान जोत दीप आत्म दीप जगा के। विछड़यां मेल मिलाया प्रभ, निहकलंक नाउँ रखा के। भगत भगवन्त इक्क कराया प्रभ, सोहँ साचा शब्द पढ़ा के। विच्चों मोह चुकाया प्रभ, शब्द धुन वजा के। कलिजुग दरस दिखाया प्रभ, भगत जनां घर आप आ के। जुग चार माण दवाया प्रभ, भगतन महिंमा आप लिखा के। चार वरन चरन लगाया सभ, सोहँ शब्द एक प्रगटा के। राउ रंक इक्क कराया प्रभ, जोत सरूपी भेख वटा के। कलिजुग जगत खपाया प्रभ, अग्न जोत जगत लगा के। बेमुखां घाया प्रभ, सोहँ शब्द बाण चला के। गुरमुखां कलि वड्आया प्रभ, अमृत बूंद मुख चवा के। जन्म सुफल कराया प्रभ, कलिजुग साचा दरस दरसा के। अमृत फल दवाया प्रभ, जो जन चरनीं डिग्गे आ के। सचखण्ड निवास कराया प्रभ, गुरसिक्खां रक्खे सिर हत्थ टिका के। जोती जोत मिलाया प्रभ, अन्तकाल प्रभ दरस दिखा के। भगत जन तारे प्रभ, महाराज शेर सिँघ कलिजुग नाउँ रखा के। कलिजुग भया प्रभ बलवन्त। उच्च अगम्म महिंमा बेअन्त। जणावे किसे गुरमुख विरले सन्त। तरावे तिसे जिस प्रभ चरन लगंत। सृष्ट सबाई होई भस्मंत। गुरमुखां मिल्या कलिजुग प्रभ साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, जोत सरूप वसे विच जीव जन्त। गोबिन्द देवे गुर वड्याई। जोत सरूप जोत विच जोत मिलाई। सतिजुग साचा सतिगुर मनी सिँघ बणाई। महाराज शेर सिँघ चतुर्भुज, आप होए आण सहाई। गुरमुख साची प्रीत कर, प्रभ मिले अगम्मा। गुरमुख साची प्रीत कर, प्रभ मिटावे सर्ब भरमां। गुरमुख साची प्रीत कर, ज़ात पात प्रभ ना वेखे, वेखे जीव करमां। गुरमुख साची प्रीत कर, गुरसिख साची नीत कर, कलिजुग सौरे जम्मण मरना। गुरमुख मनूआं जीत कर, मिल साध संगत कलि तरना। महाराज शेर सिँघ काया सीत कर,सरण पड़े की राखो सरणा।

❋ पहली विसाख २००८ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ❋

गुरसिक्खां मन भाख्याा भाखी। मिले प्रभ अलकख्णा लख ना लाखी। बाहों पकड़ चुण कढ्ढे वक्ख, अमृत जाम दे सच्चा साकी । महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, गुरसिक्खां सुहाई दिवस विसाखी। विसाख विष अक्ख आप प्रभ मारे। जोत नूर नेत्र कर उज्जयारे। आत्म तृष्न प्रभ जीव दी मारे। एक बूंद अमृत बरख निज ठारे। महाराज शेर सिँघ जन भगत पार उतारे। गुरमुख जगाया आप पतिवन्ती। कलि मेल कराया भगत संग भगवन्ती। सच दरस दिखाया प्रगट सृष्टी कन्ती। भरम भुलेखा लाहया जोत जगा विच देह गुणवन्ती। कलिजुग अंदर पाई माया, बेमुख मूल ना चरन लगंती। साध संगत प्रभ राह बताया, सोहँ शब्द गुरदर बण जायो मंगती। महाराज शेर सिँघ वक्खर साचे नाम जपाया, विच्चों मारे हउमे हँगती। हउमे मार आपणी कलि विच देह धार। घर आए कारज दे संवार। कलिजुग खेल करे प्रभ अपर अपार। जीव इस हत्थ कर इस हत्थ भर साचा प्रभ ना करे हुदार। साचा नाम गुर दरस तेरी वत्थ, रसना जप पा प्रभ की सार। महाराज शेर सिँघ सच चलाया रथ, गुरसिख चढ़े कलि उतरे पार। साचा रथ साचा रथवाही। साचा नाम वक्खर विच देह पाई। साचा जाम अमृत दे पिलाई। साचा काम जीव गुरचरन सीस निवाई। प्रगटे कलि साचा राम, मूर्ख जीव भुल्ल ना जाई। जोत धरी कलि काले शाम, गुरसिक्खां अन्धेर दे मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीव में रिहा समाई। सर्ब में वसे वसणेहारा। जोत सरूपी ओंकारा । शब्द सोहँ चलाया जगत दो धारा। गुरमुख बेमुख दोअँ, बेमुख मार गुरमुख पार उतारा। सोहँ शब्द कलि चले दो धारा आरा। भगत जनां देवे प्रभ नाम प्यारा। आत्म रक्ख इक्क दरस आधारा। बेमुख दुष्ट दर झक्ख मारा। आत्म होई भृष्ट, मुख ना लाए कलि मानस जन्म हारा । महाराज शेर सिँघ गुरसिख निर्मल, जिन साचा नाम किया वपारा। साचा नाम गुरसिख वपारी। साचा धाम प्रगटे जोत निरँकारी। सोहँ नाम रंग नाम जपावे जीव ब्रह्मचारी। आत्म ध्यान करावे काम क्रोध विच्चों दे मारी। चाम ना आवे काम, जीव विच्चों जोत जावे मार उडारी। महाराज शेर सिँघ प्रगटे जिउँ त्रेता राम, साध संगत कट्ट जाए हउमे बिमारी। काटे रोग प्रभ काटणहारा। होए ना सोग देवे दरस आत्म दरसावणहारा। आत्म रस सदा जीव भोग, आत्म जोत जगे प्रभ अगम्म अपारा। खोल्ह वखावे प्रभ देह दे गोझ, वजावे धुन शब्द खोल्ह दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ दरस कर रोज, कर प्रसाद करो निमस्कारा। गुरप्रसादी प्रभ भया। पोह ना सके गुरसिख कलि मया। भुल्ले जीव कलि खावे धक्के, साचा प्रभ कर दया। कोए ना जाए मदीने मक्के, साचा नाम सोहँ प्रभ दिया। महाराज शेर सिँघ माण गंवावे कक्के, जोत सरूपी कर के हिया।

☀ २ विसाख २००८ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ☀

जप जप नाम जीव, मिले आत्म रस। जोत सरूपी आवे प्रभ वस। आपणा भेव खुल्ावे दस्स। बेमुख दर ते जावे नस्स। सोहँ शब्द बाण चलावे कलि, महाराज शेर सिँघ भगतन कीता वस। भगत जन सो, जो दरस सुहंदे। भगत जन सो, जो कलि तरंदे। भगत जन सो, जो कर दरस सरन पड़ंदे। भगत जन सो, जिस बख्शे जन आप बख्शिंदे। भगत जन सो, मिल साध संगत जन दुत्तर तरंदे। भगत जन सो, जिन पाया मुरार मनोहर मुकंदे। भगत जन सो, आत्म रस निझरों झिरंदे। भगत जन सो, कँवल नाभ अमृत बूंद मुख चुविंदे। भगत जन सो, जिन प्रभ दस्म दुआर खुल्िंदे। भगत जन सो, जो कलिजुग साध संगत मिल बहिंदे। भगत जन सो, जो निहकलंक दरस करिंदे। भगत जन सो, जिन महाराज शेर सिँघ प्रभ गोबिन्दे। नज़र ना आवे प्रभ, ना रेखा ना रूप। सुण के नाम नस्स जावण दुष्ट दूत। गुरसिख साचा जिथ्थे जोत धरे वेख सच कलबूत। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर जन भगत तेरे होए सपूत। भगतन देवे प्रभ आप वड्याई। गुरचरन जिस आस तकाई। जुग चौथे जोत प्रगटाई। निहकलंक नाउँ रखाई। भरम भुलेखे सृष्ट भुलाई। बेमुखां प्रभ सार ना पाई। ईश्र जोत मात में आई। द्वापर कृष्न मुरार, त्रेता राम रघुराई। सतिजुग सति मेहरवान, कलिजुग निहकलंक जोत प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ गुण निधान, वेद अथर्बण माण गुआई। जावे अथर्बण मिटे अन्धेरा। कलिजुग सञ्झ सतिजुग सति सवेरा। भगत जनां प्रभ दीसे नेरा। बेमुखां कर माया केरा। साध संगत प्रभ किया वसेरा। महाराज शेर सिँघ सो जन उधरे, जिन नाम ल्या है तेरा। सोहँ तीर रसना चिल्ला। कोई ना दिसे कक्का बिल्ला। माण मुकावे प्रभ बिस्मिल्ला। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द बणाया गुरसिक्खां किला। ईश्र जोत कलिजुग प्रगासे। अज्ञान अन्धेर जन भगत विनासे। झूठी देह विच सच जोत प्रभ वासे। जोत सरूपी प्रभ विरले गुरमुख पासे। पावे जन सो जिस प्रभ दरस प्यासे। मिल साध संगत होए रहिरासे। बेमुख जीव जीवे कूड़े भरवासे। आत्म ना दिसे वसे प्रभ स्वास स्वासे। गर्भवास नित होए वासे। भगत जनां करे बन्द खलासे। सोहँ शब्द जपे स्वास स्वासे। महाराज शेर सिँघ चरन लाग जीव रहिरासे। गुर चरन लाग मिले वड दाता। अचुत पारब्रह्म परमेश्वर सर्ब कला का ज्ञाता। घट घट वसे आप जगदीश्वर, पूरन पुरख बिधाता। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर गुरमुख विरले किसे पछाता। सो जन जाणे जिस बूझ बुझाए। आत्म दीप प्रभ देह जगाए। बिन बाती बिन तेल, साची जोत विच देह टिकाए। बैठ विच अडोल, जीव देह डगमगाए। साचा प्रभ जीव वसे कोल, बेमुखां कलि नज़र ना आए। आत्म देवे प्रभ पड़दे खोल्, सोहँ शब्द जो रसना गाए। महाराज शेर सिँघ पूरे तोले तोल, भगत जनां

हरि पार कराए। भगत भगवन्त दोए एक रंग। साध संगत दरस प्रभ का मंग। बिन दरस आत्म चढ़े ना रंग। काया झूठी जिउँ काची वंग। बेमुख जन्म मानस होया भंग। गुरमुख सोहँ नाम जप पार गए लँघ। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जोत सरूपी कलि किया जंग। जोत सरूपी जोत आहारा। जोत सरूपी वसे विच संसारा। कलिजुग होए अन्ध अन्धयारा। ना दीसे प्रभ असुर सँघारणहारा। भगत जनां हरि पैज संवारणहारा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कलि अवतारा। कलिजुग तारे प्रभ अवतार। झूठे धन्दे डुब्बा संसार। नज़र ना आया सच सिरजणहार। करे खेल प्रभ अलख अपार। दुष्ट दुराचार मानस जन्म गए हार। भगत जन उधरे पार। सोहँ शब्द किया आधार। देवे दरस सांवल सुंदर प्रभ मुरार। अमृत बरखे निजानंद, प्रभ किरपा धार। साचा प्रभ विच देह बरखे, बजर कपाट प्रभ दे खुल्हार। अनहद शब्द धुन उपजे, खोल्ह देवे प्रभ दस्म दुआर। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आ के भगतन देवे तार। प्रभ की माया कलिजुग पाई। भरम भुलेखे सर्ब सृष्ट भुलाई। निरँजण जोत नाउँ निहकलंक रखाई। जुग चौथा कलि अन्त हो जाई। जगत भेख सर्ब मिट जाई। अठ्ठ सठ तीर्थ कोई रहण ना पाई। ईसा मूसा मुहम्मद कुरान अंजील खपाई। ब्रह्मा गंवाए माण, वेद चार प्रभ अन्त कराई। खाणी बाणी गगन पाताली जीव जन्त प्रभ आपणी जोत टिकाई। सतिजुग साचा प्रभ दे अलाई। सोहँ शब्द कुन्ट चार धुन वजाई। दीसे प्रभ एक कोई दूसर नाही। जोत प्रगटावे महाराज शेर सिँघ कोई भुल्ले नाही। प्रभ अनभुल जगत भुलावणहारा। प्रभ कोहतूल जगत डुलावणहारा। प्रभ अतोल कलिजुग तुलावणहारा। गुरमुख रसना सोहँ बोल, पावे दरस प्रभ अगम्म अपारा। ज्ञान गोझ प्रभ देवे पड़दे खोल्ह, दीसे जोत विच निज धारा। महाराज शेर सिँघ चार कुन्ट वजावे ढोल, सोहँ शब्द चाले जगत दे आधारा। सोहँ शब्द सतिजुग वरताया। ओअँ ईश्र आप, सोहँ साचा शब्द चलाया। धरनी धर ईश्र नर नरायण, निहकलंक कलि नाउँ रखाया। सँावल सुंदर कुण्डल सिर मुकट बैन, मुकंद मनोहर प्रभ नज़री आया। मूर्त सहँस सहँस प्रभ नैण, जांह देखां तांह नदरी आया। महाराज शेर सिँघ जन भगत कलि सहण, भाणा जगत जो वरताया। कलिजुग वरते प्रभ का भाणा। कोई ना दीसे कलि राजा राणा। राउ रंक प्रभ इक्क कर जाणा। भगत जनां प्रभ सिर छत्र झुलाणा। बेमुखां प्रभ नर्क निवास दवाणा। सोहँ शब्द हरिजन सद रसना गाणा। साध संगत विटहु कुरबाना। महाराज शेर सिँघ चरन लाग जिन पछाणा। चरन आए जो जन। दरस कर ठारे तन मन। सोहँ शब्द देवे प्रभ साचा धन। भुल्ला जीव सुण धर कन्न। ईश्र जोत सच मन मन्न। अहँकारीआं कलि जाए प्रभ भन्न। आत्म जोत कढावे जन। महाराज शेर सिँघ साचा सोहँ शब्द, जीव ला लै सन्न। सोहँ शब्द प्रभ जगत लुटाया। मूर्ख मुग्ध अञ्याणा, प्रभ नज़र ना आया। मदि मास आहारी, आत्म अन्धेर

कराया। साध संगत प्रभ चरन प्यारी, प्रगट हो प्रभ दरस दिखाया। घर आए प्रभ पैज संवारी, कोए ना जाणे प्रभ की माया। सोहँ शब्द खण्डा दो धारी, बिन दैंता जगत घाया। महाराज शेर सिँघ जुग चौथे वारी, जोत सरूपी खेल रचाया। जोत सरूपी प्रभ वसे चित। चरन लाग जीव विछड़ जाए ना कित। झूठी दुनियां अन्त कोए ना मित। जाए जन्म हार, थुक्कां पैसन तित। महाराज शेर सिँघ चरन लाग, मानस जन्म जावे जीव जित्त। मानस जन्म उत्तम विच लक्ख चुरासी। कर दरस प्रभ होए बन्द खलासी। जोत प्रगटाई घर प्रभ अबिनाशी। पैज रखाई प्रभ सर्ब घट वासी। महाराज शेर सिँघ तेरी सरन आई सृष्ट सभ तर जासी। सो जन तरे जो सरनी आया। धार खेल प्रभ चतुर्भुज कहाया। कलिजुग देवे हार, सतिजुग साचा साचे सतिगुर लाया। सर्ब कलि ख्वार, सोहँ साचा शब्द चलाया। भरे रहण भण्डार, आप अतुट तोट कदे ना आया। महाराज शेर सिँघ तेरी सार पावे सो जिन विच्चों अज्ञान मिटाया। अज्ञान अन्धेर विच देह मिटावे। साची जोत आत्म दीप जगावे। अमृत झिरना प्रभ निझरों झिरावे। बूंद अमृत कँवल नाभ मुख खुल्हावे। जोत निरँजण विच प्रभ नज़रीं आवे। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, साची जोत संग जोत मिलावे। प्रभ कलिजुग भेख वटा गया, प्रभ जोत सरूपी पहरया बाणा। प्रभ सृष्ट सबाई घा गया, बैठ विच बबाणा। सोहँ शब्द जगत चला गया, वरता आपणा भाणा। प्रभ सभन तख्तों लाह गया, कोई रहे ना राजा राणा। चार वरन इक्क करा गया, निहकलंक नाउँ रखाणा। जन भगतां दरस दिखा गया, हरि रंग जिन्हां ने माणा। विच्चों हउमे मोह चुका गया, विच साची जोत टिकाणा। देह अन्ध अँध्यार मिटा गया, जोत सरूपी विच समाणा। प्रभ आपणा भेव आप खुल्हा गया, अमृत बूंद मुख चुआणा। हिरदे रंग मजीठ चढ़ा गया, उतरे ना कोट धो पाणा। प्रभ भगतां विच समा गया, कर्म पूरब आप पछाणा। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द सच लिखा गया, सतिजुग साचा जो वरताणा। सतिजुग मिले भगतां सच वक्खर। सोहँ शब्द पढ़ावे इक्क अक्खर। मेट मिटावे आत्म अन्धेर झक्खड़। महाराज शेर सिँघ जो तुध भावे, सो दीसे कलिजुग अक्खर। चार जुग प्रभ भगतन दाता। आप पिता आप माता। भगतां बख्शे दातां। सोहँ गुरसिख ईश्र सच्चा जाता। भगत जनां प्रभ दरस वड्डा जग नाता। देवे दरस प्रगट हो प्रभ पुरख बिधाता। आपणे रंग रवे प्रभ रंग राता। घर पा प्रभ अबिनाशी जग जीवण दाता। कलिजुग विरले गुरमुख पछाता। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां सिर अन्त हत्थ टिकाता। अन्तकाल प्रभ होए सहायक। कलिजुग अग्न ना पोहे मायक। साचा पित साचा ख़स्म आप नायक। सृष्ट सबाई आप दायक। करे सो जो मन भायक। भगत जनां हरि दरस दिखायक। अन्तकाल जंम नेड़ ना आयक। जोत सरूप विच बबाण बिठायक। सचखण्ड प्रभ निवास दवायक। अन्तकाल प्रभ होए सहायक। महाराज

शेर सिँघ तेरी वड्याई, भगत जनां अन्त काल होए सहायक। भगत जनां सूझे प्रभ तेरा दर। ऊँच अगम्म अथाह, प्रभ तेरा घर। दिसे बेपरवाह अवतार साचा नर। गुरसिख जोत मिल जा, अन्त ना जाए मर। महाराज शेर सिँघ दस्से साचा राह, रसना सिमरो हरि हरि। रसना हरि हरि गुण गाउ। मोहण माधव निज मांहि पाउ। आदि अंदेसा दीसे सच राहो। कलिजुग सोहँ साची नाउँ, रसना जप जीव पार पराउ। भगत वछल प्रगटे प्रभ चरन लग जाउ। मानस जन्म कलि सुफल कराओ। मिल साध संगत रसना हरि गुण गाउ। जगन्नाथ गोपाल मुख भनी प्रभ सारंग पाउ। जोत प्रगटावे आप प्रभ धन धनी, आत्म तृप्त कर दरस मिटाउ। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिस चरन संग बणी, सतिजुग साचे भगत जणाउ। महाराज शेर सिँघ आया घर कलि गणी, अमरापद पाउ। गुर मिल अमर पद पाओ। साची जोत विच जोत मिलाउ। सचखण्ड साचा सच आसण लाउ। विच चुरासी फिर गेड़ ना पाउ। प्रभ अबिनाशी जीव भुल्ल ना जाउ। सृष्ट विनासी कलिजुग भुल्ल ना जाउ। महाराज शेर सिँघ सर्ब दासन दासी, करो दरस गुरसिख डुल्ल ना जाउ। आत्म दरस देवे प्रभ गुण निधान। कलिजुग प्रगटे विष्नूं भगवान। कलिजुग जीव भुल्ल गए अञ्याण। जन भगत प्रभ लए पछाण। भगत भगवन्त दोए मिल इक्क हो जाण। निहकलंक जामा धार विछड़यां मेल मिलाण। कलिजुग प्रगट नर अवतार, सोहँ आया शब्द चलाण। घनकपुरी प्रभ जामा धार, कलिजुग होए बैठा जुग चार प्रधान। भगत जनां प्रभ पाई सार। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी कलि अवतार। जोत सरूप जगत वरतारा। एक जोत करे जीव जन्त देह वड्यारा। कलिजुग प्रगट्या निहकलंक नर अवतारा। गुरमुख विरले गुर शब्द विचारा। करे दरस प्रभ गुरसिख आत्म दुआरा। उतरे मन भुक्ख, देवे जोत प्रभ भगत भण्डारा। सृष्ट सबाई भोगे दुःख, नज़र ना आए प्रभ गिरधारा। सुफल कराई ना मात कुक्ख, मानस जन्म मूर्ख मुग्ध गंवारा। कलिजुग जीव भुल्ले मदि मासी, किया रसन आहारा। आत्म माणक मोती कलि गया रुल, नज़र ना आया प्रभ सच भतारा। झूठे धन्दे लाग, कलिजुग डुब्बा सर्ब संसारा। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द देवे जन भगत भण्डारा। आकाश जोत प्रभ जोत तराए। साचा मण्डल डगमगाए। अछल अडोल बैठा इक्क हरि राए। जोत सरूपी जोत पवण पाणी अग्न में रिहा समाए। साचा कर प्रकाश जोत, तीन लोक में रिहा समाए। नैण मुँधार आप रंग होत, पताल बाशक बैठा आसण लाए। कलिजुग जोत कर प्रकाश, निहकलंक मात नाम रखाए। निहकलंक नर अवतार, खण्ड ब्रह्मण्ड दए उलटाए। आप अभेद कोई भेद ना जाणे, अन्तकाल ब्रह्मा विच जोत मिलाए। ब्रह्मा मिटे वेद वेदांता, चौथे जुग प्रभ खेल रचाए। सतिजुग प्रगटे प्रभ भगत ज्ञाता, सिँघ पाल हत्थ सृष्ट फड़ाए। देवे ज्ञान आप गुण दाता, भगत जनां सिर हत्थ टिकाए। धू अन्त मिटे धरवास, कलिजुग अंदर गया

३३३
०१

वक्त चुकाए। साचा सिख करे खण्ड सच वास, सवरन सच दरबान अख्वाए। जोत सरूपी प्रभ का वास, जांह देखो तांह प्रभ नज़री आए। गुरसिख घाल पाई थाए, चेत सिँघ खण्ड सच बहाए। अवगुण बख्शे प्रभ गुणतास सिख पूत मानस जन्म फेर दवाए। गुरचरन जिस रखाई आस, अन्त काल जम नेड़ ना आए। सतिगुर पूरा सद है पास, कलिजुग जीव प्रभ भुल्ल ना जाए। महाराज शेर सिँघ सद दासन दास, कर दरस जीव आत्म डुल ना जाए। आत्म निर्मल जीव जोत निराली। सचे सतिगुर विच देह समा ली। क्यों ना दीसे विच बनवाली। सृष्ट सारी कूड़ी थीसे, अन्तकाल ना कोई वाली। बिन प्रभ अन्त कोई ना दीसे, अन्तकाल गुर करे रखवाली। साध संगत गुरचरन झुकाए सीसे, दीपक जोत जिन देह विच बाली। भगत जनां कलि करे ना कोई रीसे, ईश्र जोत जिन्हां प्रगटा ली। महाराज शेर सिँघ साचा प्रभ दीसे, चरन प्रीत जिन्हां लगा ली। गुरचरन प्रीत कर, प्रभ पाया। प्रभ साचा मन चीत कर, आत्म तृखा देह बुझाया। गुर साची रीत कर, सोहँ शब्द साचा राह जणाया। गुरसिख रसना जीत कर, नाम राग सोहँ सच गाया। महाराज शेर सिँघ गुरचरन प्रतीत कर, कलिजुग प्रगटे रघुराया। कलिजुग वक्त विहा गया, फिर हत्थ ना आवे। प्रभ साचा जोत प्रगटा गया, बेमुखां नज़र ना आवे। गुरमुखां हउमे रोग गंवा गया, विच साची जोत जगावे। घर भगतन भोग लगा गया, करो दरस साची मन भावे। प्रभ कलिजुग अन्त करा गया, निहकलंक नाउँ रखावे। कुन्ट चार हाहाकार करा गया, मरे सृष्ट भुक्ख दे हावे। प्रभ साचा सोग रोग लगा गया, जोत सरूपी सृष्ट जलावे। प्रभ जोती जोत प्रगटा गया, सिख देह विच समावे। प्रभ कलिजुग जीव छला गया, जे कोए वेखे नज़र ना आवे। प्रभ साचा शब्द चला गया, सोहँ साचा नाउँ चलावे। प्रभ भगतां राह दसा गया, बैठ सिँघ आसण डेरा लावे। बेमुख जन्म गंवा गया, निन्दक दुष्ट दुराचार जगत अख्वावे। कलिजुग प्रगट नर्क निवास दवा गया, मदि मास जो जीव रसना लावे। सतिगुर साचा सतिजुग ला गया, बैठ अडोल जगत डुलावे। महाराज शेर सिँघ दर जो जन आ गया, दे दरस पार करावे। पार करे कलि पारावार। सतिजुग लावे सति करतार। सतिजुग जीव गुरचरन प्यार। वसे पारब्रह्म विच आत्म निराहार। सुफल जन्म जिन मिल्या प्रभ गिरधार। सोहँ शब्द सतिजुग होवे जीव अधार। महाराज शेर सिँघ चरन लाग, सर्ब जीव उधरे पार। सरन पड़े जो जन आए। सच साखी प्रभ दरस जाम पिलाए। आत्म तृखा दे बुझाई, दरस स्वांती बूंद कँवल में पाए। महाराज शेर सिँघ आत्म जोत, सोहँ शब्द संग जगाए। निर्मल दिया निर्मल जोत बाती। बुझे ना दिवस राती। जगे अडोल विच देह इकांती। महाराज शेर सिँघ देवे दात, भगत जनां वड दाती। जित मिलीए सुख पाईए, जीव भुल्ल ना जाए। जित मिलीए अमृत बूंद मुख चवाए, कलि रुल ना

जाईए। जित मिल आत्म तृप्ताए, पी अमृत कलि डुल ना जाईए। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए, कर प्रीत चरन मिल जाईए।

✻ ५ विसाख २००८ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ✻

रंकां आया प्रभ पुकार सुण। कलिजुग तराया गुरसिक्खां प्रभ चुण चुण। सोहँ शब्द वजाया मन तन धुन। आत्म खोलू वखाया मन सुन सुन। चरन आए प्रभ ना जताया गुण अवगुण। गुरसिख सबाया, कलिजुग जिउँ आटे लुण। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया, साध संगत शब्द सोहँ रुण झुन। सोहँ धुन सर्ब जन लोड़े। नाम ज्ञान ध्यान गुरचरन संग जोड़े। बेमुख कलिजुग मूल आपणा रोड़े। गुरमुख निर्मल दरस प्रभ का लोड़े। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी चार कुन्ट दौड़ाए घोड़े। चार कुन्ट चले प्रभ की चाल। सृष्ट सबाई होई बेहाल। नज़र ना आवे भगत रखवाल। जुगो जुग प्रभ साचे की निराली चाल। भगत जनां प्रभ बिरद लए संभाल। महाराज शेर सिँघ कलिजुग भए प्रितपाल। कलिजुग भरम जीव भरमाया। कलिजुग धर्म अन्त आण डुलाया। कलिजुग कर्म प्रभ आप लिखाया। कलिजुग वरम सोहँ बाण जग लाया। कलिजुग नरम सोहँ ज्ञान दे सुख कराया। महाराज शेर सिँघ गुरमुखां उज्जल विच जगत कराया। जुगत जगत प्रभ आप बणावे। सर्ब जीव प्रभ विच समावे। भगत जनां हरि पैज रखावे। कलिजुग जामा धार, अन्ध अँध्यार सिर हत्थ टिकावे। मूर्ख मुग्ध गंवार जन्म गए हार, प्रभ नज़र ना आवे। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, गुरसिख कर्म विचार, कर किरपा पार लँघावे। किरपा करे प्रभ गुणवन्त। गुरमुख निर्मल उत्तम सन्त। प्रभ का भाणा सर्ब वरतंत। कोई रहे ना राजा राणा, दुखी बिल्लायन जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विटहु कुरबानी, कलिजुग माया पाई बेअन्त। कलिजुग दुखीआं दुःख व्यापे। अन्तकाल कलि घर घर होए स्यापे। भगत जनां प्रभ हाज़र हज़ूर खड़ा जापे। राखे लाज जिउँ बालक मापे। साचा साहिब सतिजुग होवे वड प्रतापे। निहकलंक नर अवतार, कोई ना जीव धीर धरापे। महाराज शेर सिँघ कोई ना जाणे सार, आपणी वड्याई जाणे आपे। वड्डा प्रभ गुण निध दाता। गुरमुख विरले कलिजुग पछाता। सोहँ शब्द देवे प्रभ आप रंग राता। होवे ब्रह्म ज्ञान कलिजुग ज्ञाता। महाराज शेर सिँघ चरन कँवल ध्यान, सोहँ नाउँ सति पुरखा दाता। सोहँ दात गुरदर ते पाई। आत्म रास गुरचरन संग बण आई। साध संगत गुरचरन निवास, अन्तकाल जंम डण्ड ना खाई। जन सोहन तेरे पास, साचा नाउँ तेरा जस गाई। भगत वछल करे विच वास, कलिजुग देवे भगत वड्याई। महाराज शेर सिँघ सद बलि जास, जोत सरूप कलि होए

सहाई। जोत सरूप जगत ना जाता। कर्म करंता पुरख बिधाता। सर्ब रहंता झूठा जगत नाता। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट्या भगत जनां गुण दाता। रसना जपो हरि गोबिन्द। दुःख विनासे उतरे मन की चिन्द। जन भगत कर साची बिन्द। बेमुख डुब्बे कर प्रभ की निंद। निहकलंक कलि आया सद बख्शिंद। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप प्रगटे विच हिन्द। हिन्द हिन्दवैण वेखे हरि का द्वार। जोत जगाए प्रभ अपर अपार। गंगा गोदावरी गुरचरन द्वार। पी अमृत सतिजुग जीव उतरे पार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक भयो अवतार। नरायण बदरी हटावे पूजा। एक प्रभ प्रगटे कोई रहे ना दूजा। गुरमुख भगत प्यारयां घर साचा सूझा। कर दरस मुरारया, तन मन गुरचरन संग लूझा। महाराज शेर सिँघ देवे शब्द धुन्कारया, आत्म भेत खुल्हावे गूझा। हरिद्वार जिथ्थे हरि वसे। दुष्ट दुराचार कर दरस प्रभ का नस्से। साध संगत प्रभ हिरदे वसे। आत्म प्रकाश जिउँ रवि ससे। महाराज शेर सिँघ उच्चा दर, बेमुखां गुरसिख दस्से। गुरसिक्खां हरि दर पाया। आत्म सूझ प्रभ कर किरपा, मध माधो दरस दिखाया। जीव सुत्ता अनभोल, बांहों पकड़ प्रभ आण उठाया। कलिजुग जाई ना डोल, साचा साहिब होए सहाया। सचा सतिगुर वसे कोल, साध संगत प्रभ विच बहाया। भगत जनां देवे पड़दे खोल्ह, बेमुखां कलि नज़र ना आया। महाराज शेर सिँघ ना मारे अनभोल, सोहँ शब्द डंक लगाया। सोहँ शब्द सुण कलिजुग जीव अन्धे। कलिजुग झूठी माया झूठे जग धन्दे। चरन लाग मिले वड्याई, कर दरस प्रगटे प्रभ मुकंदे। अन्तकाल होए सहाई, जम काल प्रभ तोड़े फंदे। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाई, जो जन आए सरन लगन्दे। करन करावणहार आप प्रभ करत। वरत वरतावणहार, प्रभ भाणा जाए वरत। रुवावे रुवावणहार, प्रभ माता धरत। खपावे खपावणहार, सृष्ट सबाई होए मरत। महाराज शेर सिँघ रसना जग गाई, कलिजुग जीव ना आवे परत। रसना गाओ प्रभ भेखधारी। राखे लाज प्रगट जोत तुमारी। सच समग्री प्रभ जोत, झूठी सृष्ट पसर पसारी। महाराज शेर सिँघ करे सोत, कलिजुग प्रगट साचा दरबारी। साचा दर सचा दरबारा। जोत प्रगटावे सच सिरजणहारा। पार लँघावे दे दरस अपारा। बेमुख कलि नग्न फिरावे, करन हाहाकारा। गुरसिक्खां सिर छत्र झुलावे, जस होवे वड भारा। निन्दक दुष्ट दुराचार दर आए झक्ख मारा। गुरसिख गुर विचार चरन करे निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ प्रगट्या कलि सच अवतारा। कलिजुग धरी जोत जग दान दहिंदा। गुरचरन जो जन जाए लग, प्रभ भए बख्शिंदा। बेमुखां लग्ग जाए अग, सोहँ नाउँ सरवण सुणिंदा। वांग अगियार आत्म जाए दग, अग्न जोत प्रभ आप लगिन्दा। भगत जन देवे आत्म रंग, सोहँ शब्द गुण गोबिन्दा। महाराज शेर सिँघ कलि तारे झब्ब, जो जन आए सरन पविंदा। सरन पड़े होए निरमान। हँकार निवारे प्रभ मारे सोहँ बाण। गुरसिख तारे कलि आप पछाण। वाली होवे विच

३३६
०१

दो जहान। एथे ओथे कर्म पवे नीसान। साची दरगाह सच देवे प्रमाण । गुरमुख साचे जोत सरूप जोत मिल जाण। नाम रंगराते मुख उज्जल कर जाण। मिले पुरख बिधाते, विछड़ कदे ना जाण। साचे होए गुर नाते, सचखण्ड बिठाए प्रभ पूरे मेहरवान। महाराज शेर सिँघ भगत जन जाते, जिन देवे दरस आप भगवान । भगवान रूप सच सरूप। जीव ना जाणे प्रभ की महिंमा अनूप। शब्द लिखाए आपणा आप जणाए, बेमुख दीसे रंग ना रूप। गुरमुख तराए आत्म शांत कराए, दे के दरस प्रभ सति सरूप। अनक बिध प्रभ देवे दरस। गुरसिक्खां मन तोड़े हरस। अमृत मेघ आत्म बरस। गुरचरन लाग जीव फेर ना मरस। महाराज शेर सिँघ चरन लगाया कर निमाणयां तरस। कलिजुग प्रगट्या नर अवतार। रंक शूद्र संग किया प्यार। तख्तों लाहे वड्डे सिक्दार। सोहँ शब्द चलाया अपार। सर्ब सृष्ट नूं आई हार। भगत जनां घर जै जैकार। जिथ्थे वसे आप निरँकार। निरवैर निराधार पैज रखाई, दे शब्द अधार। जन भगत तराए, निहकलंक प्रभ लै अवतार। कलिजुग अन्त खपाए, कलिजुग जीव ना पाई सार । सतिजुग साचा प्रभ दे लगाई, गुरसिख उतरे भवजल पार। साध संगत मन पए वधाई, दर्शन पाया गुर दरबार। कलिजुग भुल्ले सभ लोकाई, भरम भुलेखे डुब्बा संसार। महाराज शेर सिँघ तेरे नाम दुहाई, चरन आए कलि करदे पार। निमाणयां प्रभ हो रखवाला। तोड़ जोड़ प्रभ कंठ माला। दु:खी होए जीव बेहाला। आत्म चैन ना मिले गोपाला। हो सहाई महाराज शेर सिँघ दु:ख दर्द मिटावण वाला। दु:ख देह तन कर दूर। दान बख्शे जीव चरन धूढ़। हड्ड मास नाड़ी पिंजर टुट्ट होया चूर। दकुखां वरखा जिउँ निम्मी भूर। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, देह दु:ख कर जाह दूर। दु:ख काया जीव बिल्लाए। दिवस रैण चैन ना आए। भुल्ला ईश्र जप करे हाए हाए। कढु हड्ड मास नाड़ी तप, सोहँ साचा अमृत पिलाए। महाराज शेर सिँघ सभ किछ तेरे हत्थ, दु:ख भंजन देह दुखड़े लाहे।

❊ ६ विसाख २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ❊

उठ जीव कलि सोया जाग। सोहँ शब्द सुण मन भए वैराग। मिल साध संगत होए पूरन भाग। कर दरस प्रभ गुरचरन लाग। कलिजुग कूड़ कुटम्बड़ा, गुरसिख ना लागे दाग़। बेमुख सर्ब भस्मन्दड़ा, गुरसिक्खां हत्थ प्रभ वाग। सिँघ सिँघासण सुहाया, जिउँ पताल उप्पर बाशक नाग। साचा शब्द लिखाया, महाराज शेर सिँघ सोहँ राग। राग रंगीला धुन बैण। गुरमुख रस कलि विरले लैण। छड्ड सृष्ट विच साध संगत बहिण। साध संगत कलि जिउँ भाई भैण। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां

वड साक सैण। मात पित भगत जन प्रभ। प्रगट कलि मेल मिलाए झब्ब। दरस दिखावे प्रभ गुरसिख लभ्भ। महाराज शेर सिँघ बेमुख सहिण ना जोत सरूपी दब्ब। जोत सरूप जोत विच रहणा। कलिजुग कर्म कर कुकर्म फल लैणा। साचा सतिगुर अन्तकाल गुरसिख पेखण नैणां। महाराज शेर सिँघ उलटी सृष्ट वहाए विच वहिणा। वाउ वेला कोई जाणे गुरमुख भगत सुहेला। बेमुख कलिजुग धक्क धकेला। शौह दरयाए बेड़ा प्रभ ठेला। कर्म विचार गुरसिक्खां प्रभ मेल मेला। कलिजुग लै अवतार अचरज खेल आप प्रभ खेला। निहकलंक इक्क जोत आधार, कलि अन्त ल्यावे वेला। महाराज शेर सिँघ जन भगतां सदा संग सुहेला। सद मिले प्रभ सच मेहरवान। आए दर घर सच होए परवान। पावे वर लै सोहँ दान। उधरे नर मिल विष्नूं भगवान। गुरसिख ना डर, रक्खे लाज वाली दो जहान। कलिजुग तर मिले प्रभ चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ कोए ना जाणे प्रगट्या गुण निधान। गुणवन्त आप गुरदेव। आदि अन्त जन भगत कराए सेव। जोत सरूप अगम्म निहकेव। मूर्ख मुग्ध ना जणावे प्रभ आपणा भेव। भगत जन दरस प्रभ लिखे लिखेव। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, दर्शन लोचे सभ देवी देव। देवी देव प्रभ दरस प्यासे। नज़र ना आवे प्रभ तीन लोक वासे। बेमुख कलि सभ होए नासे। साध सन्त गुर चरन रहिरासे। भगत जन दे दरस करे बन्द खलासे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख जीव तेरे चरन भरवासे। चरन भरवास प्रभ भगतन केरा। दे दरस प्रभ कीउ नबेड़ा। जोत जगाई मिटया कलि अन्धेरा। सद प्रकाश ना सञ्ज सवेरा। महाराज शेर सिँघ भेत मिटावे गुरसिख तेरा मेरा। तारे दरस दे प्रभ गुरसिख। लिखे मिटावे, साचे लेख प्रभ जाए लिख। सोहँ दे ज्ञान आत्म लाहे विख। जन भगतां चरन ध्यान, सतिगुर साचा आवे दिख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया करके भेख। कर भेख प्रभ जगत भुलाया। छड्ड देह जोत सरूप समाया। जोत सरूप कलि निहकलंक नां रखाया। साचा शब्द जुग चार सोहँ चलाया। मार्ग सच सतिजुग प्रभ चलाया। दरस दे गुरसिक्खां प्रभ पार लँघाया। वधे इकबाल तेज सवाया। बेमुखां प्रभ कलि धक्का लाया। आर पार बेड़ा विचकार डुबाया। साध संगत सिर हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप भाणा कलि वरताया। प्रभ भाणा जीव ना जाणे कलिजुग अञ्याणा। इक्क शब्द प्रभ सच वखाणा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, करे इक्क रंक राणा। राउ रंक इक्क प्रभ करना। सतिजुग साचा सति पुरखां वरना। बेमुख कलिजुग अन्त होए मरना। महाराज शेर सिँघ निहकलंक चरन लाग गुरमुखां तरना। तरन तारन समरथ जगत प्रभ आया। सोहँ दे के वथ्थ, भगत जनां हरि राग सुणाया। महिंमा आपणी आप अकथ्थ, साचा भेव प्रभ आप खुल्हाया। बेमुखां पाए नत्थ, राए धर्म नर्क निवास दवाया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी रथ चार कुन्ट चलाया। चार कुन्ट प्रभ का

३३८
०१

भै। मदि मासी कलि कोई ना रहै। जोत सरूप करे सृष्ट खै। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर बेमुख दुःख अन्त सहै। जगत भुलावे प्रभ भुलायण। सृष्ट डुलावे प्रभ डुलायण। हत्थ ना आवे जो वक्त विहायण। दरस दिखावे प्रभ नरायण। पकड़ उठावे वाली हिन्दवैण। दरस दिखावे जा सुत्तयां रैण। जोत जगावे पेखे प्रभ नैण। महाराज शेर सिँघ कलि सो जन तरे, सोहँ नाम जो रसना लैण। वाली हिन्दवैण हिन्द का राजा। पकड़ उठावे प्रभ आप ग़रीब निवाज़ा। वखावे दरस जिस साजन साजा। लाग चरन कलि प्रगटे महाराज शेर सिँघ वड राजन राजा। सच राज सच्चा पातशाह। रक्खे लाज सची दरगाह। सोहँ शब्द सतिजुग दिखाया राह। वाली हिन्द भुल्ल ना जाह। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ बेमुखां दिसे ना। विचार विचार विचार विच वक्त लँघाया। वेद पुरानां बाहरा प्रभ कलिजुग आया। बचन लिखाया सति कर, निहकलंक नाउँ धराया। जोत सरूप सृष्ट विच रच कर, बेमुख पड़दा पाया। कलिजुग कूड़े नच्च कर, अन्त आपणा आप गंवाया। बेमुखां माया अग्न मच्च कर, मानस जन्म ना लेखे लाया। गुरसिक्खां आत्म सच कर, गुरचरनीं सीस झुकाया। महाराज शेर सिँघ आपणे बच्च कर, अन्तकाल सिर हत्थ टिकाया। जगी जोत निरँजणी कलिजुग वग गई वाअ। गुरमुखां दरस पाया प्रभ अञ्जनी, बेमुखां लध्धा ना राह । सच चरन धूढ़ कर मज्जनी, कलि अग्न ना मारे भाह। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी अग्नी, सभ सृष्ट करे स्वाह। प्रगट आपे आप प्रभ, कलि आपणा आप छुपाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, हरिजनां दरस दिखाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, साचा शब्द सोहँ चलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, जोत सरूप खेल रचाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, नाउँ निहकलंक धराया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, चार कुन्ट डंक लगाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आपणा भेव कलि अन्त खुल्हाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, वाली हिन्द फड़ तख्त हिलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, तख्त निवासी दिल्ली वाली सरन लगाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, धाम किनारे जमन बणाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, सचखण्ड सच धर्म सच छत्र सिर झुलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, जोत सरूप तेज़ वखाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, राणयां महाराणयां दरस दिखाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आप ऊँच अगम्म अख्वाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आपणा नाउँ आप रखवाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, बैठ अडोल जगत डुलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, चार वरन सिर चरन झुकाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, दूसर कोए रहण ना पाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, सर्ब धाम माण गंवाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आपणा नाम उत्तम जगत कराया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, सोहँ शब्द इक्क राग सुणाया । कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, चरन धाम सचखण्ड

बणाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, साची पुरी निवास दवाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आपणा आप उपाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, छड्ड देह जोत सरूप हो आया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, मात पित बिन निहकलंक अख्वाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, गुणवन्त गुण निधान सतिजुग लगाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, गुरसिक्खां सोहँ साचा वणज कराया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, दे दरस जोत विच जोत मिलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, सरन पड़े दी लाज रखाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, राउ रंक इक्क कराया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, निन्दक दुष्ट दुराचार कलि अख्वाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, जोत सरूप जगत पवण डुलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, जोत धर कलि सचखण्ड लगाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ नां रखाया। धरया नाम बली बलवान। द्वापर उलटाया नां रखाया काहन। कलिजुग आया निहकलंक जोत समाण। पाई माया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

❋ १० विसाख २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ❋

३४० ०१ जगत सरूप कलि होए उज्जयारा। जगाए जोत कुन्ट चार चमत्कारा। शब्द ज्ञान दे अज्ञान दु:ख निवारा। आत्म कर ध्यान वड हँकार प्रभ मारा। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, धर जोत जगत किया ख्वारा। प्रगट जोत धरत धनवन्त। कलिजुग अन्त कराए आप भगवन्त। दुष्ट खपाए, जन भगत तराए कलि उत्तम सन्त। प्रभ बेपरवाहे सर्ब जीव रहाए, खेड प्रभ कर बेअन्त। करे खेल कलि खेलणहारा। जोत पवन पवन जोत जगत दिया हुलारा। बैठ अडोल कर सचा निज थारा। महाराज शेर सिँघ वसे कोल, चरनीं किया जिन निमस्कारा। प्रगटाई जोत भगवान कलि । कलिजुग भावी ना जावे टल। बेमुख सबाई जावे ख़ाक रल। हँकार निवारी सभ देवे मल। दुष्ट दुराचारी संग जोत जाए रल। साध संगत दर साचा प्रभ मल। महाराज शेर सिँघ जुग पलटावे, ना लावे घड़ी पल। प्रभ का वक्त ना कोई विचारे। जुगो जुग प्रभ खेल न्यारे। जीव जन्त वहि जाण जिउँ जल धारे। अग्न जोत जले जलाए जगत सारे। बैठे अडोल प्रभ आप निराधारे। गुरमुख सोहण गुरचरन दुआरे। राज हँस बंस प्रभ पार उतारे। वांग कंस दुष्ट पकड़ सँघारे। विष्नूं अंस जन भगत प्यारे। महाराज शेर सिँघ सिर छत्र झुलारे। साचा प्रभ साचा शाह। साचा सतिजुग वखाए राह। अगम्म अगोचर बेपरवाह। सृष्ट सबाई एह कीनी घाह। गुरसिख रसना वड्याई सतिगुर वाह वाह। जन्म सुफल साध संगत मिलण दा लाह। महाराज

शेर सिँघ अन्तकाल पकड़ लँघावे बांह। बांहों पकड़ तरावे प्रभ भगवन्त। होए अन्त सहाए जिस उपाए जन्त। एकस बिन दूसर कोए नाहे, सोहँ साचा शब्द चलाए मंत। महाराज शेर सिँघ पूरन परमेश्‍र, कलि प्रगट्या साचा कन्त। साची जोत निरँजणा, कलि किया प्रकाशा। जो घड़िआ सो भज्जणा, काल अन्त सभ होए नासा। सोहँ शब्द जगत डंक वज्जणा, गुरसिख राख मन भरवासा। वड तीर्थ गुर चरन मजना, आत्म तृप्त उतरे प्यासा। महाराज शेर सिँघ घर साचे सजणा, भगत जनां करे बन्द खलासा। बंधन तोड़ दुःख निवारे। सर्ब सुख गुरचरन दुआरे। दुष्ट दूत संग शब्द प्रभ मारे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख जीव तेरे चरन सहारे। चरन आस गुरसिख लगाए। दे चरनामित प्रभ आत्म तृप्त कराए। प्रभ साचा मित्र आसण देह बैठा लाई। बेमुखां जाणा झूठ चलित्र, प्रभ की जोत नज़र ना आई। महाराज शेर सिँघ जोत पवित्र निरँजण जोत जगत गुसांई। जगत गुर जगत पित, आप प्रभ दाता मिले कित। जो जन जावे जगत जित। प्रभ होवे भगत भ्राता साचा मित। गुरसिख संग हित, बण जाए आप पित माता। महाराज शेर सिँघ गुरमुख विरले, कलिजुग जिन दर तेरा पछाता। पछाणे दर सूझे घर। नज़री आवे अवतार नर। कलिजुग भए ना होवे डर। साचा साहिब ल्या वर। अन्तकाल जीव जाए ना मर। गुरचरन लाग गुरसिख जाए तर। रसना जप सोहँ हरि हरि। भगत जन महाराज शेर सिँघ दिखावे साचा दर। साचा दर प्रभ का पाया। दर दरबान हो गुरमुख रहया, आवण जावण प्रभ भरम मिटाया। जोत सरूप विच जोत मिल्या, महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां उप्पर कलि कीनी दया। गुरसिख निर्धन, सचा सतिगुर शाह। देवे नाम सच गुरचरन निरबाह। सोहँ शब्द फल गुरचरन मिले सदा जीव खाह। महाराज शेर सिँघ कलिजुग साचा सोहँ दसाए राह। हँकारीआं हँकार निवार, प्रभ कलि करे ख्वारी। निमाणयां दे माण, प्रभ पैज आए सवारी। राउ रंक इक्क जाण, प्रभ जोत सरूप कीनी दारी। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जोत लग्गे चंगियाड़ी। प्रभ की जोत बेमुखां अग्न। गुरमुख पूरे संग जोत मग्न। प्रभ चरन प्रीती लग्गी मन साची लगन। सतिजुग दीपक गुरसिख महाराज शेर सिँघ जगण सुहाए गगन। सोहण सितारे, जगे जोत उप्पर निरँकारे। मात विच कलि गुरसिख प्यारे। महाराज शेर सिँघ जिन्हां पछाता, चार जुग जीव जाण बलिहारे। चार जुग जीव जस गायण। साची बाणी जिस सिख प्रभ नाम चढ़ायण। साचा गुरमुख सच प्रभ पायण। भगत जनां सद संग रहायण। वक्त विहाए पछुताए वाली हिन्दवैण। नज़र ना आवे गुर सतिगुर पूरा, रोवे पा पा वैण। माया पा जगत भुलाया, गुरमुख चरन लाग तर जायण। महाराज शेर सिँघ दरस दर पाया, दुखी जीव सभ दुःख गंवायण। दुःख दर्द दे जीव निवार। कलिजुग आया प्रभ जामा धार। ऊँचो ऊँच प्रभ नर अवतार। तीन लोक प्रभ लेवे सार। चरन लाग ना होए हार। सोहँ शब्द साचा

वेद विचार। एक शब्द करे कलिजुग पार। सृष्ट सबाई होवे ख्वार। शब्द वजाए अनहद धुन नाना प्रकार। भगत जन सुणाए, टुट्टे ना तार। चरन चल आए, महाराज शेर सिँघ पैज संवार। रक्ख पैज प्रभ आप मुरार। दे दरस किरपा धार। कलि ना डोबीं विच मँझधार। सोहँ शब्द लँघावे पार। महाराज शेर सिँघ गुरमुखां देवे कलिजुग तार। भरम भुलाया ना भुल्ले गुरसिख पूरा। जगत डुलाया ना डुल्ले, मिल्या गुर सतिगुर सूरा। जगत हिलाया गुरसिक्खां ना हिले, सोहँ नाम मन रहे सरूरा। जगत भुलाया भगत ना भुल्ले, वाजे धुन शब्द अनहद तूरा। महाराज शेर सिँघ कलि दरस दिखाया, वडभागी पाया गुर सतिगुर पूरा। गुरसिख सच संजोग प्रभ, कलि होया संजोग। आत्म रस सच भोग प्रभ, होर त्याग सगले भोग। हउमे देवे कढु रोग प्रभ, गुरचरन कदे ना होए विजोग। सोहँ नाम देवे जोग प्रभ, होवे दरस जीव प्रभ अमोघ। महाराज शेर सिँघ चरन लगाया लिक्खया लेख सच रिहा संजोग।

❊ ११ विसाख २००८ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड झबाल ❊

एक टेक गुर चरन प्यास। कर दरस आत्म प्रकाश। साध संगत प्रभ होए दास। छडु खण्ड सच मात किया वास। गुरसिख तराया कर आत्म रास। ब्रह्म सरूप ब्रह्म जीव बणाया, जोत प्रगटाई घर सिक्खन दास। महाराज शेर सिँघ मिले वड्याई, चरन तेरे जिस बण आई रास। रसना जप जीव हरि हरि हरि गोबिन्द। कर दरस प्रभ उतरे मन की चिन्द। कलिजुग अन्त चरन लग जाए वाली हिन्द। बेमुख नर्क निवास दवाए, रसना करे प्रभ की निंद। निहकलंक जोत प्रगटाए, घर गुरसिख इन्द। इन्द इन्द्रासण प्रभ आप हिलाया। शिवलोक फड़ उलट कराया। लोकब्रह्म विच चरन लगाया। सिँघ पाल सच तख्त बहाया। सुहाया थान जिथ्थे प्रभ दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, साध संगत मिल हरि जस गाया। कलिजुग जीव करे अंध्यार। नैण ना दीसे प्रगटे जोत मुरार। बेमुख सारे कूड़े ठीसे, अन्तकलि होए ख्वार। गुरसिख नाम निधान रसना पीसे, आत्म होए जोत आधार। महाराज शेर सिँघ गुरमुखां दीसे, जिन साचा किया नाम वपार। नाम वक्खर प्रभ भगतां देवे। आत्म सुरत मन शब्द वजेवे। दरस दिखाए प्रभ अलख अभेवे। कलिजुग उतरे पार जो जन महाराज शेर सिँघ चरन तिरसेवे। कलिजुग चरन उत्तम फल। कर दरस साध संगत रल। कलिजुग अग्न पाप ना जीव रल। वक्त विहाए रोवे हत्थ मल। सृष्ट सबाई जोत सरूप प्रभ देवे दल। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार उलटावे कलि। जोत प्रकाश गुरसिख अंदर। साची देह बणे तन साचा मन्दर। सोहँ शब्द ज्ञान खोल्हे मन का जंदर। महाराज

३४२ ०१

शेर सिँघ बेमुख नाचे कलि जिउँ बन्दर। गुरसिख तारे आप प्रभ, दे ब्रह्म ज्ञाना। गुरसिख तारे आप प्रभ, दे आत्म ध्याना। गुरसिख तारे आप प्रभ, सच आत्म दीप देह जगाना। गुरसिख तारे आप प्रभ, सच लेख आप लिखाना। गुरसिख तारे आप प्रभ, मिल भगत वछल भगत भगवाना। गुरसिख तारे आप प्रभ, सोहँ शब्द दे उत्तम ज्ञाना। कलिजुग उधरे पार, निहकलंक जिन्हां पछाना। महाराज शेर सिँघ नर अवतार, तेरा दरस गुरसिक्खां माना। गुरसिख सति सरूप नाम दृढ़ांयदा। कलि मिले प्रभ भूप, जोत सरूप प्रभ दरस दिखांयदा। पकड़ उधारे विच अन्ध कूप, सोहँ शब्द ज्ञान दवांयदा। गुरसिख चरन लाग जाए, महाराज शेर सिँघ दरस दिखांयदा। दे दरस आत्म तृप्तावे। हउमे माण आत्म विच्चों मोह चुकावे। आत्म कर प्रकाश, सच दीपक जोत विच देह जगावे। हिरदे कर वास, आपणा भेत आप खुल्हावे। निर्मल देह होए रास, महाराज शेर सिँघ जिन दरस दिखावे। जुग चार प्रभ भयो इकन्त। भेव ना जाणे कोए विदंत। ऊँच अगम्म आप बेअन्त। भगत सहाई आदि अन्त। जगत रथवाही पार उतारी जीव जन्त। सोहँ शब्द कर साचा मंत। सर्ब थाएँ प्रगट जोत प्रभ किए भगवन्त। किरपा करे होए निरवान। त्रेता तारे राम भगवान। द्वापर अधारे मुरार कृष्न काहन। कलिजुग सँघारे प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। कलिजुग अन्तिम आप प्रभ करे। जुग चौथे साची जोत मात विच धरे। बेमुख निन्दक दुष्ट दुराचार कलि दुःख डाहढा भरे। साध संगत मुख उत्तम विचार, रसना जपे नर हरे। कर दरस गुरचरन प्यार। मिल साध संगत कलिजुग तरे। अन्तकाल महाराज शेर सिँघ साचा रच्छक रच्छया करे। कलिजुग लै अवतार आया गुणवन्त। सृष्ट सबाई दए सँघार, तारे प्रभ भगत भगवन्त। जीव उधरे पार, रसना जपे सोहँ मंत। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, वसे विच जीव जन्त। कलिजुग जीव प्रभ पाई माया। प्रगट जोत नज़र ना आया। बेमुख आत्म प्रभ पड़दा पाया। गुरसिक्खां हिरदे प्रभ जोत जगाया। आत्म रस नाभ कँवल चुआया। खुल्हे कँवल सच सरूप प्रभ नज़री आया। जोत सरूपी किरपा कर, साचा सिख विच जोत मिलाया। कलिजुग जामा धार, निहकलंक प्रभ नां रखाया। पूरन प्रगट अवतार, चौथा जुग प्रभ आप उलटाया। होए निरवैर निराधार, गुरसिक्खां दे दरस अपार, आपणा भेत प्रभ आप खुल्हाया। कुन्ट चार होए जैकार, सोहँ शब्द डंक चलाया। प्रगट मुरार दे दरस अपार, गुरसिख तराया। महाराज शेर सिँघ कलि नर अवतार, चतुर्भुज एह खेल रचाया। सावल सुंदर प्रभ भेस वटा के। जुग चौथे आया प्रभ भेस वटाके। भगतन रक्खया रक्खे आप घर आ के। मुकंद मनोहर प्रभ दरस दिखा के। स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखा के। माण अभिमान विच्चों हउमे मोह चुका के। देवे दरस आत्म जीव साची जोत जगा के। अमृत रस पीव जीव, झिरना निझरों झिरा के। साचा राग सुणावे जीव, अनहद शब्द प्रभ धुन वजा

के। साची हिरदक जगावे दीव, जोत सरूप अग्न जोत लगा के। महाराज शेर सिँघ जीव कलिजुग उधरे दर दर्शन पा के। कलिजुग दरस प्रभ उत्तम न्यारा। हउमे रोग गंवाए, लग्गा जीव दुःख भारा। प्रभ दर्शन पाए साचा नाम मिले आधारा। सोहँ नाम रसना गाए, मिले प्रभ एकँकारा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अख्वाए, पसरया जिन सर्ब पसारा। सृष्ट उपाए प्रभ आप साच। शब्द जपाए जाप साच। सतिगुर सतिजुग जाए थाप। निहकलंक कलिजुग खपावे मात। वरन चार इक्क कराए, ना कोए रहसी ज़ात। गुरसिख चरन लग्ग जाए, जीव जगत साचा नात। सोहँ शब्द जो रसना गाए, साचा शब्द वड्डी करामात। बिन गुर पूरे, जीव अन्तकाल ना कोई पुच्छे वात। नाम निधान प्रभ भगतन देवे दात। होवे ब्रह्म ज्ञान आत्म शांत। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, बैठ अडोल रहे इकांत। जोत सरूप निहकलंक प्रभ आया। छड्ड देह अचरज खेल रचाया। कलिजुग अंदर प्रभ पाई माया। भरम भुलेखे सभ जगत भुलाया। नैण ना दीसे जगत रघुराया। गुरसिक्खां स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखाया। जोत निरँजण सद दीप जोत जगाया। बेमुखां दर मन हँकार वसाया। गुरसिक्खां दूख निवार, सच मार्ग पाया। महाराज शेर सिँघ कलि भण्डारी, सोहँ नाम वरताया। वरते कहर कलिजुग संसारा। प्रभ ना दीसे माया रूपी धुंदूकारा। साध संगत बीस इकीसे, तारे आप प्रभ तारनहारा। महाराज शेर सिँघ गुरमुखां दीसे, जोत जगाए अपर अपारा। सोहँ शब्द सचा धन माल। कलिजुग देवे प्रभ भगतन भाल। किरपा करे दीन दयाल। अन्तकाल तोड़े जंजाल। प्रगटे जोत विच पिण्ड झबाल। इक्क फल लग्गा पूरब डाल्। गुरसिख पूरी होई घाल। भगत वछल प्रगट घर गोपाल । आत्म धरे साचा लाल गुलाल। महाराज शेर सिँघ नाम धन दे, गुरसिख आत्म होए मालो माल। आत्म नाम प्रभ का रस। साचा साहिब जाए हिरदे वस। जुग चार होए भगतन जस। सोहँ शब्द ज्ञान प्रभ गया दस्स। बेमुख दर तों जाए नस्स। साध संगत प्रभ होया वस । महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी गुरसिख माणे तेरा रस। जोत सरूप कलिजुग अधारी। निहकलंक प्रगटे कृष्न मुरारी। सर्ब सृष्ट शब्द रूप प्रभ सँघारी । प्रभ की जोत जलाए जगत अंगयारी। प्रगट भए कलिजुग प्रभ साचा दरबारी। बेमुख ना दीसे ऊँच अगम्म अपर अपारी। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप प्रगट गुरसिख पैज संवारी। जोत सरूप जगत जलाया । चार कुन्ट हाहाकार मचाया। निहकलंक कलंक कलि लगाया। आपणा भेव प्रभ आप छुपाया। सति पुरखां प्रभ दरस दिखाया। निरँजण जोत गुरमुखां हिरदक डगमगाया। साध संगत वर दर ते पाया । प्रगट जोत अनाथ अनाथे, अन्तकाल होए सहाया। बेमुख कलिजुग माया फाथे, प्रभ का भेव ना किसे पाया। जोत सरूप महिंमा कथन अकाथे, उधरे जीव जिस रसना गाया। महाराज शेर सिँघ दुखड़े लाथे, दर आए जिस दर्शन पाया। कलिजुग आया प्रभ कलधार।

३४५
०१

बेमुख मुग्ध ना पावण सार। चौथे जुग अन्त होई हार। मदि मास जीव आत्म चले विकार। अन्तकाल कलि गया झक्ख मार। साध संगत सोहँ शब्द तेरा नाम अधार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग देवे गुरसिख तार। कलि कपटी प्रभ कपट विचारया। दुष्ट दुराचार सोहँ बाण संग मारया। बैठ अडोल सभ जगत सँघारया। महाराज शेर सिँघ दे दरस गुरमुख तरा ल्या। कलिजुग जोत प्रगटाया, नाउँ रखाए निहकलंक। भाणा सति वरताया, इक्क कराए राउ रंक। पल्ला जगत फिराया, सुहाए द्वार बंक। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया, कर निमस्कार जीव बार अनक। जुगो जुग प्रभ कुरबान। जोत प्रगटावे चतुर सुजान। आपणा आप उपावे गुण निधान। गुरमुख विरले प्रभ सोझी पाण। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आया सभ जाणी जाण। कलिजुग आए गुण निधाना। धरे जोत विष्नूं भगवाना। मिल साध संगत होए वक्त सुहाना। कलिजुग वरते प्रभ का भाणा। चरन लाग जाए सभ राजा राणा। सतिजुग मार्ग प्रभ आप चलाणा। सोहँ शब्द होए सतिजुग प्रधाना। कलिजुग खपाए कर बिध बिधनाना। महाराज शेर सिँघ सच लिख्त कराए, निहकलंक होए जोत समाणा। निहकलंक प्रभ जोत सरूप्या। दरस दिखावे विच कलि अंध्यार अन्ध कूपया। भगत जन पावे, प्रगटे प्रभ साचे भूपया। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे, जन भगतां सच सरूपया। वक्त विहाया सोच सोच प्रभ ना दीस्सया। गुरमुख उधरे पार, कलि बेमुख पिच्छे करन रीस्सया। छड्ड जोत जोत मिल जाई, प्रभ साचा किसे ना दीस्सया। महाराज शेर सिँघ सतिजुग तेरा दर खुल्ह जाई, सोहँ नाम होए बीस इकीस्सया। एक जोत एक भगवाना, माण गंवाए वेद पुराना। कलिजुग खपाए सच कर जाना। कोई ना रहसी अञ्जील कुराना। खाणी बाणी विच चरन मिलाना। सोहँ शब्द सतिजुग प्रभ सति चलाना। कुन्ट चार जै जै जैकार कराना। बेमुखां घर हाहाकार मचाना। महाराज शेर सिँघ तेरा दर कलि गुरसिख पछाणा। दया करे प्रभ गुणवन्त। जिस उपाए सभ जीव जन्त। जोत प्रगटाए प्रभ गुणवन्त। दरस दिखाए कलि भगतन भगवन्त। सुरत शब्द प्रभ ज्ञान दे, हिरदे जोत जगाए। नाम गुण निधान दे, आत्म जोत जगाए। कँवल नैण सोहँ नाम दे, मन अनहद धुन वजाए। मुकट बैन ब्रह्म ज्ञान दे, द्वार दस्म खुल्हाए। साचा दरस विष्नूं भगवान दे, अन्तकाल गुरसिख जोत मिल जाए। गुरसिक्खां प्रभ मेल मिलाया। प्रभ अबिनाशी प्रगट कलि आया। साचा शाह घर मांहि पाया। कर दरस जीव निजानंद तृप्ताया। खुल्ही त्रैकुटी वाजा पवण विच देह वजाया। मिल्या प्रभ, सोहँ शब्द सच ज्ञान दवाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, साचा मंत सोहँ चलाया। सोहँ बाण प्रभ जगत चलाया। प्रगट जोत निहकलंक कलिजुग खपाया। साचा शब्द वजावे डंक, भुल्ली सृष्ट प्रभ कन्न सुणाया। कोई ना दीसे राउ रंक, जोत सरूप इक्क कराया। गुरसिख तारे जिउँ भगत जनक, प्रगटे जोत आप रघुराया। धरी जोत विच

पुरी घनक, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाया । तज देह होए जोत सरूप। कलिजुग प्रभ खेल करे अनूप। नज़र ना आवे प्रभ ना रेख ना रूप। घट घट सर्ब प्रकाशया, प्रभ साचा भूप। अन्तकाल प्रभ होए सहाई, विच अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ तेरे हत्थ वड्याई, करे खेल विच जोत सरूप । जोत सरूप खेल न्यारा। चार कुन्ट मचावे हाहाकारा। कलिजुग कूड़ा पार उतारा। मदि मासी डुब्बे विच मँझधारा। कट्ट जाए चुरासी, सोहँ शब्द जिन रसन विचारा। जप रसन स्वास स्वासी, विच वसे प्रभ करतारा। साध संगत गुरचरन दासी, देवे दान अगम्म अपारा। बेमुख दर ते करन हासी, नज़र ना आवे सच दरबारा। भरम भुलेखे सारे लाहसी, निहकलंक कलि भए अवतारा। सभ सृष्ट चरन लग्ग जासी, अन्तकाल ना होए ख्वारा। राजन होए आत्म अन्धासी, नज़र ना आवे प्रभ गिरधारा। कलिजुग प्रगट्या थिर घर वासी, जोत जगाए सच कलधारा। हिन्दवैन गुरचरन लग्ग जासी, शब्द जोत होए धुंधूकारा। साध संगत सद बलि बलि जासी, जिस ने पाया पुरख अपारा। महाराज शेर सिँघ घनकपुर वासी, उधरे चरन जो चरन निमस्कारा। वरन चार, चार प्रभ इक्क कराए। सोहँ शब्द इक्क टेक रखाए। राजा राणा कोई डिट्ठ ना आए। उधरे पार जो चरन सीस झुकाए। वाली हिन्द प्रभ दरस दिखाए। मुकंद मनोहर प्रभ नज़री आए। सांवल सुंदर कँवल नैण सिर मुकट टिकाए। जोत सरूप जोत प्रगटा के, हउमे विच्चों माण गंवाए। अछल अछल्ल महाराज शेर सिँघ, भय भयानक विच दरस दिखाए। दिखावे दरस प्रभ वड भूपा। नज़र ना आवे जोत सरूप रंग ना रूपा। मन बिग्सावे दे दरस अनूपा। चरन लगावे महाराज शेर सिँघ सति सरूपा। राजन राज राज ते ऊँचा। पारब्रह्म प्रभ साजन सूचा। प्रगट जोत कलि कराया कूचा। महाराज शेर सिँघ ऊँचा दर घर तेरा सूचा। गर्ब निवार तोड़े अभिमान। सतिजुग जीव करे इक्क समान। साचा नाम करे प्रधान। सरबत्त तीर्थ जगत मिट जाण। जीव जन्त टेक भगवान। महाराज शेर सिँघ देवे साचा ब्रह्म ज्ञान। कलिजुग भाह जगत जलाया। दिसे ना राह, माया पड़दा पाया। जीव दम दा की वसाह, क्यों भरम भुलाया। प्रगटी जोत अगम्म अथाह, निहकलंक नाउँ रखाया। प्रभ मिलण दा साचा राह, मदि मास ना रसन लगाया। जोत प्रगटाई बेपरवाह, साचा धाम आण सुहाया। बेमुख भुल्ल ना जाह, प्रगटी जोत भुलेखा लाहया। दर आ भुलेखा लाह, सुरत शब्द प्रभ ज्ञान दवाया। प्रगट बैठा सच्चा पातशाह, सचखण्ड सच्चा धाम बणाया। अन्तकाल जीव फड़ लै बांह, जोत सरूप विच जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ सच तेरा नां, रसना जप गुरसिख मन रंग चढ़ाया । तीन लोक प्रभ का वास। मात पाताल विच आकाश। विच आकाश ईश्र जोत प्रकाश। जोत सरूप पवण उनन्जा सिर छत्र झुलास। सृष्ट उपाए जगाए जोत दे धरवास। मात सुहाए सिँघआसण लाए उप्पर बाशक तास। कलिजुग जोत

प्रगटाए, निहकलंक नाउँ रखाए, धरे जोत मात कर वास। मातलोक प्रभ जोत प्रगटाए। जुगो जुग एह खेल रचाए। अन्तकाल करन जुग, पूरन जोत विच जगत दे आवे। जुग सति मेहरवान, त्रेता राम बण उलटावे। द्वापर कृष्न मुरार, भगत जनां हरि माण दवावे। आत्म दे ज्ञान, अर्जन महासार्थी आप अख्वावे । देवे दुष्ट सँघार, शस्त्र बाण हत्थ ना लावे । प्रगट जोत विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जगत डुलावे। अथर्बण दित्ता माण, कलिजुग वेद चलाया। शब्द लाया बाण, अल्ला नाम उपाया। शब्द विष्नूं भगवान मुहम्मद ईसा मूसा नाम जपाया। कलिजुग कर्म महान, जोत सरूपी देह जोत कलिजुग अनवाद चलाया। ईश्र जोत देवे जिस जन। जगत बैठा परमेश्वर बण। कहे सो जो आए मन। भुलाए आप दे वक्खर धन। भगत जनां गुरचरन संग आए बण। जोत सरूपी जगत बणाया रण। अग्न जोत कलिजुग लावे घन। सोहँ शब्द धन जाए जिउँ धण। महाराज शेर सिँघ प्रगटयो विच पुरी घन। जगत मार्ग आप बणाए। ईसा मूसा मुहम्मद नां रखाए। अन्तकाल कलि करन दी प्रभ नींह रखाए। ईश्र जोत जीव जन्त सर्ब विच इक्क समाए। दे माण पीर पैग़ंबरां राह जगत चलाए। बेमुखां भरम भुला के, हउमे माया विच वसाए। इक्क सच्चा शाह भुला के, आपणे आपणे राह सर्ब दिखाए। जो बैठा जोत जगायके, शब्द ज्ञान देवे धुन वजाए। प्रभ बैठा आपणा आप छुपा के, आदि अन्त ना किसे जताए। कलिजुग कर्म विचार के, जोत निरँजण नानक आए। गुर धुर दरबारे जायके, साचा नाम वक्खर पाए। विच मात भेख वटायके, नाम सच मन्त्र दृढ़ाए। सच सारंग राग वजायके, सुरत शब्द ज्ञान दवाए। कुन्ट चार चक्र लगायके, जीउ हउमे मैल गंवाए। बेमुखां पड़दा पायके, कुराहीआ आप अख्वाए। सच नाम नाम मन्त्र सच दे निरबाण बाण लगाए। शब्द सुरत प्रभ चरन ध्यान कर, अनन्द मंगल विच देह पाए। सच आत्म ब्रह्म ज्ञान कर, ब्रह्म सरूप विच ब्रह्म दे पाए। प्रभ पूरन परमेश्वर जान कर, जोत संग रिहा जोत मिलाए। साचा रथ पवन बबाण कर, ओअँ आपा भेव मिटाए। अन्तकाल झूठा तन छड्ड, साची जोत विच अंगद टिकाए। अंगद लगा अंग। साचा नाम ल्या मंग। मानस जन्म ना होया भंग। झूठी देह काची वंग। अमरदास गुरचरन उमंग। कर सेवा पाया परमानंद । धरी जोत विच उत्तम देह। अमृत बरखा विच आत्म मेंह। गुरचरन प्रीती साचा नेंह। वेदी दात विच सोढी दे। सोढ़ी विच अमर जोत जगाई । रामदास आत्म रुशनाई । हरि मन्दर सच धाम नींह रखाई । गुर अर्जन चल्लया दे वड्याई । बाणी बोहथ भगतन सहाई। तजी देह आत्म सुखदाई। जगत दीसे काया दुःखदाई। हरिगोबिन्द मिले वड्याई। उत्तम नाम गरां कराई। हरिराए हरिकृष्न मिले वड्याई। बिरध अवस्था तेगबहादर पाई। जोत दस्म धुरदरगाहों आई। साचा पन्थ चला के साची मति पाई। अमृत नाम रस पया के, आत्म जीव सुफल कराई। कड़ाह प्रसाद भोग लगा

के, सीत प्रसाद गुरसिख खवाई। मदि मास परे हटा के, गुर पूरे ना भोग लगाई। कोई रक्खे ना अग्गे टिका के, जिथ्थे बैठा जोत जगाई। पापी जीव भुल्ले गुर पूरा भुलायके, मदि मास रसना आहार बणाई। प्रभ साचा शब्द भुलायके, नाउँ कलंक गुर दस्म लगाई। जे वरजे कोई जायके, मुखो बोलन दसवें गुर रीत चलाई। बेमुखां मुख विष्टा पायके, कलिजुग देवे प्रभ सज़ाई। आया भेस वटा के, सर्ब सुखदाई। निहकलंक नां रखा के, नज़र ना आवे दीसे नाही। जावे कलि खपा के, ऐसी मार जगत प्रभ पाई। महाराज शेर सिँघ आप अख्वा के, सतिजुग बणे सचा रथवाही। जगत भुलाया भरम विच, कलिजुग मार्ग अनेक। जन्म गंवाया कुकर्म विच, इक्क रक्खी ना प्रभ की टेक। पीर पैग़ंबर गुर गुर जिन आत्म भए बबेक। कलिजुग जीव गए भुल्ल भुल्ल रुल रुल महाराज शेर सिँघ साची टेक। कलिजुग माया पा के, सर्ब भुलावे। साची जोत जगा के, झूठा जगत डुलावे। इक्क आपणा नाउँ उपायके, माण सभ गंवावे। चार वरन इक्क करा के, सोहँ शब्द इक्क जाप जपावे। जगत भेख सर्ब मिटा के, इक्क रंग सृष्ट हो जावे। साचा राह दसायके, सतिजुग साचा आप लगावे। बेमुखां अन्त खपा के, नर्क निवास दवावे। गुरमुखां दरस दिखा के, दरगाह साची माण दिवावे। प्रभ भरम भुलेखे लाह के, अन्तकाल सच दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ सोहँ नाम जपा के, कलिजुग जीव पार करावे। गुर पीर पैग़ंबर जीव कोई ना माने। आपणे आप कलिजुग बणे सुघड़ स्याणे। प्रगट जोत आप निरँकार, सर्ब चलाए वरताए आपणे भाणे। बेमुखां आई हार, सोहँ शब्द कलि चल्लया बाने। ऊँचा दिसे गुरचरन दरबार, चरनीं लगे राणे महांराणे। ईश्र जोत जोत आकार, विरला जन कोई भगत पछाणे। जिन्हां मिल्या शब्द आधार, सो जन जाणे गुण निधाने। भरम भुलेखे भुल्ला संसार, निहकलंक ना कोई पछाणे। कलिजुग बैठे माया धार, अन्तकाल दुःख डाहढे पाणे। बेमुखां कलि आई हार, धर्म राए लाए टिकाणे। महाराज शेर सिँघ सद निमस्कार, गुरसिख होए चरन निमाणे। कलिजुग धर जोत प्रभ माण सभन गंवाया। करे खेल आपणा झब्ब, निहकलंक देर ना लाया। गुरमुख पूरे लए लभ्भ, जिन्हां कलि मात चरन लगाया। आत्म दीवे गए जग, सोहँ शब्द जिन रिदे वसाया। अमृत बूंद गिरे विच नभ, नाभ कँवल प्रभ मुख खुल्हाया। दर्शन देवे विच्चो झब्ब, देह मन्दर विच डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ कलि ल्या लभ्भ, जिन्हां सिर प्रभ हत्थ टिकाया। भाणा जगत आप वरतावे। साचा प्रभ आप, दूसर कोई नज़र ना आवे। साची जोत कलिजुग प्रगटावे। खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब थाएँ रहावे। विच वरभंड प्रभ सदा समावे। झूठी देह जीव बन्न्ह बैठा दाअवे। साचा प्रभ साचा नेंह विच नज़र ना आवे। अमृत बरखा आत्म बरसावे मेंह, सोहँ शब्द जन रसना गावे। महाराज शेर सिँघ तेरा भेव, दर आए कोई विरला पावे। आवे दर जो मन धर हँकारा। अन्तकाल प्रभ पावे नर्क मँझारा। जो जन

३४८
०१

आवे कर आत्म विचारा। परमगति पावे, काल अन्त मिले मोख दुआरा। सोहँ शब्द सतिजुग भण्डारा। महाराज शेर सिँघ वरतावे निहकलंक अवतारा। तारनहार प्रभ तारया, पूरा गुरसिख। घर आए काज संवारया, साचे लेख जाए प्रभ लिख। गुरचरन छोहे कर हरि द्वारया, सीस निवाए मुन रिख। इन्द्र सिँघ ऊँचा दर दरबारया, साचा दान मिले गुर दर दे भिख। साची भिख्या आप प्रभ देवे। सतिजुग साचा सति पुरख सरेवे। गुण निधान मिले प्रभ अलख अभेवे। लिख्त निरबान जुग चार लिखेवे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख उधरे तेरे चरन सरेवे। प्रभ पूरन आस करा के, कलि दे वड्याई। आत्म धीर धरा के, सच लिख्त कराई। गुण निधान घर आयके, सतिजुग बणत बणाई। सिर हत्थ आप टिका के, सदा संग होए सहाई। आपणा आप उपायके, साचा शब्द गुरसिख सुणाई। महाराज शेर सिँघ दरस दिखा के, इन्द्र सिँघ कलि मिले वधाई। सचा गुरसिख कलिजुग, सिर चन्दोआ चन्दन। सचा गुरसिख कलिजुग, प्रभ मिल्या त्रैलोकी नंदन। सचा गुरसिख कलिजुग, प्रभ तोड़े अन्तकाल बंधन। सच्चा गुरसिख कलिजुग महाराज शेर सिँघ देवे अनन्दन। सेवा प्रभ की बिरथा ना जाए। अन्तकाल होए सहाए। प्रगट जोत आप रघुराए। भगत जनां होए हरि आप पित माए। मुख उज्जल चार वरन जुग चार कराए। प्रगट निहकलंक सभन माण गंवाए। जो जन आए दर, आत्म भुलेखे प्रभ देवे लाहे। साची जोत धरी प्रभ कल, निर्भय होए जगत भय रखाए। आगे कोए करे ना वल छल, हउमे संसा दे चुकाए। जगत ज्ञानी जे आवे चल, बुध मलीन प्रभ कराए। होए निमाणा जे होवे पल, आत्म सोझी प्रभ देवे पाए। अछल अडोल प्रभ भेखाधारी, बेमुख माया भरम भुलाए। गुरमुखां हरि पैज संवारी, दे दरस होए सहाए। दरस कर कर कर मन तृप्तास्सया। आत्म तृप्ती जीव अभलास्सया। प्रगट जोत आया, प्रभ सच कर वास्सया। हँकारीआं निन्दकां करे प्रभ दर नास्सया। कोई ना अड़े जो रसना लावे मदि मास्सया। भगत जन दर साचे खड़े, गुरचरन प्रीत जिन आत्म रास्सया। महाराज शेर सिँघ अवतार नर हरे, कलिजुग प्रगट करे बन्द खुलास्सया। जोत सरूपी अग्न बेमुख जलावे। मदि मासी गुरचरन कोई ठौहर ना पावे। भगत जन आए सरन, जिन प्रभ साचा नाम जपावे। बेमुख दर तों दूरों डरन, आत्म पाप विच्चों डरावे। गुरसिख मिल साध संगत तरन, महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे। गुरसिख गुरदर चाटड़, गुर दर्द दुहेला। किरपा कर प्रभ मेलया, मिले भगतन मेला। धार जोत प्रभ खेलया, कर अचरज खेला। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर गुरमुख साचा सज्जण सुहेला। निर्धन कर पार, गाए निराहारा। निर्धन देवे तार, समरथ पुरख आप करतारा। निर्धन पावे सार, कलिजुग होवे अन्त धुँधूकारा। निर्धन कर्म विचार, दरसावे सच्च दुआरा। महाराज शेर सिँघ भगत भण्डार, सोहँ देवे नाम आधारा।

३४६ ०१

❊ ११ विसाख २००८ बिक्रमी मोता सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ❊

साचा शब्द मन धार, गुरसिख ना भुल्ल। आत्म होए अधार, मिले नाम अमुल्ल। होवे शब्द धुन्कार, द्वार दसवें जाए खुल्ह। अमृत बूंद प्रभ झिरांयदा, विच्चों कँवल ना जाए डुल्ह। सच मार्ग प्रभ आप लगांयदा, कलिजुग अन्ध ना जाए रुल। साचा साहिब सच तख्त बहांयदा, गुरसिख जोत ना कोए तुल। बेमुख नज़र ना पांयदा, कलिजुग अंदर जाए भुल्ल। महाराज शेर सिँघ दे दरस, आत्म जंदर जाए खुल्ह। दे दरस मिटे अन्धेरा। ज्ञान जोत प्रभ दिसे नेरा। भगत जनां ना सञ्ज सवेरा। आत्म जोत प्रकाश, मिट जाए अन्धेरा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तराए, प्रगट जोत कलि पाए फेरा। जगत निरालम जोत प्रभ प्रकाशया। जोत सरूप सर्ब घट वास्सया। निहकलंक सद अबिनाशया। साध संगत गुरचरन दास्सया। भगत जनां आत्म प्रभ धरवास्सया। कलिजुग प्रगट सोहँ शब्द प्रभ सच सुणास्सया। कलिजुग अन्तिम वेद चार सर्ब विनास्सया। सतिजुग साचा आप प्रभ लाए, महाराज शेर सिँघ जोत प्रकास्सया। जोत जगाए जगत पित। गुरसिख तराए कर कलिजुग हित। जन भगत वड्याए प्रभ साचा मित। महाराज शेर सिँघ पार लँघाए जो रसना जप। अन्तकाल कलि निहकलंक अवतारी। सर्ब सृष्ट कलि होई अंध्यारी। शब्द सोहँ जगत खपावे दो धारी। जोत तराए कलि आप बनवारी। अडोल रहाए प्रभ जोत अधारी। सर्ब विच समाए प्रभ आप पसारी। बेमुख नज़र ना आए, हउमे विच्चों जीव ना मारी। भगत जनां हरि दरस दिखाए, प्रगट जोत सच दरबारी। साध संगत प्रभ माण दिवाए, नर नरायण भगत भण्डारी। गुर गुर गुर प्रभ विच समाए, एक जोत अचल आप निरँकारी। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारी। सृष्ट सबाई करे ख्वारी। जगत ख्वार मूर्ख मुग्ध गंवार। गुरमुखां अमृत वरखे आत्म धार। दे ब्रह्म ज्ञान आत्म सच विचार। जोत निरँजण कर अगम्म अपार। सोहँ शब्द सच जीव वणज वपार। साचा नाम होए सतिजुग अपार। सतिजुग प्रगटे प्रभ गिरधार। जोत सरूप आप निराधार। कँवल नैण साध संगत प्यार। महाराज शेर सिँघ कलि नर अवतार। कलिजुग धार जामा प्रभ। भगत जन दर ल्यावे लभ। अमृत वरखे विच्चों नभ। महाराज शेर सिँघ आत्म भेव मिटावे जीव सभ। भया भेख जगत अन्धयारा। प्रभ साचा वेख आत्म होए उज्जयारा। धुर लिखे लेख, मिल्या पुरख अपारा। सर्ब घट साचा वेख, जोत सरूप प्रगट संसारा। महाराज शेर सिँघ कलि तेरा भेख, मूर्ख मुग्ध ना जाणे सारा। कलिजुग अंदर प्रभ भेख वटाया। जोत सरूप विच सिख समाया। कलिजुग अन्तकाल कलि करने आया। ईसा मूसा मुहम्मद सभ नास कराया। खाण बाण गगन पताल प्रभ आण डुलाया। खण्ड ब्रह्मण्ड विच वरभंड प्रभ जोत जगाया। आत्म होए रंड, जिन्हां प्रभ दरस ना पाया। सोहँ शब्द दात जावे वंड, जिन्हां दर आ सीस झुकाया।

अन्तकाल ना देवे दंड, जिन्हां सिर प्रभ हत्थ टिकाया। बेमुख पकड़ कीने खण्ड, मदि मास जिस रसना लाया। गुरसिख उज्जल विच ब्रह्मण्ड, धाम बैकुण्ठ आसण लाया। कर दरस होए आत्म ठंड, जोत सरूप प्रभ जोत प्रगटाया। महाराज शेर सिँघ होए चंड प्रचंड, सोहँ बाण जगत लाया। सोहँ बाण शब्द जग लागे। राउ रंक सर्ब उठ भागे। गुरमुख कलिजुग सदा है जागे। मध मासी नर्क निवासी सदा अभागे। गुरचरन परसना सोहँ रागे। महाराज शेर सिँघ दे जोत आधार, कलिजुग सिख ना लागे दागे। कलिजुग खपाए आण प्रभ, निरँजण जोत प्रगटा के। कलिजुग खपावे आण प्रभ, जोत सरूपी भेख वटा के। कलिजुग आण आप भुलाए प्रभ, अछल छलन छल आप करा के। कलिजुग भगत आण तराए प्रभ, सोहँ साचा ज्ञान दवा के। कलिजुग दुष्ट खपाए आण प्रभ, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखा के। नाम साचा दर साचा पावे, हउमे ममता जन विच्चों मारे। कलिजुग होए ना जीव ख्वारे। ईश्वर जोत होए आत्म दुआरे। नैणीं पेखे प्रभ बनवारे। तीन लोक कर जोत आकारे। जीव जन्त होए आप भण्डारी। अन्तकाल कलि करे ख्वारी। हिन्द हिन्दवैण करे प्रभ दारी। चढ़के आए मुगल कंधारी। खण्डा चले जगत दो धारी। उप्पर ब्यास पए अन्त ख्वारी। वरते कहर जगत बिमारी। बिन प्रभ पूरे कोए लए ना सारी। कलिजुग प्रगट निहकलंक अवतारी। साचा शब्द लिखाए जगत लेख प्रभ लिखारी। महाराज शेर सिँघ जन भगतां प्रगट जोत पैज सवारी। सोहँ शब्द प्रभ डंक वजाया। राउ रंक कर इक्क बहाया। तख्त निवासी कोई रहण ना पाया। बैठ अडोल सभ जगत डुलाया। घनकपुर वासी कलि पाई माया। कलिजुग भाणा प्रभ आप वरताया। हाहाकार कर जगत रुवाया। सोहँ बाण जगत लगाया। जोत सरूपी जगत अग्न लगाया। राजन पकड़ बन्ह ल्याया। शब्द रूप प्रभ खेल रचाया। भय निर्भय होए दरस दिखाया। वाली हिन्दवैण बांहों पकड़ उठाया। अचुत पारब्रह्म परमेश्वर नज़री आया। शब्द धुन आत्म प्रकाशे, आपणा भेव आप खुल्हाया। साध संगत प्रभ सदा वासे, मिल संगत प्रभ दर्शन पाया। जोत सरूप सदा अबिनाशे, सृष्ट विनासी प्रभ लेख लिखाया। निहकलंक जोत प्रकाशे, वड भूप सरन लगाया। महाराज शेर सिँघ सर्ब सुख वासी, नाम निधान गुर दर ते पाया। कलिजुग पन्ध मुकायके, जगत चलंदा। आपणा कर्म कमायके, माया विच सभ जगत भुलंदा। जोत सरूप प्रभ आयके, निहकलंक कलि नाउँ रखंदा। ऊँच नीच भेव मिटायके, चार वरन इक्क करंदा। सतिजुग साचा प्रभ लायके, सोहँ शब्द जगत वरतन्दा। जग भरम भुलेखे भुलायके, माया रूपी पड़द पड़ंदा। महाराज शेर सिँघ नाउँ रखायके, विच साध संगत सुहंदा। सोहे जन प्रभ चरन दुआरे। जो चल आए तेरे दरबारे। भगत वछल प्रभ पार उतारे। गुरमुख सोहे हरि के दुआरे। बेमुख कलिजुग होए ख्वारे। मदि मास जिस रसन आहारे। साचा साहिब ऊँच दरबारे। महाराज

शेर सिँघ सोहँ शब्द खोल्हे भगत भण्डारे। गुरसिख रक्ख प्रभ मिलण दी आस। देवे दरस प्रभ दासन दास। साध संगत प्रभ कीना वास। गुरमुख उज्जल जिउँ चन्दन प्रभास। जीव कलिजुग मदि मासी सर्ब होवे नास। जोत प्रगटावे प्रभ कलिजुग अबिनाश। सोहँ नाम दिवाए, प्रभ सर्ब गुणतास। सोहँ जप जीव रसन स्वास स्वास। काल अन्त होए बन्द खलास। जगत ना होवे गर्भ वास। महाराज शेर सिँघ दुष्ट दूत सभ कीने नास। प्रभ जोत अपार जगत निराली। करे आत्म सुधार, मिले पुरख कलि बनवाली। मिले नाम अधार, दरस दिखाए प्रभ हिन्द वाली। चरन लाग होए दासन दास, कर निमस्कार पैज रखा ली। सच धाम गुरचरन निवास, झूठी माया जगत भुला ली। महाराज शेर सिँघ अपर अपार, कर दरस आत्म जोत जगा ली। आत्म जोत प्रभ आप जगावे। बुध बिबेक कर दरस हो जावे। सोहँ टेक सतिजुग रखावे। जाप एक चार वरन करावे। एक जोत एक शब्द प्रभ जगत सुणावे। साचा मार्ग सतिजुग तरावे। बेमुख कोए रहण ना पावे। सन्त जन निर्मल रसना हरि हरि गावे। अमृत फल गुर दर ते पावे। होए दरबान वांग सवरन तर जावे। नां चेत सिँघ जुग चार उज्जल करावे। गुरसिख पूरा सचखण्ड समावे। दिसे प्रभ हाज़र हज़ूरा, जम नेड़ ना आवे। साचा देवे नाम सरूरा, जोती जोत प्रभ जोत मिलावे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुरसिख तेरा नर्क ना जावे। निरँजण जोत जीव जग नाता। हिरदे वसे पुरख बिधाता। गुरमुख विरले कर दरस प्रभ पछाता। बेमुख जरम गंवाया, कर कर झूठी बाता। सोहँ शब्द प्रभ ज्ञान दवाया, गुरसिख जगावे राता। भगत जनां हरि पैज रखाए, आप बण पित माता। कलिजुग अंदर पार कराए, महाराज शेर सिँघ जिन जाता। जात पात ना प्रभ का रंग। ऊँच नीच वसे प्रभ सभ के संग। साचा नाम गुरसिख गुर दर ते मंग। आत्म धार अमृत वगे विच देह गंग। काज संवार प्रभ सोहँ शब्द आत्म चाढ़े रंग। महाराज शेर सिँघ कलि खुल्हा भण्डारा, कर बेनन्ती मूल ना संग। भगत भण्डारी कलिजुग आया। निहकलंक नां रखाया। चतुर्भुज प्रभ जोत प्रगटाया। सर्ब सृष्ट प्रभ माण गंवाया। जोत अग्न विच जगत जलाया। प्रभ अतोल, झूठा जगत कलि तुलाया। गुरमुख कर्म विचार, सोहँ नाम गुर झोली पाया। बेमुख कलि ख्वार, अन्तकाल नर्क निवास दवाया। अन्तकाल भगत जनां प्रभ लए सार, अन्तकाल होए सहाया। बेमुख डुब्बे लहिंदी धार, ऐसा धक्का कलिजुग लाया। भगत जनां दे जोत अधार, ज्ञान जोत हिरदा प्रभ आप कराया। बेमुख कलिजुग ख्वार, मदि मास आहार बणाया। गुरमुख सोहण सच द्वार, प्रगट जोत दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ जोत निराधार, निरवैर होए कलिजुग आया। निरवैर आप प्रभ निराधारी। प्रगटी जोत कृष्न मुरारी। सर्ब सृष्ट प्रभ आण सँघारी। शब्द बाण लाया दो धारी। गुरचरन प्रीत जीव कलि वड्डी सिक्दारी। आदि अन्त प्रभ की साची रीत,

भगत जनां हरि पैज सवारी । गुण निधान कलि परखे नीत, बेमुख डुब्बे विच मँझधारी। सोहँ शब्द जन रसना चीत, देवे दरस आप गिरधारी। साध संगत मिल गाउ प्रभ के गीत, प्रगटे जोत निरँजण निरँकारी। महाराज शेर सिँघ चरन लाग कलि जाए जीत, अन्तकाल ना होए ख्वारी। कलिजुग सुत्ता पैर पसार। जगत भुलाया माया धार। वेख कर्म प्रगटे कलि सिरजणहार। नाम धराए निहकलंक नर अवतार। शब्द चलाए दए धुन्कार। बेमुख सुण के हो जाए अफार। शब्द रुण झुण के गुरमुखां आत्म वज्जे धुन्कार। गुरचरन लाए कलि चुण चुण के, सोहँ देवे भगत भण्डार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आया साची कल धार। भगत अधारी आप प्रभ, सुत्त माण दिवाए। गुरसिख सुधारी आप प्रभ, हरि लाज रखाए। कलि नाम भण्डारी आप प्रभ, सोहँ नाम ज्ञान दिवाए। सृष्ट सबाई पसर पसारी आप प्रभ, अन्तकाल कलि लै खपाए। भगत अधारी आप प्रभ, दे दरस पार कराए। सच सवारी आप प्रभ, सचखण्ड रहाए। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल राउ रंक कलि इक्क कराए। रंक राउ जगत इक्क कराए। भरम भुलेखा सर्ब मिटाए। दे दरस प्रभ मन तृप्ताए। मिटावे हरस निजानंद समाए। दरस परस तोट रहे ना काए। अमृत मेघ प्रभ आत्म बरस, कूड़ी काया निर्मल कराए। महाराज शेर सिँघ कलि तेरा दरस, जन्म जन्म दी मैल गंवाए। गुर दरस कर मन हरयावला। बेमुख भुल्ला कलिजुग जीव बावला। धरे जोत विच कलि प्रभ सुंदर सांवला। महाराज शेर सिँघ सच तेरी जोत, जगत भुलावला। जुगो जुग प्रभ भगतन तारे। ऊँच नीच ना आप विचारे। ब्रह्म सरूप जीव आत्म ब्रह्म विचारे। भय भंजन समरथ दुःख दर्द निवारे। साची नाम दे वत्थ, देवे जीव अधारे। प्रगटी जोत प्रभ अकथ्थ, साचे दरबारे। बेमुखां पाए नत्थ, कलि करे ख्वारे। महाराज शेर सिँघ सिर रक्खे हत्थ, जो जन चरन निमस्कारे। चरन लाग मिले वड्याई। गुर मिल गुरसिख परमगति पाई। आवण जाण जग भेत मिटाई। जेठ सत्त सवरन प्रभ जोत जगाई। होए दरबान महां सुखदाई । मात कुक्ख कलि सुफल कराई । चार जुग मिले वधाई। अन्तकाल प्रभ आ होए सहाई। साची बणत विच आप बणाई। सचखण्ड चेत सिँघ जोत सवाई। माघ पहली प्रभ लिख्त कराई। विच साध संगत प्रभ दे वड्याई। गण गंधरब दर ल्या के, फूलन वरखा प्रभ कराई। पहले लिख्त करा के, फेर देह छुडाई। झूठी देह तजा के, साची जोत विच जोत मिलाई। मात पाताल तजा के, विच बैकुण्ठ प्रभ दे टिकाई। आपणा आप प्रभ उपा के, साची जोत सच धाम जगाई। गुर पूरा सेव कमायके, फिर जन्म ना पाई। महाराज शेर सिँघ रसना गुण गायके, कलि लै जाए भगत वड्याई। सेवा करे प्रभ जन तन मन। सृष्ट सबाई साचा शब्द रक्खे इक्क मन। साची दीपक विच देह जगाई, लाल अमुल्लड़ा कोई लाए ना संनृ। होए उज्जयार प्रभ पैज सवाई, अज्ञान अन्धेर जंदर

भन्न। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, नर अवतार जिस ल्या मन्न। नर अवतार कोए ना जाणे। जोत सरूपी जग आवण जाणे। तख्तों लाहे सभ राजे राणे। बेमुख पीड़े जिउँ कोहलू घाणे। साध संगत प्रभ विच समाणे। अन्तकाल दे दरस, बिठाए विच बबाणे। महाराज शेर सिँघ कर दरस, गुरसिख अन्तकाल जोत मिल जाणे।

✻ १२ विसाख २००८ बिक्रमी शिंगारा सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ✻

मिल्या पारब्रह्म प्रभ साचा गुर। मेल मिलाया जिहड़ा लिक्खया धुर। दर्शन लोचे प्रभ का सभ इन्द्र सुर। कलिजुग प्रीती गुरचरन जुड़। मानस जन्म जीव हत्थ ना आवे मुड़। कलि अंध्यार पापी, वहिण विच ना जाई रुढ़। महाराज शेर सिँघ खेल रचाए, धरत आकाश दोवें मेले पुड़। धरत धवल प्रगटे हरि, विच गुरसिक्खां घर। रूप बावन आए भेख कर। मंगे भिच्छया बल दर। सतिजुग साचा प्रगट अवतर। महाराज शेर सिँघ आदि जुगादी जोती नर। आदि जुगादि करे आत्म ध्याना। जन्त जीव प्रभ विच समाणा। भगतन देवे उत्तम नाम निधाना। दिखावे दरस उपजे ब्रह्म ज्ञाना। मिटावे हरस आत्म तृखा मिटाणा। अन्तकाल दिखावे दरस, जोती संग प्रभ जोत मिलाणा। गुरसिख कलिजुग कदे ना मरस, धाम बैकुण्ठ मिले टिकाणा। अमृत मेघ प्रभ देवे बरस, गुरमुख जाए विच बबाणा। निमाणयां उप्पर कीता तरस, आपणा बिरद आप पछाणा। महाराज शेर सिँघ सभ करसे, रक्खे लाज भगत भगवाना। जगत रोवे जीव बिल्लाए। हाहाकार मच्चे कलि थाएँ। अन्ध अज्ञानी झूठी काया लपटाए। प्रभ की जोत ना दीसन पाए। आदि जुगादि थिर रहाए। काया माटी जगत रहि जाए। भुल्ला जीव झूठी प्रीत बणाए। साचा साहिब ना रिदे समाए। आपणा आप ना बूझ बुझाए। गुरमुखां कलि सोझी पाए। झूठा काया वास, थिर ना रहाए। एक जोत प्रकाश, सचखण्ड डगमगाए। जिथ्थे गुरसिख निवास, फिर कदे ना आए। सतिजुग होवे प्रकाश, जीव जन्त रसना गाए। कलिजुग जीव होए अन्ध वास, आत्म हिरदा ना धीर धराए। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां पास, अन्तकाल कलि होए सहाए। कलिजुग होए जगत का मरना। गुरसिख प्रभ दरस कर तरना। आवण जाण जगत का हरना। गर्भवास फेर ना पड़ना। उत्तम चार जुग विच चहुं वरनां। दुःख निवास गुरसिख ना करना। जोत सरूप हत्थ सिर धरना। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, सति सति सति होए करना। सति सति वरते सति वरतावे। जोत सरूप महिंमा गणी ना जावे। बंस सरबंस प्रभ आण तरावे। गुरसिख उत्तम हँस सोहँ मोती चोग चुगावे। उत्तम धाम

तीन लोक न्यारा, जिथ्थे गुरसिख रहावे। महाराज शेर सिँघ सच करतारा, अन्तकाल दरस दिखावे। दरस कर जीव मन बिगासे। अन्तकाल प्रभ होवे पासे। निर्मल जोत ना होए उदासे। जमदूत सभ जायण नासे। करोड़ तेतीस सभ होए दासे। कलिजुग गुरसिख तेरे सुफल स्वासे। मात गर्भ फेर होए ना वासे। सर्ब विकार मन तन देह नासे। गुरचरन प्रीती आई रासे। सिर हत्थ टिकाए शाह शाबाशे। महाराज शेर सिँघ जन भगतां सदा है पासे। भगतन देवे आप वड्याई। रंग राता सर्ब सुखदाई। जीव बणत जिस आप बणाई। निर्मल जोत विच देह टिकाई। हड्ड मास नाड़ी पिंजर इक्क खेल रचाई। रक्त बूंद वाजा विच पवण वजाई। बैठ अडोल रिहा विच साचा रथवाही। निगम जोत दीपक देह जगाई। सो जन बूझे जिस प्रभ आप बुझाई। मूर्ख मुग्ध सार ना पाई। गुरसिख उधरे गुरचरन जिन सेव कमाई। कुन्ट चार निहकलंक तेरे नाम दुहाई। कर बेनन्ती सुधारे भाई। भाई सुणे पुकार दातार रघुराई। बेमुख होया प्रभ देह तजाई। छडा देह नाउँ कलंक ना लगाई। उधारे कलि जन्म, मानस फेर दवाई। महाराज शेर सिँघ कलि होए सहाई। तारनहार भगत जन तारे। साचा दरस दे अधारे। अमृत बरस प्रभ पार उतारे। जोत सरूप जगत चमत्कारे। कलिजुग प्रगट नर नरायण सच अवतारे। गुरमुखां भाउ भरम अग्न में डारे। साचा धर्म सोहँ नाउँ रसन उचारे। विचारे कर्म देवे दरस आप मुरारे। जीव ब्रह्म, ब्रह्म सरूप मिले करतारे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख सोहण तेरे चरन दुआरे। तीन लोक प्रभ दरस प्यासे। जोत सरूप कलिजुग प्रगासे। खण्ड ब्रह्मण्ड जिस होए दासे। आप अटल्ल सचखण्ड समासे। भगत जनां करे बन्द खलासे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख जीव तेरे चरन भरवासे। चरन अमृत न्यारा। जन भगतां देवे सच भण्डारा। पी अमृत जीव होए पार उतारा। प्रगटे जोत सरूप प्रभ कलिजुग निराधारा। मानस जन्म कलि माण दे, गुरसिख पार उतारा। सोहँ शब्द बबाण दे, गुरसिख दरसावे सचखण्ड दुआरा। निमाणयां प्रभ माण दे, जोती जोत मिलावणहारा। महाराज शेर सिँघ चार जुग आपणी आण दे, सोहँ शब्द चलाया भारा। कलिजुग गुरसिख बली बलवान। कर सेवा पारब्रह्म दरगाह पाया माण। किरपा करे आप प्रभ, पिता पूत दोए जोत मिल जाण। समरथ पुरख मिले रघुराता, रंग मजीठ आत्म चढ़ाण। प्रभ चरन प्रीती साचा नाता, जोत सरूपी विच समाण। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन्हां प्रभ पछाता, जाए बैकुण्ठ विच बबाण। महाराज शेर सिँघ पुरख बिधाता, भगतन मिल्या चतुर सुजान। कराए सुफल जन्म, भगतन नाम अधार दे। आत्म मिटाए भरम, सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञान दे। मैल उतारे प्रभ जन्म जन्म, कर दरस मन भांवदे। कलिजुग साचा ए वरतारा, मदि मास गुरसिख ना रसना लांवदे। सरन पड़े की प्रभ गुर सरन, गुरमुख जम डण्ड ना खांवदे। जन्म मरन प्रभ आप संवारया। सच दरबार विच बैकुण्ठ आकारया । जोत सरूप निराधार

३५५
०१

करे जोत आकारया। जगत जन आए गुरचरन निमस्कारया। पारब्रह्म परमेश्वर, देवे दरस आप मुरारया। भगत जन उत्तम सर्ब महेश्वर, कलिजुग नाउँ प्रभ आप उचारया। मिल्या जग ईश्वर, प्रभ देवे भगत भण्डारया। हरि सहाई सदा रखेश्वर, उत्तम करे विच संसारया। महाराज शेर सिँघ मानस जन्म चेत सिँघ संवारया। चेत सिँघ मन चेतन्ना, धरे मन प्रभ का नाउँ। संग कुटम्ब कोई हेत ना, सरन पड़े की लाज रखाउ। मात विंच कोई मीत ना, आपणा बिरद प्रभ आप रखाउ। कर सेवा पारब्रह्म गुर कलिजुग जीतना, महाराज शेर सिँघ जोत मिलाउ। मिल्यां जोत मिट गया अन्धेरा। सुफ़ल कराया जरम, फिर होए ना फेरा। गुरचरन प्रीती गुरसिख सरन, होए निमाणा होए प्रभ तेरा तेरा। महाराज शेर सिँघ लेखे लाया जरम, सचखण्ड किया वसेरा। सचखण्ड वसे प्रभ आप अमोला। सोहँ शब्द आत्म वज्जे अनहद ढोला। सच घर जाए वस्सया, छड्ड झूठा देह चोला। महाराज शेर सिँघ आवे नस्सया, जो जन चरन संग घोला। घोल घुमाए जीव आपणा आप। मातलोक होए वड प्रताप। सतिजुग जपे रसना तेरा जाप। भगत जनां प्रभ जाए थाप। होए सहाई आप बण माई बाप। गुरमुख उज्जल सतिजुग निर्मल ज़ात। गुर दर पाई सोहँ वड दात। हिरदे वस्सया जीव मार आत्म झात। मिट जाए अन्धेरा अज्ञान अन्धेरा ना आवे रात। अन्तकाल बिन हरि जी, जीव कोई ना पुच्छे वात। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे, गुरसिख वास ना पावे गर्भ मात। माण मोह प्रभ जगत तजाया। छुडाए देह विच जोत मिलाया। जोत सरूप पवण जोत मिलाया। जगन्नाथ गोपाल इक्क रंग समाया। सोहँ शब्द अनहद राग चलाया। उपजे धुन द्वार दस्म खुल्हाया। खुल्हे सुन आत्म अमृत आप प्रभ बरखाया। कलिजुग आप चुण चुण, गुरसिक्खां प्रभ चरन लगाया। उत्तम गुरसिख जन मुन, आपणा भेव प्रभ आप दिखाया। साचा शब्द जो धरे कन्न, राग अनाहद वेद सुणाया। कलिजुग जीव जो जाए मन्न, निहकलंक कलिजुग आया। गुरसिख बोले मुखो धन्न धन्न धन्न, महाराज शेर सिँघ जिस दरस दिखाया। दिखावे दरस सर्ब जीव जन्त। कलि ऊजल करावे प्रभ सोभावन्त। जोत प्रगटावे आप भगवन्त। जीव भुलाया जिस बणाई बणत। सोहँ नाउँ वड्डा गुर मंत। महाराज शेर सिँघ तेरी महिमा बेअन्त। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन्हां चरन सेव कमाई। दरगाह उज्जल होए मुख, प्रभ की सेव ना बिरथी जाई। उत्तम भए मनुक्ख जिन्हां प्रभ भए सहाई। हउमे गया विच्चों दु:ख, साची बूझ प्रभ आप बुझाई। कर दरस मन उतरे भुक्ख, उच्च पदवी गुर दर ते पाई। सुफ़ल कराई माता कुक्ख, सवरन सिँघ दर लए वड्याई। महाराज शेर सिँघ जीव उलटा रुक्ख, दे दरस साची मति पाई। हरि दरगाह पाया माण, जिन्हां प्रभ नाम चितारया। हरि दरगाह पाया माण, जिन प्रभ चरन निमस्कारया। हरि दरगाह पाया माण, कूड़ कुटम्ब जिन्हां विसारया। हरि दरगाह पाया माण, आपणा

३५६ ०१

आप जिन प्रभ तों वारया। हरि दरगाह पाया माण, साध संगत देवे खुल्हे भण्डारया। हरि दरगाह पाया माण, कर दरस प्रभ दरस द्वारया। हरि दरगाह पाया माण, आत्म भरम जिस निवारया। हरि दरगाह पाया माण, महाराज शेर सिँघ जिन रसन चितारया। दरगाह माण जगत वड्याई। वेद पुरान भगतन जस गाई। साचा प्रभ देवे वड्याई। गहर गम्भीर सर्ब सुखदाई। सोहँ नाम कुंजी तन जंदर लाई। विच देह धाम प्रभ दे दिखाई। निसफल जगत काम, प्रभ साचा चित ना आई। रसना सिमर हरि का नाम, अन्तकाल होए सहाई। सतिजुग होवे साचा धाम, सवरन देह जिस देह तजाई। पूरन होवे सारे काम, सच दरगाह मिले वड्याई। साचा पिया अमृत जाम, होए अमर अमरापद पाई। साध संगत सुण साचा नाम, सोहँ शब्द सतिजुग सुखदाई। महाराज शेर सिँघ जामा कृष्न राम, भरम भुलेखा देवां लाही। तारे जिउँ रामा नामा । कृष्न मुरारी भगत सुदामा। कलिजुग पहरया साचा जामा। भगतन देवे ब्रह्म ज्ञाना। विरले गुरमुख कलि प्रभ पछाणा। राउ रंक प्रभ करे इक्क समाना। महाराज शेर सिँघ देवे जोत तेज सर्ब भानन भाना। सर्ब लोअ सर्ब आकारी। सर्ब खण्ड प्रभ जोत अधारी। मातलोक आए निराधारी । ज़ात पात मिटावे पावे साची सारी। महाराज शेर सिँघ निमाणयां सोहँ कीती कारी। सोहँ दर नाम दे, आत्म दुःख मिटावे। साचा दरस प्रभ भगवान दे, आत्म तृप्त कराए। गुरसिक्खां सच ज्ञान दे, कलि चरनीं आण लगाए। महाराज शेर सिँघ सच बबाण दे, गुरसिख बैकुण्ठ धाम पुचाए। बेमुख दर ते नठ्ठदा, गुरसिक्खां चाउ घनेरा। बेमुख कलिजुग बद्धा गड्ड दा, कुन्ट चार दिसे हनेरा। गुरसिख चरन विच मथदा, दर्शन पायन सञ्ज सवेरा। महाराज शेर सिँघ गुरमुख तेरा चाटड़ा, दे दरस लाए ना देरा। रीत चलाई विच संसार। वरते वरतावे वरतणहार। गुरसिख तरावे आप कल धार। चेत सिँघ लै जावे, प्रभ बख्शे पंज हार। गुरमुख दित्ता तार, पंज हार हउमे विच्चों मार। आप अतुट्ट भर जाए भण्डार। सिँघ शिंगारा घर होवे सिक्दार। मदि मास ना होए अहार। रसना लाए कलि होए ख्वार। मदि मासी विगड़े प्रभ की मार । बेड़ा डुब्बे, ना आर ना पार। किरपा करे ते देवे तार। अवगुण पिछले प्रभ ना विचार। साध संगत मिल पाए प्रभ की सार। जगत जलन्दा रक्खे करतार। गुण निधान दे जाए नाम अधार। साची नीती गुरचरन प्यार। परमहँस पाए मोख द्वार। सोहे सरबंस जिस घर वसे शिंगार। महाराज शेर सिँघ तेरी अंस, जिन लागा तेरा चरन प्यार। अंस बंस वेखे प्रभ, देवे नेत्र सहँस। भगत जनां प्रभ लिखाए लेख, प्रगट जोत विष्नूं बंस। दे दरस कढ्ढ जाए भुलेखे, हँकारी मारे जिउँ काहना कंस। महाराज शेर सिँघ जुगो जुग जोत प्रगटावे, करे मूर्ति सहँस। मार मार मार, शब्द बेमुखां मार। तार तार तार प्रभ दे दरस गुरसिक्खां तार। वार वार वार जाउँ कलि गुर चरन बलिहार। अलख अभेवा वड देवी देवा, प्रगटे जोत विच संसार।

चरन सेवा उत्तम फल लेवा, चरन करो निमस्कार। महाराज शेर सिँघ सच बख्शे सेवा, सतिजुग सोहवे साचा दरबार। महाराज शेर सिँघ सुहाए थान, प्रगट हो निहकलंक अवतार। बेमुख मरे कुटम्ब बिल्लाए। गुरसिख मिले विच जोत हरे, साध संगत मिल मंगल गाए। मानस जन्म प्रभ सुफल करे, साची वस्त घर साचे पाए। सच शब्द ज्ञान धरवासा, रोग सोग कुटम्ब चुकाए। भगत जनां विच खण्ड सच वासा, ना मरे ना आवे जाए। प्रभ की जोत सदा प्रभ पासा, विच जोत मिलाए। महाराज शेर सिँघ दे धरवासा, गुरसिक्खां कोई रोण ना पाए। गुरमुख जगत कदे ना मरे। जोत सरूप जोत विच जोत प्रभ धरे। पाए महां सुख, दर दरबान हो दर अग्गे खड़े। उतरे आत्म सगल भुक्ख, भवजल पार तरे। मानस जन्म पाए सुफल मनुख, महाराज शेर सिँघ जिन सिर हत्थ धरे। कूड़ कृम कर्म क्रिया, प्रभ आप हटाया। गुरसिक्खां रोणा झूठा प्रभ कराया। गुरसिख बहिणा सच धाम, जो प्रभ बणाया। पेखो नैणां वेला अन्त, जा गुरसिख आया। दरस दान प्रभ देवे लहणा, पुष्प बबाणा विच बिठाया। सोहँ शब्द जीव आत्म गहणा, झूठा काया कप्पड़ तजाया। साचा तख्त जिथ्थे महाराज शेर सिँघ बहिणा, साध संगत मिल थान सुहाया। सोग मिटाए आण प्रभ, आप सच घर। भोग लगाए आप प्रभ, जाए भण्डारे भर। विजोग गंवाए आप प्रभ, आत्म धरवास धर। महाराज शेर सिँघ गुरसिख उधारे, कलिजुग लै अवतार नर। भाग होए प्रभ पाया। शब्द सुरत जित ज्ञान दवाया। उपजे ज्ञान, ध्यान गुर चरन लगाया। करे कराए सो प्रभ जो मन भाया। किरपा कर दुःख निवारे झब्ब, कर आस चरन जो आया। महाराज शेर सिँघ मिल साध संगत, सोहँ साचा नाम जपाया। जप जप रसना नाम रसायण। मिल साध संगत गुरदर गुण गायण। दर होए मंगत दरस दे प्रगट प्रभ नरायण। आत्म चाड़ साची रंगत, परसन दरस तेरा दोए नैण। सतिजुग तेरी होवे मन्नत, साध संगत मिल गुरचरनीं बहिण। महाराज शेर सिँघ गुरसिख जस भारा, जुग चार जीव नाम लैण। पति रक्खे पारब्रह्म, ढहि पए सरनाई। देवे दरस जोत अगम्म सरूप विच देह जलाई। पूरन होए काम, जगत तृष्ना ना आत्म तरसाई। शब्द सुरत निवारे भरम, चरन प्रीती प्रभ होए सुखदाई। आकार विकार साची आत्म करे करतार, महाराज शेर सिँघ होए सहाई। धन्न धन्न धन्न प्रभ धन्नया। साचा सच प्रभ कर मन्नया। घड़या जो अन्तकाल प्रभ भन्नया। सोहँ शब्द आत्म डेरा बन्नया। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखावे, देवे ज्ञान कलिजुग दे अन्नयां। ज्ञान गोझ आप खुल्हावे। जोत सरूपी हिरदे ठंड वरतावे। जगत तृष्ना ना जीव सतावे। महाराज शेर सिँघ रसना नाम सदा जीव रहावे। भाणा प्रभ मन धीरज धर। करे करावे आपे प्रभ हरि। थिर ना रहसी सर्ब जाए अन्त मर। सिँघ सवरन बैठा सच घर। देवे दरस ध्यान आत्म धर। संग होवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नर। देवे दरस कर भए बिलासा। शब्द

रूप कर जाए हासा। जीव विचारे झूठा जगत तमाशा। एक वखाए सोहँ शब्द भरवासा। महाराज शेर सिँघ रसना सिमर स्वास स्वासा।

✻ १२ विसाख २००८ बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड अमी शाह ✻

कर दरस प्रभ त्रैभवन सूज्झया। कलि विरले गुर दर बूज्झया। जन भगत हरि चरन संग लूज्झया। प्रगट कलि निहकलंक भेत खुल्हावे गूज्झया। ईश्र जोत अगम्म अपार, अवर ना दीसे दूज्जया। महाराज शेर सिँघ साध संगत साचा दर बूज्झया। प्रभ दरस सुरत मन होए। साचा दीपक विच देह बिलोए। बिन बाती बिन तेल सदा लोए। विच देह वसे वेखे जन कोए। जोत प्रकाशी वसे तिन्न लोए। भगत जनां मिटाए विच्चों दोए। साचे प्रभ बिन ना कलि मिलावा होए। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, गुरसिख दुआरा सोहे। कलि प्रगटे निहकलंक। सोहँ शब्द वजावे डंक। चरन लगावे सर्ब राउ रंक। जन भगत तारे कलि जिउँ त्रेता जनक। साचा प्रभ कलि जोत धरे, करो निमस्कार बार अनक। जोत धरी प्रभ कलिजुग अंदर, भगत जनां करे उज्जयारा। झूठी देह बणाए सच मन्दर, सोहँ दे ज्ञान भण्डारा। कुंजी खोल्हे आत्म जंदर। मूर्ख मुग्ध सार ना जाणे, साचा शाह वसे जीव अंदर। बेमुख नाचे साचा शब्द ना वाचे, महाराज शेर सिँघ दर तेरे बन्दर। साचा धाम जिथ्थे सिँघ आसणा। निहकलंक प्रभ कीना वासणा। भगत जनां प्रभ सद है पासना। सोहँ शब्द जपो स्वासणा। अन्तकाल जम पावे ना फासना। देवे दरस प्रभ अबिनासना । खण्ड सच गुरसिख तेरा वासना। बेमुख दुरमति दुराचार, गुरदर ते नासना। साध संगत सद बलि बलि जासना। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां चरन संग होए रासना। साचा प्रभ आपणा आप उपाए। आपणा भेव ना किसे जताए। आदि अन्त सर्ब थांए सुहाए। जुगो जुग मातलोक रहाए। खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब रिहा समाए। एक प्रभ ऊँच अगम्म, दूसर कोए नाहे। जो मात आए किरपा धार, दुखी जीव सभ बिल्लाए। सतिजुग होए मेहरवान, रिख मुन आण तराए। त्रेता राम अवतार, रावण अन्त कराए। निमाणयां दे माण, प्रभ घर भीलणी भोग लगाए। अहल्या दे तार, प्रभ सिला संग चरन छुहाए। हँकारीआं दे निवार, प्रभ राम नाम शब्द चलाए। सच जोत एक निरँकार, काया कोट विच रही समाए। प्रगट जोत आप रघुनाथ, त्रेता जुग जाए उलटाए। द्वापर कृष्न मुरार, सिर ते मुकट टिकाए। बिप्पर सुदामा तार, द्रोपती लाज रखाए। जुगो जुग प्रभ भगतां आण पैज रखाए। जिथ्थे कोए ना संग, उथे होए सहाए । अर्जन दे ज्ञान, गीता भेत खुल्हाए। मिले भगत भगवान धार जामा कलिजुग विच आए। हउमे कपट मार, महांसाथी

आप अख्वाए। जाए जुग उलटा के, यादव एह माण दवाए। कलिजुग होया अन्ध अंध्यार। प्रगटी जोत आप मुरार। वेद किताबां बाहरा, प्रगटे निहकलंक अवतार। भगतां दरस दिखांयदा। कल धारे विच संसार। बेमुख सूझ ना पांयदा, आपणे रंग रवे करतार। महाराज शेर सिँघ भेत खुल्हांयदा, लिखावे बचन जो जग वरतणहार। निहकलंक आप अख्वाए। वेद पुरान कोई रहण ना पाए। खाणी बाणी गगन पताली, जीव जन्त कोई रहण ना पाए। भगत जनां हरि दे वड्याई, आत्म साची जोत जगाए। कर दरस परमगति पाई। निर्मल जोत बाती दीप कराई। जगे दीप मिटे अन्धेरा, ज्ञान गोझ प्रभ दे बुझाई। सोहँ शब्द होए झुणकारा, अनहद शब्द दे वजाई। भुल्ले जीव कलि होए ख्वारा, गुरसिक्खां दस्म दुआर प्रभ दे खुल्हाई। प्रभ का भेत ना जाणे मूर्ख मुग्ध गंवारा, जोत सरूप विच जोत मिलाई। भरम भुलेखे भुल्ला संसारा, ना कोई जाणे निहकलंक जोत प्रगटाई। गुरसिक्खां सूझे प्रभ सच दुआरा, मिल गुर सोझी पाई। सोहँ देवे भगत भण्डारा, नाभ कँवल अमृत मुख चवाई। खुल्हे कँवल होए उज्जयारा, साची जोत विच देह जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ करे पार उतारा, अन्तकाल दरस दिखाई। कलिजुग प्रगटे प्रभ त्रैलोकी नंदन। भगत जनां तोड़े बंधन। गुरसिख उत्तम प्रभास जिउँ चन्दन। दे दरस गुरसिख तोड़े बंधन। महाराज शेर सिँघ गुरमुखां दीसे, बेमुख कलिजुग सारे अन्धन। अन्ध अन्धेर जगत विच पाया। अछल छलन छल कर आया। चतुर्भुज खेल रचाया। कलिजुग जीव प्रभ पाई माया। आत्म अंध्यार दीपक देह बुझाया। भुल्ले जीव कलि होए ख्वार, मदि मास आहार बणाया। धरे जोत निहकलंक अवतार, जोत सरूप नज़र ना आया। गुरमुख विरले पावे सार, जिस नूं साचा दरस दिखाया। कर दरस जीव उतरे पार, जन्म मरन दा फंद कटाया। कलिजुग देवे सोहँ दार, रसना जप जीव पार कराया। बेमुख होए अन्त ख्वार, साचा प्रभ नज़र ना आया। साध संगत प्रभ नाम अधार, रसना जप हरि हरि हरि घर मांहि पाया। मिल्या कलि सच भतार, निर्भय होए जगत विच आया। अमृत वरखे आत्म धार, अमृत झिरना निझरों झिराया। आत्म देवे प्रभ शब्द अधार, अज्ञान अन्धेर सभ मिटाया। भगत जनां प्रभ देवे तार, चरन आए जिन सीस झुकाया। कलिजुग प्रगट्या निहकलंक अवतार, चार वरन जिन इक्क कराया। साचा प्रभ देवे जोत अधार, ज़ात पात प्रभ भेत चुकाया। सोहँ शब्द दे अधार, सतिजुग साचा प्रभ राह चलाया। मदि मासी अन्तकाल होए ख्वार, नर्क निवास प्रभ आप दिवाया। अमृत छड्ड होए बेमुख, वाद विवाद रसना वधाया। महाराज शेर सिँघ सर्ब गंवाए दुःख, आए दर जिस दरस पाया। निराहारी निरवैर कलि आए। अन्तकाल कलि प्रभ दे कराए। सोहँ बाण जगत गुर लाए। प्रभ की जोत अग्न बेमुख जलाए। साध संगत प्रभ आत्म जोत करे रुशनाए। महाराज शेर सिँघ जो जन चले तेरे भाए, अन्तकाल विच होए सहाए।

३६० ०१

सुरत शब्द प्रभ देवे। कलिजुग प्रगटे प्रभ अलख अभेवे। कलिजुग प्रगट साचा नाम प्रभ सोहँ देवे। जोत सरूपी प्रभ किए भरेवे। महाराज शेर सिँघ तेरा नाम, विरला गुरसिख सरेवे। भगत जन सोहण हरि दुआरे। दे दरस प्रभ पार उतारे। एक जोत धरी निरँकारे। सर्ब सृष्ट प्रभ आण सँघारे। निहकलंक कलि लै अवतारे। साचा शाह दिसे सच दरबारे। राउ रंक खड़े प्रभ चरन दुआरे। जुगो जुग प्रभ लै अवतारे। भगतन कारन करे प्रभ खेल न्यारे। देंदा ज्ञान बाल अवस्था, धू प्रभ तारे। लज्जया रक्खे प्रहलाद, नर सिँघ प्रभ लै अवतारे। भेख धार जग आ गया, बावन रूप खड़ा बल दुआरे । भगत उधारन जग आ गया, चक्र सुदर्शन बाण दुरबाशा रिख मारे। जनक भगत वड्या गया, रहाए जीव नर्क मँझारे। दे दरस जोड़ी जोड़ मिला गया, लज्जया रक्खे राणी तारे। घर बिदर भोग लगा ल्या, छड्ड दुर्योधन महल मुनारे। सुदामे तन्दल भोग लगा गया, चरन कँवल प्रभ करे निमस्कार। द्रोपती लज्जया प्रभ आप रखा गया, बस्त्र उतरे ना कोट उतारे। गुण निधान घर आ गया, लेख लिखाए अपर अपारे। रविदास चुमार तरा गया, लै कसीरा विच गंगा धारे। प्रभ सदना सैन तरा गया, धार रूप जाए बल दुआरे। प्रभ नामदेउ दरस दिखा गया, भोग लगाए दूधा धारे। धन्ना जट्ट तरा गया, छन्ना छाछ लाए मुख दुआरे। गनका पापण पार करा गया, साचा नाम रसन उचारे। पापण पूतना जगत तरा गया, मोहण मुम्मे पाए कृष्न मुरारे। बधक गले लगा ल्या, चरन कँवल बाण जो मारे। जुग चौथे खेल रचा ल्या, निहकलंक प्रभ लै अवतारे। अथर्बण वेद माण गंवा गया, वेद चार अन्त कलि हारे। कुरान अंजील वक्त मुका ल्या, ईसा मूसा मुहम्मदी पार उतारे । गीता वक्त मुका ल्या, मिले शब्द शब्द विच घारे। खाणी बाणी भरम मिटा ल्या। प्रगट जोत आप गिरधारे। जुग चौथा अन्त करा ल्या, चार कुन्ट होए हाहाकारे। कलि साचा शब्द चला ल्या, सोहँ नाउँ प्रभ रसन उचारे। सभ जगत भेख मिटा ल्या, एको दीसे सच दरबारे। राउ रंकां चरन लगा ल्या, राणयां महाराणयां हँकार निवारे। हिन्दवैण चरनीं ढाह ल्या, दे दरस अगम्म अपारे। कलि भरम भुलेखा लाह ल्या, साची जोत आई कल धारे। प्रभ जामा शेर वटा ल्या, जोत सरूपी होए चमत्कारे। गुरसिक्खां रसनी गा ल्या, अनहद शब्द वज्जे धुन्कारे। निजानंद प्रभ तृप्ता ल्या, आत्म जोत करे उज्जयारे। साचा शाहो विच्चों देह पा ल्या, बैठा जो कर पसर पसारे। बेमुखां मुख छुपा ल्या, शांत ना आए गुरचरन दुआरे। गुरसिक्खां हउमे रोग गवा ल्या, आत्म बरखे अमृत धारे। प्रभ साचे थान सुहा ल्या, साध संगत मिल करे मंगलचारे। महाराज शेर सिँघ भगत वड्या ल्या, साचा नाम दे अधारे। साचा नाम साचे प्रभ दिया। आत्म निर्मल उत्तम जिया । बिन बाती बिन तेल जगाए आत्म दिया। जोत सरूपी खेल अचरज प्रभ किया। सतिजुग साची कलि रखाए प्रभ नींआ। सोहँ नाम जप, प्रभ मिलन

३६१
०१

का हिया। अमृत नाम निधान, गुरसिक्खां गुर दर पिया। होए सुघड़ सुजान, जिन्हां प्रभ दर्शन दिया। कलिजुग मिल्या फल, पूरब जन्म बीज जो बीआ। मानस जन्म सुफल कल, महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरा किया। खण्ड सच वसे निरँकार। जोत जगे प्रभ अपर अपार। उनन्जा पवण सिर छत्र झुलार। ब्रह्मा विष्न महेष प्रभ खड़े दरबार। ईसा मूसा मुहम्मद कर रहे पुकार। कलिजुग जामा धारया, जोत सरूपी निहकलंक अवतार। करोड़ तेतीस सुहावंदे, इन्द्र दरबार। आत्म सर्ब ध्यावंदे, दे दरस प्रभ निराधार। कलिजुग जामा धारया, प्रगट जोत आप निरँकार। जुग चौथा पार उतारया, निहकलंक लवे अवतार। महाराज शेर सिँघ नाम रखा ल्या, गुरमुख पावे पूरन सार। कलिजुग जोत प्रभ साचा धरे। दीसे जोत इक्क नर हरे। तरे सो जन जो प्रभ सरनी परे। कर दरस जीव मात ना देह धरे। गर्भवास फेर ना परे। जोत मेल प्रभ जोत सरूप करे। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां मिल्या आसा वरे। कुकर्म कर्म कलिजुग विचारया। जोत सरूप कलि जामा प्रभ धारया। दुष्ट दुराचार शब्द मार बाण सँघारया। निरँजण जोत कलिजुग होए उज्जयारया। भगत जन सोहण गुरचरन द्वारया। बेमुख कर रहे हाहाकारया। बिन गुर पूरे ना किसे पार उतारया। मदि मास अहार रसन बणा ल्या। होए देह अंध्यार, साचा शाहो बेमुख भुला ल्या। भगत जना हरि देवे माण, बांहो पकड़ कलिजुग तरा ल्या। अन्तकाल दे दरस, विच पुष्प बबाण बिठा ल्या। आवण जावण तोड़ हरस, प्रभ विच जोत मिला ल्या। अमृत झिरना निझरों बरस, आत्म शांत करा ल्या। भगत निमाणयां कर प्रभ तरस, खण्ड सच बहा ल्या। बेमुख पाए नर्क, साचा प्रभ जिन्हां भुला ल्या। कलिजुग जीव अन्त कलि होए गरक, सोहँ बाण शब्द गुर ला ल्या। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, माया रूपी जगत भुला ल्या। भरम भुलेखे जगत भुलाया। आपणा आप प्रभ आप छुपाया। जोत सरूपी कलि खेल रचाया। शब्द बाण सोहँ प्रभ चलाया। चार कुन्ट हाहाकार मचाया। दुखी जीव सभ बिल्लाया। भगत जनां दरस दिखाया। दे ब्रह्म ज्ञान हिरदक साची जोत जगाया। जगे जोत होए उज्जयारा, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाया। उपजे धुन होए धुंनकारा, अनहद शब्द प्रभ विच देह वजाया । झिरना झिर अमृत बूंद, नाभ कँवल विच पाया। खुल्हे कँवल जोत प्रकाशे, दस्म दुआर प्रभ आप खुल्हाया। खुल्हे द्वार मिले गिरधार, निजानंद जीव निज मांहि पाया। कलिजुग प्रगट महाराज शेर सिँघ भगत जनां दर घर हरि दरस दिखाया। प्रगटे प्रभ वेखे लोकाई सभ। गुरसिख विरले कलि ल्या लभ्भ। किरपा कर झिरना झिरावे विच प्रभ नभ्भ। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी जोत प्रगटावे झब्ब। साची जोत कलिजुग प्रगासे। सृष्ट विनासी प्रभ सद अबिनाशे। गुरसिक्खां प्रभ देवे सोहँ शब्द धरवासे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख जीव तेरे चरन भरवासे। चरन कँवल गुरसिख रंग माण। कलिजुग प्रगट्या प्रभ निताणया ताण। निहकलंक देवे रंकां माण।

राउ प्रभ चरन लग जाण, वरन चार अन्तकाल इक्क हो जाण। सोहँ शब्द चले, सतिजुग साचा निरबाण। गुरसिक्खां प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञान । चरन प्रीती देवे आत्म ध्यान। दिखावे दरस प्रभ विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ गुरसिख कलिजुग होए चतुर सुजान । गुरमुख चातृक हो बिल्लाया। कर भेख जोत सरूप प्रभ कलिजुग आया। जुगो जुग विछड़िआ, अन्त कलिजुग प्रभ मेल कराया। जोत सरूपी प्रभ अनडिठड़िआ, जो कोई वेखे तां नज़र ना आया। सोहँ शब्द मिले सिख मिठड़िआ, ज्ञान जोत हिरदा प्रभ आप कराया। बेमुख कौड़े कलिजुग जिउँ रीठड़िआ, निहकलंक ना दरस दिखाया। होए ना मेल जो कलिजुग विछड़या, प्रभ अबिनाशी भेत खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ मेटे दु:खड़यां, चरन आए जिस सीस झुकाया। कलिजुग भाणा प्रभ वरताया। जगत भगत किसे विरले दरसाया। मुग्ध गंवारां दुष्ट दुराचारां प्रभ भेव ना पाया। गुरसिक्खां बलिहारा चरन निमस्कारा, जिन प्रभ साचा पाया। बेमुख कलि होए ख्वारा ना दीसे दरबारा, गुर पूरे मुख भवाया। महाराज शेर सिँघ तेरा सच दरबारा, मिल साध संगत हरि जस गाया । गुर पूरे प्रभ बूझ बुझाए। शब्द सुरत दे आत्म जगाए। अनहद शब्द राग उपजाए। पवण सरूप प्रभ मात आकाश मेल कराए। साची भाख्या गुर गोबिन्द लिखाए। साखी सभ इक्क बणत बणाए। निहकलंक अवतार, अन्तकाल विच मात दे आए। सृष्ट दर सँघार, साचा मार्ग लाए। जुग चौथा कलि नास कर, वाहवा सतिजुग साचा लाए। प्रभ आपणी जोत प्रकाश कर, खण्ड ब्रह्मण्ड दे उलटाए। ब्रह्मा चरन निवास कर, अन्त ब्रह्मा दे कराए। भगत वड्डा गुणतास कर, ब्रह्मलोक सिँघ पाल बिठाए। ध्रू चरन निवास कर, साची जोत विच मिल जाए। सवरन आपणा दास कर, साचा दर दरबान बहाए। निहकलंक कलि जोत प्रकाश कर, भगत जनां हरि हरि माण दवाए। लहणा सिँघ आपणा दास कर, बंस आपणा गया तराए। विच पताल प्रभ नैण मुँधार। बाशक सेजा सुत्तां पैर पसार। लच्छमी झस्से चरन अपार। विच मात आया आप करतार। निहकलंक पूरन अवतार। सृष्ट सबाई मारे कर ख्वार। कुन्ट चार मच्च जाए हाहाकार। जीव जन्त सर्ब होए ख्वार। प्रगटे पारब्रह्म परमेश्र ना पाई सार। माणस जन्म गंवाया कलिजुग मूर्ख मुग्ध जीव गंवार। कँवल नैन मुकट बैन जोत सरूपी कृष्न मुरार। आप अपरम्पर जोत सरूपी किया आकार। खण्ड ब्रह्मण्ड गगन पाताल प्रभ जोत चमत्कार। दुष्ट मलेश अन्तकाल करे ख्वार। अंज़ील कुरानी दीनी प्रभ दित्ते मार। वेद अथर्बण अल्ला नाउँ उतरया पार। एक जोत कलि प्रगटे प्रभ एकँकार। सोहँ शब्द जुग चार होए वड्डा सिक्दार। सतिजुग वरते सति सति सति गुण विचार। राउ रंक वसे जगत इक्क सार। जीव जीव जीव प्रभ देवे इक्क साचा नाम अधार। महाराज शेर सिँघ तेरे भाणे, सतिजुग आवे सति कल धार। सतिजुग वरते सुच्च सच। बेमुख जाए विच अग्न मच्च। सोहँ नाम विच आत्म

रच। झूठी काया कंचन कच्च। गुरचरन लाग कलि जाए बच। महाराज शेर सिँघ भगत तरावे आदि जुगादी सच। आदि जुगादि भगतन संग। कर दरस प्रभ, साचा नाम दान मंग। मिटाया हरस सभ, मानस जन्म ना होवे भंग। कर तरस प्रभ, आत्म चाढ़ मजीठी रंग। अमृत बरख प्रभ विच देह वगाए गंग। कलिजुग प्रभ जोत धर, जोत सरूपी किया जंग। महाराज शेर सिँघ कलिजुग खपाया, जोत सरूपी वसे विच वरभंड। कलिजुग माया जीव जन्त भुलाया। साचा साहिब जीव विच्चों नज़र ना आया। झूठे धन्दे लाग मानस जन्म गंवाया। गुरचरन प्रीती मिले वडभाग, कर दरस मानस जन्म सुफ़ल कराया। अनहद शब्द उपजे राग, आत्म सुन प्रभ खोल्ह वखाया। सोया हिरदा जाए जाग, साचा शब्द प्रभ सुणाया। आत्म निर्मल ना लागे दाग़, रसना हरि हरि हरि गुण गाया। साचे प्रभ तेरे हत्थ वाग, चौथा जुग आए खपाया। रक्खे सेज उप्पर बाशक नाग, सिँघ सिँघासण डेरा लाया। जो जन जाए चरन लाग, अन्तकाल कलि आए तराया। भोग लगाए अलूणे साग, भगत जनां हरि रक्खदा आया। सिँघ करनैल तेरे जागे भाग, प्रगटे जोत निरँजण राया। बेमुख भौंदे जिउँ सुंञे घर काग, गुरसिख पूरे प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाया। जोत सरूपी कलि वरते सांग, आपणा आप कलि छुपाया। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, कलिजुग आप जो करे कराया। करे करावे आप प्रभ समरथ। महिंमा प्रभ दी कोई जीव ना जाए कथ। साचा शब्द ज्ञान दे चल्लया प्रभ साची वत्थ। गुरचरन सद रहे ध्यान, लेख लिखाया विच सच मथ। गुरमुखां मिल्या कलि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख नचाए नक्क पा नत्थ। राजन राज सच पातशाहो। कलिजुग प्रगट्या प्रभ आप बेपरवाहो। धरे जोत सुहाए थांउँ। सोहँ शब्द चलाई घर साची नाओ। रसना जप गुरमुख कलि पार पराओ। मिल साध संगत रसना हरि हरि गाओ। भगत वछल अनाथ अनाथे आत्म दरसाओ। सगल प्रभ साथ, चरन कँवल विच समाओ। रक्खे सिर हाथ, अन्तकाल जम पुरी ना जाओ। सतिजुग चले प्रभ की साची गाथ, सोहँ शब्द रसना गाओ। महाराज शेर सिँघ प्रगटे त्रैलोकी नाथ, कर दरस मन चिन्दया फल पाओ। आत्म चिन्दया प्रभ करे दूर। प्रगट जोत बैठा हाज़र हज़ूर। साचा प्रभ साचे घर वसे, ना नेड़े ना दूर। साचा नाम आत्म रस रसे, आत्म शब्द होए भरपूर। महाराज शेर सिँघ साचा राह दस्से, सोहँ शब्द जप रसन सरूर। रसना जप राम रमईआ। कलिजुग प्रगट्या कृष्न घनईआ। रक्खे पति लज जग दवईआ। सोहँ शब्द कलिजुग साची नईआ। महाराज शेर सिँघ सद भगतन केरा, आप पित मईआ। मात पित प्रभ भगतन केरा। दे दरस मिटावे अज्ञान अन्धेरा। प्रगट जोत कलि पाया फेरा। जुग चौथे कलि ढाया ढेरा। उलटा गेड़ जोत सरूप जगत का गेड़ा। बेमुखां मँझधार प्रभ रोढ़या बेड़ा। साचा वर गुरसिख विरले कलिजुग सहेड़ा। अन्तकाल महाराज शेर सिँघ दे दरस कर

जाए नबेड़ा। दरस आस जो जन करे। देवे दरस आप प्रभ नर हरे। कर दरस विच्चों हउमे हँकार मरे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, घनकपुरी सच जोत धरे। गुर किरपा ते अमृत पाया। पी अमृत आत्म तृप्ताया। हउमे विच्चों रोग गंवाया। रतन अमोलक विच्चों देह पाया। अज्ञान अन्धेर मिटा भरम चुकाया। अचुत्त पारब्रह्म परमेश्वर मधि माधो घर मांहि पाया। निराहार निरवैर अछल अडोल बैठ सिँघ सिँघासण आत्म पाया। गुरसिक्खां उत्तम दात गुर पूरे गुरसिक्खां मुख चुआया। पी अमृत जाए नस्स, गर्भवास फेर सिख ना आया। आत्म होए प्रकाश, साची दीपक विच देह जगाया। साचा मिल्या प्रभ अबिनाश, तीन लोक जिस जोत जगाया । वसे विच पताल आकाश, मातलोक प्रभ जोत प्रगटाया। साध संगत प्रभ होया दास, छड्ड बैकुण्ठ विच सिख समाया। तिस साहिब कउ बलि बलि जास, जिस ने आपणा बिरद रखाया। रसना जप जीव स्वास स्वास, ज्ञान ध्यान गुरचरन लगाया। सचखण्ड अन्त होए वास, जोत सरूप लए विच जोत मिलाया। ईश्र जोत सद अबिनाश, विनासी देह जिस संग प्रीत लगाया। सोहँ शब्द साची धरवास, जिस संग मेल कराया। काम क्रोध हो जाए नास, गुर दर आए जिस दर्शन पाया। गुरमुख जोत जगाए विच आकाश, जिथ्थे बैठ डगमगाया। साचा आप साची रहिरास, जोती जोत होए जोत रुशनाया । जोत सरूप निरँजण दे वास, आपणा आप प्रभ आप उपाया। भगत जन सोहण गुरचरन पास, अमृत भण्डारा प्रभ आप खुल्हाया । महाराज शेर सिँघ जिथ्थे तेरा वास, ना कोई आवे ना आवे जाया। लज्जया रक्खण भगत जन, जुगो जुग प्रभ खेल रचाया । कलिजुग जामा धार, छड्ड देह निहकलंक अख्वाया। निगम कर विचार, विछड़यां प्रभ मेल कराया। कलिजुग दित्ता तार, सोहँ साचा ब्रह्म ज्ञान दवाया। गुरसिख कदे ना आवे हार, सिर रक्खे हत्थ आप रघुराया। जम पुरी ना खावे मार, अन्तकाल प्रभ होए सहाया। जोत सरूपी दे दरस अपार, गुरमुख साचा विच जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ भगत उधार, दे दरस गुरसिख तराया। सृष्ट सबाई पसर पसारा। जोत सरूपी लए अवतारा। एक जोत तीन लोक आकारा । माया रूपी पसर पसारा। हरि रंग मिले जन भगत प्यारा। कलि सूझे जिस वड दरबारा। जिथ्थे बैठा प्रभ निरँकारा । खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब गुरचरन दुआरा। विच वरभंड प्रभ देवे जोत आधारा। जीव आत्म होए रंड, मिले ना पुरख अपारा। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल कलि देवे दंड, रसना नाम ना जिन्हां उचारा। चरन प्रीती दान दे, ढहि पया दुआरे। दर आपणे साचा माण दे, होए दरस अपारे। प्रभ पूरन ब्रह्म ज्ञान दे, आत्म दीप होए उज्जयारे। गुरचरन प्रभ साचा ध्यान दे, सीस झुके तेरे दरबारे। सोहँ शब्द धुन विच कान दे, अनहद वज्जे विच देह अंध्यारे। सोहँ नाम सच पहनण खाण दे, एक टेक होए प्रभ चरन दुआरे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कर किरपा गुरसिख तार दे। गुरप्रसादि

३६५
०१

गुर पूरा पाया। गुरप्रसादि गुर भेंट चढ़ाया। गुरप्रसादि साचे गुर हिरदे हरि वसाया। गुरप्रसादि लिक्खया धुर, कलि आ आप प्रगटाया। गुरप्रसादि गुरचरन संग जुड़, आत्म पड़दा लाहया। गुरप्रसादि गुरमुख पूरे आत्म गोझ विच देह रखाया। गुरप्रसादि किरपा कर गुर पूरे भरम भुलेखा लाहया। गुरप्रसादि, आदि जुगादि साची दात प्रभ देंदा आया। गुरप्रसादि अगम्म अगाध कलिजुग जोत प्रगटाया। गुरप्रसादि होए आत्म अनाद, महाराज शेर सिँघ साचा प्रसादि गुरसिख तेरी भेंट चढ़ाया। सति प्रसाद देवे वड्याई, दे प्रसाद सुफल कुक्ख कराई। प्रगट जोत प्रभ भए सहाई। महाराज शेर सिँघ कलि तेरी वड वड्याई। वड्डा वड आप प्रभ दाता। विरले गुरमुख किसे पछाता। झूठी सृष्ट झूठी माया, गुरचरन प्रीती साचा नाता। महाराज शेर सिँघ दर परखे नित्त, गुरसिख पूरा पकड़ पछाता। नीत अतीत सरजीत गुरचरन प्रीत। साचा साहिब जीव आत्म चीत। मातलोक प्रभ मिलण दी रीत। जप नाम, झूठा जग जाए जीत। देवे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म होवे सीत।

✳ १३ विसाख २००८ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ✳

रसना जीव सोहँ गाए। काल कंटक नेड़ ना आए। अन्तकाल कलि माया ना सताए। महाराज शेर सिँघ सर्ब थांए होए सहाए। होए सहाए प्रभ आप। साचा जपे जो जन जाप। प्रगट भए आप विच मात। साची देवे भगतन दात। महाराज शेर सिँघ उत्तम करे गुरसिक्खण ज़ात। ज़ात पात गुरसिख न्यारा। हिरदे वसे आप निरँकारा। अमृत बरखे विच आत्म धारा। मैल ना लागे निर्मल देह अपारा। इक्क रंग रवे जगत संसारा। महाराज शेर सिँघ देवे जोत अधारा। इक्क कराए भरम गंवाए। चरन लगाए होए कृपाल, चुरासी गेड़ कटाए। सच सुच्च विच देह वरताए। निजानंद रिहा समाए। कलिजुग प्रगट दीन दयाल, सोहँ साचा नाम जपाए। प्रगट हो के दरस दिखाए, आपणा भेव आप खुल्हाए। साचा सतिगुर भगत वसाल, इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तजाए। बैकुण्ठ सिँघासण छड्ड प्रभ आए। भगत जनां विच प्रभ जोत प्रगटाए। भगत वछल आप कृपाला, नाम निधान झोली पाए। जगत भुलेखे सारे लाहे, जिउँ बावन बल आण तराए। कलिजुग तोड़े आण ज़ंजाल, जन्म कर्म प्रभ सुफल कराए। साचा वरन गुरसिख लिखाए, आदि अन्त प्रभ होए सहाए। महाराज शेर सिँघ सद है नाले। साचा सतिगुर सर्ब सुखदाई। प्रगट होवे पैज रखाई। दे दरस आत्म तृखा बुझाई। टुट्टी गंढुणहार टुट्टी गंढु वखाई। जगन्नाथ गोपाल कलि होए सहाई। महाराज शेर सिँघ देवे धन माल, सोहँ शब्द जीव रसना गाई। सोहँ जपाणा साचा

नाउँ। साची दरगाह पावे थाउँ। एक समान रंक राउ। जिथ्थे वसे प्रभ बेपरवाहु। अलख अभेव भेव लखा ना जाउ। कर किरपा गुरसिक्खां प्रभ दे जणाउ। महाराज शेर सिँघ सोहँ साचा दे कलिजुग नाउँ। एक नाम कलिजुग निरँजण। जप मिले भय भंजन। कर धूढ़ साचा जग मजन। महाराज शेर सिँघ निमाणयां तोड़ जाए बंधन। गुरसिक्खां प्रभ तोड़े बंध। हँकारीआं निन्दकां गल फाही फंद। मदि मास विष्टा मूंह गन्द। गुरसिख नाम जप, मन भए अनन्द। आत्म जान मिले प्रभ परमानंद। कलिजुग मिल्या प्रभ साचा बख्शंद। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां खोल्हे आत्म जंद। आत्म देवे प्रभ उज्जयारा। जोत जगावे अपर अपारा। भगत वछल प्रभ गिरधारा। निर्धन आए लए प्रभ सारा। नर्क निवारी निन्दक दुष्ट दुराचारा। पुन्न पाप प्रभ कर्म विचारा। गुरमुख सजाए सच दरबारा। जिथ्थे वसे आप प्रभ निरँकारा। बैठ अडोल जोत जगावे विच संसारा। जोत अमोल त्रैभवण होए आकारा। आत्म नेत्र खोल्ह भगत जनां दे दरस अपारा। बेमुख देवे कौड़े बोल, दर आए जाए झक्ख मारा। अन्तकाल कलि मारे रोल, कलिजुग मिले ना कोए सहारा। भगत जनां सद है कोल, रक्खे लाज आप मुरारा। गुरसिख आत्म सदा निरोल, सोहँ शब्द पार उतारा। महाराज शेर सिँघ जीव वसे कोल, देह दीपक जिस किया उज्जयारा। कलिजुग जीव करे वड्याई। हउँ हउँ मैं मैं विच वसाई। प्रभ पूरे की सार ना पाई। जिस ने साची बणत बणाई। गर्भ वास होए सहाई। जगत माया बुध मलीन कराई। भांत भांत बिख रसना रस खाई। आत्म रस विरला गुरमुख निज मांहि पाई। कूड़ कुड़ावे भुल्ली लोकाई। गुरसिख प्रभ का नाउँ दिवस रैण रसना गाई। अन्तकाल कलि आ गया, प्रगट जोत बैठा रघुराई। सोई थान सुहा गया, जिथ्थे प्रभ बैठे आसण लाई। साचा वणज करा गया, सच शब्द सोहँ नाम दिवाई। नीचो ऊँच करा गया, गुरचरन नाल बणत बणाई। जुग चार नाम रखा गया, साची लिख्त प्रभ आप कराई। चार कुन्ट जै जै जैकार करा गया, निहकलंक जिस तेरी सेव कमाई। प्रभ प्रगट उत्तम फल लगा गया, कलिजुग उत्तम गुरसिख प्रभ गुंसाँई। प्रभ साचा शब्द सुणा गया, शब्द ज्ञान दे हउमे चुकाई। प्रभ भुलयां राहे पा गया, सरन पड़े दी लाज रखाई। कलिजुग अन्त प्रभ बुलावा बुला गया, गुरसिख भुल्ल ना राई। हुण वक्त सुहावा आ गया, गुरसिक्खां जो मन आस रखाई। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी भेस वटा ल्या, निहकलंक नाउँ रखाई। कलंक निह जगत विच आए। करन करावणहार कलू अन्त कराए। प्रगट जोत प्रभ तप तेज दोनों मिटाए। सतिगुर साचा सतिजुग साचा जगत रचाए। सोहँ शब्द चार वरन चलाए। प्रभ बिन दूसर कोई दीसे नाहे। सर्ब पूजा प्रभ दे हटाए। साचा दर सूझा जिन्हां प्रभ दरस दिखाए। गुरसिख गुरचरन संग लूझा, मिल साध संगत परमगति पाए। महाराज शेर सिँघ कलि होए सहाई, प्रगट हो के दरस दिखाए।

प्रगट प्रगट भरम निवारे। कलंकनिह नर अवतारे। ज़ात जोत जोत ज़ात इक्क गिरधारे। आप आप आपणा आप उचारे। जाप जाप सोहँ साचा जाप प्रभ रसन उचारे। ताप ताप प्रभ तीन ताप विच्चों हउमे मारे। महाराज शेर सिँघ दरस परस, कर किरपा प्रभ पार उतारे। दासन दास देवे भरवासा। साचा साहिब ना जानणा हासा। तीन लोक सचे प्रभ का वासा। धरे जोत मात पाताल आकाशा। भुल्ले जीव जोत सहाई विच गर्भवासा। मन चित्त ना आई, जिस ने दिया पवण स्वासा। मूर्ख जीव रसन लुझाई, आहार किया मदि मासा। कलिजुग आपणी पति गंवाई, अन्तकाल होए नर्क निवासा। गुरसिख पूरे मिली वड्याई, प्रभ दरस जिस मन प्यासा। सतिगुर साचा होवे सहाई, दुःख दलिद्र सारा नासा। मिल्या प्रगट सचा सुखदाई, साचा प्रभ सदा अबिनाशा। साध संगत मन भई वधाई, प्रगटे जोत प्रभ छड्ड आकाशा। तारे प्रभ बाल बिरध जवान, जो जन करे चरन निवासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरचरन प्रीती होए रासा। सेवक सेवा पाए घाल। प्रगट जोत भोग लगावे थाल। ना प्रभ बिरध ना प्रभ बाल। जोत सरूपी भगत वसाल। साचा नाम दे जाए धन माल। गुरसिख खाए खर्च ना होए कंगाल। सोहँ शब्द मिले कलि अनमुल्लड़ा लाल। कलि कोए ना मिले पारखू, जग वेखो भाल। महाराज शेर सिँघ दे दरस अन्तकाल तोड़ जाए जंजाल। कर किरपा प्रभ दरसन देवे। जो जन हिरदे प्रभ को वसेवे। प्रगट होए प्रभ सर्ब सार लेवे। महाराज शेर सिँघ गुरमुख विरले कर अमृत मेवे। गुरमुख साचा सो जन। अनहद शब्द वजावे सुणावे जिस कन्न। दरस दिखावे चरन लगावे, साचा प्रभ जीव तांहे मन्न। जोत प्रगटावे, राजन बन्न्ह ल्यावे, शब्द सुरत मिटावे जन। भरम चुकावे प्रगट होए माण गंवावे, गुरसिख बोले धन्न धन्न। महाराज शेर सिँघ जो तुध भावे सोई करा वे, देवे साचा नाम ना लागे सन्न्ह। साचा नाम गुरमुखां पाणा। निहकलंक कलि पहरया बाणा। जोत सरूप ना भुल्ले अञ्याणा। गुरमुख विरले प्रभ तेरा रंग माणा। दर्शन दे कलि करे सुघड़ स्याणा। अलख अभेव चरन लगाए राजा राणा। साची जोत झूठी देह, झूठे धन्दे जीव भरम भुलाणा। प्रभ साचे संग साचा नेंह, अन्तकाल जम डण्ड ना खाणा। अमृत आत्म वरखे मेंह, जोत सरूपी जोत जगाणा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, अन्तकाल वरताए आपणा भाणा। भाणा प्रभ आपणा वरतावे। सृष्ट सबाई टुम्ब उठावे। वैरी मीत कोई दिस ना आवे। जीव जीव जीव आत्म घावे। कोई ना राखे सर्ब कुरलावे। बेमुख डुब्बे कर कर हावे। ऐसी अग्न जोत सरूपी लावे। वण तृण कोई रहण ना पावे। आकाश पताल मात इक्क हो जावे। बैठ अडोल तीन लोक डुलावे। बेमुख कोई कलि रहण ना पावे। जोत सरूपी प्रभ सभ खेल रचावे। अग्न पौण पाणी सर्ब इक्क हो जावे। भगत जनां सिर हत्थ टिकावे। अन्ध अंध्यार प्रभ आण तरावे। विच संसार जन भगत उपजावे। राग रसार आत्म वसावे। साचा

३६८
०१

दरबार गुरसिख दिस आवे। कर आकार जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटावे। बैठ निराहार सच तख्त सुहावे। जै जै जैकार आपणे नाम करावे। हाहाकार कलि दुष्ट जीव कुरलावे। दे नाम आधार, भगत जनां प्रभ पार करावे। मिले मुरार अन्तकाल दर दरस दिखावे। पावे सार गुरमुख पूरा, विच जोत मिल जावे। महाराज शेर सिँघ जोत निरँकार, निहकलंक कलि नाउँ रखावे। निहकलंक प्रगट आए कलिजुग। कलिजुग खपाए लाए साचा सतिजुग। सो तर जाए, जो चरन आए भज्ज भज्ज। बेमुख मर जाए, सोहँ बाण सीने वज्ज वज्ज। गुरसिख रसना गाए, सोहँ शब्द सदा गज्ज गज्ज। महाराज शेर सिँघ होए सहाए, गुरसिख तराए कलिजुग लभ्भ लभ्भ। निभे प्रीती गुरसिख चरनां। गुरचरन लाग फिर होए ना मरना। कर सेवा प्रभ पारब्रह्म, होए भवजल तरना। कलिजुग वक्त सुहा गया, जो जन आए प्रभ की सरना। जन भगतां लेख लिखा गया, दु:ख अन्तकाल ना भरना। होए रक्खक लाज रखा गया, महाराज शेर सिँघ विच चहुं वरनां। चार वरन प्रभ जोत जगावे। कलिजुग क्रिया सर्ब मिटावे। शब्द सोहँ दी सोझी पावे। साचा दरबार इक्क निहकलंक दिस आवे। दूसर कोई रहण ना पावे। प्रगट आप प्रभ साचा धर्म चलावे। ऊँच नीच भरम भूत सर्ब जीव मिटावे। ज़ात पात कोई सतिजुग रहण ना पावे। सच सुच्च सर्ब जीव विच आत्म वरसावे। जूठ झूठ मदि मास सभ देह मिटावे। नाम निधान ब्रह्म ज्ञान दे, सतिजुग साचे जीव उपजावे।
३६८ ०१ प्रभ पूरन चरन ध्यान दे, जोत सरूपी दरस दिखावे। निमाणयां प्रभ माण दे, लाए सरन सिर हत्थ टिकावे। साचा शब्द ३६८ ०१
निरबाण दे, नाम बाण विच सीने लावे। महाराज शेर सिँघ दरस विष्नूं भगवान दे, विच्चों सारा भेत चुकावे। कलिजुग चले तत्ती वाए। जोत सरूप हो विच समाए। पापी जीव सभ दए जलाए। त्रै लोअ दिस ना आए। अज्ञान अन्धेर सोझी हो जाए। प्रभ अबिनाशी कलि तेज वखाए। जोत निरँजण निहकलंक हो आए। दुखी होए अन्त कलि दर मंगण, बेमुख प्रभ दिस ना आए। गुरमुख नाम चाढ़े मन रंगण, आदि जुगादी होए सहाए। महाराज शेर सिँघ तोड़े बंधन, जो जन चले तेरे भाए। सर्ब सृष्ट प्रभ आप उपाए। जीव जन्त बणत बणाए। साची जोत विच देह टिकावे। मनुख जन्म उत्तम चुरासी विच लिखावे। कलि देह रसना नाम ले, प्रभ संग मेल करावे। जो झूठे तोड़े नेंह, साची जोत विच जोत मिलावे। महाराज शेर सिँघ कर दरस, अन्तकाल पुरी सच जावे। पुरी सच साचा सचखण्ड। जोत जगाए जिथ्थे मालक वरभंड। पार करावे देह उलटावे सभ खण्ड ब्रह्मण्ड। प्रगट जोत साचा नाम, गुरसिक्खां जावे वंड। महाराज शेर सिँघ रसना गा के, गुरसिख ना खावे जम डण्ड। साचा राग साचे प्रभ दस्सया। जोत सरूपी विच हिरदे वस्सया। भगत जनां पिआवे प्रभ आत्म रस्सया। बेमुख दुष्ट दुराचार साचे दर ते नस्सया। कलिजुग होया अन्ध अंध्यार, विरला गुरमुख चन्द जिउँ मस्सया। महाराज

शेर सिँघ जगत भतार, देवे जोत विच रवि सस्सया। जोत सरूप सर्ब प्रकाशे। अछल अडोल प्रभ अबिनाशे। रसना गाउ गुरचरन प्रभ होए दासे। मानस जन्म जीव आए रासे। काया दुःख आत्म भुक्ख, विच्चों देह दे नासे। साचा सुख गुरचरन भरवासे। अन्तकाल रसना जप होए सुखाल स्वासे। सृष्ट सबाई अन्तकाल होए नासे। ईश्र जोत जीव दे धरवासे। महाराज शेर सिँघ साध संगत सद है पासे। चरन लाग मिले वड्याई। प्रभ अबिनाशी कलि होए सहाई। वड राजन राज सचा पातशाही। प्रभ भागन भाग वसे सभ थांई। सेज बाशक नाग, लच्छमी चरन झसनाई। प्रगट जोत निहकलंक, विच मात दे आई। अवण गंवण किसे बूझ ना पाई। जन्म भरम विच ल्या गंवाई । गुरसिख पूरे तेरी धन्न कमाई। कर बेनन्ती सतिगुर साचे अग्गे साध संगत दी सेव कमाई। प्रगट हो के प्रभ अबिनाशे, सिँघ दलीप तेरी पैज रखाई। तेरा नाम ना कदे विनासे, जुग चार सर्ब जस गाई। साचा साहिब सदा है पासे, जिस ने तेरी बणत बणाई। आत्म वेख जिथ्थे प्रभ वासे, जिस ने साची बूझ बुझाई। साचा शब्द दे धरवासे, अन्तकाल गुरसिख डोल ना जाई। महाराज शेर सिँघ जन तेरे दासे, सरन पड़े दी लाज रखाई। सरनी आए जन सरन तकाए। बांहों पकड़ प्रभ पार लँघाए। सतिगुर साचा अन्त दया कमाए। दे दरस कलि अन्त साची जोत विच जोत मिलाए। प्रभ की जोत बड़ी बेअन्त, गुरसिख फेर जगत ना आए। कोई जीव ना पावे प्रभ का अन्त, सच घर बैठा जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ साचा कन्त, जीव आत्म वर घर लै जाए। जीव आत्म आप प्रभ वरे। मिल जोत गुरसिख फिर जन्म ना धरे। जग आए ना जाए फिर जन्मे ना मरे। जो जन इक्क टेक गुरचरन धरे। देवे दरस प्रभ अवतार नर हरे। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन के कारज सरे। किरपा करे महाराज शेर सिँघ, सदा रहण भण्डारे भरे। साचा प्रभ होए भगत भण्डारी। वड गुण दाता प्रभ संसारी। सर्ब सृष्ट इक्क जोत अधारी। धर जोत विच वसे आप निरँकारी। मूर्ख जीव साची सोच ना आत्म विचारी। साचा प्रभ ना दीसे, विच वसे देह बनवारी। महाराज शेर सिँघ हिरदे वसे, बेमुख कलि कलिजुग करे ख्वारी। दरस दिखाए प्रभ साचा नैणीं। सोहँ चोट जग किसे ना सहिणी। बांहों पकड़ उठाए सुत्तयां रैणी। दरस दिखाए चरन लग्ग जाए, आ बाली भैणी। हँकार रखावे आपणा आप गंवावे, उलटी वहावे प्रभ वहन्दी वहिणी। साध संगत हरि गुण गाए, प्रभ जोत प्रगटाए गुरचरन कलिजुग साची बहिणी। जन सो तराए विच जोत मिलाए, मात विच आए फिर देह ना लैणी। बेमुख बिल्लाए अग्न प्रभ शब्द लगाए, मानस जन्म दी लेवे लैणी। गुरसिख तराए कलि फुल्ल बणाए, मोह चुकाए विच्चों साक सैणी। कलिजुग माया ना सताए, मदि मास ना रसना लाए, साचा गुर सच दस्से रहणी। महाराज शेर सिँघ तेरी सरन आए, हो सहाए पार लँघाए, दरस दिखाउ साची नैणीं। दरस

होए दास प्रभ देवे। सोहँ शब्द जो जन रसना सरेवे। साचा प्रभ आत्म वास करेवे। सोहँ शब्द धुन आत्म वजेवे। खुल्ह जाए साची सुन्न, अमृत झिरना विच झरेवे। प्रभ मिलण का वड्डा गुण, नैण दरस दस्म दुआर खुल्हेवे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, अन्तकाल पार लँघेवे। पारब्रह्म जिस जन पाया। हरि का नाउँ आत्म मांहि समाया। मन का भाउ प्रभ सभ चुकाया। साचा दरस विच देह दिखाया । अमृत बरस अंमिउं रस पिआया। कर तरस प्रभ साचे, गुरसिख चरन लगाया। टुट्टी हरस, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा सिर हत्थ टिकाया। साचा साहिब सच सिरजणहारे। प्रगट जोत आए कल धारे। निहकलंक जोत सरूप अवतारे। निहकलंक वजाए डंक, सतिजुग चले खेल न्यारे। सोहँ शब्द वज्जे डंक सोहण बंक, जिथ्थे प्रगटे हरि मुरारे। सोहण द्वार बंक, प्रगट जोत तारे रंक, साचा नाम देवे सिक्दारे। तारे जन रंक प्रगट मात बार अनक, भगत जनां हरि पैज सवारी। प्रगट प्रभ बार अनक, कलिजुग जामा धारया विच पुरी घनक, निहकलंक वड अवतारी। विच पुरी घनक माया पाई बेअन्त, कोई ना बूझे जोत निरँकारी। सर्ब पाई माया बेअन्त, रंगा सिँघ मन चाढ़ी रंगत, पारब्रह्म परमेश्र जोत दिसे निराधारी। चाढ़ी रंगत, वड्याई पाई विच साध संगत, गया खण्ड सच मार उडारी। साध संगत दरस दान प्रभ मंगत, देवे दरस प्रगटे प्रभ आप गिरधारी। दर मंगत देवे दरस, जिस

३७१ ०१ बणाई बणत, कलिजुग करे खेल न्यारी। जिस बणाई बणत, गुरसिख उपजाए सतिजुग वड साध संगत, जो जन आए चरन निमस्कारी। गुरसिख वड साध संगत, चार जुग होए मन्नत, लेख लिखाए साचा बण लिखारी। होए मन्नत जिन्हां मिल्या कलि साचा कन्त, झूठी सृष्ट साध संगत सँघारी । साचा कन्त वसे जीव जन्त, साचा शब्द देवे प्रभ भण्डारी। पाई माया सर्ब जीव जन्त प्रभ की महिंमा कोई ना गणत, आपणे रंग रवे अपधारी। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आ के, जन भगतां पैज संवारी। प्रभ आया कलिजुग करतार। निहकलंक पूरन अवतार। चौथा जुग अन्त करे ख्वार। तख्त निवासी बाहों पकड़ देवे तार। रंकां देवे प्रभ दुःख निवार। हँकारीआं देवे मार, कर जगत ख्वार। साध संगत प्रभ देवे तार, दे के दरस अपार। साचा नाम दे अधार। भवजल बेड़ा कर जाए पार। प्रगट जोत आप निरँकार। महाराज शेर सिँघ चरन कँवल जाउ सद बलिहार। चरन कँवल जो जन आया। कर दरस महासुख पाया। चार वरन इक्क प्रभ माण दवाया। ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म ज्ञान सोहँ शब्द सुणाया। जित प्रभ लागा चरन ध्यान, तिस प्रभ साचे दरस दिखाया। कलिजुग प्रगटी जोत विष्नूं भगवान, भेख धार इक्क खेल रचाया। बूझे कोई चतुर सुजान, जिस प्रभ साचे दरस दिखाया। उपजे प्रभ ब्रह्म ज्ञान, दस्म दुआर आप खुल्हाया। जीव नाम गुणी निधान, महाराज शेर सिँघ सर्ब सुखदाया। साचा प्रभ सुखां सुख। कलिजुग उत्तम गुरसिक्खां ३७१ ०१

मुख। कर दरस प्रभ लाही मन की भुक्ख। सुफल कराई माता कुक्ख। महाराज शेर सिँघ दरस तेरे दी, गुरसिख सदा मन भुक्ख। कलिजुग वक्त सुहा गया, प्रभ दर्शन पाण दा। प्रगट जोत प्रभ दरस दिखा गया, मेल मिलाया भगत भगवान दा। बेड़ा भवजल पार करा गया, फल मिल्या दर्शन पाण दा। कलिजुग आण तरा गया, फल देवे साध संगत सेव कमाण दा। प्रभ विछड़े मेल मिला गया, मिल्या मेल धुर लिखाण दा। प्रभ जोत सरूपी भेस वटा गया, फल मिल्या रसना गाण दा। हउमे मोह चुका गया, महाराज शेर सिँघ पुरख सुजान दा। माया मोह जगत चुकाए। प्रभ साचा जिस दरस दिखाए। जगत हउमे ना जीव सताए। आत्म जोत प्रभ करे रुशनाए। अन्ध अंध्यार विच देह मिटाए। सच पुरख दे दरस प्रभ आप तराए। वक्खर नाम सच सोहँ झोली पाए। जगत पित काल अन्त होए सहाए। महाराज शेर सिँघ, गुरमुख पूरा अन्तकाल लै जोत मिलाए। जिन जग किहा प्रभ झूठड़ा, तिन्हां मूंह काला। झूठी काया झूठा ठूठड़ा, विच आत्म दीप प्रभ बाला। गुरसिक्खां रंग माणया अनूठड़ा, सोहँ शब्द सच राग माला। महाराज शेर सिँघ दर तेरा जिस डीठड़ा, अन्तकाल स्वास होए सुखाला। सतिजुग होवे साचा धामा । जोत प्रगटाए कृष्ना रामा। सुफल कराए भगतन कामा। निहकलंक कलि पहरया जामा। कलिजुग प्रगटे विष्नूं भगवाना । सति पुरखां प्रभ सति कर माना। महाराज शेर सिँघ गुरसिख विरले कलिजुग पछाणा।
३७२ ०१ गुरसिख सेवा पाई थांए। सर्ब कला समरथ होया आए सहाए। कलिजुग रक्खे पति, जिस नूं सरन लगाए। काया खेती ३७२ ०१
आई वत्त, साचा जाप सोहँ बीज बीजाए। विच्चों मारे अवगुण तत्त, साचा नाम मन वसाए। मति मन बुध खोल्ह कँवल दी देवे सुध, पूरन बूझ आप बुझाए। आपणा भेव खुल्हाए गुज्झ, जोत सरूपी दरस दिखाए। भुलेखे कुछ वेखे कुछ, अछल छल आप कराए। गुरमुख विरले ल्या बुझ, जीहदे उप्पर दया कमाए। गुरचरन प्रीती जाउ झुज्ज, वेला फेर हत्थ ना आए। काया दीप अन्त जाए बुझ, गुरचरन लाग साची जोत जगाए। सोहँ शब्द लगाए हुज्ज, बांहों पकड़ गुरसिख उठाए। दूसर कोए ना जेवड मुझ, निहकलंक हो कलिजुग आए। छड्ड विकार गुरचरन लुझ, बन्द खलास अन्त कराए। महाराज शेर सिँघ साध संगत प्रगट होए दरस दिखाए। दर्शन प्रभ का हरिजन लोड़े। भगत जनां तों प्रभ मुख ना मोड़े। कलिजुग अन्तकाल हो जाए , दिन रहि गए थोड़े। जोत सरूपी तेज वखाए, राजन राजा गुरसिख झाड़न तेरे जोड़े। कर प्रीत गुरचरन संग, सोहँ नाम सच चाढ़े पौड़े। महाराज शेर सिँघ भगत जनां लज पति रखौड़े। कलिजुग आए रक्खे लज। सोहँ शब्द वजाए वज्ज। बेमुख जाए दर तों भज्ज। प्रभ का दरस कर संगत रज्ज। सोहँ नाम लिआं ना होवे लज्ज। साचा प्रभ साची दरगाह विच जज्ज। चले ना ओथे जीव किसे दा पज्ज। महाराज शेर सिँघ साध संगत तेरे चरन जाए सज। चरन वासी

साध संगत तेरी दासन दासी। प्रगटे जोत कलिजुग प्रभासी। देवे दरस प्रभ धाम बैकुण्ठ वासी। घाल गुरसिख होई रासी। दर ठौहर ना पाए कोई मदिरा मासी। गुरमुख जपे सोहँ स्वासन स्वासी। करे करावे आपे आप जो मन भासी। साध संगत सिर हत्थ टिकावे, अन्तकाल करे बन्द खलासी। महाराज शेर सिँघ जगत मंगत तेरे दर दे दासी। दासन दास गुरसिख पाया। कलिजुग पोह ना सके माया। निर्मल कुल जग उत्तम कराया। अन्तकाल जम दुःख ना सहया। महाराज शेर सिँघ साध संगत पर कीनी दया। किरपा करे प्रभ किरपा नंद। आत्म उपजावे परमानंद। बजर कपाट तुड़ावे बन्द। महाराज शेर सिँघ दे दरस, गुरसिख आत्म रक्ख सदा अनन्द। आत्म अनन्द गुर दर पाईए। राज मुलख जगीर मन तृष्न मिटाईए। साचा साहिब मन वसाईए। रसना जप हरि गुण गाईए। अनद बिनोदी प्रभ घर मांहि पाईए। साचा प्रभ जिस काया सोधी, निर्मल जोत विच देह जगाईए। अन्तकाल प्रभ जाईए गोदी, गर्भवास फेर ना आईए। महाराज शेर सिँघ वाली हिन्दवैण फड़ के बोदी, चरन कँवल संग लगाईए। हिन्द वाली गुरचरनी आए। काहन घनईआ प्रभ दिस आए। सावल सुंदर रूप सिर ते मुकट टिकाए। वल छल छल वल कर आपणा आप उपाए। सति सरूपी जोत काया शेर सिँघ पल्टाए। खोल्ह देवे प्रभ सारे सोत, निहकलंकी भय रखाए। आत्म निर्मल जगाए जोत, लाग चरनीं भुल्ल बख्शाए। गुरचरन प्रीती उत्तम गोत, लाग चरन वरन चार इक्क हो जाए। जन्म जन्म की मैल प्रभ धोत, सोहँ शब्द प्रभ सबूण लगाए। बेमुख सारे कलिजुग रोत, साचा प्रभ दिस ना आए। जोत जगाए विच प्रभ मोत, दक्खण दिशा माण दवाए। जो कुछ करे करावे सोई होत, जीव किसे दी वाह ना जाए। गुरसिख कदे ना आवे मौत, अन्तकाल दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग निर्मल जोत, प्रगट जोत निहकलंक अख्वाए। निहकलंक कलि होया सिक्दार। सृष्ट मारे कर ख्वार। भगत उधारे दे दरस अपार। साध संगत बैठा विचकार। कर दरस प्रभ आत्म होवे ठंडी ठार। बेमुख दर ते प्रभ की पाए ना सार। साध संगत कलि जाओ बलिहार। जिन्हां मिल्या पुरख अपार। सोहँ शब्द साचा दे जाए अधार। प्रगट भगत भगवन्त गुणवन्त साची करे विचार। कलिजुग प्रगट उत्तम विच जीव जन्त, कलिजुग देवे दीदार। गुरसिख नाउँ सतिजुग वड सन्त, रसना गावे सर्ब संसार। महाराज शेर सिँघ तेरा कोई ना जाणे अन्त, आपणे रंग रवे करतार। रंग रूप प्रभ का कोई ना जाणे। गुरमुख विरला कोई रंग प्रभ का माणे। गुरसिख सोहण गुरचरन खड़े निमाणे। साचा प्रभ देवे दरस, खड़ा होए सरहाणे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग वरते, सभ कुछ तेरे भाणे। कलिजुग भाणा भ्रम भुलांयदा। बेमुखां कलि झूठे धन्दे लांयदा। साचा नाम ना दे अधार, मदि मास आहार बणांयदा। साचा प्रभ ना किरपा करे, अन्त नर्क निवास दवांयदा। गुरसिख आत्म जोत धरे, साचा दीपक विच

देह जगांयदा। तिन के पूरन काज सरे, जो आए चरन सीस झुकांयदा । गुरसिख कलिजुग कर्म ना डरे, गुर साचा सिर हत्थ टिकांयदा। अन्तकाल प्रभ आवे घरे, दे दरस पार लँघांयदा। बेमुख डन्न डाहढा भरे, धर्म राए डन्न लगांयदा। गुरसिख पूरा वास सचखण्ड करे, जिथ्थे प्रभ बैठ जोत जगांयदा। महाराज शेर सिँघ चरन टेक जो धरे, मातलोक फेर ना आंयदा। सचा घर सचा दरबार। सच घर वसे आप निरँकार। जोत जगाए कर अपर अपार। तीन लोक सभ जोत अधार। कलिजुग आया निहकलंक अवतार। सोहँ साचा देवे नाम अधार। भगत जनां मात पित भतार। रक्खे लज्जया आदि अन्त प्रभ एकँकार। निर्मल जोत जगावे विच देह मँझार। जोत प्रकाश मिटावे देह अन्ध अंध्यार। सोहँ शब्द वजावे अनहद धुन्कार। बजर कपाट खोल्हे आप मुरार। साचा दिसे जिस जोत सरूपी आकार। बैठा विच देह जोत अधार । मूर्ख जीव साचा प्रभ कलि गया वसार। गुरसिख देवे दरस, प्रभ कलि लै निहकलंक अवतार। भय मिटावे सभ, साची आत्म होवे उज्जयार। अमृत सोमा खुल्हावे विच नभ, अमृत बरखे किरपा धार। महाराज शेर सिँघ कलि ल्या गुरमुख लभ्भ, दे दरस जोत सरूप प्रभ देवे तार। जोत सरूपी प्रभ ज़ात ना कोए। साची जोत वसे त्रै लोए। अन्तकाल कलि दा होए। गुर गोबिन्द कलि प्रगटे दोए। बेमुख मुग्ध गंवार, कलि रहे सोए। गुरमुख चतुर सुजान, गुर चरन परोए। दे दरस ब्रह्म ज्ञान, आत्म नेत्र होए लोए। साचा देवे चरन ध्यान, महाराज शेर सिँघ तुध जेवड ना कोए। साचा नाम वड्डी दात । जोत जगाए प्रभ विच मात। सोहँ शब्द गुरसिक्खां देवे साची दात। गुरचरन प्रीती जीव कर साचा नात। रसना जप हरि हरि दिवस रात। गर्भवास ना धरे विच मात। जोत सरूपी जोत मिलाए, महाराज शेर सिँघ मिटावे तात। मिल जोत जगत तजाया। सचखण्ड गुरमुख पूरे डेरा लाया। स्वच्छ सरूपी जोत प्रभ विच डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ जुग चौथे किया सभ आपे आप, जो किछ कराया। कलिजुग चौथा जुग उपाया। वेद अथर्बण राह दिखाया। ऐड़ा अथर्बण अल्ला नूर उपाया। मुहम्मद कुरानी प्रभ तेज़ वधाया। ईसा मूसा दे जोत, जगत नाउँ धराया। कुकर्म रीती जूठे झूठे धन्दे जगत भुलाया। साचे प्रभ शाह कीती उलटी नीती, मदि मास अहार बणाया। अन्तकाल औध सभ दी बीती, निहकलंक प्रभ जामा पाया। शब्द सरूप सर्ब सृष्ट जीती, शब्द डंक चार कुन्ट वजाया। पावे जीव कलि आपणी कीती, साचा शाहो मनो भुलाया। प्रगट जोत सदा ए दीती, हाहाकार कलिजुग भुलाया। अन्तकाल होए भय भीती, कोए ना होवे आण सहाया। गुरसिक्खां प्रभ परखी नीती, प्रगट होए दरस दिखाया। करे दरस आत्म अतीती, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाया। गुरसिख साचे मिले गुरचरन प्रीती, अन्तकाल कलि प्रभ होए सहाया। सोहँ शब्द सतिजुग की रीती, साचा शब्द आप लिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, प्रगट जोत निहकलंक भेव आप खुल्हाया।

प्रभ का भेव कोई जीव ना जाणे। हँकार भरे सभ राजे राणे। सोहँ शब्द प्रभ मारया बाणे। लागे चरन कलि वड्डे जरवाणे। बेमुख भुन्ने शब्द संग जिउँ भठयाले दाणे। चरन लग जाए वाली हिन्दवाणे। गुरमुख उधरे पार जो चले गुर के भाणे। जोत सरूपी आया संसार, भगत जनां हरि लाज रखाणे। कलिजुग प्रगट्या नैण मुँधार, सिँघआसण बैठ भगत तराणे। मूर्ख मुग्ध ना पावे सार, देवे दरस प्रभ जो होए निमाणे। सर्ब सुख गुरचरन प्यार, उत्तम जन्म जो प्रभ चरन लगाणे। साचा शब्द तन देह अधार, अनहद शब्द मन वजाणे। अनहद शब्द कोई गुरमुख पावे साध, जिस नूं मिल्या प्रभ भगवाने। विच्चों जाए वाद विवाद, आत्म दीप प्रभ जोत जलाणे। साची धुन उपजावे नाद, आत्म सुन्न प्रभ खोल्ह वखाणे। खुल्हे सुन्न दिसे ब्रह्माद, द्वार दस्म प्रभ पड़दा लाहणे। खुल्हा द्वार मिट गई विचार, जोत सरूपी प्रभ दर्शन पाणे। दर्शन पाए भरम चुकाए, गुरमुख पूरे विच जोत मिल जाणे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, साचा नाम गुरसिख तराणे। गुरसिख प्रभ देवे वड्याई। चरन लाग जिस सेव कमाई। जन्म कर्म दी मैल गंवाई। साची जोत विच देह जगाई। निर्मल बाती नाम विच देह पाई। उपजे ब्रह्म ज्ञान, अन्ध अन्धेर सर्ब मिट जाई। मिले भगत भगवान, साची जिन बणत बणाई। कलिजुग होवे चतुर सुजान, साचा प्रभ जिस दरस दिखाई। सोहँ शब्द संग देवे दान, रसना जप जीव मिट जाई। जुगो जुग प्रभ साचा बान, भगत जनां दी पैज रखाई। कलिजुग अन्त ना होवे कान, जो जन आए प्रभ सरनाई। गुरमुख पूरे प्रभ का माण, अन्तकाल जो होए सहाई। दुष्ट दुराचार प्रभ लाहे घाण, सोहँ बाण जगत लगाई। उधरे सो जन जो चरनीं डिग्गे आण, सरन पड़े दी लाज रखाई। रहण ना देवे प्रभ किसे दा माण शब्द चोट कलिजुग चलाई। देवे दरस जो होए निताण, गुरदर आए मिले वड्याई। सतिजुग प्रगटे जाणी जाण, सर्ब सृष्ट बणत बणाई। कलिजुग माया जीव भुलाया अञ्याण, मदि मास रसना लाई। गुरमुख विरले प्रभ दर्शन पाण, जिन्हां उप्पर प्रभ दया कमाई। कलिजुग प्रगटे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची जिस लिख्त कराई। कलिजुग वरते प्रभ का भाणा। कोई ना रहे कलि राजा राणा। प्रगटे कलि निहकलंक वड जरवाणा। शब्द सरूपी कर जंग, सर्ब सृष्ट लाहे घाणा। बेमुख कलि भज्जे फिरन नंग, कोए ना मिले सच टिकाणा। सृष्ट सबाई झूठी जिउँ काची वंग, साचा शब्द गुर मारया बाणा। चौथा जुग अन्त होया भंग, सतिजुग साचा प्रभ साचे लाणा। सोहँ शब्द मन चाढ़े रंग, चार वरन प्रभ इक्क कराणा। सर्ब जीव प्रभ लगाए अंग, जगत भेख सर्ब मिटाणा। प्रभ साचा जिस किया संग, अन्तकाल जाए विच बबाणा। दोए जोड़ दर प्रभ दरस जीव मंग, प्रगटे जोत प्रभ जोती जोत मिलाणा। महाराज शेर सिँघ वसे विच वरभंड, गुरमुख विरले किसे पछाणा। जाणे सो जन जिस आप जणावे। माया रूपी पड़दा उत्तों आत्म लाहवे।

निज घर वासी जीव निजानंद दरसावे। आत्म बुझी दीप शब्द ज्ञान फेर जगावे। प्रभ मिलण की साची रीत, रसना जप परमगति पावे। महाराज शेर सिँघ चरन लाग मानस जन्म जावे जीत, गर्भवास जीव फेर ना आवे। गर्भवास अग्न कुण्ड। जीव बिल्लाए जिउँ काग भसुंड। प्रभ होवे सहाए जिस उपजाए पिण्ड। महाराज शेर सिँघ पार कराया, जामा लै विच घविंड। घनकपुरी प्रगटे घनशाम। द्वापर कृष्न मुरारी त्रेता राम। कलिजुग पहरया प्रभ निहकलंकी जाम। कलिजुग अन्त कराया, महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत पूरन किया काम। अन्त कलिजुग प्रभ जोत प्रगटावे। विच जुग प्रभ गुर उपजावे। साची शब्द सुर विच धुन वजावे। अनहद राग दे आपणा शब्द सुणावे। साचा दरस आत्म संवार दे, वाजा पवन विच देह वजावे। पूरन सोझी ब्रह्म ब्रह्माद दे, विच्चों दूई भेत मिटावे। गोबिन्द गुर मात राज दे, साचा शब्द मन वसावे। महाराज शेर सिँघ जुगो जुग पूरन भाग दे, चरन प्रीती भुल्ल ना जावे। साचा प्रभ होए सहाई। अट्ठ अठराही दे रोग गंवाई। दे अमृत रस कुक्ख सुफल कराई। दु:ख दर्द सभ प्रभ के वस, झूठी काया देह रोग लगाई। महाराज शेर सिँघ चरन लागो नस्स नस्स, दु:ख भुक्ख रहे ना काई। सोहणा दीसे तेरा बाणा। जे जन बण जाए सुघड़ स्याणा। सोहँ शब्द मन वसाणा। मदि मास नूं हत्थ ना लाणा। चरनीं लागे होए निमाणा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप दरस दिखाणा। जे मन भाए तां लैणा मन्न। साचा शब्द सुणाया कन्न। पार लँघण दा बेड़ा बन्न्ह। उत्तम वस्त विच देह वसे, काल कसाई लाए सन्न्ह। साचा प्रभ जोत प्रगटावे, हउमे माण गंवावे, करो बचन जे कोई मुन जन। हुक्मे अंदर जो जन चाले, सुफल कराया माणस जन्म। महाराज शेर सिँघ तेरे हत्थ वड्याई, आत्म कढ्ढ भुलेखे भरम। भरम भुल्ला जीव कलिजुग रुल्ला। विच देह ना वेख्या प्रभ लाल अनमुल्ला। रसन विकारी हो के, मन झूठा डुल्ला। जगत भिखारी हो के, मंग प्रभ भण्डारा खुल्ह्। महाराज शेर सिँघ लाज रखावे, सोहँ बन्न्ह पार लँघन दा साचा तुला।

३७६
०१

✻ १५ विसाख २००८ बिक्रमी हवलदार पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ✻

मानस जन्म उत्तम जग पाया। साचा नाम ना रिदे वसाया। कर नैण दरस ना आत्म तृप्ताया। लाह जग हरस, आपणा आप गुर अग्गे ना टिकाया। अमृत सोमा बरस, साचा अमृत आत्म विच ना चुआया। निर्धन कर तरस, जोत सरूप प्रभ दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ तेरा भेव, कलिजुग किसे ना पाया। आत्म धरे जोत, होए देह उज्जयारा। गुरमुख दिवस रैण कदे ना सोत, जिन्हां मिल्या पुरख अपर अपारा। गुरसिख सतिजुग निर्मल गोत, सोहँ शब्द होए आत्म अधारा। बेमुख

सृष्ट अन्त गई रोत, अन्तकाल ना मिले मोख दुआरा। गुरसिक्खां जगाए प्रभ निर्मल जोत, शब्द सुरत दे बैठे आप न्यारा। महाराज शेर सिँघ तेरा दर, सतिजुग होवे साचा दरबारा। ईश्र जोत निर्मल जगाती। सदा प्रकाश, ना दिवस ना राती। गुरसिख आत्म वेख मार झाती। जिथ्थे वसे वड गुण दाता सर्ब का दाती। ज़ात पात ना प्रभ की कोई, निर्मल जोत साची जाती। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाश, गुरसिख हिरदा जिउँ दीपक बाती। निर्मल जोत जगे अंदर। साचा तन सुहाए मन्दर। वसे प्रभ विच आप इक्क कंदर। देवे ब्रह्म ज्ञान खोल्हे मन जंदर। महाराज शेर सिँघ गुरसिख वसे, निरजंण जोत सदा देह अंदर। कलिजुग प्रगटे जोत निरँकारी। शब्द सुणे भुल्ले ना जाणे जीव संसारी। देवे शब्द ज्ञान किसे विरले ब्रह्म विचारी। सिर रक्ख प्रभ हत्थ, कलिजुग सोझी पाई सारी। देह चलाया रथ विच सोहँ पाई वत्थ, साचा होवे आप भण्डारी। बेमुख शब्द ना जानण, दर आए जायण झक्ख मारी। गुरसिख गुरचरन लाग सदा सुख मानण, देवे दरस प्रभ मुरारी। प्रभ का भयो भगत जन पछानण, जन देवे जोत अधारी। चार कुन्ट होए जग चानण, महाराज शेर सिँघ जोत चमत्कारी। जगत जोत जोत जगत विच रहाए। बेमुख जीव कलिजुग लए भुलाए। जिस भुलाया तिस प्रभ नज़र ना आए। आपणा आप गंवाया, मदि मास आहार बणाए। साध संगत वक्त सुहाया। प्रभ अबिनाशी दर्शन पाया। आत्म निर्मल सोहँ गाया। साचा प्रभ ज्ञान दवाए, अन्तकाल प्रभ होए सहाया। सतिगुर साचा सच लिखाए, अन्तकाल गुरसिक्खां आण तराया। निहकलंक होए दरस दिखाए। मानस जन्म सुफल कराए। जोत विच जोत मिलाए। गर्भवास फिर सिख ना आए। साचा प्रभ दया कमाए। उधरे पार जिस सोहँ गाया, महाराज शेर सिँघ ओट रखाए। कलिजुग ओट इक्क धर प्रभ। बाकी खोट विकार विसार सभ। सोहँ शब्द चोट मार आत्म धार झब। महाराज शेर सिँघ सति पुरखां ल्या लभ्भ। कलिजुग घोर अन्धेर, प्रभ जोत प्रकाशया। कलिजुग घोर अन्धेर, निहकलंक विच देह सिख वास्सया। कलिजुग घोर अन्धेर, प्रगटी जोत प्रभ अबिनास्सया । कलिजुग घोर अन्धेर, साध संगत प्रभ सद है वास्सया । कलिजुग घोर अन्धेर, महाराज शेर सिँघ छड्ड आकाश विच मात निवास्सया । निवास प्रभ सर्ब जीव। गुरचरन लाग रस अमृत पीव। पी अमृत निर्मल होवे आत्म दीव। जगे दीव विच प्रभ चरन जीव। सोहँ साचा नाम विच पाप कलीव। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाशे, आदि अन्त विच जन्त जीव। जीव जन्त प्रभ आप समावे। बेमुख वेखे नज़र ना आवे। गुरसिक्खां प्रभ साची बूझ बुझावे। सोहँ नाम आत्म ब्रह्म ज्ञान दवावे। आत्म जोत सरूप प्रभ जोत जगावे। जगे जोत होए उज्जयारा, निर्मल बाती विच देह लगावे। होए प्रकाश मिटे अन्धयारा, साचा प्रभ रिदे समावे। कलिजुग भरम भुल्ला संसारा, निहकलंक नज़र ना आवे। महाराज शेर सिँघ देवे जोत उज्जयारा, साध संगत टुम्ब उठावे।

जोत सरूप विच सिख समाया। आप अपरम्पर सभ थान सुहाया। मात पाताल आकाश तीन लोक रहाया। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड प्रभ जोत जगाया। अछल अछल्ल अछेद प्रभ किसे भेद ना पाया। कलिजुग जामा धार निहकलंक अख्वाया। बेमुखां कर ख्वार, साचा नाम दिलों भुलाया । गुरसिक्खां देवे दात, गुरचरन द्वार मिल साध संगत रसना हरि जस गाया। सोहँ नाम देवे उत्तम भण्डार, गुण दाता दे तोट कदे ना आया। कलिजुग भगतन करे उधार, धार खेल चतुर्भुज कहाया। महाराज शेर सिँघ कलि नर अवतार, सोहँ साचा नाम चलाया। सतिजुग चले सोहँ नाउँ। चार कुन्ट सर्ब जीव जन्त रसना गाउ। बेमुखां गुर दर ना लागन पाउ। साध संगत हरि प्रभ रिदे समाओ। आत्म जोत निज मांहि जगाओ। महाराज शेर सिँघ सर्ब घट वासी, अन्तकाल प्रभ दर्शन पाओ। साचा प्रभ सच्ची वड्याई। घट घट वासी सर्ब थांईं समाई। आदि अन्त भगतन होए सहाई। कलिजुग लै अवतार, घनकपुरी प्रभ जोत जगाई। मूर्ख मुग्ध ना पायण सार, निरँजण जोत विच मात दे आई। समरथ पुरख कर विचार, साचे प्रभ दी सोझी पाई। सोहँ मिल्या नाम अधार, बुझी दीपक प्रभ फेर जगाई। अन्तकाल ना कलि होए ख्वार, साचा प्रभ होए सहाई। महाराज शेर सिँघ चरन प्यार, साध संगत बण आई। कलिजुग भया प्रभ का भेख। गुण निधान भगतन आप लिखाए लेख। विष्नूं भगवान जोत अगम्म प्रभ देख। पीर पैग़ंबर औलिया प्रभ मिटाए शेख़।
३७८ ०१ महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द चलाए इक्क वसेख। सोहँ शब्द सतिजुग वरतन्ता। कलिजुग अन्त जोत सरूप प्रभ आप करन्ता। ३७८ ०१
प्रगट विच कलि, भगतन मिले आप भगवन्ता। उत्तम दे ब्रह्म ज्ञान, माण दवाए विच साधन सन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत रहाए विच सर्ब जीव जन्ता। कलिजुग माया जगत भुलाया। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। निराहारी निरवैर विच सिख समाया। छड्ड देह अपार, जोत सरूप निहकलंक अख्वाया। दुष्टां दे सँघार, मदि मास जिस आहार बणाया। भगतन देवे तार, चरन आए जिस सीस झुकाया। अन्तकाल ना होए ख्वार, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाया। गुरसिख सोहण सचखण्ड द्वार, साचा दीपक प्रभ जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ तीन लोक जोत आकार, एका जोत सृष्ट सबाई जोत जगाया। प्रभ की जोत सदा अतोल। प्रभ अतुल ना कोई सके तोल। कलिजुग उत्तम नाम सोहँ ना कोई सके रोल। महाराज शेर सिँघ वसे हर थाउँ, जीव आत्म वेख खोल्ह। धरे जोत प्रभ नैण मधारी। पताल बाशक सेज सिँघआसण पैज संवारी। कलिजुग जामा धार, निहकलंक निरँजण जोत कलि करे ख्वारी। जामा धार चौथे जुग करे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ साध संगत दे दरस पैज संवारी। दरस दान प्रभ भगतन को दिया। ब्रह्म ज्ञान विरले गुरमुख ल्या। सोहँ जप साचा नाम, आत्म निर्मल किया। गुरचरन लाग कर निमस्कार, प्रभ मिलन का साचा हीआ। आत्म जोत होए उधार, जगे जोत विच देह दिया।

महाराज शेर सिँघ अमृत नाउँ रसना जप, गुरमुखां आत्म रस पिया। रसना जप तोड़ आत्म अनातम। मुख ना मोड़ कलि प्रगटे परमात्म। अन्तकाल बन्दी छोड़ सदा हरि पातम। महाराज शेर सिँघ कलि भगतन ल्या लोड़, बेमुख अन्त हो जायण खातम। बेमुख सो जन, जिन हरि भुलाया। बेमुख सो जन, जिन मदिरा मास आहार बणाया। बेमुख सो जन, साचे प्रभ ना जिस दरस दिखाया। बेमुख सो जन, निज घर वासी प्रभ नज़र ना आया। बेमुख सो जन, नर नरायण कलि प्रभ ना पाया। बेमुख सो जन, भरम भुलेखे जगत भुलाया। बेमुख सो जन, कर निंद प्रभ दुष्ट दुराचार प्रभ नाउँ धराया। बेमुख सो जन, अन्तकाल जमदूत आए सताया। बेमुख सो जन, अन्त नर्क निवास रखाया। बेमुख सो जन, सोहँ शब्द ना रिदे वसाया। बेमुख सो जन, नेत्र पेख ना सीस झुकाया। बेमुख सो जन, गुर पूरे तों मुख भवाया । गुरसिख तेरा जन्म धन्न, साचा नाम रिदे वसाया। आत्म गया जीव मन मन्न, प्रभ पूरे जिस दरस दिखाया। सोहँ शब्द सुणाया कन्न, अनहद धुन प्रभ नाद वजाया। चरन लाग तरे भगत जन, मानस जन्म सुफल कराया। सोहँ दात ना लागे सन्न्, साचे प्रभ कलि दया कमाया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, प्रगट जोत निहकलंक कलि जगत भुलाया। अन्तकाल कलि प्रभ किया अन्त। प्रभ की महिंमा बड़ी बेअन्त। कलिजुग जीव भुलाया, दरसाया किसे विरले सन्त। जणाया तराया भगत मिल्या प्रभ
३७६ ०१ भगवन्त। बेमुखां भुलाया नज़र ना आया, साचा प्रभ जिस बणाई बणत। विच देह प्रभ डेरा लाया, सच अस्थान सच जोत ३७६ ०१
जगाया, बैठ आप प्रभ इकन्त। सोहँ नाम दिवाया, अज्ञान अन्धेर मिटाया, अनहद शब्द धुन वजन्त। बजर कपाट खुल्ाया, अमृत झिरना निझरों झिराया, सोहँ शब्द दिया साचा मंत। महाराज शेर सिँघ होए सहाया, जिस चरन लगाया, धरे जोत मात आदि अन्त। आदि अन्त प्रभ जोत प्रकाशे। आवे जावे सद अबिनाशे। अन्तकाल कलि करे नासे। प्रगटी जोत विच मात पाताल आकाशे। कलिजुग गुरमुखां पाया साचा शाहो शाबाशे। कलिजुग प्रगट्या प्रभ कल धारी। चरन लगाए माण गंवाए पकड़ हँकारी। बेमुख खपाए भगत तराए, अमृत देवे नाम भण्डारी। सोहँ शब्द चलाए ज्ञान दिवाए, वड्डा आप प्रभ संसारी। गुरमुखां दरस दिखाए, भरम भुलेखे सारे लाहे, दर घर आए प्रभ पैज सवारी। बेमुख बिल्लाए कलि करन हाए हाए, सर्ब सृष्ट प्रभ आप सँघारी । महाराज शेर सिँघ गुरचरन गुरसिख लागे, सरन पड़े दी पैज संवारी। सृष्ट सँघार कलिजुग खपाया । कुन्ट चार हाहाकार कराया। जीव जन्त दुखी होए बिललाया। कलिजुग कसाई अन्तकाल कलि कहर वरताया। चार कुन्ट पै जाए दुहाई, अन्तकाल ना कोई होए सहाया। भैणां नूं छड्ड जाण भाई, कलिजुग वेला नेड़े आया। गुरसिक्खां प्रभ होए सहाई, प्रगट जोत दरस दिखाया। सोहँ शब्द मन वज्जी वधाई, रसना जप हरि सुख पाया। साध संगत तेरी वड्याई,

साचा प्रभ सच कलि प्रगटाया। महाराज शेर सिँघ तेरी सरनाई, जो जन आए पार कराया। कलिजुग होवे काल अन्त, जीव सर्ब बिल्लायन। जगत जीव जन्त थाएँ छड्ड जायण। सोहँ साचा शब्द गुरमुख विरले गायण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत गुरसिख जगायण। रक्ख आस जीव प्रभ दर्शन करना। कर दरस प्रभ अन्तकाल, कलि कदे ना मरना। गुरचरन होवे तेरा सद वास, मिल साध संगत भवजल तरना। आत्म जोत होवे प्रकाश, अन्तकाल जम डण्ड ना भरना। प्रभ की जोत सदा अबिनाश, होए निमाणा लाग प्रभ चरनां। मिले प्रभ सर्ब गुणतास, कलिजुग प्रगटे धरनी धरना। महाराज शेर सिँघ सद है पास, सोहँ नाम गुरसिक्खां वरना। गुरसिख नाम निरँजण पाया। लक्ख चुरासी गेड़ चुकाया। निज घर वासी निज मांहि पाया। सोहँ साचा नाम मन वसाया। निहकलंक सोहँ साचा जाप सतिजुग चलाया । महाराज शेर सिँघ वड प्रताप, जोत सरूप जिस भेख वटाया । जोत सरूप जगत का दाता। सुरत शब्द कोई पावे ब्रह्म ज्ञाता। शब्द धुन उपजावे मन आत्म दरस प्रभ साचा नाता। गुरसिख चरन लगावे कलिजुग जिस देवे ज्ञान ध्यान होवे ब्रह्म ज्ञाता। प्रभ दरस लोड़े सभ मुन जन, नज़र ना आवे पुरख बिधाता। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, गुरसिक्खां मिल्या रंग राता। रंग रंगीलड़ा माधव, सतिजुग साचा रंग चढ़ाया। होए अन्त खपाए कलि जाए कलिजुग ढंडोरा सोहँ सुणाया। तर जाण विरले साध, जिन्हां सिर हत्थ टिकाया। साचा प्रभ रसना वरे राधव, सो अराधे जिस प्रभ दरस दिखाया। अनहद शब्द प्रभ वजावे नाद, कँवल नाभ खोल्ह वखाया। खुल्हे कँवल वरखे अमृत, द्वार दसवें प्रभ पर्दा लाहया। महाराज शेर सिँघ रसन गुण गाउ, दे दरस जिस भरम चुकाया। भरम चूके गुर दरबारे। आत्म संसे प्रभ सर्ब निवारे। दुखी जीव चरन आए जो पुकारे। छड्ड वड्याई होए प्रभ चरन सहारे। देवे माण जो जन आए ढहिण दुआरे। भगतां मिले आप भगवान, जोत सरूपी जोत चमत्कारे। कलिजुग पुरख चतुर सुजान, निहकलंक जिस चरन निमस्कारे। सोहँ साचा प्रभ देवे दान, आत्म जीव भरे रहण भण्डारे। प्रभ साचे जुगो जुग बाण, भगतां जन हरि पैज संवारे। गुरचरन प्रीती आत्म ध्यान, एका होए जोत चमत्कारे। सोहँ नाम निधान मिली कलिजुग वत्थ, माया भुल्ला सर्ब संसारे। जन भगतां मिल्या सोहँ नाम साचा रथ, कलिजुग बेड़ा पार उतारे। बेमुखां जमदूत पायन नत्थ, गुरसिख सोहण गुर चरन दुआरे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग देवे भगत वड्याई, लिख्त लिखावे अगम्म अपारे। गुरसिख तेरा नाम, प्रभ आप वड्आया। गुरसिख तेरा नाम, सतिजुग मुख रखाया। गुरसिख तेरा नाम, चार वरन विच जगत चलाया। गुरसिख तेरा नाम, साची बाणी विच लिखाया। गुरसिख तेरा नाम, जुग चार अटल्ल रखाया। गुरसिख तेरा नाम, ना मिटे जगत मिटाया। गुरसिख तेरा नाम, जुग चार साचा राह दिसाया। गुरसिख तेरा नाम, साध सन्तन

विच वड्आया। गुरसिख तेरा नाम, अचुत्त पारब्रह्म रसनी गाया । गुरसिख तेरा नाम, मोहण माधव कृष्न मुरारी जगत उधारी सच लेख लिखाया। गुरसिख तेरा नाम, खण्ड ब्रह्मण्ड विच धराया। गुरसिख तेरा नाम, करोड़ तेतीस रसना गाया। गुरसिख तेरा नाम, इन्द्र सभा विच वड्आया। गुरसिख तेरा नाम, सुण ब्रह्मा ब्रह्मलोक छड्ड प्रभ चरनीं सीस झुकाया। गुरसिख तेरा नाम, विच आकाश वड्आया। गुरसिख तेरा नाम, वांग सवरन उज्जल कराया। गुरसिख तेरा नाम, रागां वेदां विच लिखाया । गुरसिख तेरा नाम, शिव शंकर सभ सलाहया। गुरसिख तेरा नाम, कलिजुग उत्तम कराया। गुरसिख तेरा नाम, जगत सुफल कराया। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, निहकलंक होए जिस शब्द चलाया। साचा शब्द प्रभ आप चलावे। आपणी महिमा कलि आप जणावे। भगत जनां हरि नाम दवावे। गुण निधान प्रगट जोत दरस दिखावे। दे ब्रह्म ज्ञान आत्म ध्यान, बुझी दीपक प्रभ दए जगावे। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप होए दरस दिखावे। दरस दिखावे प्रभ जोत सरूप । प्रभ की जोत ना कोई रंग रूप। वसे विच जीव प्रभ साचा भूप। जोत जगावे विच देह अन्ध कूप। सच सुच्च वरताए होए सति सरूप। दरस दान प्रभ भिच्छया पाए, देवे दरस स्वच्छ सरूप। अमृत वरखे प्रभ जल धारा। पी अमृत जीव मिले मोख दुआरा। प्रभ पूरा देवे अमृत भगत भण्डारा। जन्म मरन कलिजुग संवारा। पी अमृत साचा झिरना निझरों झिनारा । अमृत बूंद बख्शे कँवल दुआरा। खुल्ले कँवल नाभ, होए देह उज्जयारा। कलिजुग पूरन होए भाग, जिन्हां मिल्या प्रभ पुरख अपारा। सोहँ शब्द चलाए राग, अनहद धुंनकारा। गुरसिख आत्म सदा है जाग, बेमुखां दीसे धुंधूँकारा। भगत जनां प्रभ रक्खे सिर हाथ, बेमुख होए अन्त ख्वारा। गुरमुख निर्मल ना लागे दाग़, दे दरस प्रभ पार उतारा। प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ अमृत वरखे किरपा धारा। कर किरपा दिया अमृत रस। पी अमृत प्रभ हिरदे जीव जाए वस। सोहँ साचा नाम रसना जप मिले साचा रस। बेमुख ना पाए थाउँ, सतिजुग साचा राह प्रभ जाए दस्स। महाराज शेर सिँघ रसना गुण गाओ, आदि अन्त रहे भगतां वस। भगती भगत जन भगत वड्आया। छड्ड ब्रह्मण्ड प्रभ सिख दर आया। होए भगत जोत अखण्ड, सिँघ सिँघासण डेरा लाया। सृष्ट सबाई होई रंड, सोहँ शब्द प्रभ बाण चलाया। बेमुख अन्तकाल प्रभ कीने खण्ड, मदि मास जिस रसना लाया। जोत सरूप वसे विच वरभंड। कलिजुग जामा धार आपणा आप छुपाया। दुष्टां देवे प्रभ दंड, निहकलंक कलि नाउँ धराया। महाराज शेर सिँघ विच खण्ड ब्रह्मण्ड, जोत सरूप कलिजुग आण खपाया। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश देह बणाई। देवी देव अलख अभेव, दर आए सेव कमाई। मारू देवा छेआ देवी भुल्ल कन्यां सुध भुलाई। जा वसे विच देह मन्दर, वांग मवकल करे शुदाई। सत्त काले सत्त सफैद। उत्तर विछड़ डंक समेत। वस कराए प्रभ देवी दैंत। सोहँ

बाण लगाए इक्क लक्ख अस्सी हज़ार जून भूत प्रेत। शब्द बंधावे विच केतन केत। पैज रखावे कर निर्मल सिहत। विच्चों रोग गंवाऐ, प्रभ सर्ब गंवाए भेत। सोहँ शब्द जन रसना गाए, नेड़ ना आए भूत प्रेत । महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, शब्द मिलाया मेत। जो जन आए दर प्रभ लै के दुःख। प्रभ साचा देवे देह सर्ब सुख। कर दरस जीव मन उतरे भुक्ख। मानस जन्म लेखे लाया, सुफल कराई माता कुक्ख। लक्ख चुरासी विच्चों बणाया, निर्मल उत्तम मानस देही मनुक्ख। महाराज शेर सिँघ जिस रसन ध्याया, जम का नेड़ ना आए दुःख। नेड़ ना आवे जम जँधारी। अन्तकाल कलि मिल्या आप बनवाली। कलिजुग जामा धार, जन भगतां पैज रखा ली। महाराज शेर सिँघ नर अवतार, नर नरायण कलिजुग जोत प्रगटा ली। नर नरायण निहकलंक। सोहँ शब्द वजाए डंक। देवे माण प्रभ राउ रंक। जोत धरे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच पुरी घनक। घनक पुरी प्रभ जोत जगाए, जोत जगत जगंता। प्रभ सोझी पाए सर्ब थाए रहंता भगत भगवन्ता। विछड़यां कलि मेल मिलाए, प्रभ साचा कन्ता। प्रभ दरस दिखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग खेड बेअन्ता। कलिजुग जीव भेत ना पाणे। आपणा आप ना मूल पछाणे। माया भरम भुलाणे जिउँ बाल अञ्याणे। आपणा आप डुलाया, होए रसन रसाणे। बेमुख अख्वाया, मदि मास रस खावे खाणे। नर्क निवास दवाया, साचे प्रभ बेमुख जीव भुलाणे। बांहो पकड़ तराया, आए सरन जो होए निमाणे। थान मण्डल सर्ब सुहाया, प्रगट जोत आप भगवाने। महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाया, गुरमुख विरले बूझ बुझाणे। सो बूझे जिस आप बुझाए। अज्ञान अन्धेर विच्चों देह चुकाए। बिन बाती बिन तेल दीपक दे जगाए। अचरज कर खेल, ब्रह्म ज्ञान दी प्रभ सोझी पाए। जोत सरूपी प्रभ जोत किया मेल, अन्त काल इक्क हो जाए। प्रभ मिलण का साचा वेहल, भुल्ल जीव क्यों वक्त गंवाए। महाराज शेर सिँघ दरगाह संग सुहेल, चरन लाग जीव पार लँघ जाए। आवण जावण प्रभ के हाथ। आत्म जप जीव प्रभ सद है साथ। अलख अभेव निरँजण देव, लेख लिखावे नाथ। दक्खण दिशा प्रभ देवे भिच्छा, साची चलावे तेरी गाथ। महाराज शेर सिँघ सिर रक्खे हत्थ, प्रगट जोत त्रैलोकी नाथ। वडभाग मिले भगवन्त। महिमा प्रभ की बड़ी बेअन्त। कथन ना जाणे कोई साधन सन्त। कलिजुग ना कोई वखाणे जीव जन्त। जोत जगावे विच तीन लोक, सचखण्ड प्रभ बैठ इकन्त। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जीव भुल्ले, जिस बणाई बणत। जीव जन्त प्रभ आप बणावे। मात गर्भ सास ग्रास दिवावे। कर जोत प्रकाश, आत्म शब्द धरवास दवावे। प्रगट अबिनाश सारा भेव चुकावे। होवे दसवें मास, बालक जन्म दवावे। जिस बणाई बणत, जगत माया सर्ब भुलावे। महाराज शेर सिँघ तेरे कलिजुग रंग बेअन्त, बेमुखां ना बूझ बुझावे। बेमुख ना बुझे आत्म कर विचार। कलिजुग जोत धरे प्रभ निहकलंक अवतार। बेमुख खपाए कलिजुग

कर ख्वार। गुरसिख चरनीं जाए लग्ग, अन्त पाए मोख द्वार। शब्द अन्धेरी जाए वग, सृष्ट सबाई होए ख्वार। जोत सरूप जाए अग्न लग्ग, कलिजुग जीव अन्त रोवण धाहां मार। जमदूत पकड़े आए शाह रग, पवण पूत सिर होए सवार। गुरसिक्खां अमृत वरसे विच नभ, खोल्ह देवे प्रभ अन्ध अंध्यार। महाराज शेर सिँघ तेरा किया वरते, अन्तकाल कलि होए ख्वार। अन्तकाल कलि होए ख्वारी। दुःख भुक्ख वध जाए बीमारी। बेमुखां नीती प्रभ आप विचारी । जूठ झूठ कर जाए ख्वारी। बचन हार दुःख पावे भारी। महाराज शेर सिँघ देवे तार, जो जन आए चरन निमस्कारी। निमस्कार जो जन करे। कर दरस दुरमति देह सभ हर । प्रगट जोत प्रभ अबिनाशी, दरस दिखावे हरे। सर्ब खण्ड वासी निरँजण जोत मात विच धरे। महाराज शेर सिँघ सो जन उधरे चरन आए सीस जो धरे। निमस्कार कर जीव होए निमाणा। सो जन करे निमस्कार, जिस पूरन प्रभ पछाणा। अन्तकाल ना होए ख्वार, साचे प्रभ सिर हत्थ टिकाणा। किरपा निध कर देवे पार, अन्त जोत विच जोत मिलाणा। बेमुख होवे सदा ख्वार, सचा प्रभ ना रिदे समाणा। पूरब कर्म प्रभ कर विचार, दुःख सुख प्रभ दवाणा। महाराज शेर सिँघ गुरमुख पायण तेरी सार, जिन्हां सोहँ देवे नाम निधाना। सोहँ नाम मिल्या नौं निध। नज़री आवे साचा प्रभ, आत्म होवे सिद्ध। रसना जप जप रस पीव, सोहँ बाण आत्म जाए विध। मदि मास आहार तजाउ, महाराज शेर सिँघ मिलण की साची बिध। मदि मास जिस जीव आहार। सो जीव जाए नर्क मँझार। कूकर शूकर जून मिले होए ख्वार। जन्म घोगढ़ पाए बार बार। होए विष्टा मुख देवे देह अधार। होए नर्क निवास पाए दुःख, कोई ना लेवे कलिजुग सार। गुरसिक्खां उज्जल मुख, विच चरन प्रीती दे अधार। कर चरन प्रीती मिले सभ सुख, कलिजुग बेड़ा होया पार। महाराज शेर सिँघ सर्ब दुःख भंजन, सोहँ देवे शब्द वपार। शब्द वपारी जन कोए। लए शब्द आत्म जगाए सोए। दुबिधा मैल सोहँ शब्द संग धोए। आत्म निर्मल विच साची जोत बिलोए। जोत सरूप जगे देह दीपक, साचे प्रभ दी सोझी होए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सुख दाता रसन जप, दरस मिलावा होए। कर दरस आत्म तृप्तासे। साची जोत प्रभ आत्म प्रकाशे। आत्म प्रकाश अज्ञान अन्धेर विनासे। निज घर पाया साचा प्रभ शाहो शाबाशे। जोत सरूपी नज़र ना आवे, निहकलंक मात विच वासे। आपणा आप प्रभ भेव छुपावे, सृष्ट भुलाई कूड़े भरवासे। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, गुरमुखां देवे नाम धरवासे। गुरसिक्खां देवे प्रभ नाम निधाना। आत्म जगे जोत होए ब्रह्म ज्ञाना। आत्म जीव ध्यान धरे, साचे प्रभ विच्चों गोझ मिटाणा। रसना जप गुण निधान प्रभ, जोत सरूप दे दरस भगवाना। कलिजुग जीव परहरे, सोहँ नाम मिले गुर दर ते दाना। महाराज शेर सिँघ नर अवतार हरे, गुरमुख विरले कलिजुग पछाणा। कलिजुग जोत प्रगटे नरायण। बेमुख भुल्ल वक्त गंवायण। वक्त

गंवाए फिर हत्थ ना आए, पशू पंछी नीर वहायण। अग्न जोत लगाए, जीव जन्त तड़फाए, चार कुन्ट होए हाए हाए, सृष्ट वगाई उलटे वहिण। गुरसिक्खां प्रभ दरस दिखाए, अन्तकाल हो जाए सहाए, बांहों पकड़ प्रभ आप तराए, जो जन चरनीं गुर बहिण। सोहँ साचा नाम जपाए, जन्म मरन दा भेत मिटाए, अन्तकाल विच जोत मिलाए, लक्ख चुरासी गेड़ ना पायन। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग चरन लाग गुरसिख दु:ख मिटायण। दु:ख दर्द ना गुर दर होए। निजानंद प्रभ आत्म रस चोए। सर्ब सुखां सुख सति सागर, अमृत बरखा आत्म होए। निर्मल कर्म उजागर जो जन आए गुरचरन बिलोए। गहर गम्भीर आप प्रभ सागर, जोत सरूप वसे त्रैलोए। महाराज शेर सिँघ सतिजुग अंदर, तुध जेवड अवर ना कोए। एक निरँजण जोत, मातलोक बिलोए। कलिजुग प्रगट त्रिलोकी नंदन, गुरसिख दे दरस आत्म देवे धोए। दोए जोड़ कर दर बन्दन, महाराज शेर सिँघ गुरसिख मिलावा होए। दरस मिलावा गुरसिख, प्रभ बिन कर्म ना होए। पारब्रह्म कलि रक्खे पत्त, जन्म जन्म दी मैल धोए। चरन लाग कलिजुग पाई गति, गर्भवास फेर ना होए। गुरसिख देवे प्रभ आत्म साची बुध मति, सोहँ शब्द लए रसना परोए। महाराज शेर सिँघ सर्ब सुख दाता, दे दरस राखे लाज जहानी दोए। कलिजुग मिल्या प्रभ दुतर तारी। कलिजुग प्रगट निहकलंक, जन भगतां पैज संवारी। छड्ड देह होए जोत सरूप, विच सिख देह वसे निराधारी। महाराज शेर सिँघ निरँजण जोत ना रंग रूप, गुरसिख देखे खेड जोत निरँकारी। निरँकारी जोत कलि अचरज खेल। विछड़यां मिलाया प्रभ प्रगट मेल। गुरमुखां देवे नाम निधान। आत्म दीप जगाई बिन बाती बिन तेल। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, जोत सरूपी कलिजुग किया खेल। गुरसिख तेरी वड्याई कलिजुग जीव ना जाणे। प्रगट जोत आप निरँकार, दे दरस तारे मूर्ख मुग्ध अञ्याणे। कलिजुग निहकलंक अवतार, चरन लाए करे सुघड़ स्याणे। कर किरपा अमृत वरखे किरपा धार, पी अमृत जीव अमर हो जाणे। निर्मल जोत होए झूठे संसार, गुरचरन लाग बेमुख तर जाणे। महाराज शेर सिँघ सद बलिहार, साध संगत दरस दिखाणे। दरस दिखाए प्रभ भेख धारी। जोत सरूप निरवैर निरहारी। प्रगट जोत साध संगत आए पैज संवारी। सृष्ट सबाई अन्तकाल कलि होए ख्वारी। गुरसिक्खां मन जगाई निर्मल जोत आप निरँकारी। महाराज शेर सिँघ भगत जन तारे, रक्खे लाज आप मुरारी। भगत जनां प्रभ लाज रखाई। प्रगट होए पैज संवारी। पतित पावन दु:ख भय भंजन, भगत जनां सिर हत्थ टिकाई। महाराज शेर सिँघ त्रैलोकी नंदन, जीव कर दरस प्रभ पार उतारी। प्रभ जन जो सरन आए। अन्तकाल ना काल सताए। जम जंधार कोई नेड़ ना आए। भय भयानक प्रभ होए सहाए। प्रगट जोत सरूप कलंकनिह दरस दिखाए। दे दरस स्वास निवासे, साची जोत विच जोत मिलाए। गुरसिख पूरा महाराज शेर सिँघ पासे, जोत सरूप

विच जोत मिलाए। सोहँ शब्द होए रहिरासे, रसना जप जीव सर्ब सुख पाए। शब्द लिखाए सच प्रभ, साचा राह दस्से। सोहँ शब्द जो रसना गाए, सच प्रभ हिरदे वसे। हिरदे वसे सच प्रभ, दु:ख रोग देही दे नस्से। अन्ध अज्ञान जीव होए ख्वार, होवे सिर भार धवल काल देवी हस्से। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द मारे बाण, अन्धा दुष्ट नस्से।

❊ २० विसाख २००८ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ❊

भरमत भरमत मानस जन्म गंवाया। साचा प्रभ बेमुख जीव नज़र ना आया। निहकलंक कलि काती, कलिजुग आए जगत भुलाया। गुरसिक्खां कीनी उत्तम जाति, सोहँ नाम रिदे वसाया। आत्म होवे निर्मल बाती, देह दीपक प्रभ आप जगाया। गुरसिख अंदर मार झाती, दीसे प्रभ साचा, साचे थाँयण डेरा लाया। साचा दान देवे वड दाती, गुरसिक्खां झोली पाया। वड्डे वड भाग विच लोकमाती, प्रभ अबिनाशी जिस दरस दिखाया। बेमुखां मन लाई काती, सोहँ शब्द कन्न सुणाया। बेमुख सोए गुरमुख जागण राती, चरन कँवल प्रभ विच बहाया। नाम अमृत देवे बूंद स्वांती, उदर अग्न प्रभ देवे बुझाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग साचा नाती, गुरमुखां चरन संग जोड़ जुड़ाया। गुरचरन लगाए आप प्रभ, देवे दरस सर्ब सुख वासा। दरस दिखावे आप प्रभ, गुरसिक्खां दीसे सर्ब घट वासा। कलिजुग माया विच्चों कढाए आप प्रभ, प्रभ मिलण जिस मन होए प्यासा। साचा शब्द दवाए आप प्रभ, रसन जप होए सर्ब दु:ख नासा। महाराज शेर सिँघ जो जन ध्याए साचा प्रभ जगाए जोत जीव अबिनाशा। जीव जाण जगत सन्बन्ध। झूठी माया जगत झूठा धन्द । आत्म उत्तम क्यों होवे मन्द। मदि मास रसना लाए गन्द। गुरचरन निवास मिले जीव परमानंद। आत्म धर ध्यान, देवे दरस सदा बख्शंद। महाराज शेर सिँघ सदा है पास, कर दरस जीव मन सदा रहे अनन्द। मदि मासी अन्तकाल कलि होए भस्मंत। कलिजुग माया जीव भुलाया होए गणत अगणत। किसे विरले गुरमुख पाया, जिस बणाई बणत। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया, प्रगट साचे कन्त। कलिजुग माण गंवाए प्रभ, सतिजुग लावे। कलिजुग माण गंवाए प्रभ, सच धर्म मार्ग लावे। कलिजुग माण गंवाए प्रभ, ब्रह्म सरूपी जीव उपावे। कलिजुग माण गंवाए प्रभ, सोहँ साचा ज्ञान दिवावे। कलिजुग माण गंवावे प्रभ, निर्मल जोत प्रभ विच देह जगावे। कलिजुग माण गंवावे प्रभ, साचे जुग प्रभ साचे जीव उपावे। साचा नाउँ धरायके, सच सुच्च देह वरतावे। विच्चों हउमे अग्न जलायके, जोत सरूपी दरस दिखावे। आत्म भरम भुलेखे लाहिके, निज घर वासी नज़री आवे। गुरसिक्खां चरन लगायके, जोत सरूप प्रभ दरस दिखावे। विच्चों हउमे माण गंवायके, गुण निधान साचा नाम विच रिदे वसावे। सोहँ

शब्द रसना जपायके, अनहद धुन चोट मन लगावे। जीव आत्म सुन खुल्लायके, निजानंद प्रभ आप दरसावे। देह दीपक आत्म जोत जगायके। दस्म दुआर प्रभ आप खुल्लावे। दस्म दुआर प्रभ आप खुल्लायके, महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे। देवे दरस अन्तकाल प्रभ आयके। भगत जनां बांहो पकड़ लै जावे, विच सचखण्ड बबाण बिठायके। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तज्ज, गुरसिख बैठे पुरी सच विच जायके। आप अडोल जोत डगमगाए, जोत सरूपी प्रभ सिक्खां रक्खे विच जोत मिलायके। महाराज शेर सिँघ होए सहाए जो जन आए सरनाए, दरस आत्म आस रखायके। गुर पूरा सूरा मन आसा पूर। गुरसिख लोड़ सतिगुर चरनीं धूढ़। प्रभ बिन अवर ना कोए बख्शे साचा नूर। साचा नूर विच देह प्रकाशे, जोत सरूपी सदा सरूर। आत्म जोत प्रभ सदा वासे, बेमुख क्यों जावें दूर। प्रभ की जोत सदा अबिनाशे, वड दाता सदा भरपूर। गुरसिख प्रीती गुर चरन रहिरासे, महाराज शेर सिँघ सद आसा पूर।

❊ ५ जेठ २००८ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ❊

निहकलंक तेरी वड्याई। निरँजण जोत विच मात टिकाई। प्रभ अबिनाशी जगत रघुराई। सर्ब घट वासी अचरज खेल रचाई। कलिजुग कल धार, दुनियां सुंञ मसाण सुआई। महाराज शेर सिँघ कलि लै अवतार, गुरसिक्खां घर जै जै जैकार कराई। जै जै जैकार करे गुरसिख। गुण निधान घर आए, साचे लेख जाए लिख। जो दर आए साध संगत रल जाए, सोहँ नाम प्रभ पाए भिख। जगत भुलाए आत्म पड़दे पाए, साचा प्रभ ना आवे दिख। महाराज शेर सिँघ जन भगत तराए सरन लगाए, उत्तम कीए कलिजुग विच मुन रिख। कलिजुग प्रगटे प्रभ भरतम्बरा। जोत प्रकाश होवे मुक्त पीतंबरा। नर्क निवारे कलिजुग अंध्यारे, प्रभ दीसे नाथ त्रैलोकी अंबरा। जन भगत उधारे जन सोहण दुआरे, मिले प्रभ वड पीर पैग़ंबरा। महाराज शेर सिँघ जोत निरँकारे, सर्ब सृष्ट सँघारे, गुरसिक्खां प्रभ साचे संग होवे सवम्बरा। वड वड्याई पंचमी, कलि निहकलंक अवतरा। वड वड्याई पंचमी, प्रगटे प्रभ नर नरा। वड वड्याई पंचमी, प्रभ अबिनाशी दर सिक्खन खड़ा। वड वड्याई पंचमी, निहकलंक जोत नर नरा। वड वड्याई पंचमी, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ चरनीं परा। वड वड्याई पंचमी, कर दरस गुरसिख कलिजुग भवजल पार परा। वड वड्याई पंचमी, तरे सो जन जिन सिर हत्थ प्रभ धरा। वड वड्याई पंचमी, आत्म दे ज्ञान दीसे विच प्रभ आप हरि हरा। वड वड्याई पंचमी, महाराज शेर सिँघ नर अवतार गुरमुख दुत्तर तरा। पंचम जेठ सतिजुग पंचमी, कलिजुग प्रगटे नर नरायण। सृष्ट घाए अग्न जोत लगाए, गुरसिख गुर चरनीं बहिण। जोत प्रगटाए दिस

ना आए, गुरमुख साचे जोत जगायण । महाराज शेर सिँघ पैज रखावे, सोहँ बाण बेमुखां लगावे, चार कुन्ट घर घर पैण वैण। एक अडोल आप प्रभ करता। प्रगट जोत दुःख गुरसिक्खन हरता। बेमुख दर ना आए डरता। गुरसिख गुरचरन लाग ना जग मरता। बेमुख जाए दर ते भाग, अन्तकाल वास प्रभ कुम्भी नर्क विच करता । भगत जनां देवे तार, प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ धरनी धरता। धरत धवल आकाश समाए। आकाश पाताल मात प्रभ जोत जगाए। खण्ड ब्रह्मण्ड रिहा समाए। माया कुदरत रूप कर, लक्ख चुरासी जीव उपाए। साची जोत विच देह धर, प्रभ सच दीपक आप जगाए। विच साध संगत कलि पाए माण, जो जन आए महाराज शेर सिँघ दर्शन पाए। मानस जन्म सुफल जाए कर, निहकलंक नर अवतारी। कलिजुग लै अवतार, जोत सरूप सृष्ट सँघारी । कोए ना पावे प्रभ की सार, कोट कोटन ब्रह्मा विष्न महेष खड़े दर दरबारी। बाशक आया विच मात, करे प्रभ चरन निमस्कार, सहँसर मुख अग्न फुनकारी। ऐसा जपे सोहँ जाप, साचा प्रभ बाशक सेज सिँघासण बैठा प्रभ कलिजुग पैज संवारी। कलिजुग आया कलि जामा धार निहकलंक प्रभ नैण मुँधारी। सृष्ट सबाई होए ख्वार, अग्न जोत प्रभ लगाए चन्गयारी। हिरदे वसे गुरसिक्खां प्रभ, कलिजुग आए जिस पैज संवारी। जामा धार कर जाए बेड़ा पार, जो जन आए चरन निमस्कारी। प्रभ जोत आकार, जीव जन्त जोत जगाए अपर अपार, बेमुख ना पाए सार, गुरसिख पेखे सच नैण दीदारी। महाराज शेर सिँघ तेरी महिमा अपार विच संसार ना जाणे जीव प्रभ वसे विच गिरधारी। दे दीदार प्रभ दर्द मिटाया। हउमे ममता विच्चों माण गंवाया। प्रगट जोत आप निराधार, आत्म जोत प्रभ आप जगाया। मदि मास कर आहार, कलिजुग जीवां प्रभ भुलाया। अन्तकाल हो जायण ख्वार, सच शब्द आप लिखाया। बेड़ा डोबे विच मंझधार, गुरमुख विरले विच संसार, हिरदक जोत जिस प्रभ जगाया। आत्म कर विचार, प्रभ गुरसिक्खां बांहों पकड़ प्रभ आप उठाया। मानस जन्म ल्या सुधार, दर आए जिस सीस झुकाया। मात गर्भ ना होए वास, साचे प्रभ विच जोत मिलाया। भगत वछल प्रगटे मुरार, चतुर्भुज होए प्रभ गुरसिख लाज रखाया । गुरसिख कलिजुग उतरे पार, महाराज शेर सिँघ जिस दरस दिखाया। दरस कर आत्म तृप्तासे। मिटाए दुःख सभ, जो जन आए प्रभ चरन प्यासे। प्रगट होए दरस दिखाए झब, जो जन रसन ना लाए मदि मासे। साचा झिरना अमृत विच झिराए नभ, आत्म जोत करे देह प्रकासे। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां ल्या लभ्भ, बेमुख जन्म गंवाया हासे। बेमुख कलिजुग अन्ध अन्धयारा। नज़र ना आवे जोत निरँजण निहकलंक अवतारा। पीत पीतंबर छाया सच सिरजणहारा। जोत सरूपी जोत प्रगटाया, अछल छल करे विच संसारा। जोत सरूपी जगत भुलाया, मूर्ख मुग्ध ना पावे सारा। हरि भगतां प्रभ दरस दिखाया, गुरचरन आए सोहे दर दरबारा। साचा प्रभ घर मांहि पाया, सोहँ देवे जन

भगतां नाम भण्डारा। महाराज शेर सिँघ कलि जिस रसन ध्याया, उत्तम गुरसिख विच संसारा। संसा प्रभ आप चुकावे। सच जोत प्रगट प्रभ सोहँ शब्द आत्म धुन वजावे। वज्जे धुन खुल्ह जाए सुन्न, जोत सरूप प्रभ नज़री आवे। नज़री आवे साचा प्रभ, आपणी महिंमा आप जणावे। प्रभ की महिंमा सो जन जाणे, ज्ञान गोझ प्रभ भेव खुल्हावे। ज्ञान गोझ दे प्रकाशे, महाराज शेर सिँघ जिस दरस दिखावे। कलिजुग उत्तम निहकलंक दरबारा। सोहँ साची धुन धुन्कारा। गुरसिख रसना होवे जै जैकारा। प्रभ साचे भगतां हिरदे वसणा, देवे दरस आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ साचा राह दस्सणा, लँघे पार कोई गुरसिख प्यारा। साचा राह सतिजुग प्रभ चलावे। सोहँ शब्द साचा मार्ग लावे। ओअँ सोहँ प्रभ एक आप करावे। ओअँ प्रभ, सोहँ साची धुन उपजावे। सोहँ शब्द सुण कन्न, गुरसिख भेव प्रभ का पावे। शब्द सुरत गुरसिख जोत सरूप प्रभ दरस दिखावे। कलिजुग उत्तम रसना विच मुख दे दिवस रैण सोहँ गावे। दरस आपणे दी प्रभ आप आत्म भुक्ख दे, दे दरस जीव तृप्तावे। कलिजुग नाम साचा सोहँ सुख दे, रसना जप जीव अन्त जोत मिल जावे। फिर वास ना मात कुक्ख दे, चरन लाग जो भुल्ल बख्शावे। मात कुक्ख उलटा रुख़ ए, सिर नीचे उप्पर पैर रखावे। जन्म धार वड्डा बेमुख ए, साचा प्रभ आत्म भुल्ल जावे। महाराज शेर सिँघ लेख फिर साचे लिख दे, साध संगत जो जन रल जावे। प्रगटे जोत प्रभ साचा

३८८ ०१ धामा। द्वापर कृष्न मुरार त्रेता रामा। कलिजुग धारे प्रभ निहकलंक जामा। महाराज शेर सिँघ लै अवतार, कलिजुग सँघारे ३८८ ०१

जिउँ द्वापर शामा। गुरसिक्खां कलि मिले वधाई। प्रगटे जोत प्रभ रघुराई। साध संगत दे दरस प्रभ आए तराई। झूठी दुनियां प्रभ सुंञ मसाण सवाई। गुरसिक्खां दे ब्रह्म ज्ञान, साची जोत प्रभ विच देह जगाई। दर आए गुरचरन लगाए ध्यान, खोल्ह त्रैकुटी प्रभ दरस दिखाई। आण कलिजुग होए जीव चतुर सुजान, जिन्हां मिल्या सर्ब सुखदाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,। कलिजुग प्रगट सभ सृष्ट भुलाई। आप अभुल्ल प्रभ सभ जगत भुलाया। आप अडुल सभ जगत डुलाया। आप अतुल सभ जगत तोल तुलाया। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरे फुल्ल, सिँघआसण बैठ प्रभ शब्द लिखाया। सिँघआसण प्रभ का थांउँ। विच मात सोहँ देवे साचा नाउँ। रसना जप जीव गुण निधान दर पाउ। जो जन रसना सोहँ पीव, अन्त जोत मिल जाउ। महाराज शेर सिँघ गुरसिख जगाई साची दीव, चार जुग बुझ ना जाउ। आत्म नाम जिस जन वसाया। निरहारी निरवैर प्रभ विच सिख समाया। कलिजुग जामा धार, निहकलंक कलि नाउँ रखाया। भगत जनां प्रभ देवे तार, सुरत शब्द ज्ञान दिवाया। साध संगत जाउ बलिहार, गुरदर रसना हरि हरि हरि मंगल गाया। महाराज शेर सिँघ तेरे भरे भण्डार, साचा नाम गुरसिक्खां प्रभ भिच्छया पाया। साचा नाउँ उत्तम थांउँ, गुर दर ते पाईए। वड वड भाग साचा प्रभ विच बहाईए।

कलिजुग गुरमुख गए जाग, अनहद शब्द प्रभ दित्ता राग, साध संगत मिल रसना गाईए। तीन लोक प्रभ आए त्याग, निर्धन होए प्रभ विच समाईए। जिउँ बिदर अलूणा खाया साग, दुर्योधन भीखम करुन तजाईए। कलिजुग प्रगट्या प्रभ सांग, जोत सरूप उप्पर ख़ाक बहि जाईए। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कर दरस घर नौं निध पाईए। अचरज आप प्रभ करता, कलि दुष्ट सँघारे। गुरसिख जोत प्रभ साची धरता, उनन्जा पवण सिर छत्र झुलारे। जोत सरूप जोत प्रगटावे करता। महाराज शेर सिँघ कोई भेव ना पावे। कलिजुग आए निहकलंक नाउँ धराणे। नर नरायण खेल सभ करता, जोत प्रभ की जो जन जाणे। साचा प्रभ स्वच्छ सरूप दरस दिखाणे। बेमुख कलिजुग भुल्ल होए अञ्याणे। नज़र ना आया किसे राजे राणे। आत्म जोत वत्थ प्रभ दित्ती सभ, जो दर आए होए निमाणे। प्रगट जोत आप समरथ, कलिजुग खपाए आपणे भाणे। बेमुखां नक्क पाए नत्थ, सदा दीसे मौत सरहाणे। गुरसिक्खां वेला आया हत्थ, कर दरस प्रभ आत्म जोत जगाणे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक समरथ, तख्तों लाहे राजे राणे। एक जोत प्रभ जगत आकारा। जोत सरूप जगत पसारा। बेमुख ना जाणे प्रभ की सारा। गुरसिख आत्म विच धुन्कारा। जोत सरूप कलिजुग निहकलंक अवतारा। सोहँ बाण शब्द गुर सृष्ट झूठी मारा। चार कुन्ट पै जाए हाहाकारा। धन्न धन्न कलिजुग गुरसिख, जिन्हां घर होवे जै जैकारा। कलिजुग उज्जल होए मुख, जिन्हां मिल्या पुरख अपारा। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, हरि देवे साचा नाम प्यारा। नाम मिले जगत वड्याई। बुझी दीपक गुरसिख प्रभ आण जगाई। पंचम जेठ साध संगत तैनूं मिले वधाई। जोत सरूप निरँजण जोत विच मात दे आई। जामा ल्या धार, निहकलंक घनकपुरी प्रभ भाग लगाई। मनी सिँघ पाई सार, दर आए दर्शन पाए पल्ला फेर जगत पाए दुहाई। अमृतसर ल्याए मंजी साहिब उप्पर बहाई। बेमुखां तों धक्के खाए, अमृतसर सराप दवाई। कलिजुग ऐसी कल वरतावे, प्रभ अबिनाशी खेल रचावे, सर अमृत थेह हो जाई। साची लिख्त प्रभ आप लिखाई। महाराज शेर सिँघ तेरी जगत वड्याई। मनी सिँघ ने शब्द कमाया। निहकलंक नर नरायण नर अवतार, उप्पर सीस उठाया। अनन्दपुर जाए, हाहाकार कर आख सुणाया। नीला चोगा सन्त रंगाया। प्रभ साचे दे गल विच पाया। इमाम महदी रसना नाम अलाया। मुस्लमानां दे दुहाई, साचे सन्त आख सुणाया। कलिजुग प्रभ जोत प्रगटाई। भरम भुलेखे सभ सृष्ट भुलाई। विछड़यां गुरसिक्खां निहकलंक कलिजुग साचे मेल मिलाई। गुरसिख गुर दर आया, कर दरस अमरा पद पाया, साचा प्रभ भए सहाई। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सरन पड़े दी लाज रखाई। जो जन आए प्रभ की सरना। कर दरस कलिजुग तरना। जोत सरूपी जोत प्रभ अन्त है करना। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तारे झब, होए निमाणा जो जन आए सरना। जन सो जिस प्रभ आपणा

आप जणावे। तन सो जिथ्थे प्रभ साची जोत टिकावे। मन सो जिथ्थे प्रभ आपणा भेव खुल्हावे। कन्न सो जिथ्थे प्रभ अनहद राग सुणावे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां सिर फूलन बरखा बरखावे। गल माला भिबूखन कँवल नैण। कलिजुग प्रगटे प्रभ, कृष्न द्वापर जिउँ सिर मुकट बैण। धन्न धन्न धन्न गुरसिख रसना जप प्रभ सबाई रैण। कलिजुग प्रगटे प्रभ साची जोत, कर दरस जीव साचे नैण। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, वक्त सुहाया साचा नाम जो जन रसना लैण। कर किरपा प्रभ बरसदा, मुख अमृत धारा। कर किरपा प्रभ बरसदा, पी जीव होवे आत्म उज्जयारा। कर किरपा प्रभ बरसदा, रसना लाए दूध किरपा करे आप गिरधारा। कर किरपा प्रभ बरसदा, अमृत साचा कर निगम विचारा। कर किरपा प्रभ बरसदा, गुरसिक्खां आत्म रक्खे न्यारा। दस्म दुआर खुल्हे दस्म दुआरा। खुल्हे दस्म दुआर अनहद शब्द वज्जे धुन्कारा। विच धरे जोत अगम्म अपारा। अगम्म अपार प्रगटे निहकलंक अवतारा। भगत जन कलि देवे अमृत भण्डारा। बेमुख कलिजुग होए ख्वारा। निजानंद मिले जीव अमृत धारा। पी अमृत धार विच देह जोत जगे अपारा। कलिजुग प्रगट निहकलंक साध संगत जाए तारा। ऐसा किया खेल अपारा। महाराज शेर सिँघ सिख सोहण तेरे चरन दुआरा। अन्तकाल मिले सचखण्ड दुआरा। सचखण्ड जिथ्थे प्रभ साचा वसे। जोत सरूप प्रगट भगत जनां राह दस्से। निर्मल जोत प्रभ प्रकाश कोटन कोट द्वार चरन प्रभ खड़े रवि सस्से। बेमुख कलिजुग जन्म गए हार, सतिगुर ना दीसे चन्द जिउँ मस्से। महाराज शेर सिँघ चरन जाउ बलिहार, जोत सरूप विच सिख दे दिसे। जोत सरूप प्रभ जोती जोता। एक जोत प्रभ जुगो जुग होता। चरन लाग गुरसिख दुरमति देह पी अमृत पाप कलेवर धोता। बेमुख दर ते अन्तकाल कलि जाए रोता। महाराज शेर सिँघ गुरसिख सद चरन बलिहार, अन्त मिलाए विच जोती जोता। किरपा करे प्रभ विच जोत मिलाए। मिलाए जोत जिस प्रभ साचा दरस दिखाए। बिन दरस जीव मानस जन्म बिरथा जाए। साध संगत गुरचरन लाग, अमृत रस पीव लक्ख चुरासी गेड़ मिटाए। महाराज शेर सिँघ गुरसिख सिख दर घर घर दर प्रभ साचा पाए। साचा प्रभ कलि मिले अबिनाशी। जोत सरूप प्रगटे प्रभ सर्ब घट वासी। दर आए प्रभ आस पुजाए, दर आए साध संगत ना जाए निरासी। सच बचन लिखाए, सोहँ दान प्रभ झोली पाए, पंचम जेठ प्रगटे घनकपुर वासी। खण्ड ब्रह्मण्ड हिलाए, त्रिलोकी नंदन ऐसी बणत बणाए, बेमुख मरे कलिजुग कर कर हासी। महाराज शेर सिँघ अन्त होए सहाई, साध संगत तेरे चरन दासी। दास होए जो गुर दर आया। साचा नाउँ अमृत फल पाया। गुण निधान घर आए, भगत जनां लेख लिखाया। उत्तम दे ब्रह्म ज्ञान, बजर कपाट प्रभ खोल्ह विखाया। सोहँ शब्द आत्म लाया बाण, भुल्लया जीव गुरचरन लगाया। जोत सरूपी कलि दिया माण, होए निताण

जिस चरनीं सीस झुकाया। हँकारी माया भरम भुलायण, कुम्भी नर्क प्रभ वास रखाया। निर्धन होए साध संगत मिल जाण, सचखण्ड प्रभ निवास दिवाया। सोहँ शब्द जन सच माण, साचे प्रभ सोहँ मेल मिलाया। कलिजुग प्रगटे विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि आण खपाया। गुरसिक्खां दे आत्म ज्ञान, सतिजुग साचा राह दिखाया। महाराज शेर सिंघ जाणी जाण, कलिजुग गुरसिख पकड़ चरन लगाया। गुरसिख चरन लगाए, प्रभ साचा दरस दिखाए। सोहँ साची भिख्या पाए, आत्म तृप्त कराए। जोत सरूपी दरस दिखायके, हउमे माण गंवाए। कलिजुग भेस वटायके, निहकलंक नाउँ रखाए। काया झूठी प्रभ तजायके, जोत सरूपी खेल रचाए। महाराज शेर सिंघ नाउँ रखायके, सतिजुग साचा सच कलि लाए। साचा प्रभ जिस जन ध्याया। प्रगट होए प्रभ दरस दिखाया। जन भगतां प्रभ होए सहाया। उज्जल मुख विच जगत कराया। कर किरपा प्रभ साचे दरस दिखाया। धू प्रहलाद आण बल तराया। अंबरीक जनक राणी तारा जोड़ी मेल मिलाया। बिदर सुदामा जैदेव गुण निधान घर आए लेख लिखाया। सैण कबीर नामदेव प्रगट कलि प्रभ साचे दरस दिखाया। जुगो जुग प्रभ साचा वेस करेंदा आया। बिन हरि भगतां किसे भेव ना पाया। तरया सैण होए निमाणा बैणी अजामल पापी पार कराया। गनका तारी पापण पूतना आप प्रभ मारी, सचखण्ड प्रभ आप वास कराया । प्रभ गिरधार देवे बधिक तार, चरन कँवल जिस बाण लगाया। अछल छल छल प्रभ जुग जुग करदा आया। राउ गंवाए माण रंक सदना प्रभ आण तराया। कलिजुग प्रगट विष्नूं भगवान, महाराज शेर सिंघ नाउँ धराया। कलि प्रगट भगवान, भगत उधारे। साची लिख्त लिखाए प्रभ अगम्म अपारे। गुरसिख बैठे अन्तकाल सचखण्ड दुआरे। देवे माण कलिजुग, गुरसिख सोहण गुरचरन दुआरे। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कलिजुग प्रगट निहकलंक अवतारे। निहकलंक कलि अवतारी। जन भगतां पैज संवारी। खण्ड ब्रह्मण्ड विच वरभंड सच्ची सिक्दारी। कलिजुग अन्त प्रभ ब्रह्मंड खण्ड जोत सरूप कलि जोत अकारी। महाराज शेर सिंघ तेरी वड्याई, कलि भगतां पैज संवारी। गुरमुख गुरसिख कलि गुणवन्त। जिन्हां मिल्या प्रभ भगवन्त। उत्तम कलिजुग विच साधन सन्त। महाराज शेर सिंघ जोत सरूप वसे विच जीव जन्त। कलिजुग जामा धार गुरसिक्खां प्रभ तराया। निहकलंक कलि लै अवतार, अचरज खेल रचाया। त्रैलोकी नाथ खेल अपार, खण्ड ब्रह्मण्ड उलटाया। अन्त ब्रह्मा आई हार, सृष्ट सबाई जिस खेल रचाया। महाराज शेर सिंघ तेरी किसे ना पाई सार, तीन लोक विच रहाया। प्रभ दुःख देह निवार दे, दर आए रोगी। साचे प्रभ तार दे, कर मेल संजोगी। आत्म अमृत धार दे, मिट जाए अँध्यार ब्योगी। महाराज शेर सिंघ दरस अपार दे, गुरसिख कोई ना दीसे आत्म रोगी। उलटी सृष्टी उलटी मति। साचा प्रभ आप जाणे मित गत। अन्तकाल कलि जोत प्रगटावे तत्त। महाराज शेर सिंघ दरस दिखावे

जोत सरूपी सच। गुरसिख प्रभ दर चातृक। प्रभ पिआवे अमृत, धन्न होवे पंचम जेठ रात्रक। निहकलंक कलि जोत प्रगटावे, गुरसिख प्रभ दे सांतक। अमृत मेघ आप बरसाए, बेमुखां मन शब्द कांतक। जोत सरूप प्रभ अग्न लगाए, कलिजुग भस्म होए भस्मांतक। मदि मासी कोई रहण ना पाए, गुरसिख देवे प्रभ सुख आत्मक। जोत निरँजण आत्म दीपक विच जोत जगाए, महाराज शेर सिँघ गुरमुखां करे सांतक। हँकारीआं प्रभ माण गंवाए, सोलां कल संपूरन। चौदां विद्या प्रभ रसन अधूरन। गुरसिक्खां वजावे शब्द अनहद तूरन। बेमुख दर आए मदि रसना लाए, मानस जन्म गया अधूरन। भगत जन आए, चरन लग्ग जाए, सोहँ रसना गाए, महाराज शेर सिँघ जोत जगाए जिउँ कोहतूरन। उत्तम जोत हिरदे प्रकाशे। कलिजुग मिले प्रभ अबिनाशे। गुरसिख जीवे कलिजुग गुरचरन भरवासे। शब्द चलाए जिउँ चक्र सुदर्शन रिखी दुरबासे। निहकलंक जगत खपाए, सृष्ट सबाई नासे। महाराज शेर सिँघ कंठ लगाए, जो जन होए प्रभ के दासे। दासन दास दास प्रभ भया। निर्धन निरमाण प्रभ विच वास किया। पई घाल थाए, पूरब जन्म बीज जो बीआ। महाराज शेर सिँघ जामा धार गुरसिक्खां दे दरस पार किया। कलिजुग दरस जिस प्रभ दिखाया। पारब्रह्म अचुत्त परमेश्वर, बिन रंग रूप विच देह समाया। गुरसिख जानण प्रभ साचा ईश्वर, बेमुखां प्रभ पड़दा पाया। महाराज शेर सिँघ सदा भगत रखेश्वर, चरन लाए जिस पार कराया। चरन कँवल जन कर प्रीत। प्रभ साचे दी साची रीत। कलिजुग सोहँ रसना चीत। जेहवा गुण गाओ गहर गम्भीर गीत। कर दरस कलि साचा प्रभ, पतित हो जायण पुनीत। महाराज शेर सिँघ हिरदे परवेशिओ, आत्म होई सीत। आत्म वसे प्रभ वसनेहारा। सर्ब घट जन भगतां राह दसणेहारा। बेमुखां सोहँ बाण प्रभ कसणेहारा। महाराज शेर सिँघ सोहँ नाम सच दसणेहारा। साचा शब्द गुरसिख कमावे। मनमुख मूढ़ ना रिदे वसावे। कर कर हासी दर उठ जावे। भरमत भरमत बहुत दुःख पावे। गुरमुख साचा चरन प्रीत लगावे। रसना जप सोहँ नाउँ, जोत सरूपी मेल मिलावे। महाराज शेर सिँघ देवे साचा थाउँ, मातलोक गुरसिख ना आवे। गुरप्रसादि गुर दर आए। गुरप्रसादि प्रभ दर्शन पाए। गुरप्रसादि जगत जलन्दा रक्ख विखाए। गुरप्रसादि गुरमुख गुरसिख कहाए। गुरप्रसादि जो जन गुरप्रसाद मुख में पाए। झूठी काया दुःख रोग गंवाया, जो जन मनो ना भुलाए। शब्द भुलाए बहुत दुःख पाए, साचा प्रभ शब्द लिखाए। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, गुरसिक्खां ना नर्क निवास दिवाए। आत्म दुःख जीव जलाया। बालक निधान जिस घर नज़र ना आया। कुक्ख मात ना भाग लगाया। पूत बिन कोई जग मात पित ना अख्वाया । बिन प्रभ साचे, साची दात ना झोली किसे पाया। कलिजुग उत्तम होए साचे, चरन आए रसना मंग मंग सुख पाया। महाराज शेर सिँघ सर्ब व्यापे, वड दाते सिर हत्थ टिकाया। गुर दरबार ऊँचा दर। सर्ब घट दाता

देवे वर। गुरचरन लाग बेमुख जायण तर। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कलिजुग साचा तेरा दर। प्रभ दर आए जीव सवाली। अंस बिनां जो रहि गए खाली। बिन प्रभ कोई ना बणदा वाली। जगत तृष्ना आत्म जाली। बच्चे फुलवाड़ी, मात पित बण जावे माली। महाराज शेर सिँघ जो जन रसना गाए, कलिजुग गोद ना जाए खाली। जीव भुल्ले प्रभ अभुल्ल। जीव डुल्ले प्रभ अडुल्ल। जीव कलिजुग रुले प्रभ सदा अरुल्ल। महाराज शेर सिँघ शब्द अन्धेरी जाए झुल्ल। गुर दर आवणा। साचा शब्द कमावणा। फल पाओ जीव मन जो भावना। मानस जन्म ना कलिजुग बिरथा गंवावणा। हँकारीआं हँकार निवारे, प्रभ जिउँ राम रावणा। दुष्ट सँघारे प्रगट झब, कंस हँकारी मौत गोद सवावणा। महाराज शेर सिँघ जो दर आए, मंगया वर मुख दर पावणा। वर मंग जीव, दर आए मंग। ना संग प्रभ आत्म दे वगाए गंग। सोहँ शब्द मन चढ़ाए साचा रंग। कलिजुग वक्त विहाया, कर दरस पार जाओ लँघ। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया, पापी पतित जोड़े चरन संग। पंचम दिवस प्रकाशया, कलिजुग जोत प्रगटाई प्रभ अबिनाशया। गुरसिख सुहाए दर आए, रसना गाए सोहँ स्वास सवास्सया। महाराज शेर सिँघ दर साचा मंगण, दे दरस करे बन्द खुलास्सया। रैण गई भिन्नड़ी, दिवस उत्तम चढ़या। गुरसिख दर आए होए निमाणा, गुर अग्गे खड़्या। देही जाए दुःख गंवायके, सरन आए जो पड़या। महाराज शेर सिँघ रसना गायके, कलिजुग अग्न विच ना सड़या। पंचम जेठ दिवस सुरतंत। कलिजुग प्रगटे निहकलंक भगवन्त। तेतीस करोड़ गण गंधर्ब दर बरखाए फुलंत। कलिजुग माया पाए प्रभ बेअन्त। आप भुलाए सभ जीव जन्त। चरन लगाए गुरमुख विरले सन्त। महाराज शेर सिँघ अवतार नर साचा कन्त। साची जोत प्रभ जगत धराए। पीत पितम्बर त्रैभवण कहाए। सारंगधर भगवान बीठला, निहकलंक गुरसिक्खां प्रभ साचा डीठला, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए। साध संगत मन वज्जे वधाए। जो जन आए प्रभ दरस प्यासा। निज घर आए सर्ब घट वासा। जोत सरूप विच साध संगत वासा। बेमुख दर ते रसन चलाए, शब्द गंवाए कर कर हासा। अन्तकाल कलि कोई ना छुडाए, साची दरगाह मिले सज़ाए, अन्तकाल होए नर्क वासा। जो दर आए साचा प्रभ रिदे वसाए रसना जपे हरि नाम स्वास स्वासा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग निहकलंक अवतार, झूठी दुनियां जगत तमाशा। साची जोत कल धारे। जोत सरूप प्रभ निहकलंक अवतारे। दर आए जो जन चल, शब्द सुरत तोड़े प्रभ हँकारे। खाणी बाणी गगन पाताली, जीव जन्त प्रभ जोत आकारे। खण्ड ब्रह्मण्ड आकाश पाताल वसे, कलिजुग आया सच कल धारे। नाड़ी बहत्तर बन्द कराए, विच सिख करे अवतारे। ऊँचा दर कलिजुग सुहाया, प्रगटी जोत आप निरँकारे। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, चरन आए जो निमस्कारे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, जामा घनकपुरी विच धारे। घनकपुरी घनशाम प्रभ आया।

सोहँ साचा शब्द चलाया। छड्ड देह जोत सरूप समाया। अनद बिनोदी प्रभ साचा खेल कलिजुग रचाया। गुरसिख अन्तकाल लै प्रभ गोदी, साचा धाम सचखण्ड बणाया। अमृत देवे साचा जाम, पी अमृत महां रस पाया। गुरचरन प्रीती जीव कलि साचा काम, प्रगट जोत निहकलंक परमेश्वर आया। द्वापर प्रगटे घनईया शाम, कलिजुग शेर सिँघ नाम धराया। प्रभ जोत मात प्रगटाई। गुरसिक्खां पूरन मति शब्द सुरत पाई। आत्म दे ब्रह्म ज्ञान, साची धुन विच देह वजाई। महाराज शेर सिँघ तेरे दर मिली वड्याई। भगत वछल प्रभ भेस वटा के। निहकलंक कलि नाउँ रखा के। सिँघ आसण प्रभ बैठा डेरा ला के। आत्म तृप्ताए प्रभ दर्शन पा के। आत्म जोत जगाए, प्रभ भरम भुलेखे सारे लाह के। सहिज अनन्द विच देह उपजाए, सोहँ साचा नाम जपा के। बिन बाती बिन तेल दीपक जगाए, साचा नाम बत्ती ला के। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आया, जोत सरूपी भेस वटा के। जोत सरूप प्रभ जोत जगाणा। गुरसिख देवे कलिजुग सच टिकाणा। गुर चरन लाग जीव तर जाणा। महाराज शेर सिँघ प्रभ सच कर जाणा। साचा प्रभ जुग सति लावे। अन्तिम कलिजुग प्रभ आप करावे। पंचम जेठ नर नरायण प्रभ जोत प्रगटावे। आपणा भेव प्रभ ना किसे जणावे। गुरमुख विरले प्रभ बूझ बुझावे। स्वच्छ सरूप जिस दरस दिखावे। कर दरस जीव प्रभ आत्म तृखा मिटावे। महाराज शेर सिँघ साचा नाम, सोहँ शब्द रसना गावे। सतिजुग सोहँ मिले वड्याई। कुरान अञ्जील प्रभ खेल मिटाई। ईसा मूसा मुहम्मदी कोई रहण ना पाई। गीता ज्ञान प्रभ अन्त कराई। कलिजुग बाणी गुर रसन वखानी, जोत सरूप प्रभ जोत खिच्च वखाई। अठसठ तीर्थ निर्मल नीर, सति रहे ना राई। प्रगटे कलि प्रभ समरथ, गुरचरन प्रीती साचा तीर्थ, साची बूझ प्रभ आप बुझाई। महाराज शेर सिँघ आपणी जोत प्रगटाई। जोत सरूप जगत प्रभ आया। साचा शब्द सोहँ चलाया। राउ रंक अन्त कलि प्रभ इक्क कराया। जोत सरूप साचे प्रभ राजिआं राणयां तख्तों लाहया। मनी सिँघ शब्द लिखाया। तत्त जोत सरूप प्रभ पूर कराया। महाराज शेर सिँघ कलि प्रगट आया, शब्द लिखाया जगत जलाया। पंचम जेठ तैनूं मिले वड्याई, कलिजुग निहकलंक जोत प्रगटाई। पंचम जेठ तैनूं मिले वड्याई, साध संगत प्रभ दर आए रसना हरि हरि गाई। पंचम जेठ तैनूं मिले वड्याई, गुरदर आए साची बूझ घर साचे पाई। पंचम जेठ तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ कलि जोत धराई। कलिजुग आया जोत प्रगटायके। कँवल नैण भेस वटायके। कलिजुग जाए आप खपायके। सतिजुग साचा सच जाए लायके। सोहँ साचा शब्द चलायके। चार वरन प्रभ इक्क करायके। चार कुन्ट सोहँ शब्द जै जैकार करायके। जोत सरूप कलिजुग बेमुख अग्न जोत जाए जलायके। गुरमुखां साचा दर दिखाए, भरम भुलेखे लाहिके। विछड़यां मेल मिलाए, जोत सरूप जन्म जन्म दी मैल गंवायके। सोहँ शब्द जो रसना गाए, रक्खे

लाज प्रभ सिर हत्थ टिकायके। पंचम जेठ चरन डिग्गे जो आए, महाराज शेर सिंघ देवे दरस जोत प्रगटायके। पंचम जेठ चरन जन परया। कलिजुग अंदर पार प्रभ करया। मिल साध संगत भवजल तरया। मिले विच साची जोत, आवे जावे ना जन्मे मरया। महाराज शेर सिंघ तेरे चरन प्रीत, गुरसिख तन मन हरया। गुरचरन प्रीती गुरसिख कमावे। उत्तम पदवी गुर दर ते पावे। जन्म मरन दा गेड़ चुकावे। सचखण्ड विच जोत मिलावे। सभ सृष्ट चरन की दासी, आप अडोल जगत डुलावे। महाराज शेर सिंघ आत्म वासी, निज घर बैठ डेरा लावे। निज घर वसे आप निरँकारा। झूठी देह साची जोत करे आकारा। कलिजुग माया भरम भुलाया संसारा। आप डुलाया कलि धक्का लाया, मूर्ख मुग्ध ना जाणे प्रभ की सारा। जगत हिलाया शब्द चलाया सोहँ खण्डा दो धारा। निहकलंक कलि आया, महाराज शेर सिंघ नाम धराया, नर नरायण नर अवतारा। नर नरायण जगत विच आए। सर्ब सृष्ट दाढ़ां हेठ चबाए। जे कोई वेखे दिस ना आए। बिन रंग रूप प्रभ जोत सरूप विच सिख समाए। कलिजुग प्रगटे प्रभ साचा गुरमुख दर कोई दिस ना आए। रक्खे लाज विच अन्ध कूप, काल अन्त प्रभ होए सहाए। महाराज शेर सिंघ देवे दरस स्वच्छ सरूप, चरन लाग जो रसना गाए। रसना नाम जिस जीव गाया। प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाया। आत्म पर्दा प्रभ खोल्ह वखाया। जिउँ चन्दन प्रभास गुरसिख कलि रखाया। बेमुख प्रभ कीते नास, मदि मास जिस रसना लाया। जामा धार निहकलंक कलिजुग जीव भुलाया। महाराज शेर सिंघ तेरे चरन प्यास, गुरसिख सद रखाया। जो जन आए प्रभ चरन दुआरे। पंचम जेठ कर निमस्कारे। गुरसिख सोहण सच हरि के दुआरे। कलिजुग जामा धारे निहकलंक अवतारे। आत्म दे ब्रह्म ज्ञान, प्रभ भरे भण्डारे। सो जन चतुर सुजान, जिन्हां मिल्या पुरख अगम्म अपारे। महाराज शेर सिंघ सोहँ साचा लावे बाण, चार कुन्ट होए हाहाकारे। पंचम जेठ प्रभ लिख्त कराए। आप बैठ अडोल सिंघआसण सभ जगत डुलाए। बेमुख होए सभ नास, जन भगतां लाज रखाए। महाराज शेर सिंघ जोत सरूप दरस दिखाए। जोत निरँजण नर नरायण। जोत निरँजण नर निरवैर। जोत सरूपी जगत वरतावे कहर। पंचम जेठ गुरसिक्खां कीनी प्रभ मेहर। जोत प्रगटाई साध संगत ना कीने देर। महाराज शेर सिंघ निहकलंक कलि पाया फेर। सचखण्ड प्रभ आप तजाया। बाशक सेज प्रभ आसण लाया। मातलोक निहकलंक प्रभ जोत प्रगटाया। प्रगट जोत सिंघ सिंघासण, दर घर मन्दर थान सुहाया। प्रभ जोत अबिनाश कदे ना होवे नास, झूठी दुनियां माण वधाया। जो जन जपण स्वास स्वास, अन्तकाल प्रभ दरस दिखाया। जोत सरूपी विच जोत मिलाया। महाराज शेर सिंघ दर दासन दास, सोहँ साचा नाम जपाया। साची देवे आप प्रभ वत्थ। सोहँ नांउँ सदा अकत्थ। प्रभ की महिमा कोई जीव ना जाणे कथ। रसना लोभी सृष्ट लहि

गई सत्थ। कलिजुग मथे बेमुख जिउँ मक्खन मथ्थ। सोहँ शब्द बेमुखां प्रभ पाई नत्थ। गुरसिक्खां सोहँ नाम कलिजुग मिल्या साचा रथ। कलिजुग जामा धारे प्रभ जिउँ राम घर दसरथ। महाराज शेर सिँघ जो जन चरन निमस्कारया, देही दु:ख सभ गए लथ्थ। रोगी रोग अवल्लड़ा, जीव भेव ना पावे। साचा वैद आप प्रभ, जोत सरूपी विच देह समावे। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, झूठी काया दए जलावे। उत्तम जोत धरे प्रभ आकाश, जोत सरूपी दीपक देह जगावे। भगत जनां हरि हिरदे वास, खोल्ह त्रैकुटी प्रभ दरस दिखावे। होए दरस आत्म जीव मिटे तृप्तास, महाराज शेर सिँघ नज़री आवे। आत्म दरस जिस जीव प्रभ दिखाया। ईश जीव विच्चों भेद चुकाया। जीव ब्रह्म सरूप विच ब्रह्म समाया। राग नाद अगाध बोध प्रभ शब्द लिखाया। जुगो जुग प्रभ भेख धर, जोत सरूप जगत में आया । गुरमुखां साचे लेख कर, होए दयाल प्रभ दरस दिखाया। बेमुख साचा दर वेख कर, भज्जा जावे मुख छुपाया। महाराज शेर सिँघ बुध बिबेक कर, पंचम जेठ आए दरस दिखाया। पंचम जेठ बिक्रमी उन्नी सौ पंजाह। जामा ल्या धार साचे बेपरवाह। जोत सरूप प्रभ होयके, झूठी काया करी स्वाह। कोटां विच्चों प्रभ वेख के, गुरसिख देह प्रभ करे निरबाह। महाराज शेर सिँघ कलिजुग साचा दर वेख के, गुरसिख साचे चरनीं लग जाह। जोत सरूप प्रभ कलिजुग आया। शब्द सुरत भेव चुकाया । चरन प्रीती भगत भगवान दे, गुरसिक्खां चरन लगाया। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। सचा दर प्रगटे सच दरबारी। गुर दर आए चल जो नर नारी। पंचम जेठ पंचम मार, प्रभ पैज संवारी। अनाथां अनाथ सर्ब के साथ, घट घट वसे आप मुरारी। महाराज शेर सिँघ सच तेरी गाथ, कलिजुग कोई विरला होए वपारी। कलिजुग आया निहकलंक । जगत भुलाया सोहँ वजाया शब्द डंक। प्रगट जोत अन्तकाल प्रभ इक्क कराया राउ रंक। गुरसिख सोहण गुरचरन दुआरे, उतरे पार जिउँ त्रेता भगत जनक। प्रगटी जोत कलि आप गिरधारे, जीव कर निमस्कार गुरचरन दुआरे बार अनक । महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई विच पुरी घनक। त्रेता साचा राम अख्वाया। बाल्मीक जाए तराया। चार वरन जिस दिन दिहाड़ सताया। लुट्ट मार साची खेल बणाया। चल आए राम मुरार आत्म ज्ञान दिवाया। अन्तकाल ना कोई तेरा, झूठा जगत भुलाया। सुहाए थान रक्ख बाल, प्रभ अबिनाशी फेरा पाया। विच भरवास रक्ख वास, अनन्द मंगल हरि प्रभ दिया। प्रभ चरन लाग मन भए वैराग, विच्चों अज्ञान अन्धेर मिटाया। गए भाग जाग, मिल्या साचा राग, होए अधीन प्रभ परमेश्वर घर मांहि पाया। पंचम जेठ प्रभ जोत प्रगटाई, प्रभ दरस दिखाया। गुर धाम लगाया भाग, महाराज शेर सिँघ होए सहाया। सतिजुग होए धाम न्यारा। चार कुन्ट चल आए प्रभ चरन दुआरा। तेतीस करोड़ दर खड़े कर निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग होवे साचा घर ऊँचा दर तेरा दरबारा । साचा घर जिथ्थे

प्रभ वस्सया। सुहाया थान रसना गाए जिथ्थे प्रभ जस्सया। कलिजुग भगत पछाण, दर घर साचा दस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख तेरे दर तों जाए नस्सया। गुरसिख देवे प्रभ वड्याई। बेमुख जाए पति गंवाई। गुरसिख गुर दर बूझ बुझाई। बेमुख मूर्ख पति गंवाई। गुरसिख निर्मल निर्मल देह कराई। बेमुख झूठे धन्दे मानस जन्म गंवाई। गुरसिख गुर दर प्रभ रसना गाई। बेमुख दर आए, जोत सरूप नज़र ना आई। गुरसिख गुर मिल अमरापद पाई। बेमुख जन्म हार गए पति गंवाई। गुरसिख साची जोत विच जोत मिलाई। बेमुख गर्भवास प्रभ दे सज़ाई। गुरसिख खण्ड सच पदवी पाई। बेमुख जन्म जन्म मर जाई। गुरसिख जोत सरूप जोत मिल जाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जो दर आए सीस झुकाई। गुरमुख प्रभ सच मार्ग पाया। रसना रस छोड़, आत्म रस विच देह पाया। कलिजुग दीने बंधन तोड़, सोहँ साचा नाम जपाया। अन्तकाल है प्रभ बन्दी छोड़, गुर पुरी जन धाम पुचाया। गुरसिक्खां प्रभ दर्शन लोड़, प्रगट जोत पंचम जेठ प्रभ दरस दिखाया। प्रगटे जोत प्रभ निराहारी । कलिजुग अन्तकाल होए ख्वारी। अन्तकाल कलि वध जाए बीमारी। गुरसिक्खां प्रभ एक सरन तुमारी। महाराज शेर सिँघ ऊँचा दर, बैठा घर सचा दरबारी। सच्चा आप सच्चा दरबार। जोत प्रगटावे जोत सरूप, राउ रंक कलि किया ख्वार। साध संगत कलिजुग सूज्झया, सच प्रभ द्वार । महाराज शेर सिँघ विरले गुरमुख बूज्झया, दिखावे दरस आप मुरार। पंचम जेठ प्रभ जोत प्रगटाए। प्रगट जोत प्रभ साचा भोग लगाए। भोग लगाए गुर प्रसाद गुरमुखां मुख लगाए। दुःख गंवाए गुर प्रसादी, पंचम जेठ दया कमाए। महाराज शेर सिँघ जो जन रसना अराधे, जन्म मरन दा दुःख गंवाए। गुरप्रसादि गुर दर बूज्झया। गुरप्रसादि गुर चरन लाग गुरसिख झूज्जया। गुरप्रसादि गुरसिक्खां मन प्रभ साचा लूज्झया। गुरप्रसादि प्रभ भरम चुकावे गूज्झया। गुरप्रसादि प्रभ दरस दिखावे, भेत खुल्हावे भरम चुकावे विच देह दूज्जया। गुरप्रसादि गुरसिख तर जाए, महाराज शेर सिँघ जन भगतां बूज्झया। जो जन आए चरन प्रभ लागा। कलिजुग होए पूरन भागा। गुरसिख गुर दर जागा। साचे प्रभ सच सुणाया अनहद वाजा। मानस जन्म कलि निर्मल होया, गुरचरन लाग ना लागे दाग़ा। जोत प्रगटाए विष्नूं भगवान, भोग लगाए जिउँ बिदर घर सागा। महाराज शेर सिँघ जाणी जाण, बेमुख दर ते जाए भागा। पंचम जेठ वजाए प्रभ धुन, कर्म कर प्रभ जीव जन्म दवाए। लक्ख चुरासी विच्चों उत्तम प्रभ आप रखाए। ज्ञान ध्यान चतुर सुजान कर, साची जोत विच देह जगाए। गुण निधान कर कलि बैठा विच आसण लाए। जीव आत्म अमृत इशनान कर, अमृत झिरना निझरों प्रभ दे झिराए। हरि दर पूरा प्रभ पछाण कर, दोए जोड़ कर सीस झुकाए। पंचम जेठ हुक्म भगवान कर, सिँघआसण बैठ सभ दुःख गंवाए। दुखी दलिद्री दर आए, होए निरासे प्रभ सरन लगाए। देह दुखीआ

जीव बिल्लाए। कूड़ी काया ताप तीन दए अग्न जलाए। सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञान दे, आत्म प्रभ शांत कराए। दुखीआं प्रभ दुःख गंवाया। किशना शुक्ला पक्ख प्रभ सुफल कराया। अमृत आत्म सिच प्रभ रोग गंवाया। महाराज शेर सिँघ सोहँ साचा दान दे, साचा राह जणाया। देवे दान प्रभ जगत भण्डारी। सुफल कुक्ख ना रहे बीमारी। बिन पूत ना रहे नर नारी। चरन लाग होए वडभाग, साध संगत प्रभ पूरे तारी। विच्चों दुःख आप प्रभ मारे, मरे खंघ ताप सोहँ शब्द जो रसना उचारे, जीव आत्म दुःख ना करे ख्वारी। दुखीए होए दर भिखारी। लाह दे भुक्ख प्रभ संसारी। महाराज शेर सिँघ जो जन आए दरबारी। दुखीआं दुःख गंवाए करे देह निर्मला। प्रभ हिरदे सच वसाए, भाग लगाए जिउँ रुक्ख सिंमला। बेमुख अग्न जलाए, जिउँ बालू बिमला । महाराज शेर सिँघ होए सहाई निहकेवला। चरन कँवल उप्पर धवल अबिनाशी संवल। कलिजुग भेख कराए प्रभ रंवल। गुरसिक्खां अमृत बख्श, खोल्ह वखाए प्रभ नाभ कँवल। नाभ कँवल जन खोल्ह वखाए। दस्म दुआर दी सोझी पाए। भेख देख दर आए कलि जाए शरमाए। किरपा कर प्रभ अमृत मेघ दे बरसाए। महाराज शेर सिँघ गुरमुख कलिजुग गुरसिख साचा नाउँ रखाए। गुरमुख सो जन प्रभ जपे रसन स्वासे। बेमुख सो जन रसन आहार करे मदि मासे। गुरसिख सो जन, गुरचरन प्रीत होए रहिरासे। बेमुख होए सो जन, जिन्हां मिल्या ना प्रभ अबिनाशे। जल पाणी अमृत धारा।
३६८
०१
पी अमृत मिले प्रभ सच दुआरा। सचखण्ड सुर नर प्रभ देवे अमृत धारा। साचा अमृत विच मात गरुड़ उतारा। गरुड़ सुजान विष्नूं भगवान ऊपर करे सवारा। मात आया इन्द्र तकाया, देवत्यां पकड़ डुलाया। इक्क बूंद मात विच आई, गंगा धार प्रभ नीर चलाया। इक्क बूंद गोदावरी त्रिबरग नाम रखाया। गंगा अमृत हरि वसे आप, पकड़ कसीरा रविदासे माण दवाया। गोदावरी सुहाई गुर गोबिन्द विच चरन टिकाई, साचा धाम कलिजुग बणाया। कलिजुग अन्तकाल प्रगट जोत तोड़ जाए सभ जंजाल, जोत सरूपी अचरज खेल रचाया। गुर गोपाल भगत वछल दीन दयाल सर्ब सृष्ट में समाल, सारा भेव चुकाया। जोत सरूपी कुन्ट चार पाया जाल, महाराज शेर सिँघ भाणा कलि वरताया। जामा धार जगत ल्या अवतारा। सर्ब माण प्रभ आप निवारा। सर्बत्र तीर्थां माण गुर चरन दुआरा। कलिजुग सारे अन्त होए ख्वारा। सतिजुग सोहँ शब्द धुन्कारा। सतिजुग वरते प्रभ पूरा बणे लिखारा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख धनवन्त, कलिजुग पाया जिन सच दुआरा। चरनामित गुरसिक्खां पाया। चरनामित फल प्रभ धुरों लिखाया। चरनामित सिंच तन मन प्रभ हरा कराया । चरनामित अमृत बूंद पी अमरा पद पाया। चरनामित साध संगत गुर सागर गहर गम्भीर पाया। चरनामित रसना पी बाल बिरध सभ तराया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, आत्म अमृत बरख आत्म तृप्ताया। कलिजुग साचा प्रभ का बंस। साध संगत प्रभ साची अंस। भगत वड्याई

चरन लगाए, बाशक गुण गाए विच मुख सहँस। महाराज शेर सिँघ बेमुख खपाए, जिउँ हँकारी कृष्ना कंस। अमृत आत्म दे वरखाए। पी अमृत जीव त्रैभवण सुझाए। जगत जलन्दा रक्ख प्रभ वखाए। अनक दु:ख ना साध सताए। दुखिया कोई ना गुर दर बिल्लाए। मुख ना निकले हाए हाए। बैठ विच साध संगत जीव रसना गाए। महाराज शेर सिँघ दर खड़े मंगत, साचा सुख विच झोली पाए। अमृत दे प्रभ दुखियां दु:ख गंवायदा । जन लगा गुरचरन, कर किरपा पार करांयदा। अमृत साचा संगत बरस मींह, प्रभ दकुखां नास करांयदा । महाराज शेर सिँघ प्रभ अबिनाशी, दर आए पार करांयदा। अमृत बरखे प्रभ निराधारी। सरन पड़े दी रक्खे लाज मुरारी । सृष्ट सबाई तज्ज के जो जन आए सरन गिरधारी। प्रभ जाए पड़दे कज्ज के, कलिजुग जीव ना होए ख्वारी। आत्म दरस भुक्खा जाए रज्ज के, देवे दरस प्रभ अगम्म अपारी। सोहँ शब्द लिखा प्रभ वज के, सतिजुग देवे प्रभ सिक्दारी। पी अमृत जाउ रज्ज के, अमृत चढ़ी रहे खुमारी। गुरसंगत बहिणा सज के, प्रगटे जोत आप बनवारी। हुण वक्त नहीं जाणा भज्ज के, सोहँ शब्द जगत लाया खण्डा दो धारी। महाराज शेर सिँघ अमृत वरखे, गुरसिक्खां करे दूर बीमारी। पंचम जेठ प्रभ दे वड्याई। गुरमुख साचा प्रभ दे तराई। पूरन घाल प्रभ थाएँ पाई। सिँघ आत्मा पंचम जेठ प्रभ दे वड्याई।

३९९
०१

❊ ६ जेठ २००८ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल बचन होए ❊

घर आए सिख सज्जण सुहेले। साचे प्रभ कर लए संजोगी मेले। अमृत विच चवाए नभ, अचरज खेल आप प्रभ खेले। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर साचा, गुरसिक्खां चरन साची जोत अन्त मेले। वक्त वेला बूज्झया, प्रभ जोत प्रगटाए। कोई भेत ना रक्खे गूज्झया, प्रभ दए दुहाए। गुरसिक्खां दर साचा बूज्झया, कलिजुग वक्त मुकाया भाउ चुकाया एका दोए। बांहों पकड़ तराया, साची दरगाह दे पहुंचाए। कलिजुग भेव किसे ना बूज्झया, नाथ त्रैलोकी जगत भुलाए। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, महासार्थी आप अख्वाए। रैण सुहाई पंचम जेठ, साध संगत गुरदर ते आई। साचा प्रभ दे वधाई, सोहँ नाम जो जन रसना गाई। अन्तकाल कलि प्रभ होए सहाई। साध संगत प्रभ दए सुणाई, झूठा बचन ना होवे राई। झूठा कलिजुग रहण ना पाई। झूठी सृष्ट आप दाया दाई। जोत सरूप प्रभ कलिजुग खेड मिटाई। चार कुन्ट पै जाए दुहाई। जोत सरूप अग्न प्रभ लाई। भैणां तांई छड्ड जायण भाई। महाराज शेर सिँघ भय भयानक, गुरसिक्खां सिर हत्थ टिकाई। भय भयानक गुरसिख कलिजुग सहारा। कलिजुग मिल्या जोत सरूप प्रभ गिरधारा। तख्त निवासी मातलोक बणाया सचखण्ड दुआरा।

साध संगत प्रभ चरन होए दासी, सोहँ नाम प्रभ देवे भण्डारा। जो जन होए कलि मदिरा मासी, अन्तकाल प्रभ नर्क मँझारा। महाराज शेर सिँघ घनकपुर वासी, गुरसिक्खां दीसे सच दुआरा। प्रभ अबिनाशी सच धाम सुहाया। सर्ब घट वासी प्रभ प्रगट डेरा लाया। अन्तकाल कलि अन्त होए जासी, प्रभ साचे बचन लिखाया। गुरसिक्खां आत्म चिन्ता नासी, आत्म दीप प्रभ जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग विरले गुरमुख पाया। गुरमुख सो जन, जिस प्रभ पाया। गुरसिख सो धन्न, जिस प्रभ दरस दिखाया। गुरमुख सो जन, कलिजुग कल अन्धेर गंवाया। गुरमुख सो जन, जोत सरूप जिस प्रभ दरस दिखाया। गुरसिख सो जन, अनहद राग प्रभ कन्न सुणाया। गुरमुख सो जन, नेत्र पेख महासुख पाया। महाराज शेर सिँघ प्रभ साचा मन्न, भरम भुलेखे जीव क्यों मानस जन्म गंवाया। जन्म गंवाए वक्त विहाए, बेमुखां सार ना पाई। कलिजुग खपाए, खण्ड ब्रह्मण्ड उलटाए सोहँ नाम दुआई। ब्रह्मा प्रभ माण गंवाई, सृष्ट सबाई हत्थ सिँघ पाल फड़ाई। सतिगुर साचे नींह रखाई। जुग चौथे ध्रू तजाया। सचखण्ड द्वार प्रभ गुर चरन संग सवरन बहाया। पूरन देवे आप वड्याई, तेजा सिँघ वेला नेड़े आया। कलि जोत सरूप प्रभ सिख साचा नाद चार कुन्ट पुचाया। जगत जुगत प्रभ आप बणाई। धारे खेल आप रघुराई। सृष्ट सबाई कलि सुआई। उलटी मति अज्ञान विच पाई। दर आए नेत्र पेखे, बेमुख लुज्झा सद भुलाई। महाराज शेर सिँघ पाए भुलेखे, गेड़ चुरासी विच पाई। गुरसिख तेरी वड्याई, प्रभ आप लिखाई। दर आए जन्म सुफल कराई। पूरन बुध्ध होवे जिस आत्म दर्शन पाई। गुरसिख होवे साची सुध, लोयण साचा प्रभ दे खुलाई। शब्द सरूपी कलिजुग प्रभ कीना युद्ध, चार कुन्ट पै जाए दुहाई। गुरसिख उत्तम निर्मल जिउँ दुध्ध, रसना जप सोहँ जै जै जैकार कराई। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सच धाम गुरसिक्खां दे पुचाई। साचा धाम साचा काम। प्रभ जगत चलाए सोहँ नाम। जन पाए घनशाम। सतिजुग साचा मार्ग पाया, सतिजुग साचा रहसी ग्राम। साचे प्रभ विच लिख्त लिखाया, महाराज शेर सिँघ कलिजुग पूरन करे काम। जोत सरूपी कलिजुग खपाया, सतिजुग साचा लाया, साची जोत सतिजुग परवेशे। जोत सरूपी प्रभ करे भेसे। साचे प्रभ को सतिजुग जीव सद करे अदेसे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, दर खड़े कोट ब्रह्मा विष्न महेषे। पारब्रह्म तेरी अचरज खेला। जोत सरूप प्रगट कलिजुग आया अन्त वेला। साध संगत प्रभ दरस दिखाया झब साचा सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, जोत सरूपी खेल प्रभ खेला। जोत सरूप प्रभ किया पसारा। कलिजुग होवे अन्ध अन्धयारा। सृष्ट सबाई प्रभ करे ख्वारा। अन्तकाल कलि दु:ख लग्गे भारा। पंचम जेठ प्रभ लिख्त कराए, मदि मासी ना पाए गुरचरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ होए सहाई, सोहँ नाम जिस रसन उचारा। सोहँ नाम जिस जन रसन

ध्याया। रसना जप आत्म सुख पाया। दे दरस प्रभ अज्ञान अन्धेर मिटाया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग प्रगट गुरमुखां दरस दिखाया। गुरसिख तारे आप प्रभ, होए जोत सरूप। गुरसिख तारे आप प्रभ, दरस दिखावे वड भूप। गुरसिख तारे आप प्रभ, गुरसिक्खन दस्से स्वच्छ सरूप। गुरसिख तारे आप प्रभ, आत्म जोत जगावे देवे ज्ञान अनूप। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सभ घट वसे बिन रंग रूप। रंग रूप प्रभ कोए ना जाणे। धन्न सो जन जो चले प्रभ के भाणे। तख़्तों लाहे सभ राजे राणे। गुरसिक्खां माण दवाया, प्रभ सुत्तयां खड़ा सरहाणे। प्रभ साचे दरस दिखाया, महाराज शेर सिँघ देवे माण निमाणे। निमाणयां प्रभ माण दे, सिर आपणा हत्थ टिकाया। भगत वछल प्रभ भगवान प्रभ जुगो जुग साचा खेल रचाया। कलिजुग सोहँ शब्द गुण निधान दे, गुरमुखां प्रभ भेत खुल्ह़ाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग भगत पछाण के, गुरचरनीं मेल मिलाया। पंचम जेठ रैण सुहाई, रसना हरि हरि गुण गाया। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दरस पा, प्रभ अबिनाशी घर में आया। महाराज शेर सिँघ साचा राग सोहँ डंक चलाया। उठ जीव जाग, रसना जप उत्तम होवे मुख। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ मिले जगत सुख। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ उतरे आत्म भुक्ख। उठ जीव जाग, प्रभ धोए दाग़, सुफल कराए कुक्ख। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द लाए जाग गुरसिख सभ जग उत्तम मनुख। गुरसिख तेरी उत्तम जाता। सतिजुग होवे चार वरन भ्राता। सच सुच्च वरताए प्रभ सुख आए धरती माता। प्रभ साचा बंस चलाए, गुरसिक्खां गुर चरनीं नाता। गुरसिक्खां उत्तम जोत जगाई, मिल्या पुरख बिधाता। प्रभ पूरन बूझ बुझाए, आपणे रंग रवे रंग राता। दृष्टी दिशा दे मिटाई, सोहँ दर ते दे के दाता। महाराज शेर सिँघ जो जन गाई, कलिजुग तराए पिता माता। कलिजुग कर्म प्रभ विचारे। प्रभ साचा सिरजणहारे। निहकलंक जोत सरूपी प्रभ जामा धारे। शब्द सुरत प्रभ तोड़े माण हँकारे। हिन्द वाली हिन्दवायण चल आयण प्रभ चरन दुआरे। गुरसिक्खां होए पूरन भाग, प्रभ देवे भर भण्डारे। साचा शब्द चले पहले माघ, अनहद वज्जे धुन्कारे। गुरसिक्खां प्रभ पकड़ी वाग, पूरन जोत दे उज्जयारे। उठ उठ उठ जीव जाग, प्रभ आया सिक्खन दुआरे। महाराज शेर सिँघ कर साचा राग, रसना जप जीव जन्म सुधारे। रसना जप प्रभ नाम रसायण। साचा शब्द जो जन रिदे वसायण। निज घर वासी निज माहे पायण। दर आए बेमुख सुत्ते रैण विहायण। उठ जीव जाग पूरन होए भाग, प्रगटी जोत नर नरायण। नर नरायण निरँजण जोत। बेमुख होए जीव दर रहे सोत। कलिजुग सवाई सृष्ट अन्त जाए रोत। तरे पुरूष सति, प्रभ आत्म मैल जाए धोत। साचा प्रभ विच साची देह जगाए जोत। महाराज शेर सिँघ सतिजुग अंदर, गुरसिक्खां देवे निर्मल जोत। पंचम जेठ रैण कलि आई। भुल्ल भुल्ल भुल्ल जीव मति भुल्ल गंवाई। साध संगत तैनूं मिले वधाई।

रसना जप जप अमरा पद पाई। सचखण्ड प्रभ वसणहारा, सच धाम गुरसिख टिकाई। महाराज शेर सिँघ शब्द सुरत दुआरा, साची मति गुरसिख विच पाई। शब्द सुरत प्रभ दे ज्ञाना। आत्म जोत जगे कोट भाना। प्रगट जोत साध संगत, प्रभ देवे साचा दाना। गुरचरन प्रीती साचा सतिजुग इशनाना। कलिजुग प्रगट महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी पहरया जामा। जोत सरूपी प्रभ साचा भेख धर। कलिजुग प्रगट्या अवतार नरायण नर। सृष्ट सबाई भरम भुलेखे पाई, गुरसिख बूझे साचा दर। महाराज शेर सिँघ तेरे नाम वड्याई, शब्द बाण गुर जगत लगाई, गुरसंगत पाया साचा दर। दर घर आए प्रभ अबिनाशी। अन्तकाल कलि प्रभ तोड़े जम की फाँसी। कलिजुग होए अन्तकाल, शब्द लिखाए जो मदिरा मासी। महाराज शेर सिँघ सच भतार, चरन लाग जीव रहिरासी। जीव जन्त दुखी वेख प्रभ, कलिजुग जोत प्रगटावे। माया पाए बेअन्त, आपणा भेव आप खुल्ावे। प्रभ दर विरले गुरसिख सन्त, जोत सरूपी प्रभ दरस दिखावे। महिमा जणाए आप इकन्त, महाराज शेर सिँघ कलिजुग खपावे। पै जाए दुहाई विच जीव जन्त। जीव जन्त प्रभ आप उपाए। अन्तकाल प्रभ कलिजुग आप खपाए। साध संगत प्रभ दे सुणाए। गुरसिक्खां सिर प्रभ हत्थ टिकाए। कलिजुग अग्न छोहण ना पाए। रसना जीव जन सोहँ गाए। महाराज शेर सिँघ होए सहाए। होए सहायक अन्तकाल, भगत वछल दीन दयाल। कलिजुग जन भगत लए प्रभ भाल। बेमुख कलिजुग करे जिउँ दुफाड़े दाल। साध संगत प्रीती सोहे गुरचरन नाल। आत्म दे ज्ञान, महाराज शेर सिँघ सर्ब रिहा समाल। प्रभ की जोत जगत चन्नयारी। सोहँ शब्द खण्डा दो धारी। बेमुखां काल अन्त पै जाए ख्वारी। कोई ना दीसे सभ कूड़े ठीसे दुष्ट दुराचारी। गुरमुखां सिर छत्र झुलीसे, रक्खे लाज आप बनवारी। जन भगतां हरि प्रभ साचा दीसे, पंचम जेठ आए दरबारी। साचा नाम अमृत पीसे, हउमे विच्चों जाए बीमारी। बेमुख करे जो गुरसिख रीसे, नाम सच ना चढ़े खुमारी। महाराज शेर सिँघ चरन धरे जो सीसे, गुर दर मिले बड़ी सिक्दारी। गुरसिक्खां मिल्या गुर दरबारा। अमृत बूंद अंमिउँ रस पीव, वेले अमृत अमृत धारा। देह विकार जायण नस्स, जन होए रसन सुहेले, आत्म मिले साचा रस, जगे जोत आत्म उज्जयारा। होए प्रकाश जिउँ रवि सस, महाराज शेर सिँघ देवे अमृत भण्डारा। प्रगटाए जोत प्रभ राजन राजा। निमाणयां निताणयां ग़रीब निवाजा। अनहद शब्द वज्जे धुन, अनहद वज्जे धुन वाजा। गुरसिख तराए बेमुख खपाए, अन्तकाल कलि विच माझा। प्रभ जोत प्रगटाए गुरसिक्खां होए सहाए, सरन पड़े दी राखे लाजा। महाराज शेर सिँघ सच तेरी नाए, गुरसिक्खां देवे राजा। गुर मीत गुरसिख सदा रक्ख चीत। प्रभ मिलण की साची रीत। महाराज शेर सिँघ गुरमुखां बख्शे गुरचरन प्रीत। चरन प्रीत करे चार वरन। जोत सरूप प्रभ ना दीसे किसे बरन। कर दरस प्रभ दर आए रोगी सभ तरन। महाराज शेर

४०३ ०१

सिँघ पार कराए, जो जन आए सरन। सरन प्रभ की जिस जीव तकाई। आधि ब्याधि प्रभ मिटाई। अमृत साचा विच देह सिंचाई। कँवल नाभ मुख प्रभ दे खुल्हाई। द्वार दसवां प्रभ देवे पड़दा लाही। अनहद शब्द धुंन दे वजाई। जोत सरूप प्रभ निर्मल जोत जगाई। कूड़ कपट दुरकार कढ्, सोहँ साची वस्तू पाई। महाराज शेर सिँघ गुरसिख बेड़ा पार कर, कुन्ट चार जै जै जैकार कराई। कलिजुग जाए होए ख्वारा। सतिजुग लाए प्रभ सति करतारा। सोहँ शब्द देवे वरतारा। निरहारी निरवैर प्रभ लै अवतारा। अचुत्त पारब्रह्म परमेश्वर निहकलंक अवतारा। जुगत मुक्त ना जाणे संसारा। माया पड़दा पायके, भुलाया सच दुआरा। गुरसिक्खां दरस दिखायके, महाराज शेर सिँघ मिले आप गिरधारा। गिरधर आए जगत गिरधार। त्रेता द्वापर किया पार। कलिजुग जाए वहन्दी धार। झूठे धन्दे डुब्बा संसार। प्रगटी जोत कलि मुरार। मूर्ख मुग्ध ना करन विचार। गुरसिख पाए प्रभ की सार। दर घर छड्ड आए गुर दरबार। आए गुर दरबार, मानस जन्म उत्तम होया विच संसार। दे दरस प्रभ भवजल किया पार। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां तारे, अमृत वरखे किरपा धार। कलिजुग जाए जिउँ अन्धेर रैणा। कलिजुग जीव वहाए वहन्दे वहिणा। गुरसिख तराए जिन प्रभ देख्या नैणा। बिन प्रभ साचे कोई साक ना सैणा। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखाए, सोहँ उत्तम गहणा। साध संगत तेरी वड्याई। रसना जप ईश्र जोत प्रगटाई। प्रगट जोत प्रभ भए सहाई। आत्म चिन्त गुरसिख मिटाई। महाराज शेर सिँघ कलि तेरी वड्याई। वड्डी वड्याई वड प्रभ वड दाता। वड्डी वड्याई जिस जन प्रभ पछाता। वड्डी वड्याई देवे गुरसिक्खां प्रभ वड दाता। महाराज शेर सिँघ जिस जन पछाता। जाणे सो जन जिस आप जणाए। जाणे सो जन, जिस हिरदे रिहा समाए। जाणे सो जन, जिस आत्म जोत जगाए। जाणे सो जन, जिन महाराज शेर सिँघ सरन लगाए। सरन लगाए आप प्रभ संसारी। आवे जावे जगत विवहारी। जोत सरूप सृष्ट सँघारी। महाराज शेर सिँघ तेरी सतिजुग सच्ची सिक्दारी। सतिजुग साचा सच चलाया। सच घर दस्स शब्द चलाया। सोहँ शब्द चार वरन सतिजुग मुख गाया। महाराज शेर सिँघ तुध बिन कोई दूजा नज़र ना आया। एक आप प्रभ को नहीं दूजा। कलिजुग अन्त मिटाए सभ पूजा। गुरसिक्खां दर प्रभ साचा सूझा। दे दरस प्रभ भेद खुल्हाया गूझा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, गुरसिख जाण ना दूजा। निहकलंक प्रभ निरंतर। सोहँ होवे सतिजुग साचा मन्त्र। जोत सरूप प्रभ विच जगत रहंतर। महाराज शेर सिँघ गुरसिख दे दरस करे गुरसिख सुतंतर। गुरसिख होए गुर सेव कमाए। गुरमुख होए प्रभ मेल मिलाए। सच घर बैठा ताड़ी लाए। देखे आप प्रभ नज़र ना आए। जोत सरूप गुरसिक्खां दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ तेरा रंग अनूप, बेमुख नज़र ना आए। बेमुखां लग्गा हउमे रोग। प्रभ का दरस ना मिले अमोघ। आत्म

चिन्ता सद है सोग। प्रभ अबिनाशी रिहा वियोग। अन्तकाल कलिजुग जाए दु:ख भोग। गुरसिक्खां लिक्खया प्रभ धुर संजोग। नेत्र कर दरस जीव आत्म रस भोग। मिटे अज्ञान अन्धेर सभ, सोहँ शब्द पाए मन जोग। महाराज शेर सिँघ दर्द दु:ख भंजन, गुरसिक्खां कढ्ढे हउमे रोग। तारनहार गुरसिख तराए। दर आए जो हँकारी, जन्म जन्म प्रभ जूनी पाए। जो जन प्रभ जोत अधारी, दे दरस प्रभ पार कराए। महाराज शेर सिँघ जन होए नाम अधारी, सरन पड़े दी लाज रखाए। सर्ब सुख गुरसंगत संग। गुरसंगत प्रीती गुरसिख गुर दर मंग। नाम प्रीती आत्म चाढ़े रंग। देह होए पतित पुनीती, मानस जन्म ना होए भंग। कर दरस होए काया ठंडी सीती, अमृत देह वहाए गंग। गुरमुख कलिजुग सृष्टी जीती, साचा नाम मंग ना संग। महाराज शेर सिँघ तेरी चरन प्रीती, सदा रहे अंग संग। चरन प्रीत गुरचरन है कँवला। उत्तम रीत उप्पर धवला। सर्ब सृष्ट जोत सरूप मवला। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, रसना जप जीव ना हो बवला। कलिजुग होए अन्त अन्धेरा। बेमुख ना दीसे चार चुफेरा। गुरसिख ना होए सञ्झ सवेरा। जोत प्रकाश करे प्रभ ना लाए देरा। दे दरस काल अन्त प्रभ कर जाए निबेड़ा। महाराज शेर सिँघ जो जन जाणे छोड़े तेरा मेरा। मेरा तेरा जिस भेव चुकाया। जोत सरूप विच जोत मिलाया। आवे ना जावे जन्म मरन दा भेद चुकाया। महाराज शेर सिँघ जो जन सिमरे विच चुरासी

४०४
०१

गेड़ ना आया। शब्द सुरत प्रभ मेल मिलाए। कष्ट रोग प्रभ दे गंवाए। संग्रहणी विच्चों नास हो जाए। सोहँ साचा शब्द जो जन रिदे वसाए। दु:ख रोग देह रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ शब्द चोट लगाए। शब्द चोट जगत धुन्कारा। अन्धकूप वज्जे धुन्कारा। जिथ्थे जोत जगे अगम्म अपारा। रोग गंवाए विच देह वरखे अमृत धारा। महाराज शेर सिँघ कर साचा कलंक निह रोग सोग सोग रोग दर होए ख्वारा। रोग सोग प्रभ दे मिटाए। दु:ख दर्द रहे ना राए। रक्खया करे आप रघुराए। जप तप प्रभ सुखदाए। जोत सरूप जीव जन्त विच रहाए। नाड़ी बहत्तर विच प्रभ सुख वसाए। अमका काज़ी कोई नेड़ ना आए। महाराज शेर सिँघ होए सहाए। भूत पलीत दर बंधारे। जम कंकर आप प्रभ सँघारे। दूत दुष्ट शब्द सुरत दे मारे। अग्न जोत जोत अग्न देही दु:ख साड़े। महाराज शेर सिँघ किरपा करे आप निरँकारे। प्रगट जोत प्रभ दया कमाई। दु:ख दर्द दए संगत मिटाई। साची नाम रंगण सोहँ प्रभ आप चढ़ाई। दरस दान जो जन मंगण, प्रभ दे दरस तृप्त मिटाई। दर आए मारे प्रभ तीन तप खंघण, सुरती सुरत प्रभ जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ देवे मुक्ती मुक्त, रसना जप फेर वेला हत्थ ना आई। आए सचा शाहो सच दे वड्याई। दर आए दु:ख मिटाए प्रभ, नाउँ भिच्छया पाई। होए सहाई जगत पित कहाई। महाराज शेर सिँघ तेरी गुरसिक्खां सरनाई। मरू देवे आप ज्वाला। शब्द बाण मारे गुर गोपाला। मार करे बीर

बेताला। पकड़ ल्यावे तीन लोक रखवाला। आत्म बद्धा गुरसिख महाराज शेर सिँघ दर खड़े करे सवाला। प्रभ की महिंमा बड़ी बेअन्त। जोत सरूप दरस विच जीव जन्त। कलिजुग प्रगट्या प्रभ निहकलंक कन्तूहल कन्त। गुरसिक्खां देवे माण उत्तम दे विच साध सन्त। साचा देवे ब्रह्म ज्ञान, सिख आसण बैठ इकन्त। हिरदक देवे चरन ध्यान, होवे मेहर भगत भगवन्त। गुण देवे गुण निधान, सोहँ शब्द गुर धुन वजन्त। महाराज शेर सिँघ सुहावे थान सृष्ट करे भस्मंत। सच सन्त सतिगुर प्रगटाया। मिल प्रभ समरथ, संसा भय मनो गंवाया। प्रभ की बाणी लिखी अकथ्थ, तन मन प्रभ लेखे लाया। देवे बख्श अन्त समरथ, नीती रक्ख दरस दिखाया। कलिजुग धरे जोत आप सति पुरख, महाराज शेर सिँघ पति रखवाया। पिता पूत पर भए दयाला। जोत सरूप होए गोपाला। प्रभ अबिनाशी तीन कोट होए रखवाला। सन्तन पाई थांए प्रभ पूरन घाला। शब्द दे ज्ञान, राम नाम गल पाई माला। कलिजुग उत्तम अस्थान, प्रगटे जोत सर्ब रखवाला। जो किछ करे सो ही जग होत, महाराज शेर सिँघ उतप्त करन वाला। धन्न धन्न धन्न मनी सिँघ तेरी धन्न कमाई। रसना जप जप जप पूत पिता जग बंस बणाई। दर आए दुतर देवे तार, गुर गोबिन्द दोए होए सहाई। धन्न धन्न धन्न मनी सिँघ, साची जोत देवे प्रभ विच ललाट टिकाई। सतिजुग देवे माण प्रभ, चार वरन चरन लग जाई। सोहँ शब्द वज्जे बाण प्रभ रसना मार सभ जगत घाई। पूरन जोत विष्नूं भगवान लै अवतार, जगत में होए सहाई। सन्तन सन्त सन्त वडभागा। उत्तम सुणया सोहँ शब्द अनरागा। भरम भुलेखा सभ देही भागा। होए अधीन सरनी लागा। कूड़ कुटम्ब सभ भगत त्यागा। आत्म जोत जगी जीव सोया जागा। महाराज शेर सिँघ जिन कलिजुग मिल्या, सोई पुरख वडभागा। सन्त जनां दी आसा पूर। प्रगट भए प्रभ सदा हज़ूर। साचा शब्द आत्म सदा सरूर। जगे जोत विच देह जिउँ कोहतूर। महाराज शेर सिँघ गुण निधान सर्ब गुण भरपूर। भरतम्बर प्रभ सर्ब व्यापे। छिन्न भंगर बेमुख ना जापे। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, धन्न गुरसिख मापे। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुण दाता, विष्नूं बंसी कलि तारे आपे। साचे सन्त प्रभ माण दवाया। धर जोत विच देह, तीन भवन दी बूझ बुझाया। साचा देवे नाम एह, जिस दा भेव आप खुल्हाया। कलिजुग परखी प्रभ साची देह, जोत सरूप विच डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ दान साचा दे, जित मिल्यां भुक्ख रहे ना राया। आत्म तृष्ना गुरसिख बुझाए। शब्द ज्ञान सुरत सोझी पाए। भगत भगवान दोए जोत इक्क कराए। जन वेखे तां साचा प्रभ नज़री आए। महाराज शेर सिँघ जो जन रसनी गाए। रसना जप प्रभ राज दहिंद। कलिजुग प्रगट्या प्रभ साचा मृगिन्द। चरन लगाए डेर ना लाए वाली हिन्द। बेमुख खपाए साचा प्रभ दे सज़ाए, गुर धाम करे जो निंद। गुरमुख तराए चरन आए जो सीस झुकाए, महाराज शेर सिँघ गुर बख्शिंद। कलिजुग बख्श आप

प्रभ तारे। गुरसिख सोहण चरन दुआरे। मूर्ख सुत्ते पैर पसारे। मानस जन्म गए कलिजुग हारे। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, डिग्गे प्रभ चरन दुआरे। प्रगटे जोत आप प्रभ भगत सन्मुख, शब्द ज्ञान दे भगत जन तारे। महाराज शेर सिँघ भरे तेरे भण्डारे। मनी सिँघ प्रभ माण दवायणा। चरन कँवल मिले टिकायणा। सृष्ट सबाई मिले ना सौणा। राजे राणे सृष्ट विनासे, भज्जे फिरन जिउँ सुंञे घर कौणा। सोहँ शब्द प्रभ लाए बानणा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप जगत जलाए आपणे भानणा। काल अन्त कलिजुग हो जाणा। पिण्ड भंडाल साचा धाम, सन्त जोती जोत समाया। उत्तम होया नगर ग्राम, जामा धार विच चरन टिकाया। पूरब करे कोई विचार, अचरज खेल प्रभ रचाया। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, साचा सन्त सतिगुर प्रगटाया। सतिगुर साचा मनी सिँघ सतिजुग उपजावे। जोत सरूप निहकलंक माण दिवावे। संसारी भण्डारी सद विवहारी आपणा भेव ना किसे जणावे। प्रगटी जोत एकँकारी, महाराज शेर सिँघ नाउं धरावे। एकँकार जगत आकारा। माया रूपी पसरया जगत पसारा। लक्ख चुरासी जून जोत अधारा। जोत सरूप साचा प्रभ सभ ते बाहरा। जे कोई देखे देख विचारे, विच वसे निराधारा। महाराज शेर सिँघ माण दवाया, सतिगुर मनी सिँघ पूजे संसारा। गुरसिख होए चरन भंवरा। देवे वड वड्याई प्रभ गंवरा। जन्म मरन कलिजुग दोए संवरा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कलिजुग किया दवरा। कलिजुग काल करे कलिकाती। प्रगटाए जोत विच प्रभ माती। दुनियां सुंञ मसाण जिउँ सोए बिरछ राती। प्रगटे पूरन भगवान, गुरसिक्खां देवे अमृत बूंद स्वांती। महाराज शेर सिँघ सतिजुग तेरा माण, गुरसिख भुल्ल ना जावे दिन राती। दिवस रैण प्रभ रवे रंग। बेमुख भन्ने जिउँ कलिजुग काची वंग। सोहँ शब्द आत्म चाढ़े रंग। महाराज शेर सिँघ प्रगट्या सूरा सरबंग। प्रगट्या प्रभ सूरा सूर। देखो नेड़े नाही दूर। प्रगटे जोत प्रभ आप हज़ूर। महाराज शेर सिँघ गुण भरपूर। ध्यानी ध्यान देवे गुण दाता। ब्रह्म ज्ञानी कलिजुग प्रभ आप पछाता। उत्तम जीवण कलिजुग होया, जिन्हां मिल्या पुरख बिधाता। महाराज शेर सिँघ तेरे बाझों कलिजुग झूठा नाता। झूठी सृष्ट झूठा विवहार। झूठे धन्दे लग्गा संसार। भुल्ल गया जीव उपजावणहार। गुरमुख दया कीनी प्रभ कर्म विचार। दे साचा शब्द ज्ञान, जन किया बेड़ा पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक ल्या अवतार। सच सच सच अवतार निहकलंक। प्रगट जोत सुहाए थान बंक। चरन आए इक्क हो जाए राउ रंक। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाया सोहँ एका अंक। एका अंक आप ओंकारा। दूजा शब्द सोहँ चले संसारा। बाकी सर्ब होए ख्वारा। जोत सरूप प्रभ ल्या अवतारा। शिव शम्भू शक्ती मिले प्रभ चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ इक्क जोत निरँकारा। एक जोत त्रैलोकी नाथ। जो जन वेखे प्रभ संग साथ। कलिजुग रक्खे गुरसिख दे कर हाथ। जो जन आए चरन टेके माथ। महाराज शेर सिँघ होए

सहाई अनाथां अनाथ। अन्ध अज्ञान जगत चलाया। दर्द विकार विच जीव वसाया। झूठी माया विच भरम भुलाया। आपणा आप ईश विच छुपाया। बेमुख कराए जीव बेमुखां प्रभ नज़र ना आया। गुरसिख तराए जिन्हां महाराज शेर सिँघ विच बहाया। प्रगटे जोत प्रभ एक निरँजण। प्रभ दरस साचा नेत्र अंजण। गुरचरन धूढ़ जग साचा मजन। प्रगटे प्रभ आप भय भंजन। गुरमुख उत्तम प्रभास जिउँ चन्दन। नाम भिखारी साचा नाम दर आए मंगण। दुबिधा धोए साचे नाम, प्रभ आत्म चाढ़े रंगण। द्वापर कृष्न मुरार मुकंद मुकंदन। कलिजुग निहकलंक अवतार त्रैलोकी नंदन। अवतार धार जगत सँघारया। जोत सरूप कर खेल अपारया। शब्द चलाए निरँजण जोत इक्क निराधारया। चार जुग पूजा होए विच संसारया। महाराज शेर सिँघ सतिजुग सोहे सच बंक द्वारया। सतिजुग उत्तम धाम प्रभ आप लिखावे। किरपा कर गिरधार, मस्तूआणे जा चरन टिकावे। कहर वरत जाए संसार चार कुन्ट हो जाए ख्वार। जल थल थल जल आप करावे करतार। खेल अचरज कलि करे निहकलंक निरँकार। मदि मासी कोई रहण ना पाए, सोहँ शब्द प्रभ खण्डा मारे दो धार। सतिजुग साचा आप मिलावे, जिन प्रभ की पाई सार। विच अंध्यार प्रभ जोत प्रगटावे, सिर रक्खे हत्थ आप गिरधार। गुरसिख साचे पार लँघावे, महाराज शेर सिँघ भगत उधार। जन भगत हरि दरस दिखाया, कलि आया वक्त विचार दा। होए वेला अन्त, नहीं वेला शब्द उधार दा। प्रगट जोत प्रभ बेअन्त, जन्म मरन कलि दोवें सवारदा। प्रगटे निहकलंक भगवन्त, दर आए प्रभ सारे तारदा। चरन प्रीती लाए कन्त, सोहे दर गुरसिख दरबान। जिथ्थे वसे विष्नूं भगवान। प्रभ जोत जुगो जुग इक्क समान। निर्मल जोत जीव प्रभ वेख, आत्म मार ध्यान। जुगो जुग प्रभ प्रगटे कर भेख, कोई बूझे पुरख सुजान। भगत जनां लिखाए उत्तम लेख, महाराज शेर सिँघ देवे ब्रह्म ज्ञान। गुरमुख विरला विच सहँस। उत्तम निर्मल जीव राज हँस। गुरचरन लाग तर सर्ब सरबंस। सतिजुग कहाए प्रभ साचे की साची अंस। साचा मार्ग लाए एक जोत होए विष्नूं बंस। महाराज शेर सिँघ दुष्ट सँघारे जिउँ कृष्ना कंस। सतिजुग साचा सभ सच वरतारे। आप अपरम्पर सभ बणत बणावे। आत्म जोत जगावे आप गगनंतर, अज्ञान अन्धेर दए मिटावे। लोभ विकार होए भस्म अन्तर, बाती जोत देह दीपक पावे। सोहँ साचा सतिजुग मन्त्र, जप जीव प्रभ अबिनाशी पावे। गुरसिख उत्तम जिउँ पारजात। गुरचरन सुहाए दिवस रात। भिच्छया देवे प्रभ सोहँ दात। शब्द साचा जगत वड्डी करामात। जप जीव प्रभ लिखावे साची बात। गुरसिख गुर दोनों इक्का जात। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, साध संगत नात जिउँ भैण भ्रात। सतिगुर संगत सच आप बणाई। काम क्रोध हँकार विच्चों दए जलाई। सोहँ शब्द अपार, साची वस्त विच दए टिकाई। अनहद शब्द होए धुन्कार, रसना जप जीव सर्ब सुख पाई। आत्म खुल्हे दस्म दुआर, ईश

जीव भेत मिट जाई। अमृत झिरना झिरे अपार, गिरे बूंद कँवल खुल्ह जाई। खुल्हे कँवल होए उज्जयार, अज्ञान अन्धेर विच देह मिट जाई। महाराज शेर सिँघ पाई सार, निर्मल जोत गुरसिख जगाई। आत्म होए जोत प्रकाशा। धरे जोत प्रभ आप अबिनाशा। गुरमुख हिरदे प्रभ किया वासा। गुरचरन प्रीती साची रहिरासा। थिर घर वासी कलिजुग गुरसिख देह प्रभ वासा। अचुत्त अबिनाशी महाराज शेर सिँघ जीव जप रसन स्वास स्वासा। रसना जप जपत सुख पाए। गर्भवास फेर जीव ना आए। जोत सरूप प्रभ विच जोती जोत मिलाए। महाराज शेर सिँघ गुरसिख पूरे अन्त सचखण्ड पहुंचाए। सचखण्ड सचा दरबार। जोत प्रकाश करे एकँकार। जोत सरूप जगत आकार। जै जै जैकार महाराज शेर सिँघ पूरन अवतार। अवतारी प्रभ सच अवतारा। जोत सरूप नरायण निरँकारा। भगत वछल आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ सर्ब वसणेहारा। सर्ब घट की आप वखाणे। साचा शब्द ब्रह्म ज्ञाने। गुरसिक्खा घाल घाल कलिजुग महाने। प्रभ साचा देवे दान, साची जोत जिउँ भाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई गुरमुख विरला जाणे। गुरमुख सो जन जिस प्रभ दरस दिखाया। बिन दरस प्रभ भेव किसे ना पाया। कलिजुग जोत प्रगटाए झब कर प्रसाद साध संगत ध्याया। महाराज शेर सिँघ जिन्हां ल्या लभ्भ, जुग चार उज्जल मुख कराया। जुग चार प्रभ रहे सरना। अन्त चार वरन प्रभ इक्क करना। जोत सरूप प्रगटे प्रभ धरनी धरना। गुरसिख आए दर्शन पाए। महाराज शेर सिँघ चरन लाग जीव जन्त सभ तरना। जोत जाती जीव ना जाणे । प्रभ की जोत सदा एक समाणे। ऊँच नीच प्रभ कोई ना जाणे। सो जन जो चले प्रभ के भाणे। नर्क निवास होए सभ राजे राणे। साचा प्रभ जो ना पछाणे। बेमुख कलिजुग जोत सरूप भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। प्रभ दर्शन देवे गुरमुख स्वच्छ सरूप, जो जन होए सुघड़ सुजाने। महाराज शेर सिँघ कलि साचा भूप, गुरमुख चरन लाए प्रभ तराणे। चरन कँवल कँवल चरन ना जाणन पैर। शब्द लिखाया सच प्रभ, दु:ख भुक्ख कलिजुग वरते कहर। चार कुन्ट वरते दु:ख, उलटी जगत वगाई नहिर। महाराज शेर सिँघ तेरी रक्ख, गुरसिख चरन लाग जाए तैर। चरन आए चतुर सुजाना। पूरब कर विचार, कलि मिल्या प्रभ भगवाना। आत्म देवे अधार, सोहँ साचा दे ज्ञाना। बैठ विच निराधार, आत्म जोत जगाए प्रभ गुण निधाना। महाराज शेर सिँघ पैज संवारे, सच शब्द तेरा माणा। शब्द माण जिस कमाया। शब्द सुरत प्रभ ज्ञान दवाया। दे ज्ञान दीपक बुझी प्रभ दए जगाया। विच जोत धरे भगवान, बेमुखां दिस ना आया। झूठी देह जीव मन अभिमान, प्रभ साचा मनों भुलाया। ऐसी कल वरते जाणी जाण, माया रूपी जगत भुलाया। जन भगतां मार सोहँ बाण, बजर कपाट खुल्हाया। आत्म तीर्थ कर इशनान, अमृत झिरना प्रभ विच देह झिराया। कलिजुग मिल्या जीव विष्नूं भगवान, अन्तकाल विच जोत

समाया। गुरसिख बाल बिरध जवान, बांहों पकड़ प्रभ पार कराया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग देवे माण, गुरमुख साचा सचखण्ड बहाया। गुरसिख तेरी महिंमा अपर अपार। रसना नाम सोहँ, आत्म गुरचरन प्यार। भेद मुकाए विच कलि दोअँ, जिन्हां मिल्या प्रभ पुरख अपार। वरते सो जो वरतावे ओअँ, आप अमिट ना कोए मिटावणहार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतार। निहकलंक अवतार सच। जोत सरूप अग्न जाए जगत मच्च। बेमुख रोए कलि नाचे गुरसिख जायण बच। साचा शब्द ल्या जिस वच। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, गुरसिक्खां हिरदे गया रच। हिरदक किया प्रभ प्रवेशा। तिस साहिब को सदा आदेसा। जुगो जुग जगत उलटाए भेसा। सद रहे चरन द्वार बाशक शेशा। प्रभ सोए नैण मुँधार, सद लच्छमी चरन झेसा। कलिजुग जोत धरी निहकलंक अवतार, जोत सरूपी कर के वेसा। जोत सरूप होए प्रभ, देह तजायके। प्रगट कलिजुग होए झब, प्रभ साचा जोत प्रगटायके। राजे राणे पकड़े उत्तों शाह रग, दर आन होए निमाणे। दर साचा किसे विरले ल्या लभ, कलिजुग जीव भुल्ले मूर्ख मुग्ध अञ्याणे। महाराज शेर सिँघ तेरा जस गा के, जीव सभ आत्म दुःख मिटाणे। प्रभ भुल्ले दुःख व्यापे। बेमुख दर आए प्रभ ना जापे। गुरसिक्खां कलिजुग बांहों पकड़ ल्यावे आपे। जिउँ बाल उठा घर ल्यावण मापे। महाराज शेर सिँघ जुगो जुग जन भगतां थापे। जुगो जुग प्रभ की रीता। प्रगट आप

गुरसिख बणाए मीता। साचा देवे आपणा जाप, जगत जलाए रीता। अर्जन देवे ब्रह्म ज्ञान, लिखाए रसन गीता। गुरसिक्खां सुख महान, अमृत रस जिन्हां कलि पीता। महाराज शेर सिँघ जोत कलि विष्नूं भगवान, कर दरस भए पतित पुनीता। जगत पित जगत प्रभ आया। जोत सरूप एह चलत रचाया। अछल छलन छल कर जगत भुलाया। जोत निरँजण विच देह धर, प्रभ अबिनाशी बणत बणाया। कलिजुग प्रगटे अवतार नर, किसे मूर्ख सार ना पाया। जिन्हां देवे आत्म सची जोत धर, प्रभ साचा बूझ बुझाया। ना जन्मे ना जाए मर, कलिजुग आए दर जिस सीस झुकाया। महाराज शेर सिँघ सभ आसा आए दर पूरन आस कराया । जो जन आए प्रभ दरस प्यासा। मिल संगत आत्म होई रासा। प्रभ पूरा हिरदक देवे पूरन भरवासा। आत्म जोत जगाए, निर्मल आत्म जोत करे धरवासा। साचा साहिब जिस विचार ल्या, मन मिटे अज्ञान होए जोत प्रकाशा। महाराज शेर सिँघ चरन ध्यान ल्या जिस कर, जन्म मरन दुःख नासा। गुरसिक्खां होए प्रभ सहाई। जुगो जुग प्रभ साचे पैज रखाई। कलिजुग मिटे अन्ध अंध्यार, प्रभ साचे जोत प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ तेरे नाम दुहाई। अन्तकाल कलिजुग प्रगट्या पूरन भगवन्त। उत्तम कीए गुरसिख विच साधन सन्त। दुष्ट सँघारे शब्द बाण प्रभ मारे अन्त। महाराज शेर सिँघ महिंमा तेरी बड़ी बेअन्त। चार कुन्ट जोत चमत्कारे। गुरसिक्खां घर जै जै जैकारे। बेमुखां घर हाहाकारे। कलिजुग जोत

प्रगटी आप निरँकारे। जाणे सो जन जिस हिरदे सच वसे सिरजणहारे। बेमुख पकड़े जम जंधारे। प्रभ अबिनाशी गुरसिख आयण दुआरे। कर किरपा प्रभ पार उतारे। जोत सरूप प्रभ महाराज शेर सिँघ सोहँ साचा देवे नाम अधारे। जोत सरूप जगत ना जाणया। कलिजुग जीव नहीं पछाणया। शब्द लिखाए हुक्म वरताए, तख्तों लाहे राजे राणयां। महाराज शेर सिँघ लाज रखाए सिर हत्थ टिकाए, कलिजुग देवे माण निमाणयां। निमाणयां प्रभ माण दवाया। राउ रंक कर इक्क बहाया। चार वरन प्रभ जोत सरूप अन्तकाल करन कलिजुग जामा निहकलंक प्रभ पाया। महाराज शेर सिँघ दुष्ट सँघारे, जोत सरूप जगत जलाया। प्रगटी जोत प्रभ अगम्म अपारे। धरे जोत विच देह निराधारे। ज्ञान ब्रह्म कोई जन विचारे। बेमुख आए जाए झक्ख मारे। गुरसिख सोहण गुरचरन दुआरे। दर घर साचा साची वस्त पाई विच प्रभ थारे। बेमुख काल अन्त कलि सोहँ बाण प्रभ मारे। आवे गुरसिख साचे गुर जाए मिल, गुर साचा जाए जन्म संवारे। महाराज शेर सिँघ सो जन उधरे, जो जन आए चरन निमस्कारे। अन्तकाल प्रभ दरस दिखाया। गुरमुख साचे विच जोत मिलाया। गुरसिक्खां धाम सचखण्ड बणाया। अन्तिम मेल करे प्रभ जोती, ना जाए ना आया। सृष्ट सबाई रही सोती, सोहँ शब्द प्रभ डंक चलाया। चुरासी विच्चों मानस जन्म माणक मोती, मदि मासी कलि आप गंवाया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां दरस दिखाया। जीव चतुराई कुछ ना होए। वड वड्याई करे जो सोए। आत्म सुध भुलाए, सुध रहे ना कोए। कलिजुग होया भुल्ला, दुःख पाए जग रोए। सच स्याणप होए कमला, दुरमति मैल ना जाती धोए। प्रभ पूरन जोत समरथ नहीं जे यमला, मन रक्खे ना संसा कोए। प्रगटे जोत कृष्ना अवतार निहकलंक है जोए। जोती जोत एक प्रभ अवल्ला, दूसरा नाहीं कोए। जोत सरूप सर्ब सृष्ट मवला, आत्म जोत करे बिलोए। दे दरस खुल्हावे प्रभ कँवला, बरख आत्म बूंद मन शांत होए। महाराज शेर सिँघ जोत धरे उप्पर धवला, कलिजुग अन्तकाल कलि होए। गुर दर आए जो जन पुकारया। कर किरपा प्रभ साचे दुःख निवारया। कमला रमला यमला ज्ञान जोत करे आकारया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, बिरध बाल जिस ना विचारया। बालक होए सुरत बेहालू। देवे सुरत प्रभ आप दयालू। जावे दुःख भए कृपालू। महाराज शेर सिँघ भगत वसालू। प्रभ पूरे आस पुचाई। बाल नादान दुःख रहे ना राई। पिता मात प्रभ आत्म शांत कराई। आए चरन जो देण दुहाई। सरन पड़े दी लाज रखाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तेरी वड्याई। गुण अवगुण प्रभ ना विचारया। होए निमाण प्रभ दर पुकारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। आत्म सुख दे, देह दुःख निवारया। साची वथ नाम भुक्ख दे, दर आए काज संवारया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर, सोहँ शब्द करे जैकारया। सुरती देवे सुरत ध्यान। शब्द सुरत दे ब्रह्म ज्ञान । सोहँ शब्द जन सुणे

जो कान। अन्तकाल मिले कलिजुग विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ चतुर सुजान। भोले भाउ गुरसिख नाद वजाया। सोया हिरदा जगत टुम्ब उठाया। बांहों पकड़ आप प्रभ साचे, साचा लेख आप प्रभ लिखाया। दु:ख दलिद्र ना देही लागे, अमृत सिंच प्रभ हरा कराया। झूठी गगरिया देही काचे, निर्मल जोत प्रभ विच टिकाया। कलिजुग नेड़ ना आए आंचे, दीपक जोत प्रभ विच देह टिकाया। साचा शब्द जो मन वाचे, अनद बिनोदी प्रभ दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ गुरसिख ढाले सांचे, पंचम वार विच सच सुच्च वरताया। साचा नाम प्रभ दीपक दिया। जगे जोत सुखी होए जिया। मिल्या फल पूर्ब जन्म जो किया। अमृत नाम निधान गुरसिक्खां पिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान कलिजुग होया गुरसिक्खां थीआ। गुरसिक्खां सुहाई साची रुत्त। निर्मल किया दुखीआ बुत। किरपा करी प्रभ आप अचुत्त। प्रभ कल वरते अदभुत। कलिजुग अंदर गुरसिख साचे, महाराज शेर सिँघ बणाए साचे सुत। गुरसिख बख्शे प्रभ बख्शणहारा। कोट दु:ख निवारे विच देह मँझारा। करे प्रकाश जोत विच अन्ध अन्धयारा। शब्द सुरत संग देवे मार जिउँ रचे देह पारा। गुरसिक्खां प्रभ देवे तार, साचा देवे नाम अधारा। अन्तकाल ना होए ख्वार, जिन्हां मिल्या सच भतारा। महाराज शेर सिँघ शब्द बलिहार, रसना गाए जीव होए पारा। चरन आए जीव बिल्लाया। दु:ख दलिद्रां जगत सताया। हउमे माया खाई काया। सर्ब दर छोड़ दर

४११ ०१ तेरे आया। प्रभ जाए ना मुख मोड़, ऊँचा कूक सुणाया। महाराज शेर सिँघ बंधन तोड़, आत्म साचा दीप जगाया। वक्त ४११ ०१

सुहाया साध संग, दिवस रैण होए मंगलाचार। आत्म चाढ़ प्रभ साचा रंग, गुरसिक्खां पूरब कर विचार। चरन प्रीती निभ जाए संग, कलिजुग जीव प्रभ देवे तार। महाराज शेर सिँघ जीव साचा दान मंग, आत्म दे जाए अधार। आत्म अधारी प्रभ गिरधारी। दर आयां दी पैज संवारी। जोत आकारी दर गुरसिख भिखारी। साचा नाम प्रभ गुरसिख दे मुरारी। गुरसिख डिगे हरि द्वारी। दु:ख दलिद्र जाए हउमे बीमारी। रक्खे लाज प्रभ निराधारी। महाराज शेर सिँघ सच घर आ के, दे दरस गुरसिख पार उतारी। दरस दरस दरस गुरसिक्खां करना। तरस तरस तरस कर कलिजुग बेमुखां मरना। बरस बरस बरस कर गुर अमृत मेघ गुरसिख काया सीतल करना। परस परस परस महाराज शेर सिँघ जीव जग ना होए मरना। कलिजुग जीव होए बेताले। माया पाई गुर गोपाले। दले जाण जीव जिउँ दाल दोफाड़े। गुरसिक्खां प्रभ होए आप रखवाले। महाराज शेर सिँघ साध संगत सोहे सदा तेरे चरनां नाले। संगत होए चरन की दासी। प्रगटे जोत विच प्रभ अबिनाशी। चरन कोए ना लागे रसन आहारी जो मदि मासी। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुण दाता, साध संगत होए चरन रहिरासी। गुरसिख चातृक दर बिल्लाए। कलिजुग अग्न रही जलाए। नाम निधान गुण निधान दे, प्रभ अमृत बरखाए। भगत वछल कलिजुग

अछल विच आत्म शांत कराए। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, हउमे ममता दे जलाए। जल बल जाए आत्म अग्न। जोत सरूपी दीप देह विच जगण। हिरदक प्रीती प्रभ चरन सच लागी, प्रीती होए गुरसिख तेरा रवि सस जिउँ गगन। कलिजुग हो जाए अन्धेर, बेमुख कलिजुग होए नग्न। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, अमृत साचा गुरमुखां लाए साचा सगन। अमृत पी जीव आत्म धुंद गंवाए। जिन्हां विच्चों प्रभ भुल्लया, विच्चों प्रभ दिस आए। वक्त संभाल रहे क्यों भुल्लया, जोत निरँजण पलटी देह चरन लाग रहे क्यों रुलया, फेर वेला हत्थ ना आए। महाराज शेर सिँघ देवे दरस दान दर खुल्हिआ, साचा नाम लै झोली पाए। साचा नाम प्रभ आधारी । रसना जप जीव संसारी। देवे दरस प्रभ गिरधारी। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, तीन लोक करे सिक्दारी। तीन लोक प्रभ का दास। मात पाताल आकाश। जोत निरँजण सदा अबिनाश। सृष्ट सबाई जुगो जुग होए विनास। जो जन होए प्रभ के दास। अन्तकाल मिले सचखण्ड निवास। जोत सरूप जिथ्थे प्रभ का वास। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप जगत प्रकाश। करे प्रकाश प्रभ गोबिन्द। गुरसिक्खां लाहे प्रभ मन की चिन्द। बेमुख निन्दक दुष्ट दुराचार दर आए कर जायण निंद। भर बेड़ा अन्त डुब्बणा विच नीर सिंध। गुरसिख दर पाए जो लोड़े, दर देवे दान मृगिन्द । महाराज शेर सिँघ विछड़यां मेल दर, उज्जल करे गुरसिख विच हिन्द। वाली हिन्द प्रभ दरस दिखाए। आत्म शक्ती तेज वखाए। सच भगत भगती लेखे लाए। साची दरगाह देवे थांएँ। गुरसिख उधरे प्रभ तेरे नांए। महाराज शेर सिँघ घाल पाई थांए। जोत सरूप प्रभ भय दिखावे। शाह सोए शौहु सौण ना देवे। वाली हिन्द रहे भरम भुलेवे। महाराज शेर सिँघ बणत बणावे अलख अभेवे। निर्भय होए आप निरहारा। देवे दरस कर जोत आकारा। दिखावे दरस जिउँ कृष्न मुरारा। वाली हिन्द सूझे प्रभ सच दुआरा । चैन ना आए प्रभ जोत जलाए टुट्ट जाए सभ हँकारा। मुख घास रखाए, आपणे आप गंवाए चरन आए करे निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ दया कमाए, स्वच्छ सरूप दरस दिखाए, साचा नाम देवे भण्डारा। देवे नाम सच गहर गम्भीरा। कलिजुग झूठे तोड़े ज़ंजीरा। आत्म सुध होए, शांत होए सरीरा। कलिजुग अग्न ना लागे पीड़ा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे पीरन पीरा। पाए दरस आए हिन्द वाली। आत्म अमृत जाए वरख, मिले आप बनवाली। बेमुखां मन प्रभ देवे हरख, दर आए ना रोण सवाली। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां मिल, आत्म जोत जगा ली। आत्म जोत सच प्रकाश। अज्ञान अन्धेर हो जाए विनास। पवण सरूपी चल रहे स्वास। दु:ख दलिद्र जोत सरूप प्रभ करे विनास। आत्म देख वेख जीव साचा प्रभ वसे तेरे पास। साचा प्रभ विच रिहा वस। कलिजुग जीव जायन नस्स। आत्म अन्धेर होया जिउँ रैण मस। साचा राह प्रभ कलि जाए दस्स। गुरचरन प्रीती प्रभ हो जाए वस। देवे शब्द ज्ञान, होए प्रकाश जिउँ रवि

सस। महाराज शेर सिँघ गुण निधान, भगतन हिरदे रिहा वस। आत्म एक जीव जोत अडोल। नैण मुँधारी जीव देख ना सके, प्रभ बैठा तेरे कोल। लाग चरन जन प्रभ, लोचण तीजा देवे खोल्ह। कलिजुग जोत प्रगटाए, सोहँ वजाए ढोल। जो जन सरन ना आए, महाराज शेर सिँघ मारे रोल। निहकलंक कलिजुग अवतारे। भुल्ल मुरार किउं सुत्ते पैर पसारे। बिन प्रभ साचे झूठे सभ दरबारे। सुंञ मसाण हो जायण झूठे महल मुनारे, भुल्ल वक्त विहाया। वाली हिन्द सची सरकारे, प्रभ प्रगट निहकलंक कलि आया। साचा छत्र सिर दे झुलारे, बेमुख होए क्यों मुख भवाया। जीव रुलाए भुक्ख दुःख कर हाहाकारे, कर दरस आप प्रभ जिस राज दवाया। साचा शाहो प्रभ बैठा तख्त, नदरी नदर जगत तराया। बेमुखां प्रभ पकड़ कर, बेड़ा शौह दरया रुड़ाया। गुरसिक्खां साची लिख्त कर, वास सचखण्ड कराया। महाराज शेर सिँघ कलि जोत सरूप, अन्तकाल जोत गुरसिख मिलाया। गुरसिख तेरी वड वड्याई। बिक्रमी वीह सौ अट्ठ, पंचम जेठ जिस ख़ुशी मनाई। सतिजुग साची नींह रखाई। प्रगट जोत गुर सतिगुर साचे, गुरसिक्खां भुक्ख गंवाई। साध संगत तेरी वड वड्याई। सच भण्डारा खोल्ह के, गुरसंगत सेव कमाई। प्रभ शब्द लिखाए खोल्ह के, दुःख भुक्ख रहे ना राई। प्रभ पूरा तोल जाए तोल के, गुरमुख गुरसिख कलि तोल्लया ना जाई। साध संगत तेरी वड वड्याई। निहकलंक कलि सेव कमाई। धन्न धन्न धन्न सिँघ पाल, कुन्ट चार तेरे नाम दुहाई। कलिजुग दित्ता सचा माण, ब्रह्मलोक दिया बिठाई। ब्रह्मा माण गंवाए प्रभ सृष्ट सबाई हत्थ फड़ाई। धन्न धन्न धन्न गुरसिख पूरे, तेरी धन्न कमाई। प्रगट हो के महाराज शेर सिँघ विच ब्रह्मण्ड दित्ती वड्याई। विच ब्रह्मण्ड गुरसिख बहाया। सच तख्त निवासी सच राज कमाया। खण्ड ब्रह्मण्ड विच गुरसिख वड्डिआया। नाथ त्रैलोकी, विच कलिजुग आया। गुरसिक्खां घर चढ़ाया चन्द, बेमुखां नज़र ना आया। साध संगत मन भया अनन्द, साध संगत पंचम जेठ दिन मनाया। अनहद शब्द मन वजाया। महाराज शेर सिँघ दया कमाया। अनहद शब्द धुन वजाए। धुन धुन्कार डंक सुणाए। सुन्न समाध प्रभ खोल्ह वखाए। जोत सरूप जगन्नाथ गुर गोपाल दुःख भय भंजन प्रभ नज़री आए। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जीव दरस दिखाए। साध संगत तेरी वड वड्याई। पंचम जेठ आए दर देवे दरस सर्ब सुखदाई। छड्ड आकाश पाताल, प्रभ जोत विच मात टिकाई। धन्न धन्न धन्न नगर ग्राम, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ बणत बणाई। साची नगरी प्रभ का द्वार। निहकलंक करे जोत सरूप आकार। वेख वखाई जो दर करे विचार। सुरत शब्द प्रभ देवे तार। कलिजुग बेड़ा हो जाए पार। जो जन आए साचे दरबार। जिथ्थे प्रभ बैठा किरपा धार। निरहारी निरवैर जोत अधार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट्या पूरन निहकलंक अवतार। सेवा संगत ना जावे खाली। अमृत सिंचे आत्म सभ सृष्ट का वाली। टुट्टे फुल प्रभ देवे

ला, जीव टुट्टे जो डाल्ही। महाराज शेर सिँघ सच्चा पातशाह, दो जहानां वाली। शब्द अधारी प्रभ अख्वाए। अन्न जल भण्डार गुरसिख गुरसिख बणाए। दर आई साध संगत मेल मिलाए। जन मानस जन्म कलि लेखे लाए। साचा शब्द दिवस रैण शब्द सुरत ज्ञान दिवाए। कलिजुग अग्न आत्म चिखा दे अमृत प्रभ आप बुझाए। साचा लेख गुरसिख मात आए प्रभ आप लिखाए। जुग चार कोई मेट ना सके राए। सोहँ शब्द दर पाई साची भिच्छा, आत्म तप्त प्रभ बुझाए। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कर दरस जीव अमरापद पाए। गुरसिख साखी, प्रभ होए सुहेला। कलिजुग प्रगट आप पति राखी, विछड़यां प्रभ किया मेला। साची सिख्खया गुरसिख मन भाखी, प्रभ गाया गुणी गहेला। पूरन होए बचन, साचे प्रभ आप लिखाया। गुर गोबिन्द प्रभ साचे, साचा भेव खुल्हाया। कलिजुग जामा धार निहकलंक अख्वाया। जोत सरूप जोत धर, बेमुखां दिस ना आया। गुरसिख सुहाए तेरा दर, जिथ्थे प्रभ अबिनाशी डेरा लाया। दर आई संगत लै जावे वर, निहकलंक सच बचन लिखाया। गुरसिख ना जाए कलिजुग हार, साचा नाम प्रभ धुरों लिखाया। महाराज शेर सिँघ धर जोत, कलि गुरसिक्खां दरस दिखाया। कर दरस गुरसिख मन दरस प्यास्सया। शब्द ज्ञान प्रभ आप बुझावे आत्म प्यास्सया। गुण निधान देवे दात सभ, दर आए ना जाए निरास्सया। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे झब, साध संगत दोए जोड़ करे अरदास्सया। साध संगत मात तेरी पुकार। सुण आप बैठा सच दरबार। दर कोए ना रहे दुष्ट दुराचार। गुरसिक्ख देवे नाम अधार। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुण दाता, भर देवे तेरे भण्डार। साचा भगत सच रिदे वसाए। बिन प्रभ साचे ना किसे सीस झुकाए। प्रभ साचा प्रगट होए, गुरमुखां दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ जिस मन वाचा, फिर गर्भवास ना पाए। सुहाया थान प्रभ जोत जगाई। दवाया माण निहकलंक जिस जोत प्रगटाई। सुहाया थान, प्रभ सचखण्ड बणाई। सुहाया थान, जिथ्थे प्रगट प्रभ दरस दिखाई। सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ सुरत शब्द ज्ञान दिवाई। सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ दुखियां आत्म शांत कराई। सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ गुरसिक्खां जोत जगाई। सुहाया थान, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ दरस दिखाई । दरस कर गुरमुख तरया। अन्तकाल जम डण्ड ना भरया। साचा प्रभ मिले कलि आसा वरया। आत्म ब्रह्म ज्ञान दे, तन मन हरया । बुध बिबेक चतुर सुजान दे, महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां लड़ तेरा फड़या। गुरसिख आए चरन द्वार। निर्मल नाम प्रभ दे अधार । हउमे मार हँकार देह जोत जगे अपर अपार। जगे जोत मिट जाए अन्ध अंध्यार । कलिजुग बेड़ा हो जाए पार। महाराज शेर सिँघ निर्धन देवे तार। गुरमुख आए प्रभ चरन दुआरे। आलस निंदरा प्रभ दोवें मारे। आत्म जोत करे चमत्कारे। उज्जल होए विच संसारे। महाराज शेर सिँघ जो जन आए तेरे चरन दुआरे। साचा प्रभ सच हरि का दुआर। कर दरस साध संगत

हो जाए पार। साचा नाम प्रभ देवे अधार। गुरसिख जायण कलिजुग बलिहार। सभ सृष्ट सोई, गुरमुख नाम रसन उचार। कुन्ट चार पै जाए दुहाई, भगत जनां दर जै जै जैकार। प्रभ बिन कलि ना राखे कोई, जीव जन्त बिल्लाए कर हाहाकार। महाराज शेर सिँघ गुरसिख अरज़ोई, साचा बख्श प्रभ चरन प्यार। चरन प्रीती उज्जल मुख। गुरमुख पूरे फिर वास ना होवे मात कुक्ख। जोती जोत मिलाए प्रभ, गर्भ वास ना देवे दुःख। साचे धाम पहुंचाए प्रभ, बैठे आप सदा सन्मुख। साचा देवे नाम प्रभ, साध संगत लहि जाए मन दी भुक्ख। महाराज शेर सिँघ जो दर चल आए, दुखीआं लाहे प्रभ दुःख। दुखियां दुःख निवार प्रभ, आत्म शांत दवा। कलि पैज सवार प्रभ, गुरसिक्खां ना लग्गे तत्ती वा। प्रगट जोत निहकलंक झब, गुरमुखां फड़ी तेरी बांह। बेमुख कलिजुग माया लब्ब, प्रभ दर दीसे ना साचा थां। महाराज शेर सिँघ जुगो जुग करे सभ आप, दूसर कोए ना। एक आप दूसर ना कोए। रसना जप जीव दिवस रैण कलि सर्ब सुख होए। प्रभ साचा घर प्रगट्या, खोल्ह देख मुख नैण दोए। अन्धयां राह वखाणदा, नाड़ी चले ना कोए। प्रभ आपणा चोज वडाणदा, परख ना सके कोए। गुरसिख चरन प्रभ माणदा, प्रभ दिखावे तीन लोए। प्रभ जंदर तोड़े अभिमान दा, सचा नाम जाए हिरदे परोए। वक्त आया सच मेहरवान दा, गुरसिक्खां आत्म जाए धोए। कलिजुग मेल होया भगत भगवान दा, गुर गोबिन्द प्रगटे दोए। रैण सबाई मंगल
४१५ ०१ गाया, हरि हरि हरि प्रभ रसना जप आत्म सुख पाया। अमृत वेला होया सच, साचा अमृत प्रभ मुख चुआया। गुर धाम ४१५ ०१
चल आई संगत, प्रभ साचे माण दवाया। झूठे छड्ड जगत के काम, नाम विच सच दर घर लिखाया। आत्म मिल्या ठंडा थाउँ, गुरचरन निवास दवाया। सोहँ शब्द कलि साची नाओ, गुरमुख चाढ़ कलि प्रभ बेड़ा पार कराया। प्रगट जोत अगम्म अथाहो, सिर संगत हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ सचा बेपरवाहु, दरस दान दे वेले अमृत पतित पापी सभ तराया। पतित पावन दुःख भय भंजन। हँकार निवार प्रभ त्रैलोकी नंदन। साचा नाम दर गुरसिख खड़े मंगण। हिरदक हो प्रवेश साची नाम प्रभ चाढ़े रंगण। महाराज शेर सिँघ दर आए जेठ पंचम पार सारे लंघण। पंचम जेठ दिवस सुहाया। वीह सौ अट्ठ प्रगट जोत विच कलि दे आया। प्रगट जोत निहकलंक दरस दिखाया। जोत सरूपी जोत धर, प्रभ पूरन विच सिख देह समाया। दर आया जो जन मन दरस लोच कर, प्रभ पूरन आस कराया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, अन्तकाल कलि होए सहाया। शब्द सुणाए प्रभ संगत साध। सोहँ शब्द जीव सद रसना अराध। दे धुंन वजाए आत्म नाद। गुरसिख पूरे खुल्ह जाए सुन समाध। साचा प्रभ जोत जगावे विच मात आदि जुगादि। महाराज शेर सिँघ जुगो जुग शब्द चलाए बोध अगाध। अगाध बोध प्रभ की बाणी। बिन प्रभ किसे जीव ना रसन वखाणी। प्रभ की महिंमा किसे विरले गुरमुख

जाणी। महाराज शेर सिँघ कलि प्रगट्या, गुरसिख घर चोज वडाणी। सुहाया थान सचखण्ड दुआरा। ब्रह्मा विष्न महेष सद खड़े दुआरा। सुरप्त राजन करोड़ तेतीस दर आए चरन निमस्कारा। साध संगत कलिजुग सहाया, जो डिग्गे प्रभ चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां देवे मोख दुआरा। गुरसंगत तेरा माण ताण प्रभ। गुरसंगत विष्नूं भगवान कलि ल्या लभ। गुरसंगत जेठ पंचम आई सभ। महाराज शेर सिँघ किरपा निध, अमृत बूंद पाए नभि। दिया दान आप प्रभ दाते। जगत प्रीती सच गुरचरन नाते। अन्तकाल बिन प्रभ कोई ना पुच्छे वाते। महाराज शेर सिँघ दर आए गुरसिख तराए, साचा शब्द लिखाए वेले प्रभाते। वेला वक्त पछाण के, प्रभ दया कमाई। हुक्मे अंदर सभ जीव, बिन हुक्म ना कोए आवे जाई। गुर प्रसादी सच प्रसाद दे, साची कुक्ख सुफल कराई। महाराज शेर सिँघ अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दे, जीव साची बणत बणाई।

✻ ७ जेठ २००८ बिक्रमी संता सिँघ दे गृह पिण्ड भंडाल ✻

धन्न धन्न धन्न मनी सिँघ तेरी सति कमाई। सोहँ शब्द धुन प्रभ साचे विच वजाई। खोल् दिखावे आत्म सुन्न, भुल्ल
४१६ ०१ रही ना राई। प्रभ मिल्या भगत जन सतिजुग देवे प्रभ वड्याई। उपजे धुन मन भए ज्ञाना । होया सपूत प्रभ मिल्या होए ४१६ ०१
बिधनाना। कलिजुग प्रभ का साचा सुत, चरन धूढ़ करे अशनाना। महाराज शेर सिँघ देवे आत्म ब्रह्म ज्ञाना। सोहँ शब्द सच राग सुणाया। अज्ञान अन्धेर विच्चों देह मिटाया। झूठी दुनियां प्रभ पड़दा आया। धार खेल चतुर्भुज कहाया। सोहँ शब्द राह चलाया। अन्तकाल ना लागे तत्ती वा, महाराज शेर सिँघ अन्त होए सहाया। भगतन तारे आप भगवन्त। प्रभ की महिंमा बड़ी बेअन्त। कलिजुग ना पछाणे कोई जीव जन्त। प्रभ अबिनाशी तारया कलि पूरन मनी सिँघ सन्त। सन्तन महिंमा जीव ना जाणे। पूरन सन्त आत्म रस माणे। विष्नूं भगवान आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाने। ब्रह्म ज्ञानी सति सरूप, बिन प्रभ कलिजुग कोई ना जाणे। महाराज शेर सिँघ प्रगट होए विच अन्ध कूप, छड्ड जाए चोला देह पुराणे। आदि अन्त प्रभ जोती जोता। तीन लोक प्रभ इक्क रंग होता। अन्तकाल कल रिहा सोता। अन्तकाल नर्क लवाया गोता। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, अन्तकाल ना होए धोखा। जोत सरूप जग प्रभ आया। कलिजुग निहकलंक प्रभ नाउँ धराया। बेमुख वेखे दिस ना आया। कलिजुग जामा धार, घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। महाराज शेर सिँघ कल पूरन अवतार, चरन आया सो पार कराया। जो जन आए प्रभ चरन द्वार। प्रभ साचा वड दिसे दरबार। प्रगटी जोत कल आप निरँकार। गुरसिख सुत्ते बांहों पकड़ प्रभ

लए संभाल। महाराज शेर सिँघ तेरी किसे ना पाई सार। कलिजुग जीव उपाया, भरम भुलेखे जगत भुलाया। जोत सरूप प्रभ नज़र ना आया। गुरसिक्खां आत्म जोत धर, ब्रह्म ज्ञान दवाया। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, कलि जोत सरूप खेल रचाया। जोत सरूप जगत प्रभ दाता। आपणे रंग रवे प्रभ सदा रंग राता। कलिजुग प्रगटे जोत प्रभ ब्रह्म ज्ञाता। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुरमुख विरले किसे पछाता। जाणे सो जिस जन प्रभ आप जणाए। आत्म बुझी दीप जोत सरूप प्रभ दए जगाए। प्रभ साचे की साची रीत, जामा धार जुगो जुग जगत में आए। गुरसिक्खां आत्म ठंडी सीत, जोत सरूप प्रभ विच रिहा समाए। साध संगत मन गाओ प्रभ के गीत, अन्तकाल विच जोत मिलाए। महाराज शेर सिँघ जीव रसना जप, निहकलंक नर नरायण कलिजुग आए। निहकलंक प्रभ कलिजुग अवतार। सोहँ शब्द प्रभ चार कुन्ट कराए जै जैकारा। अनहद शब्द जन भगतां विच धुन्कारा। उपजे धुन प्रभ खोल्हे सुन्न, जोत सरूप प्रभ कँवल खुल्हाए दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग भगत धन्न, जोत सरूप प्रभ किया आकारा। अग्न जोत लाई संसार। चार कुन्ट होए हाहाकार। जन भगतां मन जै जै जैकार। निहकलंक प्रभ लै अवतार । महाराज शेर सिँघ जोत सरूप आदि अन्त एकँकार। आदि अन्त प्रभ एका एक। सोहँ शब्द प्रभ साची देवे टेक। जन भगतां करे बुध बिबेक। जुगो जुग प्रभ वेस अनेक। महाराज शेर सिँघ कलि भगतां आए सच लिखाए लेख। कलिजुग मनी सिँघ सन्त वड्आया। सुरत शब्द प्रभ ज्ञान दे, कपाट बजर खुल्हाया। अमृत साचा नाम दे, आत्म झिरना निझरों झराया । सोहँ साचा नाम दान दे, अनहद धुन वाजे दे वजाया। पूरन सुरती प्रभ चरन ध्यान दे, नर नरायण प्रभ दरस दिखाया । महाराज शेर सिँघ सच ज्ञान दे, खण्ड साचे दा दरस दिखाया। कर दरस देह होए उज्जयारा। मिट गया झूठा अन्ध अन्धयारा। उपजे शब्द वज्जे धुन्कारा। दोए जोड़ खड़ा प्रभ चरन दुआरा। माणे रंग कलि सच भतारा। जगत तजाया सारा रंग, ढहि पिआ गुरचरन दुआरा। सोहँ शब्द सच ल्या दान मंग, महाराज शेर सिँघ आत्म भर दए भण्डारा। शब्द सुरत प्रभ ज्ञान दवाया। सन्त मनी सिँघ बांहों पकड़ उठाया। आत्म ब्रह्म ज्ञान दे, अन्तकाल कल लेख लिखाया । पूरन शक्ती ब्रह्म ज्ञान दे, दिवस रैण प्रभ सेवा लाया। अन्तकाल कल माण दे, अगाध बोध प्रभ शब्द लिखाया । शब्द सुरती प्रभ लेख लिखा के। कलंकनिह आया भेख वटा के। जोत सरूप कलि जोत प्रगटाके। बेमुखां कोलों मुख छुपा के। गुरसिख सोझी पा के। स्वच्छ सरूप जाए दरस दिखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा जावे ला के। धन्न धन्न धन्न मनी सिँघ धन्न तेरे सिख, जिन्हां तेरी सेव कमाई। कलिजुग जामा धार अन्तकाल आए प्रभ तेरी पैज रखाई। गुण निधान घर आयके, सिख माण दिवाई। जिथ्थे गिउँ देह तजायके,

सतिजुग नगरी सति रखाई। फिर आइउँ जोत प्रगटायके, निहकलंक देवे वड्याई। महाराज शेर सिँघ सतिजुग अंदर सच तख्त जाए बहायके, चार वरन करे तेरी वड्याई। अन्तकाल कलि प्रभ खेल रचाया। चार वरन अन्तकाल इक्क कराया। राजा राणा फड़ तख्तों लाहया। पूरन पाई घाल, जो दुःख संगरूर में पाया। प्रभ तोड़े सर्ब जंजाल, अन्तकाल प्रभ होए सहाया। गुरमुख विरला जाणे पिछला हाल, महाराज शेर सिँघ सच दए लिखाया। वक्त सुहाए आण प्रभ, जां होए वेला। वक्त सुहाए आण प्रभ, कलिजुग खेल प्रभ खेला। अन्त गंवाए माण सभ, विछड़यां प्रभ संजोगी मेला। गत मित जाणे आप सभ, जोत सरूपी अचरज खेला। अमृत झिरना विच झिराए नभ, जगाए जोत आत्म बिन बाती बिन तेला। कलिजुग अंदर महाराज शेर सिँघ, भगत भगवान कराए मेला। भगतन उपजे मन अन्ध अज्ञान। सुरत शब्द प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञान, चरन धूढ़ सभ तीर्थ इशनान। सोहँ शब्द आत्म दान। कलिजुग पार कराए पुरख चतुर सुजान। खाली दिसण सो जन, मदि मास जो रसना लाण। कलिजुग अंदर पूरन जोत प्रगटे विष्नूं भगवान। आप अडोल प्रभ, सभ जगत डुलाया। सो सुहाए थान, प्रभ जिथ्थे डेरा लाया। तोड़ दे माण हँकार विकार, जो जीव रिदे वसाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटावे

४१८
०१
झब, साध संगत जिथ्थे रसन ध्याया। रसना जपिआ रमईआ राम। प्रगट जोत प्रभ पूरन कराए काम। मनी सिँघ दवाए ४१८ ०१
माण प्रभ, पिण्ड भंडाल बणे सच धाम। राजे राणे आवण दर, सोहँ शब्द मारे बाण। महाराज शेर सिँघ जोत निरजंण, सतिजुग जोत प्रगटावे झब। जोत सरूप प्रभ निराहार। जन भगतां देवे नाम अधार। कलिजुग जामा धार, बेड़ा कर जाए पार। गुरसिख विरला प्रभ की पावे सार। मूर्ख मुग्ध ना करे विचार। कलिजुग अंदर भगत जन उज्जले, जोत सरूप प्रभ करे आकार। निहकलंक कल अवतार। भगतन देवे कलिजुग तार। सन्तन देवे प्रभ साची सार। निहकलंक कलि आया। घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। नरायण लक्खमी प्रभ मनी सिँघ दरस दिखाया। कँवल नैण सिर मुकट टिकाया। कर दरस आत्म तृप्ताया। तन मन होए प्रभ चरन सेव कमाया। आत्म ल्या प्रभ साचा मन्न, दोए जोड़ दर सीस जिस झुकाया। शब्द लिखावे प्रभ साचा धन्न, बाणी बोध जगत लिखाया। वज्जे वाज शब्द गुण, आत्म धुन नाद वजाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, सन्त मनी सिँघ माण दवाया। मनी सिँघ सच तेरा धाम। प्रगट जोत प्रभ करे तेरा काम। सतिजुग उज्जल होए तेरा नाम। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, कलिजुग प्रगटे जिउँ द्वापर शाम। सन्तन संग प्रभ वसणेहारा। शब्द सुरत साचा राह दस्सणेवाला। कलिजुग प्रगटे जोत, चार कुन्ट करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ जो किछ करे सोई कल होत, प्रगटे निहकलंक अवतारा। दुःख भुक्ख प्रभ रोग मिटाया। अमृत मेघ बरस आत्म तृप्ताया। सुफल कराए मात कुक्ख, जिस जीव मुख पाया। अन्तकाल

कलि लग्गे ना दुःख, साचा प्रभ हो जाए सहाया। निर्धन बाल उपजे कुक्ख, जो जन आए गुरचरन सीस निवाया। कलिजुग भले से मनुख, प्रभ अबिनाशी घर मांहि पाया। बेमुख खाली जिउँ सिंमल रुक्ख, अन्तकाल प्रभ नर्क निवास रखाया। गुरमुखां कर उज्जल मुख, महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत दरस दिखाया। गुरसिख जीव कलि गुरचरन भरवासे। साचा प्रभ किरपा कर, आत्म जोत करे प्रकाशे। कलिजुग प्रभ धरनी धर, कोई जीव ना जाए निरासे। साचा प्रभ भर जाए भण्डारे अतुल अखुट्ट सच बैकुण्ठ करे निवासे। बेमुख जीव दर आए जायण भुल्ल, गुरसिख प्रीत चरन रहिरासे। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, आप अतुल ना तुल तुलासे। जीव की जाणे प्रभ की सार। आत्म भुल्ले ना करे विचार। विच वसे प्रभ सच भतार। नज़र ना आवे होए अन्ध अंध्यार। गुरमुखां प्रभ आत्म ज्ञान दे, आत्म दीप करे उज्जयार। सच पुरखां चरन ध्यान दे, साची शब्द वज्जे धुन्कार। महाराज शेर सिँघ सोहँ दान दे, कलिजुग बेड़ा कर जाए पार। अन्तकाल कलि प्रभ आप कराए। जोत सरूप अग्न जोत लगाए। सोहँ साचा बाण प्रभ शब्द चलाए। बेमुखां बाण मदि मासी कोई रहण ना पाए। गुरसिक्खां देवे ब्रह्म ज्ञान, निज घर वासी निज घर नज़री आवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां घर जोत जगावे। भगत तरे जगत भुलाया। प्रभ ना डुल्ले किसे जन डुलाया। बांहों पकड़ गुरसिख साचे मार्ग लाया। सोहँ साचा ज्ञान दे, प्रभ आत्म जोत जगाया। जन भगतां सोहण द्वार बंक। कलिजुग जामा धार इक्क किया राउ रंक। ऊँच नीच भेव चुकाए मनक। महाराज शेर सिँघ भगत जन तारे, जिउँ तारे जनक। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, जीव तन रचाया। मति मन बुध धर, पवण रूपी स्वास चलाया। काम क्रोध हँकार कर, जग झूठे धन्दे लाया। बेमुख जीव ख्वार कर, मदि मास आहार बणाया। जन भगतां कल विचार कर, सोहँ साचा नाम जपाया। कलिजुग साची जोत धार कर, निहकलंक नाउँ धराया। जोत सरूपी आकार कर, प्रभ आपणा आप छुपाया। जीव जन्तां जोत अधार धर, प्रभ विच्चों दिस ना आया। जन भगतां कर्म विचार कर, प्रभ हिरदक जोत जगाया। उत्तम विच संसार कर, साचा लेख प्रभ लिखाया। कलिजुग उत्तम खेल करतार कर, प्रभ सारा खेल मिटाया। जोत सरूपी अग्नी बाल कर, अग्न जोत प्रभ चार कुन्ट लगाया। दुःख भुक्ख कलिजुग जीव बेहाल कर, हाहाकार कर जगत रुवाया। निहकलंक कलिजुग अवतार नर, अन्तकाल कलि आण खपाया। गुरसिख कलिजुग पार कर, प्रभ जोती जोत मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ जोत आकार कर, सतिजुग साचा लाया। सतिजुग चले शब्द न्यारा। सोहँ होवे जै जै जैकारा। जन भगतां दीसे प्रभ चरन दुआरा। जिथ्थे वसे आप निरँकारा। जोत सरूप प्रभ रहे जोत अधारा। कलिजुग बेमुख जीव क्यों पावे ना प्रभ की सारा। अमृत नाम महारस पीव, मिट जावे देह अन्धयारा। गुरचरन लाग सदा जग

जीव, सचखण्ड मिले दुआरा। महाराज शेर सिँघ निर्मल जोत धरे विच आत्म दीव, झूठी देह होए उज्जयारा। ज्ञान गति कोई जन जाणे। मूर्ख मति ना प्रभ रंग माणे। गुरमुख चले प्रभ के भाणे। अड़े झड़े प्रभ भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। दर खड़े निगम विचार करे कलिजुग पुरख सुजाने। महाराज शेर सिँघ कलि प्रगट जोत, दर डिग्गण आए राजे राणे। सभ ते वड्डा प्रभ का दर। राउ रंक अन्तकाल इक्क जाए कर। जोत सरूपी जोत प्रगटाए निहकलंक अवतार नर। साचा प्रभ होए सहाए, साध संगत कलि मूल ना डर। गुर पूरा लाज रखाए, जो चल आया दर। महाराज शेर सिँघ अन्त जोत मिलाए, गुरसिख ना जाए मर। गुरसिख होए ना जग मरना। अन्तकाल जोत सरूप होए निहकलंक गुरमुख विरला वरना। साध संगत प्रभ चरन लाग कलिजुग तरना। महाराज शेर सिँघ सच शब्द डंक, अन्तकाल चार वरन इक्क करना। चार वरन प्रभ इक्क कराए। सचखण्ड वासी सतिजुग लाए। सोहँ साचा शब्द चलाए। दूसर कोई रहण ना पाए। ईसा मूसा मुहम्मदी प्रभ नष्ट कराए। कुरान अञ्जील सतिजुग दिस ना आए। झगड़ा होवे हिन्द मुहम्मदी, महाराज शेर सिँघ ब्यासो पार चरन टिकाए। चरन कँवल भंडाल प्रभ धरया । पूरा बचन मनी सिँघ तेरा प्रभ करया। हाहाकार कर जगत सभ डरया । महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरा, कलिजुग ना किसे तों डरया। सो क्यों डरे, जिस प्रभ होए सहाई। जन क्यों मरे, जिस प्रभ साचा दरस दिखाई। कलिजुग तरे जिन हिरदे प्रभ रिहा समाई। तिन के कारज सरे, जो आए चल प्रभ सरनाई। अन्तकाल दुःख डाहढा भरे, जो जाए मुख भवाई। आवे जावे जन्मे मरे, गर्भवास प्रभ वास कराई। दर आए खोटे होए खरे, साध संगत प्रभ लै मिलाई। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप भेव ना आवे राई। बेमुख की जाणे प्रभ का भेवा। गुरमुख जाणे जो गुर चरनीं लाए सेवा। कलिजुग प्रगट्या निहकलंक, वड दाता देवी देवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटे अलख अभेवा। सो सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ जोत जगाई। सो सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ प्रगट जोत अभिमानीआं माण गंवाई। सो सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ साध संगत दरस दिखाई। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ सोहँ शब्द चलाई। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ जन भगत तराई। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ अबिनाशी सिँघआसण बिठाई। सिँघआसण बैठा आप नर सिंग। जोत सरूप राणयां महाराणयां करे निंग। देवे शब्द ज्ञान, वजाए आत्म किंग। कलिजुग उधरे भगत जन, जिउँ तरया भगत भृंग। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर गुर साचा मृगिन्द। भोग लगाए गुर प्रसादी। हँकार निवारे आत्म साधी। रसना प्रभ जीव सदा अराधी। कलिजुग प्रगट्या जोत सरूप सदा अनादी। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल तुध बिन कोई ना बणदा दादी। आई बिक्रमी वीह सौ अट्ठ। दिवस गया उप्पर अट्ठ ते सट्ठ। साध संगत किया भंडाली इक्ठ। कलिजुग उलटी गेड़ जाए प्रभ

लड्ड। सृष्ट सबाई खपाई विच भड्ड। गुरमुख कलिजुग गुर चरनीं आयन नट्ठ। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार देवे शब्द अधार, गुरसिख ना छोड़े हठ। जोत प्रकाशे मात पाताल विच आकाशे। साध संगत गुरचरन निवासे। कलिजुग जीव प्रभ चरन भरवासे। वेला अन्त प्रभ करे बेअन्त, सृष्ट सबाई होए नासे। महाराज शेर सिँघ सतिजुग तेरी मंत, चार कुन्ट प्रभ शब्द वासे। चलाए शब्द सर्ब गुणवन्ता। जणाए शब्द प्रभ भगवन्ता। लिखाए शब्द दिखाए साधन सन्ता। अपनाए शब्द आदिन अन्ता। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवन्ता। भगवन होए भगत प्रगटाया। साचा माण प्रभ आप दवाया। निहकलंक सिर छत्र छाया। धर जोत प्रभ सन्तन जन्म दवाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, माथे मनी सिँघ तिलक लगाया। जिथ्थे तजाए देह सन्त, उथे प्रभ जोत प्रगटाए। जोत प्रगटाए आप प्रभ, जोत ललाट जगाए। कर जाए उत्पत्त चार वरन प्रभ सरनी लाए। महाराज शेर सिँघ तेरी कोई ना जाणे गति मित, गुरमुख विरला तेरा भेव कल पाए। सन्तन प्रभ आपणा भेव खुल्ह्या। दे दरस अज्ञान अन्धेर मिटाया। तोड़ आत्म हरस, ब्रह्म सरूप बणाया। महाराज शेर सिँघ हिरदे अमृत साचा बरस, दसवां द्वार खुल्हाया। खुल्हे द्वार होए जोत प्रकाशे। अन्ध अज्ञान विच्चों देह नासे। सन्तन संग सदा प्रभ
४२१ वासे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग दुष्ट करे अन्त नासे। दुष्ट दुराचार सो जन कहाए। मदि मास जो रसना लाए। साचा ४२१
०१ प्रभ ल्या भुलाए। प्रगटी जोत कलि गोबिन्द राए। भगत जनां दर घर होए सहाए। साध संगत मिल हरि जस गाए। प्रभ ०१
अबिनाशी जोत प्रगटाए। सन्त जनां प्रभ आप वड्याए। महाराज शेर सिँघ तेरा नाउँ कलिजुग साची नाए। सन्त मनी सिँघ वड सन्तन सन्ता। उत्तम किया प्रभ विच कलिजुग जीव जन्ता। सतिगुर बणाया प्रगटी जोत प्रभ भगवन्ता। तख्त बहाया रक्खे सिर हत्थ, प्रभ साचा कन्ता। नदरी नदर कर पार कराया जग वड महंता। महाराज शेर सिँघ कलि तेरी वड्याई, माण दवाए विच साधन सन्ता। सन्तन मन कलि भया अनन्द। आत्म तोड़े प्रभ हउमे बन्द। होए प्रकाश जिउँ आकाश चन्द। सीतल आत्म उत्तम सुख परमानंद। महाराज शेर सिँघ अमृत वरखे, सुख पाए जीव निजानंद। निजानंद जीव निज विचार। अमृत वरखे प्रभ किरपा धार। कलिजुग माया भुलाया संसार। नज़र ना आए प्रभ अगम्म अपार। जोत सरूप कलि किया आकार। निहकलंक निराहार निरवैर, कलिजुग आया जामा धार। महाराज शेर सिँघ कल वरतावे, सृष्ट सबाई होए ख्वार। आत्म बुध आप प्रभ मारी। मायाधारी होए हँकारी। रसना लोभी जीव संसारी। प्रभ पछाणे कोई नर नारी। प्रगटे कलि प्रभ आप मुरारी। बेमुख जायण जन्म जुए हारी। गुरसिख देवे साचा नाम अधारी। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, प्रगट जोत पैज संवारी। भगत जनां हरि आप संवारे। रसना जप जप हरि नाम उतरे पारे। अन्तकाल कलि जायण सच दुआरे।

जोत प्रकाश होए जोत चमत्कारे। अनहद शब्द धुन सदा गुंजारे। खुल्ह जाए आत्म सुन्न, जिस नूं बख्शे आप गिरधारे। सभ लोचन देखण मुन, प्रभ देवे सन्त प्यारे। महाराज शेर सिँघ सन्त मनी सिँघ चुण, सतिजुग उपजाया पुरख अपारे। सति पुरख सद आया। कलम पकड़ विच हत्थ कलिजुग लेख लिखाया। कोई ना रहे किसे दी अकड़, प्रभ आपणी जोत प्रगटाया। सभ चरन ल्यावे पकड़, राजा राणा तख्तों लाहया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, तेरा भेव किसे ना पाया। राजा राणा कोई ना दीसे। प्रगटे जोत प्रभ आप जगदीसे। अन्तकाल वरन चार होए इक्क रंग इकीसे। झुल्ले छत्र निहकलंक तेरे सीसे। अमृत साचा नाम, कोई विरला गुरमुख पीसे। गुरमुखा तेरा माण, बेमुख ना होए रीसे। प्रगटी जोत भगवान, कलिजुग जीव दो फाड़ा पीसे। महाराज शेर सिँघ गुणी निधान, वरताए खेल होए बीस इकीसे। वरते खेल प्रभ अथाह। अन्तकाल कलि किसे मिले ना सचा शाह। थल जल जल थल प्रभ चार कुन्ट दए वहा। जोत सरूपी जोत प्रभ विच सिख रिहा समा। महाराज शेर सिँघ तेरे चोज, सभ दर आए मूर्ख पति जाए गंवा। गुर दर दरबारा, वसे प्रभ सचा निरँकारा। खण्ड ब्रह्मण्ड जोत आकारा। सर्ब सृष्ट प्रभ पसर पसारा। जीव जन्त दिया जोत अधारा। मानस जन्म गंवाया, मूर्ख जीव ना करे विचारा। गुरसिक्खां भेव खुल्हाया, प्रभ खोल्ह दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया, अमृत देवे सच भण्डारा।

भगत भण्डारी प्रभ अख्वाए। दर आए माण दिवाए। जो जन चरनीं सीस झुकाए। बेमुख हस्स हस्स नस्स नस्स घर मुड़ जाए जिउँ सुंञे घर काउँ बिल्लाए। गुरमुख पी अमृत नाम, आत्म तृखा बुझाए। महाराज शेर सिँघ दरस दान दे लोचन जोत जगाए। जोत जगाए आप प्रभ, मिट जाए अन्धेरा। होए जोत प्रकाश, जीव ना सूझे सञ्ज सवेरा। दुःख दर्द जायण नस्स, जिन्हां मिल्या प्रभ नेरन नेरा। सन्त मनी सिँघ विच प्रभास, भंडाली लाया डेरा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाश, वेले अमृत सृष्ट सबाई ढाया ढेरा। सृष्ट सबाई ख़ाक रुलाई, जोत निरँजण आई जग। जोत प्रगटाई पै जाए दुहाई, पाप अन्धेरी गई वग। ना कोई होए सहाई, दुखी जीव बिल्लाए कलिजुग जीव जलाए पापां अग्ग। महाराज शेर सिँघ होए सहाई, आत्म जोत जीव जाए जग। जगे जोत अगम्म अपारी। साध संगत भरे भण्डारी। दर घर आए प्रभ पैज संवारी। निरँजण जोत गुरसिख आत्म करे उज्जयारी। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे, निहकलंक अवतारी। आवे जावे आपणा भेव ना खुल्हावे। उपजावे ढाहवे आपणा खेल ना किसे दिखावे। रावे गावे तिस जन प्रभ साची सोझी पावे। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाश, बेमुख रहण ना पावे। नाम विहुणा बेमुख मोआ। बेमुख निन्दक रहे ना दोआ। अमृत झिरावे प्रभ आत्म चोआ। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे, गुरसिख जगावे सोआ। अमृत झिरना आत्म झिराए। अमृत बूंद कँवल में पाए। खोल्ह

कँवल त्रैभवन सुझाए। जन्म जन्म दी सोझी पाए। प्रगट जोत सन्तन वड्याए। सन्त मनी सिँघ सतिगुर सतिजुग बणाए। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, कलिजुग बेमुखां दिस ना आए। दीसे ना प्रभ जोत सरूप। जोत सरूप जोत आकार ना कोई रंग रूप। भगतन आए पैज संवारे प्रभ साचा भूप। सतिजुग होवे तेरी सिक्दारी, सन्त मनी सिँघ सति सरूप। भगतन देवे नाम खुमारी, महिमा प्रभ की बड़ी अनूप। महाराज शेर सिँघ निरजंण जोत आकारी, देवे दरस स्वच्छ सरूप। दरस दान गुरसिक्खां पाया। आत्म ज्ञान प्रभ आप दवाया। निजानंद सुख निज मांहि उपजाया। भरांत भुलेखा सारा लाहया। ऊँच नीच सभ भेत चुकाया। चार वरन प्रभ इक्क कराया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप तेरा अन्त किने ना पाया। प्रभ का अन्त जीव ना जाणे। आपणी महिंमा प्रभ आप वखाणे। सन्तन महिंमा प्रभ आप लिखाणे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख कलिजुग कीए सुघड़ स्याणे। मनी सिँघ जग माण तजाया। अचुत्त परमेश्वर रिदे वसाया। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण सिर छत्र छाया। दे दरस महाराज शेर सिँघ निरास आस पुजाया। कर दरस निर्मल होआ जिया। सन्तन मिल्या पूरब जन्म बीज जो बीआ । कलिजुग बेमुख पाए जो कर्म कल किया। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुणवन्त, जीव कर प्रभ मिलण का हीआ। प्रभ मिले प्रेम कर, जो जीव आस रखाया। प्रगटे जोत ख्याल कर, मनी सिँघ माण दवाया। माण दवाए आप प्रभ कलिजुग देर ना लाया । महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, सन्तन महिंमा आप लिखवाया। उठ उठ उठ गुरसिख बेमुख जायण भाग, वेला गया हत्थ ना आया। सृष्ट सबाई प्रभ हत्थ वाग, उलटे वहिण प्रभ जगत भुलाया। गुरसिक्खां ना लागे दाग़, जिस चरनीं सीस झुकाया। आत्म उपजे प्रभ चरन ध्यान, प्रभ साचा दया कमाया। पूरन होए गुरसिख तेरे भाग, कलिजुग प्रगट महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। कलिजुग दरस प्रभ दर का प्यारा। पावे कोई गुरमुख न्यारा। मायाधारी देह विकारी भुल्ला संसारा। साध संगत मिल्या सचखण्ड दुआरा। जगन्नाथ गोपाल देवे दरस अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ सद नाल सभ, जो जन करे विचारा। आत्म विचार ना प्रभ विचारया। पाए ना सार जीव जिस जन्म संवारया। होए ख्वार ना किसे भरम नवारया। कलि आया जोत धर निहकलंक अवतारया । प्रभ बेड़ा कर जाए पार, जो जन चरन आए निमस्कारया। गुर घर होए हरि का द्वार, जिथ्थे प्रभ करे जोत आकारया । जोत सरूप प्रभ दुष्ट सँघार, जन भगतां पार उतारया। महाराज शेर सिँघ जोत निराहार, निरवैर अख्वा ल्या। निरहारी प्रभ निरवैर सदाए। कलिजुग जीव कलि कर्म कमाए। जामा धार आप प्रभ, बेमुखां फड़ ल्याए। अन्त ना लेवे कोई सार, प्रभ नर्क निवास दिवाए। गुरसिक्खां प्रभ जाए तार, गुर गोबिन्द जो रसना गाए। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन प्यार, गुरमुख भुल्ल ना जाए। भुल्ले सो जन जिस आप भुलाए। बेमुख दर

ते रहण ना पाए। गुरसिख पूरा प्रभ चरनी रिहा लपटाए। धन्न धन्न धन्न गुरसिख धन्न जणेंदी माए। उत्तम होया कलिजुग मुख, चार जुग प्रभ माण दिवाए। जोत सरूप आत्म देवे सुख, विकारी दुःख कोई रहण ना पाए। आत्म उतरे मन की भुक्ख, महाराज शेर सिँघ दर तेरा जो पाए। पावे दरस जिस दरस दिखावे। मुग्ध अन्ध अज्ञानी दिस ना आवे। गुरसिख चतुर सुजानी, बुध बिबेक प्रभ कराया। साचे होए गुरसिख ध्यानी, दिवस रैण महाराज शेर सिँघ रसना गाया। हुक्म साचा प्रभ वरताए। दूसर कोई रहण ना पाए। कुन्ट चार सच शब्द जणाए। आदि जुगादी सर्ब बेआधी प्रभ अनादी, नाद धुंन उपजाए। जोत निरँजण सृष्टी साधी, साध संगत रसना अराधी, गाए ना सके कोई रागी नादी, प्रभ का भेव कोई ना पाए। महाराज शेर सिँघ सृष्ट सबाई लाधी, बेड़ा शौह दरया रुढ़ाए। भर भर प्रभ डोबे पूर। कलिजुग तेरी आसा पूर। सतिजुग उपजे उपजावे, मनी सिँघ तेरा प्रभ साचा नूर। महाराज शेर सिँघ पार लँघावे, सर्ब जीआं दी सरधा पूर। माण दिवाए आप प्रभ, जगत वड्डियाके। भगत तराए आप प्रभ, प्रगटी जोत साचे दर आ के। गुण निधान आप प्रभ, नाम भिच्छया जाए पा के। भगत वछल भगवान प्रभ, सन्त बचन कलि जाए सति करा के। महाराज शेर सिँघ प्रभ बेअन्त, सतिजुग साचा लाए कलिजुग मिटा के। मिटे कलिजुग होए धुंदूकारा। कोई ना दीसे रसना जिस मदि मास आहारा। बेमुख पीसे पिसावे पिसावणहारा। कूड़ी खेल कलिजुग

४२४ ०१ कूड़ी कूड़ ठीठे, प्रभ लेख लिखावणहारा। साचा नाम दर गुरसिख पी से, प्रभ मिल्या पिलावणहारा। महाराज शेर सिँघ छत्र झुल्ले तेरे सीसे, निहकलंक नाउँ लिखावणहारा। निहकलंक प्रभ नेहकामी। प्रगटी जोत प्रभ अन्तरजामी। माण गंवाए प्रभ शरअ सलामी। भेद दिखाए देर ना लाए, तोड़े माण अभिमानी। महाराज शेर सिँघ तेरी कोई सार ना पाए, भुल डुल्ल कलिजुग जीव आत्म होई निधानी। कलिजुग जीव ना होए ध्यान। प्रगटे जोत विष्नूं भगवान। दरस दे प्रभ देवे सोहँ दान। आत्म चाढ़ मजीठी रंग, प्रभ बख्शे शक्त महान । महाराज शेर सिँघ साचा दर, राउ रंक इक्क समान, कलिजुग प्रगटे विष्नूं भगवान। सुक्के फल प्रभ लाए डाली। सन्तां सिँघ आत्म होई खाली। मंग भिख प्रभ चाढ़े लाली। साचा प्रभ लेख जाए लिख, ना मंगे कोई दलाली। सोहँ नाम पावे भिख, दो जहानां वाली। बेमुख दर नाचे जिउँ रिच्छ, प्रभ जोत सदा छपाली। महाराज शेर सिँघ सति सति सति तेरा सिख, जिस चरन प्रीती ला ली। भाणा वरते हरि के भाणे। कलिजुग जीव कोई ना जाणे। कलिजुग ना रहसी कोई राजे राणे। शब्द जगाए प्रभ उठाए सत्तर लक्ख पठाणे। जीव जन्त अञ्याणे पए कुरलाण, दाढ़ां हेठ बच्चे चबाणे। कलिजुग भुज्जण जीव जिउँ भठयाले दाणे। महाराज शेर सिँघ सभ कुछ वरते तेरे भाणे। जगत होया कलिजुग अन्ध, गुरसिख सोहण चरन मुकंद। आस पास पास आस ब्यास। प्रगटी जोत प्रभ गुणतास। सन्त

सुहेला करे सन्त वास। साचा धाम करे प्रकाश। महाराज शेर सिँघ सचा शाहबास। विछड़ मिले मिल ना विछड़े, अन्तकाल कलि आया । जीव जन्त पीड़ाए तेल सभ पिड़े, प्रभ साचा बचन लिखाया। पर्बत सभ जगत दे हिले, प्रभ जोत सरूपी दे हिलाया। प्रभ गढ़ गोड़ तोड़े किले, सोहँ बाण कलिजुग लाया। महाराज शेर सिँघ जो जन मिले, मिल प्रभ महां सुख पाया। सच शब्द प्रभ सच लिखावणा। निर्भय होए जिस प्रभ रसना गावणा। कलिजुग पाए सुख ना किसे दुखावणा । कर जीव अरदास प्रभ प्रगट होए दिखावणा। हँकार निवार दुष्ट सँघार, प्रभ साचे राह ते लावणा। जगत भण्डार दे अमृत भण्डारा, आत्म ज्ञान मिटावणा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, चार कुन्ट जै जैकार करावणा। जीव जन्त जे प्रभ डुलावे। प्रभ अबिनाशी नाम मिट जावे। प्रगट जोत सरूप प्रभ दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ कर साचा भउ, निर्भय होए गुरसिख तरावे। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, प्रभ अबिनाशी जिस घर में पाया। आत्म प्रभ लाहे भुक्ख, सांतक रूप प्रभ विच समाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, प्रगट जोत निहकलंक नाउँ धराया। शब्दी शब्द लिखावे बाणी। बेमुखां आत्म मारे कानी। बेमुख विरले ईश्र जोत पछाणी। सन्त मनी सिँघ सतिजुग तेरी रहे निशानी। अठ्ठ जेठ कलि फेर ना आवणा। दर घर प्रगट जोत प्रभ फिर ना सुहावणा। प्रगटे जोत प्रभ खोल्हे सोत, गुरसिक्खां ज्ञान ब्रह्म दिवावणा। महाराज शेर सिँघ धन्न धन्न धन्न गुरसंगत चरन लाग जिस अन्त सुख पावणा। गया आया प्रभ भेव चुकाया। जोत सरूप धार खेल कलिजुग अंदर आपणा भेव खुल्हाया। सुहाए थान सो दर मन्दर, जिथ्थे प्रभ मनी सिँघ माण दिवाया। बेमुख दर जिउँ बन्दर, मन विच हँकार रखाया। होए निमाणा प्रभ आत्म तोड़े जंदर, सोहँ कुंजी प्रभ शब्द लिखाया। प्रभ साचा वसे देह अंदर, बेमुखां भेव ना पाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, जोत सरूपी जगत डुलाया। प्रभ आए वक्त विचार कर, लेख लिखाए लेखे। प्रभ जाए जन्म सुधार कर, जो जन आए दर्शन पेखे । बेमुखां जाए मार कर, जो रहे भरम भुलेखे। गुरसिक्खां जाए शब्द अधार कर, मानस जन्म लाया लेखे। महाराज शेर सिँघ जोत आकार कर, तुध गुरमुख वेखे। गुरमुख गुरसिख दो जन, प्रभ जोत एका। साध संगत तेरी वड्याई धन्न, रसन जप होए बुध बिबेका। जिस आत्म ल्या मन्न, दरस प्रभ एकं एका। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अग्न गुरसिख ना लावे सेका। सन्तन संग मिले वड्याई। साध संगत प्रभ रिहा समाई। धन्न धन्न धन्न गुर संगत, दिवस रैण रहे प्रभ जस गाई। जो दर आए जोड़ हत्थ मंगत, साची भिच्छया प्रभ झोली पाई। आत्म चाढ़े नाम सोहँ रंगत, कलिजुग मिले जीव वड्याई। भुल ना जीव जिस बणाई बणत, भरम भुलेखे जन्म गंवाई। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, प्रगट विच साध संगत हँकार निवारे सर्ब सुखदाई। निवार निवार हँकार प्रभ हँकारीआ । सति पुरखां

दे अधार, प्रभ साचे काज संवारया। कलि निर्मल जोत आकार कर, मिलन कृष्न मुरारया। गुरमुख उत्तम विच संसार, लिखावे लेख प्रभ आप संसारया। महाराज शेर सिँघ अखुट्ट भण्डारा, गुरसिक्खां देवे वरभंड भण्डारया । कलिजुग हिरदक होवे ठंड, जिन मिल्या महाराज शेर सिँघ एकँकारया। एकँकार एक प्रभ जोत। सृष्ट सबाई रही कलि सोत। भगत जनां प्रभ खोल्ह्रे सोत। बेमुख दुरमति दर गए रोत। महाराज शेर सिँघ सतिजुग अंदर, चार वरन तेरी एका गोत। शूद्र ब्रह्मण छत्री वैश कोई ना दीसे। एका जोत सर्ब जीव प्रभ तेरे दीसे। हँकारी दुष्ट दुराचारी अन्तकाल कलिजुग शब्द सरूपी पीसे। महाराज शेर सिँघ सतिजुग अंदर, वरन कोई ना दीसे।

✻ १७ हाढ़ २००८ बिक्रमी पिण्ड वैरोवाल विहार होया ✻

उठ जीव जाग, प्रभ भए प्रकाशे। कलिजुग लै अवतार, करे बन्द खलासे। देवे दरस प्रभ अगम्म अपार, आत्म दे धरवासे। सो जन होए सुघड़ सुजान, मिल प्रभ समरथ अबिनाशे। कलिजुग लए अवतार, महाराज शेर सिँघ निहकलंक शाहो शाबाशे। दस्म दुआर प्रभ आप खुल्ह्राए। ब्रह्म ज्ञानीआं ब्रह्म सरूप दे, जोत सरूप विच सिख समावे। कलिजुग जीव मुग्ध अञ्याण, प्रभ साचा कोई भेद ना पावे। गुरसिख होए चतुर सुजान, गुरचरन आए सेव कमावे। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, लक्ख चुरासी गेड़ कटावे। आत्म सुन प्रभ देवे खोल्ह्र, जन भगतां दरस दिखावे। निहकलंक गुण निधान, जन भगतां लेख लिखावे। सोहँ जपावे साचा जाप। चरन लाए कोट लाहे पाप। साध संगत प्रभ माई बाप। महाराज शेर सिँघ जन भगतां अन्त सहाई होवे आप। भगत जनां प्रभ दरस दिखाई। अछल अछल्ल ना छलया जाई। कलिजुग जीव माया अग्न जलाई। मदि मास रसना आहार बणाई। अन्तकाल प्रभ ना होए सहाई। कुम्भी नर्क नर्क निवास दवाई। कूकर सूकर प्रभ जून लिखाई। प्रगट जोत कलिजुग प्रभ आपणी कल वरताई। प्रगट जोत नर नरायण, साची बूझ बुझाई। साध संगत रसना रमईआ राम, ज़ात पात दा भेव चुकाई। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, चरन लाग दुत्तर तर जाई । चरन लाग प्रभ मिले वड्याई। सुरत शब्द आत्म धुन प्रभ दे वजाई। अमृत झिरना झिर झिराई। अमृत बूंद कँवल में पाई। खुल्ह्रे कँवल होए प्रकाश, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाई। प्रगटे जोत प्रभ गुणतास, ईश जीव दा भेव चुकाई । सन्त जनां प्रभ सद है दास, गुरमुख विरले बूझ बुझाई। साध संगत प्रभ साचे प्रकाश, साची जोत कलि प्रगटाई। भगत जनां प्रभ कृपाल दयाल, ब्रह्म वेद दी बूझ बुझाई।

महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, प्रगट जोत अटल्ल कलि देवे वड्याई। ब्रह्म ज्ञानीआं देवे हरि नाउँ। प्रभ जोत वसे हर थाउँ। निहकलंक सदा बल जाओ। महाराज शेर सिँघ रसना गुण गाओ। रसना रस नाम रस पाए। साचा प्रभ दरस दिखाए। आत्म जोत जोत प्रभ दे जगाए। साचा प्रभ साचे थाएँ समाए। भगत जनां हरि लाज रखाए। प्रगट जोत होए सहाए। कलिजुग जामा धार, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाए। गुरसिख तेरे नाम वड्याई । प्रभ जोत विच देह समाई। अबिनाश दुःख भंजन, कलिजुग आया भेस वटाई। झूठी दुनियां प्रभ जोड़े बंधन, निहकलंक सिर माया पाई। माया जाल जगत तोड़े तन्दन, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आई। महाराज शेर सिँघ तोड़े बंधन, दे दरस तृखा मिटाई। दरस देख आत्म तृप्तास्या । जन भगत प्रभ चरन निवास्या। प्रगटे जोत मात पताल आकाश्या। कलिजुग जामा धार सिख देह निवास्या। महाराज शेर सिँघ नर अवतार, रसना जप जीव स्वास सवास्या। निहकलंक प्रभ नर अवतारा। जोत सरूपी खेल अपारा। कलिजुग होवे अन्ध अन्धयारा । प्रगटे जोत आप निरँकारा। जोत सरूपी जोत प्रभ, जुगो जुग लै अवतारा। जन भगतां देवे शब्द भण्डारा। आत्म मिटे अन्ध अन्धयारा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नर नरायण निहकलंक। चार कुन्ट वजाए शब्द डंक। शब्द मार करे प्रभ इक्क राउ रंक। कलिजुग तारे जिउँ त्रेता जनक। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, प्रगटे मातलोक बार अनक। गुरसिख दोए जोड़ करे बन्दन, प्रभ दरस दिखावे। साची जोत करे प्रकाश, अन्धेर देह मिटावे। आत्म जोत प्रकाश कर, शब्द धुन प्रभ सद उपजावे। महाराज शेर सिँघ सुरत ज्ञान कर, ब्रह्म दी बूझ बुझावे। गुर दर आए गुरचरन प्यासे। जिस जन गुरचरन भरवास, होए दास प्रभ दासन दासे। साध संगत प्रभ सद है वासे। कलिजुग जीव भुल्ले कूड़े भरवासे। प्रभ जोत सरूप सदा अटल्ल, ना सदा विनासे। जोत सरूप सति शब्द लिखाए। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक प्रभ दे उलटाए। अग्न जोत देवे जगत जलाए। सोहँ शब्द प्रभ साचा बाण लगाए। चार कुन्ट हाहाकार मच जाए। बिन प्रभ साचे ना कोए सहाए। कलिजुग अन्तकाल रहे बिल्लाए। जन भगतां प्रभ मेल मिलाए। जोत सरूपी दरस प्रभ, सुरत शब्द दा मेल मिलाए। देह निवास करे आत्म वास, जगे जोत मिले प्रभ आप हरि राए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी आस पुजाए। गुरसिक्खां अमृत नाम भण्डारा। बेमुख कलिजुग होए ख्वारा। गुरसिख साचा नाम मिले अधारा। महाराज शेर सिँघ देवे दरस अगम्म अपारा। जो जन आए सरनाए। कर किरपा प्रभ पार कराए। पतित पापी दुष्ट दुराचार प्रभ पार कराए। आत्म कर प्रकाश, अमृत मुख चवाए। महाराज शेर सिँघ जुगो जुग लाज रखाए। कलिजुग प्रगटे प्रभ भरपूर। कोई ना जाणे जोत निरँजण साचा नूर। गुरमुख जाणे जिस

जणाए प्रभ श्रद्धा पूर। महाराज शेर सिँघ अनहद वजाए आत्म तूर। जूठ झूठ जो मुख रखावे रसन हलकाया। जगत भुलावे साचा शब्द ना विच वसाया। शब्द चोट प्रभ आत्म डुलाया। मूर्ख मुग्ध दर रहण ना पाया। पाप अपराध प्रभ नष्ट कराया। भरम भुलेखा सारा लाहया। सुण सुण नाम आत्म विकार मिटाया। कलिजुग मिल्या ना साचा थाउँ, ओअँ सोहँ प्रभ राह चलाया। प्रगटे जोत अगम्म अपार, शब्द सुरत दा मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, दर तेरे सर्ब सुख पाया। बेमुख प्रभ आप दुरकारया। जन भगतां किरपा कर, प्रभ पार उतारया। कलिजुग जामा धार, आपणा भेव ना किसे चितारया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारया। कलिजुग जीव अन्त कर, अन्तकाल कलि होए ख्वारी। निहकलंक जोत प्रभ उतारी। जोत सरूपी जामा धार, सर्ब सृष्ट प्रभ आप सँघारी। महाराज शेर सिँघ गुरसिख निर्मल देवे दरस कृष्न मुरारी। त्रेता प्रगटे राम, प्रगट जोत द्वापर पार उतारी। दरस दिखावे प्रभ गिरधार। साध संगत प्रभ लए अवतार। अमृत मुख चुआवे, पी अमृत जीव होए आत्म उज्जयार। अज्ञान अन्धेर प्रभ देह विनासे, जन भगतां देवे प्रभ अमृत भण्डार। गुरमुख विरला कोई रसना लाए। रसन लाग अमृत रस चाखे, आत्म नैण प्रभ खोल्ह वखावे। खुल्हे सुन्न, शब्द धुंन प्रभ देह वजावे, आत्म जोत जगाए। आत्म जगे जोत होए प्रकाश, साची जोत प्रभ विच देह टिकाए। भगत जनां प्रभ सद है पास, जुगो जुग प्रभ दरस दिखाए। कलिजुग जीव रक्ख चरन भरवास, अन्तकाल प्रभ होए सहाए। सचखण्ड सच घर वास, गुरसिक्खां जोत जगाए। देवे पदवी अटल, गुरमुख चरन लाग तर जाए। लग्गे चरन आए गुरसिख। दरस दिखाए मिटाए प्रभ आत्म तृख। घर आए प्रभ जाए लिख। रसना जप जीव मंग साची भिक्ख। महाराज शेर सिँघ साची नाओ, कलिजुग चढ़े पूरे गुरसिख। गुरसिक्खां प्रभ माण दवाया। चार वरन विच वड्आया। ब्रह्मलोक प्रभ आप उलटाया। ब्रह्म वेद दा माण गंवाया। साचा गुरसिख निहकलंक विच ब्रह्मलोक टिकाया। धू गंवाए माण, सवरन सिँघ माण दिवाया। सचखण्ड निवास दे धरवास, प्रभ थान सुहाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा माण दवाया। कलिजुग जीव भेव ना जाणे। जन भगतां सुत्तयां रैण प्रभ खड़ा सरहाणे। कलिजुग जामा धार, माण गंवाए राजे राणे। गुरसिख आत्म नाम प्रभ रंगण, बेमुख भुज्जण जिउँ भठयाले दाणे। निहकलंक जोत निरँजण देवे माण निमाण निमाणे। भगत जनां प्रभ कट्टे रोग, आत्म जोत जगे महाने। बेमुख आत्म सदा सोग, साचा प्रभ ना रसन वखाणे। महाराज शेर सिँघ राउ रंक होए तेरे भाणे। राउ रंक प्रभ इक्क कराए। सर्ब जीव में रिहा समाए। जोत सरूपी जोत प्रभ, विच वसे नज़र ना आए। गुरमुखां अमृत झिरना झिरे नभ, खोल्ह कँवल प्रभ दरस दिखाए। गुरसिक्खां प्रभ साचा ल्या लभ्भ, बेमुखां दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ भगत उधारन, उधरे सो जन

जो शरनी आए। जो जन आए प्रभ सरनाया। कर किरपा प्रभ बैकुण्ठ निवास दिवाया। प्रगट जोत विच मात, आपणा खेल रचाया। साची करे जोत प्रकाश, गुरमुखां प्रभ भेव चुकाया। उप्पर बाशक सेज निवासी, प्रभ नैण मुँधार किसे भेव ना पाया। प्रगट जोत करे प्रभ, घनकपुरी विच भाग लगाया। खाणी बाणी गगन पताली, जोत सरूप दीप तीन लोक जगाया। जोत सरूप प्रभ, प्रभ की जोत सद डगमगाया। जन भगतां खण्ड सच निवास, प्रभ जोती जोत मिलाया। बेमुखां कलिजुग होवे नास, मदि मास आहार बणाया। अन्तकाल होवे नर्क निवास धर्म राज दे सज़ाया। भगत जनां हिरदे प्रभ दरस, सुरत शब्द दा मेल कराया। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरे चरन निवास, अन्तकाल विच जोत मिलाया। मिलाए जोत प्रभ निरँकारी। भगत जनां दी पैज संवारी। गुर की सेवा द्वार कलिजुग जामा धार, प्रगटे कृष्न मुरारी। जन भगतां देवे तार, जिउँ सुदामे पैज सवारी। अन्तकाल ना होए ख्वार, जिन मिल्या शाम मुरारी। महाराज शेर सिँघ सो जन पाए तेरी सार, जिस देवे दरस जोत अगम्म अपारी। जोत दरस कोई जन पाए। बुझी दीपक आत्म प्रभ दए जगाए। सचखण्ड निवासी सच घर सच दर दी बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरखां माण दिवाए। कलिजुग प्रगटे त्रैलोकी नंदन। साध संगत नाम दान गुर दर ते मंगण। कलिजुग गुरसिख जिउँ भरवास चन्दन। सोहँ शब्द उत्तम लिखाए, महाराज शेर सिँघ गुरसिख तोड़े बंधन। जो जन आए चरनीं सीस झुकाए। चरनीं झुके होए निमाणा। साचा शब्द प्रभ सुणाणा। प्रगटे जोत गुण निधाना। कलिजुग लाया शब्द बाणा। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल कलिजुग वरते तेरा भाणा। कलू काल प्रभ आप वरताया। प्रगट जोत खेल रचाया। सतिजुग सच प्रभ लगाया। राउ रंक कर इक्क बहाया। चार वरन प्रभ भेख वटाया। ओअँ प्रभ आप, सोहँ साचा शब्द चलाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, अचरज खेल करे कराया। अचरज प्रभ आप, अचरज खेला। कलिजुग बेड़ा विच शौह दरया ठेला। दर घर जीव कर दरस, प्रगटे जोत प्रभ रंग नवेला। गुरसिख अमृत रस पी, आत्म होवे सुखी सुहेला। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, विछड़यां कलिजुग किया मेला। उठ जीव जाग, शब्द रसना गाए। उठ जीव जाग, प्रभ दरस दिखाए। उठ जीव जाग, निहकलंक जोत सरूप घर में आए। उठ जीव जाग, चरनीं लाग गेड़ चुरासी प्रभ दे कटाए। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ जोत सरूप निज घर आए। सच घर वसे आप अपरम्पर। जोत सरूप सर्ब भरतम्बर। कलिजुग प्रगटाए प्रभ पीर पैग़म्बर। वरताए कहर जोत सरूप विच अंबर। महाराज शेर सिँघ कलिजुग मिटाए सभ अडंबर। साचा सन्त सच घर वसे। पाए दरस आत्म रस रसे। बेमुख जायण साचे दर तों नस्से। पूरन सन्त प्रभ हिरदे वसे। कर्महीण प्रभ भेव ना दस्से। होए अन्धेर जिउँ चन्द मस्से। गुरसिख

जोत जिउँ रवि सस्से। सोहँ प्रगट जोत, शब्द प्रभ साचा दस्से। महाराज शेर सिँघ साध संगत विच सदा वसे। साध संगत प्रभ सदा समाए। मिल प्रभ संगत हरि जस गाए। प्रभ अबिनाशी हरि की जोत नज़री आए। कर दरस गुरसिख पूरा विच्चों हउमे रोग गंवाए। जगे जोत कोट भान, कोई जीव भेव ना पाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, चरन लाग सर्ब तर जाए। साचा जीवण गुरचरन निवास। सचखण्ड जीव प्रभ करे निवास। निर्मल जोत प्रभ सदा प्रकाश। प्रभ अबिनाशी सदा अबिनाश। तीन लोक प्रभ चरन के दास। जोत सरूप सर्ब में वास। कलिजुग प्रगट जोत चार कुन्ट करे प्रकाश। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, चरन लाग जीव ना होवे गर्भ वास। गर्भ वास प्रभ आप मिटाया। जोत सरूपी विच जोत मिलाया। गुरसिख साचे गुर दर पाया। जोत जोत प्रभ जोती जोत डगमगाया। साची दीपक जोत प्रकाशे, बिन बाती बिन तेल गगन जगाया। महाराज शेर सिँघ सति अबिनाशी, आदि अन्त ना किसे जणाया। आदि अन्त जन क्या जाणे। आपणा आप ना जीव पछाणे। कलिजुग भुल्ले जीव निमाणे। छड आत्म रस, रसना रस लुभाणे। किरपा कर प्रभ गुरमुखां अमृत रस प्रभ मुख चुआणे। जीव जन्त सभ होवे वस, साचा प्रभ विच देह जोत जगाणे। बेमुख जायण दर तों नस, सोहँ शब्द वज्जे आत्म बाणे। महाराज शेर सिँघ हिरदे जाए वस, कलिजुग जीव होयण सुघड़ स्याणे। गुरप्रसादि प्रभ दर्शन पाया।
४३० ०१ प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत, कलिजुग दरस दिखाया । गुरप्रसादि साध संगत गुर चरन लाग, रसना हरि हरि हरि जस गाया। ४३० ०१
पूरन होए साध संगत तेरे भाग, जोत निरँजण विच समाया। गुरप्रसादि सोई आत्म गई जाग, सुरत शब्द अमृत झिरना प्रभ निझरों झिराया। गुरप्रसादि अमृत बूंद कँवल में पाए, दस्म दुआर प्रभ खोल्ह वखाया। गुरप्रसादि आत्म धुन वज्जे नाद, सुन समाध प्रभ खोल्ह वखाया। गुरसिख कलिजुग अंदर महाराज शेर सिँघ ल्या लाध, मानस जन्म सुफल कराया।

मूर्ख जीव कलिजुग माया गया लुझ। जगत विकारी होए ख्वारी, आत्म दीपक गई बुझ। प्रभ शब्द लिखाए भेत चुकाए सारे गुझ। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह अवतार, कोई गुरमुख जावे बुज्झ। गुर किरपा गुरमुख जाणे। बेमुख दर ते धक्के खाणे। साध संगत प्रभ पग दरसाणे। जोत सरूपी जोत मेल, गुरसिख सचखण्ड टिकाणे। महाराज शेर सिँघ भाणा मीठा, तेरा गुरसिख जाणे। जोत सरूप चतुर्भुज कहाया। मैं तूं तूं मैं दा भेव चुकाया। मात पित भैण भ्रा झूठा खेल जगत रचाया। जोत सरूप साचा पित, जगत पित आप अख्वाया। साचा प्रभ प्रगट जोत दया कमाए, पूत सपूत विच गोद बिठाया। सचखण्ड निवास साध संगत सच धाम रचाया। झूठी माया जगत की छाया। प्रभ अबिनाशी थिर घर वासी, थिर घर गुरसिख

बहाया। आवे ना जावे ना होए उदासी, जोत सरूप विच जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह, निरगुण सरगुण दोवें रूप उपाया। साचा पित अन्त होए सहाई। साध संगत तेरी वड वड्याई। अन्तकाल साचा प्रभ होए सहाई। सो दर देखे जिस प्रभ साचा दे दिखाई। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह, भेव भूत जगत डुलाई। कलिजुग जामा धार प्रभ दया कमाए। जोत सरूपी जोत धर, गुरसिख गोद सवाए। कलिजुग उलटा भेख कर, आपणा भेव छुपाए। गुरमुखां साचे लेख कर, साची दरगाह दे पहुंचाए। चार कुन्ट भगत जन वेख कर, गोद आपणी लए सुआए। महाराज शेर सिँघ जन तेरी टेक धर, मातलोक फेर ना आए। मातलोक मात गर्भ तजाया। पूरन परमेश्वर प्रगट शब्द सुरत सुरत शब्द गुर सिख सिख गुर विच मिलाया। अज्ञानी जीव ममता झूरत, प्रभ अबिनाशी भेव ना पाया। महाराज शेर सिँघ अकालमूर्त्त, जो किछ वरते आप करे कराया। ममता चुक्के भरम जीव जाए । साचा प्रभ जोत सरूपी दरस दिखाए। माया ममता विच्चों देह जलाए। सति सति सति विच देह वरताए। भगत जगत गति रह जाए। पित पित पित साचा पित अन्त होए सहाए। यति यति यति जीत सर्ब जगत रहि जाए। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, सरन पड़े दी लाज रखाए। साचा प्रभ सर्ब सुख सागर। किन्यां कर्म कर निर्मल उजागर। आत्म वसे विच झूठी देह गागर। गुरमुख कोई बणे कलि साचा शब्द सौदागर। महाराज शेर सिँघ

४३१
०१

कलंकनिह, जोत सरूप आप रत्नागर। रत्न रत माणक मोती। झूठी देह छड, साची जोत मिले विच जोती । जो भरम भुलेखे बैठे जीव, झोली ज्ञान विभूती। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत मिलाए विच साची जोती। जो जन आए जन्म पाए। अन्तकाल साक सैण जाए छड, जिन प्रभ दया कमाए। अन्तकाल प्रभ साचा होए सहाए। जो जन चार जुग होए वड वड प्रभ साचा दरस दिखाए। गुरचरन प्रीती दरस भुक्ख। सच आत्म नीती रक्खे पति, मिले सर्ब सुख। आत्म रहे अतीती, लग्गे दुःख जिस रक्खी कुक्ख। सरबजीत सदा है जीती, मंगया दान प्रभ दरस भुक्ख। बख्शे अवगुण औध जो बीती, खण्ड सच मिटे सभ दुःख। पहुंचाए आप प्रभ साचे की साची नीती, सरबजीत मिले सर्ब सुख। कर दरस मिटे आत्म तृष्ना भुख। छुट्टी चुरासी होई बन्द खलासी, वास ना होवे माता कुक्ख। महाराज शेर सिँघ तेरा दर, कोई विरला पाए गुरमुख। गुरमुख तेरा साचा धाम। जिथ्थे जोत जगाए अटल्ल रमईआ राम। निर्मल जोत जोत निरँजण प्रगटे रामा शाम। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, सोहँ साचा देवे नाम। प्रभ साचा वेखे नदर कर। गुरसिख मिले साचा घर। मात पताल अकाश ना होवे किसे डर। रसन जप जीव स्वास स्वास, दुत्तर जाए तर। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप सद है पास, नर नरायण अवतार नर। नर नरायण साचा प्रभ भगत तरायणा। मूर्ख जीव पा रोवे वैणा। भुल जावे प्रभ साचे

का साचा कहणा। झूठी दुनियां जीव झूठे सद नहीं रहणा । धन्न धन्न धन्न गुरसिख गुर चरनीं बहिणा। बेमुख होण ख्वार, काल अन्त जम डण्ड है सहिणा। साध संगत उतरे पार, जोत सरूप प्रभ देवे साचा लहणा। गुरमुख गुरसिख धर धरवास, प्रभ साचा पेख नैणां। साचा प्रभ साचा धाम जिथ्थे प्रभ वास, साध संगत सचखण्ड मिल बहिणा। होए ख्वार जीव बिल्लाए। मित गति गति मित प्रभ ना जणाए। जगत विहारी भरम भुलाए। साचा प्रभ जोत सरूपी अचरज खेल रचाए। प्रगट जोत देवे दरस, गुरसिक्खां साचा राह दसाए। शब्द शब्द रस आत्म वरखे, आत्म अग्न बुझाए। महाराज शेर सिँघ गुरसिख चरन परस, अन्तकाल विच जोत मिलाए। मिले जोत जोती जीव। मिले शांत जिउँ चातृक मेव। सोहँ नाम जीव महां रस अमृत पीव। महाराज शेर सिँघ सचखण्ड निवासी, जोत सरूप सदा जग जीव। गुरमुख दर साचा लोड़े। साचा प्रभ प्रीत चरन संग जोड़े। अन्तकाल काल अन्त जोत सरूप आप प्रभ होड़े। महाराज शेर सिँघ तेरा दरस, अन्तकाल जो जन लोड़े। अन्तकाल जिस दरस दिखाया। नदरी नदर निहाल कर, कोट अपराधी पार कराया। भगत वछल दया दयाल कर, रुढ़दा बेड़ा बन्ने लाया। जन भगत प्रभ भाल कर, विच संगत मेल मिलाया। साध संगत इक्क डाल्ह कर, अमृत फल सोहँ शब्द प्रभ लाया। विच शब्द कुठाली गाल कर, नाम सुहागा उप्पर चढ़ाया। गुरसंगत चरन निहाल कर, जोत सरूप ब्रह्म ज्ञान दवाया। कलिजुग सरवर गुरसिख माणक मोती रोल कर, साचे प्रभ साचा हार बणाया। नाम नाम नाम धागे विच डाल कर, बैकुण्ठ निवासी कलंकनिह गल आपणे विच पाया। महाराज शेर सिँघ आपणा बिरद संभाल कर, हरिजनां सचखण्ड बहाया।

प्रभ आत्म जोत प्रकाश कर। शब्द सुरत सुरत शब्द स्वास कर। खोल्ह हरन फरन हिरदक साचा वास कर। जन आए प्रभ तेरी सरन, आत्म विच निवास कर। गुरसिख कलिजुग विच ना डरन, प्रभ दरस दासन दास कर। फेर होए मातलोक ना मरन, महाराज शेर सिँघ साध संगत विच निवास कर। चरन लाग गुरसिख तरन। खोल्ह देवे प्रभ हरन फरन । सुरत शब्द शब्द सुरत आत्म दरस प्रभ करन। गुरसिख साचे अन्त होवे ना मरन। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा जीव परस चरन। गुरसिख तेरी वड वड्याई। जोत साची प्रभ विच जोत मिलाई। अज्ञान अन्धेर प्रभ दे मिटाई। जोत सरूपी प्रगट जोत विच ललाट जगाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा गुरसिक्खां देवे सच वड्याई। प्रगट जोत काल कलि करना। जोत सरूपी जोत पलटे प्रभ धरनी धरना। आत्म ज्ञान प्रकाश कर, जो जन आए सरना। साचा प्रभ विच देह निवासे।

शब्द मेल मिलाए प्रभ अबिनाशे। अन्तकाल चार वरन इक्क कराए दासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख दर ते जायण नासे। जोत सरूप प्रभ प्रगटी जोत, कलिजुग जीव ना जाणे। अज्ञान अन्धेर जोत गंवाए, भुल्ले जीव कलिजुग अञ्याणे। गुरमुख विरले प्रभ तेरे सचे रंग माणे। भरम भुलेखे जगत भुलाया। साध संगत प्रभ माण दवाणे। अमृत झिरना विच कँवल नाभ झिराणे। होए प्रकाश जिउँ रवि ससि, आत्म दीप प्रभ जोत जगाणे। शब्द सोहँ साचा राह प्रभ जाए दस्स, बेमुख जीव अन्त नष्ट हो जाणे। सतिजुग होवे तेरा जस, मनी सिँघ तेरी जोत महाने। चार वरन दर आयण नस्स, ना कोई दीसे राजा राणे। कलिजुग अन्धेर जिउँ चन्द रात मस्स, गुरसिक्खां प्रभ जोत जगाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलंकनिह जोत सरूप भाणा कलि वरताणे। तीन लोक प्रकाश जोत। चार वरन होए एका गोत। शब्द सुरत प्रभ करे सति, ब्रह्म ज्ञानीआं जगाए आत्म जोत। महाराज शेर सिँघ कलंक निह, बेमुख दर ते जायण रोत। निहकलंक कलिजुग वहाए वहन्दे वहिणा। गुरसिख विरले मिले साध संगत विच बहिणा। जोत सरूप प्रगट जोत, पूरब जन्म दा प्रभ देवे लहणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, कलिजुग साचा तेरा भाणा सहिणा। वरते सो जो प्रभ वरताए। कोई विरला गुरमुख प्रभ अबिनाशी गाए। प्रगट जोत प्रभ साध संगत दरस दिखाए। शब्द साचा साचा प्रभ सोहँ चलाए। अन्तकाल कलिजुग झूठी खेल मिटाए। सतिजुग साची जोत प्रगटाए। मनी सिँघ विच पूरन जोत जगाए। चार वरन इक्क गोत कर, प्रभ चरनीं लाए। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह अवतार, प्रगट जोत कलिजुग पार कराए। कलिजुग कर्म प्रभ आप विचारे। बेमुख जीव प्रगट जोत प्रभ आप सँघारे। साध संगत सोहे प्रभ चरन दुआरे। मदि मासी अन्तकाल कलि नर्क निवारे। गुरमुख चार वरन तेरे चरन पनिहारे। रसना सोहँ शब्द उचारे। आत्म जोत प्रभ करे जोत आकारे। महाराज शेर सिँघ चार कुन्ट तेरी जै जैकारे। जै जैकार चार कुन्ट कर। गुरसिख धाम साचा बैकुण्ठ कर। सोहँ साचा शब्द प्रभ देवे वर। प्रगटावे जोत अवतार नर। महाराज शेर सिँघ तेरा धाम साचा सर। पंचम तेरी वड वड्याई। जोत निरँजण विच मात दे आई। पताल अकाश मात किसे दिस ना आई। गुरमुख विरले प्रभ आत्म जोत जगाई। साची जोत प्रकाश कर, आत्म दीपक प्रभ देह जगाई। हिरदे विच प्रभ निवास कर, द्वार दस्म दे खुल्हाई। गुरसिख पूरन आस सर्ब गुणतास कर, बुझी दीपक फेर जगाई। सोहँ शब्द स्वास स्वास कर, टुट्टी प्रभ फेर गंढाई। गुरसिख दया प्रभ आप कर, अन्तकाल कलि होए सहाई। विच बैकुण्ठ सचा निवास कर, जोत विच प्रभ जोत मिलाई। सतिगुर मनी सिँघ जोत प्रकाश कर, सतिजुग विच माण दवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत होए सहाई। पंचम धरे जोत रमईआ राम। जिउँ द्वापर घनईआ शाम। कलिजुग निहकलंक जोत सरूपी जोत नाम।

महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे, सतिजुग साचा सोहँ जपाए नाम। आप अडोल जगत डुलाया। आप अभुल जगत भुलाया। प्रगटे जोत बेमुखां दिस ना आया। निहकलंक कलिजुग तेरी अचरज माया। राजा राणा सभ तख्तों लाहया। चार वरन कर इक्क बहाया। वरते कहर प्रभ साचा चरन भंडालीं पाया। धन्न धन्न धन्न मनी सिँघ तेरा बचन सति कराया। प्रगट जोत प्रभ सोहँ सति वरताया। सर अमृत प्रभ साचे अन्तिम खेल कराया। राणा संगरूर चल आए हज़ूर, जोत सरूपी प्रभ पकड़ उठाया। महाराज शेर सिँघ वरताए सति सति सति शब्द प्रगट जोत आप लिखवाया। मनी सिँघ तेरी थांएं पाई घाल। सतिजुग साचा साचा शब्द दिया धन माल। प्रभ दीन दयाल भगत वछल रक्खक आप कृपाल। प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ, जोत सरूप अग्न जगत देवे बाल। जुग चौथा आया प्रभ अन्त करन। गुरमुखां दे दरस प्रभ लाए शरन। बेमुख मानस जन्म कलिजुग हरन। गुरसिख प्रभ साचे दरस कर कलिजुग तरन। सचखण्ड निवास कर फिर होए ना मरन। महाराज शेर सिँघ तेरी सरन आए कलिजुग जीव जन्त सभ तरन। गुरमुख आत्म विचार कर, जोत सरूप वसे निराहार । साची जोत विच देह आकार कर, कर दरस बेड़ा हो जाए पार। निहकलंक कलिजुग जोत निरँजण, जिउँ द्वापर कृष्न मुरार। गुरचरन प्रीती साचा मजन, प्रभ आत्म देवे जोत अधार। कलिजुग जीव ना कोई साक सज्जण, झूठी माया जगत पसार। अन्तकाल सभ ठूठे भज्जण, प्रभ बिन कोई ना लावे पार। बेमुख वेख वेख दर भज्जण, कलिजुग जोत धरे गिरधार। आत्म तीर गुरसिख मन वज्जण, झिरना झिरे अमृत अपार। आत्म अमृत रस साचा गुरसिख पी रज्जण, वरखे अमृत प्रभ किरपा धार। आत्म दीप गुरसिख जगण, सन्ता सिँघ कर चरन प्यार। साचा प्रभ प्रगट जोत गुरसिख सोहँ देवे भजन, आत्म जोत जगावे अपर अपार। सोहँ जप आप धुंन वज्जण, देवे दरस प्रभ अगम्म अपार। महाराज शेर सिँघ प्रगटे, भगत वछल निहकलंक अवतार। गुरसिख घाल तेरी थांए पाई। विच संगरूर गुर सेव कमाई। जगत भुलेखे भुल मति गंवाई। मदि मास रसना आहार बणाई। आत्म जोत प्रभ नज़र ना आई। बेमुख होया मुख छुपाई। प्रगट जोत प्रभ दया कमाई। साध संगत विच बचन सति सति सति लिखवाई। प्रगट कराए लिख्त जो राणे संगरूर छुपाई। मनी सिँघ शब्द अटल भविख्त, निहकलंक जो लिख्त कराई। महाराज शेर सिँघ चार कुन्ट, जोत अग्न लगाई। अग्न जोत जगत जलाया। कलिजुग भाणा प्रभ वरताया। जोत सरूपी जोत प्रभ निहकलंक नां रखाया। गुरमुख विरले दीसे साचा घर, साचा मार्ग प्रभ आप चलाया। प्रगट जोत निहकलंक अवतार नर, महाराज शेर सिँघ आप रघुराया । रघुपत आप रघुनाथ। कर दरस जीव आत्म दु:ख जाए लाथ। नाम रस चातृक पीओ, कलिजुग प्रगटे त्रैलोकी नाथ। निहकलंक नर नरायण, सोहँ शब्द चलावे साची गाथ। गुरसिख कलि उज्जल,

४३४
०१

साचे लेख लिखावे विच माथ। गुरमुखां खोल्ह प्रभ गुंझल, आत्म दीसे प्रभ सदा है साथ। महाराज शेर सिँघ प्रगटे जोत, गुरमुख कर दरस आत्म भुख जाए लाथ। गुरमुख गुरसिख कलि दोवें जन। कर प्रभ दरस मुखों कहे धन्न धन्न धन्न। कलिजुग सोहँ साचा शब्द कोई पावे विरला जन। वज्जे धुन मिटे धुंदकारा, साचा राग प्रभ सुणाया कन्न। उपजे राग शब्द बोध अगाध, आत्म जीव जाए मन्न। कलिजुग देवे सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ ना लागे सन्न्ह। कलिजुग शब्द सतिजुग वरतारा। सोहँ शब्द वरते सच भण्डारा। चार वरन आए निहकलंक दुआरा। अमृत साचा सोहँ साचा नाम गुरसिख भण्डारा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग वरते तेरा सति वरतारा। सति सति सति वरताए आप सतिवादी। शब्दी शब्द चलाए, वजाए धुंन अनाद अनादी। जन भगतां होए सहाए, कलिजुग सिख सर्ब प्रभ साधी। साध संगत तेरे मन वधाई, प्रगटे जोत प्रभ अगाधी। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, बेमुख सृष्टी अन्तकाल कलिजुग साधी। गुरमुख देवे प्रभ आत्म ज्ञाना। चार वरन होवे प्रधाना। सोहँ साचा नाम, साचा प्रभ देवे आत्म ब्रह्म ज्ञाना। गुरसिख साचा धाम, आत्म धर गुरचरन ध्याना। कलिजुग साचा नाम, देवे प्रगट जोत विष्नूं भगवाना। रसना जप सर्ब सुख पाओ, अन्तकाल साचा प्रभ विच जोती जोत मिलाणा। धाम बैकुण्ठ साचा थाउँ, जगावे जोत प्रभ महाना। महाराज शेर सिँघ देवे दरस, गुरसिख गुण निधाना। गुरसिख कर्म विचार प्रभ शब्द सुरत धर आत्म जंदर। गुरसिख जोत आकार कर, साची जोत जगाए विच देह मन्दर। बेमुख दुष्ट दुराचार नर, साचे दर नाचे जिउँ बन्दर। गुरमुख पूरब विचार कर, साचा प्रभ वसे तेरे अंदर। मानस जन्म कलि संवार कर, सोहँ शब्द धर झूठे मन्दर। सोहँ शब्द वड वड्याई। ओअँ प्रभ आप, सोहँ शब्द सतिजुग सति चलाई। सोहँ रसना जीव जप, आत्म दरस प्रभ दे दिखाई। सोहँ मारे शब्द अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाई। कोट निवारे आत्म पाप, सुन्न समाध प्रभ खोल्ह वखाई। साची जोत धरे विच आप, जोत सरूप प्रभ दिस आई। साचा शब्द सोहँ आत्म प्रकाश कर, कलिजुग मिले जीव वड्याई। साची संगत संग निवास कर, निहकलंक कलिजुग जोत प्रगटाई। चार वरन प्रभ चरन दास कर, जोत सरूपी खेल रचाई। महाराज शेर सिँघ सर्ब दुःख नास कर, गुरसिक्खां आत्म धीर धराई। गुरसिख जीवे गुर भरवासे। बेमुख गया कलिजुग कर कर हासे। मुग्ध अज्याण दर जाए नासे। चतुर सुघड़ सुजान, गुरसिख प्रभ दासन दासे। सन्ता सिँघ तेरी सेव महान, आत्म जोत करे प्रभ प्रकाशे। सोहँ शब्द साचा देवे दान, आदि अन्त ना कदे विनासे। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, शब्द सुरत होवे गुरचरन निवासे। देवे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बन्दी तोड़ करे बन्द खलासे। सेवक सेवा सेव कमाई। गति मित मित गति जाण प्रभ होए सहाई। कलिजुग देवे जन भगतां प्रभ आप वड्याई। सतिजुग द्वापर त्रेता विछड़े, कलिजुग

प्रभ लै मिलाई। निहकलंक अवतार नर कलि जोत धराई। गुरसिख उज्जल विच चार वरन कराई। मानस जन्म ना जाए हार, निहकलंक जिस तेरी सरन तकाई। कलिजुग मिल्या साचा दरबार, प्रगट जोत प्रभ दरस दिखाई। धाम बैकुण्ठ साचा घर, गुरमुख जोत प्रभ देह टिकाई। सोहँ जग में साचा नाम, दीसे प्रभ जिस बणत बणाई। पूरन होए सगले काम, अन्तकाल प्रभ भए सहाई। निहकलंक मुरारी नाम, एका जोत भेव ना राई । एक जोत एक प्रभ एका। अछल अछल्ल छल करे अनेका। जन भगतां करे बुध बिबेका। गुरमुख साचे प्रभ चरन टेका। जन भगत साचा प्रभ लिखाए लेखा। जोत सरूपी निहकलंक कलिजुग विरले गुरमुख देखा। अन्तकाल कलि काल कर, कलिजुग कढ जाए भुलेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नैण मुँधारी जगत सँघारी जीव दुराचारी अन्त मुकाया लेखा। कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारी। मदि मास करे रसन आहारी। साचा प्रभ अन्त करे ख्वारी। बेमुख जीव भुल्ल सर्ब होए नर्क उधारी। गुरसिख गुरचरन लग्ग जीउ, साचा नाम अमृत रस सच मिले खुमारी। महाराज शेर सिँघ दरस परस, विच्चों हउमे जाए बीमारी। जो जन आए प्रभ दरस प्यासा। देवे दरस प्रगट जोत प्रभ अबिनाशा। भगत जनां प्रभ दासन दासा। साध संगत विच प्रभ सदा है वासा। गुरसिख चरन प्रीत तेरी रहिरासा। झूठी देह साचा प्रभ विच करे वासा। मिटे चुरासी ना आए गर्भासा। गुरसिख साचा सचखण्ड निवासा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां करे बन्द खलासा। कलि जीव बुधि गंवाई। रसना रस लै आत्म रस गंवाई। सच दर तों नस, आत्म जोत देह बुझाई। झूठी दुनियां हो के वस, विच भुलेखे सुध ना राई। साचा प्रभ आत्म जाए वस, सदा जीव देखे प्रभ दिसाई। गुरमुख विरला कोई प्रभ दरस पेखे, नैण तीजा प्रभ दे खुल्हाई । हँकार निवार गुरसिख प्रभ लाए लेखे, बुझी दीपक प्रभ दे जगाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, बेमुखां कढ्ढे भरम भुलेखे, सिक्खा देवे जगत वड्याई। प्रगटे जोत होए आकार । चार कुन्ट हो जाए हाहाकार। बेमुखां ना दीसे उरार ना पार। साचा प्रभ डोबे विच मँझधार। अट्ठ जेठ चरन धरे ब्यासों पार। दर घर आए प्रभ गुरसिख जाए तार। मनी सिँघ तेरी वड वड्याई, निहकलंक जोत प्रगटे अपर अपार। सन्ता सिँघ तेरे नाम वड्याई, साध संगत किया प्यार। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, पिण्ड भंडाल सतिजुग बणे साचा दरबार । पिण्ड भंडाल बणे साचा धाम। सतिजुग उज्जल होवे नाम। सन्त मनी सिँघ सति तेरा नाम। देह तजाई जोत मिलाई विच जोती राम। निहकलंक जोत प्रगटाई देवे वड्याई, साचा शब्द सोहँ प्रभ देवे नाम। वज्जी वधाई साध संगत, प्रगट जोत प्रभ होए सहाई। महाराज शेर सिँघ शब्द सोहँ देवे मात वड्याई। चरन लगाए प्रभ राउ रंक। गुरसिख वड्याई जिउँ भगत जनक। जोत जगाए प्रभ निहकलंक। जोत प्रगटाए प्रभ विच पुरी घनक। दोए

जोड़ जीव कर निमस्कार वार अनक । गुरसिक्खां जोत सरूप प्रभ जोत जगाए तनक। आत्म देवे दरस, भरम मिटे सभ मनक। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, देवे दरस कलिजुग बार अनक। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाशे। विच मात पाताल आकाशे। गुरसिख साचा साची देह करे विच प्रभ वासे। शब्द बाण सोहँ प्रभ लाया, बेमुख दर ते गए नासे। साचा राह सतिजुग चलाया। दीनां नाथ दु:ख रोग विनासे। महाराज शेर सिँघ तेरी माया, बेमुख ना सोहण तेरे चरन पासे। बेमुख दर प्रभ दुरकारया। कर किरपा गुरसिख उतारया। बेमुख जन्म झूठे धन्दे हारया। गुरसिख साचे साचा नाम सोहँ रसन उचारया। जन्म मरन मरन जन्म आपणा आप संवारया। तरन तारन तारन तरन प्रभ पार उतारया। दिवस रैण रैण दिवस ना किसे विचारया। साचा सतिगुर सिख तेरा भरम नवारया। रसना जप जीव नित प्रभ, खुल्हे दस्म दुआरया। जोत जगाए मात प्रभ, दर दीसे सचखण्ड द्वारया। मानस जन्म फिर मिले ना जग, लक्ख चुरासी गेड़ लिखा ल्या। सोहँ जप जीव जग जित्त, मदि मास निहकलंक दुरकारया। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे जुगा जुग जुगा जुग नित, साचा प्रभ कर निमस्कारया। गुरचरन प्रीती कर साचा हित, जोत सरूपी प्रभ करे आकारया। जोत सरूपी करे आकारा। जगत खपाए उपाए कर खेल न्यारा। जोत जगाए बुझाए आप सद उज्जयारा। भुलाए हिलाए जलाए कलिजुग निहकलंक अवतारा। गुरसिख तराए दरस
४३७ दिखाए प्रभ निगम कर विचारा। बेमुखां दिस ना आए, जोत सरूपी विच पूरन सिख समाए, शब्द चलाए अगम्म अपारा। ४३७
०१ त्रैलोकी नाथ शब्द वरताए, आपणी जोत विच देह टिकाए, मूर्ख मुग्ध ना करन विचारा। गुरसिक्खां प्रभ बूझ बुझाए, ज्ञान ०१
जोत हिरदा हो जाए, आत्म उपजे शब्द धुन्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग होवे तेरा सच दुआरा। प्रगटे जोत निहकलंक अभुल। शब्द अन्धेरी जगत जाए झुल। बेमुख जीव कलि जायण रुल। ओअँ प्रभ आप सोहँ जाप, दूसर कोए ना तुल। मदि मासी नर्क निवासी वांग सिमल गए हुल। गुरमुख आत्म प्रभ निवासी, अन्तकाल कलिजुग कर बन्द खलासी, गुरसिख जाए ना डुल। महाराज शेर सिँघ घनकपुर वासी, साध संगत तेरे दरस प्यासी, कलिजुग उत्तम जिउँ कँवल फुल । कँवल नाभ नाभ कँवल प्रगटे प्रभ उप्पर धवल। जोत सरूप सर्ब सृष्ट रिहा मवल। मायाधारी करे ख्वारी सृष्ट सबाई होवे बवल। महाराज शेर सिँघ तेरे नाम वड्याई, कुन्ट चार होए उप्पर धवल। चार कुन्ट होवे धुंदूकारा। जोत सरूप प्रभ भए अवतारा। गुरमुखां घर जै जै जैकारा। बेमुखां घर हाहाकारा। गुरसिक्खां दीसे सचखण्ड दुआरा। बेमुखां प्रभ नर्क निवारा। चरन आए प्रभ होए सहाए, कर किरपा पार उतारा। बेमुख तराए जो आए सरनाए प्रभ आत्म चिन्त मिटाए, आत्म जोत करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, गुरसिक्खां देवे सोहँ साचा अमृत भण्डारा। देवे अमृत प्रभ

आप भण्डारी। सर्ब सृष्ट इक्क जोत आकारी। सदा अडोल आप गिरधारी। मुकंद मनोहर नरायण मुरारी। जोत सरूप निहकलंक ना दीसे देह धारी। करे कराए आप सभ, प्रगट जोत सृष्ट सँघारी । गुरसिख विरले ल्या लभ्भ, दे दरस प्रभ पैज संवारी। अमृत झिरना झिराए प्रभ विच नभ, खोल्ह देवे दस्म दुआरी। महाराज शेर सिँघ करे कराए सभ किछ आप, एका जोत आप गिरधारी। धरे जोत पाताल आकाश विच माती। विच आकाश जोत प्रकाश, जगे जोत बिन तेल बाती। विच पताल प्रभ नैण मुँधार, बाशक सेज होए प्रभ राती। कलिजुग निहकलंक अवतार, प्रगटे जोत विच लोकमाती। कलिजुग जीव होए ख्वार, कलिजुग जीवां टुट्टी नाती। सतिजुग साचा नाम अधार, सोहँ शब्द स्वांत स्वांती। एका शब्द एका जोत, चार वरन प्रभ देवे एका बाती। साची जोत करे प्रकाश, आत्म जोत जगावे निर्मल बाती। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग बेमुखां मारे आत्म शब्द काती। शब्द सोहँ साचा बाण प्रभ आप चलाया। कुन्ट चार चार कुन्ट जोत अग्न अग्न जोत जगत जलाया। कलिजुग जीव होए बेमुख, प्रभ साचा नज़र ना आया। मदि मास रसना पीव, आत्म बुझाई आपणी दीव, प्रभ नर्क निवास दवाया। गुरमुख निर्मल कला मिल सदा चरन जीव, सोहँ शब्द जिस रसना गाया। अमृत रस साध संगत रस पीव, अमृत मेघ प्रभ आप वरसाया। अमृत पीव सदा जग जीव, साची दरगाह प्रभ माण दवाया। कलिजुग सतिजुग रखाए प्रभ साची नीव, प्रगट जोत सोहँ शब्द चलाया। लक्ख चुरासी प्रभ तेरी जीव, बेमुख मदि मास आहार बणाया । वेख कलिजुग वरते की, निहकलंक अठु जेठ चरन विच भंडालीं पाया। दुःख भुक्ख भुक्ख दुःख भुक्ख जगत रुलाया । उलटा जीव विच मात कुक्ख, प्रभ उलटा बिरछ लगाया। कलिजुग जीव होए बेमुख, भुल गए जिस जन्म दवाया। गुरसिख विरले प्रभ दर्शन भुख, दिवस रैण रैण दिवस निहकलंक शब्द रसना गाया। धन्न धन्न धन्न माई जिस रक्खया कुक्ख, साचे प्रभ विच डेरा लाया। सतिजुग उत्तम कलिजुग होए मनुक्ख, जोत सरूप प्रभ विच सिख समाया। कर दरस जीव मिट जाए दुःख, प्रभ अबिनाशी निज घर में आया। साध संगत होए आत्म सुख, महाराज शेर सिँघ सति बचन लिखाया । सति बचन लिखाए सतिगुर पूरा। गुर बचन ना होए अधूरा। गुर दाता गुर दीसे सूरा। रसना जपे सोहँ मिले आत्म सरूरा। जगे जोत होए प्रकाश जिउँ कोहतूरा। साचा शब्द वजाए विच देह वाजा अनहद तूरा। गुरमुख साचा नाम प्रभ ते लै मिट जाए सगल वसूरा। अमृत झिरना वरखे मेंह, किरपा करे जा सतिगुर पूरा। झूठी सृष्ट साचा गुर चरनीं नेह, साध संगत प्रभ सदा हज़ूरा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, गुरसिख तेरी आसा पूरा। गुरसिख बूझे प्रभ आप बुझाए। खोल्ह त्रैकुटी प्रभ दरस दिखाए। आस पास पास आस साचा प्रभ विच समाए। सभ स्वास ग्रास होए प्रकाश, आत्म जोत प्रभ दे जगाए। कोट

अपराध करे प्रभ नास, अमृत बूंद मुख चवाए। गर्भवास ना होए जीव, साचा प्रभ होए सहाए। आत्म चिन्ता होवे नास, निजानंद निज मांहि समाए। थिर घर वासी करे विच वास, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश विच अन्धेर जोत टिकाए। महाराज शेर सिंघ प्रगट जोत, कलिजुग अंदर निहकलंक होए दरस दिखाए। निहकलंक प्रभ अनाथां नाथ। सृष्ट ना जाणे प्रभ सगला साथ। कलिजुग अग्न बेमुख मग्न, गुरसिक्खां रक्खे दे कर हाथ। बेमुख नग्न गुरसिख आत्म जोत जगण, सोहँ नाम साचा मिल्या गाथ। महाराज शेर सिंघ जोत निरँजण, कर दरस जीव दुःख जाए लाथ। दुःख भुख प्रभ दरस मिटाए। जो जन आए चरनीं सीस झुकाए। पतित पावन दुःख भय भंजन, प्रभ भए सहाए दरस अमोघ कोई विरला गुरसिख पाए। हउमे विच्चों जाए भाग, सोहँ शब्द जो रसना गाए। आत्म रहे ना चिन्ता रोग, जिन मिल्या प्रभ हरि राए। साचा भोग आत्म रस जीव भोग, आत्म तृष्न मिटाए। कलिजुग खाया काम क्रोध, अग्न जोत प्रभ दे जलाए। मानस जन्म जीव लै अन्तिम सौं ना रहे, रसना हरि हरि हरि गुण गाए। जोत सरूपी प्रगट अगाध बोध, बोध अगाध प्रभ आप लिखाए। महाराज शेर सिंघ गुर सतिगुर पूरा, सरन पड़े की लाज रखाए। सरन आया जो जन सरनाई। साचे दर मिली वड्याई। शब्द सोहँ साचा प्रभ दे झोली पाई। रसना जप जीव, आत्म जोत जगाई। महाराज शेर सिंघ निहकलंक अवतार, प्रगट जोत कलिजुग ब्याध मिटाई। कलिजुग

४३८
०१

होवे अन्ध अन्धयारा। चार कुन्ट होवे धुंदूकारा। झूठी सृष्ट झूठा पसारा। प्रगटे जोत निहकलंक अवतारा। सृष्ट सँघारे आप गिरधारा। नर हरि हरि नर जोत सरूप निराधारा। महाराज शेर सिंघ तेरे भाणे वरते हाहाकारा। हाहाकार कर जीव बिल्लाए। अग्न तृष्ना जगत जलाए। कोई ना दीसे जगत सहाए। प्रभ अबिनाशी कहर वरताए। जल थल थल जल इक्क हो जाए। कुन्ट चार होए ख्वार, हाहाकार कर जीव बिल्लाए। निहकलंक तेरी शब्द मार, कलिजुग जाए वहन्दी धार, कोई ना होवे अन्त सहाए । महाराज शेर सिंघ जोत सरूप पूरन अवतार, भगत जनां प्रभ देवे तार, जोत सरूप दरस दिखाए। दे दरस प्रभ दर्द निवारे। प्रगट जोत जुगो जुग जन भगतां पैज संवारे। जोत निरँजण निरँजण जोत इको एका एका ओंकारे। बेमुख कलिजुग गए माया लाथ, गुरसिक्खां मिल्या सोहँ नाम अधारे। महाराज शेर सिंघ कलिजुग प्रगटे साची जोत, ना कोई दीसे महिल मुनारे। सोहँ सुरती सुरत ध्यान। साचा शब्द उपजे ज्ञान। अभुल भुल ना जाए विष्नूं भगवान। प्रभ का शब्द चले दिवस रैण। साची संगत जति सति सति जति कर गुर चरनीं पैण। महाराज शेर सिंघ गुरमुख विरला कोई पेखे नैण। कँवल नैण नैण कँवल प्रभ तेरा रूप। साचा एक तेरा सति सरूप। कलिजुग प्रगटे निहकलंक साचा भूप। महाराज शेर सिंघ पवण जोत जोत पवण अवण गवण तेरी महिंमा अनूप अनूप रूप कलि तेरा प्रभ। जोत निरँजण कलि प्रगटावे झब।

४३८
०१

गुरसिख विरला गुर चरनीं जाए लग। आत्म दीप जीव जाए जग। बेमुख पछाड़े महाराज शेर सिँघ पकड़ शाह रग। बेमुख सो जन मदि मास आहारी। साची जोत एक निरँजण निरँकारी। रसना लोभी कलि होए ख्वारी। प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ कलिजुग पार उतारी। करे पुकार जीव, सुणे प्रभ दाता। सर्ब कला समरथ, सर्ब गुण दाता। बेमुखां पाए नथ, गुरसिक्खां रक्खे सिर हाथा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे, निहकलंक नाथ अनाथा। मनी सिँघ सच पाया भेव। घनकपुरी पकड़ ल्याया देवी देव। अन्तकाल मिटाई सभ दी सेव। सच दर विष्नूं भगवान, विष्नूं सभ चरन लगाए सेव। साचा नाउँ सोहँ ल्या कलिजुग साचा मेव। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, बिरथा जाए ना तेरी सेव। सिख सादक प्रभ सेव कमाए। चरन धूढ़ धूढ़ चरन लै मस्तक लाए। रोग सोग जगत विजोग प्रभ दे मिटाए। दे दरस अमोघ प्रभ होए सहाए। पूरन जोग, जो जन रसना सोहँ गाए। आत्म रस मिले भोग, जीव चरनीं सीस झुकाए। कलिजुग छड्ड जीव लाज लोक, फेर वेला हत्थ ना आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, सरन पड़े दी लाज रखाए। सुरती सुरत दयाल कर, देह दया कमाए। दुखियां दुःख प्रभ भाल कर, दे दरस दुःख मिटाए। आत्म मुख ज्वाला बाल कर, सभ भस्म कराए। आत्म लाल गुलाला लाल कर, विच निर्मल जोत टिकाए। झूठी देह साचा दीपक बाल कर, प्रभ अबिनाशी करे रुशनाए। सभ दुःख जंजाल निकाल कर, सुखां विच वसाए। जो जन रसन मदि मास आहार कर, किया आपणा पाए। साचा शब्द लेख करतार कर, एका रंग वरताए। मात पूत सुरत संभाल कर, प्रभ साचा सहाए। गुण निधान महाराज शेर सिँघ बाल उधार कर, आत्म शांत वरताए। नाड़ी बहत्तर प्रभ रोग गंवाया। मरू देवा छिआ देवी संग अग्न जलाया। साचा फल साचा प्रभ झोली पाया। हिरदक गुण विचार कर, प्रभ पूरन दया कमाया। दर खड़े सवाली ऊँचा दरबारा। कोई ना जावे खाली, जन तेरा सहारा। सच दो जहानां वाली, निरधर निराधारा। जीव जन्त दा आप प्रभ वाली, आप प्रभ गिरधारा। कलि जीव घाल बहुत घाली, तुध बिन ना दीसे कोई सहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर किरपा पार उतारा। निर्धन आस प्रभ सरधन पूर। जो जन आए खड़े दर, प्रभ जोत प्रगटे हज़ूर। मिले साचा वर, देह दुःख हो जाए दूर। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर निर्मल कुक्ख धराए नूर। प्रभ का रूप अगम्म, कलिजुग जीव ना जाणया। प्रभ का रूप अगम्म, एक जोत आकारया। प्रभ का रूप अगम्म, सभ वरते संसारया। प्रभ का रूप अगम्म, साचा प्रभ जुगो जुग लए अवतारया। प्रभ का रूप अगम्म, एक सरूप सर्ब पसर पसारया। प्रभ का रूप अगम्म, जन भगतां देवे जोत अधारया। प्रभ का रूप अगम्म, प्रगट जोत कलिजुग निहकलंक बेमुख गर्ब निवारया। प्रभ का रूप अगम्म, सुहाए बंक धरे जोत जगत एकँकारया। प्रभ का रूप अगम्म, गुरमुखां देवे साचा

नाम अधारया। साचा नाम साची वड्याई । गुरसिख गुर दर ते पाई। जन्म जन्म दी मैल गंवाई। राज हँस हँस राज राज गुर दर ते पाई। सरबंस लाज रक्खे प्रभ, अन्तकाल होए सहाई। प्रगटे जोत निहकलंक विच मात, साची लिख्त प्रभ आप लिखाई। सतिजुग होवे सिर मनी सिँघ तेरे ताज, सतिजुग मिले जगत वड्याई । महाराज शेर सिँघ रक्खे लाज, पूरी सन्त जो सेव कमाई। नर नरायण प्रगटे घनईआ। सतिगुर मनी सिँघ जोत जगईआ । साचा तख्त सतिजुग सति दवईआ। चार वरन चल आए शरन होवे एका भईआ। बेमुख मरन जन्म मानस हरन, कलिजुग डोबे प्रभ नईआ। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, राउ रंक इक्क करईआ। एक शब्द एका गुर। साचा शब्द लिखाया धुर। साध संगत बहे गुर चरनीं जुड़। सन्त मनी सिँघ फुल्ल बरसावण सुर। देवे वड्याई महाराज शेर सिँघ वाली घनकपुर। मनी सिँघ सच माण दवाया। सचखण्ड निवासी मातलोक सच तख्त दवाया। प्रगट जोत निहकलंक सतिजुग सतिगुर मनी सिँघ तख्त बहाया। चार कुन्ट वजाया डंक, सोहँ साचा राग सुणाया। एका किया सभ राउ रंक, ऊँच नीच कोई दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ सतिजुग वरते सोहँ साचा शब्द चलाया। साचा शब्द साचा दीबाण। चार वरन होए प्रभ की आण। रसन जप जीव सोहँ आत्म रस माण। गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द घर घर पछाण। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी निहकलंक खेल रचाया आवण जाण। प्रभ आवे जावे जगत आकारी। जोत सरूप सदा निरहारी। कलिजुग प्रगट निहकलंक सृष्ट सँघारी। जुगो जुग आए जामा धार एकँकारी। कलिजुग लै अवतार, साची जोत पुरी घनक उतारी। विष्नूं बंसी सर्ब सरबंसी वरताए काल आप करतारी। महाराज शेर सिँघ निहकलंक जिउँ द्वापर कृष्न मुरारी। धरे जोत जगत पित दाता। कोई जाणे ज्ञानी ब्रह्म ज्ञाता। दर घर घर दर आए लेख लिखाए पुरख बिधाता। आत्म दु:ख अंसा भुक्ख, बिन अंस झूठा जगत का नाता। कर किरपा कृपानिध फल लाए सिंमल रुक्ख, जिन पूरा प्रभ पछाता। महाराज शेर सिँघ देवे आत्मा सिँघ गुरचरन प्रीत साचा नाता। उठ जीव जाग, कलिजुग जीव विहाया । कलिजुग जामा धार, घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। उठ जीव जाग पूरन होए भाग, जोत सरूपी प्रभ दिस आया। उठ जीव जाग वज्जे धुन नाद, सोहँ साचा शब्द सुणाया। उठ जीव जाग मिटे विवाद, खोल्ह किवाड़ प्रभ दरस दिखाया। उठ जीव जाग प्रभ रक्खे लाज, निरहारी निरवैर प्रभ जोत सरूप प्रभ विच सिख देह समाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी घर में आया। सोहँ शब्द वरते साचा पहली माघ, समरथ पुरख सति बचन लिखाया। निहकलंक सर्ब सृष्ट हत्थ तेरे वाग, करे सो जो तेरे मन भाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जोत सरूपी कलिजुग खेल कराया । कलिजुग अन्तिम प्रभ अन्त कराए। प्रगट जोत निहकलंक राउ रंक सभ चरनीं लाए। साचा शब्द धुन वजाए धनक, वाली

हिन्द पकड़ उठाए। महाराज शेर सिँघ तेरी जोत तनक कोई जीव झल ना पाए। जोत जगाए प्रभ जुगत कर। साची जोत देवे विच देह धर। करे प्रकाश सूझे साचा दर। निहकलंक तेरी सरन, अन्तकाल कलि सभ आए नारी नर। महाराज शेर सिँघ वासी पुरी घनक, चरन लाग साध संगत जाए तर। तारे आप प्रभ समरथ। कलिजुग महिमा निहकलंक अकथ्थ। गुरमुख विरले पाई एह साची वथ। सृष्ट सबाई लथ्थी भथ। बेमुखां नक्क प्रभ पाई नत्थ। गुरसिक्खां सोहँ उप्पर प्रभ धरे हत्थ। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, प्रगटे अकाल मूरत समरथ। सोहँ जप नाम होवे आत्म रासा। कूड़ा छड्ड जगत भरवासा। साचा शब्द जिउँ कंचन पासा। झूठी देह विच जोत प्रकाशा। आत्म धर ध्यान प्रभ करे निवासा। साध संगत जीवे गुरचरन भरवासा। अमृत नाम पीवे, जन्म मानस होवे रासा। आत्म जोत जगाए, देवे गुरचरन प्रीती सचखण्ड निवासा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, निहकलंक विच सिख दे वासा। सच वस्त सच घर ते पाईए। निरँजण जोत कलिजुग प्रकाश, बुझी आत्म जोत जगाईए। भरम भुलेखे होवण नास, स्वच्छ सरूप प्रभ दर्शन पाईए। रसना लाए जो जन मदि मास, साची दरगाह मिले सज़ाईए। साध संगत प्रभ सद है वास, महाराज शेर सिँघ तेरी सच वड्याईए। वड्डा आप वड्डी वड्याई। कलिजुग प्रगट जोत झूठी खेल मिटाई। जामा ल्या धार, प्रभ साचा दिस ना आई। जुगो जुग लै अवतार,
४४२ ०१ अछल छल छल आप कराई। कलिजुग माया करे ख्वार, बेमुखां दिस ना आई। जन भगतां खोल्ह दस्म दुआर, प्रभ आत्म जोत जगाई। कलिजुग आया जामा धार, महाराज शेर सिँघ निहकलंक नाम धराई। निहकलंक जन तेरी ओट। सोहँ जीव आत्म लाई चोट। बेमुख जीव बिल्लायन प्रभ कढ्ढे खोट। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, साची शब्द लगावे चोट। सोहँ बाण प्रभ जगत चलाया। चार कुन्ट हाहाकार कराया। जोत सरूप प्रगट जोत अग्न जोत जगत जलाया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, अन्तकाल कलि आण कराया। अन्तकाल कलिजुग करा के। सतिजुग साचा जावे ला के। राउ रंक इक्क कराए, सतिगुर मनी सिँघ माण दवा के। आत्म जाए जोत जगा के। निहकलंक सिर छत्र झुला के। राजा राणा सभ शरन लगा के। मस्तूआणा सच धाम बणा के। सर अमृत जाए प्रभ थेह करा के। लिख्त मनी सिँघ तेरी सति करा के। राणा संगरूर डिग्गे चरनी आ के। बीती जाए भुल्ल बख्शा के। बाणी बोध प्रभ लाए सेवा, कोई ना जाए आपणा आप वखा के। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, दरस दिखावे संसा लाह के। दरस दिखाए नर निरँकारा। करे जोत विच देह उज्जयारा। होवे प्रकाश जीव प्रभ खेल न्यारा। देवे खोल्ह प्रभ दस्म दुआरा। झिरना झिरे अमृत अपर अपारा। जोती जोत मेल प्रभ करे एक आकारा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, भुल गया संसारा। झूठा जगत प्रभ आप भुलाया।

जोत सरूपी नज़र ना आया। मदि मास अहार बणाया। सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास दवाया। थिर घर वासी कलिजुग वरते तेरी अचरज माया। कलिजुग जामा धार जोत सरूप चतुर्भुज कहाया। सांवल सुंदर कँवल नैण द्वापर शाम रघुराया। कलिजुग आया जामा धार, निहकलंक नाम धराया। कलिजुग झूठे जीव ना रहण, साचा शब्द सति लिखाया। साध संगत रल चरनीं बहिण, अन्तकाल होए प्रभ सहाया। झूठी दुनियां पा रोवे वैण, साचा प्रभ दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, राउ रंक जिस इक्क कराया। प्रगटे जोत राजन राजा। सभ सृष्ट जिस साजन साजा। अनहद शब्द धुन वजाए वाजा। प्रगटाए जोत निहकलंक अवतार विच देस माझा। महाराज शेर सिँघ जो जन आए चरन द्वार, सरन पड़े दी राखे लाजा। सरन पड़े प्रभ दया कमाई। विनसे दुःख आत्म सुखदाई। आत्म चिन्ता प्रभ सगल मिटाई। साची प्रभ देवे वड्याई। लिख्त लेख लेख लिख्त दर घर आए जाए लिखाई। कलिजुग प्रगट्या जोत सरूपी भेख, ऐसी कला प्रभ वरताई। साचा प्रभ जोत सरूप, खोल्ह नेत्र देख जीव भरम भुलेखे सर्ब मिट जाई। जो जन आए वेखा वेख, अन्त जाए उठ पछताई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तेरा भेख, किसे गुरमुख बूझ बुझाई। गुरमुख तेरा एका राग। सोहँ शब्द धुन साचा नाद। शब्द लिखाए प्रभ बोध अगाध। जोत प्रगटाए प्रभ आदि जुगादि। भगत सहाए प्रभ सदा संग साध। महाराज शेर सिँघ शब्द सुरत सुरत शब्द साची धुंन वजाए नाद। उपजे धुन मिटे अन्धयारा। चले पवण खुल्हे दस्म दुआरा। ना दीसे प्रभ कर बैठा जोत पसारा। कलिजुग गुरसिख मिल्या निहकलंक तेरा सच दुआरा। महाराज शेर सिँघ जन भगतां देवे अमृत साचा नाम भण्डारा। साचा अमृत प्रभ दर पाईए। पी अमृत जीव आत्म तृप्त मिटाईए। हउमे ममता मैल विच्चों रोग गंवाईए। साचा प्रभ निज घर मांहि पाईए। निजानंद निज आत्मा मांहि उपजाईए। जगे जोत होए प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईए। खुल्हे त्रैकुटी प्रभ दीसे पास, भरम भुलेखे सारे लाहीए। महाराज शेर सिँघ तेरे हत्थ वड्याई, जिस देवे सो दर तेरे तों पाईए। पाए सो जिस प्रभ दया कमाई। पाए सो जिस प्रभ हिरदे रिहा समाई। गावे सो सोहँ शब्द प्रभ साची धुन वजाई। नाहवे सो जिस आत्म झिरना प्रभ दे झिराई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, तेरी जोत होवे रुशनाई। आया वक्त जोत प्रकाशे। निरँजण जोत सदा अबिनाशे। निहकलंक सर्ब घट वासे। वरन चार होए तेरे दासे। महाराज शेर सिँघ जोती जोता, जोत सरूप सर्ब में वासे। जोत सरूप सर्ब का ज्ञाता। निहकलंक कलि पुरख बिधाता। साध संगत कलि साचा गुर चरनीं तेरा नाता। धन्न धन्न धन्न गुरसिख कलिजुग निहकलंक प्रभ पछाता। उज्जल होवे गुरसिख कलिजुग मिलाए मेल आप बिध नाता। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरा, सदा तेरे रंग राता। रंग रवे तेरा गुरसिख। सोहँ साची

दर देवे प्रभ भिख। रसना जप मिटी आत्म तृख। गुण निधान प्रगट जोत, साचे लेख गया लिख। सतिजुग उत्तम गुरसिख विच मुन रिख। महाराज शेर सिँघ तेरे हत्थ वड्याई, जन भगतां लेख साचे लिख। भगतन देवे प्रभ वड्याई। जुगो जुग पैज रखाई। कलिजुग जामा धार होए सहाई। जोत सरूपी जोत मेल, प्रभ जोत मेल कराई। बिन बाती बिन तेल, गुरसिख तेरी आत्म जोत जगाई। कलिजुग किया साचा मेल, निहकलंक तेरी वड्याई। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप अचरज कलिजुग किया खेल, सृष्ट सर्ब भरम भुलेखे पाई। भरम भरम भरम विच सर्ब जगत भुलाया। काम क्रोध हँकार प्रभ विच वसाया। जोत सरूपी खेल कर, झूठे धन्दे जगत भुलाया। कलिजुग बेड़ा विच शौह दरयाए ठेल कर, आप अडोल जगत डुलाया। गुरसिक्खां जोती मेल कर, गुर शब्दी मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, तेरा भेव किसे ना पाया। भेव भाव कोई जीव ना जाणे। गुरमुख विरला कोई हरि रंग माणे। जो जन चले प्रभ के भाणे। धंन धन्न धन्न गुरसिख सोहँ रसना शब्द वखाणे। बेमुख भुज्जण जिउँ भठयाले दाणे। निहकलंक प्रगट जोत, तख्तों लाहे राजे राणे। महाराज शेर सिँघ त्रैलोकी नंदन, तेरे चोज वडाणे। त्रैलोकी नाथ सर्ब घट वसे। आपणा भेव किसे विरले गुरमुख दस्से। करे प्रकाश जोत जिउँ रवि सस्से। बेमुख दर तों जायण कलिजुग नस्से। कलिजुग ना दीसे जिउँ चन्द मस्से। निहकलंक छत्र तेरे सीसे।
४४४ ०१ महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, कलिजुग मिटाया कर बीस इकीसे। इकीस बीस जीव ना करे प्रभ साचे की रीस। कलिजुग ४४४ ०१
जीव कलिजुग माया विच जायण लीस। साचा छत्र झुल्ले निहकलंक तेरे सीस। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा सतिजुग दूसर कोए ना दीस। एका दूजा प्रभ भउ चुकाया। एका शब्द सोहँ सतिजुग चलाया। चार वरन वरन चार प्रभ इक्क कराया। जोत सरूपी जोत धर, अज्ञान अन्धेर मिटाया। थिर घर वासी सर्ब निवास कर, आपणा भेव चुकाया। कलिजुग बेमुखां नास कर, मदि मास आहार बणाया। गुरसिख उज्जल जिउँ चन्दन प्रभास कर, सोहँ साचा राग सुणाया। दुःख दर्द सर्ब नास कर, साचा आत्म रंग चढ़ाया। कलिजुग गुरसिख रसना रास कर, जोत सरूप महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। दिखावे दरस आप बनवाली। जोत सरूप सृष्ट का माली। बेमुख जाए जहानों खाली। साध संगत साची जोत प्रगटा ली। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी, तेरी खेल निराली। न्यारी खेल न्यारा आप। सर्ब सृष्ट का माई बाप। जीव जन्त उपाए, उपाया आपणा आप। सर्ब सृष्ट खपाए भुल्ले जीव साचा प्रभ जाप। कलिजुग वहिण वहाए, कोई दिस ना आए, ना कोई दीसे माई बाप। महाराज शेर सिँघ शब्द वरतारा, सोहँ होवे वड प्रताप। गुर प्रसादि, गुर दर ते आईए। पी अमृत अमर अडोल आत्म तृखा मिटाईए। अमृत आत्म रस जन विरला पाए। साध संगत प्रभ तेरा वास, गुर गोबिन्द विच मात दे आए।

बेमुख जीव दर जाए नास, अन्तकाल ना कोख सहाए। भगवान भगत राह जाए दस्स, दे दरस जोत प्रगटाए। पी अमृत जीव हउमे जाए नस्स, दुःख रोग देह रहण ना पाए। सोहँ बाण प्रभ मारया कस, कलिजुग जीव सर्ब बिल्लाए। निहकलंक ना किसे होवे वस, जोत सरूपी जोत मिल जाए। गुरसिख पी अमृत रस, महाराज शेर सिँघ पार कराए। गुरसिख तेरा साचा धाम, सचखण्ड निवास। जोत जगाए रमईआ राम, प्रभ चरन निवास। दीसे कृष्ना शाम, ना होवे गर्भवास। कलि पूरन होया काम, महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, त्रेता राम द्वापर घनईआ शाम। सति मेहरवान सतिजुग मिटाया। प्रगट जोत रमईआ राम, त्रेता अन्त खपाया। धरे जोत घनईआ शाम, अर्जन आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाया। गीता करे जगत प्रकाश, भगत वछल मुख वाक लिखाया। कलिजुग जामा धार, घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। निहकलंक नर नरायण अवतार, जोत सरूपी खेल रचाया। छड्डी देह अपार, आपणा भेद कलिजुग आप छुपाया। करे कराए वरते संसार, शब्द बाण प्रभ जगत चलाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग कलंकनिह, कलिजुग खपाए सतिजुग साचा लाया। सतिजुग लगाए सतिजुग सतिवादी। सोहँ शब्द नाद वजाए नादी। जगत जोत सरूपी खेल कर, भुल्ली सृष्ट सभ साधी। जन भगतां जोती मेल कर, कराए मेल जोत विस्मादी। गुरमुख गुरसिख साचा नाउँ सोहँ रसन अराधी। महाराज शेर सिँघ जोती जोत सरूप साची जोत किसे विरले गुरसिख लाधी। अचरज खेल पारब्रह्म रचाया। ब्रह्मा गंवाए माण, विच जोत मिलाया। साचा कर्म पछाण, सिँघ पाल हत्थ सृष्ट फड़ाया। गुण गाए गुणी निधान, ब्रह्मलोक गुरसिख टिकाया। ध्रू तजाया वक्त सरनी जोत मिलाया। पूरन गुरसिख तेरे भाग, निहकलंक माण दवाया। सचखण्ड निवासी साच दर, दर अग्गे बहाया। सतिजुग साचे सच प्रभ मिले वड्याई, सिँघ सवरन दरबान बहाया। कलिजुग जामा धार, महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां सचखण्ड निवास दवाया। गुरमुख कलिजुग भगत जन, जामे बहत्तर उुजल करे निहकलंक साचा बचन गुर गोबिन्द लिखाया। कलिजुग होया धन्न धन्न धन्न, निहकलंक अचलत दिखाया। जगत भुलाया कलि पार उतारे, जोत सरूपी जोत निरँजण कर नदर गुरसिख तराया। साचा प्रभ सच दे वड्याई, विच जोती जोत मिलाया। स्वर्ग नर्क नर्क स्वर्ग सर्ब घट वासी, गुर गुरमुख सचखण्ड वखाया। प्रगटे जोत प्रभ अबिनाशी, भाग घनकपुरी लगाया। साध संगत होवे चरन प्रभ दासी, देवे दरस आप रघुराया। कट्टे गलों सिलक जम फाँसी, प्रगट जोत विच संसार जोती जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल करे बन्द खलासी, कर किरपा गुरसिख पार कराया। कलिजुग गुरसिख गुर पूरा उपजाए। हरन फरन नेत्र, सरूप जोत प्रभ दे खुल्हाए। कलिजुग तारे भगत वछल, शब्द बेमुख नास कराए। साध संगत चार वरन होए इक्क मुठ, सतिगुर शब्द साचा प्रभ लिखाए। महाराज शेर सिँघ तेरा दर, कोई विरला गुरमुख

पाए। पुरख निरँजण जोती जोता, ज़ात पात जोत अन्त इक्क कराए। विष्नूं बंसी सूर्य अंशी, सतिजुग साचा मार्ग लावे। बेमुख पकड़ पछाड़े जिउँ काहना कंसी, प्रभ आपणा तेज वखावे। तारे तरे तारे गुरसिख विच सृष्ट, बेमुखां दिस ना आए। निहकलंक कलि तेरी वड्याई, कोई जीव भेव ना पाए। जीव ना जाणे प्रभ की जुगत। साचा प्रभ अन्तकाल करे मुक्त। बेमुख दर रहे लुकत। निहकलंक तेरी जोत कलिजुग प्रगटे गुप्त। निहकलंक नैण मँधारी। सति सफेद करे असवारी। चिट्टा असव उप्पर गिरधारी। प्रगट लोकमात, जन भगतां प्रभ मिले बनवारी। बेमुखां सदा रहे काली रात, हउमे लग्गी जगत बीमारी। गुरमुख विरला पी अमृत होवे शांत, पी अमृत रहे खुमारी। जोत निरजंण सदा इकांत, निहकलंक कलिजुग उतारी। महाराज शेर सिँघ सच सोहँ शब्द कोई विरला बणे वपारी। साचा शब्द साचा वपार। साचा नाम गुरसिख आहार। प्रगट जोत निहकलंक, कलिजुग देवे तार। महाराज शेर सिँघ सर्ब पित, कोई विरला पावे सार। बिक्रमी होई उन्नीं सौ पंजाह। कलिजुग प्रगटे निहकलंक बेपरवाह। सन्त मनी सिँघ दीसे साचा थां। कर दरस प्रभ अगम्म अथाह। महाराज शेर सिँघ पुरी घनक प्रगट सच सोहँ शब्द जपाए नां। प्रगटे जोत प्रभ धरनी धरया। कर दरस निहकलंक कलिजुग मनी सिँघ तरया। जन्म धाम मालवा होए बावला, आए सरन प्रभ की पड़या। साची जोत निरँजण मिल, प्रकाश जगत विच करया। बिक्रमी उन्नीं सौ बवंजा,

चुक सिर अमृतसर बाल अवस्था महाराज शेर सिँघ मंजी साहिब उप्पर धरया। उड्डे पुजारी दुष्ट दुराचारी, सन्त मनी सिँघ ना किसे तों डरया। सन्त रसन चलाई सर अमृत सराफ दवाई, अन्तकाल कलि थेह करया। मस्तूआणा सतिजुग उपजाणा, सच धाम प्रभ ने वरया। पुरी अनन्द उन्नीं सौ पजवंजा बिक्रमी गए मुकंद, शब्द सुणाया ढोल वजाया, सन्त मनी सिँघ निहकलंक चुक मोढे धरया। नीला चोगा गल विच पाया। महाराज शेर सिँघ उप्पर सीस उठाया। अमाम मैहदी निहकलंक अवतार। सभ लोकाई सुणाए मुस्लमान होण ख्वार। सदी चौधवीं होवे भार। अमाम प्रगटे अवतार। जोत सरूपी जोत प्रभ जगत ना पाई सार। कलिजुग आया अन्तकाल करन प्रभ, बेमुख होए ख्वार। साध संगत सति पुरखां लाधा, कर दिया बेड़ा पार। सन्त मनी सिँघ सति सति सति सेवा कीनी, निहकलंक अपर अपार। प्रभ दया कमाई, सुरत शब्द शब्द सुरत आत्म बूझ बुझाई। उपजे शब्द वज्जे धुन, सुन्न समाध खुल्ाई। साचा शब्द आत्म प्रवेशे, तीन लोक दी सोझी पाई। लोयण तीसरा साचा प्रभ वेखे, कलिजुग दित्ती वड्याई। शब्द चलाए हत्थ कलिम फड़ाए, कलिजुग लेख लिखाया लेखे। राजे राणे विच रहे भुलेखे। चल ना आए प्रभ विच सरनाई। साचे सन्त मनी सिँघ साध संगत एह बचन लिखाए। साध संगत होया इक्ठ, महिंमा निहकलंक मनी सिँघ आप सुणाए। सृष्ट सबाई अन्त होवे भठ, सुरत शब्द प्रभ सिख जगाए। मनी सिँघ

तेरा साचा बुत, दिवस रैण रैण दिवस कलम चलाए। बोध अगाध अगाध बोध प्रभ कलिजुग मेटे, सतिजुग कर्म लिखाए। ब्यासों पार सन्त मनी सिँघ कलम चलाए। खण्डा दो धार, पिण्ड भंडाल डेरे लाए। सन्ता सिँघ सन्त चरन प्यार, दिवस रैण सेव कमाए। सन्त मनी सिँघ नेत्र तीजा खोलॣ, गुरसिख जोत जगाए। निहकलंक कलिजुग तेरा गोझ, बिन किरपा कोए ना पाए। साध संगत गुरचरन दुआरे, महाराज शेर सिँघ होए सहाए। सन्त मनी सिँघ मन गया मान। साचा उपजया ब्रह्म ज्ञान। एका उपज्या प्रभ चरन ध्यान। उपजे शब्द उपजे प्रभ गुणी निधान। सतिजुग लिख्त लिखाई प्रभ महान। बेमुखां चुगली खाई ना करी पछाण। सन्त मनी सिँघ बिरध अवस्था, पकड़ संगरूर जेल विच पाण। राजन राज हुक्म फ़रमाया, कलिजुग कौण विष्नूं भगवान। सन्त मनी सिँघ बचन सुणाया, महाराज शेर सिँघ निहकलंक जोत महान। माया लालच जगत जलाए, हँकारीआं दिस ना आण। आत्म विच माण रखाए, घनकपुरी पकड़ लै जाण। साचा प्रभ नाद वजाए, सन्त मनी सिँघ जाए कुरबान। झूठी काया झूठा जगत, साचा प्रभ विष्नूं भगवान। अमृत झिरना विच झिराए नभ, आत्म रस गुरमुख पान। कर दरस मिटे आत्म हरस, दर घर आए कलंकनिह जान। साचे प्रभ शब्द उपजाया, सन्त मनी सिँघ लेख लिखाया, राउ रंक इक्क हो जाण। राजे राणे तख्तों लाहे, निहकलंक शब्द मारया बाण। अन्तकाल वरन चार इक्क करा के, सोहँ साचा शब्द उपजा के, महाराज शेर सिँघ नाथ त्रैलोकी, गण गंधर्ब मुन जन सुर नर सभ चरनीं डिग्गण आण। तीन लोक प्रभ प्रताप। सतिजुग जपाए सोहँ साचा जाप। कलिजुग जीव खपाए कर्म विचारे पाप। गुरसिख तराए विच्चों मारे हउमे ताप। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह, सृष्ट सबाई माई बाप। सर्ब सुख सर्ब दर वर। सरन लाग कलिजुग जीव जाए तर। कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतार नर। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, चरन लाग जीव ना डर। गुरचरन लाग गुर दर सूझे। गुरसिख पूरा गुर चरनीं लूझे। साध संगत प्रभ अबिनाशी बूझे। दे दरस प्रभ भेद खुलॣाए गूझे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अंदर, तेरा दर बेमुख ना सूझे। बेमुख प्रभ दर ना दस्सया। आत्म दुःख सदा रहे वस्सया। साध संगत साचा नाम प्रभ पावे भिख्या। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, चार वरन कराए मस्सया। चार वरन शब्द होए वस। सोहँ बाण प्रभ मारे कस। गुरमुख जोत प्रकाश जिउँ रवि ससि। महाराज शेर सिँघ अमृत वरखा लाई, सन्त मनी सिँघ प्या रस। वड्डा प्रभ आप, वड्डी वड्याई। प्रगट जोत कलिजुग जीवां उलटी मति आप प्रभ पाई। मदि मास बेमुखां आहार बणाई। गुरसिक्खां प्रभ सद हरि पास, आत्म जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ जप जीव स्वास स्वास जप जिस तेरी बणत बणाई। सतिगुर साचा आप प्रभ, कलिजुग जीव ना जाणे। कलिजुग प्रगट प्रभ, साचा शब्द वखाणे। आत्म जोत जगाए झब, विरला गुरमुख

हरि रस माणे। महाराज शेर सिँघ तेरा प्रकाश जोत होए विच नाभ, दस्म दुआर खुल्हाणे। खुल्हे द्वार होए उज्जयार, विच जोती जोत मिलाए। महाराज शेर सिँघ जोत निराधार, कलिजुग जीव ना जाणन अञ्याणे। कलिजुग जीव होए निमाणा। पारब्रह्म प्रभ अन्तरजामी वरताए आपणा भाणा। अन्तकाल कलिजुग कोई ना दीसे राजा राणा। साचा लाए आप सतिजुग, सन्त मनी सिँघ माण दिवाणा। धरे जोत प्रभ विच उपजावे धाम मस्तूआणा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग वरते तेरा सच सच सच भाणा। सच सच सच आप प्रभ सच। कच कच कच सृष्ट सभ कच। नच नच नच बेमुख दर ते नच। मच मच मच बेमुख अग्न जोत विच मच। रच रच रच जोत सरूप प्रभ विच गुरसिख हिरदे रच। महाराज शेर सिँघ निहकलंक गुरसिख साचा धुंन वच। प्रगटे जोत गोबिन्द गुर। सन्त मनी सिँघ लेख लिखावे धुर। आसा मनसा पूर वाली घनकपुर। महाराज शेर सिँघ निहकलंक तेरी महिंमा ना जाणे सुर नर नर सुर। सुर नर नर सुर सभ दर भिखारी। ब्रह्मा विष्न महेष खड़े कोट द्वारी। कलिजुग ऐसा किया भेख, निहकलंक जोत उतारी। सति पुरखां दीसे तेरा दर, निहकलंक अवतारी। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल कर जुग करे ख्वारी। कलिजुग खपाए चौथा जुग। वेला हत्थ ना आए गुरसिख गुरचरन प्रीती लुझ। शब्द सुरत देह उज्जयारे, साची जोत जगावे गुझ। मानस जन्म जीव सुफल कर, झूठी दुनियां विच ना लुझ। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, गुरसिक्खां ल्या बुझ। मनी सिँघ सति तेरा माण। जगावे जोत विच ललाट विष्नूं भगवान। सुर नर दर सोहण खड़े लै हत्थ बबाण। सतिगुर प्रगटे विच सतिजुग, जगत महिंमा होए महान। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, सोहँ शब्द साचा देवे दान। साचा दान सन्त प्रभ दिया। आत्म जोत प्रकाश कर, मुख उज्जल किया। विच चरन प्रभ निवास कर, घर साचा दिया। महाराज शेर सिँघ सतिजुग प्रकाश कर, संवारे सतिजुग सति सति रखाई नीआ। सतिजुग होवे सर्ब सति। जोत प्रकाश होवे आत्म मत। साध संगत तेरा रहे जग जत। प्रगटे जोत निहकलंक, जाणे तेरी मित गति। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुरसिक्खां रक्खे पति। रक्खे पति आप पत्यारा। साध संगत करे आत्म उज्जयारा। दीपक देह प्रभ जोत सरूप न्यारा। गुरमुखां मिल्या साचा प्रभ, कर दरस आत्म गया अन्धयारा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, कलिजुग जुग सति तेरा सति दरबारा। कलिजुग उपजाए जोत निहकलंक। सतिजुग सोहँ वजाए साचा डंक। चार वरन इक्क होवे कोई ना दीसे राउ रंक। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, करे प्रकाश पुरी विच घनक। सचखण्ड प्रभ तेरा द्वार। कलिजुग झूठा पसर पसार। शब्द अन्धेरी चले विच संसार। सोहँ शब्द कलिजुग खण्डा दो धार। बेमुख जीव जावण वहन्दी धार। गुरसिक्खां हिरदे जोत प्रकाश कर, आत्म करे उज्जयार। बेमुखां कलिजुग नास कर, प्रगटे जोत निहकलंक अवतार।

४४८
०१

भुलाया जगत मदि मास आहार कर, अन्तकाल कलिजुग होए ख्वार। गुरसिक्खां कर्म अपर अपार कर, महाराज शेर सिँघ कलिजुग बेड़ा पार कर, जो जन आए सचे दर, साचा दरस कृष्न मुरार कर। गुरचरन ऊँचा दर। साध संगत तेरा साचा घर। कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतर। सोहँ साचा शब्द सतिजुग जावे धर। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, साचा शब्द देवे वर। सच शब्द प्रभ देवे दान। सोहँ शब्द जप जीव महान। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। वज्जे धुन खुल्हे सुन्न, सुण साचा राग प्रभ सुणाए कान। रुण झुण कोई पावे विरला मुन, जिस लाया चरन ध्यान। महाराज शेर सिँघ कलिजुग गुरसिख जन दरस दिखाए जोत सरूप विष्नूं भगवान। कलिजुग प्रगटे विष्नूं भगवाना। गुर दर दर गुर खड़े महाना। गुरसिख जोत प्रकाश करे कोट भाना। निहकलंक तेरे चरन प्रीती कलिजुग साचा इशनाना। चरन प्रीती गुरसिख कमाए। आत्म निजानंद प्रभ उपजाए। स्वच्छ सरूप प्रगट जोत निहकलंक दरस दिखाए। महिंमा प्रभ की बड़ी अनूप, जुगो जुग जगत जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ कलि साचा भूप, गुरसिक्खां आत्म जोत जगाए। कलिजुग प्रगटे प्रभ साचा भूप। बेमुखां होए चार कुन्ट अन्ध कूप। जोत सरूप विच सिख समावे, ना दीसे रंग रूप। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, कलिजुग देवे दरस स्वच्छ सरूप। दरसन दे प्रभ दया कमाए। निहकलंक तेरी सच नाए। कोई विरला गुरमुख चढ़ जाए। प्रगट जोत गुरमुखां प्रभ साचा दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ अवतार नर, सुरती सुरत मेल कराए। आत्म देवे जीव प्रभ सुरत। जोत जगाए प्रभ अकालमूर्त। गुरसिख आस तेरी निहकलंक कलि पूरत। बेमुख दर ते आए उठ जाए झूरत। साचा प्रभ साचा रूप, ना साची दिसे प्रभ सूरत। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, सर्ब जनां दी आसा पूरत। जो जन प्रभ दरस प्यासा। दे दरस प्रभ कलिजुग करे बन्द खुलासा। दुःख दर्द सभ देह दा नासा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरा, सदा जीवे तेरे चरन भरवासा। गुरसिक्खां देवे जगत प्रभ मान। प्रगटावे जोत कलि विष्नूं भगवान। होए सहाई वड वड वड वड्डा बलवान। कलिजुग निहकलंक अवतार, राउ रंक करे इक्क समान। प्रगटी जोत जगत अंध्यार। निहकलंक जोत सरूप लए अवतार। बाण शब्द सोहँ करे जगत ख्वार। गुरसिक्खां जोत जगाए, प्रभ आत्म करे उज्जयार। घनकपुर वासी निहकलंक, सतिजुग होवे तेरा उच्च दरबार। प्रगटे जोत प्रभ अबिनाशी, सृष्ट सबाई होवे ख्वार। गुरसिक्खां मिले चरन निवास, बेमुखां होवे हाहाकार। कोई ना दीसे अन्तकाल कलिजुग मदि मासी नर्क मँझारे निहकलंक अवतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, आत्म देवे शब्द अधार। आत्म जोत प्रभ आप जगाए। प्रगट जोत निहकलंक कलिजुग शब्दी मेल मिलाए। उपजे शब्द वज्जे धुन खुल्हे सुन्न, निरहारी प्रभ दिस आए। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई वड वड वड वड्डा चार जुग कलंकनिह नाउँ

रखाई। चार जुग एका जोती। चार वरन कराए एका गोती। जामा धारे निहकलंक, कलि झूठी दुनियां रही सोती। गुरमुख विरले पाई सार, आत्म मिले प्रभ माणक मोती। महाराज शेर सिँघ तेरा सच द्वार, तीन लोक जगाए एका जोती। तीन लोक प्रभ जोत आकारी। जोत सरूप होया संसारी। निहकलंक निरँजण जोत प्रगटे कलिजुग नर अवतारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा प्रभ निराधारी। साचा प्रभ साचा दरबार। जोत सरूपी प्रभ जोत आकार। जगत जोत प्रभ करे अधार। झूठा जगत अन्त कलिजुग होए ख्वार। साचा शब्द सोहँ निहकलंक मारे साची मार। महाराज शेर सिँघ तेरे शब्द डंक, चार कुन्ट हो जाए जै जै जैकार। निहकलंक कोई ना जाणे तेरा अन्त। सतिजुग सोहँ शब्द उपजाए, विच सिख मनक। जोत सरूप आत्म मारे तनक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग गुरमुख उज्जल करे जिउँ भगत जनक। भगत जनां प्रभ हत्थ वड्याई। प्रगट जोत जुगो जुग होए सहाई। कलिजुग जामा धार, निहकलंक जोत प्रगटाई। ब्रह्मा माण गंवाए, जुग चौथे विच जोती जोत मिलाई। सतिजुग साचे देवे सिख निहकलंक वड्याई। सिँघ पाल तेरी जोत, साचे प्रभ विच ब्रह्म लोक पुचाई। मार जवाए जवाए आप, वाली सृष्ट आप रघुराई। निरगुण सरगुण एका रूप, सति पुरखां विच रिहा समाई। निहकलंक कलि लै अवतार, साध संगत प्रभ माण दवाई। लिख्त लिखाए अपर अपार, साची नीव सतिजुग रखाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तेरे चरन बलिहार, देवे साध संगत वड्याई। साध संगत तेरी वड्याई। प्रगटे जोत निहकलंक घनईआ रघुराई। जोत सरूप सर्ब जोत धर, साची जोत विच जगत टिकाई। जोत सरूप वसे तीन लोक, पाताल आकाश मात समाई। मातलोक प्रभ जोत प्रकाश, निहकलंक कलिजुग नाउँ धराई। बेमुख जीव अन्त होवण नास, कलिजुग तेरी व्याध मिटाई। जो जन रसना लावे मदिरा मास, साचा प्रभ विच नर्क निवास दवाई। सोहँ शब्द जो जपे स्वास स्वास, प्रभ जोती जोत मिलाई। सचखण्ड साचे सिख तेरा प्रभ करे निवास, आवण जाण जाण आवण जगत मिट जाई। बैकुण्ठ धाम गुरसिख तेरा बिसराम, दे दरस अन्तकाल निहकलंक होए सहाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जोत प्रगटाए जिउँ कृष्ना शाम, निर्मल जोत निहकलंक विच सिख दे आई। जोत सरूप प्रभ विच सिख देह समाए। अचरज खेल खेल अचरज कलिजुग कराए। विस्मादी प्रभ विस्माद विच सिख हो जाए। प्रगट जोत निहकलंक, भरम भुलेखे जगत भुलाए। गुरसिख करे निमस्कार बार अनक, बेमुख दर ना सीस झुकाए। साची जोत प्रभ आत्म लाए तनक, बेमुख आत्म हँकार रखाए। महाराज शेर सिँघ वाली पुरी घनक, सरन पड़े दी लाज रखाए। सरन पड़े दी राखे लाजा। अनहद शब्द धुन वजावे वाजा। जगावे जोत विच देह प्रभ जिस तेरा साजन साजा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, कलिजुग वड राजन राजा। राजन राज राज दयालू। भगत

४५१
०१

वछल प्रभ सदा कृपालू। कलिजुग जामा धारे निहकलंक बेमिसालू। महाराज शेर सिँघ जुग चार सदा कृपालू। कलिजुग पाई प्रभ ने माया। प्रगटे जोत आप रघुराया। अछल छल छल जगत कराया। आपणा भेव ना किसे जणाया। गुरसिक्खां शब्द ज्ञान दे, कलिजुग पार कराया। चरन प्रीती निहकलंक आत्म ध्यान दे, रंग मजीठी दे चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ दरस विष्नूं भगवान दे, साध संगत माण दवाया। प्रगटे जोत कँवल नैणां। सुंदर कुण्डल मुकट बैणा। साध संगत निहकलंक मिल दर ते बहिणा। मदि मासी अन्तकाल कलिजुग ना रहणा। सोहँ साचा शब्द प्रभ आत्म देवे गहणा। झूठी दुनियां जगत पसारा, सद बैठ किसे नहीं रहणा। कलिजुग करे निहकलंक ख्वारी, भाणा प्रभ दा सर्ब ने सहिणा। गुरसिक्खां करे जोत प्रकाश आत्म उज्जयार, सदा देवे लहणा। चार कुन्ट होवे हाहाकार, बेमुख जीव वहिण झूठे वहिणा। महाराज शेर सिँघ जोत आकार, तीन लोक सद रहणा। साचा प्रभ जोत आकार, प्रगट जोत सभ सृष्ट सँघारी। बुद्धि आत्म आत्म बुद्धि बेमुखां जग हारी। अन्तकाल कलिजुग जीव जन्त होवे ख्वारी। सतिजुग साचा लाए आप प्रभ, निहकलंक निरवैर निराहारी। सतिजुग सतिगुर मनी सिँघ होए तेरी वड्याई, साची मिले तैनूं सिक्दारी। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, सर्ब सृष्ट होवे तेरी पनिहारी। देवे माण सर्ब का दाता। सतिगुर मनी सिँघ सतिजुग होवे ब्रह्म ज्ञाता। चार वरन तेरी चरनीं साचा नाता। सोहँ शब्द खोले नेत्र हरन फरन, देवे ध्यान आप प्रभ दाता। गुरसिख कलिजुग अन्तकाल प्रभ जोती जोत मिलाता। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन प्रीती, गुरसिक्खां साचा नाता। गुरचरन प्रीती चरन धूढ़। करे बुध बिबेक जीव आत्म मूढ़। आत्म रंग चढ़ाए सच मजीठी गूढ़। महाराज शेर सिँघ गुरमुख विरला, कलिजुग लोड़े तेरी चरन धूढ़। नास नास नास, अग्न ताप नास्सया। प्रकाश प्रकाश प्रकाश निरँजण जोत प्रकाशया। स्वास स्वास स्वास सोहँ शब्द जप जीव स्वास सवास्सया। रास रास रास मानस जन्म होवे रास्सया। वास वास वास, साचा प्रभ विच देह वास्सया। मास मास मास, कलिजुग रसन बेमुखां भास्सया। नास नास नास, अन्तकाल कलिजुग करे नास्सया। पास पास पास, साध संगत प्रभ सद है पास्सया। अबिनाश अबिनाश अबिनाश, निहकलंक आदि जुगादि सदा अबिनास्सया। रास रास रास, जीव गुरचरन प्रीत रहिरास्सया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जुगो जुग वास्सया। दासन दास आप रघुराई। प्रगट जोत रघुपति होए सहाई। कँवल नैण नैण कँवल कलि जोत प्रगटाई। सिर मुकट मुकट सिर, चार कुन्ट कुन्ट चार प्रभ चरन लगाई। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल साध संगत सिर हत्थ टिकाई। साध संगत रक्खे प्रभ दे कर हत्थ। साचा शब्द सोहँ आत्म वसावे सची गथ। सतिजुग चले प्रभ साचे की साची कथ। निहकलंक प्रगट कलि, जिउँ रामा घर दसरथ। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, बेमुखां सवाए सथ। बेमुखां

साचे प्रभ मुख ना लाया। मदि मास रसना आहार बणाया। विच चुरासी प्रभ गेड़ लिखाया। कूकर शूकर जून दे, विष्टा मुख रखाया। कलिजुग तेरी पारब्रह्म अचरज वरती माया। उत्तम अचुत्त परमेश्वर, मदि मासी नज़र ना आया। साध संगत प्रगट जोत मिल्या निहकलंक परमेश्वर, सोहँ शब्द अधार रखाया। महाराज शेर सिँघ जगत पित जगतेश्वर, जोत सरूप ना मरे ना जाया। ना मरे ना जाए, करे जगत खेल। जुगो जुग प्रगटे जोत अनाद अनादी विस्मादी जोती मेल। झूठी दुनियां प्रभ जलाए, आत्म लाए मदिरा तेल। महाराज शेर सिँघ भाणा तेरा कलिजुग वरते, किरपा कर साध संगत सभ चरनीं मेल। चरन मिलावा आप कर, सति पुरख विधाते। आत्म जोत अधार कर, निहकलंक रंगराते। कलिजुग बेड़ा पार कर, भगत वछल साचे मात तेरे चरन प्रभ नाते। गुरसिख फुल किरपा गिरधार कर, सति जोती जोत मिलाते। महाराज शेर सिँघ सोहँ साचा शब्द अहार कर, गुरसिख सोहण तेरे दर रसना गाते। गुर कलिजुग निहकलंक गुण गायण। देवे दरस आप प्रभ, सति आत्म दुःख मिटायण। आत्म झिरना झिराए विच कँवल नभ, प्रभ साची जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ तेरे साचे दर, सति पुरखां मिले वड्याई। सति पुरखां सतिगुर साचा पाया। चंचल होई मति, विच देह प्रभ नज़री आया। साचा प्रभ रक्खे आप सति, मदि मास ना रसना लाया। शब्द सुरत प्रभ देवे साचा मित, साध संगत भैण भ्रा बणाया। वेला हत्थ ना आवे वत, जोत सरूप निहकलंक कलि आया। महाराज शेर सिँघ माधविआ कलि प्रगट जोत जगत भुलाया। जगत भुल्ला कलि होई भुल। झूठे जीव अन्तकाल कलि जायण रुल। साध संगत मिल्या वर वर अमुल। आदि जुगादि जुगो जुग निहकलंक जेवड कोई ना तुल। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाशे, जन भगतां दस्म दुआर जायणगे खुल्ह। खुल्हे द्वार मन भए अनन्द। आत्म उपजे जीव परमानंद। बेमुख दर ना सोहण सोहँ शब्द साची सुगंध। मदि मास प्रभ आहार बणाया, रसना लाया गन्द। कलिजुग मानस जन्म गंवाया, भाग होए मन्द। मिल साध संगत निहकलंक जिन दर्शन पाया, करे खुलासी प्रभ बन्द बन्द। सच धाम प्रगट पहुंचाया, गुरचरन निवास जिउँ सीतल चन्द। महाराज शेर सिँघ तेरा थान सुहाया, साध संगत मिल पाया निजानंद। निजानंद गुरसिख माने। कलिजुग चले प्रभ के भाणे। आत्म जोत जगे महाने। जोत सरूप जोत प्रभ गुरसिक्खां खड़्हा सरहाणे। बेमुख कलिजुग जीव भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। जोत प्रकाश करे निहकलंक, चरनीं लग्गण राजे राणे। कृष्न मुरारी जोत आकारी, देवे दरस जोत सरूप वाली हिन्दवाणे। वाली हिन्द उतरे चिन्द, डिग्गण चरनीं होए निमाणे। जमन किनार प्रभ करे जोत आकार, सन्त मनी सिँघ तेरे बचन सति वरताणे। निर्भय देवे शब्द अधार, निर्मल जोत करे आकार तीन लोक निहकलंक जोत महाने। महाराज शेर सिँघ तेरा प्रकाश, कलिजुग करे नास, सभ मिटाए राजे

राणे। मिट मिट मिट जाए अभिमान। एका जोत जुगो जुग महान। राउ रंक प्रभ इक्क समान। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप जुगो जुग एका जोत समान। एका जोत एका आकार। जगत पित कलि लै आया अवतार। दु:ख भुख करे जगत ख्वार। आत्म सुख देवे सोहँ शब्द अधार। उत्तम हस्ती कलिजुग मनुक्ख, जिनां जप्पया मुरार। महाराज शेर सिँघ तेरे हत्थ वड्याई, तेरी कोई ना पावे सार। तेरे हत्थ जगत वड्याई। मार ज्वाल ज्वाल मार, मार खपाई। जन भगतां लेवे सार, देवे तार जुगो जुग दे वड्याई। सोहँ शब्द साचा दे अमृत भण्डार, गुरसिक्खां सन्त बणाई। अन्तकाल कलिजुग ना होइण ख्वार, निहकलंक सतिगुर मनी सिँघ चरन लगाई। साध संगत गुर चरन किया प्यार, साचा प्रभ सचखण्ड निवास दवाई। वीह सौ अठ्ठ पंचम जेठ, भाईआं मिल करी अरदास, सिख ऊधम ल्या बख्शाई। सचखण्ड किया निवास, दे दरस देही छुडाई। झूठी दुनियां झूठा छड्डया वास, साध संगत प्रभ ल्या मिलाई। साचा प्रभ वसे सदा पास, साची जोत विच जोत टिकाई। बख्शे भुल रसना लाई जो मदिरा मास, काल अन्त अन्तकाल हो गया सहाई। मात पित भैण भ्रा धीआं पुत्र साचा पित आप देवे धरवास, नेत्र आंसू ना बंस वहाई। पिता पूत एका धागा एका सूत एका लड़ी प्रभ ल्या परोई। एका रूप एका जोत साची जोत प्रभ ल्या मिलाई। सूरत सिँघ सिँघ मोता करे बेनन्ती, बख्शे प्रभ साचा भूप कर दया प्रभ लाज रखाई।
४५३ ०१ महाराज शेर सिँघ देवे सुत्त वड्याई, सचखण्ड निवास दिवाई। करन बेनन्ती चरन प्रभ खड़े होए सुत। बख्शणहारे बख्श दे, प्रभ पारब्रह्म अचुत्त। पंचम जेठ धन्न सुभाग दिहाड़ा, धन्न सुहाई रुत्त। पाल सिँघ तेरे वंस सरबंस वड्याई, महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार जोत धरे तेरे विच सुत। धरे जोत विच पूरन सिख। साचे लेख प्रभ भेज्जया, धुरदरगाहों लिख। पहले जन्म प्रभ दे वड्याई, जन्म लिखाया भृंग रिख । दूजे जन्म प्रभ दे वड्याई, निरँजण जोत पूरन गोत अवतार व्यास सिख। कलिजुग दे जन्म करे जोत आकार, महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी भविख। नाम पूरन पूरन गुरसिख जगत भुलेवा। निहकलंक जोत सरूप, प्रभ विच सदा वसेवा। धरी जोत आप प्रभ, अलख अभेवा। कलिजुग जीव अन्त आवे वक्त, चार कुन्ट निहकलंक तेरी चरन सेवा। महाराज शेर सिँघ सति पुरख निरँजण, कलिजुग जोत धरे विच गुरसिख वड वड देवी देवा। देवी देव गुरसिख दुआरे। निहकलंक तेरी जोत, सिँघ पूरन आत्म चमत्कारे। चार वरन अन्त होए इक्क गोत, आए डिग्गण सति दुआरे। जो जन कलिजुग रहे सोत, चल आयण ना प्रभ दुआरे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख कलिजुग सदा सोहण तेरे दुआरे। कलिजुग साचा निहकलंक तेरा दरबार। प्रगट जोत साध संगत, दर आई देवे तार। बेमुखां मार शब्द चोट, कलिजुग करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ तेरा शब्द साचा, जगत पिण्ड काचा ढाहे ढहे होए ख्वार। भगत जन धन्न ४५३ ०१

जिन्हां शब्द मन वाचा, आत्म होए अधार। बेमुख दर आए सुण कन्न दर नाचा, प्रभ शब्द वगाई मार। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप विच हिरदक गुरसिख राचा, नाम निहकलंक अवतार। गुरसिख गुर एका सूत एका धागा। एका शब्द सोहँ एका रागा। कलिजुग दुःख ना गुरमुख लागा। उत्तम तेरा जन्म ना लागे दाग़ा। निहकलंक पकड़ी तेरी वागा। महाराज शेर सिँघ कलि प्रगट, देवे दरस जिउँ भोग लगावे बिदर सागा। कर किरपा प्रभ बिरद संवारया। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण कृष्न मुरारया। कलिजुग धरे जोत जोत सरूप निहकलंक अवतारया। जामा ल्या धार घनकपुर होए सच द्वारया। महाराज शेर सिँघ आदि जुगादी जोत, चार कुन्ट तेरा चमत्कारया। चार कुन्ट प्रभ जोत बिलोए। जोत प्रकाश करे तीन लोए। तीन लोक प्रभ एका जोत वरते जुगो जुग सोए। जोत निरँजण मातलोक धरे प्रभ अबिनाश, दूसर नाहीं कोए। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ वसे विच वरभंड, निरगुण सरगुण रूप दोए। निरगुण सरगुण प्रभ जोत आकारी। कलिजुग होया प्रगट जिउँ रामा कृष्न मुरारी। मूर्ख मुग्धां सुध ना आई, बणे मदि मासी आहारी। साध संगत निहकलंक जोत जगाई, जो जन ढहि पए प्रभ चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ तेरे नाम दुहाई, चार कुन्ट बेमुखां करे ख्वारी। ख्वार ख्वार होए जगत ख्वारा। जोत सरूप जगाए आप गिरधारा। गुरमुखां देवे साची भगति, सोहँ साचा नाम अधारा। बेमुखां पिसावे खपावे काल अन्त, सोहँ शब्द खण्डा

४५४
०१

चले दो धारा। बीर बेताल प्रभ ल्याए वक्त विच संसारा। चले नदी खून जिउँ वहन्दी धारा। महाराज शेर सिँघ तेरा हुक्म वरते, इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत करे जीव ख्वारा। हुक्मे अंदर सभ देवी देव। मुन जन सुर नर खड़े प्रभ चरन सेव। एका जोत अटल प्रभ अलख अभेव। बेमुखां नज़र ना आई, साची जोत सदा शब्द थेव। गुरसिक्खां निहकलंक तेरी चरन प्रीत कर, कलिजुग उत्तम कमाई सेव। किरपा धर गुरसिक्खां सोहँ शब्द दिया साचा मेव। गुरमुखां बुध बिबेक कर, रसना हटावे मदि मास नेहकेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना किसे जणावे भेव। भेव जाणे जिस जणाए आप। प्रगटे जोत कलिजुग सर्ब दाता सर्ब माई बाप। आत्म जोत करे उज्जयारे, कोट निवारे पाप। महाराज शेर सिँघ सतिजुग होवे तेरा सोहँ शब्द साचा जाप। सोहँ शब्द ईश्वर मुखवाक। खाणी बाणी गगन पताली पाकी पाक। कोई जन विरला जाणे सो, जिस आत्म खुल्हावे ताक। खुल्हे ताक होए उज्जयारा, महाराज शेर सिँघ गुरमुखां कलिजुग देवे साचा वाक्। गुरसिख गुर शब्द कमाए। साचा प्रभ विच आत्म धुन उपजावे। उपजावे धुन खुल्हाए सुन, तीन भवन दी सोझी पाए। रुण झुण प्रभ एका गुण, एका जोत रिहा तीन लोक समाए। अमृत झिरना झिराए जिउँ मेघ सवण, जो जन निहकलंक तेरी सेव कमाए। झूठी देह विच स्वास धरे प्रभ पवण, जोत सरूपी जोत जगाए। कलिजुग जामा धार, हँकारीआं हँकार निवारे जिउँ रामा रवण,

प्रभ साची लिख्त कराए। बेमुखां जन्म गंवाया अवण गवण, चल ना आए प्रभ सरनाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जामा धार, जन भगतां पैज रखाए। पैज रखाए प्रभ साचे भगत। जो जन आए निहकलंक शरन तेरी लगत। सोहँ शब्द दर होए भिखारी मंगत। दे दान होए कृपाल, प्रभ साची साध संगत। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर साचा, गुरसिक्खां चाढ़े सोहँ आत्म रंगत। आत्म रंग प्रभ आप चढ़ाया। निज घर वासी निज प्रगट दरस दिखाया। कर जोत आकार, साचा दीपक विच देह जगाया। बैठ विच निराधार, बेमुख जीवां नज़र ना आया। गुरसिक्खां किरपा कर अपार, प्रभ आपणा आप दरसाया। कर दरस गुरसिख बेड़ा होया पार, लक्ख चुरासी गेड़ मुकाया। अन्तकाल जम ना खाई मार, निहकलंक होए सहाया। कलिजुग लए पूरन अवतार, गुरसिख जोती जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ तेरा साचा सचखण्ड द्वार, साध संगत निवास दवाया। साध संगत तेरा साचा अस्थान। दिवस रैण जोत जगे विष्नूं भगवान। जन भगत जोत विच जोत मिल, विच जोती जोत समाण। विछड़ ना जाए इक्क तिल, किरपा करी आप मेहरवान। महाराज शेर सिँघ तेरी जोत एका अन्त गुरसिख विच मिल जाण। गुरसिक्खां देवे प्रभ साचा ज्ञान। साची प्रीत चरन ध्यान। दे दरस जगत मिटाए चिन्द, जगत दवाए माण। महाराज शेर सिँघ गुरमुख गुरसिख तेरी साची जोत, अन्त जोत मिल जाण। गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द कलिजुग दोए होए। बेमुख कलिजुग जीव, अन्तकाल कलि रहे सोए। वक्त विहाए हत्थ ना आए, खाली रहे जहानी दोए। महाराज शेर सिँघ जन भगतां दरस दिखा, दुरमति पाप कलेवर धोए। मदि मासी कलिजुग दुरमति दुराचार। आत्म ना दीसे साचा निरँकार। रसना वस जीव करे मास आहार। गया भुल जिस किया जगत आकार। अन्तकाल खाए जम मार। निहकलंक पावे नर्क मँझार। अन्तकाल गुरसिक्खां दे दरस प्रभ देवे तार। महाराज शेर सिँघ साध संगत तेरे चरन बलिहार। कर किरपा अमृत वरसदा प्रभ भगवन्त। जो जन आए अमृत आत्म वरसदा, प्रभ शांत कराए जीव जन्त। साची साध संगत हिरदे सदा प्रभ झिरना कँवल नाभ झिरंत। जो जन दर प्रभ आए परसदा, देवे दरस आप बलवन्त। महाराज शेर सिँघ देवे जोत अधार कलिजुग गुरसंगत। गुरसंगत सो जो गुर दर आए। गुर दर साचा कलि अवतार नर निहकलंक तेरी सेव कमाए। पाए साचा वर, जाए दुत्तर तर, कलिजुग माया ना सताए। महाराज शेर सिँघ सतिजुग दीसे तेरा ऊँचा दर, सोहँ शब्द साध संगत दिवस रैण रसना गाए। दिवस रैण तेरा उपजे नाम। गुरमुखां कलि पूरन होए काम। साचा शब्द प्याआ साचा जाम। सच जोत जगाए प्रभ विच आत्म राम। महाराज शेर सिँघ पुरख निरँजण, साचा शब्द सोहँ देवे नाम। नाम शब्द सोहँ लाहे दुःख। अमृत दे किरपा कर सुफल कराए माता कुक्ख। होवे जन्म मास दस्म, उलटा जीव गरभे रुक्ख। महाराज शेर सिँघ तेरे शब्द

दुहाई, उपजे सुख प्रभ काटे सभ दुःख। शब्द गंवाए दुःख देह सुफल कर। आत्म रहे ना भुख, सोहँ शब्द जीव ध्यान धर। निजानंद प्रभ उपजावे सुख, साचा ब्रह्म ज्ञान कर। कलिजुग जीव निहकलंक चरन ध्यान कर। निहकलंक तेरे चरन ध्यान। ज्ञानीआं देवे ब्रह्म ज्ञान। निधानीआं करे कलि चतुर सुजान। अभिमानीआं देवे दुःख महान। धन्न धन्न धन्न गुरसिख निहकलंक तेरे चरन लाग तर जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, कलिजुग जोत प्रगटे विष्नूं भगवान। विष्नूं भगवान सर्ब का दाता। जोती जोत जोत सरूप, प्रभ जुगो जुग जोत जगाता। वसे विच बिन रंग रूप, उपजावे शब्द वड ज्ञान ज्ञाता। महाराज शेर सिँघ नर नरायण, सोहँ शब्द भण्डारी आप वड दाता। वड दाता प्रभ आप दातार। निरहारी निरवैर गुरमुख करे जोत आकार। बेमुखां घर दर दर घर पए वहीर, सोहँ शब्द प्रभ मारी मार। महाराज शेर सिँघ तेरे हत्थ वड्याई, कलिजुग जामा धार साध संगत देवे तार। साध संगत तेरा नाम उज्जयार। चरन कँवल कँवल चरन गुर रक्खे प्यार। उप्पर धवल प्रभ विच कँवल जोत सरूपी करे आकार। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जिउँ कृष्ना संवल, सोहँ शब्द जन भगतां देवे नाम भण्डार। देवे नाम भगत भंडारी। सोहँ दान जगत अधारी। विष्नूं भगवान जोत निरँकारी। महाराज शेर सिँघ जामा धारे, दर आयां दी पैज सवारी। देखा देख जो जन आए दर। साचा साहिब साचा नाम, शब्द सोहँ देवे वर। चरन लाग कोट अपराधी जायण तर। अन्तकाल ना कलिजुग होवे किसे डर। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, साध संगत पाया तेरा ऊँचा दर। साचा शब्द सोहँ सदा गुंजार। साध संगत रसना जप होवे पार। बेमुख बिल्लायन, अन्तकाल कलि होइण ख्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, साध संगत जाए तार।

❊ ६ सावण २००८ बिक्रमी मेरठ विहार होया ❊

सुख सागर सर्ब सुख दावन। दुःख भंजन पतित पावन। निहकलंक आत्म तीर्थ तेरे चरन न्हावण। तारे गुरमुख जन राजा बल प्रगट रूप बावन। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जुगो जुग तेरा आवण जावण। सतिजुग आया प्रभ बावन रूपा। कर भेख खड़ा दुआरे भूपा। मंगया दान होए अवधूता। कर्म अढाई दे राख भबूता। बलि बलि ना जाणया, प्रगटे गोबिन्द सरूपा। अछल छलन छल कर, भोजन किया ना लाहया जूता। साचे प्रभ आकार वधाया, दोए कर्म कर त्रैलोए खपूता। कर्म अद्धी राजन वल हिसाब रखाया। छत्र झुले नौं खण्ड पृथ्मी, प्रभ प्रगट माण रखाया। होए निमाणा चरन लाग, हउँ भुल्ला आख सुणाया। ब्राह्मण बिरध अवस्था धार, प्रभ सतिजुग भेस वटाया। बख्शणहारे बख्श प्रभ, बल राजे

मगर मिणाया। कर्म जरम जरम कर्म विचार कर, सिर उप्पर हत्थ टिकाया। दे राज पाताल प्रभ, साचा माण दवाया। जुगो जुग भेख धार, जोत एक अनेक रंग वटाया। धन्न धन्न धन्न राजा बल तेरा नगर ग्राम, जिथ्थे प्रभ साचे दरस दिखाया। सतिजुग प्रगट फिर साचा धाम, नाम बल्ख रखाया। चरन धरे विष्नूं भगवान, अन्त तुरकां नास कराया। जुगो जुग जोत महान, सभ थांईं दे सज़ाया। सोहँ शब्द प्रभ तेरा बाण, सतिजुग साचा राह बणाया। शब्द बाण प्रभ जगत लाहे घाण, आपणा भेव ना किसे जणाया। प्रगट जोत करे संग्राम, कलिजुग जीवां जन्म गंवाया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जगत सबाए पाई माया। लिखाए लेख प्रभ बण भिखारी। सतिजुग वड्डी राजे मिली सिक्दारी। चरनीं डिग्गण वली कंधारी। अन्तकाल कलिजुग प्रभ मारे मार कर ख्वारी। साचे तख्त वसे निहकलंक बनवारी। झुल्ले छत्र सीस होवे असव गज असवारी। साध संगत प्रगटे जोत प्रभ, कट्टे हउमे भुक्ख बीमारी। साचा शहनशाह रक्खे लाज मुरारी। बेमुख लभे ना राह, ना आयण चल द्वारी। महाराज शेर सिँघ सच वरताए, सचा देवे एक शब्द अधारी। एका शब्द प्रभ एका चाढ़े रंग। कलिजुग गंवाए अन्त कराए भंग। सतिजुग साचा प्रभ लाए, गुरसंगत वर ल्या मंग। दु:ख दलिद्र प्रभ सारे लाहे, ना दीसे भुक्ख नंग। सोहँ शब्द सर्ब राहे लाए, किसे ना होवे आत्म भंग। सतिजुग होए प्रभ साची नाए, गुरमुख साचे पार जायण लँघ। महाराज शेर सिँघ अमृत वरखाए, जिउँ चले नीर गंग। गंगा गोदावरी तेरे जग गुण गहर गम्भीर। भगत जनां आत्म देवे धीर। अमृत वहायण जिउँ बालक माता सीर। तेरी जल धार कट्टे ज़ंजीर कबीर। रविदास चुमार तराया, फड़ ल्या हत्थ कसीर। तट तेरे, बिरधां बाल जवानां बणी रहे सद भीड़। अन्तकाल कलिजुग तेरी होई अखीर। कलि जीव पापी, संग पापां भर गए तेरे चीर। खिच्चे जोत आप प्रभ वड दाती, तेरा खाली होया नीर। महाराज शेर सिँघ निहकलंक सभन गंवाए माण कलिजुग अख़ीर। गोदवरी गोदावरी। त्रिप बर्ग बूंद गरुड़ मुख गिरावरी। चल्लया नीर जगत सुधावरी। विष्नूं भगवान वर दे सुधावरी। तेरे नीर जगत तराया। प्रगट गोबिन्द गुर, विच तेरे चरन टिकाया। जल अमृत अमृत जल इक्क रस बणाया। जन भगतां पी तेरा अमृत जल, आत्म तृखा बुझाया। बेमुखां तेरे दर घर जाए पाप काम क्रोध वधाया। बेमुख कलिजुग जीव, संग पापां तेरा मुख छुपाया। जामा धार निहकलंक, तेरा लेख चुकाया। अन्तकाल कलि किया आण, जोत सरूपी खेल रचाया। धरे जोत विष्नूं भगवान, जगत भुलेखा सारा लाहया। सतिजुग देवे सति पुरखां माण, जिउँ होए दरबान बल तराया। त्रेता पाई सार। धरे जोत आप गिरधार। वड वड वड्डा होए प्रभ, नाम धराए राम अवतार। निमाणयां निताणयां देवे माण, घर भीलणी बेर करे आहार। साचे प्रभ चरन छुहाए, अहल्या कर किरपा कीनी पार। अपार कर किया एक जोत आकार।

४५७
०१

हँकारीआं अन्त ख्वार कर, जुग त्रेता किया पार। आया द्वापर धरे जोत रघुनाथ। भगत वछल अनाथां नाथ, सर्ब जीव के साथ। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण, जन भगतां रक्खे लाज सिर दे कर हाथ। कँवल नैण सुंदर कुण्डल मुकट बैण घनईआ शाम त्रैलोकी नाथ। त्रैलोकी नाथ द्वापर आया जन भगतां माण दवाया। एका जोत जगत धर, अचरज खेल रचाया। हंकारिआं प्रभ हँकार दे, जन भगतां दरस दिखाया। द्रोपदी लज्जया कप्पड़ कोट आकार दे, राजन माण गंवाया। बिप्पर सुदामा दालदी, मंगण दर द्वारका आया। देवे वड्याई आप प्रभ, मुरार कृष्न सिँघ आसण उप्पर बिठाया । एका जोत विष्नूं भगवान दे, जन भगतां माण दवाया। एका शब्द लाए बाण, दुक्खां नास कराया। अर्जन देवे ब्रह्म ज्ञान, गीता ज्ञान प्रभ लिखाया। जो जन देवे पूरन ध्यान, विच जन्म मरन ना आया। द्वापर दे गया प्रभ साचा दान, कलिजुग जीवां भेव ना पाया। छड्डया आत्म ब्रह्म ज्ञान, निजानंद सुख गंवाया। रसना किया मदि मास अहार, आत्म रस खपाया। आत्म भुलाया श्री भगवान, जिस मानस जन्म दवाया। ध्याए अठारां लिखाए गोझ ज्ञान, गुणी निधान शब्द लेख लिखाया। कलिजुग जीव भुल होए अञ्याण, चित ना आया। कलिजुग प्रगटे निहकलंक बलवान, अन्तकाल कलिजुग जीव दे सज़ाया। सो जन होवे चतुर सुजान, जिस मदि मास ना रसना लाया। धरे जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कुन्ट चार हाहाकार मचाया।
४५८ ०१ निहकलंक जगत जोत धर आए। जोत सरूपी अग्न चार कुन्ट लगाए। जन भगतां घर होवे जै जै जैकार, बेमुख हाहाकार कर बिल्लाए। सिक्खा शब्द होवे सची धुन्कार, सोहँ प्रभ आप साचा शब्द लिखावे। निहकलंक तेरी कोई विरला पावे सार, जिस आत्म दरस दिखाए। दे दरस प्रभ दुबिधा मारे, आत्म करे जोत आकार। गुरमुखां खोल्हे जो दर आए, निहकलंक दस्म दुआर। खुल्हे द्वार होए उज्जयार। रुण झुण सदा धुन्कार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जन भगतां शब्द सोहँ भर जाए भण्डार। सोहँ शब्द सच दीबाण। रसना जप जीव महां सुख पाण। बुझी आत्म दीप, सोहँ शब्द बत्ती ला जगाण। निहकलंक करे आकार, जो जन मन तन मन्न लै माण। मन तन जिस जन मानया। साचा प्रभ जोत सरूप पछाणया। मन रक्खे ना जगत अभिमानया । सो जन होवे सुघड़ सुजानया। साचा प्रभ जोत सरूप पछाणया। कलिजुग चले सदा प्रभ तेरे भाणया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, देवे माण निमाणया। देवे प्रभ वड्याई। ऊँच नीच दा भेव मिटाई। दीनां नाथ जन भगतां प्रभ आप अख्वाई। जुगो जुग जोत सरूप, निहकलंक तेरी वड्याई। जणावे जन वसावे मन सुणावे गण, जीव कहे मुखों धन्न धन्न। उपजावे प्रगटावे प्रभ साचा दरस दिखावे, जीव आत्म जाए मन्न। मुन जन वड्याए, माण दवाए साची जोत टिकावे, जीव होए जन जन जन। महाराज शेर सिँघ सर्ब कल वरते, जन भगत तेरे

चरन जाए मन्न मन्न मन्न। जन भगतां तेरे चरन बन आई। तन मन धन सेव कर, परमगति तेरे दर ते पाई। साचा प्रभ गुरमुख वड देवी देव, कलि साचे दे जावे वड्याई। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप निहकलंक तेरी बिरथा सेव ना जाई। कलिजुग साची जोत धर, प्रभ कलिजुग खेल मिटाए। कलिजुग साची जोत धर, प्रभ रसना शब्द चलाए। कलिजुग साची जोत धर, चार कुन्ट डंक वजाए। कलिजुग साची जोत धर, खाणी बाणी भस्म कराए। कलिजुग साची जोत धर, सर्बत तीर्थां माण गंवाए। कलिजुग साची जोत धर, कुरान अञ्जील दए खपाए। कलिजुग साची जोत धर, प्रभ भेख पखण्ड नास कराए। कलिजुग साची जोत धर, एका मुहम्मद प्रभ साचा अन्त कराए। कलिजुग साची जोत धर, अग्न जोत जोत जगत जलाए। कलिजुग साची जोत धर, वरभंडी खेल मिटाए। कलिजुग साची जोत धर, जूठ झूठ सभ मेट मिटाए। कलिजुग साची जोत धर, साचे सिख तराए। कलिजुग साची जोत धर, अन्तकाल कलिजुग आप कराए। कलिजुग साची जोत धर, सतिजुग साचा लाए। कलिजुग साची जोत धर, सोहँ शब्द चलाए। कलिजुग साची जोत धर, निहकलंक नाम रखाए। कलिजुग साची जोत धर, भगवान विष्नूं आपणा भेख वटाए। कलिजुग साची जोत धर, मधुर बैण मात विच आए। कलिजुग साची जोत धर, वरन चार इक्क कराए। कलिजुग साची जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ साचा नाम जपाए। साची जोत धरे प्रभ कलिजुग, आपणे नाम देवे वड्याई। साची जोत धरे प्रभ कलिजुग, सन्त मनी सिँघ तख्त बिठाई। साची जोत धरे प्रभ कलिजुग, सतिजुग देवे सोहँ वड्याई। साची जोत धरे प्रभ कलिजुग, महाराज शेर सिँघ बेमुखां दिस ना आई। साची जोत साचा प्रभ, जगत आया जगदीस। साची जोत साचा प्रभ, बेमुखां जाए पीस । साची जोत साचा प्रभ, सतिजुग साचे छत्र झुलावे सीस। साची जोत साचा प्रभ, महाराज शेर सिँघ निहकलंक तेरी कोई ना करे रीस। जोत धरे जगत दयाल। रक्खक वछल भगत रखवाल। भगत रखवाल देवे माण, ब्रह्मपुरी साचे सिख पाल। महाराज शेर सिँघ नाथ त्रैलोकी सदा दयाल। दयाल पाल सिँघ दया प्रभ करे। कलिजुग सेव कमाई प्रभ मानस जन्म सुफल करे। चार जुग तेरी रहे वड्याई, ब्रह्मलोक जोत प्रभ धरे। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, जो जन सरनी पड़े। जन आए सरन प्रभ सरनागत। प्रभ सदा हज़ूर ना जाए भागत। उपजावे शब्द सुणावे सच रागत। सुण साचा राग, सोया जीव जाए जागत। महाराज शेर सिँघ कर दरस तेरे पूरन होए भागत। जो जन होए प्रभ चरन भिखारी। साचा प्रभ घर दर गुरसिख द्वारी। अन्ध घोर घोर अन्ध प्रगट पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ जुगो जुग प्रगट रक्खे लाज मुरारी। रक्खे लाज प्रभ लाजावन्त। प्रभ गुण ना जाणे कलिजुग जीव जन्त। कोई विरला जन पछाणे साचा सन्त। सोहँ शब्द वखाणे जिस बख्शे प्रभ कन्त। महाराज शेर सिँघ जोत

सरूप, महिंमा बड़ी अनन्त। अन्त आप अनन्त जग रिहा। जोत सरूप जुगो जुग प्रभ एका जेहा। एका जोत प्रभ, जोती जोत अनेक धारे देहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे जेवड अवर ना केहा। सारंगधर भगवान बीठला। गुरमुख साचे साचा रंग प्रभ डीठला। जन भगतां भाणा प्रभ लग्गे मीठला। बेमुखां सोहँ लग्गे जिउँ कौड़ा रीठला। महाराज शेर सिँघ अमृत वरखे, साध संगत आत्म करे सीतला। सीतल काया होई, कर सतिगुर दरस। जगत माया गई, मिटी आत्म हरस। साचे प्रभ किरपा भई, अमृत वरखा गई बरस। महाराज शेर सिँघ जन आए सरनाई, जोत जगाए विच अर्श। अर्शी जोत अर्श प्रभ धरे। कलिजुग जीव लोकमात विच ना डरे। जन्म मरन मरन जन्म ते पार परे। सति पुरख निरँजण किरपा आप करे। महाराज शेर सिँघ साची जोत साचे धाम धरे। साचा धाम प्रभ चरन निवास। आवण जावण मिटी त्रास। मिल्या पारब्रह्म परमेश्वर अबिनाश। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जगत भण्डारी सर्ब गुणतास। गुणवन्त गुणतास। जन भगतां हिरदे रक्खे वास। जन भगत उपजाए कलिजुग जिउँ चन्दन प्रभास। दर खड़े सहाए विच प्रभ करे निवास। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन साध संगत सदा बलि बलि जास । बलि बलि जाए संगत साध। रसना जपे नाम आत्म अगाध। एक शब्द एक धुन वजाई नाद। मिटे अज्ञान दिसे ब्रह्माद। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, गुरसिख रसना आवे एका साद। रसन साद रमईआ राम। मिल्या माधव घनईआ शाम। आत्म याद ना भुल्लया नाम। रसना जप जप जीव महां सुख पाण। वड वड वड तप, सोहँ जपणा नाम । आत्म जप जप जप, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम। विष्नूं भगवान प्रभ का नाम। धरे जोत निहकलंक, जिउँ त्रेता राम। सोहँ शब्द सुफल कराए काम। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, सतिजुग जपाए साचा नाम। नाम जपाए सतिजुग सर्ब कलावन्त। तेज वखाए आप भगवन्त। गुरमुख वड्याई विच जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे, गुरमुखां बेअन्त। बेअन्त रूप सति सरूप, प्रभ दरस दिखाए। सतिजुग भूप महिंमा अनूप, सर्ब सृष्ट मिटाए। विच अन्धकूप प्रगटे जोत बिन रंग रूप, कलि साची जोत धराए। महाराज शेर सिँघ तेरा स्वच्छ सरूप, जन भगतां आण तराए। तारे आप प्रभ तारनहार। साचा शब्द सोहँ देवे भण्डार। बेमुखां कलिजुग आत्म होवे धुंधूकार। साध संगत दीसे घनकपुर वासी, तेरा साचा सचखण्ड द्वार। जिथ्थे जोत प्रगटे प्रभ अबिनाशी, जन भगतां देवे नाम अधार। महाराज शेर सिँघ लोक तीन वासी, सच दीसे तेरा चरन द्वार। घनकपुर वासी तेरा द्वार सतिजुग सच। चार कुन्ट सर्ब धाम दीसे कच्च। जोत जलाए अग्न, जग जायण सारे मच। प्रगट जोत, गुरसिक्खां सिर रक्खे हथ। अन्तकाल कलिजुग जीव जायण मच्च। महाराज शेर सिँघ तेरे शब्द अटल, लिख्त लिखाई होवे सच। लिखाए लिख्त प्रभ जगत लेख, मिटाए दुष्ट दुराचारी।

मिटाए लेख बेमुखां बिधमाता की करे विचारी। दुःख भुःख भुःख दुःख लग जाए जगत बीमारी। बाल ना ठहिरन माता कुक्ख, कलिजुग होवे अन्त ख्वारी। महाराज शेर सिँघ मारी शब्द मार, सृष्ट पार उतारी। पार उतार उतार पार, जन भगतां बेड़ा किया पार। बेमुख कलिजुग डुब्बे अद्ध विचकार। ना दीसे प्रभ, ना दीसे पार किनार। बांहों पकड़ प्रभ रोढ़या, कलिजुग बेड़ा कर ख्वार। महाराज शेर सिँघ तुध बिन अन्तकाल ना देवे तार। राम राम राम त्रेता उपज्या राम। रामदास रामदास रामदास अमृतसर तेरा ग्राम। तेरा ग्राम कलिजुग बणया चार वरन साचा धाम। कलिजुग जीव कलिजुग दिस ना आया साचा राम। तन मन बुध हँकार रखाया, बण बैठे हँकारी राम। हँकार निवारे प्रभ बनवारी, करे ख्वारे सच जोती राम। कलिजुग जामा निहकलंक, महाराज शेर सिँघ धराया नाम। प्रगट जामा निहकलंक, प्रभ आया सच द्वार । बेमुखां कपट विचारया, प्रभ पूरे किया ख्वार। प्रभ जोत सरूपी शब्द उचारया, शब्द रूप मारी मार। अन्तकाल कलिजुग सर अमृत ढहि ढहि होए ख्वार। कलिजुग निहकलंक वड्डा वड आप, दस सुत होए दस अवतार। कलिजुग गुर पूरा सुत । जीव कलिजुग साचा शब्द उपजावे विच बुत्त। जोत मेल मेल जोत प्रभ करे अचुत्त। गुर निरँजण नरायण जोत सरूप जोती मूर्त । जोत सरूप जोती जोत मेल रक्खे विच सुत। निहकलंक धरे जोत विच सतिगुर। देवे शब्द आप प्रभ, मेल रक्खे धुर। गुर गोबिन्द एका जोत, दोए मूर्ति बैठे जुड़। एका शब्द एका राग, प्रभ इक्क उपजावे सुर। निरँजण जोत अनन्द निर्मल, मातलोक टिकावे प्रभ विच गुर। गुर आवे जग, प्रभ हुक्मे अंदर। साची जोत प्रभ जगावे हुक्मे अंदर। शब्द सुरत जोत मेल, प्रभ शब्द रक्खे तन अंदर। अन्तकाल छड ना दीसे जग अंदर। अन्तकाल कलिजुग प्रभ आए जोत धर। सोलां कला समरथ, जोत प्रगटाए प्रभ धरनी धर। जन भगतां शब्द चढ़ाए साचे रथ, शरन लगाए शरनी शर। बेमुखां खपाए जलाए भट्ठ, भगतां देवे फल प्रभ करनी कर। कलिजुग उलटी गेड़ वखावे लठ, कलिजुग कर्म है मरनी मर। साध संगत गुर चरनीं आए नठ, लग जाए चरन तर। महाराज शेर सिँघ कर ल्या इक्ठ, साध संगत ना होवे किसे डर। साध संगत ना भउ व्यापे। होए सहाई आप प्रभ आपे। सर्ब भुलाया प्रभ साचा जापे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जगत जलाया घर घर होए स्सयापे। घर घर रोण सर्ब हिन्दवैणां। साचे दर बिन डिग्गे कलिजुग डूंघे वहिणा। भाईआं तांई ना मिलियां भैणां। नारां मिल्या ना संग कन्तां बहिणा। साचा शब्द गुर जीव तेरा साचा गहणा । शब्द अन्धेरी झुल गई, जग जावे वैहन्दे वहिणा। कलिजुग तेरी फुलवाड़ी अन्त हुल गई, मदि मासी कोई ना रहणा। बेमुख दुनियां सारी भुल गई, निहकलंक डन्न प्या सहणा। महाराज शेर सिँघ तेरे भगतां सुरती खल्ल् गई, सद चरन निवास कर रहणा। गुरसिख गुरचरन भंवरा। लए चरन धूढ़ जन्म कर

संवरा। जन जो दर आए हो गंवरा। सचखण्ड साचा प्रभ सिर झुलाए चंवरा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, कलिजुग दूसर ना कोई अवरा। और ना दीसे दूसर कोए। सर्ब थांईं प्रभ तेरी सोए। कलिजुग जामा धार, गुरमुखां हिरदे धोए। सतिजुग साचा आकार, चार वरन दीए इक्क लड़ परोए। साचा दिया अधार सोहँ शब्द, निहकलंक तेरी चरन धूढ़, खोल्हे तीसर लोए। महाराज शेर सिँघ चार वरन दर आयण, सतिजुग तेरी साची सोए। चार वरन प्रभ सच वरतारा। जोत निरँजण धरे सतिजुग अपारा। शब्द साचा सोहँ खुल्हाए दस्म दुआरा। कलिजुग जीव मुग्ध अञ्याण, ना पावण सार गंवारा। महाराज शेर सिँघ शब्द भण्डारी, वरतावे शब्द भण्डारा। वरतावे शब्द प्रभ आप अतोल। साचा शब्द कलिजुग किसे विरले ल्या मोल। कलिजुग बेमुख सौं रहे कोल। रसना शब्द उचार प्रभ ऊँच कूक वजाए ढोल। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखारी प्रगटे जोत, शब्द लिखावे रसना बोल। साचे प्रभ शब्द चलाया। प्रगट आप आपणा भेव खुल्हाया। शब्द विच निहकलंक प्रभ नाउँ रखाया। जन भगतां आत्म लाई खिच्च, चरन निवास दवाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, साचा राग सुणाया। साचा राग सच शब्द आप उपजावे। आत्म जाग सोहँ शब्द गुरसिख लगावे। पूरन कलिजुग भाग, जिस प्रभ दया कमावे। मानस जन्म ना लागे आंच, माता कुक्ख सुफल करावे। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, गुरसिख बेड़ा पार करावे। कलिजुग बेड़ा पाप डुबाया। पाप अपराध कलिजुग खेल रचाया। सन्त साध कोई साचा नज़र ना आया। जगत भेख कलिजुग जीवां जगत बणाया। प्रभ साचा आत्म लए वेख, ना छुपे किछ छुपाया। अन्त पूर कराए लेख, जामा निहकलंक धर आया। जो कुछ वरते कलिजुग लैणा वेख, चार कुन्ट धुंदूकार मचाया। महाराज शेर सिँघ तेरा जोत सरूपी भेख, कलिजुग भस्म कराया। जोत सरूप भेख भगवान दा। कलिजुग बेमुखां अन्त खपाण दा। कलिजुग भेख कर आए प्रभ, मदि मासी सर्ब मिटाण दा। महाराज शेर सिँघ नाउँ धराए, कोई विरला गुरमुख जाणदा। विष्नूं भगवान प्रगटे जग। जोत अग्न चार कुन्ट जाए लग। बेमुख जीव जाण मौत कुठाली दग। महाराज शेर सिँघ साध संगत तेरी चरनीं जाए लग। चरन लाग कलिजुग जीव ना दु:ख व्यापे। साचा दर प्रभ तेरा, सति पुरखां ध्यापे। भगत जनां हरि सदा माई बापे। महाराज शेर सिँघ तुध जेवड, कलिजुग कोई ना जापे। कलिजुग वड्डा प्रभ भुयंग। साचा शब्द चढ़ावे आत्म रंग। गुरसिख कलिजुग पाप पहाड़ां जाए लँघ। तत्ती वा ना लागे अंग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, सदा सहाई अंग संग। अंग संग प्रभ सदा सहाई। गुरसिख तेरी जिस बणत बणाई। कलिजुग माया तैनूं लग्गे ना राई। महाराज शेर सिँघ तेरा होवे सहाई। होए सहाई सर्ब प्रभ नायक। मिटावे सर्ब जगत मायक। हिरदे इक्क सच नाम धरायक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान घाली घायक।

घाल घाल घाल गुरसिक्खां घाली। जाल जाल जाल, हउमे शब्द संग जाली। बाल बाल बाल, आत्म दीप आप प्रभ बाली। माल माल माल, प्रभ माला माल करे घनकपुर वाली। डाल डाल डाल गुरसिख डाल, प्रभ फुल्ल लाए इक्क सोहँ डाली। भाल भाल भाल, कलिजुग प्रभ संगत मेल मिला ली। महाराज शेर सिँघ भगत कृपाल कृपाल कृपाल किरपा करे आप बनवाली। किरपा करे भगत जन मीता। मिटी काया हरस आत्म तृप्ता। नाम निधान निर्मल गुर दर आए गुरसिख पीता। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरा, जुग चार सदा है जीता। चार जुग तेरे सिख वड्याई। निहकलंक जिस तेरी सेव कमाई। उच्च पदवी सच दर ते पाई। गर्भ वास तेरी बन्द खलास कराई। बैकुण्ठ निवास साची जोत विच जोत मिलाई। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरे चरन भरवास, कलिजुग पावे वड्याई। जगत लिखाए लेख, गुर दर गुरसिख लिखारी। गुर गुर गुरसिख जाए जगत बलिहारी। साची दृष्ट देवे सच सिरजणहारी। एका प्रभ एका देवे इष्ट, सोहँ साचा नाम मुरारी। महाराज शेर सिँघ सारी सृष्ट, अन्तिम करे ख्वारी। कलिजुग लेख अन्त होए माढ़े। चार कुंट पै जाण उजाड़े। भाणा वरते दिन दिहाड़े। सत्तर लक्ख पठाण प्रभ पूरब चाढ़े। आस पास सर्ब ब्यास, महाराज शेर सिँघ तेरी अग्न जोत सभ साड़े। चढ़न पठाण प्रभ के भाणे। पुज्जण ब्यास होए मुहाने। वरते कहर प्रभ मारे शब्द बाणे। दु:ख भुक्ख अन्त रोग देही लग जाणे। रोण मुगलाणीआं बांह लै सरहाणे। होवे हत्थ वड्याई महाराणे हिन्दवाणे। धरे जोत निहकलंक तरल जुआने। महाराज शेर सिँघ तेरे हुक्मे अंदर, भुज्ज जाण जीव जिउँ भठयाले दाणे। जीव भुल्ले कलिजुग बेमुख। सदी चौधवीं उखाड़े उम्मत रुक्ख। ना कोई रहे मुहम्मदी, ना कोई मुहम्मदी सुत। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार शब्द लिखाए उनुत। मुहम्मद ईमान, कलिजुग प्रगट्या कुरान। सदी चौधवीं मिट जाए निशान। सच कर्म कर्म सच कर्म कर्म सच ना जगत रहे माण। माता गऊ रक्खक भगवान होवे ग्वाला कृष्न निधान। कलिजुग प्रगटे निहकलंक बली बलवान। सँघारे दुष्ट जो गऊ बध खाण। सतिजुग साचा प्रगटे, मदि मासी नज़र ना आण। एक शब्द करे वरतार, चार कुन्ट होए गुंजान। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, तीन लोक लोक तीन विष्नूं भगवान। मारे शब्द अल्ला अलाही। प्रगट जोत करे ख्वार निकाही। धरे प्रकाश साची जोत वड दाता बेपरवाही। महाराज शेर सिँघ तुध जेवड, अवर कोई दीसे नाही। मुहम्मद संग मुहम्मदी, प्रभ अन्त करे ख्वार। वेला अन्त अन्त आ गया, चार जुगां आई हार। पायण दरोही ख़ुदाए नबी रसूल दी, प्रभ साचे शब्द मारी मार। कोई नज़र ना आवे पीर दस्तगीर, ऐसा करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट निहकलंक अवतार। निहकलंक रूप नरायण। सुभागा धाम, प्रभ प्रगटे विच हिन्दवायण। प्रभ साचा धाम गुरमुख पेखे नैण। प्रभ जोती राम, सिर सोहे मुकट बैण।

सोहँ शब्द जपावे नाम, गुरमुख साचे रसना लैण। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, कलिजुग जीव ना सकण कहण। प्रगटी जोत प्रभ जाए अबलीस। पीर पैग़ंबर कलिजुग अन्त कोई ना दीस। निहकलंक प्रभ साचा, छत्र झुलावे सीस। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल कलिजुग मिटाए, कर बीस इकीस। कुरान कुरा आप प्रभ दे मिटा। बत्ती सपारे जो मुहम्मद गया लिखा। प्रगट जोत निहकलंक पकड़ पहाड़ों चरनीं लवे ला। मिशर निवाही मुहम्मद हज़रत मुहम्मदी, अन्तकाल ख़ाक गोदी जाए सवा। कलिजुग प्रगट महाराज शेर सिँघ बेमुख खपाए, विच उलटी मति वसा। गया मुहम्मद मिट जायण मुहम्मदी। हसन हुसैन ना रहे अहिमदी। मिट जाए नाम तेरा अली शाह, ना रहे तेरी राम दी। निहकलंक प्रगट अवतार, धर जोत कृष्ना शाम दी। उपाए कलि खपाए अन्त। कोई ना जाणे की करे भगवन्त। शब्द वखाणे कोई निर्मल सन्त। कलिजुग भुल्ले बेमुख जन्त। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह सर्ब गुणवन्त। मूसा ईसा प्रभ कलि उपाया। कलिजुग अन्तिम करन दा खेल रचाया। भगत वछल गऊ धेन बेमुखां आहार बणाया। कलिजुग जामा धार, निहकलंक बेमुखां आण खपाया। गया अथर्बण अल्ला वेद। कलिजुग प्रगट निहकलंक सभ खुल्हाए भेद। पहले शब्द लिखाए, फिर सृष्ट कराए खेद। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप ना किसे जणावे भेद। आप अभेद जगत प्रभ भेदा। चार जुग वरते वरते प्रभ विच चार वेदा। चौथा वेद आया कलिजुग अथर्बण, निहकलंक खेल अचरज अचरज खेल जगत विच खेदा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जामा धरे अछल अछेदा। जामा धारे विच घनकपुरी। धारे जोत, बेमुख जीवां ना दीसे धाए दूरी। मार पछाड़े, साची प्रीत ना संग प्रभ जुड़ी। महाराज शेर सिँघ कलिजुग अन्त झूठे धन्दे झूठी दुनियां सारी रुड़्ही। झूठे धन्दे झूठे मानस। प्रभ सिमरन का किया आलस। कोई जन विरला आत्म खालस। निहकलंक रसना जप जीव, तेरे मन होए ना आलस। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल गुरसिख तेरा बण जाए सालस। आया प्रभ जगत विहारी। कलिजुग पैग़ंबर ईसा मूसा करे ख्वारी। जामा धार निहकलंक, जोत सरूप सृष्ट सँघारी। अग्न जोत दिशा पच्छिम प्रभ लाए जोत चिंगारी। महाराज शेर सिँघ तेरे नाम, चार कुन्ट होवे जै जै जैकारी। मिटे ईसा ना रहे असीला। जोत सरूपी प्रभ अन्त करन दा किया हीला। झूठा जाम प्याए, देह आत्म जोत लगाई तीला। महाराज शेर सिँघ नाम निहकलंक रखा गया, बैठ गुर गोबिन्द घोड़ा नीला। नीले घोड़े बैठ, गोबिन्द करी पुकार। कच्ची छड्डी अनन्दपुर, सिक्खां दवाई हार। कलिजुग अन्त करन नूं, प्रभ प्रगटे निहकलंक अवतार। साचा गुर शब्द लिखा गया, साची सुण प्रभ पुकार। कलिजुग वेला अन्त आ गया, प्रभ करे जोत आकार। जामा घनकपुरी विच धार के, निहकलंक ल्या अवतार। महाराज शेर सिँघ नाम रखायके, छड्डी देह किया जोत आकार। विच साचे सिख जोत

टिकायके, साचा भगत धरे प्यार। कलिजुग अन्तिम अन्त करायके, सतिजुग साचा सच धरे प्यार। सतिगुर मनी सिँघ तख्त बिठायके, सतिजुग तिलक लगाए आप दातार। चार वरन चरन लगायके, चार कुन्ट सोहँ शब्द होवे जै जै जैकार। आपणा जोत सरूपी भेख वटायके, वरते विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत जगायके, गुरसिक्खां बेड़ा कर जाए पार। हुक्मे तेरे सत्तर लक्ख। चार चुफेर प्रभास रोवण कक्ख। कलिजुग अन्धेर जिउँ चन्द रात मस्स। हाहाकार चार चुफेर, शब्द बाण प्रभ मारया कस। साचा प्रभ प्रगटे ना लाए डेर, साध संगत बचे सो जो जन चरनीं आवे नस्स। आप अडोल रहे बैठ, सर्ब सृष्ट होई भस। जुग चौवीए निहकलंक पाया फेरा, जग आपणा जाए दस्स। वड्डा जामा विच देह धारी निहकलंक। एका जोती साचे आवे, जगत भेख कर अनक। जुगो जुग भेख प्रभ धारे, धरे जोत विच जीव कनक। चौथे जुग प्रभ आया, जोत सरूप पुरी विच घनक। कलिजुग उत्तम सोहँ शब्द सुणाया, जन विरले हिरदे रक्खे मणक। वरते कहर कहर अन्धेरी। निहकलंक कलि वारी तेरी। पै जाए दुहाई ना लग्गे देरी। साचा प्रभ कलिजुग प्रगट, ना करे हेरा फेरी। महाराज शेर सिँघ जीव की जाणे गति तेरी। ना जाणे जीव, ना जणाए प्रभ। बेमुख वस नहीं कुछ, जिउँ कल्लर विच दब्ब। भगत वखाणे गुण निधाने, दर तेरा गया लभ। महाराज शेर सिँघ तेरे भाणे, जगत अन्धेरी कहर जाए वग। वरते कहर, उलटे वहिण दरया। एका पहर एका लहर, भैण तांई छड्ड जायण भरा। हिन्दवाणीआं मुगलाणीआं आवण जावण वाहो दा। भाणा वरते निहकलंक तेरा, कोई रहे ना आपणे थां। मारे मार उजाड़े, चार कुन्ट जीव जन्त उखाड़े। नारीआं रोवण ना दिसण लाड़े। रोवण मावां गोदी खाली, अन्त होए दिन माड़े। बेमुख रोए अन्तकाल, कलिजुग अग्न जोत प्रभ साड़े। जामा धार निहकलंक, सभ सृष्ट भजाए दिन दिहाड़े। महाराज शेर सिँघ साध संगत साची रंगण नाम इक्क चाढ़े। दर दर घर घर पै जाए दुहाई। नर नर वर वर रोवे लोकाई। कलिजुग अन्तिम सतिजुग वासी देवे पा दुहाई। महाराज शेर सिँघ सो जन उधरे, जो आए तेरी सरनाई। मार मार मार प्रभ शब्द बाण जग मारया। तार तार तार प्रभ जन भगतां शब्द ज्ञान संग तारया। ख्वार ख्वार ख्वार कर, कलिजुग जीव सँघारया। अधार अधार अधार कर, कर किरपा साचा गुरसिख उधारया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, रसना साचा सोहँ शब्द उचारया। सोहँ शब्द जगत प्रवेश। साचे साहिब को सदा आदेस। कलिजुग अचरज किया भेस। महाराज शेर सिँघ तेरा ऊँचा दर, दर खड़े लक्ख महेष। लक्ख विष्न महेष तेरा दरस पायण। बाशक सीस सहँसर, मुख रसना नाम तेरा गायण। ऊँचा दर तेरा निहकलंक गुरमुख आस पुजायण। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुरसिख भेव कलि पायण। पेख पेख पेख जीव मिटे भेख। घनकपुर वासी साचे लिखाए लेख। कलिजुग जामा

धार गुरसिख मेट वखाए लिखी विधाता रेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चरनीं लग जीव जगत ना वेख। जगत भुलेवा प्रभ भरम दा। गुरसिख चरन प्रीती कर, नहीं वेला हुण शर्म दा। प्रभ साची नीती देवे फल देवे पूरब कर्म दा। कर किरपा चरन प्रीती देव, दुःख लाहवे सारे जन्म दा। महाराज शेर सिँघ कलि निहकलंक सति कर माण, ना वेला अन्त भरम दा। भुलेखा भरम जीव मानस गंवाए जन्म। प्रगट जोत प्रभ किया करम। महाराज शेर सिँघ सच सतिजुग उपजावे, सच आपणा चलावे धर्म। साचा धर्म सति सतिजुग रहणा। सति वड्याई देवे प्रभ, विच साध संगत मिल बहिणा। साध संगत सभ की जोत, जन मन्न भाई भैणां। महाराज शेर सिँघ सति बचन लिखाए, सति साध संगत मन्न लैणा। जो ना मन्ने, ना राखे भाउ। साचा प्रभ ना लागे दाउ। आपणा किया जीव अन्त फल आपे खाउ। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, दरगाह साची करे निआउँ। साची दरगाह प्रभ सदा खड़ा हज़ूर। बेमुख भर भर डोबे पूर। साध संगत प्रभ आसा पूर। आत्म धरे जोत सरूपी साचा नूर। महाराज शेर सिँघ तेरा साचा नाम, ना तुट्टे कदे सरूर। साचा नाम साची रास। साचा प्रभ विच आत्म साची वास। जन भगतां प्रभ होए रहे सद दास। प्रगटे जोत जन दोए जोड़ करे अरदास। महाराज शेर सिँघ साध संगत तेरे हिरदे किया निवास। हिरदे वसे प्रभ वसनीक। हँकारीआं प्रभ तारदे जिउँ तारे बाल्मीक। साचा शब्द ज्ञान दे, आत्म साची पावे भीख। महाराज शेर सिँघ तेरा साचा अमृत, रसना रस माणे जीव रसना पीख। पीवत पीवत पीवत आत्म तृप्तास्सया। जीवत जीवत जीवत गुरसिख ना कदे विनास्सया। दीपक दीपक दीपक जोत धरे प्रभ अबिनाशया। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, रख गुरसिख चरन धरवास्सया। चरन धरवास मिले धर्मापत। सर्ब जीव की जाणै प्रभ मित गति। आत्म शब्द उपजावे सति सति। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, अन्तकाल कलिजुग रक्खे पति। पतिपरमेश्वर सर्ब कल परिपूरन। शब्द लिखाए सच, ना रसना शब्द अधूरन। गुरसिक्खां जोत जगाई रंग चढ़ाई प्रभ चरन धूढ़न। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, हिरदे वसे ना वेख जीव दूरन। दूर ना दीसे प्रभ दयालू। हिरदे प्रवेशे सर्ब कृपालू। आत्म जोत सरूपी भेसे, ना करे कोई वसालू। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, जगत भगत सर्ब प्रितपालू। जगत पित तेरी सरनाया। भय भयानक वरते कलि, दर साचा दिस ना आया। अन्त वेला ना जाए टल, जीव लक्ख उपाव बणाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक धुरदरगाहों आया चल, जिस अन्तिम खेल रचाया। आया ईश्वर विच्चों सचखण्ड। सृष्ट सबाई होवे रंड। चार कुन्ट पै जाए डण्ड। निहकलंक जोत धरी विच वरभंड। शब्द अन्धेरी कलिजुग जीव जाए छंड। साचा शब्द अधार, प्रभ गुरमुखां जाए वंड। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, गुर कलिजुग जोत प्रचण्ड। चण्ड प्रचण्ड प्रभ तेरी

४६६ ०१

जोत। एक शब्द लगावे जग चोट। दुखी जीव बिल्लाए जिउँ डिग्गे आलणे बोट। महाराज शेर सिँघ तेरा खुल्हा दर, दर आयण पापी कोट। दर दर प्रभ दर द्वार। किरपा कर प्रभ अन्त देवे तार। कलिजुग दस्से साची बिध, जीव बेड़ा हो जाए पार। सोहँ शब्द मार्ग सिद्ध, कलिजुग जीव ना होए ख्वार। रसना जप आत्म जाए विध, खुल्ह जाए दस्म दुआर। घर पावे नौं निध, ना होवे जगत ख्वार। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, देवे सोहँ शब्द अधार। साचा शब्द सच संगीत। निहकलंक साची तेरे चरन प्रीत। चरन लाग जीव सदा अतीत। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, चार वरन तेरे गावे रसना गीत। साचा गीत कलिजुग गोबिन्द। बेमुख कलिजुग रहे भविंद। आयण दर कर जायण निन्द। चरन लाग कलिजुग प्रभ प्रगटे बख्शिंद। अमृत रस पीओ प्रभ वरखाए अमृत नीर सिंध। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग प्रगट्या मृगिन्द। उठ जीव जाग, क्यों वक्त विहाया। उठ जीव जाग, वेला प्रभ मिलण दा आया। उठ जीव जाग, प्रभ चार कुन्ट अग्न जोत जलाया। उठ जीव जाग, बेमुखां हाहाकार मचाया। उठ जीव जाग, क्यों जगत शरमाया। उठ जीव जाग, प्रभ लाहे कलिजुग माया। उठ जीव जाग, वेला अन्त अन्त दा आया। उठ जीव जाग, थिर घर वासी विच मात दे आया। उठ जीव जाग, प्रभ पड़ शरनाया। उठ जीव जाग, रैण सौं के वक्त लँघाया। उठ जीव जाग, जुग चौथे निहकलंक जग आया। उठ जीव जाग, क्यों सोए भाग आपणा आप भुलाया। उठ जीव जाग, निहकलंक हथ पकड़ी सृष्ट वाग, क्यों साचा प्रभ भुलाया। उठ गुरमुख जाग, प्रभ साचा शब्द सुणावे राग, बेमुखां कलिजुग सुआया। उठ जीव जाग, सुण शब्द अहलाद, प्रभ कलिजुग नाद वजाया। उठ जीव जाग, वेख की वरते ब्रह्माद, प्रभ तीन लोक उलटाया। मिटे जन्म ब्याध, महाराज शेर सिँघ निहकलंक दर आया। निहकलंक भारत प्रभ साचा भूप। चार वरन परोए इक्क सूत। धरती मात वरन चार वर दे, कराए दे इक्क पूत। महाराज शेर सिँघ जामा धार जोत निहकलंक बिन रूप। रूप ना दीसे निहकलंक, वरते विच संसार। रूप ना दीसे निहकलंक, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकार। रूप ना दीसे निहकलंक, शब्द लिखावे अगम्म अपार। रूप ना दीसे निहकलंक, गुरमुखां देवे दरस अपार। रूप ना दीसे निहकलंक, कलि आया धर जोत अपार। रूप ना दीसे निहकलंक, झूठी माया पाई संसार। रूप ना दीसे निहकलंक, रसना लग्गा मदि मास आहार। रूप ना दीसे निहकलंक, कर्म धर्म जीव दोवें दित्ते हार। रूप ना दीसे निहकलंक, ना दीसे तेरा सच दरबार। सतिजुग छत्र झुल्ले तेरे सीसे, गुरसिक्खां देवे चरन प्यार। जगाई जोत निहकलंक, जगत जलाया। जगाई जोत निहकलंक, शब्द डंक लगाया। जगाई जोत निहकलंक, चार कुन्ट टुम्ब उठाया। जगाई जोत निहकलंक, दुःख भुक्ख जगत जीव दुखाया। जोत जगाई निहकलंक, सुख कलि जीव सर्ब मिटाया। जोत जगाई

निहकलंक, चार कुन्ट वहीर चलाया। जोत जगाई निहकलंक, राउ रंक इक्क कराया। जोत जगाई निहकलंक, ऊँच नीच कोई दिस ना आया। जोत जगाई निहकलंक, वरन चार इक्क धाम बहाया। जोत जगाई निहकलंक, सोहँ साचा शब्द चलाया। जोत जगाई निहकलंक, उनन्जा पवण सिर छत्र झुलाया। जोत जगाई निहकलंक, करोड़ तेतीस चरन बहाया। जोत जगाई निहकलंक, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ शरन तकाया। जोत जगाई निहकलंक, बीर बैताल कोई दिस ना आया। जोत जगाई निहकलंक, हाकन डाकन सिर मुंडवाया। जोत जगाई निहकलंक, चार कुन्ट मृदंग वजाया। जोत जगाई निहकलंक, बीर मुहम्मद वस कराया। जोत जगाई निहकलंक, कुरान अञ्जील दे मिटाया। जोत जगाई निहकलंक, सरबत्त तीर्थां जोत खिचाया। जोत जगाई निहकलंक, कोई दूसर रहण ना पाया। जोत जगाई निहकलंक, पूजा पाठ कलिजुग सभ मिटाया। जोत जगाई निहकलंक, अन्तकाल कलिजुग कोई दूसर दिस ना आया। जोत जगाई निहकलंक, सच आपणा आप वरताया। जोत जगाई निहकलंक, साचा नाम सतिजुग राह दिसाया। जोत जगाई निहकलंक, सतिगुर मनी सिँघ सतिजुग उपजाया। जोत जगाई निहकलंक, सिर साचा छत्र झुलाया। जोत जगाई निहकलंक, राजा राणा सभ शरनी लाया। जोत जगाई निहकलंक, महाराज शेर सिँघ नाउँ धराया। कर जोत आकार निहकलंक प्रकाशया। कर जोत प्रकाश, कलि सृष्ट करे सभ नास्सया। कर जोत प्रकाश, करे सभ राउ दासन दास्सया। कर जोत प्रकाश निहकलंक, साचा शब्द चलावे प्रभ अबिनास्सया। कर जोत प्रकाश निहकलंक, साध संगत प्रभ करे निवास्सया। कर जोत प्रकाश निहकलंक, महाराज शेर सिँघ आए जग कर दरस सर्ब दुःख नास्सया। धरी जोत प्रभ जगत गम्भीर। धरी जोत निहकलंक, गुरसिख पूरन सति सति सरीर। धरी जोत निहकलंक, सोहँ शब्द रसन चलाए तीर। धरी जोत निहकलंक, बेमुख ना बन्नूण धीर। धरी जोत निहकलंक, विच हउमे लाई पीड़। धरी जोत निहकलंक, बेमुख दित्ते रुला लथ्थे चीर। धरी जोत निहकलंक, करे कलिजुग अख़ीर। धरी जोत निहकलंक, बेमुखां करे शांत सरीर। धरी जोत निहकलंक, होए सहाई वेले भीड़। धरी जोत निहकलंक, वड पीरां पीर। धरी जोत निहकलंक, महाराज शेर सिँघ गुणी गहीर। साचा जामा निहकलंक, सच्चम सच। साचा जामा निहकलंक झूठी दुनियां जाए मच। साचा जामा निहकलंक, बेमुख कलि कचन कच्च। साचा जामा निहकलंक, झूठे राज राग घर दिसण कच। साचा जामा निहकलंक, जोत सरूप प्रगट गुरसिक्खां गया रच। महाराज शेर सिँघ साचा शब्द तेरा, तेरे बचन लिखाए सच। सच बचन तेरा निहकलंक, आप सदा अडोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, सद आप अतोल। सति बचन तेरा निहकलंक, दुनियां सोई रही अनभोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, कलिजुग तोले पूरे तोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, बेमुख जीव सौं रहे कोल। साचा बचन

तेरा निहकलंक, अन्तकाल कलिजुग देवे भुलेखा खोल्। साचा जामा तेरा निहकलंक, सच शब्द वजावे ढोल। साचा जामा तेरा निहकलंक, सर्ब सृष्ट रिहा कलि मौल। साचा जामा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक उप्पर धौल। धर जोत निहकलंक, जगत डुलाया । धर जोत निहकलंक, राउ रंक भुलाया। धर जोत निहकलंक, बेमुखां मन हँकार वसाया । धर जोत निहकलंक, क्रोध चण्डाल विच धराया। धर जोत निहकलंक, अग्न जोत बेमुखां हिरदा जलाया। धर जोत निहकलंक, उलटे गेड़ कलिजुग भवाया। धर जोत निहकलंक, रणभूमी इक्क खेल रचाया। प्रगट जोत निहकलंक, वेखे खेल आप रघुराया। धर जोत निहकलंक, चण्ड प्रचण्ड प्रभ तेज वधाया। धर जोत निहकलंक, झूठा ढूठा कलिजुग भन्न वखाया। धर जोत निहकलंक, सतिजुग साचा लाया। धर जोत निहकलंक, गुरमुखां आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाया। धर जोत निहकलंक, निरहारी निरवैर समाया। धर जोत निहकलंक, गुरसिक्खां साचा राह दिखाया। धर जोत निहकलंक, जन भगत जामे बहत्तर लिख्त कराया। धर जोत निहकलंक, राजा राणा सभ तख्तों लाहया। धर जोत निहकलंक, एका शब्द एका सुरत चलाया। धर जोत निहकलंक, सति परमेश्वर विच कलिजुग आया। धर जोत निहकलंक, भगत वछल नाथ त्रैलोकी नाउँ नरायण प्रभ नाम रखाया। प्रगटे जोत निहकलंक, शब्द रसन अन्तकाल कलिजुग आप प्रभ चलाया। प्रगट जोत निहकलंक, बेमुखां हिरदा नष्ट कराया। प्रगट जोत निहकलंक, चार कुन्ट अन्धेर कराया। प्रगट जोत निहकलंक, आपणा भाणा आप वरताया। प्रगट जोत निहकलंक, त्रैभवन धनी जगत हिलाया। प्रगट जोत निहकलंक, कलिजुग जामा धार महाराज शेर सिँघ नाम धराया।

४६६
०१

❋ ६ सावण २००८ बिक्रमी मेरठ विहार होया ❋

भगतन देवे प्रभ वड्याई। साची जोत विच ललाट जगाई। तीन भवन सर्ब गवन दी सोझी पाई। निर्मल जोत प्रभ विच देह जगाई। जगे जोत होए उज्जयार, अन्ध अन्धेर सर्ब मिट जाई। मिटे अन्धेर शब्द धुन्कार, अनहद साचा राग सुणाई। सुणया राग गया जीव जगत त्याग, साचे प्रभ चरन बण आई। लाग चरन प्रभ साची शरन, अन्त परमगति पाई। परमगति पाई मिली वड्याई, विच जोती जोत मिलाई। निर्मल जोत जोत मिलाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी गेड़ कटाई। भगत जन दर पाया माण। दरगाह होया सच परवान। अन्तकाल विच जाए बबाण। सचखण्ड साचा सिख सच पाए अस्थान। महाराज शेर सिँघ धर्म राए तेरे शब्द दी बाण। शब्द बाण असराईल। गुरसिख लेखा देण ना जबराईल।

शब्द साचा दरगाह साची होवे वकील। महाराज शेर सिँघ शब्द साचा, गुरसिख तेरी सच दलील। भगत जनां प्रभ आप रखवाल। एथे ओथे करे प्रितपाल। साचा शब्द सोहँ आत्म पाई माल। उज्जल होया विच कलिजुग, गुरसिख साचा सिँघ पाल। शब्द भण्डारी प्रभ साचा, दे शब्द कलि किया माला माल। दे वड्याई जन भगत, ब्रह्मलोक खड़ा चरन दवाल। महाराज शेर सिँघ तेरे हथ वड्याई, जन भगतां होवे सदा रखवाल। रक्खे बिरद संवारे पैज। जन भगतां उधारे मारे नैज। साध संगत प्रभ मिल्या कलिजुग सहिज। महाराज शेर सिँघ शब्द साचा, सच रसना जाए कहिज। साचा शब्द दे गुरसिक्खां, प्रभ आत्म धुन वजाई। साचा शब्द दे प्रभ गुरसिक्खां, प्रभ साचे बूझ बुझाई। साचा शब्द दे प्रभ गुरसिक्खां, रंग साचा मजीठ दे चढ़ाई। गुरसिक्खां ब्रह्म ज्ञानियां, साचा ब्रह्म ज्ञान दवाई। साची जोत जगा गुरसिक्खां, कलिजुग दे वड्याई। साची जोत जगा गुरसिक्खां, प्रभ आत्म दे जगाई। साची जोत जगा गुरसिक्खां, थिर घर वासी सच दे बुझाई। साची जोत जगा गुरसिक्खां महाराज शेर सिँघ सतिजुग साची नींह रखाई। धरे जोत प्रभ विच गुरसिक्खां, आत्म करे उज्जयारा। धरे जोत प्रभ विच गुरसिक्खां, खोल्हे दस्म दुआरा। धरे जोत प्रभ विच गुरसिक्खां मिटाए धुंधूकारा। धरे जोत प्रभ विच गुरसिक्खां, बंध छुट्टे सर्ब संसारा। धरे जोत प्रभ विच गुरसिक्खां, महाराज शेर सिँघ हरि भगत प्यारा। हरि भगत हरि देवे माण। जन भगत जीव बाल अञ्याण। सोहँ शब्द आत्म देवे सति ज्ञान। महाराज शेर सिँघ कलिजुग वरते, तेरा शब्द सचा परवान। उत्तम भगत उत्तम ज़ात। सोहँ शब्द प्रभ देवे सच्ची करामात। उत्पत होवे विच सतिजुग, पाताल आकाश मात। गुरमुख रसना गायण उठ वेले प्रभात। बेमुख सुत्तयां रैण विहायण, ना मिल्या प्रभ साचा पात। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, जन भगतां कलिजुग उत्तम ज़ात। भगत वछल भगत भण्डारी। सोहँ शब्द देवे दात, प्रभ आत्म अधारी। बैठे आप अडोल, जोत सरूप सदा निराधारी। कलिजुग जामा धार, निहकलंक जन भगतां पैज संवारी। संवारे पैज वड सागर सिंध। देवे माण जगत वड्याई, जिउँ सुरप्त राजा इन्द। होए सहाई अन्त प्रभ, रक्खे लाज गुर गोबिन्द। महाराज शेर सिँघ कलि तेरा दरस, जन भगतां लाहवे चिन्द। आत्म चिन्द संसा जाए। शब्द धुन प्रभ दे उपजाए। खुल्हाए सुन, अनहद साचा राग सुणाए। रुण झुण अमृत वरखा विच आत्म लाए। अमृत झिरना झिर, अमृत बूंद कँवल में पाए। पावे बूंद खुल्हे कँवल फुल, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाए। मिटे अन्धेर मिले प्रभ अतुल, ना तुल्या जाए। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ, जीव साची जोत जगाए। जगे जोत आत्म प्रकाश। सर्ब दु:ख होए नास। दूख विनास प्रभ दीसे पास। प्रभ दीसे पास, जोत सरूप सदा अबिनाश। जोत सरूप सदा अबिनाश, साध संगत तेरा होया दास। साध संगत प्रभ दासन दासा। त्रैलोकी नाथ प्रगट जोत, विच संगत

करे वासा। जन भगतां दीसे प्रभ सद है साथा। गुर चरन प्रीती साचा भरवासा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग रक्खे दे कर हाथ, जो जन रसना जपे स्वास स्वासा। रसना जप जपे गुर नाउँ। साची दरगाह प्रभ सच्चा देवे थाउँ। कलिजुग प्रगटे निहकलंक, गुरसिख लागे पाउँ। महाराज शेर सिँघ पकड़ तराया, गुरसिख कलिजुग बाहों। बाहों पकड़ तराए प्रभ, दु:ख दर्द दुहेला। जामा कलिजुग धार, गुरसिक्खां पंचम जेठ किया मेला। बेमुख गया ख्वार कर, बेड़ा विच शौह दरयाए ठेला। झूठी खेल प्रभ जगत लगाया। साचा नाम कलिजुग पाए माया। बेमुखां मनों भुलाया चित ना आया साचा प्रभ, मदि मास रसना विकार चलाया। कलिजुग जामा धार, निहकलंक दुष्टां आण खपाया। दूत दुष्ट प्रभ दर दुराचार। बेमुख कलिजुग जीव, चल आए ना प्रभ दरबार। जामा धारे निहकलंक, जोत सरूप नर अवतार। झूठी दुनियां सौं रही, लम्मे पैर पसार। वेला कलिजुग अन्त आ गया, प्रभ शब्द मारे मार। बेमुखां वक्त विहा गया, दर दर होइण ख्वार। साचा प्रभ लिख्त करा गया, जोत निरँजण कर आकार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक नाउँ रखा गया, जन भगतां देवे शब्द अधार। निहकलंक तेरा साचा नाउँ। सोहँ साचा शब्द, साचे गुण गाउ। प्रगट जोत निहकलंक, इक्क कराए रंकां राउ। सोहँ शब्द वजाए धुनक, सुणाए सभनी थाउँ। जन भगतां सुहायण बंक, जिथ्थे प्रभ वसावे साचा नाउँ। धराए नाम प्रभ आप धरनापति। जन भगतां
४७१ जाणे प्रभ आप मित गति। सतिजुग देवे साचा आत्म सति। गुरसिक्खां बुध बिबेक कर, विच आत्म पावे पावे साची मति। ४७१
०१ ०१
गुरसिख ना जाए डोल, प्रभ धीरज देवे यति। महाराज शेर सिँघ सतिजुग सोहँ साचा शब्द चलावे सति सति सति। सति सति सति वरताए सचा पातशाह। कलिजुग जामा धारे, निहकलंक बेपरवाह। अन्तकाल कलिजुग कोई दीसे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द जपाए नां। साचा शब्द आत्म धुज। गुरमुख जोत जगाए, ना जाए बुझ। गुरचरन प्रीत जीव, कलिजुग गुर चरनी लुझ। महाराज शेर सिँघ शब्द भण्डारी, शब्द ज्ञान देवे जीव तुझ। शब्द ज्ञान गुरचरन विगासण। आत्म ध्यान सर्ब दु:ख नासण। उपजे ब्रह्म ज्ञान, धरे जोत प्रभ अबिनाशण। बेमुख दर ते रहण ना पाए, सोहँ शब्द सुण उठ नासण। गुरसिक्खां प्रभ साची जोत जगाए, सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वासण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दास दासन। भगत जन्म प्रभ सुफल कराए, जुगो जुग लै अवतार मातलोक विच होए सहाए। कलिजुग जामा धार निहकलंक प्रभ नां रखाए। बहत्तर जामे भगत जन प्रगट नाम लिखाए। उत्तम रक्खे पाल सिँघ, ब्रह्मलोक विच बिठाए। ब्रह्मा अन्त माण गंवाए, विच जोती जोत मिलाए। दूसर नाउँ गुर गुरसिख वड्याई। सवरन सिँघ दर अग्गे बहाई। गंवाए धू माण, चौथे जुग प्रभ दे खपाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खण्ड ब्रह्मण्ड दे उलटाई। माणा सिँघ तेरी भगती

महान। खड़िआ प्रभ विच बैकुण्ठ बबाण। मिलाए जोती जोत इक्क कर, प्रभ जोती जोत मिलाण। साची दरगाह मिले वड्याई, मिटया जगत आवण जाण। बुध्ध सिँघ तेरी बुध्ध बिबेक। एका रक्खी प्रभ चरन टेक। कमाई सेव कलिजुग प्रभ साचा वेख। जामा धार निहकलंक, साचे लिखावे लेख। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, कर जोत सरूपी भेख। गुरसिख घाल तेरी थाएँ। कलिजुग मानस जन्म धन्न धन्न जणेंदी माए। बेड़ा ल्या बन्नू, साचा वक्त सुहाए। बाले चक्क बणे धाम न्यारा, रसना दुनियां गाए। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, बुध्ध सिँघ सेव पाई थाएँ। कलिजुग धाम ना रहसी नाम। अन्ध अन्धेरी शाम। बेमुखां अन्तकाल मौत पिलाए जाम। जन भगतां देवे सोहँ साचा नाम। जामा धार निहकलंक, कलिजुग मिटाए सच कराए नाम। सचा कर्म करे प्रभ, कलिजुग मिटाए। सचा धर्म धरे प्रभ, सतिजुग साचा लाए। सतिजुग सति सति वरते, सोहँ शब्द चलाए। सतिवादी जीव ना कबहूं डरते, रहे राम सिउँ लिव लाए। निहकलंक तेरा भाणा कलि वरते, दुखी जीव जन्त रहे बिल्लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन ना कोए सहाए। सरबत्त तीर्थां प्रभ नाम मिटाए। तट्ट तीर्थ कोई रहण ना पाए। खाणी बाणी कोई दिस ना आए। कलिजुग अन्त गीता ज्ञान मिटाए। कुरान अञ्जील प्रभ अछेद कराए। जामा धार निहकलंक, एका नाम जगत चलाए। सोहँ शब्द वजाए डंक, चार कुन्ट जै जै जैकार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सति धर्म उपाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सति पुरख प्रगटाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सति दीपक जोत जगाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सति मार्ग सति चलाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सति सति सति वरताए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सच सच गुरमुखां झोली पाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सतिवाद सतिवाद रचाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, इक्क सोहँ शब्द चलाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, चार वरन इक्क कराए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सतिजुग एका पन्थ रचाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सति धर्म दी नींह रखाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, ऊँच नीच दा भेव चुकाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, राउ रंक इक्क कराए। सतिजुग सालस आप प्रभ, दुःख भुक्ख रोग मिटाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, काम क्रोध हँकार मिटाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, राजस तामस नेड़ ना आए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सांतक रूप सति जीव उपाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सति पुरख सति वक्त बणाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सर्ब साची जोत जगाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, मदि मास सर्ब हटाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सभ आपणी पूजा लाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सभ भरम भुलेखे लाहे। सतिजुग सालस आप प्रभ, सतिजुग आपणी जोत प्रगटाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, जन भगतां साचा राह दिसाए। सतिजुग सालस

आप प्रभ, गुरसिक्खां बजर कपाट खुल्हाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, आत्म कुफल सोहँ चाबी लाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, कर किरपा आत्म किवाड़ खुल्हाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, खण्डां वरभंडां दीपां लोआं सर्ब थांईं होए सहाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, सतिजुग बणे साची नाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, अन्तकाल सति पुरखां दरस दिखाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, दे दरस देह छुडाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख विच बबाण बिठाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, जमदूत नेड़ ना आए। सतिजुग सालस आप प्रभ, गुरसिक्खां धर्म राज ना दे सजाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, विच जोती जोत मिलाए। सतिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दूसर कोई नाहे। सतिजुग धरे प्रभ जोत आकार। साचा शब्द सोहँ वरते भण्डार। जन भगतां दर घर हरि का द्वार। निहकलंक प्रगट जोत, देवे दरस अगम्म अपार। एका जोत आत्म दे जाए अधार। जगे जोत विच देह, आत्म होए उज्जयार। मिटे भेत जिउँ अनातम, ना कलिजुग होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक साचा तेरा दरबार । दरबार सच सचा प्रभ दरबारी। कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतारी। सतिजुग होवे निहकलंक सची तेरी सिक्दारी। सृष्ट सबाई प्रभ आए चरन द्वारी। सोहँ शब्द चार कुन्ट सर्ब जीव रसन उचारी। साचा शब्द होवे सतिजुग, जीव साचा वडहारी। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे सच शब्द भण्डारी। साचा शब्द भण्डार प्रभ, गुरसिख कलि मंग। ऊँचा दर दरबार प्रभ, भुल जीव ना संग। प्रगटे निहकलंक अवतार नर, वड सूरा सरबंग। सोहँ शब्द उधारे, काया चाढ़े सीतलता रंग। साचा शब्द गुरचरन प्यार दे, महाराज शेर सिँघ साचा गुर साचा वर ल्या सिख मंग। साचा दर सच घर ते पाईए। आत्म चिन्दया सर्ब मिटाईए। निजानंद निज मांहि प्रगटाईए । निहकलंक बख्शिंद चरन लाग अवगुण बख्शाईए। बेमुख करन दर निंद, लक्ख चुरासी सद गेड़ भवाईए। सरन डिग्गे सतिजुग सारी हिन्द, निहकलंक तेरी वड वड्याईए। महाराज शेर सिँघ गुर गुणी गहिंद, चरन लाग सर्ब फल पाईए। अमृत फल गुरचरन सेवा। कलिजुग गुरसिख उत्तम मेवा। मिली वड्याई वड देवी देवा। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह अलख अभेवा। अलख प्रभ ना किसे लखिआ। आपणा भेव ना किसे प्रभ दस्सया। जन भगत देवे प्रभ साची भिख्या। महाराज शेर सिँघ वेले अन्त हथ गुरसिक्खां सिर रक्खया। गुरसिख तेरे नाम वड्याई। कलिजुग निहकलंक सेव कमाई। रैण पसर पसार सुत्ती सर्ब लोकाई। साध संगत रसना जप नाम, हरि नाम आत्म तृखा मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे वड्याई। गुरसिक्खां प्रभ दरस दिखाया। बेमुखां प्रभ नर्क निवास रखाया। गुरसिक्खां सति सोहँ शब्द सुणाया। बेमुखां मदि मास रसन लगाया। गुरसिक्खां आत्म ज्ञान दवाया। बेमुखां काम क्रोध चलाया। गुरसिक्खां प्रभ पतित पुनीत कराया। बेमुखां आत्म

विकार वधाया। गुरसिक्खां निहकलंक आपणा दरस दखाया। बेमुखां कलिजुग माया विच फसाया। गुरमुखां प्रभ अज्ञान अन्धेर मिटाया। बेमुखां प्रभ हउमे ममता रोग वधाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग प्रगट सोहँ खण्डा दो धार चलाया। सोहँ शब्द खण्डा दो धारी। भगतां देवे नाम अधारी। बेमुखां करे ख्वारी। जन भगतां पैज संवारी। बेमुख होए दुष्ट दुराचारी। जन भगतां देवे सतिजुग सची सिक्दारी। बेमुखां कलिजुग ममता लग्गी बीमारी। गुरमुखां अमृत देवे प्रभ वड्डा भण्डारी। बेमुखां दर ते हाहाकारी। गुरसिक्खां सोहँ शब्द प्रभ आत्म करे चमत्कारी। बेमुखां आत्म वसे हत्यारी। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाया खण्डा दो धारी। सोहँ शब्द खण्डा दो धारा। बेमुखां चीरे जिउँ लक्कड़ी आरा। गुरसिक्खां आत्म दीसे सच निरँकारा। बेमुखां डोबे विच मंझधारा। गुरसिक्खां किया सोहँ पार उतारा। बेमुखां प्रभ दर दुरकारा। गुरसिक्खां रसना जप होवे जै जै जैकारा। बेमुख करे कलिजुग अन्त ख्वारा। गुरसिक्खां खोल्हे दस्म दुआरा । महाराज शेर सिँघ शब्द चलाया खण्डा दो धारा। निहकलंक खण्डा दो धार। बेमुखां कलिजुग करे ख्वार। गुरसिक्खां मानस जन्म देवे संवार। बेमुखां आई कलिजुग हार। गुरसिक्खां देवे शब्द सचा तार। बेमुख ना सोहण हरि के द्वार। गुरमुखां धाम सचा दरबार। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाया खंडा दो धार। सोहँ शब्द सचा खण्ड। तीन लोक प्रभ दिया वंड। कलिजुग प्रगट सोहँ शब्द सुणाया वरभंड। सुण सुण जीव ना आत्म होवे रंड। बेमुखां हिरदक होया घमंड । अन्तकाल कलिजुग शब्द बाण मार कहर जाए वंड। सृष्ट सबाई हो जाए खण्ड खण्ड। कोई ना दीसे सुहागण सर्ब रोवण रंड। चार कुन्ट हाहाकार, सुणे पुकार ब्रह्मण्ड। कलिजुग करन विचार, प्रभ खेल मिटाई वरभंड। महाराज शेर सिँघ लिखावे, बेमुख कलिजुग पावण डण्ड। झूठा डंक झूठा पसारा। कलिजुग किया पार किनारा। निहकलंक प्रगटे नर अवतारा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा सच दुआरा। सिख द्वार सदा चल आयण। गुरमुख कलिजुग तरायण। गुरमुख आत्म प्रभ दर्शन पायण। बेमुख हिदरक दुःख प्रभ सदा वसायण। गुरमुख मिल्या सोहँ रसना गायण। बेमुख ना उतरे मन की भुख, रसन रस ना सदा बिल्लायण। महाराज शेर सिँघ सोई कलि वरते, जो हुक्म तेरे मन भायण। भाणा तेरा इक, जग भरम दूजा। कलिजुग जामा धार, सभ मिटाई पूजा। सच सोहँ शब्द चलाया, कोई रहे ना दूजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दर जन भगतां कलिजुग सूझा। सच्चा दर दर आए दरवेश। साची जोत प्रभ आत्म करे प्रवेश। आत्म धरे जोत, गुरसिख बुध विषेष। ऊँचा दर सचा दरबार, दर खड़े सदा महेष। विच पाताल प्रभ साचा घर, सेजा करे उप्पर शेष। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाउँ सदा आदेस। नाम तेरा सति देवे धीर। रसना जप जीव हउमे जाए पीड़। रसना जप जीव, अमृत वरसे देवे

शांत जिउँ बालक सीर। शब्द सुरत गुर ज्ञान दे, गुरसिक्खां देवे धीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव दरस कर होवे शांत सरीर। चार वेद होए बेताले। शांख सति सति सति दीपाले। रिग वेद ना रहे नाले। यजुर गंवाए प्रगट कृष्न वसाले। अथर्बण अल्ला नूर गंवाए खपाए गंवाए गुर गोपाले। जामा धार निहकलंक, सभ पाए अन्त भठयाले। महाराज शेर सिँघ सतिजुग प्रगटाए, सोहँ शब्द चलाए बेमिसाले। मिटाए वेद मिटे पुरान। जाए अञ्जील ना रहे कुरान। सिमरती कोई ना दीसे धुज धुरान। सोहँ मारे शब्द भगवान। महाराज शेर सिँघ कलिजुग वगे तेरे नाम दीबाण। नाम बाण कलिजुग सँघारया। जाणी जाण विष्नूं भगवान कलिजुग मारया। धरती ध्यान किया खेल, जोत सरूप निराधारया। गुणी निधान तेरा भेव, जुगो जुग ना किसे विचारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा निहकलंक कलि धारया। जामा धार जगत भुलाया। जोत सरूपी सरूप प्रभ छुपाया। जन भगतां दे दरस अनूप, प्रभ आपणा भेव चुकाया। महाराज शेर सिँघ कलि साचा भूप, सिर ताज जगत दे लाहया। जगत जीव ना छत्र झुलाए। ऊँच नीच प्रभ इक्क कराए। राउ रंक कोई दिस ना आए। हरन फरन प्रभ खेल वरताए। जल थल थल जल वहाए। दु:ख सुख भुख इक्क रंग वरताए। साचा शब्द गुरसिक्खां आत्म ज्ञान दवाए। महाराज शेर सिँघ तेरे दर, साची नाउँ भिच्छया कोई विरला गुरमुख पाए। भिच्छया देवे प्रभ सिख दर बण भिखारी। देवे दाता वड भगत भण्डारी। खुल्हे दृष्टी होए जोत आकारी। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह खुल्हावे दस्म दुआरी। खुल्हे द्वार मिले आत्म रस। एका शब्द सोहँ आत्म जाए वस। झूठी देह अन्ध अंध्यार छिन्न भीतर जाए नस। साची जोत किया आकार, होया प्रकाश जिउँ रवि ससि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द गया जगत दस। सुरप्त खड़े प्रभ चरन हज़ूर। साचा प्रभ सुरप्त जनां दी आसा पूर। जामा शेर सिँघ निहकलंक वड सूरा सूर। जगाए जोत गुरसिख जिउँ कोहतूर । आत्म मिले सर्ब सुख, साचा विच वसाए नूर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख मस्तक लाए धूढ़। मस्तक धूढ़ साचा धर्म। साचा लेख प्रभ सच लिखाए करम। मातलोक जीव भरवास कर, वास गर्भ ना होवे जरम। एका प्रभ जोत जगाए, जोत मिटाए भरम। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साचा, जुगो जुग चलाए साचा धर्म। साचा धर्म प्रभ जगत चलाए। झूठा ठूठा कलि रहण ना पाए। रसना लूठ जीव बिल्लाए। अमृत सिंच प्रभ सति सन्तोख दवाए। जोत जगाए किंच प्रभ धवल धर्म वरताए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगट साचा मग चलाए। साचा मग चले जग सति । निहकलंक कलि आया, गुरसिक्खां रक्खे पति। आपणा आप बुझाया, ब्रह्म ज्ञान दिया प्रभ तत्त। सोहँ साचा शब्द सुणाया, गुरमुख ना टुट्टे तेरा यति। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया, आत्म जोत जगाई सति। दरस दिखा प्रभ दृष्ट खुल्हाई । साची जोत

प्रभ सच मेल कराई। होया मेल भया प्रकाश, देह अन्धेर सर्ब मिट जाई। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुणतास, साची बूझ बुझाई। साची बूझ सति पुरखां देवे। सति निरँजण जोत विच सुख वसेवे। बेमुख विरले जायण रोत, ना पायण प्रभ भेवे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग विरला गुरमुख सेवे। सेवक सेवा सेव प्रभ लाया। सोहँ साचा शब्द प्रभ रसन चलाया। करे वड्डा वड देव, प्रभ सति मन्त्र दृढ़ाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा प्रगट कलिजुग आया। सेवक सेवा कर प्रभ दर आए। सेवक सेवा कर प्रभ जग वड्याए। सेवक सेवा कर, अन्त साची जोत मिल जाए। सेवक सेवा कर, साध संगत प्रभ निवास दवाए। सेवक सेवा कर, साचा प्रभ जन्म मरन दा गेड़ कटाए। सेवक सेवा कर, गर्भ जून प्रभ फंद कटाए। सेवक सेवा कर, थिर घर वासी थिर घर पहुंचाए। सेवक सेवा कर, अनन्द मंगल प्रभ दर ते गाए। सेवक सेवा कर, सच ऊँचो ऊँच सच प्रभ दिखाए। सेवक सेवा कर, सर्ब जगत प्रभ माण रखाए। सेवक सेवा कर, साची लिख्त प्रभ दे लिखाए। सेवक सेवा कर, जन भगतां विच प्रभ नाम धराए। सेवक सेवा कर, अन्तकाल अमरापद पाए। सेवक सेवा कर, सचखण्ड प्रभ निवास दवाए। सेवक सेवा कर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा होए सहाए। साचा सेवक गुरचरन सेव कमाए। तन मन धन वार, चरन प्रीती लाए। अन्त बेड़ा होया पार, प्रभ प्रगट दरस दिखाए। गया जन्म सुधार, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चेत सिँघ तेरी लाज रखाए। तेरी सेवा गऊ दान। पूरन पाए दर भगवान। सुफल होया विच जहान। चार वरन सतिजुग जायण कुरबान। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, प्रभ साचे दी सेव कमाण। कर दरस मन उतरे भुख, होए कलि निहकलंक बलवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सिक्खा देवे माण। धन्न जन्म गुरसिख, कलिजुग सेव कमाई। प्रगट जामा निहकलंक, कलिजुग देवे वड्याई। आत्म होवे सर्ब सुख, भुख रहे ना राई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां होवे सहाई। गुरसिख कलिजुग सति सरूप। सति पुरख लिखाए आप प्रभ भूप। उज्जल करे मुख विच कलि अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत आकार बिन रंग रूप। शब्द रूप प्रभ शब्द चलाया। शब्द रूप प्रभ जगत तुलाया। शब्द रूप प्रभ अग्न जोत जलाया। शब्द रूप प्रभ खण्ड ब्रह्मण्ड डुलाया। शब्द रूप प्रभ भाणा कलि वरताया। शब्द रूप प्रभ चार कुन्ट हाहाकार मचाया। शब्द रूप प्रभ शब्द शब्दी खेड रचाया। शब्द रूप प्रभ आपणा भेव ना किसे जणाया। शब्द रूप प्रभ शब्द बाण जगत टुम्ब उठाया। शब्द रूप प्रभ शब्द खण्डा कलिजुग हथ फड़ाया। शब्द रूप प्रभ शब्द सति डण्डा, बेमुखां सिर लाया। शब्द रूप प्रभ वसे विच वरभंडा, हाकन डाकन सिर मुंडवाया। शब्द चोट लगाए प्रभ विच नौं खण्डां, आकाश पाताल हिलाया। शब्द रूप प्रभ कलिजुग जामा धार, निहकलंक नां रखाया। शब्द

४७७
०१

रूप महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, सोहँ सतिजुग शब्द चलाया। शब्द चलाए प्रभ सतिजुग सति वरताए। कलिजुग अन्धेर मिटे मिट जाए। सतिजुग सतिवादी सति पुरख उपजाए। सतिजुग तेरी साची नाए। पुरख निरँजण गुरमुखां उप्पर बिठाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सचखण्ड दे पहुंचाए। सोहँ शब्द तेरा कलिजुग गुण। बेमुख मारे कलिजुग चुण। गुरमुखां उपजावे आत्म धुन। साचा राग आत्म उपजावे, गुरसिख लैण कन्न सुण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग वरते वेख जीव तेरे गुण। शब्द उपजावे सति ज्ञान। शब्द उपजावे प्रभ दरस ध्यान। शब्द मिलावे प्रभ विष्नूं भगवान। शब्द तरावे मूर्ख मुग्ध अञ्याण। शब्द सुणावे सोहँ साचा कान। शब्द कलि पावे विरला गुरमुख चतुर सुजान। शब्द कमावे जिस होवे प्रभ मेहरवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख शब्दी मेल मिलाण। शब्द उपजावे आत्म धुन। शब्द खुल्हावे आत्म देह समाधी सुन। शब्द चलावे विच देह रुण झुण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, गुरसिख तारे कलिजुग चुण। शब्द जोत प्रभ आत्म लावे। गुरसिक्खां हिरदा टुम्ब उठावे। प्रभ अबिनाशी प्रगट दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां भरम मिटावे। शब्द सुणे सुणे जन कोए। जिस जन सुणया दुःख रहे ना कोए। गुरमुख विरले प्रभ जोत सरूपी मिल्या, देवे दरस सर्ब सुख होए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुर सिख सिख गुर एका जोत कराए दोए। शब्द उपजे आत्म उज्जयारे। शब्द धुन जिस जन वज्जे धुन्कारे। अमृत झिरना झिरे आत्म फुहारे। सांतक सति वरते, खुल्ह जायण दस्म दुआरे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जाओ चरन बलिहारे। शब्द वजाया प्रभ जगत नगारा। सोहँ शब्द दर सच दुआरा। जन भगतां वरतावे प्रगट जोत अमृत भण्डारा। कलि जीव भुलाए, भुल्ला सर्ब संसारा। निहकलंक कलि आया, जोत सरूपी लै अवतारा। महाराज शेर सिँघ नाम धराया, जोत जगाई अगम्म अपारा। जोत अगम्म अथाह। कलिजुग प्रगटी प्रभ साचे बेपरवाह। साध संगत प्रभ दिखाया सोहँ साचा राह। बेमुखां पड़दा पाया, कलिजुग ना दीसे सच्चा थां। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख चरनीं लग जा। साची शब्द तेरी धुन्कार। सुण जीव ना होए ख्वार। आत्म वरखे मेघ प्रभ किरपा धार। बेमुख झूठे क्यों कलि सोए पैर पसार। अन्त भज जाणा देह काचे ठूठे, आत्म कर विचार। बेमुख झूठे दुनियां लूठे, ना दीसे निहकलंक अवतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर कर मारे कलिजुग झूठे, सोहँ शब्द वगावे मार। शब्द मार जगत प्रभ मारे। शब्द आकार कर गुरसिख तारे। शब्द मार करे बेमुख ख्वारे। शब्द भण्डार जन भगतां हरि वरतारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द कराए जै जैकारे। जै जैकार तेरी शब्द सोहँ। जै जै जै जगत दोयन। जै जै जैकार होए तीन लोइण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दूसर दिसे ना कोयन। दूसर दिसे ना

दिसाए। साचा प्रभ जोत जगाए। चार वरन पड़े निहकलंक तेरी सरनाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची लिख्त कराए। लिख्त कराए कलिजुग प्रभ लेख। कलिजुग जीव भुलाया कर जोत सरूपी भेख। कलिजुग भाणा वरतिआ, गुरसिख साचे बीती देख। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत साची वेख। साची जोत विच संसार। जोत सरूपी प्रभ आकार। बैठा अडोल आप निराधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सन्तन देवे तार। सन्तन देवे प्रभ सातक रूप। सन्तन महिंमा बड़ी अनूप। सति पुरख का सति सरूप। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति सहाई होए प्रभ भूप। सन्तन शब्द कलि साचा सोहँ। सन्त मिल जीव चाढ़ आत्म रंग। सन्तन सोमा अमृत वगे विच देह गंग। सन्तन सेव मानस जन्म ना होए भंग। पूरन सन्त सचा गुरदेव, आत्म देवे सति अनन्द। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सीतल करे बन्द बन्द। सन्त रूप जो जाणे सति। सन्त की कोई विरला जाणे गति। सन्त सहाई आप प्रभ रक्खे पति। सन्त उपजाई प्रभ आत्म साची मति। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका जोत जगाई तत। सन्त सो जो सति विच रिहा। सन्त सो जो थिर घर बहि रिहा। सन्त सो जिस प्रभ दरस दे रिहा। सन्त सो जिस महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा दिस रिहा। सन्त प्रभ एका जोत। सन्तन प्रभ चरन प्रीती साची गोत। एक अधार धरे सन्त आत्म जोत। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब

४७८ ०१ खुल्हाए सन्तन सोत। भेख भिखारी जो होए सन्त। दुष्ट दुराचारी सो महंत। प्रभ करे ख्वारी वार अन्त। महाराज शेर ४७८ ०१

सिँघ सतिगुर साचा, मिटावे भेख विच जीव जन्त। माया लोभी रसना हलकाए। सन्त भेख कलि रहे वटाए। साची भिख्या प्रभ दर कोई विरला मंगण जाए। करे डण्डौवत साचे घर, प्रभ साचा नाम दवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दर आए आस पुजाए। बाणा धार सन्त जन जीव धरोह कमाए। नाम कहाए भगत जन, कलिजुग भरम भुलेखे पाए। लाए भबूती बणे सन्त जन, ना दीसे हरि राए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग झूठा भेख मिटाए। भेखाधारी भेख वटायण। सन्त जनां कलंक लगायण। विषे विकार विच कलि फस जायण। बुध सुध तन सभ भुलायण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दुष्टां आया नष्ट करायण। दुष्ट सँघारे आप निहकामी। प्रगट जोत कलिजुग निहकलंक स्वामी। कोई ना दीसे कलिजुग बेमुख नामी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां सति स्वामी। सति पुरखां सति धर्म दीबाण। बेमुखां आत्म विच्चों सुंञ मसाण। सति पुरखां सति मिल्या विष्नूं भगवान। बेमुख कलिजुग जामा धार, मदि मास आहार बणान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक विष्नूं भगवान। सति भूमिका साचा धाम। जोत प्रगटाए प्रभ रामा राम। घनकपुर कलि आया निहकलंक घनशाम। सोहँ शब्द चलाया, पिलाया साचा जाम। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द कलिजुग

अन्त कराया काम। कम्म काम प्रभ आप कराए। जुगो जुग लए अवतार, जुग दे उलटाए। सतिजुग होए पार, त्रेता मात प्रगटाए। अन्त त्रेता किया पार, द्वापर तेज वधाए। द्वापर किया पार किनार, कलिजुग मात चरन टिकाए। कलिजुग दिया माण, ईसा मूसा मुहम्मद प्रभ उपजाए। कुरान अञ्जील अञ्जील कुरान, अल्ला अलाह नूर उपाए। कलिजुग खेद करन दा प्रभ प्रबंध बणाए। एक जोत वरते विच सर्ब गोत मार्ग मग चलाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जुगो जुग जोत प्रगटाए। कलिजुग आया कलि देह उलटाए। जामा धार निहकलंक सतिजुग साचा लाए। सतिजुग वरते सति सति, कोई दूसर रहण ना पाए। साची दे प्रभ मति मति, सति पुरख जीव उपाए। रक्खे आप प्रभ पति पति, जन भगतां पतिपरमेश्वर होए सहाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति दे जगाए। सति दीपक होए जगत प्रकाश। एका जोत जगाए प्रभ सर्ब गुणतास। कलिजुग साचा सिख सिँघ पूरन, प्रभ साचे किया वास। सोलां कला प्रभ समरथ, साची देह किया निवास। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचे सिख सदा रहे पास। दीपक दूजा भए प्रकाश। मनी सिँघ तेरी जोत आकाश। साचा प्रभ करे तेरे आत्म वास। साध संगत रहे तेरे चरन पास। चार वरन जपे तेरा नाउँ स्वास स्वास। तीजा दीपक जगत बिलोए। भगवान सिँघ वर दिया तोहे। महिंमा तेरी जन जाणे कोए। एका जोत दीप जगाए दोए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग होवे तेरी साची सोए। चौथा दीपक दीप उपाया। धर जोत प्रभ जोत सरूप कलिजुग माण दवाया। दीपक देह सदा प्रकाशे, प्रभ साची जोत जगाया। साध संगत सति सोहे पासे, प्रभ साचे माण दिवाया। एका जोत जगाई प्रभ अबिनाशे, सभ भरम भुलेखा लाहया। साची जोत करे विच वासे, इक्क निरँजण राया। महाराज शेर सिँघ दे वड्याई, सतिगुर मनी सिँघ सिरताज बणाया। पंचम दीपक भए प्रकाश। आत्म मिटाए अन्धेर विश्वास। रक्खे लाज विच गर्भास। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा रहे सिख पास। पंचम दीप जगे जगतार। पंचम जेठ लए अवतार। पूरन परमेश्वर लिखाए बचन अपार। सति सति सति वरते सति कलाधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, लिख्त लिखाए अपार। दीपक छेवां छे घर वेख। हुक्म अंदर प्रभ लिखाए लेख। मिटाया अमर, प्रभ साचे के साचे भेख। धरे जोत प्रभ एका एक। प्रभजोत प्रभ चरना टेक। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एक जोत दीप जगाए अनेक। सप्तम दीप सति पुरख उपाए। सति निरँजण जोत, सति सति सति वरताए। ना जाणे प्रभ ओत पोत, साची देह विच दे जोत टिकाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा करे निआँए। साचा प्रभ सति वरताए। सच सुच्च दी जोत जगाए। जगे जोत कलिजुग फिर बुझ ना जाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दीपक सत्तवां दे जगाए। दीपक सत्तवां करे प्रकाश। धरे जोत ना जाए विनास। होए उज्जयार विच

आकाश। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत करे प्रकाश। साची जोत प्रभ सति वरताए। साचे सिख घर सिख प्रभ जन्म दवाए। मोहण सिँघ तेरी घाल पाई थाएँ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख लाज रखाए। शब्द अमोड़ देह गंवाई। तिन्न असू घनकपुरी प्रभ बचन सुणाई। कोई विरला जाणे, जिस प्रभ बूझ बुझाई। महाराज शेर सिँघ तेरी मात जोत जगाई। सेवा करी घाली घाल। अन्त ना पूरी होई घाल। शब्द अखुट प्रभ देवे सचा धन माल। दवाया जन्म प्रभ फेर वसाल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति दीपक देवे बाल। मोहण सिँघ तेरा जन्म अतीत। मानस जन्म दवाया, प्रभ साचे सच भीत। साचा लेख लिखाया, कलिजुग नाउँ धरया सुरजीत। प्रभ बेड़ा पार कराया, सति चरन लगाई प्रीत। दीपक सत्तवां जगत जगाया, गुरसिख परखी तेरी नीत। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कोए ना जाणे तेरी रीत। सुत सिख नाम सुरजीत। निहकलंक बख्शे चरन कँवल प्रीत। देवे वड्याई विच संग संगीत। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख आत्म किया सीत। मोहण सिँघ तेरा मन टिकाया। मानस जन्म कलि दवाया। साचा गुरसिख साची देह विच वास कराया। चरन धूढ़ प्रभ दर ते मिली, पिता पूत प्रभ मेल कराया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, सिँघ मोहण तेरा नाम सुरजीत धराया। सुरजीत शब्द मस्ताना। आत्म धरे जोत भगवाना। बाल अवस्था दिसे नादाना। आत्म देवे प्रभ ब्रह्म ज्ञाना। पिछला जन्म सिँघ मोहण कल्सीआं अस्थाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिक्खां तारे दे साचा नामा। दीपक सतवें सति सति। सतिगुर साचा रक्खे पति। सतिगुर मनी सिँघ सिर रक्खे हथ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ चढ़ाए रथ। रथ रथवाही आप गोबिन्द। गुरमुख विरला होए पार विच हिन्द। कलिजुग उलट वगाई प्रभ सिंध। बेमुख खपाए जो करन प्रभ की निंद। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा गुणी गहिंद। साची लिख्त प्रभ सच वरतावे। लिक्खया लेख ना कोई मिटावे। मिटे ना लेख जिन लिख पार कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची कलम चलाए। शब्द विच प्रभ हुक्म लिखाया। ऊधम अध विच रखाया। मिटे ना बचन जो लिख्त लिखाया। साध संगत कर बेनन्ती बहुत बख्शाया। भैण भ्रावां साचे दर कर निमस्कार, गल पल्ला पाया। प्रभ अबिनाशी सर्ब घट वासी, भाणा आप वरताया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा लेख लिखाया। मिटे लेख होए बचन अधूरा। जगत कुटम्ब प्रभ होया दूरा। गुरसिक्खां मन वधाई, सतिगुर साचा बचन करावे पूरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, तेरा बचन ना होए अधूरा। ऊधम सिँघ अद्ध विच रखा के। जगत मोह प्रभ गया गंवा के। साध संगत राह साचे ला के। कोई ना भुल्ले जीव साचा शब्द कमा के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, लेख जाए मुका के। गुरसिख ना भुल्ले, ना प्रभ भुलाए। गुरसिख ना डोले, ना प्रभ

डुलाए। गुरसिख चले गुर के भाए। सतिगुर साचा होए सहाए। शब्द अमोड़ करे जो राए। सतिगुर साचा देवे देह छुडाए। प्रभ बिन ना होवे कोए सहाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तुध बिन दूसर कोई ना दीसे थाएँ।

✻ ११ सावण २००८ बिक्रमी मेरठ विहार होया ✻

कलिजुग जीव प्रभ भरम भुलाणा। चार कुन्ट होए सुंञ मसाणा। वरते निहकलंक कलिजुग तेरा भाणा। महाराज शेर सिँघ जोत आकार, करे बिधनाना। जोत आकार जगत कराया। वरन बरन प्रभ मिटाया। एका जोती एका जाती जीव बणाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा पन्थ चलाया। पन्थ प्रकाश भए जग अंदर। सोहँ शब्द वसे सर्ब जीव दे मन्दर। आत्म खोल्ह वखाए प्रभ साचा जंदर। महाराज शेर सिँघ तेरे दर, बेमुख नाचे जिउँ नाचे बन्दर। नट नटूआ नटणहारा। पट पटूआ प्रभ पुट्टनहारा। सट सटूआ सट्टे शब्द चोट लगावणहारा। भठ भठूआ भट्ठ प्या संसारा । महाराज शेर सिँघ घट घटूआ, घट घट वसणेहारा तेरा अन्त ना पारावारा। अन्त ना पाए कोई पारब्रह्म। साचे प्रभ साचे तेरे करम। प्रगट जोत निहकलंक, गुरसिक्खां मिटाए भरम। सोहँ शब्द चलाए ठणक, साचा जगत चलाए धर्म। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत रखाए मिटाए अधर्म। धर्म अधर्मी होए कलिजुग जीव। मास आहारी मदि रसना पीव। पीव मदि आत्म साची जोत, बेमुख बुझाया दीव। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चरन लाग जग जीव। दीपक बुज्झया भया अन्धेर। बेमुख ना सूझे सञ्ज सवेर। मायाधारी हेर फेर। महाराज शेर सिँघ सभ ख़ाक मिलाए, ना लाए कलिजुग देर। कलिजुग अन्त कलि काती। बेमुख सोइण पैर पसार, ना जागण राती। साध संगत गुर चरन प्यार, प्रभ मिल्या पुरख बिधाती। महाराज शेर सिँघ चार वरन करे इक्क जाति। चार वरन होए एका ज़ात। सर्ब मिटाए प्रभ ज़ात पात। एका शब्द सोहँ सतिजुग जीवां देवे साची दात। विष्नूं भगवान मातलोक वड्डी करामात। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चार वरन कराए एका ज़ात। अवरन आप वरन ना प्रभ विचारया। जोत सरूप प्रगट पार उतारया। जो जन आए निहकलंक, तेरे चरन निमस्कारया। सुहायण थान सोहण बंक दुआरया। जोत सरूप कलिजुग धरे जोत आकारया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जीव शब्द गुण हारया। शब्द गुण गुणा गुणवन्त। ऊँचो ऊँच आप भगवन्त। नीचो नीच नीच सर्ब जन्त। जिन्ह ना मिल्या प्रभ साचा कन्त। उत्तम महिंमा गुरसिख विच साध सन्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगटावे जोत विच जीव जन्त। जीव जन्त प्रभ जोत धरवासा। जोत सरूप सर्ब में वासा। सर्ब अबिनाशी सदा अबिनाश। महाराज शेर सिँघ चार वरन अन्त

कराए दास। साध संगत होए दासन दास। साध संगत प्रभ चरन निवास। एका शब्द वजाए धुन, सोहँ जपण स्वास स्वास। साचा प्रभ सच वसाए मन, निहकलंक रहे सद पास। गुरसिख होए साचे जन, कलिजुग आत्म होई रास। सोहँ शब्द प्रभ सुणाया कन्न, महाराज शेर सिँघ तेरे चरन रहिरास। गुरसिख गुरचरन रहिरासे। सच प्रीती कलि चरन धरवासे। अन्तकाल होए जीव स्वास खुलासे। सचखण्ड प्रभ करे निवासे। महाराज शेर सिँघ साध संगत प्रभ तेरे सद है पासे। सदा पास सर्ब गुण दाता। भगत जनां का हरि प्रभ आप पित माता। देवे शब्द ज्ञान प्रभ वड ज्ञाता। चरन धूढ़ साचा इशनान, सति ज्ञान सति कर जाता। सोहँ शब्द साचा दान, देवे दान आप प्रभ दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा साचा नाता। साचा नाता सतिगुर चरन। कलिजुग जीव ना होवे मरन। बेमुख कलिजुग दुखड़े भरन। चरन लाग गुरसिख तरन। उज्जल होए विच चार वरन। महाराज शेर सिँघ जो जन आए तेरी सरन। सरन गही जगत पित सरनाया। भय भयानक विच प्रभ होए सहाया। जिथ्थे ना रक्खे कोए, उथे प्रभ सिर हथ टिकाया। वाली होए जहानी दोए, जिस सोहँ शब्द कमाया। बेमुख गए कलिजुग रोए, फेर वेला हथ ना आया। माया भुल्ले रहे सोए, प्रभ अबिनाशी दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जोत सरूपी खेल रचाया। जोत सरूप जगत व्यापया। आपणा खेल करे प्रभ अबिनाशया। गुरमुखां हिरदे जोत धरे, प्रभ जोत सरूपी जापिआ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ साचा शब्द अलापिआ। शब्द उचारन जगत उधारन भगत सुधारन सर्ब गुणवन्त। पैज रखावण पार करावण जन भगत तरावण आप भगवन्त। दुष्ट सँघारन जोत आकारन साध संगत प्रभ जन्म सवारन, देवे वड्याई विच साधन सन्त। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाशे प्रभ अबिनाशे विच जीव जन्त। जीव जन्त जगत खेला। माया रूप जगत प्रभ झूठा रच्चया मेला। कलिजुग जामा धार, बेड़ा शौह दरया ठेला। महाराज शेर सिँघ कर जोत प्रकाश, गुरसिक्खां गुरचरन कराया मेला। चरन निवास आप प्रभ दवाया। रिद्ध सिद्ध गुरसिख वस कराया। सोहँ शब्द साची बिध, प्रभ मिलण दा भेद खुल्हाया। प्रगट होए घर नौं निध, सोहँ शब्द जिस रसना गाया। महाराज शेर सिँघ सुध सिद्ध शब्द चलाया। सिद्ध दूजा भउ चुकाया। एका शब्द सतिजुग वरतंत। सोहँ चार वरन करे तेरी मंत। होए पुजारी सर्ब जीव जन्त। ओंकारी आप भगवन्त। महिमा गणी ना जाए, प्रभ बड़ा बेअन्त। महाराज शेर सिँघ तेरी गति मित, ना कोई जाणे जन्त। जीव जन्त दे वस ना कोए। जो किछ करे प्रभ सोई कलि होए। जोत सरूपी प्रगट प्रभ साची जोत बिलोए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, तीन लोक तेरी जोत सरूपी लोए। जोत सरूपी लोए, लोए आकार। तीन लोक वरते प्रभ वरते विच संसार। जामा धारे प्रभ धरनी धरते निहकलंक अवतार। महाराज

शेर सिँघ तेरी वड्याई, वड्डा दाता आप दातार। वड वड आप वड्डी वड्याए। छड छड छड जीव झूठा जाप, सोहँ जाप सति रसना गाए। छड छड छड जीव सभ कलि झूठे, साचा दर प्रभ सच घर आए। महाराज शेर सिँघ तेरा नाउँ, जन भगत दिवस रैण गाए। दिवस रैण रसना गाओ। रसन जप जीव सर्ब सुख पाओ। सतिजुग सोहँ साची नाओ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, रसना सदा सदा गुण गाओ। गुण गाओ प्रभ गहर गम्भीर। देवे साचा दरस शांत करे सरीर। रक्खे लाज आप प्रभ, साची देवे आत्म धीर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निर्मल जोत धरे विच सरीर। उत्पत जीव जगत उपाया। मात गर्भ से बाहर आया। कलिजुग माया प्रभ अबिनाशी जीव भुलाया। कलिजुग जामा धार प्रभ अबिनाशी निहकलंक सति खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरख मन सति वसाया। सति सति सति वरते साचे दर। सति सति सति वरते साचे घर। सति सति सति वरते सति प्रभ देवे वर। सति सति सति महाराज शेर सिँघ अवतार नर। अवतार नर प्रभ नरायण। बेमुखां आया कलिजुग जन्म भुगतायण। साध संगत प्रभ दरस दिखाया, कर दरस आत्म आया चैन। महाराज शेर सिँघ गुरसिख साचे, शब्द मेल रहे दिवस रैण। एक रंग प्रभ रंग मजीठ। सोहँ साचा शब्द विच गया पीठ। गुरमुखां चाढ़े प्रभ साचा रंग नाम मजीठ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अन्तकाल कलिजुग ना गुरसिक्खां देवे पीठ। गुरमुख प्रगटे गुर गुरसिख सन्मुख। सर्ब जन्म की लाहवे भुख। कोई ना व्यापे कलिजुग दुःख। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति वसाए सुख। सुक्खां सकुख, सुख गुर चरनां। मिटे आत्म भुख, प्रभ आए शरना। झूठी दुनियां दिसे साचा सक्ख, मिल साध संगत जीव तरना। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरी ओट, कलिजुग ना डरना। गुरसिख भय भरम दोए मेटे। साचे प्रभ साचे रंग रंगे रंगेटे। भगत जनां हरि माई बाप, जन भगत साचे प्रभ बेटे। महाराज शेर सिँघ तेरी शरन, साध संगत होई भेंटे। साध संगत सद मिले वड्याई। साध संगत जुगो जुग प्रभ लाज रखाई। साध संगत कलिजुग मिले वधाई। साध संगत महाराज शेर सिँघ तेरा होए सहाई। सदा सहाई आप प्रभ, सद निरवैरा। होए सहाई आप प्रभ, ना लावे देरा। होए सहाई आप प्रभ, भउ चुकावे तेरा मेरा। होए सहाई आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां करे निबेड़ा। सति पुरख तेरी सोभा गुण। साचा शब्द राग कन्न ल्या सुण। कलिजुग पाप आत्म विच पुण। साची शब्द वज्जे विच धुन। महाराज शेर सिँघ साचा शब्द चलावे दिखावे साचे गुण। उपजे शब्द मन भए प्रकाश। अज्ञान अन्धेर जाए विनास। रसना शब्द चले सोहँ, आत्म होए रास। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखाया, प्रगट जोत सर्ब गुणतास। शब्द जगत चले महान। शब्द सुरत तीन लोक बंधाण। कलिजुग जीव ना करी पछाण। कलिजुग प्रगटे निहकलंक

विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुर साचा मान। माण मोह प्रभ दोए तजाए। हरि हरि प्रभ खेल रचाए। वेखे विगसे आप दिस ना आए। धरे जोत विच रवि सस्से, जोती जोत उपजाए। कलिजुग अन्धेर चांद जिउँ मस्से, सति सरूप प्रभ दिस ना आए। धन्न गुरसिख जिन हिरदे हरि प्रभ वसे, प्रभ साची जोत जगाए। सोहँ शब्द राह साचा दस्से, जो जन रसना गाए। बेमुख दर ते जायण नस्से, इक्क छिन ठहिर ना पाए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, कलि आपणी कला वरताए। कलि वरतावे आपणी कल। एक कराए जल थल। सृष्ट सबाई जाए हल। जोत सरूपी देर ना लाए पल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, बेमुखां जाए दल। बेमुख दले दाल दोफाड़। माझा होए सर्ब उजाड़। बेमुख मारे प्रभ झाड़ झाड़। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी, गुरसिक्खां सोहँ कीनी वाड़। गुरसिख शब्द तेरा किल्हा कोट। रसना जप ना लग्गे आत्म चोट। बेमुख कलि आल्हणिउँ डिग्गे बोट। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कढ्ढ वखावे खोट। खोटा खरा, खरा खोटीन। गुरचरन लाग गुरसिख जीण। तारे आप प्रभ प्रबीन। महाराज शेर सिँघ गुरसिख सदा रसना चीन। रसना जप मिले रस मुख। कलिजुग पोहे ना कोई दु:ख। आत्म वसे सच साचा सुख। महाराज शेर सिँघ तेरा दरस, सर्ब मिटाए भुख। दरस गुर दृष्ट खुल्हाए। दरस गुर पाप नष्ट कराए। दरस गुर इक्क इष्ट रखाए। दरस गुर आत्म तृखा बुझाए। दरस गुर गुर दरस कलिजुग विरला गुरमुख पाए। महाराज शेर सिँघ साध संगत तेरी सरनाए।

❊ १२ सावण २००८ बिक्रमी मेरठ विहार होया ❊

प्रभ साचा कर्म लेख लिखायके, कलिजुग जन्म दवाया। प्रभ जोती जोत उपजायके, देह साचा दीप जगाया। सच वस्तू विच टिकायके, गुरमुखां साचा नाम धराया। निर्मल जोत विच ललाट जगायके, कलिजुग भगत वड्आया। मानस जन्म कलि पायके, गुरमुख प्रभ चरनीं सेवा आया। सोहँ रसना गायके, निजानंद निज मांहि पाया। निहकलंक टेक रखायके, मदि मास ना रसना लाया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, महाराज शेर सिँघ होए सहाया। गुरसिख तेरा नाम ऊँच, ऊँचा मिले दरबारा। गुरमुख तेरे अंदर सूच, सच मिल्या प्रभ भतारा। गुरमुख तेरे अंदर नाम रूच, आत्म रच्चया नैण मुँधारा। महाराज शेर सिँघ वरतावे सूच, गुरमुख देह होए उज्जयारा। गुरसिख कलिजुग तेरी सोए। तुध जेवड अवर ना दीसे कोए। रंग लावे रंग वरतावे गुर सिख सिख गुर एका जोत जगाई दोए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द लए परोए। गुरसिख तेरे बंधन बंधना। कलिजुग प्रगटे प्रभ मुकंद मुकंदना। अन्तकाल तोड़े जम फंदना। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां जोड़े,

सोहँ साची तन्दना। तन्दन तन्द साचा नाउँ। गुरमुख कलिजुग रसना गाओ। प्रभ अबिनाशी निज घर मांहि पाओ। महाराज शेर सिँघ बख्शे सति सुभाओ। सति सुभाओ गुरमुख गुरसिख। जगत तरावा प्रगटे, प्रभ देवे नाम भिख। शब्द मिलावा करे प्रभ, आत्म मिटावे तृख। महाराज शेर सिँघ कलिजुग वड्याए, जो चरनीं आए सिख। सिख सार प्रभ आप समाली। प्रगट होए दो जहानां वाली। मस्तक चढ़ाए प्रभ जोत सरूपी लाली। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, गुरसिक्खां चाढ़ी आत्म दीपक बाली। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, धन्न तेरी कमाई। उज्जल होए कलिजुग मुख, प्रभ साचे दी सेव कमाई। वास ना होए मात गर्भ, प्रभ चुरासी गेड़ कटाई। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन सुख, जन भगतां मिले वड्याई। भगत जनां दर मिले वड्याई। मिटे भरम मना, प्रभ दरस दिखाई। शांत होए तना, प्रभ सांतक सति वरताई। सच पाया हरि प्रभ धना, तोट रहे ना राई। महाराज शेर सिँघ गुरमुखां मन मना, दे दरस आत्म तृखा मिटाई। तृख वन्त प्रभ देवे धीर। आत्म अमृत पी शांत होए सरीर। हउमे जाए विच्चों जीव पीड़। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, कलिजुग भगतां देवे धीर। धीर धराए धर्मापति। जन भगतां जाणे प्रभ मित गति। साची जोत धरे विच तत्त। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां कलिजुग देवे जोत सरूपी यति। गुरमुख धारे मुकट बैणी। गुरसिख वेख प्रभ साचा नैणीं। गुरमुख शब्द धुन उपजे रैणी। धन्न गुरसिख धन्न तेरी

वड्याई, साध संगत तेरी साची बहिणी। साध संगत सचे धरे प्यार। आवे ना जावे, ना जग होए ख्वार। एका जोत मिलाए प्रभ एकँकार। सति सरूपी सति प्रभ, सति वरतावे सतिकार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग दीसे, सच तेरा दरबार। साचा दर साचा दरबारा। निहकलंक कलि ल्या अवतारा। गुरसिख देवे सच नाम आधारा। जोत जगत जगाए, गुरसिक्खां निगम कर विचारा। महाराज शेर सिँघ तेरा प्रकाश, सतिजुग वरते विच संसारा। तीन लोक प्रकाश प्रभ जोत। प्रभ की जोत वरते विच चार वरन इक्क गोत। उपजाए उपजे आप प्रभ, गुरसिक्खां खोल्हे सोत। महाराज शेर सिँघ कलि खपाए, बेमुख जाए वरते जोत। गुरसिक्खां हरि हिरदे वस्सया। आत्म दे ज्ञान, राह साचा दस्सया। प्रगट जोत प्रकाश विष्नूं भगवान, जिउँ रवि सस्सया। बेमुख दर ते कलिजुग जाए नस्सया। बेमुख आत्म होवे अन्धेर, जिउँ चन्द ना दीसे दिवस मस्सया। गुरमुख तेरे सद बलिहार, जिस हिरदे हरि प्रभ वस्सया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कलिजुग जामा धार, सोहँ शब्द सच दस्सया। साचा शब्द प्रभ आप उपाया। साचा शब्द सोहँ प्रभ नाम रखाया। साचा शब्द साचे प्रभ आप वड्आया। साचा शब्द सतिजुग साचा मार्ग लाया। साचा शब्द प्रभ सति पुरखां रिदे वसाया। साचा शब्द साचा राग, प्रभ भगत जन शब्द सुरत मेल कराया। साचा शब्द अनहद अनाहद, प्रभ देही नाद वजाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, सोहँ साचा शब्द

चलाया। शब्द चले चलाए गुर। निहकलंक प्रगट आए कलिजुग धुर। होए प्रकाश विच तीन लोक, रसना गायण सुर असुर। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाए, सतिजुग वरते प्रभ लिखाए साचा गुर। साचा शब्द साचा मुखवाक। सोहँ खुल्ावे बेमुखां आत्म ताक। साची धुन उपजावे झूठी देही होवे पाक। सोहँ शब्द जो जन कमावे, सोहँ चलाए जीव जे नाक। महाराज शेर सिँघ दरस दिखावे, अज्ञान अन्धेर खुल्ावे ताक। अज्ञान अन्धेर तेरे जीव अंदर। साची जोत जगे विच देह मन्दर। बेमुख प्रभ भुलाया, ना खुल्ाया आत्म जंदर। सोहँ शब्द प्रभ साचा नाम चलाया, गुरमुखां वसे सदा प्रभ अंदर। गुरसिख कमाया शब्द साचा। गुरसिख पाया जिस आत्म वाचा। गुरसिख जोत जगाया, आत्म जोत लगाया माचा। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाया साचा। सेव करे गुरसिख गुर दरबार। प्रगट जोत निहकलंक कलिजुग देवे तार। हत्थो हथ दे वड्याई, ना प्रभ करे उधार। जन भगतां होए सहाई, देवे पैज संवार। गुरसिख तेरे नाम वड्याई, गुरचरन किया प्यार। महाराज शेर सिँघ होवे सहाई, लेख लिखाए सच दरबार। लिखाया लेख प्रभ ना मेटे कोए। कलिजुग मिट जाए कोई रहण ना पाए, गुरसिख गुर जगत दोए। देवे वड्याई, गुरसिख तेरे मन वधाई, सतिजुग होए तेरी साची सोए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, दूसर रहे ना कोए। एका आप एका जोत जगाई। एका आप एका सृष्ट उपाई। एका आप लक्ख चुरासी जून उपाई। एका आप रिहा सर्ब में जोत जगाई। एका आप अडोल, ना डुल्लया जाई। एका आप प्रगट निहकलंक सारी सृष्ट डुलाई। एका आप अभुल ना भुल्लया जाई। एका आप अभुल, सभ सृष्ट भुलाई। एका आप अतुल, ना तुल्या जाई। एका आप अतुल्ल, सोहँ शब्द सभ जगत तुलाई। बेमुख गए कलिजुग भुल्ल, गुरसिख आए दर सेव कमाई। बेमुख गए कलिजुग रुल, गुरसिक्खां सिर प्रभ हथ टिकाई। एका जोत प्रभ सदा अमुल, मायाधारी दे प्रभ ख़ाक रुलाई। कलिजुग दीपक होया गुल, निहकलंक जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे, जन भगतां देवे वड्याई। कलिजुग जीव अन्ध अज्ञानी। गुरसिक्खां जोत जगाए महानी। कलिजुग जीव होए गुमानी। गुरमुखां आत्म देवे प्रभ शब्द ध्यानी। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरे, कलिजुग उपजे ब्रह्म ज्ञानी। ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म सरूप। जगाए जोत प्रभ विच देह अनूप। सति वरताए विच देह सति सरूप। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे साचा भूप। जामा धार लए अवतार, भगत उधारया। जोत निराधार कर आकार, साचा शब्द उचारया। प्रभ चरन बलिहार जन भगतां जाए तार, जुगो जुग लै अवतारया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, गुरसिक्खां पार उतारया। गुरमुख तेरे दर दरबार। प्रगट जोत प्रभ जाए काज संवार। साचा दर दरसावे, सतिजुग होवे सचखण्ड द्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुखां देवे तार। गुरमुख तेरी वड वड्याई। वड्डी दात कलि सेव प्रभ दर ते पाई। कलिजुग साची

करामात, सोहँ शब्द प्रभ दे सुणाई। करे दरस जन सुत्तयां रात, जो जन रसना गाई। साची बख्शे प्रभ शब्द दात, सच वस्त जन भगतां झोली पाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां देवे वड्याई। मिले वड्याई कलि साचे दर। प्रभ अबिनाशी देवे साचे वर। गुरसिक्खां मिलाया प्रभ साचे घर। कर दरस कलिजुग गए तर। सतिगुर साचा मिल्या निहकलंक अवतार नर। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरा, कलिजुग दु:ख ना जाए भर। वड सिख, प्रभ वड्डी दे वड्याई। साची देवे भिख, नाम भिच्छया प्रभ झोली पाई। आत्म मिटाए तृख, अमृत बूंद प्रभ मुख चुआई। आत्म रहे ना विख, साची जोत प्रभ आप जगाई। निहकलंक साचे लेख कलि जाए लिख, जन भगतां देवे वड्याई। महाराज शेर सिँघ तेरे विरले सिख, जिन्हां तेरी सेव कमाई। सेव कमाई परमगति पाई। जगन्नाथ गोपाल मुख भनी, प्रभ होए सहाई। सारंगधर भगवान बीठला, जगत देवे वड्याई। जन भगतां तेरा साचा रंग डीठड़ा, आपणे रंग प्रभ दे रंगाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति जोत रिहा जगाई। साची जोत जगाई प्रभ परमानंद। गुरमुख छड छुडाए जीव बन्द बन्द। कलिजुग जामा धारया हरी मुकंद। महाराज शेर सिँघ सच वरताए, गुरसिख उपजाए साचे चन्द। गुरसिख चांद, चांद सीतला। सतिजुग चलाए प्रभ साची रीतला। गुरमुख बणाए प्रभ साचे मीतला। निहकलंक तेरे चरन प्रीती, चार वरन अन्त कलि जीतला। महाराज शेर सिँघ

४८७
०१

तेरे हथ वड्याई, गुरसिक्खां मिल्या प्रभ भय भीतला। भरम भय मिटाए भगत जन। साचा शब्द सोहँ सुणाए जन । उपजाए जगाए जोत, गुरसिख आत्म जाए मन। दरस दिखाए धीर धराए, गुरसिख मुखों कहे धन्न धन्न। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटा, बेमुखां अग्न लगाई तन। दु:ख भुख प्रभ जगत वरता। आपणा आप बैठा छुपा। बेमुखां पाया ओझड़ राह । गुरसिक्खां दिखाया दरस अथाह। जोत जगाई प्रभ बेपरवाह। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सभ थांई रिहा समा। सच थान थनंतर प्रभ तेरा थान। एका जोत तीन लोक वरते भगवान। कलिजुग प्रगटे निहकलंक शक्ति महान। साचा शब्द लगाए तनक, सोहँ देवे ब्रह्म ज्ञान। चार वरन करे एका अंक, ना कोई दीसे राउ राजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा देवे सोहँ दान। देवे दान प्रभ दर आए भिखारी। सोहँ खुल्हावे जीव आत्म द्वारी। आत्म करे प्रभ जोत उज्जयारी। महाराज शेर सिँघ निहकलंक प्रगट जोत, गुरसिख तेरी पैज संवारी। गुरसिख तेरा माण रहे चार जुग। गुरसिख साचा दान मिले शब्द अमुघ। चरन धूढ़ कलिजुग इशनान, सतिजुग साचे मिले पिण्ड बुग्घ। महाराज शेर सिँघ तेरे हथ वड्याई, मात जोत धरे जुगो जुग। मातलोक प्रभ मात तजाई। पिता पूत सूत सभ खेल मिटाई। छड देह जोत सरूपी खेल रचाई। आवे ना जावे, ना दीसे प्रभ रघुराई। गुरसिख साची देह वेख, प्रभ साचे जोत जगाई। जोत सरूपी किया भेख, निहकलंक तेरी

वड्याई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलि साची जोत जगाई। जगे जोत होए उज्जयारा। कलिजुग मिटे तेरा धुंधूकारा। सतिजुग होवे सति पसारा। निहकलंक कलि ल्या अवतारा। सोहँ साचा शब्द रसन उचारा। रसना जप जीव चार वरन सोहँ पार उतारा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग दीसे, तेरा सच दुआरा। सतिजुग वरताए आप सति पुरख। सुक्के फल जो लगाए कलिजुग बिरख। सारी खेल मिटाए जो कलिजुग दिरख। महाराज शेर सिँघ एका जोत जगाए, सतिजुग साचे सति पुरख। साची जोत जगाए जगत बलवान। साचे जीव उपाए मेहरवान। एका शब्द वसाए, हिरदे भगत भगवान। सच सुच्च वरताए, सतिजुग साची आण। सोहँ शब्द चलाए, चार वरन रसना गाण। मनी सिँघ सतिगुर होए सहाए, लिखाए विष्नूं भगवान। मस्तूआणा होए सति अस्थान। जोत जगाए प्रभ महान। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, चार वरन होए तेरी आण। चार वरन प्रभ चरनीं लाया। एके शब्द जगत चलाया। चार कुन्ट तेरी जै जै जैकार, सोहँ तेरी होए रुशनाया। एक जोत किया आकार, मात पाताल आकाश हिलाया। भगत जनां हरि बख्शे हरि द्वार, चरन निवास दवाया। प्रगट जोत निहकलंक कलिजुग किया पार, महाराज शेर सिँघ नाम धराया। शेर सिँघ तेरा जामा सति। सतिजुग वरते होए सति सति। चार वरन प्रभ रक्खे पति। महाराज शेर सिँघ सुरत शब्द, सर्ब जीव धराए सति। सति सति रहे सर्ब जीव जन्त। सोहँ शब्द चलाए प्रभ बेअन्त। साचा सतिजुग होए सोहँ मंत। महिंमा गणी ना जाए, लिखाई प्रभ बेअन्त। देवे वड्याई वस कराए, देव दंत। महाराज शेर सिँघ जो जन रसना गाए, पार होए जीव जन्त। जीव जन्त जगत का खेल। जोत सरूपी प्रभ किया मेल। आत्म धरे जोत जगाए, बिन बाती बिन तेल। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, प्रगट जोत जन भगतां ल्या मेल। मेल मिलाया कलिजुग घनकपुर वासी। साध संगत सिर हथ धर, प्रभ मिटाए सभ उदासी। साचा देवे वर घर, सचखण्ड प्रभ चरन निवासी। निहकलंक अवतार नर, सर्ब खपाए मदि मासी। तेरा ऊँचा सतिजुग दर, महाराज शेर सिँघ बैकुण्ठ निवासी। बैकुण्ठ निवास तेरा सच धाम। जोत सरूपी वरत जग सति कराए नाम। एका शब्द चलाए सोहँ जपाए नाम। महाराज शेर सिँघ तेरे हथ वड्याई, कलिजुग मिटाए सर्ब धाम। सर्ब धाम प्रभ नाम मिटाया। जोत सरूपी जोत खिच आपणे विच समाया। सोहँ शब्द जगत विच, इक्क साचा शब्द चलाया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, सभ दा माण गंवाया। माण गंवाए सर्ब व्यापी। प्रगटे जोत सर्ब वड प्रतापी। नाम निहकलंक तेरी शब्द धुन, सुण सृष्ट सर्ब कांपी। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, जोत जगाए सर्ब ब्यापी । जगावे जोत जगत उज्जयारा। चार कुन्ट होए हाहाकारा । साध संगत सोहे प्रभ चरन दुआरा। रसना उपजे शब्द सोहँ तेरी जै जैकारा। कलिजुग प्रगट आया, निहकलंक नर अवतारा। सति मार्ग चलाया,

सोहँ शब्द दिया अधारा। एका राह दिखाया, चार वरन होए उधारा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग सति वरताया, एक आकार इक्क ओंकारा। एकँकार जगत आकार। सृष्ट सबाई पसर पसार। एका जोत जीव जन्त करे उज्जयार। कलिजुग जीव होए कुकर्मी, आत्म भुल्लया राम मुरार। छड धर्म होए अधर्मी, प्रगटे निहकलंक अवतार। महाराज शेर सिँघ जामा धार, बेमुखां करे ख्वार। बेमुख मुग्ध अञ्याण, प्रभ चरन ना लागे ध्यान। आत्म दिसे ना उपजे ज्ञान। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, जोत धरे भगवान। धरे जोत जगत गुर जीत। साध संगत होई आत्म सीत। एका उपजी गुरचरन प्रीत। महाराज शेर सिँघ जन भगतां करे आत्म सीत। रक्खे पति प्रभ पतिवन्त। मिलाए जोत साची भगवन्त। जगाए बैठ सदा इकन्त। देवे माण दर साध सन्त। साचा प्रभ प्रगट करे विच जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, कलिजुग महिंमा बड़ी बेअन्त। शब्द मार तन जलाया। दु:ख रोग रोग दु:ख विच देह वसाया । किसे वैद भेव ना पाया। शब्द बाण तन सुकाया। अनक बार कर बेनन्ती, भुल भुल भुल बख्शाया । महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, लिखाया लेख ना मूल मिटाया। लेख लिखाए रहे अद्ध विच। साची जोत लए प्रभ खिच। साध संगत सच शब्द वसावे विच। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची लिख्त कराए विच। लिखाया शब्द होया कलि पूरा। प्रभ का बचन ना होए अधूरा। छुडाए देह छड्डे सुत सूरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणा शब्द कराए पूरा। शब्द अमोड़ कोई जगत ना होए। शब्द मार चले, राखे ना कोए। शब्द अधार जन पुरखे सोए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, लेख लिख्त पूर कराए दोए। लिखाया लेख लिख्त लिखारी। साचे गुण देख, प्रभ साचे गुर दरबारी। ना किया भेख, ना प्रभ भेख भिखारी। जैसा वरते कलि लैणा वेख, शब्द मार जगत प्रभ मारी। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, कलिजुग होया जोत अधारी। भुल शब्द प्रभ भुलाया। वड वड आप आपणा आप अखवाया। भुल भुल भुल रसना विकार चलाया । डुल डुल डुल आपणा आप डुलाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आत्म जीव भुलाया। रसना करे मदि मास आहार । साचा प्रभ शब्द देवे अपार। शब्द मन्न बचन जाए हार। आपणा आप जीव अन्त करे ख्वार। साध संगत अराध्या, प्रभ बख्शे किरपा धार। पंचम जेठ बख्शे मध माधविआ, प्रभ बेड़ा कर जाए पार। निहकलंक जामा धार, मात पित पुत्तर धीआं ना करे विचार। चरन प्रीती जन देवे शब्द अधार। कर कर सेवा गुरसिख लँघ जाए पार। अन्ध अन्धेर रखाया जो आत्म धरे हँकार। प्रभ साचा दिस ना आया, निहकलंक अवतार। जिस चरनीं सीस निवाया, सेवा करी अपर अपार । गुर दर साचा तिन्हां प्रभ मिल्या भगत उधार। महाराज शेर सिँघ जिस रसना गाया, कलि बेड़ा होया पार। साचा शब्द प्रभ सच लिखाए। मदि मास जो सिख रसना लाए। पुत्तर धीआं जो प्रभ बंस कहाए। रसना

४८६
०१

करे मदि मास आहार, प्रभ जोती जोत खिच्च वखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग देर ना लाए। मदिरा पान करे मन होए मधूरा। आत्म चढ़े विख, मन होया सगल वसूरा। साची जोत लई प्रभ खिच्च, देह पीसे जिउँ पीसे संदूरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शब्द कराए पूरा। साचा शब्द प्रभ आप उचरना। मदि मास विष्नूं बंसी किसे आहार ना करना। खिच्चे जोत कलिजुग आप प्रभ, जीव होए कलि मरना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगटे जोत धरनी धरना। मनी सिँघ मन होया उदास । रसना लाए ना मदिरा मास। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना शब्द चले स्वास स्वास। निहकलंक विच आत्म करे वास। साचा धाम सच दे वड्याई, सतिजुग होए तेरी रास। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा वसे तेरे पास। कलिजुग वस्सया मदिरा मस। बेमुख जीव कीए इस वस। गुरसिख जाए दूरों नस। साची रसना मनी सिँघ करनी वस। सतिजुग चार वरन करे तेरा जस। सोहँ शब्द साचा रसना रस। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ साचा राह जाए दस। रसना रसे आप रसईआ। आत्म वसे प्रभ राम रमईआ। कलिजुग राह साचा दस्से काहन घनईआ। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द चलाया, कलिजुग साची नईआ। प्रभ साचे की साची अंस। साचा प्रभ प्रगटावे साचा बंस । गुरसिख ऊजल कराए विच सहँस। महाराज शेर सिँघ भगत उपजावे साची अंस। जन भगत प्रभ जोत धर।
४६० ०१ वड वड्याई प्रगट जोत देवे अवतार नर। साची जोत प्रकाश कर। सच दिखावे प्रभ साचा घर। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, ऊँचो ऊँच दिखावे दर। दर दरबार सची दरगाह। एका जोत जगाए प्रभ अथाह। दूसर कोई दीसे ओथे ना। महाराज शेर सिँघ जन भगतां दिखावे साचा राह। सच मार्ग गुरसिख प्रभ लाया। आत्म अमृत सिंच निर्मल देह कराया। साचा शब्द साचे प्रभ, हिरदे आप वसाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, गुरसिक्खां राह दसाया। दीसे मार्ग जगत न्यारा। मदि मास प्रभ दर दुरकारा। सोहँ शब्द जन भगतां किया भण्डारा। आत्म अमृत बरख, आत्म किया उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग निहकलंक ल्या अवतारा। निहकलंक कलि एका वार। धरे जोत करे आकार। चार कुन्ट साची जोत चमत्कार। बेमुखां घर मच जाए हाहाकार। साध संगत सोहे गुरचरन द्वार। रसना होए साचे प्रभ की जै जैकार। सोहँ शब्द उपजे धुन, अनहद धुन सची धुन्कार। आत्म खुल्है समाधी सुन्न, जोत जगे अपर अपार। गुरसिख प्रभ कलिजुग चुण, साचा दिया नाम अधार। गुरसिख निहकलंक जाणे तेरे गुण, देवे दरस अगम्म अपार। महाराज शेर सिँघ जन भगतां खोल्है दस्म दुआर। दस्म दुआर देह दरवाज़ा। खुल्हावे आप प्रभ वड राजन राजा। पंज तत्त विच कर आकार, झूठी देह साजन साजा। पवण रूप दे सहार, अनहद धुन वजाए वाजा। महाराज शेर सिँघ भाणा वरते संसार, भगत जनां हरि रक्खे लाजा। जीव काया

किया आकार। कलिजुग भरया क्रोध हँकार। पतित पापी होए जीव गंवार। साचे प्रभ की ना पाई सार। बैठा विच प्रभ विच जोत निराधार। महाराज शेर सिँघ कोई विरला जाणे तेरा जोत आकार। जोत जगे जगत उजागर। साचा सतिगुर गहर गम्भीर सागर। प्रगटे निहकलंक प्रभ रत्नागर। कलिजुग तोड़े अन्त काची गागर। महाराज शेर सिँघ भगतां अमृत बरसावे विच आत्म सागर। आत्म उत्तम, जीव उत्तम विचार। सतिगुर साचा प्रगटे, मदि मास छड आहार। सोहँ शब्द जो जन रटे, आत्म होए उज्जयार। साचा शब्द ना मिले हट्टे, साचा प्रभ देवे अधार। बेमुख कलिजुग नाचे जिउँ नट्टे, दर दर होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां देवे जोत अधार। बेमुख कलिजुग होए मुख काला। झूठी माया झूठे धन्दे, झूठा बणे ग्वाला। झूठा आया झूठा जाया, दिसे ना गोपाला। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कलिजुग प्रगटे दीन दयाला। दीन दयाल प्रभ सदा दुःख भंजन। सोहँ शब्द ज्ञान नेत्र दरस प्रभ साचा अंजण। कर दरस विष्नूं भगवान, जगाए जोत प्रभ निरँजण। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे, जन भगतां सदा दुःख भंजन। भगत जन प्रभ दुःख मिटाया। दे दरस अन्धेर गंवाया। कर जोत प्रकाश ज्ञान अन्धेर मिटाया। दकुखां किया नास, सच सुच्च विच देह वरताया। जिन जन ना लाया रसना मास, कलिजुग उत्तम मानस जन्म लिखाया। गुरचरन प्रीती सची रहिरास, बाणी खाणी प्रभ भेव मिटाया। साचा प्रभ सदा रहे पास,
४६१ ०१ गुरमुखां दरस घर मांहि पाया। महाराज शेर सिँघ साध संगत वास, प्रगट जोत निहकलंक कलि आया। साध संगत प्रभ सदा हदूर। साध संगत प्रभ कलिजुग सरधा पूर। साध संगत प्रभ बख्शे सोहँ साचा नूर। साध संगत गुणवन्त गुण निधान आत्म करे भरपूर। साध संगत मिले प्रभ, साचा देवे नाम सरूर। महाराज शेर सिँघ सतिजुग उपजावे, साचा तेरा नूर। नूर नरायण नर्क उधारी। चरन लाग कलिजुग जीव उतरे पारी। हिरदा जाए जाग, जो जन आए प्रभ चरन द्वारी। सोहँ शब्द लागी सची जाग, आत्म होए जीव उज्जयारी। साचा शब्द उपजे राग, अनहद धुन वज्जे धुन्कारी। कलिजुग गुरसिख ना लागे दाग़, साची जोत प्रभ दए अधारी। झूठी सृष्ट प्रभ साचे हथ वाग, जिउँ भावे तिउँ मारी। बेमुख भौण जिउँ सुंञे घर काग, चल ना आए प्रभ चरन द्वारी। गुरसिक्खां होए पूरन भाग, महाराज शेर सिँघ मिल्या जोत आकारी। जोत आकार जगत प्रभ आया। ना दीसे ना दिसाया। निहकलंक प्रभ नाम धराया। पीसे जगत प्रभ पीसाया। कलिजुग साचा खेल रचाया। कलिजुग कूड़ कूड़ी ठीसे, अन्तकाल प्रभ आण खपाया। निहकलंक छत्र तेरे सीसे, सोहँ साचा शब्द चलाया। सतिजुग सति दरबारा तेरा दीसे, दूसर कोई दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, किसे भेव ना पाया। ऊँचा दर सची दरगाह। जोत जगाई सचे पातशाह। जन भगतां दिखावे प्रभ सचा राह। साची जोत प्रभ सच वसाए थां। महाराज

शेर सिँघ निहकलंक दूसर कोई नांह। निहकलंक जोत आकारी। झूठी दुनियां कर जाए ख्वारी। जामा धार हउमे जगत वधाई बीमारी। जन भगतां देवे दरस गिरधारी। दे दरस प्रभ हउमे ममता मारी। गुरसिख तेरे सद बलि बलि बलि जाओ, जो आए प्रभ चरन निमस्कारी। साची दरगाह मिले सचा थाउँ, महाराज शेर सिँघ देवे सची सिक्दारी। साची श्रद्धा देवे श्रद्धानंद। करे वास प्रभ साचे खण्ड। एका जोत धरे प्रभ विच ब्रह्मण्ड। प्रभ आत्म जोत जगाए सर्ब वरभंड। बेमुखां आत्म होई रंड। गुरसिक्खां साचा नाम प्रभ देवे वंड। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत जगाए विच नौं खण्ड। नौं खण्ड पृथ्मी प्रभ जोत जगाई। सत दीपक होए रुशनाई। महिंमा गणत गणी ना जाई। सो जन जाणे जिस प्रभ साचे बूझ बुझाई। हरि रंग हरि आत्म माणे, भुल्ली पई लोकाई। गुरसिख होए सुघड़ स्याणे, जो आए प्रभ सरनाई। निहकलंक कलि पहरया बाणा, शेर सिँघ नाम धराई। धराया नाम धरत सुलाई। निहकलंक तेरे नाम वड्याई। साचा नाम तेरा सुण दु:ख रहे ना राई। आत्म उपजे साची धुन, सुन्न समाध खुल्हाई। महाराज शेर सिँघ प्रगट कलि, साची जोत जगाई। साची जोत सति वरतारा। सातों दीपक होए उज्जयारा। नौं खण्ड पृथ्मी विच संसारा। जलां थलां जीव जन्तां प्रभ जोत अधारा। कलि जाए अन्त होए ख्वारा। शब्द बाण प्रभ साचे मारा। महाराज शेर सिँघ अन्तकाल, कलिजुग किया ख्वारा। कलिजुग

४६२ ०१ अन्त करन प्रभ आया। जामा धार निहकलंक, जग झूठा नेंहु चुकाया। साचा शब्द सोहँ वजाए धनक, चार वरन प्रभ कन्न सुणाया। एक कराए राउ रंक, लिख्त लेख प्रभ आप लिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच धर्म जिस उपजाया। सति धर्म सतिजुग दोए सुत। करे वास विच जीव बुत्त। सतिजुग तेरी साची रुत्त। एका एक दिस आए प्रभ अबिनाशी अचुत्त। महाराज शेर सिँघ सतिजुग पुरख उपजाए, गुरमुख साचे सुत। गुरमुखां हरि नाम प्यारा। हरि हरि जप जपे राम मुरारा। सोहँ शब्द निहकलंक, कलिजुग देवे नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ बार अनक, जगत किया जोत पसारा। जगत जोती प्रभ जोत अधारी। निराधार अडोल विच बैठ निराहारी। महाराज शेर सिँघ साध संगत तेरी पैज संवारी। पैज संवारी आप गिरधार। भगत उधारे दुष्टां करे ख्वार। सचखण्ड जन भगत सोहण प्रभ द्वार। अमृत भरया प्रभ भण्डार। बरखे उप्पर किरपा धार। निहकलंक भुल्ले संसार। कलिजुग प्रगट लए अवतार। निहकलंक नाम नरायण रख। एका शब्द चलाया सतिजुग अलख। सचो सच वरताया रसना लाया लाया भोग भख। महाराज शेर सिँघ साचा शब्द चलाया, गुरसिक्खां सिर रक्खे हथ। शब्द सुण आत्म तृप्तास्सया। आत्म बुझी प्रभ दरस प्यास्सया। दु:ख दर्द देह रोग सभ विच्चों नास्सया। जगाए जोत प्रभ अबिनास्सया। महाराज शेर सिँघ जन भगतां देवे चरन निवास्सया। जो जन करे प्रभ चरन निवास। साध संगत जप रसन स्वास। कलिजुग

दु:ख हो जायण नास। महाराज शेर सिँघ सद वसे पास। सद रहे प्रभ संगत संग। साचा शब्द चढ़ाए जन भगतां रंग। बेमुख भन्नाए कलिजुग जिउँ झूठी वंग। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट अमृत देह वहाए गंग। अमृत जल गंगा धार। पी अमृत जीव होए पार। कलिजुग प्रगट निहकलंक अवतार। शक्ती खिच्च परिपूरन, खाली किया हरिद्वार। गंगा नीर तेरा साचा सीर, मात प्रगट ना दूजी वार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, अन्त कलिजुग देवे सभना हार। हार हार कलिजुग हारया। जामा ल्या धार, पुरी घनक निहकलंक अवतारया। ख्वार ख्वार ख्वार कर जगत ख्वारया। मार मार मार प्रभ शब्द बाण कलि मारया। तार तार तार जन भगतां पार उतारया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक तेरा अन्त ना पारावारया। अन्त ना जाणे प्रभ सदा बेअन्ता। आपणा आप आकार करे प्रभ भगवन्ता। देवे जोत अधार सर्ब जीव जन्ता। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, होए सहाई साधन सन्ता। साध सन्त प्रभ सन्तान। उपजाया साचे प्रभ, आत्म ब्रह्म ज्ञान। प्रगट जोत निहकलंक, जन भगतां ल्या पछाण। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जन भगतां देवे माण। जन वड्याई कलि प्रभ दे हथ। अग्न कूड़ चलाए कलि रथ। साचे साहिब फड़ी हथ नथ। जन भगतां देवे तार, निहकलंक प्रभ समरथ। प्रभ समरथ सर्ब का दाता। ज्ञान गोझ गोझ ज्ञान का ज्ञाता। जन भगतां मेल मिलाए, मिले बिध नाता। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, जगजीवण दाता। जगत दाता प्रभ आप दातार। साचा शब्द प्रभ खोल्ह देवे भण्डार। गुरमुख विरला कोई पाए सार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आया निहकलंक अवतार। निहकलंक जोत उज्जयारी। चार वरन होए तेरे चरन पुजारी। घनकपुर वासी तेरी वड्डी सिक्दारी। चार वरन तेरे दर पनिहारी। जूठ झूठ प्रभ करे ख्वारी। नर नरायण जोत जगत अवतारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, समरथ पुरख अपारी। अपर अपार प्रभ अपर अपारा। निहकलंक तेरा कलिजुग पसर पसारा। जोत सरूपी जोत धरे अन्त कलिजुग करे ख्वारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति तेरा दर दरबारा। साचा दरबार, गुरसिख दरबारी। निहकलंक गुरसिख तेरे चरन निमस्कारी। एका शब्द देवे प्रभ शब्द अधारी। सोहँ साचा नाम आत्म रक्खे ख़ुमारी। महाराज शेर सिँघ तेरी सेवा, हउमे कट्टे बीमारी। हउमे दु:ख रोग ना व्यापे। शब्द बाण प्रभ मारे तीन तापे। आपणा आप कलिजुग जीव ना जापे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग भगतां होया माई बापे। जगत पित जगत पसारा। जगत हित जग किया उज्जयारा। गुरसिख साचा सतिगुर मित, सोहँ देवे नाम अधारा। एका शब्द वसे विच चित, खुल्हे दस्म दुआरा। साचा प्रभ जोत जगाए नित, जीव जन्त जगावणहारा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, जन भगतां देवे नाम अधारा। करे पार प्रभ पारब्रह्म। जुगो जुग प्रभ साचे का साचा धर्म। ऊँच नीच एह प्रभ का कर्म। महाराज शेर सिँघ सतिजुग वरताए

एका धर्म। साचा धर्म सचा दरबारा। साची जोत प्रभ सतिजुग करे आकारा। वरन चार कर एका गोत, एका दिसाए प्रभ दुआरा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग होवे तेरा सति वरतारा। सति वरते सतिजुग वरताए सतिवादी। साचा शब्द चलाए, प्रभ शब्द अनादी। जो जन रसना गाए, आत्म जाए साधी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख रसना सदा अराधी। रसना जपे जपावे प्रभ नाउँ। रसना गाए जाए साचे थाउँ। सोहँ शब्द चलावे प्रभ सतिजुग साचा नाउँ। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, बेमुखां ना दीसे थाउँ। थान थनंतर सर्ब प्रभ वसे। आपणा भेव जन भगत प्रभ साचा दस्से। साध संगत प्रभ हिरदे वसे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, निहकलंक नर नरायण नाउँ आपणा दस्से। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम प्रभ देवे दान। रसना जपे जप जीवे, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। आत्म जाए सति कर मन्न, देवे दरस विष्नूं भगवान। जो जन सुणे लाए कर कन्न, आत्म धर ध्यान। साचा नाम प्रभ देवे ना लग्गे सन्न, जन होवे गुणी निधान। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, सोहँ शब्द पाए आण। सोहँ शब्द जगत बंधाया। बन्दी छोड़ निहकलंक ना बेमुखां बन्द कटवाया। कलिजुग गए बेड़ा रोढ़, आपणा आप गंवाया। महाराज शेर सिँघ जन भगतां चरन प्रीती जोड़, साचा बिरद रखाया। रक्खे बिरद गुरसिख लाज। साचा प्रभ सतिजुग देवे सिदक साचा ताज। एका धुन सोहँ शब्द, कन्न पाई वाज। महाराज शेर सिँघ शब्द चलाया, जन भगतां सुणाया, रक्खी कलिजुग लाज। लाजवन्त लाज रखाए। जन भगतां होए सहाए। ऊँच नीच नीच ऊँच प्रभ चरनीं सभ लगाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, भाग घनकपुरी लगाए। रक्खे लाज त्रैलोकी नंदन। जन्म मरन दे तोड़े फंदन। जगाए जोत प्रभ मनोहर मुकंदन। गुरसिख उपजाए प्रभास जिउँ चन्दन। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे त्रैलोकी नंदन। त्रैलोकी नाथ अनाथ अनाथे। जन भगतां होए प्रभ सदा है साथे। कर दरस दु:ख सगले लाथे। चरन धूढ़ प्रभ गुरसिख लाई माथे। गुरसिख तेरी लाज, कलिजुग प्रभ हाथे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, सदा तेरे संग साथे। साचा प्रभ सति संग सुहेला। कलिजुग जामा धार, जोत सरूपी किया मेला। बेमुखां वक्त विहाया, हथ ना आवे वेला। महाराज शेर सिँघ दीपक जोत जगाया, अचरज खेल कलि विच खेला। दीपक जोत जगत प्रकाशे। निहकलंक जोत सरूप करे जगत वासे। बेमुख दर ते जायण नासे रसना लाए जो जन मदि मासे। साध संगत प्रभ देवे आत्म धरवासे। साचा शब्द सोहँ, विच आत्म करे वासे। जाए तर जन जग दोआँ, महाराज शेर सिँघ करे बन्द खलासे। बन्द खलासी प्रभ जीव कराए। जो जन आए चरन लग जाए। चरन लाग प्रभ रहे शरनाए। हउमे ममता विच्चों गंवाए। साची नाए शब्द प्रभ दे चढ़ाए। सचखण्ड दी बूझ बुझाए। अन्त जोती मेल कर, प्रभ जोती जोत मिलाए।

महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, चार वरन तेरी सरनाए। सरन प्रभ की जन सरनाया। आए सरन प्रभ बेड़ा पार कराया। ना होए मरन, प्रभ जोती जोत मिलाया। गुर चरन लाग जीव तरन, प्रभ साचा राह दिखाया। महाराज शेर सिँघ कलि तेरे चरन, जन भगतां पार कराया। जन भगत होए प्रभ चरन पुजारी। साची सेवा साचा दर, गुरसिख होवे साचा दरबारी। साचा देवे प्रभ वर, अन्त ना होवे ख्वारी। प्रगटे निहकलंक अवतार नर, शामा कृष्न मुरारी। सतिजुग शांत सति वरताए। एका जीव एका वरन, एका जोत जगाए। एका ज्ञान एक ध्यान, एका शब्द सुणाए। एका दान सोहँ नाम, प्रभ साचा झोली पाए। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साचे, सति सति सति वरताए। सति वरते सतिजुग सति। साध संगत तेरी सतिगुर साचा रक्खे पति। एका शब्द चलाए, चार वरन एक चलाए तत्त। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, सति पुरखां देवे साची मति। सति पुरख सति सरूप। महंमा गणी ना जाए कलिजुग अनूप। करी जोत प्रकाश प्रभ विच जोत सरूपी रूप। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट्या वड भूप। निहकलंक वड भूपन भूपा। जोत जगाए प्रभ सति सरूपा। कोए ना जाणे खेल, प्रभ खेल अनूपा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे जोत सरूप, ना दीसे रंग रूपा। रंग रूप प्रभ नज़र ना आया। निहकलंक तेरी अचरज माया। जोत सरूप प्रभ विच सिख सदा समाया। कलिजुग जामा धार, आपणा भेव रखाया। निहकलंक नर अवतार,
४६५
०१
कलिजुग सर्ब भुलाया। जोती जोत करे पसार, ना दीसे ना दिस आया। कलिजुग झूठा किया विहार, बेमुखां मुख छुपाया। भगत वछल जन भगतां देवे तार, महाराज शेर सिँघ तेरा शब्द सुहाया। शब्द सुहाया कलिजुग वेला। शब्द गंवाया बेमुखां कर झूठी खेला। शब्द तराया कर साध संगत मेला। महाराज शेर सिँघ नाम रखाया, अचरज खेल जगत विच खेला। जगत खेल कलिजुग खिलाए। आप मिटे सभ जगत मिटाए। ना दीसे ना दिस आए। कलिजुग तेरी रही ना थांए। सतिजुग साचा मात प्रभ टिकाए। धर्म वरन प्रभ एका जगत चलाए। लाग सरन सभ सोहँ शब्द गाए। महाराज शेर सिँघ तेरी सरन, दु:ख भुख रहे ना राए। दु:ख भुख प्रभ कीनी दूर। जोत सरूप गुर आत्म कीनी भरपूर। निहकलंक कलि आया बेमुखां किया चूर। सोहँ शब्द चलाया वड सूरा सूर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग डोबे पूर। कलिजुग डुब्बया प्रभ डुबाया। वेला अन्त अन्तकाल कलिजुग आया। झूठा पसरया पसार, झूठी दीसे माया। निहकलंक कलि जोत आकार, कलिजुग आण खपाया। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन प्यार, गुरसिक्खां मन भाया। गुरसिख प्रभ दरस प्यारा। एका शब्द करे अधारा। आपणे रंग रवे करतारा। प्रभ परमेश्वर सर्ब सहारा। जीव जन्त दवाए मोख दुआरा। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द तेरा नाम अधारा। नाम अधार तेरा आत्म जीव। साचा अमृत रस गुरचरन पीव। सोहँ शब्द जगाए तेरी गुरसिख आत्म

४६५
०१

दीव । महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां देवे नाम भण्डारा, गुरचरन लाग जीव जग जीव। जीवे जग जीव उज्जयारा। साचा प्रभ विच करे जोत आकारा। जोत प्रकाश देवे नाम भण्डारा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग वरते, तेरा साचा नाम संसारा। साचा नाम चले संसार। अन्त दवाए जीव जन्तां मोख द्वार। साचा शब्द प्रभ लिखाए लिख्त अपार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा तेरा दरबार।

✻ १४ सावण २००८ बिक्रमी मेरठ विहार होया ✻

आवण जावण प्रभ जगत विहारा। जुगो जुग मातलोक लए अवतारा। सति वरते सति सति सति मेहरवान भतारा। त्रेता भया राम चन्द, राम नाम देवे जगत सहारा। द्वापर कृष्न मुरार, गीता ज्ञान रसन उचारा। कलिजुग जामा धार, प्रगटे निहकलंक अवतारा। करे जगत उधार, सोहँ शब्द प्रभ रसन उचारा। जन भगतां करे पार, साचा नाम सोहँ दे अधारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भगत वछल भतारा। भगत वछल जगन्नाथ। भगत जनां प्रभ सद है साथ। होए सहाई सिर रक्खे हाथ। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द साची चलाए गाथ। साची सतिजुग निहकलंक बाणी। कोई जाणे विरला गुरमुख, प्रभ साचे रसन वखाणी। आत्म देवे सर्ब सुख, हरि हिरदे जीव वसाणी। उत्तर जाए सभ आत्म भुख, पाए पद निरबाणी। वास ना होवे मात कुक्ख, प्रभ जोती जोत मिलाणी। महाराज शेर सिँघ कलि भगत तेरे वेख चोज वडाणी। वेखे सो जो आप वरताए। निहकलंक भाणा कलिजुग सति वरताए। चार कुन्ट जीव जन्त टुम्ब उठाए। शब्द मार कलि ख्वार हाहाकार कराए। भगत जनां हरि देवे चरन प्यार, जै जै जैकार कराए। आत्म पायण प्रभ की सार, सोहँ शब्द रसना गाए। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साची चले तेरी नाए। साची नाए सतिजुग चाले। प्रभ का भगत ना दुःख कोई घाले। सोहँ शब्द आत्म पाए माले। महाराज शेर सिँघ सदा रहे संग नाले। सदा संग प्रभ सदा सहाई। चरन प्रीत जिस जन कमाई। भय भयानक प्रभ होए सहाई। प्रगट जोत जुगो जुग, जन भगतां पैज रखाई। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, तेरी कीमत कही ना जाई। जुगो जुग लै अवतारा। भगत जनां प्रभ पार उतारा। बाल अवस्था ध्रू रसन उचारा। कर किरपा गिरधार, सतिजुग दिया सहारा। चरन निवास चरन प्रीती, सचखण्ड दिया दुआरा। चार जुग कर दरस प्रभ सदा रहे उज्जयारा। अडोल अडुल ना छड्डया दर दरबारा। कलिजुग प्रगट निहकलंक, जुग चौथे पार उतारा। जोत मिलाई विच जोत, छड्डया ब्रह्मण्ड दुआरा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, सवरन दवाए सचखण्ड दुआरा। जुगो जुग जगत प्रभ आए। सतिजुग लै अवतार, जोत

सरूप प्रहलाद तराए। हँकारीआं हँकार निवार, जन भगतां जोत जगाए। दुष्टां कर ख्वार, आपणा बिरद रखाए। जोत सरूपी जोत प्रभ, नर सिँघ नाम धराए। बांहों पकड़ पछाड़िआ, हँकार निवारन प्रभ हँकार गंवाए। साचा तख्त साचे भगत प्रभ माथे तिलक लगाए। महाराज शेर सिँघ जोत निरँजण, प्रगट जुगो जुग जगत नाम धराए। जगत आए जगत गिरधारी। बावन रूप धार खड़ा बल दुआरी। चार वेद खुल्हाए, भेद कोए ना जाणे प्रभ गिरधारी। प्रगट जुगो जुग प्रभ, साचे भगतां पैज संवारी। रक्खे लाज भगत अंबरीक। कोई ना दीसे सानी प्रभ सरीक। दुरबाशे हँकार निवारया, रक्खे लाज भगत अंबरीक। जुगो जुग प्रभ लै अवतार, जगत चलाए साची रीत। जन भगत भगत जन। साचा देवे प्रभ नाम धन। आत्म ब्रह्म ज्ञान सीतल करे मन तन। जुगो जुग लै अवतार प्रभ साचा शब्द जन भगत सुणावे कन्न। साचा शब्द प्रभ भगतन राग। एका प्रभ एका जोत लगाए जाग। पाताल निवासी उप्पर रक्खे सेज बाशक नाग। कलि जामा धार निहकलंक, जगत लगाए आग। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ जोत जगाई, सृष्ट भवाई वाग । महाराज शेर सिँघ जुगो जुग जगत लएं अवतार, जन भगतां रक्खे लाज। त्रेता तृप्त कर, जनक पार उतारया। सच सुच्च वरता, आत्म जोत करे आकारया। साचा प्रभ विच गया समा, जोत निरँजण विच देह चमत्कारया। जुगो जुग जन भगतां, नर नरायण काज संवारया। कलिजुग जामा धार, प्रगटे निहकलंक अवतारया।

४६७ ०१ जोत सरूपी खेल कर, कलिजुग जीव आण सँघारया। महाराज शेर सिँघ सति पुरख निरँजण, भगतां दसावे सच द्वारया। साचा ४६७ ०१

दर दरबार सचा घर दीसे। भगत जनां जुगो जुग, प्रभ मात छत्र झुलावे सीसे। बेमुख मुग्ध गंवार, ना जन भगतां करन रीसे। साची लिख्त प्रभ कराए अपार, गुरसिख साचा नाम चार वरन जग दीसे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जगत खपाए कर बीस इकीसे। हरी चन्द हरि मिल्या द्वार। प्रगट जोत सरूप मिले प्रभ जगत तार। ऊँच नीच नीच ऊँच हउमे दित्ती मार । एका साचा शब्द प्रभ आत्म देवे अधार। आत्म उत्तम ब्रह्म दे, ब्रह्म सरूप होए विचार। एका जोत प्रभ अगम्म दे, अमृत वरखे किरपा धार। जुगो जुग प्रभ तेरी खेला, विरला जाणे सार। तारे बिदर भगत भगवाना। बिप्पर सुदामे दिया माण, द्वापर प्रगट कृष्न भगवान। रक्खी लाज सुत द्रोपत आप विष्नूं भगवान। जुगो जुग तारे भगत प्रभ, साची तेरी आण। नाम देव तारया, कर जोत सरूपी भेख। जोत सरूप प्रगट, प्रभ लिखाए मस्तक लेख। अक्खर इक्क ना आवड़े, प्रभ साचा ल्या वेख। जन भगतां जोत प्रकाश कर, प्रभ सति कराए लेख। जुगो जुग लए अवतार, प्रभ मात आवे कर भेख। करे भेख भगत भिखारी। तारे जन भगतां प्रभ आए दुआरी। कलिजुग जामा धारे, निहकलंक नर अवतारी । अमृत धार अमृत बरस, भगतां करे आत्म उज्जयारी। जोत सरूपी देवे दरस, साध संगत महाराज शेर सिँघ नर अवतारी । तारनहार

तार प्रभ, जन भगत मंगण भिख। जो जन आए दरबार प्रभ, साचे लेख जाए प्रभ लिख। अमृत देवे नाम भण्डार प्रभ, आत्म उतरे विख। सोहँ शब्द देवे अधार प्रभ, कलिजुग करे सिख। महाराज शेर सिँघ जामा धार निहकलंक, जन भगतां आवे दिख। वेखे दर प्रभ दरबारा। ऊँचो ऊँच अगम्म अपारा। सचखण्ड वासी थिर घर करे जोत आकारा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग ल्या निहकलंक अवतारा। जामा धार निहकलंक, झूठी देह मिटाई। कलिजुग लै अवतार, कलिजुग औध मुकाई। एका शब्द वजाया डंक, चार कुन्ट पाई दुहाई। साचा शब्द वसाया विच राउ रंक भेव ना रक्खया राई। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, चार कूट तेरे नाम दुहाई। चार कुन्ट प्रभ जोत आकार। झूठी दुनियां कलिजुग अन्तकाल होई ख्वार। जामा धार निहकलंक, शब्द वगाए मार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत करे आकार। जोत आकार होए त्रैभवण। हाहाकार सर्ब गवन। कलिजुग जीव बेमुख होए भवण। गुरमुख साचे गुरचरन धूढ़ सद लवण। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, तेरे गुण जाणे कवण। प्रभ गुण जाणे, जिस आप जणाए। भगत जनां प्रभ सोझी पाए। साचा शब्द विच देह वसाए। वसे शब्द होए उज्जयार, जोत जगाए निरँजण राए। जगे जोत होए प्रकाश, अनहद धुन प्रभ शब्द सुणाए। उपजे शब्द खुल्हे सुन्न, नाथ त्रैलोकी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह, जोत सरूपी दरस दिखाए। दे दरस प्रभ दर्द मिटाया। दर दरवाज़ा प्रभ दस्म खुल्हाया। जोत सरूप विच नज़री आया। साध संगत कलि मिले वड्याई, प्रभ अबिनाशी होए सहाया। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, सोहँ शब्द जिस रसना गाया। सोहँ शब्द जन रसना गाए। साची दरगाह प्रभ दे बिठाए। वड वड्याई विच कलिजुग पाए। महाराज शेर सिँघ होए सहाए। साध संगत तेरी अरदास। मानस जन्म कलि होया रास। चरन कँवल प्रभ दे निवास। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा सहाई सदा रहे पास। सदा सुहेला सभ सुख दाता। सोहँ शब्द ज्ञान देवे ब्रह्म ज्ञाता। आत्म मेल मिलाए, जोत सरूपी किया नाता। एक शब्द सुणाए, दान देवे जग दाता। साचा शब्द प्रभ झोली पाए, आप प्रभ जगत पित माता। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, रंग शब्द रंग राता। आपणे रंग रवे एकँकार। जोत सरूपी करे जगत आकार। आप अडोल बैठ रिहा निराधार। जगत मारे प्रभ शब्दी मार। होए ख्वार कलिजुग जीव, रसना करे मदि मास आहार। जन भगत सोहण प्रभ चरन द्वार। रसना सोहँ जै जै जैकार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, कलिजुग जाए निवार। निवार निवार निवार प्रभ कलिजुग निवारया। मार मार मार बेमुख ख्वार कर मारया। तार तार तार, प्रभ भगत जन सोहँ शब्द दे तारया। वार वार वार कलिजुग जीव जाउ वार, निहकलंक तेरे चरन निमस्कारया। हार हार हार कलि आई, बेमुख जीव मानस जन्म कलिजुग हारया। मार मार मार भगत जन आत्म तृखा

मिटी, मिल्या प्रभ सचखण्ड द्वारया। पीव पीव पीव अमृत नाम प्रभ वरखे पीव झूठी देह आत्म करे उज्जयारया। साध संगत कलिजुग प्रगट, निहकलंक बेड़ा पार उतारया। गुरसिख माण सची दरगाह। साच कर्म प्रभ चरन लग जाह। सोहँ शब्द लै ज्ञान, दीसे साचा राह। आत्म धरे ध्यान, प्रभ बख्शे सर्ब गुनाह। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, दूसर कोई ना। एका जोत जगत वरतंत। साची जोत धरे प्रभ विच साध सन्त। ऊजल कलिजुग होए, जिन मिल्या प्रभ साचा कन्त। एका जोत मिलाए, मिले भगत भगवन्त। मिलाई जोत एक प्रभ एका। जुगो जुग लए अवतार, वरताए सांग अनेका। कलिजुग जामा धार निहकलंक, जन भगतां सोहँ देवे टेका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत धरे जुगो जुग एका। एका जोत धरे प्रभ अबिनाशी। जुगो जुग लए अवतार सर्ब घट वासी। झूठी दुनियां जुगो जुग अन्त जुग विनासी। कलिजुग अन्त कोई ना दीसे, जो जन मदिरा मासी। निहकलंक लए अवतार, बेमुखां करे नासी। महाराज शेर सिँघ जन भगतां देवे अमृत भण्डार, प्रगट निहकलंक घनकपुर वासी। घनकपुर सति प्रभ कलि दर। जन भगतां दीसे साचा थिर घर। थिर घर कलिजुग जोत प्रगटाए, निहकलंक अवतार नर। जामा धार उपाया, सतिजुग दे के साचा वर। महाराज शेर सिँघ भाणा कलि वरताया, ख्वार होए सभ नारी नर। घर घर कलि पए ख्वारी। अग्न जोत जोत अग्न प्रभ लाए चिंगारी। राजे राणे दर दर फिरन भिखारी। शब्द मार प्रभ साचे कलिजुग मारी। उधरे सो जन, जो आए प्रभ चरन द्वारी। रक्खे लाज आप प्रभ, सरन पड़े दी पैज संवारी। निहकलंक तेरा शब्द बाण, बेमुखां करे ख्वारी। जन भगतां पाई साची आण, सोहँ शब्द दिया नाम अधारी। साध संगत सुख प्रभ चरन माण, सोहँ चढ़ी रहे ख़ुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग निहकलंक अवतारी। निहकलंक निर्धन रूप। साध संगत दरसाए प्रभ सति सरूप। होए सहाई साच प्रभ विच अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ जोत जगाए, कलिजुग जोत सरूपी जोत अनूप। जगे जोत जगत अंध्यारे। गुरमुख आयण प्रभ चरन दुआरे। सोहँ साचा शब्द जन भगतां नाम अधारे। बेमुख आए दर, दर दर बैठ जाए झख मारे। मायाधारी रसना लोभी, आत्म भरी हँकारे। प्रभ दर आए ना पायण सोझी, अन्तकाल मारे जम जंधारे। धर्म राज पकड़ पछाड़े, साचा प्रभ अन्तकाल नर्क निवारे। सर्ब सृष्टी निहकलंक चबाई दाढ़े। जन भगतां काज संवारे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, साध संगत सोहे तेरे चरन दुआरे। चरन निवास कलि सर्ब सुख। आत्म रास, मिटे सभ जगत भुख। सोहँ शब्द हिरदे वास, उपजे आत्म सुख। महाराज शेर सिँघ जन भगत तेरे पास, ऊजल कराए चार वरन गुरसिख तेरा मुख। ऊजल गुरमुख जो प्रभ कराए। कलिजुग जामा धार, विच लिख्त नाम रखाए। साची लिख्त चले जुग चार, एका शब्द होए सहाए। बख्शे आप प्रभ गिरधार, चार वरन तेरी होए

सरनाए। महाराज शेर सिँघ किरपा धार, सोहँ शब्द सतिजुग चलाई नाए। सोहँ सतिजुग साची नाए। सतिगुर मनी सिँघ होए सहाए। साचा ताज सतिजुग साचे सतिगुर प्रभ सीस टिकाए। जोत सरूपी प्रकाश कर, चार वरन सरनी लाए। मात पाताल आकाश, सर्ब एका जोत जगाए। खण्ड ब्रह्मण्ड शिवलोक ब्रह्मलोक प्रभ दे उलटाए। चौथे जुग निहकलंक कलिजुग प्रगट आपणी कलि वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग दा भेव खुल्हाए। चार जुग होए वरतंत। दवाए माण निहकलंक, सतिगुर बणाए मनी सिँघ सन्त। सोहँ शब्द चलाए, रसना गाए सर्ब जीव जन्त। चार वरन इक्क कराए, एका नाम जपाए प्रभ भगवन्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, धरे जोत विच जीव जन्त। जीव जन्त प्रभ जोत भरवासा। जोत सरूप जगत विच वासा। कलिजुग बेमुख जीव अन्तकाल होए नासा। साध संगत गुर चरन प्रीत, होए निहकलंक तेरा वासा। कलिजुग मिल्या साचा मीत, महाराज शेर सिँघ पूरन करे आसा। पूरन आस प्रभ आस पुजाई। जन भगतां दरस दे प्रभ, आत्म तृखा मिटाई। साचा अमृत आत्म वरख, हउमे अग्न जलाई। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, जन भगतां बूझ बुझाई। बूझ बुझावे दिसावे साचा दर। साचा शब्द उपजावे अवतार नर। साचे मार्ग पावे, सोहँ शब्द देवे वर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग निहकलंक अवतार नर। नामदेव नरायण पाया। प्रगट जोत सरूप प्रभ घर आए
५०० ०१ भोग लगाया। सैण नाई तार प्रभ, आपणा भेस वटाया। भगत कबीर बेड़ा पार कर, अचरज विच प्रभ अचरज मिलाया। ५०० ०१
भगत बैणी उधार कर, दुःख दलिद्र गलों लाहया। अजामल पापी पार कर, अन्तकाल प्रभ दरस दिखाया। गनका शब्द अधार कर, शब्द दे प्रभ पार कराया। भगत त्रिलोचन नाम अधार दे, आत्म दरस दिखाया। रविदास चुमार उधार कर, चार वरन विच मुख रखाया। पूतना पतित उधार कर, सचखण्ड प्रभ निवास दवाया। बधक बाण प्रभ मारया, बांहों पकड़ गले लगाया। सदना कसाई तारया, प्रगट होए प्रभ दरस दिखाया। गरुड़ सवारी कर प्रभ, अन्त होए सहाया। जुगो जुग प्रभ जोत धर, जन भगतां पार कराया। कलिजुग जामा धार, निहकलंक प्रभ नाउँ धराया। कलि जोत प्रकाश कर, सन्त मनी सिँघ दरस दिखाया। आत्म कीनी रास, चरन सेव प्रभ आप लगाया। रसना जपे स्वास स्वास, विष्नूं भगवान जिन सीस निवाया। साचे साहिब साचा शब्द ज्ञान दे, उज्जल जगत कराया। हथ कलम गुणी निधान दे, कलिजुग लेख लिखाया। सुरती शब्द शब्द भगवान दे, राजा राणा तख्तों लाहया। निमाणयां प्रभ माण दे, राउ रंक इक्क कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ माण दवाया। सन्त मनी सिँघ मन गया मान। साचा शब्द दिया प्रभ आत्म ज्ञान। उपजे धुन, उपजावे गुणी निधान। जोत जगाई महाराज शेर सिँघ सुत होया चतुर सुजान। जोत जगाई होए रूप। सति सवाए

दिसाए प्रभ सरूप। माणे रंग रंग प्रभ भूप। एक शब्द एका प्रभ, एका दिसाए रूप। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक वड भूप। शब्द चलाए प्रभ, लेख लिखाए सन्त। शब्द लिखाए प्रभ, जगत ख्वारी कराए सन्त। शब्द चलाए प्रभ, कलम मार मारी जाए सन्त। शब्द लिखाए प्रभ, कलिजुग जीव दुखी दुखिआरे लेख लिखाए सन्त। महाराज शेर सिँघ जामा धार, भेख मिटाए विच जीव जन्त। चले शब्द दिवस रैण। मनी सिँघ ना मिले बहिण। साचे सिख सदा चरनीं रहण। कर दरस आत्म सुख पायण। महाराज शेर सिँघ निहकलंक दरस दिखावे, जन भगत वेखण नैण। सन्त मनी सिँघ सति सति सति लिखाया। अन्तकाल छड देह, विच जोती मेल मिलाया। निहकलंक चरन संग नेंह, प्रभ सेव सुफल कराया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सन्त मनी सिँघ माण दवाया। छड देह जोत विच समाया। प्रभ अबिनाशी किरपा निध, मात जन्म दवाया। जोत प्रकाश करी विच नूर, नूरो नूर उपाया। सन्त मनी सिँघ साचा सूर, साची कुक्ख उपजाया। बेमुख जायण प्रभ दर तों दूर, प्रभ सन्तन माण दवाया। सर्ब कला प्रभ आसा पूर, निज घर वासी निज आत्म जोत जगाया। जगाई जोत जगत, मनी सिँघ दे साचा नूर। साचा तख्त रचायके, सतिजुग बहाए आसा पूर। कलिजुग भेख मिटायके, एका जोत जगे देह नूर। सतिगुर मनी सिँघ माण दवायके, सोहँ शब्द वजाए तूर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, ना नेड़े ना दूर।
५०१
०१
सन्त मनी सिँघ तेरा सच उपदेश। भूरी वाले सच किया कलिजुग भेस। धन्न धन्न साध संगत तेरी, तेरे सिक्खां सदा आदेश। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग प्रगटे प्रभ नृगेश। वड्डे सिख वड्डी वड्याई। वड्डी मति प्रभ दर ते पाई। आत्म सति सति धीर रखाई। आत्म कुंजी ज्ञान, सोहँ शब्द प्रभ देवे लाई। साचा चरन ध्यान, एका लिव लाई। साचा सिख कलिजुग जाण, निहकलंक जिस सेव कमाई। सन्त मनी सिँघ राह दसाया। साध संगत विच सुणाया। कलिजुग जामा धार, निहकलंक विच मात दे आया। साची जोत विष्नूं भगवान, महाराज शेर सिँघ नाम धराया। गुरमुखां मन गया माण। साचा किया प्रभ चरन ध्यान। देवे दरस कृष्न घनईआ विष्नूं भगवान। मिटे हरस प्रभ सर्ब मिटाण। एका दरस दर साचे पाण। जोत सरूपी जोत जगाए महान। साचा दे दरस निहकलंक, आत्म दिया ज्ञान। माहणा सिँघ मन उपजे सुख, मिले विष्नूं भगवान। कर दरस आत्म तृप्तास्सया। भरम भुलेखा सारा नास्सया। साचा प्रभ विच हिरदे वास्सया। छड जगत विहार होया प्रभ दासन दास्सया। मिले प्रभ गिरधार रसना जपे स्वास स्वास्सया। होए दरस अपार, आत्म होए रास्सया। महाराज शेर सिँघ जगत पसार, सद दीसे पास्सया। सदा संग प्रभ दीसे नाल। साची शब्द रंगत प्रभ चाढ़ी लाल। आत्म दीप प्रभ जोत सरूपी दिया बाल। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, साचा दरस दिया दिखाल। कर दरस तृखा बुझाई।

आत्म शांत मिली सर्ब सुखदाई। मन चाउ घनेरा, आत्म वज्जी वधाई। ना दीसे सञ्ज सवेरा, साचा साहिब सद रसना गाई। निहकलंक कलि पाया फेरा, जन भगतां देवे वड्याई। माहणा सिँघ तेरा साचा संग। सिँघ पाल चाढ़या आत्म रंग। करी प्रीती चरन प्रभ, एका दरस प्रभ ल्या मंग। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, कर दरस गुरसिख पार जाए लँघ। दे दरस दीन दयाला। जोत जगाई विच देह गुलाला। आत्म धीर धराई साचे सिख पाला। कृष्न कला वरताई, देवे दरस रूप विच बाला। होवे जोत सवाई, मिल्या महाराज शेर सिँघ भगत वसाला। कर दरस शब्द रूप, मन भया अनन्द। रसना मुख ना लाई, मास मदिरा गन्द। कलिजुग गुरसिख प्रगट्या, सतिजुग साचा चाढ़या चन्द। निहकलंक दे वड्याई, दरस कराया विच ब्रह्मण्ड। साचे धाम पुचाया प्रभ, आत्म ना होई रंड। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां थाउँ माण दवाया खण्ड वरभंड ब्रह्मण्ड। जोत जगाई पाल सिँघ, तेरी विच ललाट। दरस दिखाया खोल्ह प्रभ बजर कपाट। साचा शब्द सुणाया, साची शब्द लगाई चाट। महाराज शेर सिँघ ब्रह्मलोक बहाया, मातलोक चुकाई वाट। ब्रह्मलोक गया ब्रह्माद। गुरसिख साचा सदा अनाहद। दवाए माण बोध अगाध। महाराज शेर सिँघ चार जुग, जन भगतां रखावे याद। गुरसिख गुर नाउँ रसना गाया। थिर घर वासी सचखण्ड निवासी कलिजुग माण दवाया। कलिजुग निहकलंक नर निरवैर, निराहार सदाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, जन भगतां माण दवाया। पाल सिँघ गुरसिख न्यारा। साचे प्रभ खुल्हाया दस्म दुआरा। कर जोत प्रकाश, आत्म किया उज्जयारा। सदा सदा प्रभ अबिनाश, सोहँ देवे नाम भण्डारा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, जन भगतां देवे धर्म अधारा। पाल सिँघ पाया परमानंद। मिल्या प्रभ मनोहर मुकंद। साचा शब्द साची धुन, साचा आत्म होया अनन्द। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, उपजाया साचा चन्द। साचे सिख प्रभ दरस पाया। साचा सुखन सच आख सुणाया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, जिन हिरदे वसाया। बचन मन्न सिँघ पाल, प्रभ चरन आए सीस झुकाया। कलिजुग पाया साचा धन माल, प्रभ साचे दरस दिखाया। आत्मा सिँघ सिँघ जीवण, प्रभ चरनीं सीस झुकाया। मन तन धन वार, प्रभ सेवा चित्त लाया। महाराज शेर सिँघ नर अवतार, दर घर जाए जन भगत तराया। पाल सिँघ कलिजुग वड हँस। कर सेवा निहकलंक तारया सर्ब बंस। जोत जगाई प्रभ एका अंक। भगत वडाए तेरी अंस। महाराज शेर सिँघ सुहाए तेरे बंक। सिख उपजाए विच सहँस। साची सेवा साचा फल पाया। अन्तकाल प्रभ दे दरस, चवी चेत उन्नीं सौ अठानवें बिक्रमी विच जोती जोत मिलाया। ब्रह्मा गंवाए माण, प्रभ ब्रह्मलोक बहाया। साची सेव भगत भगवान दे, प्रभ साचे धाम बिठाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खण्ड ब्रह्मण्ड उलटाया। सेवा करी पारब्रह्म। निर्मल होया कलिजुग जरम। दे दरस प्रभ मिटाया भरम। गुरचरन

प्रीती कलिजुग साचा करम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गर्भवास मिटाए जरम। साचे सिख तेरी सति वड्याई। अन्तकाल मातलोक परमगति पाई। साचे प्रगट जोत तेरी साची जोत जगाई। धरी जोत विच तेरे सुत, चार कुन्ट पै जाए दुहाई। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, भुल्ली रही लोकाई। जोत सरूप सिख देह प्रभ वास्सया। बेमुखां दिखाया भुलाया कर कर जायण हास्सया। गुरसिक्खां शब्द सुणाया दरस दिखाया, जोत सरूप कर सिख देह वास्सया। सारा भरम मिटाया, शब्द सुरत दा मेल कर, चलाए शब्द प्रभ अबिनाशया। महाराज शेर सिँघ खेल रचाया, निहकलंक कलि आया, साची देह गुरसिख प्रभ जोत सरूपी किया वास्सया। साचा दीपक गुरसिख प्रकाश। निहकलंक जोत सरूपी रक्खे वास। सदा सहाई प्रभ सदा रहे पास। साचा शब्द मन साची धरवाए धरवास। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा रक्खे सिख देह वास। वड्डा सिख प्रभ आप वड्आया। जामा धार निहकलंक जोत सरूप विच डेरा लाया। साचा शब्द लिखाए लिख्त, चार वरन प्रभ चरनीं लाया। ऐसी कलिजुग बणाई बणत, जोत सरूपी प्रभ दिस ना आया। प्रभ की महिमा सदा अगणत, किसे भेव ना पाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक सिख साचे दे विच समाया। सदा समीपत सदा समीप। साची जोत जगाई विच आत्म दीप। कलिजुग वखाई सतिजुग चलाई उलटी रीत। निहकलंक तेरी वड्याई, गुरसिक्खां आत्म कीनी सीत। पूरन सिख पूरन भरवास। साचे प्रभ जोत सरूपी किया वास। शब्द चलाए लिख्त कराए, कलिजुग किया नास। बचन उलटाए रहण ना पाए, प्रभ साचा करे विनास। महाराज शेर सिँघ शब्द वरताए, जै जै जैकार चार कुन्ट कराए सर्ब गुणतास। जै जै जैकार प्रभ दरबार। जन भगतां दीसे हरि का द्वार। उतरे पार, जो दर आयण नर नार। साध संगत प्रभ पैज संवार। देवे दरस निहकलंक नैण मुँधार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, जोत सरूपी जगत आकार। गुरसिख वणजारा, जगत ठग। गुरसिख नाम अधारा, बेमुखां मार गई कलिजुग वग। साचा नाम करे आत्म उज्जयारा, गुरमुख साचे गुर चरनीं गए लग। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन बलिहारी, एका शब्द चलाया जग। एका शब्द जगत चलाया। जोत सरूपी निहकलंक, आपणा डंक आप वजाया। निराहारी निरवैर विच सिख देह प्रभ समाया। आत्म मुख कर प्रभ ब्रह्म ज्ञान दवाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, सोहँ साचा शब्द चलाया। साचे प्रभ साची आण। साध संगत प्रभ देवे माण। चरन धूढ़ बख्शे इशनान। सोहँ शब्द आत्म देवे उत्तम ज्ञान। महाराज शेर सिँघ साध संगत दरगाह करी परवान। साध संगत साचे गुरसिख। आत्म सदा प्रभ मिलण की तृख। देवे माण कलिजुग, वड करे विच मुन रिख। धन्न धन्न धन्न वड्याई, कलिजुग तेरी गुरसिख। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ नाम पावे साची भिख। नाम भिखारी गुरमुख कोए। जगत

विहारी बेमुख होए। साचा सिख साचा प्रभ दरस बिलोए। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, दीसे त्रैलोए। एका नाम गुणी निधान सोहँ दूसर ना कोए। मिले प्रभ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल कराए जोती दोए। जोती जोत कराए मेल। आत्म दीप प्रकाशे, बिन बाती बिन तेल। कलिजुग प्रगट निहकलंक, जोत सरूपी किया खेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां ल्या मेल। भिन्नड़ी रैण सुहाई, प्रभ दरस दिखाया। भिन्नड़ी रैण सुहाई रंग राते रंग नाम चढ़ाया। भिन्नड़ी रैण सुहाई सर्ब गुण दाते, साध संगत होए सहाया। भिन्नड़ी रैण सुहाई पुरख बिधाते, जन भगतां अंग लगाया। भिन्नड़ी रैण सुहाई सर्ब सुख दाते, बांहों पकड़ गुरसिख तराया। भिन्नड़ी रैण सुहाई, साचा प्रभ किसे विरले जाता, चल आया सरनाई। भिन्नड़ी रैण सुहाई, प्रगट जोत निहकलंक साची लिख्त जगत वरताई। भिन्नड़ी रैण सुहाई, महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट आपणी कल वरताई। भिन्नड़ी रैण सुहाई, प्रभ प्रकाशया। भिन्नड़ी रैण सुहाई, साचा दीसे प्रभ सदा अबिनाशया। भिन्नड़ी रैण सुहाई, साध संगत देवे शब्द सदा धरवास्सया। भिन्नड़ी रैण सुहाई, निज घर वास आत्म कराए प्रभ साचे घर वास्सया। भिन्नड़ी रैण सुहाई, साध संगत प्रभ सोहे पास्सया। भिन्नड़ी रैण सुहाई, गुरचरन प्रीती गुरसिख रहिरास्सया। भिन्नड़ी रैण सुहाई, महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द जपावे स्वास स्वास्सया। भिन्नड़ी रैण सुहाई, प्रभ मिटाए अन्धेरा। भिन्नड़ी रैण सुहाई, प्रभ जोत जगाए सञ्ज सवेरा। भिन्नड़ी रैण सुहाई, निहकलंक प्रगटे ना लाए देरा। भिन्नड़ी रैण सुहाई, विच सिख प्रभ लाया डेरा। भिन्नड़ी रैण सुहाई, निहकलंक कलि पाया फेरा। भिन्नड़ी रैण सुहाई, बेमुखां चार कुन्ट अन्धेरा। भिन्नड़ी रैण सुहाई, साध संगत भरवासा तेरा। भिन्नड़ी रैण सुहाई, महाराज शेर सिँघ साचा तेरा फेरा। भिन्नी रैण प्रगटे भगवान। भिन्नी रैण पंचम जेठ चतुर सुजान। भिन्नी रैण प्रभ देवे सोहँ साचा दान। भिन्नी रैण प्रभ उपजावे आत्म ज्ञान। भिन्नी रैण प्रगट जोत मिले भगवान। भिन्नी रैण आत्म दीप जगे बिधनान। भिन्नी रैण प्रभ सोहँ देवे साचा दान। भिन्नी रैण प्रभ दरस कर मूर्ख होए चतुर सुजान। भिन्नी रैण महाराज शेर सिँघ दर साचा जाण। भिन्नी रैण प्रभ जगत आकार। भिन्नी रैण प्रभ जोत धरी संसार। भिन्नी रैण एका रूप निहकलंक अवतार। भिन्नी रैण गुरसिक्खां दसावे सच दरबार। भिन्नी रैण, महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां जोत जगाए अपर अपार। भिन्नी रैनड़ीए, तेरा मुख उज्जयारा। भिन्नी रैनड़ीए, निहकलंक कलि ल्या अवतारा। भिन्नी रैनड़ीए, सुन्न समाध जगत वरतारा। भिन्नी रैनड़ीए, तेरा मिटया अन्ध अन्धयारा। भिन्नी रैनड़ीए, निहकलंक जोत सरूप कलिजुग उज्जयारा। भिन्नी रैनड़ीए, महाराज शेर सिँघ पंचम जेठ कलिजुग लए अवतारा। भिन्नी रैनड़ीए, सच तेरा रंग। भिन्नी रैनड़ीए, जन भगतां मंगी सची मंग। भिन्नी रैनड़ीए, बेमुख सुआए गुरमुख वहाए आत्म

गंग । भिन्नी रैनड़ीए, जामा धार निहकलंक जन भगतां चाढ़े आत्म रंग। भिन्नी रैनड़ीए, महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे जन भगतां मंगी साची मंग। भिन्नी रैण जगत भुलाया। भिन्नी रैण पंचम जेठ जगत प्रकाश कराया। भिन्नी रैण निहकलंक जोत सरूप जगत विच आया। भिन्नी रैण पायण वैण, कलिजुग जीव भुलाया। भिन्नी रैण बेमुख वहाए वैहन्दे वहिण, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। भिन्नी रैण गुरसिख साचे सच रस लैण, निहकलंक जिस चरन लगाया। भिन्नी रैण गुरसिख विच साध संगत साचे प्रभ सिर हथ टिकाया। भिन्नी रैण गुरमुख गुरसिख महाराज शेर सिँघ दरस कर लैण, आत्म शांत प्रभ कराया । भिन्नी रैण जगत भगवाना। भिन्नी रैण पावे भगत प्रभ दरस महाना। भिन्नी रैण गुरसिख लावे गुरचरन ध्याना। भिन्नी रैण पंचम जेठ कलिजुग पहरया काला जामा। भिन्नी रैण बेमुखां चलाया अन्ध अज्ञाना। भिन्नी रैण गुरसिक्खां उपजाया ब्रह्म ज्ञाना। भिन्नी रैण साध संगत प्रभ चरन धूढ़ इशनाना। भिन्नी रैण महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द साचा देवे दाना। भिन्नी रैण दर प्रभ भगत भिखारी। भिन्नी रैण सोहँ शब्द रसना रसन उचारी। भिन्नी रैण होई डैण कलिजुग जीव सुआए शब्द खुमारी । भिन्नी रैण साध संगत नाम प्रभ लैण आए दर दरबारी। भिन्नी रैण बेमुख कलिजुग ठोकर खायण, घर घर होए ख्वारी। भिन्नी रैण साध संगत जाए बलिहारी। महाराज शेर सिँघ निहकलंक पंचम जेठ उपजे निहकलंक अवतारी। पंचम जेठ होए
५०५ ०१ दिवस महाना। सतिजुग वरते सति कर जाणा। चार वरन प्रभ माने भाणा। राउ रंक इक्क करे प्रभ, ना कोई दीसे राणा। ५०५ ०१
कलिजुग प्रगट निहकलंक, सतिजुग साचा लाणा। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, सतिगुर मनी सिँघ तख्त बहाणा। सतिजुग साचा सति उपजाया। सच धर्म दा प्रभ राह चलाया। सति सति सति प्रभ वरते, साचा लेख लिखाया। सोहँ शब्द चले सभ धरते, एका शब्द प्रभ रसन अलाया। सच सुच्च सभ जग वरते, निहकलंक होए सहाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, सतिजुग साचा लाया। सतिजुग लावे पीत पीतंबर। एका शब्द चलावे मात पताल विच अंबर। कलिजुग कोई ना दीसे, अन्तकाल कोई पीर पैग़ंबर। कलिजुग झूठा खेल रचाया, मेट वखावे प्रभ अडम्बर। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, सर्ब भरतम्बर। भरतम्बर प्रभ भगवाना। छिन्न भंगर होए जोत समाना। प्रभ की महिंमा जगत महाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, ना जाणे जीव नादाना। जीव नादान ना प्रभ विचारया। गुरसिख चतुर सुजान, दर आए चरन निमस्कारया। बेमुखां मार बाण, सोहँ पार उतारया। गुरसिक्खां दे आत्म ज्ञान, प्रभ साचे काज संवारया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, आपणा भेव आप उचारया। आपणा भेव प्रभ आप जणाया । निहकलंक नाम धर, आपणा आप उपाया। जोत सरूपी खेल कर, विच सिख देह समाया। जोती जोत प्रभ मेल कर, विछड़िआ मेल मिलाया। बेमुखां कलिजुग बेड़ा ठेल कर, शौह दरया रुढ़ाया।

महाराज शेर सिँघ निहकलंक, आपणा तेज वखाया। आपणा आप प्रभ उपायके। पंज तत्त दी देह तजायके। जोत सरूपी साची जोत जगायके। गुरसिख दे विच आसण लायके। कलिजुग जीव उपाए बचन सुणायके। बेमुखां मेट मिटाए साचे लेख जाए लिखायके। जन भगतां आण तराए, आत्म ब्रह्म ज्ञान दवायके। सरन पड़े दी लाज रखायके। जो जन चरनीं डिग्गे आयके। साचा प्रभ होए सहाए, जो आए गल पल्ला पायके। महाराज शेर सिँघ सोहँ चलाए साची नाए, गुरसिक्खां पार कराए उप्पर चढ़ायके। साची नाओ निहकलंक चलाई। सोहँ बाण प्रभ जीव लगाई। नाम निधान निहकलंक दवाई। महाराज शेर सिँघ तेरी आण, चार कुन्ट चार वरन हो जाई। चार वरन होए प्रभ की आण। एका शब्द सोहँ वज्जे बाण। जन भगत प्रभ चरनीं डिग्गण आण। बेमुख कलिजुग ना करन प्रभ पछाण। जन भगतां प्रभ सोहँ शब्द देवे दान। उत्तम होए विच जहान। बेमुख अन्त कलिजुग सारे मिट जाण। झूठी माया झूठे जीव ना रहे नाम निशान। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, सोहँ चार वरन पाए आण। सोहँ शब्द सति तेरा माण। मिले वड्याई सति कर जाण। जीव जन्त सभ रसना गाण। रसना जप जीव होए गुणी निधान। आत्म दात साची सति माण। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, सोहँ विष्नूं भगवान। सोहँ शब्द वड सागर सिंध। रसना जपाए करोड़ तेतीस पुरी विच इन्द। बेमुख दर ते कर जायण निंद। कलिजुग पछाड़े प्रभ मृगिन्द। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा गुणी गहिंद। गुण सागर प्रभ गहर गम्भीर। बेमुखां मारे सोहँ तीर। गुरसिक्खां होए शांत सरीर। सोहँ शब्द प्रभ आत्म देवे धीर। बेमुख कुन्ट चार पै जाए वहीर। दु:ख भुख भुख दु:ख तन ना दीसे चीर। जगत हलूणा आया, भैणां छड्ड गए वीर। माता पुत्तर भुलाया, बच्चे छड्डे पींदे सीर। राउ रंक कर बहाया, शब्द चल्लया तीर। साध संगत प्रभ माण दवाया, सोहँ शब्द शांत सरीर। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया, कट्टी हउमे पीड़। शब्द तीर प्रभ जगत चलाया। चार कुन्ट कुन्ट चार पै जाए दुहाया। कलिजुग जीव जीव कलिजुग भुलाए माया। प्रभ अबिनाशी दिस ना आया। होए मदि मासी जीव मानस जन्म गंवाया। अन्त पई गल जम की फाँसी, प्रभ नर्क निवास दवाया। साध संगत तेरी सेवा रासी, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। कट्टी गलों सिलक जम फाँसी, जमराज नेड़ ना आया। होए सहाई घनकपुर वासी, दे दरस अन्तकाल गुरसिख तराया। महाराज शेर सिँघ जोत जगत प्रकाशी, राउ रंक इक्क कराया।

❊ १५ सावण २००८ बिक्रमी मेरठ विहार होया ❊

तीन लोक प्रभ वरतारा। जोत निरँजण मात पताल अकाश सति उज्जयारा। कलिजुग जामा कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतारा। सति निरँजण सति पुरख, जोत जगावे विच संसारा। सर्ब घट सर्ब दु:ख भंजन, साचा करे कलि वरतारा। एका शब्द चढ़ाए साची रंगण, सोहँ शब्द होवे जै जै जैकारा। साध संगत प्रभ दर ते मंगण, दोए जोड़ कर निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग वरते, तेरा सच पसारा। तीन लोक जोत सरूप प्रकाशया। जुगो जुग अटल प्रभ, ना होवे कदे विनास्सया। बेमुख जाए कलि जाए झूठा जीव सर्ब विनास्सया । साध संगत प्रभ दर ल्या मल, सोहँ शब्द प्रभ देवे भरवास्सया । जोत सरूप सदा अटल, महाराज शेर सिँघ सर्ब घट वास्सया। तीन लोक प्रभ चरन दुआरे। साचा साहिब साची रक्खे जगत सिक्दारे। जगाए जोत जगत पसार, बैठे विच आप निराधारी। साचा कलि प्रभ आकार, जन भगतां पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ तेरा सच दरबार, साध संगत रहे चरन द्वारी। प्रभ चरन चरन कँवल। साध संगत आत्म जोत प्रभ गई मवल। देवे वड्याई निहकलंक उप्पर धवल। धवल धराए धरवास, प्रभ जोत धर। साचा कर प्रकाश, प्रभ अवतार नर। मात पताल अकाश, साचा दिखावे गुरसिख घर। महाराज शेर सिँघ सदा अबिनाश, साध संगत सोहे साचे दर। साचा दर ऊँचा दरबार। जोत जगाई प्रभ निरँकार। एका शब्द चलाए, सतिजुग सति करे वरतार। आपणा नाम जपाए, सोहँ सतिजुग दे अधार। एका नाम धराए, सतिजुग निहकलंक अवतार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग वरते तेरा हुक्म अपार। हुक्म वरताए कलिजुग वरतारा। द:ुख भुख करे जगत ख्वारा। जोत सरूप जलाए प्रभ बेमुख, चार कुन्ट मच जाए धुंधूकारा । घर घर घर होए हाहाकारा। साध संगत सोहे प्रभ चरन दुआरा। सोहँ शब्द रसना करे जै जै जैकारा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग वरते, तेरा सति वरतारा। सति सति सति वरताए, जगत दिखाए बेमुख रुलाए, करे जोत ख्वारा। प्रभ दरस दिखाए गुरमुखां चरनीं लाए, हउमे अग्न जलाए, देवे साचा नाम अधारा। सोहँ साची नाओ चलाए, भगत जन विरला कोई चढ़ जाए, कलिजुग बेड़ा पार कराए, पावे दरस निहकलंक अवतारा। महाराज शेर सिँघ जोत जगाए, चार कुन्ट चार वरन जै जै जैकार कराए, साचा शब्द करे वरतारा। साचा शब्द होवे धन माल। जोत जगाए कलिजुग विष्नूं भगवान। एका शब्द वरताए, सोहँ दानी दान। गुरमुख विरला पाए, आत्म होवे ब्रह्म ज्ञान। जो जन चरनी आए, साध संगत रल जाण । कलिजुग जामा धार निहकलंक देवे माण। महाराज शेर सिँघ साचा दर, राउ रंक इक्क समान। राउ रंक रंक राउ प्रभ इक्क कराए। ऊँच नीच दा भेव चुकाए। सोहँ शब्द सतिजुग साचा ज्ञान दवाए। एका जोत जगे निरँजण, देह दु:ख कोई रहण ना पाए। महाराज शेर

५०७
०१

सिँघ विष्नूं भगवान साची जोत जगाए। जोत जगे जगत उज्जयारा। निहकलंक तेरा होवे सर्ब पसारा। सतिगुर मनी सिँघ साचा सुत प्रभ तारा। कलिजुग प्रगट निहकलंक महाराज शेर सिँघ नाम उचारा। नाम निरँजण जगत अनेक। जोत जगाए प्रभ एका एक। सन्त जनां साचा शब्द रखाए टेक। आत्म करे ब्रह्म ज्ञान, बुध करे बिबेक। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख आत्म वेख। आत्म वेख विचार कर, विच हरि प्रभ वस्सया। साचा शब्द आकार कर, साचा राह प्रभ साचे दस्सया। कलिजुग बेड़ा पार कर, मिटे अन्धेर जिउँ चन्द मस्सया। साचा शब्द सोहँ जन भगतां हिरदे वस्सया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, आपणा भेव शब्द सरूपी दस्सया। शब्दी शब्द चला, प्रभ एका जोत जगाए। साध संगत दरसा, प्रभ साची लिख्त कराए। सोहँ शब्द जपा, प्रभ आत्म उज्जयार कराए। साचा शब्द वरता प्रभ गुरसिक्खां नाम दवाए। जोत सरूप दरस दिखा, प्रभ आत्म तृखा मिटाए। विच जोती जोत मिला, प्रभ जन्म मरन दा गेड़ कटाए। गुरसिख साचे रिहा समा, प्रभ वास विच बैकुण्ठ कराए। महाराज शेर सिँघ आपणी जोत प्रगटा, भाणा कल वरताए। कल वरताए वरते प्रभ का भाणा। ना कोई दीसे राजा राणा। जोत सरूप जगत पित सर्ब थांई समाणा। महाराज शेर सिँघ साचा दर किसे विरले गुरमुख पाणा। आए जग प्रभ भगत वड्याए। जन भगतां दे वड्याई, उज्जल मुख कराए। साध संगत प्रभ हो सहाई, साचा नाम दवाए। चार वरन तेरे नाम दुहाई, जै जै जैकार कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग जोत जगाए। सतिजुग सुहाए सच वरताए, सच कुलवन्त। सच शब्द वरताए, एका रंग लाए, एक कराए सभ जीव जन्त। सति पुरखां साचा नाम दवाए, अन्ध अंध्यार मिटाए, साची जोत जगाए भगवन्त। महाराज शेर सिँघ सति शब्द लिखाए, गुरसिख उज्जल विच जगत कराए, देवे वड्याई विच साध सन्त। सन्तन संग सद प्रभ वेस। कलिजुग प्रगट किया जोत सरूप भेस। बेमुखां पकड़ पछाड़िआ जिउँ कृष्ना कंसा केस। साध संगत तेरा जन्म मरन संवारया, दर आए जो दरवेश। एका जोत धरे इक्क ओंकारया, दर खड़े विष्नूं ब्रह्मा महेष। साचा शब्द जगत वरतारया, साचे साहिब सदा आदेस। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारया, कलिजुग वड नरगेश। वडा वड वडी वड्याई। मातलोक प्रभ जोत प्रगटाई। प्रगट जोत निहकलंक, जोत अग्न जगत लगाई। सोहँ शब्द वजाए साचा डंक, राउ रंक इक्क कराई। जन भगतां उज्जल कराए जिउँ त्रेता जनक, जो आए प्रभ सरनाई। महाराज शेर सिँघ वासी पुरी घनक, साची जोत कलि प्रगटाई। साची जोत कलि प्रगटाए। साची वस्त संभाल सिख, प्रभ झोली पाए। आत्म जोती बाल सिख, प्रभ साची जोत जगाए। गुरचरन प्रीती पाल सिख, मानस जन्म फिर हत्थ ना आए। महाराज शेर सिँघ गुर गोपाल सिख, शरन लाग बेड़ा पार कराए। बेड़ा पार प्रभ जगत कराया। चरन आए जिस

सीस झुकाया। चार वरन वरन चार, प्रभ साचे माण दवाया। कलिजुग जामा धार, साध संगत प्रभ दरस दिखाया। जेठ पंचम रैण सुहाई, प्रभ प्रगट्या नैण मुँधारड़ा। जेठ पंचम रैण सुहाई, प्रभ आया जगत पथारड़ा। जेठ पंचम रैण सुहाई, मातलोक बणे सचखण्ड द्वारड़ा। जेठ पंचम रैण सुहाई, प्रगट जोत प्रभ जोत सरूपी बालड़ा। जेठ पंचम रैण सुहाई, महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी लालड़ा। पंचम जेठ तेरी वड्याई, निहकलंक कलि जोत प्रगटाई। पंचम जेठ तेरी वड्याई, चार वरन जुग चार रसना गाई। पंचम जेठ तेरी वड्याई, गण गंधर्ब फूलन बरखा लाई। पंचम जेठ तेरी वड्याई, करोड़ तेतीस सुरप्त दर खड़े आई। पंचम जेठ तेरी वड्याई, इन्द इन्द्रासन सिँघ सिँघासण प्रभ द्वार खड़े सिर झुकाई। पंचम जेठ तेरी वड्याई, शिव शंकर खड़े द्वार गल बाशक तशक पाई। पंचम जेठ तेरी वड्याई, सहँसर मुख बाशक सोहँ रसना गाई। पंचम जेठ तेरी वड्याई, नर नरायण निहकलंक कलिजुग साची जोत जगाई। पंचम जेठ तेरी वड्याई, साध संगत मिल प्रभ द्वार रसना हरि हरि गाई। महाराज शेर सिँघ सति करतार, साची जोत विच जगत जगाई । भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, निहकलंक कलि धारे जामा। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, सोहँ शब्द चलाए साचा नामा। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, साध संगत महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए जोत सरूपी पहरया जामा। रैण सुहाई जोत प्रकाशे। कलिजुग अन्धेर जगत विनासे। धारे जामा निहकलंक, पूरन पुरख अबिनासे। एका शब्द वजाए डंक, साध संगत प्रभ हिरदे वासे। चार वरन इक्क कराए राउ रंक, ऊँच नीच सभ एका रासे। एका प्रभ एका ओट रखाए अंक, जगत भेख होए सभ नासे। साची शब्द प्रभ लगाए तनक, गुरसिख दु:ख विकार सर्ब देह नासे। दिखावे दरस प्रभ वासी पुरी घनक, एका शब्द धरे धरवासे। एका शब्द सतिजुग धीर धराए। हिरदक करे प्रकाश जोत अज्ञान अन्धेर मिटाए। साचा प्रभ करे विच वास, भूत भविख्त सर्ब दए गंवाए। हउमे अग्न करे सभ नास, अमका जीव कोई रहण ना पाए। साचा शब्द प्रवेश करे गुणतास, निर्मल साची जोत जगाए। गुरमुख प्रभ चरन मिलण दी आस, प्रभ प्रगट दरस दिखाए। साध संगत प्रभ सद है वास, प्रगट जुगो जुग पैज रखाए। बेमुखां करे प्रभ सद ही नास, भाणा जगत वरताए। महाराज शेर सिँघ गुरचरन रहिरास, रसना सोहँ शब्द सच गाए। सोहँ शब्द सतिजुग उधार। एका एक वरताए प्रभ एकँकार। वक्त सुहाए प्रगटे निहकलंक अवतार । महाराज शेर सिँघ जो जन रसना गाए, कलिजुग उतरे पार। रसना जपे रस राम रसईआ। दिखावे दरस प्रगट जोत, निहकलंक कृष्न घनईआ। सोहँ साचा शब्द, साचे प्रभ सतिजुग चलाई साची नईआ। महाराज शेर सिँघ घनकपुर वासी, साचा शब्द गुरसिख दवईआ। साचा शब्द प्रभ सच उपजाया। जामा धार निहकलंक जन भगतां हिरदे वसाया। साचा कलि शब्द धुंनकार, बजर

कपाट खोल्ह वखाया। एका जोत धरे इक्क ओंकार, दीपक साचा विच देह जगाया। बैठ रिहा अडोल विच निराधार, आपणा भेव प्रभ आप जणाया। गुरसिक्खां साची प्रभ पूरन सार, आत्म पर्दा विच्चों लाहया। अनहद शब्द उपजे धुन्कार, जोत सरूप प्रभ नज़री आया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप जीव खुल्हाए आत्म सुन्न, सति सरूप होए दरस दिखाया। खुल्हे सुन्न आत्म उज्जयारी। साचा दीसे प्रभ जगत मुरारी। जगन्नाथ गोपाल मुख भणी तेरी एका जोत निरँकारी। सारंगधर भगवान बीठला, जोत सरूप जगत आकारी। गुरसिख साचा निहकलंक तेरा रंग डीठला, बेमुखां करे ख्वारी। गुरमुख देवे सोहँ शब्द, साचा नाम खुमारी। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, साध संगत सोहे तेरे चरन दुआरी। चरन द्वार आए पाए चरनामित। कलिजुग मानस जन्म गुरसिक्खां ल्या जित्त। जोत जगाई प्रभ अगम्म, एका शब्द वसे देह नित्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक साची जोत सदा अचुत्त। पारब्रह्म परमेश्वर उचित। कलिजुग जामा धारया भगतां हित। जन्म मरन संवारया, मानस जन्म किया पवित। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारया, साचा अमृत गुरसिक्खां आत्म जाए सित। आत्म अमृत करे उज्जयार। अमृत बख्शे प्रभ गुरसिक्खां किरपा धार। अमृत वरखे आत्म रस, झिरना झिरे अपर अपार। गुरसिख जाणे निहकलंक तेरा जोत सरूप रस, बेमुख होए ख्वार। साचा शब्द ज्ञान प्रभ जाए दस्स, साचा दीसे सचखण्ड द्वार। बेमुख जाण दर तों नस्स, सोहँ शब्द प्रभ मारी मार। जन भगतां हिरदे जाए वस, महाराज शेर सिँघ सति अवतार। सति अवतार सतिगुर सूर। सर्ब जनां दी आसा पूर। दे दरस गुरमुखां आत्म करे भरपूर। एका शब्द सुणाए, आत्म उपजाए साचा नूर। साची जोत होए प्रकाश मात जिउँ कोहतूर। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, गुरसिक्खां दर सदा हदूर। गुरसिख दर आए प्रभ प्रवेशया। निहकलंक सतिजुग तेरी सदा अदेस्सया। कलिजुग प्रगट निहकलंक, जुगो जुग जोत सरूपी करे प्रभ भेस्सया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिक्खां बुध बबेकिआ। गुरमुख माण प्रभ दर पाए। प्रगट जोत निहकलंक सतिजुग लाज रखाए। पूत पिता दा मेल छड्डु, प्रभ साचा नज़री आए। भ्रा भैणां झूठा खेल छड्डु, जगदीश्र सरन लग जाए। वडी वड्याई प्रभ देवे वड, जो जन सरनी सीस झुकाए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, साध संगत प्रगट दरस दिखाए। चरन लाग प्रभ सेव कमाई। साची सेवा जगत कर, उच्च पदवी प्रभ दर ते पाई। एका जोत विच जोत धर, आत्म जोत जगाई। विष्नूं भगवान चरन टेक धर, रंगा सिँघ घनकपुर वासी आत्म रंग चढ़ाई। महाराज शेर सिँघ बुध बिबेक कर, सचखण्ड निवास दवाई। रंगा सिँघ प्रभ रंग राता। हिरदे वसे एका प्रभ विधाता। झूठी दुनियां जगत त्यागे, झूठा छड्डुया जगत नाता। आत्म शब्द उपजे अनरागे, गुरमुख मेवा ब्रह्म ज्ञाता। वड्डा सिख होया वडभागी, देवे दरस सर्ब सुख दाता। कलिजुग आत्म सोई जागी,

जोत जगाए प्रभ बिधनाता। साची प्रीत प्रभ चरन लागी, साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जाता। साची प्रीत प्रभ चरन लगाई। चरन धूढ़ मस्तक ला, आत्म तृखा मिटाई। दिवस रैण रैण दिवस दर घर घर दर, प्रभ दर सेव कमाई। अन्त पाया साचा घर, दरस दे प्रभ देह छुडाई। निहकलंक अवतार मिल्या नर, विच जोती जोत मेल मिलाई। कलिजुग गुरसिख गया तर, सचखण्ड प्रभ निवास दवाई। महाराज शेर सिँघ प्रगट निहकलंक गुरसिक्खां लाज रखाई। गुरसिख जोत निर्मल उजागर। प्रगट जोत निहकलंक, पार किया भव सागर। साध संगत एका शब्द वरताए प्रभ रत्नागर। महाराज शेर सिँघ जोत जगाए, गुरमुख विच देह झूठी गागर। मातलोक कलिजुग साध संगत वर साचा मंग। साचा प्रभ वसे सदा तेरे संग। साचे शब्द सुरत सतिगुर साचा, साचा चाढ़े आत्म रंग। आत्म रंग ना होवे भंग। अमृत सोमा देह विच वहाए गंग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर दरस जीव पार जाए लँघ। सन्तन देवे प्रभ वड्याई। आण बाण जुगो जुग प्रभ लिख्त लिखाई। भगत वछल अनाथां नाथ, जन भगतां होवे सहाई। साचे सिख सदा प्रभ साथ, प्रगट होए दरस दिखाई। मुकंद मनोहर प्रभ रघुनाथ, नर नरायण जोत प्रगटाई। अछल छल छल जगत कराया, आपणा भेव छुपाई। साचे सिख प्रभ वास कर, दे दरस दुआर खुलाई। एक शब्द सर्ब गुणतास दे, शब्द सुरत सुरत शब्द मेल मिलाई। महाराज शेर सिँघ

५११
०१
निहकलंक, गुरसिख साची जोत जगाई। गुरसिख तेरे नाम वड्याई। कलिजुग मानस जन्म धार, निहकलंक कलि सेव ५११
०१

कमाई। साचा शब्द अधार कर, बुझी दीपक आत्म जोत जगाई। साचा प्रभ विचार कर, लोक लाज सभ तजाई। साचा जगत वपार कर, सोहँ शब्द वणज कराई। उत्तम आत्म विचार कर, सोहँ बत्ती नाम लगाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा धार कल, कलिजुग साची पाई वड्याई। भगत जनां प्रभ आप वड्आया। जामा धार जुगो जुग अन्ध कूप होए सहाया। कलिजुग प्रगट निहकलंक, वडा वड कहाया। एका करे राउ रंक, सोहँ साचा शब्द चलाया। महाराज शेर सिँघ जोत विष्नूं भगवान, कलिजुग मेट सतिजुग साचा लाया। पंचम जेठ वीह सौ अठ्ठ। कलिजुग उलट भवाई लठ्ठ। सर्ब सृष्ट झुकाई भठ्ठ। साध संगत प्रभ चरन आए नठ्ठ। पिण्ड भंडाल होया साचा इक्ठ्ठ। भाणा वरते कलिजुग डाढा, महाराज शेर सिँघ तेरा सिख ना छोडे हठ। साध संगत प्रभ होए सहाई। प्रगटे जोत प्रभ रघुराई। सर्ब सृष्ट जोत सरूप, प्रभ अग्न जलाई। साध संगत तेरे मन वधाई। साची लिख्त निहकलंक, कलिजुग सति वरताई। जोत सरूप प्रभ वरते भविख्त, चार कुन्ट पै जाए दुहाई। साची होवे मनी सिँघ तेरी कराई लिख्त, विच संगरूर जो बचन सुणाई। महाराज शेर सिँघ प्रगट निहकलंक, राणा संगरूर शब्द मार चरन लै आई। लिख्त लिखाई लिखावणहारे। साची जोत शब्द वरतारे। मनी सिँघ तेरी कलम

चले अपर अपारे। कलिजुग अन्त राजे राणे होए ख्वारे। मस्तूआणे प्रगटे जोत निहकलंक, भगतन आयण सभ चरन दुआरे। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवन्त, जोत जगाई अगम्म अपारे। अगम्म अपार प्रभ होए उज्जयारा। पार ब्यास किया किनारा। पार उरार होए धुंधूकारा। जीव जन्त होए सर्ब ख्वारा । साध संगत दीसे, निहकलंक तेरा सच दरबारा। आए चरन प्रभ होए सहाई, कर किरपा प्रभ पार उतारा। महाराज शेर सिँघ तेरी शब्द मार, घर घर होवे हाहाकारा। शब्द मार प्रभ कलिजुग मारया। जामा धार निहकलंक वड वड वड अवतारया। साध संगत साचा दर, दर आए सर्ब निमस्कारया। महाराज शेर सिँघ सति सति मिले अबिनाशा, कलिजुग सति वरतारया। कलिजुग वरते जो प्रभ वरताए। जीव जन्त कोई भेव ना पाए। हँकार विकार प्रभ दे वधाए। जीव खेद करन दा प्रभ झूठा खेल रचाए। शब्द मार कराए, जोत सरूप प्रभ आत्म अग्न लगाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग जीवां उलटी मति वसाए। कलिजुग वरते प्रभ तेरी माया। बेमुख होया कलि जीव, जो शरन नहीं आया । गुरमुख साचे अमृत रस ल्या पीव, आत्म साचा रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, जोत सरूपी कलिजुग खेल रचाया। रच रच रच खेल प्रभ जोत जगाई। मच मच मच, बिन तेल प्रभ जगत जोत अग्न लगाई। सच सच सच साध संगत, साध संगत गुरचरन मेल, अन्तकाल प्रभ होए सहाई। महाराज शेर सिँघ तेरा कलिजुग खेल, बेमुखां देवे ख़ाक मिलाई। साचा शब्द प्रभ लिखाणा। बेमुख मुग्ध गंवार, कलिजुग झूठा जाणा। एका दीसे निहकलंक तेरा दरबार, ऊँच नीच एका राजा राणा। महाराज शेर सिँघ तेरा सतिवाद, सोहँ साचा शब्द सुहाणा। सोहँ साचा शब्द उपजाया। अल्ला अलाह नूर जग नाम मिटाया। कुरान अञ्जील अञ्जील कुरान कोई कलिजुग रहण ना पाया। खाणी बाणी बाणी खाणी गगन पताली खण्ड ब्रह्मण्ड निहकलंक उलटाया। कलिजुग जामा धार, ज्ञान गीता भेव चुकाया। सोहँ शब्द रसन उचार, सोहँ साचा मार्ग लाया। एका शब्द चार वरन अधार, कलिजुग सारा भेख मिटाया। जोत जगाए प्रभ निराधार, निरवैर सतिजुग साचा लाया। साची जोत कर आकार, सच सुच्च विच जीव जन्त वसाया। महाराज शेर सिँघ तेरा सति वरतार, सोहँ शब्द जै जै जैकार कराया। जै जै जैकार जगत वरतारा। साचा भेख जगत पसारा। साचा प्रभ सतिजुग लिखाए लेख, एका मिले सच दरबारा। महाराज शेर सिँघ जुगो जुग एक, जोत सरूपी जगत वरतारा। जोत सरूप जगत प्रभ आया। छड्ड देह अपार, जोत सरूप प्रभ विच सिख समाया। बैठ रिहा प्रभ निराधार, सोहँ साचा शब्द अलाया। देवे दरस अगम्म अपार, चरन आए जिस सीस झुकाया। भव सागर प्रभ कर जाए पार, साध संगत सिर हत्थ टिकाया। मानस जन्म ना आवे हार, प्रभ अबिनाशी घर में पाया। महाराज शेर सिँघ पतित जावे तार, साध संगत होए सहाया। साध संगत प्रभ चरन भिखारी।

एका शब्द देवे प्रभ सोहँ नाम अधारी। गुरसिख आत्म चाढ़े रंगत, सद आत्म रहे खुमारी। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तेरी साची संगत, सोहँ शब्द रसना करे जै जै जैकारी। साची संगत प्रभ सच वरताया। ज्ञान गोझ आत्म ध्यान दे, प्रभ प्रगट दरस दिखाया। कलिजुग साचा सतिगुर माण दे, जन भगतां आप वड्आया। निजानंद आत्म गुण निधान दे, निज आत्म सुख वसाया। साचा शब्द सोहँ ब्रह्म ज्ञान दे, प्रभ दस्म दुआर खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ नाम भगत भगवान दे, कलिजुग आण तराया। कलिजुग तार प्रभ दुःख निवारया। भगत जनां सिर छत्र झुलारया। चार जुग सतिगुर साचा साची लिख्त वरतारया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक सोहँ डंक चार कुन्ट वजा रिहा। चार कुन्ट प्रभ शब्द आकारा। वरते कलि जो प्रभ वरतारा। साध संगत सच दीसे हरि का दुआरा। घनकपुर वासी निहकलंक, पुरी घनक ल्या अवतारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग वरते तेरा भण्डारा। सच भण्डार प्रभ सति वरताया। अमृत आत्म बरख, गुरसिख आत्म शांत कराया। गुरसिख साचे कलिजुग, प्रभ प्रगट दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, सतिजुग साचा जगत लगाया। सतिजुग साचा सच प्रकाशा। जोत सरूप निहकलंक किया वासा। चार वरन आए शरन, सभ होए प्रभ दासन दासा। महाराज शेर सिँघ साचा शब्द, सोहँ चार कुन्ट कराए नासा। सोहँ शब्द रसना जीव, प्रभ आत्म दिसे नैणां। सोहँ शब्द जप जीव, झूठी दुनियां सद नहीं रहणा। सोहँ शब्द जप जीव, साचा साध संगत विच बहिणा। सोहँ शब्द जप जीव, साचे प्रभ का साचा कहणा। सोहँ शब्द जप जीव, निजानंद निज मांहि लैणा। सोहँ शब्द जप जीव, कलि जीव वहे झूठे वहिणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच दर आए बहिणा। सतिजुग लेख प्रभ आप लिखाया। ऊँच नीच दा भेव चुकाया। राउ रंक कर प्रभ इक्क बहाया। चार वरन प्रभ पाई माया। सति सन्तोख प्रभ आत्म धीर धराया। दरस दे प्रभ साचे घोख, अमृत नीर वहाया। एका शब्द रखाए मोख, सोहँ जगत चलाया। रसना जप होवे मोख, गुर मन्त्र राह दिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साचा राह चलाया। साचा राह सन्तन की घाल। सोहँ शब्द प्रभ देवे सचा धन माल। एका जोत जगाए, प्रभ आत्म गोपाल। प्रगट दरस दिखावे, प्रभ दीन दयाल। सोहँ शब्द रसना जपावे, महाराज शेर सिँघ भगत वसाल। सोहँ शब्द सति, सति सति तेरी वड्याई। सोहँ शब्द रसना जप जीव, प्रभ आत्म मेघ वरसाई। महाराज शेर सिँघ सतिजुग तेरी सति सति सति वड्याई। सोहँ शब्द रसना जप जीव, आत्म जोत होवे रुशनाई। सोहँ शब्द जप जीव, मिले प्रभ सर्ब सुखदाई। सोहँ शब्द जप जीव, कलिजुग विच मिले वड्याई । महाराज शेर सिँघ निहकलंक, चार कुन्ट तेरे नाम दुहाई। चार कुन्ट प्रभ बाण लगाया। शब्द सुरत वाली हिन्द, प्रभ दरस करवाया । निहकलंक जामा धार,

आपणा भेव छुपाया। शब्द जोत आकार कर, विच सिख देह समाया। महाराज शेर सिँघ साचा जगत पसार कर, कलिजुग झूठा प्रभ भुलाया। हिन्दवैण हिन्दवाली प्रभ दरस दिखा के। देवे दरस निहकलंक, बांहों पकड़ उठा के। साचा दर दिसे दरबार, गुरसिख देह बैठा आसण ला के। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जगत खपाए जलाए जोत सरूपी अग्न लगा के। वाली हिन्द प्रभ दरस दिखावे। भेव आपणा सर्ब जणावे। शब्द ज्ञान सुरत ध्यान दे, हउमे माण चुकावे। चरन ध्यान विष्नूं भगवान दे, जोत सरूपी खिच ल्यावे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक साची जोत प्रगटावे। वाली हिन्द मिटे अज्ञान। आत्म होवे निहकलंक तेरा चरन ध्यान। एका शब्द धराए धीर, प्रभ चरनीं डिग्गे आण। महाराज शेर सिँघ बुध बिबेक कर, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। हिन्द वाली प्रभ दरस पाए। विच संगरूर चल कर आए। मस्तूआणे प्रभ चरनीं सीस झुकाए। राणा संगरूर चरन धूढ़ लै, मस्तक लै लगाए। निहकलंक तेरे चरन हदूर, भुल्ल आपणी लए बख्शाए। वाली हिन्द राणा संगरूर। निहकलंक तेरे खड़े हज़ूर। कर बेनंती प्रभ आसा पूर। कलिजुग प्रगट्या प्रभ निहकलंक, महाराज शेर सिँघ गुण भरपूर। वाली हिन्द राणा संगरूर प्रभ चरन दुआरे। कर कर निमस्कार जायण बलिहारे। निहकलंक तेरी साची जोत, करे सति उज्जयारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी कराए खेल न्यारे। राणे संगरूर हँकार गंवाया। चरन लाग प्रभ दर्शन पाया। लिख्त लिखाई मनी सिँघ, निहकलंक सति सति सति वरताया। साची लिख्त ल्याए सीस धर, साल अठत्ती जो बन्द रखाया। पकड़ ल्याए चरन अवतार नर, निहकलंक सभ माण गंवाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी तेज वखाया। बाणी आए निहकलंक तेरे दरबार। कर दरस राणा संगरूर, साचे प्रभ की पाए सार। आत्म होए शब्द भरपूर, चरन करे निमस्कार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पतित पापी देवे तार। पतित पापी प्रभ रक्खे पति। आत्म अमृत वरख, प्रभ साची देवे मति। साचा शब्द ज्ञान दे, प्रभ सति रखावे मति। महाराज शेर सिँघ दरस विष्नूं भगवान दे, विच वरतावे सुच्च सति। सति सति सतिजुग भाए। साचा प्रभ सति पुरखां विच वसाए। ऊँचां नीच नीचां ऊँच प्रभ एका कर वखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति सच सतिजुग वरताए। कलिजुग भरम भुलाया। माया रूप प्रभ पड़दा पाया। मदि मास कलिजुग जीव, रसन आहार बणाया। अमृत रस गुरसिख विरला पीव, आत्म तृखा प्रभ दे मिटाया। कलिजुग जीव बेमुख, काम क्रोध हँकार प्रभ विच वसाया। गुरमुख साचा सदा चरन लग जीव, साचा शब्द प्रभ मन वसाया। बेमुखां कलिजुग प्रगट निहकलंक सोहँ शब्द बाण लगाया। जन भगतां साचा सोहँ शब्द आत्म ज्ञान दवाया। निहकलंक, कलिजुग अचरज वरते तेरी माया। जोत सरूपी प्रभ जोत धर, आपणा भेव छुपाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, जन भगतां दरस दिखाया। दरस दान भगत

प्रभ दिया। आत्म जगे जोत, सुखी होए जगत जिया। सोहँ शब्द सतिजुग साची तेरी रखाई नीआ। महाराज शेर सिँघ निहकलंक प्रगट, साचा शब्द जन भगतां दिया। भगत जनां प्रभ सदा भण्डारी। गुरमुख दर ते मंगण, दोए जोड़ प्रभ चरन दुआरी। सोहँ शब्द साचा प्रभ देवे जगत अधारी। एका शब्द एका जोत, जुगो जुग प्रगटे प्रभ एकँकारी। कलिजुग जामा धारया, निहकलंक नर नरायण अवतारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे साध संगत पैज संवारी। साध संगत सति तेरा मूल। सोहँ शब्द ना जाए रसना भूल। देवे दरस प्रगट प्रभ कन्तूल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शब्द गुरसिक्खां देवे साचा मूल। शब्द गुण जगत वरतारा। आत्म धुन, जन भगत उज्जयारा। उपजे रुण झुण, जोत निरँजण करे आकारा। साचे सिख तेरी खुल्ही सुन्न, आत्म दीसे प्रभ जोत आकारा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक तेरा खोल्हे दस्म दुआरा। शब्द सोहँ तेरी सति कमाई। साची सुरत सिख साचे पाई। सुरती सुरत प्रभ मेल कर, शब्द सुरत दा मेल मिलाई। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, सोहँ शब्द देवे वड्याई। गुरसिक्खां सोहँ शब्द अधार। बेमुखां करे जगत ख्वार। दर आए जो नर नार। रसना जप साचा शब्द, तेरा होए बेड़ा पार। कलिजुग सचखण्ड निहकलंक तेरा दरबार। विच वरभंड प्रगटे, जोत सरूप प्रभ निराधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग आया सर्ब कलधार। कलधार कलि लेख मिटाए। जोत निरँजण जगत पित आप अख्वाए। भरतम्बर सर्ब विच प्रभ समाए। छिन्न भंगर कलिजुग झूठी खेल मिटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा भाणा सति वरताए। कलिजुग जीव दुःख होए महाना। हिन्दवैण जोत जगाए प्रभ गुण निधाना । शब्द रूप शब्द लिखाए विष्नूं भगवाना । जगत वरताए मिट ना जाए, लेख लिखाए प्रभ जाणी जाणा। चरन भंडाल प्रभ पाए, वीह सौ अठ्ठ जेठ लिख्त कराए, गुरमुखां देवे आत्म ध्याना । सत्तर लक्ख पठाण चढ़ाए, लिख्त मनी सिँघ सति हो जाए, पार ब्यासों होए पद निरबाना। महाराज शेर सिँघ लिख्त लिखाए, अल्ला अलाही नूर मिटाए, साचा वरते प्रभ का भाणा। साची लिख्त सति लिखाए लेख, निहकलंक नर अवतारी। कलिजुग कर्म वेख, चलाई कलम जोत आकारी। मदि मासी मिटाए भेख, कोई ना दीसे मदिरा हारी। गुरसिख, महाराज शेर सिँघ साचा गुर वेख, निहकलंक नर अवतारी। कलिजुग आया नर अवतारया। प्रगटे जोत निहकलंक अवतारया। सोहँ शब्द वजाए सति डंक, चार कुन्ट होए जै जै जैकारया। एक कराए राउ रंक, चार वरन दा भेख निवारया। महाराज शेर सिँघ सति तेरे सन्त, शब्द धुन धुन शब्द विच देह वजा रिहा। शब्द धुंन प्रभ उपजाई। साची सुरत साचे सिख प्रभ दवाई। अकालमूर्त निर्मल जोत जगाई। सर्ब कल प्रभ भरपूर, सर्ब थांईं रिहा समाई। अनहद शब्द वजाए तूरत, गुरसिख आत्म धुंन कराई। महाराज शेर सिँघ सभ आसा पूरत, साध संगत देवे वड्याई। जो जन आए

आस कर, प्रभ आस पुजाए। जो जन आए चरन धरवास कर, प्रभ आत्म धीर धराए। जो जन आए आत्म सोहँ वास कर, प्रभ आत्म ज्ञान दवाए। जो जन आए चरन हँकार नास कर, प्रभ सुरत शब्द मेल कराए। जो जन आए महाराज शेर सिँघ तेरे चरन रहिरास कर, कर किरपा प्रभ पार कराए। चरन कँवल प्रभ साची रहिरासा। लाग चरन निहकलंक दु:ख दर्द सभ नासा। चरन कँवल कँवल चरन गुरसिख प्रभ पूरे कर भरवासा। महाराज शेर सिँघ प्रगट निहकलंक तेरी पूरन करे आसा। आत्म रास जीव आत्म रासी। देवे दरस प्रभ सचखण्ड निवासी। जो जन रसना आहार करे मदिरा मासी। अन्तकाल प्रभ पाए गल जम की फाँसी। साध संगत साचा प्रभ, एका जोत जगाए प्रभ अबिनाशी। सचखण्ड दवाए माण, साध संगत प्रभ चरन निवासी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग प्रगटे घनकपुर वासी। सचखण्ड हरि का द्वार। जोत जगाए प्रभ अपर अपार। एका जोत प्रभ एका एकँकार। तीन लोक प्रभ सदा आकार। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड निहकलंक करे पसार। अवण गंवण तीन भवन वरते विच संसार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक तेरा रंग अपार। रंग रंग प्रभ एका जोत। एका जोत जुगो जुग होत। बेमुख कलिजुग रहे सोत। गुरमुख प्रभ दरस कर, आत्म गए धोत। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग प्रगटावे जोत। सतिगुर साचा सतिगुर सूरा। प्रभ का शब्द ना होए अधूरा। एका शब्द सोहँ चार वरन भरपूरा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, सोहँ शब्द अनहद वजाए तूरा। अनहद तूर राग प्रभ रंग। एका शब्द सोहँ जीव प्रभ दर ते मंग। कलिजुग झूठा जीव, टुट्ट जाए जिउँ झूठी वंग। गुर चरन प्रीती भाल, आत्म चाढ़ जीव साचा रंग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चरन लाग कलिजुग पार जाए लँघ। कलिजुग जन्म जीव अमोलक पाया। प्रभ अबिनाशी भुल्ल मानस जन्म गंवाया। कलिजुग प्रगटे निहकलंक अडोल, सारा जगत डुलाया। हरि प्रभ सदा अतुल, कलिजुग जीव पकड़ तुलाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा, जामा धार निहकलंक भाणा कलि वरताया। कलि वरते, वरताए कलि। बेमुख जीव अग्न जोत जायण बल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द वसावे मन। पवण पाणी अग्नी तेरा मेल। अप तेज वाए पृथ्मी आकास प्रभ का खेल। जीव साची जोत जगाई विच देह बिन बाती बिन तेल। कलिजुग जामा धार भुल्लया प्रभ ना होया मेल। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कोई ना जाणे तेरा जोत सरूपी खेल। साचा शब्द भगत वणजारा। माणे रंग सति रंग भतारा। दरस दिखाए जोत सरूप, प्रभ आत्म दुआरा। अन्तकाल मिलाए जोत, दवाए सचखण्ड दुआरा। ना दीसे प्रभ रंग रूप, एका जोत जगत पसारा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक वड दाता भूप, साचा देवे नाम अधारा। जन भगतां नाम अधार दे, प्रभ आत्म रंग चढ़ाया। वड वड्याई विच संसार दे, साचा लेख विच लिलाट लिखाया। एका शब्द एकँकार दे, एका

दरस दिखाया। साचा नाम भगत भण्डार दे, प्रभ हिरदे नाम वसाया। साचा दरस निरगुणहार दातार दे, जोत सरूपी मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ साच शब्द साचा दरस सच दरबार दे, सतिजुग सति दिखाया। साचे भगत तेरे बलिहार। रसना रवे आत्म गवे, साचा प्रभ मुरार। बेमुख लवे जिउँ सुंञे घर कवे, मानस जन्म गया हार। गुरसिख नौं निध प्रभ दर ते लवे, दोए जोड़ करे निमस्कार। कलिजुग जीव रैण सबाई सवे, अन्तकाल कलि होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति सति सति वरताए सति वरतार। सति वरतार सति पुरखां भिच्छया। सदा रहे आत्म दरस प्रभ इच्छआ। जामा धार निहकलंक कलि करे रिच्छया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां पूरन करे इच्छआ। पूरन भगत परमानंद पाए। वड्याई जगत साचे प्रभ दी सेव कमाए। मानस जन्म दाग़ ना लागत, साचा प्रभ होए सहाए। हउमे मारे विच्चों हँगत, सोहँ शब्द रंग चढ़ाए। जो जन आए प्रभ दर ते मंगत, साचा शब्द प्रभ झोली पाए। महाराज शेर सिँघ तारे सिख सेवक, जिउँ तारे नानक अंगद, चरन प्रीती सेव कमाए। सेवक सेवा सर्ब फल पाया। मुकंद मनोहर लखमी नरायण होवे आण सहाया। साध संगत रल प्रभ चरनीं बहिण, सच अनन्द प्रभ दर्शन पाया। बेमुख वहे कलि झूठे वहिण, कलिजुग बेड़ा प्रभ आप डुबाया। कोई ना दीसे साक सैण, भरम भुलेखा जगत भुलाया। प्रगटी जोत निहकलंक दरस कर गुरसिख नैण, कलिजुग वेला फिर हत्थ ना आया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख सोहँ शब्द जो रसना लैण, निहकलंक जगत वड्आया। महाराज शेर सिँघ धरनी धर, सतिगुर साचा आप अख्वाया। धरनी धर जगत जगदीश्वर। एका जोत जगाई, कलिजुग प्रभ ईश्र। बेमुख जीव अन्तकाल कलिजुग जाए पीसर। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जन भगतां सर्ब सुख दीसर। सर्ब सुख सर्ब सुखदाई। वेले अन्त प्रभ होवे सहाई। साची गुरसिख देवे प्रभ वड्याई। सचखण्ड चरन निवास लै, अमरापद सवरन सिँघ पाई। साचा प्रभ आत्म धरवास दे, सोहँ शब्द सच ज्ञान दवाई। महाराज शेर सिँघ निहकलंक तेरी सच सरनाई। गुरसिख आए प्रभ शरनाया। साचा प्रभ सति पुरखां होए सहाया। प्रगट जोत अन्तकाल, प्रभ साचे दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, गुरसिख साची जोत मिलाया। साचा गुर साचा दर, साची धर्मसाल। साध संगत प्रभ चरन प्रीती, निभ जाए चरनां नाल। साची होए कलिजुग नीती, अन्त ना खाए जम काल। सरबजीत सदा जग जीती, साचा शब्द ल्या जग पाल। साचा शब्द जगत वरतंत। जणावे प्रभ जाणे कोई विरला सन्त। आत्म दिसावे झब, जो जन प्रभ चरन लगंत। अमृत झिरना झिरे विच नभ, कँवल नाभ प्रभ दरस खलंत। अज्ञान अन्धेर मिटे विच देह, आत्म जोत प्रभ सदा जगंत। महाराज शेर सिँघ नाथ त्रैलोकी, जीव जन्त सदा वसन्त। प्रगटे कलि त्रैलोकी नंदन। जोत प्रकाश करे मनोहर मुकंदन। गुरसिख

विरला जोड़ अरदास करे चरन बन्दन। सतिगुर साचा जम फास हरे, अन्तकाल सभ तोड़े बंधन। जो जन आए प्रभ सरन पड़े, सोहँ शब्द प्रभ चाढ़े रंगण। एका शब्द चलाया अवतार नर हरे, गुरसिख चढ़ पार सभ लँघण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे दरस दान गुरमुख आए दर जो मंगण। प्रभ दरस दे हरस मिटाए। हउमे तृष्ना अग्न जलाए। एक शब्द सोहँ आत्म साची जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, साध संगत दरस दिखाए। दरस देख आत्म तृप्तास्सया। भरम भुल्लेखा सभ आत्म नास्सया। साचे प्रभ सच आत्म किया वास्सया। एका शब्द अधार दे, कलिजुग देवे शब्द धरवास्सया। आत्म अमृत भण्डार दे, साची जोत करे प्रकाशया। साचा दरस जोत निरँकार, सोहँ शब्द जपावे स्वास सवास्सया। उठ जीव जाग वक्त विहाया। उठ जीव जाग, पतिपरमेश्वर घर में पाया। उठ जीव जाग, निहकलंक कलि पाई माया। उठ जीव जाग, कलिजुग वेला प्रभ मिलण दा आया। उठ जीव जाग, भुल्ल भुल्ल क्यों जन्म गंवाया। उठ जीव जाग, जोत सरूपी प्रभ कलिजुग खेल रचाया। उठ जीव जाग, झूठे धन्दे लाग, क्यों माण वधाया। उठ जीव जाग, होण पूरन भाग, लाग प्रभ सरनाया। उठ जीव जाग, अनहद शब्द प्रभ सुणावे राग, सोहँ शब्द ढोल वजाया। उठ जीव जाग, चरन लाग, मानस जन्म क्यों जगत गंवाया। उठ जीव जाग, साचे प्रभ हथ सृष्ट वाग, कलिजुग बेड़ा पकड़ रुढ़ाया। महाराज शेर सिँघ शब्द सुणावे अनराग, आत्म धुन विच देह वजाया। उठ जीव जाग, जगत विकारी। उठ जीव जाग, कलिजुग माया धारी। उठ जीव जाग, लाग प्रभ चरन दुआरी। उठ जीव जाग, छड झूठे धन्दे जगत संसारी। उठ जीव जाग, झूठी दिसे सभ जगत पसारी। उठ जीव जाग, कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतारी। उठ जीव जाग, चरन लाग, देवे दरस कृष्न मुरारी। उठ जीव जाग, कलिजुग आया महाराज शेर सिँघ नरायण नर अवतारी। जाग जाग जाग, प्रभ आण जगाया। राग राग राग, सोहँ साचा राग सुणाया। लाग लाग लाग, चरन जीव प्रभ अबिनाशी कलि विच आया। भाग भाग भाग, बेमुख प्रभ दर ते भाग, सोहँ शब्द प्रभ बाण लगाया। नास नास नास, बेमुख कलिजुग जीव नास, मदि मास आहार बणाया। आग आग आग, कलिजुग जोत लगाई आग, कलिजुग अन्तिम खेल रचाया। नाग नाग नाग, बाशक तशक तेरी सेज नाग, नैण मुँधार उप्पर आसण लाया। जाग जाग जाग, कलिजुग जीव जाग, निहकलंक जामा धार कलिजुग आया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा जोत सरूपी कलिजुग खेल रचाया। जन भगतां दे दिखाए, प्रभ साचा सच दुआरा। निहकलंक रिहा वरताए, कलिजुग सोहँ शब्द भण्डारा। कोई विरला झोली पाए, जो जन आए प्रभ चरन दुआरा। बेमुख सुन्न समाध सवाए, सोहँ शब्द प्रभ बाण मारा। जन भगत प्रगट जोत प्रभ बाहों पकड़ तराए, कलिजुग सति अवतारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा,

जन भगतां देवे दर दरबारा। दयानंद प्रभ सदा दयाल। भगत वछल आप रखवाल। जुगो जुग जन भगतां प्रभ सदा निहाल। देवे दरस जगाए जोत प्रभ अन्तकाल। महाराज शेर सिंघ सतिगुर साचा, आत्म जोत देवे बाल। आत्म उतप्त कमाया पित। एका जोत उपजावे सति। साध संगत प्रभ वरतावे प्रभ साची मति। महाराज शेर सिंघ अन्तकाल गुरसिक्खां रक्खे पति। पतिपरमेश्वर प्रभ अन्तरजामी। दुष्ट सँघार सदा निहकामी। कलिजुग प्रगटे जामा धार, निहकलंक सर्ब स्वामी। बेमुखां करे ख्वार, अन्त कलिजुग कोई ना दीसे कामी। जन भगतां देवे शब्द भण्डार, साचा दान देवे प्रभ दानी। बेमुखां करे ख्वार, कोई ना दीसे कलिजुग अभिमानी। साध संगत चरन प्रभ हरि का द्वार, सोहँ शब्द रसना गाए पद निरबानी। महाराज शेर सिंघ तेरा शब्द वरतार, सति सति सति वरताए प्रभ साचा सच वरतानी।

❊ १६ सावण २००८ बिक्रमी चक्राते विहार होया ❊

श्री रंग बैकुण्ठ निवासी। मच्छ कच्छ कूरम आज्ञा अउतरासी। तीन लोक प्रभ चरन की दासी। जोत जगाए प्रगट निहकलंक घनकपुर वासी। जुगो जुग अटल प्रभ अबिनाशी। कलिजुग जामा धार, अन्त कराए मदिरा मासी। जन भगतां पैज संवार,
५१६ ०१ रसन सोहँ जपाए स्वास स्वासी। बेमुखां करे ख्वार, जो दर आए करन हासी। कलिजुग बणाया प्रभ सचखण्ड द्वार, धरे ५१६ ०१
जोत सर्ब घट वासी। गुरसिक्खां बख्शे प्रभ चरन द्वार, साची प्रीत जगत रहिरासी। एका शब्द देवे अधार, हउमे काया विच्चों नासी। नदरी नदर करे प्रभ पार, निहकलंक घनकपुर वासी। घनकपुर वासी तेरा थिर घर। सतिजुग दीसे साचा वर। प्रगटावे जोत निहकलंक अवतार नर। महाराज शेर सिंघ सतिगुर साचा, चरन लाग गुरसिख जाए तर। तारनहारा समरथ जगत आकारया। जामा धार निहकलंक प्रगट जोत करे निरहारया। एका शब्द सोहँ वजाए साचा डंक, चार वरन कराए जै जै जैकारया। एक कराए प्रभ राउ रंक, सतिजुग साचा होवे वरतारया। महाराज शेर सिंघ जामा धार, जन भगतां काज संवारया। जगत तार आया जगत पित। जोत आकारी जीव जन्त उधारी, जोत प्रगटावे जुगो जुग नित। दुष्ट सँघारी जन भगत अधारी, कलिजुग आया पारब्रह्म उचित। महाराज शेर सिंघ सतिगुर साचा, जन भगतां अमृत आत्म देवे सित। आत्म अमृत प्रभ वरखाया। निजानंद निज मांहि उपाया। शांत कराए सति सरूपी, सति पुरख उपाया। महाराज शेर सिंघ निहकलंक, जोत सरूपी खेल रचाया। सतिजुग होवे प्रभ सति वरतार। सोहँ शब्द चार वरन होए अधार। जोत निरँजण साचा करे जोत आकार। जन भगतां रसना जप आत्म किया उज्जयार। आत्म उज्जयार दीसे घर सचखण्ड द्वार। महाराज शेर सिंघ

सतिगुर साचा, सोहँ शब्द देवे जगत भण्डार। गुरमुख तेरी धन्न धन्न धन्न वड्याई। निहकलंक चरन लाग, कलिजुग सेव कमाई। बेमुख कलिजुग दुराचार, दुरमति देह कराई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जामा धार, अचरज खेल रचाई। कलिजुग उचित करे प्रभ खेल। जन भगतां जोत सरूपी किया मेल। आत्म जोत जगाई बिन बाती बिन तेल। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, बेमुख जलाए पा आत्म जोती तेल। निहकलंक नर अवतारी। जामा धरे मातलोक, घनकपुर बणे सचखण्ड दुआरी। जोत जगाए विच तीन लोक, चार कुन्ट कराए जै जै जैकारी। बेमुखां वरते घर घर सोग, रसना किया मदि मास अहारी। महाराज शेर सिँघ कलि तेरी जोत, जन भगतां सोहँ नाम देवे सदा खुमारी। सोहँ शब्द सदा गुणवन्त। रसना जपाए प्रगट निहकलंक भगवन्त। सतिजुग माण कराए, सन्त मनी सिँघ विच जीव जन्त। सच जोत विच लिलाट टिकाए, प्रगट निहकलंक कलि साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रकाशे, माया पाई जगत बेअन्त। माया पाई जगत भुलाया। आपणा भेव प्रभ आप छुपाया। जामा धार निहकलंक, कलिजुग जीव अन्त नास कराया। जन भगतां सोहण द्वार बंक, प्रभ जोत सरूपी डेरा लाया। एका शब्द चलावे इक्क रखावे अंक, साचा शब्द सतिजुग चलाया। ना कोई दीसे राउ रंक, चार वरन प्रभ इक्क कराया। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन द्वार, गुरसिख कर निमस्कार बार अनक, कलिजुग बेड़ा पार कराया। कलिजुग

५२०
०१

पार करे पत्यारा। एका शब्द देवे सोहँ नाम अधारा। धरे जोत जगत आकार, बैठ अडोल आप निराधारा। महाराज शेर सिँघ तेरे साचे बोल, सतिजुग वरते सोहँ तेरा सति वरतारा। सोहँ शब्द सति पुरखां गाया। साचा शब्द सति सरूप विच हिरदे वसाया। जोत जगाए निहकलंक अनूप, अन्ध अज्ञान प्रभ दे मिटाया। दरस दिखावे प्रभ स्वच्छ सरूप, दस्म दुआर प्रभ खोल्ह वखाया। नज़री आए बिन रंग रूप, जोत सरूपी प्रभ जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ कलि वडा भूप, कलिजुग खपाए सतिजुग साचा लाया। कलिजुग मिटे मिट जाए अन्धयारा। एका जोत धरे कलिजुग प्रभ एका एकँकारा। जुगो जुग जोत सरूप प्रभ मात लए अवतारा। कलिजुग जामा धार, घनकपुर बणाए सचखण्ड दुआरा। जन भगतां कराए जै जै जैकार, एका नाम शब्द देवे अधारा। गुर जप कलिजुग जन्म संवारा। महाराज शेर सिँघ तेरा जोत प्रकाश, कलिजुग मिटे अन्ध अन्धयारा। निहकलंक जोत सरूप प्रकाशया। कलिजुग अन्तकाल मिटावे प्रभ अबिनाशया। साची जोत जगत पित, साध संगत विच करे वास्सया। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह, बेमुख कलिजुग तेरे दर तों नास्सया। बेमुख कलिजुग जीव, मदि मास आहारी। जन भगत अमृत रस पीव, आत्म रहे प्रभ नाम खुमारी। बेमुख कलिजुग जीव, आत्म रहे सदा हँकारी। गुरमुख साचे सचे दर थीव, प्रभ चरन करन आए निमस्कारी। कलिजुग जामा धार निहकलंक, सन्त मनी सिँघ तेरी पैज संवारी। सन्त मनी

सिँघ प्रभ माण दवाया । सोहँ शब्द प्रकाश कर, जोत सरूपी दीप जगाया। विच मस्तूआणे वास कर, निहकलंक कलि पाई माया। साचा प्रभ साचा प्रकाश कर, राणा संगरूर बन्नृ चरन ल्याया। राज ताज अन्तकाल प्रभ नास कर, शब्द मनी सिँघ तेरा सच कराया । वाली हिन्द चरन प्रभ दास कर, जोत सरूपी दरस दिखाया। हउमे ममता विच्चों नास कर, आत्म झिरना प्रभ निझरों झिराया । झूठी देह साचे प्रभ विच वास कर, बजर कपाट खोलृ वखाया। साची जोत विच प्रकाश कर, वाली हिन्द पकड़ विच चरन बहाया। निहकलंक जोत सरूपी प्रकाश कर, आपणा भेव आप खुलृाया। शब्द गुण आत्म धुंन, महाराज शेर सिँघ साचा बाण सोहँ लाया। साचा बाण जगत प्रभ लाए। चार कुन्ट हाहाकार कराए। जन भगतां रसना जै जै जैकार कराए। निहकलंक कलि जामा धार, जोत सरूपी सच वखाया। एका जोत कर आकार, अग्न जोत जगत जलाया। महाराज शेर सिँघ कलि सति वरतार, कलि साचा शब्द सोहँ चलाया। अन्तकाल कलिजुग आई हार। वेद अथर्बण प्रभ करे ख्वार। सोहँ शब्द जगत करे आकार। जन भगतां देवे साचा नाम अधार। जो जन आए निहकलंक तेरे दरबार। मानस जन्म कलिजुग कर गए पार। सतिजुग होवे सति तेरा वरतार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, जोत सरूपी तेरा आकार। जोत धरे प्रभ समरथ। सतिजुग देवे सोहँ साची वथ। बेमुखां पाए शब्द सरूपी प्रभ नत्थ। बेमुख जीव कलिजुग होए सर्ब भथ। साध संगत अन्त कलिजुग निहकलंक रक्खे सिर हथ। सोहँ साचा नाम सतिजुग चलाया रथ। महाराज शेर सिँघ निहकलंक सदा समरथ। आवे जावे जगत प्रभ दाता। कलिजुग खेल कराए, वरताए रंग इक्क राता। शब्दी शब्द मेल कराए, जन भगतां चरन रखाए नाता। कलिजुग अचरज खेल वरताए, जोत धरे जगत पित माता। महाराज शेर सिँघ सति सति सति वरतावे, सति पुरख बिधाता। सति सति वरते सभ तेरा भाणा। अन्तकाल कलिजुग कोई ना दीसे राजा राणा। जोत सरूप प्रगट निहकलंक, राउ रंक इक्क कराणा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग वरतावे साचा आपणा भाणा। प्रगट निहकलंक देवे दरस अमोघ। सोहँ शब्द ज्ञान दवाए, कट्टे हउमे रोग। आत्म जोत जगाए, आत्म मिटाए सोग। सुन्न समाध खुलृाए, सति जगाए जोत। सोहँ शब्द धुन वजाए, महाराज शेर सिँघ गुरसिख जगावे जोत। गुरसिख प्रभ जोत किया आकारा । सोहँ शब्द साची आत्म धुन करे धुंनकारा। जन भगत कलिजुग वाचा, प्रभ मिल्या अगम्म अपारा। बेमुख आए दर नाचा, अन्त जाए झख मारा। गुरमुख मिल्या प्रभ साचा, निहकलंक दिखावे सचखण्ड दुआरा। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई, कलिजुग किया जोत सरूप पसारा। जोत सरूप जगत प्रभ आया । बेमुख जीव कलिजुग भेव ना पाया। प्रगट जोत निहकलंक, जोत सरूप विच सिख समाया। नज़र आए ना रंग रूप, ज्ञान गोझ प्रभ भेव खुलृाया। प्रभ की महिंमा बड़ी अनूप, अगाध

बोध बोध अगाध साचा शब्द जगत लिखाया। शब्द सरूप कलिजुग जीव सर्ब होए सोग, नर्क निवास दवाया । साध संगत प्रभ रक्खे मुख, साचा छत्र सिर झुलाया। धारे जोत अनन्द बिनोद, निहकलंक प्रभ नाम लिखाया। जोत सरूपी प्रभ वड दाता जोध, झूठी सृष्ट प्रभ लए खपाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जामा धार निहकलंक घनकपुरी प्रभ माण दवाया। घनकपुर वासी कलि तेरी वड्याई। नर नरायण निहकलंक कलिजुग जोत प्रगटाई। गुरमुख साचा प्रभ दरस कर नैण, आत्म जोत प्रभ दए जगाई। आत्म जोत होए उज्जयार, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे जामा धार, कलिजुग झूठी खेल मिटाई। जोत सरूप प्रभ सद वरतारा। एका जोत अटल, एका एकँकारा। कलिजुग जामा धारया, निहकलंक अवतारा। बाशक सेज तजाई, प्रभ नैण मुँधारा। कलि जोत सरूपी खेल रचाया, साचा जोत किया वरतारा। प्रभ आपणा भेव छुपाया, बेमुखां ना दीसे प्रभ दुआरा। गुरसिक्खां जोत सरूपी दीप जगाया, सच दीसे निहकलंक तेरा दरबारा। प्रभ अबिनाशी आपणे चरन लगाया, खोल्ह दिया दस्म दुआरा। सुरत शब्द प्रभ मेल कराया, उपजे धुन मिटे धुंधूकारा। प्रभ जोती जोत टिकाया, खोल्ह दिया प्रभ दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ आपणा भेव खुल्हाया, सच दिखाया सति पुरखां सचखण्ड दुआरा। सचखण्ड गुरसिक्खां धाम। एका जोत जगाए एका राम। ओअँ आप, सोहँ उपजाए साचा नाम। निहकलंक कलि आया, जोत सरूपी पहरया जाम। घनकपुर धाम सुहाया, जोत धरे विष्नूं भगवान। कलिजुग भेख वटाया। अचरज खेल किया, पाई जगत माया। महाराज शेर सिँघ कोई ना जाणे तेरा नाम, जगत भुलेखा पाया। किया जोत प्रकाश, भाणा वरताया ना भेव जणाया। कलिजुग प्रभ अबिनाश, गुरसिख तराया । निहकलंक दरस दिखाया। सोहँ शब्द जपाया स्वास स्वास, साध संगत प्रभ दे दरस माण दवाया। प्रगट जोत मातलोक, स्वच्छ सरूप दरस दिखाया। निहकलंक जोत निरँकार। कलिजुग तेरा जोत सरूपी आकार। कोई ना जाणे कलिजुग जीव उपजाए, प्रगटे निहकलंक अवतार। धन्न धन्न धन्न गुरसिख सिख साचे दरस देवे कृष्न मुरार। बेमुख भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे, अन्तकाल कलि होए ख्वार। गुरसिख साचा प्रभ चरन रंग माणे, जोत जगाए प्रभ अपर अपार। जो जन चले कलिजुग निहकलंक तेरे भाणे, सोहँ शब्द आत्म धरे उधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां देवे नाम अधार। नाम अधार देवे प्रभ अधारी। स्वच्छ सरूप प्रगटे, निहकलंक नर अवतारी। सतिजुग साची देवे, मनी सिँघ तेरे हत्थ सिक्दारी। चार वरन आयण चरन, सोहँ शब्द होए जै जै जैकारी। चरन लाग राउ रंक सभ तरन, देवे प्रभ भगत भण्डारी। सतिगुर मनी सिँघ, सतिजुग साची होवे तेरी शरन, निहकलंक लिखावे लेख, प्रगट जोत प्रभ लिखारी। सतिगुर मनी सिँघ सतिजुग मिले वड्याई। उच्च पदवी विच मात दे आई। साचा शब्द मारे जग तनक,

ऊँच नीच कोई रहण ना पाई। जन भगत जोत जगाए जिउँ त्रेता जनक, आत्म तृखा दे मिटाई। जोत प्रकाश करे कलिजुग वासी पुरी घनक, चार कुन्ट पै जाए दुहाई। गुरसिख कर निमस्कार बार अनक, निहकलंक कलि होए सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत कलि प्रगटाई। प्रगटे जोत अगम्म अथाह। सतिजुग दीसे दूसर कोई नांह। सोहँ साचा शब्द, सतिजुग दिसावे साचा राह। आत्म उपजावे धुन, जन भगत आत्म गया समा। निहकलंक कलिजुग जीव ना जाणे तेरे गुण, जोत सरूपी कलिजुग खेल ल्या रचा। कलिजुग खेल जगत रचाया। जुगो जुग लै अवतार, प्रभ एका रंग रंग वरताया। जामा धार निहकलंक, खण्ड ब्रह्मण्ड उलटाया। ब्रह्मा गंवाए माण, अन्तकाल जुग चौथे प्रभ विच जोत मिलाया। जामा धार निहकलंक, गुरसिख साचे कलिजुग माण दवाया। सतिजुग वरते सति सति सति, ब्रह्मलोक सिँघ पाल बहाया। चौथे जुग प्रभ जोत धर, अन्तकाल कलि धू कराया। साची जोत मिलाए प्रभ चौथे जुग, अन्त खेल मिटाया। गुरसिख साचे जोत प्रकाश कर, सचखण्ड प्रभ चरन निवास दवाया। सतिजुग साचा सति सति प्रभ वास कर, सिँघ सवरन सचखण्ड द्वार बहाया। चौथा जुग कलिजुग निहकलंक नास कर, सतिजुग साचा सति सति वरताया। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाश कर, साध संगत प्रगट दरस दिखाया। साध संगत जापे सचखण्ड द्वार, प्रगट जोत धरे कलि निहकलंक अवतार। साची जोत प्रगटाई त्रेते साचे शाम अवतार। कलिजुग जामा धारया, निहकलंक अवतार। जन भगत काज संवारया, देवे दरस अगम्म अपार। बहत्तर जामे प्रभ लेख लिखा रिहा। गोबिन्द लिखाया शब्द अपार। महाराज शेर सिँघ नर अवतारया, लिख्त लिखाई अपर अपार। लिखावे लिख्त प्रभ कलिजुग लेख। कलिजुग प्रगट आया, जोत सरूपी किया भेख। साध संगत प्रभ दरस दिखाया, जन भगतां प्रभ ल्या वेख। महाराज शेर सिँघ नाउँ धराया, चार वरन कराए एक। एक वरन प्रभ एका जाति। एका शब्द चलाए एका रंग राती। दूसर कोई रहण ना पाए, चार वरन प्रभ जोत जगाए एका बाती। प्रभ दरस जन सोभा पाए, गुरचरन सतिजुग होवे साची नाती। महाराज शेर सिँघ जोत जगाए, मात पाताल आकाशी। मात पाताल आकाश, प्रभ जोत आकारा। कलिजुग करे जोत प्रकाश, मिट जाए कलि धुंधूकारा। बेमुख जीव अन्त होए नास, लेख लिखाए निहकलंक अवतारा। जो जन करन चरन प्रभ वास, साचा शब्द प्रभ दए अधारा। महाराज शेर सिँघ तेरा जोत सरूपी वास, गुरमुखां आत्म करे उज्जयारा। गुरसिख आत्म उज्जयारी। सोहँ शब्द देवे निहकलंक अवतारी। जोत जगाए सति वरताए, साचा प्रभ अगम्म अपारी। दिस ना आए विच रहाए, सद निराधारी। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखाए कलिजुग भाणा वरताए, निहकलंक नर अवतारी। महासार्थी जगत प्रभ आया। कलिजुग रथ शौह दरया रुढ़ाया। सतिजुग साचा सति सति, सतिगुर साचे

लाया। हिरदे जन भगतां वस वस वस कर, आत्म रंग चढ़ाया। सोहँ साचा शब्द आत्म रस रस कर, निजानंद निज मांहि पाया। साचा राह सतिजुग प्रभ दस्स दस्स कर, सोहँ शब्द सुणाया। जन भगतां कलिजुग हस हस हस कर, रसना गाया। बेमुखां निहकलंक दर तों नस्स नस्स नस्स कर, आपणा मुख छुपाया। जोत प्रकाश गुरसिख दे रवि ससि कर, गुर आत्म जोत जगाया। साची देह विच प्रभ वस कर, दस्म दुआर खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ प्रगट निहकलंक, सतिजुग साचा राह चलाया। सतिजुग तेरी सति वड्याई। सोहँ साचा नाम तेरा होवे सहाई। जामा धार निहकलंक, मातलोक देवे वड्याई। प्रगटी जोत नर नरायण, महाराज शेर सिँघ तेरे नाम दुहाई। सोहँ शब्द जीव सुरत खुल्हाए। सोहँ शब्द जीव आत्म धुंन उपजाए। सोहँ शब्द जीव अन्ध अंध्यार मिटाए। सोहँ शब्द जीव साचा झिरना विच देह झिराए। सोहँ शब्द जीव जोत सरूपी जोत मेल कराए। सोहँ शब्द जीव प्रगट जोत निहकलंक, चार वरन प्रभ झोली पाए। सोहँ शब्द जीव एका एक जगत रहि जाए। सोहँ शब्द जीव खाणी बाणी सर्ब मिटाए। सोहँ शब्द जीव कुरान अञ्जील कोई रहण ना पाए। सोहँ शब्द जप जीव प्रगट निहकलंक आपणी कलि वरताए। सोहँ शब्द चार कुन्ट प्रभ बाण लगाए। सोहँ शब्द जन भगतां होए सहाए। सोहँ शब्द बेमुखां आत्म अग्न जलाए। सोहँ शब्द गुरसिख आत्म तृखा बुझाए। सोहँ शब्द कलिजुग सारा भेख मिटाए। सोहँ शब्द सतिजुग साचा सच सच वरताए। महाराज शेर सिँघ जामा धार, साचा शब्द सोहँ सतिजुग वरन चार चलाए। सतिजुग वरते वरताए सति। प्रभ सति सरूप, देवे साची मति। सोहँ शब्द आत्म रखावे जीव यति। चार वरन प्रभ कराए एका तत्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग वरताए सति सति सति। सति वरताए सति दयाला। जन भगतां देवे दरस गुर गुपाला। साध संगत अन्त कलिजुग होए रखवाला। प्रभ चरन द्वार कलिजुग दीसे साची धर्मसाला । महाराज शेर सिँघ तेरा दरस अपार, सोहँ मिले आत्म साची माला। सोहँ जणाए प्रभ सरनागत। जन भगत प्रभ राखे पति। कलिजुग जीव ना जाणे निहकलंक तेरी मित गत। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप मात जोत प्रगटावे जुगो जुग नित। जुग जुग जगत प्रभ आए। आवण जाण जाण आवण प्रभ खेल रचाए। जन भगतां देवे माण, वेले अन्त होए सहाए। कलिजुग जीव अञ्याण, निहकलंक ना जानण तेरी सोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग विरला गुरसिख जाणे कोए। जाणे सो जिस प्रभ आप जणाए। प्रगट जोत निहकलंक, मुरार कृष्न दरस दिखाए। देवे दरस प्रभ गुरसिख साचे, प्रभ आत्म तृखा मिटाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, गुरमुखां आत्म जोत जगाए। आत्म जोत देवे आत्म अधारी। साची दृष्ट खुल्हाए, प्रभ साचा शब्द अधारी। आत्म उज्जल कराए, एक दिसाए नैण मुँधारी। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, साध संगत तेरी पैज संवारी। पंचम

जेठ विच मात मिले वड्याई। साची जोत नर नरायण, कलिजुग प्रगटाई। जामा धार प्रभ निहकलंक, जोत सरूप घनकपुरी सति जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ कर जोत आकार, कलिजुग साची जोत प्रगटाई। पंचम जेठ प्रभ आया। धार खेल चतुर्भुज कहाया। सावल सुंदर कृष्न घनईआ, जामा धार निहकलंक कलि आया। पंचम जेठ प्रगट जोत, जन भगतां दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे कलिजुग जामा धार, सोहँ साचा शब्द चलाया। पंचम रैणड़ी तेरी रुत्त सुहाई, सच प्रभ मातलोक जोत प्रगटाई। पंचम रैणड़ी तेरी रुत्त सुहाई, सचखण्ड निवासी साची जोत विच मात टिकाई। पंचम रैणड़ी तेरी रुत्त सुहाई, कलिजुग होए जोत प्रकाश, घनकपुरी होवे रुशनाई। पंचम रैणड़ी तेरी रुत्त सुहाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत सति प्रगटाई। पंचम जेठ पंचम जग आया। चौथे जुग दा प्रभ अन्त कराया। कलू काल अन्तकाल, प्रभ साचे खेल मिटाया । पंचम जेठ जामा धार, निहकलंक कलि आया। सोहँ साचा शब्द अधार, सतिगुर साचे राह चलाया। पंचम जेठ सतिजुग होवे तेरी वड वड वड्आया। उत्तम दिवस प्रभ चार वरन विच रखाया। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत निहकलंक आपणा भेव शब्द रूप खुल्हाया। शब्द रूप प्रभ शब्द लिखावे। कलिजुग जामा धार, निहकलंक सति उपजावे। इक्क कराए राउ रंक, ऊँच नीच कोई दिस ना आवे। चार वरन इक्क कराए। सतिजुग साचे तेरे लेख लिखावे। महाराज शेर सिँघ वासी पुरी घनक, विच मात साची जोत प्रगटावे। पंचम जेठ पंचम आया। प्रभ अबिनाशी कलिजुग फेरा पाया। कलिजुग जीव विनासी, मदिरा मास आहार बणाया। गुरमुख साचे प्रभ चरन रहिरासी, साचा शब्द रसना गाया। चार कुन्ट प्रभ चरन की दासी, जोत सरूप ज्ञान दवाया । हउमे ममता विच्चों नासी, आत्म जोत प्रभ दे जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग पाई आपणी माया। कलिजुग माया जगत भुलाया। प्रभ अबिनाशी दिस ना आया। जोत सरूपी प्रभ भेव रखाया । गुर साचे प्रगट जोत, निहकलंक कलि दरस दिखाया। साध संगत साचे प्रभ, साचा शब्द रसन सुणाया। जो जन आए प्रभ दर दे मंगत, साचा शब्द सोहँ प्रभ झोली पाया। सोहँ शब्द जन आत्म चाढ़े रंगत, आत्म धुंन विच देह वजाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुखां जोत सरूपी दरस दिखाया। जो जन आए, प्रभ दरस भिखारी। सो जन सोहे निहकलंक तेरे चरन द्वारी। आत्म उपजे सोहँ धुन धुन्कारी। साची जोत सच, आत्म करे उज्जयारी। साची भिच्छया देवे, जो जन आए प्रभ दर भिखारी। जामा धार कलि निहकलंक, जन भगतां पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साची जोत विच मात उतारी। मातलोक प्रभ सदा आवण जाणया। कलिजुग निहकलंक विरले गुरमुख पछाणया। जोत सरूपी प्रभ जोत प्रकाश कर, तख्तों लाहे राजे राणया। जन भगतां हिरदे वास कर, देवे माण सतिजुग निमाणयां । चार

५२५ ०१

वरन चार कुन्ट प्रभ चरन दास कर, साची जोत सतिजुग प्रगटाणया। साची साध संगत प्रभ वास कर, सोहँ शब्द वजाए धुनकानया। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साची जोत प्रकाश कर, सोहँ सच शब्द जन भगतां कन्न सुणाणया। भगत जनां प्रभ शब्द सुणाया। अमृत आत्म सिंच, सोहँ आत्म मेघ वरसाया। जामा धार निहकलंक, एका शब्द चार वरन चलाया। चार कुन्ट सोहँ तेरा वजाए डंक, महाराज शेर सिँघ सतिजुग तेरा माण रखाया। गुरसिख साचे, कलि साची जोत प्रकाश। गुरसिख साचे, तेरा मिटे अन्ध विश्वास। गुरमुख साचे, सोहँ शब्द जप स्वास स्वास। गुरसिख साचे, एका जोत प्रभ करे प्रकाश। गुरसिख साचे, साचा मिले प्रभ अबिनाश। गुरसिख साचे, कलिजुग होवे तेरी रहिरास। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, तेरी आत्म करे निवास। साचा प्रभ आत्म निवास्सया। कलिजुग बेमुख जीव, साचे दर तों नास्सया। कलिजुग किया आहार, रसना लाए मदिरा मास्सया। सोहँ शब्द तेरा वरतार, बेमुख जीव जगत विनास्सया। साध संगत तेरी रसन जै जै जैकार, सोहँ साचा शब्द गुरसिक्खां भास्सया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, मेल मिलाए प्रभ अबिनाशया। गुरसिख मेल, प्रभ जोत मिलाया। निर्मल साची जोत, गुरमुख साचा विच समाया। सिख गुर गुर सिख मातलोक साची गोत, साचा मग प्रभ जगत चलाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कलि प्रगट जोत, सोहँ साचा शब्द सुणाया। सोहँ शब्द जिस जन वखाणया। चरन लाग, कलिजुग प्रभ निहकलंक पछाणया। सोहँ साचा प्रभ देवे वर, जन्म मरन दा गेड़ मिटाणया। दरस दिखावे अन्तकाल अवतार नर, विच जोती जोत मिलाणया। गुरमुखां मिल्या सचखण्ड अन्त साचा घर, सोहँ शब्द साचा मेल मिलाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप मातलोक सद आवण जाणया। मातलोक प्रभ जोत सरूपी आया। अवण गवण तीन भवन, कलिजुग जीव भुलाया। जामा धार निहकलंक, शब्द सोहँ रसन अलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग पाई उलटी माया। कलिजुग माया जीव भुलाए। जोत सरूप प्रगट प्रभ, कलिजुग दरस दिखाए। साची कलम वगाए मार, बचन मनी सिँघ सति वरताए। बेमुखां करे ख्वार, दुःख भुख जगत हो जाए। सोहँ शब्द खण्डा दो धार, सतिगुर साचा कलिजुग लाए। नर नारी होए ख्वार, ऐसी कला प्रभ कलि वरताए। बेमुखां ना दीसे सति दरबार, कलिजुग माया पर्दा पाए। अन्त आई कलिजुग हार, कोए ना होए सहाए। साध संगत निहकलंक तेरे चरन प्यार, सोहँ शब्द चढ़ाए साची नाए। जो जन आयण प्रभ चरन द्वार, साचा प्रभ होए सहाए। सोहँ शब्द कलिजुग देवे तार, जो जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ तेरा दरस अपार, कर दरस जीव तर जाए। दे दरस प्रभ आत्म दरसाया। हिरदे वरख अमृत मेघ प्रभ बरसाया। साचा शब्द मिटाए आत्म हरस, सोहँ शब्द प्रभ ज्ञान दवाया। साध संगत कलिजुग जामा

५२६ ०१

धार निहकलंक, जोत सरूपी मेल कराया। जोत सरूपी मेल, जन भगतां प्रभ कराए। अमृत झिरना झिराए विच नभ, सुन्न समाध खोल्ह वखाए। जो जन चरन आए तर जाए सभ, निहकलंक तेरी वड्याए। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप प्रगट जोत झब, साध संगत तेरी तृखा मिटाए। साध संगत, निहकलंक सरनाया। जोत सरूप प्रगट प्रभ, कलिजुग होए सहाया। देवे साचा शब्द सोहँ अधार, साचे प्रभ सिर हथ टिकाया। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन दुआर, ना पोहे कलिजुग माया। निहकलंक तेरा दरबारा। कलिजुग दीसे मातलोक सचखण्ड दुआरा। एका जोत धरे निहकलंक अवतारा। साचा शब्द चलाए, सच करे वरतारा। महाराज शेर सिँघ तेरी सरनाए, गुरमुखां मिल्या सचखण्ड दुआरा। गुरसिख गुरमुख प्रभ दया कमाई। कलिजुग जामा धार, साची देवे प्रभ वड्याई। साचा कर जोत आकार, शब्द सुरत प्रभ मेल मिलाई। प्रगट जोत प्रभ निराधार, निरहारी विच सिख समाई। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, दूसर कोई दीसे नाहीं। वड वड आप वड वड्यारा। सोहँ साचा शब्द करे वरतारा। जामा धार निहकलंक, जन भगतां देवे नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग वरते तेरा सति वरतारा। जोत सरूपी प्रभ दर मादि। साचा सोहँ शब्द आत्म धुंन वजाए नाद। खोल्ह वखाए प्रभ आत्म सुन्न, गुरसिक्खां सुणाए साचा राग। महाराज शेर सिँघ चरन लाए कलि, गुरसिख साचे सतिजुग साचे साध। साध संगत प्रभ चरन निवासी। प्रगट जोत देवे
५२७ ०१ दरस, साचा प्रभ घनकपुर वासी। कलिजुग माया, गुरसिख दर तेरे तों नासी। कलिजुग मिल्या निहकलंक, प्रभ अबिनाशी। ५२७ ०१
महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां आत्म सदा निवासी। सति पुरख गुरसिख वड हँसा। उत्तम कराए विच मात प्रभ सहँसा। गुरमुख साचे प्रभ तेरी साची अंसा। सतिजुग चार वरन निहकलंक तेरा साचा बंसा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग उपजावे साची अंसा। चौथा दीपक प्रभ आप बुझाया। जोत सरूपी जोत प्रभ जोती जोत मिलाया। वेद अथर्बण अन्तकाल प्रभ आण मिटाया। ईसा मूसा मुहम्मदी, कोई कलि रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, भाणा कलि वरताया। कलिजुग मूल जाए गंवा के। आप खेल कलिजुग विच मात मिटा के। चौथा दीपक चौथा जुग जाए बुझा के। साचा शब्द सोहँ सतिजुग साचा शब्द लिखा के। एका जोत आप प्रभ ओअँ, एका नाम जाए जगत वरता के। दूसर रहे ना कोई दोअँ, सोहँ शब्द सतिजुग प्रगटे कलिजुग साचा भेख मिटा के। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, सोहँ जाए सतिजुग साची नाओ चला के। सोहँ साची प्रभ नाओ चलाई। आत्म सुरत सुरत जीव, शब्द सुरत दा मेल मिलाई। शब्द सुरत होवे मेल, आत्म जोत प्रभ विच प्रगटाई। प्रगटे जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी तृप्त मिटाई। पूरा गुर देवे भरवासा। जोत सरूप निहकलंक, विच सिख दे वासा। साचा शब्द आकार, जोत सरूप करे प्रकाशा। महाराज

शेर सिँघ तेरी शब्द धुन्कार, कलि देवे दरस सभ घट वासा। दरस दे प्रभ तृखा मिटाई। सन्त मनी सिँघ, निहकलंक साची जोत जगाई। कलिजुग साचे सन्त, साची सेव कमाई। अन्तकाल प्रभ दरस दे, झूठी देह तजाई। उत्तम माण गुरसिख विच सहँस दे, विच जोती जोत मिलाई। साची जोत मातलोक विच सरबंस दे, प्रभ प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, सन्त मनी सिँघ तेरी लिख्त लिखाई। सतिगुर मनी सिँघ सतिगुर बणाया। सतिजुग साचे सच तख्त बहाया। प्रगट जोत निहकलंक, साचे सतिगुर सिर छत्र झुलाया। सतिगुर मनी सिँघ प्रभ दे वड्याई, चार वरन सरनी लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी जामा धार, साचे सन्त सति माण दवाया। मनी सिँघ तेरी धन्न वड्याई। दिवस रैण रैण दिवस, निहकलंक सेव कमाई। उपजे शब्द वजे धुन्कार, आलस निंदरा प्रभ सर्ब मिटाई। एका शब्द अनाहद चलाए एकँकार, साची कलम सन्त हत्थ उठाई। लिख्त लिखाए निहकलंक अपार, विच भंडाल प्रभ जोत जगाई। गुरसिख सेवा करी अपार। धाम न्यारा प्रभ लिख्त कराए, बेमुख होए दुष्ट दुराचार। राणे संगरूर दर चुगली लाई, बेमुख माया धार। साची लिख्त प्रभ कैद कराई, निहकलंक ना पाई सार। साध संगत विच जेल रखाई, महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी कर आकार, साध संगत लए छुडाई। सन्त मनी सिँघ, साचा लेख लिखाया। कलम मार कर ख्वार, राजा राणा सभ तख्तों लाहया। सचखण्ड

५२८
०१

दिखाया निहकलंक दरबार, बाकी सभ दा माण गंवाया। महाराज शेर सिँघ जोत अधार, विष्नूं भगवान वक्त सुहेलड़ा आण सुहाया। विच मस्तूआणे, साची जोत होए रुशनाए। निहकलंक लाए टिकाणे, प्रभ चले आपणे भाए। दिवस रैण रैण दिवस चाली, प्रभ साचा शब्द लिखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा कलि साची जोत जगाए। मस्तूआणे प्रभ भरम मिटाए। वाली हिन्द प्रगट जोत प्रभ दरस दिखाए। राजा राणा राणा राजा, सभ शरन लग जाए। जमन किनारे प्रभ जोत आकारे, साचा धाम निहकलंक प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप शब्द सुरत दे, वाली हिन्द बांहों पकड़ जगाए। भरम भुलेखे प्रभ भुलाया। शब्द मेल ना किसे मिलाया। जोत सरूपी साचा खेल, ना किसे जणाया। महाराज शेर सिँघ जन भगतां संग सुहेल, जुगो जुग होए सुहाया। शब्द ज्ञान जगत जगाए। सोहँ शब्द, निहकलंक साचा नाद वजाए। सतिजुग साचा डंक चार वरन दे उठाए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, राउ रंक इक्क कराए। जोत प्रगटाए विच संगरूर। राणा संगरूर आए प्रभ चरन हदूर। कर दरस आत्म होए भरपूर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत उपजावे गुरमुख साचे साचा देवे नूर। राणा आए प्रभ चरन दुआरे। दोए जोड़ करे निमस्कारे। बख्शणहार बख्श प्रभ, ढहि पए दुआरे। शरनी आए रख लाज, निहकलंक कृष्न मुरारे। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, जो जन आए प्रभ चरन दुआरे। जो जन आए

५२८
०१

प्रभ चरन द्वार। दोए जोड़ करे प्रभ चरन निमस्कार। हउमे ममता तजे हँकार। सोहँ साचा शब्द इक, आत्म रक्खे अधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत करे उज्जयार। जो जन आए प्रभ चरन सेवा। देवे दरस वड देवी देवा। सोहँ साचा शब्द कलिजुग साचा मेवा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, कलिजुग साची तेरी सेवा। साची सेवा साची भिख। कलिजुग पाए कोई विरला सिख। देवे प्रभ वड्याई, उत्तम करे विच मुन रिख। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग प्रगटावे साचे सिख। साचे सिख साचा गुर आप प्रगटाए। प्रगट जोत दे दरस, आपणी चरनी लाए। आत्म मिटाई प्रभ सारी हरस, मदि मास विकार तजाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग साचा तेरा दरस, जन भगतां पार कराए। जन भगत, जगत वड्याई। चंचल मति, चतुर्भुज होए सहाई। कलिजुग जामा धार, निहकलंक देवे वड्याई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साची तेरी सरनाई।

❋ १७ सावण २००८ बिक्रमी चक्राते विहार होया ❋

५२६ ०१ एका जोत एका वरतार। मातलोक जुगो जुग प्रभ लए अवतार। सतिजुग धरे जोत, सति मेहरवान आप निराधार। त्रेता प्रभ प्रगट्या, जोत सरूप राम अवतार। कलिजुग पार उतारदा, प्रभ साचा सच करतार। द्वापर भेख वटा ल्या, जोत धर कृष्न मुरार। रघवंसी यजुर वेद खपा ल्या, ज्ञान गीता रसन उचार। जन भगतां पार करा गया, साचे दे नाम अधार। कलिजुग जामा धारया, निहकलंक नर नरायण अवतार। प्रगट जोत प्रभ साचा शब्द वरता रिहा, शब्द साचा सोहँ जगत अधार। साध संगत प्रभ चरन लगा ल्या, प्रगट निहकलंक अवतार। बेमुखां भस्म करा ल्या, सोहँ शब्द मारी मार। प्रभ कलिजुग जोत प्रगटा ल्या, चार कुन्ट वरते धुंधूकार। जिस जन अन्तकाल सोहँ गा ल्या, कलिजुग बेड़ा होया पार। आपणा भेव प्रभ अबिनाशी शब्द रूप खुल्हा ल्या, महाराज शेर सिँघ जामा निहकलंक कलि धार। कलिजुग आया प्रभ कुलवन्त। साची माया पाई, भुलाए सर्ब जीव जन्त। साचा प्रभ दिस ना आई, कलिजुग जोत धरे भगवन्त। निहकलंक कलि तेरी वड्याई, झूठी सृष्ट करे भस्मंत। चार कुन्ट तेरे नाम दुहाई, ना जणावे किसे आदि अन्त। जन भगतां होए सहाई, शब्द साचा साचा सोहँ देवे मंत। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे जोत सरूप प्रभ अकन्त। कलिजुग आया प्रभ मुरारी। रिखी केश गवर्धन धारी। राम रमईआ कृष्न मुरारी। प्रगट जोत निहकलंक, जोत मात आकारी। चार वरन अन्तकाल कलिजुग दिसण प्रभ चरन द्वारी। सोहँ देवे नाम साचा, प्रभ शब्द अधारी। साची होवे जोत प्रकाश, आत्म होवे जीव उज्जयारी। महाराज शेर सिँघ

निहकलंक, चार वरन तेरी सिक्दारी। भगत वछल जगत प्रभ आया। नर नरायण कलि जोत प्रगटाया। मुकंद मनोहर लखमी नरायण, कलि भेख वटाया। गुरमुख साचा प्रभ वेखे नैण, सोहँ शब्द जिस रसना गाया। निहकलंक तेरे द्वार जो जन रहण, अन्तकाल जम फंद कटाया। साध संगत साची विच जो बहिण, सचखण्ड प्रभ निवास दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धार घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। भगत वछल, अनाथां नाथ। कलि धरे जोत प्रभ रघुनाथ। गोपी नाथ सगल जीव साथ। जामा धारे निहकलंक मात त्रैलोकी नाथ। अन्तकाल भए भयानक, साध संगत सिर प्रभ रक्खे हाथ। जो जन आए प्रभ साचे शरन, आत्म दुखड़े गए लाथ। अन्तकाल जम डन्न ना भरन, साचे लेख प्रभ लिखाए माथ। निहकलंक तेरे चरन लग तरन, देवे दरस प्रभ रघुनाथ। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रकाशे सोहँ साचा शब्द, सतिजुग चलाए साची गाथ। बन माला भिबूखन, कँवल नैन। सुंदर कुण्डल, मुकट बैन। महासार्थी, जगत रथवायन। जामा धारे निहकलंक, विच हिन्द वैण। गुरमुख कलिजुग शरन लाग, आत्म किया साचे शब्द रसैण। सोया जीव गया जाग, साचा प्रभ जोत प्रगटावे तीजे नैण। सोहँ शब्द सुणावे राग, जो जन रसना निहकलंक नाम तेरा लैण। सर्ब सृष्ट प्रभ हथ वाग, बेमुख अन्त ना कलिजुग रहण। साध संगत ना लागे दाग़, निहकलंक चरन लाग अन्त तर जायण। निहकलंक कलिजुग जीव कल वेख सहँस मूर्त सहँस नैण। जोत सरूपी किया भेख। राम चन्द कलि दरस जीव आत्म भए अनन्द, ना दीसे प्रभ रूप ना रेख। संख गदा चक्र पान धारी, प्रभ की महिंमा बड़ी अनूप। कलिजुग जोत प्रगटाई निहकलंक जोत सरूपी साचे भूप। एका जोत जगाई कलिजुग निरँजण। पतित पावन दुःख भय भंजन। हँकार निवार प्रभ भवखण्डन। कलिजुग जामा धारे निहकलंक त्रैलोकी नंदन। गुरमुख विरलें आए दर, सोहँ दान शब्द प्रभ मंगण। साचा दीसे मातलोक प्रभ साचा, घर साचे शब्द चढ़ाई आत्म रंगण। कलिजुग प्रगट निहकलंक, दोवें जोड़ जीव कर बन्दन। एका शब्द देवे अधार, अन्तकाल तोड़े बंधन। गुरमुख उज्जल विच कलिजुग जीव जिउँ प्रभास चन्दन। महाराज शेर सिँघ सतिगुर, साध संगत दरस दान दर आई मंगण। अछल छलन प्रभ जगत छलाया। निहकलंक जामा धार, कलिजुग पाई माया। ल्या प्रभ अवतार, जोत सरूपी मात खेल रचाया। कलिजुग जीव मानस जन्म गए हार, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। निहकलंक तेरा सचखण्ड द्वार, कलिजुग विरले गुरमुख पाया। साचा दिसे ना प्रभ दरबार, मदि मास आहार बणाया। साध संगत प्रभ चरन प्यार, अनहद राग प्रभ धुन उपजाया। साचा शब्द देवे अधार, साची जोत विच दे जगाया। जगे जोत आत्म होवे उज्जयार, जोत सरूपी प्रभ नज़री आया। महाराज शेर सिँघ देवे तार, जिस जन चरनीं सीस झुकाया। गुरसिख साचा, प्रभ पार उतारया। आत्म जोत धरे, एका एकँकारया।

सोहँ साचा शब्द, देवे जीव उधारया। प्रगट जोत, जन भगतां पार उतारया। महाराज शेर सिँघ कलि तेरी माया, बेमुखां अन्त ना पारावारया। अन्त ना जाणे कोई, ना पार उरार। जोत जगाए जगत प्रभ, एका एकँकार। चार वरन कराए इक्क सभ, साचा शब्द दे अधार। अमृत झिरना झिरावे विच नभ, जीव आत्म होवे ठंडी ठार। निहकलंक देवे वड्याई साध संगत, जोत धरे अगम्म अपार। अन्तकाल कलि होए सहाई, साची जोत कर आकार। महाराज शेर सिँघ तेरे हत्थ वड्याई, साध संगत कलिजुग देवे तार। सतिजुग साचा शब्द वरतंत । एक शब्द चलाए, प्रगट जोत प्रभ भगवन्त। चार वरन चरनी लाए, एक कराए सर्ब जीव जन्त। साचा शब्द धुंन उपजाए, जिया सोहँ साचा मंत। अनहद अनाहद साचा राग सुणाए, निहकलंक कलि साचा कन्त। गुरमुखां जोती जोत मिलाए, एका जोत करे प्रभ भगत भगवन्त। जोती जोत मिलाए, भगत उधारया। साचा प्रभ होए सहाए, जामा घनकपुरी विच धारया। सोहँ शब्द जन रसना गाए, प्रगट निहकलंक पार उतारया। सतिजुग साची देवे नाए, साध संगत प्रभ किरपा करे बनवारया। जो जन आए चरन लग जाए, देवे दरस जोत सरूप कृष्न मुरारया । महाराज शेर सिँघ निहकलंक, जामा घनकपुरी विच धारया। घनकपुर आए घनईआ शाम। साची जोत प्रगटाई रमईआ राम। कलिजुग नाम धराए, सोहँ साचा शब्द दवईआ राम। महाराज शेर सिँघ नाम धराए, साची जोत जगईआ राम। कलिजुग

आया प्रभ नैण मुंधार। बाशक सेज त्याग, सिख आसण करे जोत आकार। चरनी आए बाशक नाग, सहँसर मुख रसना नाम प्रभ उचार। ब्रह्मा विष्न महेष प्रभ तेरे चरन द्वार। तीन लोक जोत करे आकार। शंकर खड़ा गल बाशक तशक पाए हार। निर्मल जोत प्रभ जोत आकार। करोड़ तेतीस सुरप्त दीसे तेरा निहकलंक सचखण्ड द्वार । कलिजुग जोत धरे मुरार विच वरभंड, बेमुखां मारे सोहँ मार। सृष्ट सबाई होए अन्ध, निहकलंक करे अन्त ख्वार। साध संगत सोहँ शब्द जाए प्रभ वड, जो जन आए प्रभ चरन द्वार। निहकलंक जोत प्रकाश खण्ड विच ब्रह्मण्ड, एका जोत करे प्रभ आकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग आया निहकलंक जामा धार। तीन लोक प्रभ जोत आकारे। एका जोत, प्रभ जगत अधारे। बैठा अडोल सदा निराधारे। कलिजुग भेव दिया प्रभ खोल्ह, धर जोत प्रभ निराहारे । बेमुख जीव कलि तोले पूरे तोल, अन्तकाल कलि करे ख्वारे। सोहँ शब्द चार कुन्ट वजाया ढोल, बेमुख ना आयण प्रभ चरन दुआरे। जन भगतां हिरदे वसे प्रभ सदा कोल, आत्म होई जगत उज्जयारे। एका शब्द सतिजुग रक्खया मूल, प्रगट निहकलंक नर अवतारे। निहकलंक तेरे कलिजुग चोहल, देवे दरस अगम्म अपारे। दुष्ट दुराचार अन्तकाल प्रभ जावे रोल, कोए ना होवे जगत सहारे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक नरायण नर अवतारे। नरायण नर अवतारा। जोत सरूपी कलिजुग किया पसारा। सोहँ शब्द बेमुखां

५३१
०१

लाया, प्रभ खण्डा दो धारा। जन भगतां हिरदे अमृत वरखाया, झिरना झिरे निझरों धारा। अमृत बूंद कँवल प्रभ पाई, खोल्ह दिया जीव दस्म दुआरा। बुझी दीपक विच दे जगाई, साची जोत करे आकारा। सोहँ साची शब्द धुंन विच प्रभ देह वजाई, उपजे धुंन मिटे धुंधूकारा। उपजी धुन प्रभ सुन्न समाध खुल्हाई, दीसे प्रभ विच निराधारा। प्रगट जोत प्रभ दिखाई, जो जन आए प्रभ चरन दुआरा। साध संगत सिर हत्थ टिकाई, कलिजुग निहकलंक नर अवतारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग धरे जोत कृष्न मुरारा। कलिजुग जीव कलि होया बावला। प्रगटाए जोत निहकलंक घनईआ सांवला। एका शब्द वजाए डंक सोहँ शब्द सच नादला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग साचा धाम सुहावला। सतिजुग तेरा सति वरतार। साची जोत जगाए, निहकलंक अवतार। कलिजुग उत्तम प्रभ आप कराए, घनकपुरी विच जामा धार। कलिजुग जीव लए खपाए, मदि मास जिन किया आहार। साध संगत प्रभ होए सहाए, सोहँ शब्द देवे नाम अधार । महाराज शेर सिँघ कलि तेरी सरनाए, साचा दीसे सचखण्ड द्वार। सोहँ शब्द देवे निहकलंक, जन भगतां नाम भण्डार। साचा शब्द वजाए डंक, चार कुन्ट होए जै जै जैकार। एका कराए प्रभ राउ रंक, राजा राणा सभ तख्तों उतार। चार वरन सोहण बंक, सोहँ शब्द सतिजुग होवे सति तार। महाराज शेर सिँघ वासी पुरी घनक, कलिजुग खेल किया न्यार। शब्द मेल निहकलंक कराया। प्रगट जोत मातलोक, जन भगतां दरस दिखाया। तजाया इन्द ब्रह्मलोक, सिख आसण घर प्रभ डेरा लाया। छड आया प्रभ शिवलोक, विच मात जोत प्रगटाया। महाराज शेर सिँघ नाथ त्रैलोकी, जन्म धार घनकपुरी कलि भाग लगाया। सतिजुग साचा विष्नूं बंस। चार वरन कराए प्रभ एका अंस। सोहँ साचा शब्द चलाए, दुष्ट खपाए जिउँ कृष्ना कंस। निहकलंक कलि नाम धराए, गुरसिख विरले चरनीं लाए, कलिजुग विच्चों सहँस। जन भगतां प्रभ दरस दिखाया। हउमे ममता रोग गंवाया। आत्म सहसा सारा लाहया। दे दरस अपार, कपाट बजर प्रभ खोल्ह वखाया। अमृत मेघ वरखा निराधार, आत्म सिंच प्रभ शांत कराया। जोत सरूपी कर जोत आकार, निहकलंक कलि दरस दिखाया। गुरमुख कर दरस कलि होया पार, साचे प्रभ सिर हत्थ टिकाया। बेमुख कलिजुग होए ख्वार, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। गुरसिख साचे सोहँ शब्द अधार, प्रगट जोत प्रभ जगत वरताया। कलिजुग जीव मारी सोहँ मार, अन्त नर्क निवास दवाया। गुरमुख सोहण प्रभ चरन द्वार, दे दरस प्रभ विच जोत मिलाया। मदि मासी अन्त कलि आई हार, निहकलंक दे सज़ाया। गुरमुख विरले कलि उतरे पार, सोहँ शब्द जिस रसना गाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरा नर अवतार, सोहँ होवे जगत सहाया। जगत वरते प्रभ वरतारा। झूठी सृष्ट अन्त कलि होए ख्वारा। कलिजुग जीव मुग्ध अज्ञाण, ना आए निहकलंक तेरे चरन दुआरा। सोहँ साचा शब्द

५३२
०१

बाण, जगत प्रभ मारा। साध संगत प्रभ देवे माण, धर जोत निहकलंक नैण मुँधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग वरते तेरा सति सति वरतारा। सतिजुग लाए सतिगुर साचा। कलिजुग मिटाए सतिजुग वरताए सतिगुर साचा। बेमुख दर आए हस्सा हस उठ जाए, झूठा जीव दर साचे नाचा। साध संगत प्रभ दे वड्याई, सोहँ साचा शब्द धुन गुरसिख मन आत्म वाचा। आत्म कर विचार, प्रभ विचारया। आए चरन द्वार, गुरसिख निमस्कारया। मानस जन्म ल्या सुधार, निहकलंक तेरे सचखण्ड द्वारया। कलिजुग बेड़ा होया पार, उज्जल मुख विच संसारया। बेमुखां आई अन्त कलि हार, सतिगुर साचा मनों विसारया। अन्त देवे प्रभ नर्क निवास, मदि मास जो करे आहारया। धर्म राए मारे डाहढी मार, कुंभी नर्क करे ख्वारया। कलिजुग बेमुख जीव, निहकलंक तेरा कर्म विचारया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, कलिजुग अन्त पार उतारया। कलिजुग मिटे मिटे अन्धयारा। साची जोत धरे, निहकलंक विच संसारा। चार कुन्ट मचाए प्रभ जोत सरूपी धुंधूकारा। जीव जन्त अन्तकाल सभ होए ख्वारा। साध संगत निहकलंक द्वार रसना सोहँ जै जै जैकारा। महाराज शेर सिँघ तेरा जगत वरतार, सोहँ शब्द कराए सति वरतारा। जगत पित निहकलंक तेरी शरनाया। भय भयानक विच होए सहाया। सोहँ साचा शब्द जिस जन रसना गाया। निहकलंक तेरे चरन प्यार, झूठी जगत तजाई माया। लोकमात दीसे सचखण्ड द्वार, प्रगट निहकलंक दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विच संसार, जामा धार जोत सरूपी खेल रचाया। साचा प्रभ वसे सचखण्ड। जोत जगाए विच ब्रह्मण्ड। निहकलंक नाम धराए विच वरभंड। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द चलाए विच नव खण्ड। मार मार मार, शब्द बाण जगत प्रभ मारया। हार हार हार, कलिजुग जीव मानस जन्म कलि हारया। तार तार तार, निहकलंक जो जन आए तेरे चरन द्वारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, जामा घनकपुरी विच धारया। घनकपुरी प्रभ जोत प्रगटा के। सन्त मनी सिँघ दरस दिखा के। कलिजुग आया कृष्न घनईआ भेस वटा के। निहकलंक कलि नाउँ रखा के। साध संगत जाए प्रभ दरस दिखा के। सोहँ साचा शब्द जपा के। अनहद राग आत्म उपजा के। निहकलंक जाए दया साध संगत कमा के। दु:ख रोग सारे देह दे लाह के। अमृत आत्म वरखा वरखा के। अमृत बूंद साध संगत जाए रसना ला के। आत्म बुझी दीप निहकलंक दर जाए जोत जगा के। सोहँ साचा नाम महारस पीव, आत्म वेखे प्रभ वखाए आपणा आप प्रगटा के। सोहँ साची प्रभ रखाई नीव, सतिजुग जावे प्रभ साचा ला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन जाए इक्क करा के। चार वरन प्रभ भेत चुकाया। नीच ऊँच ऊँच नीच दा खेल मिटाया। राउ रंक कर इक्क बहाया। कलिजुग निहकलंक तेरी वरते माया। सोहँ साचा शब्द, चार वरन सुणाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, सति पुरखां प्रगट दरस

५३३ ०१

दिखाया। दरस दिखाए प्रभ दरस मन्द। कलिजुग जीव कराए अन्ध। आत्म पर्दा विच रखाया कंध। गुरमुख साचे सोहँ शब्द तेरा मन अनन्द। आत्म उपजे जीव परमानंद। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, सोहँ सतिजुग चाढ़े साचा चन्द। सतिजुग तेरी सति वड्याई। प्रगट जोत निहकलंक, तेरी लिख्त कराई। सतिगुर मनी सिँघ, सतिजुग मिले वड्याई । चार वरन चल आयण, तेरी सरनाई। चार कुन्ट होए रुशनाई, शब्द धुन प्रभ जगत सुणाई। साचा शब्द सोहँ, बेमुखां प्रभ आत्म चोट लगाई। सृष्ट सबाई निहकलंक, अन्तकाल सुन्न समाध सवाई। जामा धार घनकपुर, सतिगुर देवे सति वड्याई। सतिजुग तेरा सच लिखाया लेख। चार वरन इक्क कराया भेख। कलिजुग जीव जो वरते कल, नैण लैणा वेख। निहकलंक जोत धरे, कर जोत सरूपी भेख। साध संगत साचा दर प्रभ ल्या वेख। महाराज शेर सिँघ अन्त मिटाए, कलिजुग झूठा भेख। भेख धार प्रभ बणे भिखारी । आवे चल, जिउँ बल दुआरी। मच्छ कच्छ प्रभ जोत आकारी। जुगो जुग निहकलंक, मात लए अवतारी। कलिजुग जामा धार, झूठी सृष्ट प्रभ आण सँघारी । गुरसिक्खां दे शब्द अधार, प्रगट जोत कलि पैज संवारी। जुगो जुग जोत सरूप, प्रभ जोत जगत वरतारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग आया धर नाम मुरारी। शामा रामा एका नाम। जोत जगे एका धाम। एका प्रभ जुगो जुग एका काम। कलिजुग जामा धार निहकलंक, प्रभ सोहँ शब्द जपाए साचा नाम। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां देवे साचा नाम। जन भगतां प्रभ दरस दिखाया। सोहँ साचा शब्द सुणाया। निजानंद निज मांहि उपजाया। जगत पित प्रगट निहकलंक होए सहाया। आदि अन्त तेरा प्रभ, किसे जीव ना पाया। जोत सरूपी जगत वर, प्रभ आपणा आप छुपाया। साची जोत विंच मात धर, कलिजुग अन्ध अंध्यार कराया। गुरमुखां दीसे निहकलंक तेरा साचा दर, चरनीं आए सीस झुकाया। महाराज शेर सिँघ चौथे जुग अवतार नर, कलिजुग प्रगट अन्त कराया। कलिजुग अन्त प्रभ किया निबेड़ा। करे जोत प्रकाश ना लावे देरा। बेमुख दीसे चार कुन्ट अन्धेरा। गुरसिक्खां आत्म जोत प्रकाश, ना होवे सञ्ज सवेरा। निहकलंक तेरा जोत प्रकाश, कलिजुग पाया प्रभ साचे फेरा। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ आप तजा के। गुरसिख साचे प्रभ बैठा आसण ला के। कलिजुग जीव उलटी माया पाए, जामा धारे निहकलंक जोत सरूपी भेख वटा के। साचे सिख देह प्रभ करे निवास, नौं दर बन्द करा के। एका जोत जगाए मात पाताल आकाश, महाराज शेर सिँघ निहकलंक कलि नाउँ धरा के। तार तार तार जन भगत जन तारया। पार पार पार कर कलिजुग पार उतारया। अवतार अवतार अवतार निहकलंक नर अवतारया। धार धार धार प्रभ जामा घनकपुरी विच धारया। सार सार सार प्रभ पाई गुरसिख जो प्रभ चरन द्वारया। मार मार मार प्रभ करे बेमुखां अन्त ख्वारया। हार हार हार कलिजुग अन्त गया हार,

५३४
०१

वेद अथर्बण अन्त हारया। द्वार द्वार द्वार, मातलोक निहकलंक तेरा सचखण्ड द्वारया। महाराज शेर सिँघ प्रगट निहकलंक, जन भगतां पार उतारया। सतारां सावण, प्रभ सति वरताया। वीह सौ अट्ठ बिक्रमी, कलिजुग क्रिया कर्म कराया। सति निरँजण कलिजुग जोत प्रगटा के निरँजण राया। चार वरन कराए एका गोत, सोहँ साचा शब्द सुणाया। प्रगटी कलि निहकलंक प्रभ जोत, कलिजुग प्रगट अन्त कराया। साध संगत दर आए दुरमति मैल जाए दर धोत, निहकलंक तेरा दर्शन पाया। मदि मासी दर जायण रोत, रसना प्रभ विकार चलाया। महाराज शेर सिँघ अबिनाशी जोत, जुगो जुग जन भगतां आण तराया। भगत जनां प्रभ लाज रखाए। सतारां सावण प्रगट जोत निहकलंक साची लिख्त लिखाए। वीह सौ अट्ठ बिक्रमी, कलिजुग शब्द मार जलाए। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, जोत सरूप अग्न जोत जगत जलाए। कलिजुग होवे अन्ध अन्धयारा। शब्द बाण निहकलंक अन्त मारा। कोई ना दीसे जीव दुष्ट दुराचारा। बेमुखां किया पार किनारा। साची साध संगत, सोहँ शब्द सच वरतारा। जन भगतां देवे प्रभ साचा नाम भण्डारा। बेमुख दर आए, जाए झख मारा। निहकलंक ना दीसे कलिजुग अवतारा। जन भगतां, आत्म जोत करे प्रभ उज्जयारा। जोत सरूप प्रगट निहकलंक, कलिजुग भेव खुल्हाए सारा। महाराज शेर सिँघ, तेरा होवे सति वरतारा। भगत जनां प्रभ होए सहाया। जामा धार निहकलंक, साध संगत सिर हत्थ टिकाया। सचखण्ड दे निवास, गुरसिख साचा विच जोत मिलाया। जो जन होए चरन प्रभ दास, आवण जावण दा प्रभ गेड़ चुकाया। कलिजुग देवे भगतां वड्याई। इन्द्र सिँघ, प्रभ तेरी आत्म जोत जगाई। कलिजुग जामा धार, निहकलंक चरन सेव कमाई। कलिजुग बेड़ा किया पार, प्रभ देवे वड्याई। रक्खे लाज, महाराज शेर सिँघ, जो जन आए सरनाई। इन्द्र सिँघ तेरी आत्म वास। आत्म जोत प्रभ करे प्रकाश। सतिगुर साचा विच रक्खे वास। आत्म अन्ध अन्धयारा, दे दरस प्रभ किया नास। एका जोत टिकाई, प्रभ अबिनाश। गुरसिख तेरी कलिजुग वड्याई, सोहँ शब्द जप स्वास। महाराज शेर सिँघ साची जोत प्रगटाई, गुरसिख किया वास। गुरमुख मिल्या, प्रभ गुण निधाना। गुरसिख होया कलिजुग सुघड़ सुजाना। सोहँ शब्द आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। देवे दरस प्रगट जोत, निहकलंक विष्नूं भगवाना। साचा शब्द गुरसिख साचे, कलिजुग आत्म माना। आत्म होवे प्रकाश, जगे जोत विच देह महाना। हउमे ममता जाए नास, अनहद शब्द वज्जे बिधनाना। महाराज शेर सिँघ सदा अबिनाश, साध संगत देवे चरन ध्याना। साध संगत प्रभ चरन ध्यान। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। देवे दरस प्रभ गुणी निधान। गुरमुख साचे, निहकलंक तेरा दर्शन पाण। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाए, सतिजुग चार वरन होए तेरी आण। गुरमुखां मुख कलि उज्जल किया। जोत सरूपी प्रगट जोत, प्रभ आत्म जोत जगाया दिया। साध संगत तेरी

कलि वड्याई, दर आए निहकलंक अमृत रस पिया। महाराज शेर सिँघ होए सहाई, देवे फल पूरब जन्म जो बीआ । पूरब कर्म, प्रभ गुरसिख विचारया। कलिजुग प्रगट दरस दे, जन्म मरन सवांरया। आत्म अमृत बरस के, प्रभ आत्म दुःख निवारया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, जन भगतां पार उतारया । भगत जनां प्रभ दरस दिखा के। आत्म जाए जोत जगा के। सोहँ साचा शब्द, धुन उपजा के। अनहद राग आत्म सुणा के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति सति सति जाए सतिजुग वरता के। भुल भुल भुल, जीव प्रभ भुलाया। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। झूठे धन्दे मानस जन्म गंवाया। रसना विकारी, मदि मास आहार बणाया। आत्म हँकारी, काम क्रोध वसाया। कलिजुग जीव भुल्ले संसारी, निहकलंक पाई माया। गुरमुख विरले चल आए दरबारी, प्रगट जोत प्रभ दरस दिखाया। साचा शब्द देवे प्रभ जोत अधारी, महाराज शेर सिँघ कलि नाम धराया। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, गुरमुख जगाए। सुरत शब्द मेल प्रभ, दस्म दुआर खुल्हाए। शब्द सुरत प्रभ मेल कर, अमृत झिरना निझरों झिराए। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, आत्म साची जोत जगाए। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, सुन्न समाध खोल्ह वखाए। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, अनहद साचा राग सुणाए। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, जोती जोत मिलाए। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, सचखण्ड द्वार दसाए। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, पवण उनन्जा सिर छत्र झुलाए। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, एकँकार इक्क आकार कराए। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, ईश जीव दा भेद मिटाए। सुरत शब्द प्रभ मेल कर, महाराज शेर सिँघ गुरमुख साचे सचखण्ड धाम पहुंचाए। शब्द देवे सुरत ज्ञाना। देवे शब्द विष्नूं भगवाना। जगाए जोत प्रभ देह महाना । जोत सरूपी कलिजुग प्रभ पहरया जामा। तख्तों लाहया सभ राजा राणा। अन्तकाल कलिजुग प्रभ, वरन चार इक्क कराणा। ऊँच नीच नीच ऊँच दा भेव मिटाणा। सतिजुग साचा सति सति सति वरताणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग वरताए आपणा भाणा। भाणा कलिजुग प्रभ आप वरताया। कूड़ डंक एका अंक गुर पूरे शब्द सुरत दे विच्चों गंवाया । कलिजुग प्रगट निहकलंक, अनराग सोहँ शब्द सुणाया। गुरसिख भाग गए जाग, रसना जप महा सुख पाया। बेमुख आत्म लाई आग, हस्स हस्स वक्त गंवाया। साचे प्रभ पताल सेज सुहाई उप्पर बाशक नाग, लच्छमी चरन झस्सण लाया । महाराज शेर सिँघ कलिजुग जामा धार, जीव आलस विच सवाया। सोहँ प्रभ साचा नाद वजाया । चार कुन्ट पै जाए दुहाया । अन्तकाल कलिजुग जीव, भुल डुल चरन प्रभ आया। रक्खे लाज निहकलंक, जो आए चल सरनाया । जामा धार विच पुरी घनक, प्रभ आपणा आप छुपाया। कलिजुग आया जोत प्रगटायके। लक्ख चुरासी जून गुरसिख जाए गेड़ कटायके। एका एकँकार, एका एक वरतायके। सोहँ साचा शब्द, सतिजुग ज्ञान दवायके। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां जगत

वड्यायके। भगत जन प्रभ दरस प्यासा। बेमुखां निहकलंक तेरे दर आए हासा। गुरसिक्खां सोहँ शब्द आत्म करे प्रकाशा। बेमुखां दर आत्म होई नासा। गुरसिक्खां सोहँ जपिआ स्वास स्वासा। कलिजुग निहकलंक तेरे चरन भरवासा। साध संगत प्रभ दासन दासा। दासन दास आप प्रभ हरी। चरन लाग साध संगत कलि तरी। गुरमुख साचे प्रभ मिल्या साचा आसा वरी। कलिजुग जामा धारया, निहकलंक अवतार नरी। महाराज शेर सिँघ सो धाम सुहाए, जोत प्रगटावे जिस दरी। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ जोत जगाए। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ दरस दिखाए। सो सुहाए थान, सिँघ आसण प्रभ डेरा लाए। सो सुहाए थान, जिथ्थे जीव प्रभ जगत भुलाए। सो सुहाए थान, जिथ्थे निहकलंक भगत तराए। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ अबिनाशी कलि जोत प्रगटाए। सो सुहाए थान, जिथ्थे सोहँ साचा ज्ञान प्रभ सुणाए। सो सुहाए थान, जिथ्थे साचा शब्द साध संगत प्रभ झोली पाए। सो सुहाए थान, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत कलिजुग खेल वरताए। सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ आया। प्रगट जोत, साध संगत माण दवाया। सुहाए थान, जगत पित होए शरनाया। सुहाए थान, विष्नूं भगवान मातलोक विच डेरा लाया। सुहाए थान, सतिगुर साचे साध संगत साचा शब्द सुणाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, निहकलंक कलि भेव खुल्हाया। निहकलंक प्रभ कलि प्रकाशया। जोत सरूप विच सिख दे निवास्सया । साचा शब्द साध संगत जपावे प्रभ स्वास सवास्सया। गुरमुख साचा मात गर्भ ना करे वास्सया। बेमुख दर ते आए, सोहँ शब्द सुण दर ते नास्सया। साध संगत निहकलंक तेरे चरन भरवास्सया। जोत जगाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अबिनास्सया। साध संगत मिल्या, ऊँचा दर ऊँचा दरबार। जोत सरूप प्रगटे, कलिजुग निहकलंक अवतार। एका शब्द साचा भेव, सोहँ दिया नाम अधार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आया, निहकलंक जामा धार। साध संगत तेरी सति वड्याई। प्रभ चरन प्रीती कर दरस प्रभ पाई। आत्म तृखा कलिजुग मिटाई। सोहँ साचा नाम, प्रभ झोली देवे पाई। एका मन उपजावे राग, राम रमईआ साचा नाम महाराज शेर सिँघ दिवाई। सोहँ नाम जो जन कमाए। आत्म अमृत रस निज माहे पाए। साचा प्रभ हो जाए वस, आत्म साची जोत जगाए। जगत विकार जायण सभ नस्स, निहकलंक होए सहाए। सोहँ बाण शब्द प्रभ मारे कस, बीर बैताल कोई नज़र ना आए। करे जोत प्रकाश जिउँ रवि सस, अज्ञान अन्धेर दए मिटाए। गुरमुख आए चरन प्रभ नस्स, बेमुख गए मुख छपाए। सतिजुग साचा राह जाए प्रभ दस्स, सोहँ शब्द साची नाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए अन्त सहाए। सच शब्द प्रभ आप उपजाया । एका राग मध माधव सुणाया। मुरारी कृष्न निहकलंक, कलि जामा पाया। साचा प्रभ दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेष, शेर सिँघ नाम धराया। वडा दर वड दरबार। एका जोत करे

आकार। जोत सरूपी जोत प्रभ आया एकँकार। ओअँ प्रभ आप, सोहँ साची शब्द धुन्कार। सतिजुग वरताए सति सति, प्रभ रसना गाए सर्ब संसार। आत्म रखाए प्रभ यति यति यति, सोहँ शब्द देवे अधार। सतिजुग वरताए प्रभ साची मति, निहकलंक तेरे नाम जै जै जैकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत रसना देवे शब्द विवहार। कलिजुग अन्त प्रभ आप कराया । ईसा मूसा मुहम्मदी सभ जगत मिटाया। अल्ला अलाह नूर कोई दिस ना आया। जामा धार निहकलंक, बेमुखां अन्त आए खपाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, सोहँ साचा राह चलाया । कलिजुग सारी खेल मिटाई। तीर्थ तट्ट कोई रहे ना राई। गंगा गोदावरी प्रभ जोत खिच रखाई। अट्ठ सठ तीर्थ प्रभ माण गंवाई। अन्तकाल कलिजुग, सर अमृत थेह हो जाई। सिँघ लछमण तेरा एका घर, अमृतसर निशान रहि जाई। जामा धार निहकलंक, मनी सिँघ शब्द सुरत दवाई। साचे सन्त लिख्त लिखी अपार, अमृतसर सराफ दवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लै अवतार, कलिजुग पूर कराई। पूरन बचन प्रभ सन्त कराया। उन्नी सौ अठसठ बिक्रमी जो लिख्त प्रभ साचे करवाया। निहकलंक होए प्रगट, जाए संगरूर डेरा लाया। शब्द सुरत राणा संगरूर प्रभ दरस दिखाए अलख, बाहों पकड़ दर टुंब उठाया। महाराज शेर सिँघ जामा धार कलिजुग सभ दा माण गंवाया । गंवाए माण प्रभ हँकारीआं। देवे माण जो जन आए प्रभ चरन द्वारया। गुणी निधान, निहकलंक वड संसारया। चार कुन्ट सुंञ मसाण, हो जाए धुंधूकारया। रोवण बिरध बाल जवान, चार कुन्ट होवे हाहाकारया। महाराज शेर सिँघ सो जन उधरे, जिस देवे साचा नाम अधारया। जमन किनारे प्रभ आए चल। प्रगटावे जोत निहकलंक, अन्त कलिजुग ना लावे पल। नौं खण्ड पृथ्मी जावे हल। साध संगत बैठे, निहकलंक तेरा दर मल । बेमुख जीव अग्न जोत कलि जायण जल । महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाश, वरताए भाणा ना जाए टल। प्रभ अटल, सच शब्द लिखाया। साचा शब्द विच जगत वरताया। जामा धार निहकलंक, वाली हिन्द दरस दिखाया। साची शब्द जोत प्रभ लाए तनक, छड दरबार निहकलंक शरन तेरी आया। कर निमस्कार बार अनक, जाए भुल बख्शाया। प्रगटे जोत वासी पुरी घनक, साचा भेव ला चरन सेव वाली हिन्द दिखाया। वाली हिन्द दरस प्रभ कर। एका दीसे निहकलंक, सतिजुग तेरा दर। लाए चरन, वरन चार इक्क जाए कर। सोहँ साचा नाम, प्रभ आत्म देवे धर। गुरमुख साचे, कलिजुग माया कोलों मूल ना डर। अन्तकाल होए सहाई, निहकलंक अवतार नर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साचा तेरा दर घर। साचा दर, सति पुरखां पाया । अवतार नर, प्रभ दरस दिखाया। जगन्नाथ भगवान बीठला, प्रभ नज़री आया। प्रगट जोत निहकलंक, चतुर्भुज होए दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, बेमुखां पाई कलिजुग माया। कलि तेरा जगत आकार। झूठा किया जगत पसार। काम

क्रोध जगत चलाया विकार। अन्तकाल कर्म विचार प्रभ देवे हार। बेमुख जीव निहकलंक, अन्त करे ख्वार। गुरमुख साचे अमृत रस पीव, साचा नाम अधार। गुरसिख साचे सदा जग जीव, साची लिख्त लिखाए प्रभ गिरधार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट्या, जिउँ द्वापर कृष्न मुरार। द्वापर प्रगटे कृष्न मुरारी। कँवल नैण चतुर्भुज धारी। सिँघ सिँघासण गरुड़ सवारी। जन भगतां अन्ध कूप पैज संवारी। द्रोपत सुत पार उतारी। बिदर सुहाया थान, छड दुर्योधन अटारी। दुरबाशे गंवाया माण, पांडो रक्खे लाज प्रभ मुरारी। जादव जामा धार, द्वापर आया कृष्न अवतारी। अर्जन दे ब्रह्म ज्ञान, गीता ज्ञान जगत विचारी। साचा शब्द लिखाए विष्नूं भगवान, सुख देवे मन बणे लिखारी। यजुर वेद मिटाए गिरधारी। द्वापर अन्तिम अन्त, विष्नूं भगवान मात जोत आकारी। कलिजुग जामा धार, प्रगट होवे निहकलंक अवतारी। बेमुख होया सर्ब संसार, झूठी माया जगत पसारी। बेमुखां आत्म होया अन्ध अंध्यार, ना दीसे राधा कृष्न मुरारी। जन भगतां दे दरस अपार, घनईए कृष्न कलि पैज संवारी। साची जोत किया आकार, जुगो जुग आए जगत प्रभ निरँकारी। एका जोत सदा, जुग अनेक भेख प्रभ वरतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान प्रगटे जोत, सतिजुग लिखाए शब्द लिखारी। कलिजुग आया प्रभ धरनी धर। जामा धारे निहकलंक अवतार नर। बेमुख जीव अन्त कलिजुग दुःख जायण भर। साध संगत प्रभ चरन लाग जाए तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन जाए इक्क कर। वरन बरन प्रभ एका चरन। सतिजुग जीव प्रभ चरन लाग तरन। एका शब्द एका गुर, चार वरन आए शरन। प्रगट जोत निहकलंक, साची टेक सतिजुग जीव प्रभ धरन। धरनी धर जगत पित आया। दरस देवे निरँजण राया। साध संगत तेरा होए सहाया। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण, कलि भेख वटाया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, धरत धवल आकाश हिलाया। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ उलटाए। ब्रह्मा निहकलंक माण गंवाए। धू दरबान रहण ना पाए। चौथे जुग प्रभ जोती जोत मिलाए। गुरमुख साचे कलिजुग सिख, प्रभ सचखण्ड माण दवाए। साचा सिख सिँघ पाल, निहकलंक ब्रह्मलोक पुचाए। गुरमुख साचा सवरन सिँघ होवे दरबान, सचखण्ड प्रभ चरन सेव कमाए। महाराज शेर सिँघ तेरी शक्ति महान, जन भगतां माण दवाए। बहत्तर जामे जन भगत लिखाए। कलिजुग जामा धार निहकलंक, सच कर्म चलाए। कलिजुग उत्तम उत्तम सिख, उत्तम मुख पाल सिँघ कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, ब्रह्म लोक दे विच पहुंचाए। ब्रह्मलोक गुरसिख टिकाया। चार वेद प्रभ माण गंवाया। बाहों पकड़ निहकलंक, ब्रह्मा विच जोती जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, खण्ड ब्रह्मण्ड उलटाया। गुरसिख देवे प्रभ वड्याई । सृष्ट सबाई हत्थ फड़ाई। जोत सरूप विष्नूं भगवान, खण्ड सच साची जोत जगाई। जामा धार निहकलंक, जोत सरूप प्रभ मेल मिलाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर

साचे, गुरमुख साचे दर तेरे सोभा पाई। ब्रह्मलोक दीसे गुरसिख ब्रह्मादी। एका शब्द प्रभ वजाए धुन प्रभ अनादी। जामा धार निहकलंक, झूठी दुनियां साधी। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई साध संगत, सोहँ शब्द सद रसना अराधी। रसना अराध, आत्म रस जाणया। साचा नाद, सोहँ शब्द आत्म धुंन उपजाणया। कलिजुग प्रगटे कृष्न मध माधव, वरताए सति सति सतिजुग भाणया। हँकारीआं प्रभ ल्या साध, तख्तों लाहे राजे राणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा रंग विरले गुरमुख माणया। रंग माणे प्रभ रंग राता। देवे दरस, प्रभ विधाता। सोहँ शब्द देवे दान वड दाता। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, प्रभ सर्ब ज्ञाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे चरन प्रीत कलिजुग साचा नाता। चरन प्रीत जिस जन कमाई। सतिगुर साचे, आत्म जोत जगाई। अन्तकाल कृपानिध, साध संगत सिर हत्थ टिकाई। सोहँ शब्द जाए आत्म विध, महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई। वडा आप, वडी वड्याई। रक्खे लाज जो जन आए सरनाई। गुरमुख साचे, तेरी पति रखाई। मानस जन्म धार, प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। उज्जल मुख विच संसार, निहकलंक देवे वड्याई। साचा शब्द जन रख अधार, भुक्ख रहे ना राई। सतिजुग वरते वरतावे सति करतार, सोहँ साची लिख्त लिखाई। महाराज शेर सिँघ नर अवतार, सोहँ शब्द भिच्छया पाई। जो जन आए मन शब्द भुख। प्रभ उपजावे आत्म सुख। लक्ख चुरासी कटावे, वास ना होवे माता कुक्ख। सोहँ साचा शब्द सुणावे, विरला कोई कमावे गुरमुख। महाराज शेर सिँघ शब्द वरताए, होए सहाए गुरमुखां लाहे आत्म भुख। जो जन आया, आत्म धर ध्यान। सोहँ शब्द प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञान। जगाए जोत विच देह गुणी निधान। अनहद उपजे राग, गुरमुख सुणे कान। महाराज शेर सिँघ शब्द वरतारा, प्रगटे जोत विष्नूं भगवान। सोहँ शब्द तेरा सति सरूप। सोहँ शब्द मेल कराए कलिजुग साचे भूप। सोहँ शब्द तेरी महिंमा अनूप। सोहँ शब्द प्रगटावे प्रभ स्वच्छ सरूप। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, होए सहाई विच अन्ध कूप। जो जन आए आत्म विचारी। साचे प्रभ होए चरन पुजारी। मंगण दर, प्रभ वड दरबारी। साचा घर निहकलंक विच मात संसारी। आसा वर गुरसिख देवे शब्द अधारी। निहकलंक अवतार नर जगे जोत, जगाए प्रभ गिरधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे दरस गुरसिक्खां पार उतारी। गुरसिख साचे आत्म आसा। सोहँ शब्द सिख सदा प्यासा। दोए जोड़ करे बन्दन, चरन सीस करे निवासा। निहकलंक आत्म तोड़े बंधन, साचा शब्द विच देह करे वासा। सोहँ शब्द आत्म चाढ़े रंगण, जो जन त्यागे मदिरा मासा। गुरमुख आए दात दर मंगण, प्रभ पूरन देवे भरवासा। आत्म दीपक प्रभ जोत संग जगण, आत्म करे जोत प्रकाशा। साची लागी प्रभ चरन संग लगण, गुरसिख जाए ना दर निरासा। महाराज शेर सिँघ तेरा साचा दर, साध संगत तेरे चरन भरवासा। जो जन लाए प्रभ चरन धूढ़, सर्ब जनां प्रभ आसा पूर।

५४०
०१

सोहँ शब्द आत्म जोत प्रगटावे नूर। एका शब्द राग रसायण, आत्म रक्खे सदा सरूर। साचा शब्द एक अधारन, जोत जगाए जिउँ कोहतूर। महाराज शेर सिँघ जोत अधारन, गुरसिक्खां ना दीसे दूर। आत्म शब्द, जिस आस रखाई। साची वस्त प्रभ झोली पाई। भुल डोल, कलिजुग जीव पति गंवाई। सोहँ शब्द साचा अनमुल्ल, गुरमुख साचे प्रभ दए वड्याई। कलिजुग जीव जायण भुल, साचा प्रभ दे सज़ाई। साचा बचन निहकलंक अटल्ल, ना कोई मेट मिटाई। सोहँ शब्द आत्म वरखे फुल, सुरत शब्द दा मेल कराई। मदि मास जो रसना लाए आत्म दीपक होए गुल, साची लिख्त प्रभ कराई। मानस जन्म कलि जाए रुल, शब्द गुण जो जन भुलाई। कलिजुग जीव अन्त जायण हुल्ल, साचा शब्द जो ना कमाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द भिच्छया पाई। आत्म ध्यान, प्रभ शब्द कमावणा। निहकलंक तेरा नाम सोहँ, गुरमुख साचे गावणा। दुष्टां करे ख्वार, हँकार निवारे जिउँ रामा रावणा। जन भगतां देवे तार, महाराज शेर सिँघ तेरा साचा शब्द सुहावणा। शब्द देवे देवणहारा। आत्म जोत करे उज्जयारा। झूठी देह झूठा मुनारा। जोत सरूप विच वस्सया गिरधारा। निहकलंक तेरा पसर पसारा। सोहँ शब्द ज्ञान दे, आत्म करे उज्जयारा। साचा दरस प्रभ गुण निधान दे, जन भगतां पार उतारा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे नाम अधारा। प्रभ चरन जो जन आए, नाम लैण दी आस रखाए। हउमे ममता

५४१ ०१ हँकार गंवाए। निर्धन होए प्रभ चरनी सीस झुकाए। सरधन होए प्रभ सोहँ दान झोली पाए। आत्म होए प्रकाश, साचा दीपक प्रभ विच देह जगाए। हउमे ममता होवे नास, सोहँ शब्द होवे रुशनाए। निरँजण जोत जगत प्रकाश, प्रगट जुगो जुग होए। खण्ड ब्रह्मण्ड मात पताल अकाश, तीन लोक प्रभ साची सोए। महाराज शेर सिँघ तेरा जोत प्रकाश, जन्म मरन दुःख मेटे दोए। जणाऐ जन मनाए मन। साची जोत प्रकाश करे प्रभ विच साचे तन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरखां तेरा साचा दर घर ल्या मन्न। जन भगत आत्म वर माणया। देवे दरस जोत सरूप विष्नूं भगवानया। सोहँ शब्द देवे दान, आत्म ब्रह्म ज्ञानया। सतारां सावण साध संगत कलिजुग रहि जाए सची निशानीआ। विरले गुरमुख निहकलंक तेरा दरस नैण पेख, आत्म रस माणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए सुहाए थान सुहाणया । सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ आया। सो सुहाए थान, घनकपुर वासी आपणा भेव खुल्हाया। सो सुहाए थान, जगत पित आए दाई दाया। सो सुहाए थान, निहकलंक कलिजुग जोत प्रगटाया। सो सुहाए थान, साध संगत मिल रसना हरि हरि हरि गुण गाया। सो सुहाए थान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाया। सो सुहाए थान, जामा धार प्रभ साध संगत बेड़ा बन्ने लाया। सो सुहाए थान, बेमुखां पकड़ प्रभ झूठी नींद सवाया। सो सुहाए थान, साचे गुरसिक्खां प्रभ आलस निंदरा लाहया । सो सुहाए थान, प्रभ

सोहँ शब्द आत्म मुख चुआया। सो सुहाए थान, रंग राता रंग रंगीला माधव विच मात दे आया। सो सुहाए थान, कलिजुग जामा धार महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी खेल रचाया। सुहाया थान, प्रभ आया घर। सोहँ शब्द प्रभ साचा देवे वर। प्रगटे जोत निहकलंक अवतार नर। गुरमुखां दिसाया प्रभ ऊँच घर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साचा दिया गुरसंगत वर। वर घर गुरसंगत पाया। उत्तम निहकलंक तेरी शरनाया। अमृत आत्म सिंच, जीव आत्म तृखा मिटाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे सोहँ ज्ञान दवाया। शब्द ज्ञान, जगत गुण निध। शब्द ज्ञान सर्ब काज सिद्ध। शब्द ज्ञान पावे साचे घर नौं निध। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भगतां आत्म जाए विध। सोहँ शब्द जीव तेरा भरवासा। रसना जप जप जप जीव, आत्म जोत करे प्रकाशा। आत्म रस महां रस पीव, प्रगटावे जोत प्रभ अबिनाशा। निहकलंक शरन सोहँ सोहँ शब्द जप जीव, आत्म दुःख सर्ब जाए नासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रकाश मात पताल अकाशा। जोत जगाए मात पताल अकाश। सोहँ शब्द निहकलंक गुरसिक्खां देवे साची दात। रसना जप जीव, आत्म दिसे ना दिन रात। साचा शब्द ब्रह्म सरूप, चार वरन दसाए एका ज़ात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म निर्मल जोत जगात। साचे प्रभ जोत जगाई। गुरमुख आत्म दीप फेर जगाई। सोहँ शब्द साचा नाम धुन वजाई। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, सोहँ साचा शब्द कमाई। कलिजुग उत्तम होवे मुख, निहकलंक देवे वड्याई। देवे दान प्रभ वड दाई। सोहँ वड गुणी निधान, रसना जप जीव आत्म तृखा मिटाई। सतिजुग वरते निहकलंक तेरी लिख्त कराई सच बाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घटां जाणी। सोहँ साचा शब्द जीव जगत कमा। मूर्ख मानस जन्म जीव कलिजुग ना गंवा। आत्म जगाए साचा दीप, साची होवे विच रुशना। मदि मासी कलिजुग जीव, निहकलंक दर भुल बख़्शा। सोहँ शब्द सतिगुर साचा, सतिजुग दिसावे साचा राह। कलिजुग सर्ब भेख मिटाए, दूसर कोई दीसे ना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिक्खां अन्तकाल पकड़े बांह। बाहों पकड़ प्रभ पार कराया। चरन आए जिस सीस झुकाया। सरनागत प्रभ होए सरनाया। रक्खे पति प्रभ गुरसिख सिर हत्थ टिकाया। गुरमुख आत्म आई वत्त, सोहँ शब्द प्रभ आत्म पाया। साचा देवे प्रभ आत्म यति, साचा शब्द अधार रखाया। एका अंक जपाए तत्त, जोत सरूप दीप जगाया। महाराज शेर सिँघ तेरा वरतार, सति सति पुरखां माण कलिजुग पाया। जो जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाए। सतिजुग साचा शब्द, प्रभ शब्दी भेव खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत सरूप दरस दिखाए। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै। सृष्ट सबाई, अन्त कराई खै। गुरमुख विरला कोई कलिजुग रहे। चार कुन्ट सोहँ शब्द तेरे नाम दी जै। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, सो जन तरे जो जन नाम रसना तेरा लए। जो जन जपे सोहँ नामा। सचा प्रभ पूरन कराए कामा। निहकलंक कलि पहरया जामा। द्वापर कृष्न मुरार त्रेता रामा। सतिजुग साचे मेहरवान, निहकलंक कलि पहरया जामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द सतिजुग जपाए साचा नामा। नाम नरायण, निरँजण देवे। जो जन रसना सोहँ सेवे। पावे दरस अलख अभेवे। महाराज शेर सिँघ साचा शब्द साची वस्त गुरमुखां देवे। गुरमुख वस्त प्रभ दर ते पाई। कलिजुग मिली जगत वड्याई। सोहँ शब्द सर्ब सुखदाई। रसना जप जीव, जग तर जाई। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, तेरी सच सरनाई। गुरमुख दिया नाम अधारा। जोत जगाई नैण मुँधारा। दीपक प्रकाश आत्म उज्जयारा। दीसे प्रभ सदा निराहारा। महाराज शेर सिँघ गुरमुख आत्म तेरे सदा पसारा। निरहारी निरवैर समाए। धार खेल चतुर्भुज कहाए। सांवल सुंदर प्रभ रूप वटाए। महासार्थी आप अख्वाए। सतिजुग सोहँ साचा शब्द प्रभ रथ चलाए। साध संगत बाहों पकड़ प्रभ उप्पर चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी गाथ चार वरन रसना गाए। चार वरन एका जोती। प्रभ शरन होए एका गोती। सतिजुग जीव गुरमुख साचे माणक मोती। निहकलंक अवतार साची जोत जगाए आत्म जोती। सतिजुग जीव प्रभ आप उपाए। सति निरँजण जोत विच देह जगाए। चार वरन कराए एका गोत, निहकलंक चरनी लाए। सोहँ शब्द उपजाए साची जोत, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट जै जै जैकार कराए। सतिजुग सुरत प्रभ अबिनाशे। साचा पित साची जोत प्रकासे। प्रभ परमेश्वर पारब्रह्म अचुत, एका शब्द रहिरासे। गुरमुख साचे निहकलंक तेरे सुत, देवे दरस महाराज शेर सिँघ घनकपुर वासे। सतिजुग तेरा शांतक रूप। साची जोत धरे निहकलंक अनूप। कलिजुग जीव ना दीसे प्रभ रंग रूप। सिख देह निवास कर, बैठा प्रभ साचा भूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप। अनादी ब्रह्मादी आपणा भेव खुलाए। साध संगत सोहँ शब्द रसना अराधी। कलिजुग अन्त निहकलंक तोड़ी गाधी। साची जोत प्रगटा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिक्खां आत्म साधी। आत्म जोत जगाए, निहकलंक तेरा अचरज खेल। जोत सरूपी किया मेल। आत्म जोत जगाई बिन बाती बिन तेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मिलाया साचा मेल। जुगो जुग प्रभ भगत तराए। बाल अवस्था ध्रू दरस दिखाए। नर सिँघ जामा धार प्रहलाद रखाए। बावन भेख धार, बल राजे दर मंगण जाए। चक्र सुदर्शन बाण मार, अंबरीक लाज रखाए। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक ना कोई होए सहाए। महाराज शेर सिँघ सचखण्ड निवासी, जुगो जुग होए सहाए। कर किरपा प्रभ जनक उधारे । हरी चन्द करे आत्म उज्जयारे। निहकलंक तेरे जुगो जुग पसारे। द्वापर जामा धार, बिदर सुदामा तारे। द्रोपत रक्खी लाज कृष्न मुरारे। जै देव गुण निधान, लिखे

लेख अपारे। अक्खर इक्क ना आवड़े, प्रभ आया चल दवारे। प्रगट जोत विष्नूं भगवान, जन भगतां काज संवारे। भगत त्रिलोचन तारया। नामा लाए भोग दूधा धारे पार उतारया। भेख किया प्रभ गिरधारे, भगत चुमिआर रविदास जगत सुधारया। प्रगटी जोत विच गंग धारे, जुगो जुग विष्नूं भगवान तेरी जोत आकारया। प्रगट जोत निरँकार, जन भगतां काज संवारे। सोहँ साचा नाम ज्ञान दे, आत्म भरे भण्डारे। साचा शब्द गुण निधान दे, गंगा पार उतारे। अन्त दरस विष्नूं भगवान दे, जन भगतां काज संवारे। बेणी बेड़ा पार कराया। नर नरायण अजामल तराया। अन्तकाल तेरी सरनाया। जगत पित प्रभ रसना गाया। पतित पूतना सचखण्ड निवास दवाया। कृष्न घनईआ तेरी अचरज माया। बधक बाण मारया, सिर हत्थ दे प्रभ पार कराया। जुगो जुग प्रगट प्रभ साचे, साच काज कराया। बाल्मीक शब्द अधार दे, आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाया। सदने कसाई दरस अपार दे, जोत सरूप दरस दिखाया। बेमुखां मन हँकार दे, जुगो जुग प्रभ साचे सदा भुलाया। जन भगतां एका शब्द अधार दे, प्रभ आपणा नाम जपाया। कलिजुग जामा धार, निहकलंक जन भगतां होए सहाया। जुगो जुग जगत पित, पति भगतां रक्खदा आया। जामे बहत्तर भगत जन निहकलंक लिख्त लिखाया। देवे वड्याई विच साध संगत, साचा शब्द प्रभ रसन चलाया। उत्तम होए विच कलिजुग जन्त, निहकलंक जिस दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी माया जगत भुलाया। साचा प्रभ कलिजुग आया। भगत हेत प्रकाश कर, साचा शब्द चलाया। बेमुखां कलिजुग नास कर, सतिजुग साचा लाया। चार वरन इक्क चरन दास कर, प्रभ भैण भ्रा बणाया। हउमे विच्चों नास कर, सोहँ साचा शब्द सुणाया। राजस तामस सर्ब नास कर, सांतक रूप सति वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा पाया। गुरमुख वड्डे तेरी वड वड्याई। धन्न धन्न गुरसिख बहौल सिँघ, प्रभ सेव कमाई। गुरमुख साचे सिँघ गुज्जर, निहकलंक तेरी लिख्त कराई। धन्न धन्न धन्न मनी सिँघ, साची बुध मति प्रभ विच तेरे पाई। कलिजुग जामा धार, सतिजुग मिले सची वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक अवतार, बिरथी जाए ना तेरी सेव कमाई। रंगा सिँघ प्रभ रंग रंगाया। निहकलंक जोत सरूप दरस दिखाया। प्रगट जोत सति सरूप, विच जोती जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा सचखण्ड पुचाया। कलिजुग आया प्रभ गिरधार। जन भगतां जावे जन्म संवार। माहणा सिँघ सति पुरख अपार। जोत जगाए प्रभ कर निगम विचार। देवे दरस सदा निराधार। नैणी पेखे गुरमुख साचा दरस मुरार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि साचा अवतार। माहणा सिँघ प्रभ चरन सेव कमाई। आत्म जोती मेल, प्रभ साचे जोत मिलाई। होवे बैकुण्ठ निवास, आवण जाण भेव चुकाई। सदा रहे प्रभ चरन पास, उच्च पदवी प्रभ दर ते पाई। महाराज शेर सिँघ तेरा साचा वास, साध

५४४
०१

संगत तेरी सरनाई। माहणा सिँघ तेरी साची अंस। तेजा सिँघ सुत गुरसिख राज हँस। साचा सिख कलिजुग सति तेरा सरबंस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उत्तम करे विच सहँस। तेजा सिँघ प्रभ दरस भिखारी। दिवस रैण निहकलंक तेरी विच सेव गुज़ारी। आत्म होई तेरे दर पनिहारी। मात पित भैण भ्रा छड्डे जीव संसारी। एका नाम साचा राम आत्म होया अधारी। गुरचरन सेवा साचा काम, आत्म उत्तम विचारी। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, गुरमुख पैज संवारी। तेजा सिँघ सति तेरा तन। एका शब्द वसाया मन। सोहँ साचा राग प्रभ सुणाया कन्न। कलिजुग पूरन होए भाग, आत्म मिटाया सारा जन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग बेड़ा तेरा देवे बन्नृ। कलिजुग बेड़ा प्रभ पार कराया। सुरत शब्द दा मेल मिलाया। पवण जोत जोत पवण, इक्क थाएँ वसाया। साचा शब्द साची धुन्कार साचा राग सुणाया। साचे शब्द महाराज शेर सिँघ बूझ बुझाया। शब्द सुरत प्रभ गुरसिख दवाई। मस्त दीवाना प्रभ रहे सरनाई। भगत भगवाने एका जोत जगाई। आत्म ज्ञाना प्रभ पूरन बूझ बुझाई। गुण निधान सच शब्दी शब्द मिलाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, जन भगतां देवे वड्याई। तेजा सिँघ सिर तेरे ताज। गुरसिक्खां दी रक्खी लाज। साचा राग प्रभ सुणावे माझ। जगत लिख्त कराए, चार जुग रहे तेरी सांझ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रक्खे तेरी लाज। गुरसिख तेरी पैज संवारे। पूरन प्रभ जोत निराधारे। जगे जोत विच देह निरँकारे। सति पुरखां मिल्या कलिजुग प्रभ गिरधारे। घनकपुर जामा धार, गुरसिक्खां पैज संवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द देवे अधारे। सच रंग प्रभ गुरसिख माणया। कलिजुग विष्नूं भगवान साचा जाणयां। साचा प्रभ देवे माण, डिग्गे चरन जो होए निमाणया। उच्च पदवी प्रभ दर ते पायण, प्रभ जोती जोत मिलाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा साचा दर गुरसिख साचे जाणया। तेजा सिँघ तेरा सति सरूप। सति सति सति वरताए, प्रभ साचा भूप। आत्म जोत जगाए, दिस आए साचा रूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे दरस अनूप। तेजा सिँघ धन्न तेरी कमाई। दिवस रैण प्रभ सेव कमाई। निहकलंक सेवा कलि ना बिरथी जाई । आत्म देवे जोती मेल, साचे प्रभ साची लिख्त कराई। वडी वड्याई विच देवी देव, तेतीस करोड़ तेरी सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होवे आप सहाई। सुरप्त प्रभ माण गंवाए। इन्द इन्द्रासण इन्दलोक प्रभ दे उलटाए । गुरसिख साचा साची जोत प्रगटाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां घाल पाई थांए। गुरसिख तेरे गुण गम्भीर। सेवा कर प्रभ निर्धन होया सरीर। कलिजुग वेला अन्त आ गया, तेरा अन्त अख़ीर। सतिगुर साचे शब्द लिखा ल्या, प्रगट निहकलंक वड पीरां पीर। महाराज शेर सिँघ विच जोती जोत मिला ल्या, आत्म शांत सरीर। आत्म शांत शांतक रस पाया। सचखण्ड

सच द्वार, निहकलंक तेरी सरनाया। दरस अपार किरपा धार, प्रभ साचे गुरसिक्खां दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मेल मिलाया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, धन्न जणेंदी माया। बुध्ध सिँघ तेरी बुध बिबेक। प्रभ चरन रखाई एका टेक। दर घर कष्ट उठाए अनेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा दीसे एक। बुद्ध सिँघ बली बलवान। तेरा कलिजुग रक्खया माण। सेवा तेरी बड़ी महान। तन मन धन, प्रभ चरन कुरबान। निहकलंक दरस दिखावे विष्नूं भगवान। बुध्ध सिँघ तेरी साची बुध। कर दरस प्रभ आत्म होए सुध। साचा नूर दिखाया प्रगट जोत सरूप प्रभ तुध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आत्म कीनी सुध। चेत सिँघ तेरी चतुराई। चतुर्भुज प्रभ सेव कमाई। उच्च पदवी तेरे सुत ने पाई। सचखण्ड प्रभ चरन निवास रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे वड्याई। सेवा संगत गुरसिख कमाई। निहकलंक सिर छत्र झुलाई। साचे प्रभ कलि साची कल वरताई । प्रगट जोत निहकलंक साची लिख्त लिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां देवे वड्याई। साची लिख्त प्रभ आप लिखाए। चेत सिँघ तेरा नाम वड्याए। साचा धाम सतिजुग तेरा दर रहि जाए। निहकलंक नर अवतार, साची जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख महिंमा आप लिखाए। आत्म उत्तम जगत उज्जयारी। गुरसिख सेवा प्रभ कीनी भारी। निहकलंक दीसे सचखण्ड द्वारी। साध संगत तेरे दर भिखारी। साचा शब्द ज्ञान दे, निहकलंक नर अवतारी। महाराज शेर सिँघ चरन ध्यान दे, जो जन आए चरन द्वारी। आत्मा सिँघ तेरी आत्म वास। साचा प्रभ आत्म जोत करे प्रकाश। साचा धाम गुरचरन निवास। कलिजुग मानस जन्म होया रास। देवे दरस प्रभ निरँजण पास। जन भगतां प्रभ होया दास। जो जन जपे रसन स्वास स्वास। भुल्ल ना लाए रसना मदिरा मास। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच आत्म करे वास। आत्मा सिँघ तेरी उत्तम मति। कलिजुग रक्खे प्रभ साचा तेरी पति। मानस जन्म ना आवे वत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखावे कृष्ना सति। कृष्न सरूप प्रभ दरस दिखाए। वड दया जिस जन कमाए। साचा प्रभ सिख साचे दरस दिखावे। जोत सरूप जोत धर, आत्म जोत जगावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर सर्ब सरबंस तरावे। तेरी घाल पाई थांए। साची लिख्त ना मिटे राए। साचा प्रभ होए सहाए । चरन प्रीती जो जन कमाए। साचा मार्ग प्रभ सच दिसाए। कलिजुग जीव मदि मास रसना लाए। अन्तकाल निहकलंक दे सज़ाए। गुरमुख साचे, प्रभ आत्म जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सोहँ नाद वजाए। जीवण सिँघ जगत विच आया। प्रभ साचे दी सेव कमाया। प्रभ अबिनाशी रिदे ध्याया। अन्तकाल भुल्ल प्रभ, भय मनों चुकाया। डुल डुल डुल, क्यों मन डुलाया। रुल

रुल रुल, क्यों मानस जन्म रुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द कलिजुग वेले अन्त लिखाया। जीवण सिँघ वेला अन्त, ना दर छोड़। बेड़ा आपणा ना कलिजुग रोढ़ साची सेवा प्रभ दी, प्रभ दर ते मोड़। वेला हत्थ नहीं आवणा, प्रभ चरनों देवे तोड़। कर बचन सुख मुख भवावणा, अन्त देही चले कोढ़। वेला गया हत्थ ना आवणा, अन्त प्रभ साचे दी साची लोड़। महाराज शेर सिँघ साचा शब्द लिखावणा, कलिजुग फेर ना होणा जोड़। वेला अन्त वक्त संभाल। बाहों पकड़ प्रभ रिहा उठाल। सेवा कीती अन्त ना गाल। झूठा जगत सभ धन माल। पारजात ना टुट्टीं नालों डालू। एका शब्द एका बचन, प्रभ साचे का पाल। पीस पिसाए जिउँ अन्त दुफाड़े दाल। कलिजुग अन्त किया आप, सतिजुग साचा सति जाए वरता। चरन लाग, सिक्खा वेला भुल्ल बख्शा। बिन प्रभ साचे, कलिजुग कोई ना दीसे साचा राह। सरन आए जो सरनाई, प्रभ बख्शे सर्ब गुनाह। महाराज शेर सिँघ निहकलंक, दूसर कोई नांह। चरन लाग भुल्ल बख्शाओ। माया ममता मनो तजाओ। साची लिख्त साचा वर प्रभ दर लिखाओ। अन्तकाल कलिजुग ना आपणा मूल गवाओ। गुरमुख गुरसिख साचा पाल सिँघ, सिँघ साचे दी लाज रखाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच बचन लिखाए, वक्त अमोलक ना मूल गंवाओ। आया वक्त जगत दे रहाया। प्रभ अबिनाशी खेल रचाया। झूठ जूठ दा भेख मिटाया। सच सुच्च विच साध संगत वरताया। झूठा ठूठा प्रभ भन्न वखाया। कलिजुग अन्त प्रभ आण कराया। गुरमुख साचे, प्रभ साचा राह दिसाया। भुल्ल भुल्ल भुल्ल, कलिजुग जीव क्यों आपणा मूल गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भय विच जगत रखाया। वक्त सुहंजणा वक्त सुहाए। गुरसिक्खां प्रभ दरस दिखाए। चरन लाग जो गुरसिख हट जाए। दुःख भुक्ख प्रभ देह वसाए। अन्तकाल नर्क निवास रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरखां पार कराए। जिस माया आत्म भुलाई। झूठी माया जग रहणी नाहीं। जिस माया आत्म डुलाया। प्रभ अबिनाशी मनों भुलाया। प्रभ सेवा दा नाम भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख शब्द अगम्म सुणाया।

५४७
०१

दर्शन सिँघ प्रभ दरस प्यास। एका शब्द प्रभ आत्म वास। रसना जपे स्वास स्वास। साचे प्रभ सदा चरन दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सोहे पास। साचा सिख गुणी निधान। गुणवन्त चतुर सुजान। प्रभ भगत आत्म देवे चरन ध्यान। प्रीतम सिँघ तेरी होवे प्रीत महान। साची प्रीत प्रीतम पाई। पुरख निरँजण जोत जगाई। साध संगत विच्च मिले वड्याई। सदा रहे प्रभ सरनाई। भुल्ल ना जाणा प्रभ लिख्त कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होवे

अन्त सहाई। चरन दास होए प्रभ सेव कमाओ। अमरापद प्रभ दर ते पाओ। साचा नाम शब्द धुन, हिरदे सदा वसाओ। गुण निधान साचा प्रभ, रसना सद ही गाओ। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, सद रख मिलण दा चाउ । आत्म रस प्रभ दरस पुजारी । पवण उनन्जा सिर छत्र झुलारी। जगे जोत सच निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए चरन निमस्कारी। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, धन्न कमाई। साध संगत दी सेव कमाई। बिशन कौर तेरी वड्याई । साचे सुत प्रभ जोत प्रगटाई। चार वरन चार कुन्ट चल आए सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा छत्र झुलाई। बसन्त कौर बसन्ती रुत्त। साचा प्रभ वड्याई देवे बख्शे सुत। वेला वक्त सुहाया, एका सुहाई रुत्त । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस प्रभ अबिनाशी अचुत्त। सेवा साची प्रभ कमाई। भुल भुल प्रभ दर ते आई । हउमे हँगता मनों तजाई। पंचम जेठ साची वस्त प्रभ झोली पाई। सुत सुत प्रभ दर मिले वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भानो दर आई आस पुजाई। द्वापर बिदर भगत गिरधार। कलि जामा घर घुमिआर। सोहण सिँघ नाउँ प्रभ दे उचार। प्रगट जोत निहकलंक, लाया चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आप लिखार। सोहण सिँघ प्रभ सदा सन्मुख। कर दरस आत्म उतरे भुख। साचा प्रभ सदा वसाए सुख। महाराज शेर सिँघ दरस दिखा, गुरसिक्खां मिटाए

५४८
०१ भुख। ठाकर सिँघ सद ठाकर द्वार। भव सागर प्रभ देवे तार। एका शब्द आत्म रक्ख उधार। साचा प्रभ सदा रिहा गुण ५४८
०१

विचार। सर्ब जीव आत्म देवे उधार। भुल्ल भुल्ल ना होणा जगत ख्वार। भाणा वरते, वरताए सति करतार। गुरसिख जाए बचन जो हार। एका बचन अटल्ल लिखाए एकँकार। गुरसिख जो उलटाए, होए अन्त ख्वार। सति सति सति कर मन वसाए, प्रभ बेड़ा कर जाए पार। सर्ब जीव प्रभ विच जोत मिलाए , कलिजुग ना होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सति वरताए वरतार। एका होवे प्रभ की पूजा। सतिजुग रहे ना कोई दूजा। गुरमुख साचे साचा दर कलिजुग सूझा। सतिगुर साचा आत्म भेत खुल्हाए गूझा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे दर तेरा बूझा। जगत लगाए प्रभ जोती अग्ग। उलटे वहिण वहाए वहाए अन्त कलिजुग। बेमुख पकड़ खपाए शाह रग। कलिजुग पाप अन्धेरी, अन्तकाल कलि गई वग। गुरमुख साचे नठ्ठ नठ्ठ नठ्ठ, चरन प्रभ लग्ग। देवे वड्याई निहकलंक विच जग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे साची मति। साची मति साचा ज्ञान । साचा शब्द साचा ध्यान। गुरसिख उच्च आत्म ब्रह्म ज्ञान। सोहँ शब्द देवे वड दानी दान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां देवे माण। कलिजुग माण प्रभ आप दवाया। वड हँस परमहँस गुरसिख लिखाया। साचा बंस प्रभ जगत चलाया। साची अंस गुरसिख लेख लिखाया। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, साचा राग कन्न सुणाया। सरबजीत प्रभ देवे धीर। कलिजुग रक्खी पति ना लथ्थे चीर। प्रभ अबिनाशी चरन प्यार, निवास होया चरन अख़ीर। प्रभ भाणा सच वरताया, साची जोत तज्या झूठ सरीर। साची जोत साचे घर आई। एका रंग एका लिव लाई। गुरचरन लाग परमगति पाई। साचे प्रभ सच लिख्त वरताई। पंचम जेठ जो रसन सुणाई। दिवस पंझी दु:ख रहे ना राई। साचा प्रभ सरबजीत, सर्ब दु:ख देह दे मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत विच जोत मिलाई। दिवस सतारां प्रभ लिख्त कराई। सतारां सावण कलिजुग अन्तिम कलम चलाई। सत्त सतारवीं करे सर्ब सुखदाई। कलिजुग तेरी मिटी वड्याई। निहकलंक तेरी लिख्त लिखाई। लेख लिखाया तेरा कलि। बेमुख जीव अन्तकाल कल जायण हल। अग्न जोत बेमुख जायण जल। भाणा प्रभ वरताए करे जल थल। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, ना लावे घड़ी पल। कलिजुग तेरा पन्ध मुकाया। कलिजुग जीव विच ख़ाक रुलाया। साढे तिन्न हत्थ सीआं, किसे हत्थ ना आया। कलिजुग निहकलंक, बेमुख जीवां प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। प्रभ अबिनाशी नदर निहाल। साध संगत सोहे प्रभ चरन नाल। सोहँ शब्द सतिजुग देवे प्रभ धन माल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दीप गुरसिख देवे बाल। ऊधम सिँघ अद्ध विच रखाया। लिक्खया हुक्म प्रभ सच कराया। साध संगत विच जो बचन लिखाया। भाणा आपणा सति सति सति वरताया। आपणा अन्त ना किसे जणाया। भुल्ल मदि मास रसना लाया। साचा प्रभ मनों भुलाया। शब्द बाण प्रभ साचे लाया। मानस जन्म अद्ध विच रखाया। साचे प्रभ महाराज शेर सिँघ हुक्म सति वरताया। साध संगत अरदास गुज़ारे। कर किरपा प्रभ पतित पापी तारे। जो चल आए निहकलंक तेरे चरन दुआरे। साचा धाम सचखण्ड, साची जोत करे आकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सर्ब जोत वरतारे। प्रभ अभुल ना कोई भुलाए। प्रभ अडुल ना कोई डुलाए। प्रभ अतुल ना कोई तुलाए। प्रभ अमुल कीमत कही ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शरन पड़े दी लाज रखाए। सर्ब सरबंस करे पुकार। दोवें जोड़ निहकलंक तेरे चरन द्वार। बख्श देवे प्रभ बख्शणहार। अन्तिम देवे दरस अपार। झूठी देह तजाई विच संसार। साची जोत मिलाई विच निराधार। महाराज शेर सिँघ सचखण्ड तेरा सच द्वार। ऊधम सिँघ गुर धाम पहुंचाया। घनकपुर वासी आपणा बिरद रखाया। साध संगत विच अन्त निवास दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच धाम सच घर टिकाया। सच धाम गुरसिख बहा के। प्रभ अबिनाशी विच जोती जोत मिला के। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तजा के। कलिजुग गुरसिख साचे धाम बैठा आसण ला के। महाराज शेर सिँघ मिलाए मेल, जोती जोत प्रगटा के। जोत प्रगटा जगत प्रभ आया। दे दरस जन भगतां पार कराया। अमृत आत्म बरस, निजानंद

निज मांहि कराया। महाराज शेर सिँघ तेरा दरस, गुरसिख साचे पाया। ऊँच नीच प्रभ मिटा के। छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश अन्त इक्क करा के। आत्म भुक्खा हेम सिँघ, प्रभ चरनी आए। गुरसिख साचा पाल सिँघ, होए विच्चोल आण मिलाए। दर आए करी पुकार, साची भिच्छया प्रभ झोली पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। दात पुत्र प्रभ झोली पाई। होए निमाणा आया प्रभ सरनाई। तन मन धन कर प्रभ साचे सेव कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग गुरसिक्खां साची दात झोली पाई। उपज्या पूत मन भया अनन्द। मात पिता घर चढ़या चन्द। आत्म उपज्या परमानंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कट्टे रोग जीव बन्द बन्द। मदन मूर्त तेरी गोपाल। साची दीपक गुरसिख आत्म बाल। कलिजुग साचा कट्ट जंजाल। सोहँ साचा शब्द दे सचा धन माल। महाराज शेर सिँघ गुरसिख साचे आत्म करे लाल गुलाल। गुरसिख जोत जगाए, प्रभ विच ललाट। सोहँ साचा नाम, ना विकाए हाट। जो जन शब्द कमाए, खोल्ह वखाए प्रभ बजर कपाट। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ साचा शब्द जीव आत्म राट। साचा शब्द साचा राग। गुरसिख सोया कलिजुग गया जाग। बेमुख दर तों जायण भाग। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत, लगाए भोग जिउँ बिदर अलूणे साग। अमृत वेला अमृत रस। बेमुख जायण प्रभ दर तों नस्स। साध संगत साचा राह प्रभ जाए दस्स। कलिजुग होए अन्धेर, जिउँ रैण मस्स। गुरसिख जोत प्रकाश जिउँ रवि सस। निहकलंक कलिजुग साचा वास, महाराज शेर सिँघ जन भगतां होया वस। सच सुच्च प्रभ जगत वरताई। बेमुख साध संगत रल, जिउँ चन्दन वास निम महिकाई। पसू प्रेतों करे देव, पूरे गुर दी एह वड्याई। कलिजुग जामा धार, निहकलंक अपणा भेव खुल्हाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि साची जोत जगाई। कलिजुग जीव जगत अन्धयारा। कलिजुग जीव देख झूठा सगल पसारा। कलिजुग जीव अन्तकाल कलि दीसे एकँकारा। कलिजुग जीव तेरी बुझी आत्म दीव, रसना किया मदि मास आहारा। कलिजुग जीव अमृत रस प्रभ दर पीव, आत्म शब्द होए उज्जयारा। बेमुख जीव गुरचरन लाग सदा जग जीव, साचा मिले नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, तेरा मानस जन्म संवारा। अमृत वेले प्रगट जोत, प्रभ अमृत मेघ बरखाया। अमृत वेले प्रगट जोत, साचा शब्द सुणाया। अमृत वेले प्रगट जोत, अनद बिनोदी प्रभ दरस दिखाया। अमृत वेले प्रगट जोत, अमृत वेला सुहाया। अमृत वेले प्रगट जोत, अमृत झिरना विच देह झिराया। अमृत वेले प्रगट जोत, अमृत साचा कँवल नाभ मुख चुआया। खुल्हे कँवल होए उज्जयारा, अमृत साचा प्रभ वरसाया। अमृत वेले प्रगट जोत, प्रभ अबिनाशी विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा गुरसिख मुख चुआया। अमृत आत्म देवे अधार। अमृत वरखे प्रभ किरपा धार। अमृत आत्म वरस, आत्म करे

उज्जयार। अमृत आत्म रस चुआया। जिस जन रसना लाए विच देह वसाया। साची होवे देह रुशनाए, साचा अमृत प्रभ वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे अमृत आत्म रोग मिटाया। सतारां सावण रैण सुहावणी। गाए राग कोई जन मुंधावणी। गुरसिख साचा पावे पद निरबावणी। आवण जावण गेड़ चुरासी प्रभ कटावणी। गुरमुख साचे जो दर आए, प्रभ पूरन आस करावणी। सरन पड़े दी लाज रखाए, साचा शब्द वरताए बावनी। सच्चो सच वरताए, कलिजुग मिटाए आवण जावणी। सोहँ सच वरताए, साचा तीर्थ निहकलंक तेरे चरन नावणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग वरताए जो मन भावनी। कलिजुग वरताए प्रभ आपणी कल। जल थल थल जल कराए जल। भाणा साचा, ना कलिजुग जाए टल। सृष्ट सबाई अन्तकाल कलिजुग जाए हल। चार कुन्ट चढ़ आयण दल। कलिजुग जीव अन्तकाल रण भूमि ल्या मल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे साची वरताई कल। कल धार आया कलधारी। जगत रुलाए प्रभ निरहारी। बेमुख भुलाए, माया जगत पसारी। गुरसिख तराए, महाराज शेर सिँघ निरँकारी। पूरे तोल गुरसिख तुलाया। साचा शब्द सोहँ, तेरे विच वसाया। जगत भेख सर्ब मिटाया। एका राम एका जोत, एका जीव उपाया। एका नाम एका गोत, चार वरन कराया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साचा सतिजुग लाया। सतिपुरख तेरा सति मान। साचा शब्द कलिजुग मिल्या दान। आत्म वज्जा सोहँ साचा बाण। कलिजुग प्रगटे जोत सरूप, निहकलंक विष्नूं भगवान। जोत सरूप तेरी साची जोता। एका जोत आकार, प्रभ जुगो जुग होता। गुरसिख शब्द अधार कर, गुरमुख जगाया सोता। बेमुख कलिजुग ख्वार कर, नर्क लवाया गोता। साध संगत प्रभ शब्द अधार कर, विच जोत मिलाई जोती जोता। मिल जोत जीव जोत जगाए। आपणा आप जगत तजाए। एका निर्मल साची जोत प्रभ विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी सच सरनाए। सतिजुग तेरा सति वरतार। सन्त मनी सिँघ सतिजुग करे अधार। देवे वड्याई निहकलंक अवतार। मस्तक तिलक लगाए, सच बणाए दरबार। सोहँ साचा शब्द चलाए, सच वरताए जगत भण्डार। चार वरन चरनी लाए, होइण सर्ब पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी सरनाए, गुरसिख ना होए ख्वार। गुरसिख तेरी मिटी ख्वारी। साचे प्रभ चरन बलिहारी। कलिजुग बेड़ा प्रभ पार उतारी। निहकलंक अन्त मिटाए मायाधारी। जामा धारे प्रभ जगत मिटाए। ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। सर्ब खण्ड विच वरभंड, प्रभ साची जोत जगाए। आत्म होवे ना किसे रंड, सतिजुग साची सेवा लाए। धर्म राए ना देवे किसे डण्ड, निहकलंक होए सहाए। साध संगत प्रभ जाए वंड, साध संगत भिच्छया पाए। महाराज शेर सिँघ दीसे वरभंड, जोत सरूप सदा रहाए। जोत सरूप जगत के दाते। कलिजुग अन्त साचे शब्द सदा रंगराते। निहकलंक जोत प्रकाशे, बिन तेल बिन

बाते। जन भगतां जन्म होया, पाया दरस प्रभ विधाते। महाराज शेर सिँघ तेरा धरवास, चरन प्रीती साचे नाते। चरन सेवा उत्तम फल। गुरसिख साचा दर अन्त प्रभ मल्ल। साची जोत प्रकाश, अन्त जोत विच रल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कल्ह अज्ज ते कल्ह। आया वक्त प्रभ गुण गावण दा। साध संगत रंग साचा आत्म चढ़ावण दा। निहकलंक जोत प्रगटाए, धन्न दिहाड़ा सतारां सावण दा। जन भगतां लिख्त कराई, प्रभ दर वड्याई पावण दा। महाराज शेर सिँघ साची कल वरताई, गुरसिख वेला नहीं मुख भवावण दा। गुरमुख साचा सदा है जागे। मानस जन्म ना लागे दाग़े। अनहद शब्द उपजे सदा रागे। दरस प्रीत प्रभ चरनीं लागे। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तेरे, कलिजुग सोए जागे। सोया जागे, जागत सोया। अन्तकाल कलिजुग बेमुख दर ते रोया। गुरसिख साचे साचा फल, पूरब जन्म दा बोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण कदे ना सोया। साचे प्रभ दित्ती वड्याई। साचे सिख हत्थ कलम फड़ाई। दिवस रैण प्रभ जस गाई। सतारां दिवस प्रभ लिख्त कराई। साचा नाम जगत रहि जाई। धन्न धन्न धन्न गुरसिख तेरी सेवा, गुरचरन कमाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग देवे वड्याई। दिवस सतारां कलम चला के। कलिजुग सतिजुग कर्म लिखा के। जन भगतां चार जुग वड्या के। गुरसिख तेरी रक्खे लाज, जोत प्रगटा के। निहकलंक कल आ के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा जाए शब्द लिखा के। साची लिख्त साचा लिखारी। दिवस सतारां प्रभ चरन द्वारी। देवे शब्द प्रभ शब्द भण्डारी। आत्म रहे सोहँ तेरे नाम खुमारी। साची जोत धरे कलिजुग, निहकलंक अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी पैज संवारी। लिख्त तेरी लिखाए लेख। कलिजुग आत्म रंग कलि वेख। कलिजुग जाए सतिजुग प्रगटाए, साचा किया भेस। निहकलंक सतिगुर साचा, साचे प्रभ को सदा आदेस। सदा सदा प्रभ दीन दयाल। दुःख भञ्जण भगत वछल गोपाल। मदन मोहन गुर गोपाल। जन भगतां तोड़े आत्म जंजाल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची आत्म दीपक देवे बाल। गुरसिख तेरी रीत साची। झूठी माया तजाई नीत। निहकलंक कलि पाई साची प्रीत। अन्तकाल प्रभ एका साचा मीत। देवे दरस प्रगट जोत, परखे प्रभ साची नीत। महाराज शेर सिँघ गुरसिख साचे, कलिजुग ल्या जीत। कलिजुग तेरी लथ्थी पति। जोत सरूप प्रभ खिचिआ सारा यति। तन निचोड़ी सारी रत। बेमुखां पाई उलटी मति। गुरसिक्खां देवे सोहँ नाम सति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग रक्खे पति। गुरप्रसाद गुरदर पाया। गुरप्रसाद प्रभ दरस दिखाया। गुरप्रसाद प्रगट जोत निहकलंक भोग लगाया। गुरप्रसाद साध संगत मुख लगाया। गुरप्रसाद दुःख रोग देह गंवाया। गुरप्रसाद तीन ताप प्रभ नास कराया। गुरप्रसाद मरू देवा छेआ देवी प्रभ वस कराया। गुरप्रसाद गुर गोरख

५५२
०१

साचा नाद वजाया। गुरप्रसाद जामा धार निहकलंक कलिजुग अन्त सर्ब मिटाया। गुरप्रसाद प्रभ आए प्रसादी। गुरप्रसाद सभ सृष्ट साधी। गुरप्रसाद गुरमुख साचे प्रभ रसन अराधी। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जोत जगाए अनादी। गुरप्रसाद गुर रंग चढ़ाया। गुरप्रसाद प्रभ कलिजुग भरम मिटाया। गुरप्रसाद साचा शब्द प्रभ ज्ञान दवाया। गुरप्रसाद गुरमुख साचे हिरदे सदा वसाया। गुरप्रसाद कलिजुग पोह ना सके माया। प्रभ चरन लाग साचा वर, प्रभ दर ते पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर हत्थ टिकाया। गुरप्रसाद, प्रभ का रंग। गुरप्रसाद साचा नाम सोहँ साध संगत ल्या मंग। कलिजुग जीव प्रभ दर ना संग। कलिजुग झूठा जीव टुट्ट जाए जिउँ काची वंग। गुरप्रसाद गुरसिख जन्म ना होए भंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंग संग। गुरप्रसाद जोत जगाई। गुरप्रसाद सतारां सावण साध संगत मन वधाई। प्रगट जोत निहकलंक, साची लिख्त शब्द कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे वड्याई। गुरप्रसाद गुर पूरा पाया। गुरप्रसाद भरम भुलेखा सारा लाहया। गुरप्रसाद वर दर प्रभ पाया। गुरप्रसाद महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द सुणाया। गुरप्रसाद दुरमति जाए। गुरप्रसाद साची मति सति वरताए। गुरप्रसाद प्रभ अबिनाशी घर में पाए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, प्रगट जोत भोग लगाए। भोग लगाए भगत घर। सोहँ साचा शब्द दे जाए वर। चरन लाग गुरसंगत गई तर। कौर रणजीत मिल्या साचा वर। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई निहकलंक अवतार नर। भोग लगाए भगत वछल भगवान। साध संगत होवे रसना पान। सतिप्रसाद आत्म तोड़े अभिमान। गुरप्रसाद कलिजुग जीव आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। गुरप्रसाद प्रभ गुण जाणे कोई गुणी निधान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका नाम देवे वड दानी दान। भोग भोग भोग, प्रभ लगाए भोग। रोग रोग रोग, गुरसिक्खां मिटाए रोग। जोग जोग जोग, सोहँ शब्द साचा जोग। भोग भोग भोग, गुरसिख आत्म रस गुरचरन प्रीती भोग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगट जोत कलिजुग गुरसिख घर लगाए भोग। भोग लगाए विष्नूं भगवान। साचा होया जगत परवान। भख भोज लेहज फेहज चारों इक्क समान। झूठा जगत ना जाणे भेव बली बलवान। कलिजुग जामा धार, महाराज शेर सिँघ देवे दरस गुणी निधान। भाग होए प्रभ दरस दिखाया। घनकपुर वासी प्रगट जोत, सावण सतारां भोग लगाया। पुरख अबिनाशी सर्ब जीव विनासी, साचा प्रभ जगत समाया। बेमुख मिटे कलिजुग कर कर हासी, साचा प्रभ नजर ना आया। जो जन होए मदिरा मासी, अन्तकाल प्रभ विच प्रेत वास कराया। निहकलंक प्रगट भेस, बेमुखां विष्टा मुख रखाया। साध संगत सदा अदेस, प्रभ प्रसादी सति प्रसाद वरताया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी जोत आकार, रसना भोग लगाया। रसना भोग

५५३ ०१

लगाया साचे प्रभ, सच तेरी वड्याई। कलिजुग जामा धार, साध संगत दी आस पुजाई। कर जोत आकार, चार कुन्ट हाहाकार मचाई। बैठा आप निराधार, निराहार प्रभ सदा सुखदाई। जन भगतां देवे शब्द भण्डार, शब्द ज्ञान प्रभ झोली पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तारे सिख जो आए सरनाई। सरन आए, प्रभ सरनागत। साचा शब्द वरताए, गुरसिख रखाए सिर हत्थ। प्रभ एका नाम जपाए, चार वरन इक्क कराए एका मित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर जोत आकार ल्या जग जित्त। जोत आकार प्रभ किसे ना जणाया। प्रगट जोत निहकलंक, स्वच्छ सरूप दरस दिखाया। जामा धार घनकपुर, कलिजुग जीव भेव रखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, भाणा सति वरताया। सति होवे सति वरतारा। एका जोत जगे, जगत निरँकारा। झूठा मिटे सर्ब पसारा। एकँकार एका किया आकारा। एका जोत प्रभ निराधार, सर्ब जगत किया पसारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां तारनहारा। आवे जावे जावे आए। लक्ख चुरासी प्रभ गेड़ फिराए। मानस जन्म प्रभ उत्तम रखाए। गुरमुख विरला कोई साची बूझ बुझाए। रसना छड विकार, आत्म रस निज मांहि पाए। सोहँ शब्द आकार, दुरमति मैल गंवाए। उज्जल मुख विच संसार, जो जन आए निहकलंक सरनाए। साध संगत प्रभ देवे तार, अन्तकाल होए सहाए। महाराज शेर सिँघ तेरे भरे भण्डार, अतुल अखुट ना निखुटिआ जाए। एका शब्द जगत वरतार, सोहँ चले साची नाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा नाम लिखाए। मधसूदन दामोदर स्वामी। भगत वछल सदा निहकामी। निहकलंक धरे जोत कल अन्तरजामी। जन भगतां एका ओट, प्रभ दर स्वामी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे ज्ञान सोहँ आत्म नामी। निहकलंक कवण जाणे तेरे गुण। गुरमुख चरन लगाए कलिजुग चुण। सोहँ शब्द सुणाए, आत्म वजाए धुन। साचा राग अलाए, खोल्ह वखाई सुन्न। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचा नाम जाए सुण। साचा नाम प्रभ जगत सुणाया। मृदंग ढोल जगत वजाया। चार कुन्ट सोहँ बाण लगाया। बेमुखां घर हाहाकार मचाया। गुरसिक्खां बांहों पकड़ निहकलंक चरनीं लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज पाई माया। माया ममता झूठा रूप। बेमुखां भुल्लया निहकलंक साचा भूप। जोत प्रगटाए विच सिख दे, ना दीसे रंग रूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सति सरूप। सोहँ शब्द गुरसिक्खां आण। निहकलंक साचा गुर, कलिजुग जाण। सोहँ शब्द आत्म मारे बाण। एका धुन उपजाए, प्रभ जाणी जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द चलाया बाण। शब्द बाण जगत चला के। कलिजुग बैठा जोत सरूपी भेख वटा के। साची जोत विच सिख टिका के। अगाध बोध बोध अगाध, साची लिख्त जाए लिखा के। गुर गोबिन्द जाए बचन कल वरता के। बेमुखां साचा सोहँ खण्डा ला के। जन भगतां आत्म उज्जल

करा के। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जुगो जुग जाए भेव खुल्ला के। चार जुग प्रभ वरतार। आवे जावे जगत विहार। आपणे रंग रवे निरँकार। एका जोत जुगो जुग आ के, जगत करे आकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग प्रगट्या निहकलंक अवतार। घनकपुरी प्रभ का थाउँ। पिण्ड घविंड है साचा नाउँ। जोत जगाए अगम्म अथाहो। बेमुखां ना दीसे साचा बेपरवाहो। महाराज शेर सिँघ निहकलंक साचा शाहो। साचा शाह सचा दरबार। साचा शब्द सर्ब भण्डार। साध संगत देवे निहकलंक अवतार। आत्म उत्पत साची जोत करे आकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां देवे चरन प्यार। गुरमुख औखा नाम कमावणा। मदि मास ना रसना लावणा। भगवान विष्नूं साचा शब्द सुणावणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अन्त जोती जोत मिलावणा। शब्द कमा मदि रसना लाए। दुरमति देह जीव हो जाए। सतिगुर साचा साची दे सज़ाए। बेमुख होया गुरसिख, नर्क निवास दवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द वरताए।

❋ ४ अस्सू २००८ बिक्रमी मेरठ विहार होया ❋

५५५ ०१ पूरन गुर पूरन अवतार। गुरमुख साचे प्रभ जाए तार। माण दवाए विच संसार। धरे जोत आप निरँकार। महाराज शेर सिँघ साध संगत तेरी जाए पैज संवार। रक्खे लाज आप गिरधार। प्रगटाई जोत विच संसार। भगत जनां प्रभ पार उतार। महाराज शेर सिँघ दरस कर, गुरमुख होए पार। गुरमुख प्रभ दर्शन पाया। तेरां हाढ़ वीह सौ इक्क बिक्रमी जो लिखाया। मेल मिलाया आप प्रभ दर कर कर हाहाकार, साची माता तन रुलाया। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन बलिहार, गुरमुख किया पार, प्रेत जन्म प्रभ गंवाया। मिल्या जन्म भया प्रकाश। पूरन गुर पुजाई आस। कलिजुग दुक्खां किया नास। महाराज शेर सिँघ सतिगुर बख्शया चरन निवास। निर्धन रूप प्रभ पूरन जोत जगाए, प्रभ सति सरूप। कलिजुग अन्तिम अन्त अन्ध कूप। गुरमुख साचे तेरा साचा सति सरूप। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, वड दाता वड भूप। वड्डा प्रभ वड्डी वड्याई। गुरमुख रंग मजीठ चढ़ाई। टुट्टी गंढुणहार प्रभ, टुट्टी गंढु वखाई। महाराज शेर सिँघ पतित उधारण, जो जन आए सरनाई। गुरसिख साचे चरन प्रभ आए। चरन धूढ़ लै मस्तक लाए। कर्म धर्म सच लेख लिखाए। मानस जन्म सुफल कराए। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत दरस दिखाए। दिखाए दरस प्रभ दया नंद। आत्म उपजाए परमानंद। गुरमुख रोग कट्टे प्रभ बन्द बन्द। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर दरस साध संगत होए अनन्द। कर दरस सिख साचा तरया। प्रभ अबिनाशी घर साचा वरया। मातलोक गुरसिख ना डरया। काया सीतल, तन मन हरया। जो जन आए

सरन प्रभ परया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट, नाम निहकलंक कल धरया। निहकलंक कलि जामा धार। गुरसिख बेड़ा किया पार। सोहँ साचा शब्द उपजे धुन्कार। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए, अडोल जोत निराधार। पाल सिँघ तेरा साचा संग। गुरमुख विरले ल्या मंग। शब्द गायण आत्म चाढ़े रंग। कलिजुग अन्ध अज्ञान पार जाए लँघ। सोहण सिँघ छड बंस, पाल सिँघ तेरा किया संग। महाराज शेर सिँघ आत्म अमृत बरस, सोहण सिँघ चाढ़े साचा रंग। सोहण सिँघ तेरी सेवा सति। साचा प्रभ कल राखे पति। प्रभ अबिनाशी तेरी जाणी मित गति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग रक्खे पति। गुरसिख तेरी सति कमाई। कलिजुग मिली तैनूं वड्याई। रिद्ध सिद्ध प्रभ वस कराई। साची बिध प्रभ मिलण की प्रभ आप बणाई। प्रगट जोत निहकलंक, तेरी पैज रखाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, तेरी बणत बणाई। बणाई बणत आप बनवारी। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, देवे देह अधारी। साची जोत धरे गिरधारी। उलटा बिरछ राखे लाज मुरारी। जामा धार मातलोक, गेड़ चुरासी पार उतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया करी आकारी। काया आकार जगत विच आया। मानस जन्म प्रभ मात दवाया। गुर साचे विच जगत वड्आया। अचरज खेल प्रभ वरताया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर पूरे, गुरमुख पार कराया। गुरमुख तेरी साची धुन। गुरचरन पुकार प्रभ अबिनाशी लई सुण। मानस जन्म दवाया पतित पापीआं विच्चों चुण। महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकाया, वड दाता देवे वर गुण। गुणवन्त गुण निधान। गुरमुख देवे चरन ध्यान। मदि मास ना रसना पान। चरन धूढ़ प्रभ सचा इशनान। कलिजुग उपजे ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ मानस जन्म कलि किया परवान। मानस जन्म जगत अनमुल्ला। चरन लाग जीव क्यों कलिजुग भुल्ला। साचा अमृत प्रभ दर ते पीव, सदा भण्डारा खुल्ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा वड दात अनतुल्ला। गुरमुख रंग रंगीलड़ा, प्रभ मेल मिलाए। प्रभ आप कराए हीलड़ा, आत्म जोत जगाए। लाए शब्द साची तीलड़ा, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ छबीलड़ा, बेड़ा पार कराए। दे दीदार पूरन प्रभ, कर देवे बेड़ा पार। अमृत आत्म वरखे किरपा धार। निगम जोत जगाए, देवे शब्द अधार। महाराज शेर सिँघ लाज रखाए, जन्म दवाए विच संसार। मानस जन्म कलि दवा के। प्रभ अबिनाशी आपणी चरनी ला के। लक्ख चुरासी गेड़ कटा के। सोहण सिँघ साचा माण दवा के। भगत विच्चोला प्रभ आप बणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख जाए लिखा के। लिखे लेख ना मिटाए कोए। प्रभ साचे की साची सोए। कलिजुग जामा धार निहकलंक, करे कराए सो होए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए गुर गोबिन्द दोए। जगी जोत जगत परवान। साचा शब्द साचा नीसान। पारब्रह्म तेरी साची आण। सोहँ

शब्द गुरमुख विरले ल्या पछाण। महाराज शेर सिँघ तेरे चरन सदा कुरबाण। गुरमुख साचे छत्र झुल्ले तेरे सीस। बेमुख कलिजुग जीव अन्तकाल कलि गए पीस। गुरमुख साचे तेरा नाम धराया, प्रभ साचे सिँघ जगदीश । अस्सू चार दिन सुहाया, महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाए साध संगत तेरा झुके चरन विच सीस। साचा नाम प्रभ जगत धरा के। सिँघ जगदीश नाम रखा के। गुरमुख वड्याई देवे, मानस जन्म दवा के। होए सहाई प्रभ, पैज संवारे आ के। महाराज शेर सिँघ तेरे सिख उधरे रसना तेरे गुण गा के। रसना गायण साचा गुर। चरन प्रीती गुरमुख विरले गए जुड़। बेमुख कलिजुग खाली हत्थ गए तुर। महाराज शेर सिँघ तेरा सतिजुग थान सुहाए घनकपुर। साचा धाम सुहाए थान। जोत जगे सतिजुग महान। घनकपुरी दीसे प्रभ गुणी निधान। अस्सू तिन्न दर दरबार प्रभ रक्खया सच निशान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साचा शब्द सोहँ किया परवान। गुरमुख साचे प्रभ साचा देवे वर। इक्क टेक जीव, प्रभ चरन धर। कलिजुग जीव भरे हँकार बेमुख जीव ना डर। कर दरस पारब्रह्म गुर अन्त जाए तर। प्रीतम सिँघ तेरा होए सहाई, महाराज शेर सिँघ अवतार नर। जगत मार शब्द प्रभ मारे। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो रसन उचारे। कर किरपा प्रभ पार उतारे। महाराज शेर सिँघ तेरे नाउँ सदा जैकारे। साचा प्रभ सिर रक्खे हत्थ। हँकारी जीव नच्चण दर, प्रभ शब्द पाए नत्थ। गुरसिख साचे प्रभ रंग माण, सोहँ मिले जग साची वत्थ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सिर रक्खे तेरे हत्थ। भय भयानक प्रभ भय भूप। प्रभ की महिंमा सदा अनूप। गुरमुख साचे वेख प्रभ सति सरूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनेक कराए रूप। गुरसिख साचा, सदा शहीद। एका दरस प्रभ मंगे दीद। आत्म शब्द कल गई वीद। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आत्म दरस दिखाए दीद। रक्खे लाज प्रभ लाजावन्त । होए सहाई प्रभ भगत भगवन्त। कोई ना पोहे ना मारे मार सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा उत्तम विच जीव जन्त। जीव जन्त विच सिख तेरा माण। एका रक्ख प्रभ चरन ध्यान। निहकलंक सुख हिरदे माण। प्रगट जोत प्रभ हँकारीआं तोड़े माण। सोहँ शब्द प्रभ साचा मारे बाण। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे विष्नूं भगवान। गुर पूरा साची धुज। गुरसिख साचे प्रभ की भुज। गुरचरन प्रीती जीव कलि लुझ। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, गुरमुख विरले ल्या बुज्झ। प्रभ पूरा भय दिखावे। कर कर्म गुरसिख तेरी जै करावे। साचा धर्म गुरसिख कर्म, प्रभ चरन प्रीती लावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरतावे। वरते कल कल अन्धेरा। जोत सरूपी प्रभ पाया मात फेरा। झूठी दुनियां अन्त ढहि होई ढेरा। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी दीसे नेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटे जोत ना लाए देरा।

❊ १ माघ २००८ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे विहार होया ❊

निहकलंक तेरी रहिरास। सोहँ शब्द करे बन्द खुलास। साचा प्रभ गुरमुख साचे सद रक्खे वास। जोत सरूप प्रभ अबिनाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सोहे तेरे चरन पास। साध संगत जग तेरा माण। कर दरस प्रभ पतित पापी तर जाण। साची जोत प्रभ कलि करे प्रगट, निहकलंक बली बलवान। अग्न जोत जगत लगाए, हो जाए सुंञ मसाण। गुरमुख साचे आयण भागे, साचा देवे प्रभ चरन ध्यान। साध संगत प्रभ चरनीं लागे, प्रभ आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। बेमुख पकड़े प्रभ शाह रग, सोहँ शब्द मारे बाण। अग्न जोत चार कुन्ट जाए लग्ग, प्रगट होवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। जोत सरूप प्रभ अग्न लगाए। साचा भाणा कलि वरताए। हाहाकार जगत कराए। शब्द मार कर ख्वार, कलिजुग जीव खपाए। गुरसिख साचे प्रभ देवे शब्द अधार, जोत सरूप दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ नर अवतार, जामा घनकपुरी विच पाए। घनकपुरी साचा घर। धरे जोत अवतार नर। सतिजुग दिखाए चार वरन प्रभ एका दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चार उपजावे साचा सर। साचा सर अमृत मेघ। सोहँ शब्द प्रभ साचे सतिजुग वरताई साची देग। बेमुख कलिजुग जीव चरन लाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आत्म अमृत वरखे मेघ। घनकपुर धाम न्यारा। धरे जोत प्रभ एका एकँकारा। जोत सरूप जामा धार, मात कराए सच वरतारा। एका शब्द चलाए चार वरन सुणाए, सोहँ साचा नाम अधारा। ऊँच नीच कोई रहण ना पाए, राउ रंक इक्क कराए, साची जोत जगत वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा निरँकारा। किया आकार किरपा निध। शब्द सरूप प्रभ राजे राणे कीने सिद्ध। गुरमुख करे चरन प्यार, साची उपजावे नौं निध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म जाए विध। शब्द बाण प्रभ आत्म लाए। गुरमुख साचे प्रभ आत्म जोत जगाए। साची जोत आकार कर, स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखाए। एका नाम अधार कर, मानस जन्म सुफल कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सोहँ साचा शब्द चलाए। सतिजुग आए अज्ज कि कल्ल। कलिजुग प्रभ अन्त कराए, ना लाए घड़ी पल। सृष्ट कराए जल थल। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखाए ना लाए घड़ी पल। वेला अन्त प्रभ अन्तन अन्ता। धरे जोत प्रभ भगवन्ता। रक्खे लाज गुरसिख तेरी विच साधन सन्ता। कलिजुग जीव भुलाए, प्रभ पाई माया बेअन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा कोई ना जाणे आदिन अन्ता। आदि अन्त ना किसे जणाया। ब्रह्मा विष्न महेष, दर अग्गे बहाया। कलिजुग जामा धार निहकलंक, खण्ड ब्रह्मण्ड उलटाया। सोहँ शब्द लगावे डंक, चार कुन्ट प्रभ दे सुणाया। सतिजुग चलाए प्रभ साचा अंक, सोहँ साचा शब्द प्रभ वरताया।

सो सुहाए थान बंक, जिथ्थे प्रगट जोत दरस दिखाया। भेख मिटाए प्रभ राउ रंक, सतिजुग प्रभ साचे लाया। आत्म शब्द प्रभ साची धुन, राणा महाराणा चल प्रभ शरनी आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाणा कलि वरताया। कलिजुग तेरी होई अख़ीर। वेले अन्त तेरी कोए ना बन्ने धीर। पीर पैग़ंबर औलीए, सभन कराए अख़ीर। प्रगट जोत निहकलंक, खिच्चे जोत अठसठ नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा गुरसिक्खां देवे जिउँ बालक माता सीर। देवे कलिजुग साचा पित, गुरसिख साचे प्रभ तेरा नाम वड्आया। मात पित कर हित, पिता पूत सतिजुग लिखाया। पारब्रह्म प्रभ अचुत्त, साचा बंस सतिजुग उपजाया। गुरमुख साचे वड वड वड हँस, सोहँ साचा शब्द प्रभ रसन चोग चुगाया। प्रगट होए विच सहँस, प्रभ साचे लेख लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा धार निहकलंक सतिजुग साचा लाया। कलिजुग तेरा अन्ध अंध्यार। सृष्ट सबाई करे ख्वार। प्रगट जोत निहकलंक, शब्द सरूपी मारे मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजे राणयां करे ख्वार। राजन राज प्रभ राज दहिंद। साचा प्रभ सदा बख़्शिंद। शब्द सरूप प्रभ पकड़ ल्याए वाली हिन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द चलाए जिउँ सागर सिंध। शब्दी देवे, प्रभ शब्द ज्ञाना। सुरती सुरत वाली हिन्द देवे प्रभ चरन ध्याना। एका जोत अकालमूर्त, प्रगट जोत तोड़े अभिमाना। सोहँ शब्द वजावे साची तूरत, साचा शब्द सुणावे काना। महाराज शेर विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा सति सुहाना। जामा धार घनकपुर। एका जोत प्रगटाए गोबिन्द गुर। गुरमुख विरले अन्तकाल गुरचरन बैठे जुड़। बेमुख कलिजुग जीव खाली हत्थ गए दर मुड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दर किसे ना सूझे सुर। वक्त सुहाए पहली माघ। सतिजुग लगाई साची जाग। प्रगट जोत निहकलंक सृष्ट सबाई हत्थ पकड़ी वाग। सो जन उधरे अन्तकाल कलि, जो प्रभ चरन गए लाग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द उपजावे राग। पहली माघ प्रभ वक्त सुहावणा। वीह सौ अठ्ठ बिक्रमी वाह वाह साचा सतिजुग लावणा। अठसठ तीर्थां प्रभ साचे माण गंवावणा। चार कुन्ट पा वहीर, बेमुखां नष्ट करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाणा कलि वरतावणा। पहली माघ प्रभ भाग लगाए। जोत निरँजण मात धर, सतिजुग साची नींह रखाए। चार वरन प्रभ इक्क कराए। सतिगुर साचा मार्ग लाए। सोहँ साचा शब्द धर, खाणी बाणी प्रभ सर्ब मिटाए। गुरचरन प्रीती साचा सर कर, गुरचरन धूढ़ गुरसिख मस्तक लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह साचा सतिजुग लाए। पहली माघ प्रभ धरे जोत। चार वरन कराए प्रभ एका गोत। बेमुख कलिजुग जीव कलि रहे सोत। धन्न धन्न धन्न निहकलंक तेरे साचे सिख, चरन लाग गए दुरमति पाप कलेवर धोत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग प्रगटाए साची जोत।

५६० ०१

पहली माघ प्रभ भए दयाला । गुरसिख आत्म करे गुलाला। प्रगट जोत प्रभ निहकलंक, दीपक गुरसिख तेरी आत्म बाला। माण गंवाए सुर नर, खिच्चे जोत प्रभ जोत ज्वाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन देवे साची माला। पहली माघ प्रभ जोत आकारे। जोत सरूप सृष्ट सबाई कल वरतारे। पवन जोत जोत पवन, एका शब्द सुणाए विच संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप एकँकारे। पहली माघ प्रभ वक्त सुहाए। कलिजुग अन्त करे प्रभ, साची खेल रचाए। वड बली बलवाना, प्रभ शब्द सरूपी टुम्ब उठाए। बिठाए विच बबाणा, प्रभ अग्न मेघ वरसाए। प्रभ खेल कर बिधनाना, कलिजुग जीवां भेद ना आए। कलिजुग जीव लग्गे दुःख महाना, अन्तकाल प्रभ दे सज़ाए। प्रभ अबिनाशी किसे विरले गुरमुख जाणा, निहकलंक कलि जामा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ सतिजुग साचा लाए। पहली माघ प्रभ भाग लगावणा। सतिजुग साचा मग चलावणा। सोहँ साचा शब्द चार कुन्ट वरतावणा। जोत सरूप प्रभ सृष्ट सुणाए उनन्जा पवणा। गुरसिक्खां प्रभ पकड़ उठाए, दिवस रैण ना मिले सावणा। साचा दीपक प्रभ दे जगाए, महाराज शेर सिँघ साचा दर घर विरले गुरमुख पावणा। पहली माघ कलि करे आकारा। जोत सरूप प्रभ नर अवतार। साचा कर्म धर्म चलाए विच संसार। बेमुख जीव खपाए, जोत सरूप प्रभ गिरधार। ऊँच नीच प्रभ भेद चुकाए, एका बख्शे चरन प्यार। साचा प्रभ कोई विरला पाए, जिस बख्शे प्रभ किरपा धार। सोहँ शब्द जन विरला गावे, प्रभ आत्म करे उज्जयार। गुरचरन धूढ़ गुरसिख साचा नाहवे, प्रभ बेड़ा कर जाए पार। अन्तकाल अमरा पद पावे, प्रभ बख्शे मोख द्वार। जन्म मरन प्रभ गेड़ चुकावे, जन्म ना पावे दूजी वार। मात गर्भ प्रभ फंद कटावे, महाराज शेर सिँघ जोत निरँकार। पहली माघ प्रभ वक्त सुहाए। साध संगत तेरे कष्ट हटाए। सिर रक्खे हत्थ सोहँ देवे साची वथ, सतिजुग साचा राह दिसाए। बेमुखां प्रभ पाए नत्थ, दर दर मंगण कोई भिख ना पाए। सोहँ चलाया सतिजुग साचा रथ, गुरसिख साचे प्रभ पार कराए। महाराज शेर सिँघ सर्ब कला समरथ, कलिजुग जीव भेव ना पाए। पहली माघ दिवस भाग भरया। सतिजुग साचे, साचा जन्म मात विच धरया। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, सोहँ खण्डा प्रभ साचे फड़या। बेमुख जीव अन्तकाल कलि झूठे नाचे, महाराज शेर सिँघ शब्द मार कराए जो जन ना शरनी पड़िआ। पहली माघ वड वड्याई। साचे प्रभ साची धुन गुरसिख आत्म उपजाई। खोल्ह वखाई आत्म सुन्न, प्रभ आत्म जोत जगाई। सोहँ शब्द तेरी रुण झुण, किसे विरले गुरमुख पाई। गुरसिख साचे प्रभ कलिजुग सेव कमाई। बेमुख जीव कलिजुग वेले अन्त प्रभ दे सज़ाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ तेरी रुत्त सुहाई। साची रुत्त साच वरतार। सति सति प्रभ भरे भण्डार। साध संगत प्रभ जाए तार। बेमुख जीवां अन्तकाल प्रभ करे ख्वार। महाराज

शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द मारे मार। पहली माघ प्रभ जोत जगा। जन्म जन्म दी मैल जाए गंवा। विछड़यां प्रभ मेल कर, चरनी लए लगा। वेले अन्त, अन्तकाल प्रभ साचा पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, दूसर कोई ना। पहली माघ प्रभ भरम चुकावणा। सच सुच्च विच साध संगत वरतावणा। एका दूजा प्रभ सारा भेव चुकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द वरन चार जपावणा। साध संगत प्रभ बख्शे दात। साचा शब्द साची करामात। आत्म जोत जगे, गुरसिख ना दीसे दिवस रात। जो जन चरनी लागे, चरन प्रीती कलि साचा नात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत धरे विच मात। पहली माघ प्रभ भेत चुकाया। भरम भुलेखा सारा लाहया। साध संगत कलि साचा, साचा शब्द प्रभ सुणाया। जोत जगाई बिन बाती बिन तेल, सोहँ बाती दे लगाया। अचरज किया प्रभ साचे खेल, जोत सरूपी दिस ना आया। विछड़यां प्रभ मिलाया मेल, पहली माघ दिवस सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया। पहली माघ जोत आकार। हाहाकार वरते विच संसार। गुरमुख साचे तेरे दर घर रसन सोहँ जै जैकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग वड सिक्दार। सतिजुग होवे प्रभ सिक्दारी। बाकी सर्ब करे ख्वारी। सृष्ट सबाई होवे प्रभ पनिहारी। एका कन्त साचा प्रभ, सृष्ट सबाई नारी। जोत धरे प्रभ भगवन्त, जोत सरूप सदा निराधारी। महाराज शेर सिँघ
५६१ ०१ विष्नूं भगवान, सति पुरखां आत्म करे उज्जयारी। पहली माघ प्रभ रंग चढ़ाया। रंग रंगीला माधव, कलि अचरज खेल रचाया। ५६१ ०१
वेले अन्त विच द्वापर जादव नास कराया। कलिजुग जामा धार निहकलंक, कलिजुग भेख मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लाया। सतिजुग तेरा माण रखाया। जामा धार निहकलंक, तेरा जन्म दवाया। सोहँ साचा शब्द, प्रभ साचे तेरी झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप अचरज खेल रचाया। पहली माघ प्रभ भरम चुकाए। गुरमुख सोए प्रभ लए जगाए। साचा प्रभ सिर रक्खे हत्थ, वेले अन्त ना लागे तत्ती वाए। गुरसंगत प्रभ बख्शे साची वथ, भैण भ्रा बणाए। वेला गया ना आवे हत्थ, साचा प्रभ लिख्त लिखाए। महाराज शेर सिँघ सदा अकथ्थ, प्रभ की महिंमा लखी ना जाए। पहली माघ तेरा साचा रूप। सतिजुग लगाए प्रभ साचा भूप। चार कुन्ट वरताए, हो जाए अन्ध कूप। गुरसिक्खां प्रभ आत्म जोत जगाए, महाराज शेर सिँघ सति सरूप। पहली माघ समां सुहाना। कलिजुग मिटा प्रभ साचा सतिजुग लाना। आपणा खेल रचा तख्तों लाहे राजा राणा। सोहँ शब्द चला, माण गंवाए वेद पुरानां। साची कल वरता, महाराज शेर सिँघ साचा समां सुहाना। पहली माघ सर्ब सुख। दे दरस साध संगत, प्रभ उतारे आत्म भुक्ख। रक्खे लाज वेले अन्त, जिउँ बालक माता कुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द देवे साचा सुख। पहली माघ प्रभ शब्द

लिखावणा। साध संगत प्रभ रसन सुनावणा। गुरमुख साचे, प्रभ साचे मार्ग लावणा। एका दर द्वार, प्रभ साचे दरसावणा। एका शब्द अधार, साध संगत प्रभ वरतावणा। दर आए जो नर नार, कर किरपा प्रभ पार लँघावणा। जन्म ना पाए विच संसार, महाराज शेर सिँघ जिस जीव रसना गावणा। पहली माघ घर भगतन भण्डार। प्रभ साचा शब्द देवे अधार। गुरचरन प्रीती सतिजुग साची नीती, प्रभ राह चलाए अपर अपार। अन्तकाल कलि औध जग बीती, प्रभ साचा करे ख्वार। कलिजुग जीव भरन जो कीती, वेले अन्त आई हार। साध संगत प्रभ काया सीतल कीती, जोत सरूप देवे दरस अपार। एका बख्शे प्रभ चरन प्रीती, सोहँ शब्द भरे भण्डार। सतिजुग चलाए साची रीती, प्रगट निहकलंक अवतार। गुरसिख साचे सृष्ट सभ जीती, किरपा करे गिरधार। आत्म करे प्रभ अतीती, झिरना झिराए अमृत अपार। अमृत बूंद गुरसिख महारस पीती, बख्शे प्रभ साचा किरपा धार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साची जोत करे आकार। पहली माघ प्रभ भए अनन्दा। साध संगत उपजाए, प्रभ परमानंदा। कलिजुग मिटाए प्रभ झूठा धन्दा। गुरसिख बणाए, प्रभ साचा बन्दा। सोहँ साचा शब्द सुणाए, खोल्ह वखाए प्रभ आत्म जंदा। प्रभ साचा माण दवाए, रसना ना लाए मदिरा मास जो गन्दा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगत सदा बख्शिंदा। पहली माघ प्रभ साची कल वरता। वेले अमृत सृष्ट सबाई लई भुला। गुरचरन प्रीती पा विरले सन्त, आत्म त्रैकुटी लई खुल्ह। माण दवाए प्रभ विच जन्त, साची सेव चरन लई कमा। जगाए जोत प्रभ अकन्त, महाराज शेर सिँघ साची दया कमा। पहली माघ, प्रभ पूरन आसा। पहली माघ, प्रभ देवे साध संगत पूरन भरवासा। पहली माघ, सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वासा। पहली माघ, सृष्ट सबाई कराए नासा। पहली माघ, सतिगुर साचा सतिजुग विच मात कराए वासा। पहली माघ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान प्रगटाए जोत प्रभ अबिनाशा। पहली माघ, रघुपत रघुनाथ। साध संगत सिर रक्खे हाथ। चरन धूढ़ प्रगट जोत प्रभ लगावे माथ। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह त्रैलोकी नाथ। पहली माघ पुरब मनावणा। दर घर प्रभ सुहावणा। वर वर वर, साध संगत दर साचे पावणा। हरि हरि हरि, प्रभ साचे दरस दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ बुग्घीं भाग लगावणा। घर साचे प्रभ भाग लगाए। साध संगत दर मंगल गाए। जोत सरूप प्रगट जोत, साचा दरस दिखाए। निरँजण जोत, ना रंग ना रूप, महाराज शेर सिँघ नां रखाए। पहली माघ प्रभ राह चलाए। साध संगत संगत साध प्रभ एका मार्ग लाए। अगाध बोध बोध अगाध प्रभ साचा हुक्म सुणाए। गुरमुख भुल्ले प्रभ लए सुधार, जो दर गए भुलाए। धरे जोत प्रभ कलि वड जोधा जोध, राजा राणा कोई रहण ना पाए। जोत सरूप प्रभ वड बोध, सतिजुग साचे लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत कल प्रगटाए।

५६२
०१

पहली माघ, साचा पुरब मनावणा। साचे प्रभ साचा राग, साचा शब्द साध संगत वरतावणा। आदि जुगादी साचा नाद, प्रभ आत्म धुन उपजावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुत्तयां बाहों पकड़ उठावणा। पहली माघ, प्रभ आए दर दरबारे। धरे जोत निहकलंक, जोत सरूप अपर अपारे। वेले अन्त सृष्ट सबाई, आपणा मूल कलि हारे। साध संगत प्रभ रक्खे लाज, पहली माघ जो आए चल दवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई चिट्टे असव संवारे। पहली माघ, प्रभ देवे दरस अमोघ। सोहँ साचा शब्द, साध संगत दवाए साचा जोग। साचा शब्द सुणाए, प्रभ कट्टे हउमे रोग। एका धुन उपजाए, आत्म चिन्त मिटाए सोग। प्रभ सुन्न समाध खुलाए, महाराज शेर सिँघ देवे दरस अमोघ। पहली माघ, प्रभ रक्खे हित। साध संगत प्रभ मिले साचा पित। जोत सरूपी जोत प्रगटाए, प्रभ जुगा जुग नित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस कलिजुग ल्या जन्म जीव जित्त। पहली माघ, प्रभ सरधन पूर। रक्खे लाज, जो जन चल आयण हज़ूर। सोहँ शब्द प्रभ आत्म बख्शे सति सरूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आत्म देवे साचा नूर। पहली माघ, प्रभ नूरी नूरा। वड दाता वड गुण भरपूरा। साचा शब्द लिखाए, वरताए, ना होए अधूरा। सृष्ट सबाई अन्तकाल, प्रभ कराए चूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत बख्शे चरन धूढ़ा। पहली माघ बेमुख बेताले। कलिजुग जीव होए बेहाले। बेमुख जीव, अन्तकाल प्रभ साचे गाले। गुर चरन प्रीती गुरसिख तेरी निभे नाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती कोई विरला गुरमुख पाले। पहली माघ सतिजुग जन्मा। साचा प्रभ सच लिखाए कर्मा। बेमुख जीवां सभ मिटाए भरमा। दुष्ट दुराचारां प्रभ आए शरमा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग तेरा साचा करमा। पहली माघ प्रभ प्रितपाला। साध संगत प्रभ सदा समाला। वेले अन्तकाल, गुरमुख विरले भाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर चार वरन दिसाए साची धर्मसाला। धरे जोत प्रभ अलख अलेखा। बेमुख जीवां प्रभ कढ्ढे भरम भुलेखा। धन्न गुरसिख साचा, साचा प्रभ जिस नैण तीजे देखा। अन्तकाल कलि प्रगट जोत, कलिजुग मिटाए झूठी रेखा। निहकलंक अवतार नर , अन्त मुकाया सारा लेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी धारया भेखा। जोत सरूप प्रभ भेख धर। कलिजुग प्रगट्या अवतार नर। शब्द मनी सिँघ सति जाए कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द चलाए अपर । साचा सन्त सति कलम चलाई। प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। कलम मार कर ख्वार राउ रंक कराई। दुष्ट दुराचार ना आए चल प्रभ शरनाई। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, वेले अन्त देह छुडाई। दिवस रैण सन्त कलम चलाए। लेखा लिखे, बेमुखां लेख लिखाए। आप अभेख सर्ब रिहा देख, प्रभ आपणा आप छुपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साची

धुन साचे सन्त उपजाए। साचा शब्द प्रभ उपजाया। आलस निंदरा प्रभ मगरों लाहया। एका जोत सरूप, प्रभ नज़री आया। साची जोत आकार कर, प्रभ कलिजुग भेख मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ माण दवाया। सन्त मनी सिँघ प्रभ शब्द कमाए। साचा प्रभ दिवस रैण सद रसना गाए। एका दिसे नर अवतार, दूसर सर्ब भेख मिटाए। कूक पुकारे साचा दर, राजा राणा कोई शरन ना आए। वेले अन्त मार कलम गया कर, कलिजुग झूठे लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द कन्न सुणाए। शब्द मार प्रभ जगत कराया। सन्त मनी सिँघ साचा शब्द सुणाया। सति पुरख सदा विस्मादे, प्रभ विस्मादी विच समाया। चलाए शब्द प्रभ अनादे, नाद धुंन उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ साचा माण दवाया। साचा शब्द प्रभ उपजाए। साचा सन्त लिख्त लिखाए। महिंमा अगणत, गणी ना जाए। बणाए बणत वेले अन्त, कलम लेख लिखाए। बैठ इकन्त शब्द लिखंत, सृष्ट सबाई भस्म कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत विच देह जगाए। साची सुरत प्रभ दर पाए। अनहद शब्द देवे रघुराए। दिवस रैण साचा सन्त कलम चलाए। सृष्ट सबाई वहाई वहन्दे वहिण, लिख्त सति कराई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साची धुंन उपजाई। साचा शब्द सदा मन वसे। आत्म जगे जोत रवि ससे। कर दरस साचा प्रभ, आत्म सन्त सदा कलि हस्से।

५६४
०१

महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, सन्त मनी सिँघ सदा तेरे विच वसे। साचा दूत साचा सन्त बणाया। साचे धाम प्रभ पल्ला फिराया। आपणा नाम अमाम महिदी प्रभ रखाया। साचा काम बाल अवस्था प्रभ कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव आप छुपाया। आपणा भेद प्रभ आप छुपावे। एका शब्द सन्त मनी सिँघ कन्न सुणावे। जोत सरूपी जोत धर, प्रभ साची जोत दरसावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण साचा शब्द चलावे। सन्त मनी सिँघ प्रभ दरस दिखाया। आपणा भेद प्रभ आप चुकाया। साची जोत प्रकाश कर, प्रभ आत्म दीप जगाया। अज्ञान अन्धेर विनास कर, सोहँ साचा प्रभ विच स्वास चलाया। पूरन किरपा कर, साची सेवा सन्त मनी सिँघ लाया। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी विच वास कर, साचा शब्द राग सुणाया। शब्द लिखाए प्रभ रागन रागे। भेत खुल्हाए प्रभ पहली माघे। जोत मनी सिँघ सतिजुग जागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग पाए गुरसिख विरला वड भागे। सन्त मनी सिँघ तेरी पूरन घाला। साचा प्रभ तेरा सदा रखवाला। जगावे जोत विच लिलाट, प्रभ साचा बेमिसाला। कलिजुग जीवां अन्त, सोहँ शब्द करे मूंह काला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत पहली माघ तेरे कट्टे दु:ख जंजाला। दु:ख दलिद्र प्रभ दए गंवा। सतिगुर साचा आए जोत प्रगटा। निहकलंक जामा धार, नाउँ ल्या रखा। सोहँ साचा शब्द चार वरन जाए वरता। सरगुण निरगुण

रूप प्रभ सर्ब रिहा समा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन ल्या रसन ध्या। दुःख भुख प्रभ रोग मिटाए। गुर संगत साचा माण दवाए। जामा धार निहकलंक, वाक् भविख्त सच कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, तेरे छत्र सीस झुलाए। रोग सोग गुरसिख मिटावणा। प्रभ अबिनाशी प्रभ आप अख्वावणा। दुःख दर्द निवासी, निहकलंक कलि नाउँ भुलावणा। सर्ब घट वासी जामा घनकपुरी विच पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौथे वेला अन्त करावणा। साध संगत, तेरा दर्द मिटाया। पतिपरमेश्वर तेरा होए सहाया। जप तप प्रभ सर्ब मिटाया। एका साचा नाम, सोहँ शब्द चलाया। गुरमुख साचा काम, प्रभ चरनी सीस झुकाया। सतिजुग उपजे साचा धाम, महाराज शेर सिँघ जिस धाम चरन टिकाया। साचा धाम विच वरभंड। प्रभ जोत जगावे विच नवखण्ड। बेमुखां आत्म होए रंड। अन्तकाल कलिजुग प्रभ साचा लाए डण्ड। साचा नाम सोहँ प्रभ साध संगत जाए वंड। चार जुग चार वरन, प्रभ देवे वड्याई विच वरभंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप विच खण्ड ब्रह्मण्ड। जोत सरूप जगत परवेशया। कलिजुग करे प्रभ साचा भेस्सया। गुरमुख विरला प्रभ दर आए करे अदेस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सदा परवेशया। साचे सिख प्रभ सदा समाया। साची जोत प्रभ आत्म करे रुशनाया। खोल्ह देवे प्रभ आत्म सुन्न, अज्ञान अन्धेर मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दीप जगाया। जगे दीप अन्धेर विनास्सया। धरे जोत प्रभ अबिनाशया। गुरमुख साचे वेख, प्रभ साचा रक्खे विच धरवास्सया। प्रभ साचे कलि किया भेख, बेमुख जीवां जन्म गंवाया कर कर हास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा दासन दास्सया। साध संगत प्रभ दासन दासे। देवे दरस प्रभ घनकपुर वासे। गुरमुख साचे प्रभ साचे बलि बलि जासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त करे बन्द खुलासे। बंधन बंध, प्रभ बंधन तोड़े। द्वापर त्रेते विछड़े प्रभ कलिजुग जोड़े। प्रभ साचा जग आया, सिख साचे दी साची लोड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई विच शौह दरया रोड़्हे। गुरसिख देवे दरस प्रभ सद गुप्ते। पहली माघ सोहँ शब्द लिखावे जुगते। रसना जप जप जीव पाए द्वार साची मुक्ते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए जोत सरूपी कीनी जुगते। साची मुक्ती सच दर पाओ। साध संगत पहली माघ गुर दर आओ। भरम भुलेखे सारे लाहो। साचा प्रभ नेत्र पेख मानस जन्म सुफल कराओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ अबिनाशी सेव कमाओ। साचा प्रभ सच घर आवे। साचा दर प्रभ आण सुहावे। साचा दर गुरसिख दवावे। भण्डारे प्रभ अखुट रखावे। अवतार नर जामा घनकपुर विच पावे। साचा सर दो सौ चौती बुरजी बण जावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत धार मेघ बरसावे। अमृत मेघ बरसे लहिंदी धारा। सन्त

मनी सिँघ लिक्खया शब्द अगम्म अपारा। वडा सर वडा दर, बणे विच संसारा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, निहकलंक अवतारा। घनकपुरा गुणा गुणवन्त। कलिजुग जोत धरी भगवन्त। दरस दिखाया भरम चुकाया प्रभ मनी सिँघ सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा धार सतिजुग माण दवाया सर्ब विच जीव जन्त । मान सरोवर धाम न्यारा। प्रभ अबिनाशी चरन दुआरा। चेत सिँघ तेरा दर उपजे, बणे वड दरबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए अपर अपारा। साचा धाम प्रभ का भया। प्रभ अबिनाशी कीनी दया। जोत सरूप सतिजुग चलाए साची नईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक अवतार जग भया। घनकपुर वड दरबारा। वरताए खेल, प्रभ विच संसारा। सतिजुग सति वरताए, साची जोत होए उज्जयारा। घनकपुर थान सुहाए, तजाए देह प्रभ गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कल वरते विच संसारा। घनकपुर सच धाम रचाया। वेले शाम साचे राम नींह रखाया। पूरन किया काम, प्रभ अबिनाशी अन्ध अन्धेर रखाया। बेमुख जीवां मौत पिलाया जाम, माझा हद्द घविंड बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिक्खया लेख सन्त मनी सिँघ सति कराया। साचे प्रभ शब्द उपजाया। घनकपुर लेख प्रभ अबिनाशी आप लिखाया। ऊँचा दर दरबार, सन्त साचे मेख लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द आप वरताया। घनकपुर, तेरा लिखाया लेख।
५६६ वेले अन्त कलिजुग, गुरसिख तैनूं लैण दूरों वेख। जोत सरूप प्रगट प्रभ, जोत सरूपी धरे भेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ५६६
०१ ०१
भगवान, सतिजुग उपजाए तेरी रेख। साचे प्रभ साचा सतिजुग ला। सतिजुग साचे सति पुरख लए उपजा। सोहँ साचा शब्द, प्रभ साचे दा साचा राह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ थांईं होए सहा। साचा धाम घनकपुर। साचा लेख लिखाया धुर। कलिजुग प्रगटे साचे धाम दोए गोबिन्द गुर। जोत जगाए कलंकनिह, देवी देव चरन आए तुर। प्रभ सर्ब मिटाई सेव, साचा शब्द सुणाया सन्त घनकपुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दर ना पायण सुर। देवी देव प्रभ माण गंवाया। सन्त मनी सिँघ साचा शब्द लिखाया। सेव मेव प्रभ सारा नष्ट कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम साचा जगत वरताया। गंगा तेरा गया नीर। दिवस रैण कट्टी वहीर। प्रगट जोत निहकलंक खिच्चे जोत जो कट्टे ज़ंजीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त कलिजुग ना देवे किसे धीर। गोदआवरी तेरा माण चुकाया। जोत सरूप प्रभ जोत धर, तेरा अमृत नीर कराया। प्रभ अबिनाशी अवतार नर, वेले अन्त कलिजुग चीर लुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द चलाया। प्रभ अबिनाशी सदा रंग भीन्ना। वेले अन्तकाल कलि, प्रभ मिटाए मक्का मदीना । जोत जगाए निहकलंक, सर्ब खपाए मुहम्मदी दीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क कीना। साचा प्रभ

जोत प्रगटाए। तट्ट तीर्थ कोई रहण ना पाए। पीर पैग़ंबर औलीए, प्रभ माण गंवाए। गुरसिख साचे साचे सन्त, निहकलंक जो सेव कमाए। नज़र आए जिस बणाई बणत, प्रगट जोत दरस दिखाए। जोत सरूप प्रभ सदा इकन्त, निरहार विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भाणा कल वरताए। जोत सरूप जगत गिरधार। साचा कारज करे करतार। साचा राज वरताए विच संसार। नर नरायण निरँजण जोत एकँकार। वरन चार प्रभ कराए एका गोत, सोहँ शब्द चले संसारा। प्रभ अबिनाशी प्रगटे साची जोत आप गिरधारा। बेमुख जीव जग रहे सोत, दिस ना आए प्रभ अगम्म अपारा। जो किछ प्रभ वरताए सोई कलि होत, वेले अन्त दिसे अन्धयारा। महाराज शेर सिँघ निरँजण जोत, जोत प्रकाश करे सृष्ट उज्जयारा। साची जोत जगत प्रकाशे। कलिजुग अन्धेर सर्ब विनासे। साचा प्रभ गुरमुख साचे तेरे हिरदे वासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन दरस प्यासे। दे दरस प्रभ प्यास मिटाए। मिटाए प्यास जो जन आए सरनाए। खाए तरस प्रभ अबिनाश, वेले अन्त चरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर हत्थ टिकाए। साध संगत सिर हत्थ टिकाया। साचे प्रभ साचा कर्म कराया। जोत सरूपी जोत धर, जग साचा माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाया। मिल्या मेल साचे प्रभ। गुरमुख साचे, प्रभ ल्या लभ। अमृत झिरना झिरे विच नभ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए वक्त ल्याए झब्ब। वेले अन्त प्रभ अन्त करावणा। प्रगट साची जोत, साचा कर्म विच जगत करावणा। जोत सरूपी प्रगट भेस, साध संगत प्रभ दरस दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात सद आवण जावणा। वेले अन्त प्रभ दया कमाए। साध संगत प्रभ शब्द जणाए। भुल भुल भुल, कोई जीव भुल ना जाए। रुल रुल रुल, वेले अन्त गुरसिख कोई रुल ना जाए। अतुल अतुल अतुल, प्रभ ना कोई तुलाए। अडुल अडुल अडुल, प्रभ ना कोई डुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठ अडोल सृष्ट सबाई दे उलटाए। साचा प्रभ सच दया धार। साचा कारज करे करतार। साचा राज वरतावे विच संसार। जोत जगावे विच माझ, साचा गिरधार। साध संगत प्रभ रक्खे लाज, देवे दरस निराहार। सोहँ शब्द मारे अवाज़, साध संगत आ चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई करे ख्वार। सोहँ शब्द प्रभ अवाज़ लगाए। गुरसिख साचे, प्रभ सच सुणाए। भज भज नठ नठ, साध संगत प्रभ शरनी आए। इक्ठ इक्ठ इक्ठ, साचा इक्ठ हो जाए। लठ लठ लठ, उलटी लठ प्रभ जगत भुआए। भठ भठ भठ, सृष्ट सबाई भठ हो जाए। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, साचा शब्द सुणाए। साचा प्रभ सच वरतार, पंज सिख प्रभ पकड़ उठाए। वरताए सो जो शब्द लिखाए अपार, विच कल्सीं खेल रचाए। करे कराए करनेहार, अभेद भेदा भेव

५६७
०१

छुपाए। साचा तख्त कर त्यार, आपणा आसण आप लगाए। उप्पर बैठ आप गिरधार, सिँघ आसण गुरसिक्खां सीस टिकाए। चार कुंट मच जाए हाहाकार, किसे वेला हत्थ ना आए। महाराज शेर सिँघ तेरा वरतार, भेद किसे ना आए। साचे प्रभ, सच बणत बणाई। साची खेल कल्सीं प्रभ वरताई। साचा राज साचा ताज, साची देवे प्रभ वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त भविख्त सच कराई। साचे प्रभ खेल रचाया। पंजां सिक्खा प्रभ हुक्म सुणाया। चार कुन्ट प्रभ खड़ा कराया। पंजां सिर प्रभ छत्र झुलाया। संगत सबाई बाहर कढाया। इक्क इक्क गुरसिख आए गुरचरनीं सीस झुकाया। साध संगत चुप हो जाए, प्रभ सुन्न समाध कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल विच कल्सीं जाए कराया। साचे प्रभ सच खेल रचाए। साध संगत देवे सच सुणाए। आदि अन्त प्रभ सदा सहाए। साध संगत प्रभ साचा जुगो जुग पैज रखाए। वेला वक्त सुहा गया, भिन्नड़ी रैण सुहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी वड्याए। साचे प्रभ सच शब्द लिखाया। साध संगत प्रभ माण दवाया। वक्त सुहाया वेले अन्तकाल अन्त प्रभ साध संगत रहे समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गण गंधर्ब तेरा दरस किसे ना पाया। साध संगत प्रभ मिले भूपन भूपिआ। देवे दरस प्रभ सच अनूप्पया। दिस ना आए जोत सरूप, ना दिसाए रेख रूप्पया। प्रभ अबिनाशी सति सरूप्पया। महाराज शेर सिँघ जोत जगाए, करे प्रकाश विच अन्ध कूप्पया। प्रभ की जोत जगत उजागर। निहकलंक चरन धूढ़ जिउँ नीर सागर। गुरसिख साचे अमृत बरखे विच झूठी देह गागर। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखाए, गुरसिख तराए कर निर्मल उजागर। गुरसिख साचा निर्मल निर्मला। बेमुख कलिजुग जीव, अन्तकाल कलि जिउँ सिंमला। आत्म तपे जिउँ बालू बिमला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सद निर्मल निर्मला। साचा प्रभ सदा निरालम। झूठी सृष्ट झूठा सभ आलम। शब्द मार करे ख्वार, प्रभ चलाए साची कालम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए खण्डा दो धार कलिजुग वडा ज़ालम। शब्द मार प्रभ जगत कराया। जोत सरूप प्रभ अग्न लगाया। गुरसिख साचे, प्रभ साची शरन लगाया। साचा शब्द ज्ञान दे, प्रभ आत्म अग्न बुझाया। साचा दरस विष्नूं भगवान दे, आत्म दु:ख मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सद विच सुहाया। साचा प्रभ सदा सतिवन्त। जोत जगाए वेले अन्त। धरत धवल हिलाए, जीव जन्त होइण भस्मंत। साध संगत मिल्या प्रभ इक्क इकन्त । थिर घर वासी विच मात दे आए, महाराज शेर सिँघ भगत भगवन्त। आया मात प्रभ सुखदायक । दु:ख रोग सर्ब मिटायक। प्रभ साचा साचा नायक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा सदा सहायक। साध संगत प्रभ सच देवे सीख्या। सोहँ साचा शब्द, प्रभ झोली पाए भीख्या। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, साचा नाम जिस

प्रभ साचे लीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दर विरले गुरमुख दीख्या। साचे प्रभ धर साची सरना। मातलोक फिर होए ना मरना। जम का डण्ड वेले अन्त ना भरना। गुरचरन प्रीती भवजल तरना। प्रभ अबिनाशी निहकलंक, गुरमुख विरले वरना। बेमुख जीवां अन्तकाल कलिजुग दुःख डाहढा भरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख झिराए साचा झिरना। अमृत झिरना प्रभ झिराए। शांत स्वांती बूंद प्रभ मेघ बरखाए। साचा प्रभ किरपा निध, कँवल नाभ खोलू वखाए। कारज होवण सारे सिद्ध, द्वार दस्म प्रभ भेद खुलाए। गुरसिख देवे नौं निध, साची जोत प्रभ जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव सर्ब खुलाए। आपणा भेव प्रभ खुलाउणा। जोत सरूपी साचा डंक निहकलंक वजाउणा। साचा धाम प्रभ अबिनाशी वेले अन्त सुहाउणा। साध संगत, साचा नाम निहकलंक सद रसनी गाउणा। जोत जगाए रमईआ राम, मस्तूआणे चरन प्रभ पाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस राणे संगरूर दिखाउणा। जोत सरूप प्रभ दरस दिखाए। राणा संगरूर प्रभ टुम्ब उठाए। प्रभ दीसे दूर, नज़र ना आए। टुट्टे ग़रूर, प्रभ साचा भउ चुकाए। आत्म सरूर, प्रभ सोहँ शब्द धुंन उपजाए। सर्ब कला प्रभ साचा पूर, दर आए सीस झुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भुल्लयां गले लगाए। भुल भुल भुल वक्त गंवाया। सन्त मनी सिँघ साचा ढोल वजाया। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप, अनहद धुन उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाया। साचा प्रभ सच हुक्म सुणाए। सन्त मनी सिँघ सति कमाए। राजे राणयां दे सुणाए। निहकलंक जामा धार विच मात दे आए। नर अवतार किरपा धार, चल आ सीस झुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फेर दिस ना आए। साचे सन्त सच हुक्म सुणाया। प्रभ अबिनाशी साचा शब्द लिखाया। साचा सन्त परवान प्रभ दीबान, आपणा खेल रचाया। निहकलंक जो चरनीं डिग्गे आण, प्रभ देवे माण सवाया। जो जन ना करन पछाण, प्रभ राउ रंक कराया। निमाणयां प्रभ देवे माण, निमाणयां सिर छत्र झुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजा राणा सभ तख्तों लाहया। साचे सन्त प्रभ चरन टेका। साचा प्रभ, शब्द उपजाए एका। भाणा प्रभ वरताए, कलिजुग जीव भुल्ले अनेका। वेले अन्त पति गंवाए, इक्क रखाए प्रभ चरन टेका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां करे बुध बिबेका। साचा प्रभ भरम निवारे। राजे राणे आयण चल दरबारे। जोत सरूप प्रभ प्रगटे गिरधारे। एका शब्द प्रभ मारे खण्डा दो धारे। आत्म मार कर ख्वार उतरन पार, जो जन डिग्गण दवारे। विच संसार प्रभ गिरधार, सोहँ शब्द कराए जैकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुच्च वरताए विच संसारे। साचा प्रभ सच दीबाण। चार वरन प्रभ पाए एका माण। राउ रंक निहकलंक दर इक्क समान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाज रखाए चरन आए जो बिरध बाल जवान। प्रभ

रक्खे लाज बिरध बाल अञ्याणयां। प्रभ अबिनाशी कलिजुग जिस जन पछाणया। साचा प्रभ प्रगट जोत, चरन लगावे राजे राणयां। हँकारीआं प्रभ हँकार निवारे, दरस दिखावे राणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट वरतावे आपणे भाणयां। साचा प्रभ सच वरते भाणा। राउ रंक प्रभ चरन लगाणा। साचा शब्द प्रभ सच सुनाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत सरूप प्रभ जामा धार। कलिजुग आया विच संसार। दिस ना आए प्रभ नैण मुँधार। प्रभ साचे दी साची कार। सच सुच्च वरतावे विच संसार। सतिजुग वरतावे प्रभ सति वरतार। एका आत्म ज्ञान दे, प्रभ भरे भण्डार। सतिजुग तेरा वास, मिटे अन्धेर भए प्रकाश। बालक देवे ज्ञान, विच गर्भवास। साचा सोहँ शब्द प्रभ विच चलाए स्वास। कलिजुग माया प्रभ साचे, जीव जन्तां कीनी नास। प्रगट जोत निहकलंक सृष्ट सबाई कीनी दास। सतिजुग तेरा सति वरतार। सोहँ शब्द प्रभ भरे भण्डार। चार वरन सोहँ एका अधार। चरन लाग नीच ऊँच सभ उधरे पार। पारब्रह्म परमेश्वर नर नरायण अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका तेरा सच दरबार। साचा दर गुरसिख साचे मंग्गया। सोहँ शब्द सिख साचे लागे अन्गाया। गुण निधान प्रभ साचा नाम दे, गुरसिख तेरा आत्म रंग्गया। प्रगट जोत देवे दरस विष्नूं भगवान, जिस दर आए मंगया। चार वरन, प्रभ दर भिखारी। धरे जोत निहकलंक अवतारी। झूठी सृष्ट जोत सरूप प्रभ आण सँघारी। कलिजुग काया प्रभ पार उतारी। सतिजुग साची सतिगुर साचे तेरी नींह उसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन चार कुन्ट सिर छत्र झुलारी। छत्र सोहे प्रभ साचे सीस। सतिजुग साचे एका राह दिसाए जगदीश। गुरसिख साचे प्रभ मेल मिलाए, भेद चुकाए बीस इकीस। अन्तकाल विच जोत रलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बेमुखां जाए पीस। पीस पिसावे सारा जग। राजे राणे पकड़ ल्यावे शाह रग। कलिजुग जीव अग्न जोत जायण दग। गुरमुख साचे निहकलंक, तेरी चरनीं जायण लग। अन्तकाल कलि सो जन उधरे, जो प्रभ आए पग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबग्ग। वड दाता प्रभ वड सूर। सृष्ट सबाई करे चूर। कलिजुग वेला अन्त आ गया, ना रिहा दूर। गुर साचा शब्द लिखा गया, गुरसिक्खां आत्म करे भरपूर। सतिजुग साची जोत जगा गया, सिख साचे जिउँ कोहतूर। प्रभ साचा भेस वटा गया, जोत सरूपी साचा एका नूर। निरँजण जोत सद निरहार। पारब्रह्म जोत सरूप लए अवतार। कलिजुग अन्तिम करे ख्वार। सतिजुग साचा सच वरते वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि भए निहकलंक अवतार। निहकलंक तेरा नाना रूप। साची जोत प्रगटाए, विच मात अन्ध कूप। आत्म अग्न लगाई, बिल्लाए वड वड भूप। प्रभ साचे दया कमाई, गुरसिक्खां दरस दिखाए जोत सरूप। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई, तेरी महिंमा

जगत अनूप। साचा प्रभ, रंग ना रूपिआ। जोत सरूपी सद जोत सरूपिआ। आवण जाण जावण आण, जामा धारे गुरसिक्खां सोहँ साची धूपिआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सति सरूपिआ। सतिजुग तेरी साची सार। सोहँ शब्द तेरी वरतार। निहकलंक तेरा सिक्दार। वड वड आप प्रभ वड करतार। एका दर चार वरन दिसाए हरि का द्वार। पारब्रह्म जोत जगाए अपर अपार। गुरचरन प्रीती साचा घर, सोहँ साचा शब्द जन भगतां देवे भण्डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति करतार। सतिजुग साचा सति कर जाणया। पारब्रह्म सरूप ब्रह्म, विरले गुर किसे पछाणयां। खेल किया प्रभ अगम्म, तख्तों लाहे राजे राणयां। कोई ना मारे चार कुन्ट दम, प्रभ धरे जोत वड जरवाणया। सोहँ साचा शब्द जपावे नाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया । सतिजुग तेरी साची नाए। प्रभ अबिनाशी दे लिखाए। राउ रंक सर्ब झड़ जाए। ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। एका वरन प्रभ विच मात वरताए। साची सरन निहकलंक तेरी दिस आए। कलि बेमुख जीव वेले अन्त डरन कोए ना होए सहाए। पतित पापी सभ दर तरन, जो जन आयन सरनाए। साध संगत गुरचरनी तरन, दर आए सीस झुकाए। मातलोक ना होवे मरन, आवण जाण प्रभ गेड़ चुकाए। खोल्ह देवे प्रभ हरन फरन, सोहँ शब्द जो जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची गाथ सतिजुग लिखाए। हरन फरन प्रभ आप खुल्हाए। साची जोत विच देह टिकाए। अज्ञान अन्धेर सभ दे मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निजानंद गुरसिख उपजाए। निजानंद गुर दर पाईए। कलिजुग माया तनों जलाईए। हँगता मैल मनों तजाईए। साचा गुर साची संगत बण जाईए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख होए दाग़ ना लाईए। साच प्रभ, सच फ़रमाए। साचा शब्द गुर संगत सुणाए। निन्दक दुष्ट प्रभ दर रहण ना पाए। पहली माघ प्रभ सारा भेद खुल्हाए। आत्म अजोड़ प्रभ बन्दी तोड़, प्रभ साची बणत बणाए। बेमुख चले देही कोढ़, रसना निंद जो प्रभ सुणाए। जो जन होए शब्द अमोड़, साध संगत विच रहण ना पाए। वेला अन्त प्रभ साचे दी साची लोड़, महाराज शेर सिँघ साचा शब्द लिखाए। साचे सिख सच वरतंत। सच सुच्च वरताए प्रभ भगवन्त। बेमुख भुल्ले सर्ब जीव जन्त। होए निमाणा चरनीं सीस झुकाए, बख्श देवे प्रभ साचा कन्त। चरन धूढ़ जन मस्तक लाए, होए सहाई वेले अन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग माया पाई बेअन्त। सतिजुग साचा प्रभ साचे लाया। साचा शब्द वीह सौ अठ्ठ बिक्रमी पहली माघ लिखाया। एका राग प्रभ साचे सोहँ चार वरन सुणाया। बेमुखां आत्म डंग मारे नाग, बाशक तशक प्रभ टुम्ब उठाया। गुरसिख हिरदे जायण जाग, नाद धुन प्रभ दे उपजाया। गुरसिख साचे प्रभ चरनीं लाग, कलिजुग ममता दे तजाया। जोत सरूप प्रगटे आदि जुगादि, निहकलंक कलि जामा घनकपुरी विच

पाया। गुरसिख प्रभ देवे साची सिख्खया। वेले अन्त साध संगत तेरी सच परीख्या । साचा प्रभ साचा दर सच सोहँ देवे साची भीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि विरले गुरमुख दीख्या। विरला गुरसिख प्रभ दर पेखे। साचा पित जन साचा वेखे। सृष्ट सबाई प्रभ रही भरम भुलेखे। गुरसिख तेरा मानस जन्म प्रभ लाया लेखे। जो जन दर आयण वेखा वेखे। प्रभ चरनी सीस झुकायण, प्रभ साचा लेख लिखाए विच लेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब विच वेखे। साध संगत साचा फ़रमाण। साचा शब्द साचा गुर सच पावे आण। निन्दक दुष्ट दुराचार, प्रभ दर ना पायण। सो जन उधरन पार, सोहँ शब्द जो रसना गायण। कलिजुग जामा धारया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साध संगत प्रभ भउ चुकाए। साचा शब्द सति वरताए। सन्त मनी सिँघ साचा माण दवाए। जामा धार निहकलंक, सतिगुर साचा सतिजुग प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी तिलक लगाए। साचे प्रभ सच तिलक लगाया। चार वरन सिरताज बणाया। चार वरन मनी सिँघ तेरी सरनाया। परब्रह्म अचरज खेल, सतिजुग साचे जोत सरूपी वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच वरभंड एका शब्द चलाया। साचे प्रभ सच सतिजुग लाया। साचा सतिगुर प्रभ आप प्रगटाया। जोत सरूपी निहकलंक भरम भुलेखा सारा लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारा भेद आप खुल्हाया। मनी सिँघ सिर तेरे ताजा।
५७२
०१
वडा प्रभ आप वड राजा। प्रगटाई जोत रखाई लाज विच माझा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी रक्खे लाजा। सतिजुग साचा सति उपजाया। कलिजुग माझा थेह कर, सतिजुग साचे प्रगटाया। सतिजुग अमृत मेघ बरस, सति सरूर प्रभ दे बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा भेत चुकाया। सतिजुग साचे प्रभ भाग लगावणा। देस माझा प्रभ फेर वसावणा। पुरी घनक होए सति सुहावणा । चार वरन प्रभ दर आए साचा गावणा। महाराज शेर सिँघ शब्द सुणाए, चार कुन्ट जोत सरूप विच पावणा। जोत सरूप भए जग अन्तर। सोहँ शब्द देवे साचा गुर मन्त्र। गुरसिख आत्म सदा प्रभ बसन्तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म करे सुतंतर। गुरसिख तेरी आत्म रास। साचा प्रभ वसे तेरे पास। धरे जोत प्रभ अबिनाश। सदा अडोल ना जाए विनास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे प्रभ सदा बलि बलि जास। साचा शब्द प्रभ जाए वंड। बेमुख प्रभ लाए सोहँ डण्ड। गुरसिख तेरी आत्म होए ना रंड। जामा धार निहकलंक, राजिआं राणयां तोड़े घुमंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा धारे विच ब्रह्मण्ड। वरभंडी वरभंड समाए। चार वरन प्रभ एका जोत जगाए। एका एक प्रभ एक कर, एका मार्ग लाए। निहकलंक साची चरन टेक धर, दूसर सारा भेद मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। साचा मार्ग सतिजुग लाया। प्रभ अबिनाशी

शब्द लिखाया। पहली माघ प्रभ जन्म दवाया। वीह सौ अट्ठ बिक्रमी, सतिगुर साचे माण दवाया। कलिजुग वेला अन्तिम अन्त, बेमुखां हत्थ ना आया। दर आए गुरसिख साचे सन्त, प्रभ साचा लेख लिखाया। कोई ना दीसे देव दंत, प्रभ सोहँ शब्द चलाया। सृष्ट सबाई होई भस्मंत, जोत अग्न प्रभ दे लगाया। सो जन उधरे जिन मिल्या प्रभ साचा कन्त, चल आए निहकलंक सरनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाया। सतिजुग तेरा वक्त सुहाए। सति पुरखां आत्म प्रभ जोत जगाए। आत्म शांत गुरसिख साचे, प्रभ साचा कलि कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार कराए। साचा प्रभ कलि साची शरना। अवतार नर किसे विरले गुरमुख वरना। कलिजुग जीवां अन्तकाल कलि, दुःख डाहढा भरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत चरन लाग कलि तरना। तरन तारन प्रभ समरथ। गुरसिख रक्खे दे कर हत्थ। एका शब्द प्रभ साचा देवे साची वथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ। सर्ब कला प्रभ कलि विच आए। निहकलंक कलि नाम धराए। छड्ड देह प्रभ गिरधार, जोत सरूपी जोत प्रगटाए। साचा कर आकार, कलिजुग अन्धेर प्रभ दे मिटाए। साचा शब्द वरतार, चार वरन प्रभ दे वरताए। प्रभ जाए काज संवार, प्रभ साचे दरस जो जन पाए। महाराज शेर सिँघ किरपा धार, अमृत झिरना निज दे झिराए। झिरना झिरे अमृत रस। प्रभ अबिनाशी होया

वस। साचा प्रभ सतिजुग साचा राह जाए दस्स। साध संगत पहली माघ चरन आए नस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई गुरमुखां हस्स। गुरसिख तेरी उत्तम जाति। अमृत देवे प्रभ दान बूंद स्वांती। गुरसिख साचे दरस दिखाए प्रभ सुत्तयां राती। साचा प्रभ आत्म जोत जगाए, सोहँ शब्द लगाए बाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड देवे दान प्रभ वड दाती। साचा प्रभ देवे साचा दाना। सोहँ शब्द जगत महाना। रसना जप जीव आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। साचा नाम अमृत रस पीव, साचा रस प्रभ विच देह उपजाना। कलिजुग उत्तम होए जीव, जन बख्शे प्रभ चरन ध्याना। प्रभ आत्म जोत जगाए दीप, होए प्रकाश कोट भाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा समां सुहाना। सतिजुग साचा प्रभ समां सुहाना। पहली माघ प्रभ साचा सतिजुग लाना। एक राग साचा नाद, प्रभ साची धुंन उपजाना। आदि जुगादि सदा ब्रह्माद, प्रभ एका ब्रह्म उपजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लाना। सतिजुग साचा सच वरतंत। गुरमुख विरले दिसन सन्त। दुखदायक मिटन सर्ब जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखाए, कलिजुग तेरा होए अन्त। सतिजुग आए प्रभ सरनाया। साचा वर प्रभ दर ते पाया। भुख दुःख प्रभ रोग मिटाया। आत्म सुख प्रभ साचे सतिजुग उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर निमाणयां हत्थ टिकाया। निमाणयां प्रभ माण दवाए।

राउ उमराउ विच ख़ाक मिलाए। वरन बरन प्रभ भेद मिटाए। एका शरन निहकलंक प्रभ साची लिख्त लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द चलाए। साचा शब्द भउ चुकाए। प्रभ अबिनाशी नज़री आए। विस्मादी विस्माद गुरसिख विस्माद हो जाए। साचा प्रभ सदा अनादी, अनहद साचा राग सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा सच वरताए। सच सुच्च प्रभ भरे भण्डारा। पूरन देवे ब्रह्म प्रभ नारी नारा। एका एक कराए प्रभ एका एकँकारा। साचा शब्द चलाए, प्रभ सच करे वरतारा। साची जोत प्रगटाए, निहकलंक अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा खोल्हे मोख दुआरा। सतिजुग साचे प्रभ साची सुरत रखाई। प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत, कलि साची लिख्त लिखाई। वरन बरन मिटाए इक्क कराए गोत, ऊँच नीच प्रभ भेव मिटाई। मात प्रगटाई निरँजण जोत, महाराज शेर सिँघ जोत सवाई। जोत सरूप जोत उज्जयारा। कलिजुग झूठा मिटाए पसारा। सतिजुग साचा सति वरताए विच संसारा। प्रभ एका माण रखाए, सभ नारी नारा। कोई भिक्ख मंगण ना जाए, प्रभ साचा देवे सर्ब भण्डारा। दुखिया जीव कोई दिस ना आए, सोहँ शब्द देवे अधारा। बेमुख कोई रहण ना पाए, शब्द चलाए प्रभ खण्डा दो धारा। साची निहकलंक तेरी सरनाए, महाराज शेर सिँघ नर अवतारा। साचा सिख सर्ब गुण जाणे। प्रभ साचे का साचा रंग, जोत सरूपी माणे। सो जन उधरे पार, जो चले प्रभ के भाणे। पूरन शब्द रक्खे उधार, महाराज शेर सिँघ बख्शे बाल अञ्याणे। सतिजुग तेरा सांतक रूप। एका दिसे प्रभ साचा भूप। जोत सरूपी जोत प्रभ, प्रभ साचे का साचा रूप। महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए, प्रगट जोत स्वच्छ सरूप। साचा सरूप जिस जन जाणया। पारब्रह्म परमेश्वर कलिजुग पछाणया। तन मन धन प्रभ चरन निसाणया। साचा शब्द सुण कन्न, आत्म सुख पाए महानया। आत्म उपजाई साची धुन, किरपा करे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। साचा प्रभ सदा सुखदाया। भगत जनां अन्तकाल प्रभ साचे जन्म दवाया। जोत सरूपी निहकलंक चरनी मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रक्खे लाज आप रघुराया। गुरसिख साचे प्रभ उपजाए। चरन सेव प्रभ पकड़ ल्याए। देवे वड्याई विच देवी देव, साची लिख्त प्रभ लेख लिखाए। मिल्या प्रभ अलख अभेव, प्रभ की महिंमा गणी ना जाए। साचा शब्द सोहँ रसना जपे, प्रगट जोत प्रभ आत्म दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे होए सहाए। साचे सिख प्रभ जन्म दवाया। शब्द सरूपी शब्द प्रभ, साचे आण सुहाया। झिरना झिराए विच कँवल नभ, दसवां द्वार खोल्ह दिखाया। जोत प्रगटाए मात प्रभ झब्ब, साध संगत प्रभ सच ध्याया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया। साध संगत प्रभ चरन ध्याना। प्रगटाए जोत विष्नूं भगवाना। शब्द लिखाए वरताए, उपजाए ब्रह्म ज्ञाना। होए सहाए प्रभ रघुराए,

साचा दान प्रभ झोली पाए सोहँ दाना। साध संगत तेरा संग सुहेला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना । गुरसिख तेरी आत्म धीर। अमृत चलाया साचा नीर। हँगता तोड़े प्रभ आत्म ज़ंजीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख वड्याए विच सन्त फ़कीर। माण गंवाए प्रभ फ़कीर फ़कीरा। अन्त मिटाए प्रभ शाह सुल्ताना पीरा। जोत सरूपी प्रभ जोत खिचाए मातलोक सभ नीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सतिजुग उपजाए, मुख रखाए सतिजुग साचा हीरा। आया प्रभ गवर्धन धार। सृष्ट सबाई दब्बी भार। धरत मात करे पुकार। दुखी जीव बिल्लायन कर कर हाहाकार। मायाधारी कलिजुग जीव, निरधनां करन ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग प्रगटे जोत निहकलंक अवतार। जगत मात धरत पुकारी। सृष्ट सबाई रसन विकारी। कलिजुग टुट्टा नात, मात पित सुत भैण भ्रा नर नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रक्खे लाज मुरारी। साचा प्रभ सच सुण पुकार। कलिजुग आया जामा धार। हँकारीआं प्रभ निवारे हँकार। मायाधारी करे ख्वार। निमाणयां प्रभ जाए तार। सच सुच्च करे आत्म वरतार। बेमुखां मारे प्रभ आत्म शब्द कटार। जोत प्रगटाए निहकलंक सची सरकार। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार। साचा प्रभ सची सरकार । झूठी सृष्ट झूठा पसार। एका प्रभ वड सिक्दार। राजा राणा होए बेमुहार। दिस ना आए निहकलंक तेरा उच्च दरबार। वेले अन्त प्रभ साचा करे ख्वार।
५७५ ०१ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द तेरा वरतार। मायाधारी जगत हँकारी साचा प्रभ करे ख्वारी। निमाणयां प्रभ बख्शे सची सिक्दारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई आप मुरारी । साचा प्रभ सरधन पूर। निरधन देवे प्रभ चरन धूढ़। हँकारीआं प्रभ पाए साचा जूड़। निमाणयां प्रभ आत्म बख्शे रंग मजीठी गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत बख्शे चरन धूढ़। माण मोह प्रभ जगत तजाया। वड वड वड आप वड अख्वाया। छड छड छड प्रभ छड देह जोत सरूप विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर निमाणयां हत्थ टिकाया। कलिजुग जीव होए अञ्याणे। दु:ख दलिद्री जीव कुरलाणे। सतिजुग साचे प्रभ साचे माण दवाणे। राजे राणे प्रभ दर दर भवाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऊँचों नीच कराणे। नीचां प्रभ ऊँच कराए। धन्न धन्न धन्न जन नीच, जो साचा प्रभ ध्याए। साचा प्रभ दिसे हिरदे बीच, वेले अन्त होए सहाए। हँकारीआं वेले अन्त आत्म गंढु गई पीच, देवे कौण खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर्क निवास लिखाए। निमाणयां प्रभ माण दवाणा। साचा छत्र प्रभ सीस झुलाणा। एका जोत एका गोत प्रभ वरन चार इक्क कराणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजा राणा सभ तख्तों लाहणा। साचा जामा प्रभ कलि धारया। निरधना प्रभ जन्म संवारया। साची दे वड्याई, सच दिसाए हरि के दवारया। एका शरनाए साचा प्रभ, जोत सरूप जगत

वरतारया। चार वरन होए भैणां भाई, प्रगटे जोत निहकलंक अवतारया। माता धरती साची माई, प्रभ आई चरन पुकारया। कलिजुग माया कलिजुग जीवां गई जित्त, कर्म धर्म जग दोवें हारया। महाराज शेर सिँघ कर साचा हित्त, कलंकनिह जामा घनकपुरी विच धारया। साची मात दर प्रभ आ। प्रभ अबिनाशी अग्गे मारी धाह। मायाधारी कलिजुग जीव मेरी पति रहे गंवा। पापी अपराधी दुष्ट दुराचारी, धी भैण ना कोई जाणे मां। साचा प्रभ करे ख्वारी, तेरे दर आई पकड़ीं बांह। वड दाता प्रभ तूं निरँकारी, मेरे बख्शी सर्ब गुनाह। निरँजण जोत प्रभ निरँकारी, तुध बिन दूसर कोई ना। कलिजुग जीवां करे ख्वारी, भवण जिउँ सुंञे घर कां। महाराज शेर सिँघ जोत उज्जयारी, कलिजुग आकारी दर पुकारी धरती मां। धरती माता प्रभ सुण पुकारा। निहकलंक धार ल्या अवतारा। आया प्रभ दुष्ट सँघारा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा जामा अपर अपारा। आत्म रस अमृत रसईआ। साचा प्रभ मुख चवईआ। सोहँ साचा नाम निधान दवईआ। सतिजुग साची नींह रखईआ। सुणी पुकार प्रभ साची मईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निमाणयां सिर छत्र झुलईआ। साचा अमृत मेघ बरसईआ। वरसे नीर आत्म सीर, गुर गोबिन्द रक्खे चरन रसईआ। साचा प्रभ कट्टे भीड़, प्रभ साचा अमृत वरसईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत उधारी जो जन दर आए दरसईआ। पी अमृत पूरन आत्मा। मुकाए भेत प्रभ अनात्मा। जगाए

५७६ ०१ जोत सच परमात्मा। महाराज शेर सिँघ गुरसिख देवे वड्याई ऊँचो ऊँच महात्मा। पी अमृत आत्म रस। दु:ख दर्द जीव जायण नस्स। प्रभ साचा घर आए वस। सतिजुग साचा राह प्रभ जाए दस्स। बेमुखां दिस ना आए जिउँ चन्द मरस्स। महाराज शेर सिँघ अमृत मेघ वरसाए आत्म उपजाए साचा रस। प्रभ अबिनाशी कँवल नैण। बन माला मुकट बैण। साध संगत सतिगुर तेरा साचा सज्जण साक सैण। महाराज शेर सिँघ होए सहाए, गुरसिख तेरे दिवस रैण। प्रभ साचे सच कर्म कमाया। विच मात प्रभ जोत जगाया। करोड़ तेतीस विच चरन बहाया। गण गंधर्ब बन्नृ दर ल्याया। साध संगत सतिजुग साचे प्रभ साचे माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसंगत फूलन बरखा लाया। फूलन बरखा प्रभ लगाई। सुर नर मुन जन देव चल आए सरनाई। ब्रह्मा छड्डे ब्रह्मलोक वेले अन्त दे दुहाई। ध्रू गंवाया माण सच दर सवरन बहाई। साचे सिख रखाई लाज, हार पंज प्रभ पहनाई। धुर दरगाहों मारी आवाज़, सिँघ चेत विच जोती जोत मिलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फूलन बरखा साध संगत तेरे सीस लगाई। पंचम हार प्रभ दरबारे। पंचम पंचम प्रभ पंचम मारे। जोत धर निहकलंक दुष्ट सँघारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम संग गुरसिख तेरा जन्म मरन संवारे। पंचम पंचम प्रभ पंचम चलाया। साचा फ़रमाण साचे प्रभ धुरों सुणाया। साध संगत सति हुक्म पछाण, भुल ना जाण साचा भेद प्रभ

खुल्लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम विच सद रहे समाया। पंचम पंचम पंचम, प्रभ पंचम आए। पंचम पंचम पंचम, प्रभ पंचम माण दवाए। पंचम जेठ प्रभ जामा घनकपुरी विच पाए। पंचम प्रभ जोत सरूपा पंचम विच सदा समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम तेरी लाज रखाए। पंचम हार आत्म सुगंध। साध संगत उपजाए प्रभ परमानंद। पंचम विच वसाए, प्रभ सदा चित अनन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दु:ख मिटाए बन्द बन्द। साचा प्रभ पंचम प्रकाश। पंचम हार गुरसिख तेरी रहिरास। पंचम जोत जगाए प्रभ सदा अबिनाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा रखाए वास। रक्खे वास प्रभ कृष्न मुरारा। साचा चरन धूढ़ इशनान दे, गुरसिख साचा पार उतारा। प्रभ आत्म ब्रह्म ज्ञान दे, साची जोत करे आकारा। महाराज शेर सिँघ दरस विष्नूं भगवान दे, गुरमुख साचा पार उतारा। साचा प्रभ दया कमाए। जोत सरूपी शब्द लिखाए। छल छिद्र प्रभ नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दु:ख दलिद्र सारे लाहे। टूणे जादू प्रभ जगत मुकाए। सोहँ शब्द साचा मुख रखाए। रसना जपे जीव, जिन्न भूत कोई नेड़ ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा शब्द चलाए। साचा शब्द प्रभ आप लिखवाया। बिरधां बालां भए सहाया। रसना जप जप जप जीव, आत्म दु:ख लाहया। साचा नाम आत्म पीव, आत्म तृप्ताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दु:ख दलिद्र सारा लाहया। साचे प्रभ सच फ़रमाण। सोहँ शब्द पाए साची आण। कलिजुग दु:ख गुरसिख तेरे नेड़ ना आण। किरपा करे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। मेल मेल मेल, प्रभ साचे मेल। आत्म जोत जगा बिन बाती बिन तेल। कलिजुग झूठी खेल मिटाए, अचरज करे खेल। गुरमुख साचे अन्तकाल दरस दिखाए, प्रभ साचा सज्जण सुहेल। महाराज शेर सिँघ साचा मिलाया मेल। साचा गुर सज्जण सुहेला। वेले अन्तकाल कलि पहली माघ कराए मेला। सोहँ साचा शब्द देवे गुणी गहेला। सुन्न समाध प्रभ खोल्ह वखाए अचरज खेल आप प्रभ खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धारे साध संगत तेरा साचा सज्जण सुहेला। पहली माघ रुत सुहाए। चार जुग फिर एह वक्त ना आए। सोहँ शब्द चार वरन चार कुंट दे सुणाए। इक्क कराए राउ रंक साची शब्द धुन उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बणाई बणत, पहली माघ कलिजुग उलटाए। पहली माघ तेरा मुख सुहावा। साध संगत प्रभ मिलण दा साचा दाअवा। नाम दान सच दर ते पावा। देवे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सोहँ रसना गावा। साचा प्रभ भरे भण्डार। साचा आत्म देवे जोत अधार। साचा प्रभ सर्ब जनां दी पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां जाए तार। साचा प्रभ साचे कर्मा। साचा प्रभ साचे धर्मा। साचे प्रभ जोत मिटाई ब्रह्मा। साचे प्रभ सोहँ शब्द बेमुखां आत्म लाया बरमा। साचे

प्रभ जोत प्रगटाई पहली माघ सतिजुग साचा जरमा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच लेख लिखावे करमा। साचे प्रभ पहली माघ भउ चुकाया। साचा शब्द ज्ञान, साध संगत वरताया। साचा हुक्म साचा फ़रमाण, साचे प्रभ सुणाया। गुरसिक्खां प्रभ आवण जाण, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा समां सुहाया। साचा प्रभ वक्त सुहाए। पहली माघ प्रगट जोत भरम भुलेखे सारे लाहे। साचा शब्द धुंन उपजावे राग, अनहद साचा राग सुणाए। गुरसिख सोए जायण जाग, साचा प्रभ दया कमाए। साध संगत प्रभ चरन आए भाग, साचा दिवस पहली माघ प्रभ लिखावे। पहली माघ प्रभ भए दयाला। भगतन होवे आप रखवाला। पारब्रह्म सदा प्रितपाला। आदि जुगादि सति सति सति वरभंड सदा रखवाला। अनाद विस्माद गुरसिख साची जोत जगावण वाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे शब्द सुखाला। सतिजुग तेरा होए प्रकाश। कलिजुग अन्धेर जाए विनास। एका जोत जगे अबिनाश। साध संगत प्रभ रक्खे वास। जन भगतां होवे दासन दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सद बल जास। गुरसिख साचे प्रभ बलिहार। बाहों पकड़ प्रभ देवे तार। जन्म ना पावे दूजी वार। जोती जोत मिलाए, प्रभ भगतन प्रितपाल। कलिजुग साची कलि वरतावे, वेखे सर्ब संसार। पहली माघ प्रभ आपणा आप प्रगटावे, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकार। जो जन रसना प्रभ अबिनाशी गावे, देवे दरस प्रभ गिरधार। प्रगट होवे वासी घनकपुर, आत्म देवे जोत अधार। चार कुन्ट कराए प्रभ चरन दासी, शब्द मार प्रभ मारे मार। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे, निहकलंक अवतार। साचा प्रभ सद निरँकारी। साचा प्रभ सद निराहारी। साचा प्रभ वड वड दरबारी। साचा प्रभ आदि जुगादि दर आया जाए पैज संवारी। अन्तकाल कलिजुग धरत मात आए चरन प्रभ पुकारी। कलिजुग जीव होए दुष्ट दुराचार राउ रंकां करे ख्वारी। सुध बुध कलिजुग जीवां गई मारी। कलिजुग जीव होए वड हँकारी। देवीआं कन्यां होण ख्वार, मदिरा मास करन आहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटे जोत रक्खे लाज आप मुरारी। साध संगत सति सति वरतावे। साचा प्रभ सिर रक्खे हाथ, सर्ब थांए होए सहाए। साचा प्रभ सद अबिनाश, कलिजुग जीव भेव ना पाए। महाराज शेर सिँघ त्रैलोकी नाथ, साची गाथ चार जुग चलाए। साचा शब्द प्रभ सच लिखाउणा। पहली माघ प्रभ भाग लगाउणा। साचा शब्द साध संगत प्रभ झोली पाउणा। एका धुन प्रभ आत्म उपजाउणा। गुरमुखां जाए आत्म साध, पहली माघ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाउणा। पहली माघ प्रभ भेव खुल्हा। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ दए हला। ब्रह्मा विष्न महेष दर खड़े सीस निवा। करोड़ तेतीस प्रभ साचे लए बुला। महाराज शेर सिँघ साचा शब्द ल्या लिखा। आयन चल सर्ब द्वार। सतिगुर साचा सच लाए दरबार। निमाणयां देवे प्रभ माण, हँकारीआं जाए

हँकार निवार। महाराज शेर सिँघ साची जोत करे आकार। साचे प्रभ सच वरताया। सति सति सति शब्द सुणाया। सतिजुग साचे पहली माघ जन्म दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। पहली माघ पुरब मना। लिख्त लिखाए प्रगटाए सोहँ शब्द साचा नां। राउ रंक प्रभ टुम्ब उठाए, साचा प्रभ दीसे ना। साध संगत प्रभ दरस दिखाए, जस रसना ल्या गा। साचा प्रभ सदा बख्शिंद। चरनी आवे सुरप्त राजा इन्द। प्रभ पकड़ उठावे वाली हिन्द। वड जोधा जोत सरूप प्रभ वड मृगिन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड गुणी गहिंद। गुणवन्त प्रभ वड दातार। साची जोत करे आकार। एका शब्द वरतावे विच संसार। रसन चलाए लिखाए शब्द अपार। सच सुच्च वरताए, पहली माघ जो आए चल दरबार। हउमे रोग गंवाए, आत्म करे उज्जयार। प्रभ झूठा मोह गंवाए, साचा बख्शे चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग आया जामा धार। पहली माघ भाग मथंन। साचा शब्द साध संगत सुणावे कन्न। सोहँ शब्द राणयां लावे डन्न। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरा बेड़ा जाए बन्नृ। सच दरबार प्रभ साचे लावणा। पारब्रह्म परमेश्वर प्रभ एका नाउँ रखावणा। चार वरन सतिजुग साचे प्रभ इक्क करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सारा लाहवणा। भरम निवारे प्रभ पहली माघ। सतिजुग शब्द लिखावे, प्रभ साचा राग। आत्म मैल गंवाए, मातलोक ना लागे दाग़। साध संगत प्रभ साचा दान झोली पाए, सोए भाग कलि गए जाग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरी पकड़े वाग। साचा प्रभ अलख अलेखा। जोत सरूपी किया भुलेखा। कलिजुग विरले गुरमुख देखा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी मुकाए लेखा। साचा प्रभ पुरख बिधाता। साचा प्रभ जगत पित दाता। साचा प्रभ साध संगत दिसावे चरनी नाता। साचा प्रभ गुरसिख तेरा पित माता। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि विरले गुरमुख जाता। साचा प्रभ वड सूरन सूरा। साचा प्रभ सर्ब कला भरपूरा। साचा प्रभ जोत निरँजण एका नूरा। साचा प्रभ साध संगत आत्म दुःख गंवाए वसूरा। महाराज शेर सिँघ साचा गुर सूरा। साचा प्रभ प्रगटे वड पीरन पीर। साचा प्रभ कलिजुग लाहे तेरा जंजीर। साचा प्रभ जोत खिचाए, अठसठ नीर। साचा प्रभ जोत प्रगटाए, कलिजुग जीव ना बन्नृण धीर। साचा प्रभ गुरसिख साचे चरन लगाए, दे दरस शांत करे सरीर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द चलाए तीर। एका शब्द एका आकार। एक जोत प्रगटाए प्रभ निरँकार। साचा प्रभ पहली माघ साध संगत तेरे भरे भण्डार। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, सच दिखावे हरि का द्वार। गुरसिख पावे जिस चरन प्यारा। साचा प्रभ देवे दरस जोत सरूप निराधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारा। प्रभ का अन्त जीव ना जाणे। साचा प्रभ भेख वटाणे। एका जोत उपजावे गुणी

निधाने। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, मातलोक सद आवण जाणे। आवण जाण प्रभ का खेल। जन भगतां मेल मिलाए, आत्म जोत जगाए बिन बाती तेल। बेमुख प्रभ खपाए, बेड़ा शौह दरयाए ठेल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी मिलाए मेल। जोत सरूप प्रभ मेल मिलाया। पूरब लहणा प्रभ विच मात दवाया। साचा लेखा आण चुकाया। भगत भगवान प्रभ साचे मेल मिलाया। चरन धूढ़ साचा इशनान, गुरसंगत प्रभ कराया। दर आए दिया माण, सचखण्ड निवास दवाया। प्रभ बिठाए विच बबाण, गुरसिक्खां सिर हत्थ टिकाया। साचा दर गुरसिख विरले पाण, निहकलंक जिस तेरी सरनाया। प्रभ चुकाया आवण जाण, विच जोती मेल मिलाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ आपणा भेव खुल्हाया। जोत सरूपी साचा खेल रचाए। शब्द सरूप प्रभ वाली हिन्द उठाए। दरस दिखाए आप प्रभ, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ एका रंग वसाए। एका दिसे स्वच्छ सरूप, प्रभ आपणा भेद खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणा जोत सरूपी दरस दिखाए। साचे प्रभ आपणा भेव चुकाया। आपणी जोत कलिजुग लए प्रगटाया। कलिजुग अन्तिम अन्तकाल कलिजुग जीवां दे कराया। बेमुखां भस्मंत कर, अग्न जोत अन्त प्रभ दे लगाया । महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द लिखाया। शब्द रूप प्रभ दिस ना आए। शब्द रूप शब्द मार प्रभ कराए। शब्द रूप निहकलंक, कलिजुग तेरा मूल गंवाए। शब्द रूप वजाए साचा डंक, चार कुन्ट प्रभ दे सुणाए। शब्द रूप प्रभ लिखाए एका अंक, दूसर कोई रहण ना पाए। शब्द रूप प्रभ इक्क कराए राउ रंक, ऊँच नीच दा भेव चुकाए। शब्द रूप प्रभ होए वासी पुरी घनक, प्रभ आपणा आप छुपाए। शब्द रूप प्रभ सुहाए थान बंक, साची जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां दरस दिखाए। साचा दरस प्रभ सच दिखाउणा। गुरसिख तेरा तीजा नैण खुल्हाउणा। जोत सरूपी साचा दीपक विच तेरी देह जगाउणा । सोहँ साचा जाप तेरी रसन पवन चलाउणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साचा भेद पहली माघ खुल्हाउणा। सोहँ चले स्वासन स्वास। जाणे विरला जाप विच वास। साचा प्रभ सच थाएँ रक्खे वास। साची जोत सच धाम करे प्रकाश। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप सदा अबिनाश। जोत सरूप प्रभ जगत उधारे। अन्तकाल कलि प्रभ धरे जोत निरँकारे। साध संगत रक्खे लाज आप मुरारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिक्खां भरे भण्डारे। सच भण्डार प्रभ वरता। आत्म भुख गुरसिख गंवा। सोहँ शब्द गुरसिख आत्म वसा। गुरचरन प्रीती साचा थां। बेमुख जीव जाण, जिउँ सुंञे घर कां। प्रभ साचा साध संगत तेरी पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, होए सहाई सभनी थां। सोहँ शब्द सच वरतार । हउमे रोग विच्चों जाए मार। निहकलंक अवतार नर ना कदे वसार। महाराज शेर सिँघ कर

जाए बेड़ा पार। पार उतारनहार प्रभ पार उतारया। अनहद शब्द देवे ज्ञान प्रभ साचा भरे भण्डारया। पहली माघ प्रभ सुख उपजावे विच झूठे देह मुनारया। साध संगत प्रभ साचा सच वरता रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार लँघा रिहा। गुरसिक्खां देवे प्रभ मोख दुआरा। कलिजुग धरया प्रभ सच अवतारा। सोहँ शब्द चलाया अपर अपारा। कलिजुग झूठा मिटाया सर्ब पसारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिक्खां दिखावे सच दुआरा। सच द्वार द्वारका नाथ। जगे जोत प्रभ रघुनाथ। गुरसिक्खां प्रभ रक्खे दे कर हाथ। साचे लेख लिखाए विच माथ। सोहँ शब्द सति चलाए साची गाथ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग प्रगटे त्रैलोकी नाथ। सतिजुग तेरा साचा कर्मा। साचा प्रभ सच राखे धर्मा। गुरसिख दवाए माण, माण गंवाए ब्रह्मा। अन्तकाल विच जोत मिलाए वेले अन्त ना होए मरना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर दरस साध संगत कलि तरना। तारनहार आप प्रभ तारे। गुरसिक्खां प्रभ काज संवारे। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, पहली माघ चल आयण गुरचरन दुआरे। साचा प्रभ पावे भिख, जगे जोत विच झूठे देह मुनारे। साचे लेख जाए प्रभ लिख, गुरसिख प्रगटे विच संसारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर किरपा पार उतारे। पार उतारनहार प्रभ पूरन आसा। साध संगत पहली माघ, सच देवे भरवासा। गुरमुख साचे जाग, प्रभ साचे किया वासा। प्रभ चरन गए लाग, वेले अन्त करे बन्द खुलासा। बन्द खुलासा प्रभ बन्दी तोड़। गुरमुख साचे प्रभ चरन प्रीती लोड़। जामा धार निहकलंक, वेले अन्त चरन लए जोड़। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रभ साचे दी साची लोड़। साचा प्रभ सच घर वस्सया। पहली माघ प्रगट जोत सच घर दस्सया। गुरमुख जोत आत्म कोट रवि सस्सया। बेमुख आत्म अन्ध अंध्यार, जिउँ चन्द मस्सया। सोहँ शब्द अपार, पहली माघ भेव प्रभ साचे दस्सया। साचा प्रभ सदा अभेद। गुण ना जाणे ना वखाणे चारे वेद। प्रभ अबिनाशी सदा अछेद। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पहली माघ खुल्हाए भेद। निहकलंक कलिजुग आए। आपणा भेव सर्ब खुल्हाए। भुल्लयां प्रभ मार्ग पाए। साचा शब्द प्रभ ज्ञान दवाए। सच सुच्च विच संसार वरताए। एका प्रभ माण दवाए। राणयां प्रभ भिक्ख मंगाए। जामा धार घनकपुर, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाए। राणे होण दर भिखारी। रंक सोहण प्रभ चरन दुआरी। साचा प्रभ भरे भण्डार, सोहँ देवे शब्द भण्डारी। मानस जन्म ना आवे हार, पहली माघ जो जन आए प्रभ चरन दुआरी। साध संगत तारनहार, निहकलंक जोत निरँकारी। वेले अन्त सतिगुर साचा, साध संगत जाए पैज संवारी। गुरसिख देवे प्रभ पूरब लहणा। प्रभ अबिनाशी सोहँ देवे आत्म गहणा। जोत सरूपी प्रगट जोत, दरस दिखावे तीजे नैणां। बेमुख कलिजुग जीव वहिण झूठे वहिणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत देवे साचा लहणा। गुरसिख

५८१
०१

गुर दर आ। वड वड्याई गुर दर पा। जोत सरूपी निहकलंक आत्म जोत जगा। आत्म मिटे शंक प्रभ दर्शन पा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां ल्या ध्या। सति पुरखा आत्म ध्यान धर। साचा बूज्झया तेरा दर। सोहँ साचा शब्द देवे साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसावे साचा घर। साचा वर साचा घर, गुरसिख मंगया। अवतार धर प्रभ गुरसिख आत्म रंग्गया। निहकलंक वर साचा पाया गुरसिख मूंहों मंगया। पहली माघ तेरा दरस कर, गुरसिख कलिजुग पार लंघिआ। पहली माघ तेरा साचा रूप। दरस दिखावे प्रभ अनूप। शब्द लिखाए प्रभ सति सरूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ साचा भूप। कलिजुग आया प्रभ भेख धर। जोत सरूपी वेस कर। निहकलंक अवतार नर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत दिसावे साचा घर। साची जोत मात आकार। होए प्रकाश विच संसार। बेमुखां होए अन्ध अंध्यार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप जगत वरतार। सृष्ट सबाई होई दुखदाई। निर्धनां होए ना कोए सहाई। प्रभ साचे मात दया कमाई। साची जोत कलि प्रगटाई। निमाणयां सिर छत्र झुलाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत करे रुशनाई। साचा प्रभ सच्चा दरबारे। जोत सरूप सदा निरहारे। निर्धनां प्रभ आस पुजारे। बेमुख कलिजुग जीव अन्तकाल कलि करे ख्वारे। साध संगत प्रभ पैज संवारे। प्रगट जोत दुतर तारे। साचा बख्शे चरन प्यारे। महाराज शेर सिँघ कलिजुग आया जामा धारे। बेमुखां आत्म काम क्रोध हँकार रखाया। गुरमुख साचे प्रगट जोत प्रभ दरस दिखाया। साचे प्रभ पहली माघ साचा मार्ग लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ भण्डार वरताया। वड दाता प्रभ वड भण्डारी। वड दाता प्रभ वड संसारी। वड दाता प्रभ जोत निरँकारी। वड दाता प्रभ सदा निरहारी। वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। वड दाता गुण भरपूर। वड दाता सर्ब बख्शे चरन धूढ़। वड दाता आत्म देवे सोहँ सति सरूर। वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए सर्ब कला भरपूर। वड दाता प्रभ गुणी निधाना। वड दाता प्रभ चतुर सुजाना। वड दाता प्रभ पूरन भगवाना। वड दाता प्रभ महाराज शेर सिँघ साध संगत बख्शे आत्म ब्रह्म ज्ञाना। वड दाता प्रभ बलवन्त। वड दाता प्रभ साचा भगवन्त। वड दाता प्रभ दरस दिखाए, गुरमुख विरले सन्त। वड दाता प्रभ जोत जगाए, लक्ख चुरासी विच जीव जन्त। वड दाता प्रभ बेमुखां दिस ना आए, जिस बणाई बणत। वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर मिल्या साचा कन्त। साचा प्रभ पूरन भरवासा। साचा प्रभ सर्ब घट वासा। साचा प्रभ चरन प्रीती साध संगत तेरी रहिरासा। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दासन दासा। वड दाता बली बलवान। वड दाता चतुर सुजान। वड दाता ब्रह्म ज्ञानीआं देवे ब्रह्म ज्ञान।

वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा दान। वड दाता प्रभ गहर गम्भीर। वड दाता दे दरस शांत करे सरीर। वड दाता निहकलंक जोत सरूप झिरना झिराए अमृत आत्म नीर। वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत देवे साची धीर। वड दाता प्रभ धीर धराए। वड दाता सोहँ साचा शब्द चलाए। वड दाता प्रभ एका नाम चार वरन रखाए। वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट जै जै जैकार कराए। वड दाता प्रभ गुर गोबिन्द। चरन ल्यावे प्रभ सुरप्त राजा इन्द। वड दाता प्रभ प्रगट जोत दरस दिखावे वाली हिन्द । वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख दर आयण कर जायण निंद। वड दाता प्रभ वड भूपा। वड दाता प्रभ जोत सरूपा। वड दाता प्रभ प्रगटे जोत निहकलंक दिस ना आए रंग रूपा। वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सति सरूपा। वड दाता वड्डी वड्याई। वड दाता साची जोत विच मात पताल अकाश टिकाई। वड दाता प्रभ आप, आप आपणा नाउँ रखाई। वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट जै जै जैकार कराई। वड दाता प्रभ जगत पित जगदीस। वड दाता प्रभ भेत चुकाए बीस इकीस। वड दाता प्रभ बेमुखां कलि जाए पीस। वड दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां ना दीस। एका जोत प्रभ निरंकारया। सच घर वसे प्रभ गिरधारया। जगे जोत प्रभ अगम्म अपारया। मात पाताल आकाश तीन लोक होए आकारया। अचरज खेल जोत सरूप, माया रूपी जगत पसारया। जोत सरूप पारब्रह्म, जीव जन्त विच समा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख वटा रिहा। जोत सरूपी प्रभ का भेख। जुगो जुग गुरमुख विरले लैंदे देख। धन्न धन्न धन्न गुरसिख साचा, प्रभ नेत्र तीजे ल्या देख। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां लिखावे साचे लेख। भगत जनां प्रभ लेख लिखाए अपारे। बावन रूप धार जाए बल दुआरे। जोत निरँजण जोत सरूप सदा सदा भेख धारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आदि जुगादि जगत अवतारे। बावन भेख धर प्रभ राजा बल तारया। जोत सरूप भेख धर, चार वेद रसन उचारया। बोध अगाध अगाध बोध, प्रभ साचा शब्द लिखा रिहा। भगत जनां प्रभ आत्म सोध, आत्म धुन उपजा रिहा। अन्तकाल राखे विच गोद, सचखण्ड निवास दवा रिहा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा भेद जगत खुल्हा रिहा। साचा प्रभ भेख धर। प्रहलाद उधारा नरायण नर । दुष्ट सँघार ना लाए पल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत प्रगटाए कलि। जोत सरूप जगत उधारया। जोत सरूपी जोत धर, ध्रू बालक पार उतारया। भगत जन प्रभ सदा समाए, रक्खे लाज आप मुरारया । महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जामा घनकपुरी विच धारया। साचा प्रभ जोत जगाए। मातलोक सद आवण जाए। जुगा जुगन्तर प्रभ साची खेल रचाए।

५८३
०१

अन्तकाल कलि भस्मंत, प्रभ साची जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा भेद खुल्हाए। साचा प्रभ रघुपत रघुनाथ। साचा प्रभ सर्ब के साथ। साचा प्रभ जुगो जुग प्रगट चलावे साची गाथ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अनाथां सिर रक्खे हाथ। साचा प्रभ जोत आकारी। त्रेते भयो राम अवतारी। दुष्टां करे प्रभ ख्वारी। अन्त खपाए दुष्ट दुराचारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आदि जुगादि एका जोत निरँकारी। मातलोक प्रभ राम अखवईआ। हँकारी रावण प्रभ डोबी नईआ। निर्धन भीलणी प्रभ साची जोत जगईआ। सती अहल्या चरन छुहाए प्रभ जोती जोत मिलईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेद पहली माघ कलि खुल्हईआ। राम रूप रूप राम राम प्रभ धारया। रिग वेद प्रभ पार उतारया। वड देवी देव तोड़े वड हंकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी भेद खुल्हा रिहा। राम रूप प्रभ रंग राता। जुगो जुग प्रभ भगतां नाम देवे साची दाता। जोत सरूपी भेख धर आप बणे पित माता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग चरन प्रीती बख्शे साचा नाता। साचा प्रभ रमईआ राम। प्रभ साचे का साचा काम। भगत उधारे देवे साचा नाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, द्वापर प्रगटयो घनईआ शाम। द्वापर प्रगटे प्रभ कँवल नैणां। सुंदर कुण्डल मुकट बैणां। जन भगतां देवे दरस दिवस रैणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत देवे साचा लहणा। द्वापर भए प्रभ कृष्न मुरारी। रिखी केश गवर्धन धारी। बेमुखां आत्म करे हँकारी। जन भगतां आत्म करे उज्जयारी। देवे दरस जोत सरूप प्रभ कृष्न मुरारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, मातलोक सदा भेख धारी। शाम रूप मात प्रभ आया। अन्तिम जुग आण कराया। महासार्थी जगत पित अख्वाया। जन भगतां आत्म ब्रह्म ज्ञान दे, गीता ज्ञान प्रभ शब्द लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सांवल सुंदर रूप वटाया। एका शब्द उपजाए धुन। खोल्ह वखाए प्रभ आत्म सुन्न। साचे प्रभ जाणे तेरे गुण कवण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप विच समीपत सर्ब पवण। यजुर वेद प्रभ पार उतारे। सृष्ट सबाई करे ख्वारे। सर्ब कला समरथ स्वामी आपणी कल वरतारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जुगो जुग शब्द लिखारे। निमाणयां प्रभ माण दवा। हँकारीआं जाए हँकार गंवा। दुर्योधन महिल प्रभ जाए तजा। घर बिदर जाए भोग लवा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां पकड़े बांह। मिटया द्वापर भया अन्धेरा। मातलोक कलि पाया फेरा। ऐड़ा अथर्बण वेद रैण वसेरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेले अन्त करे निबेड़ा। वेद अथर्बण ऐड़ा आया। अल्ला अलाहू नूर उपजाया। ईसा मूसा मुहम्मदी प्रभ साचे मात उपजाया। पीर पैग़ंबर औलीए प्रभ झूठी खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां भरम भुलेखा पाया। अल्ला अल्ला नूर उपा के। कलिजुग पापी जीव उपा के। मदिरा मास

रसना आहार करा के। दुष्ट दुराचार प्रभ जाए लेख लिखा के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग भेख जाए मिटा के। एका नूर अल्ला उपाया। पतिपरमेश्वर सर्ब भुलाया। आत्म पर्दा प्रभ साचे पाया। वड्डे वड मलेश प्रभ नाउँ रखाया। अन्तकाल कलि प्रगट जोत, प्रभ सच करे सफ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाया। साचा प्रभ सच शब्द लिखाए। ईसा मूसा मुहम्मदी कोई रहण ना पाए। कुरान अञ्जील अञ्जील कुरान, प्रभ सारी खेल मिटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शब्द लिखाए। झूठा खेल प्रभ मिटाए। दीन मुहम्मदी रहण ना पाए। चार यारां प्रभ खेल मिटाए। पंचम विच प्रभ रिहा समाए। अथर्बण वेद प्रभ दए खपाए। सोहँ साचा शब्द प्रभ जगत चलाए। प्रगट जोत निहकलंक, सतिजुग तेरी नींह रखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शब्द सरूपी भेद खुल्हाए। ऐड़ा अथर्बण वेद कलि गया। जोत सरूपी जगत प्रभ भया। निहकलंक अवतार लोकमात कीनी दया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भाणा सभ ने सहया। अन्तकाल प्रभ कलि करावणा। दुःख भुक्ख प्रभ रोग मिटावणा। जगत भेख प्रभ नष्ट करावणा। सोहँ साचा शब्द प्रभ चार वरन चलावणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप शब्द सरूपी भेद खुल्हावणा। साचा प्रभ कलि जोत प्रगटाए। चार कुन्ट पै जाए दुहाए। तीन लोक होए रुशनाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, तीन लोक रिहा वरताए। गुरमुखां

५८५ ०१ प्रभ भरे भण्डारा। बेमुखां प्रभ करे ख्वारा। गुरमुखां प्रभ तारनहारा। बेमुखां प्रभ देवे नर्क मँझारा। गुरमुखां प्रभ बख्शे चरन ५८५ ०१

दुआरा। बेमुखां हउमे रोग लगाए भारा। गुरमुखां आत्म जोत करे उज्जयारा। बेमुखां आत्म होए अन्ध अन्धयारा। गुरमुखां सूझे निहकलंक तेरा सच दरबारा। बेमुखां सोहँ शब्द बाण प्रभ मारा। गुरमुखां देवे दरस कर निगम विचारा। बेमुखां नाउँ लिखाए विच दुष्ट दुराचारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण नर जगत अवतारया। पारब्रह्म जगत आकारया। जोत सरूपी भेख घनकपुरी विच धारया। आप अपरम्पर प्रभ सृष्ट सबाई विच समा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेद खुल्हा रिहा। साचे प्रभ कलि जामा धार। घनकपुरी ल्या अवतार। जोत जगाई अपर अपार। होए सुंञ मसाण विच संसार। विरला गुरमुख पाए प्रभ साचे की सार। एका जोत होए प्रकाश, सन्त मनी सिँघ पाए सार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पारब्रह्म पूरन अवतार। घनकपुरी प्रभ जामा धरया। कर दरस सन्त मनी सिँघ तरया। साचा प्रभ सन्त साचे वरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच धरया। साचा प्रभ जामा धारे। कलंकनिह नरायण नर अवतारे। सुरत शब्द प्रभ साचा मेल मिलारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सन्त मनी सिँघ पार उतारे। सन्त मनी सिँघ प्रभ दया कमाए। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाए। आत्म सुन्न प्रभ खोल्ह वखाए। साची धुन प्रभ

उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, द्वार दस्म खोल्ह वखाए। द्वार दस्म प्रभ खुल्हाया। प्रगट जोत निहकलंक विच मात दरस दिखाया। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ एका राग उपाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, जोत सरूपी भेद खुल्हाया। सन्त मनी सिँघ प्रभ दया कमाई। साची दात प्रभ झोली पाई। वड करामात प्रभ कलम फड़ाई। सृष्ट सबाई लेख लिखाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप आपणा भेद खुल्हाई। साचा शब्द प्रभ उपजाया। साचा राग सन्त सुणाया। अनहद साची धुन उपजाया। दिवस रैण प्रभ शब्द लिखाया। कलिजुग जीवां भरम भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेद खुल्हाया। सन्त मनी सिँघ कलम चलाए। साचा प्रभ शब्द उपजाए। सृष्ट सबाई लेख लिखाए। कलिजुग तेरा अन्त कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक सिर हत्थ टिकाए। साचा प्रभ शब्द चलंत। लिखाए लेख भगत भगवन्त। प्रभ की महिंमा बड़ी बेअन्त। कलिजुग भुलाए सर्ब जीव जन्त। भेद खुल्हाए किसे विरले साध सन्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग माया पाई बेअन्त। साचा प्रभ शब्द लिखाए। राणयां महाराणयां हुक्म सुणाए। धार खेल चतुर्भुज विच मात दे आए। निहकलंक अवतार नर, कृष्न सांवला जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप आपणा भेद खुल्हाए। साचा शब्द प्रभ सति लिखाया। सति सति सति विच मात कलम चलाया। सन्त मनी सिँघ, प्रभ साचा माण दुआया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेद खुल्हाया। मनी सिँघ प्रभ शब्द जणाए। साचा भाणा कलि वरताए। कलिजुग जीवां प्रभ दए भुलाए। उन्नीं सौ बवन्जा बिक्रमी प्रभ कर्म कराए। शब्द सरूपी खेल वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर अमृत चरन टिकाए। साचे प्रभ शब्द उपजाया। सन्त मनी सिँघ हुक्म सुणाया। साचा शब्द अन्तकाल प्रभ सति वरताया। साचे घर चल प्रभ साचा आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंजी साहिब चरन टिकाया। साचा प्रभ सच घर आ के। साचे धाम चरन टिका के । साचा बचन गुर अर्जन सति करा के। दुष्ट दुराचार प्रभ गया माया पा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे जगत भुला के। सर अमृत दे उठे पुजारी। बेमुख कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारी। कलिजुग जीव आत्म होई हँकारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सभना करे ख्वारी। उठे पुजारी दुष्ट दुराचार। सन्त मनी सिँघ मारी मार। शब्द लिखाया प्रभ अपार। अन्तकाल कलिजुग मेट दए दर दरबार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब कल वरतार। साचे प्रभ सच शब्द लिखाया। सर अमृत प्रभ थेह कराया। लिक्खया लेख ना किसे मिटाया। वेले अन्तकाल कलिजुग प्रभ साचे पूर कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धार आपणा भेद खुल्हाया। साचे प्रभ सच कर्म कमा। पुरी अनन्द ल्या चरन टिका। साचे सन्त पल्ला दिया फिरा। महाराज

ਪ੮੭ ੦੧

शेर सिँघ निहकलंक अवतार, बेमुखां जाए भेद खुल्ला। अनन्दपुर प्रभ चरन टिकाया। साचा प्रभ साचे धाम भाग लगाया। बेमुख जीवां साचा प्रभ दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणा भेद खुल्लाया। सन्त मनी सिँघ शब्द सुणाए। प्रभ अबिनाशी विच मात दे आए। साध संगत प्रभ आ सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां फिर दिस ना आए। साचे सन्त पल्ला फिराया। निहकलंक कलि विच आया। घनकपुरी विच जामा पाया। महाराज शेर सिँघ नाउँ धराया। आपणा आप प्रभ छुपाया। कलिजुग जीवां भरम भुलाया। बेमुख जीवां मदिरा मास आहार बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद छुपाया। साचे सन्त करी पुकार । कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतार। जोत सरूप प्रभ करे आकार। कलिजुग जीवां अन्तकाल कलि आए हार। सोहँ शब्द प्रभ मारे साची मार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचे जाए तार। सन्त मनी सिँघ शब्द अलाया। राउ रंकां सर्ब सुणाया। नाथ त्रैलोकी विच मात दे आया। जामा धार निहकलंक, प्रभ आपणा भेद चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां भरम भुलाया। सन्त मनी सिँघ कर्म कमाया। साचा शब्द प्रभ साचे उपजाया। नील बस्त्र प्रभ चोगा पाया। अमाम मैहदी जग नाउँ धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अवस्था खेल रचाया। बाल अवस्था प्रभ खेल खिलाए। साची शब्द धुन सन्त उपजाए। साचा राग प्रभ दे सुणाए। साची कलम प्रभ हत्थ फड़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेद रिहा छुपाए। आपणा आप प्रभ जगत छुपाया। कलिजुग जीवां प्रभ भरम भुलाया। गुरमुख विरले प्रगट जोत प्रभ दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा आप जणाया। राणयां महाराणयां प्रभ हुक्म लिखाया। साचे प्रभ सच शब्द उपजाया। सन्त मनी सिँघ हुक्म कमाया। लिख लिख विच दरबार पुचाया। प्रगट जोत निहकलंक विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख लिख लेख दर खुल्लाया। साचे प्रभ जोत प्रगटाई। सन्त मनी सिँघ लिख्त लिखाई। राणे महाराणे चल आओ सरनाई। बेमुख होए ना जाओ पति गुआई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची प्रभ सरनाई। साचा प्रभ एह शब्द लिखाए। तिन्न तिन्न लेख विच दरबार पुचाए। कलिजुग जीव झूठे भरम भुलाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, झूठे ठूठे भन्न वखाए। साचे प्रभ सच शब्द लिखाए। वेले अन्तकाल प्रभ कलिजुग दे सजाए। राणे महाराणे प्रभ साचे तख्तों लाहे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच्च शब्द वरताए। सन्त मनी सिँघ लिक्खया फ़रमाण। बेमुखां आत्म लाया बाण। राणयां महाराणयां प्रभ अबिनाशी ना किसे करी पछाण। जोत सरूप निहकलंक सर्ब घट जाणी जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेले अन्त गंवाए माण। साचे प्रभ सति शब्द लिखाया । राउ रंकां इक्क कराया। ऊँच नीच प्रभ भेख

ਪ੮੭ ੦੧

मिटाया। चार वरन प्रभ इक्क थां बहाया। सोहँ साचा नाउँ प्रभ जगत धराया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, कलिजुग भेख वटाया। कलिजुग प्रभ खेल मिटाए। राणे बाणे कोई रहण ना पाए। वेद चार प्रभ माण गंवाए। ऐड़ा अथर्बण अन्तकाल प्रभ दे खपाए। अठसठ तीर्थ कोई रहण ना पाए। निहकलंक प्रगट जोत, सर्ब माण गंवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जामा मातलोक विच पाए। गंगा तेरा गया नीर। वेले अन्तकाल कलिजुग तेरी होई अख़ीर। खिच्चे जोत प्रभ साचा, जिहड़ी कट्टे ज़ंजीर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी खिच्चे सीर। गोदआवरी प्रभ गोद सुलाए। साची जोत प्रभ विच जोत मिलाए। वेले अन्तकाल कलि, प्रभ अख़ीर कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लिखाए। वेद पुरानां प्रभ वक्त चुकाया। कलिजुग वेला अन्त कराया। कलिजुग जामा धार निहकलंक, प्रभ साचा शब्द चलाया। इक्क कराया राउ रंक, सोहँ डंक वजाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब थांईं रिहा समाया। साचे प्रभ सति वरतावणा। कूट चार सोहँ साचा नाउँ धरावणा। जोत सरूपी साचा शब्द विच चलाए पवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण जाणे तेरे कवणा। सच शब्द प्रभ जगत चलाए। कलिजुग झूठी खेल मिटाए। साचा धाम प्रभ उपजाए। प्रगट जोत निहकलंक दरस दिखाए। जोत सरूप प्रभ मात विच आया। मात पताल आकाश होए रुशनाया। नैण मुँधारी साचा प्रभ, बाशक सेज तजाया। जोत आकारी साचा प्रभ, विच अकाश समाया। निहकलंक अवतारी प्रभ, विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क शब्द लिखाया। साची जोत प्रभ निरँकारे। मातलोक करे उज्जयारे। ब्रह्मा विष्न महेष प्रभ खड़े दुआरे। सुरप्त राजा इन्द प्रभ चरन निमस्कारे। साचा प्रभ साचा दर दरबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एकँकारे। एका प्रभ एकँकारा । सोहँ शब्द देवे सच भण्डारा। प्रभ साचे का सच वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी किया आकारा। जोत सरूप प्रभ आकारया। कलिजुग दुष्ट प्रभ पार उतारया। माण गंवाए प्रभ वड हंकारया। सोहँ साचा बाण, प्रभ साचे मारया। कुन्ट चार हो जाए हाहाकारया। दुष्ट दुराचार प्रभ साचे दर दुरकारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जामा मातलोक विच धारया। मातलोक प्रभ जामा धारे। गण गंधर्ब प्रभ चरन दुआरे। प्रभ अबिनाशी चरन बलिहारे। साध संगत सोहे चरन दुआरे। धरे जोत विच आप निरँकारे। साचा प्रभ भरे भण्डारे। सोहँ शब्द ज्ञान दे, प्रभ आत्म करे उज्जयारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर किरपा पार उतारे। दे दरस प्रभ पार उतारया । निहकलंक कलि जामा धारया। वड वड प्रभ आप विच संसारया। कलिजुग बेमुख जीवां मानस जन्म कलि हारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड तेरा सच दुआरया। सचखण्ड प्रभ मात बणाया। प्रगट जोत प्रभ सिँघ आसण डेरा लाया। मुकंद मनोहर

प्रभ साचा नज़री आया। बेमुखां प्रभ विच संसार, आत्म अन्ध अन्धेर रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग सच दरबार लगाया। सच प्रभ सच दरबारा। निहकलंक कलि भए अवतारा। दुष्टां प्रभ सदा सँघारा। गुरमुखां प्रभ सदा पार उतारा। जोत सरूप सदा निराहारा। आदि जुगादि प्रभ सदा एकँकारा। महाराज शेर सिँघ कलिजुग जीव ना जाणे तेरा जोत पसारा। जोत पसार जीव ना जाणे। बेमुख जीव होए अञ्याणे। अन्तकाल कलि भुज्जण जिउँ भठयाले दाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ मारे बाणे। सोहँ शब्द प्रभ बाण लगाया। चार कुन्ट हाहाकार मचाया। आप अडोल सभ जगत डुलाया। आप अतुल्ल सभ जगत तुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेद ना किसे जणाया। बैठ अडोल जगत डुलाए । सृष्ट सबाई प्रभ दए हलाए। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ दे उलटाए। नाथ त्रैलोकी आपणी कल वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थाएँ रिहा समाए। मात पताल आकाश प्रभ अबिनाशया। जोत सरूप सर्ब प्रकाशया। साध संगत सद रक्खे वास्सया। बेमुख दर तों जाए नास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए रसन स्वास सवास्सया। सोहँ शब्द प्रभ चलावणा। मातलोक विच नाउँ रखावणा। चार वरन सद रसना गावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति वरतावणा। सति सति प्रभ वरताए। सति पुरखां प्रभ दरस दिखाए। आत्म बुझी दीव प्रभ दे जगाए। सोहँ साची बत्ती प्रभ दे लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। पहली माघ प्रभ वक्त सुहाया। वीह सौ अठ्ठ बिक्रमी भाग लगाया। साचे प्रभ साचा कर्म कमाया । साध संगत दर परवान, जिस आए दर्शन पाया। सतिजुग सच्ची सन्तान, निहकलंक पित अख्वाया । वेले अन्त बिठाए विच बबाण, सचखण्ड निवास दवाया। प्रभ चुकाए आवण जाण, विच जोती मेल मिलाया। होया मेल भगत भगवान, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। पहली माघ वड वड भागा। गुरमुख सोया कलिजुग जागा। प्रभ साचे दी शरनी लागा। आत्म उतरे मैल, ना लागे दाग़ा। सोहँ साचा शब्द उपजावे साचा रागा। एका शब्द धुन वजाए वाजा। आत्म खोल्हे प्रभ साचा सुन, जिस जीव तेरा साजन साजा। उत्तम कीए विच रिख मुन गुर ग़रीब निवाजा। कलिजुग विरले प्रभ लए चुण, देवे दात वड राजन राजा। बेमुख जीवां अन्तकाल प्रभ साचा खोल्हे पाजा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत रखाए लाजा। पहली माघ प्रभ भगवन्त। मेल मिलाया साचे सज्जण सन्त। दरस दिखाया प्रगट जोत प्रभ अबिनाशी कन्त। गुरमुख कलि वड्याए, विच सर्ब जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, बेमुख ना पाए अन्त। पहली माघ वक्त सुहावणा। बैकुण्ठ निवासी सर्ब घट वासी विच मात दे आवणा। प्रगट जोत निहकलंक गुरसिख जगावणा। पारब्रह्म परमेश्वर प्रगट, साध संगत दरस दिखावणा। सच दर आए गुर दरबार,

प्रभ पूरी करे भावना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे दरस गुरसिख तेरा बजर कपाट खुल्हावणा। पहली माघ प्रभ जोत प्रगटाए। गुरमुख तेरी आत्म जोत जगाए। सोहँ साचा नाम दान, प्रभ साचा झोली पाए। प्रभ साचा बख्शे चरन धूढ़, गुरसिख लै मस्तक लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ भेव खुल्हाए। पहली माघ साचा वक्त सुहाया। गण गंधर्ब प्रभ चरन बहाया। साध संगत सिर हत्थ टिकाया। देवे वर दर घर साचा, जो दर साचे मंगण आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगत रघुराया। साचा प्रभ जगत रघुराई। पहली माघ साध संगत तेरी बणत बणाई। सच सुच्च प्रभ दे वरताई। साची नाम रंगण प्रभ दे चढ़ाई। तेरे दाग़ ना लागे अंगण, प्रभ अबिनाशी होए सहाई। साचा नाम प्रभ दर मंगण, प्रभ देवे दात दूण सवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धार साध संगत देवे वड्याई। पहली माघ प्रभ भाग लगाया। पूरब जन्म दा लहणा झोली पाया। विछड़यां कलि मेल मिलाया। प्रभ अबिनाशी अचरज खेल कर, धार खेल चतुर्भुज कहाया। बेमुखां बेड़ा ठेल कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाया। साचा प्रभ सर्ब रखवाला। भगत वछल गुर गोपाला। गुरसिख तेरा सद रखवाला। आत्म जोत सच दीपक बाला। सोहँ साचा नाम देवे सुखाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा संग तेरे नाला। पहली माघ भाग भरया। धरे जोत प्रभ आसा वरया। चरन लाग गुरमुख साचा तरया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग भवजल पार करया। पहली माघ तेरी रुत्त सुहाई। प्रभ अबिनाशी तेरी बणत बणाई। मातलोक प्रभ दित्ती वड्याई। जोत सरूप प्रगट जोत, शब्द सरूप प्रभ शब्द लिखाई। वड दाता ज्ञान बोध, सोहँ शब्द दे चलाई। बेमुख जीव लए सोध, मदिरा मास आहार बणाई। महाराज शेर सिँघ वड जोधन जोध, जोत सरूपी अग्न जोत लगाई। जोत सरूपी अग्न लगाया। बेमुख जीवां मदिरा मास आहार बणाया। गुरसिक्खां जोत आकार कर, प्रभ साचे दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। पहली माघ जगत बेताला। सृष्ट सबाई होए बेहाला। कलिजुग जीव पीसण जिउँ पीसे दाला। भैणां छड्डण भाई, मात छड्ड जाए बाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा सति रखवाला। पहली माघ प्रभ बाण चलाया। शब्द बाण प्रभ जगत लगाया। वड वड जोध सभ टुम्ब उठाया। जोत सरूपी जोत धर, प्रभ उलटी सृष्ट कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट हाहाकार मचाया। हाहाकार प्रभ जगत कराए। दुखी जीव सर्ब बिल्लाए। कलिजुग अन्तिम आपणा भेख वटाए। कूड़ कुड़िआर कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द मार सृष्ट सबाई कराए। पहली माघ प्रभ शब्द लिखावणा। थल जल जल थल इक्क करावणा। झूठा भेख प्रभ मिटावणा। सच सुच्च विच लोकमात

वरतावणा। सोहँ शब्द चार वरन धरावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लावणा। सतिजुग तेरी लिख्त अपार । एका जोत धरे प्रभ निरँकार। एका शब्द देवे अधार। एका एक वरते विच संसार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत करे आकार। सतिजुग प्रभ माण दुआए। सति पुरखां प्रभ जन्म दुआए। सच सुच्च प्रभ दे प्रगटाए। सोहँ साचा शब्द प्रभ विच स्वास चलाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति सति सति वरताए। सतिजुग तेरा साचा बंस। गुरमुख साचे साची तेरी अंस। मातोलक प्रभ उपजाए वड वड हँस। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, गुरमुखां विच सहँस। सतिजुग तेरा सांतक रूप। सति सति सति वरताए प्रभ साचा भूप। गुरसिक्खां उपजाए प्रभ जोत सरूप। प्रभ साची जोत टिकाए, विच देह अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसे सति सरूप। सर्ब जीआं प्रभ एक रखाए मति। प्रभ अबिनाशी जाणे मित गति। सोहँ साचे शब्द गुर सिखाई मति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग वरताए सति सति। साचा प्रभ मिटाए भरमा। देवे वड्याई जिस वड्डे वड कर्मा। पहली माघ सतिजुग साचा जरमा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग लावे धर्मा। पहली माघ प्रभ जन्म दुआया। पूरन ब्रह्म ज्ञान दे, सुरत शब्द दा मेल मिलाया। एका चरन ध्यान दे, प्रभ भुलेखा सारा लाहया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग साचा मार्ग लाया। सतिजुग साचा मार्ग ला। राउ रंक इक्क करा। ऊँच नीच दा भेत मिटा। साचा प्रभ सच्च दिसावे राह। वेले अन्त होए सहाई, साध संगत प्रभ पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दूसर कोई नांह। साचे प्रभ सति वरताया। सति सरूप सति पुरखां विच समाया। बेमुखां प्रभ गूढ़ी नींद सवाया। गुरमुख साचे प्रभ प्रगट जोत, विच मात दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म तेरी सरनाया। चरन आए जो जन सरनाए। प्रभ अबिनाशी होए सहाए। भय भयानक प्रभ पति रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चलाए साची नाए। सोहँ चलाए प्रभ साची नईआ। सोहँ साचा नाम दवईआ । चार वरन कराए प्रभ एका भैणां भईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सद माण दवईआ। सचखण्ड प्रभ का वासा। जोत सरूप सर्ब विनासा। गुरसिख तेरी सद पूरन आसा। झूठी खेल जगत तमाशा। झूठी माया अन्त होए नासा। एका जोत विच प्रभ अबिनाशा। साचा शब्द सोहँ जपावे स्वास स्वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए दासन दासा। सोहँ शब्द भगत भण्डारा। सतिजुग वरताए प्रभ वरतारा। मुख रखाए चार वरन प्रभ गिरधारा। एक कराए साचा बरन निहकलंक अवतारा। चार कुन्ट लगाए सरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक दिसाए सचखण्ड दुआरा। सचखण्ड सच द्वार। जोत धरे निहकलंक अवतार। साचा प्रभ सच दरबार। पतित पापी प्रभ जाए तार। दुखीआं दु:ख प्रभ जाए

निवार। साध संगत प्रभ पाए सार। मानस जन्म ना आए हार। पहली माघ निहकलंक जो आए चल दरबार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सद सद तारनहार। तारनहार आप प्रभ तारया। कर किरपा गुरसिख प्रभ दु:ख निवारया। लक्ख चुरासी प्रभ गेड़ मुका रिहा। साची जोत प्रभ सच मिला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धार साचा कर्म कमा रिहा। घनकपुर प्रभ जामा धार। पूरन ल्या नर अवतार। गुरमुखां देवे दरस अपार। सोहँ शब्द धुंन उपजावे धुन्कार। कलिजुग जीवां प्रभ करे ख्वार। शब्द मार प्रभ मारे मार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा जगत भतार। जगत पित मात प्रभ आया। रंकां तांईं गले लगाया। राणयां महाराणयां प्रभ तख्तों लाहया। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त कराया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वाह वाह साचा सतिजुग लाया। पहली माघ प्रभ कल वरताए। साची जोत जगत प्रगटाए। जोत सरूपी प्रगट जोत, हँकारीआं प्रभ हँकार गुआए। चार वरन कराए एक गोत, सोहँ साचा शब्द सुणाए। बेमुख कलिजुग जीव रहे सोत, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। अन्तकाल कलि गए खाली हत्थ धोत, प्रभ नर्क निवास रखाए। गुरमुख साचे विच मिलाए जोत, पहली माघ महाराज शेर सिँघ जो जन आए शरनाए। जोती जोत प्रभ मिलाया। प्रभ अबिनाशी कर्म कमाया। गुरमुख साचा सच धाम पुचाया। सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास रखाया। बैकुण्ठ निवासी आपणा कर्म कमाया।

५६२
०१

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे तेरे छत्र सीस झुलाया। पहली माघ प्रभ शब्द लिखाए। शब्द रूप प्रभ खेल वरताए। राणा संगरूर प्रभ पकड़ उठाए। भय भयानक प्रभ भय रखाए। उठ उठ वेखे प्रभ दिस ना आए। दिवस रैण सवण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी जोत जगाए। शब्द शब्द शब्द बाण प्रभ मारया। शब्द शब्द शब्द, प्रभ जगत वरता रिहा। शब्द शब्द शब्द, तोड़े वड हंकारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका शब्द वरभंड वरता रिहा। शब्द रूप प्रभ दरस दिखाए। राणा संगरूर प्रभ चरनी आए। चरन धूढ़ लै मस्तक ला, आपणी भुल्ल बख्शाए। आत्म सर्ब हँकार गंवा, चरनी सीस झुकाए। एका दीसे साचा राह, प्रभ अबिनाशी दर्शन पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगत प्रगटाए। साचे प्रभ सच कर्म कमावणा। साचा चरन विच मस्तूआणे पावणा। भरम निवार जगत सुधार, प्रभ साचे शब्द सुणावणा। हँकार निवार कर ख्वार, प्रभ सर्ब चरन लगावणा। दुष्ट दुराचार विच संसार, प्रभ सर्ब भेव मिटावणा। सोहँ साचा शब्द, प्रभ साचे सच वरतावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस चाली जगत लेख लिखावणा। दिवस रैण प्रभ शब्द लिखाए। साचा धाम सतिजुग बणाए। चार वरन शरन लगाए। जन्म जन्म दी मैल गंवाए। निहकलंक होए सहाए। देवे दरस आप रघुराए। आत्म साची जोत जगाए। अज्ञान अन्धेर दे मिटाए। तीजा नैण

प्रभ दे खुल्हाए। द्वार दस्म प्रभ पड़दा लाहे। सुन्न समाध गुरसिख तेरी प्रभ खोल्ह वखाए। महाराज शेर सिँघ विच तेरे रहे समाए। साचा प्रभ सदा विस्माद। गुरसिख तेरे संग आदि जुगादि। सोहँ शब्द उपजावे धुंन नाद। साध संगत प्रभ साचा, तेरी आत्म जाए साध। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुखां साचे वेले अन्त ल्या लाभ। मस्तूआणे प्रभ माण दवाया। सन्त मनी सिँघ कर्म लिखाया। साची मेख सतिजुग लेख, प्रभ लिखाया। कलि जीव रहे वेखा वेख, निहकलंक नज़र ना आया। महाराज शेर सिँघ तेरा जोत सरूपी भेद, किसे विरले गुरमुख पाया। बेमुख जीव माया भरम भुला। कलिजुग दित्ते ख़ाक रुला। गुरमुख साचे बाहों पकड़ प्रभ चरनी लए लगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द देवे झोली पा। शब्द ज्ञान प्रभ देवे ज्ञाता। मेल मिलाए कर बिध नाता। गुरमुख चार जुग तेरी उत्तम ज़ाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग पछाता। मस्तूआणे साचा माण। साचा ताण सतिगुर जाण। धरे चरन विष्नूं भगवान। बख़्शे दात प्रभ गुणी निधान। धरे जोत प्रभ महान। कर दरस निहकलंक, पतित पापी तर जाण। प्रगटे जोत महाराज शेर सिँघ, वड बली बलवान। मस्तूआणे प्रभ भए अनन्दा। कर दरस जीव आत्म उपजे परमानंदा। साचा प्रभ होए सहाई, सदा सदा बख़्शिंदा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा गुणी गहिंदा। गुणवन्त प्रभ गुणी निधान। चरन लाग गुरसिख होए चतुर सुजान। साचा प्रभ जोत जगाए कोट महान। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, तेरा रंग महान। मस्तूआणे प्रभ माण दवाया। अमृत मेघ प्रभ बरसाया। साचा सर चार वरन कराया। राउ रंक इक्क थां बहाया। ऊँच नीच प्रभ भेव चुकाया। साचा मार्ग सोहँ शब्द सुणाया। एका राग प्रभ अबिनाशी वरन चार उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह साचा सतिजुग लाया। रागन राग प्रभ वड रागे। भाग लगाया प्रभ पहली माघे। साध संगत प्रभ चरनी लागे। कलिजुग विरले गुरमुख जागे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा जोत जगाई पहली माघे। पहली माघ भए प्रकाश। कलिजुग अन्धेर होए विनाश। निहकलंक जगे जोत अबिनाश। चार वरन प्रभ कराए एका वास। राउ रंक होए चरन दास। सोहँ शब्द प्रभ चलाए स्वास। दुष्ट दुराचारां प्रभ कराए नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत प्रकाश। साची जोत प्रकाश कर, प्रभ भगत उधारे। साची जोत प्रकाश कर, प्रभ दुष्ट सँघारे। साची जोत प्रकाश कर, प्रभ सच वरताए विच संसारे। साची जोत प्रकाश कर, प्रभ निवारे सर्ब हँकारे। साची जोत प्रकाश कर, सोहँ शब्द भरे भण्डारे। प्रभ साची जोत प्रकाश कर, मलेच्छां करे ख्वारे। साची जोत प्रकाश कर, जगावे जोत नर अवतारे। साची जोत प्रकाश कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द चलाए विच संसारे। साचा शब्द प्रभ जगत चलावणा। एका नाम चार वरन रखावणा। सोहँ साचा शब्द सतिजुग जीवां गावणा। एका

अंक राउ रंक इक्क करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पावणा। जोत सरूप प्रभ जामा धारया। कलिजुग अन्तिम अन्त निवारया। बेमुखां मात करे ख्वारया। मदि मासी साचे दर दुरकारया। घनकपुर वासी गुरसिख साचे तेरा कर्म विचारया। वेले अन्त करे बन्द ख़ुलासी, दर आए जो जन निमस्कारया। हउमे ममता विच्चों नासी, सोहँ शब्द देवे अधारया। रिद्ध सिद्ध होए तेरी दासी, साचा प्रभ रिदे चितारया। कोई ना दीसे मदिरा मासी, सतिजुग साचे सच वरता रिहा। झूठी सृष्ट अन्त होए नासी, प्रभ शब्दी शब्द लिखा रिहा। प्रभ चरन प्रीती साची रहिरासी, प्रभ साची बणत बणा रिहा। महाराज शेर सिँघ घनकपुर वासी, साचे लेख लिखा रिहा। गुरसिख साचे तेरा लेखा। प्रभ मिटाए झूठी रेखा। आत्म कढ्ढे भरम भुलेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर विरले गुरमुख देखा। नाम निधान गुर दर पाईए। आत्म तृखा सर्ब मिटाईए। आत्म साची जोत जगाईए। साचा प्रभ रिधे वसाईए। साचा शब्द धुन देह उपजाईए। साचा राग कन्न सुणाईए। हउमे ममता रोग मिटाईए। साची जोत अन्तकाल विच जोत मिल जाईए। आवण जावण विच जहान गेड़ मिटाईए। पूरन भगवान गुणी निधान, घर आए दर्शन पाईए। चतुर सुजान प्रभ दर बण जाईए। पहली माघ साध संगत मिल, हरि जस गाईए। सोहँ साचा जाप जप जीव, आत्म रस पाईए। सर्ब सृष्ट माई बाप, निहकलंक चरन ओट रखाईए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धूढ़ सद नहाईए। चरन धूढ़ साचा नहावणा। हउमे विच्चों रोग मिटावणा। प्रभ अबिनाशी घर में पावणा। सर्ब घट वासी रसना सद ध्यावणा। लक्ख चुरासी विच मात गेड़ कटावणा। गर्भ वास फेर ना आवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ जिस दर्शन पावणा। गर्भ वास प्रभ चुकाया। पूरब लहणा प्रभ झोली पाया। गुरमुख साचे जोती मेल मिलाया। कलिजुग झूठी पोह ना सकी माया। निहकलंक सतिगुर साचे सिर उप्पर हत्थ टिकाया। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, विच विकार रखाया। बेमुख दर आए नाचे, जिउँ सुंञे घर काया। अग्न जोत प्रभ लाए तमाचे, आत्म अग्न जलाया। गुरमुख ढाले साचे ढांचे, सोहँ ज्ञान दुआया। साचा शब्द जो जन वाचे, प्रगट जोत दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अछल छल कर जगत भुलाया। अछल छल प्रभ आप कराए। कलिजुग जीव सर्ब भुलाए। माया रूपी प्रभ पर्दा पाए। झूठी काया विच विकार चलाए। आत्म साची जोत प्रभ लए छुपाए। अज्ञान अन्धेर विच देह समाए। रसना मदिरा मास आहार रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त नर्क निवास कराए। बेमुख प्रभ नर्क निवारे। मदिरा मास करन आहारे। कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारे। मानस जन्म कलि गए हारे। लक्ख चुरासी आवण वारे वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुष्टां सदा सँघारे। कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारे। ईसा मूसा मुहम्मदी सर्ब होए हँकारे। कलिजुग

माया पाई मति गई मारे। साचा प्रभ वेले अन्त करे ख्वारे। प्रभ दर आए धरत मात संग गऊ पुकारे। रक्खी लाज मेरी रघुपति गिरधारे। द्वापर जामा धार बणिओ ग्वाला आप मुरारे। कलिजुग कर्म कमा ल्या, झल्ली जाए ना सीस कटारे। तेरे दर सीस झुका ल्या, रक्खी लाज आप बनवारे। बेमुखां पाप कमा ल्या, मेरी कीती पति ख्वारे। तेरी चरनी सीस निवा ल्या, नरायण नर निहकलंक अवतारे। जामा घनकपुरी विच पा ल्या, सदी चौधवीं करे ख्वारे। महाराज शेर सिँघ नाउँ रखा ल्या, धरे जोत आप निरँकारे। साचे प्रभ सुणी पुकारा। मातलोक ल्या अवतारा। झूठी देह छड्डया महल्ल मुनारा। जोत सरूपी प्रगट जोत मातलोक ल्या अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा धारे सुण पुकारा। दुखीए जीव जगत बिल्लाए। दुःख भुक्ख सर्ब सताए। राउ रंकां देण सज़ाए। सन्त भगत कोई रहण ना पाए। दुष्ट दुराचार रहे डौरू वाए। धीआं भैणां गए पति गुआए। कलू काल कलि काती गए वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाए। कलिजुग जीव होए बेहाला। करन पुकार सुण दीन दयाला। वेले अन्तकाल कलि रक्खी लाज गुर गोपाला। प्रगट जोत विच संसार, प्रभ अनाथां होए रखवाला। मायाधारी प्रभ मारे मार, अन्त कढ्ढे दवाला। निर्धना प्रभ पावे सार, सरधना प्रभ सदा प्रितपाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन होए रखवाला। राउ उमराउ प्रभ माण गुआए। मायाधारी प्रभ नष्ट कराए। जीव संसारी प्रभ इक्क कराए। सच सुच्च विच देह वरताए। सोहँ साचा शब्द प्रभ चलाए साची नाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत लए तराए। साध संगत प्रभ बेड़ा बन्नया। साचा प्रभ सति कर मन्नया। सोहँ देवे साची दात ना लागे सन्नया। बेमुख जीवां पीड़े जिउँ पीड़े गन्नयां। राजा राणा अन्तकाल प्रभ साचे डन्नयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा बेड़ा बन्नया। बेड़ा बन्न प्रभ पार लँघाए। सोहँ साची नाओ चढ़ाए। साचा चप्पू प्रभ दे लगाए। इन्दलोक शिवलोक गुरसिख तजाए। गुरमुख साचा छड्ड ब्रह्मलोक, विच सचखण्ड निवास रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त जोती मेल मिलाए। साचे प्रभ मेल मिलाया। जोत सरूपी विच समाया। बेमुख जीवां भेद ना पाया। सोहँ साचा शब्द ना रसना गाया। कलिजुग पापी पाई माया। भरम भुलेखे आपणा आप गुआया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे, ना चल आए शरनाया। प्रभ शरन जो जन आए। मानस जन्म सुफल कराए। वेले अन्त जम नेड़ ना आए। साचा प्रभ होए सहाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे मेल मिलाए। गुरमुख साचे प्रभ माण दवाया। खण्ड ब्रह्मण्ड वड्आया। विच वरभंड प्रभ जोत प्रगटाया। बेमुख जीवां नज़र ना आया। गुरमुख साचे प्रगट जोत निहकलंक कलि दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। मातलोक प्रभ जामा धार। कलिजुग

प्रगटे निहकलंक अवतार। सृष्ट सबाई करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब खपाए दुष्ट दुराचार। दुष्ट दुराचार प्रभ मिटाए। एका वरन जगत रखाए। एका शब्द जगत वरताए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा नाम लिखाए। साचा नाम सागर सिंधा। साचा नाउँ वड वड इन्दा। साचा नाउँ जन भिख्या लैंदा। साचा नाउँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वखंदा। साचा नाउँ सच वपारा। साचा नाम जगत आहारा। साचा नाम जीव अधारा। साचा नाम आत्म ख़ुमारा। साचा नाम करे जोत उज्जयारा। साचा नाम खुल्हावे जीव दस्म दुआरा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ जोत सरूप निरँकारा। साचा नाम प्रभ वरताया। साचा नाम गुण निधान, प्रभ झोली पाया। साचा नाम आत्म बाण, प्रभ गुरसिख लगाया। महाराज शेर सिँघ सच सच सच विच देह वसाया। साचा नाम प्रभ की दात। साचा नाम वड करामात। साचा नाम कटावे गर्भवास। साचा नाम उत्तम कराए ज़ात। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ, देवे साची दात। साचा प्रभ सच घर पाओ। साचा प्रभ रिदे वसाओ। साचा प्रभ सोहँ साचा जोग कमाओ। साचा प्रभ अबिनाशी सद रसना गाओ। साचा नाम साचा जाम, पी आत्म तृप्ताओ। साचा नाम साचा काम, रसना हरि गुण गाओ। साचा नाम साचा शाम, प्रभ अबिनाशी घर में पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव भुल्ल ना जाओ। साचा नाम सच वपारा। साचा नाम प्रभ भरे भण्डारा। साचा नाम भगत अधारा। साचा नाम जगत वरतारा। साचा नाम वरते विच संसारा। साचा नाम दिखावे हरि का दुआरा। साचा नाम दवावे मोख दुआरा। साचा नाम मिलावे प्रभ अपारा। साचा नाम महाराज शेर सिँघ देवे जीव अधारा। साचा नाम गुण निधान। साचा नाम बली बलवान। साचा नाम मिलावे भगत भगवान। साचा नाम रसना जप जीव होए चतुर सुजान। साचा नाम दरगाह देवे माण। साचा नाम जप पतित पापी तर जाण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा नाम सर्ब सुख। साचा नाम जप उज्जल मुख। साचा नाम जप वास ना होए मात कुक्ख। साचा नाम उतारे जीव आत्म भुक्ख। साचा नाम महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे साचा सुख। साचा नाम आत्म अधारा। साचा नाम करे जोत आकारा। साचा नाम मिटाए देह अन्धयारा। साचा नाम झिराए झिरना अपर अपारा। साचा नाम वरसाए मेघ अमृत धारा। साचा नाम खोल्ह देवे दस्म दुआरा। साचा नाम उपजावे साची धुन्कारा। साचा नाम रसना जप जीव, साचा मिले नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा नाम करे वरतारा। साचा नाम प्रभ जाए वंड। साचा नाम धरे वरभंड। साचा नाम चलाए प्रभ विच नव खण्ड। साचा नाम वरते विच ब्रह्मण्ड। साचा नाम पूज हटाए सर्ब पखण्ड। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां लाए डण्ड। साचा नाम जगत प्रभ

धरया। साचा नाम गुरमुख विरले वरया। साचा नाम रसना जप जीव कलिजुग तरया। साचा नाम गुरमुख विरला पावे प्रभ दर खड़या। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए शरनी पड़या। साचा नाम प्रभ वरताया। साचा नाम सर्ब सुखदाया। साचा नाम देवे दुःख रोग मिटाया। साचा नाम दे प्रभ साचे भउ चुकाया। साचा नाम साध संगत प्रभ साचे झोली पाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पहली माघ सच भण्डार चलाया। साचा नाम सच वरता के। गुरसिक्खां प्रभ आत्म जोत जगा के। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटा के। हँकार निवारे भरम भुलेखा सारा लाह के। जोत आकार विच जाए दीपक देह जगा के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पहली माघ जाए वक्त सुहा के। साचा नाम सर्ब गुणतासा। साचा नाम गुरसिख हिरदे वासा। साचा नाम रसना जप जीव देही दुःख नासा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त करे बन्द खुलासा। साचा नाम सति सरूर। साचा नाम गुण भरपूर। साचा नाम उपजावे अनहद तूर। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरन सूर। साचा नाम जिस जन पाया। सुन्न समाध प्रभ खोल् वखाया। साचा नाम जिस रिदे वसाया। साचा प्रभ प्रगट जोत दरस दिखाया। साचा नाम ना लागे माया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे दान जो जन सरनाई आया। साचा नाम भगत भण्डारी। देवे दात प्रभ गिरधारी। आत्म जोत करे उज्जयारी। देवे माण वड संसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम देवे सिक्दारी। साचा नाम प्रभ दर पाया। आत्म दुःख सर्ब मिटाया। साचा अनन्द निज मांहि उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत झिरना दे झिराया। साचा नाम जो जन जाणे। आत्म रस विरला गुरमुख माणे। जो जन चले प्रभ के भाणे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब कल वरताणे। साचा नाम सर्ब के संग। साचा नाम आत्म चाढ़े रंग। साचा नाम अमृत झिरना झिराए गंग। साचा नाम रसना जप जीव पार जाए लँघ। साचा नाम जप जीव प्रभ लाए अंग। साचा नाम साचा दान गुरसिख प्रभ दर मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आए मूल ना संग। साचा प्रभ देवणहारा। साचा नाम भरे भण्डारा। साचा नाम गुरसिख साचे वणज वपारा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नर अवतारा। साचा नाम सच घर दस्से। साचा नाम जोत जगाए जिउँ रवि सस्से। साचा नाम जप जीव प्रभ साचा हिरदे वसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द ज्ञान जग दस्से। सोहँ साचा शब्द ज्ञाना। देवे दान वड दानी दाना। रसना जप जीव आत्म उपजे सुख महाना। देवे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। दे दरस प्रभ दुःख मिटाए। साचा शब्द प्रभ राग उपजाए। गुरसिख आत्म गई जाग, प्रभ पहली माघ दया कमाए। पूरन होए भाग, जो चल आए सरनाए।

प्रभ साचा पकड़े वाग, वेले अन्त होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा वक्त सुहाए। साचा प्रभ वक्त सुहाए। आया वक्त जोत प्रगटाए। भरम भुलेखा सर्ब गंवाए। जोत निरँजण विच मात जगाए। तीन लोक प्रभ सोहँ जै जै जैकार कराए। कलिजुग झूठा भेख प्रभ सर्ब मिटाए। लिक्खया लेख प्रभ सति सति सति वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरताए। आपणा खेल प्रभ आप वरताया। रमईआ राम घनईआ शाम, निहकलंक प्रभ नाउँ धराया। सोहँ साचा नाम, प्रभ साचा शब्द लिखाया। साध संगत पिलाए साचा जाम, पहली माघ प्रभ अमृत मेघ बरसाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म सिंच गुरसिख आत्म रोग मिटाया। पहली माघ पुरब मनाया। साध संगत प्रभ अबिनाशी रसना गाया। कलिजुग जीवां प्रभ पैर पसार सवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त नर्क निवास रखाया। साचा प्रभ सच वरताए। वेला अन्त कलिजुग अन्त कराए। जीव जन्त होण भस्मंत, प्रभ अग्न जोत लगाए। गुरसिख प्रभ बणाए तेरी बणत, जो चल आए सरनाए। धन्न धन्न धन्न सिख साचे सन्त, पहली माघ प्रभ दर्शन पाए। निहकलंक प्रभ दरस दिखाया। निहकलंक साचा डंक वजाया। निहकलंक राउ रंक इक्क कराया। निहकलंक ऊँच नीच दा भेव चुकाया। निहकलंक राजा राणा तख्तों लाहया। निहकलंक आपणा भाणा कलि वरताया। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निमाणयां सिर छत्र झुलाया। निहकलंक सिर छत्र झुलाए। जमन किनारे प्रभ चरन रखाए। सिँघ रूप होए प्रभ वाली हिन्द दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हाए। जमन किनारे प्रभ चरन टिकावणा। वाली हिन्द पकड़ उठावणा। साचा शब्द ज्ञान दे, प्रभ साचे चरन लगावणा। साचा हुक्म फ़रमाण दे, साध संगत प्रभ माण दवावणा। सोहँ साचा शब्द निशान दे, प्रभ साचे तिलक लगावणा। एका शब्द गुणी निधान दे, साचे मार्ग लावणा। एका चरन ध्यान दे, प्रभ सर्ब हँकार मिटावणा। आत्म जोत महान दे, प्रभ दीपक जोत जगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द चरन लगावणा। वाली हिन्द प्रभ दरस दिखाए। जोत सरूपी नज़री आए। दिवस रैण करे बेनन्ती, आपणी भुल बख्शाए। कलिजुग जामा धार प्रभ अबिनाशी आप आपणा रिहा छुपाए। प्रगटे जोत त्रेता राम, रिग वेद अलाए। साचा नाम पिलाए जाम, सती अहल्या भीलणी जाए तराए। महाराज शेर सिँघ पूर कराए काम, जोत सरूपी दरस दिखाए। साचा कर्म प्रभ कमावणा। वाली हिन्द चरन लगावणा। दिल्ली शहर प्रभ आपणा भेत खुल्हावणा। साचा छत्र सीस झुलावणा। वाली दो जहान, सिर हत्थ टिकावणा। साचा भगत भगवान, महाराज शेर सिँघ एह भी वक्त सुहावणा। साचा वक्त प्रभ सुहाए। वाली हिन्द प्रभ सरनाए। चरन धूढ़ मस्तक लाए। पिछली भुल्ल लए बख्शाए। प्रभ अबिनाशी सार ना पाए। जागे भाग भारत मात

निहकलंक चरन टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा विच भारत दे पाए। भारत तेरा भाग अनोखा। प्रगट प्रभ देवे मोखा। सृष्ट सबाई विच रही धोखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा प्रभ विच जगत अनोखा। भारत वासी कढ सिक्दारे। देवे माण प्रभ विच संसारे। मत मुहम्मदी करे ख्वारे। उठे रूसा लशकर भारे। ईसा मूसा मुहम्मदी कलि पार उतारे। साचा प्रभ जोत सरूप देवे जोत अधारे। वाली हिन्द साचा प्रभ देवे माण अपारे। सच सुच्च सर्ब करे वरतारे। एका नाउँ सोहँ सर्ब वरतारे। राउ रंक वरन बरन इक्क माण दरबारे। ऊँच नीच वाली हिन्द ना विचारे। साचा प्रभ साची जोत आत्म करे उज्जयारे। एका शब्द एका राग, इक्क उपजाए धुन्कारे। सोए भाग जायण जाग, प्रगटे जोत निहकलंक अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप विच सिख पसारे। वाली हिन्द तेरी वड्याई। साचे प्रभ आप कराई। साची लिख्त लेख विच सृष्ट रखाई। चार कुन्ट तेरे नाउँ दुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा होए सहाई। देवे माण प्रभ विच रूस्सया। खेल मिटावे प्रभ सारी ईसा मूस्सया। अग्न जोत जलाए जिउँ जलाए भूस्सया। महाराज शेर सिँघ सच शब्द लिखावे, मिटावे खेल प्रभ अबनूस्सया। साचा प्रभ सच कलि वाहे। उम्मत नबी रसूल दी अन्त दए खपाए। चार यारां संग मुहम्मद प्रभ दए माण गंवाए। बेमुख होए जीव प्रभ साचा गए भुलाए। वेले अन्त अन्तकाल कलि आपणी पति आप गए गंवाए। साचा प्रभ प्रगट जोत वेले अन्त दए सज़ाए। पीर दस्तगीर ना होए कोए सहाए। पीर पैग़ंबर औलिया कोई रहण ना पाए। एका दिसे एक आकार, चार वरन इक्क हो जाए। सच सच सच वरते विच संसार, प्रभ सोहँ शब्द चलाए। बेमुखां चार कुन्ट प्रभ वहीर दे कराए। महाराज शेर सिँघ जामा धार, अल्ला अलाहू नूर मिटाए। अल्ला आपणा नाम रखाया। कलिजुग जीवां भेव ना पाया। झूठा मार्ग जगत चलाया। आपणा आपणा राह बणाया। साचा प्रभ दिलों भुलाया। दिवस रैण कुकर्म कमाया। एका आण मात रखाया। जीव जन्त सर्ब दुखाया। क्रोध विरोध बहुत वधाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त कलि प्रगट जोत सभ दा माण गंवाया। साचे प्रभ सर्ब भेख मिटावणा। इक्क मार्ग विच संसार चलावणा। बेमुखां प्रभ नष्ट करावणा। साध संगत प्रभ चरन लगावणा। सोहँ साचा शब्द चार वरन चार कुन्ट वरतावणा। एका चरन ध्यान वाली हिन्द दवावणा। प्रगट जोत घनईए शाम, जोत सरूपी दरस दिखावणा। पूरन जोत पूरन परमेश्वर प्रभ सर्ब विच समावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखावणा। साचे प्रभ तेरी साची गाथ। सोहँ शब्द चलाया, सतिजुग साचा राथ। होए सहाई साचा प्रभ त्रैलोकी नाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर रक्खे हाथ। साध संगत तेरी वड्याई। साची दात प्रभ दर पाई। आत्म इच्छया प्रभ पूर कराई। गुण निधान प्रभ साची वस्त झोली

पाई। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, प्रभ सर्ब सुखदाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाई। साचा कर्म प्रभ कमाया। जामा मातलोक विच पाया। निहकलंक प्रभ नां रखाया। त्रैलोकी नाथ जगत पित रघुराया। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ दे उलटाया। चौथे जुग अन्तकाल प्रभ अन्त दे कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मा माण गंवाया। ब्रह्मा ब्रह्मलोक तजाए। साचा प्रभ अन्त कराए। बीती अवध जो प्रभ लिखाए। प्रभ साचे की कार, प्रभ साचा रिहा कमाए। अन्तकाल चौथे जुग प्रभ सारी खेल मिटाए। ब्रह्मा ब्रह्म सरूप विच जोती मेल मिलाए। साचा गुरसिख पाल विच ब्रह्मलोक बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। ब्रह्मलोक गुरसिख बहाए। सृष्ट सबाई हत्थ फड़ाए। प्रभ अबिनाशी सिर हत्थ टिकाए। साचा शब्द प्रभ धरवास रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त आप लिखाए। साचा गुरसिख सच धाम बहाए। ब्रह्मा वेला अन्त कराए। अन्त जोती मेल मिलाए। जुग चौथे वेला अन्त कराए। सतिजुग साचा मार्ग लगाए। आप आपणा नाउँ धराए। सोहँ शब्द जै जै जैकार कराए। चार वरन शरन लगाए। एका दर दरबार सर्ब दिखाए। साची जोत आप प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाए। लोक परलोक जीव ना जाणे। जैसा सुणे तैसा वखाणे। प्रभ अबिनाशी सद अभेद, आपणा भेद ना किसे वखाणे। वडे वडे देवी देव, दर प्रभ साचा दिस ना आणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सर्ब विच समाणे। कलिजुग जीव ना पाए भेदा। भेद ना जाणे चारे वेदा। प्रभ अबिनाशी सदा अभेदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण ज्ञान देवे चारे वेदा। प्रभ का भेद किसे ना जाणया। जैसा जणाए प्रभ तैसा सर्ब वखाणया। गुरमुख विरले रंग प्रभ साचे माणया। कलिजुग जीव भुल्ले अञ्याणया। कलिजुग माया पाई राजे राणया। जोत सरूपी प्रभ दिस ना आए, चतुर सुघड़ स्याणया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सद वरते आपणे भाणया। साचा भाणा प्रभ वरताया। आपणा भेख जगत वटाया। साचा लेख जोत सरूप लिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग जीवां दिस ना आया। साचा प्रभ गुरसिख समाए। साची जोत विच देह टिकाए। नाड़ी बहत्तर बन्द कराए। सिँघ आसण बैठ चतुर्भुज कहाए। बैकुण्ठ निवासी विच मात दे आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराए। निहकलंक कलि नाउँ रखाया। जोत सरूपी प्रभ भेख वटाया। दर दरबार किसे विरले गुरमुख पाया। दुष्ट दुराचार बेमुखां प्रभ लिखाया। आत्म अधार प्रभ सोहँ शब्द चलाया। विच संसार साध संगत प्रभ वड्आया। बेमुख जीवां बेड़ा विच मँझधार रुढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख लिखाया। कलिजुग लेख प्रभ चुकाया। कलिजुग काया दे खपाया। जूठ झूठ प्रभ नष्ट कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा खेल मिटाया। झूठे जीव झूठा

पसारा। झूठा वेस कलि झूठा वरतारा। झूठे धन्दे भुल्ला सर्ब संसारा। मदिरा मास करन आहारा। प्रभ अबिनाशी प्रगट्या मूर्ख जीव ना करन विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। निहकलंक नरायण नर। साची जोत मात जाए धर। चार वरन देवे प्रभ एका वर। प्रभ चरन लाग ऊँच नीच सभ जायण तर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, मस्तूआणा बणावे साचा सर। साचा सर साचा धाम। साचा प्रभ पूर कराए काम। साचा प्रभ साचा रखावे नाम। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, माण देवे विच जहान। मातलोक प्रभ जोत आकारा। विच पाताल प्रभ नैण मुँधारा। विच अकाश जगाए जोत अगम्म अपारा। पारब्रह्म तेरा रूप न्यारा। दिस ना आए जोत सरूप, अन्त ना पारावारा। कलिजुग प्रगट्या प्रभ साचा भूप, राणयां करे ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर साचा दरबारा। साचा प्रभ सच दरबारे। साचा प्रभ सदा निराहारे। साचा प्रभ जोत अधारे। साचा प्रभ वड संसारे। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँकारे। साचे प्रभ दया कमाया। अमृत मेघ प्रभ वरसाया। वेले अमृत गुर संगत मुख चुआया। वड वड भाग होए विच मात, प्रभ अबिनाशी तेरी सेव कमाया। सोहँ साचा शब्द उपजावे राग, अनहद धुन उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ साध संगत साचा नाम दवाया। अमृत साचा प्रभ दर पाईए। आत्म तृखा सर्ब मिटाईए। आत्म बुझी दीव फिर जगाईए। सति सति सति सरूप प्रभ सति हो जाईए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ कर दरस निजानंद उपजाईए। निजानंद प्रभ उपजाए। आत्म झिरना प्रभ दे झिराए। अमृत आत्म प्रभ दे वरसाए। अमृत बूंद विच कँवल दे चुआए। खुल्हे कँवल गुरसिख तेरा, दस्म दुआर दी बूझ बुझाए। आत्म होए उज्जयार, प्रभ अज्ञान अन्धेर दे मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। द्वार दस्म प्रभ खुल्हाया। स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखाया। गुरमुख साचे प्रभ साचा भेद खुल्हाया। सुरत शब्द दा मेल कर, प्रभ शब्दी मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन बाती बिन तेल आत्म दीप जगाया। आत्म दीपक प्रभ जगाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। साची जोत विच ललाट जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत पहली माघ तेरे उप्पर दया कमाए। अमृत मिल्या आत्म रस। प्रभ अबिनाशी होया वस। सतिजुग साचा राह प्रभ जाए दस। कलिजुग माया प्रभ दर तों जाए नस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगाए जोत जिउँ रवि ससि। साचा अमृत प्रभ प्आया। सांतक सति सति सति वरताया। राजस तामस विच्चों गंवाया। काम क्रोध हँकार चलाया। साध संगत साचा शब्द सुणाया। साचा फ़रमाण धुरदरगाहों आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। साचा शब्द प्रभ सुणाए। साध संगत प्रभ दे वरताए। गुरमुख साचे साध संगत

मिल जाए। साचा मार्ग सतिगुर साचा, प्रगट जोत आप लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका राह चलाऐ। साचा राह प्रभ चलाया। साचा शब्द प्रभ उपजाया। प्रभ अबिनाशी रसन अलाया। रसना जप जीव आत्म रस पाया। साचा अमृत प्रभ दर पीव, हउमे रोग गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मेघ आप वरसाया। अमृत वरताए प्रभ गिरधारा। आत्म दु:ख सर्ब निवारा। मिटे अन्धेर किया उज्जयारा। साचा प्रभ विच पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक अवतारा । निहकलंक तेरी माया। आपणा आप जगत भुलाया। बेमुख जीवां भेद ना पाया। गुरसिख साचे मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया। भरम निवारया प्रभ, साची जोत प्रगटा। भरम निवारया प्रभ, सन्त जनां नूं सोझी पा। भरम निवारया प्रभ, मंज़ल मंज़ल दए पुचा। भरम निवारया प्रभ, चौथे पद दा भेद खुल्हा। भरम निवारया प्रभ, आत्म त्रैकुटी खुल्हा। भरम निवारया प्रभ, आत्म जिंदा देवे लाह। भरम निवारया प्रभ, विच साची जोत जगा। भरम निवारया प्रभ, अज्ञान अन्धेर दए मिटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोए ना। प्रभ साचे की साची सोए। एका एकँकार जोत बिलोए। करे प्रकाश विच तिंन लोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे गुण जाणे कोए। साचा दर सच घर ते पाया। नानक निरँकारी दर मंगण आया। इक्क ओंकार सतिनाम साचा दान प्रभ झोली पाया। विच मात आण, कलिजुग जीवां कन्न सुणाया। जामे दस भेस वटा, साचा मग चलाया। प्रभ अबिनाशी साचा हुक्म दए सुणा, साचा शब्द जगत कमाया। अन्त कर के वाह वाह, प्रभ साचे दर रसना गुण गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेद खुल्हाया। गुर नानक एह शब्द लिखाए, निहकलंक तेरी ओट रखाए। गुर गोबिन्द एह शब्द लिखाया, निहकलंक तेरी शरनाए। निहकलंक पाए सार, वेले अन्तकाल कलि करे ख्वारे। वड जामा जोत सरूप कलि प्रभ धारे। जोत सरूप सृष्ट सबाई प्रभ मार मारे । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब तांईं करे ख्वारे। जोत सरूप प्रभ जगत जलाया। सोहँ साचा बाण लगाया। दु:ख रोग विच संसार वधाया। मदिरा मास रसना विकार चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कलिजुग जीव खपाया। जोत सरूप प्रभ मारे मार। दुष्टां प्रभ करे ख्वार। बेड़ा डोबे अद्ध विचकार। गुरमुख साचे प्रभ जाए तार। देवे दरस प्रभ मुरार। एका राम एका शाम निहकलंक अवतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच करे वरतार। सच सच प्रभ वरताए। कलिजुग भेख सर्ब मिटाए। सतिजुग साचा मार्ग लाए। सोहँ साचा शब्द रसन जपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन सरन लगाए। चार वरन प्रभ शरन लगावणा। बाकी भेख सर्ब मिटावणा। एका दर दरबार, प्रभ साचे जगत रखावणा। निहकलंक अवतार नर, साचा भाणा कलि वरतावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, चार कुन्ट रसना गावणा। चार कुन्ट प्रभ रसना गाया। देवी देव ना किसे मनाया। एका चरन धूढ़ प्रभ साचे शरनाया। कलि कलेश प्रभ मगरों लाहया। सद सद सद अदेस जिस रसना गाया। प्रभ साचा आत्म सद प्रवेश, साचा शब्द रिदे वसाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा होए सहाया। गुरसिख कलिजुग माणक मोती। प्रभ साचे की साची जोती। साध संगत होए एका गोती। रसना जप आत्म मैल दुरमति धोती। महाराज शेर सिँघ सतिगरु साचा, सृष्ट सबाई रही सोती। सृष्ट सबाई प्रभ भुलाया। आलस निंदरा रिदे वसाया। साचा दर दरबार दिस ना आया। आत्म अन्ध अंध्यार, भरम भुलेखा लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाणा कलि वरताया। साचे प्रभ सच कर्म कमाया। गुरमुख साचे माण दुआया। साचा दर दरबान धू हटाया। प्रभ साचे मेहरवान, साचे दर सवरन बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। साचे दर गुरसिख टिका के। प्रभ अबिनाशी दर दरबान रखा के। सर्ब घट वासी एका चरन ध्यान दुआ के। घनकपुर वासी बैठाए साची जोत जगा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां जाए माण दुआ के। गुरसिख साचे प्रभ माण रखाया। सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास दुआया। कलिजुग झूठा मोह जंजाल चुकाया। साचा दर साचा घर प्रभ सुहाया । महाराज शेर सिँघ गुरसिख साचा, साचे धाम पुचाया। गुरसिख साचा प्रभ रंग राता। झूठे छड्डे भैण भ्राता। एका साचा प्रभ चरनी नाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर तेरा साचा जाता। साची जोत सदा निरँकारा । जगे जोत अगम्म अपारा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख मिले प्रभ अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा सति पसारा। साचा धाम गुर दरबार। धरे जोत प्रभ अपार। भगत जनां प्रभ जाए तार। रक्खे लाज विच संसार। मात गर्भ ना आवे दूजी वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचे विच बिठाए सच दरबार। साचा प्रभ सच दरबारे। साचा प्रभ सर्ब पसारे। साचा प्रभ सदा निराहारे। साचा प्रभ गुरसिख साचे, साची बख्शे सिक्दारे। साचा प्रभ चार वरन कराए पनिहारे। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ जोत करे उज्जयारे। साचा प्रभ सर्ब दुःख भंजन । साचा प्रभ जोत निरँजण। साचा प्रभ साध संगत चरन धूढ़ देवे साचा अंजन। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन द्वार सतिजुग साचा मजन। सतिजुग साचा साचा धामा। धरे चरन साचा रामा। घनकपुरी प्रभ पहरया जामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिउँ द्वापर शामा। साचा प्रभ सर्ब का दाता। साचा प्रभ सर्ब का ज्ञाता। साचा प्रभ सर्ब पित माता। साचा प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरनीं नाता। गुरसिख साचे गुर दर आओ। जन्म जन्म दी मैल गंवाओ। आवण जावण गेड़ चुकाओ। सचखण्ड निवास रखाओ। प्रभ अबिनाशी दरस सद पाओ। महाराज

६०४
०१

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग मानस जन्म सुफल कराओ। मानस जन्म जिस जन जाणया। लक्ख चुरासी विच पछाणया। चरनी डिग्गे होए निमाणया। देवे दान प्रभ भगवानया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत सिर हत्थ टिकाणया। साध संगत तेरी वड्याई। प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। प्रभ साचे सिर छत्र झुलाई। रंग रंगीला माधव, वेले अन्त होए सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ जोत प्रगटाई। पहली माघ जोत प्रगटा। साचा शब्द जाए सुणा। कलिजुग वेला अन्त प्रभ जाए जणा। विरला गुरमुख सन्त, चरनी डिग्गे आ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जीव, लग्गे ना तत्ती वा। चरन लाग सर्ब सुख पाओ। साचा प्रभ रिदे वसाओ। आत्म दु:ख भुख सर्ब गंवाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद रख मिलण दा चाउ। आया वक्त वक्त अख़ीर। जन भगतां प्रभ कट्टे भीड़। कलिजुग तोड़े प्रभ हड्डी रीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां जाए पीड़। बेमुखां प्रभ पीड़ पिड़ाया। कलिजुग उलटी लट्ठ गिडाया। मदि मासी प्रभ नर्क निवास दुआया। गुरमुखां प्रभ जाए तार, सोहँ शब्द जिस रसना गाया। वेले अन्त प्रभ साचे बैकुण्ठ निवास दुआया। महाराज शेर सिँघ तेरा सच दरबार, पहली माघ विच मात दे लाया। पहली माघ प्रभ पूरन आसा। साध संगत प्रभ देवे पूरन भरवासा। साचा प्रभ साध संगत सद रक्खे वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जपाए स्वास स्वासा। सोहँ शब्द देवे अधार। पतित पापियां जाए तार। अमृत झिरना झिराए अपार। आत्म तृखा मिटाए, प्रभ किरपा धार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा साध संगत जाए दु:ख निवार। दु:ख रोग प्रभ मिटाए। काया रोग कोई रहण ना पाए। साचा जोग कोई गुरसिख कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप जीव बेड़ा पार कराए। रसना जप जीव आत्म रस पाया। साचा मार्ग दस्स, प्रभ साचे राह चलाया। गुरमुख साचे दर आए नस्स, पहली माघ दरस दिखाया। जन हिरदे गया वस, प्रभ साचे कर्म कमाया। बेमुखां अन्धेर जिउँ चन्द मस, प्रभ साचा नज़र ना आया। कलिजुग जीव दर जायण नस्स, सोहँ शब्द प्रभ बाण चलाया। गुरमुख आत्म मिल्या साचा रस, सोहँ रसना गाया। पहली माघ साध संगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरा होए सहाया। साध संगत गुर दर आए। साचा वर गुर दर पाए। अवतार नर हरस मिटाए। जीव चरनीं पड़ प्रभ रोग गंवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शरन पड़े दी लाज रखाए। साचे प्रभ दी साची माया। सृष्ट सबाई कलि भुलाया। वेला अन्त ना किसे जणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेद आप छुपाया। आपणा भेद प्रभ आप छुपाया। प्रगट जोत निहकलंक गुरसिक्खां दरस दिखाया। बेमुखां कलिजुग प्रभ का भेव ना पाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा गुरमुखां सद होए सहाया। लेख

मिटाया आप प्रभ वड बण लिखारी। लेख मिटाया आप प्रभ, वड संसारी। लेख लिखाया आप प्रभ, जीव जन्त अधारी। लेख लिखाया आप प्रभ, कलिजुग भुल्ले मायाधारी। लेख मिटाया आप प्रभ, कलिजुग जीवां करे ख्वारी। लेख लिखाया आप प्रभ, निहकलंक नरायण नर अवतारी। लेख लिखाया आप प्रभ, सच जोत प्रगटा के। लेख लिखाया आप प्रभ, कलिजुग भेख जाए मिटा के। लेख लिखाया आप प्रभ, सतिजुग साचा जाए ला के। लेख लिखाया आप प्रभ, पहली माघ सतिजुग उत्तम दिवस लिखा के। लेख लिखाया आप प्रभ, करोड़ तेतीस चरन बहा के। लेख लिखाया आप प्रभ, जन भगतां जाए माण दवा के। लेख लिखाया आप प्रभ, कलि साची जोत प्रगटा के। लेख लिखाया आप प्रभ, राउ रंक इक्क करा के। लेख लिखाया आप प्रभ, राउ जाए भिक्ख मंगा के। लेख लिखाया आप प्रभ, सिँघासण बैठे जोत जगा के। लेख लिखाया आप प्रभ, घनकपुर वासी कलंकनिह नाउँ रखा के। लेख लिखाया आप प्रभ, कलिजुग मिटाए सतिजुग साचा जाए ला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पा के। लेख लिखाया आप प्रभ, गुरसिक्खां माण दवाए। लेख लिखाए आप प्रभ, ब्रह्म ज्ञान दवाए। लेख लिखाया आप प्रभ, गुरमुख जोत जगाए। लेख लिखाया आप प्रभ, सन्त जनां दे वड्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत प्रगटाए। साचे प्रभ लेख लिखाया। गुरमुख साचे प्रभ साचे मार्ग लाया। एका शब्द राग धुन नाद, प्रभ आत्म विच वजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जैकार कराया। पहली माघ सति वरतार। पहली माघ साध संगत तेरे भरे भण्डार। पहली माघ दर दसावे हरि का द्वार। पहली माघ प्रभ साचा अमृत बरखे किरपा धार। पहली माघ चार वरन दसावे एका दरबार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति सति सति कराए प्रभ वरतार। साचे प्रभ नाद वजाया। सोहँ साचा शब्द उपजाया। बावन रूप जोत सरूप चार वेद सुणाया। तीन लोक प्रभ अबिनाशी जै जैकार कराया। गण गंधर्ब सिर फूलन बरखा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धार साध संगत सिर हत्थ टिकाया। साचा प्रभ सदा ब्रह्मादी। प्रगटे जोत आदि जुगादी। एका धुंन उपजावे अनादी। साध संगत रसना सदा अराधी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सदा विस्मादी। गुरमुख साचे प्रभ सदा समाए। साचा प्रभ प्रगट जोत दरस दिखाए। साचा भेद सर्ब खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थांईं रिहा समाए। साचा प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञाना। साचा प्रभ देवे चरन ध्याना। साचा प्रभ बख्शे चरन धूढ़ इशनाना। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। साचा सतिगुर सतिजुग आए। निहकलंक माण दवाए। पहली माघ तिलक लगाए। विच ललाट जोत जगाए। साचे सन्त प्रभ माण दवाए। चार वरन लाए शरनाए। हँकार निवार प्रभ पकड़ ल्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म

सति कराए। सतिगुर साचा सतिजुग लाए। सन्त मनी सिँघ साची जोत प्रगटाए। साचा छत्र उप्पर सीस झुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात साचा माण दवाए। साचे प्रभ सच माण दुआवणा। राउ रंक सभ चरन लगावणा। साचा शब्द सति वरतावणा। निहकलंक अवतार नर, महाराज शेर सिँघ नाउँ धरावणा। साचा प्रभ सच दे वड्याई। साची वस्त सच दर ते पाई। प्रभ अबिनाशी कलि सेव कमाई। दिवस रैण कलम चलाई। लिख्त लेख अपार कर, पूरन घाल कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे माण दवाई। पूरन घाल सन्त जन घाली। देवे जोत प्रभ बनवाली। प्रगटे जोत हिन्द बाग़ दा माली। रक्खे लाज आप पति रखवाली। साचा दर दरबार साध संगत दर खड़ी सवाली। पूरन भरे भण्डार प्रभ कोए ना जाए दर तों खाली। पहली माघ प्रभ जाए तार, महाराज शेर सिँघ साध संगत रखवाली। पूरन सन्त प्रभ सेव कर। लिख्त लेख लेख लिख्त जगत धर। दु:ख भुक्ख देह उत्ते जर। प्रभ अबिनाशी सेव गया कर। राजे राणयां कोलों ना गया डर। एका ओट निहकलंक अवतार नर। सन्त मनी सिँघ गया तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सूज्झया साचा दर। सेवा साची पूरन घाला। प्रभ साचा करे आप प्रितपाला। सतिजुग साचे प्रभ साचा होए रखवाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची माला। साचा नाम प्रभ देवे दाना। जगाए जोत विष्नूं भगवाना। साध संगत सद बलि बलि जाणा। वड दाता वड बख्शे गुण गुणी निधाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरखां सदा समाना। साचे प्रभ दान दर दिया। मिल्या फल जो कलि किया। साचा नाम प्रभ दर पिया। निर्मल होया कलिजुग जिया। आत्म जोत जगाए प्रभ साचा दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो किछ वरते आपणा किया। करे कराए आप प्रभ, सर्ब कला समरथ। खेल कराए आप प्रभ, सभ किछ रक्खे हत्थ। वेख वखाए आप प्रभ, शब्द सरूपी पाए नत्थ। भरम चुकाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ महिंमा सदा अकथ्थ। भरम निवार प्रभ भउ चुकाए। हरि का द्वार प्रभ दे वखाए। किरपा धार जन दया कमाए। विच संसार साचा माण रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे सो जन पाए। देवन को प्रभ एक दातारा। मंगण खड़े कोट दुआरा। साचा प्रभ वड भतारा। कोट रूप पसरया विच संसारा। गुण निधान सर्ब सुख दाता, गुरमुख विरला जाणे पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग दसावे हरि का दुआरा। साचा प्रभ सच थान सुहाए। साची जोत विच टिकाए। आपणा भेव वड देवी देव सर्ब खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द सच चलाए। उठ जीव जाग, प्रभ कलि विच आया। उठ जीव जाग, वेला अन्त प्रभ अन्त कराया। उठ जीव जाग, क्यों माया भरम भुलाया। उठ जीव जाग, क्यों आपणा मूल गंवाया। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ रघुराया।

उठ जीव जाग, आत्म त्याग मदिरा मास जो आहार बणाया। उठ जीव जाग, प्रभ चरनी लाग कर दरस आत्म सुख पाया। रागन राग, प्रभ सोहँ साचा राग उपजाया। उठ जीव जाग, पहली माघ प्रभ साचा शब्द सुणाया। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जगत पित आया। उठ जीव जाग, प्रभ भए कृपाला। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ दीन दयाला। उठ जीव जाग, जगत पित आप रखवाला। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ कर दरस, आत्म जोत जगाए जिउँ ज्वाला। पंचम पंचम पंचम, प्रभ पंचम आया। पंचम पंचम पंचम, प्रभ पंचम राग अलाया। पंचम पंचम पंचम, प्रभ पंचम जोत जगाया। पंचम पंचम पंचम, प्रभ पंचम शरन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग पंचम हत्थ फड़ाया। पंचम देवे प्रभ सिक्दारी। पंचम देवे वड वड सरदारी। पंचम कराए जगत विहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँकारी। सतिजुग तेरी वड वड्आया। पंचम प्रभ मुख रखाया। रंग रंग रंग प्रभ साचे लाया। मंग मंग मंग, दान प्रभ साचे झोली पाया । अंग अंग अंग, गुरमुख साचा अंग लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा बिरद रखाया। आपणा बिरद प्रभ संभारया । जोत सरूपी जामा धारया। एका अंक नरायण नर अवतारया। सोहँ साचा डंक, चार कुन्ट धुन्कारया। प्रभ सुणाए राउ रंक, इक्क दर दिसे दरबारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द सतिजुग भण्डारया। एका दर एका दरबारा। एका नाम एका अधारा। एका जोत निहकलंक, नरायण नर अवतारा। एका शब्द एका धुन्कारा। पहली माघ साध संगत प्रभ भरम निवारनहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ वरतावे चलावे सच भण्डारा। एका शब्द प्रभ चलाए। चार वरन प्रभ सुणाए। साचा ब्रह्म ज्ञान दुआए। गुरमुख साचे प्रभ आत्म दरस दिखाए। जो जन रसना सोहँ वाचे, प्रभ आत्म साची जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे तेरा लहणा जगत मुकाए। रसना जप रसन रसईआ। सोहँ चलाई प्रभ साची नईआ। सोहँ साचा शब्द जपईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारा वईआ। अन्त ना जाणे प्रभ का कोए। प्रभ अबिनाशी जुगो जुग होए। साची जोत जगत बिलोए। जोत प्रकाश करे त्रैलोए। एका आकार जुगो जुग होए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना जाणे कोए। जोत जगाए जगत प्रभ, भरम भुलेखा लाह। जोत जगाए जगत प्रभ, कलिजुग जीव लए भुला। जोत जगाए जगत प्रभ, आपणा आप रिहा छुपा। जोत जगाए प्रगटाए आप प्रभ, झूठी देह तजा। जोत जगाए आप प्रभ, विच साचे सिख रिहा समा। जोत जगाए आप प्रभ, नाड़ी बहत्तर बन्द दए करा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचे विच डेरा ला। निहकलंक कलि खेल न्यारा। जोत सरूप किया पसारा। भेख धार भुलाया सर्ब संसारा। महाराज शेर सिँघ

सतिगुर साचे, तेरा अन्त ना पारावारा। कलिजुग भेख प्रभ साचे धारया। जोत सरूपी खेल रचा ल्या। गुरसिख साचे विच जोत सरूपी समा रिहा। कलिजुग झूठा अन्ध अंध्यार, प्रभ साचा दिस ना आ रिहा। गुरमुख साचे आत्म जोत उज्जयार, प्रभ सोहँ नाम जपा रिहा। महाराज शेर सिँघ भरे भण्डार, पहली माघ वक्त सुहा ल्या। पहली माघ प्रभ भरे भण्डार। देवन को प्रभ एक दातार। सृष्ट सबाई खड़ी प्रभ दरबार। देवे दरस दान सोहँ शब्द करे वरतार । महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत जाए तार। सच दरबार प्रभ दरबारी। सच्चा प्रभ शब्द पसारी। जोत निरँजण निहकलंक विच मात अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि कीती खेल न्यारी। अचरज खेल कलिजुग प्रभ किया। जोत सरूपी जगाया दिया। प्रगट जोत निहकलंक सतिजुग रखाई साची नीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा निर्मल किया जिया। साचा प्रभ नैण मुँधारी। साचा प्रभ भगत उधारी। साचा प्रभ कृष्न मुरारी। साचा प्रभ राम अवतारी। साचा प्रभ बावन भेख धारी। साचा प्रभ कलिजुग जामा धारे निहकलंक अवतारी। साचा प्रभ बेमुखां करे ख्वारी। साचा प्रभ चार वरन एका जोत करे उज्जयारी। साचा प्रभ सोहँ देवे शब्द अधारी। साचा प्रभ गुण निधान नर अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सोहण चरन दुआरी। साचा प्रभ सच घर आया। साचा प्रभ प्रगट जोत सच थान सुहाया। साचा प्रभ निहकलंक जोत सरूपी भेख वटाया। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा होए सहाया। सतिगुर साचा सच दरबार। सतिगुर साचा सच वरते वरतार। सतिगुर साचा साध संगत जाए तार। सतिगुर साचा शब्द चलाए अपर अपार। सतिगुर साचा गुरसिख तारे कर निगम विचार। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार। साचा प्रभ सर्ब का ज्ञाता। साचा प्रभ वड दानी दाता। साचा प्रभ भगत जनां पित माता। साचा प्रभ आपणे रंग राता। साचा प्रभ कलिजुग प्रगट्या पुरख बिधाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती साचा नाता। चरन पड़े जो जन आए। शरन पड़े दी लाज रखाए। चरन धूढ़ जन मस्तक लाए। लिक्खया लेख प्रभ दए मिटाए। साचा प्रभ दे लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा धार निहकलंक बहत्तर जामे लिख्त कराए। साचे प्रभ वड कर्म कमावणा। भगत जनां लेख लिखावणा । चार वरन चार जुग माण दुआवणा। निहकलंक अवतार नर, प्रभ अबिनाशी आप अख्वावणा। झूठी सृष्ट सर्ब भुलावणा । महाराज शेर सिँघ कलिजुग विरले गुरमुख गावणा। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। गुरमुखां प्रभ रिहा समाए। दिवस रैण रैण दिवस, गुरसिख साचे दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कमाए। गुरसिख सोए गुर साचा जागा। आलस निंदरा प्रभ दर तों भागा। साचा शब्द प्रभ उपजावे अनरागा। अनहद धुन प्रभ वजाए

६०८
०१

वाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तराए पहली माघा। पहली माघ तेरी सति कमाई। सति पुरख निरँजण तेरी जोत जगाई। सतिजुग साचे प्रभ साचा जाए माण दुआई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची देवे वड्याई। साचा प्रभ दे वड्आया। सतिजुग साचे माण दुआया। पहली माघ जन्म दुआया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणया आप दाई दाया। गुरमुखां जोत जगाए, प्रभ साचा भूप। गुरमुख साचे प्रभ रिहा समाए, ना दीसे रंग रूप। गुरमुख साचे दरस दिखाए, प्रभ प्रगट जोत जोत सरूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे उज्जयार विच देह अन्ध कूप। जोत सरूप प्रभ प्रकाशया। अज्ञान अन्धेर गुरसिख नास्सया। साचा शब्द हिरदे वास्सया। सोहँ जप स्वास स्वास्सया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा देवे नाम भरवास्सया। साची धुंन सची धुन्कार। सोहँ शब्द प्रभ कराए जै जै जैकार। बेमुखां प्रभ मारे कर ख्वार। गुरमुखां देवे दरस अगम्म अपार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरा सहार। कलिजुग आया कृष्न मुरारा। छड्डुया झूठा देह मुनारा। जोत सरूपी पसर पसारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच करे वरतारा। साचे प्रभ तेरी साची कल। वेला अन्त ना जाए टल। आवे वक्त ना लावे घड़ी पल। सृष्ट सबाई जाए हल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल अचल। प्रभ साचे का साचा खेल। गुरसिख तेरा साचा मेल। जोत जगे बिन बाती तेल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा सज्जण सुहेल। साचे धाम प्रभ सुहाया। प्रगट जोत जोत जगाया। जोत सरूपी प्रभ साचे मेल मिलाया। धन्न धन्न धन्न सिँघ पाल चल प्रभ शरनी आया। प्रभ अबिनाशी किरपा निध, तेरे सीस छत्र झुलाया। तेरे कारज कीने सिद्ध, सिर तेरे हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे माण सवाया। आवण जाण प्रभ भेद चुकाई। एका जोत चार जुग विच ब्रह्मण्ड जगाई। साचे प्रभ साची दात तेरी झोली पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई हत्थ फड़ाई। गुरसिख प्रभ चरन हज़ूर। साध संगत ना दिसे दूर। मस्तक लाए चरन धूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म रंग चढ़ाए गूढ़। साचा दरबार विच मात लगाया। सर्ब घट वासी खिच चरन बहाया। सुर नर मुन जन प्रभ सेव लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर तेरे छत्र झुलाया। साचा प्रभ साचा नूरे। दे दरस आत्म करे भरपूरे। गुरसिख साचा प्रभ साचा सरधा पूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनहद शब्द वजावे तूरे। अनहद शब्द तेरी धुन्कार। मातलोक होए उज्जयार। बैकुण्ठ निवासी आए विच दरबार। चरन धूढ़ गुरसंगत जाए तार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, मातलोक आया जामा धार। साचा प्रभ सच दरबारा। साचा प्रभ पहली माघ गुरसिक्खां देवे मोख दुआरा। साचा प्रभ देवे दरस अगम्म अपारा। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे मुक्त दुआरा। साचा

प्रभ मुक्त दुआरी। साचा प्रभ दुतर तारी। साचा प्रभ कलि पार उतारी। साचा प्रभ गुरसिख तेरी जाए पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे जोत उज्जयारी। प्रगटे जोत प्रभ अबिनाशा। मातलोक किया प्रकाशा। साध संगत प्रभ किया वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए दासन दासा। गुरसिख तेरी उत्तम जाती। जोत जगाई ला आत्म बाती। देवे दरस प्रभ सुत्तयां राती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सुख दाती। गुरमुख साचे प्रभ दरस दिखाए। जोत सरूप प्रभ नज़री आए। चरन धूढ़ प्रभ देवे मस्तक लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे दया कमाए। प्रभ साचा अगम्म अथाह। जोत जगाए निहकलंक प्रभ साचा बेपरवाह। सोहँ वजाए साचा डंक, साचा शब्द धराए नां। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब थाएँ गुरसिक्खां होए सहा। साचे प्रभ सच घर आ। साचा शब्द प्रभ जाए वरता। भगत वछल प्रभ गिरधार साचा समां जाए सुहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख जाए दरस दिखा। वरतावणहार प्रभ अकेला। गुण निधान गुणी गहेला। विछड़यां प्रभ अन्त कराया मेला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अचरज खेल जगत विच खेला। साचे प्रभ मेल मिलाया। साध संगत भरम चुकाया। सच घर वासी आपणा भेद खुल्हाया। घनकपुर वासी, आत्म रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द अलाया। साचा शब्द सति वरतावणा। सति पुरखां प्रभ माण दुआवणा। साचे मार्ग प्रभ साचे लावणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दिवस रात ना देवे सवणा। साचे प्रभ तेरी साची सार। कर किरपा साचा बख्शे नाम अधार। जो जन आए चल प्रभ पग, प्रभ देवे मोख द्वार। आत्म मिटाए सारी हरस, जाए भरम निवार। अमृत मेघ प्रभ साचा बरस, आत्म भरे भण्डार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच सुच्च करे वरतार। गुरमुख साचे तेरा माण। पारब्रह्म सोहँ शब्द चार वरन पाए आण। निहकलंक वक्त सुहाए इक्क कराए रंक राजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच करे ध्यान। थान सुहाए आण प्रभ, साची जोत प्रगटा। थान सुहाए आण प्रभ, साची कार वरता। थान सुहाए आण प्रभ, सुख आसण चरन लगा। थान सुहाए आण प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जाए दरस दिखा। साचे प्रभ थान सुहाया। जोत सरूपी भेख धर, चरन मात विच पाया। साचा थान अन्त कलि प्रभ साचे आण सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाया। थान सुहाए आण प्रभ, दया नंद। थान सुहाए आण प्रभ, साध संगत उपजाए परमानंद। थान सुहाए आण प्रभ, गुरसिख रोग मिटाए बन्द बन्द। थान सुहाए आण प्रभ, सतिजुग साचा चाढ़े चन्द। थान सुहाए आण प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां आत्म करे अनन्द। थान सुहाए आण प्रभ, जोत सरूप जगत प्रकाशया। साध संगत जाए तार, जोत सरूप प्रभ अबिनाशया। थान सुहाए आण प्रभ, साध संगत

होए दासन दास्सया। थान सुहाए आण प्रभ, बैकुण्ठ निवासी विच मात निवास्सया। थान सुहाए आण प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सर्ब घट वास्सया। थान सुहाए आप प्रभ, चरन लए टिका। थान सुहाए आप प्रभ, हँकारीआं हँकार जाए गंवा। थान सुहाए आप प्रभ, गुरसिक्खां जाए दरस दिखा। थान सुहाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ साध संगत साची शरना। साचे प्रभ तेरी साची कारा। साचे प्रभ सच विहारा। साचे प्रभ तेरी जोत आकारा। साचे प्रभ तेरा सच वरतारा। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारा। साचा प्रभ सारंगधर। साचा प्रभ अवतार नर। साचा प्रभ इक्क जोत हरि। साचा प्रभ गुरसिख चरन लाग जाए तर। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ, शब्द भण्डारे जाए भर। साचा प्रभ आस पुजारी। साचा प्रभ सदा बनवारी। साचा प्रभ दर्द निवारी। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ, भगत वछल गिरधारी। साचे प्रभ शब्द लिखाया। सोहँ शब्द जग बाण लगाया। कलिजुग खेल प्रभ दे मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां माण गंवाया। कलिजुग तेरा भेख मिटावणा। झूठी काया सच वरतावणा। साचा शब्द प्रभ नाम जपावणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा कर्म कमावणा। साचा प्रभ लिखाए लेखा। शब्द चलाए गुआए भरम भलेखा। कलिजुग मिटाए प्रभ झूठी रेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द चलाए एका। साचा शब्द प्रभ जगत चलाए। कलिजुग वेला अन्त कराए। आपणा भाणा जग वरताए। गुरमुख वेला अन्त साचा प्रभ दिखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा खेल रचाए। साचा खेल प्रभ आप रचावणा। जीव जन्त सर्ब बिल्लावणा। हाहाकार विच जगत करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाणा कलि वरतावणा। साचा प्रभ सच मेहरवाना। साचा प्रभ भगत भगवाना। साचा प्रभ सोहँ देवे साचा दाना। साचा प्रभ आत्म उपजावे जोत महाना। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। साचे प्रभ सच वक्त सुहावणा। आया वक्त प्रभ भेद खुल्हावणा। जोत सरूपी प्रगट जोत प्रभ साचा डंक वजावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजा राणा सर्ब चरन लगावणा। राजा राणा प्रभ चरन लगाए। शब्द मार प्रभ आप कराए। दिवस रैण सौण ना पाए। सिँघ सिँघासण उप्पर कोई रहण ना पाए। दर दर मंगण, कोई भिख ना पाए। साचा प्रभ आत्म लाए नाम रंगण, जो चल आए सरनाए। कोई जीव ना दीसे नग्न, प्रभ साचा दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा समां सुहाए। साचे प्रभ साची जोत जगा। राजे राणे लैणे पकड़ उठा। एका दिखावे साचा दर, भज्जे आवण वाहो दा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची लिख्त रिहा लिखा। साची लिख्त प्रभ रिहा कराए। सुर नर मुन जन, कोए सार ना पाए। साची शब्द धुन, प्रभ गुरसिख उपजाए। कर किरपा आपणी बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए।

सतिगुर साचे सच कर्म कमावणा। पार ब्यासों चरन टिकावणा। उलटे वहिण जगत वहावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखावणा। ब्यासों पार प्रभ चरन टिकाए। सृष्ट सबाई प्रभ हिलाए। वड जोधे सूरबीर प्रभ टुम्ब उठाए। कलिजुग वरते साची कल, प्रभ विच बबाण बिठाए। ना लग्गे घड़ी पल, प्रभ अग्न मेघ वरसाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, तेरी अन्तिम बिध बणाए। साचा प्रभ सच बणत बणाए। सृष्ट सबाई एका अग्न लगाए। दर दर घर घर प्रभ साची जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर बेमुख ना कोई पाए। साचे प्रभ ऐसा खेल रचावणा। सृष्ट सबाई दो धड़ करावणा। बेमुख जीवां अन्त काल कलि काती सीस कटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट ऐसा युद्ध करावणा। उठण जोधे वड सूरबीर। कलिजुग तेरी करन अख़ीर। बेमुख जीवां कोए ना बन्ने धीर। दुखी जीव सर्ब बिल्लायन, पै जाए सर्ब वहीर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, ऐसी पाए भीड़। जोत सरूप सृष्ट समाई। सृष्ट सबाई प्रभ टुम्ब उठाई। सर्ब जीव प्रभ बिरद रखाई। बेमुख भुल्ले प्रभ दिस ना आई। एका दूआ कोए रहण ना पाई। अन्तकाल कलिजुग आपणा आप गए गुआई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठ अडोल देवे सज़ाई। कलिजुग जीवां प्रभ उलटी मति कराए। हँकारीआ विच हँकार वसाए। सृष्ट सबाई रण भूमि बणाए। कलिजुग जीव दए खपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बिध आप बणाए। साचे प्रभ एह रचन रचाया। वैर विरोध विच संसार वधाया। घर घर सभ जोधन जोध, प्रभ टुम्ब उठाया। शब्द लिखाए प्रभ अगाध बोध, महाराज शेर सिँघ बेमुख जीवां अन्त कराए। बेमुख जीव होए बेताले। आपणा आप ना कोई संभाले। चार कुन्ट वज गए दमामे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीआं करे ख़ामे। सतिगुर साचे एह रंग रचाया। सृष्ट सबाई विच समाया। राउ रंक इक्क भेख धराया। सृष्ट खपाण दा रचन रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां बणत बणाया। साचा प्रभ बणत बणाए बिधनाना। कलिजुग जीव होए निधाना। साचा शब्द ना सुणया काना। कलिजुग भुल्लया प्रभ भगवाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा देवे दुःख महाना। साचे प्रभ सच कारज करना। बेमुख जीवां दुःख डाहढा भरना। अन्तकाल कलि दुःख भुक्ख विच मरना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, एका तेरी साची सरना। साचा प्रभ सच शब्द लिखाए। झूठी दुनियां विच अग्न लगाए। वेले अन्त ना होए कोए सहाए। कलिजुग जीव सर्ब बिल्लाए। कोई दुखिआर प्रभ दर ना पाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अग्न जोत दे लगाए। साची जोत प्रभ अग्न लगाए। बेमुख जीव भस्म कराए। जो दिसे प्रभ नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो दिसे सो दए मिटाए। कलिजुग जीव जीव हत्यारा। बेमुख होए दुष्ट दुराचारा। काम क्रोध आत्म चल्लया विकारा। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां मनों विसारा । बेमुखां प्रभ नज़र ना आए । मदिरा मास रहे रसन लपटाए। वेले अन्तकाल प्रभ साचा साची दे सज़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख भुक्ख सर्ब वरताए। भुख रोग प्रभ जगत लगाया। दर दर भिक्ख मंगाया। रंकां तांईं प्रभ जगाया। राणयां तांईं तख्तों लाहया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा कर्म कमाया। साचा प्रभ सति सरीर। निहकलंक वड पीरन पीर। जामा घनकपुर विच धारया, सोहँ शब्द चलाया तीर। कलिजुग पार उतारया, चार कुन्ट पै जाए वहीर। महाराज शेर सिँघ साचा दर दरबार, गुरमुख आत्म होए शांत सरीर। गुरसिख तेरा माण रखाया । प्रभ अबिनाशी दर दरवेशां इक्क कराया। वड वड भूप प्रभ सर्ब जगाया। सतिजुग साची एका आदेसा सोहँ इक्क शब्द लिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, निहकलंक नाउँ धराया। निहकलंक सद निरवैर। सृष्ट सबाई वरते कहर। वरते कहर सवा पहर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेला अन्त ल्याए ना लाए देर। साचा प्रभ कर्म कमाए। आपणा भाणा सति वरताए। जूठे झूठे प्रभ नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, लिख्त भविख्त सति कराए। झूठी देह प्रभ दे तजाया। जोत सरूपी आपणा भेख वटाया। बेमुख जीवां दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल रचाया। साचा जगत प्रभ वरया। प्रभ अबिनाशी कदे ना मरया। प्रभ सर्ब गुणतास कदे ना डरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा तेरी शरन लाग कलि तरया। गुरसिख साचे गुरचरन प्यार। भव सागर तों होया पार। जन्म ना पावे दूजी वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे दरस सति करतार । साचे प्रभ तेरी ओट। सोहँ साची शब्द लगावे चोट। कलिजुग जीव होए बेमुख प्रभ साचा कढ्ढे खोट। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, तेरे दर कदे ना आवे तोट। तेरा दर वड भण्डारा। सृष्ट सबाई देवे आहारा । राउ रंक तेरे चरन दुआरा। साचा नाम प्रभ दिया आधारा। एका बख्शे प्रभ मोख दुआरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच दिसे दरबारा। सर्ब कल प्रभ वरताए। साचा भेद प्रभ रिहा खुल्हाए। वीह सौ अट्ठ बिक्रमी प्रभ साची लिख्त लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ दे वड्याए। पहली माघ प्रभ लाए रंग। साचा दान गुरसिख साचे प्रभ दर आए मंग। प्रभ आत्म चाढ़े साचा रंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म चढ़ाए मजीठी रंग। आत्म रंग गुरसिख चढ़ाया। प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया। साचा बंधन प्रभ कटाया। त्रैलोकी नंदन सिर हत्थ टिकाया। गुरसिख दीप आत्म जगण, महाराज शेर सिँघ होए सहाया। सन्त मनी सिँघ तेरी वड्याई। धन्न धन्न धन्न, जिन्हां तेरी सेव कमाई। साची सेव किया मेल साची धुन उपजाई। गुरमुख साचे सच कीनी सेव, आत्म होए रुशनाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, तेरी टुट्टी गंढ्ढ वखाई। मनी सिँघ मन साचा मानया।

प्रभ अबिनाशी साचा जानया। एका ओट रखाए प्रभ चरन ध्यानया। साध संगत वरताए उपजाए ब्रह्म ज्ञानया। धन्न धन्न धन्न मनी सिँघ जिस तेरी सेव कमाई, प्रभ देवे जोत महानया। मनी सिँघ एह पाई वथ। बख्शे सर्ब कला समरथ। साचा नाम प्रभ साचे दिया रथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलाए तेरी साची गथ। साचे सन्त तेरी साची सेव। प्रभ अबिनाशी देवे साचा मेव। प्रगटे जोत वड देवी देव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा कोई ना जाणे भेव। मनी सिँघ तेरा प्रभ रखवाला। गुरसिख तेरा आत्म लाल गुलाला। प्रभ अबिनाशी सच दीपक विच गुरसिख आत्म बाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी लाज रखावण वाला। गुरसिख तेरी सेव कमाई। दिवस रैण रैण दिवस एका ध्यान रखाई। वेले अन्त अन्तकाल प्रभ साचा होए सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा अन्त दे मुकाई। प्रभ अबिनाशी साचा कहणा। वेले अन्त अन्तकाल विरले गुरमुख रहणा। साध संगत जामा धार सोहँ देवे प्रभ आत्म गहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत लए साचा लहणा। साचा लैणा नाम दान। कलिजुग जामा धारया, वड गुणी निधान। एका जोत निरंकारया, जोत जगे महान। भुल्ला सर्ब संसारया, भुलाया निहकलंक बली बलवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पकड़ ल्यावे सर्ब राजान। साचा प्रभ सच धाम सुहाए। चार कुन्ट जै जै जैकार कराए। जो कल वरते सो प्रभ वरताए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुखां ब्रह्म ज्ञान दवाए। आया वक्त भगत भगवाना। प्रभ आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। बेमुखां अन्ध अंध्यार रखाणा। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, आत्म साची जोत जगाना। जोत सरूप जोत जगाए। गुरसिख साचे सद रिहा समाए। गुरसिख तेरा निहकलंक, विच मात हार ना खाए। एका शब्द रखाया अंक, प्रभ आत्म विच लिखाए। सुहाए द्वार बंक, प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी सरनाए। साचे प्रभ सच डंक वजाया। चार कुन्ट पल्ला फिराया। निहकलंक प्रगट जोत विच मात दरस दिखाया। जामा धार आप करतार, जोत सरूपी भेख वटाया। बेमुख जीवां प्रभ गिरधार, कलिजुग नज़र ना आया। गुरसिक्खां प्रभ पाई सार, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा आत्म रंग चढ़ाया। गुरसिख तेरे साचे गुण, प्रभ अबिनाशी आत्म उपजावे साची धुन। साचा राग साचा नाद ल्या कन्न सुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस गुरमुख कलिजुग चुण। प्रभ अबिनाशी भोग लगाया। साध संगत गुरप्रसाद वरताया। दुःख दलिद्र प्रभ सर्ब गुआया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरे आत्म दुखड़े जाए गुआया। भोग लगाए आप गिरधार। गुरसंगत गुर जाए तार। पारब्रह्म पूरन अवतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक अवतार। गुरप्रसाद गुर दर पाया। प्रभ अबिनाशी आपणा भोग लगाया।

दु:ख दर्द निवारी साचा कर्म कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया । पंचम नाम पंचम शाम, पंचम प्रभ मुख रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम विच सद समाए। पंचम देवे प्रभ वड्याई। पंचम दर दरबार मुख रखाई। पंचम पति प्रभ आप रखाई । वेले अन्त होए सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणत आप बणाई। पंचम नाम पंचम होए जगत प्रधान। पंचम विच मात राजान। पंचम होवे चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पंचम देवे साचा माण। पंचम प्रभ पति रखाए। पंचम प्रभ होए सहाए। पंचम प्रभ जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पंचम विच रिहा समाए। पंचम प्रभ आप वड्आया। पंचम प्रभ सतिजुग सिरताज बहाया। पंचम प्रभ वड सिक्दार बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम तेरा माण रखाया। पंचम होए विच संसारी। पंचम प्रभ जोत आकारी। पंचम प्रभ सदा अधारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पंचम जाए पैज संवारी। पंचम प्रभ बणत बणाई। पंचम प्रभ पंचायत कराई। पंचम प्रभ साचे मार्ग लाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम आत्म करे रुशनाई। पंचम एह प्रभ माण दुआया। सर्ब जीआं सिरताज बणाया। साचा मार्ग जगत चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार यारां वक्त चुकाया। एका दर प्रभ रखाए। चार वरन प्रभ होए सहाए। कलिजुग भेख रहण ना पाए। मढ़ी मसाण कोए पूज ना जाए। एका शब्द प्रभ मुख रखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत प्रगटाए। सर्ब हिन्द प्रभ मार्ग लाए। गुणी गहिंद साचा राह चलाए। वडे वड राज प्रभ आपणी शरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जोत प्रगटाए। राणयां प्रभ शरन लगा। साचा शब्द कन्न सुणा। आत्म धुंन शब्द उपजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिला। गुरमुख साचे तेरा साचा राह। रसना जप प्रभ अबिनाशी, आत्म दु:ख सर्ब गंवा। बेमुख जीवां कलि अन्त ना मिले कोई थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लए चरन लगा। साचे प्रभ सच दया कमाया। कर किरपा आपणी शरन लगाया । चरन धूढ़ लै गुरसिख साचे मस्तक तिलक लगाया। अमृत मेघ प्रभ आत्म बरस, तन मन हरा कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। साचे प्रभ सति वरताणा। लिक्खया शब्द सति वरताणा। सन्त मनी सिँघ सतिजुग साचे, साचा गुर उपजाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी तिलक लगाणा । जोत सरूप प्रभ जामा धार। सन्त मनी सिँघ प्रभ जाए तार। साचा शब्द उपजे आत्म छड झूठी देह डंक डफार। साचा प्रभ एका जोत जगावे, सच करे आकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच करे वरतार। सन्त मनी सिँघ साची सेव कमाई। दिवस रैण कलम चलाई। साची लिख्त प्रभ आप कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख दए लिखाई। सन्त मनी सिँघ सति शब्द लिखाए।

६१५
०१

दुष्ट दुराचार कोई रहण ना पाए। बेमुख कलिजुग जीव अन्त लए खपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त दए सज़ाए। सन्त मनी सिँघ कर्म कमाया। धुरों लिक्खया लेख सन्त मनी सिँघ प्रभ दर पाया। साचा प्रभ ल्या वेख, नेत्र पेख आत्म तृप्ताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप मेल मिलाया । सन्त मनी सिँघ घाल बहु घाली। दुखीआ जीव होए बेहाली। साचे प्रभ साचे सन्त आत्म चाढ़ी लाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्त बणया आप रखवाली। भय भयानक प्रभ सहाए। प्रगट जोत दरस दिखाए। दुःख भुक्ख सभ रोग मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्त होए सहाए। दरस देख भए अनन्द। साचे सन्त आत्म रहे परमानंद। सुख समाए दुःख गंवाए बन्द बन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चाढ़े साचा चन्द। भगत जनां प्रभ सगला साथ। देवे दरस रघुपत रघुनाथ। जुगो जुग रक्खे दे कर हाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाए विच माथ। कलिजुग प्रभ भगत तराए। भगत जनां प्रभ होए सहाए। दे दरस प्रभ चिन्त मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर्म धर्म दोए सति कराए। कर्म धर्म गुरसिख दवाए। साचे मार्ग प्रभ साचा लाए। साची मति प्रभ दे रखाए। कलिजुग पति प्रभ आप रखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां होए सहाए। भगत जनां तेरा धरवास। भगत जनां प्रभ सद रक्खे वास। कलिजुग दुखड़े कर जाए नास। वेले अन्त करे बन्द ख़ुलास। चरन प्रीती जन मांगे दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म करावे रास। भगत जनां प्रभ भए अनन्दा। सदा सदा प्रभ सद बख्शिंदा। देवे माण प्रभ विच हिन्दा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सर्ब तांईं बख्शिंदा। भगत जनां प्रभ पार उतारा। भगत जनां सोहँ शब्द मिले भण्डारा। भगत जनां प्रभ देवे नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पार उतारा। भगत जनां प्रभ पार उतारे। देवे दरस अगम्म अपारे। बैठे अडोल आप गिरधारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां होए सहारे। भगत जनां प्रभ सहारा। भगत जनां प्रभ सच दुआरा। भगत जनां कलि मिल्या निहकलंक अवतारा। भगत जनां प्रभ देवे दरस न्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगाए जोत जगत आकारा। साचे प्रभ जोत जगाई। मातलोक होए रुशनाई। पहली माघ रुत्त सुहाई। प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत, सतिजुग साची लिख्त लिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रघुपति आप रघुराई। साचा प्रभ सदा रखवाला । भगत रच्छक सदा प्रितपाला। सोहँ शब्द सच दीपक बाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आत्म देवे नाम साची माला। गुरसिख आत्म जोत करे उज्जयारे। प्रभ अबिनाशी भरम निवार दुष्ट दुराचार दर दुरकारे। कर ख्वार विच संसार हँकार निवारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक अवतारे। निहकलंक

६१७
०१

प्रभ साचा आया। रागन राग प्रभ शब्द सोहँ अलाया। पहली माघ साचा शब्द सिरताज बणाया । महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साचा कर्म कमाया । साचा प्रभ सति कर्म कमाए। आप अपरम्पर रिहा समाए। कलिजुग झूठा अडम्बर प्रभ दे मिटाए। पीर पैग़ंबर कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत जगाए। साचा प्रभ गुरसिख तेरा वड मीतला। गुरचरन प्रीती मानस जन्म जग जीतला। सोहँ नाम रसना जप सद रहे अतीतला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रभ साचे की साची रीतला। आपणे रंग आप प्रभ भीन्ना। चार वरन इक्क प्रभ कीना। साचा दान सोहँ प्रभ साचे दीना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सद जीव रसना चीना। चार वरन प्रभ इक्क कराए। साचा नाम सोहँ प्रभ शब्द चलाए। आत्म साचा रंग मजीठ चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग साचा राह दिखाए। सतिगुर तेरा साचा संग। गुरमुख विरले ल्या मंग। कर दरस पार जाए लँघ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म चाढ़े साचा रंग। कर दरस आत्म तृप्ता। जगत माण सर्ब तजा। बैकुण्ठ निवास सर्ब रखा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच दवाए थां। साचा प्रभ सच धाम पुचाए। जोत सरूप सर्ब रिहा समाए । साची जोत डगमगाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दया कमाए। दया करे दीन दयाला । साचा शब्द करे रखवाला। साचा प्रभ गुर गोपाला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा सदा प्रितपाला। साचा प्रभ सदा संग साथ। वड वड आप वड्डा रघुनाथ । साचे लेख लिखावे माथ। सोहँ चलावे साची गाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान त्रैलोकी नाथ। तीन लोक प्रभ जोत आकार। सर्ब कल वरते विच संसार। मात पताल अकाश रक्खे सर्ब आकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच करे वरतार। सिँघ आसण प्रभ तजाए। रंकां विच रंक हो जाए। सद अभेद प्रभ विच समाए। निमाणयां प्रभ सदा माण रखाए। कलिजुग अन्तिम खेल, जामा धार निहकलंक पहली माघ कराए। पहली माघ सच तख्त सुहाया। कलिजुग बेड़ा अन्त कराया। त्रैलोकी नाथ तीन लोक डुलाया। साचा साहिब सगला साथ, निमाणयां सद होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाया। कलिजुग जामा धारे विच पुरी घनक। चन्द सूरज करन निमस्कारे बार बार बार अनक। साची जोत होए आकारे, जन भगतां लाए आत्म तनक। सोहँ शब्द देवे जोत जगाए, लिखाए लेख प्रभ अगणत । पवन उनन्जा सिर छत्र झुलाए, गुरमुख साचे प्रभ कीने सन्त। पकड़ ल्याए प्रभ चरन दुआरे, वड जोधे वड दंत। दुष्टां प्रभ हँकार निवारे, पूरन धरे जोत भगवन्त। सोहँ साचा शब्द उचारे, रसना गायन सर्ब जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ चार कुन्ट जै जै जैकार कराए, सतिजुग साची बणत बणाए। जै जै जैकार प्रभ कराया। साचा शब्द प्रभ उपजाया। साची धुन उपजा, प्रभ सुन खुल्हाया। रुण झुण गुरमुख जाणे, साचा

६१७
०१

राग सुणाया। प्रभ साचे आपणा भेद खुल्हाया। गुरमुख साचा जाए मन्न, जोत सरूपी प्रभ दरस दिखाया। हउमे रोग लाथे तन, साची जोत करे रुशनाया। जुगो जुग तारे भगत जन, कलिजुग जामा घनकपुरी विच पाया। घनकपुरी प्रभ जामा पाए। उन्नी सौ पंजाह बिक्रमी लिख्त लिखाए। साल अठवंजवें प्रभ उलटी गंग वहाए। कलिजुग अन्तिम अन्तकाल प्रभ जोत सरूपी भेख वटाए। छब्बी पोह वीह सौ बिक्रमी प्रभ झूठी देह तजाए। साचा जगत वेस कर, प्रभ आपणी कल वरताए। गुरसिक्खां दुःख दूर कर, प्रभ आत्म साचा सुख उपजाए। गुरसिख आत्म नूरो नूर कर, प्रभ साची जोत जगाए। सोहँ शब्द सति सरूर कर, नाम ख़ुमारी प्रभ चढ़ाए। गुरसिख पूरन आत्म भरपूर कर, प्रभ साची जोत विच टिकाए। बेमुख कलिजुग जीव चूरो चूर कर, सतिजुग साचा राह चलाए। जोत सरूपी खेल कर, जोत सरूप सिँघ पूरन विच रिहा समाए। साची जोत मात धर, निहकलंक प्रभ नाउँ धराए। कलिजुग जीव ग़रूर कर, आपणा आप गए गंवाए। भरम भुलेखे दूर कर, प्रभ आपणा भेद खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ आपणा मेल मिलाए। दर आए जीव जो हँकारी। प्रभ आत्म तोड़े ख़ुमारी। एका शब्द प्रभ लाए बाण कटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ तेरी वरते सच सिक्दारी। गुरसिक्खां प्रभ हुक्म सुणाए। चार कुन्ट पल्ला फिराए। वाली दो जहान विच मात दे आए। अभिमानीआं प्रभ जाए माण गंवाए। ज्ञानीआं जाए प्रभ ब्रह्म ज्ञान दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। सतिजुग साचा मार्ग लाया। सच सच सच विच जगत वरताया। बेमुखां हत्थ ठूठा फड़ाया। प्रभ अबिनाशी जिन्हां भुलाया। दर दर मंगण भिक्ख ना पाया। चार कुन्ट प्रभ साचे आपणा खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाया। चार वरन प्रभ जोत जगाए। जोती जोत प्रभ मेल मिलाए। जुगत मुक्त दा भेद खुल्हाए। वड दाता गुण निधान आपणा जाए नाम जपाए। भिबूखन कँवल नैण, आपणा जाए भेद खुल्हाए। खोल्ह देवे प्रभ तीजा नैण, जो चल आयन सरनाए। साध संगत प्रभ देवे साचा लहिण, पहली माघ जो दर्शन पाए। आओ आओ कलिजुग जीव प्रभ दर आओ। साची जोत कलि प्रकाश, भरम भुलेखे सारे लाहो। हंगता रोग कराओ नास, भाण्डा भरम भन्नाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, स्वच्छ सरूप दर्शन पाओ। साध संगत प्रभ बलिहार। दिवस रैण करे मंगलाचार। आत्म देवे प्रभ सोहँ साचा विवहार। एका जोत धरे विच मुरार। झिरना झिराए प्रभ अमृत मेघ विच आत्म धार। साचा शब्द साची धुन, प्रभ उपजाए धुन्कार। साचा प्रभ वड गुण दाता, साध संगत कलि जाए तार। गुर संगत बणाए भैण भ्राता, साचा शब्द देवे भण्डार। सतिजुग कराए सर्ब एका ज़ाता, दूसर करे प्रभ ख्वार। एका बख्शे प्रभ चरनीं नाता, एका करे जोत आकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा,

साचा शब्द धरे विच संसार। साध संगत मन वज्जे वधाई। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाई। नेत्र पेख गुरसिख साचे आत्म तृप्ताई। जो कल वरते लैणा वेख, साचा प्रभ रिहा सुणाई। झूठा मिटाए अडम्बर भेख, सोहँ साची नईआ चलाई। भगत जनां प्रभ लिखाए साचे लेख, सोहँ साचा शब्द जो रसना गाई। साचे सन्त लगाई साची मेख, मस्तूआणा सच धाम उपजाई। कलिजुग जीव रहे वेखा वेख, नज़र ना आवे प्रभ रघुराई। ना कोई रहे मुसायक शेख़, साची जोत प्रभ प्रगटाई। मिटाए वेद पुराण बणे अनेक, एका साचा शब्द चलाई। चार वरन प्रभ बख्शे एका टेक, साची मति जगत वसाई। सोहँ शब्द चलाए साची देग, चार वरन आत्म तृप्ताई। अमृत बख्शे प्रभ साचा मेघ, गुरसिक्खां आत्म शांत कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ लिख्त लिखाई। साध संगत प्रभ दर माण। पतित पापी चरन लाग सर्ब तर जाण। सोहँ साचा शब्द प्रभ आत्म मारे बाण। मूर्ख मुग्ध अञ्याण दर आए होयण चतुर सुघड़ सुजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा देवे नाम गुणी निधान। साचे प्रभ सच नाम दवाया। हउमे ममता रोग गंवाया। एका शब्द आत्म उपजाया। आत्म सुख प्रभ विच देह वसाया। उतरे भुक्ख साध संगत पहली माघ प्रभ दर्शन पाया। बेमुख होए कलिजुग जीव प्रभ अबिनाशी दिस ना आया। एका जोत प्रभ अलख, अलख अलख लिखाया। मदिरा मासी प्रभ कीने वख, नर्क निवास रखाया। बेमुख जीव अग्न जोत जलाए जिउँ कख, वेले अन्त भस्म कराया। सृष्ट सबाई होई सथ, सोहँ शब्द ना रसना गाया। वेला गया ना आवे हत्थ, बेमुखां वक्त गंवाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगट जोत कलिजुग, पहली माघ साध संगत माण दवाया। साध संगत तेरा सच दरबार। धरी जोत निहकलंक अवतार। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जो आए चरन द्वार। सुफल कराई मात कुक्ख, आत्म गया हँकार। आत्म उतरे सारी भुख, प्रगट आया नैण मुँधार। साध संगत सद सुखणा सुक्ख, महाराज शेर सिँघ देवे दरस जोत सरूप एकँकार। जामा धार निहकलंक विच मात दे आया। इन्दलोक ब्रह्मलोक शिवलोक बैकुण्ठ निवास तजाया। साची कर जोत प्रकाश, मातलोक प्रभ जामा पाया। साध संगत प्रभ हिरदे वास, साचा प्रभ जिस रसना गाया। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाश, आपणा भेव खुल्हाया। साध संगत प्रभ सद वसेरा। अन्तकाल कलिजुग करे नबेरा। कर्म मार कर ख्वार, चार लक्ख बत्ती हज़ार प्रभ अबिनाशी चुकाया डेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ साध संगत तेरा जाए बन्न्हे बेड़ा। पहली माघ दिवस वडभागा। बेमुख सोया गुरमुख जागा। प्रभ साचे दी चरनी लागा। झूठी काया ना लागे दाग़ा। साचा शब्द प्रभ उपजावे साचा रागा। अनहद धुन उपजाए वजाए साचा वाजा। महाराज शेर सिँघ साध संगत तेरी रक्खे लाजा। साध संगत प्रभ भए बनवाली। वेले अन्त होए रखवाली। गुरमुख साचे प्रभ बणया

साचा पाली। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दो जहानां वाली। जामा धार प्रभ गिरधार, दुष्ट दूत प्रभ सर्ब सँघारे। एका दूआ प्रभ भउ निवार, साची जोत करे मात अकारे। आत्म देवे चरन प्यार, दिसे प्रभ नैण मुँधारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत सदा बलिहारे। साध संगत प्रभ सुरत दवाए। साध संगत प्रभ आत्म मैल गंवाए। साध संगत प्रभ सच सुच्च वरताए। साध संगत प्रभ साचा, हउमे ममता नास कराए। साध संगत पहली माघ महाराज शेर सिँघ हुक्म सुणाए। पहली माघ प्रभ हुक्म सुणाया। सतिजुग साचे मुख रखाया। सतिजुग वरते जो प्रभ वरताया। गुरमुख साचे इक्क ना दिसण दो, प्रभ अबिनाशी भेद खुल्हाया। साध संगत ना बेमुख हो, वेला अन्तकाल कलि आया। प्रभ सोहँ धागे लए प्रो, गुरमुख साचे माला कंठ बणाया। आत्म छड्ड झूठा ध्रो, वैर विरोध वधाया। गुरमुख साचा जगत निर्मोह, प्रभ साचे चरन प्यार रखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग साचा राग सुणाया। साध संगत प्रभ दर परवान। सच्चा शब्द सच्चा फ़रमाण। निन्दक दुष्ट ना प्रभ दर पाण। गुरमुख साचे गुरसंगत अख्वाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा देवे शब्द निशान। साध संगत तेरा साचा रूप। महिंमा तेरी जगत अनूप। लिख्त लिखाए प्रभ वड भूप। साची जोत टिकाए विच सति सरूप। महाराज शेर सिँघ करे प्रकाश विच आत्म देह अन्ध कूप। अज्ञान अन्धेर प्रभ चुकाया। साचा दीपक देह जगाया। सोहँ साचा शब्द विच वसाया। पवण सरूपी स्वास चलाया। स्वास स्वास स्वास प्रभ सोहँ उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत साचा हुकम सुणाया। साध संगत तेरी साची रीती। एका बख्शे प्रभ चरन प्रीती। झूठी सृष्ट होई कुरीती। गुरमुख साचे प्रगट जोत प्रभ परखी नीती। बिरध बाल जुआन उधारे प्रभ आत्म सीतल कीती। जोत जगाए अगम्म अपारे गुरसिख आत्म रहे अतीती। विच झूठे महल्ल मुनारे महाराज शेर सिँघ सच चलाई रीती। साचा प्रभ शब्द लिखंदा। साचा प्रभ सदा बख्शिंदा। साचा प्रभ तेरा आत्म तोड़े जिंदा। साचा प्रभ साध संगत उपजावे परमानंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग मिटाए झूठा धन्दा। साध संगत सिर तेरे ताजा। देवे दात वड राजन राजा। प्रगटाए जोत निहकलंक विच माझा। जोत सरूपी भेख प्रभ अबिनाशी साजा। शब्द लिखाए वरताए पकड़ ल्याए प्रभ राणा राजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी रक्खे लाजा। साध संगत प्रभ दुःख मिटाए। साध संगत प्रभ भुख गंवाए। साध संगत प्रभ सुख दवाए। साध संगत प्रभ निजानंद उपजाए। साध संगत प्रभ चरन सेव लगाए। साध संगत प्रभ आपणा भेद खुल्हाए। साध संगत प्रभ विच देवी देव माण दवाए। साध संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला अन्त दए दिखाए। साध संगत प्रभ तेरा रोग मिटा। सन्त मनी सिँघ शब्द सति करा। दुःख भुक्ख प्रभ सर्ब दए गुआ। गुरमुखां

लेख साचा सन्त सतिजुग गया लिखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तकाल दए कलि भुगता। सन्त साचे कलम चलाई। गुरसिक्खां दी बणत बणाई। मातलोक देवे वड्याई। सहँसर विच नाम लिखाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वाक् भविख्त सच कराई। भविख्त वाक प्रभ उपजाया। साचे सन्त शब्द सुणाया। होए अटंक प्रभ लिखवाया। एका नाम प्रभ आत्म रंग चढ़ाया। साचा दान प्रभ दर मंग, सन्त आत्म सुन्न खुल्हाया। अमृत आत्म वरसे गंग, प्रभ अमृत मेघ वरसाया। कलिजुग बेड़ा गया लँघ, विच भंडाल देह तजाया। प्रभ साचे लाया साचे अंग, विच मात जन्म दवाया। होए सहाई सदा अंग संग, साची जोत प्रभ दे प्रगटाया। प्रभ साचे दा साचा डंक, जुगो जुग जगत वजाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा मेल मिलाया। साचे सन्त प्रभ जन्म दवा। साचा जन्म सति करा। साचा बंस जगत उपजा। विष्नूं बंसी प्रभ अख्वा। साची जोत प्रभ दे जगा। निहकलंक सिर हत्थ टिका। साचा तिलक प्रभ दे लगा। सतिगुर साचा सतिजुग जाए बणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त जाए करा। साचे सन्त प्रभ जोत टिकाए। साचे लेख विच ललाट लिखाए। जोत सरूपी भेख धार प्रभ विच मात दे आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पहली माघ सतिजुग साचा लाए। सतिजुग साचे तख्त बहाया। प्रभ अबिनाशी सिर हत्थ टिकाया। करोड़ तेतीस चरन लगाया। शिव शंकर भगती लाया। जटा जूट धार कोई रहण ना पाया। एका बाण सोहँ प्रभ शब्द लगाया। साचा मूल शिव त्रिसूल प्रभ वेले अन्तकाल कलिजुग लाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका नाम जगत तराया। शिव शंकर प्रभ उपाए। साची जोत विच टिकाए। साचा शब्द देह वसाए। सुरत शब्द मेल कर, विच मात माण दवाए। अचरज प्रभ खेल कर, एका धुन उपजाए। कलिजुग जामा धार निहकलंक, चार जुग दा भेत खुल्हाए। चार जुग गए बीत। सृष्ट सबाई होई भय भीत। गुरमुख साचे मानस जन्म ल्या जग जीत। कर दरस निहकलंक, काया होई सीत। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची बख्शे चरन प्रीत। साची प्रीत प्रभ चरन लगाओ। मदिरा मास मनों तजाओ। सोहँ साचा शब्द रसना गाओ। आत्म भुक्ख सर्ब मिटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर वासी निज आत्म पाओ। मदिरा मास जिस जन तजाया। मिल साध संगत मंगल गाया। मातलोक प्रभ माण दवाया। ऊँचो ऊँच प्रभ साचा ऊँचे दर बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। मदिरा मास जो जन आहारी। प्रभ अबिनाशी करे ख्वारी। बेमुख जीव होए नर नारी। मानस जन्म गए कलि हारी। कलिजुग लिखे लेख दुष्ट दुराचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त करे ख्वारी। वेले अन्त प्रभ ख्वार कराए। चार कुन्ट हाहाकार मचाए। शब्द मार कर ख्वार, चार कुन्ट वहीर कराए। सोहँ शब्द मार कर, कलिजुग जीवां दए रुलाए। दर

६२२
०१

दर प्रभ ख्वार कर, नर नारी सर्ब भुलाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत सिर हत्थ टिकाए। कलिजुग अन्तिम करे ख्वारी। पतियां तांईं छड्ड जायण नारी। कलिजुग जीवां मति गई मारी। विभचारी होयण ख्वार कुआर कन्यां पति उतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची मार सृष्ट प्रभ मारी। शब्द मार प्रभ जगत कराए। घर घर अग्न जोत लगाए। दर घर प्रभ सर्ब तजाए। गुरमुख साचा सच घर बैठ, प्रभ अबिनाशी रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग भाणा सति वरताए। कलिजुग जीवां अन्त विललावणा। दिवस रैण ना मिले सवणा। मायाधारी दर दर भवणा। करे ख्वारी निहकलंक प्रभ अख्वावणा। साध संगत प्रभ सद बलिहारी, प्रगट जोत दरस दिखावणा। ख्वार ख्वार करे प्रभ ख्वारा। मार मार प्रभ शब्द मार जग मारा। हाहाकार कराई दुष्ट दुराचारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच शब्द वरतारा। सच शब्द प्रभ वरताए। साध संगत प्रभ रिदे समाए। बेमुख जीवां अन्तकाल मति अपुट्ठी पाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अचरज खेल रचाए। कलिजुग किया प्रभ अचरज खेला । गुरमुखां प्रभ किया मेला। साचा बणया साध संगत सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख कराए साचा मेला। कलिजुग तेरा लथ्थे चीर। चार कुन्ट पै जाए वहीर। कोई ना दिसे औलिया पैग़ंबर पीर। अठसठ तीर्थ प्रभ खिच्च वखाए नीर। सोहँ साचा बाण, चार कुन्ट प्रभ लगाए तीर। साध संगत वेले अन्त, प्रभ साचा कट्टे तेरी भीड़। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सृष्ट सबाई जाए पीड़। सृष्ट सबाई प्रभ पिड़ाए। कलिजुग उलटी लट्ठ गिढ़ाए। भठ भठ भठ, बेमुख जीव भठ कराए। हठ हठ हठ, साध संगत प्रभ हठ रखाए। वेले अन्त अख़ीर, प्रभ साचा बुग्घीं इक्ठ कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरताए। साचे प्रभ कर्म कमावणा। आपणा खेल आप करावणा। कल्सीं जाए चरन टिकावणा। साचा पलँघ सीस उठावणा। चार कुंट वहीर पावणा। साध संगत जै जै जैकार करावणा। गुरसिक्खां पूरन घाल, आपणा तेज़ वखावणा। सिँघासण बैठ कर प्रभ छत्र सीस झुलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला वक्त सुहावणा। साचा प्रभ कल वरताए। साध संगत प्रभ दे सुणाए। साचा प्रभ जन भगतां भेद खुल्हाए। प्रभ साचा बिरधां बालां पूरन आस पुजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वक्त सुहाए। साचे वक्त सच प्रभ आया । कलिजुग आपणा काज रचाया। साची जोत माझ प्रगटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे जगत भुलाया । भरम भुलेखे जगत भुला। आपणा भेत प्रभ लए खुल्हा। आपणा वेला प्रभ लए सुहा। कल्सीं लए चरन टिका। गुरमुख साचा गुरसिख साचा चेत सिँघ दर साचा धाम दए उपजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग बणत जाए बणा । साची रचना जगत रचाए। घनकपुरी प्रभ माण दुआए। अन्तकाल कलिजुग सर्ब मलेछ नष्ट कराए। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उजाड़ माझा फेर वसाए। साचा हुक्म सच लिखावणा। जोत सरूपी प्रगट जोत, निहकलंक चरन घनकपुरी विच पावणा। साचा धाम साचे राम घनईआ शाम सतिजुग फेर प्रगटावणा। निहकलंक एह साचा काम, जोत सरूपी विच मात कमावणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा घर फेर वसावणा। साचा बचन साचा गुण। मलेछां मारे प्रभ चुण चुण। जोधे उभारे प्रभ आत्म उपजावे धुंन। दुष्ट सँघारे वड दाता करे वड गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख चरन लगाए चुण। रंग रंग प्रभ रंग चढ़ाए। रंग रंगीला माधव कलि जोत प्रगटाए। गुरसिख मांगे साची मंग, साचा प्रभ दर भिच्छया पाए। मातलोक ना होए नंग, शब्द चोली प्रभ तन पहनाए। साचा प्रभ लगाए अंग, आत्म जोत डगमगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाए। सर्ब जनां प्रभ आसा पूरया। साध संगत प्रभ लाहे दु:ख वसूरया। साची धुन उपजावे प्रभ अनहद तूरया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब कला भरपूरया। सर्ब कला प्रभ भरपूरा। प्रभ अबिनाशी सतिगुर सूरा। कलिजुग जामा धारे, वड दाता वड सूरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरे सदा हज़ूरा। साध संगत प्रभ सदा हज़ूर। प्रगट जोत निहकलंक, साची बख्शे चरन धूढ़। माण दवाए मातलोक, आत्म रंग चढ़ाए गूढ़। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, राजे राणयां पाए जूड़। शब्द मार प्रभ जगत बंधाया। राणयां महाराणयां प्रभ पकड़ उठाया। वासी पुरी घनक, साचा धाम पुर घनक वसाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाया। राउ राउ प्रभ राउ जगाए। मायाधारी सर्ब पल्टाए। साचा प्रभ रंकां लए गले लगाए। महाराज शेर सिँघ बंक द्वार सुहाए। रंकां विच प्रभ सदा समाए। नीचो नीच प्रभ अख्वाए। ऊँचो ऊँच प्रभ गुरमुख बणाए। सूचो सूच सूच, प्रभ आत्म सूच रखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जीव जन्त सर्ब विच समाए। एका जोत सर्ब जीव जन्त। जोत सरूप समाए प्रभ भगवन्त। जाणे भेद गुरमुख विरला सन्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब बणाए बणत। जीव जन्त प्रभ बणत बणाए। मात गर्भ प्रभ होए सहाए। पवण सरूपी स्वास चलाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब थांए होए सहाए। मात गर्भ जीव तजाया। कलिजुग माया भरम भुलाया। मदिरा मास रसन आहार बणाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, बेमुखां मनों भुलाया। बेमुखां प्रभ मन डुलाए। गुरसिक्खां प्रभ धीर धराए। बेमुखां प्रभ जगत भुलाए। गुरसिक्खां प्रभ साचे मार्ग लाए। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। गुरसिक्खां प्रभ प्रगट जोत दरस दिखाए। बेमुखां मुख निकले हाए हाए। गुरमुख साचे रसना जै जै जैकार कराए। बेमुख जीव प्रभ वहन्दे वहिण वहाए। गुरमुख साचे बांहों पकड़ तराए। बेमुखां मिले ना दरगहि थाएँ। गुरमुखां प्रभ बैकुण्ठ निवास रखाए। बेमुखां धर्म राज दे सज़ाए। गुरमुखां प्रभ विच बबाण बिठाए।

बेमुखां प्रभ लक्ख चुरासी जून भुगताए। गुरसिक्खां प्रभ जोत मेल मिलाए। बेमुख जीव जग सद आवे जाए। गुरमुख साचा जोत सरूप, विच जोत विसमाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, किरपा करे गुरसिख साचे मानस जन्म दवाए। गुरसिक्खां प्रभ जोत मिला। आपणे विच प्रभ लए समा। जोत सरूपी जामा विच मात प्रभ लए पा। गुरसिख साचे भगत जन, प्रभ फेर लए प्रगटा। मानस जन्म प्रभ मात दे, प्रभ चरनी लए लगा। जुगां जुगां दे विछड़े, प्रभ साचा पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सभ थांएँ होए सहा। साचे प्रभ जामा धारया। पारब्रह्म आपणा रूप आकारया। निरहारी निरवैर जोत सरूप प्रभ निरहारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी भेख आकारया। गुर नानक एह ओट रखाई। वेले अन्त कलि कलंकनिह होए सहाई। गुर गोबिन्द एह बचन लिखाई। निहकलंक तेरी सरनाई। निहकलंक जगत प्रभ आए। लिख्त लेख सच वरताए। माण ताण गुर गोबिन्द रखाए । जामा धार घनकपुर गुर अर्जन शब्द सति करावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जुग जुग मात विच आए। साची जोत कलि अवतारया। जामे दस दस गुर, निहकलंक तेरा नाम चितारया। लिक्खया लेख प्रभ साचे धुर, शब्द रूप प्रभ मेल मिला रिहा। भेद ना जाणे कोई सुर, करोड़ तेतीस सद रसना गा ल्या । साध संगत प्रभ बैठे चरन जुड़, प्रभ अबिनाशी दरस दिखा ल्या। कलिजुग प्रगटे गोबिन्द गुर, साध संगत तेरे सिर फूलन वरखा ला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात पताल अकाश तीन लोक साध संगत प्रभ माण दुआ रिहा। साध संगत प्रभ माण दवाया। साचा दर दरबार गण गंर्धब प्रभ चरन बहाया । साचा शब्द गुण निधान रसना गाया। साध संगत कलि बैठी चरन ध्यान, प्रभ अबिनाशी सेव कमाया। मातलोक होया मेल भगत भगवान, प्रभ अबिनाशी सिर साचे छत्र झुलाया। गुरसिख होए चतुर सुजान, महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकाया। गुरसिख होए चतुर सुजाना। साचा प्रभ आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। पहली माघ दर आए करन चरन धूढ़ इशनाना। जोत सरूपी निहकलंक कलिजुग पहरया जामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत रमईआ रामा। राम राम राम प्रभ अवतारे। द्वापर जामा धार बणया कृष्न मुरारे। कलिजुग प्रगटे जोत प्रभ नैण मुँधारे। जामा धार विच पुरी घनक, साध संगत तेरी पैज संवारे। जोत सरूपी लाए तनक, साध संगत सोहे प्रभ चरन दुआरे। महाराज शेर सिँघ बेमुखां मारे सोहँ शब्द खण्डा दो धारे। सोहँ खण्डा दो धार। सृष्ट सबाई कर जाए पार। चार कुन्ट पै जाए हाहाकार। साध संगत प्रभ जाए तार। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत तेरे भर जाए भण्डार। सतिगुर साचा निहकलंक पूरन नर अवतार। नरायण नर नर अवतारा। निरँजण जोत जोत निरँकारा। पारब्रह्म प्रभ अपर अपारा। करे भेख अगम्म अपारा। भरम भुलेखे भुलाया सर्ब संसारा। साध संगत प्रभ लाए

लेखे, चल आए चरन दुआरा। हँकारीआं प्रभ कढ्ढे भुलेखे, दर आयन करन निमस्कारा। साची जोत प्रभ अबिनाश वेखे, मातलोक होए उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब भरे भण्डारा। सोहँ शब्द तेरी जैकार। दु:ख भुख गुर संगत जाए मार। आत्म साचा सुख भर जाए सर्ब भण्डार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे चरन प्यार। साचा प्रभ जोत निरँजण। पतित पावन दु:ख भय भंजन। चरन धूढ़ साचा मजन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए त्रैलोकी नंदन। जोत जगाए प्रभ अपारे। साचा लिख्त लिखाए प्रभ लिखारे। रिखी केश गवर्धन धारे। सांवल सुंदर कृष्न मुरारे। बणत बणाई सृष्ट सारे। जोत सरूप प्रभ सर्ब समारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द लिखारे। साचा प्रभ लिख्त लिखा। साचा प्रभ सर अमृत थेह जाए करा। सिँघासण कल्सीआं लए उठा। निहकलंक पार ब्यासों चरन लए टिका। हुक्म वरतावे शब्द चलावे, लक्ख सत्तर लए चढ़ा। शब्द जणावे भाणा वरतावे, माझा मलिया मेट करा। झूठे जीव झूठे दाअवे, कलिजुग रहे बणा। भाणा वरते प्रभ वरतावे, कलिजुग जीव कोई जाणे ना। बीर बेताले होए बेहाले, कलिजुग जीवां खून प्यासी धरती मां। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा जाम बेमुखां मौत दए पिला। बेमुखां प्रभ जाम पिलाया। गोदी मौत प्रभ सुआया। मदि मासी कोई रहण ना पाया। जगत उदासी प्रभ लाही माया। थिर घर वासी भाणा कलि वरताया। घनकपुर वासी महाराज शेर सिँघ वरताए सो जो कोई लए शब्द लिखाया। शब्द लिखाए जगत जणाए। बेमुखां प्रभ पर्दा पाए। दर आयण जायण पति गुआए। प्रभ अबिनाशी दु:ख दर्द विनासी, आपणा भेद छुपाए। महाराज शेर सिँघ घनकपुर वासी, वेले अन्त कलिजुग जीव सर्ब बिल्लाए। साचे प्रभ सति कर्म कमावणा। लिक्खया लेख सन्त मनी सिँघ सति करावणा। प्रभ अबिनाशी किया भेस, माझा देस विच ख़ाक मिलावणा। वड्डे वड्डे जो नरेश, सभ तख्तों लाह बहावणा। जोत सरूप गुरसिख साचे सदा प्रवेश, साढे सैंती साल विच समावणा। महाराज शेर सिँघ सदा अदेस, साध संगत तेरा वक्त करे सुहावणा। बेमुख जीवां कर्म होए माड़े। सृष्ट सबाई प्रभ चबाई दाढ़े। जोत सरूप प्रगट जोत झूठे जीव अग्न जोत विच साड़े। महाराज शेर सिँघ सतिगुर तेरे सतिजुग उपजाए साचे लाड़े। गुरसिख साचा सतिजुग उपजाणा। साचा ब्रह्म ज्ञान प्रभ रिदे उपजाणा। गुणवन्त गुणी निधान प्रगट दरस दिखाणा। जोत जगाई विच देह महान, अज्ञान अन्धेर मिटाणा। साचा शब्द सुणाया कान, राग धुन उपजाया। गुरमुख साचे मन जाए मान, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया। कलिजुग जीव भुल्ले अञ्याण, वेला अन्त हत्थों गंवाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भरम भुलेखा डाहढा पाया। भरम भुलेखे प्रभ सर्ब भुलाए। ज्ञानीआं ध्यानीआं प्रभ दिस ना आए। तीर्थ इशनानीआं प्रभ आत्म विकार चलाए। नित नित उठ पढ़न जो बाणीआं, प्रभ उलटी मत कराए।

कलिजुग देवे प्रभ सच निशानीआं, कूकर सूकर जून पवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग जीवां रिहा भुलाए। कलिजुग जीव वड ज्ञानी। आत्म होए जीव नादानी। दिस ना आए प्रभ किसे गुणी निधानी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, खिच्चे जोत गगन पताली खाणी बाणी। साचा प्रभ जोत खिचाए। शक्त किसे दी रहण ना पाए। गीता ज्ञान साचा ध्यान मुख रखाए। जामा धार निहकलंक कलिजुग अन्तिम दे मिटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा एका राह चलाए। कलिजुग पूजा प्रभ मिटाए। एका दूजा भउ चुकाए। तीजा चौथा कोई रहण ना पाए। पंचम विच प्रभ आप समाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग साचा मार्ग लाए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, दर रहे बिल्लाए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, आत्म सुख दवाए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, दुःख दलिद्र नेड़ ना आए। दुखीआं दुःख निवार प्रभ, साची जोत फेर जगाए। दुखीआं दुःख निवार प्रभ, चरन आए जो सीस निवाए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, गुरसिख दुखिया कोई रहण ना पाए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, सोहँ अमृत मुख चुआए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, अमृत रस देह चुआए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, चरन प्रीती साचा राह दिखाए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, लिक्खया कर्म दे मिटाए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, भुल्लयां लए बख्शाए। दुखियां दुःख निवार प्रभ, साचा नूर फेर दवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दी आस पुजाए। दुखियां प्रभ दुःख निवारे। सोहँ शब्द रक्खे आधारे। अमका जिया प्रभ दर दुरकारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर किरपा पार उतारे। दुःख दर्द देह निवारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। साचा नाम प्रभ दे भण्डारया। साचा काम करे प्रभ करतारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिक्खां दुःख निवारया। दूखन दूख निवार प्रभ, दर जो जन आए। भूखन भूख निवार प्रभ, जो दर मंगण आए। सूखन सूख अधार प्रभ, आत्म सुख उपजाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरी आस पुजाए। आत्म दुःख प्रभ निवारया। पूरब कर्म प्रभ विचारया। मानस जन्म विच काज संवारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जो जन आए चरन निमस्कारया। साध संगत तेरा मिटे रोग। आत्म जाए झूठा रोग। प्रभ अबिनाशी देवे दरस अमोघ। सोहँ साचा शब्द प्रभ देवे जोग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा देही कट्टे रोग। साचा प्रभ दया कमाए। दुखी जीवां होए सहाए। साचा नूर प्रभ श्रद्धा पूर झोली पाए। प्रभ गुण भरपूर, दुःख रोग सर्ब मिटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी दया कमाए। दुःख रोग प्रभ निवारया। एका जाप तीन ताप करे ख्वारया। प्रगटे आप प्रभ जोत सरूप कर आकारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप अगम्म अपारया। साचा प्रभ सच्चा सिक्दार। वरते वरतावे विच संसार। आवे जावे वारो वार। कलिजुग जामा निहकलंक ल्या धार। वेले अन्त

कलिजुग आई हार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द मारे मार। अन्तकाल प्रभ कलि कराए। बेमुख जीव वांग दाल दोफाड़ कराए। गुरमुख साचे नाम प्रभ रसना दए सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी धीर धराए। धीर धराए वड धीरन धीरा। प्रभ अबिनाशी वड पीरन पीरा। गुरमुखां अमृत मुख चुआए। जिउँ बालक माता सीरा। आत्म दु:ख गंवाए शांत कराए सरीरा। मिटे रोग दु:ख प्रकाश्या। देवे दरस प्रभ अबिनाश्या। साचा सुख प्रभ दर भोग, साध संगत प्रभ सद रक्खे वास्सया। प्रभ अबिनाशी कट्टे रोग, जो जन होए दासन दास्सया। दासन दास जो जन आए। प्रभ अबिनाशी साची जोत मिलाए। साची जोत होए प्रकाश, आत्म अन्धेर रहे ना कोए। देही दुखड़े होए नास, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची दया कमाए। करे बेनन्ती पहली माघ। सोया हिरदा जाए जाग। साचा प्रभ उपजावे साचा राग। गुरमुख साचे आत्म भए वैराग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची शब्द लगावे जाग। साचा शब्द प्रभ चलाए। आत्म विच निवास रखाए। जोत सरूपी साचा दीप विच देह जगाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सुरत शब्द दा मेल मिलाए। गुरसिख तेरा शब्द मेल। निजानंद वेख प्रभ का खेल। प्रभ साची जोत करे प्रकाश, सोहँ पाए साचा तेल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा रंग नवेल। रंग नवेल आप प्रभ, विच हिरदे वसे। जोत सरूपी प्रगट जोत, साचा भेद दस्से। प्रभ खोल्ह वखाए तेरी सुरत, करे प्रकाश जिउँ रवि ससे। दुरमति मैल जाए धोत, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच हिरदे वसे। साचा प्रभ जोत जगाए। गुरसिख तेरा तीजा नैण खुल्हाए। भुल भुल भुल मदिरा मास हत्थ ना लाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा कर्म कमाए। झूठी काया प्रभ जोत जगाई। साचा दीपक विच देह टिकाई। सोहँ नाम विच बत्ती पाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पवण सरूपी शब्द चलाई। शब्द सरूपी पवण हुलारा। गुरसिख देवे मोख दवारा। सदा समीप्त प्रभ भतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत करे आकारा। आत्म होए जोत आकार। हउमे जाए विच्चों हँकार। प्रभ साचे दी पाए साची सार। खोल्ह देवे प्रभ दस्म दुआर। अनहद शब्द उपजे धुन्कार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द भरे भण्डार। साचा शब्द सच ज्ञाना। साचा प्रभ भगत भगवाना। साचा प्रभ सोहँ देवे वड दानी दाना। आत्म होए जोत प्रकाश, जोत जगे महाना। अज्ञान अन्धेर जाए विनास, जन होवे सुघड़ सुजाना। गुरचरन प्रीती सच्ची रहिरास, देवे दरस विष्नूं भगवाना। साचा प्रभ दरस दिखाए। गुरसिख सोया प्रभ बाहों पकड़ उठाए। प्रभ अबिनाशी प्रगट होया, साचा नाम भिच्छया पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दया कमाए। साचे नाम सति वड्याई। साचे नाम रसना जप कलिजुग जीव परमगति पाई। साचा नाम पूरन कराए काम कलिजुग जीव भुल ना जाई। साचा नाम घनईआ

शाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे कन्न सुणाई। रागन राग प्रभ राग उपजाए। स्वांगी स्वांग प्रभ साचा स्वांग रचाए। गुरमुख साची रक्खी तांघ, प्रगट जोत प्रभ दरस दिखाए। प्रभ दर मंगे साची मांग, सच वस्त प्रभ झोली पाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख कोई भुल ना जाए। साचा नाम प्रभ दर पा। प्रभ अबिनाशी ना देणा भुला। आत्म बुझी दीप प्रभ साचा दए जगा। अमृत आत्म साचा रस, प्रभ मुख दए चुआ। प्रभ अबिनाशी होए वस, प्रगट जोत देवे दरस दिखा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, रसना सद जीव गा। साचा शब्द साचा गुर मन्त्र। देवे प्रभ साचा निरंतर। आदि जुगादि जुगादि आदि सदा रहंतर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए तेरी बणतर। गुरसिख चले प्रभ के भाओ। साचा प्रभ सद लागे पाउ। सोहँ साचा शब्द रसना सद गाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ अबिनाशी घर में पाओ। नाम दान जिस जन जाणया। पूरन ब्रह्म ब्रह्म सरूप पछाणया। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप सुख साचा माणया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिक्खां चलाए आपणे भाणया। गुर साचा सद रसना गा। प्रभ अबिनाशी सच्चा पा। आत्म पर्दा लए हटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, स्वच्छ सरूप देवे दरस दिखा। स्वच्छ सरूप गुरमुख विरला जाणे प्रभ रंग अनूप। जोत निरँजण निहकलंक सति सरूप। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द तेरा साचा दूत। सोहँ शब्द गुर दूत बणाया। साध संगत दे विच समाया। साचा फ़रमाण धुरदरगाहों लै के आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तकाल माण दवाया। साचा शब्द चले स्वासा। सोहँ जप जीव विच नासा। आवण जावण प्रभ का वासा। सृष्ट सबाई झूठा खेल तमाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए दासन दासा। रसना जप रमईआ राम। देवे दरस घनईआ शाम। सोहँ साचा प्रभ दवईआ नाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा पूर कराए काम। आत्म मनसा होए पूरी। गुरसिख सुरती ना रहे अधूरी। उपजे जोत रक्खे सति सरूरी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी नूरो नूरी। सांतक तेरा रूप सति। प्रभ अबिनाशी पावे साची मति। शब्द अधार रखावे यति। एक शब्द चार वरन रखावे तत्त। चरन प्रीती देवे साचे सुत। पारब्रह्म परमेश्वर अचुत। बसन्त रूप रहे तेरी रुत। सतिजुग जीव उपाए प्रभ साचे सुत। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची सुहाए रुत। सांतक सति सति वरतार। सांतक तेरा सति दरबार। सांतक तेरा रूप अपार। सांतक सुरती शब्द अधार। सांतक रूप धरे करतार। सांतक सतिजुग तेरा अधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच सच वरतावे विच संसार। सांतक साचा सतिजुग सालस। गुरमुख उपजावे खालस। गुर साचे जीव प्रगटावे लालस। लालच कोए ना करे मानस। भुक्खा जीव ना कोए बिल्लाए प्रभ साचा सालस। मदिरा मास ना कोए रसना लाए, प्रभ सदा

रहे नालिस। प्रभ एका रुत बणाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थाएँ समालस। सांतक देवे सति वड्याई। गुरमुख आत्म प्रभ सांत कराई। सोहँ साची दात प्रभ झोली पाई। सर्ब मिटाए ज़ात पात, चार वरन बणाए भैण भाई। सतिजुग बख्शे साची करामात, आत्म सच सच वरताई। सोहँ शब्द चलावे साची गाथ, कुन्ट चार जै जै जैकार कराई। जामा धारे प्रभ विच मात, निहकलंक नाउँ धराई। गुर दर सुहाई साची रात, साध संगत रसना हरि गुण गाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख विरले मित गति पाई। सांतक तेरा साचा नूर। गुरसिख तन कर भरपूर। साची जोत उपजावे नूर। प्रभ अबिनाशी एका बख्शे साचा सति सरूर। निहकलंक गुरमुख हिरदे वसे ना जाणो दूर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब कला भरपूर। सांतक वरताए सारंगधर। कलिजुग धरी जोत अवतार नर। सतिजुग साचा मातलोक जाए कर। एका शब्द उपाए प्रभ अपर । गुरमुख मंग साचा वर। प्रभ साचे दी शरनी पर। चरन लाग गुरमुख भवजल तर। वेले अन्त जम ना आयण तेरे दर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एक दिसाए साचा दर। सांतक तेरा नाम रखाया। जीव जन्त प्रभ सति वरताया। राजस तामस मगरों लाहया । आलस निंदरा प्रभ गंवाया। जोत सरूपी साचा दीपक, गुरसिक्खां आत्म विच जगाया। साचा प्रभ सदा समीप्त, झूठी काया विच सदा समाया। साचा नाम महारस पीवत, प्रभ साचे सिर हत्थ टिकाया। आदि जुगादि विच ब्रह्माद गुरमुख साचा सदा जग जीवत, प्रभ साचे लेख लिखाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग सति माण दवाया। सांतक साचा सन्त जन पाए। साचे सन्त प्रभ रिहा समाए। विस्मादी विस्माद हो जाए। आदि जुगादी शब्द नाद धुन उपजाए। राग उपजाए माधव माधी, प्रभ बजर कपाट खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सांतक तेरा नाम रखाए। सांतक तेरा रंग रंगाया। मातलोक विच जन्म दवाया। मदिरा मास मगरों लाहया। सति गुण प्रभ सति सुणाया। रागन राग त्याग, प्रभ सोहँ साचा राग जणाया। भगत जन कलि गए जाग, प्रभ साचे जद दरस दिखाया। मातलोक विच पूरन भाग, प्रभ साचे दा दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सांतक सति वरताया। सांतक वरते होए निमाणा। सतिजुग उपजाए प्रभ ज्ञाना। एका बुध रखाए प्रभ बिरध बाल जवाना। प्रभ आत्म शुद्ध कराए, बख्शे एक आत्म ध्याना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क कराए राजा राणा। सांतक तेरी सरधा पूर। प्रभ अबिनाशी देवे चरन धूढ़। सोहँ साचा दान दे, प्रभ भण्डारे करे भरपूर। मुक्त जुगत वाली दो जहान दे, कर जाए दुखड़े दूर। निमाणयां प्रभ माण दे, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा बख्शे नूर। निमाणयां प्रभ माण दवाया। कलिजुग राउ सर्ब मिटाया। सतिजुग तेरी नींह रखाया। राउ रंक इक्क थाएँ समाया। ऊँच नीच कोई रहण ना पाया। साचे भूप सतिजुग साचा मार्ग

लाया। एका शब्द चार वरन प्रभ कराया। वरन बरन प्रभ मेट वखाया। एका बख्शे निहकलंक चरन सरनाया। कलिजुग जामा धार निहकलंक जगत पित आया। साचा वजाए शब्द डंक, बेमुखां कन्न सुणाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी खेल रचाया। जोत सरूपी रचना रच। कलिजुग तोड़े जिउँ वंग कच। अग्न जोत जीव जायण मच। गुरसिख आत्म प्रभ जाए रच। गुरसिख सो जिस हिरदे होवे सच। बेमुख बेताले दर आयण जायण नच। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, लिख्त कराए आपणी सच। सच सच जगत वरतारा। सच सच प्रभ भरे भण्डारा। सच सच होवे विच दरबारा। साची जोत धरे निरँकारा। सतिजुग साचा तेरा सति वरतारा। जोत सरूप निहकलंक कलि लए अवतारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति करे वरतारा। सच सच प्रभ जगत वरताए। गुरमुख हिरदे शुद्ध कराए। आत्म बुध प्रभ साची पाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा धर्म चलाए। सतिजुग तेरा साचा धर्मा। चार वरन होए एका कर्मा। किसे ना होवे कोए भरमा। कोए ना दिसे जीव अधर्मा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका देवे साची सरना। एका शरन प्रभ रखाओ। गुरसिख साचे सच मति पाओ। दुबिधा मैल मनों तजाओ। आत्म हँकार सर्ब गंवाओ। निरवैर प्रभ निरवैर सिख हो जाओ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा बख्शे नाउँ। साचा प्रभ निरवैर समाए। निराहारी निराधारी प्रभ आप अख्वाए। वड संसारी जोत सरूप सर्ब रिहा समाए। भगत उधारे जुगो जुग प्रभ जामा पाए। शाम मुरारी सांवल सुंदर रूप वटाए। प्रभ गिरधारी प्रगट जोत निहकलंक नाउँ धराए। गुरसिख तेरी हउमे कट्टे बीमारी, आत्म साचा ज्ञान दवाए। दिवस रैण चढ़ी रहे खुमारी, सोहँ साचा प्रभ जाम पिलाए। एका माण रखाए प्रभ नर नारी, जो जन आए सरनाए। वेले अन्त ना होए ख्वारी, प्रगट जोत प्रभ साचा दरस दिखाए। जोत सरूप देवे जोत अधारी, गुरसिख तेरी तृखा मिटाए। गुरसिख विरला प्रभ नाउँ वपारी, वर दर मंग नाम घर लै जाए। बेमुख कलिजुग जीव मानस जन्म गए कलि हारी। साध संगत प्रभ साचे पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अन्तकाल भगत अधारी। साचे प्रभ साची सरना। चरन लाग गुरसंगत तरना। अन्तकाल जम डण्ड ना भरना। जोत सरूप प्रभ जोत मिलाए धरनी धरना। मदिरा मास जो रसनी लाए, वेले अन्त आपणा किया भरना। सोहँ शब्द जन रसना गाए, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी लाए शरना। जुगो जुग प्रभ अवतार। मातलोक आए जामा धार। जोत सरूप विच संसार। प्रभ साचे की साची कार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पूरन नर अवतार। सतिजुग प्रभ भए मेहरवाना। त्रेता भए रामा। कलिजुग धरे जोत प्रभ भगवाना। द्वापर आए घनईआ शामा। महाराज शेर सिँघ कलि पहरया जामा। जुगो जुग प्रभ जामा धारे। भगत जनां प्रभ पार उतारे। लेख लिखाए अपर अपारे। प्रभ साचे दी साची

कारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे जुग लए अवतारे। भगत जनां प्रभ पार उतारया। किरपा करे आप गिरधारया। जोत सरूपी प्रगट जोत पार उतारया। नर सिँघ नरायण दुष्ट हरनाक्ष आण सँघारया। बावन रूप धार, प्रभ मंगण जाए बल द्वारया। जोत सरूपी भेख कर, चार वेद रसन उचारया। जोत सरूप जुगो जुग लै अवतारया। जन भगतां प्रभ होए सहाई। जिउँ अंबरीक लाज रखाई। चक्र सुदर्शन प्रभ लगाई। देवी देव ना होए सहाई। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तजाई। निहकलंक अवतार नर जुगो जुग होए सहाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, मात जोत प्रगटाई। साचा प्रभ जुगो जुग जोत जगाए एक। जन भगतां रखाए एका चरन टेक। जनक प्रभ तारया कीनी बुध बिबेक। निहकलंक अवतार नर जन भगतां लिखाए साचे लेख। राणी तारा प्रभ माण दवाए। साध संगत विच मंगल गाए। हरी चन्द दा माण गंवाए। साध संगत प्रभ लाज रखाए। जोड़ी जोड़ खड़ांउ वखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जुगो जुग जगत विच आए। जुगो जुग प्रभ की कार। निमाणयां प्रभ जाए तार। बिप्र सुदामा आए प्रभ दरबार। सिँघासण छोड आए मुरार। चरन धूढ़ करन निमस्कार। दलिद्री नाल करे प्यार। जोत सरूप निहकलंक जुगो जुग लए अवतार। भगत जनां दे वड्याई आपणा बिरद रक्खे करतार। निमाणयां प्रभ माण दवाए। राजे राणयां दर दुरकाए। दुर्योधन प्रभ महल मुनार तजाए। घर बिदर अलूणे साग भोग लगाए। निहकलंक अवतार नर, गुरमुख झुग्गी भाग लगाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जुगो जुग जन भगतां पैज रखाए। भगत जनां प्रभ देवे धीर। रक्खे लाज प्रभ वड पीरन पीर। विच सभा माण रखाए, द्रोपदी लत्थे नाही चीर। निहकलंक अवतार नर, जन भगतां महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरी कट्टे भीड़। नामदेव प्रभ आण तराया। प्रगट जोत प्रभ भोग लगाया। गाए मोई जिवाए, नाम देव दा छप्पर छाया। प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत, भगत जनां सिर हत्थ टिकाया। जैदिउ प्रभ लेख लिखारी। मस्तक रेख लिखी अपारी। अक्खर पढ़ होई प्रतीत, मिल्या प्रभ गिरधारी। पारब्रह्म परमेश्वर आत्म करी जोत आकारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आदि जुगादि तेरी सिक्दारी। भगत जनां प्रभ आस पुजाए। आसा मनसा प्रभ पूर कराए। दर आयां प्रभ माण दवाए। गुर सेवा प्रभ लेखे लाए। जिउँ रविदास कसीरा भेंट चढ़ाए। प्रगट जोत प्रभ विच्चों नीर माण दवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां होए सहाए। भगतन का प्रभ सदा सहायक। भगत वछल प्रभ वड नायक। आत्म उपजावे सर्ब सुखदायक। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा सहायक। भगत जनां प्रभ तारनहारा। सदना सैण पार उतारा। कबीर जुलाहा ना जात विचारा। साचा प्रभ भरे भण्डारा। आदि जुगादि प्रभ साचे की साची कारा। साचा प्रभ सदा सहाए। पतित पापियां जाए तराए। गनका साचा

नाम दवाए। दुरमति मैल सर्ब गंवाए। एका राह सच दिसाए। वेले अन्त विच बबाण बिठाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जुगो जुग माण दवाए। साचा प्रभ जिस चितारया। पतित पापी प्रभ पार उतारया। नरायण नर अजामल उधारया। प्रभ साचे तेरी साची कारया। वेले अन्त तेरा होए सहारया। पापण पूतना माण दवाए। भगत जनां विच नाउँ रखाए। मोहण मुम्मे माधव पाए। पापण होए विस मुख लाए। जोत सरूप जोत निरँजण, ना एह मरे ना जाए। जीवां कारन जोत सरूप विच झूठी देह समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगादि आदि एका रंग समाए। साचा प्रभ सति दातारा। अवगुण प्रभ ना कदे विचारा। जो जन डिग्गे आए दुआरा। उज्जल मुख कराए विच संसारा। प्रभ साचा देवे मोख दुआरा। निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण नर निहकलंक। सोहँ शब्द वजाया डंक। जोत अधारे जामा धारे सुहाए थान बंक। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चरन आए तारे रंक। प्रभ साचे सहसा उतारना। साचा शब्द रसन उचारना। हँकार निवार प्रभ दुष्ट सँघारना। जामा धार घनकपुर, कलिजुग जीवां अन्त करावणा। साध संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवावणा। कलिजुग झूठी खेल रचाई। अथर्बण वेद प्रभ माण रखाई। चार लक्ख बत्ती हज़ार प्रभ औध लिखाई। कर्मां कारन प्रभ अन्त कराई। कुकर्मी जीव होए दुखदाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरताई। वेद अथर्बण मात टिका। कलिजुग रचना लई रचा। जूठ झूठ प्रभ झोली देवे पा। ईसा मूसा मुहम्मदी प्रभ मात दए प्रगटा। झूठा मार्ग मातलोक प्रभ खेल देवे रचा। दुष्ट दुराचार प्रभ मति उपठी देवे पा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा नाउँ दए भुला। साचे प्रभ एह बणत बणाई। उलटी मति सगल विच पाई। गऊ ग़रीब होए दुखदाई। सुणे पुकार आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग साचे, प्रभ जोत प्रगटाई। अल्ला नूर जगत उपाया। कलिजुग उम्मत नबी बणाया। विच हँकार वसाया। झूठे रसते प्रभ साचे पाया। जीवां जन्तां दे सज़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल रचाया। साची जोत प्रभ जोत प्रगटाई। गुर नानक दी जोत जगाई। पंदरां सौ छब्बी बिक्रमी लै लिखाई। मात माया सर्ब त्यागी प्रभ दर मंगण जाई। साचे दर घर गुर गया, साची वस्त प्रभ झोली पाई। साचा वेख प्रभ आकार। जोत सरूपी बैठा निराधार। चार कुन्ट जोत आकार। नानक गए प्रभ दर दरबार। सोदरु राग ल्या उचार। प्रभ साचे दा दरस अपार। वाह वाह साची सेव कमाई, जोत सरूप होए दयाल। एका नाम दिया सति करतार। चार कुन्ट गुर सुणाया, कलिजुग जीव ना पायण सार। एका जोत प्रभ जगाई। साचा शब्द ज्ञान दवाई। एका धुन प्रभ जोत प्रगटाई। एका धुन अनहद प्रभ दे सुणाई। जोत निरँजण विच मात दे आई। सतिनाम मन्त्र दृढ़ाई। चार वरन समाणे एका ज़ात, चार कुन्ट फिरे दुहाई।

कलिजुग जीव ना पुच्छण वात, ऊँचा कूक रिहा सुणाई। कलिजुग अन्त अन्धेरी रात, वेले अन्त ना कोई सहाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिनाम मन्त्र दृढ़ाई। सतिनाम मन्त्र दृढ़ा के। भुल्लयां जीवां मार्ग पा के। वेले अन्त झूठी काया जगत तजा के। साची जोत नानक जाए अंगद विच जगा के। साचा धाम पिण्ड खण्डूर जाए वसा के। साची जोत निहकलंक, सद रक्खे जोती जोत मिला के। अंगद गुर एह कर्म कमाया। मोख गुर गुरमुखी अक्खर बणत बणाया। साचा राह फेर चलाया। कलिजुग जीवां बहि समझाया। बेमुखां दर फेर ना पाया। वेले अन्त अन्तकाल, विच जोती मेल मिलाया। साची जोत प्रभ अमरदास धराया। साची जोत अमर जगाई। बिरध अवस्था पूरन मति पाई। साची सेव गुर कमाई। साचा धाम जगत उपजाई। चुरासी देवे गेड़ कटाई। साचे धाम रचना बणाई। वेदी कुल अन्तिम जोत प्रगटाई। साचा बंस राम चन्द रघुराई। सोढी बंस मिली वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग एका जोत प्रगटाई। अमरदास एह कर्म कमाया। चुरासी कट तीर्थ बणाया। बेमुख जीवां सार ना पाया। दर जायण ध्रो कमाया। धीआं भैणां पति गंवाया। प्रभ अबिनाशी मनो भुलाया। गुर दर गुर घर वेसवा घर बणाया। बेमुख जीवां अन्तकाल सभ धामां नष्ट कराया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, सभ मलिया मेट कराया। अमरदास एह दया कमाई। सोढी बंस देवे वड्याई। रामदास विच जोत जगाई। साचा गुर दे सुणाई। सर अमृत दी नींह रखाई। चार वरन आए दर बण भैणां भाई। कलिजुग बेमुख जीवां सार ना पाई। साची कार सच्ची सरकार दिवस रैण कमाई। झूठी देह अन्त छड, आकार जोत जोत मिल जाई। गुर अर्जन गुर दरबार पूरन दे कराई। जोत सरूप प्रभ लए अवतार, आपणे हत्थ कार कमाई। नज़री आए प्रभ करतार, गुर अर्जन बलि बलि जाई। किरपा करे प्रभ गिरधार, अगाध बोध दा भेव खुलाई। जोत सरूप सदा निराधार, साची जोत दे जगाई। अमृतसर बणाया सच दरबार, मातलोक मिले वड्याई। पापी जीव होए दुष्ट दुराचार, गुर का बचन गए भुलाई। वेले अन्त आई हार, कलंकनिह दे सज़ाई। पंचम गुर एह कर्म कमाया। भगत जनां विच बहाया। ज्ञान बोध गुर दर बणाया। शब्द सोध जगत राह चलाया। बेमुख जीवां अन्तकाल कलि भुलाया। महाराज शेर सिँघ जामा धार, वेले अन्त दए खपाया। हरिगोबिन्द गुर दया कमा ली। दो जहानां बणया वाली। कलिजुग जीवां होया रखवाली। देग तेग़ प्रभ हत्थ उठा ली। कलिजुग जीअ अन्तिम रहि गए खाली। प्रभ साचा बणया सच बनवाली। आए राए हरि राया। साचा राम नाम वसाया। एका जोत प्रभ जगाया। जगत पित गुर उपजाया। कलिजुग जीवां डौरू वाहया। काम क्रोध विच मन वसाया। आयन दर सीस झुकाया। वेले अन्त प्रभ दे सज़ाया। आपणी बणत रिहा आप बणा। हरिकृष्न विच जोत टिका। साची जोत प्रभ जाए जगा। अठवां

गुर जाए बणा। बाल अवस्था जाए समा। साचा धाम दिल्ली जाए बणा। प्रगट जोत निहकलंक फेर जाए वसा। अठवां जामा गुर तजाया। भरम भुलेखे जगत भुलाया। साचा प्रभ नज़र ना आया। जगत भेख बहुत वधाया। तेग़बहादर गुर छुपाया। बेमुख जीवां दिस ना आया। साचे प्रभ एह कर्म कमाया। डुबदा बेड़ा मक्खण तराया। आप आपणा आप प्रगटाया। कलिजुग जीवां भाग गए जाग, विच बकाले प्रभ जोत जगाया। भेख पखण्डी सभ गए भाग, साची जोत होई रुशनाया। गुरमुख विरले गए चरन लाग, नाम दान गुर दर ते पाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, जुगो जुग विच मात दे आया। तेग़ बहादर दया कमाई। साध संगत एह हुक्म सुणाई। सर अमृत दा दर्शन पाई। साचे घर आ चरन टिकाई। बेमुखां एह सार ना पाई। साचा प्रभ सच दर आई। कुफ़ल लगाए सर्ब नठ जाई। सतिगुर नौवें पातशाह साचा शब्द सुणाई। सर अमृत नूं सराप दे, पिण्ड वल्ले भाग लगाई। एका ओट निहकलंक तेरी रखवाई। जामा धार पुरी घनक, पूरी दे कराई। सर अमृत जो पुजारी। होए कलि दुष्ट दुराचारी। आत्म भरे हँकारी। गुर साचे दी सार ना जाणी। साची मार शब्द गुर मारी। वेले अन्तकाल कलि होए ख्वारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच करे वरतारी। गुर गोबिन्द प्रभ उपजाया। साची जोत प्रभ जगाया। पटने विच भाग लगाया। अनन्दपुर फेर वसाया। दुष्ट दमन दा जामा पाया। कठिन तपस्सया घाल प्रभ साचे दी सेव कमाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब थाएँ होए सहाया। कलिजुग वरताए प्रभ ऐसी माया। साची खेल करे कराया। एका दाल दोफाड़ कराया। एका मात दो पूत उपजाया। एका नाथ ज़ात अलग रखाया। प्रभ अबिनाशी निहकलंक अचरज खेल रचाया। ऐसा वक्त जगत विच आया। मलेछां तांईं प्रभ माण दवाया। हिन्दू धर्म दा नष्ट कराया। गऊ ग़रीब ज़बह कराया। देवी कन्या पति गुआया। दुखिया जीव सर्ब बिल्लाया। गुर तेग़बहादर दी शरनी आया। साचा गुर होए सहाया। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप भाणा कलि वरताया। साचे गुर दया कमाई। हिन्द धर्म दी लाज रखाई। दिल्ली जाए बहु दुःख पाई। शाह औरंगा दे सज़ाई। वेले अन्त सर्ब नठ्ठ जाई। विरले गुरमुख साचे सन्त, गुरसिख गए मन डुलाई। माया तेरी बड़ी बेअन्त, तेरा भेद ना लख्या जाई। जोत सरूप जोत प्रभ, आपणे भाणे विच समाई। शाह औरंगे कर्म कमाया। डाहढा दुःख गुर तेग़ बहादर पाया। आप अडोल जोत सरूप डगमगाया। गुरसिक्खां आ चित डुलाया। उठ भज्ज पल्ला छुडाया। साचे प्रभ कर्म विचार, एका शब्द अलाया। संग सखा सभ तज गए, विच गुर ग्रन्थ लिखाया। सुणा शब्द टुट्टा हँकार, चरनी आए सीस निवाया। मती सिँघ बैठ अडोल, आरा सीस धराया। धन्न गुरसिख जिस पाई सार, दयाला देग़ विच उबलाया। गुर तेग़ बहादर सीस दित्ता उतार, औरंगे कहर कमाया। आप अडोल बैठ

रिहा निराधार, विच जोत मेल मिलाया। प्रभ साचे दी साची कार, जुगो जुग विच मात करदा आया। सतिजुग उपजावे सति दरबार, साचा कर्म कमाया। निमाणयां निताणयां हेत गुर साचे सीस लगाया। बेमुख जीवां कलि साचा प्रभ भुलाया। जायण गुर दरबार, काम क्रोध वधाया। निहकलंक लै अवतार, सारयां नष्ट कराया। एका जोत आकार, साचे धाम दे जगाया। साचा उपजे दर दरबार, निहकलंक चरन जा दिल्ली पाया। जिस जन प्रभ सेव कमाई। साचे प्रभ सुण पुकार, मातलोक देवे वड्याई। साची जोत करे आकार, अनाथां हेत जन्म दवाई। वाह वाह देवे रंग करतार, आपणी बणत आप बणाई। हुक्म पाए गोबिन्द गुर पाया। साचा भेद प्रभ खुलाया। एक शब्द ध्यान रखाया। साची धुन प्रभ उपजाया। जोत सरूप जोत प्रभ सिर उप्पर हत्थ टिकाया। मातलोक साचे गुर साचा मग चलाया। जोत सरूपी जोत धर, दसवां जामा विच मात दे पाया। गुर नानक एह दया कमाई। बाबर दित्ती एह वड्याई। सत्त कुल सिर ताज रखाई। वेले अन्त प्रभ दए खपाई। आपणी बणत प्रभ बणाई। गुर गोबिन्द प्रभ दे उपजाई। मलेच्छां बुध हँकार कराई। कर्म धर्म सर्ब मिट जाई। साचे प्रभ साची जोत करे रुशनाई। अनाथां हेत प्रभ चण्डी चमकाई। चण्ड प्रचण्ड ब्रह्मण्ड विच नव खण्ड वरभंड बेमुखां प्रभ देवे दंड। जोत सरूप जोत धर, साची दात जाए जग वंड। गुर गोबिन्द एह कर्म विचारा। दुखिया होया सर्ब संसारा।
६३५
०१
छत्री ब्राह्मण वैश शूद्र करन ख्वारा। साचे प्रभ साची बिध आप रची करतार। जोत सरूप धार खेल कराई अपर अपार। ६३५ ०१
गुर गोबिन्द एह कर्म कमाया। चार वरन माण दवाया। ऊँच नीच दा भेव चुकाया। एका नाम लेख लिखाया। हँकार विकार सर्ब गंवाया। जीव दुखिआर प्रभ गले लगाया। हँकारीआं तांई प्रभ दे सज़ाया। प्रभ साचे दर साचा शब्द मातलोक उपजाया। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग आपणा खेल रचाया। दस्म जोत एह कर्म कमा। चार वरन सभ चरन लगा। ऊँच नीच दा भेव मिटा। सिक्खी परखे वेले अन्त आ। गुरसिख पूरे उतरे सो जन पंज प्यारे लए बणा। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी पहली विसाख दिन मना। पहली विसाख एह कर्म कमाया। पन्थ खालसे जन्म दवाया। साचा अमृत गुर बणाया। अमृत रूप होए विच समाया। साची जोत विच मिलाया। आपणा कर्म आप कराया। कलिजुग जीवां भरम भुलाया। झूठे धन्दे विच भुलाया। गुरमुख विरले विच संगत मेल मिलाया। साचा अमृत प्रभ साचे उपजाया। गुर गोबिन्द मेहर कर, विच सांतक सति समाया। झीरां छींबिआं नाईआं प्रभ केहर कर, प्रभ जामा शेर बणाया। मातलोक गुर मेहर कर, अमृत मुख चुआया। पंचम प्यारे गुर बणा। अमृत देवे मुख चुआ। साची दात प्रभ झोली देवे पा। पंजां विच प्रभ रिहा समा। पंजां देवे प्रभ वड्याई, सच्चा हुक्म देवे सुणा। गुर गोबिन्द साचा तिलक देवे लगा। गुरमुख साचे गुर पूरे दा शब्द कमा। कलिजुग

माया दए तजा। गुर धर्म दी साची रीती साचा देवे मग चला। कलिजुग जीव भुल्ल छड्ड गए साचा राह। निहकलंक वेले अन्त प्रगट जोत देवे सज़ा। गुर गोबिन्द तेरी वड्याई। आपे गुर आपे चेला अख्वाई। साचा मार्ग जगत चलाई। अमृत आत्म सिंच प्रभ दुखियां दुःख मिटाई। जोत सरूपी जोत प्रभ सर्ब विच रिहा समाई। साचा मार्ग मात लगाया। सारा बंस वार रखाया। धर्म दी बाण गुर लगाया। अनाथां हेत सभ कर्म कमाया। दर घर सर्ब लुटाया। एका आन एका शान मुख रखाया। कलिजुग जीवां भेद ना पाया। गुरमुख विरले प्रभ शरनी सेव कमाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, जोत सरूप सद समाया। वार वार, बंस सभ वारया। तार तार तार, निरधनां प्रभ तारया। हार हार हार, कलिजुग जीव बचन अन्त हारया। सार सार सार, पाए गुरसिख जिस देवे दरस अपारया। तार तार तार प्रभ जाए तार, जो जन आए चरन द्वारया। जोत सरूपी जोत प्रभ धरे जोत निरंकारया। प्रभ बणाई बणत अपार। दुःख भुख करे ख्वार। झूठा देस छड्ड गया गुर अवतार। गोदावरी चरन टिकाए अपार। बैरागीआं तोड़े हँकार। बणाए बन्दा देवे तार। हुक्म सुणाए आप करतार। दुष्टां तांईं जाए सँघार। भाणा मन्नीं ना आवे हार। वर दित्ता साचे गुर अवतार। गुर गोबिन्द दक्खण जाए। जाए नंदेड़ डेरे लाए। साचा धाम प्रगट कराए। मुखी तीर जा लगाए। सच निशान पुट वखाए। सर्ब जीआं दा माण गंवाए। उपजे सो थाएँ गुर साचा लिख्त कराए। पूरन किया अन्त एह काम, अन्तिम खेल रचाए। अन्तिम वेला अन्त गुर करया। अंगीठा साहिब निशान सी धरया। चन्दन चिखा विच प्रभ वड़या। साध संगत एह बचन करया। साचा गुर दर दरबार धरया। अन्तकाल कलिजुग निहकलंक अवतार होए नरया। निहकलंक दी ओट रखा। जोती जोत गुर गए समा। साचा बचन गए लिखा। प्रभ जामा घनकपुरी विच लै पा। वेला अन्तिम आ गया, साचा कर्म प्रभ लए कमा। प्रगट जोत महाराज शेर सिंघ, बेमुखां गया भुला। गुर आए जगत उपदेसे। प्रभ आए उलटाए जगत भेसे। जोत सरूपी सदा अदेसे। सार ना पायण ब्रह्मा विष्न महेषे। एका जोत प्रभ निरँकार जोत सरूपी साचे भेसे। महाराज शेर सिंघ नर अवतार, चार वरन करे अदेसे। साची जोत प्रभ जगत टिकाए। आप आपणा भेद रिहा छुपाए। कलिजुग माया बहुत वधाए। गुरमुख साचे प्रभ लए जगाए। शाम रूप प्रभ दरस दिखाए। काहन घनईआ नज़री आए। सांवल सुंदर भेख वटाए। जामा धार घनकपुर, भाग घनकपुरी लगाए। घनकपुर अवतार प्रभ धरया। सन्त मनी सिंघ सरनी परया। चरन लाग कलिजुग तरया। तन मन सीतल आत्म ठरया। सोहँ साचा शब्द रसन आहार करया। महाराज शेर सिंघ सतिगुर साचे जामा घनकपुरी विच धरया। प्रभ साचे ल्या जगत अवतार। तीन लोक होई जै जै जैकार। कलिजुग जीव सुत्ते पैर पसार। गुरमुखां होई आत्म उज्जयार। सुर नर

६३७
०१

आए प्रभ दरबार। फुल बरसावण बरखा धार। एका जोत जगी निरँकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, घनकपुरी लै अवतार। जगी जोत जगत निरालम। प्रभ भुलाई सारी आलम। सन्त मनी सिँघ हत्थ फड़ाई कालम। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वड दाता वड सालम। साची जोत करे आकारे। देव देवीआं खड़े प्रभ चरन दुआरे। दर दर फिरन होए ख्वारे। सन्त मनी सिँघ कलम लेख लिखारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, घनकपुरी लै अवतारे। घनकपुर प्रभ जामा धारे। देव देवीआं फिरन दवारे। साचा सन्त साची मारे लकारे। ना दिसे दर ना दरबारे। दुखी होए फिरन दुखियारे। अरचा पूजा प्रभ पार उतारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जामा घनकपुरी विच धारे। देवीआं आण पाई दुहाई। सन्त मनी सिँघ दर दुरकाई। विष्नूं भगवान तुहाढी सेव सर्ब चुकाई। अन्तकाल कलिजुग जामा धार, घनकपुर प्रभ सारी जोत खिचाई। खिच्चे जोत प्रभ ज्वाला। कलिजुग जीवां अन्तिम होए मूंह काला। साचा बाण प्रभ चलाए सोहँ बाणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, घनकपुरी विच पहरया जामा। देवी देव प्रभ पूज हटाए। साचा शब्द आप लिखाए। गंगा गोदावरी प्रभ नीर खिचाए। जोत सरूप प्रभ जोत मेल मिलाए। कलिजुग धाम निहकलंक वेले अन्त सर्ब मिटाए। सतिजुग साचा शब्द प्रभ उपजाए। जामा धार निहकलंक साचा डंक वजाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर्म धर्म जगत चलाए। मनी सिँघ प्रभ रसना गाए। हरि हरि हरि, साचा रिदे समाए। नर नर नर अवतार नर प्रभ दरस दिखाए। धर धर धर, एका जोत प्रभ धर वखाए। वर वर वर, प्रभ दर वर साचा पाए। तर तर तर, मातलोक तर जाए। डर डर डर, राजे राणयां प्रभ डर चुकाए। कर कर कर प्रभ किरपा कर, साची लिख्त आप लिखाए। भर भर भर भण्डार प्रभ साचे निहकलंक भर जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाए। साचे सन्त सच सेव कमाई। उच्च पदवी प्रभ दर ते पाई। साचा साहिब देवे वड्याई। लिक्खया लेख जगत वरताई। साध संगत प्रभ दे सुणाई। भुल ना जाणा निहकलंक होए सहाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेले अन्त सुत्तयां लै जगाई। सन्त मनी सिँघ शब्द लिखारी। साचा भयो जोत अधारी। देवे दात नैण मुँधारी। कलिजुग जीवां लिख्त लिखारी। जन भगतां प्रभ पार उतारी। पारब्रह्म प्रभ परमेश्वर निहकलंक अवतारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, घनकपुर करे जोत अकारी। साचे प्रभ तेरी साची कार। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार। साचा शब्द सच्ची धुन्कार। साचे सन्त प्रभ भरे भण्डार। एका दिसे ओंकार। छत्र झुलाए प्रभ दे सीसे, दिसे जोत निरँजण नर अवतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत धरे अपार। जगन्नाथ गोपाल मुख भनी। प्रभ अबिनाशी वड धन धनी। जोत जगावे सन्त सिँघ मनी। साची प्रीत प्रभ चरन संग बणी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा,

६३७
०१

देवे दात वड दाता वड धनी। वड्डी दात प्रभ वड देवे। जोत सरूप अलख अभेवे। साचा सन्त सद रसना सेवे। माण दवाए प्रभ विच देवी देवे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब मिटावे भरम भुलेवे। सन्त मनी सिँघ जोत जगाई। सुधि बुध प्रभ साची पाई। झूठा आकार प्रभ दे मिटाई । साचा किया आकार प्रभ साची जोत प्रगटाई। लिखाए लेख प्रभ विच संसार, प्रभ साची कलम फड़ाई। राजे राणे दित्ते तख्तों उतार, शब्द मार प्रभ कराई । लिक्खया शब्द सन्त अपार, निर्भय होए कलम उठाई। रक्खे लाज आप मुरार, सन्त साचे सिर हत्थ टिकाई। आया अन्त लैणा विचार, लिख्त लिखी प्रभ सति कराई । महाराज शेर सिँघ कर जोत आकार, आपणा भेत दए खुल्हाई। साचा भेद प्रभ खुल्हाए। लिखी लिख्त प्रभ बन्द कराए। वाक् भविख्त प्रभ सच कराए। राणयां महाराणयां प्रभ जाए माण गंवाए। गुरसिख जीवां बाल अञ्याणयां, प्रभ जाए माण दवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगट साची जोत साचा धर्म कमाए। राजिआं प्रभ माण गंवाया। ग़रीब निवाज़ एह कर्म कमाया। एका एक अंक एका रंग कराया। एक सोहँ डंक प्रभ कुन्ट चार वजाया। एका जोत तनक विच सर्ब समाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी खेल रचाया। साचे प्रभ सच ध्याना । अन्त ना पाया वेद पुराना। बेअन्त बेअन्त बेअन्त, सर्ब लिखाना। एका जोत इकन्त प्रभ भगवाना । जोत सरूप सर्ब विसमंत, रूप रंग ना किसे

६३८
०१

पछाना। भेव ना पाए जीव जन्त, प्रभ साचे विच किया टिकाणा । शब्द लिखाए प्रभ अगणत, जोत सरूपी प्रभ पहरया बाना। कलिजुग वेला आए अन्त, प्रभ साचे साचा खेल रचाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दा माण गंवाना। माण सर्ब दा प्रभ गंवाए। एका नाम जगत धराए। राजिआं राणयां डन्न लगाए। हुक्मनामे जो सन्त लिखाए। प्रभ अबिनाशी कढु वखाए। जूठे ठूठे प्रभ भन्न वखाए। बेमुख मूठे रहे मुख छुपाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी खेल रचाए। पहले शब्द प्रभ लिखाया। राजे राणयां प्रभ हुक्म सुणाया। वाली दो जहान विच घनकपुरी दे आया। अन्त तोड़े प्रभ अभिमान, जो आत्म विच रखाया। जो जन चरनी डिग्गे आण, प्रभ देवे माण सवाया। सोहँ शब्द प्रभ देवे दान, चार वरन देह विच उपजाया। सो जन होए चतुर सुजान, प्रभ अबिनाशी जिस दरस दिखाया। कलिजुग जीवां मिले माण, प्रभ अबिनाशी सरनी आया। देवे दरस विष्नूं भगवान, जोत सरूप प्रगट निहकलंक नाउँ रखाया। कलिजुग जामा धार, घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाया। जोत सरूपी प्रभ खेल रचा। बणत बणाए आप प्रभ, झूठी सृष्टी उपा। जोत सरूपी आकार कर, माया रूपी दे सज़ा। साचा जगत विहार कर, कलिजुग अन्त दए खपा। एका जोत अधार धर, सोहँ साचा शब्द दए चला। चार वरन प्रभ एका दरबार कर, ऊँच नीच दा जाए भेख मिटा।

महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी भेख जाए वरता। जो वरते सो प्रभ लिखावे। कलिजुग वेला अन्तिम आवे। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटावे। जोत सरूप विच सिख समावे। आपणे भेव विरले गुरमुख जणावे। राणा संगरूर प्रभ शरनी लावे। वाली हिन्द प्रभ दरस दिखावे। चार वरन प्रभ माण दवावे। एका ऊँच दरबार निहकलंक दिस आवे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी कल वरतावे। मस्तूआणे चरन टिका। आपणे चरन प्रभ लए उठा। साचा जाए कर्म कमा। लिख्त लिखाए अगम्म अथाह। प्रगटे जोत निहकलंक प्रभ साचा बेपरवाह। चार वरन दिखाए चलाए एका राह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जोत लए प्रगटा। मस्तूआणे जोत प्रगटा। सृष्ट सबाई प्रभ लेख दए लिखा। भरम भुलेखे सर्ब दे, प्रभ साचा दए खुल्हा। वाली हिन्द चरन लाग भुल लए बख्शा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त रिहा लिखा। भाणा वरते प्रभ साचे। जोत सरूपी जाए राचे। गुरमुख विरला हिरदे वाचे। बेमुखां लग्गण जोत अग्न तमाचे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शब्द लिखाए सचो साचे। मस्तूआणे शब्द लिखा के। सृष्ट सबाई भेद खुल्हा के। कलिजुग अन्त अख़ीर प्रभ जाए करा के। सतिजुग साची धीर प्रभ जाए धरा के। वाली हिन्द प्रभ सरनी लग्गे आ के। पिछली जाए भुल्ल बख्शा के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सिर रक्खे हत्थ टिका के। वाली हिन्द अर्ज़ गुज़ारे। प्रभ जाए जमन किनारे। सन्त मनी सिँघ तेरे निशान अपारे। धरे चरन नरायण नर अवतारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची कल वरतारे। वाली दो जहान। जमन किनारे उतरे आण। साध संगत प्रभ दवाए साचा माण। साचा शब्द सति वरताण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा निहकलंक विष्नूं भगवान। साची लिख्त प्रभ लेख लिखईआ। आपणा भेत आप खुल्हईआ। वरन चार इक्क करईआ। सृष्ट सबाई चढ़ाए एका नईआ। चार कुन्ट प्रभ एका शब्द चलईआ। एका राज एका ताज एका काज सर्ब सृष्ट करईआ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचे लेख लिखईआ। किनारे जमन डेरा लावना। साचा धाम प्रभ बनावणा। साचा काम आप करावणा। लिक्खया शब्द सति वरतावणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, सभ दा माण गंवावणा। वाली हिन्द प्रभ शरनी आए। वड वड सेव प्रभ चरन कमाए। साध संगत माण रखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द दे लिखाए। जाए आप प्रभ गिरधार। साचा लाए इक्क दरबार। रसना देवे शब्द उचार। एका जोत दिसाए कृष्न मुरार। अठारां ध्याए प्रभ रसना लए उचार। चार वेद छे शास्त्र प्रभ सर्ब दे मनार। वेद पुराना बाहरा प्रभ आप दिसावे निरँकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, खेल करे अपार। सच दरबार प्रभ लगाए। साचा शब्द आप उपजाए। धुर दी बाण जगत चलाए। रंक राजान इक्क कराए। वाली हिन्द आए सीस निवाए। साचा कर्म

६३९
०१

साचा धर्म प्रभ जाए चलाए। दुखियां भुखियां प्रभ जाए माण दवाए। आत्म सुखियां प्रभ जाए सुख वसाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा कर्म जाए कमाए। भारत वर्ष प्रभ चरनी ला। एका वरन प्रभ दए करा। तीर्थ तट्ट सर्ब मिटा। साचा मार्ग देवे जगत चला। सोहँ साचा शब्द प्रभ देवे झोली पा। वड्डे वड्डे ज्ञानीआं प्रभ देवे हुक्म सुणा। तोड़े माण अभिमानीआं, प्रभ दुष्ट लए निवा। बख्शे चरन धूढ़ इशनानीआं, चार कुन्ट दूत दए भजा। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चार कुन्ट प्रभ डंक दए वजा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची खेल दए रचा। चार कुन्ट प्रभ दूत पठाए। वाली हिन्द सिर हत्थ टिकाए। सर्ब खण्ड विच हुक्म सुणाए। नव खण्ड पृथ्मी प्रभ एक कराए। साचा माण साचा ताण, प्रभ आपणे हत्थ रखाए। सोहँ शब्द प्रभ मारे बाण, आकी कोई रहण ना पाए। चार कुन्ट करे परवान। एका होवे रंक राजान। ज़ात पात सर्ब मिट जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत धरे भगवान। साची धुन कदे टुट ना जाए। सोया जीव प्रभ सर्ब जगाए। निहकलंक विच मात दे आए। साचा कर्म साचा धर्म विच जगत चलाए। कलिजुग झूठे भरम प्रभ नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा राह बताए। भारत वर्ष प्रभ माण दवाणा अचरज खेल प्रभ फेर करावणा। जोत सरूप प्रगट जोत विच रूस दे जावणा। साचा डंक चार कुन्ट प्रभ आप जाए वजावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेख सर्ब मिटावणा। देवण को प्रभ एक दातार। मंगण खड़े कोट द्वार। मातलोक करे सच दरबार। भगत वछल भगत उधार। जोत सरूप निहकलंक नरायण नर अवतार। साचा प्रभ खाली भरे भण्डार। साची दात आप देवे करतार। साध संगत साचा प्रभ जाए तार। दुःख भुक्ख प्रभ जाए मार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी पाए सार। दुःख दुख प्रभ दुःख कटाए। सुख सुख सुख आत्म सुख उपजाए। मुख मुख मुख प्रभ उज्जल मुख कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब थाएँ होए सहाए। गुरसिख तेरी तृखा मिटाए। गुर साचा पूरन आस कराए। देवे दात दान प्रभ रघुराए। पुरख निरँजण देवे वड वड्याए। साचा नाम अञ्जन, प्रभ देवे नेत्र पाए। साचा चरन धूढ़ मजन, इशनान दे प्रभ कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दा होए सहाए। जन जन जन प्रभ तारे। धन्न धन्न धन्न सो जन, जो चरन प्रभ निमस्कारे। मन मन मन, प्रभ तोड़े मन हँकारे। कन्न कन्न कन्न, प्रभ सोहँ शब्द उपजावे धुन्कारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, खाली भरे भण्डारे। साचा प्रभ वड भण्डारे। देवे दात प्रभ गिरधारे। जो जन आए चरन दवारे। चरन प्रीती रंग अपारे। पूरन आस करे मुरारे। देवे दात वड संसारे। दुःख भुक्ख दी कट्टे बीमारे। आत्म देवे नाम ख़ुमारे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारे। साचा प्रभ दया कमाए। किशना पख अन्धेर मिटाए। साची जोत

विच दीप जगाए। आत्म भउ सर्ब चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाए। पूरन आस प्रभ कराए। साची दात झोली पाए। कलिजुग माया नेड़ ना आए। सोहँ शब्द सद उपजाए। गुरमुख साचा रसनी गाए। निहकलंक अवतार प्रगट जोत दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे विच समाए। साचा प्रभ सज्जण सुहेला। साध संगत कराए साचा मेला। अचरज खेल पारब्रह्म विच मात दे खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखावे जोत प्रगटावे बेमुखां हत्थ ना आए वेला। बेमुखां प्रभ लेख लिखाया। मदिरा मास रसन लगाया। साचे प्रभ वेले अन्त दुष्ट मलेच्छां खपाया। गुरसिख साचे किरपा करी बेअन्त, प्रभ अमृत मुख चुआया। देवे माण विच साधन सन्त, निहकलंक जिस जन तेरी सरनाया। मिले वड्याई विच जीव जन्त, मातलोक विच नाम रखाया। अन्त जोत मिलाए जिस बणाई बणत, प्रभ साचे आवण जाण खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरताया। जो जन चले प्रभ के भाणे। आत्म रंग सदा जन माणे। साची दात देवे भगवान, सोहँ शब्द महाने। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाने। प्रगट होवे वाली दो जहाने। आत्म जोत जगाए प्रभ महाने। आवण जाण चुकाए, जोत सरूप विच जोत मिलाणे। बैकुण्ठ निवासी विच बैकुण्ठ निवास रखाणे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, दर दरबान बहाणे। एका धाम बैकुण्ठ बणाया । साध संगत दा डेरा लाया। एका जोत जगे रघुराया। जोत सरूपी जोत प्रकाश प्रभ, तीन भवन कराया। अमृत वरखे जिउँ मेघ सवण साध संगत प्रभ आत्म शांत कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत पहली माघ साध संगत दरस दिखाया। बैकुण्ठ धाम धाम न्यारा। पारब्रह्म सद रक्खे अवतारा। जोत सरूपी जोत आकारा। बैठे अडोल आप निराधारा। जगे जोत अगम्म अपारा। कलिजुग जीव ना जाणे प्रभ का रंग अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँकारा। जोत निरँकार जगत बिलोए। तीन लोक प्रकाश होए। मात पताल अकाश प्रभ साचे दी साची सोए। रघुपति रघुनाथ जुगो जुग आपणा भेत खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग प्रगट बेमुखां रिहा सवाए। साचे प्रभ एह कर्म कमाया। आप आपणा आप उपाया। जोत सरूपी इक्क प्रकाश, तीन लोक रखाया। एका जोत प्रभ अबिनाश, ना कदे मरे ना जाया। सर्ब सृष्ट सद रखे वास, मातलोक प्रभ सदा समाया। जीव जन्त प्रभ जोत निवास, विच वसे दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुणतास, साध संगत सभ भेद खुल्हाया। साध संगत प्रभ भेद खुल्हाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। दरम्म दुआर प्रभ खुल्हाए। गुरमुखां प्रभ साचा दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिक्खां दया कमाए। निहकलंक वड्डी वड्याई । वड्डी दात गुरमुखां दवाई। साध संगत प्रभ भेद खुल्हाई। आपणी जोत कलि प्रगटाई। देवे दरस प्रभ रघुराई। गुरमुख सोया

प्रभ लए जगाई। सुरत शब्द दा मेल कर, प्रभ देवे दरस रघुराई। कलिजुग अचरज खेल कर, साची निमस्कार चरन कराई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साची दित्ती भगत वड्याई। साचा कर्म प्रभ कराया। भगत जनां प्रभ दरस दिखाया। तीजा नैण प्रभ खोल्ह वखाया। जोत सरूपी साचा रूप प्रभ दिखाया। महाराज शेर सिँघ कलिजुग वड भूप, आपणे रंग समाया। गुरसिक्खां प्रभ दरस दिखाए। आत्म साची जोत जगाए। बेमुख कोई दर ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द कमाए। साचा प्रभ दया कमाए। साध संगत मेल मिलाए। साची मति प्रभ विच पाए। एका शब्द रसना अलाए। रैण दिवस दिवस रैण, प्रभ मंगलाचार कराए। धन्न धन्न धन्न गुर संगत, हरि हरि हरि जस रसना गाए। आत्म चाढ़े प्रभ साची रंगत, नाम ख़ुमारी साध चढ़ाए। गुरमुख साचे प्रभ गले लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाए। साध संगत प्रभ दया कमाया। पूरब लहणा झोली पाया। एका बख्शे चरन ध्यान, अमृत आत्म मुख चुआया। साचा माण साचा ताण निहकलंक रखाया। तोड़े माण गुणी निधान, आत्म सुध कराया। प्रभ अबिनाशी जाणी जाण, विछड़यां प्रभ मेल मिलाया। देवे दान प्रभ पुरख सुजान, साचा नाम दान प्रभ झोली पाया। एका बख्शे चरन ध्यान, अमृत आत्म मुख चुआया। साचा उपजे ब्रह्म ज्ञान, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाया। निहकलंक पतित पावन, खेल अवल्लड़ा जगत चलाया। अछल अछल अछल प्रभ अडोल, सृष्ट सबाई विच मवलाया। सोहँ साचा धर तराजू, सारा जगत तुलाया। प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत, आपणा भेद जगत खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हँकार निवारे जो दर आए बिललाया। जो जन आए दर हँकारी। आत्म होई जगत विकारी। मदिरा मास रसन आहारी। शब्द मार प्रभ साचे मारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म लाहे सर्ब ख़ुमारी। जो जन आए होए निमाणा। एका रक्खे चरन ध्याना। प्रभ अबिनाशी पूरन ज्ञाना। देवे दात प्रभ महाना। साचा नाम भगत भगवाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत सरूपी जामा धार। जोत निरँजण विच संसार। गुरमुखां लए कर्म विचार। खिच ल्याए प्रभ विच दरबार। बाहों पकड़ प्रभ जाए तार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रभ साचे दी साची कार। टुट्टी गंढुणहार दयाला। अमृत बख्शे सर्ब प्रितपाला। होए सहाई आप रखवाला। आपणे रंग रवे आप गुर गोपाला। जगत दु:ख कोई पोह ना सके, वलिया छलिया टूणा जादू होए आप रखवाला। महाराज शेर सिँघ साचा प्रभ, सर्ब जनां रखवाला। साचा प्रभ अमृत मुख चुआए। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत कोई नेड़ ना आए। सर्ब दा प्रभ माण गंवाए। माई गौरजा मृदंग वजाए। अन्तकाल प्रभ नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाए। गुरमुख रक्खे आपणी आण। सिद्ध साधकां लावे बाण। सभना तोड़े प्रभ अभिमान। कलिजुग जामा धारे महाराज शेर सिँघ

बली बलवान। साचा प्रभ सच्चा साहिब। साचा गुर गम्भीर गहर। साचा प्रभ सच निरवैर । सच्चा प्रभ अमृत बख्शे कर जाए मेहर। अमृत रस मुख चुआए। साचा अमृत सुफल कुख कराए। दीना नाथ दर्द दुःख भंजन, आपणी दया कमाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देही दुःख मिटाए। दुःख दर्द प्रभ निवारे। दर घर आए काज संवारे। भुल्ले डुल्ले प्रभ पार उतारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, ख़ाली भरे भण्डारे। साचा प्रभ दया कमा। दुःख रोग प्रभ जाए गंवा। सुफल कुक्ख जाए करा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां होए सहा। दया धार प्रभ बख्शणहारा। गुण अवगुण प्रभ ना विचारा। साचा देवे अमृत अधारा। पी अमृत होए उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, ख़ाली भरे भण्डारा। ऊँचा सूचा प्रभ का धाम। सतिगुर महिंमा लिखी महान। आत्म आया साचा ध्यान । प्रभ साचा बख्शे सोहँ दान। आत्म होए गुणी निधान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, गुरसिख साचे दिया माण। साचे घर साचे दर मिली वड्याई। प्रभ साचे दी महिंमा गाई। आत्म देवे सुख सर्ब सुखदाई। काया कटाक्ष प्रभ साचे चोट लगाई। उपजे धुन खुल्हे सुन्न, गुर साचे दी महिंमा गाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, तेरी कलम देवे वड्याई। साचा उपज्या सच ज्ञान। एका उपजया चरन ध्यान। साची दात मंगी ब्रह्म ज्ञान। सोहँ साचा दान प्रभ देवे गुणी निधान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आत्म

६४३ ०१ करे चतुर सुजान। अमृत रस चातृक पीव। गुरसिख तेरी आत्म जगाए दीव। प्रभ साचे के गुण गाए प्रभ रखाई नींव। महाराज ६४३ ०१

शेर सिँघ देवे वड्याई, जो रसना गावे जीव। रसना किया शब्द आहार। एका उपजी सच्ची धुन्कार। लिखी वड्याई निहकलंक अपार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भर दए तेरे भण्डार। आत्म भरे प्रभ भण्डारा। लिख्त लिखाए अपर अपारा। दिवस रैण प्रभ जोत सरूपी देवे चमत्कारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भर दए तेरा भण्डारा। प्रभ की महिंमा जिस जन गाई। मातलोक विच मिली वड्याई। साचा प्रभ होए सहाई। गुरमुख साचे भुल्ल ना जाई। मदिरा मास ना रसना लाई। आपणी कीती ना आप गुआई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सभ थांई होए सहाई। मदिरा मास ना रसन लगाउणा । प्रभ अबिनाशी घर में पाउणा। आत्म साचा दीप जगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, स्वास सरूपी वसे पवणा। आत्म रस रस माण। आत्म होए गुणी निधान। लिक्खया प्रभ साचे वड्याई शान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जो चरनी डिग्गे आण। प्रभ साचा देवे भेद खुल्हाई। निजानंद निज मांह चलाई। अमृत आत्म मेघ बरसाई। नाभ कँवल दे विच चुआई। खुल्हे कँवल होए उज्जयार, सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साची सोझी पाई। साचा दर विरले बूज्झया। प्रभ अबिनाशी साचा सूज्झया। जोत सरूपी प्रभ भेव खुल्हावे गूज्झया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा,

आत्म भेद मिटावे दूज्जया। एका जोत करे आकार। जोत सरूप प्रभ गिरधार। पवण उनन्जा सिर छत्र झुलार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी जाणे सार। सर्ब जनां प्रभ जानणहारा। सर्ब जनां प्रभ देवे नाम अधारा। आपे रावे आपे गावे, सोहँ नाद वजावणहारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी पसर पसारा। जोती जोत प्रभ सरूपिआ। सदा अनन्द सदा अनूपिआ। गुरमुख मंगे मंग वेख दर वड भूपिआ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे दान सति सरूपिआ। प्रभ साचे दी साची दात। सोहँ शब्द सची करामात। गुरमुख कराए एका ज़ात। दिवस रैण जोत जगावे आत्म खोले ताक। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी तेरा साचा नात। प्रभ संग जीव साचा नाता। सभ झूठे भैण भ्राता। अन्तकाल ना कोई संगी, छड गए झूठे सर्ब पित माता। जोत सरूप प्रगट जोत प्रभ देवे दरस बिधाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सदा रंग राता। जोत सरूप प्रभ रंग रंगाए। आत्म रंग मजीठ चढ़ाए। साचे दर जो मंगण आए। साचा नाम प्रभ भिच्छया पाए। भरे भण्डार तोट ना आए। जो जन एका ओट रखाए। निजानंद निज मांहि उपजाए। अमृत झिरना प्रभ निझरों दे झिराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पूरन आस कराए। साचा वर दर प्रभ मंगया। प्रभ साचे नाम आत्म रंग्गया। रसना जप जप जीव भवजल पार लंघया। गुरमुख आए साचे घर मूल ना सन्गया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दान जो मूंहों मंगया। देवणहार एक दातारा। भगत जनां प्रभ भरे भण्डारा। दोए जोड़ खड़े चरन दवारा। हउमे ममता छोड करन निमस्कारा। प्रभ साची जोत जगाए सर्ब संसारा। सोहँ शब्द प्रभ रसन उचारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच जोत निरँकारा। निरँकार नरायण नर। साची जोत जगत जाए धर। जो जन गए चरन पड़। गुरमुखां देवे साचा वर। नाम भण्डारे प्रभ जाए भर। अमृत आत्म विच बणाए सर। पी अमृत सदा जग जीव, गुरमुख ना जाए मर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वास कराए साचे घर। साचे घर प्रभ सिख टिकाया। जोत सरूपी प्रगट जोत विच जोत मेल मिलाया। सिख गुर गुर सिख एका जोत एका गोत, एका दूजा प्रभ भउ चुकाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी कलिजुग खेल रचाया। साचा प्रभ दया कमाए। प्रगट जोत भोग लगाए। प्रभ साचे दी सच वड्याए। जूठे बेर भीलणी खाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचे खेल आप कराए। साचे प्रभ एह कर्म कमाया। रिखीआं मुनीआं माण गंवाया। घर भीलणी भोग लगाया। भक्ख तांई भोज बणाया। विच सरोवर प्रभ साचे भीलणी चरन छुहाया। साचा नीर साचा सर रघुपति उपजाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जुगो जुग तेरी अचरज वरते माया। साचा प्रभ कर्म कमाए। भगत जनां घर भोग लगाए। जिउँ धन्ने दी छाछ मुकाए। नाम देव प्रभ आण तराए। पकड़ कटोरा

मुख लगाए। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, प्रगट जोत भोग लगाए। भोग लगाए प्रभ भण्डारे। साध संगत सर्ब वरतारे। आत्म दुःख प्रभ निवारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत निरँकारे। प्रभ साचे घर भोग लगाया। साध संगत दे रखाया। हउमे रोग विच्चों कढ्ढ, आत्म संसा सारा लाहया। साचा सुख आत्म उपजाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी विच सिख समाया। भोग लगाए भगत भण्डारे। दर घर आए पैज संवारे। जोत निरँजण विच मात आकारे। साचा प्रभ सर्ब भरे भण्डारे। दर घर आए पैज संवारे। छिन्न भंगर जोत निरँकारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत करे आकारे। भोग लगाए प्रभ पकवान। प्रभ साचे रसना किया पान। साध संगत प्रभ दित्ता दान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, कर्म कमाया आण। भोग लगाए प्रभ वड भोगिया। आत्म शांत कराए प्रभ वड जोगिया। देही रोग मिटाए प्रभ वड रोगिया। महाराज शेर सिँघ सच भण्डारा, रसना भोग लगावे भोगिया। साचा प्रभ दया कमाए। हरन फरन गुरसिख खुल्हाए। आप आपणा भेद खुल्हाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। निजानंद प्रभ सुख उपजाए। परमानंद विच सिख समाए। ब्रह्म सरूपी ब्रह्म हो जाए। प्रभ साचा सिर हत्थ टिकाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचे दया कमाए। गुरसिख सिर प्रभ हत्थ रखाया। आप आपणा भेद खुल्हाया। प्रगट होए तीजे नैण, प्रभ साचे दरस दिखाया। साचा दे आत्म ज्ञान, सोहँ साचा स्वास चलाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी मेल मिलाया। जोत सरूपी मेल कर, प्रभ भगत उधारे। पारब्रह्म अचरज खेल कर, साची जोत करे आकारे। जोत प्रकाश बिन बाती बिन तेल कर, करे प्रकाश विच देह झूठे महिल मुनारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचे पार उतारे। गुरसिख साचा पार उतारया। प्रगट जोत आपणा बिरद संभारया। अछल छल प्रभ कलिजुग करे अपारया। जोत सरूपी धर भेख, भुलाए सर्ब संसारया। गुरमुख साचे जोत एक कर प्रभ जन्म मरन संवारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साचा कर्म कमा ल्या। गुरमुखां प्रभ रंग चढ़ाए, चाढ़े रंग जो उतर ना जाए। गुरमुखां प्रभ जोत जगाए, जगाए जोत जो बुझ ना जाए। गुरमुखां प्रभ सोग मिटाए, मिटाए सोग जो फिर ना आए। गुरमुखां प्रभ दिब दृष्ट खुल्हाए, खुल्हाए प्रभ फिर ना बन्द कराए। गुरमुखां प्रभ सुन्न समाध खुल्हाए, खुल्हे सुन्न प्रभ साची सोझी पाए। गुरमुखां प्रभ आत्म जिंदा दए खुल्हाए, सोहँ साची चाबी लाए। गुरमुखां प्रभ दया कमाए, आत्म विच सद समाए। गुरमुखां प्रभ अन्धेर मिटाए, मिटे अन्धेर जोत प्रगटाए। गुरमुखां प्रभ दीद वखाए, जोत सरूपी नज़री आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे दया कमाए। गुरमुखां प्रभ धीर धराए, आत्म सोहँ साचा तीर लगाए। गुरमुखां प्रभ पीड़ चुकाए, हउमे कंडा कढ्ढ वखाए।

गुरमुखां आत्म नीर वहाए, अमृत झिरना दे झिराए। गुरमुखां प्रभ दया कमाए, खोल्ह त्रैकुटी दरस दिखाए। गुरमुखां महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप आपणा भेद खुल्हाए। गुरमुखां प्रभ भेद चुकाया। आप आपणा जोत सरूपी दीपक विच देह जगाया। साची जोत करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाया। हउमे किया नास, सच सुच्च वरताया। होया आप प्रभ दास, दासां दे विच समाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख आपणे रंग रंगाया। गुरमुख साचा रंग रंगीला। गुरमुख मिल्या प्रभ साचा बीठला। आत्म चढ़ाए रंग मजीठला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे रंग साचा डीठला। गुरमुख तेरी सुरत अनाद। गुरमुख सच सदा ब्रह्माद। गुरमुख तेरा होए सहाई प्रभ आदि जुगादि। गुरमुख साचे साची धुन उपजाई प्रभ नाद। गुरमुख साचे तेरी लिख्त लिखाई, शब्द लिखाए प्रभ बोध अगाध। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई, विच साधन साध। साध सन्त प्रभ वड्आया। गुरमुख साचे लेख लिखाया। उतरे भुक्ख दरस दिखाया। उपजावे सुख कपाट बजर खुल्हाया। वास ना पाए मात कुक्ख, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। गुरसिख तेरी पूरन घाल। गुरचरन प्रीती लई पाल। गुरमुख तेरी निभे नाल। आत्म दीपक प्रभ देवे बाल। गुरमुख तोड़े आप जंजाल। गुरमुख लभ्भ ल्या पाल। लक्ख चुरासी विच्चों लाल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा तेरा रखवाल। गुरमुख साचे मन वधाई। पारब्रह्म तेरी पति रखाई। गुरमुख साचे हरि गुण गाई। प्रभ साचा सद विच समाई। गुरमुख साचे प्रभ बूझ बुझाई। प्रभ अभेद अभेद हो जाई। गुरमुख साचे अन्धेर मिटाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, कलि तेरी वड्याई। गुरमुख तेरी पूरन आसा। प्रभ पूरन देवे जगत भरवासा। गुरसिख तेरी आत्म रहिरासा। सोहँ शब्द जप स्वास स्वासा। गुरमुख मिले प्रभ अबिनाशा। जोत सरूपी किया वासा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भगत जनां दा होए दासा। भगत जनां प्रभ दास बणाया। जुगो जुग प्रभ जगत पठाया। साचा काम प्रभ जामा पाया। बहत्तर जामे प्रभ लेख लिखाया। मातलोक विच माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। गुरमुख तेरी पति रखाई। दूई द्वैत प्रभ चुकाई। गुरमुख आत्म होए रुशनाई। प्रभ साचे ने जोत टिकाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अदि जुगादि तेरा सहाई। गुरमुख तेरा माण रखाया। प्रभ साचे सिर हत्थ टिकाया। गुरमुख तेरा आवण जाण चुकाया। जोत सरूपी मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा खेल खिलाया। प्रभ अबिनाशी लेख लिखाए। गुरमुख साचे विच समाए। गुरमुख साचे प्रभ होए सहाए। अन्त काल प्रभ दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे दरस जोती जोत मिलाए। अन्तकाल प्रभ भए सहाए। दे दरस प्रभ देह छुडाए। विच बिबाण प्रभ लए बिठाए। बैकुण्ठ निवासी विच बैकुण्ठ लै जाए। गुरमुख तेरी बणत बणाए। थिर घर

वासी थिर घर पुचाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत मिलाए। गुरमुख साचा जोत मिलाया। लक्ख चुरासी गेड़ चुकाया। प्रभ अभेद गुरमुख साचे विच समाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, तेरा साचा लेख लिखाया। गुरसिक्खां प्रभ लेख लिखाए। साची दरगहि माण दवाए। एका आपणी जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची बणत बणाए। गुरसिख तेरा धाम न्यारा। जगे जोत अगम्म अपारा। प्रभ अबिनाशी वसे निरँकारा। जोत सरूप सदा निराधारा। आप अडोल प्रभ गिरधारा। रंग रूप ना किसे विचारा। एका जोत सर्ब आकारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी जोत अधारा । गुरमुख साचे तेरा साचा घर। प्रभ अबिनाशी एका दर। एका जोत मिलावे अवतार नर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चरन लाग जग गया तर। साची पुरी प्रभ बणाई। एका आपणी जोत जगाई। गुरमुख साचे विच समाई। जिस उपजाया तिस लए मिलाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत बुझ ना जाई। साचा प्रभ अगम्म अपार । जोत जगाए प्रभ निरँकार। गुरमुख बहाए विच दरबार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, बणया आप करतार। भगत जनां प्रभ दासन दासा। विच बैकुण्ठ कराए वासा। एका जोत एका प्रकाशा। महाराज शेर सिँघ आदि जुगादि सदा अबिनाशा । साचा प्रभ सदा अबिनाश। सृष्ट सबाई जाए विनास। गुरमुख जन्म होए रास। प्रभ साचा जपिआ स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अंग संग प्रभ सद रहे पास। जोत जोत जोत निरँकार। जोत जोत जोत सर्ब आकार। जोत जोत जोत सरूप प्रभ गिरधार। जोत जोत जोत प्रभ, वसे विच संसार। जोत जोत जोत प्रभ, सर्ब जीआं दे अधार। जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूप लए अवतार। जोत जोत जोत प्रभ, जुगो जुग आवे वारो वार। जोत जोत जोत प्रभ, अनाथां नाथ सुणे सर्ब पुकार। जोत जोत जोत प्रभ, साची जोत धरे विच संसार। जोत जोत जोत प्रभ, नाथ त्रैलोकी कृष्न मुरार। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक अवतार। जोत जोत जोत प्रभ, निहकलंक अवतारा। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग किया खेल अपारा। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग माया किया पसारा। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग जीआं आत्म करे अन्धयारा। जोत जोत जोत प्रभ, बेमुखां करे ख्वारा। जोत जोत जोत प्रभ, अन्त पूर खपाए मूर्ख मुग्ध गंवारा। जोत जोत जोत प्रभ, बेमुख रसन लगाए मदिरा मास आहारा। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ शब्द बाण बेमुखां मारा। जोत जोत जोत प्रभ, अन्तकाल कलिजुग सोहँ शब्द चलाया खण्डा दो धारा। जोत जोत जोत प्रभ, प्रगट जोत निहकलंक गुरमुखां देवे नाम अधारा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरमुखां आत्म करे उज्जयारा। जोत जोत जोत प्रभ, जोत निरँकारा। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ साचा देवे देह हुलारा। जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूप समाए चलाए

पवण दवारा। जोत जोत जोत प्रभ, जन भगतां देवे नाम अधारा। जोत जोत जोत प्रभ, कलि धरे जोत निहकलंक अवतारा। जोत जोत जोत प्रभ, कर दरस गुरसिख उतरे पारा। जोत जोत जोत प्रभ महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब घट वरतारा। जोत जोत जोत प्रभ जोत जगाए। जोत जोत जोत प्रभ, साचा नाद वजाए। जोत जोत जोत प्रभ, साची गाथ सुणाए। जोत जोत जोत प्रभ, सतिजुग साची नींह रखाए। जोत जोत जोत प्रभ, पहली माघ दो हज़ार अठ्ठ बिक्रमी भाग लगाए। जोत जोत जोत प्रभ, दर आई साध संगत माण दवाए। जोत जोत जोत प्रभ, दर घर साचे भिच्छया पाए। जोत जोत जोत प्रभ, आत्म रंगण नाम चढ़ाए। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेले अन्त होए सहाए। जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूपी दरस दिखाया। जोत जोत जोत प्रभ, प्रभ साचे मार्ग लाया। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ साचा शब्द चलाया। जोत जोत जोत प्रभ, निमाणयां सिर हत्थ टिकाया। जोत जोत जोत प्रभ, छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्क कराया। जोत जोत जोत प्रभ, चार वरन इक्क जोत जगाया। जोत जोत जोत प्रभ, ऊँच नीच दा भेव चुकाया। जोत जोत जोत प्रभ, सतिजुग साचा राह चलाया। जोत जोत जोत प्रभ, राउ रंक इक्क कराया। जोत जोत जोत प्रभ, एका बंक द्वार सुहाया। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग झूठा खेल मिटाया। जोत जोत जोत प्रभ, वाहवा सतिजुग साचा लाया। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया। जोत जोत जोत प्रभ, कलि जोत जगाई। जोत जोत जोत प्रभ, सृष्ट सबाई ख़ाक रुलाई। जोत जोत जोत प्रभ, चार कुन्ट पए दुहाई। जोत जोत जोत प्रभ, राजे राणयां जाए पति गंवाई। जोत जोत जोत प्रभ, बेमुखां नक्क नत्थ पवाई। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग साची कार कराई। जोत जोत जोत प्रभ, बेमुखां देवे प्रभ सज़ाई। जोत जोत जोत प्रभ, दर दर मंगण भिख ना पाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची लिख्त लिखाई। जोत जोत जोत प्रभ, साचा लेख लिखारी। जोत जोत जोत प्रभ, जन भगतां देवे नाम अधारी। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ साचा शब्द देवे भण्डारी। जोत जोत जोत प्रभ, साध संगत जाए पैज संवारी। जोत जोत जोत प्रभ, दूतां दुष्टां जाए सँघारी। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतारी। जोत जोत जोत प्रभ, रंकां देवे सची सिक्दारी। जोत जोत जोत प्रभ, राउ करे ख्वारी। जोत जोत जोत प्रभ, एका दर उपजावे सच्चा दरबारी। जोत जोत जोत प्रभ, चार वरन कराए दर भिखारी। जोत जोत जोत प्रभ, मातलोक विच छत्र झुलारी। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा इक्क जोत निरँकारी। साची जोत प्रभ निरँकारा। जोत जोत जोत प्रभ गिरधारा। जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूप वरते विच संसारा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरमुखां देवे दरस अपारा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरमुख साचे

खोल् देवे दरस्म दुआरा। जोत जोत जोत प्रभ, आत्म दीप करे उज्जयारा। जोत जोत जोत प्रभ, रुण झुण उपजाए सची धुन्कारा। जोत जोत जोत प्रभ, अनहद राग उपजाए अपारा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरसिख तेरा जन्म मरन संवारा। जोत जोत जोत प्रभ, कर दरस करे आत्म उज्जयारा। जोत जोत जोत प्रभ, सिँघासण बैठे गिरधारा। जोत जोत जोत प्रभ, आत्म सहसा लाहे सारा। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप जोत आकारा। जोत सरूप सदा निराहारी। जोत सरूप जगत अधारी। जोत जोत जोत प्रभ, साची जोत मात अवतारी। जोत जोत जोत प्रभ, नाम धराया निहकलंक नरायण नर अवतारी। जोत जोत जोत प्रभ, खाणी बाणी पार उतारी। जोत जोत जोत प्रभ, साचा शब्द रसन आहारी। जोत जोत जोत प्रभ, चार वेदां करे ख्वारी। जोत जोत जोत प्रभ, साची मात करे सिक्दारी। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ साची जोत धरे मुरारी। जोत जोत जोत प्रभ, जोत जगाणा। जोत जोत जोत प्रभ, अन्तकाल कलि मिटाए अञ्जील कुराना। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ शब्द चलाणा। जोत जोत जोत प्रभ, एका जोत जगे महाना। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग भेख सर्ब मिटाणा। जोत जोत जोत प्रभ, दूसर कोई रहण ना पाणा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरसिक्खां देवे दरस महाना। जोत जोत जोत प्रभ, गुरसिक्खां बख्शे चरन धूढ़ इशनाना। जोत जोत जोत प्रभ, निहकलंक आप भगवाना।
६४६ ०१ जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत जोत जोत प्रभ, मातलोक धरे बिध नाना। जोत जोत जोत प्रभ, कलि ६४६ ०१
विरले गुरमुख जाणा। जोत जोत जोत प्रभ, जन भगतां होए मेहरवाना। जोत जोत जोत प्रभ, एका राग उपजाना। जोत जोत जोत प्रभ, सतिजुग साचा मार्ग लाणा। जोत जोत जोत प्रभ, पहली माघ वक्त सुहाणा। जोत जोत जोत प्रभ, चार वरन इक्क कराना। जोत जोत जोत प्रभ, सतिजुग साचा राह चलाणा । जोत सरूपी जोत प्रभ, महारज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निमाणयां सिर हत्थ टिकाणा। जोत जोत जोत प्रभ, सति जोत अधारी। जोत जोत जोत प्रभ, एका एकँकारी। जोत जोत जोत प्रभ, सृष्ट सबाई करे पनिहारी। जोत जोत जोत प्रभ, साध संगत तेरी जाए पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जाओ चरन बलिहारी। प्रभ चरन जाओ बलिहार। प्रभ के चरन हरि का द्वार। प्रभ के चरन जायण तार। प्रभ के चरन जीव उतरन पार। प्रभ के चरन मोख द्वार। प्रभ के चरन विरला पावे सार। प्रभ के चरन जीव जन्त अधार। प्रभ चरन साध संगत बेड़ा कर जाए पार। प्रभ चरन जिस जन जाणया । प्रभ चरन जिस रंग माणया। प्रभ चरन लाग होए सुघड़ स्यिाणया। प्रभ चरन बुध्ध बिबेक करे अञ्याणया। प्रभ चरन गुरसिख तरनणया। प्रभ चरन गुरमुख विरला करे ध्यानया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, किरपा करे जिस भगवानया। प्रभ चरन जो जन आया, चरन धूढ़ लै मस्तक

लाया। प्रभ चरन जो जन आया, आसा मनसा प्रभ पूर कराया। प्रभ चरन जो जन आया, आत्म रस प्रभ दे चुआया। प्रभ चरन जो जन आया, साचा वर प्रभ दर ते पाया। प्रभ चरन जो जन आया, हँकार निवार प्रभ मार्ग लाया। प्रभ चरन जो जन आया, लक्ख चुरासी प्रभ जून कटाया। प्रभ चरन जो जन आया, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ माण दवाया। प्रभ चरन जो जन आया, विच वरभंड प्रभ वड्आया। प्रभ चरन जो जन आया, जोत सरूप सिर हत्थ टिकाया। प्रभ चरन जो जन आया, प्रभ साचे ने चरनी लाया। प्रभ चरन जो जन आया, अज्ञान अन्धेर प्रभ दे मिटाया। प्रभ चरन जो जन आया, भरम निवार माण गंवाया। प्रभ चरन जो जन आया, जोत सरूप प्रगट जोत दरस दिखाया। प्रभ चरन जो जन आया, अमृत आत्म सति सति वरताया। प्रभ चरन जो जन आया, माया अग्न दे जलाया। प्रभ चरन जो जन आया, दुःख भुख दा रोग मिटाया। प्रभ चरन जो जन आया, चरन सेव प्रभ साचे लाया। प्रभ चरन जो जन आया, आत्म भउ सर्ब चुकाया। प्रभ चरन जो जन आया, सोहँ साची नाओ चढ़ाया। प्रभ चरन जो जन आया, प्रभ साचे सच मेल मिलाया। प्रभ चरन जो जन आया, भरम भुलेखा प्रभ सारा लाहया। प्रभ चरन जो जन आया, एका रूप अगम्म दरसाया। प्रभ चरन जो जन आया, सुरत शब्द प्रभ ज्ञान दवाया। प्रभ चरन जो जन आया, साचा ध्यान रिदे वसाया। प्रभ चरन जो जन आया, गोझ ज्ञान दा भेद चुकाया। प्रभ चरन जो जन आया, नाना रूप प्रभ दरस दिखाया। प्रभ चरन जो जन आया, माण अभिमान सर्ब तुड़ाया। प्रभ चरन जो जन आया, ज्ञान रूप प्रभ शब्द चलाया। प्रभ चरन जो जन आया, सारंगधर भगवान बीठला आपणे रंग रंगाया। प्रभ चरन जो जन आया, प्रभ अबिनाशी साचा बीठला सर्ब सुखदाया। प्रभ चरन जो जन आया, प्रभ कौड़ा करे मीठला जिस चरनी सीस निवाया। प्रभ चरन जो जन आया, इक्क रंग चढ़ाए मजीठला, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा साची दया कमाया। प्रभ चरन जो करे ध्याना। प्रभ साचा देवे दरस महाना। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वाली दो जहानां। प्रभ चरन जो जन आए, प्रभ साचा भए दयाला। प्रभ चरन जो जन आए, आदि अन्त होए रखवाला। प्रभ चरन जो जन आए, आत्म दीपक प्रभ साचे बाला। प्रभ चरन जो जन आए, सोहँ शब्द प्रभ आत्म देवे साची माला। प्रभ चरन जो जन आए, महाराज शेर सिँघ वेले अन्त होए रखवाला। प्रभ चरन जो जन आए, प्रभ साचा पैज संवारे। प्रभ चरन जो जन आए, आत्म जोत होए उज्जयारे। प्रभ चरन जो जन आए, साची धुन उपजे धुन्कारे। प्रभ चरन जो जन आए, एका जोत जगे निरँकारे। प्रभ चरन जो जन आए, मानस जन्म कलिजुग उज्जयारे। प्रभ चरन जो जन आए, दे दरस गुर पार उतारे। प्रभ चरन जो जन आए, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा खोल्ह देवे दस्म दुआरे।

प्रभ चरन जो जन आया, कर किरपा प्रभ पार लँघाया। प्रभ चरन जो जन आया, नाम निधान प्रभ झोली पाया। प्रभ चरन जो जन आया, पहली माघ प्रभ लाज रखाया। प्रभ चरन जो जन आया, सोहँ साची आत्म जाग लगाया। प्रभ चरन जो जन आया, प्रगट जोत निहकलंक अनहद साचा राग उपजाया। प्रभ चरन जो जन आया, निमाणयां सिर हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा लेख लिखाया। प्रभ दरस जन विरला पेखे। कलिजुग जीव रहे भरम भुलेखे। गुरमुख विरला जोत सरूपी रंग प्रभ साचे दा वेखे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत दर आए लाए लेखे। साध संगत प्रभ दर परवान। प्रभ साचे दे साचे गुण गाण। आलस निंदरा मनों तजाण। प्रभ साचे दा चरन ध्यान। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। प्रभ साचे दा दर्शन पाण। प्रगटी जोत निहकलंक बली बलवान। देवे दरस प्रभ सिँघ आसण आण। गुरमुख साचे साचा प्रभ नेत्र पेख विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा वाली दो जहान। सिँघ आसण प्रभ डेरा लाया। मातलोक प्रभ भाग लगाया। वरभंडी वरभंड समाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, निहकलंक नाउँ रखाया। निहकलंक कलि नाउँ रखा के। जोत सरूपी भेस वटा के। भरम भुलेखे सृष्ट भुला के। गुरमुख सोए प्रभ जगा के। देवे दरस दर घर प्रभ आ के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग आए जोत प्रगटा के। साचा प्रभ सच घर आए। जोत सरूपी डेरे लाए। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। गुरसिख प्रभ चरन बहाए। चरन धूढ़ प्रभ मस्तक लाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची दया कमाए। दया करे प्रभ दीन दयाला। साध संगत बणे रखवाला। सोहँ देवे नाम सुखाला। गुरमुख साचा सच कुठाली गाला। मगरों लाहे जगत जंजाला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब थांईं होए रखवाला। सर्ब थाएँ प्रभ होए सहाई। भगत जनां दी पैज रखाई। पतिपरमेश्वर जगत पित आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसंगत माण रखाई। साध संगत तेरा माण रखाया। सच दर आए दर्शन पाया। एका दिसे निहकलंक सरनाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दे विच समाया। सर्ब जनां प्रभ विच समाए। गुरमुख साचा कोई विच्चों पाए। बेमुखां कोई दिस ना आए। गुरमुख प्रभ पर्दा लाहे। आत्म साची जोत जगाए। बेमुखां अन्धेर कराए। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत दया कमाए। तारनहार आप प्रभ तारे। रक्खे लाज आप मुरारे। सचा देवे नाम अधारे। पारब्रह्म प्रभ गिरधारे। जन भगतां आप लिखारे। प्रगट जोत निहकलंक नरायण नर अवतारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरी पैज संवारे। भगत जनां प्रभ लेख लिखाया। निमाणयां प्रभ माण दवाया। मातलोक विच प्रभ वड्आया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साचा शब्द सुणाया। सच्चा शब्द सुणे जो काना। बेमुख आत्म जाए

माना। सोहँ साचा मिले माल धन माला। दिवस रैण ना लागे साना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका राग सुणावे काना। एका राग प्रभ सुणाया। दूई द्वैत पड़दा लाहया। आत्म सर्ब अन्धेर मिटाया। गुरमुख साचे माण दवाया। प्रभ साचे साची दया कर, कागों हँस बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कमाया। गुरमुख वड हँस प्रभ की जोती। सोहँ चोग चुगावे प्रभ माणक मोती। सृष्ट सबाई रही सोती। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, गुरमुख तेरी आत्म धोती। गुरसिख तेरी मैल गंवाई। साची जाग प्रभ साचे लाई। नाम दान दी भद्दी पाई। आत्म तेरी विच रंगाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा गुरसिख साचे दया कमाई। गुरसिख साचा प्रभ रंग माणे। प्रभ चलाए आपणे भाणे। बेमुखां भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। गुरमुख होए सुघड़ स्याणे। कलिजुग भुल्ले जीव बेमुख होए अञ्याणे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब कला वरताणे। सर्ब कला प्रभ वरतणहारा। आप अपरम्पर भेद न्यारा। जुगा जुगन्तर जोत आकारा। गुरमुख साचे देवे जोत अधारा। सोहँ साचा मन्त्र करे जगत वरतारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत धरे संसारा। साची जोत जगत धराए। आपणा भाणा प्रभ वरताए। चार कुन्ट हाहाकार कराए। गुरमुखां जै जै जैकार कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी कल वरताए। कलिजुग वरते आपणी कल। भाणा अन्त ना जाए टल। सृष्ट सबाई जाए हल। प्रभ अबिनाशी करे थल जल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग वरताए आपणी कल। साची कल प्रभ वरतार। जीव जन्त सभ होयण ख्वार। मदिरा मास जो करन आहार। प्रभ साचा मारे साची मार। आप अडोल जोत सरूप निराधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शब्द मार कराए संसार। शब्द मार प्रभ कराए। सृष्ट सबाई सुंञ मसाण वखाए। जो जन आए प्रभ दरबार, प्रभ साचा दया कमाए। बेमुख पीसे प्रभ पीस पीसाए। एक छत्र झुल्ले निहकलंक तेरे सीसे, प्रभ सभ दा माण गंवाए। गुरमुख विरला सतिजुग दीसे, सोहँ शब्द जो रसना गाए। भेद मुकाए प्रभ बीस इकीसे, आप अभेद हो जाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी कल रिहा वरताए। प्रभ साचे दा साचा भाणा। प्रभ साचे सच कमाणा। ऊँच नीच दा भेद मिटाणा। तख्तों लाहे राजा राणा। एका ताज आप रखाणा। बाकी सर्ब नष्ट कराणा। सोहँ साचा शब्द उपजाणा। कर्म धर्म जगत चलाणा। बेमुख प्रभ नष्ट कराणा। गुरमुखां प्रभ माण दवाणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग वरते आपणा भाणा। आपणा भाणा सद वरतावे। आप अडोल जगत डुलावे। आप अतोल जगत तुलावे। आप अभुल जगत भुलावे। बेमुख प्रभ दिस ना आवे। मातलोक विच जोत प्रगटावे। निहकलंक प्रभ नाउँ रखावे। माया पड़दा सारा लाहवे। गुरसिक्खां प्रभ जगावे। बाहों पकड़ चरन लगावे। आपणा भाणा कलि वरतावे। महाराज

शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणे रंग समावे। आपणा भाणा कलि वरताया। निहकलंक डंक वजाया। सोहँ साचा शब्द चलाया। बेमुखां एह खण्डा लाया। अन्तकाल विच नर्क निवास रखाया। मदिरा मास जिस रसना लाया। गुरमुख साचे माण दवाया। अमृत मेघ मुख चुआया। आत्म शांत तृखा मिटाया। बेमुख जीवां अग्न जलाया। जोत सरूपी जोत प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख तेरा होए सहाया। गुरसिक्खां प्रभ होए सहाई। जिस साची एह बणत बणाई। निहकलंक कलि जोत प्रगटाई। भरम भुलेखे सृष्ट भुलाई। बैठ अडोल वेखे रघुराई। साध संगत देवे वड्याई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, आपणी कल वरताई। कलिजुग झूठी खेल मिटा। सभ दा जाए माण गंवा। एक शब्द डंक वजा। सोहँ साचा खण्डा उठा। चार वरन प्रभ चरनी लए लगा। कोई ना लए उभ्भा साह। प्रभ अबिनाशी ऊँच नीच दा जाए भेख मिटा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा शब्द लए लिखा। साचा शब्द प्रभ लिखाए। जो वरते सो दए लिखाए। भरम भुलेखे सारे लाहे। आपणा भेद आप खुल्हाए। सिख गुर गुर सिख इक्क हो जाए। आपणी जोत विच टिकाए। साचा शब्द विच कन्न सुणाए। प्रभ अबिनाशी भउ चुकाए। जोत सरूप निहकलंक दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत दया कमाए। साध संगत प्रभ रखवाला। झूठा तोड़े जगत जंजाला। साचा प्रभ सदा प्रितपाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आत्म करे लाल गुलाला। आत्म रंग प्रभ चढ़ाया। रोग सोग प्रभ मिटाया। एका जोग सोहँ कमाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा माण दवाया। माण दवाए आप प्रभ जोत प्रगटा। माण दवाए आप प्रभ, आपणी कल वरता। माण दवाए आप प्रभ, भगत जनां दरस दिखा। माण दवाए आप प्रभ, आत्म पर्दे देवे लाह। माण दवाए आप प्रभ, अमृत झिरना दए झिरा। माण दवाए आप प्रभ, हरन फरन दए खुल्हा। माण दवाए आप प्रभ, जोत सरूपी दरस दिखा। माण दवाए आप प्रभ, जो जन चरनी डिग्गे आ। माण दवाए आप प्रभ, सच्चो सच दिसावे राह। माण दवाए आप प्रभ, गुरसिख साचे भुल्ल ना जाह। माण दवाए आप प्रभ, वेले अन्त पकड़े बांह। माण दवाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ सभ थाएँ होए सहा। माण दवाए आप प्रभ, सिर हत्थ टिकाए। माण दवाए आप प्रभ, जगत पित अख्वाए। माण दवाए आप प्रभ, आपणी मित गत जणाए। माण दवाए आप प्रभ, जो जन शरनी आए। माण दवाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त होए सहाए। माण दवाए आप प्रभ अबिनाशा। माण दवाए आप प्रभ, साची जोत करे प्रकाशा। माण दवाए आप प्रभ, एका शब्द चलाए स्वासा। माण दवाए आप प्रभ, एका बख्शे चरन भरवासा। माण दवाए आप प्रभ, जोत सरूपी रक्खे विच वासा। माण दवाए आप प्रभ, भगत जनां होए दासन दासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, रसना जप जीव तेरी रहिरासा। माण दवाए आप प्रभ, गुरसिख बलिहारी। माण दवाए आप प्रभ, जाए पैज संवारी। माण दवाए आप प्रभ, आत्म जोत करे उज्जयारी। माण दवाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चरन जाउ बलिहारी। साचे प्रभ चरन बलिहार। निर्धन पाए सार। प्रभ साचे दी साची कार। गुरमुख साचे लाए पार। अन्त ना खायण जम की मार। प्रभ साचा देवे जोत सरूप दरस अपार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिक्खां देवे तार। तारनहार आप समरथ। प्रभ साचा सिर रक्खे हत्थ। सोहँ शब्द चलाए साचा रथ। प्रभ की महिंमा बड़ी अकथ्थ। गुरमुख विरला पाए साची वत्थ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भगत जनां सिर रक्खे हत्थ। भगत जनां सिर हत्थ टिकाया। निहकलंक कलि दया कमाया। आपणा आप प्रभ आप उपजाया। मात पाताल आकाश, प्रभ सर्ब तजाया। जोत सरूप इक्क प्रकाश विच वरभंड कराया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा थान सुहाया। थान सुहाए आप प्रभ, कलि जोत आकारा। थान सुहाए आण प्रभ, साध संगत देवे दरस अपारा। थान सुहाए आप प्रभ, जोत प्रगटाए अगम्म अपारा। थान सुहाए आण प्रभ, हँकारीआं प्रभ भरम निवारा। थान सुहाए आण प्रभ, गुरचरन बणाए साचा गुर दुआरा। थान सुहाए आण प्रभ, साध संगत करे निमस्कारा। थान सुहाए आण प्रभ, बेमुख आए जाए झख मारा। थान सुहाए आण प्रभ, पारब्रह्म अवतारा। थान सुहाए आण प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, करे पार उतारा। थान सुहाए आण प्रभ, वक्त जगत जां आए। थान सुहाए आण प्रभ, अन्त जोत जगत प्रभ प्रगटाए। थान सुहाए आण प्रभ, जोत सरूप करे रुशनाए। थान सुहाए आण प्रभ, निहकलंक नाउँ रखाए। थान सुहाए आण प्रभ, साचा शब्द सुणाए। थान सुहाए आण प्रभ, गुरसिख साचे चरन लगाए। थान सुहाए आण प्रभ, जोत सरूपी शब्द लिखाए। थान सुहाए आण प्रभ, बोध अगाध अगाध बोध आप प्रभ अख्वाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी आस पुजाए। गुर दर आए मंगल गाया। रसना जप जप आत्म तृप्ताया। भरम भुलेखा सारा लाहया। गुण निधान वड दान दवाया। गुरमुख साचे प्रभ ब्रह्म ज्ञान दवाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणा भेद चुकाया। जुगो जुग प्रभ आवण जाणा। जोत सरूपी पहरया बाणा। साध संगत दरस करे भगवाना। गुरमुख साचे चतुर सुजाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे वड्याई विष्नूं भगवाना। भगत हित जगत पठाए। वेले अन्त लाज रखाए। हँकारीआं प्रभ हँकार गंवाए। भगत जनां जै जै जैकार कराए। निहकलंक अवतार नर, जोत सरूप रिहा समाए। जोत सरूपी जोत धर, विच मात दे आए। पारब्रह्म अचरज खेल कर, आपणा भेव चुकाए। गुरमुखां दर मेल कर, प्रभ साध संगत रलाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां होए सहाए। जोत सरूप प्रभ जामा धारे। पारब्रह्म नर अवतारे।

६५४
०१

रंग रूप ना किसे चितारे। गुरमुख विरला पेखे कर विचारे। जिस रक्खे हत्थ प्रभ मुरारे। जो जन आए प्रभ की सरनारे। कलिजुग जीव दुखी होए अंध्यारे। मदिरा मास करन आहारे। साचा नाम मनों विसारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी कलि जामा धारे। निहकलंक कलि जामा धार। साची जोत धरे संसार। शब्द रूप प्रभ मारे मार। कलिजुग जीवां करे ख्वार। चार कुन्ट कराए हाहाकार। साध संगत रसना कराए जै जै जैकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप प्रगटे निहकलंक अवतार। निहकलंक मात विच आया। साचा डंक जगत वजाया। एका अंक आप अख्वाया। राउ रंक इक्क कराया। पुरी घनक प्रभ भाग लगाया। बेमुखां प्रभ पर्दा पाया। गुरमुखां प्रभ दरस दिखाया। साध संगत प्रभ दे वड्आया। गुणवन्त गुण निधान, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। सुरती देवे चरन ध्यान, सुरत शब्द दा मेल मिलाया। गुरमुख कीए चतुर सुजान, प्रभ आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाया। आत्म उपजे साची धुन, सोहँ साचा शब्द सुणाया। निहकलंक बली बलवान, जोत सरूपी जामा घनकपुरी विच पाया। घनकपुरी प्रभ जामा धारया। निहकलंक नर अवतारया। पारब्रह्म अचुत पूरन परमेश्वर अवतारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख विरले किसे चितारया। सो वेखे जिस आप वखाए। सो पेखे जिस तीजा नैण खुल्ाए। सो वेखे जिस प्रभ भाण्डा भउ चुकाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भरम भुलेखे जगत भुलाए। कलिजुग जीवां माया पा। अछल छल प्रभ आप करा। सृष्ट सबाई लई भुला। अन्तकाल कलिजुग निहकलंक साची जोत लई प्रगटा। गुरमुख साचे साचे प्रभ चरन लए लगा। राजयां राणयां पकड़ प्रभ तख्तों देवे लाह। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग साची नींह जाए रखा। सतिजुग साचा प्रभ लाए। सांतक रूप होए विच समाए। साची सिख्खया साची भिख्या कोए जन विरला पाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी जोत प्रगटाए। साचा प्रभ लेख लिखाए। वाक् भविख्त सति कराए। जीव जन्त कोई भेद ना पाए। विरले सन्त प्रभ आपणी बूझ बुझाए। विच बैठ इकन्त बेमुखां दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आत्म माया पर्दा पाए। कलिजुग माया भरम भुलाया। आपणा आप जीव ना पाया। आत्म रस सर्ब गंवाया। रसना रस जीव हलकाया। जामा धार निहकलंक आपणा भेद खुल्ाया। साचा प्रभ जोत सरूप, बेमुख ना जाणे प्रभ रंग रूप। गुरमुख दिखाए प्रभ सति सरूप। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची जोत जगाए विच देह अन्ध कूप। कलिजुग जीवां अन्ध अन्धयारा। झूठा ठूठा देह मुनारा। बैठा विच ना दिसे गिरधारा। जोत जगाए विच देह अपारा। दुष्ट दुराचार ना पायण सारा। गुरमुख साचे निहकलंक किया चरन प्यारा। खोल् देवे प्रभ साचा दस्म दुआरा। साचा प्रभ अमृत बरसे किरपा धारा। बेमुख दर आए नाचा, सार ना पाए नैण मुँधारा। महाराज शेर

६५६
०१

सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सारा। सर्ब जनां प्रभ आप समाले। प्रभ अबिनाशी दीन दयाले। कोई ना जाणे प्रभ भेद निराले। गुरमुखां वखाए, अमृत देवे भर प्याले। कर सुघड़ स्याणे सोहँ शब्द प्रभ देवे दाने। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, राउ रंकां इक्क समाणे। राउ रंक प्रभ इक्क कराणे। एका दूआ दूआ एका भउ चुकाणे। कलिजुग जोत जगी महाने। भगत जनां प्रभ दरस दिखाणे। रातीं सुत्तया खड़ा रहे सिरहाणे। जोत सरूपी जोत धर, गुरमुख साचे पकड़ उठाणे। निहकलंक अवतार नर, अनहद शब्द उपजाणे। साची जोत विच जाए धर, सोहँ शब्द जो रसना गाणे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दी आपे जाणे। सर्ब जनां प्रभ आप ज्ञाता। भगत जनां देवे प्रभ साची दाता। आदि जुगादि सदा पित माता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन कराए एका भ्राता। कलिजुग अवतार धार, प्रभ अबिनाशी खेल करे अपार। सृष्ट सबाई प्रभ मारे मार। शब्द सोहँ प्रभ लाए कटार। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप सदा निराहार। जोत सरूपी प्रभ जोत प्रगटाए। जोत सरूप प्रभ जामा मात विच पाए। जोत सरूप जुग चौथे आपणा भेख वटाए। जोत सरूप अगाध बोध बोध अगाध शब्द लिखाए। जोत सरूप साचा नाउँ सोहँ जगत रखाए। गुरमुखां जोत सरूप पवन स्वास चलाए। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ थाएँ होए सहाए। साचा प्रभ सदा सहाई। जिस जन ओट प्रभ रखाई। भगतां हित प्रभ मात विच आई। प्रभ साचे दी साची नाई। गुरमुख साचे प्रभ लए चढ़ाई। साची दरगाह देवे वड्याई। अन्तकाल विच जोत मिलाई। जोत सरूपी विच जोत समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां दी पैज रखाई। आदि अन्त प्रभ जोत आकार। जुगो जुग आए जामा धार। अन्तिम जुग करे करतार। प्रभ साचे दी साची कार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर किरपा जाए तार। अन्तिम जुग प्रभ आप कराए। सर्ब शक्ती प्रभ खिच वखाए। एका आपणा नाम धराए। आगे मार्ग प्रभ फेर चलाए। साचा ज्ञान प्रभ दवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक कलि नाउँ धराए। नरायण नर जगत प्रभ आया। कलिजुग अन्तिम भेख वटाया। सतिजुग साचा मार्ग लाया। एका नाम जगत चलाया। चार वरन प्रभ इक्क कराया। राउ रंक कोए रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक कलि नाउँ धराया। एका रंग सर्ब समाए। ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। एका शब्द चार कुन्ट रसना गाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग साची नींह धराए। सोहँ साचा शब्द चलाया। साचे प्रभ रसन अलाया। सतिजुग तेरी झोली पाया। जगत भण्डारी सर्ब वरताया। सतिजुग जीवां विच वसाया। आत्म विकार नष्ट कराया। हँकार निवारी प्रभ अख्वाया। सांतक रूप होए विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। साचा

६५६
०१

शब्द जगत धराए। चार वरन रसना गाए। बाकी पूजा सर्ब हटाए। एका होए निहकलंक सरनाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक कलि जामा पाए। एका शब्द जगत वरतंत। शब्द चलाए प्रभ भगवन्त। रसना गाए कोई विरला सन्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग जीआं माया पाए बेअन्त। साचा प्रभ शब्द भण्डारी। सतिजुग जीवां देवे नाम अधारी। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ आत्म देवे खुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे माण सर्ब नर नारी। सतिजुग साचा मार्ग लाया। निहकलंक कलि जामा पाया। सोहँ साचा शब्द लेख लिखाया। चार वरन प्रभ एका ओट धराया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी जामा पाया। साचा शब्द साची नईआ। चार वरन कराए एका भईआ। साचा शब्द ज्ञान प्रभ दवईआ। देवे दान भगत भगवान, प्रभ सभ दा माण रखईआ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची कल वरतईआ। सोहँ साचा शब्द ज्ञाना। आत्म जोत जगाए महाना। प्रगट जोत देवे भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत सरूप जगत पित आया। साचा नाम जगत धराया। गुरमुखां प्रभ गले लगाया । दुखियां भुखियां प्रभ भुक्ख गंवाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आत्म साचा सुख दवाया। आत्म सुख आत्म रस। साचा राह प्रभ जाए दस्स। गुरमुख आए प्रभ चरन नस्स। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुखां होए वस। बलि बलि बलि बलिहार। जो जन चल आयण प्रभ दरबार। अन्तिम देवे मोख द्वार। साचा बख्शे नाम अधार। देवणहार आप दातार। कर्म धर्म प्रभ लए विचार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरी पाए सार। साध संगत प्रभ सार समाले। आपणा बिरद आप रखाले। गुरमुखां करे सदा प्रितपाले। चरन धूढ़ जन मस्तक ला ले। प्रभ अबिनाशी घर में पा ले। सतिगुर साचा संग रहे सद नाले। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ देवे साची माले। कर दरस आत्म तृप्तास्सया। सोहँ जपे स्वास सवास्सया। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनास्सया। साचा प्रभ जोत प्रकाशया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच देवे धरवास्सया। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे। चरन आए सभ देवी देवे। गुरमुख विरला प्रभ रसना सेवे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका पूज रखेवे। प्रभ चरन सच द्वार। जन भगतां देवे मोख द्वार। गुरमुख रक्खे जो चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी पावे सार। भगत उधारी आप प्रभ। गुरमुख कलिजुग लए लभ्भ। अमृत झिरना झिराए नभ। आपणा भेव खुल्हाए झब्ब। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया अग्न जलाए सभ। आप आपणा भेव चुकाया। दर आई साध संगत माण दवाया। जोत सरूप प्रगट जोत दरस दिखाया। जगत चुकाया आवण जाण, विच जोती मेल मिलाया। गुरमुख साचे विच बिबाण, अन्त साचे धाम पुचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दया कमाया। गुरमुखां

६५७
०१

प्रभ माण दवाए। आत्म सुख सद उपजाए। जगत तृष्ना सर्ब जलाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा कर्म कमाए। गुरमुख साचे प्रभ साची देवे मति। सोहँ देवे साची वथ। अन्तकाल प्रभ साचा रक्खे पति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ। सर्ब जनां प्रभ आसा पूर। जो जन आए चरन हज़ूर। जोत सरूपी प्रभ साचा देवे नूर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वड दाता वड सूर। साध संगत दर परवान । देवे वड्याई विष्नूं भगवान। सतिजुग साचा रिहा निशान। सृष्ट सबाई चरनी लग्गे आण। राउ रंक इक्क समान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दा जाणी जाण। सर्ब जनां दी आपे जाणे। सर्ब चलाए आपणे भाणे। मायाधारी नष्ट कराणे। राउ रंक इक्क समाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। दे दर्शन गुर रोग मिटाया। सच घर आ भरम चुकाया । सोहँ दित्ता साचा नाउँ, मुक्त जुगत दा राह चलाया। दरगहि साची मिले थाँउं, महाराज शेर सिँघ माण दवाया। सर्ब घटा प्रभ वास रखाए। आप आपणे विच समाए। जो जन होए मदिरा मासी, अन्तकाल प्रभ दे सज़ाए। अन्तकाल होए नर्क निवासी, कोई ना पार लँघाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी कल सर्ब वरताए। आपणा भाणा सति वरताए। सति पुरखां जीवां जन्म दवाए। सन्त जनां प्रभ विच समाए। संगत साध साध संगत प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा पूर कराए। आसा मनसा पूर कराए। विस्मादी विस्माद समाए। भरम भुलेखे जगत भुलाए। गुरमुखां प्रभ लेखे लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची लेख लिखाए। लेख लिखाया आप करतार। साचा शब्द लिखाए अपर अपार। भगत जनां प्रभ भरे भण्डार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी जाणे सार। वड दाता वड दया दान। किरपा करे आप भगवान। सोहँ साचा देवे माण। रसना जीव आत्म तृप्ताण। जोत सरूप देवे दरस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। रसना जप आत्म तृप्ताए। जोत सरूप प्रभ दरस दिखाए। निजानंद प्रभ दे उपजाए। आत्म बुझी दीप जगाए। अज्ञान अन्धेर प्रभ दे मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कराए। अज्ञान अन्धेर प्रभ मिटाया। पतिपरमेश्वर विच्चों रघुपति रघुनाथ सगला साथ नज़री आया। साचा प्रभ सगला साथ, भगत जनां दे विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जगत रहाया । सर्ब जनां दी आस पुजाए। अन्ध अज्ञान दे मिटाए। सर्ब जीआं दी आस पुजाए। जीव जन्त प्रभ धरवास जोत रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लहणा आप चुकाए। साचा प्रभ सर्ब धरवास। जीव जन्त सर्ब रखे वास। रसना जप जीव, मानस जन्म होए रास। आत्म जगे साची दीव, दुःख दर्द हो जायण विनास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे प्रभ अबिनाश। साचा प्रभ दया कमाए। साध संगत दर माण दवाए। दुध्ध पुत्त प्रभ झोली पाए। जो दर मंगण सीस झुकाए।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भुक्खयां सर्ब भुक्ख गंवाए। गुरसंगत गुर पार उतारया। साचा दान देवे दर दरबारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतारया। साध संगत गुर पेखे नैण। कर दरस गुरचरनी बहिण। प्रभ का भाणा सिर उत्ते सहिण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लहणा लैण । साची प्रीती चरन ध्यान। किरपा करे आप भगवान। जीव जन्त प्रभ साचे दी सोझी पाण। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप दरस देवे आण। साची प्रीत जिस जन कमाई। साचे दर मिले वड्याई। उच्च पदवी प्रभ दर ते पाई। चुरासी गेड़ प्रभ कटाई। प्रभ साचे दी साची वड्याई। गुरमुख साचे जोत सरूप दरस दिखाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सभ थाएँ होए सहाई। चरन प्रीती पूरन घाल। गुरसिख तेरी निभे नाल। साचा नाम सोहँ देवे धन माल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सद तेरा रखवाल। साची प्रीत चरन कमा। मानस जन्म सुफल करा। आवण जावण दुःख मिटा। जोत सरूपी विच जोत रिहा समा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सभ थाईं होए सहा। चरन प्रीती साची रीती। प्रभ अबिनाशी परखे नीती। साची दात प्रभ साचे दीती। भुल करे ना सिख कुरीती। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, तेरी काया सीतल कीती। साची प्रीती चरन प्यार। देवे दरस प्रभ अगम्म अपार। कलिजुग रक्खे पति आप करतार। जन होए निमाणा प्रभ दरबार। सोहँ साचा नाम प्रभ देवे आत्म अधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे भर भण्डार। चरन प्रीती साचा थां। प्रभ मिलण दा साचा राह। भरम भुलेखे प्रभ सारे दए गवा। जोत सरूप निहकलंक रखाए नां। कलिजुग जामा धारया बेमुखां दीसे ना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे विच रिहा समा। गुरचरन प्रीती साचा रंग। साचा दान प्रभ दर ल्या मंग। साचा प्रभ वड सूरा सरबंग। चरन धूढ़ जन लाए अंग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा सहाई अंग संग। अंग संग प्रभ सदा सहाई। चरन सेव जिस जन कमाई। साची मति प्रभ साचे पाई। साचा शब्द प्रभ दे जणाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची कार कमाई। चरन प्रीती देवे साचा गुर। प्रभ अबिनाशी लेख लिखाया धुर। गुरमुख विरले कलि जाए चरन जुड़ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग मिल्या साचा गुर। साचा गुर सदा उपदेसे। जोत सरूपी पहरया वेसे। शरन परन ब्रह्मा विष्न महेषे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सर्ब परवेशे। प्रभ चरन प्रीती सदा कमाओ। अमरा पद प्रभ दर सद पाओ। वड हँस गुरसिख बण जाओ। कागां विच्चों नां कढाओ। निहकलंक दी सेव कमाओ। आत्म अमोड़ ना पति गंवाओ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आत्म रंग गूढ़ चढ़ाओ। चरन सेव जिस जन कराए। कर किरपा प्रभ पार कराए। साची बख्शे प्रभ सरनाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख सेवा सुफल कराए। चरन प्रीती गुरचरन कर। आत्म साचा

ध्यान धर। प्रभ अबिनाशी साचा देवे वर। गुरमुख साचे मूल ना डर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, होए सहाई अवतार नर। गुर चरन प्रीती साची मंग। गुरमुख साचा पार जाए लँघ। मानस जन्म ना होवे भंग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आत्म चाढ़े साचा रंग। गुरचरन सेव गुर दरबार। गुरसिख साचा जाए ना हार। अन्त ना खाए जम की मार। प्रभ अबिनाशी जाए तार । जोत सरूपी देवे दरस अपार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चरन सेवक नूं जाए तार। चरन सेव साचा सति। प्रभ अबिनाशी देवे साची मति। सोहँ शब्द एका रक्खे तत्त। सति सन्तोख धीर धरत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी रक्खे पति। बेमुखां प्रभ पड़दा पाया। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। जोत सरूपी जोत जगा, प्रगट होए दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आए माण दवाया। धन्न धन्न धन्न कमाई गुरसंगत। धन्न धन्न धन्न वड्याई पाई प्रभ संगत। धन्न धन्न धन्न नाम दान भिच्छया पाई गुर संगत। धन्न धन्न धन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत तराई गुर संगत। रंग रंग रंग गुरचरन चढ़ाए। अंग अंग अंग, प्रभ अंगीकार कराए। मंग मंग मंग दान गुरमुख साचा बेड़ा पार कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत सिर हत्थ टिकाए। साध संगत तेरे मन वड्याई। लज पति प्रभ आप रखाई। विच मात देवे वड्याई । पहली माघ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तराई। साध संगत प्रभ दरस दिखाया। आसा मनसा पूर कर, आत्म सर्ब तृप्ताया। हउमे दुखड़े दूर कर, प्रभ आत्म सुख वसाया। गुरसिक्खां आत्म नूर कर, प्रभ जोती जोत मिलाया। ख़ाली भरे भण्डार सर्ब भरपूर कर, प्रभ दर तों विदा कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ प्रगट साध संगत दरस दिखाया। गुरसंगत आई गुर दरबार। प्रभ अबिनाशी देवे तार। दुखियां दुःख लए निवार। दुध्ध पुत्त बख्शे दाता दातार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, ख़ाली भरे भण्डार। साध संगत तेरी पति रखाई। रिद्ध सिद्ध सभ वस कराई। चरन आए प्रभ दए वड्याई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत देवे वधाई। गुर संगत संगत गुर गुर गोबिन्दा। सदा सदा सदा प्रभ बख्शिंदा। गुरमुखां देवे माण, ऊँच करे विच सुरप्त राजे इन्दा । सिर हत्थ धरे भगवान, वड दाता गुणी गहिंदा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी आस पूर करंदा। गुणवन्त प्रभ गुण भरपूर। साध संगत तेरी आसा पूर। चरन लगाए जो जन मस्तक धूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत देवे दरस ना जाणो दूर। गुर पूरे सच धाम सुहाया। साध संगत मिल मंगल गाया। प्रभ अबिनाशी रसना अलाया। मातलोक बैकुण्ठ बणाया। निहकलंक अवतार नर साध संगत विच बहाया। साध संगत प्रभ जाए तार, जोत सरूपी जामा पाया। बेमुख सुत्ते पैर पसार, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। कलिजुग जीव होए

विभचार, माया ममता लोभ वधाया। गुर संगत बेड़ा पार कर, महाराज शेर सिँघ होए सहाया। गुरसंगत बन्नाए प्रभ साचा धीर। अमृत मुख चुआए जिउँ बालक माता सीर। प्रभ आत्म सुख दवाए हउमे कट्टे पीर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शांत करे सरीर। शांत शांत प्रभ शांत कराए। अमृत मेघ बूंद स्वांती प्रभ मुख चुआए। प्रभ अकाशी दिवस राती, एका जोत विच जगाए। गुरमुख साचे मारी झाती, जोत सरूप विच रिहा समाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तेरी पति रखाए। साध संगत तेरा साचा दर। साध संगत तेरा साचा घर। साध संगत तेरा साचा वर। साध संगत तेरा होए सहाई अवतार नर। साध संगत मातलोक विच मूल ना डर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेले अन्त बचाए सिर हथ धर। प्रभ साचे घर साचा नाउँ। प्रभ अबिनाशी सद रसना गाओ। कोट जन्म दे पाप गंवाओ। दरगाह साची माण रखाओ। आवण जाण दा गेड़ कटाओ। जोत सरूपी जोत प्रभ, अन्त जोत मिल जाओ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर दरस तर जाओ। गुण गाओ गहर गम्भीर। सोहँ देवे आत्म धीर । हउमे कढ्ढे विच्चों पीर। अमृत झिरे जिउँ बालक माता सीर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शांत करे सरीर। आत्म शांत प्रभ कराए। एका दूजा भउ चुकाए। प्रभ अबिनाशी एका नज़री आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे दरस दिखाए। कर दरस गुरसिख तृप्तास्सया । गुरमुख साचा सचखण्ड निवास्सया। पूरन गुर दिया पूरन भरवास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे बन्द खुलास्सया । बन्दी तोड़ प्रभ अख्वाए। चरन जोड़ गुरसिख तराए। बेमुख रोढ़ कलिजुग अन्त कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप जगत विच आए। जोत सरूप जगत प्रभ आ के। विछड़यां प्रभ चरनी मेल मिला के। गुरमुखां आत्म दुखड़े जाए मिटा के। सुक्के होए रुखड़े प्रभ जाए हरे करा के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द जीव उपा के। सोहँ शब्द मुख चुआाया। रसना जप जीव आत्म रस पाया। अमृत नाम साचा रस पीव, प्रभ आत्म साची नईआ चलाया । तेरी आत्म गुरसिख जोत जगाए दीव, महाराज शेर सिँघ होए सहाया। गुरमुख साचे साचा रंग माण। प्रभ अबिनाशी साचा जाण। चरन कँवल कँवल चरन जन प्रभ डिग्गे आण। निहकलंक अवतार नर एका बख्शे चरन ध्यान। गुरमुख साचे जग उधरे, प्रभ आत्म जोत धरे महान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ साचा देवे दान। सोहँ दान भगत प्रभ दिया। आप आपणे जैसा किया। पिता पूत बणाए पुत्तर धीआ। निहकलंक प्रगट जोत, साध संगत वर वड्डा दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे फल पूरब जन्म जो बीआ। आदि अन्त प्रभ वरतार। आपे करन करावणहार । गुरमुखां जोत करे आकार। एका नाम देवे दातार। सोहँ शब्द करे वड्यार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी भरे भण्डार। एका

जोत आकार कर, गुरसिख जगाए। एका शब्द अधार कर, विच जगत चलाए। बेमुखां शब्द मार कर, कलि नष्ट कराए। साध संगत साचा परिवार कर, भगत पित आप अख्वाए। किरपा नैण मुँधार कर, कलिजुग आए गुरसिख तराए। वड वड्याई विच संसार कर, शब्द रूप प्रभ भेख वटाए। गुरमुखां प्रभ गुण विचार कर चरन लगाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुखां उज्जल मुख कराए। गुरमुख आत्म सदा उज्जयारी। करे आप प्रभ निरँकारी। निहकलंक सच बनवारी। सर्ब सृष्ट कराए पनिहारी। वड राजा आप सिक्दारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, नरायण नर अवतारी। नरायण नर कलि अवतारया। भगत जनां हरि पार उतारया। साचा नाम प्रभ रसन उचारया । सोहँ नाम धरे विच संसारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, नरायण नर अवतारया। साचा शब्द जगत धराए। सतिगुर साचा मार्ग लाए। सतिजुग जीव सभ रसना गाए। दूसर थाएँ ना कोई सीस निवाए। एका दर निहकलंक चार वरन चल आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका मार्ग लाए। सतिजुग साचा मार्ग लाया । सोहँ शब्द मुख रखाया। बालक कुक्ख प्रभ साचे ज्ञान दवाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, सतिजुग साचा लाया । मात गर्भ प्रभ ज्ञान दवाए। सोहँ शब्द विच स्वास चलाए। किरपा कर अवतार नर, विच मात जन्म दवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, संसारी माया नष्ट कराए। बालां देवे शब्द ज्ञान। साचा बख्शे चरन ध्यान। सुरती सुरत शब्द करे महान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा देवे दान। साचा दान जगत प्रभ दिया। सतिजुग रखाई साची नींहा। राउ रंक प्रभ एका किया। सर्ब जीआं का प्रभ साचा दिया। सोहँ साचा नाम सतिजुग साचे अमृत पिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ जन्म प्रभ विच जगत दे दिया। पहली माघ प्रभ विच जगत जन्म दवाया । सतिजुग तेरा वास विच मात रखाया। एका शब्द प्रभ साचे तेरी झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर तेरे हत्थ टिकाया। सतिजुग जन्म जगत दवाए। सतिगुर साचा प्रभ अबिनाशी सिर हत्थ टिकाए। सोहँ साचा दान प्रभ झोली पाए। सच सुच्च प्रभ दे वरताए। वड वड्याई प्रभ आप दवाए। एका माता धरत बणाए। एका पित आप अख्वाए। दूसर कोई रहण ना पाए। सतिजुग साचे तेरे हित निहकलंक कलि जामा पाए। प्रभ अबिनाशी सदा अचुत, पहली माघ तेरा जन्म दवाए। साचा पित आप अख्वाया। धरत मात तेरी मात बणाया। साचा पूत सतिजुग रचाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, तेरा नाउँ रखाया। सतिजुग तेरा नाम धराया। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाया। वर घर साचा नाम दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द चलाया। सोहँ शब्द जगत चला। चार वरन इक्क करा। ऊँच नीच दा भेव मिटा। राउ रंक इक्क करा। गुरमुख साचे चरन लगा। साची वस्त प्रभ जाए झोली पा। चार कुन्ट प्रभ चरनी लए लगा। गुरमुख

साचे भगत जन प्रभ लेख जाए लिखा। जन्म जन्म दे विछड़े प्रभ मेल लए करा। धन्न जणेंदी मां जिस रक्खे कुक्ख उठा। निहकलंक साची दरगहि देवे थां। प्रभ साचा वेले अन्तकाल पकड़े गुरमुख बांह। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सभ थांई होए सहा। सदा सहाई आप प्रभ गुरसिख तेरा। सदा सहाई आप प्रभ, गुरसिख प्रभ का चेरा। सदा सहाई आप प्रभ, गुरमुखां प्रभ रक्खे धीरा। सदा सहाई आप प्रभ, गुरसिक्खां सद वसे नेरा। सदा सहाई आप प्रभ, गुरसिख जोत सरूपी सदा वसेरा। सदा सहाई आप प्रभ, प्रगटे जोत ना लाए देरा। सदा सहाई आप प्रभ, बेमुख भुलाए कर हेरा फेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस गुरसिख ना लावे देरा। बेमुखां प्रभ पर्दा पाया। माया पाए जगत भुलाया। आत्म अन्ध अन्धेर रखाया। जोत सरूपी ना दरस दिखाया। वड वड भूप ना चरन लगाया। बिन रंग रूप प्रभ नज़र ना आया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भरम भुलेखे जगत भुलाया। भरम भुलेखे भुल्ला संसार। प्रभ अबिनाशी ना पाई सार। साचा प्रभ दिस ना आए किसे दरबार। मदिरा मासी प्रभ दर आयण होयण ख्वार। अन्तकाल कलि गल जम फाँसी, धर्म राए मारे मार। मुक्ती जुगती दर तों नासी, एका मिल्या नर्क द्वार। जो जन होए मदिरा मासी, निहकलंक मारे कर ख्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक अवतार। मदिरा मासी होण ख्वारा। प्रभ अबिनाशी दर दुरकारा। मानस जन्म अन्त जग हारा। रसना चलाया इक्क विकारा। साचा प्रभ मनों विसारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निवास दवाए नर्क दुआरा। साचा प्रभ लेख चुकाए। जैसा करे तैसा भुगताए। साचा लहणा दर दवाए। बेमुख जीव झूठे ठूठे प्रभ अबिनाशी गए भुलाए। गुरमुख चले प्रभ के भाणे, प्रभ अबिनाशी दया कमाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, होए आप सहाए। साचा कर्म जगत कमाओ। प्रभ अबिनाशी रसना गाओ। दिवस रैण ना मनों भुलाओ। रसन विकार सर्ब तजाओ। मदिरा मास रसन ना लाओ। सोहँ स्वास स्वास जीव सद गाओ। प्रभ अबिनाशी निज घर में पाओ। आत्म दुखड़े नास कराओ। साची सुरती सच दर ते पाओ। आत्म आपणी गंढु खुल्हाओ। प्रभ साचे का दीप जगाओ। सोहँ साचा तेल विच पाओ। साचे नाम दी बत्ती लाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा गुण रसन सद गाओ। साचा प्रभ रसन जिस गाया। चरन ध्यान जिस जन रखाया। चतुर सुजान गुरमुख बणाया। प्रभ साचे प्रगट जोत दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा खेल रचाया। साचा खेल जगत रचाया। वेखे वखाए गुरमुखां दया कमाया। भरम भुलेखे प्रभ सारा जगत भुलाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, गुरमुख दरस दिखाया। साचे प्रभ दरस दिखाया। दे दरस सभ दुःख मिटाया। उतरी भुक्ख साध संगत प्रभ दर्शन पाया। सुफल होई मात कुक्ख, निहकलंक चरन सीस निवाया। निजानंद

उपजावे आत्म रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत उप्पर दया कमाया। गुरसिख साचे प्रभ दर्शन पा। जन्म जन्म दी मैल लई गंवा। पतित पापियां कर दरस मैल लई धुआ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जाए दया कमा। पतित पापी जो प्रभ दर आए। होए निमाणा दर सीस झुकाए। प्रभ भगवाना देवे दया कमाए। सोहँ साचा दाना, प्रभ देवे झोली पाए। गुण अवगुण प्रभ ना पछाणा, साचे दर आए जो भुल्ल बख्शाए। भुल्लयां डुल्लयां प्रभ मार्ग पाया। साचा प्रभ सद दया कमाया। सोहँ शब्द प्रभ साचा देवे नाम, साचे मार्ग लाया। सर्ब जीआं का एका थां, सर्ब जीआं प्रभ उपाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच समाया। सर्ब जीआं प्रभ विच समाए। जीव कुकर्मी कुकर्म कमाए। प्रभ अबिनाशी भउ चुकाए। सर्ब घट वासी भरम शर्म चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप रचाए। एका माया सृष्ट प्रभ पाई। माया रूपी सभ खेल रचाई। सृष्ट सबाई प्रभ माया रूप उपाई। जीव जन्त प्रभ फुलवाड़ी विच लगाई। जुगो जुग उपजावे मिटावे, अचरज रचना प्रभ रचाई। माया रूपी सृष्ट उपा के। जीव जन्तां जन्म दुआ के। जोत सरूपी विच आप समा के। बैठा अडोल विच आसण ला के। झूठी माया जगत वरता के। आप आपणा रक्खे छुपा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया रूपी रचन रचा के। माया रूपी रचन रचाया। झूठा जाल जगत विच पाया। आप आपणा खेल रचाया। भगत जनां प्रभ दया कमाया। पूरब जन्म दा लहणा दवाया। मातलोक विच जन्म दवाया। जामा धार जोत सरूप, प्रभ साचे चरन लगाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, झूठी माया विच्चों कढाया। गुरसिक्खां प्रभ दया कमाई। झूठी माया सर्ब चुकाई। एका लिव प्रभ चरन लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सद दया कमाई। दीन दयाल तेरी वड्याई वाह। गुर गोपाल चरन लगा। सर्ब प्रितपाल गुरसिक्खां पकड़े बांह। भगत वछल रछक महाराज शेर सिँघ तुध बिन दूसर कोई ना। साचे प्रभ साचा रूप। धरे जोत जोत सरूप। साचे प्रभ एका जोत रंग अनूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे प्रकाश जोत सरूपी विच अन्ध कूप। आए जगत प्रभ निरँकार। भगतां हेत प्रभ लए अवतार। दुष्टां खेत करे करतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग आए जामा धार। साचे प्रभ कलि जामा धारया। जीव जन्त जां होए दुखिआरया। दु:ख भुक्ख मरे संसारया। एका सुख देवे शाहूकारया। जीव जन्त प्रभ दर पुकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनाथां हेत जामा घनकपुरी विच धारया। साचे प्रभ सुणी पुकार। मातलोक आए जामा धार। निहकलंक नरायण नर अवतार। दुखियां भुखियां दी प्रभ पाई सार। राउ करे प्रभ ख्वार। साचा करे जगत वरतार। मंगण ना जाए कोई द्वार। सतिजुग लावे वरतावे विच संसार। दु:ख भुक्ख प्रभ जाए निवार। महाराज

शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका देवे सर्ब अधार। एक अधार प्रभ आप देवे। सोहँ शब्द जन रसना सेवे। अमृत फल वड्डे वड मेवे। गुरमुख साचा साचा लहणा प्रभ दर लेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना सेवे। रसना जप जीव आत्म रसायण। कर वस निहकलंक नरायण। जोत जगावे जिउँ रवि सस, साचा प्रभ देवे तीजा नैण। आत्म उपजे साचा रस, साचे दर वहन्दे वहिण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचे साचा लहणा लैण। जीव जन्त प्रभ बणत बणाए। कर किरपा प्रभ जन्म दवाए। पवण सरूपी स्वास चलाए। काया रंगण नाम चढ़ाए। जोत सरूपी दीप जगाए। कलिजुग जीआं माया पर्दा पाए। आप आपणा भेव छुपाए। बेमुखां प्रभ नज़र ना आए। गुरसिख साचे प्रभ साचा दया कमाए। साचा प्रभ साची सेव आपणे चरन लगाए। प्रभ अबिनाशी मिलाए मेल, साची जोत जगाए। वड्डे वड गुरसिख देवी देव, प्रभ साचा आप बणाए। निहकलंक अवतार नर, आदि जुगादि जगत विच आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए। एका जोत जगे अपारा। तीन लोक करे उज्जयारा। प्रभ की जोत सदा निराधारा। अन्तकाल प्रभ अबिनाशी लए अवतारा। मात पाताल आकाश महाराज शेर सिँघ साची जोत करे आकारा। मात आया नैण मुँधारी। वड वड दाता वड संसारी। जोत सरूप जोत निरँकारी। महाराज शेर सिँघ कलंकनिह, जाए पैज संवारी । गुरमुखां प्रभ दया कमाए। विच मात दे जन्म दवाए। सोहँ साचा ज्ञान दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सुध कराए। मातलोक विच जन्म दवाया। सोहँ शब्द डंक वजाया। राउ रंक इक्क कराया। प्रभ कलिजुग झूठा खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाया। जोत सरूप प्रभ जामा धारया। कलिजुग जीव भुल्ले संसारया। कलंकनिह गुण अवगुण विचारया। पारब्रह्म परमेश्वर इक्क रंग करतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच धारया। जुगो जुग प्रभ जोत प्रगटाए। भगत जनां प्रभ आण तराए। साचा प्रभ दया कमाए। साची जोत विच देह जगाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। कपाट बजर खोल्ह् वखाए। अमृत झिरना विच देह झिराए। खुल्हे कपाट प्रभ नज़री आए। गुरमुख साचे प्रभ दिसे पास, बेमुखां नज़र ना आए। भगत जनां प्रभ दया कमाए। विछड़यां प्रभ मेल मिलाए। साचा प्रभ सर्ब घट वासी, सच घर दी सोझी पावे। अवतार नर कलिजुग जामा धार, जोत सरूपी दीप जगावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखावे। देवे दरस अगम्म अपारे। भगत वछल आप करतारे। जन भगतां पैज संवारे। लक्ख चुरासी प्रभ दे निवारे। वेले अन्त भगत जनां प्रभ खड़्हा दवारे। साचा शब्द मेल भगवन्त, साचा देवे दर दरबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँकारे। भगत जनां होए सहाया। आपणा भेद प्रभ रखाया। अनाथां हेत प्रभ

आप आपणा जामा पाया। जोत सरूपी जोत धर, जोत सरूपी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाया। गुरमुखां करे बन्द खुलासी। देवे दरस घनकपुर वासी। गलों कटाए जम की फाँसी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन तेरे साची रहिरासी। चरन प्रीत जिस जन कमाई। धन्न धन्न गुरसिख सेव कमाई। उज्जल करे प्रभ साचा मुख, धन्न जणेंदी माई। सुफल कराए मात कुक्ख, निहकलंक तेरी वड्याई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब थांईं होए सहाई। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी रसना गाया। छुट्टी जगत उदासी, प्रभ चरनी सीस झुकाया। एका शब्द जपे स्वासी, जम नेड़ ना आया। किरपा करे प्रभ अबिनाशी, भगत जनां प्रभ मेल मिलाया। करे कराए जो मन भासी, आदि अन्त ना किसे जणाया। सरबजीत होई चरन दासी, प्रभ साचा रिदे समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त होए सहाया। जोत सरूप विच जोत मिला के। दरगाह साची विच माण दवा के। साचा नाम जगत लिखा के। पंचम जेठ प्रभ हुक्म सुणा के। प्रभ अबिनाशी दया कमा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी गुरसिख रक्खे जोत मिला के। सरबजीत सर्ब सुख पाया। प्रभ अबिनाशी रसना गाया। दर घर प्रभ साचा पाया। साचे प्रभ सिर हत्थ टिकाया। तीन लोक प्रभ माण दवाया जै जै जैकार खण्ड ब्रह्मण्ड कराया। विच वरभंड साचा नाम धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
६६६
०१
भगवान, जोत सरूप विच समाया। सरबजीत सदा सुखदाई। साचा प्रभ होए सहाई। साचा वर प्रभ दर ते पाई। अवतार नर पूरन आस कराई। एका सुख प्रभ सरनाई। जगत प्रीत सर्ब तजाई। साची प्रीत प्रभ चरन लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक विच लाज रखाई। मातलोक प्रभ लाज रखाई। वेले अन्त होए सहाई। साचे घर वजी वधाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती मेल मिलाई। लाज रखावे लाजावन्त। भगत जनां प्रभ आप भगवन्त। गुरमुख विरले उतारे उधारे सन्त। प्रभ साचे बणाई साची बणत। प्रभ अबिनाशी महिंमा बड़ी बेअन्त। कलिजुग माया भरम भुलाया, सार ना पायण जीव जन्त। गुरमुख विरले प्रभ दरस दिखाया, जोत सरूप विच बैठ इकन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम जपाया साचे सन्त। साचे रंग गुरसिख रंगाया। सोहँ दान प्रभ झोली पाया। निजानंद निज मांहि उपजाया। खोल्ह त्रैकुटी आपणा भेव चुकाया। जोत सरूपी साचा दीपक विच देह जगाया। प्रभ अबिनाशी विच समीप्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेल मिलाया। मेल मिलाया आप प्रभ, जामा मातलोक विच धार। मेल मिलाया आप प्रभ, जुग चौथे लै अवतार। मेल मिलाया आप प्रभ, वरते वरतावे विच संसार। मेल मिलाए आप प्रभ, जन भगतां किरपा कर अपार। मेल मिलाए आप प्रभ, एका जोत देवे अधार। मेल मिलाए आप प्रभ, गुरमुखां अज्ञान अन्धेर जाए निवार। मेल मिलाए आप प्रभ, रक्खे लाज

आप मुरार। मेल मिलाए आप प्रभ, साचा दर दस्से दरबार। मेल मिलाए आप प्रभ, जोत प्रगटावे मात निरँकार। मेल मिलाए आप प्रभ, प्रभ साचे दी साची कार। मेल मिलाए आप प्रभ, गुरसिक्खां दुरमति मैल जाए उतार। मेल मिलाए आप प्रभ, साचा शब्द करे वरतार। मेल मिलाए आप प्रभ, एका बख्शे चरन प्यार। मेल मिलाए आप प्रभ, हउमे ममता जाए मार। मेल मिलाए आप प्रभ, गुरसिख दुखड़े जाए निवार। मेल मिलाए आप प्रभ, आत्म तोड़े सर्ब हँकार। मेल मिलाए आप प्रभ, साची जोत करे आकार। मेल मिलाए आप प्रभ, झूठी काया होए उज्जयार। मेल मिलाए आप प्रभ, जोत सरूप देवे दरस अपार। मेल मिलाए आप प्रभ, गुरमुख साचे खोल्ह देवे दस्म दुआर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी पावे सार। गुरसिख साचे मेल मिलाया। दूई द्वैत प्रभ पर्दा लाहया। एका नाम प्रभ दान दवाया। पूरन होए काम, जिस रसना गाया। घनईआ शाम, जामा धार निहकलंक नाम रखाया। रमईआ राम प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ कलि नाम धराया। जोत सरूपी प्रभ भेस वटाए। अछल छल प्रभ आप कराए। जुगो जुग प्रभ आपणा आप उपाए। प्रभ साचा सर्ब गुण वरते, बावन रूप धार बल दर प्रभ मंगण जाए। जीव जन्त प्रभ सर्ब भुलाए माया पर्दे पाए। जोत सरूपी जोत प्रभ, आवण जाण इक्क खेल रचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक कलि जामा पाए। प्रभ साचे का खेल न्यारा। आवे जावे सद रहावे, जगत लए अवतारा। गुरमुख विरले दरस दिखावे पकड़ लै आवे चरन दुआरा। एका साचा नाम जपाए, झूठा मेट देवे पसर पसारा। आप आपणा प्रभ मुख रखावे, तोड़ देवे सर्ब हँकारा। आत्म साचा सुख दवावे, साचा देवे नाम अधारा। आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाए, सोहँ शब्द भरे भण्डारा। दरगाह साची माण दवाए, जोत सरूप जोत निराधारा। अन्तकाल विच जोती मेल मिलाए, गुरमुख साचा प्रभ साचे पार उतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे मोख दुआरा। गुरमुख साचा सच जोत मिलावे। गुरमुख साचा सच जोत समावे। एका जोत गुर गोबिन्द हो जावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धार भगत जनां दी लाज रखावे। जन्म मरन गुरसिख संवारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। लक्ख चुरासी गेड़ निवारया। जो जन आए निहकलंक चरन निमस्कारया। आत्म उतारे सारा शंक, सोहँ बाण प्रभ मारया। एका दसावे एका अंक, जोत सरूप प्रभ लावे डंक, गुरमुख साचे खिच ल्याए चरन द्वारया। साचा प्रभ बणाए बणत, प्रभ की महिंमा बड़ी अगणत, गुण अवगुण ना किसे विचारया। पार उतारे सर्ब जीव जन्त, प्रभ अबिनाशी एका कन्त, एका दर इक्क दरबारया। गुरमुख विरला सन्त, जिस देवे दरस निहकलंक नर नरायण अवतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा जन्म मरन संवारया। साचे प्रभ सच राह चलाया। सोहँ साचा नाम जपाया। चार वरन चार कुन्ट जै जै जैकार कराया। राउ रंक

प्रभ इक्क कराया। निहकलंक साचा डंक विच मात वजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। निहकलंक नर अवतारया। निरँजण जोत इक्क निरंकारया। एका शब्द चलावे विच संसारया। ऊँच नीच प्रभ भेख निवारया। चार वरन दिसाए एका दर दरबारया। सतिगुर साचे सतिजुग विचारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धारया। सच सुच करे करतारा। एका शब्द देवे अधारा। निहकलंक नरायण नर अवतारा। भगत जनां प्रभ भरे भण्डारा। सोहँ शब्द जन अन्त देवे मोख दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निवास रखाए सचखण्ड दुआरा। गुरसिख साचा सचखण्ड निवास्सया। साचा वर साचा घर जोत सरूप सद प्रकास्सया। गुरसिख तेरी धन्न कमाई, देवे माण सर्ब घट वास्सया। साची सेव प्रभ चरन कमाई, सरबजीत रक्खे प्रभ चरन निवास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म करे रहिरास्सया । चरन निवास प्रभ रखाया। दरगाह साची माण दवाया। थिर घर वासी थिर घर निवास रखाया। अचुत अबिनाशी साचा पित कहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच जोती मेल मिलाया। मिली जोत होई अतीत। प्रभ साचे परखी साची नीत। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची रीत। एका बख्शे चरन प्रीत। चरन लाग गुरसिख मानस जन्म ल्या जग जीत। देवे वड्याई आप रघुराई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म सरबजीत ल्या जग जीत। सरबजीत सर्ब जग जित्तया।
६६८ ०१ प्रभ साचे संग किया साचा हित्या। प्रभ अबिनाशी जन भगतां साचा मित्या। जन भगतां आदि जुगादि सदा भय भित्या। ६६८ ०१
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा घर दर सरबजीत नूं दित्या। देवणहार आप दातार। कर किरपा कर जावे पार। देवे वड्याई विच संसार। एका नाम दिया अधार। आवण जावण दिया गेड़ निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरबजीत मानस जन्म दिया सुधार। मानस जन्म लक्ख चुरासी विच्चों पाया। साचा प्रभ रसना गाया। रसना जप जप जीव आत्म रस पाया। साचा नाम आत्म रस पीव, सोहँ अमृत मुख चुआया। आत्म दीव प्रभ जगाया। आत्म जोत सदा उज्जयार, गुरमुख साचे बुझ ना जाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां सिर हत्थ टिकाया। भगत जनां सिर हत्थ टिकाए। आपणा भेव प्रभ आप खुल्हाए। एका लिव चरन लवाए। जगत माया प्रभ जलाए। जोत सरूपी अग्न लगाए। सर्ब विकार सोहँ खण्डा प्रभ सिर लगाए। एका अधार गुरमुख साचे सोहँ नाउँ तेरे विच रखाए। निहकलंक अवतार नर, गुरसिख साचे सिर तेरे हत्थ टिकाए। गुरसिख तेरी पति रखाए। वेले अन्त होए सहाए। प्रगट जोत दरस दिखाए। जम जँधार कोई नेड़ ना आए। नर्क निवास गुरसिख ना पाए। सोहँ साचा जो जन रसना गाए। साची गाथ विच मात रसना जप जीव अमरा पद पाए। प्रगट जोत निहकलंक, अन्त तेरी देह छुडाए। अन्त अन्तकाल प्रभ साचा आप सुहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

वेले अन्त होए सहाए। वेले अन्त होए सहाए। विच बबाण प्रभ लए बिठाए। गुण निधान एह दया कमाए। सच धाम प्रभ दए पुचाए। जोत सरूपी जोत मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सिर हत्थ टिकाए। गुरसिख मंगे प्रभ दर साची मंग। आत्म चाढ़े प्रभ साचा रंग। भवजल पार गुरमुख साचा जाए लँघ। मानस जन्म ना होवे भंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साची दात सोहँ प्रभ दर मंग। साची दात सच घर पाओ। प्रभ अबिनाशी सदा ध्याओ। दूख निवारन रसना गाओ। सर्ब घट वासी रिदे वसाओ। प्रभ अबिनाशी माण रखाओ। जगत उदासी मनों तजाओ। सच धरवास प्रभ चरन रखाओ। गर्भवास फंद कटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जन्म मरन दा गेड़ चुकाओ। साचा प्रभ साचा ध्यान। साचा देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान। गुरमुख बख्शे प्रभ साचा चरन धूढ़ इशनान। कलिजुग जीव दिस ना आवे विष्नूं भगवान। गुरमुख साचे चतुर सुजान, साचा देवे दर प्रभ माण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दा जाणी जाण। जानणहार आप जणावे। जीव जन्त दी बणत बणावे। आप आपणा विच रखावे। निज घर वासी निज मांहि समावे। माया रूपी पर्दा पावे। बेमुखां प्रभ दिस ना आवे। गुरमुखां प्रभ दया कमावे। जोत सरूपी दरस दिखावे। सति सरूपी नज़री आवे। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटावे। एका नाम मुख रखावे। सोहँ नाम रसन जपावे। आप आपणा दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सिर हत्थ टिकावे। गुरसिक्खां प्रभ दया कमाए। साचा कर्म आप कराए। भरम भुलेखे जगत भुलाए। अलख अलेखे दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दरस दिखाए। दरस दिखाए प्रभ मुकंदा। भगत जनां प्रभ सद बख्शिंदा। बेमुखां मुख रखाए मदिरा मास गन्दा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख दिवस रैण सोहँ नाउँ रसन जपंदा। उज्जल होए मुख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंग संगा। गुरसिख संग साचा तेरा। जोत सरूप विच रक्खे वसेरा। प्रगट जोत देवे दरस ना लावे देरा। चरन लाग निहकलंक आत्म मिटे सर्ब अन्धेरा। गुरमुख साचा प्रभ का रूप, गुरसिख ना जाणे सञ्ज सवेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा पार कराया बेड़ा। प्रभ अबिनाशी बेड़ा बन्न्ह। एका शब्द सुणाया कन्न। आत्म सुन्न खुल्हाई साचे जन। जोत जगाई साचे तन। गुरमुख गुरसिख तेरी कमाई धन्न। सोहँ शब्द देवे दान ना लागे संन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगावे झूठे तन। साची जोत प्रभ जगाए। पंचम प्रभ नष्ट कराए। एका नाम विच समाए। एकँकार प्रभ साची दया कमाए। साची दात वड करामात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ झोली पाए। भय भंजन प्रभ नैण मुँधारा। प्रभ साचे के साचे गुण, सगल करे जोत वरतारा। गुरमुख विरले विच मात चुण, शब्द रूप प्रभ भरे भण्डारा। एक टेक अवतार नर, जोत जगाए

प्रभ अगम्म अपारा। चरन लाग जन जायण तर, एका बख्शे चरन प्यारा। भगत जनां मन जाए मन्न, एका दीसे जोत निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक लए अवतारा। मातलोक प्रभ जामा धारे। सन्त जनां दी सुणी पुकारे। एका जोत एका आकारे। प्रभ अपरम्पर प्रभ साचे दी साची कारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भगत जनां दे काज संवारे। जोत सरूपी खेल प्रभ खेला। सन्त जनां प्रभ संग सुहेला। साचा मेल मिलाया मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल जगत विच खेला। साचा प्रभ सच घर पाओ। निजानंद निज मांहि उपजाओ। दीपक साची जोत जगाओ। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाओ। प्रभ अबिनाशी रसना गाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घट वासी दर्शन पाओ। साचा शब्द साचा ज्ञान। साचा शब्द गुर का ध्यान। साचा शब्द मेल मिलाए भगत भगवान । साचा शब्द साध संगत प्रभ देवे माण। साचा शब्द वड गुणी निधान। साचा शब्द सन्त जन विरले पाण। महाराज शेर सिँघ सोहँ बख्शे साचा ज्ञान। साचा शब्द दर साचे सुण। मिले वड्याई विच रिख मुन। जन सन्त सुणावे प्रभ साची धुंन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खोल्ह दिखावे आत्म सुन्न। आत्म सुन्न प्रभ खुल्हाए। थिर घर वासी थिर घर दी सोझी पाए। जोत सरूपी प्रभ दीपक जगाए। घनकपुर वासी गुरमुख साचे दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच शब्द दी सोझी पाए। साचा शब्द प्रभ सच चलावे। सन्त जनां सच मार्ग पावे। रसना रस अमृत रस मुख चुआवे। रसना जप जप जप जीव सर्ब सुख पावे। तप तप तप कलि वड्डा तप, प्रभ साचा रसना गावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखावे। प्रभ साचे सच दया कमाई। सच दर सच घर प्रभ जोत प्रगटाई। साध संगत मिल रसना हरि हरि हरि जस गाई। सन्त जनां प्रभ बलि बलि जाई। दिवस रैण रैण दिवस एका लिव प्रभ चरन लगाई । प्रभ अबिनाशी पेखे नैण साची सुरत प्रभ आप दवाई। दर घर साचे सन्त जन बहिण, साची मति सन्त प्रभ पाई। पूरब जन्म दा लहणा लैण, प्रगट देवे आप रघुराई। बेमुख जीव दुःख दर्द सहिण, प्रभ अबिनाशी ल्या भुलाई। अन्तकाल झूठे वहिण वहण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त कराई। सन्त जनां दर मंगल गाया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया । बजर कपाट प्रभ खोल्ह वखाया। सुन सुन सुन जन सन्त बिगसाया । परमानंद दे विच समाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, जोत सरूपी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव चुकाया। आप आपणा भेव चुकाए। सन्त जनां नूं सोझी पाए। सच घर विच सद समाए। साचा नाम रसन जपाए। एका ध्यान चरन लगाए। गुण निधान प्रगट जोत दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हाए। साचा प्रभ भेख भिखारी। कलिजुग जीव भुल्ले संसारी। नज़र ना आवे प्रभ गिरधारी। सन्त जनां सद बलिहारी। रसना

जप जप जप प्रभ आत्म तृखा उतारी । जोत सरूपी जोत प्रभ, साची जोत देवे निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां देवे नाम अधारी। साची जोत करे आकार। साचा शब्द देवे अधार। साचे सन्त प्रभ पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां नूं जावे तार। साची जोत प्रभ जगाए। भगत जनां प्रभ माण दुआवे। साची बणत आप बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच समाए। सन्त जनां प्रभ जोत जगाए। सन्त जनां प्रभ विच समाए। सन्त जनां प्रभ अमृत झिरना दे झिराए। सन्त जनां प्रभ अमृत रस रस चुआवे। सन्त जनां प्रभ अमृत झिरना नभ कँवल कँवल नभ मुख चुआवे। सन्त जनां प्रभ जोत सरूपी मेल मिलाए। सन्त जनां प्रभ साचा सति ज्ञान दुआवे। सन्त जनां प्रभ एका दूजा भउ चुकाए। सन्त जनां प्रभ सच घर दी बूझ बुझाए। सन्त जनां प्रभ आपणा भेव आप खुल्हाए। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए। सन्त जनां प्रभ धीर धराए। सन्त जनां प्रभ साचा आत्म सीर पिलाए। सन्त जनां हउमे विच्चों पीर गुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां धीर धराए। सन्त जनां प्रभ सरधा पूर। सन्त जनां प्रभ आत्म देवे सति सरूर। सन्त जनां प्रभ आत्म जोत करे नूरो नूर। सन्त जनां प्रभ भण्डार करे भरपूर। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा पूर। सन्त जनां प्रभ लाज रखाए। सन्त जनां प्रभ माण दुआए। सन्त जनां प्रभ साचा नाम झोली पाए। सन्त जनां प्रभ एका ध्यान सुरत दुआए। सन्त जनां प्रभ प्रगट जोत जोत सरूप दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। सन्त जनां प्रभ दे वड्याई। सन्त जनां प्रभ साची दात भिच्छया पाई। सन्त जनां चरन धूढ़ मस्तक लाई। सन्त जनां साची जोत विच ललाट जगाई। सन्त जनां उच्च पदवी प्रभ दर ते पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां सद दया कमाई। सन्त जनां प्रभ चरन भरवासा। सन्त जनां प्रभ चरन रहिरासा। सन्त जनां प्रभ करे बन्द खुलासा। सन्त जनां प्रभ करे जोत प्रकाशा। सन्त जनां प्रभ पूर कराए आसा। सन्त जनां प्रभ साचा सद रक्खे विच वासा । झूठी सृष्ट देखे तमाशा। सन्त जनां प्रभ होए दासन दासा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा देवे चरन भरवासा। सन्त जनां प्रभ सदा संग। एका नाम चढ़ाए रंग। अमृत झिरना झिराए विच देह गंग। साचा प्रभ साचा वर साचा दर जन सन्त ल्या मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सदा अंग संग। सन्त जनां सर्ब ज्ञाता। सन्त जनां एका मिल्या भगवन्त भ्राता। सन्त जनां प्रभ सदा रंग राता। सन्त जनां अमृत बूंद पीए स्वांत स्वांता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत मिलाता। सच घर प्रभ रक्खे वास्सया । साची जोत जगत प्रकाशया। तीन लोक जोत सरूप निवास्सया। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ दासन दास्सया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर

६७२ ०१

साचा, सर्ब जीआं सद रक्खे वास्सया। साचा प्रभ सदा अबिनाशी। जीव जन्त विच सद निवासी। साची जोत प्रभ प्रकाशी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दे कर जाए बन्द खुलासी। साची जोत प्रभ प्रकाश कर। एका जोत जगाए अज्ञान विनास कर। सोहँ शब्द रसन स्वास कर। एका जोत सरूपी विच वास कर। साची जोत प्रकाश कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आपणे दास कर। जीव जन्त प्रभ विच समाया। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। गुरमुख साचे सच शब्द सुणाया। एका धुन दे उपजाया। अनहद राग प्रभ सुणाया। जोत सरूपी प्रगट जोत दरस दिखाया। होए प्रकाश विच अन्ध कूप, प्रभ साचा होए सहाया। महाराज शेर सिँघ साचे भूप, जोत सरूपी दरस दिखाया। उपजे धुन सची धुन्कार। आत्म जोत होए उज्जयार। एका शब्द वज्जी धुन्कार। साची रुण झुण आत्म मिले अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम अधार। साची धुंन देह वजाई। आत्म सुन्न प्रभ खोल्ह वखाई। गुरमुख साचे प्रभ बूझ बुझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दूज मिटाई। साचा दर घर प्रभ सूज्झया। साचा प्रभ भेव खुल्हावे गूज्झया। भउ चुकावे एका दूज्जया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा तेरे चरन लूज्झया। गुरमुख साचे मन वज्जी वधाई। प्रभ साचे सच जोत जगाई। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाई। साची जोत दीपक दे जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई। साचा नाम प्रभ दर पाया। एक ध्यान गुरचरन लगाया। साचा ज्ञान गुर नाम ध्याया। साचा ध्यान चरन धूढ़ प्रभ मस्तक लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाया। भगत जनां सदा रखवाला । रक्खे लाज गुर गोपाला। दीनां नाथ दीन दयाला। सन्त जनां दी सार समाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सदा रखवाला। साचा प्रभ जोत आकारी। जोत सरूप सदा निराधारी। जोत निरँजण एका आकारी। मातलोक आए वारो वारी। जुगो जुग भगतां जाए पैज संवारी। प्रभ साचे दी खेल न्यारी। भगत जनां रसना जप जप आत्म तृप्ताई। भगत जनां आत्म दीप जोत जगाई। भगत जनां साचा रंग चढ़ाई। भगत जनां मन वज्जी वधाई। भगत जनां प्रभ दरस दिखाई। भगत जनां प्रभ भरम गुआई। भगत जनां एका राग उपजाई। भगत जनां जोत सरूप दरस दिखाई। प्रभ साचे जन आस रखाई। प्रभ साचा आप होए सहाई। वेले अन्त प्रभ दरस दिखाई। भगत जनां प्रभ आण तराई। हँकारीआं जाए प्रभ हँकार गुआई। गुरमुख साचे सच दया कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे बूझ बुझाई । मातलोक प्रभ दया कमाए, साची जोत विच देह टिकाए। मातलोक प्रभ दया कमाए, जुगो जुग प्रभ जामा पाए। मातलोक प्रभ जामा पाए, जोत सरूपी जोत जगाए। मातलोक प्रभ जोत जगाए, कृष्ना सांवला घनकपुरी विच जामा पाए। मातलोक प्रभ जामा पाए, रमईआ राम आपणी जोत कलि प्रगटाए। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम आप धराए। साचा प्रभ जोत प्रगटाए। भगत जनां दया कमाए। भगत जनां प्रभ सरनी लाए। साचा नाम रसना जपे, दिवस रैण एका लिव लावे। गुरमुख पेखे तीजे नैण, आपणा आप भेव खुल्हाए। साचा लहणा प्रभ दर लैण, महाराज शेर सिँघ सद रसना गाए। रसना जप आत्म रस माणया। प्रभ अबिनाशी सद चलाए आपणा भाणया। प्रभ अबिनाशी गुरमुख सति कर जाणया। सो जन होए सुघड़ स्याणया। देवे दरस विष्नूं भगवानया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप विच समाणया। जोत सरूप विच समाण। बेमुखां प्रभ तोड़े माण। गुरमुखां देवे दरस महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा प्रभ आत्म जोत जगाए। जगत पित आप अख्वाए। जीव जन्त विच प्रभ आप समाए। सर्ब जीआं दी आप बणत बणाए। महिंमा अगणत गणी ना जाए। वेद पुरान प्रभ भेव ना पाए। खाणी बाणी प्रभ विच समाए। जोत सरूपी दिस ना आए। जोत सरूपी प्रभ जोत सरूपा। प्रभ साचे घर सदा अनूपा। वड दाता प्रभ वड भूपा। जोत प्रकाश करे विच देह अन्ध कूपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सति सरूपा। जोत सरूप जोत जगाए। सोहँ साचा नाम जपाए। ऊँच नीच प्रभ भेद चुकाए। एका आप एका जाप विच मात रखाए। सर्ब भेव आप खुल्हाए। पारब्रह्म सच शब्द लिखाए। गया वेला हत्थ ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन आण तराए। ऊँच नीच भेद चुकाए।
६७३ ०१ दूसर कोई रहण ना पाए। सतिगुर साचा सतिजुग मार्ग लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह कलि जामा पाए। ६७३ ०१
आप आपणा भेद खुल्हावणा। वेद चार वक्त चुकावणा। सोहँ शब्द जगत चलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक कलि जामा पावणा। मातलोक प्रभ जामा पाए। राजे राणे चरनी लाए। आपणी कल आप वरताए। मस्तूआणे माण दवाए। सन्त जनां प्रभ जोत सरूपी शब्द जणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा धाम सुहाए। मस्तूआणे दे वड्याई। जमन किनारे प्रभ जोत जगाई। वाली हिन्द लै जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुरत शब्द मेल मिलाई। वाली हिन्द सरनी आए। आप आपणी बूझ बुझाए। एका रूप नज़री आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए। सचा प्रभ सचा दरबारा। निर्मल जोत जगे अपारा। एका एक दिसे निरँकारा। साचा वेस प्रभ करतारा। वड नरेश विच संसारा। ब्रह्मा विष्न महेष खड़े दुआरा। वाली हिन्द प्रभ दे उपदेश, आत्म करे जोत आकारा। सोहँ शब्द हिरदे प्रवेश, देवे दरस अगम्म अपारा। एका छत्र झुले प्रभ सीस, सोहँ खण्डा हत्थ दो धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप किया पसारा। एका आप एक दिसावे। एका जाप मुख रखावे। एका बाप आप बण जावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हावे। आप आपणा भेद खुल्हा के। वाली हिन्द सरन लगा के। साचा माण मात दुआ के। आप आपणा

सिर हत्थ टिका के। चार वरन सिर ताज पहना के। राउ रंक इक्क थां बहा के। एका आपणा नाम जपा के। दूई द्वैती पड़दे लाह के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रगटा के। आपणी जोत आप प्रगटाए। साचा मार्ग विच सृष्ट लगाए। सन्त जनां प्रभ वड्याए। निमाणयां सिर हत्थ टिकाए। राजे राणयां प्रभ नष्ट कराए। जो जन चले भाणया, प्रभ दया कमाए। गुरमुख चतुर सुघड़ स्याणयां प्रभ विच समाए। कलिजुग जीव अञ्याणयां, प्रभ दिस ना आए। भुन्ने जिउँ भठयाले दाणयां, ना कोए छुडाए। गुरसिख साचे रंग साचा माणया, सोहँ रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगाए। आप लगाए आपणी सरना। गुरमुख साचे कर दरस भवजल तरना। बेमुख मानस जन्म कलि हरना। गुरमुख साचे प्रभ साचा वरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साची सरना। आपणी सरन आप लगाए। जन्म मरन गेड़ कटाए। तारन तरन आप बण जाए। वरन बरन प्रभ दे मिटाए। कारन करन एह दया कमाए। हरन फरन गुरमुख खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाए। भगत जनां प्रभ दया कमाए। सन्त जनां प्रभ होए सहाए। कलिजुग ना लागे तत्ती वाए। पूरन भागे प्रभ दरस दिखाए। कलि सोए जागे, जिन दरस दिखाए। शब्द लिखाया पहली माघे, सतिजुग साचा लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ नाउँ धराए।

६७४
०१

❋ २१ माघ २००८ बिक्रमी लछमण सिँघ दे गृह दिल्ली शहर ❋

पारब्रह्म तेरी अचरज माया। जोत सरूपी खेल रचाया। आप अभुल्ल सभ जगत भुलाया। निहकलंक कलि जामा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीवां सर्ब भुलाया। निहकलंक कलि जामा धारे। जोत सरूप प्रभ गिरधारे। साची जोत करे मात आकारे। सर्ब गुणवन्त विच संसारे। बेमुख प्रभ अबिनाशी दर दुरकारे। गुरमुख साचे सोहण गुरचरन दुआरे। देवे दरस प्रभ अबिनाशी सदा गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच धारे। घनकपुरी प्रभ जामा पाया। आपणा भेद प्रभ आप छुपाया। कलिजुग जीवां प्रभ आप भुलाया। गुरमुख साचे प्रभ प्रगट जोत दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराया। निहकलंक कलि जामा धारे। मातलोक लए अवतारे। साची जोत करे आकारे। गुरमुखां देवे आत्म जोत अधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच करे वरतारे। सच सच प्रभ भरे भण्डार। सच सच प्रभ देवणहार। सच सच प्रभ जोत निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। नर नरायण जगत प्रभ आया। बाशक सेज प्रभ तजाया। मातलोक जोत सरूप सिँघआसण डेरा लाया। बेमुख

जीव प्रभ साचा भेव ना पाया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो तेरी सरनाया। गुरसिख आए प्रभ सरनाया। प्रभ अबिनाशी सरन लगाया। साचा देवे जगत माण, प्रभ आपणी सेवा लाया। साची दरगाह देवे माण, आत्म साची जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा मातलोक वड्आया। गुरसिक्खां प्रभ दया कमाए। जुगो जुग प्रगट जोत, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण तीन लोक करे रुशनाए। जोत निरजंण जगत आकारा। कलिजुग मिटाए धुंधूकारा। साचा शब्द सोहँ उपजाए, उपजे धुन सची धुन्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि लए अवतारा। साचा शब्द प्रभ उपाया। सोहँ साचा नाम लिखाया। सतिजुग साचे माण दवाया। जगत भेख कलि मिटाया। एका लेख निहकलंक सरनाया। कलिजुग जीव भुल्ले वेखा वेख, प्रभ साचा नज़र ना आया। जोत सरूपी प्रभ किया भेख, जामा घनकपुरी विच पाया। महाराज शेर सिँघ गुरमुख वेख, कलि आपणी सरन लगाया। जोत सरूप भेख धारी। साची जोत कृष्न मुरारी। कलिजुग जीव भुल्ले प्रभ गिरधारी। मदिरा मास करन रसन आहारी। गुरमुख साचे सोहण निहकलंक चरन द्वारी। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, अन्तकाल कलि भन्ने महाराज शेर सिँघ भंड भण्डारी। झूठे जीव सर्ब वरभंडी। कलिजुग जीव होए पखण्डी। आत्म होई सर्ब दी रंडी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तोड़े अभिमान सर्ब फ़रंगी। सर्ब जीव मात हँकारे। रसन चले सर्ब विकारे। साचा नाम मनों विसारे। निहकलंक अवतार नर, जामा घनकपुरी विच धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा जगत करे वरतारे। मातलोक प्रभ जामा पाया। जोत सरूपी प्रगट जोत, गुरमुख साचे मेल मिलाया। दुरमति मैल जाए धोत, रंगण रंग नाम चढ़ाया। आत्म जगाए निरँजण जोत, आत्म अन्धेर सर्ब मिटाया। गुरमुख प्रभ साचे कीने एका गोत, गुरमुखां विच सद समाया। बेमुख दर जायण रोत, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराया। गुरमुखां प्रभ पैज संवारे। चल घर आए प्रभ गिरधारे। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कारे। आदि जुगादी मातलोक लए अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच धारे। मातलोक प्रभ जोत जगाए। गुरमुख साचे प्रभ सोए जगाए। बेमुख जीव चार कुन्ट रहे बिल्लाए। प्रभ अबिनाशी दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, माया रूपी पर्दा पाए। प्रभ साचे दी साची माया। कलिजुग जीव सर्ब भुलाया। जूठ झूठ प्रभ झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराया। कलिजुग अन्तिम अन्त करा के। साची जोत सच प्रगटा के। सतिजुग साचा सति सति सति जाए वरता के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पा के। सोहँ शब्द प्रभ भरे भण्डार। गुरमुखां आत्म जोत करे उज्जयार। एका जोत

जगे साची निरँकार। उपजे धुन खुल्हे सुन्न, देवे दरस प्रभ अगम्म अपार। गुरमुख साचे उत्तम विच मुन, साची देवे प्रभ सिक्दार। साचा राग ल्या कन्न सुण, हउमे विच्चों देवे मार। एका उपजे साची रुण झुण, महाराज शेर सिँघ साचा शब्द भरे भण्डार। साचा शब्द प्रभ उपजावे। साध संगत माण दवावे। एका अंक राउ रंक, चार वरन प्रभ कन्न सुणावे। सोहँ साचा डंक निहकलंक द्वार बंक, प्रभ साची धुन आप उपजावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक विच जोत जगावे। साचा शब्द साची धुन्कारा। गुरमुख साचे प्रभ खोल्हे दस्म दुआरा। आत्म मिटाए सर्ब अन्ध अन्धयारा। जोत सरूपी प्रगट जोत, साची जोत करे आकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत वरसाए विच देह सीतल धारा। अमृत मेघ प्रभ वरसाए। अमृत बूंद कँवल मुख पाए। गुरमुख साचे प्रभ बजर कपाट खोल्ह वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत स्वच्छ सरूप दरस दिखाए। प्रभ साचे सच दरस दिखाया। प्रभ साचे आपणा भेद आप खुल्हाया। प्रभ साचे आत्म जोती जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ रखाया। जोत सरूपी प्रभ मेल मिलाए। प्रभ साचे दी साची नाए। गुरमुख साचे अन्तकाल प्रभ साचे चरन लगाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेले अन्त होए सहाए। अन्तकाल प्रभ रखवाला। सर्ब जीआं प्रभ प्रितपाला। धरे जोत निहकलंक सतिगुर साचा दीन दयाला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे तेरा सद रखवाला। गुरमुख तेरी साची मति। प्रभ अबिनाशी रखावे तेरी पति। सर्ब घट वासी तेरी जाणे मित गत। घनकपुर वासी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे नाम सति। साचा प्रभ सच घर आए। आप आपणी जोत जगाए। गुरमुखां प्रभ रिहा समाए। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे दे वड्याए। गुरमुख साचे प्रभ माण दवाया। निहकलंक सिर हत्थ टिकाया। सोहँ साचा नाम भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाया। गुरमुख तेरा साचा रूप। होए प्रकाश विच देह अन्ध कूप। दरस दिखावे जोत सरूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता वड वड वड भूप। जोत सरूप भए अनन्दा। गुरमुख आत्म उपजावे प्रभ परमानंदा। गुरमुख साचे प्रभ खोल्ह वखावे तेरा आत्म जिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग भगत जनां सद बख्शिंदा। भगत जनां प्रभ रक्खणहारा। देवे दरस प्रगट जोत जोत सरूप निराहारा। रूप अगम्म ना पाए कोई सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग सति सति तेरा वरतारा। जुगो जुग प्रभ भए सहाई। भगत जनां प्रभ पैज रखाई। निर्मल जोत प्रभ विच मात टिकाई। हँकारीआं प्रभ हँकार गंवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत रघुराई। एका जोत एका आकारे। जोत सरूप प्रभ विच संसारे। जीव जन्त भुल्ले कलिजुग प्रभ गिरधारे। वेले अन्त

प्रभ अबिनाशी करे ख्वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच धारे। कलिजुग जीव होए अञ्याणे। प्रभ भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। तख्तों लाहे प्रभ राजे राणे। गुरमुख साचे प्रभ साचे चरन लगाणे। चरन लाग जन होए सुघड़ स्याणे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी आपे जाणे। सर्ब जनां दी आपे जाण। पूरन ब्रह्म रिहा पछाण। एका शब्द चार वरन रखाए साची आण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब घटां दा जाणी जाण। सर्ब घटां प्रभ आपे वसे। जोत सरूपी भेस गुरमुख साचे दस्से। साची जोत करे आकार, होए प्रकाश कोट रवि सस्से। बेमुखां प्रभ करे नास, दर आयण जायण नस्से। जोत सरूप सदा अबिनाश, बेमुखां ना दीसे जिउँ चन्द मस्से। वरत रिहा सर्ब गुणतास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे हिरदे वसे। गुरमुख साचे रंग न्यारा। देवे दरस अगम्म अपारा। साचे नाम प्रभ देवे भर भण्डारा। साची जोत प्रभ आत्म देवे इक्क आधारा। महाराज शेर सिँघ निहकलंक लए अवतारा। सन्त जनां प्रभ साचा पाया। सन्त जनां प्रभ मेल मिलाया। सन्त जनां प्रभ भउ चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया। सन्त जनां प्रभ आस पुजाए। सन्त जनां प्रभ होए सहाए। सन्त जनां प्रभ साचा राह दिखाए। सन्त जनां प्रभ आत्म साची जोत जगाए। सन्त जनां अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां प्रगट जोत दरस दिखाए। सन्त जनां प्रभ भए सहाया। सन्त जनां प्रभ आप पित माया। सन्त जनां प्रभ साचे मार्ग लाया। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ होए सहाया। सन्त जनां प्रभ सद रखवाला। सन्त जनां सदा प्रितपाला। सन्त जनां आत्म जोत करे उजाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साचा दीपक बाला। सन्त जनां प्रभ साची ओट। आत्म शब्द जगावे साची जोत। सन्त जनां प्रभ आत्म कढे हउमे खोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां दी साची ओट। सन्त जनां सिर प्रभ हत्थ टिकाए। सन्त जनां प्रभ माण दवाए। सन्त जनां साची दरगाह माण दवाए। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सरन लगाए। सन्त जनां प्रभ नाम जपाया। सन्त जनां प्रभ सोहँ दात झोली पाया। सन्त जनां प्रभ साचे सच मार्ग लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर साचा मंग वर घर साचा पाया। सन्त जनां जाओ बलिहार। प्रभ साचा सोहण चरन द्वार। सन्त जनां मिले वड्याई विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस निहकलंक नर अवतार। सन्त जनां सर्ब सुख माणया। सन्त जनां पूरन ब्रह्म ज्ञानया। सन्त जनां निहकलंक तेरा जामा सति कर मानया। सन्त जनां होए विस्माद, प्रभ विष्नूं भगवानया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे माण जो जन आए चरन निमाणयां। सन्त जनां आत्म भरपूरा। सन्त जनां प्रभ आत्म उपजावे साची तूरा। सन्त जनां प्रभ एका देवे शब्द सरूरा। सन्त जनां

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी देवे नूरा। सन्त जनां प्रभ उपजावे साची धुन। सन्त जनां प्रभ खोलृ वखावे आत्म सुन्न। सन्त जनां प्रभ चरन लगावे विच मातलोक चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना जाणे तेरे गुण। सन्त जनां सिर हत्थ टिकाया। सन्त जनां प्रभ होए सहाया। सन्त जनां प्रभ साचा दीपक दे जगाया। सन्त जनां साची जोत करे रुशनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाया। सन्त जनां सदा बलिहार। सन्त जनां प्रभ साचा जाए तार। सन्त जनां देवे वड्याई निहकलंक विच संसार। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच शब्द भरे भण्डार। सन्त जनां प्रभ धीर धराया। सन्त जनां प्रभ आत्म साचा दीप जगाया। सन्त जनां प्रभ साचे साची दरगाह माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां तेरा भेद ना पाया। सन्त जनां मिले प्रभ सारंगधर। सन्त जन प्रभ सरनी गए पर। सन्त जन गुरचरन लाग गए तर। सन्त जन अन्तकाल ना जायण मर। सन्त जनां प्रभ अमृत झिरना झिराए साचा सर। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसावे साचा दर। सन्त जनां प्रभ दर सचा दरबारा। सन्त जनां प्रभ देवे दरस अगम्म अपारा। सन्त जनां दिसावे निहकलंक नरायण नर अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जगत पसारा। सन्त जनां उपजावे धुंन अनाद अनादी। सन्त जनां प्रभ मिले आदि जुगादी।

६७८

०१

सन्त जनां प्रभ चरन लाग आत्म साधी। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सदा विस्मादी। सन्त जनां प्रभ सद विस्मादे। सन्त जनां एका धुन उपजावे साची नादे। सन्त जनां शब्द चलावे बोध अगाधे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां विच सद विस्मादे। सन्त जनां सदा प्रभ वसे। सन्त जनां आपणा भेव आप प्रभ दस्से। सन्त जनां प्रभ करे प्रकाश जिउँ रवि सस्से। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी हिरदे वसे। सन्त जनां प्रभ भेद खुलृाया। सन्त जनां प्रभ राग सुणाया। सन्त जनां प्रभ अनहद साची धुन उपजाया। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुन्न समाध खुलृाया। सन्त जनां प्रभ संग सुहेला। सन्त जनां प्रभ जोत सरूपी कराए मेला। सन्त जनां संग अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां साचा सज्जण सुहेला। सन्त जनां प्रभ दया धारी। सन्त जनां प्रभ आत्म करे उज्जयारी। सन्त जनां देवे दरस आप गिरधारी। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ साची दरगाह देवे सिक्दारी। सन्त जनां सच धाम न्यारा। जन सन्तां प्रभ साचा देवे मोख दुआरा। सन्त जन साची जोत प्रभ मिले विच संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां पार उतारा। सन्त जनां प्रभ पार उतारे। किरपा करे आप बनवारे। सोहँ उपाए गिरधारे। जामा मातलोक विच धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारे। सन्त जनां प्रभ सुणी पुकारा।

६७८ ०१

प्रभ अबिनाशी लए अवतारा। जोत सरूपी किया आकारा। कलिजुग मिटाए अन्ध अन्धयारा। सतिजुग वरताए सति करे वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सतिजुग साचा मार्ग ला। कलिजुग झूठा खेल मिटा। सोहँ साचा शब्द प्रभ अबिनाशी जाए चला। ऊँच नीच राउ रंक इक्क धाम जाए बहा। सतिजुग साचा डंक, चार वरन चार कुन्ट प्रभ साचा जाए वजा। मातलोक एका अंक, निहकलंक तेरा नां। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दूसर कोई ना। सतिजुग प्रभ जन्म दवाया। मातलोक विच टिकाया। साचा माण विच जगत दवाया। धरत मात दी गोद सवाया। निहकलंक अवतार नर, साचा पित आप अख्वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाया। सतिजुग साचे जन्म दवा। सतिजुग साचा मार्ग ला। सोहँ साचा शब्द चला। ऊँच नीच दा भेद मिटा। राजा राणा तख्तों लाह। राउ रंक इक्क करा। सोहँ शब्द सर्ब वरता। बाकी सर्ब नष्ट करा। साचा दर इक्क वखा। जोत सरूपी साचा दीप प्रभ आत्म जाए जगा। सतिजुग जीआं प्रभ सोहँ नाम जाए जपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्धेर जाए मिटा। सतिजुग साचा मात उपजाया। प्रभ अबिनाशी सिर हत्थ टिकाया। सोहँ साचा दान प्रभ साचे झोली पाया। वड बली बलवान निहकलंक होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे माण दवाया। सतिजुग साचा मात धर। प्रभ अबिनाशी देवे साचा वर। चार वरन प्रभ जाए इक्क कर। एका सरन दिसाए निहकलंक अवतार नर। दूसर कोई रहण ना पाए, प्रभ साचा अन्त जाए कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन दिसाए एका दर। साचा प्रभ सच दरबार। चार वरन आए प्रभ चरन द्वार। राउ उमराउ प्रभ करे ख्वार। अन्तकाल कलि प्रभ पाए सार। एका जोत जगाए निहकलंक नरायण नर अवतार। चार वरन दिसाए प्रभ साचा निहकलंक दर हरि का द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया जामा धार। साचा प्रभ सच दरबारी। राणयां महाराणयां प्रभ साचा करे ख्वारी। निमाणयां निताणयां प्रभ देवे जोत अधारी। सतिजुग साचे प्रभ अनाथां देवे सची सिक्दारी। सोहँ शब्द जो जन हिरदे वाचे, प्रभ आत्म जोत करे उज्जयारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। सतिजुग साचे जन्म दवाया। विच मात प्रभ वड्आया। सच सच सच प्रभ साचे झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम दवाया। सोहँ शब्द प्रभ भरे भण्डारा। सोहँ वरते विच संसारा। सोहँ दिसावे हरि का दवारा। सोहँ गावे जीव अन्त पावे मोख दुआरा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी पावे सारा। सोहँ साचा शब्द चलाया। सोहँ साची धुन उपजाया। सोहँ आत्म सुन्न खुल्हाया। रसना सोहँ जप जप जीव, महाराज शेर सिँघ होए सहाया। सोहँ शब्द प्रभ देवे दात। सोहँ देवे प्रभ साची करामात । सोहँ शब्द करे

प्रकाश, जिउँ दीपक अन्धेरी रात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे साची दात। सोहँ शब्द सर्ब गुण। सोहँ शब्द उपजावे साची धुन। सोहँ शब्द गुरमुख साचे सच कन्न सुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सुणाए उपजाए जणाए चुण चुण। सोहँ शब्द प्रभ जिस जन जणाया। प्रभ अबिनाशी आपणा भेद मिटाया। गुरमुख साचे सुरत शब्द दा मेल मिलाया। घनकपुर वासी प्रगट जोत, जोत सरूपी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे सर्ब मिटाया। जोत सरूपी दरस दिखा। भरम भुलेखा सारा लाह। गुरमुख साचे साची जोत प्रगटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग चरन लए लगा। गुरमुखां प्रभ चरन लगाए। जन्म जन्म दे विछड़े निहकलंक मेल मिलाए। साचा प्रभ साची दरगाह माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां सद होए सहाए। भगत जनां प्रभ सदा सहाया। वेले अन्त दरगाह साची माण दवाया। गुरमुख साचे प्रगट जोत दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम गुरसिख बहाया। गुरमुख साचे धाम न्यारा। पारब्रह्म खेल अपारा। एका जोत जगे गिरधारा। गुरमुख विरला देखे कर विचारा। जोत सरूप जोत निरँजण, निहकलंक नर नरायण अवतारा। साची जोत सद आकारे। सचखण्ड सचा दरबारे। धरे जोत निहकलंक अवतारे। गुरमुख साचे सोहण गुरचरन दवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खण्ड ब्रह्मण्ड तेरे पनिहारे। सचखण्ड धाम न्यारा। पारब्रह्म जोत जगे अपारा। जोत सरूपी पसर पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड तेरा सच दवारा। सचखण्ड प्रभ सच द्वार। एका जोत जगे अपार। एका उपजे साची धुन्कार। गुरमुख साचे प्रभ जाए तार। साचा धाम प्रभ उपजाया। भगत जनां प्रभ दे वसाया। प्रभ आपणा भेद आप चुकाया। जोत सरूपी प्रगट जोत, महाराज शेर सिँघ गुरमुख साचे भेव खुल्हाया। गुरमुख साचे भेद खुल्हा। जोत सरूपी मेल मिला। वेले अन्तकाल कलि प्रभ साचा होए सहा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ साचा नाम जाम जाए पिला। सोहँ नाम सदा खुमारी। गुरमुख आत्म होए उज्जयारी। अमृत वरखे प्रभ साचा किरपा धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस सचखण्ड दवारी। देवे दरस प्रभ अबिनाशा। गुरमुख साचे किया वासा। सोहँ शब्द चलावे जपावे स्वास स्वासा। महाराज शेर सिँघ चरन प्रीत साची रहिरासा। चरन प्रीत जो जन कमाए। मात गर्भ विच फेर ना आए। लक्ख चुरासी गेड़ चुकाए। जोत सरूपी प्रगट जोत, वेले अन्त लए छुडाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुरमुख साचे जोत जगाए। गुरसिख साचा जोत मिलाया। प्रभ अबिनाशी कर्म कमाया। जन्म मरन दा गेड़ चुकाया। आप आपणे विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचे धाम बहाया। गुरमुख साचे सच धाम बहाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। आप आपणे विच

समाए। गुरमुख साचा ना मरे ना आए जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थिर घर निवास रखाए। गुरमुखां थिर घर बहाया। प्रभ साचे सिर हत्थ टिकाया। बैकुण्ठ निवासी विच बैकुण्ठ निवास रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचे धाम बहाया। गुरमुखां हरि दर धाम न्यारा। जोत सरूप दीपक उज्जयारा। प्रभ साचे सच चरन बलिहारा। आदि अन्त प्रभ एकँकारा। मातलोक जुगो जुग प्रभ साचा लए अवतारा। जोत सरूप प्रभ अबिनाशी, आपणा आप पसर पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना करन विचारा। कलिजुग जीव ना करे विचार। अन्तकाल कलि होयण ख्वार। सोहँ शब्द प्रभ साची मारी मार। मदिरा मास रसना किया आहार। वेले अन्त मानस जन्म गए कलि हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाए दुष्ट दुराचार। कलिजुग जीव आत्म अन्ध। बेमुख जीवां भाग होए मन्द। मदिरा मास रसना लाया गन्द। आत्म गंवाया प्रभ साचे का साचा अनन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाए जीव उपजे परमानंद। रसना जप आत्म रस पाओ। आत्म साची जोत जगाओ। भरम भुलेखा सारा लाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक सच सरन रखाओ। प्रभ सरन जो जन आए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। पतित पापी प्रभ लए तराए। जो जन आए चरनी सीस झुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़यां कलि मेल मेल मिलाए। विछड़यां प्रभ मेल मिलाया। आत्म साचा दीप जगाया। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाया। एका चरन ध्यान लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाया। जो जन आए प्रभ सरनाए। प्रभ अबिनाशी होए सहाए। आत्म साची जोत जगाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हाए। जिस जन प्रभ भेद खुल्हाया। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाया। आत्म साचा दीप जगाया। सोहँ शब्द धुन उपजाया। साचा राग प्रभ उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाद आप वजाया। साचा नाद प्रभ वजाए। आत्म सुन्न खोल्ह वखाए। एका धुन आप उपजाए। गुरमुखां प्रभ चरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। गुरमुख आयण प्रभ चरन द्वार। सोहँ साचा शब्द प्रभ देवे नाम अधार। साचा प्रभ सच भरे भण्डार। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कार। आत्म देवे जोत अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सदा निराधार। जोत सरूप जगत पित आए। आप आपणा भेद छुपाए। कलिजुग जीव प्रभ लए भुलाए। गुरमुख साचे प्रभ बाहों पकड़ तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए। जोत सरूप प्रभ दरस दिखाया। गुरमुख साचा सच मार्ग लाया। एका धुन सोहँ साचा राग उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाया। जोत जोत जोत प्रभ जोत धारे। जोत जोत जोत प्रभ जोत पसारे। जोत जोत जोत प्रभ जोत

निरँकारे। जोत जोत जोत प्रभ मातलोक जोत आकारे। जोत जोत जोत प्रभ जोत सरूप वरते विच संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धारे। जोत जोत जोत प्रभ जोत जगाई। मातलोक विच खेल रचाई। रमईआ राम घनईए शाम आपणी कलि प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराई। एका जोत राम अवतारा। एका जोत कृष्न मुरारा। एका जोत जगत वरतारा। एका जोत जगत आकारा। एका जोत एका रंग रवे करतारा। जोत सरूपी प्रगट जोत, निहकलंक नरायण नर अवतारा। निहकलंक कलि जामा धार। सृष्ट सबाई करे ख्वार। चार कुन्ट कराए हाहाकार। जन भगतां देवे सोहँ शब्द अधार। रसन जपाए कराए जै जै जैकार। गुरमुख साचे सोहण तेरे चरन द्वार। भगत वछल आप गिरधार। जन भगतां प्रभ जाए तार। सदा सदा प्रभ साचा जाए पैज संवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया जामा धार। कलिजुग प्रभ जामा धार। अचरज खेल करे करतार। जोत सरूप रहे निराधार। सोहँ शब्द चलावे खण्डा दो धार। सृष्ट सबाई करे ख्वार। सच घर वसे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतार। मातलोक प्रभ जामा धारे। दुष्ट दुराचार प्रभ आप सँघारे। भगत जनां प्रभ पार उतारे। साची जोत करे आत्म उज्जयारे। जोत सरूपी विच पसारे। नज़री आवे नैण मुँधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतारे। नरायण नर कलि जामा धार। कलिजुग जीवां करे ख्वार। दुष्ट दुराचारां सोहँ मारे साची मार। आप बैठ अडोल रहे गिरधार। अग्न जोत जगत जलाए, महाराज शेर सिँघ नरायण नर अवतार। अग्न जोत जगत जलाया। चार कुन्ट प्रभ साचे हाहाकार मचाया। आप बैठ अडोल प्रभ सारा जगत डुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाया। घनकपुरी प्रभ जामा धार। किरपा करे भगत गिरधार। गुरमुख चल आयण निहकलंक तेरे दरबार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आत्म जोत करे आकार। गुरमुख आत्म जोत आकारी। देवे दरस प्रभ नैण मुँधारी। साची जोत प्रभ पसर पसारी। बेमुख जीवां कलिजुग आत्म होई अन्ध अंध्यारी। दिस ना आवे जोत सरूप प्रभ कृष्न मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां जाए पैज संवारी। भगत जनां प्रभ तारनहारा। आप आपणा बिरद संभारा। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा। वरते वरताए करे कराए विच संसारा। जगत भुलावे रुलावे करे ख्वारा। गुरमुख तरावे चरन लगावे, देवे नाम अधारा। साचे मार्ग पावे, सोहँ साचा नाम जपावे, अन्तकाल प्रभ साचा देवे मोख दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। निहकलंक कलि बणत बणाए। कलिजुग जीवां माया पाए। झूठे धन्दे सृष्ट भुलाए। गुरमुख साचे प्रभ बूझ बुझाए। आप आपणा भेद जणाए। जोत निरँजण विच मात दे आए। अनाथां हेत प्रभ जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी बणत

बणाए। एका जोत रमईआ रामा। सांवल काहन घनईआ शामा। निहकलंक जोत सरूपी पहरया बाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द देवे वड दानी दाना। सोहँ शब्द प्रभ वरताए। जो जन आए सेव कमाए। आत्म तृखा सर्ब मिटाए। बूंद स्वांती मुख चुआए। आत्म अमृत मेघ वरसाए। आत्म सांतक सति सति कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए दर्शन पाए। कर दरस आत्म तृप्तास्सया। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनास्सया। गुरमुख साचे आत्म साचा दीप प्रकास्सया। गुरचरन प्रीती कलिजुग साची रहिरास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए दासन दास्सया। भगत जनां प्रभ दासन दासा। साचा प्रभ सद रक्खे विच वासा। साची जोत धरे अबिनाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी पूरन आसा। सर्ब जनां प्रभ आसा पूर। जो जन आए चरन हज़ूर। सोहँ साचा देवे नाम सरूर। प्रभ अबिनाशी आत्म करे भरपूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख हिरदे वसे ना जाणो दूर। गुरमुख साचे सच रंग माणया। प्रभ अबिनाशी साचा जाणया। कलिजुग होए सुघड़ स्याणया। जो जन चले प्रभ के भाणया। बेमुख जीवां प्रभ भुन्ने जिउँ भठयाले दाणया। तख्तों लाहे प्रभ राजे राणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विरले गुरमुख पछाणया। गुरमुख जाणे जिस प्रभ जणाए। प्रभ अबिनाशी सिर हत्थ टिकाए। दे दरस प्रगट जोत प्रभ आत्म चिन्त मिटाए। विच्चों जाए हउमे सोग, प्रभ आत्म साची जोत जगाए। देवे दरस प्रभ अमोघ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस जन दया कमाए। प्रभ साचे की साची सरना। प्रभ अबिनाशी कलि विरले गुरमुख वरना। चरन लाग प्रभ साचे साध संगत कलि तरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस धरनी धरना। देवे दरस गुर गोपाला। भगत जनां प्रभ सदा रखवाला। आदि जुगादि सदा प्रितपाला। सोहँ नाम आत्म देवे साची माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई आप रखवाला। सोहँ नाम प्रभ दवाए। सच वस्त प्रभ झोली पाए। रसना जप जप जप जीव आत्म रस उपजाए। साचा नाम आत्म रस पीव, आत्म तृखा मिटाए। आत्म बुझी जगाए दीव, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। जोत सरूपी दरस दिखा के। गुरमुख साचे मेल मिला के। कलि मार्ग प्रभ साचे जाए ला के। सोहँ साचा नाम निधान, प्रभ रसना जाए जपा के। साचा मेल भगत भगवान, जोत सरूपी जाए करा के। एका बख्शे चरन धूढ़, गुर जाए चरन लगा के। सोहँ देवे वड दानी दान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी भेख दिखा के। जोत सरूपी धरया भेख। कलिजुग जीव रहे वेखा वेख। अन्त मिटाए प्रभ काया झूठी रेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए साचे लेख। साचा प्रभ लेख लिखा के। जोत सरूपी भेख वटा के। थिर घर वासी विच मात दे आ के। आकाश पाताल तजाए विच वरभंड आप समा के।

सर्ब खण्ड प्रभ जोत जगा के। बेमुख जीवां अन्ध करा के। सोहँ शब्द प्रभ डन्न लगा के। गुरमुख साचे प्रगट जोत प्रभ टुट्टी गंढु आ के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़यां कलि मेल मिला के। विछड़यां कलि मेल मिलाया। साचे मार्ग गुरसिख लाया। सोहँ साचा नाम जपाया। आत्म साची जोत जगाया। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाया। एका दीपक देह धराया। अनहद साचा राग उपजाया। शब्द धुन प्रभ वजाया। आत्म सुन्न खोल्ह वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत जोत सरूपी दरस दिखाया। दरस दिखाए प्रभ गुरसिख पूरे। आत्म उतारे सगल वसूरे। एका शब्द अनहद तूरे। साचा नाम सदा सरूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आसा पूरे। पूरन आस प्रभ कराई। जो जन चल आए सरनाई। आत्म चिन्त प्रभ मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख दए लिखाई। लिक्खया लेख ना मेटे कोए। प्रभ साचे दी साची सोए। वेख वखाणे करे सो होए। कलिजुग जीव ना जाणे कोए। जोत सरूप पसर पसार प्रभ तीन लोए। पाताल मात अकाश प्रभ साचे दी साची सोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट होए। जोत सरूपी प्रभ प्रकाशे। जगत अन्धेर सर्ब विनासे। एका जोत जगे अबिनासे। चार वरन होयण प्रभ चरन दासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे चरन भरवासे। साचा प्रभ धीर धराए। चार वरन आए प्रभ सरनाए। एका नाम रसन जपाए। सोहँ जै जै जैकार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम मुक्ख रखाए। एका शब्द जगत चलावणा। सोहँ सति सति सति वरतावणा। सतिजुग साचा प्रभ वसावणा। कलिजुग अन्ध अन्धेर सर्ब मिटावणा। बेमुख जीवां प्रभ खपावणा। गुरमुख साचे प्रभ सच उपजावणा। पहली माघ लिख्या लेख, प्रभ साचे सति वरतावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेद सर्ब खुल्हावणा। आपणा भेद आप खुल्हाए। मस्तूआणे प्रभ चरन टिकाए। साचा प्रभ शब्द लिखाए। सुरत शब्द दा मेल कराए। हँकारीआं प्रभ हँकार गंवाए। आत्म साची जोत जगाए। राणा संगरूर प्रभ पकड़ उठाए। आप आपणी शरनी लाए। पिछली भुल लए बख्शाए। प्रभ साचा सच मार्ग लाए। सोहँ साचा नाम दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हाए। राणा संगरूर प्रभ चरन लगा। आपणा भेद दए खुल्हा। सोहँ शब्द डंक वजा। राउ रंक दए उठा। चार वरन प्रभ दए सुणा। भुल्ले डुल्ले प्रभ चरनी डिग्गण आ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त पकड़े बांह। राणा संगरूर प्रभ सरन लगाए। मस्तूआणे माण दवाए। सतिजुग साचा धाम उपजाए। सोहँ साचा नाम चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हाए। साचा प्रभ भरम चुकाए। जोत सरूपी भेद खुल्हाए। राणा संगरूर सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। राणा संगरूर प्रभ चरनी आया। चरन धूढ़ लै मस्तक

६८४
०१

लाया। प्रभ अबिनाशी नज़री आया। रंकां विच प्रभ रंक समाया। एका अंक एका डंक प्रभ दे वजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हाया। राणा संगरूर प्रभ सेव कमाए। साचा दर साचा घर प्रभ अबिनाशी पाए। साचा प्रभ होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेवा लाए। साचा प्रभ कर्म कमावणा। राणा संगरूर अग्गे लावणा। जमन किनारे प्रभ चरन टिकावणा। वाली दो जहान साचा धाम उपजावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द सरन लगावणा। जमन किनारे प्रभ चरन टिकाए। सोहँ साची धुन उपजाए। सन्त जनां प्रभ होए सहाए। सुन्न समाधीआं दे खुल्हाए। एका जोत करे रुशनाए। जगन्नाथ गोपाल एका धुन उपजाए। भगत जनां प्रभ सगला साथी, आप आपणा दे बुझाए। सोहँ शब्द दिसावे प्रभ साचा राह, भगत जनां प्रभ लए चलाए। प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, वाली हिन्द प्रभ सरनी आए। प्रभ साचे दी साची गाथ, जीव जन्त कोई भेद ना पाए। साचा तिलक लगाए माथ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हाए। सच धाम प्रभ चरन टिका के। भारत मात भाग जगा के। वाली हिन्द सरन लगा के। साचा दर साचा दरबार प्रभ एका एक दिसा के। एका जोत एकँकार एका शब्द एका अधार चार वरन प्रभ रखा के। साचा प्रभ सच वरतार, प्रभ साचा हुक्म जाए लिखा के। वरते वरतावे विच संसार, निहकलंक एह कर्म कमा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत आप बणा के। साचा वक्त प्रभ सुहावणा। सच दरबार निहकलंक लगावणा। साचा मार्ग विच संसार प्रभ साचे सच चलावणा। एका शब्द अधार प्रभ चार वरन रखावणा। एका शब्द धुन धुन्कार, प्रभ एका धुन उपजावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हावणा। साचा प्रभ सचा दरबारा। साचा प्रभ सचा पसारा। साचा प्रभ सदा निराहारा। सचा प्रभ जोत सरूप गिरधारा। सचा प्रभ सच सच वरते वरतावे विच संसारा। सचा प्रभ सतिजुग साचे सोहँ देवे नाम अधारा। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां खोल्हे दस्म दुआरा। द्वार दस्म प्रभ खुल्हाए। आत्म साची जोत जगाए। गुरमुख साचे मेल मिलाए। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सद समाए। साध संगत प्रभ सदा समाया । साचे प्रभ थान सुहाया। प्रगट जोत दरस दखाया। गुरमुख साचे माण दवाया। रसना साचा नाम जपाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दया कमाया। साध संगत तेरी वड्याई। प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। हरि हरि हरि जप दरगाह साची मिले वड्याई। प्रभ साचा तेरा होए सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर हत्थ टिकाई। साध संगत प्रभ माण दवाए। वेले अन्त होए सहाए। कलिजुग ना लग्गे तत्ती वाए। सोहँ शब्द जन रसना गाए। ओंकार प्रगट जोत दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

साध संगत सिर हत्थ टिकाए। साध संगत प्रभ देवे धीर। विच्चों कढ्ढे हउमे पीर। सोहँ शब्द आत्म शांत करे सरीर। अमृत आत्म चले विच भिन्ना नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म देवे जिउँ बालक माता सीर। प्रभ साचे सच अमृत दिया। गुरमुख साचे प्रभ दर पिया। निर्मल किया कलिजुग जिया। प्रभ मिलण का साचा हीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चरन लाग जीव, प्रभ अबिनाशी तेरा आत्म जोत जगाए दिया। आत्म जोत प्रभ जगाए। सोहँ साची बत्ती लाए। सच सच सच विच देह वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दी पैज रखाए। साध संगत तेरा साचा माण। प्रभ अबिनाशी साचा जाण। वेले अन्त प्रभ बिठाए विच बबाण। गुरमुख साचे अन्तकाल विच साची जोत मिल जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुणी निधान। गुणवन्त प्रभ गुण निधाना। पूरन देवे ब्रह्म ज्ञाना। जो जन करे चरन ध्याना। प्रभ अबिनाशी साचा माना। रसना जप जप जप जीव आत्म उपजे सुख महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग पहरया जोत सरूपी बाणा। जोत सरूपी प्रभ बाणा धारया। प्रभ साचे का भेद न्यारया। सृष्ट सबाई प्रभ भुला रिहा। गुर साचे प्रभ बाहों पकड़ चरन लगा ल्या। प्रगट जोत विच मात, साचा दरस दिखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस करा रिहा। साचा प्रभ दरस दिखाए। सर्ब जनां दी आस पुजाए। जो जन आए प्रभ सरनाए। निज घर वासी प्रगट जोत दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी पैज रखाए। साध संगत तेरी पूरन आसा। प्रभ पूरन पूरन किया भरवासा। हउमे दुखड़ा सारा नासा। गुरचरन प्रीती कलिजुग तेरी साची रहिरासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा दासन दासा। साध संगत प्रभ रसना गाया। प्रगट जोत निहकलंक कलि दरस दिखाया। भगत उधारे जिउँ राजा जनक, प्रभ साचा साचा माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर हत्थ टिकाया। साध संगत कलि साची सीख्या। प्रभ अबिनाशी पावे साची भीख्या। मिट ना जाए लिक्खया लेख गुरमुख साचे प्रभ लीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले कलिजुग दीखिआ। गुरमुख वेखे प्रभ वखाए। तीजा नैण प्रभ आप खुल्हाए। आप आपणी जोत प्रगटाए। स्वच्छ सरूप प्रभ नज़री आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दे विच समाए। जीव जन्त प्रभ विच समाया। बेमुख जीवां दिस ना आया। साचा प्रभ ना रसना गाया। रसना विकार मदिरा मास रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां झूठे धन्दे लाया। कलिजुग जीव होए कुड़िआर। साचा प्रभ ना पायन सार। अन्तकाल कलि डुब्बे विच मँझधार। मानस जन्म कलिजुग गए हार। धर्म राए अन्त करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द मारे मार। भगत जनां प्रभ माण दवाए। आप आपणा नाम जपाए। सच सुच विच देह वरताए। आत्म

६८६
०१

विकार सर्ब मिटाए। एका आकार जोत कराए। शब्द अधार गुरसिख रखाए। विच संसार डुल ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां दी लाज रखाए। भगत जनां प्रभ होए सहाया। रक्खे लाज आप रघुराया। साचे मार्ग गुरसिख साचा प्रभ लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुरमुख साचा आण तराया। चरन लाग गुरसिख तरया। सोए भाग गए जाग, प्रभ दर्शन करया। आत्म उपजे साचा राग, अनहद शब्द साचा वरया। साचा शब्द लिखाया पहली माघ, महाराज शेर सिँघ गुरमुख हत्थ तेरे सिर धरया। गुरसिख तेरा भउ चुकाया। साचा शब्द प्रभ सुणाया। एका ओट निहकलंक सरनाया। उतरे पाप कोटन कोट, प्रभ साचे तेरा दर्शन पाया। आत्म लगाई सोहँ चोट, बजर कपाट खोल्ह् वखाया। प्रभ अबिनाशी भरे भण्डार ना आवे तोट, साध संगत सोहँ दान प्रभ वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाया। साचा प्रभ भरे भण्डारे। सोहँ शब्द प्रभ वरतारे। चार वरन देवे एका नाम अधारे। सति सति सति कर वरते विच संसारे। सो जन उधरे पार, सोहँ शब्द रसन उचारे। प्रभ दुत्तर जाए तार, जो जन आए चरन दवारे। मानस जन्म गए संवार, निहकलंक चरन निमस्कारे। अन्तकाल कलिजुग ना आए हार, रक्खे लाज आप मुरारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारे। जो जन आए प्रभ चरन द्वारया। मानस जन्म कलि संवारया। आत्म दु:ख प्रभ निवारया। सांतक सुख प्रभ वरता रिहा। रोग भुक्ख प्रभ गंवा रिहा। मात कुक्ख प्रभ सुफल करा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन आए जिस सीस निवा ल्या। जन आए चरन निमस्कारे। कर किरपा प्रभ पार उतारे। भगत वछल आप गिरधारे। रक्खे पति आप मुरारे। देवे वड्याई विच संसारे। जोत सरूपी जोत प्रभ निराहारे। अगाध बोध बोध अगाध प्रभ शब्द लिखारे। वड सूरन वड जोधन जोध निहकलंक नरायण नर अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन करे सिक्दारे। चार वरन प्रभ सिक्दारे। सृष्ट सबाई प्रभ चरन पनिहारे। साचा प्रभ साचा दर निहकलंक अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुच करे वरतारे। नरायण नर नर नरायण। गुरमुख साचे साचा नाम रसना गायण। प्रभ अबिनाशी देवे दरस दिवस रैण। धन्न धन्न धन्न गुरसिख प्रभ दर्शन पेखे नैण। उज्जल होए मुख सोहँ शब्द जो रसना लैण। सुफल कराई मात कुक्ख, जो प्रभ चरनी बहिण। आत्म उतरे सारी भुख, जन्म जन्म दा लहणा लैण। उलटा मात कुक्ख विच रुक्ख, जगत जीव वहे झूठे वहिण। उज्जल कीने कलिजुग मुख, प्रभ सरनी जो जन पैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखावे तीजे नैण। बेमुखां प्रभ दर ना सूझे। कलिजुग जीव दर दर लूझे। गुरमुख साचा प्रभ अबिनाशी बूझे। देवे दरस प्रभ आत्म भेव खुल्हाए गूझे। मिटाए हरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भउ चुकावे एका दूजे। दे

दरस प्रभ भउ चुकाया। साचे मार्ग गुरसिख लाया। सोहँ नाम रिदे वसाया। आप आपणे विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाया। प्रभ अबिनाशी मेल मिला। गुरमुख साचे साध संगत लए रला। अमृत आत्म बाण प्रभ सोहँ दए चला। सोहँ साचा नाम, गुरमुख हिरदे प्रभ साचा दए वसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थाईं होए सहा। साचा प्रभ वड धीरन धीरा। साचा प्रभ वड पीरन पीरा। साचा प्रभ गुरमुख साचे तेरी अन्तकाल कट्टे भीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा शांत करे सरीरा। गुरमुख साचा करे अरदास। प्रभ अबिनाशी बख्शे चरन निवास। प्रभ साचा सद रक्खे वास। रसना जप जीव स्वास स्वास। सोहँ साची जीव तेरी रहिरास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त तेरी करे बन्द खलास। साचा प्रभ सुण पुकारे। गुरमुख साचे प्रभ खड़ा दवारे। दोए जोड़ गुरसिख करे निमस्कारे। प्रभ अबिनाशी सद तारनहारे। निहकलंक नरायण नर अवतारे। चरन आए प्रभ पार उतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पतित पापी सर्ब उधारे। प्रभ साचा सद सच समावे। भुलयां जीवां मार्ग पावे। सारंगधर भगवान बीठला, आप आपणी बणत बणावे। गुरमुख आत्म रंग चढ़ावे मजीठला, चरन धूढ़ जो जन नहावे। निहकलंक अवतार नर जग बीठला, बेमुख जीवां भरम भुलावे। कलिजुग जीव होए जिउँ कौड़ा रीठला, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कमावे। गुरमुख आए प्रभ हज़ूर। प्रभ अबिनाशी सरधा पूर। सोहँ शब्द उपजावे साची तूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी देवे नूर। पूरन आस प्रभ कराए। जो जन चल आए सरनाए। चरन धूढ़ मस्तक लाए। साची जोत प्रभ विच ललाट जगाए। घनकपुर वासी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। सरन आए जन होए निमाणा। साची दरगाह मिले टिकाणा। मिले प्रभ अबिनाशी गुण निधाना। गुर गुर गुरसिख अन्त एका जोत समाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जोत मेल मिलाणा। गुरसिख तेरा आत्म ध्यान। प्रभ अबिनाशी जाणी जाण। सर्ब गुण देवे नाम गुणी निधान। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। निजानंद सुख मिले महान। किरपा करे आप भगवान। आत्म जोती जोत जगाण। मिटाए अन्धेर मिटे अज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा देवे दानी दान। प्रभ साचा सिख धीर धराए। आत्म साचा ब्रह्म ज्ञान दवाए। भुल भुल जीव भुल ना जाए। रुल रुल जीव कलिजुग रुल ना जाए। डुल डुल जीव डुल ना जाए। वेला अन्त कलि ना बेमुख होए। गुरमुख तुल अवर ना कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम वाली जहानां दोए। सोहँ शब्द गुरसिख कमावणा। रसना जप जप निजानंद उपजावणा। प्रभ अबिनाशी सद रिदे वसावणा। आत्म साचा दीप विच झूठी देह जगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखावणा।

सोहँ शब्द साचा ज्ञाना। ओंकार देवे विष्नूं भगवाना। आत्म जोत जगे महाना। मिलाए मेल प्रभ बिधनाना। गुरमुख साचा सद रसना गाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। गुरमुख तेरी साची मति। प्रभ अबिनाशी रक्खे पति। आत्म देवे सोहँ यति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी देवे साचा सति। सति सति सति पुरख माण। गुरमुख साचे चतुर सुजान। प्रभ अबिनाशी रसना गाण। रसना जप जप आत्म रस पाण। आत्म रस रस निज मांहि उपजाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाण। साचा प्रभ जोत जगईआ। साचा प्रभ भेख वटईआ। साचा प्रभ सोहँ चलाए साची नईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे शब्द सुणईआ। गुरमुख मंगे साची मंग। प्रभ आत्म चाढ़े साचा रंग। मानस जन्म ना होए भंग। भवजल पार जाए लँघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंग संग। साचा प्रभ सदा संग साथ। जोत सरूप त्रैलोकी नाथ। प्रभ साचे दी साची गाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख रक्खे सिर दे कर हाथ। साचा रंग प्रभ चढ़ाए। गुरसिख साचा दर मंगण आए। नाम भिक्ख प्रभ साचा पाए। साचे लेख लिख, दरगाह साची माण दवाए। साची सिख्खया गुरमुख गुरसिख, मदिरा मास ना रसन लगाए। उत्तम होए विच मुन रिख, प्रभ साचा माण दवाए। आत्म उतरे सारी भुख, सोहँ शब्द जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे सिर हत्थ टिकाए। साचा प्रभ लाजावन्त। रक्खे लाज प्रभ आप भगवन्त। गुरमुख साचे प्रभ साचा तेरा कन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस बणाई तेरी बणत। जीव जन्त प्रभ बणाए। आप आपणी जोत टिकाए। जोत सरूप प्रभ विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां दिस ना आए। जोत सरूप प्रभ हिरदे वस्सया। गुरमुख साचे प्रभ आपणा भेद सच दस्सया। रसना जप जीव हरि हरि हरि हिरदे वस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे जोत प्रकाश जिउँ रवि सस्सया। आत्म जोत होए प्रकाश। गुरमुख अन्धेर जाए विनास। धरे जोत प्रभ अबिनाश। सोहँ शब्द जप जीव रसन स्वास स्वास। साचा प्रभ तेरे हिरदे रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी करे बन्द खलास। साचा प्रभ बन्दी तोड़। गुरसिख साचे गुरचरन प्रीती जोड़। वेला अन्त अन्तकाल कलिजुग मुख ना जायण मोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ साचे दी साची लोड़। साचा प्रभ आदिन अन्ता। साचा प्रभ पूरन भगवन्ता। साचा प्रभ माण दवाए विच साधन सन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए रखाए विच सर्ब जीव जन्ता। गुरमुख मंगे प्रभ चरन द्वार। प्रभ साचा आत्म भरे भण्डार। साचा शब्द जुगो जुग प्रभ जगत वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाए तार। तारनहार सदा समरथ। प्रभ की महिंमा बड़ी अकत्थ। गुरमुख चढ़ाए प्रभ सोहँ साचे रथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

६८६ ०१

झोली पाई साची वथ। साची दात प्रभ दर पाओ। आप आपणा माण गवाओ। साचा प्रभ सद रसना गाओ। कोट अपराध सर्ब मिटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वर घर दर साचा पाओ। साचा प्रभ सच घर पाओ। आत्म सहसा सर्ब गंवाओ। एका ओट निहकलंक चरन रखाओ। मदिरा मास रसन तजाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रिदे वसाओ । प्रभ साचे का साचा वेस। प्रभ साचे को सदा आदेस। साचे दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेष। सुरप्त राजा इन्द वड देवी मृगेश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी किया वेस। साचा प्रभ मात विच आए। तीन लोक जै जै जैकार कराए। करोड़ तेतीस प्रभ चरन बहाए। गण गंधर्ब फूलन बरखा लाए। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड जै जै जैकार कराए। मात पाताल आकाश साची जोत होए रुशनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साची जोत जगाए। गुरमुख साचे प्रभ बणत बणा। साचा नाम प्रभ रिदे दए वसा। साचे धाम प्रगट जोत प्रभ दरस देवे दिखा। साचा राम निहकलंक कलि आया नाम रखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ थाँई होए सहा। आत्म बख्शे प्रभ चरन प्रीती। आत्म तेरी सदा अतीती। जीवन जुगती साची मुक्ती, प्रभ साचे दी साची रीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी काया सीतल कीती। साचा प्रभ सांतक रूप। प्रभ अबिनाशी साचा भूप। दिस ना आए जोत सरूप। ना दिसे रंग रूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए विच देह अन्ध कूप। गुरमुख तेरा अन्धेर मिटाया। जोत सरूपी साचा दीपक प्रभ साची जोत जगाया। सदा सदा सदा गुरमुख समीप्त, प्रभ अबिनाशी विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरा होए सहाया। गुरमुख तेरी पूरन घाल। गुरमुख देवे सोहँ शब्द सचा धन माल। आत्म तोड़े जगत जंजाल। रसन जप जप जीव आत्म होए लाल गुलाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दीपक देवे बाल। साचा दीपक दे प्रकाशे। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनासे। साचा नाम चले स्वासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी करे बन्द खलासे। गुरमुख अमृत प्रभ चुआए मुख। प्रभ अबिनाशी आत्म तृष्ना मिटाए भुक्ख। प्रभ आत्म अमृत सिंचाए सुक्का हरा कराए देही रुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए मात कुक्ख। साचा प्रभ अमृत बरखाए। गुरमुख साचे प्रभ मुख चुआए। सच सुच दी जोत जगाए। आप आपणा बिरद रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों पकड़ गुरसिख तराए। गुरमुख साचा चरन लगाया। प्रभ साचे दी सच सरनाया। साचा प्रभ सर्ब सुखदाया । सोहँ चलाए साची नाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त होए सहाया। वेले अन्त होए सहाई। भगत वछल आप रघुराई। देवे दरस जोत सरूप जोत प्रगटाई। गुरमुख साचा जम डण्ड ना खाई। विच बबाण प्रभ धाम बैकुण्ठ पुजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे

विच साची जोत मिलाई। मिले जोत जोत मिल जाए। गुरमुख साचा घर साचा पाए। बैकुण्ठ निवास प्रभ आप रखाए। दर दरबान प्रभ चरन बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सचखण्ड निवास रखाए।

✻ २२ माघ २००८ बिक्रमी ज्ञानी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ✻

साचा प्रभ तारनहार। जुगो जुग मातलोक लए अवतार। कलंकनिह नरायण नर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सार। सर्ब जनां प्रभ जानणहार। जोत सरूप वसे विच निराहार। गुरमुख साचे प्रभ साची जोत करे आकार। कलिजुग प्रगटाए जोत सुहाए थान बंक निहकलंक नर अवतार। निहकलंक अवतार नर। चरन लाग गुरसिख जाए तर। एका दिसाए प्रभ ऊँचा साचा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अवतार नर। साचा प्रभ जोत अधारे। साचा प्रभ एका एको जोत आकारे। साचा प्रभ जुगो जुग मातलोक लए अवतारे। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुष्टां आण सँघारे। साचा प्रभ सर्ब का ज्ञाता। साचा प्रभ गुरमुख विरले कल पछाता। साचा प्रभ आप दिसावे साचा नाता। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ देवे साची दाता। साचा प्रभ आप करतार। साचा प्रभ वड दातार। साचा प्रभ सद निराहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत तारनहार। साचा प्रभ आपणा भेद गुरसिख साचे दस्से। साचा प्रभ करे जोत प्रकाश गुरसिख कोट रवि सस्से। साचा प्रभ जोत सरूप विच लोकमात वसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द खण्डा दो धार बेमुख जायण दर तों नस्से। मातलोक प्रभ जोत आकारे। सोहँ शब्द चले खण्डा दो धारे। निहकलंक नरायण नर साची जोत आकारे। आप अडोल बैठा प्रभ गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सारे। आप अडोल प्रभ अडोला। प्रभ अबिनाशी ना किसे ने तोला। आपणा भेत जोत सरूपी प्रगट जोत कलि खोल्ला। गुरसिख आत्म प्रभ सदा धरवास, बेमुखां प्रभ सद रक्खे रौला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेत आप प्रभ खोल्ला। सोहँ शब्द जगत वरतंत। देवे दात प्रभ भगवन्त। सर्ब जनां दा साचा कन्त। बेमुख जीवां प्रभ पाई माया बेअन्त। गुरमुख साचे प्रभ उपजाए विच साधन सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई विच सर्ब जीव जन्त। गुरमुख तेरा माण रखाया। जोत सरूपी मेल मिलाया। आत्म साची धुन उपजाया। सुन्न समाध प्रभ खोल्ल वखाया। मानस जन्म प्रभ लेखे लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दर घर आए लेखे लाया। मानस जन्म ल्या कलि सुधार। पारब्रह्म मिल्या जोत सरूप नैण मुँधार। दे दरस खोल्ल देवे प्रभ दस्म दुआर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला करे विचार। सो बूझे

जिस आप बुझाए। बेमुख जीव सार ना पाए। आवे जावे जीव जग जिउँ सुंञें घर काए। गुरमुख साचा महाराज शेर सिँघ चरन लाग जन्म जन्म दी मैल गंवाए। मानस जन्म सुफल कराया। प्रभ अबिनाशी घर में आया। आत्म संसा सारा लाहया। आत्म साची प्रभ जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए दरस दिखाया। दर घर घर दर। प्रभ साचा देवे साचा वर। गुरमुख चरन लाग कलि जाए तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत झिरना झिराए साचा सर। गुरमुख कलिजुग वडभागा। बेमुख सोया गुरमुख जागा। प्रभ चरन जन आए लागा। आत्म धोए मिटाए दाग़ा। उपजाए सोहँ साचा रागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए सरनी लागा। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। सोहँ जप जीव प्रभ साची जोत प्रगटाए। बजर कपाट प्रभ खोल्ह वखाए। आप आपणा भेद खुल्हाए। निज घर वासी प्रगट जोत होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा होए सहाए। भगत जनां प्रभ सरधा पूर। सोहँ देवे नाम सरूर। साचा प्रभ सर्ब गुण गुण गुणा भरपूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आसा पूर। सर्ब जनां दा आपे दाता। भगत जनां का आपे ज्ञाता। चरन प्रीती देवे साचा नाता। गुरमुख कराए उत्तम जाति, बणे आप पित माता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साची दाता। आत्म जोत प्रभ जगाई। सोहँ मिले सची वड्याई। साच वस्त प्रभ दर ते पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाई। आत्म उतरे सगल वसूरा। साचा शब्द उपजाए साची तूरा। कलिजुग प्रगटाए जोत साचा नूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सतिगुर पूरा। गुरसिख बेड़ा पार कराया। जन्म मरन दा गेड़ चुकाया। विच चुरासी फेर ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग साचा कर्म कमाया। गुरमुख तेरा बेड़ा बन्न्ह। साचा शब्द प्रभ सुणाया कन्न। सोहँ साचा देवे दान, आदि जुगादि ना लग्गे सन्न्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आत्म निकाले झूठा जन। जन भगतां साची जोत करे आकारे। एका बख्शे मातलोक वड्डी सिक्दारे। जन भगतां प्रभ जाए पैज संवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त एका एकँकारे। एका आप एकँकारा। सोहँ साचा नाम प्रभ साचा देवे अधारा। थिर घर वासी दर घर आए, जन भगतां प्रभ तारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँकारा। गुरमुख साचे प्रभ साचा सज्जण। प्रभ दरस जग साचा मंजन। चरन धूढ़ प्रभ देवे साचा अञ्जन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख प्रगटाए जिउँ प्रभास चन्दन। दरगाह साची दर माण दवाया। जोत सरूपी मेल मिलाया। आत्म साचा दीप जगाया। प्रगट जोत निहकलंक गुरसिख सिर तेरे हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाया। एका जोत प्रभ मात करे वरतारे। चरन कँवल चल आयण प्रभ चरन दुआरे। सोहँ शब्द चार

६९२
०१

कुन्ट निहकलंक कराए जै जै जैकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जामा मातलोक विच धारे। जोत सरूप प्रभ जामा पाया। आप आपणा भेद छुपाया। बेमुख जीवां प्रभ झूठे धन्दे लाया। प्रभ अमृत आत्म सिंच सोहँ साचा जाम पिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा साचे मार्ग लाया। गुरमुख साचे मार्ग लाए। आप आपणा भेद खुल्हाए। एका दात सोहँ प्रभ झोली पाए। रसना जप जप जीव आत्म रस पाए। आत्म प्रभ जगाए साची दीव, मातलोक बुझ ना जाए। सतिजुग रखाए साची नीव, मातलोक प्रभ जामा पाए। महाराज शेर सिँघ नाउँ धराए। सतिजुग तेरा जन्म दवाया। साचा पित आप अखवाया। धरत माता दी गोद सवाया। निहकलंक नरायण नर, उप्पर सीस हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरा जन्म दवाया। सतिजुग प्रभ जन्म दवा। मातलोक जाए टिका। चार वरन इक्क करा। राजा राणा तख्तों लाह। सृष्ट सबाई चरन लगा। एका दिसाए साचा राह। सच सुच जाए वरता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक आए जामा पा। सतिजुग तेरा माण रखाया। निहकलंक सिर हत्थ टिकाया। सोहँ साचा जाप विच जगत चलाया। खाणी बाणी गगन पाताली, एका जोत प्रभ रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग झूठा भेख मिटाया। सतिजुग तेरा सांतक रूप। देवे दात प्रभ अबिनाशी साचा भूप। होए प्रकाश जोत सरूप विच मात अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल रचाई जोत सरूप। भगत जनां प्रभ कर्म विचारे। आत्म साची जोत करे आकारे। आत्म तोड़े सर्ब हँकारे। सोहँ साचा बाण प्रभ मारे। गुरमुख विरले चल आयण प्रभ चरन दवारे। रसना जप जप जीव, आत्म होए नाम अधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत करे आकारे। रसना जप आत्म रस पाओ। आत्म तृखा सर्ब मिटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप जप मानस जन्म सुफल कराओ। रसना जप आत्म रस माण। प्रभ अबिनाशी गुणी निधान। गुरमुख साचे प्रभ सच पछाण। कलिजुग जीव भुल्ले अञ्याण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड बली बलवान। जोत सरूप जोत अधारा। जोत सरूप पसरे जगत पसारा। जोत सरूप बैठा अडोल आप निराहारा। जोत सरूप सर्ब जीआं दी पावे सारा। जोत सरूप गुरमुखां दिखाए साचा सचखण्ड दुआरा। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतारा। जोत सरूप सर्ब दी जाणे। जोत सरूप गुरमुख पछाणे। जोत सरूप गुरमुख चलाए आपणे भाणे। जोत सरूप माण गंवाए, तख्तों लाहे राजे राणे। जोत सरूप प्रगट जोत, गुरमुखां दरस दिखाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। जोत सरूप भगत भण्डारे। जोत सरूप सोहँ देवे साचा नाम अधारे। जोत सरूप जोत निरँजण, निहकलंक नरायण नर अवतारे। जोत सरूप आत्म साची जोत करे आकारे। जोत सरूप महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई करे ख्वारे। जोत सरूप भगत दयाला। जोत सरूप गुरसिख रखवाला। जोत सरूप प्रभ दीन दयाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म साचा दीपक बाला। जोत सरूप आत्म अधारे। जोत सरूप सदा निराहारे। जोत सरूप गुरमुख तेरी आत्म जोत करे आकारे। जोत सरूप प्रभ समरथ पुरख अगम्म अपारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भगत जनां दी पैज संवारे। भगत जनां प्रभ आपे जाणे। आप आपणा बिरद पछाणे। गुरमुख साचे प्रभ साचे कल साचे माणे। देवे वड्याई प्रभ अबिनाशी गुणी निधाने। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दी आपे जाणे। प्रभ का किया जीव क्या जाणे। आप आपणा नाम पछाणे। रूप रंग ना कोई जाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव सर्ब भुलाणे। कलिजुग जीव सर्ब भुलाए। झूठे मार्ग सर्ब लगाए। गुरमुख साचे प्रभ साचा मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। जोत सरूपी दरस दिखा। आत्म तृखा प्रभ दए मिटा। अज्ञान अन्धेर दए गवा। आत्म साची जोत प्रभ जाए जगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम साची दात प्रभ देवे झोली पा। सोहँ दान गुर दर पाया। रसना जप जप आत्म तृखा मिटाया। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाया। आवण जावण गेड़ चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुन्न समाध खोल्ह वखाया। गुरमुख तेरी खुल्हे सुन्न। आत्म रहे सदा रुण झुण। साचा शब्द सदा कन्न सुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे जाणे कवण गुण। कलिजुग जीव गुण क्या जाणे। सो जाणे जिस प्रभ आप वखाणे। कलिजुग जीव भुल्ले अञ्याणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मार्ग लाणे। साचा मार्ग प्रभ लगाया। चार वरन प्रभ सरन रखाया। राउ रंक इक्क कराया। ऊँच नीच दा भेत मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द चलाया। राउ रंक इक्क करा के। सोहँ साचा नाम जपा के। निहकलंक महाराज शेर सिँघ नाउँ धरा के। कुन्ट चार जै जै जैकार करा के। चार कुन्ट होए जै जै जैकार। साची जोत प्रभ करे आकार। गुरमुख साचे प्रभ आत्म जगाए देवे चमत्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे एका नाम अधार । चार वरन एका अधार। एका दिसे दर दरबार। निहकलंक नरायण नर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप एका एकँकार। चार वरन एका दरबारा। झूठा सर्ब पसर पसारा। एका वरन प्रभ चलाए सर्ब संसारा। एका सरन निहकलंक तेरे चरन दवारा। तारन तरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सारा। चार वरन इक्क करा। ऊँच नीच दा भेख मिटा। राउ रंक इक्क करा। राजा राणा तख्तों लाह। सोहँ साचा शब्द चला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे नाद धुंन दए उपजा। सोहँ साचा शब्द धुन आत्म नाद दए वजा। सोहँ साचा शब्द प्रभ गुरसिख साचे कन्न दए सुणा।

६८४
०१

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी वेला अन्त दए जणा। शब्द रूप प्रभ शब्द जणाए। शब्द सुरत दा मेल मिलाए। गुरमुख साचे टुम्ब उठाए। आत्म जगाए जोत मात बुझ ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाए। गुरमुख साचे मेल मिलाया। आप आपणा भेद चुकाया। वेला अन्त ना किसे जणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा भेद खुल्हाया। गुरमुखां प्रभ भेद खुल्हावणा। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटावणा। आत्म साचा दीप जगावणा। सोहँ साचा जाम प्रभ रसन पिआवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा साचे मार्ग लावणा। भगत जनां प्रभ सुणे पुकार। मातलोक आए जामा धार। एका आत्म देवे शब्द अधार। सोहँ शब्द सची गुंजार। आत्म अमृत बरखे प्रभ साचा किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सार। जामा धारे प्रभ उप्पर धवल। सृष्ट सबाई रिहा मवल। झिरना झिराए खुल्हाए मुख कँवल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख वटाए कृष्ना संवल। जोत सरूपी भेख वटईआ। कलिजुग डुबाए झूठी नईआ। जूठ झूठ प्रभ भेख मिटईआ। सतिजुग साचा सच वरतईआ। एका नाम चार वरन दवईआ। राउ रंक प्रभ इक्क करईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेद आप खुल्हईआ। आपणा भेद आप खुल्हाए। भुल्ले रुल्ले प्रभ सरन लगाए। जोत सरूप प्रगट जोत, प्रभ साचा दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान , आपणा भाणा कलि वरताए। जोत सरूपी साचा भेखा। प्रभ अबिनाशी सदा अलेखा। कलिजुग मिटाए झूठी रेखा। कलिजुग जीव रहे देखी देखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे नेत्र पेखा। नेत्र पेख गुरसिख तरया। प्रभ साचा वेख तन मन हरया। लिक्खया लेख प्रभ साचे जो जन सरन ठरया। जोत सरूपी किया भेख, गुरमुख विरले कलिजुग वरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग गुरसिख साचा तरया। चरन लाग मिली वड्याई। प्रभ साचे सच पैज रखाई। वेले अन्त होए सहाई। देवे सुख सर्ब सुखदाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी बणत बणाई। गुरमुख साचा पार उतार। साचा शब्द प्रभ दए अधार। आत्म जोत करे उज्जयार। निज घर वसे प्रभ करतार। आत्म उपजाए साची धुंनकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका बख्शे चरन प्यार। गुरचरन प्रीती दरस अमोघ। गुरमुख साचे रस साचा भोग। प्रभ गंवाए आत्म संसा रोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे साचा जोग। साचा जोग चरन ध्यान। आत्म जोत जगे महान। किरपा करे आप भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा देवे दान। साचा जोग जन कमाए। सोहँ नाम रसना गाए। आत्म तृखा सर्ब मिटाए। प्रभ अबिनाशी कलि में पाए। निज घर वासी प्रभ नज़री आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए। साचा जोग जगत कमाया। प्रभ अबिनाशी रसना

गाया। मानस जन्म जीव सुफल कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मार्ग लाया। साचा जोग गुर की सेव। सोहँ देवे प्रभ साचा मेव। मिले वड्याई विच देवी देव। प्रभ अबिनाशी अलख अभेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिरथा ना जाए कलिजुग तेरी सेव। साचा जोग प्रभ रसना गाया। साचा भोग प्रभ नाम ध्याया । मिटया रोग प्रभ दर्शन पाया। चुकाया सोग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सिर तेरे हत्थ टिकाया। गुरसंगत गुर दर पाया। गुरसंगत प्रभ दर साचे माण रखाया। गुरसंगत दर दरबार, प्रभ साचे निवास रखाया। गुरसंगत सति तेरा नाम, करोड़ तेतीस रसना गाया। गुरसंगत कल तेरा माण, खण्ड ब्रह्मण्ड विच वरभंड प्रभ वड्आया। गुरसंगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवास रखाया। गुरसंगत मिले वड्याई। गुरसंगत प्रभ अबिनाशी सेव कमाई । गुरसंगत रसना जप जप जप आत्म तृखा मिटाई। गुरसंगत मिल गुरमुख मिल प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। गुरसंगत प्रभ आत्म चाढ़े साचा रंग, सोहँ दात प्रभ झोली पाई। गुरसंगत गुर दर मंग, साची भिच्छया प्रभ नाम पाई। गुरसंगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि तेरा होए सहाई। गुरसंगत तेरी साची सार। गुरसंगत प्रभ जाए तार । गुरसंगत प्रभ एका बख्शे चरन प्यार। गुरसंगत दिसावे प्रभ हरि का द्वार। गुरसंगत निहकलंक बेड़ा कर जाए पार। गुरसंगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम
६६६ ०१ अधार। गुरसंगत गुरसिख पछाणे। गुरसंगत प्रभ अबिनाशी जाणे। गुरसंगत हर रंग हरि प्रभ का माणे। गुरमुख होए ६६६ ०१
चतुर सुघड़ स्याणे। गुरसंगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगाह देवे माणे। गुर संगत संगत गुर बण। एका उपजावे शब्द धुन। गुरमुख साचे आत्म जाए मन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म मिटाए सारा जन। गुरसंगत तेरी साची गाथा। गुरसंगत रक्खे लाज त्रैलोकी नाथा। गुरसंगत प्रभ लेख लिखाए तेरे माथा। गुरसंगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चढ़ाए साचे राथा । गुरसंगत गुर मिले गुण निधानी। गुरसंगत प्रभ वड वड दानी। गुरसंगत देवे नाम दात सर्ब घट जाणी। गुरसंगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए महानी। गुरसंगत गुर दर विचार। प्रभ साचा जाए पैज संवार। भगत वछल प्रभ गिरधार। मातलोक आए जामा धार। जोत सरूप किया आकार। कलिजुग जीआं करे ख्वार। मदिरा मास कराए आहार। गुरमुख साचे प्रभ जाए तार। एका बख्शे नाम अधार। सोहँ कराए जै जै जैकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी कल कलि करे वरतार। आपणी कल कलि वरताए। आप आपणा भेद छुपाए। जोत सरूपी जोत प्रगटाए। गुरमुख साचे विच समाए। बोध अगाध अगाध बोध प्रभ शब्द लिखाए। बेमुख जीव काल अन्त प्रभ दए खपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाए। कलिजुग जीव जगत भुलाए। प्रभ अबिनाशी

दे सज़ाए। वेले अन्तकाल अन्त प्रभ नर्क निवास रखाए। गुरमुख साचे साचे सन्त प्रभ जोत सरूपी मेल मिलाए। मिल्या मेल प्रभ भगवन्त, उज्जल मुख जगत कराए। उज्जल होए विच जीव जन्त, साचा कन्त नजरी आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा मातलोक विच पाए। बेमुख जीवां करे ख्वारी। आत्म तोड़े सर्ब हँकारी। चार कुन्ट कराए हाहाकारी। ईसा मूसा मुहम्मदी सभ होइण ख्वारी। प्रगटे जोत मात निहकलंक नरायण नर अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रक्खे जगत सिक्दारी। साचे प्रभ कल खेल मिटावणा। जुग चौथा अन्त करावणा। वेद अथर्बण माण गंवावणा। बेमुख जीवां कलि पाप कमावणा। गुरमुख साचे प्रभ बाहों पकड़ तरावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग साचा कर्म कमावणा। कलिजुग जीव सर्ब मिटाए। बेमुख कोई रहण ना पाए। सोहँ बाण प्रभ चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आप कराए। कलिजुग तेरा अन्त अख़ीर। मातलोक तेरे लथ्थे चीर। अठसठ तीर्थां प्रभ खिच्चे नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब मिटाए औलीए पीर। सर्ब धाम प्रभ जोत खिचाई। एका जोत जगत प्रगटाई। गंगा गोदावरी प्रभ गोद सवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगत प्रगटाई। कलिजुग तेरा माण चुकाया। वेद अथर्बण अन्त कराया। अल्ला अलाहू नूर मिटाया। दीन मुहम्मदी अन्त कराया। चार यारां वक्त चुकाया। पंचम विच प्रभ आप समाया। पतिपरमेश्वर आप रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा मार्ग लाया। चार यारां प्रभ वक्त चुकाए। संग मुहम्मदी दे खपाए। दीन मुहम्मदी रहण ना पाए। जोत सरूपी प्रगट जोत कल कर्म कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाणा आप वरताए। सभ किछ वरते आपे आप। एका शब्द चलाए साचा जाप। गुरमुखां मारे प्रभ आत्म तीनो ताप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा जाप। सोहँ तेरी साची धुन्कार। प्रभ उपजाए विच संसार। किया प्रवेश पवन मँझार। चार कुन्ट होए तेरा पसार। जीव जन्त रसन कराए जै जै जैकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति करे वरतार। सति सति सति वरता। सतिजुग साचा मार्ग ला। साची जोत प्रभ अबिनाशी लए प्रगटा। राउ उमराउ कोई रहण ना पा। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त तेरी पकड़े बांह। बांह पकड़ प्रभ पार कराए। गुरमुख साचे मेल मिलाए। दे दरस प्रभ देह छुडाए। वेले अन्त होए सहाए। विच बबाण लए बिठाए। साचा प्रभ घर सच रखाए। गुरमुख साचे विच जोत मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा मातलोक विच पाए। प्रभ जोत जगत आकारा। होए प्रकाश जीव जन्त अधारा। जीव जन्त होए सहारा। बैठे अडोल विच निराधारा। गुरमुख साचे प्रभ देवे दरस अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खोल्ह देवे दस्म दुआरा। दस्म दुआर

प्रभ खुल्हाए। आप आपणा भेद चुकाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। आत्म साची जोत जगाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। साची धुन दे उपजाए। आत्म सुन्न खोल्ह वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाए। मातलोक प्रभ भाग लगाया। घनकपुरी विच जामा पाया। तीन लोक होए रुशनाया। मात पाताल आकाश प्रभ साचे जै जै जैकार कराया। गण गंधर्ब प्रभ दर फूलन बरख़ा लाया। करोड़ तेतीस प्रभ चरन बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाया। मातलोक प्रभ जामा धारे। सन्त जनां नूं पार उतारे। एका देवे सोहँ नाम अधारे। गुरमुख सोहण प्रभ चरन दुआरे। ऊँच नीच प्रभ ना विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच धारे। मातलोक प्रभ जोत जगाई। गुरसिख प्रभ लए उठाई। सन्त मनी सिँघ प्रभ देवे सच वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाई। साचे सन्त प्रभ माण दवाया। साचा शब्द साची धुन उपजाया। आप आपणा भेव चुकाया। अनहद साचा राग सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां दे वड्आया। सन्त जनां देवे वड्याई। सन्त जनां प्रभ पैज रखाई। सन्त जनां प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। सन्त जनां प्रभ साचे पूरन आस कराई। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाई। सन्त जनां प्रभ तारनहारा। सन्त जनां प्रभ देवे शब्द अधारा। सन्त जनां प्रभ साचे आत्म गुण विचारा। सन्त जनां देवे साची धुन शब्द धुन्कारा। सन्त जनां खोल्ह देवे प्रभ दस्म दवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां सदा काज सवारा। सन्त जनां प्रभ दरस दिखाए। सन्त जनां प्रभ बूझ बुझाए। सन्त जनां प्रभ आत्म भेव गूझ खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन सन्तां दे विच समाए। सन्त जनां प्रभ सदा समावे। सन्त जनां प्रभ एका धुन उपजावे। सन्त जनां प्रभ अगाध बोध बोध अगाध शब्द जणावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगावे। गुरमुख साचे भउ चुकाया। सन्त जनां प्रभ लेख लिखाया। सन्त जनां प्रभ वेख वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां दे विच समाया। सन्त जनां प्रभ सदा समीप। सन्त जनां प्रभ जोत जगाए आत्म दीप। संत जनां प्रभ साचा मीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सद रसना चीत। सन्त जनां प्रभ आत्म वसे। सन्त जनां प्रभ साचा घर दस्से। सन्त जनां प्रभ साचा रसना रसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां सद हिरदे वसे। सन्त जनां प्रभ होए सहाया। प्रभ अबिनाशी रसना गाया। रंग रंग रंग प्रभ आत्म साचा रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां सिर हत्थ टिकाया। सन्त जनां प्रभ देवे माण। सन्त मनी सिँघ चतुर सुजान। कलिजुग प्रगटे बली बलवान। देवे वड्याई निहकलंक वाली दो जहान। साचे सन्त सच घर सूज्झया। प्रभ अबिनाशी साचा बूज्झया।

प्रभ भेद चुकावे एका दूज्जया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सन्त दर तेरे झूज्जया। सन्त मनी सिँघ प्रभ वड्आया । जोत सरूपी मेल मिलाया। अनहद साचा राग उपजाया। एका धुन आत्म उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर सन्त हत्थ टिकाया। सन्त मनी सिँघ माण दवा के। सोहँ साची धुन उपजा के। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ साचा शब्द जणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई लेख लिखा के। सन्त मनी सिँघ जोत जगा। साचे मार्ग प्रभ लए पा। कर्म कमाए साची धुन उपजा। सर्ब घट वासी साचा शब्द दिवस रैण रिहा सुणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बणत लए बणा। आप आपणी बणत बणाए। सन्त मनी सिँघ शब्द जणाए। एका जोत एका रंग आप समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच घर दी बूझ बुझाए। सचखण्ड सच द्वार। जोत जगे अगम्म अपार। जोत सरूप प्रभ निराहार। एका एक एका करे आकार। साचा दर साचा दरबार। सचखण्ड वसे आप निरँकार। साचे दर आई साची सरकार। गुरू नानक जाए प्रभ चरन द्वार। प्रभ साचा देवे नाम जगत अधार। इक्क ओंकार सतिनाम जगत कर वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत इक्क करतार। प्रभ दर मांगी साची मंग । सच घर गुरू नानक लँघ। प्रभ अबिनाशी लाया अंग। जोत सरूप जोत प्रभ सदा सहाई रहे अंग संग। साची जोत सच निरँकार। एका जगे जोत प्रभ गिरधार। साचा वर साचा घर प्रभ देवे वड नाम सिक्दार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत अधार। साचा दर नानक प्रभ मंगया। वर पाया साचा नाम, रसना जप जीव चार वरन पार लँघया। एका रंग प्रभ करतार रसन उचार, कलिजुग जीवां आत्म रंगया । वेले अन्त होयण ख्वार, प्रभ साचा जायण जीव विसार, पर धन तन लायण अन्गया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, साचा जामा गुरू नानक कलि मंगया। जामे दस जोत प्रगटा। साचे मार्ग जगत लगा। गुर गुर मन्त्र जगत दृढ़ा। एका अन्तर सर्ब निरंतर सर्ब रिहा जगा। साचा मन्त्र अबिनाशी जगत दए वरता। बेमुख कलिजुग जीव साचा नाम गए भुला। जोत सरूप प्रगट जोत, वेले अन्त दए सज़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पा। दस्मां जामा गोबिन्द गुर पाया। साचा बंस आप उपजाया । एका अंस पुरख अकाल अख्वाया। विच सहँस गुरसिख उपजाया। अमृत आत्म सिंच आत्म तृखा बुझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जोत सरूपी खेल रचाया। गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर एह कर्म कमाया। अमृत साचा जाम पिलाया। कलिजुग जीवां वेले अन्त कलि गुर कर्म भुलाया। साचा धर्म होया भस्मंत, मदिरा मास रसन आहार बणाया। कलिजुग माया पाई बेअन्त, आपणा मूल कलिजुग जीव गंवाया। जोत सरूपी प्रभ भगवन्त, प्रगट जोत जोत सरूपी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लगाया। गुर

गोबिन्द एह गए जणा। साची बणत कलि गए बणा। वेला अन्त प्रभ गए सुणा। सर्ब जीव जन्त अन्त निहकलंक पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया भेख वटा। गुर गोबिन्द एह ओट रखा के। निहकलंक साचा माण जगत जीव दवा के। आप आपणा जोत सरूपी खेल वरता के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात आए जामा जोत सरूपी पा के। गुर गोबिन्द एह आस रखाई। निहकलंक वेले अन्त होए सहाई। चार वरन एका सरन लाए प्रभ सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस कराई। पूरन प्रभ पूरन आसा। पूरन देवे प्रभ भरवासा। गुरमुख साचे प्रभ चरन प्रीत साची रहिरासा। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म रक्खे वासा। गुरमुख साचे प्रभ दरस दिखाया। गुरमुख साचे प्रभ विच समाया। निज घर वासी निज घर वास रखाया। प्रभ अबिनाशी आपणा भेद चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल मिलाया। प्रभ अबिनाशी मेल मिला के। साचा शब्द जाए उपजा के। एका धुन सोहँ जगत सुणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख जाए तेरा बजर कपाट खुल्हा के। साची धुन प्रभ उपजाए। साचे मार्ग प्रभ आप लगाए। गुरमुख साचा गुर दर बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। साचा प्रभ पूरन आस। सर्ब घटां घट रक्खे वास। साचा प्रभ सर्ब गुणतास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख दुखड़े कीने नास। गुरमुख तेरा रोग मिटाया। आत्म सुख प्रभ नाम वसाया। अमृत आत्म सिंच तन मन हरा कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत साचा कर्म कमाया। मिटे दुःख उपजे सुख। गुरमुख तेरी उतरे भुक्ख। प्रभ अबिनाशी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा वास कटावे मात कुक्ख। कर किरपा प्रभ पार उतारया। लक्ख चुरासी गेड़ निवारया। जन्म मरन प्रभ अन्त संवारया। साचा शब्द प्रभ आप लिखा रिहा। वेला अन्त प्रभ जोती जोत मिला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवास रखा ल्या। साचा अमृत गुर दर पाए। पी अमृत आत्म तृखा सर्ब मिटाए। आत्म साची जोत जगाए। हउमे विच्चों रोग गंवाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। अमृत आत्म सिंच आत्म हरा कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए अमृत मुख चुआए। साचा प्रभ भगत भण्डारी। जन भगतां देवे नाम अधारी। अमृत आत्म सिंच प्रभ आत्म करे उज्जयारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रक्खे लाज आप मुरारी। अमृत देवे प्रभ साचा रस। रसना जप जप जप जीव प्रभ अबिनाशी होए वस। निहकलंक अवतार नर गुरमुख आए चरन नस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रीत मात जाए दस्स। मातलोक वरते वरतार। सन्त मनी सिँघ लिखे लिखार। एका शब्द उपजावे धुन्कार। प्रभ अबिनाशी शब्द गुण भरे भण्डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरतावे कल विच संसार। साचे सन्त

शब्द जणाया। आप आपणा भेव खुल्हाया। एका नाम अधार रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद छुपाया। सन्त मनी सिँघ प्रभ दया कमाई। एका कलम हत्थ फड़ाई। किरपा करे आप रघुराई। दिव दृष्ट प्रभ आप खुल्हाई। शब्द धुन आप उपजाई। एक सुन्न प्रभ चरन खुल्हाई। सन्त साचा चुण प्रभ सेव लगाई। बैठ अडोल रिहा सृष्ट लेख लिखाई। आप आपणा रिहा छुपाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज कल कलि वरताई। सन्त मनी सिँघ शब्द जणाए। दिवस रैण रैण दिवस एका नाद वजाए। मिटाए विवाद आत्म साध प्रभ एका रंग समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद छुपाए। साचा शब्द सन्त चलंत। बैठा आप इकन्त भगवन्त। साची सेवा प्रभ साचा लाया सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाए सर्ब जीव जन्त। कलिजुग जीवां प्रभ लेख लिखा। साचा हुक्म दिया सुणा। साचे सन्त साचा डंक दिया वजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप रिहा छुपा। साचे सन्त सच जणाया। साचा हुक्म प्रभ इक्क लिखाया। राणयां महाराणयां प्रभ दिख ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद छुपाया। सन्त मनी सिँघ लेख लिखारे। प्रभ अबिनाशी शब्द अधारे। साचा नाम जोत आकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग करे खेल न्यारे। साचे शब्द प्रभ सच लिखाए। साचे हुक्म प्रभ आप लिखाए। तिन्न तिन्न लेख प्रभ लिख्त लिखाए। राजे राणे प्रभ झूठे कर वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ साचा माण दवाए। सन्त मनी सिँघ प्रभ हुक्म सुणाया। साचा लेख प्रभ लिखाया। राउ रंकां सर्ब सुणाया। निहकलंक कलि जामा पाया। अमाम मैहदी प्रभ नाउँ रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद छुपाया। सन्त मनी सिँघ करे पुकार। कलिजुग प्रगटे निहकलंक नरायण नर अवतार। मातलोक प्रभ जामा आए धार। एका जोत जगे निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ जाए तार। सन्त मनी सिँघ रंग रंगाया। प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया। साचा धन माल गुर शब्द दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद छुपाया। साचा हुक्म सन्त सुणा के। साची कलम आप चला के। राजे राणे तख्तों लाह के। वेले अन्त कलिजुग प्रभ सरनी डिग्गण आ के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा बैठा भेद छुपा के। लेख तीन सन्त लिखाए। राजे राणे सर्ब भुलाए। चल ना आए प्रभ सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति वरताए। सन्त मनी सिँघ कर्म लिखाए। निहकलंक दे सज़ाए। तख्त निवासी रंक कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर निमाणयां हत्थ टिकाए। राजिआं राणयां प्रभ करे ख्वारी। निहकलंक नर अवतारी। भगत जनां प्रभ पैज संवारी। साध संगत गुरचरन बलिहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख सोहण धुर दरबारी। सन्त मनी

सिँघ कलम चलाई। प्रभ अबिनाशी पैज रखाई। मस्तूआणे माण दवाई। वेले अन्त अन्त कलि, सर अमृत थेह कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त आप कराई। वेला अन्त आए अख़ीर। गुरमुखां प्रभ कट्टे भीड़। बेमुखां प्रभ जाए पीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तोड़े हड्डी रीड़। वेला अन्त अन्त कलि आया। गुरमुखां प्रभ होए सहाया। प्रगट जोत जोत सरूप प्रभ साचे दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़यां कलि मेल मिलाया। साचा प्रभ दया कमाए। साचा धाम आप सुहाए। वक्त सुहंजणा आप कराए। साचा चरन प्रभ मस्तूआणे पाए। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ साचा शब्द लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजे राणे सरन लगाए। दिवस चाली प्रभ शब्द लिखावणा। साची जोत प्रभ जगत जगावणा। मस्तूआणा साचा धाम प्रभ उपजावणा। सन्त मनी सिँघ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे माण दवावणा। मस्तूआणा धाम उपा। राणे महाराणे चरन लगा। सन्त मनी सिँघ माण दवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्त होए आप सहा। साची जोत प्रभ आप जगाए। सन्त मनी सिँघ माण दवाए। सतिजुग साचा सतिगुर बण आए। चार वरन प्रभ टेक रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ आप तराए। सन्त मनी सिँघ आप तराया। सतिजुग साचे माण दवाया। साचा सुख आप उपाया। सति पुरखां प्रभ माण रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेख वटाया। साचा प्रभ बणत बणाए। एका दर दरबार चार वरन चल आए सरनाए। राउ रंक कोई रहण ना पाए। ऊँच नीच प्रभ इक्क कराए। सन्त मनी सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी आस पुजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा रिहा छुपाए। गुर दरस अन्धेर विनासे। गुर दरस जोत प्रकाशे। गुर दरस सर्ब दुःख नासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म होए रासे। गुर दरस गुरसिख करया। कर दरस भवजल तरया। प्रभ अबिनाशी विरले गुरमुख वरया। गुरसिख पूरा विच कलि मूल ना डरया। गर्भवास फेर ना परया। जो जन आए प्रभ सरनी परया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावरया। साचा प्रभ अन्त ना पारावार। आदि जुगादि गुर पार उतारनहार। पारब्रह्म परमेश्वर पूरन नर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला पाए सार। गुर दरस जिस जन पाया। हउमे सारा रोग मिटाया। मानस जन्म कलि सुफल कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे दरस आत्म दुःख मिटाया। गुर दरस गुरमुख जाणे। गुरमुख साचा साचा रंग माणे। प्रभ अबिनाशी साचा जाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सची दरगाह माण दवाणे। साचा माण जगत दवाए। प्रभ अबिनाशी होए सहाए। गुरमुख साचे गुर साचे धाम बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम बहाए। जोत सरूपी जोत मिला। साचे धाम जाए बहा।

आप आपणे रंग रंगा। सचखण्ड प्रभ रिहा समा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लए तरा। गुरमुख साचे माण दवाया। निहकलंक कलि कर्म कमाया। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड प्रभ उलटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आप रचाया। साचा प्रभ सच कर्म कमाए। ब्रह्मलोक प्रभ दे उलटाए। गुरमुख साचे सच थान बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे होए सहाए। ब्रह्मा तेरा गया माण। वेले अन्तकाल कलि प्रभ चुकाई काण । प्रभ अबिनाशी जोती जोत मिलाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आवण जाण। ब्रह्मा ब्रह्मलोक तजाए। प्रभ अबिनाशी विच जोती जोत मिलाए। गुरमुख साचा गुर धाम बहाए। तीन लोक प्रभ दे उलटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाथ त्रैलोकी आपणी बणत आप बणाए। ब्रह्मा ब्रह्म रूप समाया। प्रभ अबिनाशी मेल मिलाया। आदि जुगदि प्रभ एका आप रघुराया। दूसर कोई रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त ना किसे जणाया। ब्रह्मलोक गुरसिख बहाए। साची सेवा प्रभ अबिनाशी लाए। आप आपणा हत्थ टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीन लोक जाए उलटाए। गुरमुख साचा सच घर जाए। दरगाह साची माण दवाए। दर दरबान होए माण सिख पाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साची दया कमाए। साचा सिख गुर दर बहाया। प्रभ अबिनाशी माण रखाया। कलिजुग अन्तिम अन्त कराया। धू्र दरबान

७०३
०१

प्रभ परे हटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौथे जोती मेल मिलाया। साची जोत प्रभ मिला के। धू्र दरबान परे हटा के। गुरमुख साचा दर बहा के। सिँघ सवरन माण दवा के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा मार्ग जाए ला के। प्रभ अबिनाशी सच कर्म कमावणा। साचा मार्ग मात लगावणा। तीन लोक धाम उपजावणा। शिवलोक इन्दलोक ब्रह्मलोक प्रभ माण दवावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म जगत कमावणा। अछल छल प्रभ आप कराए। आपणा भेद प्रभ आप छुपाए। जुगो जुग प्रभ विच मात दे आए। बावन भेख धर बल दर मंगण जाए। जोत सरूपी जोत प्रभ आपणा भेख वटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बोध अगाध अगाध बोध प्रभ साचा शब्द लिखाए। जोत सरूप प्रभ अनित। भगतन हित जामे धारे नवित्त। भगत जनां प्रभ साचा पित। मानस जन्म गए जग जित्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जन साचा मात पित। भगत जनां प्रभ पार उतारे। जुगो जुग मातलोक लए अवतारे। निहकलंक कलिजुग जामा धारे। अचरज खेल करे अपारे। बहत्तर जामे भगत जन प्रभ आपणे आप लिखारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरतावे विच संसारे। भगत जनां प्रभ लेख लिखाए। बहत्तर जामे भगत कराए। सर्ब जनां सिर हत्थ टिकाए। एका आपणी ओट रखाए। दूसर कोई रहण ना पाए। सोहँ साचा डंक वजाए। चार वरन चार कुन्ट एका अंक रखाए।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल कलि वरताए। आप आपणे चले भाणे। जोत सरूपी चोज वडाणे। गुरमुख साचा प्रभ साचे का रंग साचा माणे। जोत सरूपी गुरमुख विरला जाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे माण जो जन चले प्रभ के भाणे। साचा भाणा प्रभ का भाउ। गुर चरन धूढ़ सद सद नहाओ। साचा नाम सोहँ सद रसना गाओ। रसना जप जप जीव आत्म रस पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर वासी निज घर वास रखाओ। निज घर वसे प्रभ वसणेहारा। जो जन करे चरन प्यारा। खोल्ह देवे प्रभ दस्म दुआरा। एका जगे जोत मिटे सर्ब अन्धयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी करे आकारा। जोत सरूपी पसर पसार। साचा देवे जोत अधार। गुरमुख साचा प्रभ साचा जाए तार। सचखण्ड वसाए दिसाए आण तराए प्रभ दुतर तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सार। गुरमुख साचा रंग रंगाया। प्रभ अबिनाशी रसना गाया। साचा प्रभ रिदे वसाया । घनकपुर वासी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाया। साचा नाम प्रभ दवाए। साचा धाम आप उपजाए। आप आपणे चरन टिकाए। सतिजुग साचा माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा थान आण सुहाए। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ चरन टिकाया। सो सुहाए थान, प्रगट जोत प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आण तराया। सुहाए थान प्रभ भए दयाला। सर्ब जीआं करे प्रितपाला। गुरमुख साचे प्रभ होए आप रखवाला। सुहाया थान गुरमुख साचे प्रभ आत्म दीपक बाला। सोहँ शब्द गुरसिख साचे प्रभ सोहँ देवे आत्म साची माला । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन प्रीती तेरी निभे नाला। प्रभ साचा सच थान सुहाया। जुगो जुग प्रभ माण दवाया। विच द्वापर मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण चरन टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेले अन्तिम सच्चो सच लिखाया। द्वापर भए कृष्न मुरार। जादव कुल उतरी पार। भगतन हेत लए अवतार। बिदर सुदामा उतरे पार। द्रोपदी रक्खी लाज मुरार। प्रभ साचे दी साची कार। विच प्रभास पांडो भए ख्वार। दुरबासा रिख करे लाचार। चल आए घनईआ शाम भगत द्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक नरायण नर अवतार । दुर्योधन एह कर्म कमाया। दुरबासा रिख संग रलाया। पांडो तांईं दुःख पुजाया। विच प्रभास पांडो दर रिख दुरबासा मंगण आया। देवो रसोई आत्म तृप्ताया। प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत जुगो जुग जन भगतां होए सहाया। दुरबाशा एह हुक्म सुणाए। धर्म राज नूं दे जणाए। सुण युधिष्टर रिहा शरमाए। सर्ब तांईं रिहा समझाए। एक ओट प्रभ रखाए। प्रभ अबिनाशी जुगो जुग जन भगतां होए सहाए। दुरबाशा एह हुक्म सुणाया। पंज सौ साधू संग है आया। दुःख भुक्ख बहुत सताया। धर्मराज तेरे दरबार रिख दुरबाशा मंगण आया। दुःख भुख विच प्रभास

पांडो बहुत सताया। भगतन हेत जुगो जुग प्रभ अबिनाशी होए सहाया। पंजे पांडो करन पुकार। सुणी पुकार आप दातार। रक्खे लाज कृष्न मुरार। भगत जनां प्रभ साची पावे सार। जन भगतां प्रभ सुणी पुकार। सिँघआसण छड्डे आप गिरधार। ऊधो हुक्म सुणाया अपार। मुरारी कृष्न करे त्यार। साचा रथ प्रभ होए संवार। साचा धाम प्रभ किया आप उज्जयार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी किया आकार। भगतन हेत आए मुरारी। उधो संग रथ सवारी। सुहाए थान प्रभ बंक द्वारी। सतिजुग साचे गुरसिख तेरी होए जै जै जैकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी पैज संवारी। गुर दर सच घर एह धाम न्यारा। द्वापर ल्या कृष्न अवतारा। माधो सुत्ते चरन पसारा। कलिजुग जीव भुल्ले सर्ब गंवारा। साचा धाम प्रभ उपजावे, सतिजुग विच मात न्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जाणे सारा। साचा धाम सतिजुग बणाए। प्रभ अबिनाशी माण दवाए। गुरमुख साचे प्रभ साचा छत्र सीस झुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा धाम आप उपजाए। साचे प्रभ चरन टिकावणा। जोत सरूपी खेल रचावणा। वाली हिन्द सरन लगावणा। जमन किनारा धाम सुहावणा। वाली दो जहान विच मात दे आवणा। निहकलंक अवतार नर प्रभ अबिनाशी नाउँ रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आप कमावणा। दिल्ली विच प्रभ चरन टिका। राज बणतर प्रभ दए बणा। सतिगुर साचा
७०५ ०१ लेख लिखा। सतिजुग चलावे साचा राह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन बहाए एका थां। साचा प्रभ लेख ७०५ ०१
लिखारे। चार वरन प्रभ भरे भण्डार। आयण चरन सोहण दरबारे। निहकलंक नरायण नर अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची करी आप सिक्दारे। सतिजुग तेरा प्रभ सिक्दार। पारब्रह्म पूरन अवतार। जोत सरूप जोत निरँकार। गुरमुख साचा पावे सार। बेमुख जीव कलिजुग होयण ख्वार। वेले अन्त खायण जम मार। गुरमुख साचा करे प्रभ चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त देवे तार। साचे प्रभ सच वड्याई। साची बणत प्रभ आप बणाई। महिंमा अगणत गणी ना जाई। जीव जन्त प्रभ रिहा जणाई। एका सरन देवे सरनाई। मातलोक मिले वड्याई। जो जन सोहँ रसना गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लिखाई। साचा वक्त प्रभ सुहावणा। साचा चरन सच घर पावणा। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ अबिनाशी रसना गावणा। गुरमुख साचे ना मिले सवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए स्वास पवणा। सोहँ चले स्वास स्वासा। गुरमुख साचे प्रभ आत्म तेरी रक्खे वासा। रसना जप जप जीव, सोहँ तेरी सची रहिरासा। साचा शब्द मातलोक देवे प्रभ भरवासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां दासन दासा। दासन दास प्रभ सद दास। गुरमुख साचे प्रभ आत्म रक्खे सद वास। रसना लगाए जो जन मदिरा मास। अन्तकाल पाए जम

की फास। सोहँ शब्द जन रसना गाए स्वास स्वास। प्रभ मिलण की साची आस। देवे दरस प्रभ अबिनाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे हिरदे रक्खे वास। साचा प्रभ सर्ब सुखदेवा। साचा प्रभ साची प्रभ सेवा। धरे जोत प्रभ अलख अभेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा मेवा। जीव जाग जाग, प्रभ जामा धारे। जीव जाग जाग, प्रभ जोत आकारे। जीव जाग जाग, मातलोक आया नैण मुँधारे। जीव जाग जाग, प्रभ साचा आए दर दरबारे। जीव जाग जाग, आत्म जोत जगाए झूठे महल मुनारे। जीव जाग जाग, कर दरस प्रभ कृष्न मुरारे। उठ जीव जाग, चल आ गुर चरन दुआरे। उठ जीव जाग, प्रभ साचा लाए भाग भर दए भण्डारे। उठ जीव जाग, प्रभ साचा कलि काज संवारे। उठ जीव जाग, प्रभ उपजावे अनहद धुन सची सरकारे। उठ जीव जाग, आत्म बुझा तृष्ना आग, रसना सोहँ जै जै जैकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे जोत अधारे। उठ जीव जाग, प्रभ दरस कर। उठ जीव जाग, प्रभ चरन लाग जगत तर। उठ जीव जाग, रसना जप साचा नाम हरि। जोत सरूपी जोत प्रभ, प्रभ साचे दी सरनी पर। उठ जीव जाग, प्रभ दवाए साचा घर वर। उठ जीव जाग, मातलोक प्रगटे अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मूल ना डर।
७०६ ०१ उठ जीव जाग, प्रभ भए अनन्दा । उठ जीव जाग, प्रभ उपजावे आत्म परमानंदा । उठ जीव जाग, कलिजुग छोड़ झूठा धन्दा। उठ जीव जाग, रसना त्याग मदिरा मास गन्दा। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी सद बख्शिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर हत्थ रखंदा। उठ जीव जाग, प्रभ शब्द जणाए। उठ जीव जाग, प्रभ साचा सरन लगाए। उठ जीव जाग, मानस जन्म सुफल कराए। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दी साची जोत विच जोत मिलाए। उठ जीव जाग, भगत भगवान इक्क हो जाए। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सिर तेरे हत्थ टिकाए। उठ जीव जाग, प्रभ दर वेख। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी किया भेख। उठ जीव जाग, प्रभ साचा लिख जाए लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्तां रिहा वेख। सो जागे जिस आप जगाए। कलिजुग जीव सार ना पाए। गुरमुख साचे प्रभ सरन लगाए। ब्रह्म ज्ञानीआं प्रभ ब्रह्म ज्ञान दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे एका चरन ध्यान रखाए। गुरमुख देवे चरन ध्याना। चरन धूढ़ बख्शे साचा इशनाना। प्रभ अबिनाशी आत्म देवे जोत महाना। होए सहाई वेले अन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। गुरमुख साचा सच रंग रंगाया। साचा रंग नाउँ मजीठ चढ़ाया। बेमुख जीव कलि कुड़िआर प्रभ सर्ब खपाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा बांहों पकड़ तराया। तारनहार गुरसिख तारया। कर किरपा पार उतारया। साचा कर्म प्रभ आप विचारया। थिर घर वासी गुरमुख साचे बणत बणा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ७०६ ०१

भगवान, बैकुण्ठ निवासी बैकुण्ठ निवास दवा रिहा। साचा प्रभ सदा दयावान। प्रभ अबिनाशी पूरन भगवान। सन्त जनां प्रभ सद मेहरवान। प्रभ साचे दी साची आण। गुरमुख जोत जगाए महान। बेमुख आत्म सुंञ मसाण। सन्त जन कर दरस प्रभ बलि बलि जाण। दर दरबार आए साचा मंगण नाम दान। देवे दान प्रभ अबिनाशी सोहँ गुणी निधान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब घटां दा जाणी जाण। साचा नाम जिस जन मंगया। प्रभ अबिनाशी आत्म रंगया। अमृत झिरना झिराए आत्म गन्गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग गुरमुख साचा पार लंघिआ। कलिजुग आए नैण मुँधार। बाशक सेज तजे गिरधार। जोत सरूपी विच मात जोत किया आकार। गुरमुख साचे जोत सरूप विच बैठ रिहा गिरधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्त ना पावे तेरी सार। बाशक सेज प्रभ तजाया। सहँसर मुख जिस रसना गाया। सर्ब सुख आत्म तृप्ताया। विच मात जोत सरूपी खेल रचाया। उतरे भुक्ख जो जन आए प्रभ सरनाया। हउमे विच्चों जाए दु:ख सोहँ साचा रसना गाया। सुफल कराए मात कुक्ख, निहकलंक तेरी सरनाया। कलिजुग जीव होए बेमुख, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। वेले अन्त पायण दु:ख धर्म राए दे सज़ाया। वास कटाए मात कुक्ख, आवण जाण प्रभ गेड़ चुकाया। गुरमुख साचे मिल्या साचा सुख, प्रभ जोती मेल मिलाया। कर दरस उतरे भुक्ख, चल आए प्रभ सरनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाया। सर्ब जनां प्रभ सरधन पूर। प्रभ अबिनाशी सदा हज़ूर। गुरमुख साचे प्रभ आत्म करे भरपूर। आत्म जोत जगाए करे रुशनाए जिउँ कोहतूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा सति सरूर। प्रभ अबिनाशी सचा सतिगुर पूरा। साची धुन उपजावे अनहद तूरा। निहकलंक कलि साचा सूरा। प्रभ का बचन ना होए अधूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरा। सर्ब घटां प्रभ आपे जाणे। प्रभ की जोत जगत महाने। क्या कोई जाणे क्या वखाणे। आपणे रंग प्रभ सद समाणे। जीव जन्त कोई भेद ना जाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे चलाए भाणे। आप आपणे विच समाया। एका अधार जोत रखाया। एका जोत जगत जगाया। तीन लोक आकार कराया। विच संसार प्रभ भेद रखाया। जोत सरूप विच जीव जन्त समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीवां सर्ब भुलाया। भुल्ले जीव सर्ब संसारी। प्रभ साचे दी खेल न्यारी। माया पाई कलि अपर अपारी। दिस ना आए प्रभ गिरधारी। भगत जनां प्रभ पैज संवारी। साची देवे नाम खुमारी। दर घर आए देवे दरस आप गिरधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजारी। साचे मार्ग गुरमुख लाया। साचा दर प्रभ आप वखाया। एका घर प्रभ आप वसाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी डेरा लाया। जोत सरूप विच विस्माद। जगे जोत आदि जुगादि। झूठी देह

सोहँ वजाए साचा नाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म जाए साध। गुरमुख सो जिस प्रभ पछाणया। गुरमुख सो जो चले प्रभ के भाणया। गुरमुख सो जिस हरि रंग माणया। गुरमुख सो जिस देवे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। साचा रंग सो जन जाणे। जो जन रसना प्रभ वखाणे। प्रभ अबिनाशी देवे माणे। जो जन चले प्रभ के भाणे। साध संगत प्रभ सद कुरबाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां दी आपे जाणे। भगत जन साचे सन्त। प्रभ अबिनाशी बणाई साची बणत। देवे वड्याई विच सर्ब जीव जन्त। एका जोत जगाए प्रभ साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाए साचे सन्त। साचे सन्त सेवा कर। प्रभ अबिनाशी ल्या वर। अन्तकाल प्रभ साचा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई धरनी धर। सन्त मनी सिँघ तेरा माण। प्रभ अबिनाशी ल्या जाण। साचा शब्द रसन वखाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन पाए एका आण। साचे सन्त सति मार्ग लाया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिस सन्त मनी सिँघ संग रलाया। उज्जल होए मुख, प्रभ अबिनाशी होए सहाया। वेले अन्त सर्ब दवाए सुख, प्रभ साची जोत लए मिलाया। कर दरस उतरे भुक्ख, प्रभ अबिनाशी घर में पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाया। सन्त जनां का किया संग। आत्म चाड़्हिआ प्रभ साचा रंग। प्रभ दर मंगी साची मंग। मानस जन्म ना होया भंग। कर दरस भवजल पार जाए लँघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई संग अंग। सन्त मनी सिँघ राह चलाया। निहकलंक प्रभ सरन लगाया। साचा शब्द साचा हुक्म सर्ब सुणाया। कलिजुग जीव भुल्ल भुल्ल वक्त गंवाया। वेले अन्त रुल रुल रुल आपणा मूल गंवाया। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी आपणा मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लहणा झोली पाया। प्रभ अबिनाशी सति सरनाए। जुगो जुग विछड़े प्रभ साचा मेल मिलाए। जुग चौथे प्रभ साचा साची बणत बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ गुरसिख तेरे आण तराए। सन्त मनी सिँघ माण दवाया। पिता पूत होए सेव कमाया। साची दरगाह प्रभ वड्आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बेड़ा पार कराया। गुरमुख तेरा बेड़ा बन्नृ। साचा प्रभ आत्म कढाए सारा जंन। सोहँ शब्द सुणावे कन्न। साचा देवे नाम ना लग्गे संनृ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल तेरा बेड़ा जाए बन्नृ। आया वक्त वक्त सुहाए। प्रभ अबिनाशी लाज रखाए। सीस जगदीस आपणी बणत बणाए। बीस इकीस प्रभ आपणा भेद चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत विच मात बणाए। साचा प्रभ वक्त विचार। जोत सरूप लए अवतार। भगत जनां प्रभ पावे सार। हँकारीआं जाए हँकार निवार। साध संगत प्रभ जाए पैज संवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधारे जो चल आयण दरबार। साचा वक्त

प्रभ सुहावणा। साचा माण गुरसिख दवावणा। साचा नाम आत्म उपजावणा। साचा राम घनईआ शाम प्रगट होए दरसन दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म धुन उपजाए विच आत्म स्वास पवणा। पवण सरूपी जीव स्वासा। साचा प्रभ विच रक्खे वासा। सोहँ शब्द जणाए तेरी रहिरासा। प्रभ साचा सद बलि बलि जासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत करे बन्द खुलासा। प्रभ साचे दी साची जुगती। गुरमुख देवे साची मुक्ती। देवे दरस जोत सरूप अकाल मूर्ति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ तेरी जोत जगाए विच सति सुरती। सन्त मनी सिँघ प्रभ तेरी जोत जगा। सतिजुग साचा सतिगुरू जाए बणा। निहकलंक प्रगट जोत तिलक जाए लगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन तेरी सरन जाए लगा। साची जोत प्रभ उपजाए। सन्त मनी सिँघ माण दवाए। सतिगुर साचा विच मात बणाए। सतिजुग साचा ताज दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उप्पर सीस छत्र झुलाए। सीस छत्र प्रभ झुलावणा। सतिगुर साचे प्रभ साचे माण दवावणा। गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द प्रभ आपे आप अख्वावणा। जोत सरूप प्रभ प्रगट जोत, हँकार निवार सर्ब चरन लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावणा। प्रभ साचा साची कार। जुगो जुग प्रभ लए अवतार। मातलोक आए वारो वार। रमईआ राम रघुपत गिरधार। घनईआ शाम कृष्न मुरार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
७०६
०१
भगवान, जुग चौथे नाम उचार। गुरमुख आत्म कर विचार। साचा प्रभ रसन उचार। आत्म जोत करे उज्जयार। खोल्ह
७०६
०१
आपणा दस्म दुआर। कर दरस जोत सरूप प्रभ वसे आप निराहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बख्शे चरन प्यार। गुरमुख साचे प्रभ चरन प्रीत। प्रभ साचे की साची रीत। सोहँ देवे साचा नाम तेरी आत्म करे अतीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जग जीत। गुरमुख रसना हरि गुण गा। आत्म बुझी दीप जगा। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप विच आपणे दर्शन पा। होए प्रकाश विच देह अन्ध कूप, साची जोत करे रुशना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी बणत जाए बणा। साचा नाम रसन आहार। रसना जप जप जीव उतरे पार। साचा प्रभ जोत सरूप देवे दरस अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे भरम निवार। साचा प्रभ गुरसिख सुहेला। जोत सरूपी मेल मिलाया मेला। पारब्रह्म अचरज खेल विच मात दे खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां सद संग सुहेला। भगत जनां प्रभ सदा सहाई। जुगो जुग प्रभ पैज रखाई। बालक ध्रू दरस दिखाई। नर सिँघ नरायण प्रहलाद लाज रखाई। बावन रूप धार चार वेद मुख पाठ अलाई। भगत उधारे, दुरबासा माण गंवाई। अंबरीक गया दर, मार चक्र सुदर्शन बाण प्रभ अबिनाशी होए सहाई। जुगो जुग प्रगट जोत, प्रभ साचा जन भगतां होए सहाई। जन भगत जनक प्रभ तारे। साचा नाम देवे अधारे।

प्रभ साचे दी साची कारे। राणी तारा प्रभ पार उतारे। साध संगत प्रभ सद बलिहारे। प्रभ साचे का साचा नाउँ मिल संगत रसन उचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा मातलोक विच धारे। भगत बिदर प्रभ साचे तारया। दुर्योधन छड्डे महल मुनारया। नाथ त्रैलोकी चल आए गुरमुख द्वारया। प्रभ साचे की साची कारया। भगतन हित जुगो जुग लए अवतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच धारया। प्रभ अबिनाशी जाओ बलिहार। निमाणयां प्रभ जाए तार। दलिद्री आए हरि के द्वार। छड्डे सिँघासण कृष्न मुरार। सुदामे करे प्रभ निमस्कार। भगत जनां प्रभ जाए तार। भगत वछल आप करतार। प्रभ अबिनाशी जुगो जुग मात लए अवतार। द्रोपत सुत प्रभ उधारे। विच सभा दे पैज संवारे। हँकारीआं प्रभ हँकार निवारे। प्रभ साचे दी साची कारे। प्रभ साचे सच कर्म कमाया। जैदिउ दा लेख लिखाया। आत्म साचा ज्ञान दवाया। जोत सरूप प्रभ अबिनाशी नज़री आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जन भगतां होए सहाया। नाम देव प्रभ आप तारे। भोग लगाए चल दवारे। बाडी बणे सची सरकारे। साचे प्रभ तेरे रंग अपारे। भगतन हित विच मात लए अवतारे। भगत जनां प्रभ पार उतारे। पार उतारे रविदास चुमारे। कबीर त्रिलोचन प्रभ देवे दरस अपारे। वेले अन्त जन भगतां होए सहारे। सदने प्रभ लाज रखाई। वेले अन्त होए सहाई। सैण रूप प्रभ लए बणाई। दर राणे दे सेव कमाई। भगतन हित जुगो जुग प्रभ अबिनाशी जोत विच मात प्रगटाई। गनका पूतना पापण तारे। मोहण मुम्मे पाए कृष्न मुरारे। गुण अवगुण प्रभ ना विचारे। पतित पापी प्रभ पार उतारे। चल आयण जो जन दुआरे। अजामल उधरे हरि रसन उचारे। प्रभ अबिनाशी सदा सदा बलिहारे। भगत जनां हरि काज संवारे। साचे प्रभ बधक तारया। चरन कँवल विच बाण जिस मारया। आए डिग्गा चरन दवारया। बाहों पकड़ प्रभ पार उतारया। जन्म मरन दा गेड़ निवारया। प्रभ साचे दी साची कारया। वेले अन्त जुगो जुग जामा मातलोक विच धारया। मातलोक प्रभ जामा धार। भगत जनां प्रभ जाए तार। लिखाए लेख अपर अपार। सतिजुग देवे साची सिक्दार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां बणे आप लिखार। भगत जनां प्रभ लेख लिखाए। दर घर साचे माण दवाए। थिर घर वासी घर सच बहाए। गुरसिख साचे अन्त कलि सच धाम सचखण्ड बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच जोती मेल मिलाए। प्रभ साचा महिंमा अकथ्थ। पूरन जोत प्रभ समरथ। सृष्ट सबाई जाए मथ। सोहँ चलाए साचा रथ। चार वरन चलाए साची गथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ। गुरमुख साचे प्रभ वड्याए। कलिजुग प्रगट जोत प्रभ साचे लेख लिखाए। चार वरन कराए एका गोत, ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। दुरमति मैल प्रभ जाए धोत, सोहँ भट्ठी प्रभ दे चढ़ाए। बेमुख दर जायण

रोत, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बूझ बुझाए। प्रभ अबिनाशी सदा अभेदा। भेद ना पायण चारे वेदा। साचा प्रभ अछल अछल्ल, छल कराए अछल अछेदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना जाणे तेरा भेदा। निहकलंक जीव ना जाणे। साचा प्रभ आपणा रंग वखाणे । गुरमुख साचे प्रभ कँवल नाभ खोल्ह् वखाणे। प्रगट जोत तराए झब्ब, जिस बख्शे चरन ध्याने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दे विच समाणे। कँवल नाभ प्रभ खुल्हाए। अमृत बूंद मुख चुआए। प्रभ अबिनाशी आत्म साची जोत जगाए। आत्म मिटे अन्ध अंध्यार, साचा प्रभ दया कमाए। खुल्ह् जाए दस्म दुआर, अनहद धुन प्रभ उपजाए। देवे दरस प्रभ अपार, जोत सरूपी नज़री आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाए। निहकलंक साचा डंक। इक्क कराए राउ रंक। जोत सरूपी लाए तनक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बणाए साची बणत। साची बणत प्रभ बणाए। सन्त मनी सिँघ तेरी लाज रखाए। गुरमुख तेरे साचे सिख प्रभ आपणी सरन लगाए। देवे वड्याई प्रभ साचा कन्त, साचे लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आए दया कमाए। विछड़यां प्रभ मेल मिलाया। पूरब लहणा झोली पाया। आप अलेख किया भेख, प्रभ अबिनाशी आपणा भेद चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे वेख आपणी सरन लगाया। साचा प्रभ सरन
 लगाए। साचा माण मात दवाए। लजपति रक्खे आप रघुराए। आत्म साचा शब्द प्रभ देवे दूण सवाए। होए अतीत गुरसिख ७११ ०१
साचा, महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकाए। साचा प्रभ दूख निवारे। कर किरपा प्रभ पार उतारे। नेत्र पेख दुःख लथ्थे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए गुरसिख तेरे काज संवारे। प्रभ साचे काज संवारया। प्रगट जोत, प्रभ दर घर बणाए वड दरबारया। खोल्ह् देवे प्रभ साचा सोत, एका जोत करे अधारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल जोत करे उज्जयारया। साची जोत प्रभ अधारे। देवे दात प्रभ सच दरबारे। प्रभ साचे दे भरे भण्डारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा सदा वरतारे। प्रभ साचा एह बणत बणाए। जीव आकार जोत कराए। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश रचाए। मत मन बुध विच टिकाए। प्रभ साचा सच दया कमाए। उलटा बिरख जीव मात कुक्ख रहाए। जोत सरूपी जोत प्रभ, जोत अधार रखाए। किरपा करे आप गुणतास, मातलोक विच जन्म दवाए। मातलोक प्रभ जन्म दवाया। पंज तत्त दा खेल रचाया। विच आपणा आप समाया। बैठा अडोल आप रघुराया। जोत सरूपी दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सर्ब समाया। प्रभ साचे सच बणत बणाई। कलिजुग माया तनों जलाई। साची जोत विच देह जगाई। बाल अवस्था प्रभ सुन्न खुल्हाई। दीपक संग दीपक प्रभ जोत जगाई । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

होए आप सहाई। साचे प्रभ जन्म दवाया। आप आपणी सरन लगाया। साचा नाम जगत रखाया। गुरचरन सिँघ प्रभ लेख लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त होए सहाया। आदि अन्त प्रभ होए सहाई। गुरमुख साचे साची दात प्रभ झोली पाई। कुक्ख मात सुफल कराई। बाल अवस्था प्रभ साचे आत्म साची जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिरध बाल जवानां सद रिहा समाई। प्रभ साचे का राह न्यारा। जोत सरूप किया पसारा। सोहँ देवे नाम अधारा। जो जन करे चरन प्यारा। मदिरा मास तजे विकारा। उज्जल मुख विच संसारा। साचा प्रभ आत्म देवे जोत अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत करे आकारा। साचा प्रभ लेख लिखाए। लिक्खया लेख मिट ना जाए। गुरमुख साचा रहे सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाए। गुरमुख साचा शब्द कमावणा। मदिरा मास रसना मूल ना लावणा। रसना रस रस जीव आत्म रस उपजावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर वासी निज घर में पावणा। निज घर वासी दरस दिखाया। दे दरस प्रभ आत्म भुख मिटाया। हउमे ममता नास कर, सच सुच वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल मिलाया। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाए। सुरत शब्द गुरसिख लए जगाए। सुरत शब्द प्रभ आत्म धुंन दए उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा राग दए सुणाए। सुरती शब्द सुरत ध्यान। सुरत शब्द प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञान। सुरत शब्द प्रभ साचे की गुरसिख करे पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दा जाणी जाण। साचा शब्द जन कमाओ। रसना जप जप आत्म रस पाओ। प्रभ साचा हो जाए वस, निजानंद निज मांहि उपजाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख होए भुल्ल ना जाओ। बेमुखां प्रभ दर दुरकारे। सोहँ बाण प्रभ साचा मारे। आत्म होए अन्ध अंध्यारे। दिस ना आए प्रभ गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां करे ख्वारे। साचा प्रभ शब्द भण्डारे। साचा देवे नाम अधारे। निर्मल जोत आत्म करे उज्जयारे। गुरसिख मंगण प्रभ दर खड़े वड दरबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भरे शब्द भण्डारे। आत्म भरे शब्द भण्डारा। प्रभ साचे का सच वरतारा। रसना जप जीव प्रभ देवे मोख दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम सहारा। साचा प्रभ सदा सहायक। देवे दरस प्रभ सुखदायक। सर्ब जनां दा साचा नायक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा सदा सहायक। गुरप्रसाद गुर दया कमाए। दर घर आए प्रभ भोग लगाए। साध संगत सति प्रसाद प्रभ दए वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां दी पैज रखाए। भगत लगाए साची कार। प्रभ साचा सद जाए बलिहार। तरन तारनहार दातार। दर घर आए कारज जाए संवार। प्रगट जोत निहकलंक नरायण नर अवतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भोग लगाए

सच सच दरबार। साचे प्रभ भोग लगाया। गुरमुख साचे लेख लिखाया। तीन लोक प्रभ माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां दर घर सुहाया। गुर आए काज संवारया। प्रभ पूरन भरे भण्डारया। वर घर देवे आप निरंकारया। जोत सरूप प्रभ साचा भूप, साचा देवे नाम अधारया। गुरमुख तेरा काज संवारया। सतिजुग बणाए साचा दर, उपजाए विच मात आप गिरधारया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, रक्खे लाज आप मुरारया। साचा धाम प्रभ साचे उपजावणा। आपणा चरन निहकलंक टिकावणा। गुरमुख साचे साचा माण विच मात दवावणा। साचा ताज निहकलंक तेरे सिर टिकावणा। साचा डंक तेरे नाउँ वजावणा। चार जुग सति सति सति तेरा नाउँ रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रैण दिवस दिवस रैण सद सद रसना गावणा। रसन रसन रसन गुण गा। आप आपणा लए बणा। प्रभ अबिनाशी घर में पा। दु:ख भुक्ख प्रभ साचा दए गंवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई ना। जोत सरूप किरपा धारे। एका जोत करे चमत्कारे। चार कुन्ट कराए सोहँ जै जै जैकारे। गुरसिख तेरे सोहण बंक दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग देवे वड सिक्दारे। सतिजुग तेरी सिक्दारी। चार वरन होए पनिहारी। रक्खे लाज आप गिरधारी। कोए ना जाणे कलिजुग जीव, प्रभ की खेल कलि न्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जाए पैज संवारी। गुरमुख प्रभ चरन जोड़। माण दवाए विच तेतीस करोड़। आत्म कढ्ढे हउमे कोढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरनी लए जोड़। चरन कँवल गुरसिख प्यासा। प्रभ अबिनाशी आत्म करे साचा वासा। साची जोत प्रभ करे प्रकाशा। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जपाए स्वास स्वासा। बणत बणाए आप प्रभ, भए दयाला। बणत बणाए आप प्रभ, दीन दयाला। बणत बणाए आप प्रभ, सर्ब रखवाला। बणत बणाए आप प्रभ, सर्ब प्रितपाला। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ देवे साची माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ नाम देवे जगत सुखाला। बणत बणाए आप प्रभ, गुरसिख पैज संवारे। दर घर जाए प्रभ साचा तारे। बणत बणाए आप प्रभ, देवे माण विच संसारे। बणत बणाए आप प्रभ, दुतर तारे। बणत बणाए आप प्रभ, साचा लेख लिखे करतारे। बणत बणाए आप प्रभ, सुरत शब्द भरे भण्डारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच धारे। गुरसिख साची बणत बणाए। आप आपणी चरनी लाए। रिद्ध सिद्ध सभ वस कराए। नव निद्ध प्रभ घर उपजाए। आप आपणा हत्थ टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाए। गुरसिख प्रभ रक्खणेहारा। साचा गुर देवे मुक्त दुआरा। भगत वछल आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे वड्याई विच संसारा। आप आपणा भेद जणाया। जोत सरूपी खेल रचाया। प्रगट होए जोत सरूप प्रभ आप रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, अन्तकाल तेरा होए सहाया। गुरसिख तेरा प्रभ रखवाला। आत्म साचा दीपक बाला। जगत गंवाए मिटाए सर्ब जंजाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम सुखाला। सोहँ नाम जगत वड सूरा। प्रभ अबिनाशी देवे सतिगुर पूरा। अनहद धुन उपजावे तूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरा। सर्ब कला प्रभ समरथ। गुरसिख रक्खे दे कर हत्थ। सोहँ देवे साची वथ्थ। कर दरस गुरमुख साचे मानस जन्म ना आवे हथ्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख लिखाए मथ्थ। आपे आप लेख लिखावणहारा। सोहँ साचा वणज गुरसिख करे वपारा। साचे नाम प्रभ साचे दिया अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत रूप सर्ब पसारा। पसर पसार आप प्रभ करया। प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचे वरया। चरन लाग विच मात दे तरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवास करया। वाह वाह गुरसिख मिले वड्याई। वाह वाह गुर पूरे पूरन आस कराई। वाह वाह वड सूरे साची दात झोली पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़यां कलि मेल मिलाई। मेल मिलाए आप प्रभ, इक्क रंग राए। मेल मिलाए आप प्रभ, सर्ब सुखदाए। मेल मिलाए आप प्रभ, जोत सरूप बिध नाए। मेल मिलाए आप प्रभ, आपणी जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रगटाए। मिल्या मेल गुरसिख तृप्तास्सया। मिल्या प्रभ विच आत्म किया वास्सया। आत्म सहसा हउमे रोग विच्चों नास्सया। देवे दरस प्रभ अबिनास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद रक्खे वास्सया। गुरमुख साचा करे पुकार। प्रभ अबिनाशी करे जोत आकार। जोत सरूप प्रगट जोत देवे दरस अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा जाए तार। आप तारे दुःख दर्द निवारे। हउमे रोग प्रभ विच्चों मारे। आत्म सोग प्रभ निवारे। दरस अमोघ जोत चमत्कारे। कर दरस गुरमुख साचे जाउ चरन बलिहारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम अधारे। साचा नाम जिस जन कमाया। आप आपणे संग रलाया। साचा संग गुरसिख बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़यां कलि मेल मिलाया। साचे सन्त सच दस्सया राह। निहकलंक कलि पकड़ी बांह। प्रगटे जोत साचा प्रभ दूसर कोई ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरा होए सहाई सभनी थां। थान सुहंतर प्रभ रहंतर विच गगंतर जोत जगंतर जोत सरूपी तीन लोक भगवन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख वड्याए विच साध सन्त। तीन लोक प्रभ चरन दवारे। बैठे अडोल आप गिरधारे। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड प्रभ चरन पनिहारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड आप होए सिक्दारे। साचा प्रभ साची जोती। गुरमुख मिलाए चरन लगाए प्रभ आप बणाए एका गोती। कलिजुग जणाए हार बणाए माणक मोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म मैल गुरमुख धोती। प्रभ आवे आवे जावे। आपणा आप

ना किसे जणावे। भगत जनां प्रभ आप तरावे। एका धुन नाद उपजावे। आत्म सुन्न खोल्ह वखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे उप्पर दया कमावे। प्रभ की जोत जोत चमत्कार। प्रभ की जोत सदा निराहार। प्रभ की जोत गुरमुख साचे पावे सार। प्रभ की जोत जगे अगम्म अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत करे आकार। गुरमुख होए जोत प्रकाश। अज्ञान अन्धेर जाए विनास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सदा तेरे संग साथ। धन्न धन्न गुरसिख। प्रभ दर मंगी साची भिख। साचा प्रभ प्रगट जोत साचे लेख जाए कलि लिख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप शब्द लिखाए भविख। गुर पूरा दर भोग लगाए। साध संगत प्रभ दे वरताए। आप आपणी बूझ बुझाए। साची जोत विच देह जगाए। साचा ध्यान साचा ज्ञान प्रभ आप उपजाए। भगत भगवान प्रभ मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर तेरे भोग लगाए। गुरसिक्खां देवे प्रभ साचा दान। प्रभ दी जोत जगे महान। जुगो जुग प्रभ साचा गुरमुख साचे, प्रभ साचे की साची आण। देवे दरस जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। रसना जप साचा नाउँ। दरगाह साची पाए थाउँ। गुरमुख साचे विच मात रक्खे प्रभ साचा नाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतन हित तारे सभ गुड़गाउँ। गुरसिख सिख तेरी वड्याई। नाम भिक्ख भिक्ख भिक्ख प्रभ तेरी झोली पाई। लिख लिख लिख लेख प्रभ साचा लेख लिखाई। वेख वेख वेख प्रभ तेरी बणत बणाई। सतिजुग साचे महाराज शेर सिँघ दित्ती आप वड्याई। साचा धाम ऊँचा दर। सतिजुग बणे साचा सर। चार वरन दिसे एका घर। रसना जप जप जीव सभ जायण तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा देवे वर। वर घर प्रभ दर पाया। हरि हरि मंगल रसना गाया। हउमे विच्चों हँकार तजाया। एका ओट निहकलंक तेरी सरनाया। प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिशन सिँघ आण तराया।

मातलोक प्रभ तारन आया। धरे जोत आप रघुराया। साचा बाप किसे अन्त ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। निहकलंक अवतार धर। कलिजुग अन्त प्रभ जाए कर। सतिजुग साचा प्रभ देवे साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए अपर। सोहँ शब्द प्रभ जगत चलाया। सतिजुग साचा मार्ग लाया। चार वरन प्रभ इक्क कराया। ऊँच नीच प्रभ भेव मिटाया। आप आपणा रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ सतिजुग साचे जन्म दवाया। सतिजुग लै आए साचा रूप। धरे जोत प्रभ वड साचा भूप। जोत प्रकाश करे विच

अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत सरूप। जोत सरूप प्रभ जामा धारया। कलिजुग खेल करे अपारया। बेमुखां प्रभ गूढ़ी नींद सवाया। गुरमुखां प्रभ बाहों पकड़ आपणे चरन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाया। घनकपुरी प्रभ जामा धारे। एका जोत करे आकारे। सोहँ साचा शब्द धरे विच संसारे। चार वरन जपाए कराए जै जै जैकारे। साची दात महाराज शेर सिँघ विच मात वरतारे। जोत सरूप प्रभ भेख वटाया। आप आपणा आप छुपाया। गुरमुख साचे प्रभ बूझ बुझाया। प्रगट जोत जोत सरूप स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाया। घनकपुरी प्रभ जामा पाए। तीन लोक करे रुशनाए। आप अतुल सभ जगत तुलाए। सोहँ साचा बाण प्रभ शब्द लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक जामा घनकपुरी विच पाए। घनकपुरी होए धाम न्यारा। साची जोत धरे निहकलंक नरायण नर अवतारा। पारब्रह्म तेरे अचरज खेल, कलिजुग जीव ना पायण सारा। गुरमुख साचे प्रभ दर आयण, सोहँ शब्द प्रभ आत्म भरे भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक बणाए सचखण्ड दुआरा। सचखण्ड गुरचरन दुआरा। साची जोत धरे निहकलंक नर अवतारा। गुरमुख साचे प्रभ पाए सारा। बेमुखां कलि आई हारा। मदिरा मास करन रसन आहारा। गुरमुख साचे प्रभ अमृत झिरना झिराए अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत करे आकारा । साची जोत जगत प्रकाशे। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनासे। देवे दरस प्रभ अबिनाशे। गुरसिख जन्म होया रहिरासे। साचा प्रभ तेरे हिरदे वासे। जोत सरूपी जोत प्रभ भगत जनां दासन दासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम करे बन्द ख़ुलासे। दासन दास आप प्रभ होया। भगत जनां प्रभ दर खलोया। सोहँ साचा देवे ढोया। पूरब जन्म बीज जो बोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली जहान दोया। दो जहान आप प्रभ वाली। सर्ब जीआं हरि प्रभ पाली। गुरमुख साचे साची जोत तेरे आत्म दीपक बाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख खड़े दर सवाली। गुरसिक्खां प्रभ काज संवारे। कर किरपा प्रभ पार उतारे। जो जन आए प्रभ चरन दवारे। भगत वछल आप गिरधारे। रक्खे लाज प्रभ आप मुरारे। देवे दरस दिवस रैण अगम्म अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरे काज संवारे। गुरसिख तेरा काज संवारया। कर किरपा पार उतारया। जो जन आए चरन निमस्कारया। गुण अवगुण ना प्रभ विचारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आत्म भरे भण्डारया। साचा प्रभ शब्द भण्डारी। देवे शब्द जोत अधारी। एका शब्द सद निरँकारी। जुगो जुग मातलोक लए अवतारी। जोत सरूप जोत प्रभ, जन भगतां जाए पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द भरे भण्डारी। साचा शब्द प्रभ जगत चलाया। सोहँ साचा मुख रखाया। एका

आप एका जाप मात रखाया। चार वरन प्रभ इक्क कराया। राउ रंक प्रभ भेव चुकाया। एका अंक साचा डंक प्रभ आप वजाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाया। एका डंक प्रभ वजाए। सोहँ शब्द जगत चलाए। कलिजुग भेख सर्ब मिटाए। अलख अलेख प्रभ लेख लिखाए। सतिजुग साची प्रभ मेख लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाए। कलिजुग झूठा भेख मिटावणा। सोहँ साचा डंक वजावणा। सतिजुग साचा प्रभ साचे लावणा। एका आपणा नाम जगत धरावणा। चार वरन प्रभ चरन लगावणा। राणयां महाराणयां माण गंवावणा। एका छत्र निहकलंक सीस झुलावणा। वाली हिन्द प्रगट जोत प्रभ चरन लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्ावणा। आप आपणा भेद खुल्ाए। जोत सरूपी जामा पाए। जोत सरूपी जोत प्रभ आपणी जोत आप प्रगटाए। गोती गोत गोत प्रभ चार वरन इक्क गोत कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्ाए। आप आपणा प्रभ भेद खुल्ावणा। जोत सरूपी प्रगट जोत प्रभ दरस दिखावणा। राणा संगरूर प्रभ साचे आपणी सरन लगावणा। आया वक्त प्रभ साचे आपणा चरन मस्तूआणे जाए टिकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्ावणा। मस्तूआणे प्रभ चरन टिकाए। तीन लोक होए रुशनाए। राउ रंकां प्रभ साचा दया कमाए। साध संगत प्रगट जोत प्रभ साचा दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्ाए। मस्तूआणे प्रभ चरन टिकाणा। साध संगत प्रभ माण दवाणा। दिवस चाली प्रभ शब्द लिखाणा। दिवस रैण प्रभ एका रंग वरताणा। गुरमुख साचा प्रभ पेखे नैण, जोत सरूप प्रभ साचे दरस दिखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम चार वरन वरताणा। मस्तूआणा प्रभ धाम उपजाए। सतिजुग साचे प्रभ माण दवाए। आप आपणी जोत प्रगाए। लिख्त भविख्त प्रभ सच कराए। अगाध बोध बोध अगाध प्रभ साची लिख्त लिखाए। बेमुखां प्रभ जाए सोध, सोहँ साचा बाण लगाए। प्रगट जोत प्रभ वड जोधन जोध, कोए ठहिर ना पाए। गुरमुख साचे प्रभ रखाए गोद, सोहँ शब्द नाम जपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्ाए। गुरसिक्खां प्रभ गोद सुलाया। आत्म साची जोत जगाया। एका नाम रिदे वसाया। जोत सरूप प्रगट जोत प्रभ साचे दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्ाया। गुरमुखां प्रभ दरस दिखाए । आत्म साची जोत जगाए । अज्ञान अन्धेर प्रभ सर्ब मिटाए। सोहँ साची बत्ती लाए। बिन बाती बिन तेल प्रभ साची जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्ाए। गुरमुख आत्म सद उज्जयारी। आत्म वसे प्रभ गिरधारी। साची जोत प्रभ निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सर्ब करे आकारी। जोत सरूप प्रभ सर्ब आकारया। जोत सरूप प्रभ नैण मुँधारया। जोत

सरूप प्रभ धरे जोत विच संसारया। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारया। जोत सरूप प्रभ खेल रचाया। जोत सरूप प्रभ मेल मिलाया। जोत सरूप गुरमुख साचे प्रभ आपणा भेव खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाया। सुरती शब्द शब्द ध्यान। देवे शब्द सुरत भगवान। एका शब्द सोहँ आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। देवे दरस प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलईआ। सुरत शब्द प्रभ दरस दखईआ। सुरत शब्द प्रभ जगत तरईआ। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे इक्क करईआ। सचखण्ड प्रभ तेरा वास। साचा प्रभ सदा अबिनाश। जोत सरूप सर्ब गुणतास। एका जोत करे प्रकाश। गुरमुख साचे सद रक्खे वास। भगत जनां प्रभ होए दास। कर दरस गुरमुख साचे दुःख जायण नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रास। मानस जन्म गुर संवारया। जो जन आए चरन निमस्कारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। वेले अन्त प्रभ जोती जोत मिला रिहा। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम बहा रिहा। गुरसिक्खां धाम न्यारा। जगे जोत अगम्म अपारा। एका दीसे आप निरँकारा। जोत सरूप सदा निरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगत आकारा। गुरसिख सच धाम बहाए। आप आपणी जोत जगाए। देवे दरस प्रभ रघुराए। आत्म साचा दीप जगाए। जगे दीप होए रुशनाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाए। गुरसिक्खां प्रभ मेल मिलाया। प्रगट जोत विच मात प्रभ दरस दिखाया। सोहँ देवे साची करामात, रसना जप जीव आत्म रस पाया। साची देवे चरन प्रीत, कर दरस गुरसिख मानस जन्म सुफल कराया। आत्म रहे सदा अतीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सद होए सहाया। गुरसिख सच घर बहाए। साचा प्रभ सिर हत्थ टिकाए। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। मात गर्भ विच फेर ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साची जोत मिलाए। गुरसिख साचे प्रभ दया कमाए। आप आपणा दरस दिखाए। हउमे ममता रोग मिटाए। सुन्न समाध प्रभ खुल्हाए। आत्म झिरना प्रभ देह झिराए। अमृत बूंद मुख कँवल चुआए। खुल्हे कँवल होए उज्जयार, दसम दुआर प्रभ दे खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए। दसम दुआर प्रभ खुल्हाया। आप आपणा भेव चुकाया। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाया। अनहद साची धुन दए वजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी नज़री आया। गुरमुख साचे प्रभ दरस कर। एका दीसे साचा घर। कलिजुग प्रभ चरन लाग मूल ना डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस भवजल तर। जोत सरूप जगत अधारया। कर किरपा गुरसिख साचा पार उतारया। धरे जोत प्रभ आप बनवारया। जोत सरूप प्रभ निराहारया। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत निरँकारया । साची जोत मात प्रगटाए। बाशक सेज प्रभ तजाए। नैण मुँधारी विच मात दे आए। आप आपणी कल वरताए। सृष्ट सबाई प्रभ भुलाए। गुरमुख साचे प्रभ साची बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस आप रघुराए। साचे प्रभ साची कारा। साची जोत करे आकारा। धरे जोत निहकलंक नरायण नर अवतारा। पारब्रह्म तेरा अचरज खेल, कोई ना पावे सारा। बेमुखां प्रभ जाए बेड़ा ठेलू, कलिजुग जीव भुल्ले संसारा। गुरमुख साचे प्रभ चरन मेल, जोत सरूपी दे सहारा। जुगो जुग प्रभ मात विच आए। आप आपणी जोत प्रगटाए। बेमुख कलि बूझ ना पाए। गुरमुख साचे प्रभ आत्म साची जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाए। दुःख दुःख प्रभ दुःख गंवाया। सुख सुख प्रभ आत्म सुख वसाया। भुक्ख भुक्ख प्रभ आत्म भुक्ख गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म सिंच हउमे रोग गंवाया। अमृत मेघ प्रभ बरसाए। साध संगत प्रभ दया कमाए। दुरमति मैल प्रभ सर्ब गंवाए। सोहँ शब्द प्रभ नाम दवाए। प्रगट जोत जोत सरूप स्वच्छ सरूप दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे बजर कपाट तेरा खोलू वखाए। साचा प्रभ साचा दर। चरन लाग गुरसिख जाए तर। सोहँ साचा शब्द प्रभ आत्म देवे साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द भण्डारी जाए भण्डारे भर। आत्म देवे शब्द अधार। एका जोत करे आकार। दिसे विच आप निराधार। देवे दरस गुरमुख साचे प्रभ साचा किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई चिट्टे असव असवार। साचा प्रभ असव असवारा। गुरमुखां देवे दरस अपारा। आत्म साची जोत करे उज्जयारा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निगम करे विचारा। जोत जोत जोत प्रभ कलि जोत आकारे। जोत जोत जोत कलि पसर पसारे। जोत जोत जोत एका जोत जगत वरतारे। जोत जोत जोत साची जोत सदा निराधारे। जोत सरूप निहकलंक नरायण नर अवतारे। जोत जोत जोत जन भगतां जाए काज संवारे। जोत जोत जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सची निरँकारे। जोत जोत जोत प्रभ भगत उधारा। जोत जोत जोत वरते विच संसारा। जोत जोत जोत सोहँ साचा देवे नाम अधारा। जोत जोत जोत साची जोत चार कुन्ट करे उज्जयारा। जोत जोत जोत चार वरन सोहँ शब्द करे वरतारा। जोत जोत जोत गुरमुखां देवे नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतारा। जोत जोत जोत जगत का दाता। जोत जोत जोत प्रभ सर्ब का ज्ञाता। जोत जोत जोत प्रभ सृष्ट सबाई पित माता। जोत जोत जोत प्रभ गुरसिख साचे प्रभ बख्शे चरनी नाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साची दाता। जोत जोत जोत प्रभ जोत वरतंत। जोत जोत जोत प्रभ साची जोत जगावे विरले सन्त। जोत जोत जोत प्रभ जोत सदा इकन्त। जोत जोत

७१६
०१

जोत प्रभ एका जोत भगत भगवन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत धरे सर्ब जीव जन्त। जोत जोत जोत प्रभ जोत आकारे। जोत जोत जोत प्रभ जोत निराहारे। जोत जोत जोत प्रभ वड संसारे। जोत जोत जोत प्रभ प्रगट जोत निहकलंक सृष्ट सबाई करे ख्वारे। जोत जोत जोत प्रभ चार वरन करे पनिहारे। जोत जोत जोत प्रभ सोहँ देवे सतिजुग सची सिक्दारे। जोत जोत जोत प्रभ एका जोत जगत निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत मात आकारे। जोत जोत जोत प्रभ जगत जगावे। जोत जोत जोत प्रभ जगत भुलावे। जोत जोत जोत प्रभ गुरसिख तरावे। जोत जोत जोत प्रभ बेमुख खपावे। जोत जोत जोत प्रभ आपणी जोत जगावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त करावे। जोत जोत जोत प्रभ कलि साची जोत जगायके। जोत जोत जोत प्रभ आपणा भेव खुल्हायके। जोत जोत जोत प्रभ जाए कलिजुग भेख मिटायके। जोत जोत जोत प्रभ सोहँ शब्द जाए जगत वरतायके। जोत जोत जोत प्रभ एका अंक साचा डंक जाए वजायके। जोत जोत जोत प्रभ चार वरन जाए इक्क करायके। जोत जोत जोत प्रभ ऊँच नीच जाए भेव मिटायके। जोत जोत जोत प्रभ राउ रंक जाए इक्क करायके। जोत जोत जोत प्रभ साची जोत मात प्रगटायके। जोत जोत जोत प्रभ कलिजुग जाए अन्धेर गंवायके। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल वरतायके। जोत
७२० ०१ जोत जोत प्रभ विच मात दे आया। जोत जोत जोत प्रभ जोत सरूपी खेल रचाया। जोत जोत जोत प्रभ जोत सरूप विच सिख समाया। जोत जोत जोत प्रभ बेमुखां दिस ना आया। जोत जोत जोत प्रभ गुरमुख साचे बूझ बुझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हाया। जोत जोत जोत प्रभ कलि मात प्रगटाई। जोत जोत जोत प्रभ एका जोत देवे वड्याई। जोत जोत जोत एका जोत प्रभ रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत करे रुशनाई। जोत जोत जोत प्रभ मात प्रगटाए। जोत जोत जोत प्रभ एका जोत जगत धराए। जोत जोत जोत प्रभ कलिजुग धाम सभ मेट मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। निहकलंक जामा पाया। निहकलंक सोहँ साचा डंक वजाया। निहकलंक एका अंक विच जगत धराया। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हाया। निहकलंक जोत प्रगटाए। अठसठ तीर्थ माण गंवाए। तट्ट तीर्थ कोई रहण ना पाए। प्रगट जोत निहकलंक सर्ब जोत खिचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। गंगा तेरा गया सीर। खिच्चे जोत जिहड़ी कटे ज़ंजीर। दिवस रैण रैण दिवस पई रहे वहीर। बिन प्रभ साचे कोए ना देवे धीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अमृत बख्शे जिउँ बालक माता सीर। गोदावरी प्रभ गोद सवाई। वेले अन्तकाल कलि तेरी ब्याध मिटाई। साची जोत

प्रभ साचे खिच्च वखाई। सोहँ साचे शब्द विच मात मिले वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्तिम अन्त कराई। साचे प्रभ शब्द चलाया। चार कुन्ट हाहाकार कराया। गुरमुख साचे तेरी रसना सोहँ जै जै जैकार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हाया। सोहँ शब्द मिले वड्याई। साचा प्रभ होए सहाई। कुरान अञ्जील कोई रहण ना पाई। चार यारां संग मुहम्मद प्रभ साचे खेल मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत कलिजुग अन्तिम तेरा अन्त कराई। पंचम देवे प्रभ वड्याई। पंचम विच प्रभ रिहा समाई। पंचम प्रभ जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरा भेव ना लखिआ जाई। पंचम प्रभ पंचम मारया। कर किरपा पार उतारया। सोहँ साची धुन प्रभ आत्म उपजा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखा रिहा। पंचम प्रभ सदा आदेसा। पंचम प्रभ सदा प्रवेसा। पंचम प्रभ प्रभ साचे का साचा वेसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भेव ना जाणे ब्रह्मा विष्न महेषा। गुरसिख साचे प्रभ साचा तारे। गुरमुख साचे प्रभ पार उतारे। बेमुखां प्रभ डोबे विच मञ्झधारे। गुरसिक्खां प्रभ आत्म जोत करे उज्जयारे। बेमुखां आत्म होए अन्ध अंध्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँकारे। गुरमुख साचा प्रभ साचे तारया। गुरमुख साचे प्रभ भरे भण्डारया। गुरमुख साचे प्रभ देवे शब्द अधारया। गुरमुख साचे रसना सोहँ होए जै जै जैकारया।
७२१ ०१ गुरमुख साचे प्रभ तेरे सोहण चरन दवारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारा वारया। गुरमुख साचे ७२१ ०१
सच घर पाया। गुरमुख साचे प्रभ साचा रिदे वसाया। गुरमुख साचे प्रभ आपणा भेव चुकाया। गुरमुख साचे प्रभ दर आए आपणा भरम गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेद खुल्हाया। गुरमुख साचे प्रभ दर सूज्झया। गुरमुख साचे प्रभ साचा बूज्झया। गुरमुख साचा प्रभ चरनी झूज्जया। गुरमुख साचे प्रभ आत्म भेव खुल्हावे गूज्झया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगावे, अन्धेर गंवाए दूज्जया। गुरमुख प्रभ दर्शन पाए। गुरमुख आत्म साची जोत जगाए। गुरमुख साचा सोहँ रसना गाए। गुरमुख साचा प्रभ साचे सदा संग समाए। गुरमुख साचा दर घर वर प्रभ साचा पाए। गुरमुख साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगाए। गुरमुख साचे तेरी पूरन घाला। गुरमुख साचे प्रभ सोहँ देवे साची माला। गुरमुख साचे प्रभ आत्म तोड़े तेरे सर्ब जंजाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त तेरा सदा रखवाला। गुरमुख साचे प्रभ माण दवाया। वेले अन्त प्रगट जोत प्रभ साचे दरस दिखाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, विच जोती मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा साचे धाम बहाया। गुरमुख साचा सच धाम बहा के। सचखण्ड प्रभ सच निवास दवा के। आप आपणा सिर हत्थ टिका के। दर दरबान प्रभ बहा के। देवे वड्याई विच मात दया कमा

के। उधरे गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरा नाम रसना गा के। चौथे जुग प्रभ कर्म कमाए। तीन लोक प्रभ दे उलटाए। मात पाताल आकाश प्रभ एका जोत समाए। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड प्रभ साचा दे उलटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दरगाह साची माण दवाए। गुरमुख साचे मिली वड्याई। उच्च पदवी प्रभ दर ते पाई। साची सेव निहकलंक तेरे चरन कमाई। वेले अन्त मिल्या साचा मेल प्रभ विच बैकुण्ठ निवास रखाई। देवे वड्याई विच देवी देव, करोड़ तेतीस विच चरन बहाई। बिरथा ना जाए गुरसिख तेरी सेव, प्रभ दर आए जो कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिख तेरा होए सहाई। चौथे जुग प्रभ अन्त कराया। दर दरबान ध्रू हटाया। जोत सरूपी जोत प्रभ जोती जोत मिलाया। गुरमुख साचे साची दरगाह माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सवरन विच चरन बहाया। सतिजुग चले साची गाथा। चलाए आप त्रैलोकी नाथा। गुरमुख साचे प्रभ सदा संग साथा। सोहँ शब्द चलाया साचा राथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लेख लिखाए माथा। गुरसिख सच धाम बहाया। विच मात प्रभ वड्आया। गुरमुख साचे प्रगट जोत निहकलंक साचे लेख लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सवरन दर दरबान बहाया। सिँघ सवरन सच घर पाया। प्रभ अबिनाशी सद सरनाया। दिवस रैण रैण दिवस दर घर साचा गुरसिख पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे माण दवाया। साचा प्रभ भरम चुकाए। नाथ त्रैलोकी विच मात दे आए। तीन लोक प्रभ लेख लिखाए। ब्रह्मलोक ब्रह्मा तजाए। कलिजुग अन्त प्रभ साचा माण गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत प्रगटाए। ब्रह्मे ब्रह्मलोक तजाया। प्रभ अबिनाशी विच समाया। जोत सरूपी जोत मिल, आवण जावण गेड़ कटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धार तीन लोक दे उलटाया। ब्रह्मलोक ब्रह्मा तजाया। आप आपणा मुख छुपाया। एका प्रभ जुगो जुग, दूसर कोए रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमाया। ब्रह्मा ब्रह्मलोक तजा के। साची जोत विच समा के। सृष्ट सबाई गुरसिख साचे हत्थ फड़ा के। सतिजुग साची बणत बणा के। निहकलंक ओट रखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाए माण दवा के। गुरमुख साचा सच धाम पुजाया। साचे प्रभ सच कर्म कमाया। सृष्ट सबाई प्रभ हत्थ फड़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मलोक दे उलटाया। मातलोक प्रभ कर्म कमाए। पंज तत्त दी देह तजाए। आप आपणा भेव छुपाए। जोत सरूपी खेल रचाए। अग्न जोत जगत लगाए। चार कुन्ट हाहाकार कराए। आप अडोल सभ सृष्ट डुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप भुलाए। जोत सरूपी खेल न्यारा। जोत सरूपी वरते विच संसारा। जोत सरूपी प्रभ पसारा। जोत सरूपी प्रभ नर अवतारा। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना पायण सारा। कलिजुग जीव प्रभ भुलाया। प्रभ साचे दी साची माया। आप आपणा मूल गंवाया। मदिरा मास रसन विकार चलाया। वेले अन्त धर्म राए दए सज़ाया। बिन प्रभ साचे कोए ना होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर्क निवास रखाया। जो जन होए मदिरा मासी। वेले अन्त नर्क निवासी। कोए ना करे बन्द ख़ुलासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए घनकपुर वासी। सो सुहाए थान जिथ्थे प्रभ चरन टिकाया। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ रोग मिटाया। सो सुहाए थान, साध संगत प्रभ अमृत मेघ वरसाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ आसा पूरी। सो सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ सदा हज़ूरी। सो सुहाए थान, जिथ्थे साध संगत देवे आत्म नूरी। सो सुहाए थान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बख्शे चरन धूढ़ी। सो सुहाए थान, प्रभ भए अनन्दा। सो सुहाए थान प्रभ साची दात दर घर आए दिन्दा। सो सुहाए थान, प्रभ शब्द सरूप खोल्ह वखाए आत्म जिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस धाम चरन रखंदा। सो सुहाए थान, प्रभ जोत जगाई। सो सुहाए थान, प्रभ साध संगत तराई। सो सुहाए थान, प्रभ गुरसिक्खां दे वड्याई। सो सुहाए थान, प्रभ आए पूरन आस कराई। सो सुहाए थान, प्रभ दुखियां दुःख मिटाई। सो सुहाए थान, प्रभ जोती जोत जगाई। सो सुहाए थान, चरन लाग जन जायण भुल बख्शाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां दया कमाई। सो सुहाए थान, प्रभ पैज रखाए। सो सुहाए थान, प्रभ जोत जगाए। सो सुहाए थान, प्रभ आत्म सोग मिटाए। सो सुहाए थान, गुरमुख साचे प्रभ हउमे रोग गंवाए। सो सुहाए थान, सोहँ साचा जोग प्रभ गुरसिख झोली पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा सदा होए सहाए। साचे धाम प्रभ चरन टिकाया। दवाए माण जो जन आए सरनाया। साचा नाम सोहँ दान, प्रभ साचे झोली पाया। चरन भगवान साचा इशनान, गुरसिख साचा प्रभ दर आए नहाया। देवे दरस विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच सद समाया। गुरमुख साचे भेद खुल्हाए। कर किरपा तीजा नैण खुल्हाए। प्रगट जोत स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम साची जोत जगाए। गुरसिख आत्म तेरी उज्जयार। साचा प्रभ तेरे भरे भण्डार। सांतक साचा शब्द प्रभ आत्म देवे अधार। एका जोत जगे निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाए तार। गुरमुख साचे प्रभ बूझ बुझाई। आत्म बुझी दीव प्रभ साचे फेर जगाई। झूठी देह विच अन्ध कूप, साची जोत करे रुशनाई। साची जोत प्रभ अनूप, अज्ञान अन्धेर दे मिटाई। दीसे प्रभ सति सरूप, जोत सरूप प्रभ दरस दिखाई। प्रभ की महिंमा बड़ी अनूप, गुरमुख विरले बूझ बुझाई। ना दीसे रंग रूप, जोत सरूप गुरसिख समाई। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी बणत बणाई। गुरसिख गुरचरन द्वार। प्रभ साचा सर्ब तारनहार। देवे दरस जोत आकार। एका दिसावे दर प्रभ हरि का द्वार। अमृत देवे आत्म साचा सर बरखे किरपा धार। सोहँ देवे प्रभ साचा वर, गुरमुख साचे रसन उचार। कलिजुग जीव अन्त जायण तर, कर दरस निहकलंक अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सरन पड़, अन्तकाल ना आवे हार। वेले अन्त प्रभ होए सहाई। धर्म राए ना दए सज़ाई। साचा प्रभ विच लए बबाण बिठाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरा होए सहाई। गुरमुख साचा सच रंग रंगाया। सोहँ साचा नाम प्रभ रिदे वसाया। एका साचा थाउँ प्रभ चरन दिसाया। प्रभ पार उतारे पकड़ बाहों महाराज शेर सिँघ साचा कर्म कमाया। प्रभ साचा खेल न्यारी। कलिजुग जीव भुल्ले संसारी। भुलाए आप जोत सरूप प्रभ निराधारी। वेले अन्त अन्तकाल कलिजुग जीवां होए ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप वरते विच संसारी। जोत सरूप विच संसारा। प्रभ साचे का भेव न्यारा। सर्ब जीआं का सद वरतारा। आपणे रंग रवे करतारा। बेमुख जीवां करे ख्वारा। गुरमुखां सद पार उतारा। सोहँ देवे नाम अधारा। गुरमुख विरले प्रभ साचा देवे मोख दुआरा। बेमुख जीवां अन्तकाल नर्क निवास दुःख लग्गे भारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरते विच संसारा। आपणी कल आप वरताए। कलिजुग झूठी माया पाए। कलिजुग जीवां सर्ब भुलाए। आप आपणा लए छुपाए। बेमुख जीवां दिस ना आए। गुरमुखां प्रभ जोत जगाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। आप आपणा भेद खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़यां कलि मेल मिलाए। विछड़यां प्रभ मेल मिलाया। पूरब लहणा लहिणे पाया। लिक्खया लेख ना किसे मिटाया। साचे प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाया। गुरमुख साचे मेल मिलाए। आप आपणा दरस दिखाए। सोहँ साचा नाम जपाए। आत्म साची जोत जगाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। सुन्न समाध प्रभ खुल्हाए। स्वच्छ सरूप दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म संसा जाए लाहे। गुरसिख प्रभ दया कमाया। अनहद साची धुन उपजाया। सोहँ साचा नाद वजाया। साचा राग प्रभ सुणाया। पहली माघ शब्द लिखाया। सुण सुण सुण गुरसिख आत्म रोग मिटाया। चुण चुण चुण गुरमुख साचे प्रभ साचे चरन लगाया। रुण रुण रुण झुण प्रभ आत्म रुण झुण उपजाया। पुण पुण पुण प्रभ बेमुख पुण, अन्त कलि आपणा आप छुपाया। सुण सुण सुण प्रभ साचा सुण गुरमुखां दर्शन पाया। गुण गुण गुण सोहँ साचा गुण प्रभ साचे झोली पाया। धुन धुन धुन प्रभ आत्म साची धुन उपजाया। सोहँ साचा शब्द सुण, प्रभ आत्म अन्धेर दे मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। साचा प्रभ सच कर्म कमाए। जुगो जुग जन भगतां पैज रखाए। जुगो जुग मातलोक प्रभ जोत प्रगटाए। अछल अछल्ल

छल आप कराए। आप अछल्ल ना छलया जाए। बावन रूप धार बल दर प्रभ मंगण जाए। जोत सरूपी भेख कर, चार वेद प्रभ पाठ सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा मातलोक विच पाए। जोत जगाए रमईआ राम। जोत प्रगटाए घनईआ शाम। निहकलंक नाम रखाए, सोहँ जपाए साचा नाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे पूर कराए काम। साचे प्रभ जामा धारया। आप आपणा बिरद संवारया। जोत सरूप किया आकारया। सृष्ट सबाई प्रभ भुला रिहा। गुरमुख विरले प्रभ बाहों पकड़ तरा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल कलि वरता रिहा। अचरज खेल प्रभ की वरते। किया आकार जोत सरूपी करते। होया पसार उप्पर धरते। प्रभ का भाणा सर्ब जग वरते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे काज संवार जो जन आए दर ते। जो जन आए दर भिखारी। साचा प्रभ सोहँ देवे नाम ख़ुमारी। गुरमुखां प्रभ सोहँ शब्द भरे भण्डारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर सचा दरबारी। सचा दर सचा दरबारा। निहकलंक जोत आकारा। कलिजुग जीव भुल्ले संसारा। गुरमुख बूझे कर विचारा। रक्खे लाज आप मुरारा। देवे दरस अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी पावे सारा। सर्ब जनां प्रभ आपे जाणे। आप आपणा भेख दिखाणे। गुरमुख विरला प्रभ रंग माणे। जो जन चले प्रभ के भाणे। सो जन होए सुघड़ स्याणे। साची दरगाह माण दवाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाणे। रसना जप आत्म रस पाया। प्रभ अबिनाशी रिदे वसाया। दर घर घर दर प्रभ साचा पाया। आत्म भउ सर्ब गंवाया। एका नाउँ रसना गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाया। जो जन आयण प्रभ दरस भिखारी। साचा प्रभ आत्म जोत करे उज्जयारी। निरगुण सरगुण रूप प्रभ सर्ब पसर पसारी। विच अन्ध कूप प्रभ साची जोत करे उज्जयारी। प्रगट जोत साचा भूप, प्रभ गुरसिक्खां जाए पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए आप लिखारी। भगत जनां प्रभ लेख लिखाए। बहत्तर जामे प्रगट कराए। गुर गोबिन्द लिख्त सच कराए। वेले अन्त निहकलंक गया ओट रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप आप आपणे विच समाए। आप आपणे विच समाया। आप आपणा खेल रचाया। आप आपणा भेद छुपाया। आप आपणा कर्म कमाया। आप आपणा राग चलाया। आप आपणा नाम धराया। आप आपणा दरस दिखाया। आप आपणा गुरमुख साचे प्रभ भेव चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दूजा भउ मिटाया। एका दूजा प्रभ भउ चुकाए। एका ओंकार जोत कराए। एका रंग अपार प्रभ जगत चढ़ाए। एका शब्द अधार चार वरन रखाए। एका इक्क संसार, प्रभ साचा मार्ग लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए। एका शब्द जगत चलाणा। एका मार्ग प्रभ साचे पाणा। एका नाम

चार वरन रसना गाणा। एका दर एका दरबार प्रभ साचे दिसाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग भेख वेले अन्त सर्ब मिटाणा। एका दीसे दर दरबार। एका दीसे हरि का द्वार। एका दीसे नैण मुँधार। एका दीसे वड सिक्दार। एका दीसे सोहँ शब्द जगत अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक वरतावे विच संसार। एका आप एका सृष्टी। एका जाप एका दृष्टी। एका बाप एका इष्टी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए नौं खण्ड सृष्टी। एका शब्द प्रभ चलाणा। सतिजुग साचा माण दवाणा। आप आपणा सिर हत्थ टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक साची टेक निहकलंक रखाणा। निहकलंक एका ओट। सोहँ शब्द आत्म लगावे प्रभ साची चोट। साचा शब्द प्रभ भण्डारी कदे ना आवे तोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी आत्म कढ्ढे खोट। गुरसिख साचा प्रभ रंग राता। साचा प्रभ देवे साची दाता। एका बख्शे प्रभ चरनी नाता। सोहँ देवे प्रभ साची करामाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि विरले गुरमुख पछाता। जाणे सो जिस आप जणाए। कलिजुग जीव भेव ना पाए। आप आपणा चले गंवाए। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। जोत सरूप प्रभ रिहा समाए। झूठी माया प्रभ साचा पाए। लब लोभ विकार वधाए। काम क्रोध सर्ब सताए। झूठे धन्दे जगत भुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी कल वरताए। झूठे धन्दे जगत भुलाया। आपणा आप ना किसे जणाया। गुरमुख साचे प्रभ साची बूझ बुझाया। सोहँ शब्द जन हिरदे वाचे, देवे दरस आप रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा पार कराया। गुरसिक्खां प्रभ पार कराए। आप आपणी दया कमाए। दरगाह साची माण दवाए। सचखण्ड निवास रखाए। आवण जावण गेड़ चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच जोती मेल मिलाए। मेल मिलाए आप प्रभ, कलि किरपा धार। मेल मिलाए आप प्रभ, गुरसिक्खां जाए तार। मेल मिलाए आप प्रभ, सोहँ देवे शब्द अधार। मेल मिलाए आप प्रभ, देवे दरस अगम्म अपार। मेल मिलाए आप प्रभ, एका जोत करे आकार। मेल मिलाए आप प्रभ, हउमे रोग जाए निवार। मेल मिलाए आप प्रभ, सच सुच्च करे वरतार। मेल मिलाए आप प्रभ, सोहँ शब्द भरे भण्डार। मेल मिलाए आप प्रभ, आत्म उपजावे साची धुन्कार। मेल मिलाए आप प्रभ, आत्म जोत करे उज्जयार। मेल मिलाए आप प्रभ, खोल्ह देवे दस्म दुआर। मेल मिलाए आप प्रभ, जोत सरूप दिसे गिरधार। मेल मिलाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मातलोक विच जामा धार। मेल मिलाए आप प्रभ, कलि बणत बणाए। मेल मिलाए आप प्रभ, गुरमुख साचे दरस दिखाए। मेल मिलाए आप प्रभ, आत्म साची जोत जगाए। माण गंवाए आप प्रभ, आत्म त्रिकुटी खोल्ह वखाए। मेल मिलाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए। मिल्या मेल भगत भगवान। सुरत शब्द

सच ध्यान। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। देवे दरस विष्नूं भगवान। जोत पवण पवण जोत जिउँ भगत भगवान। एका जोत गोत पूरन सन्त सो जन होत। बेमुख दर ते जायण रोत। बेमुख सो जिस प्रभ भुलाया । बेमुख सो जिस प्रभ डुलाया। बेमुख सो जिस सोहँ नाउँ ना रसना गाया। बेमुख सो प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त दे सज़ाया। बेमुख प्रभ दर ना बूज्झया। रसन विकारी रसना लूज्झया। मदिरा मास सच अमृत सूज्झया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्हाए गूज्झया। सन्त जनां प्रभ हिरदे वसे। साचा मार्ग प्रभ साचा दस्से। आत्म करे जोत प्रकाश कोट रवि सस्से। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर बेमुख जायण नस्से। सन्त जनां प्रभ भेव खुल्हाए। सुरत शब्द दा मेल मिलाए। अगाध बोध बोध अगाध प्रभ साचा शब्द लिखाए। धन्न धन्न धन्न सन्त जन, प्रभ साचा बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ माण दवाए। सन्त मनी सिँघ बूझ बुझाई। आत्म साची जोत जगाई। आत्म धुन प्रभ उपजाई। साची कलम हत्थ फड़ाई। सृष्ट सबाई लेख लिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्त सिर हत्थ टिकाई। साचे सन्त सिर हत्थ टिकाया। आप आपणा शब्द चलाया । साची धुन प्रभ उपजाया। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ साचे साची सेवा लाया। बेमुख डोबे प्रभ वहन्दे वहिण साचा लेख लिखाया। गुरमुख साचे सच रस लैण, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया। खोल्ह देवे प्रभ तीजा नैण, जिस जन सोहँ रसना गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां होए सहाया। साचे सन्त कलम चलाई। सर अमृत गया लेख लिखाई। वेले अन्त अन्तकाल कलि थेह हो जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा धाम मस्तूआणा दे उपजाई । बाल अवस्था प्रभ कर्म कमाया। सर अमृत प्रभ चरन टिकाया। अर्जन लिखे लेख, प्रभ साचे पूर कराया। कलिजुग जीव ना जाणे भेव, जोत सरूप प्रभ खेल रचाया। झूठे जीव रहे वेखा वेख, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर अमृत चरन टिकाया। साचा प्रभ शब्द उपजाए। सन्त मनी सिँघ धुन सुणाए। पूरन कर्म सन्त कमाए। रंग रंगीला माधव आत्म भुक्ख मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। साचे प्रभ हुक्म सुणाया। शब्द सरूपी धुन उपजाया। सन्त मनी सिँघ पूरन कर्म कमाया। प्रभ साचा साचे दर साचे घर साचा सन्त बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिक्खया लेख पूर कराया। हरि मन्दर हरि का धाम। जोत सरूप आया राम। बेमुखां ना दीसे घनईआ शाम। कलिजुग जोत प्रगटाए निहकलंक धराए नाम। कलिजुग जीव भुलाए, पूर कराए काम। आपणी कल वरताए, साच भुलाए नाम। गुरमुख विरले प्रभ साचा पकड़ उठाए, सोहँ पिलाए साचा जाम। स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखाए, नज़री आए घनईआ शाम। प्रभ अबिनाशी गुरसिख साचा

पाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम। साचा नाम आत्म रस। प्रभ अबिनाशी हो जाए वस। साचा शब्द ज्ञान प्रभ साचा जाए दस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हिरदे रिहा वस। गुरमुख साचे प्रभ साचे देख। जोत सरूपी कलिजुग किया भेख। बेमुख जीवां प्रभ आप लिखाए लेख। गुरमुख साचे प्रभ मिटाई झूठी रेख। कलिजुग जीव वेले अन्त कलि रहे वेखा वेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी तेरा भेख। जोत सरूपी भेख प्रभ किया। गुरमुख साचे तेरी आत्म जोत जगाया दिया। सतिजुग साचे प्रभ साचे तेरी रखाई नीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द ज्ञान सतिजुग साचे दिया। गुर मिल हरि जस गाईए। प्रभ अबिनाशी घर में पाईए। सर्ब सुख निज घर वसाईए। दु:ख भुक्ख सभ जगत तजाईए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रैण दिवस दिवस रैण तेरे गुण गाईए। गुर गोबिन्द दोए घर आए। दर घर साचा जाए सुहाए। साचा दरबार विच मात बण जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दया कमाए। गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर। मिल्या मेल लिक्खया धुर। गुरमुख साचे प्रभ चरन जुड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दर ख़ाली ना होए, प्रभ साचे लिक्खया धुर। बेमुख दर आए नाचे, प्रभ साचा ना हिरदे वाचे, आत्म झूठी गई खुर। गुरमुख साचे प्रभ ढाले सांचे, मिल्या मेल साचे गुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई विच सुर। सुरप्त राजा प्रभ चरन बहाया। करोड़ तेतीस खड़े दर सीस झुकाया। इक्कीस बीस बीस इकीस प्रभ रहे समाया। गण गंधर्ब गुरसिख साचे सिर फूलन बरखा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा साचा लेख लिखाया। लिक्खया लेख भगत निराला। साचा प्रभ होए रखवाला। चरन प्रीती गुरसिख तेरी निभे नाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी करे सदा प्रितपाला। गुरसिक्खां प्रभ सद प्रितपाले। चरन प्रीती निभे नाले। गुरमुख साचे प्रभ चरन आस रखा ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा संग तेरे नाले। सदा संग सज्जण सुहेला। गुरमुख साचे प्रभ साचे का साचा मेला। बेमुख कलिजुग जीव अन्त होए दुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग प्रभ साचा सज्जण सुहेला। साचा प्रभ साचा मीत। गुरमुख साचे रसना चीत। प्रभ साचा साची प्रभ की रीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन प्रीत। चरन प्रीत गुरसिख कमाए। साचा वर प्रभ दर ते पाए। साचा सर अमृत झिरना विच देह झिराए। अवतार नर प्रगट जोत दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल मिलाए। किशना पख सदा अन्धेरा। जीव ना जाणे सञ्झ सवेरा। जीव ना जाणे प्रभ नेरन नेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई ना लाए देरा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाशा। पवण सरूप प्रभ चलाए स्वासा। बणत बणाए आपणी रहिरासा। जीव उपाए जोत टिकाए सर्ब जीव प्रभ रक्खे वासा। आपणा आप छुपाए

७२८
०१

दिस ना आए बैठा वेखे जीव तमाशा। बणत बणाए लाज रखाए विच गर्भासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रक्खे वासा। उलटा बिरख जीव लगाया। प्रभ साचे दी साची माया। आप आपणा विच वसाया। जीव देखे प्रभ दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी बणत बणाया। सर्ब जीआं दी बणत बणाए। काया आकार आप कराए। विच अन्ध अन्धेर प्रभ साचा होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत अधार रखाए। एका जोत जीव अधार। साची जोत विच आकार। बैठा प्रभ विच निराधार। दवाए जन्म विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे अपार। साचा प्रभ पूरन भगवाना। किरपा करे बिरधां बाल जवानां। सोहँ देवे आत्म साचा नाम ज्ञाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दा जाणी जाणा। साचा प्रभ सुणे पुकार। देही दुःख दए निवार। वलिया छलिया इन्द्र जाल दए निवार। हाकन डाकन प्रभ साचा देवे मार। छदौण पौण अवा गौण दर साचे होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ खण्डा चलावे दो धार। साचा प्रभ होए सहाए। अम काज़ीआं दिख ना पाए। कुक्ख रोग प्रभ दए मिटाए। आत्म सुख सदा वसाए। मात कुक्ख प्रभ सुफल कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। सरन आए जो जीव बिल्लाए। दुःख रोग ना कलि सताए। साचा सुख प्रभ साचा देवे, जो जन रसना सोहँ गाए।
७२६ ०१ आत्म उतरे सारी भुख, निहकलंक जो दर्शन पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाए। उतरे दुःख सगल वसूरा। आत्म देवे प्रभ साचा नूरा। होए सहाई प्रभ वड सूरन सूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरा। सर्ब कला प्रभ भरपूर। देही दुखड़े कीने दूर। आत्म सुख उतरे भुख प्रभ साचा दिसे हज़ूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आसा पूर। सुरत शब्द प्रभ दवाए। तीन लोक वस कराए। नाम निरबाण प्रभ लगाए। जेतीआं मुशकलां तेतीआं आसान प्रभ बणाए। साचा नाम जो जन रसना गाए। पवण रूप विच मसाण रखाए। जीव वेखे दिस ना आए। जम का बेटा कर्म कमाए। आपणी कल कलि वरताए। काल काल काल सभ होए, आत्म चिन्त लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीन लोक आण रखाए। ओहनी माता कोई सार ना जाणे। साचा प्रभ आप पछाणे। भुल्ले जीव सर्ब अञ्याणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी आपे जाणे। झूठे बीर सर्ब बेताले। हनवन्त अहिमद मुहम्मद होए बैताले। खिलंता सला सलसला प्रभ अग्न जोत विच गाले। निरंदी नेसरी केसरी शब्द मार महाराज शेर सिँघ होए आप रखवाले। सगती भुगती कर्म कमाया। झूठी जुगती मन डुलाया। रोग दुःख दुख रोग प्रभ खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दा होए सहाया। साचा प्रभ करे आकार। बीर बैताली करे ख्वार। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार, प्रभ ७२६ ०१

साचा सोहँ मारे मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीवां जन्तां देवे जोत अधार । छल छिद्र जिस कमाया। उलट वाहू प्रभ लेख लिखाया। शब्द निरँकार प्रभ आप चलाया। विच संसार सर्ब माण गंवाया। कर जोत आकार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख रोग सर्ब मिटाया। दुखिया जीव दर बिल्लाए। काल बाल तन रिहा जलाए। धन माल किछ कम्म ना आए। गोद बाल जिस दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी आस पुजाए। खट रोग प्रभ चुकाए। जीव जन्त कोई भेद ना पाए। नाड़ी बहत्तर प्रभ रिहा समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। प्रभ साचे सच कर्म कमाया। कुक्ख रोग सर्ब मिटाया। सुक्का काष्ट हरा कराया। अमृत आत्म सिंच प्रभ देही रोग मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाया । दुःख कलेश प्रभ किया नबेड़ा। हिरदे सुख प्रभ सदा वसेरा। आत्म दुःख मिटे अन्धेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई ना लाए देरा। साचा प्रभ कर्म कमाए। दर घर सभ बन्नू वखाए। वाट घाट कोई लँघ ना जाए। आन बाट प्रभ होए सहाए। विच ललाट साचे लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। गुर साइर गुर सरमपति गुर लखमी गुर दीना। गुर अञ्जन लहराया, गुरमुख साचे आत्म भीन्ना। प्रभ कुक्ख रोग मिटाया, शांत कराया सीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दान दर आए सच दीना। दरोही खुदाए खुदाए नबी रसूल । दरोही चौंह यारां दरगाह ना होए कबूल। दरोही हज़रत पीर दस्तगीर प्रभ शब्द लगाए त्रसूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह चलाए, बेमुख गए भूल। बी पहरबान महिबान बीदो बी खैर यामुहबैन बी खैर या अलाह। अज़मतो कसमतो अज़िबव अतिल हे या ऐली सर्ब ईस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी जाए पीस। अमृत साचा गुर दर पाईए। पी अमृत आत्म तृखा मिटाईए। प्रभ अबिनाशी सद सद रसना गाईए। कलिजुग जामा भरम भुलेख, गुरमुख होए भुल्ल ना जाईए। प्रभ चुकाए साचा लेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचे लेख लिखाईए। लिक्खया लेख सदा अटल। सृष्ट सबाई जाए हल्ल। प्रभ अबिनाशी कराए जल थल। गुरसिख साचा प्रभ दर बैठे मल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस ना लाए घड़ी पल। जोत सरूप प्रभ दरस दिखाए। प्रगट जोत होए सहाए। सति सति सति प्रभ रिहा समाए। पति पति पति गुरसिख तेरी प्रभ साचा पति रखाए। मति मति मति प्रभ साची मति विच तेरी देह टिकाए। यति यति यति सोहँ साचा यति प्रभ आत्म वास रखाए। गति गति मित गति प्रभ तेरी आप जणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म अमृत मेघ वरसाए। साचा अमृत प्रभ दर पाया। पी अमृत आत्म रोग मिटाया । सुख जीव साचा सुख निज घर में पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले

हिरदे वसाया। हिरदे वस्सया प्रभ अबिनाशी। आत्म दुबदा सारी नासी। देवे दरस घनकपुर वासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे बन्द ख़ुलासी। पारब्रह्म तेरा साचा रूप। पारब्रह्म तेरी महिंमा अनूप। पारब्रह्म जोत सरूपी जोत सरूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नज़र ना आए कोई रंग रूप। प्रभ साचे सद अदेस्सया। प्रभ साचा गुरसिख साचे विच सद परवेशिआ । साचा प्रभ साचे दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेषया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कलिजुग किया भेस्सया। जोत सरूपी पहरया बाणा। तख्तों लाहे राजा राणा। सतिजुग साचा प्रभ विच मात दे लाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द चलाणा। भारत मात प्रभ दर पुकारी। कलिजुग जीव होए दुष्ट दुराचारी। दिवस रैण करन विकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। गुरप्रसाद गुरदर पाया। गुरप्रसाद प्रभ दरस दिखाया। गुर प्रसाद प्रगट जोत प्रभ भोग लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साध संगत तेरा सोग मिटाया । साध संगत प्रभ दे वड्याई। साध संगत प्रभ भए सहाई। साध संगत सुरती सुरत ध्यान ज्ञान प्रभ दवाई। साध संगत चरन धूढ़ इशनान प्रभ दर नहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सदा सहाई। साध संगत प्रभ पूरन आसा। साध संगत गुरचरन भरवासा। साध संगत होए आत्म रहिरासा। साध संगत प्रभ साचा सच रक्खे वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए दासन दासा। साध संगत कलि पूरन भाग । निहकलंक चरन कलि गए लाग। बेमुख सोए गुरमुख साचे गए जाग। सोहँ साचा शब्द प्रभ उपजाया राग। होए सहाई वेले अन्त, प्रभ साचा पकड़े वाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन लेख लिखाए पहले माघ। सोहँ देवे साचा जाप। प्रभ मारे गुरसिख तीनो ताप। जन्म जन्म प्रभ उतारे पाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई आप। मरू देवा छेआ देवी जा बसे असमाल जोगी की सुरई । गऊ चरदी चरदी बन में रही। कृष्न घनईआ लखमी नरायण साची धुन उपजाए दई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम सभ नष्ट करई। प्रभ साचे तेरे साचे भेद। सत्त काले सत्त सफेद। उत्तर पच्छिम डंक समेत। चौदां विद्या प्रभ असमेत। सोलां कला समरथ प्रभ सदा अभेत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा कोए ना पावे भेत। कलिजुग जीव भेद ना जाणे। जोत सरूप प्रभ पछाणे। साचा प्रभ सर्ब समाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई साध संगत परवाने। जन भगतां प्रभ सदा सहाई। नित नवित्त प्रभ आवण जावण खेल रचाई। भगत जनां प्रभ साचा पित, पिता पूत प्रभ मेल मिलाई। मानस जन्म कलि जाए जित्त, जो जन आए निहकलंक तेरी सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म बूझ बुझाई। गुरमुख साचे बूझ बझईआ। प्रभ आत्म साची जोत जगईआ। सतिजुग साची प्रभ

सोहँ चलाए नईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग भगत जनां पैज रखईआ। भगत जनां प्रभ तारनहारा। प्रभ साचे दी साची कारा। जुगो जुग विच मात लए अवतारा। दुष्ट दुराचार प्रभ साचा करे ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँकारा। जुगो जुग प्रभ मात विच आए। जोत सरूपी जामा पाए। भगत जनां दी बणत बणाए। वेले अन्त होए सहाए। विच मात प्रभ वड्याए। हँकारीआं प्रभ हँकार गंवाए। निमाणयां सिर हत्थ टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग साची जोत मात प्रगटाए। साचा शब्द गुरसिख कमाणा। मदिरा मास मनों तजाणा। रसना रस आत्म रस पाणा। अमृत साचा मुख चुआणा। राह साचा दस्स प्रभ भेव चुकाणा। दर आए नस्स, प्रभ देवे माणा। होए जाए वस, सोहँ शब्द जिस रसना गाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे अज्ञान अन्धेर मिटाणा। गुरचरन प्रीती साचा जोग। गुरमुख साचे आत्म रस भोग। देवे दरस प्रभ अमोघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म कट्टे हउमे रोग। साचा प्रभ दरस दिखाए। भय भयानक होए सहाए। गुरमुख साचे लग्गे ना तत्ती वाए। रसना जप जप एका ओट रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाए। गुरमुख साचे प्रभ जोत जगा। झूठी देही प्रभ जाए भाग लगा। हउमे ममता रोग प्रभ जाए दाग़ मिटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द हिरदे जाए वसा। सोहँ शब्द जिस जन जाणया। साचा प्रभ सति कर मानया। गुरसिख साचा चले प्रभ के भाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस बिरध बाल अञ्याणया। कर दरस मन भए अनन्दा। आत्म उपजे परमानंदा। गुरमुख साचे प्रभ साचा शब्द लिखंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस गुणी गहिंदा। गुणवन्त गहर गम्भीर। दे दरस सांत करे सरीर। गुरसिख तेरी प्रभ साचा कट्टे भीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म बख्शे जिउँ बालक माता सीर। अमृत आत्म आत्म रस। साचा प्रभ हो जाए वस। गुरचरन प्रीती साची नीती साचा राह प्रभ जाए दस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे हिरदे वस।

✻ ११ फग्गण २००८ बिक्रमी मेरठ छावणी विहार होया ✻

गुणवन्त गुण साचा जाणया। भगत जनां प्रभ आप पछाणया। साचा देवे नाम निधानया। आत्म तोड़े सर्ब अभिमानया। जगाए जोत विच देह महानया। दिखाए दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। मिल्या प्रभ आत्म सुख पाया। मिल्या प्रभ दु:ख रोग गंवाया। मिल्या प्रभ आत्म सोग चुकाया। मिल्या प्रभ गुरसिख विच सेव लगाया। मिल्या प्रभ महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, धुरों संजोग लिखाया। मिल्या प्रभ साचा गुर। मिल्या प्रभ वासी घनकपुर। मिल्या प्रभ गुरसिख देवे वड्याई विच देवी देव सुर। मिल्या प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिक्खया लेख प्रभ साचे धुर। मिल्या प्रभ सर्ब दु:ख भंजन। मिल्या प्रभ जोत निरँजण। मिल्या प्रभ गुरसिख साचा सज्जण। मिल्या प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे प्रीती चरन बख्शे साचा मजण। मिल्या प्रभ दु:ख रोग मिटाए। मिल्या प्रभ सर्ब सोग चुकाए। मिल्या प्रभ दरस अमोघ दिखाए। मिल्या प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बणत बणाए। मिल्या प्रभ सर्ब कलधारी। मिल्या प्रभ निहकलंक नरायण नर अवतारी। मिल्या प्रभ जोत निरँजण जोत निरँकारी। मिल्या प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए अपर अपारी। मिल्या प्रभ सर्ब का दाता। मिल्या प्रभ सर्ब ज्ञाता। मिल्या प्रभ वड दानी दाता। मिल्या प्रभ साध संगत सदा रंग राता। मिल्या प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे चरन लगाता। मिल्या प्रभ आप अपरम्पर। मिल्या प्रभ सर्ब वरतंतर। मिल्या प्रभ जन भगतां जुगां जुगन्तर। मिल्या प्रभ गुरमुख तेरा भेद जाणे अन्तर। मिल्या प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा मन्त्र। मिल्या प्रभ अन्तर ध्याना। मिल्या प्रभ सुघड़ स्याणा। मिल्या प्रभ गुरसिख देवे ब्रह्म ज्ञाना । मिल्या प्रभ बख्शे चरन धूढ़ इशनाना। मिल्या प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। मिल्या प्रभ सच भण्डारी। मिल्या प्रभ जोत अधारी। मिल्या प्रभ आप निरँकारी। मिल्या प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां जाए पैज संवारी। मिल्या प्रभ आप आपणा। मिल्या मेल गुरसिख साचे रसना जपणा। मिल्या प्रभ गुरमुख साचे तेरी आत्म लाहे तपणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दिवस रैण सद रसना जपणा। रसना जप आत्म रस माणो । प्रभ अबिनाशी कलि पछाणो। गुरचरन सद सद सद कुरबानो। एका रक्ख चरन ध्यानो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सद विच समाणो। जोत सरूप प्रभ सद विच समाया। बेमुखां प्रभ दिस ना आया। गुरमुख साचे साची बूझ बुझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया। देवे दरस आप रघुराई। गुरमुख साचे होए सहाई। मातलोक देवे वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बणत बणाई। प्रभ साचा सच जोत आकारा। प्रभ साचा सच सच दरबारा। प्रभ साचा सच नाम भण्डारा। प्रभ साचा सच जगत वरतारा। प्रभ साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक ल्या अवतारा। साचे प्रभ साची तेरी कारा। प्रभ साचा सोहँ शब्द चलाए, जगत कराए इक्क उज्जयारा। प्रभ साचा आपणा आप उपाए, जगत मिटाए सर्ब धुंधूकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा करे पसारा। प्रभ साचा सच करे पसार। प्रभ साचा सच जोत करे आकार। प्रभ साचा सच सुच करे वरतार। प्रभ साचा आप

७३३
०१

अडोल बैठ रहे निराधार। प्रभ साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा निराहार। प्रभ साचा सद निराहारी। प्रभ साचा जोत निरँकारी। प्रभ साचा जगत खेल करे अपर अपारी। प्रभ साचा कलिजुग जीवां करे ख्वारी। आप अडोल जोत कृष्न मुरारी। प्रभ साचा हँकारीआं उतारे आत्म सर्ब ख़ुमारी। प्रभ साचा गुरमुख साचे जाए पैज संवारी। प्रभ साचा निहकलंक अवतार नर कलिजुग आया जामा धारी। कलिजुग प्रभ जामा पाए। आपणी कल आप वरताए। सोहँ साचा नाम जपाए। एका नाम पूरन आप आपणी जोत टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सच रखाए। प्रभ साचा गुरसिख तारे। प्रभ साचा सदा बलिहारे। प्रभ साचा एका बख्शे चरन प्यारे। प्रभ साचा जुगो जुग विच मात लए अवतारे। प्रभ साचा साची कल आप वरतारे। प्रभ साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सद निरहारे। प्रभ साचा निरहार समाया। प्रभ साचा चतुर्भुज कहाया। प्रभ साचा आपणे रंग सदा रंगाया। प्रभ साचा कलिजुग जीवां दिस ना आया। प्रभ साचा गुरमुख साचे बूझ बुझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा रिहा छुपाया। कलिजुग जीवां आप भुलाए। गुरमुख साचे आपणी बूझ आप बुझाए। जोत सरूपी प्रगट जोत अग्न जोत लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द मार सृष्ट कराए। प्रभ साचा जग शब्द चलाया। सोहँ साचा बाण लगाया। गुरसिक्खां आपणे भाणे मेल मिलाया। बेमुखां अन्तिम कलि आपणा मूल गंवाया।
७३४ ०१ गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया। प्रभ साचा सदा उधारी। प्रभ साचा वड संसारी। ७३४ ०१
प्रभ साचा गुरमुख साचे भर जाए भण्डारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे अपारी। साचे प्रभ अचरज खेला। गुरमुख कराए आपणा मेला। साध संगत चरन लाग कलिजुग सुहाया वेला। प्रभ साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सज्जण सुहेला। प्रभ साचा सच कर जाण। गुरमुख साचे सच पछाण। मिले वड्याई विच दो जहान। होए सहाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा प्रभ होए सहाया। एका देवे सर्ब सरनाया। जोत सरूपी दरस दिखाया। आप आपणा भेद चुकाया। गुणवन्त गुण निधान, आपणा भेत चुकाया। गुरमुख साचे चतुर सुघड़ सुजान, आपणा दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात दया कमाया। गुरमुख साचे मिले भगवाना। गुरमुख साचे प्रभ आत्म जोत जगाए महाना। गुरमुख साचे प्रभ एका बख्शे चरन ध्याना। गुरमुख साचे साचा प्रभ कलिजुग पछाणा। गुरमुख साचे देवे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। गुरमुख साचे सद रक्खे वासा। गुरमुख साचे देवे दरस प्रभ अबिनाशा। गुरमुख साचे मानस जन्म होए रासा। गुरमुख साचे सोहँ जप स्वास स्वासा। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए तेरा दासन दासा। गुरमुख साचे सच घर पाया। गुरमुख साचे प्रभ मेल मिलाया। गुरमुख साचे प्रभ दरस दिखाया। गुरमुख साचे

प्रभ आपणी सरन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाया। गुरमुख प्रभ साचे सरन लगाए। गुरमुख प्रभ साचा आण तराए। गुरमुख प्रभ साचा भय चुकाए। गुरमुख प्रभ सद रिहा समाए। गुरमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगाए। गुरमुखां प्रभ सदा समाया। गुरमुखां प्रभ सोहँ साचा राग उपजाया। गुरमुखां अनहद धुन प्रभ रिहा सुणाया। गुरमुखां प्रभ आत्म सुन्न खोल्ह वखाया। गुरमुखां प्रभ कलि चरन लगाया। गुरमुखां प्रभ आत्म हँकार विकार गंवाया। गुरमुखां प्रभ एका धुन शब्द उपजाया। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत दरस दिखाया। गुरमुखां प्रभ दरस दिखाए। गुरमुखां प्रभ अज्ञान अन्धेर मिटाए। गुरमुख साचे प्रभ आत्म साची जोत जगाए। गुरमुखां प्रभ एका दूजा भउ चुकाए। गुरमुखां प्रभ तीजा नैण खोल्ह वखाए। गुरमुखां प्रभ जोत सरूप सदा समाए। गुरमुखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए। गुरमुखां प्रभ देवे आत्म धीरा। गुरमुखां प्रभ करे शांत सरीरा। गुरमुखां अमृत आत्म झिरना झिरे नीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म रोग मिटाए पीरा। गुरमुख प्रभ आत्म रंग माण। गुरमुख प्रभ अबिनाशी साचा जाण। गुरमुख निहकलंक कलि पछाण। गुरमुख प्रभ जोत सरूपी विष्नूं भगवान। गुरमुख सोहँ शब्द रसना गाण। गुरमुखां कलिजुग मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। गुरमुख साचे गुर सेव कमाई। गुरमुख साचे प्रभ बणाई। गुरमुख साचे
७३५ ०१ प्रभ बूझ बुझाई। गुरमुख साचे प्रभ देवे वड्याई। गुरमुख साचे प्रभ आत्म जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ७३५ ०१
एका बख्शे चरन सरनाई। गुरमुख साचे चरन प्रभ आओ। गुरमुख साचे आपणा भेव चुकाओ। गुरमुख साचे अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाओ। गुरमुख साचे साध संगत मिल जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सद रसना गाओ। गुरमुख साचे प्रभ दर्शन पावणा। आप आपणा भेव चुकावणा। गुरमुख साचे प्रभ दस्म दुआर खोल्ह वखावणा। गुरमुख साचे प्रभ जोत सरूपी दरस दे आत्म जोत जगावणा। गुरमुख साचे कर किरपा प्रभ पार लँघावणा। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच लोकमात वड्यावणा। गुरमुख साचे विच मात वड्याई। गुरमुख साचे प्रभ आत्म जोत जगाई। गुरमुख साचे एका दीसे निहकलंक सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाई। गुरमुख साचे निहकलंक सरनाया। गुरमुख साचे प्रभ साचे सिर हत्थ टिकाया। प्रभ साचे गुरसिख जोती मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद चुकाया। गुरमुख साचे मन सदा अनन्दा। गुरमुख साचे आत्म उपजे परमानंदा। गुरमुख साचे देवे दरस मनोहर मुकंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा बख्शिंदा। तीन लोक प्रभ वरतारा। तीन लोक जोत आकारा। तीन लोक प्रभ पसर पसारा। तीन लोक प्रभ सर्ब वरतारा। तीन लोक एक कराए जै जैकारा। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए अपारा। तीन लोक प्रभ उपाए। तीन लोक प्रभ समाए। तीन लोक प्रभ जोत जगाए। मातलोक एका सोहँ शब्द चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत प्रगटाए। मातलोक प्रभ की जोती। सृष्ट सबाई रही सोती। गुरमुख साचे प्रभ सोहँ लाए आत्म बोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जोत प्रभ जुगो जुग मात विच होती। सचखण्ड प्रभ वसे आप। सोहँ साचा देवे जाप। सर्ब सृष्ट माई बाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कल वरते आप। सचखण्ड प्रभ का द्वार। एका जोत जगे अपार। जोत सरूप प्रभ निराहार। तीन लोक करे आकार। सृष्ट सबाई सद रिहा समार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एकँकार। सचखण्ड प्रभ जोत उज्जयारी। सचखण्ड एका जोत जगे अपारी। सचखण्ड साचा प्रभ दरगाह रखाए धाम न्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए कलंकनिह निरँकारी। एका जोत जगे अडुल। साचा प्रभ जोत सरूपी सर्ब रिहा मवल। गुरमुख साचे प्रभ खोल्हे तेरा नाभ कँवल। देवे वड्याई विच मात उप्पर धवल। जोत प्रगटाए निहकलंक कृष्ना संवल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई करे बवल। सचखण्ड प्रभ सदा प्रवेशा। सचखण्ड प्रभ दर खड़्हे ब्रह्मा विष्न महेषा। सचखण्ड करोड़ तेतीस करे सद अदेसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जुगो जुग करे मात प्रभ वेसा। जोत सरूप प्रभ विच अकाशा। जोत सरूप सर्ब विच वासा। जोत सरूप प्रभ अबिनाशा। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म करे रासा। जोत सरूप जोत प्रभ धारे। जोत सरूप सृष्ट सबाई करे ख्वारे। जोत सरूप एका जोत करे आकारे। जोत सरूप निहकलंक नरायण नर अवतारे। जोत सरूप कलिजुग अचरज खेल करे अपारे। कलिजुग जीव भुल्ले सर्ब संसारे। मदिरा मास रसन करन आहारे। लिख्त लिखाए पारब्रह्म, नाम धराए दुष्ट दुराचारे। वेले अन्त धर्म राए देवे दुःख भारे। गुरमुख साचे तेरी रसना सोहँ जै जै जैकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा मानस जन्म सुधारे। विच पाताल प्रभ नैण मुँधारी। बाशक सेज बैठे आप गिरधारी। उप्पर सुत्ते पैर पसारी। लच्छमी झस्से चरन आत्म होई हँकारी। जोत सरूप अडुल प्रभ साचा बचन शब्द उचारी। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत पसारी। लच्छमी प्रभ चरन सेव कमाए। आप आपणा माण रखाए। आत्म विच हँकार वसाए। वड वड सेव मैं रही कमाए। प्रभ अबिनाशी साची नींद ल्या सवाए। जोत सरूपी जोत जोती जोत जोत प्रभ शब्द सुणाए। एका बचन प्रभ सुणाया। प्रभ अबिनाशी दिवस रैण सद एका रंग समाया। निहकलंक सद खुल्हे नैण, आलस निंदरा मगरों लाहया। गुरमुख साचे साचे साक सज्जण सैण, प्रभ साचे लेख लिखाया। साध संगत मिल बैठे भाई भैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त होए सहाया। लोक पाताल प्रभ तजाए। अचरज

खेल कलि वरताए। जामा जोत सरूप विच मात दे पाए। कलिजुग जीवां भरम भुलेखे रिहा भुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। उन्नीं सौ पंजाह बिक्रमी किरपा कर। मातलोक निहकलंक अवतार ल्या धर। गुरमुख साचे चल आए साचे दर। आत्म झिरना झिराए प्रभ अमृत साचा सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ ल्या साचा वर। सन्त मनी सिँघ वर घर पाया। सुरत शब्द प्रभ दरस दिखाया। आप आपणा भेद खुल्हाया। एका राग एका धुन प्रभ दए उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाशक सेज तजा, जामा मातलोक विच पाया। आया मात नैण मुँधारी। वड्डा आप वड संसारी। कलिजुग माया प्रभ पसारी। कलिजुग जीव आत्म होई हँकारी। गुरमुख साचे प्रभ आत्म करे उज्जयारी। देवे दरस प्रगट जोत प्रभ साचा कृष्न मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी जाए पैज संवारी। बाशक तशक प्रभ आसण लाए। सहँसर मुख प्रभ अबिनाशी दिवस रैण रहे रसना गाए। बैठ अडोल रिहा जोत सरूप प्रभ रघुराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक प्रभ जामा पाए। सहँसर मुख बाशक पुकार। साचा सुख प्रभ दरबार। उतरे भुख मिले प्रभ गिरधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पावे सार। मातलोक प्रभ जामा धारया। साची जोत करे आकारया। बेमुखां प्रभ दर दुरकारया। गुरसिक्खां प्रभ देवे दरस अपारया। कर किरपा प्रभ साचे पार उतारया। वड वड दरबार निहकलंक अवतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारया। प्रभ का अन्त ना कोए जन जाणे। साचा प्रभ ना कोए पछाणे। गुरमुख साचे तेरा मन माने। कलिजुग चले प्रभ के भाणे। सोहँ शब्द सद रसना गाणे। आत्म जाए सर्ब अभिमाने। एका जोत जगे महाने। दर आए साचे प्रभ दरगाह होए परवाने। देई वड्याई निहकलंक जन होए सुघड़ स्याणे। सुहाए थान बंक प्रभ साचे चरन टिकाणे। एका दिसाए प्रभ एका अंक, सारे भेख मिटाणे। सोहँ वजाए प्रभ साचा डंक, प्रभ साचा शब्द लिखाणे। इक्क कराए राउ रंक, तख्तों लाहे राजे राणे। गुरसिख वड्याए जिउँ भगत जनक, प्रभ आत्म जोत जगाए महाने। शब्द सरूपी प्रभ शब्द लगाए तनक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। जोत सरूप प्रभ मेल मिलाए। आप आपणा बिरद रखाए। गुणवन्त गुण निधान सर्ब थाएँ प्रभ होए सहाए। वड दाता बली बलवान, आप आपणा तेज रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल कलि वरताए। कलिजुग वेला अन्तिम अन्त। जोत प्रगटाई प्रभ भगवन्त। गुरसिख चरन लगाए तराए विरले सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणत। वेले अन्त प्रभ बणत बणा। सोहँ शब्द प्रभ दए जणा। भगत भगवन्त कलि मेल मिला। विच सर्ब जीव जन्त प्रभ साचा रिहा समा। कोए ना पाए प्रभ का अन्त, कोटन कोट रहे रसना गा। प्रभ की माया बड़ी बेअन्त, कलिजुग

जीव लए भुला। कलिजुग वेला अन्तिम अन्त, प्रभ साचा लेख जाए लिखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा कन्त, गुरमुख साचे चरन लए लगा। गुरमुख साचे प्रभ चरन लगाए। साचे मार्ग प्रभ साचे लाए। आप आपणा नाम जपाए। जोत सरूप विच रिहा समाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब दए मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे भेद खुल्हाए। साचे प्रभ सच भेद खुल्हावणा। कलिजुग झूठा भेख मिटावणा। आपणा भाणा आप वरतावणा। बेमुखां दर दर भवावणा। गुरसिक्खां प्रभ चरन लगावणा। बेमुखां मदिरा मास प्रभ रसन चखावणा। गुरमुखां अमृत साचा जाम पिआवणा। बेमुखां सद गर्भवास रखावणा। गुरसिक्खां प्रभ जोती मेल मिलावणा। बेमुखां प्रभ नर्क निवास रखावणा। गुरमुख साचे प्रभ सचखण्ड बहावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा वक्त सुहावणा। वक्त सुहाए आप प्रभ, कलि जोत प्रगटाए। वक्त सुहाए आप प्रभ, गुरमुख साचे लए जगाए। वक्त सुहाए आप प्रभ, आप आपणी बणत बणाए। बणत बणाए आप प्रभ, कलिजुग जीव लए खपाए। बणत बणाए आप प्रभ, सतिजुग साचा जाए लाए। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ साचा शब्द चलाए। बणत बणाए आप प्रभ, चार वरन प्रभ सरन लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, एका दर दरसाए। बणत बणाए आप प्रभ, एका साचा राह चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, कलिजुग मिटाए। बणत बणाए आप प्रभ, कलिजुग झूठे जीव खपाए। बणत बणाए आप प्रभ, चार कुन्ट हाहाकार कराए। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणा भेव खुल्हाए। बणत बणाए आप प्रभ, दुखी जीव सर्ब बिल्लाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी कल रिहा वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा लेख रिहा लिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, सन्त मनी सिँघ शब्द सति वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, सत्तर लक्ख पठाण चढ़ाए। बणत बणाए आप प्रभ, कलिजुग जीव भेव ना पाए। बणत बणाए आप प्रभ, सिँघआसण लए उठाए। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत संग लए रलाए। बणत बणाए आप प्रभ, माझा देस छड्ड जाए। बणत बणाए आप प्रभ, ब्यासों पार चरन टिकाए। बणत बणाए आप प्रभ, सन्त मनी सिँघ माण दवाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा धाम आप उपजाए। बणत बणाए आप प्रभ, लिख्त भविख्त आप उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बूझ बुझाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी कल वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी जोत प्रगटाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा धाम सुहाए। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत दर माण दवाए। बणत बणाए आप प्रभ, एका जोत करे रुशनाए। बणत बणाए आप प्रभ, राउ रंकां बूझ बुझाए। बणत बणाए आप प्रभ, साची जोत करे रुशनाए। बूझ बुझाए आप प्रभ, प्रगट जोत दरस दिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी कल आप वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, कलिजुग जीव सर्ब भुलाए।

बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत आप प्रगटाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणा भेव खुल्हावे। बणत बणाए आप प्रभ, जोत सरूपी जोत प्रगटावे। बणत बणाए आप प्रभ, बेमुखां दिस ना आवे। बणत बणाए आप प्रभ, गुरसिक्खां प्रभ सदा समावे। बणत बणाए आप प्रभ, एका शब्द राणे संगरूर जणावे। बणत बणाए आप प्रभ, साची धुन आत्म उपजावे। बणत बणाए आप प्रभ, सिँघ रूप होए दरस दिखावे। बणत बणाए आप प्रभ, रैण सबाई सवण ना पावे। बणत बणाए आप प्रभ, देवे दुहाई प्रभ अबिनाशी नज़री आवे। बणत बणाए आप प्रभ, आत्म दुखी होई विरलावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी बूझ बुझावे। बणत बणाए आप प्रभ, होए रखवाला। बणत बणाए आप प्रभ, दीन दयाला। बणत बणाए आप प्रभ, गुरमुखां देवे नाम सुखाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम सुखाला। बणत बणाए आप प्रभ, हँकार निवारे। बणत बणाए आप प्रभ, जोत चमत्कारे। बणत बणाए आप प्रभ, दुष्ट सँघारे। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ खण्डा लाए दो धारे। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकारे। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान विच संसारे। बणत बणाए आप प्रभ, साची जोत जगावे। बणत बणाए आप प्रभ, राणा संगरूर प्रभ पकड़ उठावे। बणत बणाए आप प्रभ, जोत सरूपी खिच चरन ल्यावे। बणत बणाए आप प्रभ, साचा दर दरबार वसावे। बणत बणाए आप प्रभ, निहकलंक नरायण नर जोत सरूपी नज़री आवे। बणत बणाए आप प्रभ, हँकार निवार दरस दिखावे। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणी सरन लगावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच साध संगत माण दवावे। बणत बणाए आप प्रभ, सच मेल मिलाए। बणत बणाए आप प्रभ, राणा संगरूर माण गंवाए। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणी दया कमाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा शब्द दे उपजाए। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणा दरस दिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, आत्म भरम सर्ब मिटाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा कर्म विच मात लिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, सच धर्म दे मार्ग पाए। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ साचा शब्द जणाए। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा भेद खुल्हाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी सेवा लाए। बणत बणाए आप प्रभ, राणा संगरूर चल हज़ूर प्रभ साचे सीस झुकाए। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी दरस दिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी जोत जगा। बणत बणाए आप प्रभ, राणा संगरूर प्रभ चरनी लए लगा। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ शब्द प्रभ आत्म दए उपजा। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा लए बणा। बणत बणाए आप प्रभ, देवे वड्याई। बणत बणाए आप प्रभ, होए सहाई। बणत बणाए आप प्रभ, दरगाह साची

माण दवाई। बणत बणाए आप प्रभ, साचे लेख प्रभ रिहा लिखाई। भगत उपाए आप प्रभ, सन्त मनी सिँघ लिक्खया लेख सति वरताई। बणत बणाए आप प्रभ, साची जोत कलि प्रगटाई। बणत बणाए आप प्रभ, चार कुन्ट करे रुशनाई। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ नाम वज्जी वधाई। बणत बणाए आप प्रभ, चार वरन सभ रसना गाई। बणत बणाए आप प्रभ, सृष्ट सबाई चल आए प्रभ सरनाई। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणा रिहा छुपाई। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि जोत प्रगटाई। बणत बणाए आप प्रभ, आपणा आप उपावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साचा कारज प्रभ आप करावणा। बणत बणाए आप प्रभ, आपणा भाणा कलि वरतावणा। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ साचा शब्द चलावणा। बणत बणाए आप प्रभ, राणा संगरूर प्रभ चरन लगावणा। बणत बणाए आप प्रभ, आपणा भेख जगत रखावणा। बणत बणाए आप प्रभ, सन्त मनी सिँघ बचन सति करावणा। बणत बणाए आप प्रभ, शब्द भविख्त आप उपजावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत प्रभ संग रलावणा। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ शब्द रसना जै जै जैकार करावणा। बणत बणाए आप प्रभ, एका साची धुन उपजावणा। बणत बणाए आप प्रभ, गुरमुखां प्रभ सुन्न समाध खुल्हावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत द्वार दस्म प्रभ खुल्हावणा। बणत बणाए आप प्रभ, नाद धुन उपजावणा। बणत बणाए आप प्रभ, जोत सरूपी आकार विच देह उपजावणा। बणत बणाए आप प्रभ, विच संसार साध संगत माण दवावणा। बणत बणाए आप प्रभ, जोत सरूपी साचा दीपक देह जगावणा। बणत बणाए आप प्रभ, आपणा आप कलि प्रगटावणा। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लगावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साचा वक्त सुहाए। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत प्रभ अबिनाशी रसना गाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी कल आप वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, गुरसिक्खां जोत जगाए। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत सदा संग रहाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा छत्र सीस झुलाए। बणत बणाए आप प्रभ, पंचम हार गल पहनाए। बणत बणाए आप प्रभ, पंचम पंचम प्रभ संग रलाए। बणत बणाए आप प्रभ, चार कुन्ट दरबान बणाए। बणत बणाए आप प्रभ, पंजवां सिर चवर झुलाए। बणत बणाए आप प्रभ, अचरज खेल कलि वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, जोत सरूपी जोत प्रगटाए। बणत बणाए आप प्रभ, हँकारीआं प्रभ हँकार गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सद माण दवाए। बणत बणाए आप प्रभ, वक्त सुहेला। बणत बणाए आप प्रभ, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत प्रभ मेल मिलाया मेला। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत जणाए दसाए अन्तिम वेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सज्जण सुहेला। बणत बणाए आप प्रभ गुर संगत तारे। बणत बणाए आप प्रभ,

साची जोत करे आकारे। बणत बणाए आप प्रभ, साचा छत्र सीस झुलारे। बणत बणाए आप प्रभ, दवाए माण सन्त मनी सिँघ किरपा धारे। बणत बणाए आप प्रभ, करे कराए जो मन भाए विच सर्ब संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत निरँकारे। बणत बणाए आप प्रभ, गुर संगत मेल मिलावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत प्रभ साचे माण रखावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साचा धाम उपजावणा। बणत बणाए आप प्रभ, लिक्खया लेख सन्त मनी सिँघ सति वेले अन्त कलि करावणा। बणत बणाए आप प्रभ, लगाई मेख प्रभ साचा धाम उपजावणा। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन मस्तूआणे आए टिकावणा। बणत बणाए आप प्रभ, मस्तूआणे चरन टिकाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी जोत लए प्रगटाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी कल आप रिहा वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, एका जोत होए रुशनाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा भेद दए खुल्हाए। बणत बणाए आप प्रभ, राणयां महाराणयां माण गंवाए। बणत बणाए आप प्रभ, निमाणयां निताणयां सिर हत्थ टिकाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा बचन रसन अलाए। बणत बणाए आप प्रभ, राजयां राणयां दए सुणाए। बणत बणाए आप प्रभ, हुक्मनामे लए कढाए। बणत बणाए आप प्रभ, सन्त मनी सिँघ जो लेख लिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, झूठे ठूठे भन्न वखाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणा भाणा लए वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी जोत प्रगटाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा समां सुहावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साचा हुक्म सुणावणा। बणत बणाए आप प्रभ, सभ दा माण गंवावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साचा सच दरबार लगावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साची जोत आकार कर एका शब्द उपजावणा। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणा भेद खुल्हावणा। बणत बणाए आप प्रभ, प्रगट जोत निहकलंक विच सिख समावणा। बणत बणाए आप प्रभ, कलिजुग जीवां भरम चुकावणा। बणत बणाए आप प्रभ, भरम भुलेखा सर्ब गंवावणा। बणत बणाए आप प्रभ, एका डंक सच वजावणा। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणा नाम उपजावणा। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ शब्द चार वरन सुनावणा। बणत बणाए आप प्रभ, राउ रंक सभ चरन निवावणा। बणत बणाए आप प्रभ, एका अंक आप लिखावणा। बणत बणाए आप प्रभ, भुल्लयां सच मार्ग लावणा। बणत बणाए आप प्रभ, साचा धाम विच मात सुहावणा। बणत बणाए आप प्रभ, मस्तूआणे भाग लगावणा। बणत बणाए आप प्रभ, सन्त मनी सिँघ तेरा बचन सति सति सति वरतावणा। बणत बणाए आप प्रभ, राउ रंकां पकड़ चरन लगावणा। बणत बणाए आप प्रभ, सिर आपणा हत्थ टिकावणा। बणत बणाए आप प्रभ, एका छत्र निहकलंक सीस झुलावणा। माण गंवाए सर्ब प्रभ, साची जोत कलि प्रगटावणा। जोत जगाए आण प्रभ, आपणा भेद खुल्हावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा समां

सुहावणा। बणत बणाए आप प्रभ, सच धाम उपजाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी जोत विच मात प्रगटाए। बणत बणाए आप प्रभ, सन्त मनी सिँघ साचे लेख विच ललाट लिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, कलिजुग झूठा भेख सर्ब मिटाए। बणत बणाए आप प्रभ, गुरमुख साचे चरनी लए लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, अन्तिम मिटाए मुसायक शेख़ आपणी कल वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत बणाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी जोत धर। बणत बणाए आप प्रभ, मस्तूआणा उपजावे साचा सर। बणत बणाए आप प्रभ, मातलोक उपजावे साचा दर। बणत बणाए आप प्रभ, चार वरन वसाए एका घर। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक अवतार नर। बणत बणाए आप प्रभ, जन भगत उपाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी सरन लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, जोत सरूपी दरस दिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, विच मात माण दवाए। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। बणत बणाए आप प्रभ, भगत जनां सद होए सहाए। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणी सेव लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत प्रभ विच रलाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा शब्द दए सुणाए। बणत बणाए आप प्रभ, मदिरा मास सर्ब तजाए। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ साचा नाम जपाए। बणत बणाए आप प्रभ, वेले अन्त होए सहाए। बणत बणाए आप प्रभ, बाहों पकड़ गुरसिख तराए। बणत बणाए आप प्रभ, दरगाह साची माण दवाए। बणत बणाए आप प्रभ, जन्म मरन प्रभ गेड़ कटाए। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणी जोत मिलाए। बणत बणाए आप प्रभ, गुरमुख साचे साचे धाम बहाए। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणा दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आपणा भेख रखाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणा भेव रखाया। बणत बणाए आप प्रभ, गुरमुख सोया प्रभ लए जगाए। बणत बणाए आप प्रभ, कलि साचा कर्म कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे चरन लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणे चरन लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, सच सुच विच देह वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, आत्म साचा रंग चढ़ाए। बणत बणाए आप प्रभ, हउमे विच्चों भेद चुकाए। बणत बणाए आप प्रभ, एका शब्द धीर रखाए। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ शांत सरीर कराए। बणत बणाए आप प्रभ, अमृत झिरना नीर झिराए। बणत बणाए आप प्रभ, आत्म अमृत साचा सीर पिलाए। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी दया कमाए। बणत बणाए आप प्रभ, मस्तूआणे जाए। बणत बणाए आप प्रभ, साची संगत प्रभ लए बणाए। बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणी जोत प्रगटाए। बणत बणाए आप प्रभ, सिँघासण डेरा लाए। बणत बणाए आप प्रभ, सतिजुग साचा शब्द उपजाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचे लेख लिख्त लिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, वाक् भविख्त सति कराए।

७४२
०१

बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान हँकारीआं जाए माण गंवाए। बणत बणाए आप प्रभ, साची लिख्त लिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, जोत सरूपी विच सिख समाए। बणत बणाए आप प्रभ, नाड़ी बहत्तर बन्द कराए। बणत बणाए आप प्रभ, साची जोत विच देह टिकाए। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत मिल प्रभ दर आए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा दरबार विच मात लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, लिख्त अपार शब्द चलाए। बणत बणाए आप प्रभ, दिवस रैण रैण दिवस कलम चलाए। बणत बणाए आप प्रभ, दिवस चाली वक्त सुहाए। बणत बणाए आप प्रभ, थिर घर वासी विच मात दे आए। बणत बणाए आप प्रभ, सतिजुग साचे लेख लिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, कलिजुग रेख भेख वेखा वेख सर्ब दए मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हाए। दिवस चाली प्रभ लेख लिखावणा। सृष्ट सबाई टुम्ब उठावणा। हाहाकार विच मात करावणा। साध संगत प्रभ साचे रसना जै जै जैकार करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम मस्तूआणा प्रगटावणा। साचा धाम प्रभ प्रगटाए। आप आपणी लिख्त कराए। सति सति सति सतिजुग वरताए। सर्ब जनां दी आस पुजाए। दुखियां दुःख भुखियां भुक्ख प्रभ दे गंवाए। कलिजुग सुक्के रुक्ख प्रभ सतिजुग हरे कराए। भुल्ले जीव कलि मनुक्ख, प्रभ साचा मार्ग पाए। देवे ज्ञान बालक विच मात कुक्ख, अज्ञान अन्धेर प्रभ दए मिटाए । सतिजुग उपजावे साचा सुख, सच सुच दे वरताए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस चाली मस्तूआणे लिख्त लिखाए। मस्तूआणा धाम न्यारा। साचे प्रभ किया उज्जयारा। सन्त मनी सिँघ पार उतारा। कर किरपा भरे भण्डारा। साचा वर दर घर मंगया चरन दुआरा। साचा मिल्या आत्म सर अमृत झिरना झिरे अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब दवाए मोख दुआरा। मस्तूआणा मोख द्वार। चरन टिकाए प्रभ गिरधार। सन्त मनी सिँघ देवे तार। वेले अन्त उपजावे निहकलंक अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी पावे सार। साचा धाम प्रभ उपजावणा। आप आपणा चरन टिकावणा। साध संगत प्रभ अबिनाशी सद रसना गावणा। आत्म तृख सर्ब विनासी, प्रभ साचा गुरसिख साचे दर्शन पावणा। सोहँ शब्द जप स्वास स्वासी, साध संगत प्रभ चरन दासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सचखण्ड निवास रखावणा। मस्तूआणा साचा धामा। जोत जगाए रमईआ रामा। प्रगटे जोत घनईआ शामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त पूर कराए कामा। मस्तूआणा धाम उपजाणा। आप आपणा चरन टिकाणा। साचा सर प्रभ आप बणाणा। चार वरन प्रभ इक्क कराणा। साची सरन निहकलंक रखाणा। ऊँच नीच प्रभ भेद मिटाणा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरोवर आप उपाणा। सतिजुग उपजे साचा सर। जोत जगाए एका हरि। चार वरन दिसे एका दर। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, दवाए माण निहकलंक नरायण अवतार नर। चार वरन एका दरबार। मस्तूआणा विच संसार। अमृत साचा प्रभ भरे भण्डार। साध संगत प्रभ जाए तार। जो जन आयण प्रभ चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऊँचा दिसे सतिजुग तेरा सति वरतार। सतिजुग होवे सति वरतारा। धरे जोत निहकलंक नरायण नर अवतारा। जोत निरँजण प्रभ गिरधारा। सच घर दस्से मस्तूआणा, चार वरन सचखण्ड दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे सच नाम भण्डारा। सच माण जगत दवाए। आप आपणी जोत जगाए। अठसठ तीर्थ प्रभ जोत खिचाए। गंगा गोदावरी कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरताए। साचा प्रभ वड परबीना। रहण ना पाए मुहम्मदी दीना। चार वरन प्रभ साचे इक्क कीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे साचा अमृत दर विरले गुरमुख पीणा। दीन मुहम्मदी सर्ब मिटाए। अन्तिम बैठे साचा नूर गंवाए। वेद अथर्बण रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आपणी जोत जगाए। वेला गया वक्त चुकाया चार यारा। लेखा किया हिसाब मुकाया सर्ब गंवारा। लहणा दिया आपणा आप गंवाया कलि होए ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पंचम करे जगत वरतारा। जगत आया अथर्बण वेद। कलिजुग जीव ना पायण भेद। सृष्ट सबाई होई खेद। जोत सरूपी जोत प्रभ विच संसार सदा अभेद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
७४४ ०१ भगवान, जुग चौथे माण गंवाया अथर्बण वेद। ऐड़ा आया अथर्बण उपाया। अल्ला अलाहू नूर धराया। अन्ध अन्धेर सभ जगत कराया। अन्त अख़ीर प्रभ कलि दए कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौथे अथर्बण माण गंवाया। वेद अथर्बण प्रभ जगत चलाया। ईसा मूसा प्रभ मात उपाया। दीन मुहम्मदी प्रभ आप उपजाया। कलिजुग अन्तिम अन्त करन दा प्रभ साचे खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौथे ऐड़ा अथर्बण वेद चुकाया। ऐड़ा अथर्बण कलिजुग वरतंत। भुलाए प्रभ भुल्ले सर्ब जीव जन्त। माया पाई प्रभ बेअन्त। प्रभ की महिंमा बड़ी अगणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तकाल कलि झूठी सृष्ट करे भस्मंत। ऐड़ा अथर्बण होए अख़ीर। मेट मिटाए प्रभ पैग़ंबर औलीए पीर। अन्तकाल कलि कोए ना देवे धीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौथे अन्त कराए अख़ीर। प्रभ साचा सच कर्म कराए। मातलोक विच जोत प्रगटाए। जुगो जुग अन्तिम जुग आप कराए। साचा जुग साचा प्रभ सदा उपजाए। विच मात प्रभ साची दात आपणा नाउँ रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सद रिहा समाए। मातलोक प्रभ जामा पाए। कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। सतिजुग साची नींह रखाए। सोहँ साचा नाम प्रभ साचा झोली पाए। एका बख्शे चरन ध्यान, जो जन रसना गाए। आत्म जोत जगे महान, अज्ञान अन्धेर प्रभ दे मिटाए। सोहँ शब्द जो जन सुणे कान, सुरत शब्द प्रभ मेल

७४४ ०१

७४५
०१

मिलाए। निहकलंक चरन धूढ़ अशनान, गुरसिख साचा नहाए। गुरमुख विरले कलिजुग वर दर साचा पाण, बेमुख भरम भुलेखे प्रभ सर्ब भुलाए। धन्न धन्न धन्न गुरसिख प्रभ चरनी डिग्गण आण, साची दरगाह प्रभ लेखे लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि दर पछाण बांहों पकड़ प्रभ लए उठाए। बाहों पकड़ गुरसिख उठाया। आप आपणी सरन लगाया। जोत सरूपी गुरमुख साचे प्रभ साचा सदा समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त होए सहाया। आदि अन्त प्रभ सदा सहाई। गुरमुख साचे प्रभ साचे बणत बणाई। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, ना आए प्रभ सरनाई। बेमुख दर आए नाचे, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आई। गुरमुख साचा सोहँ हिरदे वाचे, आत्म जोत प्रभ करे रुशनाई । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा होए सहाई। गुरसिख सो जन जिस प्रभ दया कमाए। गुरमुख सो जन जिस प्रभ दरस दिखाए। गुरसिख सो जन जिस प्रभ अबिनाशी चरन लगाए। गुरसिख सो जन सोहँ शब्द रसना गाए। धन्न धन्न धन्न गुरसिख महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकाए। गुरसिक्खां प्रभ तेरी ओट। आत्म कढ्ढे सारे खोट। एका शब्द आत्म धुन सोहँ लगावे चोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख उपजाए वड्याए तराए विच कोटी कोट। कोटन विच गुरसिख उज्जयारा। लिखाए लेख निहकलंक अवतारा। सतिजुग उपजाए सति करे वरतारा। भगत वड्याए प्रभ लेख लिखाए अपारा। प्रभ आपणी सरन लगाए, किरपा करे आप गिरधारा। विच मातलोक तराए, जन्म ना पाए दूजी वारा। विच जोती मेल मिलाए, आप आपणा करे आकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग उपजाए साचा सति पसारा। सतिजुग साचे सति वरतार। सति सति वरताए सति करतार। यति यति यति एका शब्द रखाए अधार। मति मति मति प्रभ साची मति पाए विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बेमुखां करे ख्वार। सच सुच प्रभ सति वरतावणा। साचा काम साचे धाम प्रभ अबिनाशी आप रचावणा। सोहँ नाम अमृत जाम प्रभ साध संगत पिलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन कर्म मस्तूआणे आप करावणा। मस्तूआणा प्रभ धाम उपजाए। राजे राणे सरन लगाए। चार वरन प्रभ माण दवाए। एका आण निहकलंक रखाए। राणा संगरूर प्रभ रंग रंगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम आप उपाए। साचे धाम प्रभ माण दवाए। आप आपणे चरन उठाए। साध संगत प्रभ संग रलाए। गुणनिधान विच रिहा समाए। नाम दी बाण प्रभ जगत लगाए। साची आण सोहँ पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सद संग समाए। साचा प्रभ सच कर्म कमाए। साध संगत सच शब्द सुणाए। आपणा चरन प्रभ लए उठाए। राउ रंकां माण गंवाए। साचा धाम आप सुहाए। सोहँ नाम सर्ब वरताए। जै जै जैकार सर्ब कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा डंक वजाए। कलिजुग अन्तिम होए अख़ीर । प्रभ

साचा संग साध संगत पाए आप वहीर। मस्तूआणा साचा धाम, अमृत करे साचा नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा अमृत बरसे जिउँ बालक माता सीर। साचा प्रभ सच फ़रमावे। साध संगत सारी उठ धावे। वड वड जोध आपणा कर्म आप करावे। शब्द लिखावे अगाध बोध, जीव कोए भेव ना पावे। सृष्ट सबाई प्रभ जाए सोध, शब्द सरूपी खेल रचावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत संग सद समावे। साध संगत संग सद समाया। साचा कर्म प्रभ आप कमाया। साचा चरन जमन किनारे प्रभ साचे जा टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी वाली हिन्द उठाया। जमन किनारे प्रभ चरन टिकाए। राजे राणयां माण गंवाए। वरन बरन दा भेद चुकाए। एका सेव निहकलंक दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिल्ली शहर भाग लगाए। साचे प्रभ कर्म कमाया। अमृत वरते वरताए जो धुरों लिखाया। जुगो जुग प्रभ आप आपणी बणत बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आपणा भेद चुकाया। जमन किनारा किनारा जमन। जोत जगाए प्रभ तीन भवन। हरि राए गुण जीव जाणे कवण। बेमुखां मानस जन्म गंवाया अवण गवण। गुरमुखां माण दवाया प्रभ सोहँ शब्द चलाया विच स्वास पवण। प्रगट जोत दरस दिखाया, अमृत मेघ बरसाया जिउँ बरखे सवण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे माण दवाया, चरन धूढ़ देवे सच न्वृण। साचा तट जमन किनारा। द्वापर धरे जोत

कृष्न मुरारा। वासदेव जानकी नंद जशोदा आर पारा। हँकारीआं प्रभ गंवाए हँकार, जुगो जुग लोकमात लए अवतारा। प्रभ साचे दी साची कार। प्रगटे जोत खोल्ह कोट दर किवाड़। साचा प्रभ विच आया जमना धार। उठी सुरसती चरन चुम्मे कृष्न मुरार। जुगो जुग प्रभ साचा विच मात लए अवतार। जमन किनारा प्रभ वखाणे। साचा रंग सदा प्रभ माणे। आप आपणे वरते भाणे। जीव जन्त कोई भेद ना जाणे। विच द्वापर प्रभ कीने खेल महाणे। जोत सरूपी जोत प्रभ सद वसे बिरधां बाल अञ्याणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव जन विरला जाणे। विच द्वापर प्रभ जोत प्रगटाई। रमईआ राम घनईआ शाम नाउँ रखाई। साचा प्रभ अवस्था बाल करे खेल रघुराई। जोत सरूपी जोत प्रभ, कोए जीव भेव ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धार जमन किनारे साचा धाम दे उपजाई। साचा धाम प्रभ उपजावणा। आपणा चरन आप टिकावणा। साध संगत प्रभ सोहँ साचा नाम जपावणा। प्रभ साचा दर दरबार बणावणा। प्रभ आपणा जोत सरूपी तेज आप वखावणा। एका दर घर बार, प्रभ एका मार्ग लावणा। साचा नाम सति सति सति वरतार, प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम जपावणा। जमन किनारे प्रभ वासा। जोत जगाए प्रभ अबिनाशा। साध संगत प्रभ पूरन देवे धरवासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई वेखे रंग तमाशा। साध संगत गुर चरन सुहाए। गुरचरन

७४६
०१

प्रीती दिवस रैण कमाए। साची नीती आत्म प्रभ सद रखाए। कलिजुग औध अन्तकाल कलि बीती प्रभ साचा दए लिखाए। साध संगत सदा जग जीती, प्रभ साचा आस पुजाए। मिल्या फल सेव जो कीती, साचा नाम प्रभ झोली पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जमन किनारे शब्द लिखाए। साचे प्रभ सच शब्द लिखावणा। वाली हिन्द पकड़ उठावणा । वड वड प्रभ मृगिन्द आपणा तेज आप वखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखावणा। जागे भाग कलिजुग सोए। साची जोत प्रभ जगत बिलोए। सतिगुर साचा ना भेखे कोए। अज्ञान अन्धेर रहे ना कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध जेवड अवर ना कोए। साची जोत करे प्रकाश। अज्ञान अन्धेर जाए विनास। आत्म दु:ख भुक्ख प्रभ कीने नास। साचा प्रभ सद रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रास।

❋ ८ चेत २००६ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❋

गुरसिख साचे प्रभ चरन टेक। प्रभ साचा करे बुध बिबेक। निर्मल जोत जगाए एक । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रखावे चरन टेक। चरन टेक गुरसिख रखाए। प्रभ अबिनाशी बणत बणाए। मातलोक प्रभ साचा देवे वड्याए। जीव जन्त गुरसिख साचे तेरा नाम रसना गाए। साचा प्रभ अबिनाशी बैठ इकन्त तेरे लेख लिखाए। जोत सरूपी प्रभ साचा कन्त, गुरसिख भुल्ल ना जाए। प्रभ साचा सदा बेअन्त, सद आपणे रंग समाए। गुरमुख विरले प्रभ बणाए सन्त, साची धुंन उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन सरनाए। जिस जन बख्शे चरन सरना। गुरमुख साचे प्रभ चरन तरना। निहकलंक जोत मेल कर गुरसिख गुर इक्क करना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग खेल कर जोत जगाए चार वरनां। वरन चार प्रभ माण दवईआ। सोहँ चढ़ाए साची नईआ। जै जै जैकार बणाए साची मईआ। एका एकँकार पित आप अखवईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेव खुलईआ। भेत खुल्हाए आप प्रभ, आपणी बणत बणा। भेत खुल्हाए आप प्रभ, विच मात जोत प्रगटा। भेत खुल्हाए आप प्रभ, कलिजुग जीआं देवे माण गंवा। बणत बणाए आप प्रभ, गुरसिख सोए लए आप जगा। भेत खुल्हाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ डंक वजा। सोहँ डंक चार कुन्ट जाए वज्ज। शेर शेर शेर सिँघ जाए गज्ज। वेद पुरान कुरान अञ्जील शास्त्र छे विच्चों मात जायण भज्ज। सोहँ शब्द पाए आण साध संगत रखाए लज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन आए जन सीस झुकाए पर्दे लए कज्ज। खाणी बाणी ना होए सहाए। निहकलंक कलि जोत प्रगटाए। वड वड वड प्रभ आपणे भाणे रिहा

समाए। तट तीर्थ कोई सार ना पाए। वेले अन्त कलि ना कोए होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब माण गंवाए। माण गंवाए सर्ब आण। चार यारां संग मुहम्मद जो प्रभ पाई आण। एका शब्द निहकलंक सोहँ लाया बाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब गंवाए माण। प्रभ साचा कलि बणत बणावे। बिन पित पूत उपजावे। कुँआरी मरीआ नाम लिखावे। यसू कृस्ती जगत उपावे। कलिजुग उलटी बणत बणावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त जोत अञ्जील खिच्च वखावे। साचा नाम धरे गुर मन्त्र। सोहँ शब्द सर्ब भस्मन्त्र। रसना स्वास चलाए प्रभ एका सतंतर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन सोहँ देवे साचा गुर मन्त्र। साचा नाम जो जन दृढ़ावे। प्रभ अबिनाशी रसना गावे। निज घर वासी निज मांहि पावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सद विच समावे। आपणा आप प्रभ रिहा छुपाए। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। गुरमुखां प्रभ बूझ बुझाए। सोहँ शब्द ज्ञान दे, प्रभ साचा सरन लगाए। एका नाम जगत निधान दे, प्रभ भुल्लयां मार्ग पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा नाम धराए। साचा नाम जगत धराए। हँसा अवतार जगत प्रभ अख्वाए। मोहणी रूप प्रभ ल्या वटाए। शिव शम्भू प्रभ दे भुलाए। आकार विकार प्रभ रिदे वसाए। गुण निधान चतुर सुजान शिव जाए माण गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए। मोहणी रूप प्रभ बणाया। वेख शिव आत्म डुलाया। काम हँकार सुध भुलाया। जोत सरूपी जोत प्रभ किसे हत्थ ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जुगो जुग सभ दा माण गंवाया। सच प्रभ सच दरबार। साची जोत धरे विच संसार। देवणहार इक्क दातार। मंगण खड़े कोट द्वार। एका शब्द प्रभ रखावे अधार। प्रगट जोत जोत सरूप, साचा जोत करे आकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतार। साचा दर भगत भण्डार। देवे प्रभ अगम्म अपार। अगम्म अपार गुरसिख साचा जाए तार। हिरदे वसे कृष्न मुरार। लोकमात ना होवे किसे डर। रक्खे हत्थ सिर आप गिरधार। कलि जीव आपणा किया लैण भर, मदिरा मास करन आहार। गुरमुख साचा प्रभ चरन लाग जाए तर, सोहँ शब्द गाए रसन अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी करे पसार। जोत सरूप प्रभ प्रकाशे। आत्म अन्धेर सर्ब विनासे। साचा प्रभ रक्खे सच घर वासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए जपाए स्वास स्वासे। सोहँ शब्द बली बलवान। बख्शे गुरमुख साचा प्रभ विष्नूं भगवान। जो जन रसना जपे आत्म जोत जगे महान। कर दरस जोत सरूप महाराज शेर सिँघ गुण निधान। गुणवन्त ना जीव विचारे। जोत सरूप विच संसारे। कलिजुग जीव अन्तकाल होए अन्ध अंध्यारे। बेमुख सोए लंबे पैर पसारे। मानस जन्म गए कलि हारे। दो जहानी होए ख्वारे। गुरसिख जन साचा होए। बिन प्रभ अवर ना दीसे

कोए। प्रभ चरन लाग जन्म जन्म दी मैल धोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ धागे लए परोए। सोहँ साचा नाम उपजाया। सतिजुग साचा मार्ग लाया। कलिजुग झूठा भेख मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंकां इक्क कराया। सतिजुग साचा मार्ग लाए। जोत सरूपी साची जोत विच मात जगाए। एका शब्द एका राग प्रभ एका धुन उपजाए। साचा नाम चार कुन्ट प्रभ सोहँ डंक वजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक इक्क कराए। साचा प्रभ कल वरताए। साची जोत विच मात प्रगटाए। पवण पूत प्रभ शब्द अलाए। गुरमुख साचे प्रभ रिदे वसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी होए सहाए। सोहँ साचा सच घर पाया। साचा प्रभ रसना अलाया। विच मात पवण समाया। चार कुन्ट प्रभ साचे एका डंक वजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ माण दवाया। सोहँ शब्द प्रभ की धुन। जन विरला जाणे माणे रिख मुन। पूरन प्रभ पछाणे जीव आत्म खुल्हे सुन्न। कलिजुग जीव होए अञ्याणे, प्रभ खपाए अन्तकाल कलि चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंकां लए पुकार सुण। साचा प्रभ सुणे पुकारा। मातलोक लए अवतारा। एका जोत जगे निहकलंक अवतारा। सृष्ट सबाई होए ख्वारा। बेमुखां आत्म प्रभ लाए खण्डा दो धारा। गुरमुख साचे रंग चढ़ाए प्रभ सोहँ अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप अगम्म अपारा। सच गुर सच दरबार। भगत जनां प्रभ तारनहार। कलिजुग बेड़ा करया पार। जो जन आए प्रभ चरन द्वार। सोहँ शब्द प्रभ देवे नाम अधार। रसना जप जप जीव आत्म करे उज्जयार। साचा नाम अमृत रस पीव, वेले अन्त पावे मोख द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माण रखाए विच संसार। विच जगत प्रभ माण दवाए। प्रभ साचा मितगति जिस जन जणाए। बेमुख जीव कोई भेव ना पाए। गुरमुख साचे सुफल होए दर सेव, दर आए सीस झुकाए। देवे दरस प्रभ अलख अभेव, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत प्रगटाए। किरपा करे आप गिरधारा। साची जोत करे आकारा। जोत सरूप प्रभ अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण नर जगत पित आया। जोत सरूपी खेल रचाया। एका भेव प्रभ आप खुल्हाया। गुरमुखां प्रभ माण दवाया। बेमुखां गूढ़ी नींद प्रभ सवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाया। जोत सरूपी जामा धार। अचरज खेल करे करतार। साचा प्रभ सुणे पुकार। एका शब्द देवे अधार। आत्म जोत जगे अपार। अनहद शब्द उपजे धुन्कार। अमृत आत्म बरखे प्रभ किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सार। सर्ब जनां प्रभ आपे जाणे। आपणा रंग आप प्रभ माणे। कलिजुग जीव होए अञ्याणे। जोत सरूप ना प्रभ पछाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि मेट वखाणे। कलि कलि कलि होए अन्त। माया

प्रभ पाए बेअन्त। सर्ब भेख मिटाए सर्ब जीव जन्त। बैठा अडोल प्रभ इकन्त। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणाए साचे सन्त। आत्म साची जोत जगाई। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाई। साचे प्रभ दया कमाई। सोहँ साचा नाम गुरमुखां झोली पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे जोत सवाई ।आत्म जोत करे उज्जयार। सोहँ देवे नाम अधार। एका रंग वसे करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरखां लावे पार। सति पुरख सति कर जाण। साचा प्रभ सद रंग माण। देवे दरस प्रभ बिधनान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां सोहँ शब्द मारे बाण। सोहँ शब्द प्रभ चलाया। कलिजुग झूठा भेख मिटाया। कलिजुग साचा लेख चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रगटाया। एका जोत इक्क आकारा। एका बंक इक्क दुआरा। जुगो जुग प्रभ मात लए अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सतिगुर साचा दया कमाए। विछड़यां कलि मेल मिलाए। रुठड़यां प्रभ लए मनाए। भुखड़यां प्रभ भुक्ख गंवाए। दुखड़यां प्रभ दु:ख मिटाए। रुखड़यां प्रभ अमृत मेघ बरसाए। सुकड़यां प्रभ मात हरा कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाए। गुरमुख सोया प्रभ साचा जागा। अनहद शब्द उपजावे रागा। खुल्हे सुन्न प्रभ चरनी लागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म मैल गंवाए दाग़ा। दुखीआ जीव दर बिल्लाए। साचा प्रभ दया कमाए। किरपा करे आप रघुराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। सरन आए जो जन सरनाया। प्रभ साचे दा माण रखाया ।आत्म अभिमान सर्ब गंवाया। एका ध्यान गुरचरन लगाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए सिर हत्थ टिकाया। जो जन आए गुरचरन दरबारे। किरपा करे प्रभ गिरधारे। रोग सोग प्रभ आप निवारे। दरस अमोघ देवे गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे। कर किरपा पार उतारया। निर्धनां प्रभ काज संवारया। सरधनां प्रभ आस पुजारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप करतारया। निर्धनां प्रभ सरधा पूर। साचा प्रभ सदा हज़ूर। आत्म बख्शे साचा नूर। सोहँ देवे साची तूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाली भाण्डे करे भरपूर। पूरन प्रभ पूरन आसा। साचा प्रभ सच भरवासा। चरन प्रीती साची रहिरासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे बन्द ख़लासा। गुरमुखां करे बन्द ख़लासी। गलों कटे जम की फाँसी। जुगत मुक्त कराए दासी। देवे माण घनकपुर वासी। कलिजुग प्रगटे जोत अबिनाशी। कलिजुग माया दर तो नासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घट वासी। सर्ब घटा प्रभ आपे जाणे। भगत जनां प्रभ बिरद रखाणे। दर घर साचे देवे माणे। साची जोत जगे महाणे। गुरमुख विरला प्रभ रंग माणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आपे जाणे। सर्ब जनां प्रभ जानणहार।

७५० ०१

आत्म वसे प्रभ गिरधार। दिस ना आए कलिजुग जीव गंवार। गुरमुखां जोत आत्म करे उज्जयार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे खोल्ह देवे दर द्वार। दस्म दुआर प्रभ आप खुल्हाए। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाए। आत्म त्रैकुटी खोल्ह वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साची धुन उपजाए। सोहँ धुन उपजावे आत्म अंदर। झूठी काया साचा मन्दर। गुरमुख साचे खुल्हा जंदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी वसे अंदर। गुरसिख मंग दरस दान। देवे दरस विष्नूं भगवान। सोहँ नाम देवे बबाण। रसना जप जप जीव आत्म जोत जगे महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल मिलाण। जोत सरूपी मेल मिलावे। आप आपणा आप प्रगटावे। आत्म बुझी दीपक फेर जगावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दरस दिखावे। दरस दिखाए दयावंद। आत्म उपजावे परमानंद। गुरमुख कटाए दुःख बन्द बन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे धीर धराए, जिउँ सीतलता चन्द। साचा गुर सांतक सति। गुरमुख साचे साची मति। प्रभ अबिनाशी जाणे आप मित गति। सोहँ शब्द रखावे देह साचा यति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे रक्खे तेरी पति। पतिपरमेश्वर दया कमाए। आप आपणे चरन लगाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। एका जोत दे टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे दया कमाए।

७५१ देवे दरस अलख अभेवा। आप आपणी लावे सेवा। सोहँ देवे आत्म साचा मेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख वड्याई वड देवी देवा। सुरती देवे सुरत ध्याना। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। सोहँ उपजावे सुणावे शब्द महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप गुण निधाना। किरपा करे प्रभ अपारा। सोहँ शब्द उपजे धुन्कारा। खोल्ह देवे प्रभ दस्म दुआरा। अमृत झिरना झिरे अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस जोत सरूप निराधारा। साचा प्रभ निराहार समाए। साचा प्रभ निरवैर अख्वाए। साचा प्रभ गुरमुखां सद दया कमाए। साचा प्रभ देवे वड्याई होए निमाणा जो दर ते आए। आत्म साची जोत जगाए। बिन बाती बिन तेल विच देह करे रुशनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा देवे जणाए। आप आपणा जन जणावे। जोत सरूपी दरस दिखावे। बाहों पकड़ प्रभ आप उठावे। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तकाल कलि चरन लगावे। अन्तकाल कलिजुग कराणा। बेमुख जीवां प्रभ सर्ब मिटाणा। गुरमुख साचे साची दरगाह माण दवाणा। साध संगत अन्तकाल प्रभ सिर हत्थ टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवास रखाणा। दरगाह साची माण दवाए। दर घर साचे लए बहाए। जोत जोत मेल कर, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। पारब्रह्म अचरज खेल कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लए तराए। तारनहार आप दातार। कलिजुग बेड़ा किया पार।

देवे दरस प्रभ अपार। पकड़ ल्यावे चरन द्वार। किरपा करे भगत उधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए अपार। आत्म जोत होए प्रकाश। आत्म अन्धेर जाए विनास। सोहँ उपजे स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रक्खे विच वास। सोहँ तेरी जै जै जैकार। चार कुन्ट वरते विच संसार। चार वरन एका दिसे निहकलंक तेरा दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत करे आकार। एका दर दरबार रखाया। चार वरन प्रभ माण दवाया। ऊँच नीच सर्ब भेख मिटाया। राउ रंक इक्क कर बहाया। राजा राणा तख्तों लाहया। सोहँ बाण शब्द चलाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट जोत निहकलंक कलि कर्म कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा डंक वजाया। सोहँ शब्द वज्जे डंक। इक्क कराए राउ रंक। प्रगट जोत सुहाए थान बंक। जोत सरूपी प्रगट जोत देवे दरस वासी पुरी घनक। घनकपुरी प्रभ जामा पाया। आपणा आप प्रभ आप छुपाया। गुरमुख विरले प्रभ सेव लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दरस दिखाया। गुर दरस पेखे गुर दर आए। आत्म तृखा सर्ब मिटाए। निजानंद निज मांहि उपजाए। आत्म साची जोत जगाए। जगे जोत कदे बुझ ना जाए। सोहँ शब्द रसन स्वास चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद आत्म वास रखाए।

७५२
०१

❊ १५ चेत २००६ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ❊

बणत बणाए आप प्रभ, आपणी जोत प्रगटाए। बणत बणाए आप प्रभ, गुरसिख साचे लए जगाए। बणत बणाए आप प्रभ, विच चरन लए लगाए। बणत बणाए आप प्रभ, आत्म अन्धेर दए गंवाए। बणत बणाए आप प्रभ, साची जोत दे जगाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी दया कमाए। बणत बणाए आप प्रभ, गुरमुख साचे बजर कपाट खुल्हाए। बणत बणाए आप प्रभ, साची जोत करे रुशनाए। बणत बणाए आप प्रभ, आत्म झिरना दे झिराए। बणत बणाए आप प्रभ, मुख अमृत दे चुआए। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। बणत बणाए आप प्रभ, जोत सरूपी दरस दिखावे। बणत बणाए आप प्रभ, अनहद साची धुन उपजावे। बणत बणाए आप प्रभ, अनहद साचा राग उपजावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी जोत आप प्रगटावे। साचे प्रभ बणत बणाई। आप आपणी जोत प्रगटाई। बेमुख आत्म अन्धेर रखाई। गुरमुख साचे बूझ बुझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ दात झोली पाई। सोहँ एका भगत उधार। सतिगुर साचा इक्क रखाए शब्द संसार। बैठा अडोल विच जीव जन्त गुरमुख विरला पावे सार। साचा प्रभ एका देवे चरन प्यार। मातलोक मिले वड्याई, आत्म उपजे साची धुन्कार। दिवस रैण प्रभ एका शब्द चलावे भगत अधार। प्रभ साचा सच

मेल मिलावे, सद बख्शणहार आप दातार। भुलयां प्रभ मार्ग पावे, करे करावे करावणहार। कलिजुग जीव भेव ना पाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी पावे सार। गुरमुख साचे बूझ बुझाए। आप आपणा भेव खुल्हाए। एका रंग गुरसिख आत्म लाए। सोहँ शब्द प्रभ झोली पाए। दिवस रैण रसना गाए। अन्तकाल कलि ना लग्गे तत्ती वाए। मातलोक आए भगवन्त, सतिजुग साचा राह चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत प्रगटाए। कलिजुग अन्तिम खेल रचावणा। बेमुखां नष्ट करावणा। सोहँ खण्डा प्रभ उठावणा। सतिजुग साचा मार्ग लावणा। एका एकँकार नाम एक धरावणा। सर्ब सुहाए थान बंक, चार वरन इक्क करावणा। इक्क कराए राउ रंक, ऊँच नीच दा भेव मिटावणा। सोहँ वजावे साचा डंक, चार कुन्ट जै जै जैकार करावणा। गुरसिख उधारे जिउँ त्रेता जनक, जोत सरूपी आत्म जोत जगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पावणा। कलिजुग अन्तिम अन्त करा के। आपणी कल आप वरता के। जूठ झूठ सभ नष्ट करा के। तट तीर्थ सभ नाम मिटा के। खाणी बाणी गगन पताली एका जोत टिका के। सोहँ साचा शब्द विच मात चला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्त करा के। वेद अथर्बण जाए मिटा। अल्ला अलाहू जोत खिचा। ईसा मूसा मुहम्मदी कोई दीसे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलावे सभनी थां। चार कुन्ट जै जै जैकार। सोहँ शब्द वरते विच संसार। सतिजुग मातलोक लए अवतार। सच सुच्च प्रभ भरे भण्डार। कलिजुग जीव मूर्ख मुग्ध गंवार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सोहँ मारे मार। लेख लिखाए प्रभ अलख अलेखा। दर आए प्रभ माण गंवाए कढ्ढे भरम भुलेखा। दर आए प्रभ दर्शन पाए, गुरमुख साचे प्रभ नेत्र पेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शब्द लिखाए, मेट वखाए मस्तक लिखी जो रेखा। साचे प्रभ सच वड्याई। भगतन होए आप सहाई। रंकां सिर प्रभ हत्थ टिकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण मात प्रगटाई। साचा कर्म प्रभ कमाई। साध संगत भेव खुल्हाई। एका दूजा कोए रहण ना पाई। एका एकँकार एका नाम धराई। एका वरते विच संसार, वरन बरन प्रभ भेव मिटाई। साध संगत दर उतरे पार, जो चल आए सरनाई। गुर चरन पेखे हरि का द्वार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पूरन आस कराई। गुर चरन हरि का द्वार, भगत जनां प्रभ परखे नीती। देवे दरस अगम्म अपार, गुरमुख साचे प्रभ काया सीतल कीती। हउमे मारे विच्चों हँकार, बेमुख पायण आपणी कीती। मदिरा मास करन आहार, अन्तकाल कलि जाए औध सी बीती। महाराज शेर सिँघ प्रगट होए चिट्टे असव असवार, जुगो जुग प्रभ साचे दी साची रीती। चिट्टे असव प्रभ प्रगट होए। राणा संगरूर प्रभ चरन बिलोए। होए प्रकाश त्रैलोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसा साचा दर, दूसर नाही कोए। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जैकार होए तिन्न लोए। साचा प्रभ दरस दिखाए। राउ रंक प्रभ चरन लगाए। पार उतार प्रभ विच सेवा लाए। विच संसार माण रखाए। शब्द अधार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म शांत कराए। साचे प्रभ साची कारा। जोत सरूपी वरते विच संसारा। साचा प्रभ देवे दरस जोत सरूप अगम्म अपारा। साचा प्रभ अमृत आत्म बरस, साचा देवे मोख दुआरा। साचा प्रभ आत्म मिटाए सारी हरस, जो जन आए चरन दुआरा। साचा प्रभ दुखियां भुक्खियां कलि दुःख भुक्ख अन्त प्रभ रोग निवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम अधारा। सोहँ नाम गुर दर पाया। भाण्डा भरम भन्न वखाया। साचा कर्म गुर दर लिखाया। मानस जन्म लेखे लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आए दर्शन पाया। कर दरस आत्म रस माण। आत्म उपजे सुख महान। सोहँ देवे प्रभ साचा दान। गुणवन्त आप भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। आप जाणे आप वखाणे। आप चलाए आपणे भाणे। पकड़ उठाए राजे राणे। राउ रंक इक्क प्रभ कराणे। ऊँच नीच दा भरम मिटाणे। सतिजुग साचे जीव उपाणे। साध संगत प्रभ मेल मिलाणे। आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाणे। जोत प्रकाश होए महाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी गतिमित आपे जाणे। आपणा किया आपे जाणे। जीव जन्त ना कोए पछाणे। जुगो जुग भुल्ले जीव अञ्याणे। सोहँ शब्द प्रभ मारया बाणे।
७५४ ०१ तख्तों लाहे राजे राणे। चरनी डिग्गण होए निमाणे। मस्तूआणे प्रभ साचे चरन लगाणे। दिवस चाली प्रभ जगत लेख लिखाणे। ७५४ ०१
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दे माण गंवाणे। मस्तूआणे चरन टिकाए। हँकारीआं प्रभ हँकार गंवाए। कर ख्वार प्रभ सरन लगाए। देवे तार जो जन चरनी सीस झुकाए। उतरे पार जो जन सोहँ रसना गाए। जन्म ना पावे दूजी वार, निहकलंक सिर हत्थ टिकाए। भगत वछल आप गिरधार, मातलोक प्रभ जोत जगाए। सच सुच्च वरते विच संसार, सतिगुर साचा मार्ग लाए। बेमुखां ना दीसे उरार पार, प्रभ विच मञ्झधार डुबाए। निहकलंक चरन डिग्गे जो नर नार, प्रभ जोती मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त होए सहाए। साची सेव जिस जन कमाई। देवे दरस आप रघुराई। जम दूत कोई नेड़ ना आई। विच बबाण प्रभ लए बिठाई। सचखण्ड प्रभ दे पुचाई। जोत सरूपी प्रभ जोत जगाई। एका जोत होए रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाई। दर घर साचा जिस जन पाया। जोत सरूपी मेल मिलाया। आवे ना जावे जाए ना आए प्रभ आपणे रंग समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवास रखाया। सचखण्ड निवास रखावे। आप आपणा भेव खुल्हावे। एका जोत जुगो जुग विच मात प्रगटावे। गुरमुख साचे प्रभ साची गोत बणावे। बेमुख आयण जायण दर रोत, मन विच हँकार रखावे। गुरमुखां प्रभ खोल्ह सोत, दुरमति मैल आप धुआवे।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर साचे मेल मिलावे। साचे प्रभ दया कमा। आपणी सरन लए लगा। सतिजुग सोहँ राग प्रभ दए चला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जगत जाए धरा। सोहँ शब्द प्रभ जगत चलावणा। चार वरन प्रभ रसना गावणा। वरन बरन प्रभ इक्क करावणा। ऊँच नीच प्रभ सरन लगावणा। राउ उमराउ प्रभ नष्ट करावणा। निमाणयां निताणयां प्रभ चरन लगावणा। चतुर सुघड़ स्याणयां प्रभ सुरत शब्द जगावणा। बिरध जवान अञ्याणयां प्रभ एका शब्द वसावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर हत्थ टिकावणा। पूरे गुर चरन बलिहार। बाहों पकड़ प्रभ जाए तार। एका बख्शे चरन प्यार। साची जोत देवे अधार। गुरसिख साचे कर्म विचार। जोत सरूपी जोत प्रभ करे खेल अपार। बेमुखां आत्म ना दिसे वेले अन्त करे ख्वार। गुरसिक्खां प्रभ जोत सरूप देवे दरस आत्म करे उज्जयार। सोहँ शब्द चार कुन्ट प्रभ कराए जै जै जैकार। साध संगत प्रभ दर सुहाए, दोए जोड़ करन निमस्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन नर अवतार। नर अवतार बणत बणावे। राउ रंकां सरन लगावे। साध संगत प्रभ हुक्म सुणावे। आपणे भाणे विच चलावे। राणा संगरूर संग रलावे। जमन किनारे प्रभ डेरा लावे। ज्ञानियां ध्यानियां प्रभ शब्द धुन उपजावे। चरन धूढ़ इशनानीआं प्रभ चरन सेव लगावे। प्रभ तोड़े माण अभिमानीआं, निहकलंक जोत प्रगटावे। सोहँ शब्द देवे साची बाणीआं, सतिजुग साचा राह बतावे। प्रगटे जोत वाली दो जहानिया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्ह्वावे। साची जोत प्रभ जगा के। वड दाता वड जोधा वड सूरबीर बणे आपणा आप उपा के। सोहँ शब्द चलावे तीर, रसना प्रभ अल्ह्वा के। बेमुखां पाए वहीर, गुरमुखां जाए धीर धरा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव जाए आप खुल्ह्वा के। आपणा भेव आप खुल्ह्वाए। राजे राणे प्रभ सरन लगाए। हरन फरन सर्ब खुल्ह्वाए। वाली हिन्द प्रभ दया कमाए। सोहँ शब्द स्वास चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए। साचे प्रभ साची कारा। साचा वरते जगत विहारा। प्रभ साचा करे रंग अपारा। जोत सरूपी प्रगट जोत देवे दरस जाए दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द जोत जगाए प्रगटाए विच झूठे देह मुनारा। वाली हिन्द प्रभ दरस दिखाए। सुरप्त राजा इन्द प्रभ चरन बहाए। वड्डा आप मृगिन्द आपणे रंग रंगाए। पकड़ वाली हिन्द प्रभ सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए। साचे प्रभ सच कारज करना। साचे प्रभ सृष्ट सबाई वरना। साचे प्रभ सोहँ साचा नाउँ विच मात दे धरना। साचे प्रभ राउ रंक इक्क करना। साचा प्रभ भेद मिटाए वरना बरना। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द लगाए सरना। वाली हिन्द सरन प्रभ आए। दोए जोड़ सीस झुकाए। कलिजुग तामस मगरों लाहे। सतिजुग साचा राजस प्रभ आप अख्वाए।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द सतिजुग साचे लेख लिखाए। सतिजुग वरते सति करतार। सति सति सति होवे विच संसार। सोहँ शब्द चार कुन्ट जै जैकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग बख्शे मोख द्वार। वाली हिन्द प्रभ शब्द जणाए। दुखीआं भुखीआं प्रभ लेख लिखाए। आत्म सुखीआं प्रभ धुन उपजाए। कलिजुग बेमुखां प्रभ अन्तकाल दए सज़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमाए। साचा प्रभ सांतक सति। एका शब्द आत्म रखावे साचा यत। गुरमुखां जाणे प्रभ मित गति। साचा प्रभ जन भगतां देवे साची मति। एका शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी रक्खे पति। पतिपरमेश्वर घर में आए। जोत सरूपी जामा पाए। आप अभुल सभ जगत भुलाए। आप अतुल सभ जगत तुलाए। आप अडुल सभ जगत डुलाए। सतिजुग साचा दर जाए खुल्ह, निहकलंक तेरी सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ रखाए। जगत भुलाए आप प्रभ, झूठे धन्दे ला। गुरमुख तराए आप प्रभ, आत्म साचा नाम वसा। जगत भुलाए आप प्रभ, बेमुख जीव उपा। गुरसिख तराए आप प्रभ, अपणी दया कमा। सृष्ट भुलाए आप प्रभ, उलटी मति वसा। गुरसिख तराए आप प्रभ, सोहँ शब्द जणा। सृष्ट भुलाए आप प्रभ, काम क्रोध हँकार विकार चला। गुरसिख तराए आप प्रभ, आत्म साचा दीप जगा। सृष्ट भुलाई आप प्रभ, उप्पर तट्ट तीर्थां धीआं भैणां गए पति गंवा। गुरसिख तराए आप प्रभ, आपणी सरन लगा। सृष्ट भुलाए आप प्रभ, कलिजुग ल्या जगत धरा। गुरसिख तराए आप प्रभ, सिर आपणा हत्थ टिका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि सभ धामां दए मिटा। साचा प्रभ गहर गम्भीर। गंगा गोदआवरी खिच्चे नीर। अठसठ तीर्थ कोए ना देवे धीर। पीर पैग़ंबर औलिया ना कोए दस्तगीर। ईसा मूसा मुहम्मदी होए अन्त अख़ीर। प्रगटे जोत निहकलंक सदी चौधवीं लत्थे चीर। सोहँ शब्द वजाए डंक, चार कुन्ट पै जाए वहीर। इक्क कराए इक्क चलाए इक्क बणाए इक्क सरनाए एका अंक, सोहँ नाम आत्म देवे धीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शांत करे सरीर, सोहँ देवे आत्म धीर। ओअँ आप जोत आकारा। ओअँ आप सदा निराधारा। ओअँ आप सदा निराहारा। ओअँ आप नैण मुँधारा। ओअँ आप जोत निरँकारा। ओअँ आप तीन लोक वरतारा। ओअँ आप मात पाताल आकाश करे उज्जयारा। ओअँ आप खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड जोत अधारा। ओअँ आप आपणे रंग रंगे करतारा। ओअँ आप जोत सरूपी पसर पसारा। ओअँ आप माया रूपी करे विहारा। ओअँ आप आपणी जोत करे आकारा। ओअँ आप लक्ख चुरासी बणे ठठयारा। ओअँ आप घड़े भन्ने अन्त ना पारावारा। ओअँ आप आप आपणा करे पसारा। ओअँ आप एका जोत एका गोत प्रभ निरँकारा। ओअँ आप मात जोत प्रगटाए वारो वारा। ओअँ आप मच्छ कच्छ प्रभ रूप अपारा। ओअँ आप बल

दुआरे जाए बावन रूप धारा। ओअँ आप नर सिंघ रूप करे अपारा। ओअँ आप दे दरस बालक ध्रू पार उतारा। ओअँ आप चक्र सुदर्शन दुरबासे मारा। ओअँ आप साचा नाम देवे जनक अधारा। ओअँ आप राणी तारा जोड़ी मेल मिलाए अपर अपारा। ओअँ आप भोग लगाए जाए बिदर दुआरा। ओअँ आप जुगो जुग लोकमात लए अवतारा। ओअँ आप राम रूप प्रभ साचे धारा। ओअँ आप निर्धनां प्रभ पावे सारा। ओअँ आप दर भीलणी भोग लगाए चरन छुहाए बणाए अमृत जल धारा। ओअँ आप सती अहल्या जाए चरन छुहाए दवाए मोख दुआरा। ओअँ आप जुगो जुग मातलोक लए अवतारा। ओअँ आप दर आए बिप्पर लाज रखाए। ओअँ आप जैदेव लेख लिखाए। ओअँ आप सैण रूप राजन जाए। ओअँ आप कबीर जुलाहा ज़ंजीर कटाए। ओअँ आप भगत रविदास कसीर लेखे लाए। ओअँ आप दर घर साचे नामे भोग लगाए। ओअँ आप धन्ने धीर धराए दरस दिखाए। ओअँ आप जुगो जुग जामा विच मात दे पाए। ओअँ आप भगत जनां दी पैज रखाए। ओअँ आप बेणी भगत जगत तराए। ओअँ आप अजामल विच बिबाण बिठाए। ओअँ आप पापण पूतना पार कराए। ओअँ आप बधक पकड़ गले लगाए। ओअँ आप जुगो जुग जामा विच मात दे पाए। ओअँ आप कलि जुग बणाई। ओअँ आप ऐड़ा अथर्बण वेद लेख लिखाई। ओअँ आप ईसा मूसा मुहम्मद संग चार यारां ल्या उपजाई। ओअँ आप कुरान अञ्जील तुरैत रिहा लिख्त
७५७ ०१ लिखाई। ओअँ आप गुरू नानक विच जोत टिकाई। ओअँ आप जामे दस जोत सरूप रिहा समाई। ओअँ आप गुर अर्जन लेख लिखाई। ७५७ ०१
चरन बहाए भगत जन सुर, बोध अगाध अगाध बोध शब्द लिखाई। ओअँ आप साची दात मात टिकाई। ओअँ आप कलिजुग जीवां वेले अन्त दे भुलाई। ओअँ आप सृष्ट सबाई माई बाप, जीव जन्त रिहा समाई। ओअँ आप सोहँ साचा जाप जगत दे चलाई। ओअँ आप महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप खेल रचाई। जोत सरूपी खेल न्यारा। वरते वरतावे विच संसारा। जोत सरूपी प्रभ गिरधारा। गुरमुख साचे प्रभ आत्म देवे दरस अपारा। बेमुख दर ना पावे प्रभ की सारा। सोहँ शब्द जन हिरदे वाचे, प्रभ देवे मोख दुआरा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान निहकलंक अवतारा। सोहँ शब्द आत्म रास। साचा प्रभ सदा रक्खे वास। आत्म हँकार विकार जायण नास। सोहँ चले रसन स्वास। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान थिर घर करे निवास। सोहँ चले स्वास स्वासा। जोत सरूप करे प्रकाशा। देवे दरस प्रभ अबिनाशा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रासा। निहकलंक साचा रूप। निहकलंक जोत सरूपी साचा भूप। जगत महिंमा प्रभ अनूप। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण सति सरूप। सति सरूप प्रभ सदा सतिवादी। प्रभ अबिनाशी आदि जुगादी। एका आकार सद ब्रह्मादी। साची धुन उपजावे सोहँ नादी। गुरमुख विरले पाई प्रभ जोत अगाधी। प्रभ

साचा होए सहाई, प्रभ साचा सद रसन अराधी। विच मात देवे वड्याई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख तेरी आत्म साधी। गुरसिक्खां प्रभ माण दवाए। गुरसिक्खां प्रभ आण रखाए। गुरसिक्खां प्रभ सोहँ साचा शब्द जणाए। गुरसिक्खां आवण जावण प्रभ गेड़ कटाए। गुरसिक्खां अन्तकाल प्रगट जोत प्रभ दरस दिखाए। गुरसिक्खां प्रभ साचा दरगाह साची माण दवाए। गुरसिक्खां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी गोद बहाए। गुरसिख सच धाम बहाए। साचा प्रभ सचखण्ड निवास रखाए। आवण जाण जाण आवण प्रभ गेड़ कटाए। एका माण एका ताण प्रभ चरन रखाए। भगत भगवान गुण निधान प्रभ दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़यां कलि मेल मिलाए। विछड़यां प्रभ मेल मिलाया। आप आपणा दरस दिखाया। मातलोक सचखण्ड बणाया। जोत सरूप वरभंड समाया। नव खण्ड प्रभ एका जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। जोत सरूपी जोत धर। साध संगत देवे साचा वर। अन्तकाल कलि चरन लाग जायण तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उच्चा सुच्चा साचा दर। साचा दर सचा दरबारी। नरायण नर निहकलंक अवतारी। सरन पड़ प्रभ जावे पैज संवारी। धरनी धर जगत पित गिरधारी। वरनी वर सोहँ नाम बण वपारी। करनी कर साचा शब्द रसन उचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाए पैज संवारी। पैज संवारे आप प्रभ, जुगो जुग विच मात दे आ। भगत उधारे आप प्रभ, साचे मार्ग ला। नाम चलावे आप प्रभ, एक शब्द चला। दरस दिखावे आप प्रभ, जो जन डिग्गे आ। मुख खुल्ावे कँवल नभ, अमृत देवे मुख चुआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सांतक सति सति सति दए वरता। सांतक वरते विच संसार। सोहँ शब्द प्रभ भरे भण्डार। कोटन कोट मंगण खड़्हे प्रभ द्वार। ना आवे तोट प्रभ साचा वड भण्डार। सोहँ शब्द प्रभ टिकावे जोत उपजावे साची धुन्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण रखाए जो आयण चल दरबार। गुर घर गुर दर दरबारा। साचा प्रभ जोत सरूप विच संसारा। वेखे विगसे जीव करे विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोए ना जाणे जोत सरूपी खेल अपारा। जोत सरूपी जोत प्रगटाए। साचा नाम प्रभ उपजाए। साचा धाम प्रभ वक्त सुहाए। सोहँ नाम साध संगत प्रभ भिच्छया पाए। साचा नाम जो जन रसना गाए। देवे दरस घनईआ शाम, निहकलंक कलि नाउँ धराए। सोहँ शब्द पिलावे साचा जाम, दिवस रैण रैण दिवस एका रंग समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत प्रगटाए। जोत निरँजण पूजण योग। हउमे विच्चों कट्टे रोग। सोहँ देवे साचा जोग। गुरमुख साचे प्रभ साचा आत्म मिटावे चिन्ता सोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट जोत दर घर आए लगाए भोग। उठ जीव जाग प्रभ दया कमाए। उठ जीव जाग, पूरन होए भाग, प्रभ दरस

दिखाए। उठ जीव जाग, प्रभ चरन लाग, अमृत प्रभ मुख चुआए। उठ जीव जाग, बण हँस विच्चों काग, सोहँ प्रभ साचा साची चोग चुगाए। उठ जीव जाग, प्रभ आत्म बुझाए आग, अमृत मेघ रिहा वरसाए। उठ जीव जाग, अनहद वजाए साचा राग, प्रभ साची धुन उपजाए। उठ जीव जाग, मानस जन्म ना लागे दाग़, प्रभ साचा कर्म कमाए। उठ जीव जाग, प्रभ साचा पकड़े वाग, वेले अन्त होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म वरख, दु:ख भुक्ख सभ रोग गंवाए। दुखियां दु:ख प्रभ मिटाया। आत्म सोग सर्ब गंवाया। शब्द विजोग गुरसिख कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दूजा भउ चुकाया। चुक्के दूजा माण। साचा प्रभ बली बलवान। एका जोत जगे जगत महान। शब्द प्रभ बंध बंधान। कलिजुग जीव ना जाणे नादान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साध संगत प्रभ दया कमाए। आत्म साचा दीप जगाए। बणाए चतुर सुजान, साध संगत गुर दर वड्याए। हरि हरि नाम रसना गायण रैण सबाए। प्रभ रसना गाण वेले अमृत, सृष्ट सबाई प्रभ सुंञ मसाण सवाए। साचा दर साचा दरबार निहकलंक विच मात लगाए। गुर संगत प्रभ किरपा धार, सोहँ शब्द झोली पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर आपणा हत्थ टिकाए। गुर दर आए आत्म जोत जगाए। मानस जन्म सुफल कराए। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। जन्म ना पाए दूजी वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत जाए तार। साध संगत दर दीबाण। दर घर साचे पावे माण। होए सहाई वाली दो जहान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आवण जाण खेल मिटाण। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। गुरमुखां प्रभ सदा समाए। जोत सरूपी मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम जपाए। जोत निरँजण नाम निरँकारा। घनकपुरी बणाए सचखण्ड दुआरा। एका एक प्रभ जोत कर आकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतारा। नरायण नर प्रभ अबिनाश। घनकपुरी सद रक्खे वास। चार यारां कराए दास। जीव खपाए रसन लगाए जो मदिरा मास। भगत वड्याए चरन लगाए सोहँ जपाए स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सद रक्खे वास। साध संगत प्रभ सद वसेरा। प्रगट जोत ना लावे देरा। अछल छल कराए जोत सरूपी हेरा फेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटे जोत ना लाए देरा। प्रगटे जोत सिख समाए। नाड़ी बहत्तर बन्द कराए। आप आपणा विच टिकाए। जोत सरूपी जोत धर, गुरसिख गुर इक्क हो जाए। साध संगत दिसावे साचा घर, बेमुखां प्रभ पड़दा पाए। देवे दरस अवतार नर, रुढ़दा बेड़ा बन्ने लाए। गुरसिख साचे मूल ना डर, वेले अन्त प्रभ लए छुडाए। प्रभ का भाणा सिर ते जर, आत्म सोहँ धीर धराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। हत्थ ना आए वेला वक्त जगत विहाए। कलिजुग जीव रहे पछताए। बेमुखां प्रभ डन्न लगाए।

कोए ना जाणे प्रभ भगवाने, वेले अन्त दे सज़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर्क निवास रखाए। गुरसिक्खां प्रभ धीर धराए। आत्म अमृत सीर पिलाए। हउमे ममता रोग गंवाए। सोहँ साचा जोग दवाए। दरस अमोघ प्रभ आप दिखाए। आत्म चिन्ता रोग प्रभ सर्ब मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हाए। खुल्हावे भेव भगत जन। सोहँ शब्द सुणावे कन्न। आत्म सीतल ठंडा तन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत उधारे जन। भगत जनां प्रभ सदा उधारे। विच मात सच्ची देवे सिक्दारे। एका बख्शे चरन प्यारे। गुरमुख साचे प्रभ चरन निमस्कारे। प्रगट जोत जोत सरूप देवे दरस कृष्न मुरारे। प्रभ दाता वड साचा भूप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह अवतारे। निहकलंक नर नरायण। सृष्टी सबाई वहाए वहन्दे वहिण। गुरसिख वड्याई प्रभ दरस पेखे नैण। आदि जुगादि प्रभ पति रखाई बण जाए साक सज्जण सैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लहणा गुरसिख लैण। दया कमाए दया नंद। आत्म उपजावे परमानंद। आत्म मिटावे अन्धेर अन्ध। रसना तजावे मदिरा मास गन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सदा बख्शंद। बख्शण योग आप प्रभ सूरा। प्रभ अबिनाशी सतिगुर पूरा। अनहद शब्द उपजावे साची तूरा। आत्म निर्मल जोत जगावे बख्शे सति सरूरा। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखावे वरतावे ना रहे अधूरा। रैण सबाई मंगल गाया। गुर गोबिन्द दरस दिखाया। आत्म साचा सुख वसाया। संसा दुःख सर्ब मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। जरम कर्म लिक्खया धुर, प्रभ साचे लेख लिखाया। प्रभ दरसन को लोचण सुर, साचा प्रभ नज़र ना आया। साध संगत बैठे कलि प्रभ चरन जुड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाया, कलि मिल्या सचा सतिगुर। गुरचरन प्रीती पूरन घाल। साचा प्रभ सच घर देवे सचा धन माल। आत्म साची जोत जगाए, देह दीपक देवे बाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द देवे सचा धन माल। सोहँ शब्द वड ख़ज़ीना। गुरसिख रहण ना पाए जिउँ जल मीना। आप आपणे रंग रंगाए साचा प्रभ सद रंग भीन्ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द दान दर दीना। साचा शब्द गुरचरन हेत। सच शब्द प्रभ साचा देत। साचा शब्द उधार पशू प्रेत। साचा शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आत्म करे सुचेत। गुरसिख आत्म रंग रंगाए। अमृत आत्म गंग वहाए। वेले अन्तकाल कलि पार लँघ जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पवण सरूप स्वास चलाए। साचा प्रभ सिख पेखे नैण। प्रगटे जोत मुंकद मनोहर लखमी नरायण। साध संगत बणाए भाई भैण। सोहँ साचा जाम पिलाए, आत्म साची जोत जगाए, एका साचा नाम जपाए, किरपा करे आप नरायण। गुरसिख बेड़ा पार कराए, बेमुख बेड़ा मञ्झधार डुबायण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाए। मोहण

७६० ०१

माधव रंग अपारा। सांवल सुंदर कृष्न मुरारा। मातलोक लए अवतारा। सृष्ट सबाई होए दुखदाई ना कोए सहाई, अन्तकाल कलि लग्गे दुःख भारा। साध संगत नाम ध्याई, वर घर साचा पाई, अवतार नर पूरन आस कराई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप गिरधारा। गिरवर प्रभ गिरधार। सृष्ट सबाई करे ख्वार। ब्रह्मा विष्न महेष कोट खड़े द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कल वरते विच संसार। तारनहार सर्ब दाता। प्रभ अबिनाशी आत्म ज्ञाता। साध संगत बख्शे प्रभ चरनी नाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि विरले गुरमुख पछाता। गुरमुख विरला प्रभ अबिनाशी गाए। रसना जप जप जीव आत्म रस पाए। बेमुख जीव तप तप तप प्रभ अग्न जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त कोए ना पाए। प्रभ बेअन्त ना पारावार। गुरमुख विरले सन्त कलि आयण चल दरबार। दे दरस प्रभ अबिनाशी चार कुन्ट होए उज्जयार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सार। जीव काया रथ बणाए। महासार्थी आप अख्वाए। भुल्ले भुलाए जीव डुलाए। भेव जाणे ना राए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हाकन डाकन सिर मुंडवाए। हाकन डाकन सिर मुंडवाया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया। दुःख सुख कुक्ख सुफल प्रभ करवाया। उज्जल मुख प्रभ दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रोग सोग सर्ब मिटाया। रोगी जीव दर बिल्लाए। आत्म दुःख चैन ना आए। प्रभ दर्शन भुक्ख, कर दरस आत्म तृप्ताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म कर्म दे लेख लिखाए। लिक्खया कर्म धुर दरगाह। कलिजुग ना सूझे साचा राह। बेमुख ना सूझे साचा ना बूझे थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दो जहां। साचा प्रभ सुणे पुकार। दुःख दर्द जाए निवार। करे बेनन्ती गुरसिख तीजी वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत चलाए सच विहार। गुरसिख बेनन्ती गुर दर। साचा प्रभ शब्द उपजावे अवतार नर। दुःख दर्द मिटाए जन आए दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत वरखे साचा सर। अमृत आत्म साचा रस। साचा राह प्रभ जाए दस्स। बेमुख दर आयण जायण हस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगाए जोत कोट रवि ससि।

✻ १७ चेत २००६ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ✻

साचा प्रभ दया कमाए। आप आपणी जोत जगाए। गुरसिख साचे जगत उपाए। आप आपणी सरनी लाए। आत्म साचा ज्ञान दवाए। रसना रस आत्म रस मुख कँवल खुल्लाए। आत्म साची जोत जगाए विच संसार प्रभ गिरधारे। भगत जनां माण दवाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान विच संसारे। जुगो जुग मात प्रकाशे। एका जोत प्रभ अबिनासे। भगत

जन सद रक्खे वासे। चरन प्रीती साची रहिरासे। जगत माया प्रभ दर तों नासे। एका जोत प्रभ अबिनाशी तेरी जोत प्रकाशे। एका शब्द चलाए उपजाए गुरसिख साचे प्रभ स्वास स्वासे। बाहों पकड़ उठाए साचे मार्ग लाए आत्म देवे पूरन धरवासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे करे बन्द ख़लासे। साचा प्रभ बणाए बणत। गुरसिख उपजाए साचे सन्त। देवे वड्याई विच जीव जन्त। होए सहाई प्रभ साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा बड़ी अगणत। महिंमा अगणत गणी ना जाए। आपणी बणत आप बणाए। प्रभ इकन्त एका जोत जगाए। प्रभ अबिनाशी गुरमुख विरले दया कमाए। जोत सरूप सर्ब वरतंत, बेमुख जीव भेव ना पाए। गुरमुख साचे साचा शब्द रसना मंत, प्रगट जोत दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा विच मात दे पाए। मातलोक प्रभ जामा धारे। जोत सरूप प्रभ निरँकारे। एका जोत तीन लोक आकारे। जोत सरूपी जोत प्रभ सृष्ट सबाई करे ख्वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा विच मात दे धारे। जुगो जुग प्रभ जामा पा के। भगत जनां नूं चरनी ला के। सोया हिरदा गुरसिख जगा के। गुरसिख साचे सोझी पा के। कलिजुग माया तनों चला के। सोहँ साचा रसन चला के। अनहद धुन आत्म उपजा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म सुन्न जाए खुल्हा के। भगत जन तेरी वड्याई। तेरी महिंमा गणी ना जाई। साचे प्रभ मनी जोत टिकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत बणाई। साचा गुर गुर गोपाला। भगत वछल सद रखवाला। जुगो जुग सद प्रितपाला। साचा नाम देवे आत्म माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा दीपक बाला। सन्त जनां वर घर पाया। सन्त जनां हरि दर बुझाया। सन्त जनां सच मार्ग लाया। सन्त जनां भेव चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाया। सन्त जनां सदा बलिहार। सन्त जनां प्रभ जोत आकार। सन्त जनां एका दिसे दर दरबार। सन्त जनां निर्मल जोत करे आकार। सन्त जनां प्रभ बख्शे एका चरन प्यार। सन्त जनां सोहँ शब्द उपजे सची धुन्कार। सन्त जनां एका बणाए दिखाए चलाए रखाए साची धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप करतार। सन्त संग प्रभ रंग रंगाया। सन्त रंग प्रभ इक्क मजीठ चढ़ाया। सन्त संग आत्म उपजे जोत सवाया। भगतन जंग काम क्रोध हँकार संग कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा हत्थ फड़ाया। सोहँ तेरी साची धारा। गुरमुख विरला पावे सारा। जोत सरूपी वसे गिरधारा। प्रभ अबिनाशी ना दिसे सद अंदर बाहरा। जोत सरूपी जोत प्रभ बैठ अडोल करे आकारा। गुरमुख साचे पर्दे देवे खोल्ह, जगावे जोत अगम्म अपारा। प्रभ अबिनाशी सद वसे कोल, मूर्ख मुग्ध ना करन विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए जन सन्तां खोल्ह देवे दरस्म दुआरा। खुल्हे

द्वार होए अतीत। प्रभ साचे दी साची प्रीत। कलिजुग जीव प्रभ साचा परखे नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस आत्म होए सीत। साचा सन्त सति कर जाणे। साचा सन्त सच घर पछाणे। साचा सन्त बोध अगाध शब्द लिखाणे। नाद अनादी सोहँ शब्द धुन उपजाणे। गुरमुख साचे सन्त प्रभ माण दवाणे। आत्म साचा रस प्रभ आप पिलाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्त सद विच समाणे। प्रभ अबिनाशी जां दया कमाए। गुरमुख साचे मेल मिलाए। जोत सरूप दरस दिखाए। गुरसिख साचा हस्स हस्स प्रभ चरनी सीस झुकाए। बेमुख दर तों नस्स नस्स आपणा मुख छुपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख वटाए। साचा प्रभ भेख धारे। साचा प्रभ आप गिरधारे। साचा प्रभ नैण मुँधारे। साचा प्रभ वड संसारे। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पसर पसारे। साचा प्रभ जोत आकारे। साचा प्रभ सदा निराधारे। साचा प्रभ एका जोत आप निरँकारे। साचा प्रभ जोत सरूप विच संसारे। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा लोकमात विच धारे। साचा प्रभ सारंगधर। साचा प्रभ एका हरि। साचा प्रभ गुरसिख साचे चरन लाग जाए तर। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त पुचावे साचे घर। साचा प्रभ अपर अपार। साचा प्रभ जगत अधार। साचा प्रभ पारब्रह्म पूरन नर अवतार। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण इक्क करतार। साचा प्रभ सर्ब सुखदाई। साचा प्रभ नाम वड्याई। साचा प्रभ आदि जुगादि होए सहाई। साचा प्रभ मात पताल अकाश तीन लोक रिहा समाई। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड एका जोत जगाई। साचा प्रभ सर्ब का ज्ञाता। साचा प्रभ सर्ब का नाता। साचा प्रभ गुरमुख साचे एका पित माता। साचा प्रभ सोहँ देवे साची दाता। साचा प्रभ अमृत मेघ बरसाए स्वांत स्वांता। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विरले गुरमुख कलि पछाता। साचा प्रभ सच करतारे। साचा प्रभ सच कल धारे। साचा प्रभ पारब्रह्म रूप अपर अपारे। साचा प्रभ जोत सरूप आप निरँकारे। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग आए वारो वारे। साचा प्रभ सो जन जाणे। साचा प्रभ आप आपणे रंग समाणे। साचा प्रभ गुरमुख साचे आत्म जोत देवे महाने। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग समाणे। साचा प्रभ देवे दान। साचा प्रभ गुरसिख जगत रखाए माण। साचा प्रभ सोहँ उपजाए सुणावे कान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे लए पछाण। साचा प्रभ शब्द उपजावे। साचा प्रभ गुरमुख आत्म सुन्न खुल्हावे। साचा प्रभ एका साची धुन उपजावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुरत शब्द दा मेल मिलावे। सोहँ शब्द धुन उपजा के। गुरमुख साचे प्रभ दया कमा के। अनहद अनाहत साचा राग आप सुणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस बजर कपाट

७६३
०१

खुल्ला के। सतिगुर साचा दया नंद। सतिगुर साचा गुरमुख उपजावे सतिजुग साचे चन्द । साचा प्रभ आत्म उपजावे परमानंद। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सदा बख्शंद। साचा प्रभ सर्ब गुणवन्त। साचा प्रभ पूरन भगवन्त। साचा प्रभ गति मित मित गति जाणे सर्ब जीव जन्त। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई गुरमुख विरले सन्त। साचा प्रभ सदा संग साथा। साचा प्रभ नाथ अनाथा। साचा प्रभ गुरमुख साचे लेख लिखावे माथा। साचा प्रभ सतिजुग चलावे साची गाथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलावे साची गाथा। साचा प्रभ त्रैलोकी नाथ। साचा प्रभ भगत वछल आप रघुनाथ। साची संगत प्रभ सदा संग साथ। वेले अन्त अन्तकाल कलि रक्खे दे कर हाथ। चार वरन चार कुन्ट इक्क चलाए सोहँ साचा राथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस सगल वसूरे जायण लाथ। सतिगुर साचा सच घर आया। विच मात जोत सरूप सिँघआसण डेरा लाया। सर्ब मिटाए जाप ताप, एका रंग वरन चार चढ़ाया। बेमुखां होए अन्धेरी रात, प्रभ अबिनाशी दिस ना आया । गुर साचे चरन धूढ़ लाए माथ, कोटन कोट जन्म दे पाप गंवाया। बैठे अडोल आप इकांत, विच सिख देह समाया। कलिजुग जीव वेख मार झात, निहकलंक कलि जामा पाया। अमृत बरसे बूंद स्वांत, अमृत झिरना दे झिराया। प्रभ मिटाए भुलेखे भ्रांत, ऊँची कूक शब्द सुणाया। गुरमुख विरले आए शांत, अमृत बूंद प्रभ कँवल मुख चुआया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग विरले सन्त अमृत बूंद प्रभ मुख कँवल चुआया। जोत सरूपी दरस दिखावे। कँवल नैण विच मात दे आवे। सावल सुंदर रूप वटावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि दरस दिखावे। निहकलंक जीव ना जाणे। जोत सरूपी ना प्रभ पछाणे। गुरमुख चलाए आपणे भाणे। सोहँ साचा शब्द प्रभ विच स्वास चलाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दिवस रैण सद रसना गाणे। गुरसिख साचे बूझे दर। देवे दरस अवतार नर । जीव आत्म वेख साचा घर। बैठे अडोल हरी हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप जप जीव प्रभ सोहँ देवे साचा वर। आत्म वेख कर विचार। एका जोत जगे अपार। साची धुन उपजे धुन्कार। गुरमुख विरले प्रभ साचे पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां जाए तार। भगत जनां प्रभ आप जगाया। जोत सरूपी विच देह समाया। बाहों पकड़ कलि मार्ग लाया। सन्त जनां प्रभ मेल मिलाया। जोत सरूपी जोत धर, आत्म साचा दीप जगाया। किरपा कर अवतार नर, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाया। आत्म दिसे साचा सर, दिवस रैण रैण दिवस गुरसिख तीर्थ नहाया। कर दरस विच मात जीव जाए तर, जो जन सरनाई आया। साध संगत मूल ना डर, आदि जुगादि जुगादि आदि जुगो जुग प्रभ साचा होए सहाया। भगत जनां प्रभ होए सहाई। जुगो

७६४ ०१

जुग प्रभ साचे पैज रखाई। एका बख्शे साची दात सोहँ झोली पाई। सोहँ शब्द वड करामात प्रभ विच मात टिकाई। गुरचरन प्रीत साचा नात, गुरसिख भुल ना जाई। गुरसिख ना जाणे ज़ात पात, प्रभ पूरन बूझ बुझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म तृखा मिटाई। साचा प्रभ तृखा मिटाए। जोत सरूपी जोत जगाए। आत्म सुख देह उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। साचा प्रभ दया कमाए। गुरसिख पूरी आस कराए। सोहँ नाम धीर धरवास रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। आप आपणा राह चलाया। सोहँ साचा शब्द सुणाया। जीव जन्त कलि भुलाया। गुरमुख विरला चरन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुरी विच जामा पाया। घनकपुरी विच जामा धारे। देव देवीआं आयण दुआरे। जोत ना दिसे प्रभ गिरधारे। शब्द मार प्रभ साचा मारे। भगत जनां प्रभ किरपा धारे। विच मात लए अवतारे। भगत वछल आप गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक विच जामा धारे। भगत जनां होए सहाई। साचा प्रभ सदा सुखदाई। आदि जुगादि लाज रखाई। आत्म साध प्रभ साची जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सिर हत्थ टिकाई। भगत जनां प्रभ काज संवारे। आत्म जोत जगाए गुरमुख देह महल मुनारे। एका एक जोत होए उज्जयारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप करतारे। जोत सरूप सर्ब गवण। जोत सरूप तीन भवन। जोत सरूप सोहँ स्वास चलावे पवण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे दिवस रैण कदे ना सवण। दिवस रैण सद मंगल गाए। आत्म रंग प्रभ चढ़ाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। जोत सरूपी मेल मिलाया। सचखण्ड निवासी थिर घर वासी गुरमुख साचे सिर हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी मेल मिलाया। जोत सरूपी मेल मिलईआ। आवण जावण गेड़ कटईआ। गुरमुख साचे दर घर साचे माण दवईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सचखण्ड निवास रखईआ। सचखण्ड धाम न्यारा। जगे जोत अगम्म अपारा। जोत सरूप आप निराधारा। एका एकँकार जोत निरँकारा। एका धुन एका धुन्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत अधारा। साचा प्रभ जोत अधारी। जीव जन्त प्रभ जोत पसारी। गुरमुख साचे सन्त प्रभ दया धारी। आप बणाए बणत, आप जोत करे उज्जयारी। आत्म रंगे साची रंगत, साची देवे नाम ख़ुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन जोत नर अवतारी। नरायण नर जगत पित आए। आप आपणी जोत जगाए। गुरमुखां साचे दरस दिखाए। आत्म तृष्ना सर्ब मिटाए। लिक्खया सुख प्रभ आत्म सुख उपजाए। भुक्ख्यां भुक्ख दुखियां दुःख प्रभ सर्ब गंवाए। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाए। साचा प्रभ आसा मनसा पूर। एका बख्शे चरन धूढ़। आत्म जोत जगावे साचा नूर। सोहँ शब्द देवे सति सरूर। अनहद उपजावे साची तूर। गुरमुख ना दिसे दूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोती नूर। जोत सरूपी जोत प्रभ, साची जोत जगाए। जोत सरूपी जोत प्रभ, चार वरन इक्क गोत कराए। जोत सरूपी जोत प्रभ, मदिरा मासी दए खपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए सहाए। आप आपणा भेव खुल्हा के। हँकारीआं प्रभ हँकार गंवा के। निर्धनां सिर हत्थ टिका के। सरधनां प्रभ पूरन आस करा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा जाए वरता के। भाणा वरते प्रभ वरतार। कलिजुग अन्तिम आई हार। सोहँ शब्द मारे खण्डा दो धार। कलिजुग होए दो फाड़। बणत बणाई आप करतार। उठे लशकर रूसा भार। ईसा मूसा मुहम्मदी सभ करे ख्वार। प्रभ अबिनाशी प्रभ जोत चरन धरे जमन किनार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगावे आप निरँकार। जमन किनारे चरन टिकाए। वाली दो जहां विच देह आए। सोहँ साचा बाण प्रभ आत्म शब्द चलाए। सुरत शब्द शब्द ध्यान वाली हिन्द प्रभ लए उठाए। भय भयानक जोत सरूप प्रभ आपणा भय दिखाए। अचन अचानक प्रगट जोत प्रभ आपणा दरस दिखाए। जगे जोत आत्म होए उज्जयार, प्रभ आपणी बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए। जमन किनारा साचा सर। निहकलंक लए चरन धर। सन्त जनां प्रभ साचा देवे वर। गुरमुख साचे प्रभ साचे आयण दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए अवतार नर। साचे प्रभ भेव खुल्हावणा। सोहँ शब्द दूत बणावणा। विच पवण चार कुन्ट चलावणा। जीव जन्त दे विच वसावणा। सोहँ जै जै जैकार करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचावणा। सोहँ शब्द चार कुन्ट चलाए। वड वड सन्त प्रभ पकड़ उठाए। दिवस रैण जो सेवा लाए। साचा मेल सोहँ लेख लिखाए। एकँकार इक्क आकार, प्रभ आत्म एका साची जोत टिकाए। कर विचार विच संसार, शब्द अधार प्रभ अबिनाशी दूत पठाए। उपजे धुन्कार ना तुट्टे तार, सोहँ प्रभ दे साची तार बैठ अडोल कार कराए। आर पार पार आर पावे सार भगत अधार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जै जै जैकार कराए। सन्त जनां प्रभ दूत बणा। सोहँ साचा दान झोली पा। साचा राग प्रभ आत्म उपजा। एका नाम गुरमुख साचे तेरी झोली पा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां हुक्म सुणा। हुक्म सुणाए आप प्रभ, सिर हत्थ टिकाए। हुक्म सुणाए आप प्रभ, वाली दो जहान विच मात दे आए। राउ रंक राजान प्रभ सरनी लाए। ऊँचो ऊँच महान प्रभ सन्तन जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपणे दूत उपजाए। साचे प्रभ हुक्म सुणाना। राणयां महाराणयां अभिमान गंवाणा। निमाणयां

नितांणयां प्रभ चरन लगाणा। गुरसिख सुघड़ स्याणयां प्रभ आपणी सेवा लाणा। जोत सरूप निहकलंक आपणा डंक वजाणा। बेमुखां वड वड ज्ञानियां प्रभ साचे मार्ग लाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त उलटी लट्ठ गिढ़ाणा। उलटी लट्ठ कलि गिड़ाए। कलिजुग जीव पीड़ पिड़ाए। मदिरा मास जो रसना लाए। कलिजुग आत्म गंवाया रस रसना रस होए हलकाए। साचा प्रभ वेले अन्त दए सज़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अपणा भाणा कलि वरताए। भाणा वरते प्रभ वरतावे। कलिजुग जीव भेव ना पावे। गुरमुख सोया प्रभ आप जगावे। कर किरपा आपणी सरनी लावे। सोहँ साचा नाम जपावे। आत्म साचा दीप प्रभ जगावे। बिन बाती बिन तेल करे रुशनावे। अमृत आत्म साचा सर, कोई विरला गुरमुख नहावे। बेमुखां मानस जन्म गया कलि हर, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आवे। गुरमुख साचा जाए तर, कर दरस आत्म तृप्तावे। सोहँ देवे साचा वर, दिवस रैण गुरमुख साचा गावे। देवे दरस जोत सरूप अवतार नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घर आवे। दर घर आए आप गुर पूरा। भगत जनां प्रभ सदा हज़ूरा। साची देवे चरन धूढ़ा। अनहद उपजावे साची तूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धारे सर्ब कला भरपूरा। प्रगटे जोत जिउँ त्रेता रामा। द्वापर आए नाम धराए घनईआ शामा। कलिजुग जोत प्रगटाए सोहँ चलाए साचा नामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाउँ धराए,

७६७ ०१ जोत सरूपी कलि पहरया जामा। प्रभ दरस उज्जल मुख। सुफल कराए मात कुक्ख। आत्म उपजावे साचा सुख। रोग मिटाए माया भुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए आण तराए, जोत मिलाए वास कटाए, उलटा बिरछ मात कुक्ख। गर्भवास प्रभ कटाया। इक्क धरवास चरन लगाया। सोहँ स्वास स्वास शब्द उपजाया। मानस जन्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराया। मानस जन्म जन आप सुधारे। चल आयण निहकलंक दरबारे। प्रगट जोत पारब्रह्म परमेश्वर जोत सरूप निराधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे। किरपा करे प्रभ रघुपत। सोहँ देवे आत्म साचा यति। साचा सति रखाए एका तत्त। गुरमुख उपजावे साचे प्रभ साची पावे मति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जाणे मित गति। सर्ब जनां प्रभ आपे जाणे। चले चलाए आपणे भाणे। तख्तों लाहे प्रभ राजे राणे। दर मंगण होए निमाणे। सन्त जनां दी प्रभ चरनी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आत्म तोड़े सर्ब अभिमाने। आत्म तोड़े प्रभ अभिमाना। गुणवन्त प्रभ गुणी निधाना। सोहँ देवे प्रभ साचा दाना। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। चरन धूढ़ बख्शे इशनाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। प्रभ अबिनाशी भेख धर। चार वरन जाए इक्क कर। राउ रंकां इक्क दिसावे दर। गुरमुख साचे सन्त प्रभ जाए भण्डार भर। बैठे रहण सदा इकन्त चल आयण प्रभ दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप ७६७ ०१

ना जंमे ना जाए मर। जोत सरूप सदा समाए। जीव जन्त दे विच समाए। सन्तन यति प्रभ जोत धराए। झूठी सृष्ट अन्तकाल कलि प्रभ खेत कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए। सृष्ट सबाई खेद कराणा। प्रभ अबिनाशी सोहँ शब्द तीर चलाणा। सर्ब घट वासी चार कुन्ट वहीर कराणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे अमृत साचा रस पिलाणा। गुरमुख साचा गुर पछाणे। साचा रंग प्रभ अबिनाशी जाणे। वेले अन्त काल कलि प्रभ विच बिबाण बिठाणे। जोत सरूपी जोत प्रभ, दरगाह साची माण दवाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवास रखाणे। सचखण्ड सदा निवासा। जोत सरूप सदा प्रकाशा। साचा प्रभ सद सद विच रक्खे वासा। भगत जनां प्रभ दासन दासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रासा। भगत जनां प्रभ जन्म सुधारे। कर किरपा प्रभ पार उतारे। सोहँ साची नईआ चाढ़े। कलिजुग बेमुख जीव अन्तकाल कलि चबाए दाढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच जोत अग्न दे साड़े। अग्न जोत जोत अग्न। बेमुख जीव सद मग्न। गुरमुख साचे प्रभ चरन लगण। देवे वड्याई प्रभ विच गगन। कलिजुग जीव अन्त होए नग्न। गुरमुख साचे आत्म साचे अमृत सोमे वगण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई जोत सरूपी दीपक जगण। जोत सरूपी दीप जगाए। सोहँ साची बत्ती लाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद समाए। गुरसिक्खां प्रभ माण दवाया। बेमुखां प्रभ दर दुरकाया। गुरसिक्खां प्रभ भउ चुकाया। बेमुखां प्रभ दिस ना आया। गुरसिक्खां प्रभ आत्म सुख उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाया। सोहँ तेरी जै जैकार। वरते वरतावे विच संसार। जीव जपे जपावे दवावे मोख द्वार। जन रसना गावे प्रभ पार लँघावे, जन्म ना पावे दूजी वार। बणत बणावे गणत गिणावे, प्रभ अबिनाशी गुरसिख सन्त तरावे, एका देवे चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट कराए जै जैकार। जै जै जैकार कराए गुरदेव। कलिजुग जीव ना पायण भेव। प्रगटे जोत निरँजण देव। साध संगत सद रसना सेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती साचा मेव। गुरसंगत गुर दर आई। प्रभ पूरन आस मन तन वज्जी वधाई। ऊँच नीच प्रभ सर्ब तराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां होए आप सहाई। साध संगत दर साचा पाया। प्रभ अबिनाशी भेव चुकाया। जोत सरूपी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आए सीस झुकाया। साची दरगाह जन परवान। जो जन चरनी डिग्गे आण। प्रभ विच बिठाए अन्त बिबाण। गुरमुख साचे अन्त साची जोत मिल जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप वाली दो जहान। सच घर प्रभ उपजाया। आप आपणा विच टिकाया। जोत सरूपी दीप जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

सति सति सति पुरख रहाया। सति सति सति जन जाणे। सति सति सति गुर पछाणे। सति सति सति गुर सति रखाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची देवे माणे। दरगाह साची खेल अतंत। एका दस्से प्रभ भगवन्त। भेव ना जाणे कोई जीव जन्त। गुर पछाणे गुरसिख जाणे विरला सन्त। जन सन्त चले प्रभ के भाणे, मेल मिलावा साचे कन्त। कलिजुग जीव भुल्ल ना जाह, प्रभ आप बणाई तेरी बणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात पताल अकाश महिंमा बड़ी बेअन्त। अगणत महिंमा गणी ना जाए। कोटन कोट रहे दर घर भेव जन पाए। गुर ना बूझे ना दर सूझे प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। गुरचरन लाग घर साचा सूझे, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए। साचा घर सच दरबार। एका जोत प्रभ निरँकार। झूठी सृष्ट झूठा पसार। माया मोह आत्म हँकार। कलिजुग जीव गुर गुण विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच घर वसे आप निरँकार। साचा घर प्रभ सच बणाए। बणत बणत बणत सन्त प्रभ आप बणाए। अगणत अगणत अगणत महिमा गणी ना जाए। जन्त जन्त जन्त जीव प्रभ आप उपाए। इकन्त इकन्त इकन्त विच सर्ब समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर बैठा नज़र ना आए। दस्से घर आप अबिनाशी। साची जोत सच करे प्रकाशी। सदा अडोल प्रभ ना कदे विनासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जीव जन्त समासी। जीव जन्त प्रभ सद समाया। निज
७६६ घर वासी निज घर वास रखाया। बैकुण्ठ निवासी प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ७६६
०१ करे बन्द ख़लासी जो जन सरनाई आया। चरन लाए राखे लाज। भगत उधारे संवारे काज। झूठी सृष्ट झूठी सांझ। ०१
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ पहनावे आत्म ताज। नाम निधान गुर दर पिया। पूरब लहणा प्रभ साचे दिया। निर्मल किया गुरसिख जिया। मार मुकाए शब्द चलाए अमका जिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए वरताए आपणा किया। आप आपणे खेल रचाए। भूत भविख्त आप उपाए। लिख्त लेख प्रभ जन्म दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरताए। आप उपाए बीर बेताले। जीव जन्त होए बेहाले। कोए ना होए सहाए विच मात करे खेल आप निराले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सदा संग तेरे नाले। सदा संग प्रभ संग समाया। आपणे रंग आप रंगाया। भुक्ख नंग प्रभ रोग कटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा सेवा लाया। प्रभ साचे सच सेवा लाया। आपणा भेव आप चुकाया। वड वड गुरदेव दरस दिखाया। वड दाता अलख अभेव गुरसिख समाया। सोहँ देवे साचा मेव, जो जन सेवा आया। वडा वड वड देवी देव, प्रभ सोहँ मेव चुकाए भेव, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम जपाया।

❊ ५ विसाख २००६ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ❊

साचा नाम गुरमुख को दिया। आत्म जोत जगाया दिया। गुरदर आए अमृत रस पिया। निर्मल कराए आपणा जिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दरस दिखईआ। साचा प्रभ बणत बणाए। जोत सरूपी जोत समाए, आवण जावण खेल रचाए। नाथ त्रैलोकी खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड समाए। जोत सरूपी प्रगट जोत, बेमुखां सोहँ डण्ड लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए। सतिजुग तेरा सति वरतार। धरे जोत आप करतार। निहकलंक जोत सरूपी रूप अपार। सोहँ शब्द उपजावे चलावे विच संसार। गुरमुखां प्रभ दरस दिखाए, साचा बख्शे चरन प्यार। बेमुखां प्रभ नष्ट कराए, साचा प्रभ गए विसार। गुरमुखां प्रभ साची जोत जगाए, निर्मल जोत जगे अपार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच वरतावे आप संसार। साचे प्रभ सच मार्ग लावणा। आप आपणा खेल रचावणा। कलिजुग झूठा कर्म मिटावणा। सति सति सति सतिजुग वरतावणा। गुरमुखां प्रभ शब्द ज्ञान दे, जोत सरूपी दरस विष्नूं भगवान दे, आत्म बुज्झया दीप जगावणा। सोहँ शब्द देवे भगत भगवान, आत्म सुन्न विच मात खुल्हावणा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धरावणा। निहकलंक नाम धराए। कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। मातलोक प्रभ एका सच सच वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सर्ब समाए। जोत सरूपी प्रभ पसार। एका जोत जीव जन्त अधार। चार वरन कराए इक्क गोत, ऊँच नीच प्रभ जाए निवार। गुरमुखां आत्म मैल सोहँ नाम धोत, आत्म जोत करे उज्जयार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए, सति सति सति करे वरतार। सति सति सति करे वरतार । जोत सरूपी जामा धार। गुरसिक्खां बेड़ा कर जाए पार। जन्म मरन गेड़ निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। निहकलंक कलि जामा पाए। आपणी कल आप वरताए। ऊँच नीच दा भेव चुकाए। राउ रंक इक्क कराए। एका रंग नाम चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच समाए। साचे रंग गुरसिख रंगाया। जोत सरूपी विच समाया। खोल्ह त्रैकुटी प्रभ भाण्डा भरम भन्नाया। जम की फांसी अन्तकाल कलि छुट्टी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर हत्थ टिकाया। साचा प्रभ होए सहाए। आप आपणा दरस दिखाए। मेल मिलाए भगत भगवन्त, जोत सरूपी मेल मिलाए। कलिजुग मिल्या साचा कन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्त तेरी बणत बणाए। बणत बणाए आप प्रभ, आपणी दया कमाए। बणत बणाए आप प्रभ, विच मात जन्म दवाए। बणत बणाए आप प्रभ, जुगो जुग आवे जाए जोत प्रगटाए जन भगत तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराए। निहकलंक तेरा पसार। जोत सरूपी जगत

७७० ०१

उधार। वरते वरतावे विच संसार। आप अडोल रहे गिरधार। गुरमुख साचे आत्म साची जोत करे आकार। बेमुख आए नाचे सोहँ मारे प्रभ साची मार। धन्न धन्न धन्न गुरसिख सोहँ शब्द हिरदे वाचे, प्रभ अबिनाशी देवे दरस अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार। साचा प्रभ दरस दिखावे, एका आपणा भेव खुल्हावे, गुरसिख साचे मार्ग लावे, एका देवे नाम भिक्खा। बजर कपाट प्रभ खुल्हावे, जोत सरूपी जोत जगावे, देवे वड्याई विच मुन रिख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई गुरमुख साचे गुरसिख। सोहँ शब्द जन रसना गाया। जोत सरूपी प्रगट जोत गुरसिख साचा लेख लिखाया। जोत सरूपी प्रभ साचे भेख वटाया। वेखा वेख रहे सभ जीव जन्त, साचा प्रभ कलि भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आदि अन्त इक्क जोत समाया। गुरमुखां प्रभ बन्द कटाए। मुकंद मनोहर होए सहाए। आत्म गन्द दे कढाए। आत्म अन्ध अन्धेर गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए भाग लगाए। गुरमुख पाए गुर दरबार। साचा प्रभ एका देवे नाम अधार। चरन प्रीती साची नीती गुरमुख उतरे पार। बख्शे भुल्ल जो जन कीती, गुरचरन करन निमस्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया सीतल कीती, अमृत आत्म झिरना झिराए अपार। अमृत आत्म मेघ वरसाए। कँवल मुख दे उलटाए। साचा सुख अमृत मुख दे चुआए। उतरे भुक्ख आत्म सुख, द्वार दस्म प्रभ दे खुल्हाए।

७७१ ०१

मात गर्भ जीव उलटा रुक्ख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त होए सहाए। गुरमुख तेरा रूप अपारा। गुरमुख मिल्या वड भूप गिरधारा। गुरमुख देवे प्रभ वड सिक्दारा। गुरमुख लेवे गुरचरन प्यारा। सतिगुर साचा एका नाम आत्म देवे जीव अधारा। जोत सरूपी प्रगट जोत, कलिजुग खेल करे अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। निहकलंक नरायण नर। गुरमुख साचे चरन लाग जायण तर। जोत सरूपी जोत प्रभ, एका दिसावे साचा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरमुख साचे जायण तर। तारनहार आप समरथ। गुरमुखां रक्खे दे कर हत्थ। सोहँ नाम देवे साची वत्थ। गुरमुख साचे कर दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलाया साचा रथ। प्रभ साचा जग साची नईआ। सतिजुग साचे सोहँ शब्द प्रभ ज्ञान दवईआ। चार वरन इक्क कराए भैणां भईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक इक्क करईआ। आप आपणी खेल रचाए। जूठ झूठ सभ नष्ट कराए। ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। सर्ब विच प्रभ आप समाए। नीचो नीच आप हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दिस ना आए। ऊँच नीच प्रभ भेख मिटावणा। सतिजुग साचा मार्ग लावणा। सोहँ साचा शब्द चलावणा। सोहँ डंक चार कुन्ट वजावणा। राउ रंक प्रभ इक्क करावणा। एका अंक सोहँ नाम धरावणा। गुरमुख उधरे जिउँ राजा जनक, भगत जनां सद विच समावणा।

जोत सरूपी लाए तनक, वाली हिन्द प्रभ पकड़ उठावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेव खुल्लावणा। जोत सरूपी भेव खुल्लाए। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाए। घनकपुर वासी आप आपणी कल वरताए। चार कुन्ट कराए दासी, सोहँ शब्द जै जै जैकार कराए। कलिजुग भेख सर्ब विनासी, साचा प्रभ आप मिटाए। बेमुख दर आयण जायण कर कर हासी, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। गुरमुखां प्रभ कट्टे लक्ख चुरासी, चरन सरन जो सीस निवाए। चरन प्रीती सची रहिरासी, स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखाए। कलिजुग माया दर तों नासी, महाराज शेर सिँघ जन रसना गाए। साचा प्रभ जिस जन जाणया। आत्म रंग दर साचा माणया। अन्तकाल पार जायण लँघ, देवे दरस आप भगवानया। दर घर साचा गुरसिख मंग, प्रभ आत्म देवे जोत महानया। होए सहाई सदा अंग संग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस साचा जाणया। साचा प्रभ सदा सहाए। गुरमुखां सच मार्ग लाए। आत्म साचा ज्ञान दवाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। सञ्ज सवेर इक्क रंग कराए। गुरमुख आत्म जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए दया कमाए। दर घर आए दया कमाई। दु:ख रोग प्रभ दे मिटाई । पारब्रह्म परमेश्वर जोत सरूपी खेल रचाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए आप सहाई। भगत जनां प्रभ होए सहाया। आत्म साचा ज्ञान दवाया। सोहँ राग आत्म साची धुन उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाद चार कुन्ट वजाया। साचा नाद प्रभ वजाए। अगाध बोध बोध अगाध प्रभ शब्द लिखाए। बेमुखां प्रभ जाए सोध, सृष्ट सबाई सद समाए। पकड़ उठाए वड जोधन जोध, आप आपणी जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल कलि वरताए। प्रभ का खेल जगत न्यारा । कलिजुग जीव ना करे विचारा। जोत सरूपी आप करतारा। निहकलंक नाउँ अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए खण्डा दो धारा। सोहँ शब्द खण्डा दो धार। प्रभ अबिनाशी खेल अपार। सृष्ट सबाई करे ख्वार। दर दर बिल्लायण दु:ख डाहढा पायण, निहकलंक शब्द मारे मार। जोत प्रगटाए भगत उधार, प्रभ दरस दिखाए। दरस दिखाए जगत सुधार, प्रभ चरन लगाए। आत्म विकार प्रभ नष्ट कराए। सोहँ अधार विच जीव रखाए। एका एकँकार आत्म साची जोत जगाए। बैठे अडोल आप निराधार, बेमुखां प्रभ दिस ना आए। गुरमुख साचे सोहँ शब्द साची धुन्कार, दिवस रैण प्रभ दे सुणाए। जोत सरूपी कलि करतार, आप आपणा रिहा छुपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाए। मेल मिलाए आप प्रभ, भगत उधारे। मेल मिलाया आप प्रभ, धरे जोत विच संसारे। मेल मिलाया आप प्रभ, देवे दरस आप गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां चल आए दुआरे। गुरमुखां प्रभ धीर धराए। अमृत आत्म नीर वहाए। जिउँ बालक माता सीर पिलाए। बेमुखां अन्तकाल कलि प्रभ साचा चीर

लुहाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ साचा तीर चलाए। सोहँ साचा तीर चलाया। बेमुखां प्रभ आत्म विन्नू धराया। गुरमुखां प्रभ बजर कपाट खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। जोत सरूपी जामा धारे। कलिजुग खेल करे अपारे। बेमुखां आत्म अन्ध अंध्यारे। गुरमुखां आत्म जोत आकारे। देवे दरस अगम्म अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सच निरँकारे। एका जोत प्रभ निरँकारा। एका जोत एकँकारा। लक्ख चुरासी विच पसारा। एका जोत जुगो जुग ना कोए पाए सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँकारा। कलिजुग जीव प्रभ आप भुलाए। आप आपणी खेल रचाए। ऐड़ा अथर्बण वेद मिटाए। सोहँ साचा शब्द जगत चलाए। कुरान अञ्जील सभ नष्ट कराए। गीता ज्ञान वक्त चुकाए। खाणी बाणी अन्त हो जाए। कलिजुग भेख कोई रहण ना पाए। सतिजुग साची मेख प्रभ मस्तूआणे लगाए। वड्डे वड्डे पकड़ नरेश प्रभ सरन लगाए। दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेष, कलिजुग जीव भेद ना पाए। प्रभ साचे को सदा आदेस, आप आपणे विच रिहा समाए। जोत सरूपी विच सिख प्रवेश, कलिजुग अचरज खेल रचाए। जोत सरूपी किया भेस, मातलोक प्रभ जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज रचना रिहा रचाए। आपणी रचना आप रचाए। जोत सरूपी भेस वटाए। आप आपणा भेव खुल्हाए। मस्तूआणे प्रभ चरन टिकाए। सृष्ट सबाई लेख लिखाए। लिक्खया लेख मिट ना जाए। नर नरेश वड मृगेश प्रभ आपणी सरन लगाए। भाग लगाया प्रभ माझे देस, घनकपुरी प्रभ जामा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छड्ड देह जोत सरूपी जोत समाए। जोत सरूपी जोत अधारी। बैठे अडोल आप निराधारी। निहकलंक नर अवतारी। सृष्ट सबाई करे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग माया आप पसारी। कलिजुग माया जगत पसार। जीव जन्त भुलाए कलि रुलाए कर ख्वार। मदिरा मास रसन लगाए आत्म चलाए प्रभ विकार। अन्तकाल ना कोए सहाए, प्रभ मारे डाहढी मार। सोहँ शब्द गुरसिख ध्याई, देवे दरस कृष्न मुरार। आत्म बुझी दीप जगाए, एका बख्शे चरन प्यार। चरन धूढ़ गुरचरनी नहाए, मानस जन्म जाए सुधार। धन्न गुरसिख धन्न जणेंदी माए, देवे दरस निहकलंक नर अवतार। दरगाह साची पाए ठाएं, साचा प्रभ एका दवाए सच दर गुर दरबार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे तेरा जन्म मरन जाए संवार। अन्तिम अन्त प्रभ आप संवारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। दर आए वड वड दरबारया। पारब्रह्म अचरज खेल विच मात दे धारया। गुरमुख साचे प्रभ किया मेल, चरन लाग करे निमस्कारया। आत्म जोत जगाए बिन बाती बिन तेल, जामा मातलोक विच धारया। साचा प्रभ सर्ब गुणवन्त। साचा प्रभ गुरमुख मेल मिलाए साचे कन्त। साचा सन्त प्रभ दी महिंमा जणाए दिखाए भेख भगवन्त। साचा सन्त प्रभ रसना गाए, देवे दरस जोत सरूपी

प्रभ इकन्त। साचा प्रभ आत्म धुन उपजाए, प्रभ बणाए साची बणत। साचे सन्त प्रभ आपणा आप जणाए, महाराज शेर सिँघ साचा कन्त। साचे सन्त प्रभ आप उपजाया। साचे सन्त प्रभ बूझ बुझाया। साचे सन्त प्रभ भेव गोझ खुल्हाया। साचे सन्त प्रभ रसना जप जप आत्म रस पाया। साचे सन्त साचा तप प्रभ नाउँ ध्याया। साचे सन्त महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाया। साचे सन्त सर्ब गुणतास। साचा सन्त जाणे भेव प्रभ अबिनाश। साचा सन्त प्रभ साचा सद रक्खे वास। साचा सन्त रसना जपे स्वास स्वास। साचे सन्त रसना जप मानस जन्म होए रास। साचा सन्त दुःख दर्द मिटाए, तृष्ना आत्म गंवाए किरपा करे सर्ब घट वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे अन्त करे बन्द खलास। साचे सन्त हरि रंग माणया। चले चलाए आपणे भाणया। आत्म विच हँकार रखाए, प्रभ अबिनाशी अन्त भुलाणया। काम क्रोध मोह रखाए, भरम भुलेखे जीव जन्त भुलाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाए वड सुघड़ स्याणयां। आत्म मोह हित प्यार। काम तृष्ना रसन विकार। साचा प्रभ अन्त ना पावे सार। गुरदर गुरसिख आए प्रभ देवे नाम अधार। आत्म संसा गुरसिख चुकाए, एका देवे मोख दुआर। अन्तकाल विच जोती मेल मिलाए, बाहों पकड़ प्रभ जाए तार। दरगाह साची सच धाम बहाए, जन्म ना पाए दूजी वर। जोत सरूपी जोत मिलाए, एका जोत करे आकार। आवण जावण प्रभ खेल मिटाए, किरपा करे आप निरँकार। दरगाह साची माण दवाए, थिर घर वासी एका देवे चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड तेरा सच दरबार। अन्तकाल प्रभ बन्द कटाया। आत्म अन्ध अन्धेर गंवाया। गुरमुख साचा चन्द निहकलंक विच मात चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म लेखे लाया। मानस जन्म प्रभ सुधारे। जन सन्त आए गुरसिख दुआरे। गुरसिख होए निहकलंक चरन पनिहारे। किरपा करे आप गिरधारे। चेला गुर गुर चेला आप अख्वारे। जोत सरूपी जोत प्रभ, पंचम आए विच दरबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सद काज संवारे। साचे प्रभ काज संवारया। मानस जन्म पार उतारया। आपणे रंग रंगावे प्रभ गिरधारया। गुरमुख साचा सदा संग रहाए, जोत सरूपी मेल मिला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए तेरा काज संवारया। रंग गुर साचा नाउँ। लिक्खया प्रभ धुर दरगाहों थाउँ। तरसण सुर नर ना पायण थाउँ। धन्न धन्न धन्न गुरसिख प्रभ अबिनाशी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन लागे पाउँ। प्रभ दरस कवण जाणे। जीव जन्त कलि होए अञ्याणे। मदिरा मासी मुग्ध अञ्याणे। गुर गोबिन्द आत्म भुलाणे। वड सागर सिन्ध नीर गवाणे। वाली हिन्द प्रभ देवे एका चरन ध्याने। बेमुख दर आयण जायण निंद, लक्ख चुरासी प्रभ गेड़ भवाणे। वड दाता गुणी गहिंद, भगत जनां प्रभ पार लगाणे। दर्शन लोचे सुरप्त राजा इन्द,

मिले ना दरस प्रभ भगवाने। धन्न धन्न धन्न गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल विच जोत मिलाणे। वाली हिन्द प्रभ दरस दिखाए। सांवल सुंदर प्रभ भेख वटाए। मुकंद मनोहर लखमी नरायण प्रभ नज़री आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ आत्म जोत जगाए। सोहँ शब्द प्रभ डंक वजाए। वाली हिन्द प्रभ पकड़ उठाए। जोत सरूपी पकड़ जोत दरस दिखाए। एका एकँकार सृष्ट सबाई प्रभ पसार, माया रूपी रंग करतार जोत प्रगटाए। आवे जावे वारो वार, प्रभ अबिनाशी साची कार, जन भगतां जाए तार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा पाए। मातलोक प्रभ जामा पाए। नित नवित्त जोत प्रगटाए। भगतन हित आप प्रभ आए। आत्म सित प्रभ आत्म शांत कराए। मानस जन्म ल्या कलि जित्त, प्रभ साचे दी सरनी आए। प्रभ अबिनाशी साचा पित, जामा घनकपुरी विच पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत आपणा भेव खुल्हाए। गुरमुखां देवे अमृत धार। जन भगतां प्रभ पाए सार। राम रमईआ कृष्न अवतार। निहकलंक जोत सरूप, जोत सरूपी किया आकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात पताल अकाश एका जोत निरँकार। तीन लोक जोत आकारा। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड पसारा। सोहँ नाम मातलोक प्रभ वंड सभ जगाए चलाए राह अपारा। बेमुखां प्रभ लाए दण्ड, अन्तकाल विच नर्क मंझारा। गुरमुख साचे आत्म होई ना रंड, प्रभ साचा विच करे पसारा। महाराज शेर
७७५ ०१ सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप अनूप अगम्म अपारा। साचा प्रभ गुरसिख समाए, जोत सरूपी जोत धर। साचा प्रभ आत्म ७७५ ०१
साचा दीप जगाए, सोहँ देवे साचा वर। जो जन आए सरनाए, प्रभ दिखाए साचा घर। सच घर प्रभ रिहा समाए, चरन लाग पूरन भाग गुरसिख गया जाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सूज्झया साचा दर। साचा प्रभ सदा सहाया। जगत पित आप रघुराया। जन भगत प्रभ आपणी चरन लगाया। तन मन मन तन प्रभ सांतक सति वरताया। सोहँ शब्द सुणावे कन्न उपजावे धुन साचा नाम देवे तन गुर साचा तोट कदे ना आया। प्रभ अबिनाशी आत्म कढ्ढे जन जो जन सरनी आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुरमुख साचे होए सहाया। प्रभ साचे दी साची रीत। दर घर आए पतित पुनीत। साची सेव कमाई, प्रभ साचे परखी नीत। दरगाह साची मिली वधाई, बैठी होई जगत अतीत। साचे प्रभ दया कमाई, मास दस गए जां बीत। जन्म मरन प्रभ गेड़ कटाई, काया कीनी सीत। निहकलंक कलि रीत चलाई, होए सहाई विच भय भीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची सरबजीत सदा जग जीत। मास दस वक्त विहाया। पंचम पंचम पंचम प्रभ पंचम हुक्म सुणाया। साची सेवा साचा मेवा प्रभ धुर दरगाहों दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम प्रगट जोत सरबजीत आवण जावण गेड़ कटाया। दस दस दस मास। मानस जन्म होया रहिरास। जोती जोत मिलाई प्रभ अबिनाश।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड कराया वास। दुःख रोग प्रभ मिटाए। अमृत मेघ आप बरसाए। साध संगत प्रभ मुख चुआए। आत्म दुःख सर्ब गंवाए। एका सुख निजानंद उपजाए। उज्जल मुख विच लोकमात कराए। सुफल कराए मात कुक्ख, निहकलंक जो जन आए तेरी सरनाए। प्रभ निवारे जगत भुक्ख, सोहँ दात प्रभ झोली पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी पूरन आस कराए। अमृत रस प्रभ मुख चुआए। परमानंद सुख उपजाए। बजर कपाट प्रभ खोल्ह वखाए। अमृत झिरना प्रभ दे झिराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साध संगत अमृत मुख चुआए। गुर साचा अमृत देवे। गुरमुख विरला गुर दर आए लेवे। कलिजुग गुरमुख साचे दरगाह साची प्रभ साचे दे साचे मेवे। धन्न धन्न धन्न गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना सेवे। पी अमृत आत्म तृप्ताया। हउमे ममता रोग गंवाया। सोहँ साचा जोग प्रभ दर पाया। अमृत रस रस साचा भोग, गुर साचे गुरमुख मुख चुआया। लग्गे कर्म विजोग, प्रभ अबिनाशी दिस ना आया। सृष्ट सबाई होए सोग, साध संगत रसना जै जै जैकार कराया। देवे दरस प्रभ अमोघ, जोत सरूपी भेख वटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा अन्तिम रोग गंवाया। आत्म रोग अन्ध अंध्यार। गुरमुख विरला करे विचार। जो जन आए प्रभ दरबार। प्रभ साचे दी पावे सार। जोत सरूपी जोत प्रभ, एका शब्द उपजावे धुन्कार। गुरमुख साचे प्रभ साचा ल्या लभ्भ, खोल्ह देवे दस्म दुआर। अमृत झिरना झिराए विच कँवल नभ, एका जोत आप करे आकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे तेरा पसर पसार। अमृत आत्म साचा रस। पी पी गुरसिख प्रभ साचा होए वस। प्रगट जोत निहकलंक सतिजुग साचा राह जाए दस्स। एका शब्द वजाए डंक, बेमुख दर जायण नस्स। गुरमुखां दिसावे एका अंक, महाराज शेर सिँघ हिरदे वस। प्रभ साचा दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ आपणी बूझ बुझावे। सुरत शब्द प्रभ शब्द चलावे। अकालमूर्त कलि दया कमावे। सरधा पूर सरधनां आस पुजावे। सोहँ शब्द दवाए सुरत, अनहद शब्द धुन उपजावे। गुरमुख दिसावे साची सूरत, प्रभ अबिनाशी विच समावे। वाली हिन्द उठ बैठे झूरत, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुरत शब्द दा मेल मिलावे। वाली हिन्द शब्द गुण, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। दिसावे जोत प्रभ जगत महाना। गुरसिख समाए जोत सरूप विष्नूं भगवाना। बेमुखां प्रभ दिस ना आए, जोत सरूपी पहरया बाणा। गुरसिक्खां प्रभ सदा रहाए, जिउँ गोपी काहना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सोहँ शब्द देवे सच दाना। साचा प्रभ वड भण्डारी। भगत वछल आप गिरधारी। विच मात देवे वड सिक्दारी। चार कुन्ट कराए चरन पनिहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा धारे कृष्न मुरारी। जामा धारे निहकलंक। जन भगत तराए सुहाए थाएँ बंक। प्रभ शब्द

७७६
०१

लिखाए एका अंक। सन्त सिख प्रभ दोए तराए, आप उधारे सुधारे वेले अन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई विच जीव जन्त। साचा प्रभ देवे वड्याई। आप आपणी सरन लगाई। गुरसिख हरन फरन प्रभ दे खुल्हाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म बुझी दीप जगाई। जगे दीप होए प्रकाश। अज्ञान अन्धेर गुरसिख जाए विनास। साचा प्रभ तेरे हिरदे रक्खे वास। एका धुन उपजाए सुन्न खुल्हाए रसन जपाए स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, जन भगतां दासन दास। दासन दास आप प्रभ दासा। पारब्रह्म अचरज खेल कलि करे तमाशा। गुरसिख साचे मिल्या मेल, प्रभ साचा सद रक्खे वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी करे बन्द ख़लासा। साचा प्रभ तेरे बन्द कटाए। गुरमुख साचे जोड़ जुड़ाए। बेमुखां कलि रोढ़ वखाए। बिरथा सीर जिउँ बिरछ बोहड़ जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त गुरमुख साचे तेरा संग तोड़ निभाए। आदि अन्त प्रभ होए सहाई। गुरमुख साचे तेरे मन वधाई। निहकलंक तेरी जोत जगाई। वड वड सन्त प्रभ चरन लगाई। प्रभ बैठ इकन्त, गुरमुख साचे सिर तेरे हत्थ टिकाई। कलिजुग जीव अन्त भस्म कर अग्न मेघ बरसाई। चरन आए गुरमुख साचे सन्त, महाराज शेर सिँघ धन्न धन्न धन्न तेरी वड्याई। जगत रंग होया विनास। साचा जोग दरस प्रभ अबिनाश। साचा प्रभ हिरदे रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी कीनी बन्द ख़लास। सरबजीत सच धाम पठाए। एका दर दरबार प्रभ सरन रखाए। विच संसार फिर जन्म ना पाए। एका शब्द अधार, प्रभ जोती मेल मिलाए। मानस जन्म ल्या सुधार, निहकलंक चरनी सेव कमाए। चरन सेव कीनी केस। प्रभ बहाया सच घर साचे देस। प्रभ देवे वड्याई जोत सरूपी किया भेस। सरबजीत मन वज्जी वधाई, झूठा छड्डया बाबल देस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए आपणे वेस। जगत पित जन उपजाए। आत्म खेत मन कराए। प्रभ साचा देत सोहँ बीज बीजाए। देवे दरस प्रभ नेतन नेत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत प्रगटाए। पंचम प्रभ वक्त सुहाया। प्रगट जोत सिँघआसण डेरा लाया। गुरमुख साचे मैल दुरमति धोत, सोहँ रंग चढ़ाया। आत्म जगाए साची जोत, जोत सरूप दीप टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आप तराया। गुरसिख उधारे सर्ब सरबंस। मुख उज्जयारे जिउँ वड हँस। प्रभ साचा दुष्ट सँघारे जिउँ काहना कंस। गुरमुख साचे प्रभ साचे दी साची अंस। देवे दरस आप गिरधारे उज्जल मुख विच सहँस। रक्खे लाज आप मुरारे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म होए सुख। जोत जगाए झूठे महिल मुनारे। गुरमुख साचे तारे आत्म देवे धीर ध्यान। जगत देवे वड्याई भगत वछल आप भगवान। पैज रक्खी जिउँ बिदर घर आण। वज्जी वधाई प्रभ सुन्न खुल्हाई, नौं निध पाई प्रभ देवे शब्द ज्ञान। होए सुखदाई देवे दरस

विष्नूं भगवान। देवे दरस गुरमुख जुगती। सोहँ देवे जन प्रभ साची मुक्ती। गुरमुख साचे देवे साची सुरती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव ना जोड़े जुड़ती। गुरमुखां प्रभ रंग चढ़ाया। बेमुखां प्रभ नंग कराया। गुरमुखां प्रभ अंग लगाया। बेमुखां प्रभ दर दुरकाया। गुरमुखां प्रभ सोहँ जोग दवाया। बेमुखां मदिरा मास मुख रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त दे सज़ाया। गुरमुख तेरा सच धरवास। सोहँ उपजे स्वास स्वास। कोई विरले जपे जाप सोहँ नास। गुरमुख साचे प्रभ साचा सद वसे पास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सद सद सद अबिनास। सदा सदा प्रभ अबिनाशा। आदि अन्त ना कदे विनाशा। साध संगत सद रक्खे वासा। जीव जन्त जोत धरवासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप घट घट सद रक्खे वासा। पंचम आया पंचम जागे। बेमुख सवाया ना सोया जागे। गुरमुख साचा निहकलंक कलि चरनी लागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द उपजाए सुणाए अनहद रागे। नरायण नर कलि अवतार। जोत सरूपी जामा धार। जगत पित जगतेश्वर भगत हित करे प्यार। महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत दर घर आए सिँघ ठाकर जाए तार।

७७८ ०१

❊ ६ विसाख २००६ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुर्गी ज़िला अमृतसर ❊

गुरमुखां देवे चरन ध्यान। चरन धूढ़ साचा इशनान। आत्म उपजावे जगावे जोत महान। गुरमुख साचे विच मात वड गुणी निधान। कलिजुग जीव बेमुख होए दिस ना आए भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दा जाणी जाण। एका जोत जगत आकारे। जुगो जुग लए अवतारे। आदि अन्त ना कोई विसारे। जोत सरूपी सद निरहारे। बैठा अडोल आप गिरधारे। कोटन कोट खड़े प्रभ चरन दुआरे। गुरमुख साचे सदा बलिहारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटे जोत आप निरँकारे। नरायण नर जोत प्रगटाए। वाक् भविक्त सति कराए। सतिजुग साची लिख्त कराए। वड वड हँस गुरसिख उपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द चलाए। सोहँ साचा शब्द चलावे। गुरमुखां अमृत नाम पिआवे। अमृत आत्म देह झिरावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखावे। जोत सरूपी दरस दिखाया। आप आपणा खेल रचाया। भरम भुलेखे जगत भुलाया। बेमुख जीवां मानस जन्म विच मात गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव ना पाया। माया रूपी जगत पसार। कलिजुग जीव होए अन्ध अंध्यार। मदिरा मास करन रसन आहार। गुरमुख साचा दिवस रैण रैण दिवस साचा नाम रिहा उचार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आत्म जोत

करे उज्जयार। आत्म जोत होए आकारे। सोहँ शब्द उपजावे साची धुन्कारे। उपजे धुन खुल्हे सुन्न झूठे देह महल मुनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच सिख पसारे। जोत सरूपी प्रभ पसर पसारया। एका जोत जुगो जुग निहकलंक अवतारया। अचरज खेल पारब्रह्म गुरमुख विरले कलि विचारया। होया मेल साचा कर्म, रक्ख आस चल्ल आयण द्वारया। आत्म दीपक जगाए बिन बाती बिन तेल निहकलंक नरायण नर अवतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा मातलोक विच धारया। गुरमुखां देवे नाम अधार। बेमुखां कलि करे ख्वार। गुरमुख साचे प्रभ साची उपजावे धुन्कार। बेमुख दर आए जाए झख मार। गुरमुख साचा कर दरस खुल्हावे दस्म दुआर। बेमुख जीव आवे जावे वारो वार। गुरमुख साचे दर घर वर मिले आप करतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, बांहों पकड़ कलि देवे तार। आप आपणी दया कमाए। जोत सरूपी प्रगट जोत, स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाए। गुरमुख साचे मेल मिलाया। आप आपणी सेवा लाया। सोहँ साचा शब्द जपाया। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाया। एका एकँकार जोत सरूपी प्रभ नज़री आया। एका जोत देवे अधार, आत्म तृखा सर्ब मिटाया। गुरमुख वड्याई धराई विच संसार, जुगो जुग पति रखदा आया। बेमुखां मारे प्रभ शब्द मार, सोहँ खण्डा दो धार चलाया। वेले अन्त होयण ख्वार, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। गुरमुख करे प्रभ चरन प्यार, जगत तृष्ना प्रभ दए मिटाया। भगत जनां प्रभ पावे सार, अन्तकाल होए सहाया। विच बिठाए सच दरबार, आवण जावण गेड़ कटाया। एका जोत सति करतार, जोती जोत प्रभ मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कमाया। गुरमुख साचे दया धारी। सचखण्ड देवे सिक्दारी। रक्खे लाज आप निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी पैज संवारी। साचा प्रभ भगत उधारी। आवे जावे वारो वारी। अचरज खेल रंग करतारी। निर्मल जोत सदा निरहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारी। निहकलंक कलि जामा धारी। आपणी कलि आप वरतारी। सोहँ शब्द खण्डा दो धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरते वरतावे विच संसारी। साचे प्रभ सच वरताया। कलिजुग झूठा खेल मिटाया। जोत सरूपी जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप आप उपाया। कलिजुग झूठा खेल मिटावणा। चार वरन प्रभ इक्क करावणा। राउ रंक प्रभ चरन लगावणा। सोहँ साचा डंक चार कुन्ट वजावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट जै जै जैकार करावणा। जै जै जैकार प्रभ जगत कराए। सोहँ साचा शब्द जपाए। चार वरन प्रभ सरन लगाए। जगत भेख प्रभ सर्ब मिटाए। सतिजुग साचा मार्ग लाए। कलिजुग जीव कोए रहण ना पाए। जोत सरूपी प्रभ किया भेख, गुरमुख साचे

बूझ बुझाए। गुरमुख साचे प्रभ लिक्खया लेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए। सतिजुग साचा सच मार्ग लावणा। सोहँ साचा शब्द चलावणा। सृष्ट सबाई एका अंक प्रभ रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऊँच नीच दा भेद मिटावणा। ऊँच नीच प्रभ आप मिटाए। सर्ब जीव विच रिहा समाए। वेले अन्त कलि प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात दे आए। गुर गोबिन्द एह शब्द लिखाया। वड मलेश बेमुख लिखाया। वड नरेश निहकलंक जणाया। अन्तकाल कलि प्रगट जोत, बेमुखां दए सज़ाया। कलिजुग जीव आत्म हँकारी। मदिरा मास रसन आहारी। हउमे लग्गी तन बीमारी। दर दर फिरन झख मारी। साचा प्रभ दिस ना आए, होए जीव दुष्ट दुराचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त करे ख्वारी। वेले अन्त प्रभ करे ख्वार। रखाए निवास विच नर्क मंझार। दिस ना आवे आर पार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अन्तकाल कलि डोबे विच मञ्झधार। अन्तकाल अन्त कराए। जगत तृष्ना जीव बिल्लाए। प्रभ अबिनाशी विच चुरासी गेड़ फिराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूकर सूकर जून दवाए। साचे प्रभ तेरी सति वड्याई। जन भगतां होए आप सहाई। आत्म सुख देवे सुखदाई। तृष्ना भुख सर्ब मिटाई। मात गर्भ उलटा रुख गुरमुख फेर ना आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी गेड़ कटाई। आत्म तरस प्रभ शब्द उचारया। वड दाता गहर गम्भीर तोड़े हंकारया। होए शांत सरीर जन आए चरन दुवारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप गिरधारया। सोहँ देवे नाम अधारा। आत्म देवे जोत अपारा। एका जोत जगे निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। निहकलंक जगत पित आए। गुरमुख साचे प्रभ आप उपजाए। जोत सरूपी प्रगट जोत, प्रभ साचा दरस दिखाए। कलिजुग बेमुख जीव प्रभ दर दर फिराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे धीर धराए। साचा प्रभ धीरन धीरा। जोत खिचावे सभ तीर्थ नीरा। माण गंवाए पैग़ंबर पीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त गुरमुखां कट्टे भीड़ा। पीर दस्तगीर कोई रहण ना पाए। चार यारां प्रभ वक्त चुकाए। सोहँ साचा शब्द चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। सतिजुग साचा मार्ग लावणा। एका शब्द जगत चलावणा। सोहँ रसन जै जै जैकार करावणा। साचा प्रभ साचा दरबार, एका एक निहकलंक रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाणी बाणी अन्त करावणा। माण गंवाए प्रभ शाह सुल्ताना। जोत प्रगटाए निहकलंक वाली दो जहाना। इक्क इक्क रखाए राउ रंक राजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तोड़े सर्ब अभिमाना। गुर दर आए जीव अभिमानी। वेखे प्रभ देह वैरानी। सद सद बाहर ना वसे अन्ध अन्धाणी। जोत सरूप जोत प्रभ, एका जोत जगे नूरानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

गुण निधानी। कलिजुग होए जीव हँकारा। मूर्ख मुग्ध ना पायण सारा। आत्म मिटे ना अन्ध अन्धयारा। साचा नाम ना रसन उचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बेमुखां करे ख्वारा। कलिजुग जीवां नाम भुलाया। मदिरा मास रसन विकार रखाया। अन्तकाल कलि होए नास, प्रभ साचे लेख लिखाया । गर्भवास सद रक्खण वास, आवण जावण प्रभ गेड़ चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आण तराया। गुरसिख तेरा रूप अपारा। हिरदे वासे आप मुरारा। जोत सरूप सदा निराहारा । बैठा विच अडोल रचणहारा। सद वसे कोल, मूर्ख जीव ना पावे सारा। प्रभ अबिनाशी देवे पड़दे खोल्, दर आए करन निमस्कारा। सोहँ शब्द वजाए ढोल, अनहद धुन वज्जे धुन्कारा। बेमुखां प्रभ खोल्हे पोल, जोत प्रगटाए निहकलंक अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भगत उधारा। आत्म करे जोत आकारे। जगे जोत अगम्म अपारे। साचा शब्द उपजे धुन्कारे। होए प्रकाश झूठी देह महिल मुनारे। कलिजुग माया होए नास, किरपा करे आप गिरधारे। साचा प्रभ सद रक्खे वास, महाराज शेर सिँघ चरन बलिहारे। साचे प्रभ चरन बलिहारी। आत्म देवे नाम ख़ुमारी। दुबिधा मैल प्रभ पार उतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम भण्डारी। साचा दान गुर साचे दिया। पूरब जन्म दा बीज जो बीआ। आत्म जोत जगाया दिया। रसना रस रस नाम महारस पिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे निर्मल किया जिया। साच नाम गुर पूरे दीना। आप आपणे जेहा कीना। गुर सिख सिख गुर इक्क रंग समावे जिउँ नीर मीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म मेघ वरसाए शांत कराए सीना। अमृत बरखे सांतक सति। एका नाम देवे साचा तत्त। एका शब्द रखावे साची मति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत देवे साची मति। साचा प्रभ साची मति। भगत जनां जाणे मित गति। रसना जप जप जीव, मानस जन्म ना आवे वत। साचा नाम रसना रस पीव, सोहँ धरावे प्रभ आत्म साचा यति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा आप रखावे सति। साचा प्रभ सदा सतिवादी। साध संगत प्रभ सद विस्मादी। आत्म धुन उपजावे नाद अनादी। प्रभ साचा शब्द लिखाए बोध अगाधी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सद रसन अराधी। साचा प्रभ रसना गाओ। जन्म जन्म दी मैल गंवाओ। मानस जन्म सुफल कराओ। लक्ख चुरासी गेड़ कटाओ। प्रभ अबिनाशी सेव कमाओ। सर्ब घट वासी रिदे वसाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक टेक रखाओ। एका एक आप ओंकारा। जोत सरूपी करे पसारा। आप आपणा किया उज्जयारा। तीन लोक प्रभ एक पसारा। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभंड समारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँकारा। एका जोत एका आकार। पताल मात अकाश प्रभ साचे किया पसार । जुगो जुग प्रगट जोत मात टिकाए जोत

करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप निरँकार। विच अकाश जोत आकारी। जगे जोत अगम्म अपारी। पारब्रह्म खेल न्यारी। जीव जन्त ना पाए सारी। साचा घर साचा दर दरबारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत अधारी। जोत सरूपी जोत अधारा। आप आपणा करे पसारा। आदि अन्त ना किसे विचारा। साध सन्त प्रभ एका देवे शब्द अधारा। आप बणाए साची बणत, अन्त देवे मुक्त दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा कन्त, सोहँ देवे भगत भण्डारा। साचा प्रभ भगत भण्डारी। आत्म देवे नाम खुमारी। साची जोत करे उज्जयारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खोल्ह देवे दस्म दुआरी। दस्म दुआर प्रभ खुल्हाए। सुरत शब्द दा मेल मिलाए। उपजे धुन खुल्हे सुन्न, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। गुरमुख विरला पाए जन, साचा नाम रसना गाए। गुरसिख आत्म जाए मन्न, प्रगट जोत प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप रघुराए। कलिजुग वेला अन्तिम अन्त। धरे जोत मात भगवन्त। खुल्हाए सोत वड साधन सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग माया पाए बेअन्त। निहकलंक कलि प्रभ आए। निहकलंक कलि जामा पाए। निहकलंक जोत सरूपी जोत समाए। निहकलंक भरम भुलेखे जगत भुलाए। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाए। निहकलंक प्रभ नाउँ रखाया। निहकलंक जोत सरूपी जामा पाया। निहकलंक गुरमुख साचे विच समाया। निहकलंक आपणा आप कलि छुपाया। निहकलंक बेमुख जीवां दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत जोत प्रगटाया। निहकलंक खेल अपारे। निहकलंक जामा घनकपुरी विच धारे। निहकलंक गुरमुख साचे बख्शे चरन प्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि जामा मात विच धारे। निहकलंक कलि जामा पाया। झूठा तन जगत तजाया। जोत सरूपी प्रगट जोत जोत सरूपी खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराया। निहकलंक कलि अन्त कराए। निहकलंक सोहँ साचा शब्द चलाए। निहकलंक महिंमा अगणत गणी ना जाए। निहकलंक जीव जन्त विच रिहा समाए। निहकलंक गुरमुख विरले सन्त आप आपणी बूझ बुझाए। निहकलंक प्रभ साचा कन्त गुरमुख भेव खोल्ह खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दूजा भउ चुकाए । निहकलंक खेल अपार । निरँकार निहकलंक राम अवतार। निहकलंक कृष्न मुरार। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया जामा धार। निहकलंक कलि जामा पाया। भगत भगवन्त मेल मिलाया। अचरज खेल प्रभ आप कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन सेव लगाया । निहकलंक अगम्म अथाह। निहकलंक बेपरवाह। निहकलंक दिसे हर थां। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई ना। निहकलंक निराधार। निहकलंक जोत अधार। निहकलंक भगत उधार।

निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आप गिरधार। निहकलंक निरवैर समाए। निहकलंक ऊँच नीच भेव चुकाए। निहकलंक वड वड नरेश आपणी सेव लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त मात जोत प्रगटाए। निहकलंक सति कर्म कमावणा। निहकलंक पार ब्यासों चरन लगावणा। निहकलंक मस्तूआणा सच धाम उपजावणा। निहकलंक राणा संगरूर चरन लगावणा। निहकलंक गुण भरपूर जोत सरूप दरस दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सर्ब मिटावणा। मस्तूआणे चरन टिकाए। आप आपणी जोत प्रगटाए। सिँघआसण बैठ छत्र सीस झुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अभिमानीआं जाए माण गंवाए। मस्तूआणा आप उपजाए। सतिजुग साचा माण रखाए। सच दरबार प्रभ आप लगाए। सतिजुग वरते प्रभ लेख लिखाए। प्रभ निरँकार इक्क रंग समाए। जगत अधार सोहँ नाम धराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दृष्ट कूट खुल्हाए। मस्तूआणा साचा धाम। पूर कराए प्रभ साचा काम। साध संगत दवाए साचा नाम। प्रगट जोत दरस दिखाए घनईआ शाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत रमईआ राम। निहकलंक साचा वरतार। साचा प्रभ साचा दरबार। ऊँच नीच ना कोए विचार। बूझ सूझ आप करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत अधार। साचे प्रभ आप वड्याए। राजे राणे सरन लगाए। राउ उमराउ प्रभ माण गंवाए। रंकां विच प्रभ रिहा समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राणा संगरूर सरन लगाए। मस्तूआणा साचा धाम उपजा। सन्त मनी सिँघ बचन सति वरता। सतिजुग साचा सतिगुर प्रभ साचा दए बणा। प्रगट जोत निहकलंक देवे तिलक लगा। साचा शब्द वजाए डंक, राउ रंक देवे सरन लगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगा। साचे प्रभ सिर हत्थ टिकावणा। सतिगुर साचा सतिजुग उपजावणा। चार वरन प्रभ सरन लगावणा। हरन फरन गुरसिख खुल्हावणा। सन्त मनी सिँघ सतिगुर साचा नज़री आवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे साचा कर्म कमावणा। साचा प्रभ तिलक लगाए। वड राजन राज आप अख्वाए। वड ताजन ताज सिर मुकट टिकाए। प्रभ साजन साज, साचा माण दवाए। वड लाजन लाज सन्त मनी सिँघ तेरी लाज रखाए। वड वाजन वाज, सोहँ शब्द गुरमुखां सोहँ अवाज़ लगाए। वड पाजन पाज बेमुखां प्रभ पाज खुल्हाए। वड साजन साज सृष्ट सबाई आप सजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आया वक्त जोत प्रगटाए। साचा प्रभ सदा अंग सन्गया। रसना जप बाल अवस्था ध्रू पार लंघया। प्रहलाद उधारया, नर सिँघ रूप नव रंगया। बावन रूप धार प्रभ बल द्वार मंगया। अंबरीक आए चरन द्वार, दर साचे मूल ना संगया। राजा जनक प्रभ जोत अधारे, जीव जन्त छुडाए नर्क जो टंगया। राणी तारा होई पार, साध संगत जोड़ जुड़ाए वर प्रभ दर मंगया। बिदर

झुग्गी सुत्ता पैर पसार, भगत जनां पभ रक्खे अंगया। सुदामा आए कृष्न द्वार, मंग ना सके जो चाहे मूंहों मंगया। जानणहार आप करतार, भगत वछल वड संगया। साचे प्रभ सद बलिहारी। सद सद सद निमस्कारी। आत्म रोग चिन्ता सोग कट्टी शब्द बीमारी। सोहँ साचा जोग देवे जीव अधारी। रसना रस साचा नाम भोग, गुरमुख विरला कोए वपारी। बेमुखां लग्गे कर्म विजोग, चल ना आयण प्रभ दुआरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त करे ख्वारी। वेला अन्त जो जन जाणे। प्रभ अबिनाशी चले भाणे। आत्म रंग सदा सुख माणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची देवे माणे। साची दरगाह साचा थाउँ। प्रभ साचे का साचा गाउँ। गुरमुख विरला हरि रंग समाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाउँ। सोहँ तेरी सति वड्याई। सोहँ बणत प्रभ आप बणाई। गुरमुख साचे रसना जप, आत्म भुक्ख मिटाई। नेड़ ना आयण तीनो तप, प्रभ साचा होए सहाई। कोट उतारे प्रभ साचा पप, जो जन आए सरनाई। विच्चों देवे छड्ड आपणा आप, दर्शन देवे आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां सद होए सहाई। भगत जनां प्रभ सद रखवाला। साध संगत प्रभ सद प्रितपाला। सोहँ देवे आत्म साची माला। प्रभ अबिनाशी तोड़े सर्ब जगत जंजाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे आत्म साचा दीपक बाला। आत्म साचा दीप प्रकाश। अज्ञान अन्धेर जाए विनास। प्रगटे जोत प्रभ अबिनाश। पवण सरूपी चलाए स्वास। सोहँ शब्द धराए नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रास। कर किरपा गुरसिख उधारया। साची जोत जगे झूठे देही महल मुनारया। दूई द्वैत पड़दे तोड़े, एका रंग रंगे करतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्त दे विच पसारया। प्रभ अबिनाश विच समाया। साध संगत दा मेल मिलाया। अचरज खेल पारब्रह्म रचाया। चतुर्भुज सिँघआसण लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जामा धार मात जोत प्रगटाया। मातलोक प्रभ जामा धारे। एका जोत जगे निरँकारे। गुरमुखां प्रभ पार उतारे। बेमुखां कलि करे ख्वारे। सोहँ शब्द चलाए खण्डा दो धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे। निहकलंक कलि जोत प्रगटाणे। जोत सरूपी विच सिख समाणे। सृष्ट खपाए उपाए चलाए रहाए आपणे भाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त ना कोए जाणे। आप उपावे आप खपावे आप चलावे। आदि अन्त कोई जीव ना पावे। झूठी सृष्ट झूठे दाअवे। मायाधारी रोण माया हावे। गुरमुख विचारे साचा नाउँ रसना सद गावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमावे। जिस जन प्रभ दया कमाई। आत्म त्रैकुटी खोल्ह वखाई। फाँसी जम की छुट्टी, जम नेड़ ना आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाई। एका नाउँ जगत चलाए। चार वरन प्रभ इक्क कराए। वरन बरन कोई रहण ना पाए। एका सरन

निहकलंक रखाए। तारन तरन सिर हत्थ टिकाए। गुरमुख साचे प्रभ हरन फरन खुल्हाए। बेमुखां लाए अग्न जोत तमाचे, अन्तकाल कलि रहे बिल्लाए। वरते शब्द सचो साचे, निहकलंक कलि रिहा लिखाए। गुरमुख विरला हिरदे वाचे, जोत सरूपी विच सिख रिहा समाए। गुरमुख आए प्रभ दरस दिखाए। आप आपणी जोत प्रगटाए। वड वड वड हँस गुरसिख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां संग सदा रहाए। गुरसिख तेरा साचा माण। पंचम विच सद परवान। देवे दरस आप भगवान। रक्खे वास विच सुघड़ स्याण। ना जाणे जीव मुग्ध अञ्याण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, परिपूरन भगवान। प्रभ का रूप ना कोए जाणे। एका एक प्रभ सद वखाणे। वड भेखी भेख प्रभ भेख वटाणे। अलख अलेखी गुरसिक्खां प्रभ लेख लिखाणे। कलिजुग जीव झूठा भेख अन्तकाल प्रभ नष्ट कराणे। गुरमुख आत्म साची वेखी, राती सुत्या खड़ा सरहाणे। गुरमुख साचे सच नेत्र पेखी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। नेत्र पेख निजानंद पाओ। आत्म तृष्ना सर्ब मिटाओ। काहना कृष्ना दरस नित पाओ। आत्म भुख चिन्ता दुःख तनों तजाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना गाओ। गुरमुखां गुर पूरा पाया। वाह वाह सतिगुर लेख लिखाया। नेत्र पेख पेख आत्म तृप्ताया। मस्तक साचे लिखे लेख, बिधना लेख आप मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दया कमाया। जीव जन्त प्रभ लेख लिखाए बिधना बिध। सद बणत बणाए, प्रगट जोत करे कारज सिद्ध। लिखे लेख प्रभ मिटाए, घर उपजाए नौ निध। रिद्ध सिद्ध प्रभ वस कराए, प्रभ मिलण दी साची बिध। जोत सरूप जोत समाए, सोहँ देवे नाउँ प्रभ मिलण दी साची बिध। सोहँ नाम वड जपे जापी। रसना जप कोट उतारे पापी। साचा प्रभ वड प्रतापी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत पति तेरी राखी। रक्खे पति आप गिरधार। पतिपरमेश्वर आप जामा धार। जगतेश्वर आए गुरसिख द्वार। साध संगत सद रक्खे प्यार। बाशक सेज तजाए, मात आया नैण मुँधार। साचा दीपक जोत जगाया, मेट जाए जगत अंध्यार। जन भगतां गगन टिकाया, जोती जोत मेल मिलाया, प्रभ की जोत अगम्म अपार। विच आकाश डगमगाया, सचखण्ड सचा दरबार। प्रभ आपणा आप उपाया, जोत सरूपी जामा धार। साध संगत प्रभ बेड़ा पार कराया, जो जन आए चल द्वार। पारब्रह्म बेमुखां पाई माया, निगम कर विचार। प्रभ बाहों पकड़ तराया, गुरसिक्खां पाई सार। बेड़ा रुढ़दा बन्ने लाया, कर दया अपार। जामा घनकपुरी विच पाया, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सची सरकार। जोत सरूपी करे वरतार। तीन लोक वड सरकार। लक्ख चुरासी चरन पनिहार। बैठा विच आप सरदार। हुक्मे रक्खे जीव जन्त साची पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना पाए सार। सर्ब जनां प्रभ आप समाए। आपणा आप भेद रखाए। शास्त्र छे वेद चार भेव प्रभ ना पाए। पंडत पांधे

होए ख्वार, प्रभ अबिनाशी दिस ना आए। साध संगत सद सद बलिहार। गुर दर आए जन्म जन्म प्रभ मैल गंवाए, जन्म ना पाए दूजी वार। गर्भवासी प्रभ फाँस कटाए, गुरसिख पुजाए विच सच दरबार। बैकुण्ठ निवासी सच सिक्दार। बैठे विच आप निराधार। महाराज शेर सिँघ जोत करतार। गुरसिख गुर धाम जगत न्यारा। साचा पित सद वसे बाहरा। जोत सरूपी वसे नित, भेव खुल्हाए विरले सिख, साध संगत रक्खे हित, देवे मोख दुआरा । गुर सज्जण साचा मित, महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतारा। साचा प्रभ सज्जण सुहेला। गुरचरन कराए साचा मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दे विछड़े कलि कराया मेला। विछड़यां प्रभ मेल मिलाए। सुक्के होए रुक्खड़े प्रभ हरे कराए। उज्जल होए मुक्खड़े, सोहँ रसना गाए। सुफल कराए माता कुक्खड़े, धन्न जणेंदी माए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा पार उतारे जो जन आए। जन आए प्रभ सरनाई। प्रभ साचे दया कमाई। साचे सतिगुर गुरमुख आप बणाई। उतप्त कीनी सृष्ट सबाई। माया रूपी खेल रचाई। बिन हुक्म ना झुल्ले पत्त, हुक्मे अंदर फिरे लोकाई। साध संगत प्रभ देवे मति, सोहँ देवे प्रभ साचा यत, अन्तकाल प्रभ साचा रक्खे पति, देवे दरस आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त एका रंग समाई। एका रंग प्रभ रंगाए। साचा रंग नाउँ चढ़ाए। अंग अंग प्रभ संग समाए। मंग मंग साध संगत वर साचा मंग, प्रभ अबिनाशी भिच्छया पाए। अन्तकाल कट्टे भुख नंग, सतिजुग साचा सच उपजाए। हरि हरि हरि एका रंग, प्रभ साचा आप चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दया कमाए। साचा गुर सच दरबारा। साचा प्रभ वड संसारा। साचा गुर लेख लिखारा। साचा गुर वड भण्डारा। साचा गुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक अवतारा। साचा गुर सर्ब सहाई। साचा गुर लेख लिखाई। साचा गुर भेख वटाई। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप भुलाई। साचा प्रभ सर्ब रखवाला। साचा प्रभ भगत प्रितपाला। साचा प्रभ गुरसंगत समाला। साचा गुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम सुखाला। साचा गुर देवे दान। साचा गुर गुणी निधान। साचा गुर गुरसिख कराए चतुर सुजान। साचा गुर लिक्खया धुर सच होए फ़रमान। साचा गुर लोचण सुर, नज़र ना आवे विष्नूं भगवान। साचा गुर घनकपुर जामा धारे बली बलवान। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी जोत महान। साचा गुर वड वड बलिया। साचा गुर अछल छलिया। साचा गुर देवी देव नित मंगण खलिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लखमी नरायण, लच्छमी झस्से तलिया । साचा गुर गहर गम्भीर। साचा गुर आत्म सोहँ देवे धीर। साचा गुर प्रगटे जोत वड पीरन पीर। साचा गुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म देवे धीर। साचा गुर धीर धराए। साचा गुर हउमे दीर्घ रोग गंवाए। साचा

७८६
०१

प्रभ दरस अमोघ आप दिसाए। चिन्ता सोग गुरसिख मिटाए। साचा जोग नाम दवाए। आत्म रस भोग, सोहँ सद रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी दया कमाए। गुरसिक्खां प्रभ दया धार। खिच ल्याए विच दरबार। साध संगत सद रक्खे बसन्त बहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बरसे मेघ फुहार। आत्म हरया भरया खुल्हे कँवल मिटे अंध्यार। गुरमुख साचा गुर दर तरना, देवे दरस आप करतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं समाले सार। साध संगत तेरी पूरन आसा। प्रभ पूरन देवे चरन भरवासा। हिरदे वसे पुरख अबिनाशा। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनासा। गुरमुख साचे जिउँ कंचन पासा। सोहँ शब्द जन रसना गाए, रसन तजाए मदिरा मासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए दासन दासा। मदिरा मास जिस जन तजाया। प्रभ साचे आपणी सरन आप लगाया। बेमुख जीव दुःख डाहढा भरन, अन्तकाल कलि नेड़े आया। महाराज शेर सिँघ तेरी साची सरन, गुरमुखां होए सहाया। साची सरन गुर दी रक्ख। बांहों पकड़ प्रभ कीने वक्ख। प्रभ की महिंमा अलख अलख अलख। सृष्ट सबाई होई भक्ख। काया अग्न जलायण कक्ख। गुरमुख आत्म मग्न रखाए, देवे दरस होए प्रतक्ख। महाराज शेर सिँघ गुर प्रसाद मुख सगण लगाए, रक्खे दे कर हत्थ। गुरू नानक अंगद अंग लगाया। अन्तिम जोती दीप जगाया। पिण्ड खडूर जिस आए तराया। हँकारीआं गुर हँकार गंवाया। गुरमुखी अक्खर उचार गुरबाणी दा मुक्ख रखाया। कलिजुग जीवां विच संसार, एका ओट प्रभ धराया। अन्तकाल कलि प्रगटे निहकलंक अवतार, अन्तिम खेल आप कराया। आप वरताए साची वरतार, चरन विच खडूर दे पाया। खिच ल्याए जोत करतार, अन्तिम खेल आप मिटाया। गुर गोबिन्द सची सरकार, साचा कर्म आप कराया। वड वड गुरसिख बेड़ा कर जाए पार, गुर सिँघ सोहण तराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। गुरसिख साचा प्रभ तारन जाई। साध संगत प्रभ संग रलाई। आत्म रंगत नाम चढ़ाई। सृष्ट सबाई होई मंगत, गुरमुख विरले प्रभ भिच्छया पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माण दवाई। माण दवाए जाए घर। देवे दरस अवतार नर। कर दरस कोटी कोट जायण तर। अमृत बरस बणाए साचा सर। बीसवीं सदी चार वरन चल आयण दर। छोहे ब्यासा नदी निहकलंक चरन जाए धर। सतिजुग बख्शे साची गद्दी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा देवे वर। देवे वर वड वरयाम। अमृत पिलाए साचा जाम। जोत प्रगटाए राम पुर रमईआ राम। थान सुहाए घनईआ शाम। माण दवाए पूर करईआ काम। आण रखाए सोहँ लगाए बाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचे देवे माण। सतिगुर साचा देवे माणा। गुरमुख होए चरन निमाणा। सति कर मन्ने प्रभ का भाणा। वेला गया हत्थ ना आणा। जोत सरूपी प्रभ पहरया बाणा। खेल मिटाए मुकाए राजा राणा।

महाराज शेर सिँघ गुरमुख साचे दर घर सुहाणा। दर घर गुर दरबार। गुर का शब्द चले अपार। साचा प्रभ सद सद बलिहार । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान धरे जोत करतार। साचा घर प्रभ आप वसाया। आप आपणा डेरा लाया। जोत सरूपी दीपक जोत प्रभ साचे आप जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। जोत सरूप जोत आकार। जोत जोत प्रभ जोत अधार। जोत जोत जोत प्रभ जोत संसार। जोत जोत जोत प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत निराधार। जोत सरूपी एको गुण। गुरमुख साचे एका धुन। प्रभ अबिनाशी खोल्ह वखाए आत्म सुन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना जाणे कवण गुण। गुरमुख साचा अन्तकाल कलि चरन पकड़ ल्यावे जन। एका जोत जगाए तन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग जीव ना जाणे तेरे गुण। कलिजुग साचा प्रभ साचा दरबारा। जोत सरूपी करे आकारा। पारब्रह्म खेल न्यारा। जीव जन्त ना पावे सारा। निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुणवन्ता प्रभ गुण विचारे। जुगो जुग लए अवतारे। भगत जनां प्रभ पार उतारे। बेमुखां प्रभ आण सँघारे। महाराज शेर सिँघ निहकलंक नरायण नर अवतारे। मातलोक प्रभ जामा धारया। निहकलंक नाउँ रखा ल्या। जोत सरूपी भेख वटा ल्या। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा दया कमा ल्या। साचा प्रभ दया कमाए। गुरमुख साचे मेल मिलाए। आत्म साची जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाए। दीनां नाथ दीन दयाला। भगत वछल गुर गोपाला । गुरसिक्खां प्रभ सदा रखवाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे आत्म साची माला। गुरसिख आए गुर दर। प्रभ आत्म देवे साचा वर। चरन लाग जाए तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक दिसाए साचा घर। सचा प्रभ सचा घरबारा। गुरमुख साचे पायण सारा। बेमुखां आत्म अन्ध अन्धयारा। गुर दर ना सूझे मूर्ख मुग्ध गंवारा। प्रगट होए रिखी केश गवर्धन धारा। सर्ब कला समरथ आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण नर कोए विरला जाणे। जिस चलाए आपणे भाणे। कलिजुग जीव भुल्ल भुल्ल होए अञ्याणे। गुरमुख साचे प्रभ साचे चरन लगाणे। अन्तकाल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। भगत जनां प्रभ लेख लिखाए। लिक्खया लेख ना कोए मिटाए। भेख भेख प्रभ जोत सरूपी भेख वटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा रिहा छुपाए। साचे प्रभ दरस दिखाणा। अन्ध अज्ञानी सर्ब मिटाणा। आत्म साचा दीप जगाणा। सोहँ नाम प्रभ रिदे वसाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पारब्रह्म खेल रचाणा। पारब्रह्म खेल न्यारा। मातलोक प्रभ लए अवतारा। जुगो जुग आवे वारो वारा। गुरमुख साचा प्रभ देवे नाम अधारा। बेमुखां प्रभ करे ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे चरन प्यारा। चरन प्यार जन दिया। आप आपणे जेहा किया।

प्रभ साचे आत्म जोत जगाया दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे फल पूरब जन्म जो बीआ। पूरब जन्म लेख चुकाए। जामा धार निहकलंक आपणी सरन लगाए। आत्म वजाए सोहँ साचा डंक, सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाए। इक्क कराए राउ रंक, एका अंक दूजा भउ चुकाए। जोत सरूपी लाए तनक, गुरमुख साचे पकड़ उठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग पूरन भाग लिखाए। जोत सरूपी जामा पाया। गुर गोबिन्द बचन सति वरताया। अन्तिम अन्त जो बचन लिखाया। निहकलंक प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखा वेख जगत भुलाया। जगत भुलाए आप प्रभ, आपणी माया पाए। जगत भुलाया आप प्रभ, आपणा आप रिहा छुपाए। जगत भुलाया आप प्रभ, बेमुखां दिस ना आए। जगत भुलाया आप प्रभ, मदिरा मास आहार कराए। जगत भुलाया आप प्रभ, आत्म अन्धेर रखाए। जगत भुलाया आप प्रभ, माया रूपी पड़दा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप रहाए। प्रभ की माया बड़ी बेअन्त। सार ना पाए कोई जीव जन्त। गुरमुख विरला जाणे सन्त। भगत जनां नाम दवाए सोहँ साचा मंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया भगत जनां दा साचा कन्त। प्रभ साचे कलि जामा धारया। किरपा करी आप गिरधारया। आवे जावे वारो वारया। प्रभ कर्म ना किसे विचारया। ऊँचो ऊँच नीचो नीच सद वसे बाहरया। सूचो सूच जोत सरूपी प्रभ करे अकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अन्त ना पारावारया। प्रभ का अन्त ना पारावार। कोटन कोट रहे झख मार। दिस ना आवे गुर दरबार। जिथ्थे वसे आप करतार। जोत सरूपी बैठ करे आकार। आप अडोल प्रभ अबिनाशी किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। साची जोत विच मात प्रभ धर। चार वरन अन्तकाल प्रभ इक्क जाए कर। मस्तूआणा साचा धाम सतिजुग उपजावे साचा सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन दिसावे एका दर। एका दर एका दरबार। साचा दिसे आप निरँकार। लक्ख चुरासी वड सिक्दार। जीव जन्त प्रभ पावे सार। जीव जन्त जोत सरूपी किया पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका गोत चलावे विच संसार। एका एक प्रभ आप उपाए। एका टेक निहकलंक रखाए। कलिजुग झूठा भेख मिटाए। सतिजुग साचा प्रभ मार्ग लाए। सोहँ शब्द प्रभ देह उपजाए। सुन्न समाध प्रभ आप खुल्हाए। जोत सरूपी दीप जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि आपणी कल वरताए। आपणी कल आप वरताए। राउ रंक प्रभ सरन लगाए। सोहँ साचा शब्द चार कुन्ट लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऊँच नीच दा भेद चुकाए। ऊँच नीच नीच ऊँच। कलिजुग झूठा खेल प्रभ कराए कूच। सतिजुग साचा सज्जण सुहेल, प्रभ साचा सूचो सूच। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आत्म करे ऊँच। साचा प्रभ रचन रचाए। गुरमुख साचे

७८६
०१

सरन लगाए। बेमुख काचे प्रभ माया अग्न जलाए। बेमुख दर आए नाचे, प्रभ साचे भेव ना पाए। गुरमुख विरला हिरदे वाचे, प्रभ बजर कपाट खुल्हाए। सतिगुर पूरा साचो साचे, कलिजुग जीव भरम भुलेखे पाए। भरम भुलेखे प्रभ भुलाए। ऐड़ा अथर्बण वेद चलाए। अन्तकाल कलि प्रभ आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी भेव खुल्हाए। जोत सरूपी प्रभ भेख धारी। साचा प्रभ जोत अधारी। जावे आवे आवे जावे, प्रभ साचे दी साची कारी। गावे रावे आत्म नहावे, गुरमुख उतरे हउमे बीमारी। सोहँ नाउँ प्रभ झोली पावे, मानस जन्म ना आवे दूजी वारी। भगत भगवान प्रभ मेल मिलावे, आत्म जोत करे उजारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँकारी। गुरमुखां प्रभ जोत जगाए। अमृत आत्म देह झिराए। निर्मल साचा दीप जोत सरूपी विच देह टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दस्म दुआर खुल्हाए। अमृत झिरना प्रभ आप झिराया। निर्मल बूंद कँवल मुख टिकाया। खुल्हे कँवल मिटे अंध्यार, जोत सरूपी प्रभ नज़री आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद समाया। सन्त जन दर मंगल गाए। तन मन हरा कराए। सोहँ साचा धन माल प्रभ झोली पाए। आत्म साचा दीप बाल, अन्ध अज्ञान नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कमाए। गुरमुख साचा गुर पूरा तारे। दर घर आए काज संवारे। निहकलंक सतिजुग साचा

करे वरतारे। चार वरन होए पनहारे। धरे जोत आप निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई लेख लिखारे। साचा लेख प्रभ आप लिखाया। कलिजुग जीव कोई भेव ना पाया। अलक्ख अभेव प्रभ अभेद रहाया। सार ना पायण चार वेद, साचे प्रभ आपणा आप ना किसे जणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा विच मात दे पाया। पुरान वेद ना जाणे सार। साचा प्रभ वसे बाहर। गुर गुर गुर गायण मुन रिख शायर। जोत सरूपी जोत प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अठ्ठे पहर। एका जोत इक्क वरतारा। इक्क वरताए विच संसारा। कलिजुग मिटाए झूठा पसारा। सतिजुग उपजाए सति करतारा। सोहँ देवे साचा नाम अधारा। सांतक सति सति सति वरते वरताए आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग वरते सति वरतारा। सतिजुग प्रभ साचा लाए। पहली माघ लेख लिखाए। कलिजुग झूठी रेख मिटाए। जोत सरूपी निहकलंक भेख वटाए। अन्तकाल प्रगट जोत राउ रंक इक्क कराए। चार वरन कराए एका गोत, ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। गुरमुखां मैल प्रभ जाए धोत, सोहँ साचा नाम जपाए। बेमुख दर जायण रोत, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। दर मंगण कोटन कोट, विरले गुरमुख प्रभ भिच्छया पाए। साचा प्रभ ना आवे तोट, भण्डार निखुट ना जाए। गुरमुख साचे प्रभ आत्म लगाए सोहँ चोट, आप आपणी बूझ बुझाए। कलिजुग जीव डिगे आलणिओ बोट, वेला गया हत्थ ना आए।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। जोत सरूपी पहरया जामा। जोत जगाई रमईआ रामा। निहकलंक कलि आया आया घनईआ शामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि पूर कराए आपणे कामा। आपणे काम प्रभ पूर कराए। गुरमुखां प्रभ जोत सरूपी नूर दवाए। बेमुखां प्रभ दूरो दूर रहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरन सूर आप अख्वाए। वड सूर बली बलवाना। जामा धारे कृष्ना काहना। दुष्ट सँघारे जिउँ रावण रामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर कराए आपणे कामा। करे कराए आप प्रभ, कोई भेव ना जाणे। करे कराए आप प्रभ, आपणा भेव प्रभ आप खुल्हाणे। करे कराए आप प्रभ, गुरमुखां आत्म जोत जगाए महाने। करे कराए आप प्रभ, तख्तों लाहे राजे राणे। करे कराए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। करे कराए आप प्रभ, कलिजुग अन्तिम करे ख्वारा। करे कराए आप प्रभ, सोहँ शब्द चलाए खण्डा दो धारा। करे कराए आप प्रभ, अग्न जोत लाए विच संसारा। करे कराए आप प्रभ, कलिजुग जीव करे ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान , निहकलंक नरायण नर अवतारा। करे कराए आप प्रभ, आपणी बणत बणाए। करे कराए आप प्रभ, बैठ अडोल जगत डुलाए। करे कराए आप प्रभ, आप अतुल जगत तुलाए। करे कराए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हाए। करे कराए आप प्रभ, कोए ना जाणे सार। करे कराए आप प्रभ, बेमुखां प्रभ करे ख्वार। करे कराए आप प्रभ, आपणे रंग आप करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा करे वरतार। करे कराए आप प्रभ, सर्ब कला समरथ। करे कराए आप प्रभ, गुरमुखां रक्खे दे कर हत्थ। करे कराए आप प्रभ, बेमुखां पाए नत्थ। करे कराए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई जाए मथ। साचा प्रभ करावण जोग। सृष्ट सबाई होए सोग। गुरमुखां आत्म तीर्थ देवे जोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी देवे दरस अमोघ। जोत सरूपी प्रगट जोत दरस दिखावणा। राजा राणा बांहों पकड़ प्रभ आपणी सरन लगावणा। सोहँ साचा बाण, प्रभ चार कुन्ट लगावणा। जीव जन्तां एका माण, निहकलंक चरन रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा धाम सुहावणा। प्रगटे जोत प्रभ भगवाना । सरनी आए राजा राणा। जोत सरूपी प्रभ दरस दिखाणा। भगत उधार जगत पित अख्वाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा वरते भाणा। राजा राणा सरन लगाए। सतिगुर मनी सिँघ माण दवाए। बीस इकीस इकीस बीस प्रभ भेव चुकाए। सिद्ध मार्ग प्रभ चलाए। दिवस चाली प्रभ जोत प्रगटाए। बैठे अडोल सिँघआसण डेरा लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग लेख लिखाए। साचे प्रभ लेख लिखाउणा। चार जुग दा भेव खुल्हाउणा। दिवस चाली विच सिख समाउणा। दिवस रैण रैण दिवस सच शब्द गुरसिख कन्न सुणाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

अन्तकाल कलि सर्ब माण गंवाउणा। साचा प्रभ माण गंवाए। कलिजुग आण सर्ब चुकाए। सोहँ बाण शब्द चलाए। पूरन काम जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि होए सहाए। साचा खेल करे करतारा। प्रगटे जोत निहकलंक अवतारा। पारब्रह्म अचरज खेल जोत सरूपी जगत विहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटे जोत अगम्म अपारा। साचा प्रभ जोत प्रगटाए। चार वरन प्रभ चोट लगाए। बेमुखां प्रभ खोट कढाए। सोहँ जोग विच कोट रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धाम उपाए। मस्तूआणा धाम उपा के। सतिजुग साचा सर बणा के। चार वरन इक्क दर खुल्ला के। राउ रंक प्रभ इक्क करा के। बैठे अटंक जोत सरूपी जोत जगा के। देवे दरस राणा संगरूर चरनी लग्गे आ के। आत्म तुट्टे सर्ब ग़रूर, आपणी भुल्ल जाए बख्शा के। आत्म तपे तन तन्दूर, कर दरस जाए शांत करा के। जोत सरूपी उपजे नूर, प्रभ सरनी डिगे आ के। निहकलंक सर्ब कला भरपूर, सिर रक्खे हत्थ टिका के। प्रभ साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई जोत सरूपी दरस दिखा के। जोत सरूपी प्रभ दरस दिखाउणा। राणा संगरूर प्रभ सरन लगाउणा। मातलोक प्रभ साचे माण दवाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा नाम जपाउणा। आप आपणा नाम जपा के। सोहँ साचा रिदे वसा के। पवण सरूपी विच स्वास समा के। ओंकार सोहँ साचा जाप जपा के। झूठी माया प्रभ तनों जाए जला के। होए सीतल काया, निहकलंक दर दर्शन पा के। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ देवे वर आपणी दया कमा के। देवे वर आप वरतार। गुरमुखां प्रभ भरे भण्डार। निखुट ना जाए ना आए हार। प्रभ अबिनाशी वड वड वड घरबार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा देवे नाम अधार। साचा देवे शब्द ज्ञाना। एका बख्शे चरन ध्याना। चरन धूढ़ गुरमुख साचा करे इशनाना। आत्म तीर्थ इशनान करे प्रभ चढ़ाए रंग महाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, किरपा करे आप भगवाना। साजण आए गुर दरबारे। काजन काज प्रभ काज संवारे। साजन साज प्रभ पावे सारे। वड राजन राज आप निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग करे खेल अपारे। वड जोधा वड सूरबीर। सोहँ शब्द चलाए तीर। जोत खिचावे प्रभ तट्ट तीर्थ नीर। माण गंवाए प्रभ पैग़ंबर पीर फ़कीर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ चलावे साचा तीर। साचा प्रभ वड वड ज्ञाता। साचा प्रभ अन्तकाल कलि सभ खिचावे आप करामाता। एक ओट धराए निहकलंक चरनी नाता। मातलोक प्रभ जोत प्रगटाए, सृष्ट सबाई बणे पित माता। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, बिधना बिध आप बिधाता। साचा प्रभ बिध बणाए। आपणे कारज सिद्ध कराए। गुरमुख घर नव निध उपजाए। रिद्ध सिद्ध प्रभ वस कराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग अन्त करन दी बिध बणाए। अन्तिम कलि प्रभ आप

करावणा। सृष्ट सबाई दो धड़ करावणा। जोत सरूपी प्रभ अग्न जोत लगावणा। वड वड जोधा प्रभ साचे पकड़ उठावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल अन्तिम अन्त करावणा। सूरबीर प्रभ देवे माणा। पकड़ बिठाए विच बबाणा। अग्न मेघ विच सृष्ट बरसाणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अन्तकाल कलिजुग नष्ट कराणा। कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारी। मदिरा मास रसन आहारी। हउमे लग्गी तन बीमारी। आत्म होई जीव हँकारी। साचा प्रभ करे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आदि अन्त दुष्टां सदा सँघारी। दुष्ट दुराचार प्रभ आप सँघारे। सोहँ मारे खण्डा दो धारे। अन्तकाल विच नर्क निवारे। कोई ना पावे बेमुखां सारे। निहकलंक नरायण नर कलिजुग जीव गए विसारे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगटे जोत आप निरँकारे। होए कलि अन्त अख़ीर। कोई ना बन्ह्रावे इस दी धीर। चार कुन्ट पै जाए वहीर। बालक तरसण माता सीर। भैणां लभ्भण वीर। होए ना कोए सहाई औलिया पैग़ंबर पीर। बेमुख कलिजुग जीवां कोए ना देवे धीर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द चलावे तीर। साचे प्रभ सच तीर चलाया। चार कुन्ट वहीर कराया। जीवां जन्तां नीर हत्थ ना आया। साधां सन्तां प्रभ गले लगाया। आप बणाए साची बणत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप दरस दिखाया। गुरसिक्खां प्रभ सरन लगाए। वेले अन्त होए सहाए। साध संगत सिर हत्थ टिकाए। आदि अन्त प्रभ पैज रखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अगाध बोध बोध अगाध शब्द लिखाए। शब्द लिखाए जगत लेख। जीव ना जाणे प्रभ का भेख। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी धारया भेख। सृष्ट सबाई होई दो फाड़े। आप चबाए आपणी दाढ़े। कलिजुग जीआं अन्त भाग होए माड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत अग्न विच साड़े। अग्न जोत प्रभ आप लगाए। ना कोई मेटे मेट मिटाए। गुरमुख साचे प्रभ रंग रंगीले प्रभ साचे रंग रंगाए। प्रभ साचे दे साचे बेटे, भगत जनां प्रभ आप बणाए। आप आपणे पाए पेटे, पित मात आप हो जाए। बेमुख कलिजुग जीव विच माया अग्न लपेटे, ना कोई अन्त छुडाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि आपणी आप वरताए। कलिजुग तेरा तुट्टा माण। प्रगटे जोत निहकलंक बली बलवान। कोई ना दीसे राज रजान। राउ रंक इक्क समान। साचा प्रभ साचा देवे शब्द ज्ञान। सोहँ शब्द जन रसना सेवे, देवे दरस गुण गुणी निधान। प्रभ साचे दर साचे मेवे, गुरमुख विरले अमृत फल खाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ देवे दानी दान। दानी दान आप वड दाना। साचा प्रभ वड भरे ख़ज़ाना। गुरमुख साचे प्रभ दर साचे देवे माणा। अनहद साची धुन प्रभ साचा सदा उपजाणा। कोई विरला पावे रिख मुन, राखे प्रभ चरन ध्याना। खोल्ह वखावे प्रभ आत्म सुन्न, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। दिवस रैण रैण दिवस

रहे रुण झुण, साचा शब्द प्रभ आप सुणाणा। कौण जाणे निहकलंक तेरे गुण, जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत सरूपी बाणा धार। कलिजुग मेटे अन्ध अंध्यार। सतिजुग वरतारे सति करतार। जोत प्रगटावे विच संसार। नाउँ धराए निहकलंक नर अवतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भगत वछल आप गिरधार। साचा प्रभ जोत जगईआ। सतिजुग साचा मार्ग लईआ। राउ रंक इक्क करईआ। ऊँच नीच प्रभ मेट मिटईआ। सोहँ साचा नाम दवईआ। चार वरन कराए एका भैणां भईआ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ चलाए साची नईआ। साची नईआ जगत चलाए। गुरमुख विरले आप चढ़ाए। मदिरा मासी शौह दरया रुढ़ाए। हरिजन जन हरि जन भगत नाम उदासी, प्रभ आपणी जोत मिलाए। वेले अन्त करे बन्द ख़लासी, दरगाह साची माण दवाए। आवे ना जावे सद अबिनाशी, गुरमुख गुरसिख हरिसन्त साचे सच धाम बहाए। सर्ब घटा घट रिहा वासी, महाराज शेर सिँघ भगत जनां दी पैज रखाए। साचा प्रभ पैज रखाए। दर घर साचे गुरसिख टिकाए। वर घर प्रभ आप बणाए। अवतार नर सच कन्त कहाए। सरन पड़ सन्त तर जाए। महाराज शेर सिँघ बैकुण्ठ निवासी, विच बैकुण्ठ निवास रखाए। बैकुण्ठ धाम धाम न्यारा। पारब्रह्म खेल अपारा। जगे जोत अगम्म अपारा। आदि अन्त अन्त आदि एका रहे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ जोत सरूपी जोत चमत्कारा। दर कर बेनन्ती जन। जगत जंजाल जलाए तन। दिवस रैण शांत होए मन। प्रभ अबिनाशी बेड़ा जाए बन्न्। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा देवे नाम धन। संसा रोग प्रभ गंवाए। कर दरस आत्म तृप्ताए। रक्खे लाज बेमुख होए ना जीव उठ जाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, उलटी लट्ठ फिर आप गिड़ाए। भुल्ले जीव होए अञ्याणा। साचा प्रभ आत्म भुलाणा। आत्म रखावे झूठा माणा। उधरे जन जो होए निमाणा। महाराज शेर सिँघ देवे वड्याई विष्नूं भगवाना। शब्द शब्द जन भुलाए। आप आपणा किया कलि पाए। मदिरा मास मुख चोग रखाए। चिन्ता रोग विच देह वधाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप आपणी दे सज़ाए। साचा बचन सति कर पाले। चरन प्रीती निभे नाले। साची नीती होयण सास सुखाले। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणा बिरद आप ही पाले। आप लिखावे आप भुलावे। झूठे बन्न्हे कलि जीव दाअवे। वरते सो जो प्रभ भावे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप आपणी कल वरतावे। सतिगुर साचा शब्द कराए सति। सति पुरख बचन सति मन्नया। झूठा जगत जंजाल प्रभ साचे भन्नया। कदे ना होए आत्म कंगाल, प्रभ धीरन धीर बन्न्हया। साचा देवे धन माल, ना लागे कदे सन्नया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा बचन जिस सति कर मन्नया। साचा बचन आप लिखावे। भरम भुलेखे आप भुलावे। डुल डुल जीव आत्म डुलावे। रुल रुल आपणा आप गंवावे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे अन्त सज़ाए। साचा

ਹੁਕਮ सच फ़रमाया। प्रभ अबिनाशी कर्म कमाया । भुल्ले भुलाए सो जन, जिस प्रभ ना रसना गाया। अग्न लगाए जोत तन, दिवस रैण चैन ना पाया। बेमुखां लाए प्रभ साचा डन्न, आप आपणा नाम भुलाया। भाणा जाणे सति कर मन्न, महाराज शेर सिँघ होए सहाया। भाणा मन्ने गुरमुख गुरसिख। आत्म मिटावे प्रभ साचा तृख। मंगी दात प्रभ साचा पावे भिक्ख। जोत सरूपी जोत प्रभ जाए लेख लिख। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वाक् सर्ब भविख। भविख्त वाक् प्रभ लिखाया। साचा कर्म आप कमाया। साचा धर्म गुरसिख दिसाया। साचा जन्म विच मात दवाया। आत्म भरम प्रभ सर्ब मिटाया। हिरदा नरम प्रभ सीतल सति कराया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, हुक्म लेख कर्म वेख आपणी रसन लिखाया। रसन लिखाए जीव लेखा। आप भुलाए पाए भरम भुलेखा। जीव ना जाणे प्रभ जो लिखाए लेखा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप आपणा वटाया भेखा। भेख धारे जोत निरँकारे। भगत उधारे जन आए चरन दवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे। पूरा गुर दर सेवीए, प्रभ पूरा देवे वर। सदा सद अलक्ख अभेविए, गुरमुख विरला आवे दर। प्रभ वड वड देवी देविए, लोचन दर्शन सुर नर। प्रभ देवे अमृत मेविए, पति पत्नी आए घर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा प्रभ दर। साचा दर घर गुर दरबार। दोए जोड़ कर निमस्कार। वेखे लेख आप करतार। देखण देख वड देखणहार। पति पत्नी लेख अपर अपार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप तरावे सर्ब जीआं तारनहार। गुर दर आयण दोए जुर। लिक्खया मेट वखाए जो लिक्खया धुर। प्रभ साचा मेख लगाए, चरन जीव जो आयण तुर। वेखा वेख जो सीस झुकाए, हत्थ खाली जायण मुर। प्रभ अबिनाशी भेख जो पायण, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे वड्याई साचा गुर। आत्म घिरना प्रभ देवे कढ्ढ। झूठा रोग जाए देह छड्ड। साचा प्रभ आप गंवाए वड्डा वड वड। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सुफल कराए देही हड्ड। रोग मिटाया सोग चुकाया। साचा नाम जोग दवाया। अमृत आत्म भोग लगाया। चिन्ता रोग आत्म सोग कोए रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप आपणी दया कमाया। आत्म देवे साची धीर। आत्म अग्न जलाए शांत कराए सरीर। देही दु:ख दर्द हटाए, आत्म कढाए गंवाए विच्चों पीड़। दुराचारनी प्रभ नष्ट कराए, जिस चलाया तीर। साचा प्रभ बचन स्पष्ट लिखाए, कर्म कमाया दु:ख रोग लगाया विच पिलाया सीर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अमृत बख्शे शांत कराए सरीर। साचा प्रभ शब्द लिखाए। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार बंधाए। गुर नानक जो लेख लिखाए। शब्द मार प्रभ आप कराए। सोहँ निधान जन रसना गाए। भूत प्रेत कोई नेड़ ना आए। देव दंत ना कोए सताए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका आण सोहँ रखाए। देही रोग प्रभ गंवाए। नाड़ी बहत्तर सुफल कराए। साचे दर

जन मंगण आए। रंगण नाम प्रभ चढ़ाए। पाप पहाड़ां परे हटाए। विच उजाड़ां होए सहाए। सोहँ नाउँ जो रसना गाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप आपणी दया कमाए। देही रोग आत्म सोग। दुखीआ जीव रिहा दुःख भोग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, किरपा कर मिटाए आत्म सारा सोग। गुर दर पुकारे कन्यां। प्रभ साचा सति कर मन्नयां। आत्म बेड़ा प्रभ साचे बन्नया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भेव खुलावे कर्मा अंनयां। रोग दुःख तन तपाया। हत्थ पैर अग्न जलाया। दिवस रैण चैन ना पाया। किशना सुखला पक्ख वक्ख वक्ख दिखाया। आप आपणी पति रक्ख, दुःख रोग मिटाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर किरपा पार कराया। साचा प्रभ सारंगधर। मातलोक आए तारन तर। कुक्ख दुःख प्रभ जाए सुफल कर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, किरपा जाए कर। दुःख रोग रोग दुःख प्रभ मिटाया। अठ्ठ अठराह नष्ट कराया। भठ्ठ भठ्ठ विच भठ्ठ पवाया। नठ्ठ नठ्ठ नठ्ठ जन सरनी आया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ डण्ड लगाया। साचा प्रभ शब्द चलाए। सोहँ नाम धीर धराए। रसना जपे जन अठ्ठ अठराह प्रभ दे गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सुफल कुक्ख आप कराए। अमृत मुख चुआए गुर पूरा। साध संगत मिटाए आत्म दुःख वसूरा। एका सुख उपजाए सोहँ देवे सति सरूरा। आत्म भुक्ख गंवाए, नाम जपाए सतिगुर पूरा। महाराज शेर सिँघ शब्द लिखाए, बचन कराए आपणा पूरा। अमृत पी आत्म तृप्ताओ। प्रभ अबिनाशी घर में पाओ। दुःख रोग सर्ब मिटाओ। साचा सुख आत्म उपजाओ। कृष्ना पख सुफल कराओ। अज्ञान अन्धेर मेट मिटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुक्खड़ा नास सर्ब जीव कराया, जो जन एका सरन रखाओ। पूरे गुर अमृत वसाया। आत्म वास प्रभ आप रखाया। होए दास जिस चरनी सीस झुकाया। सद वसे पास, गुरमुख साचे विच समाया। साचे प्रभ सद सद बलि जास, आदि अन्त होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मेघ आप वरसाया। साचा प्रभ अमृत बरसाए मेघ। सोहँ चलाए साची देग। गुरमुख दर आए विरला पीए अमृत मेघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कराए बुध्ध बिबेक। अमृत पी निर्मल बुध्ध। अमृत देवे प्रभ साची सुध। निज घर उपजावे प्रभ साचा नौं निध। दुःख दर्द हटावे, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, रसना गावे प्रभ मिलण दी साची बिध। अमृत पाए गुर दरबार। प्रभ साचे दे भरे भण्डार। साध संगत प्रभ करे प्यार। दर आए मंगत, प्रभ साचा जाए तार। आत्म चाढ़े सोहँ रंगत, आपणे रंग रंगे करतार। मानस जन्म ना होए भंगत, निहकलंक जो जन आए तेरे दरबार। प्रभ मिलाए विच साध संगत, रसना तजाए जन मदिरा मास आहार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अमृत बरखे किरपा धार। अमृत वेले अमृत बरसाया। प्रभ साचे सांतक सीतल सति कराया। आत्म अग्न प्रभ शब्द जलाया। गुरसिख गुर चरन लगण,

७९६ ०१

प्रभ साचा राह चलाया। बेमुख सड़न विच कलिजुग अग्न, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। अन्तकाल फिरन नग्न, धर्म राए दे सजाया। गुरसिख साचे दीपक जगण, प्रभ साचा आत्म जोत जगाया। एका लग्गी प्रभ चरन लग्न, प्रभ हउमे रोग मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म बरस आत्म शांत कराया। आत्म शांत शांत सरीर। प्रभ साचा देवे साची धीर। अमृत पिलावे साचा सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख दर्द निवारे आत्म कढ्ढे हउमे पीर। अमृत पी आत्म तृप्ताया। प्रभ दर आए दर साचा पाया। एका शब्द प्रभ नाद धुन वजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म वरख कँवल मुख चुआया। अमृत देवे साचा गुर। गुरमुख साचे प्रभ चरनी जुर। प्रभ दर्शन को लोचन सुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पाताल आकाश छड्ड विच मात आए तुर। पताल अकाश प्रभ तजाया। मातलोक प्रभ जोत जगाया। गुरमुख साचे प्रभ खोल्हे सोत, प्रगट होए दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मेघ बरस साध संगत दुःख रोग मिटाया। साचा प्रभ कर्म कमाए। आपणा वक्त आप सुहाए। लेखा लिखे दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणे भाणे रिहा समाए। आपणा भाणा आपे वरते। आपणा खेल किया प्रभ आप करते। जोत सरूपी जोत प्रगटाया निहकलंक उप्पर धरते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत उधारे वड संसारे जो जन आए दर ते। दर आए दरगाह परवान। गुरमुख साचे चतुर सुजान। ब्रह्म सरूप विच ब्रह्म समाण। वड वड भूप प्रभ सरन तकाण। प्रभ की महिंमा बड़ी अनूप, गुरमुख जाणे जिस किरपा करे भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगट जोत देवे दरस विच मात प्रभ आण। दरस दिखाया, प्रभ सहसा रोग मिटाया। सोहँ साचा जोग प्रभ साचे नाम दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीर्घ रोग गंवाया। साचा प्रभ दया धारे। साचा शब्द भगत लिखारे। जोत जगाए विच देही महिल मुनारे। प्रभ खोल्ह वखाए गुरमुख दस्म दुआरे। प्रभ सोहँ ढोल वजाए, सुणाए सची धुन्कारे। प्रभ पड़दे खोल्ह वखाए, देवे दरस अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा काज आप संवारे। प्रभ का रूप अपर अपारा। कोए ना जाणे प्रभ की सारा। कोटन कोट रंग करे करतारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख विरले पावे सारा। गुरसंगत गुरपुरब मनाउणा। साचा धाम प्रभ आप सुहाउणा। भुलयां डुलयां प्रभ सरन लगाउणा। एका हुक्म आप सुणाउणा। हँकार विकार सर्ब गंवाउणा। इक्क आकार गुरसंगत प्रभ कराउणा। गुरसिख दो फाड़ ना प्रभ रखाउणा। एका वाड़ सोहँ शब्द चौगिर्द कराउणा। महाराज शेर सिँघ बोल्लया बोल फिर मुड़ाउणा। गुर का दर सचा दरबार। साध संगत सद करे प्यार। साध संगत गुर इक्क रंग करतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां वड सिक्दार। गुरसंगत पाए गुर चरन रस। बेमुखां

अन्धेर जिउँ चन्न मस। गुरसिक्खां ना सूझे सञ्ज सवेर, होए प्रकाश कोट रवि ससि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए साचा शब्द जाए दस्स। साचे प्रभ एह मोड़ मुड़ाया। तोड़ विछोड़ प्रभ जोड़ जुड़ाया। गुरसिख ना दुपड़ दौड़, प्रभ एका रंग रंगाया। देही चले कोढ़, साध संगत विच जिस जन हँकार रखाया। मानस जन्म ना निभे तोड़, प्रभ साचे अद्धविचकार रखाया। प्रभ साचे दी साची लोड़, वेला अन्त कलिजुग नेड़े आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत बेड़ा आप बन्न्ाया। बेड़ा बन्न्हे बन्न्ह वखावे। गुरमुख साचे प्रभ कन्न सुणावे। तन मन गुरसिख मन्न जावे। सतिगुर पूरा दया कमावे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिगुर मनी सिँघ उपजावे। सर्ब जीआं प्रभ शब्द सुणाए। आप आपणा मुखवाक लिखाए। अंग साक ना गुर को भाए। पाकी पाक प्रभ आप रहाए। खोल्हे ताक जो जन चरनी सीस निवाए। गुरसिख आत्म मार झात, प्रभ साचा विच समाए। अन्तकाल कलि कोई ना पुच्छे वात, छड्ड जाण भैण भ्रा माए। इक्क दिन आए अन्धेरी रात, सज्जण साक सैण सभ जगत तजाए। झूठयां छड्डुया नात मात, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। प्रभ साचा देवे साची दात, गुरमुख साचे सोहँ सद रसना गाए। प्रभ साचा कोट उतारे पाप, अन्तकाल होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच जोती मेल मिलाए। साचा प्रभ वड लिखारी। साचा प्रभ जोत अधारी। साचा प्रभ आए जाए भगतन पैज संवारी। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुण विचारी। साचे प्रभ गुण विचारया। विच साधन सन्त चुण चरन लगा रिहा। साचे गुण सन्त मनी सिँघ प्रभ साचा माण दवा रिहा। प्रभ साचा शब्द लिखाए साध संगत सुण वक्त सुहा रिहा। साचा वक्त प्रभ सुहाउणा। बेमुखां प्रभ नष्ट कराउणा। रसन अजोड़ तोड़ वखाउणा। बचन अजोड़ बचन अमोड़ प्रभ सर्ब हटाउणा। प्रभ साचा सिख साचे दी लोड़, प्रभ साची सरन लगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सति शब्द सुणाउणा। शब्द लिखाए साध संगत प्रभ रिहा सुणाए। गुर अंगद जिउँ अंग लगाए। सन्त मनी सिँघ प्रभ आप तराए। भरम भुलेखा सर्ब कढाए। सृष्ट सबाई सरन लगाए। हँकारी जीव दर दुरकाए। उधरे पार जो चल आए सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। साचा प्रभ सर्ब वरतंत। सार जाणे सर्ब जीव जन्त। गुरमुख साचे प्रभ तेरा पति पतिवन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाए सतिगुर बणाए मनी सिँघ सन्त। सतिगुर बणाया, साचा फ़रमाण धुर तों आया। बली बलवान होए सहाया। गुणनिधान भरम भुलेखा जीव कढाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेद आप खुल्हाया। साचा प्रभ दया कमाए। पंचम जेठ गुरपुरब मनाए। बुग्घीं जाए भाग लगाए। गुरसिख साचा प्रेम सिँघ प्रभ साचा जाए तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झुग्गी बिदर जिउँ डेरा

७६६
०१

लाए। वीह सौ नौं बिक्रमी पंज जेठ साध संगत मेल मिलाए। गुरपुरब गुर आप मनाए। प्रगट जोत दरस दिखाए। गुरमुख गुरसिख प्रभ आण तराए। मुड़िआ मोड़ प्रभ आप मुड़ाए। ना चढ़े तोड़ जन जो बेमुख हो जाए। गुरमुख होए बचन अमोड़, कोई ना दीसे थाएँ। गुरमुख साचे प्रभ चरनी जोड़, अन्तकाल कलि लए तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला वक्त आपणा आप जुगो जुग सुहाए।।